27.500

Regro No. C. 708. ३०म वर्ष

दिगाथ ३०२१

)म मर्था

# ঢাকা সাহিত্য পরিষৎ কর্তৃক পরিচালিত



# মাদিক পত্ৰিকা

সম্পাদক—অধ্যাপক শ্রীঅনুকূলচন্দ্র স্রকার

প্রম্-এ, পি-এইচ্-ডি; এফ্-সি-এস

## न्ह्र इ

## প্রবন্ধ সকলের মতামতের স্থাত লেখকগণ দায়ী।

ľ	>	1	<b>नद</b> वर्ष	• • •	•••		> 5
	<b>ર</b>	1	ন্বৰ্ষে (ক্ৰিছা)	•••	··· <b>ध</b> गां পक	শ্রীযুক্ত পরিষণকুমার <b>যোগ এম-এ</b>	. ২
	9	ŧ	উবা (খাথেদের একটি চিত্র)	•••	•••	প্রীয়ুক্ত নধেন্দ্রনারায়ণ চৌধুরী বি-এল	٠
			তৃঃখের আতাত্তিক নিবৃত্তি	•••	•••	শ্রী যুক্ত কুর্দেনীকা <b>ন্ত</b> গালুলী বি-এ	8
I	¢	ı	মনশ্চকু(কবিতা	.•••	•••	শ্রীসুক্ত কালিদাস রায় বি-এ	30
1	•	١.	ছোট লেখা ( দৃষ্টি ও চিস্কা )	• • •	•••	প্রিয়ুক্ত স্থারেশচল ঘটক এম-এ	· . > > .
	٩	I	বৈমন্সিংহ কেলার আটিয়া প্রগনার ই প্রসিদ্ধ সাহিত্য সেবকগণ	,	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	গ্রীবৃক্ত অকংকুমুকে মৌলিক	20
	۲	i	योजूक ७ भव अथा	•••	∙•• অধ্য¦পক		29
	3	ı	<b>अ</b> न्द्राम्	•••	•••	ই বুক্ত গুরুদাস সরকার এম-এ	२७
Į.	٠.		এস (কবিতা	•••	•••	डी गुक्क (यारमनहक्त रही हुडी अय-अ	٥)
'	"	١,	"রক্তমোকন ও শিরা বিশ্বকরণ প্রণালী	}.	•••	श्रीयुक (नाभावहस पड	93
	<b>&gt;                                    </b>	i	শম্বন্ধে আলোচনার প্রতিবাদ" পুর্কোক্ত প্রতিবাদের উত্তর		•••	डीवृक (क्रांडियहस नदय हो	୬୫
	:0		ঘুৰুর ভাকে	•••	•. •	<b>बी मृक की (अस क्यांत्र मख</b>	00
1	8 6		জীবের স্বরূপ ও স্বস্তাব	•••.		थीं वृद्धः भेत्र ६० च ४त	104
	: «	•	স্বামীয় রায় চন্দ্রক্ষার দত্ত বাহাত্তর 🚬	•••	•••	•	86
•	, '9	l	উপেকিছ (কণিছা),	•••	****	<b>डीप्छ</b> – किरमात ध्र	41
-	-	-					, , ,

वासित् ग्ना

अन्तिन्त्रनाताग्रग (होधूती वि, अन कर्क्क थकानिक

এই সংখ্যার, সু

क्षांक्याक्त प्रदेशक

প্রতিভা কার্যালয়, ঢাকা।

ভাকৰাওগ গই কি

## न्द्र अट्या भूगत्रका अ।

# शक्षिश हिससे शक्ष्रभावित्।

বিশ্বস্থানি আৰার বাজালীর গৃহে গৃহে বিরাজ করুক ! যে 'বজদর্শন' নব-মুগের নুতন বজ-সাহিত্যের ভিত্তি প্র'ভণ্টিও ভারীরাছিল, যে 'বজদর্শন' নুতন ভাবে, নুতন চিন্তার, নুতন শক্তিতে বাজালা-সাহিত্যকে অভুপ্রাণিত ও সমৃদ্ধ করিয়াছিল, আইরা সেই 'বজদর্শন' পুনমু ডিত করিবুরে অভুমতি পাইরাছি। বাজালীর প্রেক ইয়া সুসংবাদ নৃত্তে কি ?

## রবীন্দ্রনাথ লিখিয়াছেন:--

বিশ্বনির পূর্ববর্তী এবং তাহার পরবর্তী বঙ্গ-সাহিত্যের মধ্যে যে উচ্চনীচ্ডা, তাগা অপরিমিত। দার্জিনিং ১ইতে বিছাল কালেনর পূর্ববর্তী এবং তাহার পরবর্তী বঙ্গ-সাহিত্য দেখিয়াছেন, তাহারা আনেন, সেই অভ্যন্তেরী দৈল-সমাটের উদ্বর্গবর্গ সম্ভাগ তুদার ক্রিটি চতুর্দিকের নিজক গিরি-পারিবদবর্গের কত উর্জে সম্ভিত হট্যাছে। বিজমসন্ত্রের পরবন্তা বঞ্গ-সাহিত্য সেইন্ত্র সম্ভিত হট্যাছে। বিজমসন্ত্রা বঞ্জন এক ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি বিজ্ঞানিত বিজম এক ক্রিটি বিজ্ঞানিত বিজমিন এক ক্রিটিটি বিজ্ঞানিত বিজমিন বিজ্ঞানিত বিজ্ঞ

#### চারি বংসরের চারি এও 'বঞ্চদর্শন'

২০২৭ সাবে আমরা প্রকাশিত করিব। ব'দ্ধনচক্রের প্রবার্তত ও সম্পানিত 'বস্পলনি' নিতাস্ত জুর্লিভ। এক শেউ ইংক্রেশন' বদি বা কথন ও দৈবাৎ পাওয়া যায়, ভাহাও

#### ১৫০ দেও শত, ২০০ দুই শত টাকা মুলো

ক্রিতে হয়।—এমন বাজালী পাঠক নাই, যিনি ব্জমের বিজনপ্নের নাম ভাষেন নাই। কিন্তু কর জন বিজনপ্ন শক্তিমাছেন দুকর জন টোখে দেখিয়াছেন দু—সেই সুত্রতি বিজ্ঞান আমরা অভান পুলভ মুগো আপাভতঃ কেবল

#### 'সাহিত্যে'র প্রাহকগণকে

ক্ষিৰাৰ বাবস্থা করিবাম। প্রাণন সংস্করণ তাঁহাদের জন্ত। এত অম —নামমাত্র মূলাও কেবল তাঁহাদেরই স্থাবিধার জন্ত। এই ছুমুনোর দিনে, কাগজ, ছাপাট, বাধাই প্রভৃতির অসম্ভব মূলাবৃদ্ধির কালে, 'সাহিত্যে'র গ্রাহকগণের জন্ত, বঙ্গনশনে'র

প্রথম বৎসবের মুলা—২১ দুই টাকা মাত্র নিষ্টি ইবা। 'বলন্দনে'র বাবিক মৃগা ছিল,—তিন টাকা ছল আনা। এখন তাহা অমৃগা—অদন্তা মৃগ্য দিয়াও শাওলা বায় না। সেই 'বলদশন' সাহৈত্যের গ্রাহকগণ ছট টাকার পাইবেন।

বৃদ্ধির 'বঙ্গণর্শন' বে আকারে, বে অকরে, পে গ্রুপের ছাপা হইরাছেন, আমাদের সংকরণ্ড ঠিক সেই ভাবে ছাপা ইট্রে। অর্থাৎ, ইহা—FAC-SIMILIE সংগ্রহমন্ত্রা।

ন্ধ বংসর "সাহিত্যে"র উৎকর্ষ বিধানের ক্ষর বংগই আরোজন হইরাছে। প্রসিদ্ধ নাট্যকার প্রীযুক্ত কারোদ প্রসাদ ক্ষিত্রিনাদ, শ্রীষ্ঠী ইন্দেরা দেখা, প্রসিদ্ধ উপরাদিক শ্রীযুক্তর নারারগঠন ভট্টাচার্য্যের উপরাস, শ্রীযুক্ত ক্রেক্তনাথ ক্ষুম্বার, শ্রীযুক্ত দানেক্ষ্যার রায়, শ্রীযুক্ত হেনেক্স প্রসাদ ঘোষ, শ্রীযুক্ত ক্রাক্তন ও ঠাকুর, শ্রীযুক্ত বংগক্তনাথ নিত্র প্রভৃতির শ্রীষ্ট্রার "সাহিত্যে" কে আরও সমৃদ্ধ করিকে।

্ৰীৰাল তিন টাকা দিলা হৈত্ৰমাণের মধ্যে 'সাহিতো'ৰ প্ৰহৃত হইবেন, অৰ্থাৎ 'সাহিতো'ৰ অগ্ৰিম বাৰ্ষিক মূলা তিন টাকা ও 'বলদৰ্শনে'ল প্ৰথম বৰ্ষেৰ মূলা জুই টাকা, মোট পাচ টাকা পাঠাইলা গ্ৰাহক হইবেন, ভাঁহালাই এই অমূলা বছেল অধিকালী হইবেম। নিল্লিখিত ঠিকানাল টাকা পাঠাইবেন !

ম্যানেজার, "সাহিত্য"।—২।১, রাশধন মিত্তের লেন, খামপুরুর, কলিকারা।

## প্রতিভা—১০ম বর ১৩২৭ সম

## (ndinasina)

100	•		(441500144)			
	व्यवस्त्रत मांच		লেখক 🗓	7	Hele	
> 1	। जन्नीकरणत जाम्हर्या मेखि	•••	একুক্ত অখিনীকুমার	সেন		15
₹ 1	অতিথি (কবিতা)	•••	बीवुक श्रुतमहत्त्र परेश	F 44, 4,	•••	443
١٥	व्यवद्वाष ( )म, २व्न, ७व्न, ८र्ब,	eम, ७ <del>ई</del> , १म	গ্রীবৃক্ত গুরুদাস সরক	ার এম,এ, ২৩,৬০,১০১,২	13,00	0,010,822
√8 I	অস্বক সংখার	* ***	শীবৃক্ত জ্যোতিৰচন্দ্ৰ স	ার <b>শ</b> তী	•••	>80
41	वागमनी	অধ্যাপৰ	তীযুক্ত প্রিমণকুষার	হোব এখ, এ,	•••	296
• 1	আগষ্নীও বিজয়া	•••	वैश्रुक बारमस्कित्य	ার রক্ষিত	***	130
4	আটিয়া প্রগণার গ্রাম্যশব্দ	•••	তীযুক্ত অকরকুমার মে	गिनिक	•••	•4
<b>b</b> 1	षाचा विकामा	•••	🗃 যুক্ত নিতাগোণাল বি	বিষ্ণাবিনোম্	•••	>04
> 1	আযার পরীকা গ্রহণ	•••	শ্রীবৃক্ত শশ্ধর রায় এম	া, এ, বি, এল,	•••	<b>&gt;&gt;</b>
>• 1	স্বামি ও তুমি (কবিভা)	•••	শীৰ্ক ৰগদীশচন্দ্ৰ বা	<b>इ ७ ४</b>	•••	816
>> 1	আয়ুৰ্কেদ সমস্তা	•••	শীযুক্ত জ্যোভিৰচন্ত্ৰ স	<b>শরস্বতী</b>	•••	812
32 1	ं <b>चा</b> रशन्	অধ্যাপক	প্রীযুক্ত উমেশচন্ত ভট্টা	চাৰ্য্য এম, এ, বি, এশ,	• • • •	<b>96</b> 0,
191	वार्यात्रमाण वद्यस्तत्र करवकी	ন্তর ভাক্তার	ত্রীযুক্ত নরেশচন্দ্র সেন	खद वम, व, छि, वन,	•••	5.4
186	আলোর আধার (কবিতা)	•••	बीयूक क्यूनदक्षम यहि	क वि, ध,	***	000
>61	আশা পথে (কবিতা)	•••	ত্রীযুক্ত প্রাণকিশোর স	শা <b>ভাগ</b>	•••	8 4 •
301	উন্মনার প্রতি (কবিতা)	•••	প্রীযুক্ত ষতীক্রপ্রসাদ ব	<b>ভট্টাচার্য্য</b>	•••	800
>91	উপেকিত (কবিতা)	•••	<b>और्</b> क — किर	শার ধর	•••	88
, 26 1	উবা ( ঋথেদের একটা চিত্র )	•••	चै वृक्त नरबसनावाश्व	চৌধুরী বি, এল,	•••	•
166	ঝ্যিসমাজে তৰ্চিস্তা (১ম, ২ম	) . <b></b>	<b>बीयुक नदबळानावाव</b>	চৌধুরী	•••	862, 862
<b>4•</b> 1	এস (কবিতা)	•••	<b>बीयूक (यारभणक क</b>	ोधूत्री अम, अ,	•••	۷)
२५ ।	কল্যাণপরশ (কবিতা)	•••	শ্ৰীষ্কা ভক্তিস্থা রায়	1	•••	346
२२ ।	কবিরাজ রহস্ত	•••	এীবৃক্ত পর্যেশপ্রসর র	वात्र वि, अ,	•••	२ <b>०१</b>
२७ ।	কারে বেশী ভালবাসি (কবিভা	I) <b>.</b>	श्रीवृक्त बीरवसक्यात	দত্ত	•••	98
२8 ।	কিম্বর গেন		बीवूङ अधिनीक्यात त	<b>গ</b> ৰ	•••	)રદ
261	কোদাগরী (কবিভা)	•,•	শীৰ্জ জীবেন্দ্ৰ কুমার।	7 <b>3</b>	•••	4.4
201	<b>জ</b> মবিকা <b>শ</b>	•••	শীৰুক্ত হরিচরণ ওপ্ত	•	•••	260
211	ক্রিটোন	••• পধ্যাপক	धीवूङ উদেশচন্দ্র ভট্টাচ	াৰ্ব্য এম, এ, বি, এম,	•••	8.>
144	(中国 6 (中国 8 )	•••	শীৰ্জ বিভূচরণ শুহ ঠা	কুরতা বি, এল,	•••	> 90

ু বাৰ্মিডিস্	भरा। भव द्वेत्र छत्मनत्त्र छहे। हार्गा अय, अ	6.4	
হৰ: গান (কঝিছা)	৺ কালীপ্রসর বিভাগাপর	, १५, ध्यंत्र,	6.2
्राणान बुद्धाहा निक	শ্রীযুক্ত যোগেজকিশোর বক্ষিত	• • • •	86>
া গোগাল ব্যোহানীতি শুং স্থান্ত ক	<b>ए। छात्र में पूर्क नरत्रमध्य राम खर्श अग, अ</b>		<b>২</b> 8৩
कि । वह भवीरनाहमा	مرابع الماري المارية ا		. 804
ুৰ্ব। দৰ্ব ডাকে (কবিভা) 🔪	क्षीत्रक जीरतस्यक्षात्र पञ	>२०, २०६, २८०, ६	308, 862
कर । क्यन, (बरक्त वाहिस्त वाक्राजी) कथा	। পক श्रीपुरु दरम्बद्धसम्बद्धमात् अम, अ, लि, अ		<b>৩</b> ৬
र्छ । ठाँप क्यांत ७ भर्छ श्रेक	वीतृक इशास्त्रस्थतः मृत्यानाशाम	१२०,१७, १म्, ब्यात्र,	<b>प्रम</b> २४७
केंगे (हां है लिया ( ) म, २व, ७व )	विश्व चरतमहत्त्व चहेक अम, अ	•••	२७७
🥮। জীবের সার সম্পত্তি কি ?	वीत्क भंदरहरा धद	>>,	33, 368
<sup>৩৯</sup> । জীবের শ্বরণ ও শ্বভাব	ची युक्त भाव २ ठका थत	•••	৩৩৭
के । शेक्तभात कथा (>म, २व, ७व)	শীবৃক্ত পূর্ণচন্দ্র ভট্টারাগ্য	•••	9
हैं। हाकांत्र मब्बी र हर्छ। (५म, २न्न, ७न्न)	चार्क र्गण्या च्यावागः <b>चैत्रक</b> (गारासकित्यात तकिन्न		<b>&gt;२</b> , ७२२
ছিং। তলাত (কবিতা)	नियुक्त कोरवलक्याङ्ग्य वाक्ष	> 4, >	
🗫। ধাক্ শে বিচার (কৰিতা)		•••	७२२
We all a second and a second and a second a seco	শীৰ্জ জীবেজকুমার দত্ত গোৰেব শীৰ্জ দীনেশচজ্ঞ গেল বি. এ	•••	>48
व्हा (क्वी ट्रियानी खुनीजाताम		•••	. 40
৪৬ ৷ দেবেজ্ঞ-প্রয়াণ (কাবভা)	ত্রীবৃক্ত লক্ষ্কুমার দক্ত গুপ্ত এম, এ	•••	689
11 (7 <b>2</b>	শীষ্ত জীবেক্সমার দত্ত	•••	806
the to force ( set se )	শ্রীযুক্ত শশ্ধর রায় শ্রী	•••	७४७
জাবন (১৭, ২৪) জাবন আত্যন্তিক নিবৃত্তি		<b>૭</b> ৪	₹, 88€
े। नवर्व	वीर् <b>ङ क्र्</b> किनोकाल शास्त्री, वि, व	•••	8
2	শ্রীযুক্ত কামিনীকুমার গেন	•••	>
311 77770 6-6	পক শ্রীষ্ক্ত পরিমনজুমার বোধ এম, এ	•	₹
্র পতি নির্বাচনে নারীর ক্লচি	धीष्क रविक्षा (प्रवर्ण)	· .	>%>
है। পভোগভেদী द्वाका	<b>बित्रपुरस्पन प्राप्त</b>	· •	899
শুক্তক পরিচর	শ্ৰীৰুক্ত অধিনীকুমার সেন	•••	9.9
्रा श्रुविनो (अनिज्ञा)	<u> </u>	•••	७•३
्रापया (कावज्ञा)	<b>ত্রীবৃক্ত কুম্দরশ্বন মলিক</b>	•••	348
প্রতিথবনি (কবিতা)	वीयूक क्यूनव्यन यहिक	•••	> 6
আৰ্থনা (কবিতা)	वीयूका हाक्यांना प्रख खरा	•••	829
व। व्यार्थना (भान)	वैश्क समनीनात्य द्वार छश्च	•••	७२०
• িপ্রেমের জীর (কবিজা)	वीवुक वारमनहत्त्व क्षित्री अम, अ वि अम	•••	040
। थ्यामत भाष श्रीक्षोत्राम	वैर्क नंद<रक पत	•••	4.8

	4.	. 3		
रक्षपर्णन ( ) म, २ व )	•••	धैवूक चक्राक्रमात पछ ७४ अम, अ	₹5	9, 267
বৰ্ষাপ্ৰভাত (কবিতা)	•••	वैश्व को दिखक्यात पछ	•••	. 200
বন্তি বনাম পিচকারী	•••	শীযুক্ত জ্যোতিষচন্দ্র গরস্বতী	•••	884
বিগ্ৰুলী (কবিতা)	***	শীযুক্ত কালিদাস রায় বি, এ	•••	٩١٥
বিদায় গলীত	•••	और्ज कानिवान तात्र वि, अ	•••	999
विवाद ७ मीपनीवन	***		•••	• 60
বিষের বিশালত	• •.•	শ্রীযুক্ত হরিচরণ ৩৪	•••	95 e.
বেদারের সার্বভৌমিক আ	मर्थ	और्ङ फेल्डिंग्ड खर अब, अ, वि, अ <b>न</b>	•••	¥4:
বোধন ( কবিতা )	•••	শ্রীবৃক্ত স্থান্সনাথ চটোপাধ্যায়	•••	8>>
•	•••		কৈ সংখ্যা ৯	
ভারতের আর্থ্য ও অনাব্য	•			** 19 - 45
	***		•••	22
	•••			- 8¢
	•••	•	•••	888
7	•••	•	•••	>>
•••	•••	·		873
	•••		•••	ર કર∶
	•••		•••	२ऽ७
	গ্রাফি		•••	89•
	•••	•	•••	رده
	•••	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•••	۶ • ۍ
•	•••		•••	२२३
	•••		•••	O. 8
(मरहिष			•••	<b>09</b> 6
মেছ	•••		•••	222
বৈগ্ৰমনসিংহ <b>ভেগার আটি</b> য়	পরগণার			
শাহিত্যদেবকগণ	•••	শ্রীবৃক্ত অক্ষরকুমার মৌলিক	•••	20
যুগণমন্তা	• • • •	भग हो नी हात कूमाती (न वी · 🎺	•••	80.
যৌতুক ও পণপ্রধা	चशानक		•••	>9
		🕮 যুক্ত কালিদান রায় বি, এ	•••	೨೨೨
		এযুক্ত গোপালচন্দ্ৰ দত্ত	•••	೨೨
के अधिवारमत छक्त		बीर्क (कार्णिकाळ नवपनी		ଓଞ
	বর্ষপ্রভাত (কবিতা) বিভিন্ন বিশ্বতা) বিলায় গলীত বিবাহ ও দীর্মলীবন বিখের বিশালত্ব বেলান্তর সার্মজেমিক জা বোধন (কবিতা) ভাটিরাল পান ভারতের আর্থ্য ও জনার্থ্য মতিনিল (কবিতা) মনশ্চম্পু (কবিতা) মনশ্চম্পু (কবিতা) মনশ্চম্পু (কবিতা) মারকনি ও তারহীন টেলিং মিলন (কবিতা) মুর্ম (কবিতা) মুর্ম (কবিতা) মুর্ম (কবিতা) মুর্ম (কবিতা) মুর্ম কবিতা) মুর্ম কবিতা মুর্ম কবিত	বর্ষপ্রভাত (কবিতা) বন্ধি বনাম পিচকারী নেগত শ্রী (কবিতা) বিলায় গলীত বিবাহ ও দীর্ঘলীবন বিষের বিশালত্ত বেদারের সার্মজেমিক আন্তর্গ বোধন (কবিতা) ভাটিরাল পান ভারতের আর্থ্য ও জনার্থ্য মার্চিনিল (কবিতা) ননশ্চল্প (কবিতা) নানশ্চল্প (কবিতা) নারকনি ও তারহীন টেলিগ্রাফি মিলন (কবিতা) মারকনি ও তারহীন টেলিগ্রাফি মিলন (কবিতা) মুর্ম (কবিতা) মুর্ম (কবিতা) মুর্ম (কবিতা)  মুর্ম বুর্ম	বর্ষ প্রতাত (কবিতা)  বাতি বনাম পিচকারী  বাতি বনাম পালিত  বাত্তি বাতি বাত্তি  বাত্তি বাতি বাত্তি  বাত্ত	বর্ষা প্রভাগ (কবিতা)  বাজি বনাম পিচকারী  বাজি বনাম পরিতা  বাজি বাজিনাম বাম বি, এ  বালাম সরীত  বাজি বাজিনাম বাম বি, এ  বালাম সরীত  বাজিনাম বাম বি, এ  বাজিনাম বাজিনাম বাম বি, এ  বাজিনাম বিলাম  বাজিনাম বাজিনাম বাম বি, এ  বাজিনাম বাজিনাম বাজাম বি, এ  বাজিনাম বাজাম বি, এ  বাজিনাম বাজাম বি, এ  বাজিনাম বাজাম বি, এ  বাজাম বাজাম বি, এ  বাজাম বাজাম বি, এ  বাজাম বাজাম বি, এ  বাজাম বিলাম বিলাম বি  বাজাম বিলাম বাজাম বি, এ  বাজাম বিলাম বি  বাজাম বিলাম বি  বাজাম

391	রাজা হরিনাথের চন্দ্রন	•••	প্রীযুক্ত পবিনীকুমার সেন	•••	160
30 1	ূ লাহিতা (কবিডা)	•••	শ্ৰীষ্ক্ত শ্ৰীপতিপ্ৰসন্ন বোৰ	***	>%
<b>36</b> i	শ্রতে (কবিতা)	•••	শ্ৰীবৃক আন্ততোৰ বায়	•••	241
301	শন্যতমে উদর চিকিৎশা	•••	শ্রীবৃক্ত স্বোতিবচন্দ্র সরস্বতী	***	>89
31	শিশু (কবিতা)	•••	শ্রীযুক্ত হরিক্কপা দেব বর্মা	•••	৩৪৭
اعد	শিকা রহস্ত	••• च्याभिक	শ্ৰীযুক্ত নিভ্যগোপাল বিভাবিনোদ	•••	२५३
<b>37</b> )	শ্ৰীরাধা বা ব্রহ্মগোপীর তে	ামধর্ম	ত্রীযুক্ত শরৎচক্র ধর	•••	>29
>> 1	স্বশ্বে (কবিতা)	•••	सोय्क रतिक्षा (एवरची		¢ o by
3.31	শ্বর হ্রদ	•••	खीवुक वाटकस्क्रमात बक्रमनात्र नाजी		9
>+41	नकन मनीख	***	ভীযুক্ত হরিক্লপা দেববৰ্ষী	•••	>4>
>001	শাগর তরক	***	শ্রীবৃক্ত হরিচরণ ওপ্ত	•••	નત ક
3-81	সাহিত্যিকের নানা কথা		কন্সচিৎ বিভাবিনোদস্থ	•••	१ ० २
>•€	নাহিত্য-সংবাদ	•••	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•••	<b>987</b> ,896
	সুহৃদ্ (কবিতা)	•••	खीय्क स्रातमात्रस परेक अम. अ,	•••	<b>6</b> •
2091	সেকাল ও একাল	•••	শ্রীযুক্ত স্থবেশচন্দ্র সমাশ্রপতি	•••	>00
304 1	নেকালের ব্রাহ্মণ পণ্ডিড	•••	শ্ৰীযুক্ত পূৰ্ণচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ	***	> • •
>->1	স্বৰ্গীয় রম্বাধ গোস।মী	•••	चौग्छ महिमहस नमी	•••	>>9
35.1	স্বৰ্গীয় বাস চন্দ্ৰকুমার দত্ত	বাহাছর		140	83
200	শ্বনীয় রায় অভয়াচরণ চৌ		শ্রীযুক্ত ভগবতীপ্রসাদ (শ্ববর্শ্ব)	•••	> ७ २
3>21	হতাশায় ( কবিতা )	•••	প্রীযুক্ত যতীক্তপ্রসাদ ভট্টাচার্য্য	•••	. ><8
	व्दिनक्द ( >२, २४)	•••	শ্রীযুক্ত সুরেজ্রমোহন কাব্যপুরাণভীর্থ	٠,٠	89 <b>५,</b> १••
7.5	হদ্বল (কবিতা)	•••	और्क क्र्यूनतक्षन महिक वि, अ	•••	843
7					





১০ম বর্ষ

বৈশাখ ১৩২৭

১ম স্ংখ

## নববর্ষ ।

'প্রতিভার জীবনের আর এক অধ্যায় চলিয়া গেল।
অতীত বংগর একবারেই বিশ্বতির কোলে বিলান হইবে
কি না কে জানে ? কতকগুলি ঐতিহাসিক গ্রেমণা
কতকগুলি সাহিত্যের আলোচনা, কতকগুলি রুগাল প্রবন্ধ লইয়া 'প্রতিভার' জীবনগতি,—গত কাল গতির সহিত মিশিয়া ভগবানের চরণতলে উপনীত হইয়াছে।
হয়তো তাহার কভক সমাদৃত হইয়াছে, কতক আবার
হতাদরেও মুহামান হইয়া আছে।

চূট্কী গল্পে বা নীরস কবি গায় 'প্রতিভার' অঙ্গ পুষ্ট করা আমাদের উদ্দেশ্য নহে। বিশুদ্ধ আমোদ আমাদের অঞ্চতম লক্ষ্য হইলেও 'জীবন সংগ্রাম বড় কঠোর' এই ধারণাই 'প্রতিভার' মৃশু হল্তে। ভাই, আমাদের ক্ষুদ্র শক্তি অকুগারে আমরা ভাষের ক্ষীণ বর্ত্তি ধারণ করিতে প্রয়াগী হইয়াছি এবং সঙ্গে ব আনন্দের বহু সুরভি বিকীর্ণ করিতেও যা করিয়া। সফল হইয়াছি কি না, বিচার করিবেন সুধী গ্রাহক ভ

> 'ধিয়াত্মন স্তাবদ চারু না চরম্, জনস্ত যথেদ সভদ্বদিয়তি।"

যদি আমাদের শ্রম কিঞ্চিমাত্রও সক্ষণ হইয়া থাকে বিদি ক্ষাণ দীপালোকে একজন প্রিক্ত উপকৃত হটা থাকেন তবে ভগবান্ প্রতিভার ক্ষুদ্ধীবনেও ক্লাণ্ড করিয়াছেন ইহা মনে করিব। আর, "ক্লেশঃ ফর্মের ছি পুন ন্বতাং বিদত্তে" এই তব্দ সার করিয়া ভবিষ্যুদ্ধে জন্ম উংসাহ সম্পন্ন হইয়া আমরা নবোদ্যমে কার্যুদ্ধে প্রবিষ্ট ইইব। যিনি শাখত, যিনি সর্ব্ধ লোকাশ্রয়, যিনি কর্মকল দাতা তিনি আমাদের সহায় হইবেন।

গত বর্ষে আমরা শীতাতপ, আলো ও ছায়া, রুষ হুংখের মধ্য দিয়া অগ্রসর হইয়াছি৷ রুষ অপেকা ছথবের ভাগই আমাদের ভাগ্য বিপর্যয়ে অদৃত্তে লাভ ছইয়াছিল। অতীত বংদরে কয়েকটা নক্ষত্র বঙ্গীয় নাহিত্যাকাশ হইতে চিরতরে অগুনিত হইয়াছে। কিন্ত ভাহাদের যশোরশ্মি আনি মধ্যগত চন্দনের মৃত্ গন্ধের মৃত বঙ্গ-বাদীর শোভন মন্দির চির পুল্কিত করিয়া রাধিবে।

এবংসর আমরা নৃতন আশায় আশাবিত হইয়াছি।
পূথিবী প্রতি নিয়ত নানা বিষয়ে নৃতন আকার ধারণ
করিতেছি। জগতের নৈতিক সামাজিক রাজনীতিক
অবস্থার নবোন্মের হইতে চলিয়াছে। কালের স্রোতোর
সহিত চলিয়া চলিয়া অধ্চ নিজের আতন্তা রক্ষা করিয়া
শীরবে নৃতন শক্তির অফুশীলন পূর্বক আমরা অগ্রসর
হইব। আর, সমবেত সাহিত্যিকরন্দের একনির্চ
প্রচেষ্টায় বঙ্গবাণীকে জগতের নমস্যা করিতে যরপর
হইতে হইবে। বৈদিক ঋবির ভাষায় বলিব—
"তাং ধীরাসঃ কব্য উয়য়িয়।"

ঐকামিনিকুমার সেন।

## नववदर्य।

स्रतं स्रतं व्यक्ति वाट्या स्मध्य श्रामा मानत्वतं मताविता ! वाट्या धत्रशित त्वना-विश्व भवम-वाणिनी शीठशीना ! . नवज्ञतत्व नवीन वत्रश्व नवजीतत्वतं त्वाधन-श्वत्य खाला निश्चितं मरनामशी वाली भश्मानत्वतं श्रमितीनः ! গাহ পাহ গান নীয়ব চারণ.
নরদেবতার সভাকবি !
আমাধামিনীরে করিয়া হরণ
প্রভাত আনিল নবরবি !—
জাগে শিহরণ কমলের বনে,
বিহণ-কাকলী মুধরে পবনে ;
গাহ ঋবি সাম ভূবন-শিয়রে,
আঁকো নীলিমায় হেম-ছবি !

কাঁপে কাঁপে মক-ধ্রণী-শিরায়
বীর-শোণিতের প্রাণ-ধারা,
প্রলয়ের ঘন অশনি-শিলায়
অচেতনে আজি জাগে সাড়া!
ভাষাহীন গণ-মরমের মাঝে
নরদেবভার জাগরণ বাজে!—
শতদিকে বহি' তটিণীর বারি
সাগরের বুকে হল হারা!

কোথা—কোথা কাঁদে মুক বারিধার
গিরি-পাগণের হিয়াতলে!
বাহিরিবে কবে ধারা ঝরণার
শিলা বিদলিয়া কলকলে!
ফুটি-ফুটি করে কোথা ফুলকলি
দলের বাঁধনে আপনারে ছলি',
মধুপেরে চাহি' বহে যায় বেলা
বুক-ভরা সুধা-পরিমলে!

জাগো জাগো কবি-ভাপস অমর,
জাগো তমগার অবসানে !
উবার আলোকে ভরি' চরাচর
আলো শিহরণ প্রাণে প্রাণে !
প্রপাত পুলকে বহে যাক্ ছুট,'
উঠক্ হর্ষে ক্লশি উ ফুট,'

বনবীথিকার ভাষাহীন বাণী
মুধরিয়া ভোল গানে গানে!

চাহে চাহে তোমা ব্যথিত ভ্বন,
অসহায় প্রাণ দিশাহারা,
ফেণায়ে উঠিছে অধীর চেতন—
নবজীবনের কলধারা!
কৈ আজি জ্ড়াবে নিধিলের হিয়া
চিরজনমের স্থা বিতরিয়া?
সাগর-দোলায় কে দেখাবে আজি
গগনে উজল শ্রুবতারা?

দিকে দিকে জাগে আকুল তিয়াস,
কে পিয়াবে হুদি-রেহ-বারি ?
কেবাটিয়া দিবে সুধা-ঝারি ?
জাগো কবি জাগো নিখিলের বুকে,
বিজিতের লাজে, ব্যথিতের হুখে,
জয়ীর পুলক-আকুলিত প্রাণে
মোহ-তমসায় জ্পসারি'!

বাজো বাজো কবি-বীণায় মধুর
বাজো মানবের মহাবাণী!
জাগো নবারুণ-বিকাশ-বিধুর
ফদি-কমলের বীণাপাণি!
জাগো সুগ-কবি, হে প্রাণ, বিধাতা!
গাহ মানবের মিলন-বারতা,
নব বরবের উমায় ভূবনে
নব জাগরণ দেহ আনি'!

ভীপরিমলকুষার ঘোষ।

## ঊষা।

(খাথেদের একটী চিত্র)

খোর নৈশ তমিশ্রা ভেদ করিয়া যেমন পৃর্বাগণে প্রভাতের অরুণিমা একটু ২ ক্ষিয়া কুটিয়া উঠিতে লাগিল, সঙ্গে সঙ্গে অমনি বিশ্বময় এক নৃতন চেতনা জাগিয়া উঠিল। পাধীরা আলোক দেখিয়া গাছের ভালে পুলকে গান ধরিল, বিখের যাবতীয় প্রাণী নুতন প্রাণ পাইল, গৃহস্থ নিজ কর্তব্যে গমন করিল, ঋষিরা দান যজ্ঞাদি ধর্ম কর্মে মন দিতে লাগিলেন, ভিধারী ভিকার জন্ম নিজ গৃহ হইতে বাহির হইল—সর্বত্রই কি এক গতি, কি এক চেষ্টা, কি যেন এক প্রাণের বিকাশ। কে ঐ সুনরী জ্যোতির্ময়ী দেবী পূর্বাকাশে অস্ক্রকারের দার খুলিয়া বিবিধ বর্ণ রঞ্জিত ভূষায় সজ্জিত হইয়া, কে ঐ অনন্ত যৌবনা "অজরা অমৃতা" যুগ ধুগান্তর হইতে প্রত্যহ বিশ্বন্ধগতে এমন স্থাদর জ্যোতিঃ বিকীর্ণ করিয়া এই নৃতন প্রাণ প্রেরণ করিতেছে? রাত্রির অন্ধকার নিমগ্ন বিশ্ব কাহার চক্ষে প্রকাশ পাওয়ার জন্ম প্রভাবে মস্তক নামাইয়া নমস্বার করিতেছে ? থবিরা তাঁহাকে চিনিয়া গদগদ সরে গাহিতেছেন—'উঠ, জাগ। ঐ দেখ অন্ধকার দূর করিয়া নূতন আলোকে জগৎ উত্তাসিত कतिया व्याभारतत थान व्याभारतत थानवाय "विषमा हि थाननः कौरनः" करल मुझौरनी मुक्तिमुझौ एनर इहिणा छेष। चानिया चार्मानिशत्क चास्तान कविष्ठाह्न। এ হৃদ্রীর শোভা, ডাঁহার স্বরূপ বর্ণনা করিতে যাইয়া ঋষির ভাষাও যেন হার মানিয়াছে। ঋষি তাঁহার উপমার জন্য দ্যুলোক ভূলোক থুজিয়া সুগৃহিনী ভিন্ন তাঁহার অন্য উপমার সামগ্রী পাইলেন না। তাঁহার त्नीन्तर्यात जूननाथ जूनती गृशिनी, श्रत्रापत जूननाथ ঐ সুন্দরী গৃহিনী। সুগৃহিনী যেমন প্রত্যুবে গুহের সকল লোককে জাগাইয়া রাজের জীণ লথ ভাব দূর

করিয়া ভাষাদের ভিতর এক নুতন চেতনা জাগাইয়া ভাষাদিগকে নিজ নিজ কর্মে প্রেরণ করিয়া নিজেও জাপন কর্মে গমন করেন। উষাও তেমণি সমস্ত বিশ্বকে জাগাইয়া ভাষার স্থপ্ত ভাষকে প্রাণবান, চেষ্টাবান গতিবান করিয়া সকগকে নিজ নিজ কর্মে প্রেরণ করিয়া অমনি জ্বরধান হন—কার্গ্য সম্পন্ন হইলে এক মৃহত্তিও থাকিবার কামনা করেন না "পদং ন বেতি"।

আখা যোষের হনরী উষাঃ যাতি প্রভু জততী।
জরমন্ত্রী বৃজনং পর্ব ইয়তে উৎপাতয়তি পক্ষিণঃ॥
বি যা হজতি সমনং বি অর্থিনঃ পদং ন বেভিওদতী।
বয়ে। নকিন্তে পদ্বিবাংস আসতে বি উট্টোবাজিনীবতী॥

বিশ্বম্যা ন নাম চক্ষমে জগজ্যোতি ফুণোতি স্নরী।

বিশ্বস্য হি প্রোণনং জীবনং তে বি ষত্ত্বি স্নরি॥
হে আমাদের দেশের গৃহিনীগণ, পুরাতন বৎসরের
সহিত পুরাতন জীর্ণ ভাব যাহা তোমাদের নিজব নয়, সে
ভাব পরিত্যাগ করিয়া আপন স্ব-রূপ গ্রহণ কর, নুতনকে
সাদরে আহ্বান করিয়া লও। দেখ আজ্ব আমাদের
দেশ অজ্ঞানতা ও জড়তার ঘোর অস্ককারে আজ্র ।
এস আল তোমাদের চির পুরাতন নিত্য নুতন সোল্পগ্য ও
স্ব-রূপ কইয়া তল্লাময় আত্মবিশ্বত জাতির প্রাণে
আপন সঞ্জীবনী শক্তি স্কার করিয়া আবার তাহাকে
প্রাণবান প্রজাবান শক্তিমান চেষ্টাবান করিয়া তোল,
ভাহাদের হৃদয়ে তাহার ছ-রূপকে বিক্শিত করিয়া
ভোল!

बीनदरसनातात्रण कोधूरी।

## "ত্বঃখের আত্যন্তিক নিরন্তি"।

गाया ७ शाधीन इन्हा \*

সংসারের লোক তুমি; হুংখে কটে ঝালা পালা হইয়া কি বে তোমার 'প্রাণ' চায়, তাহা বুবিতে পারিতেছি না। 'মুখে' কাঁকা প্রখ, শান্তি কি আনন্দের আকাজ্ঞা করিতেছ, 'অন্তরে' কিন্তু কেবলই অবিখাস, কেবলই নৈরাশ্র, কেবলই ছুংখের চিন্তা, আশান্তির তাব। শুনিলে, "ওঃ, অমুক স্থানের অমুক 'মহাপুরুষ' সাক্ষাৎ শিব।"—লাভিগত একটা সংস্কার রহিয়াছে। আশা সেই সংস্কারটা উস্কাইয়া দিল, আর অমনি দৌড়াইলে তাঁর কাছে। মনে কত আশা—তাঁর একটা কপাকটাক্ষে, একটা অমৃতমন্ধ কথায় তোমার মনে হথ শান্তি আনন্দের উদাম কোঁয়ারা ছুটিয়া যাইবে, কোথায় রহিবে ত্ঃখ, দারিন্তা, শোক্ষ তাপ!

ত্মিত ছুটিয়া ছুটিয়া কণ্ঠাগত প্রাণ হইয়া 'মহাপুরুষের' চরণ-তলে আদিয়া লুটাইয়া পড়িলে? তিনি
অমনি 'বালকের মত সরল' হইয়া অথবা রুজ সংহার-মৃত্তি
ধারণ করিয়া বলিলেন, "বাপু হে, রয়েছ মায়ার রাজ্যে,
চলেছ ভোগের পথে—ও সব পা'বে কোধায়? স্থ
যদি চাও, শান্তি যদি চাও, আনন্দ যদি চাও—এসো
'ত্যাগের' পথে; 'সব' ছেড়ে এগে 'তাঁকে' ধর। দেখ্বে
স্থ শান্তি আনন্দের অব্ধি নাই। কর 'ত্যাম' অভ্যাস
কর, তবেই সব হ'বে!"

—এমন ভয়ানক মিথ্যা কণা বলিয়া কি বাপু লোক ঠকাইতে হয়, না, আত্মপ্রভারণা করিতে হয়? নিজে যদি সন্ধান না পাইয়া থাক, সে কথাটা বুঝিয়া বলিভে আপতি কেন?

লেখকের যন্ত্রায় "উত্তর বেদ ও পরম পদ"
 ছইতে গৃহীত।

শায়ার' হাত এড়াইতে যাইয়া, "নেতি নেতি", "ভাগে ভাগে" করিয়াই সমগ্র ভারতটা অবঃপতনের প্রসাতলে আসিয়া পৌছিয়াছে! তুমি নিজেও যে কতটা উপরে উঠিয়াছ, কতটা স্থ শান্তি আনন্দের সম্বান পাইয়াছ, তাহা ত' তোমার দৈহিক ভোগে, বাকাের মাতনায়, অকাল মৃত্যুতে এবং মৃত্যুর সময়কার ব্যবহারেই প্রমাণিত! তবু আবার তুমি ভ্যাগের কথা মুখে আনিতেছ। মঙ্গলময় ভগবানের যে যত নিকটবর্তী হইবে, তাঁহাকে আশ্রম করিয়া মললময় বিভৃতিগুলি আপনা হইতে ততই প্রকাশ পাইতে থাকিবে। 'সিয়ার্ছ' বলিয়া তাহা উড়াইতে গেলে চলিবে কেন ?

ত্যাগ করিবে, কি হে বাপু? তোমার আছে কি খে ত্যাগ করিবে? রাস্তার তিকারী হইয়া বলিতেছ বেশল ব্যাক্ষের টাকায় আমার প্রয়োজন নাই—আমি উহা ছাড়িয়া দিলাম! মাথা রাখিবার কুটীরখানা নাই—অথচ ভড়ং করিতেছ যেন গৌতম বুদ্ধের মতই রাজ-শিংহাসন ত্যাগ করিতেছ! ধিক্ তোমাকে, আর হরন্ট ভাদের, যারা তোমার কথাটা বেদ বাক্য মনে ক'রে নিগ্যার পাছে ঘ্রিয়া বেড়াইতেছে!

যে 'বন্দাতীত' 'ত্রীয়' অবস্থার করনা করিয়া
ত্মি নিজে সেই দিকে চুটিয়া চলিয়াছ ও 'সংসারী'
লোককে যাইবাব জন্ত আহ্বান করিতেছ—
সেই 'ত্রীয়' ভাবে কতকাল অবস্থান করা চলে?
কাল অনত—দশ হাজার, বিশ হাজার কি
বিশ কোটি বৎসরই না হয় ত্মি 'সমাধিস্থ' হইয়া
'স্বত্ংখের অতীত' হইয়া রহিলে তার পর ? যধন
ব্যবহারিক জগতে আদিবে, তখনই যে 'বিবয়' গুলি
জোর করিয়া কাণে ধরিয়া তোমাকে যধন তখন আদিয়া
বলিবে—ওরে কাণা, একবার চোখের মাথা খেরে আমার
রপের ডালিটা দেখ্না ! ওরে কালা, একবার আমার
মলের রুণু রুণু রুকু রুকু শোন্ দেখি ! ওরে জড়, একবার

আমার অঞ্চল বীজনে কত মুখ, তা অকুতৰ কর্ দেখি।
তখন তুমি থাকিবে কোথায় ? মহেশ্বের ধ্যান ভল,রাজ্যছেবী মহর্ষি বিখামিত্রের উরসে শক্তলার জন্ম, পুত্রশোকে
পরমজ্ঞানী বশিষ্ঠের জলে কম্প প্রদান-- এ সকলই
ত্যাগের' নিফ্লতার জলস্ক চিত্র।

ভগবানের যে ছই বিভিন্ন বিপরীত শক্তির থেলার এই বিশ ব্রহ্মাণ্ডের উদ্ভব, ভাহার প্রভাব, ভূমি 'চক্ষু বুজিয়া' থাকিলেও, ভোমার উপর স্মান ভাবে চলিতেছে, চলিতে থাকিবে। 'চক্ষু বুজিয়া' থাকিতে মাইয়া এই উভয় শক্তির প্রভাবের অতীত একটা অবস্থা ভূমি কল্পনা করিয়া লইয়াত্র; ইহালের একটিকেও ভূমি ধরিয়া থাক নাই। অনভাচিত হইয়া 'আকর্ষণ' কর নাই। কাজেই যথন আগ্রার ভূমি চক্ষু মেলিতে যাও, ভথন উভয়টিই ভোমার উপর স্মান ভাবে ক্রিয়া করিতে আরম্ভ করে। কথনও ভোমার বাক্য স্বত্য হয়, কথনও হয় না; কথনও হয় না; কথনও হয় না; কথনও হয় না। এই ভাবে, ভগবান্ আনভ হইলেও, ভোমার অস্ত হইয়া থাকে!

ভাই বলি, অর্থহীন কথা বলিয়া দেশটাকে ও মাত্রৰ-ওলাকে আর গোলায় দিও না। 'মাত্রের মত' নাত্র যদি ভৈয়ার করিতে না পার, 'দেবতার' মত মাত্রৰ আর গড়িতে যাইও না।

'ত্যাগ' তুমি করিতে পার কিনা, পারিলে কতটুরু পার, তাহার বিচার পরে করা যাইবে। জগৎটা থে মায়ার রাজ্য অলীক ও অসার, তোমার এ কথাটার অর্থ ই আগে তলাইয়া দেখা মা'ক্।

ভগবান সভাণ কি নিভণি, তাঁহার এক মাধা কি
সহত্র মাধা অথবা মাথা আছে কি নাই—বরে বিদিয়ণ
চক্ষু বুজিয়া তাহা কল্পনা করিবার আমাব কোনই
প্রয়োজন নাই। এই বিরাট বিশ্ব তাঁহার স্ব-রচিত গ্রন্থ
—ঠাহার আন্থাকাহিনী। ইহার ভিতরে, চক্ষু মেলিয়া

চাহিলে, তাঁহার যে পরিচয় পাওয়া বায়, বর্ত্তহানে ভাহাই আমার পক্ষে যথেই।

বিশ-ভাতারে ভগবানের বিপরীত গুণের সমাবেশ দেখিতে পাই—উভয়ই অসীম অপরিষেয়। হাসিরও অন্ত নাই, কালারও শেষ নাই; সুখেরও পার নাই, ছুংখেরও স্ববধি নাই। তিনি অনস্ত অমৃতের ভাতার, আবার অন্ত গরবের ভাতার।

বিশ্ব-নিয়ন্তা নিতান্ত অপক্ষণাত। জ্ঞান অজ্ঞান, কুৰ ছংৰ, ঐশ্বয় দারিদ্রা, প্রেমদেন—এ সকল কিছুই তিনি হাতে ধরিয়া বিতরণ করেন না। আমরা যে বাহার কচি প্রেরতি এবং তদ্মুরপ কার্য্য দারা তাঁর অনস্ত ভাঙার হ'তে অমৃত বা বিষ 'টানিয়া' লই।

তার ভাগারটাই, অর্থাৎ অভিব্যক্তরূপে তিনি নিজেই विभन्नी ह खर्गन म्यादन, किंह उथानि चारना रायात, (नशात अक्रकांत्र नाहे; यूथ (यथात, (मशात कृ:थ मारे; कीवन राषात, राषात मृज्य नारे। উভয় देश অনস্ত, অতল ও অগীম। সংধারণ দৃষ্টিত পরস্পরের অর্থ বোধক এবং দীমা-নির্দেশক হইলেও প্রকৃতপক্ষে 'বিপরীত' গুণগুলি পরস্পারে গীমাবদ্ধ অতএব সাস্ত ও মিখ্যা করিয়া দিতেছে না। বিখ-ভাগুরে তার মালিকের বে পরিচয় মিলে, সে দিকে তাকাইয়া দেখ : তাই 'অজানে' ডুবিয়া রহিয়াছ—'মায়ার' হাতে আয়দমর্পণ করিয়াছ। এবং এই মায়ার প্রভাবে, তুমি প্রণতের খন্নপ দেবিতে পাইতেছ না, দেখিতে পাইতেছ সুধু মায়ারই বেলা—অসীমানত তাণের সসীম সাস্ত বিকাশ!

শারার সম্বন্ধে তোমার মস্ত ভূল রহিয়াছে। মায়াতে ভূমি কর্ত্ব আরোপ করিতেছ। ভূমি মনে করিতেছ মায়ার প্রভাবেই আমি অসত্যকে সত্য বলিয়া ধরিয়া লইতেছি! ভূমি বলিয়া ধাক—ভূপ হৃঃখ, ঐথগ্য খারিদ্রা, জীবন মরণ প্রভৃতি বিপরীত গুণের সমাবেশে গঠিত এই জগৎ সম্পূর্ণ অসার ও মস্থায়ী কিন্তু মায়ার মাহে পড়িয়া

আমি এই জগৎ খাটি সত্য বলিয়া ধরিয়া কইতেছি এবং ইহা ছাডিয়া বাইতে প্রাণে ব্যথা বোধ করিয়া থাকি!

কিন্ত ইহা যায়ার খেলা নয়--জগতের প্রতি ভোমার ষে আদক্তি, তাহা তোমারই ভিতরকার ঐশী প্রকৃতি ও শক্তির আবপ্রতিষ্ঠার চেষ্টা মাত্র। অমুশ্চাকে চাহিয়া **मिथिति एक्षिए भारेत, भवन्मव विद्यारी खनखनि** কেহট কাহাকে সীমাবদ কিংবা মিথ্যা করিতেচে না ! উভয়ই তুল্যব্ধপে সভা। কিন্তু বহিশ্চোকে তুমি দেখিতেছ, এবং দেখিয়া বলিতেছ—তাহারা পরস্পরের বিরোধী; উভয়ই অসীম অতএব অসার ও অন্থায়ী। ইহাই তোমার মারার হাতে আত্মসমর্পন। ইচ্ছাও প্রবল আত্ম-জান না থাকিলে মায়ার প্রভাব এডাইয়া জগতের স্বরূপ দেখিতে পাওয়া যায় না। সাধারণতঃ অক্ষকারের পাশে আলোর, মৃত্যুর পাশে জীবনের চিত্র কুটিয়া থাকে। তাহাতেই মনে হয় যেন ইহারা পরস্পরকে বার্থ করিয়া দিতেছে। এই বাহা-রপের অস্তত্তে চাহিয়া দেখ না, তাই দিনের পরে রাজি, এক জীবনের শেষে মৃত্যু দেখিতে দেখিতে জগৎটাকেই তুষি মিখা৷ ৰলিয়া ধরিয়া লইয়াছ ৷ এমনই ভোষার অবস্থা হইয়াছে যে, রোক্র উপভোগ করিবার সময়ও অনাগত রাত্রির অন্ধকার ও জড়তার ভয়ে তুমি সন্থচিত হইয়া থাক। ইহাই মারার খেলা। মারার প্রভাবে তুমি ৰূগতের ও আপনার স্থরপও এই উভয়ের মধ্যে যে নিভ্য সম্বন্ধ তাহা উপলন্ধি করিতে পারিতেছ না, এবং छ। इ अभीर अनस्तक मुभीय अ भास विविधा, अमन कि তোমার অন্তর্নিহিত সাধীন ও অমোদ এশী ইচ্চা-मिक्कित्क अभागत व्यक्षीन मत्न कतिया, मात्रात्र भागन-एख देशवंदे अछाद अनस মাথা পাতিয়া লইতেছ। অমৃতময় কারণ হইতে জগৎ-রূপ কার্যটাকে বিচ্যুত ও বিভিন্ন মনে করিয়া তুমি স্থাধের সঙ্গে ছঃখ এবং জীবনের সঙ্গে মৃত্যু উপভোগ করিতেছ।

মান্ত্ৰের সঙ্গে— ভাঁহাত্রই মুখায় স্থাবান্ ও চৈততে

চৈত্তথ্য মাসুষের সঙ্গে, কুকোচুরি খেলিবার জ্ঞ বিখনিয়ন্তা ভাৰার মুখের উপর মায়ার ছোমটা টানিয়া বশেন নাই। অথবা ভাষাকে প্রভারিত করিয়া ছঃখ यञ्चनायत्र मश्माद्य विसूध कवित्रा वाचिवाव क्छ कान्छ ব্দনীখরী শক্তি যে এইরপ করিতেছে তাহাও নহে। প্রাকৃতিক নিয়মাবলীরই সাধারণ নাম-মায়া। জড়পগতকে ভগবান আপনার চৈতক ও ইচ্ছাশক্তি হইতে ব্ঞিত রাথিয়াছেন, তাই ইহার 'উৎপত্তি, স্থিতি ও লয়' সাধনের ষ্ঠ্য তিনি কতকগুলি বিধান করিয়া রাখিয়াছেন। **এই বিধানের বশবর্জী হইয়াই, পুথিবী অবিরত গুরিয়া** चुतिशा व्यामानिगरक व्यारमात शास व्यक्तकात এवः অন্ধকারের পরে আলো এবং পার্থিব বস্তুর অসারতা উপভোগ করাইতেছে। চৈতক্ত ও স্বাধীন ইচ্ছা-শক্তির অধিকারী হইয়াও মামুষ আপনার স্বাতন্ত্র্য উপলব্ধি करत नारे, वतः व्यापनारक्ष এरे क्ष्रुक्गरज्त विवास्त्रत्रे অধীন মনে করিয়া, আপনার আত প্রাকৃতিক সন্বাও শক্তি আপনিই ধর্ম করিয়া লইয়াছে। প্রাকৃতিক विधान मानिया लहेया (भट्टे शीमात मर्थाहे (म व्यापनात व्यामाय देवहा-मक्ति श्राद्यांश कतिएएए-छाई भार्थित অসারতা তাহাকে মধ্যে মধ্যে আলাইয়া আসিতেছে। (य निषिक् "छान-छक्त कन" खक्कण कतिया ज्यानम उ हें आनवकाठिक मन्यभाग कतिशाहित्यन, এই भाषाई পেই জ্ঞান তর্য। য়তদিন উাহার। 'উলক' অবস্থায় हिलान, व्यर्थाय छै। हाराहत याशीन हेक्का मास्क व्यापनारक থর্ক করিয়া মায়ার প্রাকৃতিক বিধানের নিকট মন্তক व्यवन करत नारे, उठ दिनरे ठाराता पूर्व व्यानस्त ছিলেন। যখন ভাহারা আপনাদিগকেও জড্জগতের विषात्नत्र व्यशीन मत्न कतित्वन, ज्यने हैं जीशास्त्र ज्या মানবজাতির মরণ ডকা বালিয়া উঠিল।

চৈতন্যও স্বাধীন ইচ্ছ। বিবর্জিত জড়জগতের জন্ত তিনি যে বিধান প্রণয়ন করিয়াছেন, সর্কালজিমান ভগ্রান নিশ্চয় সে বিধানের বশবর্তী নহেন, তাহারই

रैहल्या रेहल्यामा छात्रावर रेष्ट्रामल्याल मिल्यान মামুবও এই বিধানের অভীত। ইচ্ছা করিলেই সে আপনার ইচ্ছাশক্তি ভগবানের ইচ্ছা-শক্তির সঙ্গে সংযুক্ত করিতে পারে এবং এই ভাবে আপনার সকল ইচ্চাই সার্থক করিতে পারে, আপনার বাঞ্চিত বস্তু আকর্ষণ করিয়া অনন্তকাল ভোগ করিতে পারে। ইহাই তাহার कीवरनत नका ७ भत्र भतिगिति। हेव्हात এই रि चाकर्रगी मिक्कि, देशारे रहेन आकृष्ठिक विशासित मरशा ( अर्थ ७ व्यवका विशान। अर्थ विशान व्यवकाद्वर यक অতিপ্রাকৃতিক ব্যাপার সম্ভবপর হইয়াছে। ক্রডলগতের निश्य-वक्त कीवन याशन कतिवात कल मारू विद विकास इत्र नारे। व्यापनात रेष्ट्रामिक अस्त्रांग कतित्रा, नामना-অফুরপ বস্তু স্টিও তদ্বিপরীত বস্তু বিনাশ করিয়া. তগবানের পূর্ণ মঙ্গলময় জীবন যাপন করিবার জন্মই তাহার উন্তব। যতদিন সে ইহা না করিবে, ততদিন তাহাকে জন্ম মৃত্যুর চক্রে ঘুরিতেই হইবে। অভ্রমণতের বিধান মানিতে যাইয়া সে যদি মায়ার হাতে আগ্রসমর্পণ করে, তবে কে তাহাকে রক্ষা করিবে ? যতদিন না আমুট্রতনার বিকাশ হইয়া তাহাকে তাহার ইচ্ছা-শক্তির কথা শ্বরণ করাইয়া দিবে, ততদিন পর্যান্ত "চক্রবৎ পরিবর্ত্তন্তে সুখানি চ ছঃখানি চ" ভারাকে हाएए हाएए छेलनिक कतिए उहे दहेरत, यथन तम रमिरत, তাহার ইন্দার উপর ইন্ছা নাই, তখনই সে ঠিক বুঝিবে---. ''পোহম'' আমি সর্কশক্তিমান, আমি ইচ্ছাময়। তথনই ভাহার প্রকৃত মোক-প্রাকৃতিক বিধানের অভীত व्यवश्रा नाज दहेर्य।

স্বাধীন ইচ্ছানয় পুরুষের বাদনা ও আকর্ষণ অক্সদারে ভগবানের অনস্ত ভাণ্ডার হইতে মক্সল ও অমকল উভরই অনস্ত ধারায় বিশ্বত হইয়া থাকে, মাধায়—অজ্ঞানে অর্থাং জড় হগং সম্বন্ধীয় জ্ঞানে—আচ্চন্ন হইয়া আপনাকে এমনই থকা কার্যা কেলিয়াছে যে, মিগাকে—বাহা তোমার সম্বন্ধ প্রব্যাল্য নহে ভাবাকেই—প্রা

ছবিয়া বেড়াইতেছ।

देवनाव 20२१ ধরিরা লইতেত। ভাই দিনের পর রাত্রি উপভোগ করিতেছ, কিন্তু প্রকৃতপকে দিন অমুরস্ত রাত্রিও অমুরন্ত, एक विद्या, धतित्रा थाकिए भाव ना वित्रा, भर्गायकत्म এই দুইটিই উপভোগ করিতেছ। একই স্থ্য একই স্থানে থাকিয়া সমান ভাবে আলোক ও উত্তাপ বিতরণ ক্রিতেছে; পৃথিবীটা সরিতেছে বলিয়াই ত এশিয়ার শুর্ব্য আমেরিকার দিন করিতেছে। কিন্তু সূর্যোর দিন ৰুৱার বিশ্রাম নাই। চঞ্চল পৃথিবীকে আশ্রয় না করিয়া যদি অচঞ্জ স্থাকে ধরিয়া থাকিতে পারিতে, তবে দিন ছাড়া রাত্রি যে কখনও আছে, তাহা কি তুমি কখনও व्यानिए भारेए ? ना, त्रावित चनाक्रकात निवातरात क्य **শন্ধকারের গণ্ডী ''ত্যাগ" করিবার জন্ম, ক্ষীণশক্তি দীপের** মাহাযা লইভে ফাইতে ? এই চঞ্চল পৃথিবীর উপরেই हारित्रा (१४। নরওমে দেশের লোকের ত, রাত্রি বলিতে আমরা যাহা বুঝি, তাহার সঙ্গে একরপ পরিচয় नारे विलाल करन। (म प्राप्त त्वाक (य "निमीथ ভাষর"ও উপভোগ করিয়া থাকে! মায়া ভোমাকে बाइ मठा উপলবি করিতে দেয় না। তাই তুমি আলো ও আঁধার এই উভয়কেই সমানভাবে মিখ্যা বলিয়া এই উভ্রের অতীত একটা কল্পিত অবস্থার অসুস্ধানে

ভাই বিশিতেছি, মায়ার হাত এড়াইবার নাম করিয়া
"ভাগের" পথে চলিতে যাইয়া মায়ায় আরও অড়াইয়া
পড়িও না। ভাগের কথা মুখেও আনিও না—মায়াকে
আমলই দিও না। তোমার জন্ম ত মায়ার প্রয়োজন হয়
নাই। ভিডরের দিকে তাকাও—চৈতনার কথায়
মনোযোগ দেও—অচঞ্চল স্থাটিকে, তোমারই আমাল
ইচ্ছা-শক্তিটিকে, আকড়িয়া ধর, তবেই অস্ককারের গণ্ডী
পার হইয়া, আলো, অনস্ক আলোর রাজ্যে উপস্থিত
হটবে। কেবল, কি তুমি বাগুবিক বস্ত্ত, তাহাই
আনিয়া লওয়া এবং ভাহাই ধরিয়া থাকা, আর সেই
পদার্থের যে অনস্ক ভাগার ভাহার সঙ্গে ভোমার সংযোগ

অৰিচ্ছিন্ন রাধা—ইহাই হইল তোমার কাগ্য। ইহা
করিতে পারিলেই অচিরেই দেখিতে পাইবে, মায়া
অতিক্রম করিয়াও, তোমার বাসনা চরিতার্থ হয়।
তোমার ইচ্ছা-শক্তি আপনাকে সার্থক করিয়া থাকে।
উপলব্ধি করিবে—সর্বাধিজনান, স্বক্তিও স্বক্ত বিদ্যানন
মহেশ্বর হইতে তুমি অভেদ। বুবিবে মায়ার চশমা
পরিয়া একদিন তুমি যাহা মিথাা বলিয়াছ, ভাহা
নিতাস্তই গাঁটি সভা।

ভ্যাগের সম্বন্ধে আর একট। কথা ভাবিয়া দেখা।

যাহা তুমি ভ্যাগ করিতে চাও, সেটাই ভোমার মন্তিক
এবং চিত্ত উভয় জুরিয়াই বিসিয়া থাকে, ভাহারই চিস্তায়
তুমি জাকুল, তাহারই ভাবে তুমি তল্ময়, কালেই
"ভ্যাগ" করিতে ঘাইয়া, "ভ্যজ্ঞ" বস্তুটাকেই তুমি
অজ্ঞাতদারে বরণ করিয়া লইতেছ—আকর্ষণ করিতেছ!
"বৃঃধের আত্যন্ত্রিক নির্ভ্তি" করিতে ঘাইয়া, "কামিনীকাঞ্চন" ত্যাগ করিতে বলিয়া, ছঃখটাকেই, কামিনীকাঞ্চনলৈই ভূমি ধ্যায় বস্তু করিয়া তুলিয়াছ! এই
কারণেই সাধারণতঃ দেখা যায়, যে সকল অমুষ্ঠানের
মূলে "কামিনী কাঞ্চন" বিদেষ বা ভয়। সেই কামিনীকাঞ্চনের অতিমাত্র সমাগম ইইতেই ভাহাদের পতনের
স্ত্রপাত হইয়া থাকে। এইভাবে, আকর্ষণশক্তি
অজ্ঞাতদারেও, আয়প্রতিষ্ঠা করিয়া থাকে।

ইহার কারণ খুঁঝিতে বেশী দূর যাইতে হইবে না।
আশা ও আকাজ্জার অপেলা ভয়, উদ্বেগ ও সন্দেহের
শক্তি সাধারণ জাবনে অনেক বেশী। ভয়ে যতটা
একাগ্রতা জয়ে, 'ভয়ানক' জিনিষটার দিকে মনটা
যত সহজে আকট্ট হয়, আশায় কখনও ততটা একাগ্রতা
জয়ে না কিংবা 'আশাপ্রদ' বস্তটাও কখনও তত সহজে
মনটা আকর্ষণ করিতে পারে না। আশার সজে সঙ্গে
যে আশক্ষার উদয় হয়, তাহার প্রভাবই বেশী, না,
আশক্ষার ঘন মেঘের উপর যে আশার বিহাৎকাক

দিয়া ওঠে, ভাহারই প্রভাব বেশী, ভাহা ভূমি নিকেই ভাবিয়া দেখিও।

ত্যাপ করিবার ইচ্ছার মূলে ছ: ধের শ্বতি। সেই
শতি হইতেই বিরক্তি ও ভয়ের উত্তব। সকলেই জান,
শ্বের শ্বতি অপেকা ছ: ধের শ্বতির প্রভাব কত বেশী।
ছ: ধের সাগরে ডুবিবার সময় অতীত স্থের কথা মনে
হইলে হো হো করিয়া হাস, না, আরও হ: ধে ডুবিয়া
মাও? আর, স্থের সাগরে ভাসিয়াও অতীত হ: ধের
কথা মনে হইলে, স্থেটাই বেশী গভীর হইয়া ওঠে,
না, ভবিষাতের জন্ম আশকাই বেশী জাগিয়া ওঠেও
বর্তমানের উপর অতীতটা ভাসিয়া উঠিয়া চোধের জলে
বুক ভিজাইয়া দেয় ?

ভাই বলিতেছি, যার অন্তিত্বের মূলে ছংখের ছতি; ভয়, উদ্বেগ, আলভা ও বিরক্তিতে যার দেহ গঠিত দেই 'ভ্যাণের' কথাটা শুনাইও না। অর্জন করিতে থাক, বর্জন আপনা হইতেই হইতে থাকিবে।

खना'रव यमि, खनाख-धहरणत कथा आकर्षरणत क्या! ७ नाथ देवहात अभीम आकर्षनी मक्टित कथा। প্রাণে একাত্তিক ইচ্ছা উদিত ভইলে তাহার আকর্ষণে ভগবানের অনন্ত ভাণ্ডার হইতে সুথের অজ্ঞ অনন্ত প্রবাহ ছুটিয়া আবে। সংসার ছাড়িয়া যাইতে না বলিয়া "সংসারী" জীবকে বল অন্ত অমৃত ভাণার इटेए अमृड-कान ( अर्था९ शकान ও विकान ) मनन, जैचेरी मह्दन्छा, सूथ माखि, जानम त्थ्रम ७ विदान, त्राश्र **७ (शोन्पर्या, मिक्कि ७ शाहश, शिक्कि ७ क्षीवन-- व्यर्था**: मन्द्रावत पूर्व डा-- शहर कति एड, चाकर्ष कति एड। ७ नाउ দেই অমৃত্যর সত্য—অনুভচিত্তরতো (যে জনা: মাং পুৰ্বাসতে, তেষাং নিত্যাভিযুক্তানাং ষে'গকেষং वहामाश्य्" कनम-शङ्गीत श्वरत कानाहेन्रा पाछ, मन्ननमन ्निक गूर्य विशाहिन, य जायाक वहे कान ना, नर्सना আমারই চিন্তা করে,ভাহার সেই ডিন্তার--আকর্ণের-

জোরে অনস্ত মঙ্গণ তা'র বাড়ীতে আমি মাধার করিরা পৌছাইয়া থাকি।

শাটির মাসুবং হইতে আর কথনও বলিও না।
বাধীন ইচ্ছা বিসর্জন ও অহলার ত্যাপ করিতে লিথাইরা
ভগবানের চৈততে তৈতক্তময় এবং তাঁহারই যারা
অমুপ্রাণিত, সঞ্জীবিত, পরিপুষ্য ও পরিবর্জিত মাসুবকে
আর হৃংবের পথে পাঠাইও না—জীবসূত করিয়া
রাখিও না। যে পীতার এত বড়াই কর, সেই পীতায়
অহলারের যে বিকাশ, তাহা অত কোণাও দেবিয়াছ
কিং? ভগবান্ তোমাকে কি বলিয়াছেন, কি
লিখাইয়াছেন ?—গলিয়াছেন, বিশাস করিতে আহ্বান
করিয়াছেন, যাহা শ্রেষ্ঠ, যাহা আদর্শ, তাহাই আমি।
আর তুমি কি গুনাইতেত ?—তুমি গুনাইতেছ, মান
অভিমান সব ত্যাগ ক'রে মাটির মাসুব হও!

ষিনি পূর্ণ জ্ঞান, অনস্ক বিজ্ঞান, অপরিমেয় শক্তি, তাঁহারই অংশ, তাঁহা হইতে অভিন্ন, তাঁহারই জীবনে জীবিত, তাঁহারই তেজে উদ্ভাগিত জীবের চক্তুর সমূর্যে আর তুমি জীবন্তর চিত্র কুটাইয়া তুলিও না। তার প্রাণে অহকার জাগাইয়া লাও—বলিয়া লাও তাকে—বেকে, কত বড়; আপনার মূলটা আঁকড়িয়া ধরিলেই, হা হুতাশ, বিলাপ পরিভাপ, আশক্ষা উবেপ, সন্দেহ ভয় পদ-দলিত করিয়া, পরের দিকে না চাহিয়া আপনার ভিতরের দিকে চাহিলেই সে যে বিরাট, সে যে মহান্, সে যে মজলমন হইয়া বসিতে পারে।

আকর্ষণই প্রাক্ষতিক বিধানের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বিধান।
সমস্তটা বিশ্ব জুরিয়াই আকর্ষণ শক্তির খেলা চলিতেছে।
এই আকর্ষণ-প্রভাবেই গ্রহ-নক্ষত্র অনস্ক শৃত্যে বুলিয়া
রহিয়াছে। অকার্যণেই পূর্ণতা সাধন, আবার আকর্ষণেই
অপচয় ঘটয়া থাকে। আকর্ষণেই ভগবানের সঙ্গে
তাঁহার বিরচিত বিশ্বের সংযোগ-স্ত্র। বিশ্বের অন্তর্ভূক্ত
বলিয়া ভূমিও আকর্ষণের অধান, এবং এই আকর্ষণের
প্রভাবেই ভোমার ইচ্ছা-শক্তি ভগবানের অনন্ত ভাঙার

বরিয়া টান দেয়। যথন ভোমার মন কোনও বস্ত হারা আকট হয়, তথন তাহাতে একটা বিশেষ তাবের বিকাশ হয়। সেই ভাব হইতে চিন্তাবিশেবের উদয় হয় এবং এই উভয়ের সংযোগে ভাবটা গাচতর হইয়া করনা কার্য্যকরী হইয়া ওঠে। বস্তটার আকর্ষণে প্রথমে ভোমার মনে বে ভাবের উদয় হইয়াছিল, সেই ভাবের ভাঙার হইতে বর্ণ ত্লিয়া লইয়া করনার ত্লিকা এখন হছাকে বেশ করিয়া রঞ্জিত করিয়া থাকে। ইহার ফলে ভোমার মনে এখন একটা অতি প্রবল ভাবের উদয় হয়। এই ভাবকেই তুমি ক্ষবিচারে 'রিপু' বলিয়া থাক। রিপু যথন লাগ্রত হয়, তখন তুমি আর ভোমাতে থাক না—থাক সেই রিপুতে, এবং ক্ষলক্ষিতে ভগবানের ভাঙার হইতে, রিপুর প্রকৃতি অফুসারে শুভ কি অশুভ আকাজ্যাও আকর্ষণ করিয়া থাক, প্রথমকার স্থাবের কিছাবের ভাবটা এখন বেশ প্রবল হইয়া ওঠে।

ইহা হইতে বুঝিতে পারিতেছ, ইতিমধ্যেই তুমি
মনে মনে অনেক পরিমাণ মধল কি অমঙ্গল আকর্ষণ
। করিয়া আনিয়া বেশ সুখ কি ছুঃখ উপভোগ করিতেছ।
আরপ্ত যদি রিপুকে প্রশ্নর দেয়, তাহা হইলে ভাব শীঘ্রই
কার্য্যে পরিণত হইয়া, রিপুর শক্তি অমুসারে, বান্তব সুখ
কি ছঃখ তোমার বাবে আনিয়া উপস্থিত করিবে।

এ পর্যস্ত তোষার কার্যোও অল্পবিস্তর পরিমাণে বিকশিত মানসিক শক্তিসম্পর ইতর প্রাণীর কার্য্যে বছ বিশেব পার্বক্য নাই। কিন্তু তোমার তৈতন্ত ও বাণীন ইছা আছে, তাহা তাহাদের নাই। ভাবের প্রথম বিকাশের পরে অথবা রিপু জাগ্রুত হইবার পরেও বদি তুমি কলাফল সম্বন্ধে বিচার করিতে বস, এবং স্কুফল ও কুফল অনুসারে যদি ইছ্যা-শক্তি প্রয়োগ করিয়া প্রথম ক্ষেত্রে রিপুর শক্তি প্রতিহত কর,তবে তুমি,প্রথম পক্ষে প্রত্যক্ষ ভাবে ও বিতীয় পক্ষে পরোকভাবে, মঙ্গল আকর্ষণ করিয়া আনিবে।

देश इहेट प्रविद्ध शाहेटक, बाहाटक क्रि 'विश्व' কল, দেই রিপুর মারফডই আমরা ওভাওভ আকর্বণ করিয়া থাকি। কেহই কাহাকে কিছু আনিয়া দেয় না-আকর্ষণের শক্তি ও আকৃষ্ট বস্তর প্রকৃতি-অমুগারে আমুরা व्यक्त कि व्यक्षिक शतियात पूर्व दृश्य देखानि शाइश् थाकि। यनि अविभिन्न ७ अन्य न्यूष भारेतात बना देष्ट्रा-मक्ति প্রয়োগ করা হয়, তবে সেইরূপ সুধই পাওয়া যায়। মায়া-প্রাকৃতিক বিধান স্বাধীন ইচ্ছা-বিকৃত্তিত স্টির জন্য। মামুবের ভাগ্যবিধাতা—তাহার স্বাধীন ইচ্ছা ও আকর্ষণী শক্তি। আকর্ষণী শক্তির হাতে অবিচারে আন্ত সমর্পণ করিয়া রিপুর প্রস্কৃতি অমুসারে দে গীমাবদ্ধ ও হঃখ মিশ্রিত সুখ পাইয়া আসিতেছে এবং 'মোহ-মুদার' আওড়াইতেছে। একবার যদি সে স্বাধীন ইচ্ছা পূর্ণভাবে প্রয়োগ করিতে আরম্ভ করে, ভবে শীঘ্রই তাহার 'দ্রংখের আত্যন্তিক নিত্ততি' হইয়া মোক—ইচ্ছার व्यवाध नाधीनका ও जादात करन देहेनिकि-नाक दहेरत।

তাই, অহকার দমন করিতে না বলিয়া, জানাইয়া
দাও মাহবকে—তা'র আকর্ষণের কি জ্পীম প্রভাব।
আকর্ষণ করিতে পারিলে, জ্পীমানস্ত ভগবান্কেও সে
তার আকৃষ্ট গুণের সমবায়ে গঠিত করিয়া আপনার
স্মূর্বে দাড় করাইতে পারে—আপনার জ্ঞিনিতি
বিষয় তাঁহাকে দিয়া বাস্তব সত্যে পরিণত করাইয়া তুলিতে
পারে।

विक्युमिनीकास शासूनी ।

সভাপতি মহাশয় ও ভদ্রহোদয়গণ,

লাপনারা কট্ট সীকার করিয়া যে **আন্ধ এবানে** উপস্থিত হইয়াছেন, সেই জন্ম আপনাদিগকে আমি আন্তরিক ধন্যবাদ জ্ঞাপন করিতেছি। আমি আৰু বৈ কথা খনিতে উপছিত ছইরেছি গে কথা মৃত্ন' নহে—সত্য চিরকালই পুরাতন। তবে হয়ত, উপলবির তারতহা অসুসারে এবং শুছাইয়া ভাবিবার ও খনিবার বরণের বিভিন্নতাবশতঃ চির পুরাতন স্তাটাও অভিন্য খোধ হইতে পারে। আশা করি, চিরপ্রচলিত বিধাস ও ব্যবহারের বিক্লম্ব বলিয়া বোব হইলেও, নিজের ভ মানব সমাজের প্রকৃত কল্যাণ সাধনার্ধ, বিষয়টা সম্বন্ধে একটু চিন্তা করিতে উপেকা করিবেন না।

বাহল্য তরে বর্তনান প্রবন্ধে আবি বাধীন ইচ্ছার বিকাশ সম্বন্ধে বিশেষ কিছুই বলিতে চেষ্টা করি নাই। বলি আপনাদিপের, জানিবার কৌত্হল হয় বারান্তরে সেই সম্বন্ধে আলোচনা করা যাইবে।

## মনশ্চক্ষুঃ।

কোথাও সে ভ সুকায়ে নাই আলিছ মিছে প্রদীপচয় সেত থো নহে খনতম্যালিপ্ত ষঠীক্রিয় করেছে তারে আলোর ভূমা, অতাবে নয় ভাত্র ভাতু সে যে গো মহাদীও। অৰুত রবি জেলেছে বেবা সে কি গো কভু আঁধারে রয় 🕈 जात्नाक खात्न हातारन क्षेत्रास ! **चाचरत (क्वा दितिए प्रामा अमील बार्म गगनमत्र ?** আলোর ভূষা হয়েছে তব পাস। ভাৰার পানে চাহিতে ওমো ঝলসি যাবে তোমার টোপ আঞ্চন হয়ে উঠিবে সারাগাএ ৰে আঁৰি তৰ ঝলসি যায় সে আঁৰি তব দগ্ধ হোক চাহিতে হবে ভবুও অহোরার। ৰে খাঁৰি তব ভাহার ভেজ সহিতে কভু পারেনা হায় मध इल (म आँथि भिक्ष मर्माकारम धूनिराव छव नृत्रन चौषि उपन छात्र (त्रोज, रूप ठळारगाक विक।

ফুটিলে মন' জাঁপি কুর্দ, ইন্দু হয়ে দীপ নান কোর্দীতে সে বে গো স্থা বংট কঠোর তপে দেহের জাঁথি কোটরপত হইলে ব্লান বনের জাঁথি হেরে গো নীলকঠে।

विकालिलाम द्राप्त।

## ছোট' লেখা। [ দৃষ্টি ও চিন্তা]

( > )

ছোটে। জিনিষটে 'বড়'রই একটা অংশ,—বদি ভার 'প্রাণ' ণাকে তবে প্রসারিণী শক্তিও থাক্বে। 'অনছ' জিনিষটে সে হয়তো বোঝেই না,—কিন্তু সে 'অনভের' নিতাত্ত আপনার জন; জাতি,—কুটুর।

( २ )

ছোটো একটা পশী—শিশু! তার মাজা অপর ঠাই থেকে মুখের ত্তের ক'রে খাবার এনে তা'কে 'হাঁ' করিছে খাইয়ে দিছে। বিষয়টা ছোটো,—কিন্তু এটা বিশ্বস্থাণ্ডের অনন্ত, অতুলনীয় মাত্-সেহের একটা দিক,—বে দিকটে না বুঝ্লে হাই অপতের অনেকটা দিক বোঝা বাকী রইল!

( 0)

সন্ধ্যার প্রাক্কালে পাণীগুলো কাঁক ব'রে উদ্ধেষ্টার,—আকাশের সব চেয়ে উচু প্রকেশ দিয়ে।
কোবায় যায় ?—তা'দের নীড়ে। দিনের সমন্ত কার্য্য সমাধা ক'রে, সেই নিতাল পরিচিত সহচরগুলি একরে দল বেংব,—মানবের বিত্তীর্থ কর্মক্রেন্ডালকে বহু নীচে রেখে.—আনন্ত শৃক্ত পথ দিয়ে তারা চলে বায়।

ছোটো পাৰীশুলি !—তা'দের যাবার প্রশালীটা দেখে কিছু ভাবতে বদ্তে হয়। তারা বড় অনায়াসেই চ'লেছে,—কোনো ব্যস্ততা নাই, অধীরতা নাই,—ভাদের গতি সংঘত, নিশ্চিম্ভ। তারা জানে, তারা কোধা' যাক্ছে; তা'দের কার্য্য প্রশালীটা অনস্কের জ্ঞাতি সম্পর্কিত।

তবু তারা ছোটো পাখী,—তা'দের নীড়ও হয়তো ছোটোই; অস্তঃ বে!ধ হয় ইট-পাণরের ত্রিতল গৃহ না—ও হ'তে পারে।

( 8 )

একটী পরমার ছোটো,—খুব ছোটো; ভাকে হয়তো দেখতে পাইনে,—কিন্তু তাকে যদি কখনো স্পর্শ কর্তে পারি তবে অনস্তের 'সংস্পর্ণ' কেন্দ্র তার পরিচয় পাওয়া যাবে।

ছোটো একটুকু ছেঁড়া নেক্ড়া বা একটুকুমু ছাই,
ভারো দরকার হয়। চক্চকে মুন্দর কাচের শিশিগুলিতে
ভাল গাঁটী দাওরাই পাক্লেও দেওলি যদি একত্র রাখা
খাব, অনক সময় তারা ঠক্কর লেগে ভেলে যেতে পারে,—
শিশিগুলোর কাঁকে ছেঁড়া নেক্ড়া দিয়ে রাখ্লে হয়তো
ভা' হবে না। আর গুনিছি জ্মীর ভাল সারেও কখনো
কখনো 'ছাই'—চাপা দিতে হয়, নইলে দেগুলো 'মাটী'
ছয়।

( \* )

আঁথার না পাক্লে আলোর মূল্য থাক্তো না। এক জায়গার 'ভগ্ন' অবস্থা অপর জায়গার পূর্ণহকে প্রকাশ করে।

ভ'লা ইট গুরকিতে আগুো ইট পাধ্যে 'লোড়' লাগিয়ে তবে-তো 'ইমারত' তৈরী হয়।

( 6 )

্ সাহিত্য-ক্ষেত্রে, 'সহজ' জারু 'দাধারণকে' নিয়ে ক্ষানো ক্ষানো 'গোলে' পড়তে হয় ।

একদিন একজন পাঠক বলেন,---"ভারি-ভো লেখা ?

ন্দামিও এ-টা বিশ্তে পারতুম; কথাটা সহল ও সাধারণ,—আমার মনেও এটা কভ-কাল থেকেই র'য়েছে।"

লেখক সেখানেই ছিলেন,—পাঠক তাঁকে জান্তেন না। লেখক তাঁর একজন সাধীকে ব'ললেন,— "আয়ার এত বড় সুখ্যাতি আর কেউ করে মি !"

যে-টা মাকুষের মধ্যে চিরকাল আছে নেইটে ভাল ভাবে নোলাস্থল ব'লতে পারলে তা' লাহিত্য; বে-টা তেউ কথনো লান্ভো লা;—ভাবে-নি,—নে-লৈ ব'ললে ভা' একটা 'বৈজ্ঞানিক আবিদ্ধার' হ'তে পারে; সাহিত্য দে-টা না-ও হ'তে পারে।

( 9 )

সাহিত্যের যে-টা 'ধবর' তা পুরোণো হয় না; 'নুতন' পঞ্জিকা ক-দিন পরই 'পুরোণো' হ'য়ে পড়ে।

একটা অতি 'মামূলী' ধরণের ডিটেক্টিভ বইয়ের
মধ্যে জান্বার বিষয় দশ পাঙা উল্টিয়ে দেধবেই লার।
হ'লো। হারড়া 'টেলনে রেল পাড়ীতে যে মৃতদেহ
একটা বাজের মধ্যে পাঙ্যা গিয়াছে দে-টা বলি
উমাস্ফরীর দেহ ব'লেই একবার বুঝে কেলা গেল,
তবে দেই বইটে আর না পড়লেও চলে।

কন্ত-কালীদাসের শক্রলা শেবটায় হলতের কাছে যেতে পেরেছিলেন কি না; দেকসপীররের ওথেলো তাঁর স্ত্রীর মৃত্যুর পর কি ক'রলেন, পোর্লিরার বন্ধুভার পর নাইলকের মোকদমার কি হ'লো;—বর্ত্তমান বৃগে বর্দিমের কুন্দনন্দিনীর কি অবস্থা হ'য়েছিল; রবীজ্ঞনাথের কুমার সেনের কি ক'রে মৃত্যু হ'লো, কাবলিওয়ালার 'বেঁ।কি'কে দেখবার সাধ হ'তো কেন,—এওলো শতসহন্ত্র বার প'ড়ে দেখে, জেনে ফেল্লেও তারা চির-নবীন। কত মাহ্ব এ সব প'ড়েছে,—কত তবিষ্যংযুগে আরো পড়বে,—কিন্তু এর প্রত্যেকটী কথা, প্রত্যেকটী অক্ষর প্রত্যেকবার 'নৃত্তন' লেগেছে আর লাগবে।—এশ্ভলি সাহিত্য।

#### ( b)

'অসাধারণ' জিনিবটে ভাল,—কিন্তু 'নাধারণকে' আনাটাও ভাল।

আমরা বে শিভাছই 'সাধারণ'! তাই পৃথিবীর সাধারণ ধৃলি, সানের সাধারণ হুর, ছেলে-পেলের সাধারণ হালি,—গাভীর বৎস অফুসদ্ধানে সাধারণ চেষ্টা, লোহন-কালে সদ্য-বিচ্ছিন্ন বৎসের দিকে তাকিয়ে সেই গাভীর সাধারণ কাতরতা,—এক-একঞ্চনকে এত 'অসাধারণের' মধ্যে ড্বিয়ে দেয় যে 'এক জন্ম' এগুলিকে না-দেশে যদি 'সহজ জন্ম' দেখা-বেতো তবেও বৃনি ভার ধালি 'সাধারণ' অক্ষর পরিচয়ই চন্ত্রতা।

वीत्रद्रमध्य परेक।

## মৈমনসিংহ জেলার আটিয়া পরগণার প্রসিদ্ধ দাহিত্য দেবকগণ।

वहकि एखवानी अमाम।

খুঠীয় বোড়শ শতাকীর অবসাল কালে স্থায়ি ভবানী প্রসাদ কর কাঁটালীরা প্রামে জন্ম গ্রহণ করেন। ইনি জাতিতে বৈছ ছিলেন। তাঁহার কৌলিক উপাধি কর রায়। ইনি জন্মান্ধ ছিলেন। তাঁহার বর্ণবােধ ছিল না। তিনি মার্কণ্ডের চণ্ডীর পদ্মান্থবাদ করিয়া বিশেব ক্ষমতার পরিচর দিয়াছেন। লােকে তাঁহাকে অন্ধকবি ভবানী প্রসাদ বলিত। তথন লােকের নামের পূর্ব্বে এইরপ উপাধিই ব্যবহৃত হইত। এমন কি, কবিগণের নামের পূর্ব্বে ধন্ত, জাঠকাটা, থােলবেচা, নির্বোত প্রভৃতি উপাধি দেখা খায়। খথা কাঠকাটা জগরাণ, ধন্ধ ভগবান, খােলবেচা শীধর, নির্লোভ সলারাম ইত্যাদি। বাহা হউক, শীরুজ রসিকচজ বস্থ মহালয় এই অন্ধ কবিকে প্রকটিত লা করিলে আমরা তাঁহার পরিচয় দিতে পারিভাম মা।

#### **४ कि वलकृष्ठ वर्ष**।

৺ কৈবলক্ষ বসু ১২২২ সালে "কাশীবও" নামক এছ প্রশেষনকরেন। তাঁহার নিবাস কেলারপুর। ইনি উলিবিত ক্ষাদ্ধ করিব মৃত্যুর শতাধিক বংসর পরে ক্ষম এছণ করিয়াভিলেন।

#### ষুত দাগুমিঞা।

মৃত আকুল আলী খাঁ ওরকে দাওমিঞা চাড়ান থামে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। তিনি সাহিত্যিক ছিলেন। তিনি কয়েকধানা পুত্তক প্রণয়ন করিয়া-ছিলেন। তাঁহার পিতার নাম মৃত ব্যরত আলী খাঁ।

## ৺নবকান্ত ভট্ট।

ভাগমানীতে বাস করিতেন। আজকাল যেখানে ছাওমানীতে বাস করিতেন। আজকাল যেখানে প্রিয়ক্ত শংক্তক্ত সাহার বাড়ী অবহিত, ইহার ভিছু পূর্কাদিকে এই কবির বাড়ী ছিল। তদানীস্তন জনৈক ভূমাধিকারী তাঁহার কবিতা প্রবণ পূর্কাক সন্তই হইরা করেক পাখী জমি নিজর দিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার উত্তরাধিকারী এই স্থ জমি বিজয় করেল।

#### পরস্বাগর আচার্য্য।

পরস্থার পারক ষরমনসিংছ জেলার একজন প্রসিদ্ধ গায়ক ছিলেন। বঙ্গীয় ছাদশ শতাজীর অন্তিমকালে বাঙ্গলা গ্রামে শাক্ষীপিয় ব্রাহ্মণকুলে তিনি জন্মগ্রহণ করেন। তিনি শৈশবে ধ্লা খেলা ছাড়িয়া চিভোন্মান্ধক ও প্রান্তিহর সঙ্গীত বিভার অসুশীলনে মনোনিবেশ করেন। তখন গ্রামবাদী বছ লোক তাঁহার সঙ্গীত গুনিয়া পরম আনন্দিত হইডেন। এমন কি ক্লেক্স্ক্ ক্ষককুল ও প্রকিগণ তাঁহার গান গুনিয়া তাঁহার স্ক্লিকটে গ্রম্ম করতঃ ক্লান্ত ও অবসন্ন প্রাণে শান্তি অমুভব করিত। শ্রোভাগণ গমন কালে বালককে বস্থান দির।
বাইত। তথন পদ্লীতে সুল, পাঠলালা ছিল না। তিনি
১ বন্দ, থ, বার কলা প্রকৃতি দিশ্রণ করিয়া পিড্সরিবানে
নংশ্বত শিক্ষার মনোবোল প্রদান করেন। তিনি অর দিনের
মধ্যে অভিনিবেশ, অধ্যবসার প্রভৃতি ছারোচিত গুণে সমি,
ভারক, সমাস, হুৎ, তদ্বিত, ণাডুপ্রতায়, কাব্য, অলম্বার
প্রভৃতিতে প্রভৃত জ্ঞানার্জন করেন। সঙ্গীত ও বিভালোচনা
ভারার চিরস্থী-ছিল।

ক্ৰিড আছে, একলা তিনি খগ্নে দেখেন, ভগবান শ্বরং ভাহকে বলেন, "রক্ষনাগর, তুমি রামমকল গাহিলে রিশেষ খাতিলাত করিতে পারিবে।" তন্তুসারে ভিনি সংস্কৃত টোল ভাগে করিবা সমীত বিভায় অধিকতর यत्नानित्वमं करतन । यत्रममिशः , हाका, भावना, वश्चका, রম্পুর পাভৃতি কোলার বহুলোক তাঁহার পুনধুর স্থীত ভানিরা তন্ত্রর হইতেন। শিক্ষিত কি আশিক্ষিত, ধদী কি নিধন, পুৰুষ কি ন্ত্ৰী, শিশু কি বৃদ্ধ তাঁহার গান এবণ পূর্নক ভবর হইরা সহত্র কর্তে প্রশংসা করিত। তিনি সঙ্গীত আন্তান উপস্থিত হইরা সহজ সংস্কৃত ও সর্ব বাঙ্গালার নিতা সুত্রন গান গাহিতে চিরভাক্ত ছিলেন। এীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ শন্ত প্রাচ্যবিভাবহার্থ মহাশরও 'বংশর কাডীয় ইতিহাসে' ( বাস্থা কাতে ) ভাষার প্রশংসা করিয়াছেন। প্রবাদ--वक्षा जिनि थात्र मानाधिक कान मः इंड जावात्र वाममक्रालद चुडने भागां नाहिया ध्यक्ड ख्याडि गांड करतन। अत्रन মুখ্যাতি লাভ ভাঁহার প্রারশ: হইত। অভাপি অনেক পায়ক ভাঁছায় রচিত পান গাহিয়া মুখ্যাতি লাভ করিতেছেন।

৺রখনাগর গায়কের গলে মৃত অরপ চক্র শীল,:৺গৌর ছক্র আচার্য্য, মৃত জ্বন্ধলন কৈবর্ত্ত দাস, মৃত কানাইলান মালী, মৃত রখুনাথ শীল, ৺নিত্যানক আচার্যা প্রভৃতি গায়ক ছিলেন।

#### मान ।

( > )

ন্নাবণ সীতাকে হরণ করিয়া লইরা বাওয়ার পর বিভীবণের উক্তি ।---

শুহে দশানন, অধিণধে লয়াতে নাম আদিৰে।
বল প্ৰকাশিবার তন্ধে, রাম তোমা সবংশে মারিবে।
(তখন) শোণিতে লয়া ভাসিবে, আসিবে শকুনী শিবে,
ভোর দশ মুতে বলিবে, তখন সীডা হাসিবে।

( )

হত্নান দীতার অবেষণে বাইরা সীতার নিকট উক্তি।—
আমি দেখেছি মা দীজে, সীতা নাথকে আদিতে
(তাঁহার) চকে বারি মুখে বলে হা দীতে, হা দীতে,
সনার উঠিতে বসিতে সীতে, কেন্দে বলেন কোথার সীতে ?
নীল কমল বার ভ্রংথার্থবে ভাসিতে ভাসিতে।
(তাঁহার) নিজা নাই দিবা নিশিতে, বসন অলে নাই সীতে,
আমি দেখিতে পারি নাই প্রভুর শ্রীমুথ হাসিতে।

রাবণ বধের পূর্বে গোরী যুদ্ধকেত্রে আসিলে রামচক্র লক্ষণকে বলেন,—

ও চেয়ে ধেখরে লক্ষণ ভাই, আজ মণে গণেশ জননী এগেছে।
তেবেছিলাম রাবণ নারি, ছংখ দৰ পরিহরি,
বিভীষণকে রাজা করি হবে মনে কি তর আছে।
মন প্রতি ক্রোধ দৃষ্টে, ভগবতী একদৃষ্টে,
অতি ক্রেট সিংহ পৃষ্ঠে দেখ বরেছে।
আর নাহি গেল বুঝা, রণ জয় গেল বুঝা,
দশাননে দশভূজা আপনি দদর হরেছে।
দেশেতে মরিল পিতা, অরণ্যে হারালেম সীতা,
শোকেতে কৌশল্যা মাতা মৈল কি আছে।
ভানকীর কারণে রণ, করিলাম অকারণ
সীতার সক্ষেম্বালন বুঝি আমার বে হরেছে।

(8)

বৃদ্ধক্ষেত্রে রাবণ রামচক্রের ত্রন্ধ ক্ষেত্রে আহত ইইরা মৃত্যুর পূর্কে বংলন,— প্রাণত অন্ধ হল আন্ধ আমার—ও রান কমল আঁথি
(এবার) নিদান কালে বন্ধু হলে কাল বেটাকে দিতেন ফাঁকি
ঐতিকের ঐপর্য্য স্থুপ, আন কিছু রান নাই হে নাকী।
ইন্তবেটা আহার বোগাইত, অপুণালে কালকে রাখি।
(আল) কাল পেরে কাল বেটার ধরে, সেই ভয়ে রাম
ভোমার ভাকি।

আমি হারি নাই, আমি হারি নাই, আমি হারি নাই, আমি হারিভাম, যদি ভোমার মারিভাম, আমি রণে হারিলাম। ভবে ভরিলাম, এমন হারিব বলি হারি বাই।

( a )

ভজন বিষয়ক গান।

হরি, মোরে রেখেছ শীতণ চরণে
কুর্ম্বতি তপস্যাহীন
কুতং পাপী অহং দীন,
কোৰে খোৱাইবাম দিন

গেশ দিন অকারণে।
শোন জগৎ গোসাই—
আমি আর জনম নাহি চাই,
যমকে জিনিরা বাই.

ৰির বেন রাম নাম নিরে বদনে। ৺হরিবন্ধ চক্রেবন্তী।

ছাওরালী নিবাসী পগোলকচন্দ্র চক্রবর্তী মহালয়ের জ্যেষ্ঠ পুদ্র পহরিবন্ধ চক্রবর্তী। ইনি রাট্ন শ্রেণীর শ্রোত্রির ব্রান্ধন। তিনি কথন জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, সঠিক বলিতে পারিব লা। কিন্তু তিনি বে খৃষ্টার উনবিংশতি শতাক্ষীর প্রারম্ভ কালে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন, ত্রিবয়ে কিঞ্ছিল্পান্ত সল্লেহ নাই।

প্রার ৪০ বংশর পূর্বে ডিনি তাঁহার একমাত্র সন্থান শ্রীবৃক্ত প্রাণবন্ধ চক্রবর্তী ও পরিবারবর্গকে রাখিরা ইহলোক ডাগে করিরাছেন। প্রবাদ, নিম্নলিখিড গানটি তাঁহার রচিত।

পান

প্রেম কি প্রেমিক নইলে, অপ্রেমিকে প্রেম কামেরে গু কে প্রেমেতে প্রেমিক হয়ে, প্রীরুক্ষ কাম প্রাম্ব ছেড়ে,

প্রেম করিয়াছিণ সজনী, চণ্ডীদাস আর রক্ষকিনী, বিক্তমঙ্গণ রাণাহগাফিনী; ভারাও ধনী। ভারা প্রেমে প্রেমে ফীদ পাভিয়া, ধরিয়াছে অধর ঠাকে

> প্রেম করিয়াছে অনেক জনা, কেবল মন্ত্র বীজ উপাসনা।

ব্রন্থ গোপীর মত প্রেম্ব কার কেও করে না— ভারা এমনি প্রেমের কল শিথেছে, গোবিন্দ বাতে পারে ধরে।

প্রেম শুনি সই বথা তথা,
ক্ষেই প্রেমের বা বাড়ী কোথা ?
সে প্রেম কিবা বরণ, কি গঠন, কর কি কথা?
সে প্রেম নাই কোন থানে, কেবা জানে দিবে হরি বছরে ১

মৃত রাজচত্র দত ।

মৃত রাণচক্র দত্ত মহাশরের নিবাস নাহানী। ১২৫% বঙ্গাব্দের ১০ই ফাস্কন তিনি 'নাড়ীচক্র' নামক এক থানিঃ পুত্তক নিবিয়াছেন। এই হস্তালিখিত পুত্তকথানি আমাধেক নিকট আছে। ইহা তুলট করা কাগকে লেখা। ইহাতে প্রারম্ভ হইতে শেষ পর্যান্ত আছে। কিন্তু ইহার অবস্থা, জীর্ণ। ভাগগ্রাম নিবাসী স্বর্গগত চক্রমোহন দত্ত মহাশরেক আদেশে গ্রন্থকার এই গ্রন্থখানি প্রবন্ধন ক্ষিয়াছেন।

शुख्रकत नमूना।

পে শী শী কুর্না: । প্রথমং জগত্পতি স্থিতি সংকার কারণং।

সর্গাপবর্মা জাতারং তৈনোকত স্বিবং।

অথ ভাশা নারি-চক্ত লিক্ষতে:।

নারির প্রকাশ করিলা সিব কবিলা আপনে: ॥

গার্মাত কহিল ভাহা হরশীত সনে।

বর্ধব্যর রোগপিরা করিতে প্রকাশ ॥

কৈপা করি কৈপা শীব উপদ প্রকাশ ।

কাগরেতে জভরোগ পরীকা কথনঃ ॥

লারির প্রকাশ সিব করিলা রচন ।

গারে ভিন কুটা নারি সরিরে বন্দন ॥

নারি কন্দ দেশে নইরা সর্বাত্র উপনঃ ।

আপদ মন্তকে সিব সপ্ত জাহারঃ ॥

স্কুমন্বর দক্ষীণ অসুনি ম্নে ।

শুক্রবের দক্ষীণ অসুনি ম্নে ।

শুক্রবের দক্ষীণ অসুনি ম্নে ।

শুক্রবের দক্ষীণ অসুনি ম্নে ।

শুরুবের দক্ষীণ অসুনি ম্নে ।

শ্বরিনাথ চক্রণজীর পিতার নাম ৺বংশীবদন চক্রবর্জী ও নিবাম আমুর্কী। ৺বংশীবদন চক্রজীর চারি পুত্র ছিল। বথা, শ্বরামশোচন, শপদ্মশোচন, শহরিনাথ ও গৌদ্ধচক্র।

শ্বীর উনবিংশতি শতাশীর প্রারম্ভকালে হরিনাথ জন্মকাহৰ করিয়াছিলেন। তিনি কাজনিক ব্যাহল ও প্রদিদ্ধ গারক
ছিলেন। তিনি কলাপ ব্যাকরণে জ্ঞান লাভ করিয়া দশকর্দ্ধশিক্ষা করিয়াছিলেন। তিনি ধর্মজ্ঞীক ও নিষ্ঠাবান্ ছিলেন।
তাহার রচিত্র করেকখানি হস্তলিখিত পুলি আমরা
রোধরাছি। উহাতে কতকগুলি চিত্তোল্লাদক গান লিখিত
আহে। কিছ উহাতে বহু বর্ণান্ত আফিলেও তাহার
রাজনা কৌলল প্রশংসার্হ। প্রায় ৪০।৪৫ বংসর হইল তিনি
ইইলোক ত্যাগ করিয়াছেন। তদীর বংলের দৌহিত্র
পূর্ণানন্দ, প্রিযুক্ত বাদ্বানন্দ ভট্টাচার্যা ও প্রীযুক্ত জ্ঞানানন্দ
ভট্টাচার্যা মহাশর্মের তাহাদের (গারকদের) বাস ভবনে বাস
ভরিতেছেন। নিরে তাহার রচিত গানের নমুনা দেওয়া
গেল।

## नयूना ।

পদাবলি।

বলে বুকাধনিঃ শুন গো সন্ধনীঃ ধার ২ একি হৈল গোঃ। বৈলা ছবি ২ ধরাতলে পরি প্রাণের কিলোরি নৈল গো।

रेक्न मिर त्नवः নাহি খাব মাতঃ . हात २ कि कविनामः । হৈল জান হতঃ समस्यत्र घड প্রাণের কিশোরি ভারাইলাম।। क्षेत्र त्या अवाद्धः वस्त्र विरम्हरमः এका रकत कावि बारे। क्रश्रेनावकरनः মাধ্ব সকলেঃ किराना कांक नारे ॥ নিক্ত কারনেঃ প্ৰবোধ বচনে: टेहजू भारत भावि। हा हा जावनाथः वान बक्नां९ **ट्यांथा देवन व्यानहाँव ।** . . প্যাৰি ওক-ওগো একে প্রাণনাথ বুঝি এইন না গো॥ ত্রনা ওক---প্রশ্রে প্যাত্তী ধর্যা হওপো॥ পারি ওক্ত--(अट्या खुट्स, कियन ब्राथा शुक्रवन नाहेट्या ॥ अर्गा बान थान गा अवाकात्व करे देकब्रामा ॥ -BP INE ওগো পারী সে কেমন গো॥

প্যারী ওক্ত — ওগো এক্ষে তবে বলি শুন গো॥ মৃত শ্মানন্দমোহন সরকার।

মৃত আনন্দমোহন সরকার কড়াইণ গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার উবা, মানভঞ্জন ও পূলাবাত্রা নাকি পূর্ববর্ষের প্রাচীনতম নাটক। সংস্কৃত, বাসাগা ও জ্যোতিকে প্রাহার প্রচুর জ্ঞান ছিল।

विषक्तत्रकात त्योणिक।

## যেত্ৰিক ও পণ প্ৰথা।

क्षि तकात अञ्क्ष विश्वि विश्वात अपूर्व বিধানের নাম বিবাহ। বিবাহিত দল্গতির পুখ স্কল্দে भीरम बाजा निकारित चायुक्ना करागर्थ विवादकारक ৰয়াকে যে বন্ধ পাভরণ প্রভৃতি প্রদত্ত হয় উহাকে (बोडक वा व्योक्टक बरना। मुखिनिक मात्रकान शरह (बोष्ट्रक मत्कत अहेक्कभ वााचा। (क्या यात्र। "(बोष्ट्रकश পরিশর লবং, যু মিশ্রণে ইতি ধাতোযু্ত ইভি পদং মিশ্রতা বচনং, মিশ্রতাচ স্ত্রী পুংসয়ো রেকশরীরভা বিবাহাচ তদ্ ভব্তি; "अश्विजित्रश्चीन माध्येत्रमाश्नानि বচা বচৰিতি শ্ৰতঃ" অংতা কিবাহ কালে লকং যৌতুকং।" (योठक नास्त्र व्यवस्यार्थ विवाह ममझ नक सन। মিল্লার্থ বুণাতুর পর ভাববাচ্যে বিহিত ক্ত প্রত্যায়ের বোগে যুত পদ নিপার। ভাৰবাচ্যের প্রভারের দার। ধাতুর অর্থ মাত্রেই প্রতীত হয়। প্রতিরাং যুত শব্দের অর্থ यिश्रीकर्ण। अष्टल विश्रीकर्ण चर्च की शुक्रावर अक শরীরতা, সম পুধ হঃধ ও ধর্মাধর্মভাগিতা বুঝায়। अछाहुन अकाश्रातार वा व्याखन वृद्धित मृत्न विवाद শংশার। এ বিবয়ে সর্বপ্রমাণ শিরোমণি হাতি প্রমাণ निर्छर्डन, 'क्यांत ज्ञाह, बारन ७ हर्णात निर्छ कामाजात चित्र, माध्य ७ वर्ष धक्य थाथ इत्र । विवाद्दत महाराष **(मबिट्ड नाहे, "यरम्ड क्षमप्र डव डम्ब क्षम्पर मम।** यिकार समझर मम जमक समझर छव।" कथा श्रीन छर्स्य मिद्दित छड़ि कन्नना विनिन्ना अटकवादि छिछाहेना निवाद মৰে। আর্ত্তপতির অক্ত পবিত্রতা পত্নীর ক্লয়ভেনী আৰ্ছনাম. ৰোধিত প্ৰিয়তমের নিমিত সাগনী স্তীর ভোগ पूर्व वर्ष्मम, पश्चीत कार्ना ও काश्चि मानिक. शहे वहारखत স্থাবর সময়ে পতি দেবতা বনিভার হর্ষোলাস, জার मुज्यक्ति यात्रामिक रम्या छन्या छ माहहर्यात वज

नाथ्वी भन्नीत कीवनमान छक्छ लांच धामारमत करांग প্রস্থা। মধুর হরগৌরী মিলনের স্থায় পরম্পর প্রীতির জন্ত দল্পতির বে নিঃস্বার্থ পবিত্র আত্মভাগে উহাই चार्यः विवादित चम्डमत कन । विवाजात त्यकं मान अहे निकासित नगरत वादा आह दखता यात्र छाराहे যৌতুক পদনাচ্য। সময় ও অবস্থার ভেদে এই যৌতুক द्वीधनदार्भ भदिगणिक दश्र। त्यांहीन व्यर्गाएक, विवाद কালে লক্ষ্য পভিব দাবাস্থর প্রহণ সময়ে গ্রাসাক্ষাদনের নিমিত্ত প্রামীত, বিবাহেতর সময়ে ভর্তুকুল, পিতৃকুল, মাতৃকুল ও ভাতৃকুল হইতে প্রাপ্ত, শিলকর্ম করিয়া স্বাং উপাজ्जि स्मिति । अरे क्य अकात जीवन উतिविछ करेबारक। देशात मत्या निज अ वियोध गक यत्न जीव নির্যুদ্ধর (Absolute right) শাস্ত ব্যবহার সিদ। अब्राधकार जीवन वात्र कतिए श्रेटिन श्रीक शामीत मर्ज्य व्यर्थका कतिए इस। धरेक्रथ इर्जिकामित्र मसद्य चामी ७ क्षीत मठाक्रवर्ती बहेबा थे स्टनत यद्य ৰিনিয়োগ করিতে পারেন। কিন্তু শেষাক্ত ছই প্রকার (বিবাহ ও শিল্পর ) স্ত্রীধনে স্ত্রীর অনকাপেক অধিকার ধাকায় উহা তিনি ইক্ছামত দান ও বায়াদি করিতে ইহাতে ভর্তার সমতি কিংবা আপত্তির व्यवमत्र भारे। अक्षरा (प्रथा याहेरजस्य (य, व्यवहिटजरी মহর্ষি শাস্ত্রকারগণ অবলা গ্রীক্ষাতির সুমহৎ উপকারারে आहीम नमाम প্রতিষ্ঠার দক্ষে দক্ষে কিবাহে এই খৌতুক প্রধা প্রবর্ত্তিত কারয়াছেন। ভারতভূমি রত্মপ্র নাবে ित्रश्रमशत्र बहेरमध योत कननीत जम्म पश्चामि विकन ককর্মণা স্থতোৎপাদনের ফার সময়ে সময়ে ইহাতে चार्तक पवित्र ७ क्या गद्यान क्या शहन करता। नाज-कर्त्वागन रायन के तकन कर्याक्य अनुहार राज्याना ভরণ পোষণের ব্যবস্থা করিয়াছেন, সেইরূপ অর্জনহীন কোমল প্রকৃতি গৃহক্ত্রী নারী জাতি, বিশেষতঃ অনাধা विषया ७ वर्षातात्मत्र व्यक्तत्म कीयन याता, द्वा नित्रम ७ धर्म कर्म अक्रुक्षानार्थ এই शरूम कन्यानकत राोजूक अ

बी बरमन विशान छेम्छानिछ कत्रिशाहन। নৈশ্বে মাতা পিডার স্নেহ-কোমল-ক্রোড়ে লালিড পালিত, আনন্দ্রর বৌবনে পতির সোহাগ দোলায় পরিবর্দ্ধিত, অন্তে নীরস বার্দ্ধক্যে পুত্র কন্যার ভক্তিনয় পরিচর্যায় রক্ষিত নারী যদি ছুদৈবের কোপদৃষ্টিতে পৃত্তিয়া ঐ সক্ষ সোভাগ্য স্থাভ স্থান হইতে বিচ্যুত হন, ভাষা হইলে তিনি কিরপ বিভূষনা ভোগ করেন, উহা আজকানকার চাকুরীলীবী বাবুদের অপরিজ্ঞাত ন্হে। ধনীর অন্তঃপুরস্থ প্রামোদ বনে 🖛 যত্ন বর্দ্ধিত লভিকার ন্যায় সুধৈখর্য্যের ক্রোড়ে লালিত পালিত वसनी समि जागा विभक्षात्य महना निवाधव वहेवा भएजन, ভাষা হইলে উহাকে নির্বিমে রক্ষা করিবে বলিয়া ছুব্দুৰ্শী—মহৰ্বি নিৰ্দ্ধকাৱগণ শাল্পে মহতী যৌতুক প্রতির বিধান্ নিয়াছেন। কালের পতি বিচিত্র ও দৈৰের আদেশ শিরোধার্য্য। ্রিক সময়ে যাহা জগতের नात्व कन्यात्वत छत्त्रत्या श्रविष्ठ बहेमाहिन, वाक ভাহাই অবোধ শিশুর হস্ত নাস্ত শাণিত কুপাণের মত শ্বাত্মহত্যার অনোঘ উপায়ে পরিণত। সমান্তের অশেব হিতার্থে উদ্ভাবিত ঐ যৌতুক পদ্ধতি আধুনিক সভ্য ্**নমাজে কির**প বিহৃতাকার ধারণ করিয়াছে, শাস্তের ও কৌশীন্য প্রথার সহিত উহার সম্পর্ক কতটুকু ভাহা শাল্তে এখন কোৰাও দেখা ষার না যে, কন্যাদান কালে প্র্যাপ্ত যৌতুক ও জীবন না দিলে দান অসিদ্ধ হয় বা উহাতে দাতার কোনও প্রত্যবায় ঘটে। অবশ্য সাজ্যালনালয়ত কন্যা मारमञ्ज विधि भाळ मुद्रे। श्री विविधानि मारमञ्जूष नक (ए) ड्यांनि मानात्त्रत्र नाम थे नकन ऋत्न कन्मानानह मूचा, रख ভূষণাদি দান আহুম क्रिक মাত। সহর্ব মানসে তাঁহার পরম বেংপাতী ছহিতা ও জামাতার স্তোবের জন্য সাধ্যমত থাহা দান করেন, গ্রহীতা আমাতাও তাঁহার সদাশর অভিভাবকবর্ণের প্রফুল চিত্তে উহা এইণ করাই শিষ্টাচার ও শাস্ত্রসমত।

धनवान् भारत अर्थिता कना। हम भूरतक नमानकार উলিধিত হইয়াছে। বস্ততঃ আলমু প্রাণপণে বধাশক্তি লালন পালন করিয়া কর্তব্যের অলংখ্য অসুরোধে বীধ্য হইয়া যাহাকে সুধী করিবার বাসনাড় অপরিচিত व्यक्तित्र राख नाख कदा दश, त्रहे स्वराधात छनत्रात्क উপযুক্ত উপঢ়োকন দিতে কৃষ্টিত হয়, এরপ বদর্থীন নুশংস জনক ধর্মক্ষেত্র ভারতে পুরুষ্ত। কন্যা দান মহাদানের অন্তর্গত। व्यायात्र मत्न वत्र वेदारक महा महानान विणित अपूर्विक दश मा। আত্ম প্রতিকৃতি আত্মলার দানের সহিত এক আত্মল দান ভিন্ন অপর কোনও অনাত্ম পার্থিব দান তুলিনা হইতে शास्त्र ना। ভারতবাদীর ভাগ্যদোবে এডাদুশ মহা-পবিত্ৰ ও পুৰাবহুৰ কন্যাদান আৰু কাল "কন্যাদায়" क्रम महानारम পরিগণিত হইয়াছে। এই খুণা अथना কদাচাবের সক্রে পবিত্র ধর্মশারও বল্লাল প্রতিষ্ঠীত (कोनीतात विन्यूमां मन्त्रक नाहै। শান্ত্রের দিকে দৃষ্টিপাত করিলে চকুশান্ ব্যক্তিমাতেই স্পষ্ট দেখিতে পাইবেন যে, উহাতে কন্যা বিক্রণ্নের কিরুপ ভীষণ नियावान वाहा। वाहार्यानान कामान वर्गन,-

"শুকেন বে প্রথক্তি স্ব স্থতাং লোভ মোহিতাং আত্মবিক্ষিণঃ পাপাঃ মহাকিত্তিব কারিণঃ।

পতন্তি নরকে বোরে দান্তি চ প্রথং কুলং ॥"
যাহারা লোভের মোহে পড়িয়া পণ কইয়া কল্পা বিক্রম্ম
করে, ভাহারা আত্ম বিক্রমী মহাপাণী হয়। ঐ
মহাপাণিগণ অনস্কলাশ বোর নরকে পর্টিতে থাকে।
তদ্বংশজাত সপ্রম পুরুষকে পর্ণান্ত ঐ ত্রাত্মার
ত্ত্ত্বের কণ ভাগী হইতে হয়। উক্ত প্রমাণে "লোভ
মোহিতাঃ" পদের তাৎপর্য্য,

পিত্রাদি অভিভাষক ৰদি সীয় সার্থের জন্ম ঐ পণ গ্রহণ না করেন, কেবল কঞার প্রতি অক্কলাবেশ্রতঃ পণ গ্রহণ করিয়া উহার ক্ষ্ম সন্তোধের বৃদ্ধির উদ্দেশ্তে ক্ষ্মাধনরপে রক্ষা করেন, তাহা হইলে প্রভাষায় ভারী হন না। ইহার সমর্থক প্রমাণ;— ধ্বানাং দাদদতে ওবং জাতরো ন স বিকর:। শহুদং যৎ কুষারীণা মানুদংখ্যুংহিতৎ শ্বতং ॥"

অধিক শাল্ল প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া পাঠকের বিরক্তি উৎপাদৰ বিভারোজন। "দেশের হুর্ভাগ্য কল্পাবিক্ররীর দশ শাবহৰান কাল সমাজের তীত্র বিব দৃষ্টিতে পড়িরা শাহিত হইতেছেন। সুদীৰ্ঘকান সামাজিক শাসন ও শঞ্জনার ফলে এই পাপ প্রবৃত্তি অনেক পরিমাণে কমিয়া শাসিয়াছে। ক্রিয়ার পর প্রতিক্রিয়া অবশুভাবী; এই স্নাতন নীতিনেমির আবর্তনে সুদুর ভবিক্ততে এই পাপ ব্ৰোভ দিঃশেবে রুদ্ধ হওয়াও অসম্ভব নহে। বড়ই আকেপের বিষয় বে, সামাজিকগণ বে জাতীয় পাপের অস্ত এক শ্রেণীর লোকদিপকে (কন্তা বিক্রয় কর্ত্ত্রগণকে) **८कागरेवना कतिया नामाविश निअव्हत नाहार्या वहकान** হইতে দখন করিতে চেষ্টা করিতেছেন, এবং তাঁহাদের এই সাধু চেষ্টা কতকটা ফলবতীও হইনাছে; তাঁছারা বা ভাঁহাদের বংশপ্রদীপ ও জাতি বান্ধবনণ পুত্র বিক্রয়রূপ फेंदक । अथात अज्ञ नित्रा इतित्र हिन्तू न्यास्त्र অল্লাবশিষ্ট জীবশোণিত ( Life llood ) শোৰণে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। জন প্রবাদ ঘোষণা করে,বায়সেরা এক চক্ষে देश बिशा बादक । जातारमञ्ज मत्न इत्र, तकतन वात्रम (कन. স্বাজির স্কল ভারেই এরপ একাক্ষ্বায়স্বান্ধ্ব অনেক विश्वमान चार्चन। चार्वनृष्टि छित्र छै।शास्त्र नतार्वनृष्टिही "कारा" नवीत जात्र अदक्रादिहे कृष रहेशा निशाहि। এই একাক বায়দের দলের বুঝা উচিত কলা বিক্রয় ও পুতা বিক্রের তুল্য পাপজনক। উহা একই মুদ্রার সদর ৰকঃখন ছই পীঠ ৰাজ। উহাতে মূল্য কিংবা ফলগত একটুকুও ভারতমা নাই। আবাদের মহ মহারাজ ৰঙা পুত্ৰ বিক্রবে উপপাতকের অবভূতি করিয়াছেন। उँशिक्त विवान,

"ওড়াগারাৰ দারানামপত্যক্ত চ বিক্রর।" মক্ত ১১, ১১৮। েএই এবাণের পূর্ব ও পরতাপে ডিনি নানাবিধ

উপপাতকের নাম করিয়াছেন। ভন্মধ্যে সরোবর,উন্তান, সাধ্বী পদ্ম ও অপত্য (পুত্র কক্সা) বিক্রব্যকে ঐ স্কল উপপাতকের তালিকা ভুক্ত করিয়াছেন। এই প্রবাণোক্ত व्यभन्त भरमत्र वर्ष भूज ७ कन्ना, देशांक देशात्रवीरण child বলা হয়। ব্যাখ্যাটা লেখকের স্বফপোল করিত নহে। মহামহোপাধ্যার শ্লপাণি পণ্ডিত তাঁহার च्चित्रां अध्याप्ति विदिक्त नामक अद्य मण्त के अमान, ভূলিরা "অপত্যস্ত অনেক বিধস্ত" এইরূপ একটু ইঙ্গিত করিয়াছেন। কলিকাতা সংস্কৃত কলেজের ভৃতপূর্ব খ্যাতনামা মহামহোপাগ্যায় মতি পণ্ডিত 🗸 মধুসদন শ্বতিরত্ব তৎকৃত প্রায়শ্চিত বিবেকের চীকায় ঐ স্থান অপত্য শব্দের বিশদ ব্যাখ্যায় লিথিয়াছেন, 'অনেক বিধন্তেতি ক্লায়াঃ পুত্রভাচ বাদশ বিধক্তেত্র্থঃ। ন পততি বংশো যেন তদপত্য মিতিব্যৎপত্তেঃ । 'অনেক বিধ শব্দে ঔরস, দন্তক, ক্রন্তিম প্রভৃতি বাদশ धाकात पूज कनारे वृक्षिण दहरव। बादात जन दहरण বংশ পতিত ( লুৱা ) হয় না, তাহাকেই অপত্য কহে, এই ব্যুৎপত্তি প্রেকৃতি প্রত্যর বিপ্লেবণ ) লভ্য অর্থ দারা অপত্য मत्म পूज कळा इंटेरे त्याय।' अठा वृक्ति वा विकारनंत्र ৰুপ। স্তরাং অফুসার বিদর্শের এলাকা ছাড়িয়া যুক্তির চক্ষে দেখিলেও স্পষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়, আত্ম चनित्र ; जी पूर (छम वर्ष्किछ। वानक वानिकात कतिछ পঞ্চালিকার (পুতলীর) বিবাহ দেওগার স্থায় এই জী পুরুষ ভেদ কল্লনা কেবল ব্যবহারিক অগতের ব্যবহার निकाशर्व अव्वित्त । चावार्या शाम महारात गरहण, "কাত্ৰ কান্তা কল্ডে পুত্ৰ:" ইহারই স্মারক মাত্র। উপনিষদ প্রমাণেও দেখিতে পাওয়া যায়, ''এই আত্মা खी, शुक्रव किश्वा नर्भाशक नाइन,नामक्रम म्य महाकाष्मव चछे। हि नच्या का तु को इ व्यक्तिक अना मजल आवात यथन यে कान ७ উপাধিভূত দেহাদির পহিত সংশ্লেষ জন্ম, छपन हैनि महिकालहे खकानिछ इन।" जाद अकर्रे व्यापत रहेश क्ष यक्तिएत व्याधर्गक गार्डाशनियाप

बर्फ नदीरदारशक्ति उड़ना धनानीद अंछ पृष्टिक्म ুক্রিলে দেবা মার; বিভা যাতার আর্ত্তর খোনিত अक्ष ब्रांबिए केंगर शाह हरेबा क्यमः नवम मार्ग ্ৰাৰ্যৰ সম্পূৰ্ণ হইয়া থাকে। ভূতীয় মানে ঐ গৰ্ভহ ্লালভানের মুধ নাসিকাদি ইন্সিয় গোলকের চিহ্ন न्युहरू दरेश वर्ष । १व मारम अधिम পूर्वता शाक्ष ्यम । चार्याय थे नगरवत शृत्सं काही ( Foctus) जावा-্রের ব্যাখ্যাত আলিসি অবস্থাতেই থাকে। সরকারী ्वरावत्क्रपाशास्त्र घटेवर छारव इन्न खर्मत्र स्वत्रभ ীরীয় পুংশ নির্বয় এই প্রণালীর অভ্যত। देश्यक भछर्गाराकेत काहरमध जीवम ७ शूक्य वरमत ্মতের কোন ইতর বিশেষ নাই। ইহাতেও স্ত্রী আকা 🥦 পুরুব আত্মার সময় হুচিত হইতেছে। ঐতি, স্বভি, ्यक्ति ७ रेक्कानिक वंशिंश विस्त्रश्न दर आधार जी शुक्त ভেদ রাবিত্যের স্মৃত্ প্রমাণ, সেই আছা প্রতিমৃত্তি প্রত্র কল্পা বিক্রয়ন্ত্রনিত পাপের বে কেশাগ্র মাত্র পার্বকা ानाहे, देश त्यापहत्र वित्विक्यात्वहे चन्द्रकार बीकांत्र क्तिर्वत । अक्रां (पविष्ठ हरेरव (व, शृर्साक छेन-পাতকে পাতকী কোন ব্যক্তি আজি কালকার দিনেও न्यांदब दर्गन अकारत प्रशिष्ठ इन किना ? शावश. অভকা ভক্ৰ, নিন্দিত দেশ গমন প্ৰভৃতি কভিপয় পাপ ্ত্ৰ শ্ৰেণীর অন্বৰ্গত। তথা কৰিত বৰ্ত্তমান সমাজেও ্মদি কেব গোহত্যা, নিবিতার গ্রহণাধি করেন, ভাহা হইলে অভাপি শ্ৰাৰ তাহার মাবা মুড়াইয়া কড়ি উৎসর্গ क्यारेम अम्बूड धामन्दिर मधिक क्यान। बरेब्र প্রার্শ্চিত না করিলে সমাবে ভাহার নাগিত পুরুত ও े हैं श यह रह, अक क्यांत्र त्य अक्य'त्र हरेहा थात्क। ্রশাসরা জিজাদা করি, ঐরপ উপপাতকার পক্ষে সমাজ अहेत्रभ मध मरधत कडी हहेरान किरमूत वरण ? यथि थाठीन भाज है जाराज भागतात यह रहे, जारा रहेल सून्य विस्थापादकत পঞ্জ ভূৰ্মণ नामादित नेकापाक कित्रा यादाता वत्रभग श्रवा श्रद्धकर

উপপাতকে निভাপাৰী दहेल्डाइन, ভারাদের नहक मुक्त ७ श्राहिक्छ विवासित हिस्क हुटि मारे दक्त ! माबाजात बागालत नाकि पूर्विक्षि महिः मास्य देवारे व्हेत्रा शाटक, लाकाव्हेत्य दन श्रालिटक की किमानान वरण ভাগাইয়া দেওয়াই এপতি বুদ্ধিনান্দিগের কর্ডনা। विन्यु नात्यत (नाहां है निश्चा स्वतिशायण विन्यु नात्यत কতকভনি অনুবাসন মানিব, আর বাহাতে আবার याथकाहारवद वांश अमाहरव. रम्खन आमि आमित्राध कानिव ना, दार्थनां एपिय मा, वा अनिमां अमिय मा, अक्रभ (चात्र कभेगांगात नर्समेक्सिम् क्रमनारम् कार्या চিরকাল চলিতে পারে না। পর্মেশবের বিরাট मतवादा श्रकामा क्लित क्या चाहि, किंद्र ७४ क्षिकातीत अन नवरकत रकांति बात वृष्ण छेव्यान्छ। समी इरेफ आंख, नवन ७ च क्लो इछ ; सूबी इरेफ हांख সংপ্र हिन्द्र। পরিশ্রমণীলতার ছারা অর্থার্ক্তন কর, खेरा आयागांक कतिरम क्षमहे सूबी रहेरछ शांतरव ना। পরের ধনে অবধা লোভ করিয়া অভার উপায়ে অতি প্রাচীন শাল্পের হিতোপদেশ, "মাগুধঃ কল্পবিষ্ धनर'', व्यर्पत प्रक नामना कतिल ना, धन काशावल नाह । শোনা, রপা টাকা ও নোটের **স্থায় উহার কেবল হাতকে**র হইতেছে যাত্র। কৌৰীভ প্রধা প্রচলনপ্রসলে দহাস্থা विश्वामाश्रद्भव वस्विवार श्रास् पृष्टिशाव्य रस, "श्रामा বল্লাল সেন কৌলীক মার্যালা প্রতিষ্ঠার দিন ভির করিরা ত্ৰাগ্ৰণদিগকে দিত্য ক্ৰিয়া সমাধাতে বাজ সভায় আসিতে অফুরোধ করেন। ইহাতে কভিগদ ব্ৰাহ্মণ अक अहरवत नगर, किल्म राष्ट्र अहरतत नगर चात्र ক্তক্ত্তি লাডাই প্রহরের সময় উপস্থিত হম। বাঁহারা খেবে আসিয়াছিলেন, তাঁহারা কৌলীভ মর্ব্যাহা यांवाता (मछ श्रद्धात नमम जानिरमम, পাইলেন। ठीराता (टाजिन, चान देशाता अक श्रद्धात नवन चानित्तन डांशां शोन क्लीन रहेत्नन। हेशांत्र ভাৎপর্যা, নিত্যক্রিয়া করিতে ভবিক সময় লাগে,

श्रुणतार देशाता आंकृष्टि धादरतत नमत चानिताहिरनन्, -উহায়া প্রকৃত এডাবে নিত্যক্রিয়া করিয়াছিলেন। ্ৰাজ্য স্বাজ্য উচ্চালিগকে স্বাচারপুত বিবেচনা করিয়া थाशांन कृत वर्गाणा भान किल्लान। रहक थाराजन नमप्र जागरज्ज्ञा जाहाबाश्य कृतिविश्व जन्न यशाना भारेलम । चात्र क्षेत्रम क्षेत्रत चानालता चानात लहे चित्रा भवशदिक इक्षत्रात्र ताका कांशकिनरक रहत रवार न्मश्रहे द्वान पान कविरमन । कागळत्य रार्गन कुनीरनता खालिव भर्गादा निर्वाषिण दहेरान, किस गर्साःरम रक्षासिक्षमित्रक मनाम हरेएक भावित्मन मा। क्षेत्रक (श्राजित्त्रता ७६ (श्राजित्र ७ (श्रेन कुनीरमता कर्ड (श्राजित्र पनिशा উत्तिपिछ दहेरछ नाबिरनन। रामेन क्नीन मरका কালে তাহারা বেরণ হের ও অপ্রবের ছিলেন, কট **एक्षाबित्र माला कारमछ (महेबल दक्शिना" मानद** थ्येकाच, ७२ शृष्टी। कूनशीशिका नामक खितिक कून भारत छेब्रिविक भारह, "कूनीन भरमन छे९कर्वरित्यर বংশভাতক ব্যক্তিবিভি। তথাত লকণং। ৰিশেৰ ধৰ্মাবিছিল বংশ জাতকত্বে সতি ভর্ধর্মবৰং क्नीनविधि। উৎकर्व विषयक नवश खनाः। छन् यथाः

"भाठाता विमाता विषा श्रीकर्ता कीर्यमर्गनः।

व्यवावणः जेखनिहे কৌলীভের निषान क्लिया अविश्वरीछ। वर्खमान नगरत क्रुनीन वनित्रा नहताइत बाहाता कुल पर्यामात एका वाकाहेबा बाटकन, छाहारमत गर्था चिं चन्नगर्थाक वाक्ति के भक्त नम् चर्मन निहत्त পরিচিত। প্রাচীন কুলশাল্ল বা বলালী কৌলীঞের সহিত : আয়ুমিক উত্তর বরপণ প্রধার বিশেষ কোনও স্পার্ক नारे। कावन कारनव शबिवर्छरम ७ श्रक्तकित व्यक्त নিয়বে ঐ সাময়িক ব্যবস্থাগুলি অধুনা বহল পরিষাণে भिथिन हरेशा माँछारेशाहि। किंड पर्शन धरे भक्न कुथव) नमाक बहैरण हित विकास क्षरण ना कतिरन, छखंगिन निवित मूल वृक्ष प्रति छात्र नमार्कत शरक हत्रम উদ্ভেক থাকিবে। এখনও এমদ অনেক লোক দেখিতে পাওয়া হার, হাঁহারা তথা কথিত কোনীভরপ আকাশ কুসুবের সৌরতে ( essence ) স**্কুলে**বর चारवामिक मत्न कतिशा च-कूनमधाना वराभरन जब्दा मूथ रुन । बब्द भूष्टाइंड की दिति । वह अहा छेरादा म मार्कत ममूर चनिरहेत पून। चामता छेशायत शत कता मध्रत्रभूक्त्रल कोनीरकत चत्रल छेन् वाहरनत कछ कथिक अन्नाम भारेनाम। जाना कति भन्नीत्रमी कन्न **क्षित्र बक्रिय श्रिक गाउँ रेशनिश्य कानक्र** किनिया कार्वात्कत्व अधनव स्टेर्न ।

ন্থার বিষর, আজকাল একদল খদেশ-সেবক নৃত্ন
শিলা দীলার, আচার ব্যবহারের, আদন বসনের ও
কাল কবলের প্রবর্তক হইরা সংবাদ প্রাদির সাহাব্যে
তাঁহাদের অভিনব মডের বীল বদেশ বিদেশে বিশিপ্ত
করিতেছেন। খদেশ নাত্কার এই সকল বেচ্ছা সেবক
বীর পুত্র আমাদের সবিশেষ শ্রহাম্পদ। তাঁহাদের
নিকট আমাদের কীণ কঠের করুণ জিজাসা বে, খদেশ
তথারের অভতম প্রধান অল জীপিলা ও লী বাবীনতা
বলিয়া তাঁহারা এতদিন বে প্রবল আলোলন আলোচনা
করিয়া আসিতেছেন; উহাতে কতটুকু সুফল
ফ্লিয়াছে ? তাঁহাদের অবল্যতিত প্রতি নিতারই ব্যর্থ

ब्हेब्राट्ड, वाष्या अञ्चन कथा विनात मादन वा धार्षे कृष चाक्राम वृद्धित স্থাবিকা। বে নারী কাভির कामनाव बादाराय जान माजून रहेबार्छ, मरकायक ৰ্কু প্ৰ প্ৰবা মহামারীতে সেই মহার্সী মাজুলাতি विका किन क्रांक्रण देमद्वादभव छाछमात्र जनरम, मनिरम, विषयानः विष्ठारमान जायाबीयन विगर्कन निर्टरहर्गः উাহারা ইহার কি কোনও সারী প্রতিকার করিতে শান্তেৰ ৰাণু বিকা ও বাৰীনতা দানের সহিত বাহাতে ভূখিতের জীবন কোরকগুলি অকালে দামালিক कुलाको कीहेंबरमाम ककावेश मा बात्र, छरश्रीक कीख वृष्टि श्रापार कारात्मत्र अवम ७ अवान कर्त्वता रखत्रा छेतिछ। অন্ত ব্যাহ্রর মিলাক্রণ অভাবের দিনে গ্রেহনম বাতা পিতার क्षणां किंचाकार किंदे राजन ७ कीर्न मीर्न क्यानगांत त्वर হৰবিয়া নালাৎ কৰুণার মৃতি কলাকুৰ যদি পৃষ্ঠতম পিতা খাভাৰে এই জীবৰ নৱক হইতে উদাৱ করিবার আশার थाडार जीवन मान कतिए शारंकन, छारा रहेल निका ভ বাৰীনতা এচার কাহাদের বক ? পিকিতা কুমারীও बाहे नानाहारतत क्षणांच स्ट्रेट मूख्य नरस्न। यांचारमत जामार्य जांच थांहा नमांच जन्थानित. (गरे वीव नमार्चल अञ्चल जांकि ध्वरनकत्र महान् जनार्वत्र नकान शालत्रा बाब ना। जात अकाम जारहन, वाहाता जागारमत शृर्क আচীৰ ভার্ব্য শাস্ত্রকারদের উপর বভাহত। "ৰভ লোব দশবোৰ" নাবে এই শাস্তকারদের স্বর্গীর কাৰীৰ ভাষের উদেশ্তে অহরহ অবস্ত কুবাক্য বারি বর্ষণ-पाता जर्मन कतित्रा बारकन। ईशामत बुक्ति, क्षे चार्य कर्णा माजकात्रभावे जामात्मत्र जी ममात्मत्र অবংশাতের কারণ কৃপমত কতার সমর্থন করিয়া ভারতের भेषीनाच कतित्रारहन। जामत्रा किन्न नाट्य प्रदारनत এই অত্তত উভিত্র ও অপুর্ব বৃভিত্র সমর্থক প্রমাণ नार मा। जी चालित खत्रगरभारंग, त्रचनारवक्षन छ मान मर्गामा अपर्नामत अमुकृत्म मात्व এए अविक अमान পাওয়া यांत्र, विश्वनि अकल कत्रित्न विश्वीत अक्षामि

মহাতারত হইরা উঠে। পুৰবোৰের আলার আদরা
লক্ষ্য প্রধান ক্রেট সন্থাহিতা ও বন্ধবৈষ্ট পুরাণ হইতে
এছনে চুইটা প্রধাণ উত্ত করিয়া দিলাক।
"পিতৃতির্লাত্তিখৈতাঃ পতিতিদে বিরেডকা। পুর্বাভূষরিতব্যাশ কর্কস্যাশ মীলুডিঃ॥" মন্থ্র, ১১।

"পদে পদে ওভং তত্ত বং স্তীৰামঞ্চ রক্ষতি । অব্যত্য ন্ত্ৰিরং গৃড়ো যো বাতি পুরুষাবস্থা। পদে পদে তহুওভং করেছি পার্বতী দতী॥"

জন্দ বৈষ্ঠ্য, প্রীক্ষণ দশ্বত, ০২ প্রার্থ।
জীলোককৈ বহুলান পূর্বক ভোজনাদি প্রদান ও
ভ্রণাদি বারা সঞ্চা ভ্রিত করা, বহু মুলকামী শিতা,
ভাতা, পতি ও ক্রবরগণের কর্তব্য। যিনি জীর সন্ধান
রন্ধা করেন, তিনি সর্বাদা করেন। যিনি জীর সন্ধান
রন্ধা করেন, তিনি সর্বাদানা করে, সাংগী পার্বভী দেবী
প্রতিপদে ভাহার বিল্ল ঘটাইয়া বাকেন। বে পুণ্যভূমি
ভারতের অন্তর্গ এই মহাভারতে ধর্মাবভার ম্পেক্স
চূড়ামণি সুবিভিন্ন, "ইয়ং নঃ প্রিয়াভার্য্যা প্রাণেভ্যাহণি
গ্রীয়সী।

বাতেকু পরিপাল্যাক পৃষ্ঠা বের্ছেবর স্থপা।।"

বিরাটপর্কা, তয় অধ্যায়।
বিলিয়া বাক্য ও কার্যাতঃ প্রাপ্রি স্ত্রীর সম্মান রক্ষা
করিয়া গিয়াছেল। বে ভারতের আদর্শ ভূপতি
সত্যাবতার শ্রীরামচন্ত্র শহুত অধ্যমধ বজে নির্কাসিত
পতিব্রতা পত্নী সীতাদেবীর হিরপ্রী প্রভিম্তি নির্মাণ
করিয়া ভারতরমনী কেবল সাম্যসদিনী নহেন, যথার্থ
সহবার্থিনী, এই মহাবাক্যের সত্যভা বর্থে বর্ণের্যক্ষা
করিয়া লগতে ব্রীলাতির অর্চনার হীরকথচিত পর্ণ
সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন; যে ভারতে মুগ
মুগান্তরের কথা নয়, সে দিনও দক্ষিণেবরের মন্তর্শাক্ষ
পরমহংস শ্রীরামক্ষক প্রপরিনীতা মুবতী ব্রীক্ষে
ক্রপ্রাতার অংশরূপে দর্শন ও বর্ণন করিয়া ব্রীয় প্রকর্ত
ক্রপ মহামান্তভাবের প্রচার করিয়া ক্রিয়া প্রীয় প্রকর্ত

(द जावरजत भूस नीमारक कामाकारमजीव जर्कनारक এবং পশ্চিমে মৃক্তিধাম বারাদারী ক্ষেত্রে দৈবকতে, वार्विक हुनी, जनवाजी अक्जि विक्शृकांत अनुकीरन (करमंत्र माक्मा९ मंख्नि, मामीविका ७ वृद्धिक्र शिमी, गर्सिविध **উद्यक्तिशिक्षी, जाम<del>र्ग--</del>,कन्छा,छ**शिनी,वधु क्मनी गृहिनी কাৰিনীকুলের অব্যক্ত শক্তির গুড় মহিমা অবগতির ও পরিক্রণের নিষিত কুষারী পূজা পছতি স্প্রচলিত এবং व क्याडी भूबाद बाखिएक भर्तक भाव विक्त ब्हेबारक, त्रहे कावटक क्षीकाकित अधि यशायागा স্থান প্রদর্শনের ব্যবস্থা কেবল পুঁথিগত বলিয়া গাহারা चार्न चर्चात्न ग्रनार्कन करतन, सिर्वे नकन महाशिख्य क्वादक पृत्त स्टेख नमकात कताहे नीकिमकछ। পরিশেষে ভুক্তভোগী ধর্মভীক বদেশ ও বজাতির প্রকৃত हिछकामी मिक्किमानी महायुख्यशत्वत निकृष्ठे नाञ्चनप्र निर्वणन (य. उँशिया (यन उँशिकावृद्धित जानारा नमास्कर এই গলিত ছুষ্ট শতনিকে (Fistula) অগ্রাহ্য না করেন। खेवस नवा विशेत मांत्रज अधिवानी मःखामक वासिए প্রাণ ত্যাপ করিলে উহাতে ধনীরও প্রাণহানির যথেষ্ট আৰক্ষা আছে। আমি বড় লোক, হু চা'র হাজার দিতে বা নিতে, আমার তিলাই মাত্র কট হইবে না, এই ছণিত স্বাৰ্থনীতি মুখ্যান্তের পরিচায়ক ও বক্ষক महर। नर्सना मान वाचित्व हहेर्द रव, पूमि लामाव थमानाद्वत विवयांत्री वत्मावत्त्वत्र मानिक नव। विरम्पछः न्यास्य ज्यि कथन्छ अकाकी कीवन शावन कतिरक शांतिरव ना। जांपुक्न, वकुक्न, ककाकुन थ লামাতৃকুল প্ৰভৃতি বেটিত হইয়া তুমি সুখে কালাভিপাত कतिया थाक। ইহাদের পুখ दः ( । প্রভাব অনেক नम्दम (टामात स्वदम প्रकृष करत । देशाता नकरवि কিছু ভোমার জার গর্ভেশ্ব (To be born with a silver spoon in one's mouth ) श्रेश खूबिर्ड ब्हेवान त्रीठागा माछ करतन माहे। शुठतार वेदाता यकि कथन् जागात अयापूर्विक जनत्रीमणात जनत्य বালা পান, তাবা হইলে এই সকল হওতাগোর আগন-শোবের তথ্য যাস তোমার ক্ষম দীতক অন্তঃকর্বকে এক দিন না এক দিন সন্তাশিত করিবে। স্থার তগবাল না করুন, ইহাদের মধ্যে কদি কাবারও ব্য়ংছা কলাঃ বার্ষ যৌবনের উত্তপ্ত বিবাদে দীমহীন পিতা বাতাল নিদারু মনংকাত নির্ভির বাসনায় আম্বাভিনী বৃদ্ধ ভাষা হইলে উহার প্রতিহিংসা-লোপুণ প্রেডান্মা তোমাল ক্ষম নিজার বিকম ব্যাখাত ঘটাইবে। আমরা কুরিক্তে পারি আর নাই পারি, প্রেম্ময় বিশ্ব পিতার এক ক্ষমে নিয়ত বারত হইতেছে। একলনের দোকে উবাল একটা যদি একট্ও বিকল কিংলা বেকুরা হয়, ভাষাতে সকলগুলিই বিগড়াইয়া যাইবে।

**बिनिज्यभाभाव विशावित्नाव** 

## অনুরোধ।

(Erckmann Chatrian বিধিত 'E.e Blocus' ::
নামক আখ্যায়িকার বঙ্গান্থবাদ)

क्ष्यं व्यथायः।

ইছদি পাড়ার ষোয়াস বৃড়াকে একদিন ধরেছিলাক কে পুড়া ফালস্বুর্গ অবরোধের পদ্ধটা তোমার একদিক কর্ছে হবে। পুড়ার বোধ হয় সে দিন হাতে বড় কার্ক ছিল মা, বলে ''আজা সে আর বেশী কথা কি আকি ভোমাকে বিভারিতই শোনাব। ঘটনাটা ১৮১৪ সালের। বুড়া আমাকে যা বলেছিল, আমি তা ঠিক ভাষার্কী জবানীতেই বলে যাকিছে।

আমি তখন চাদনী বাজারের দক্ষিণ কোণে কে ছোট বাড়ীটা ছিল, দেইখানেই থাক্তাম্; ব্যবসা ছিল পুরানো লোহা সের হরে বিক্রী করা। গুলাষটা ছিল রাজার বিলানের নীচে, আর আমার পরিবারের নধ্যে আমার গ্রী সলে আর আমার বুড়া স্মনের ছেলেঃ

गारक्य। डेव्रेकिंग चात्र उत्तान वर्ष व व व्हेवि नामानक ছেল ছিল ভাদের পূর্বেই মার্কিন মূলুকে शांकित पिरप्रहिनाम चात्र (बका) राज अकि माज स्परत खाक विद्य भागि हिक्दि पिरेडिनाम । स्यारेडेड मान बाइन, ता बाजार आत्म ठामकात वावना कर्छ। আখার গোহার ব্যবসা ছাড়া আরও একটা ব্যবসা ছিল । রংকটের দক সিপাইনিরিতে ভর্তি হওয়ার পর वर्षम नवकाती পোषाक व्यूटा পেरव ভাদের পুরান कामा काशक विकी करत रकतरणा, आमि त्यहे नद किरम আমার কাচ থেকে আবার बिटा वाब्छाम। ক্ষিওয়ালারা নেই সব কিনে নিয়ে কতক কাপ্সকেও কারশ্বার দিত আর কতক বাছ গোছ করে চাবাভূষাদের कारह विकी कर्छ। बारगांठा तिहार यन व्वक्ति ना। बारन मारन रकात रक्षात रक्षात कक बश्के ए कान्नवूर्न रहत বেল, ভার আর গোনাগুরি নেই। আস্তে আস্তেই ভাদের মাণ ভোগ নেওরার ব্যবস্থা হ'ত, তার পর যেই ব্রকারী পোষাক পাওরা আর সাজ সজ্জা করে রওনা করিছে দেওয়। কেউ চলেন মেরেন্স কেউবা ট্রাসবুর্গ क्षिता जात कावाछ। यामा वावनाचा अहे तकमहे हिन जर मानक किन श्रत करनिवन्त रवन, किन्न (नरदत विक्षे (मार्क चात्र बत्रपाख कत्रए भात्रक ना। **मिर्ड क्रिया (बटक एक्ट्रंड क्रायाद शद ১৮১० मार्ग ए**व श्रुम-ब्रष्ट् व्रक्षम (फोल मरश्रह हन्हिन, ठिक (महे मसरवहे ब्यादक थात्र क्षरण केंद्रेवाद खेशकम कदरण।

আমাকে এছন আহাত্মক পাত্রনি মে ছেলে দুটোকে আউ্কে রেখে দেবো আর রাজ সরকারের জমা-দোর এদে খোড় পাক্তের লড়াই কর্তে নিজে আত্রম। ছেনে ছটোর বৃদ্ধির বিছু কমি ছিল মা। বার বছরে গা দিতেই ভারা রীতিমত কালকর্ম বৃষ্ণে নিরেছিল। বিনা প্রশার খাট্নির চেয়ে বে গালিরে হ্যি। যাধার দেশে যাওয়া ভাল একগা

ভূসিয়ার ছেলেদের আর বুকিয়ে দেওয়া দরকার **এর আংগ একদিন স্থা। বেলায় সাত-**ভালওয়ালা বাতি দানে বাতি জেলে আমরা থেতে वहनक्षि, अयन नमग्र छाटकत गर्छवातिमी छाटकत शास्त्र **क्टिय मूर्व एएटक (केंट्स डिर्ड इ.। वन्टल "এই**ड कुरू बावान वत्रम इत्त्र अव, अहेवात्र इत्यरनता व्यामात त्मामात ठाँमाम बरत निष्क भिरत वन्तुरकत श्ली, नकीरमत (बाँठ) ष्यांत्र कार्यात्मत्र (श्रांकांत्र गामूर्त्म बद्दा (कृद्द छ। छश्वांक এ পোড়া অনুষ্টে বে কি নিখেছেন"—আমি দেখনাম এই क्या उत्न कुलतक्षे मूच क्याकात बल डिटिए; चाकि मत्म मत्म राम्याम, ভार्याम-- व याहीता त्यामा (इत्य পৈতৃক প্ৰাণটা ক্ষিছি বিছি নষ্ট কৰ্তে বন্ধ রাজী নয়। याक् এक है। इडी इन। (भन। मिद्र वाना किहिन, चामाक যদি গোটাকতক বভামার্ক এই লড়ারে পোরাগুলোর यक (इत्त इ'क का इ'ता ७५ कात्तव बानारकहे আমাকে জলে পুড়ে মর্তে হ'ত। সে রকম ছেলে। बाक्रम वामि निकार वन्त्राय खता क्यनरे वामाक वश्यम् सन्त्रायम् ।

ছেলে ছুইটি ত শুনীকলার মত বাড়ুহত লাগ্ল—
বেমন রূপ তেমনি গায়ের শুক্তি। পদের বছরে
পড়ুতেই ইটলিপ একলন পাকা ব্যবসাদার হ'রে
উঠেছিল। পাড়াগারে গতে বেরিরে সে বেশ সন্তার
ছাপল তেড়া কিন্তো আর সেইগুলো জুটিরে নিরে একে,
মিটেল ত্রণের কসাই বরিস্এর কাছে বেশ ছপরসা
লাভ রেখেই বিক্রী কর্তা। ত্রোমেন-দাদার ভাই—সেও
পিছিয়ে পড়বার ছেলে নর। চাদনার নীচে ভিন্টে
গুদানে আমাদের বে পুরানো মাল বোঝাই ছিল সে গুল কি করে স্ববিধার কাট্ভি কর্তে হর তা সে
ভাল করেই শিখেছিল। আমার বড়ই ইক্ষা ছিল বে
ছেবে ছুটোকে কাছের গোড়াভেই রাখি কিছ আমার
ইক্ষা থাক্লে কি হয়, জীংগাভা ঠাকুরের ত একটু হয়া
বাকা চাই। আমার বড়া ব্রসের নড়ি স্বার ছোট লাফেনটিকে যে কাছে দেখুতে পাই, এতেই আমার বা কিছু আনন্দ। তার পেই কোঁকড়ান চুল, ডগ্ডগে চঞ্চল চাউনি দেখিছ তো কেমন চটুপটে, ঠিক যেন কাঠ বেড়ালীর বাজা। শেই কালে কেবল এই স্থটুকুই ভগবান আমার জন্ত রেখেছেন। ১৮১২ সালের পর থেকে কত ঝড় ঝাপটা যে মাথার উপর দিয়ে গেছে তাহা আর বল্বার নয়। কত মুক্ম আশ্বান যে মনে হত, তা আর কি বল্ব। মন যথন মুক্ত ধারাপ হত, এক এক বার বড় ছটিকে বুকে চেপে গর্ভাম্ মুক্ত দিরে তথন আর কথা বেকত না। তারা ভয়ে ভুয়ে আবাক হ'রে আমার দিকে তাকিরে থাক্ত।

व्यामि पार्थ वाम् हि ए मञाष्टे त्नर्भाविश्वन वाहाद्वत अक् একবার যুদ্ধ যাত্রার পর পারিতে ফেরেন আর অমনি চার পাঁচ লক্ষ মুদ্রা আর ছ ভিন লক লোকের ফরমাধ্রেস করেন। এবার আমার মনে হতে লাগ্ল কাকেও বাদ দেবেন না, সব ভাষ কমের মুখে টেনে নিয়ে যাবেন। শতর আঠার বছরের ছেলেরাও বাদ পড়্বে না। থবর যা পাওরা যাচিছল তা দিন-কের দিন থারাপ বই ভাল নয়। একদিন আমি ইট্জিগ্ আর ফ্রনেনকে ভেকে বল্লাম, দেখ বাবারা ব্যবদার য। কিছু মারপেচ छ। इब्रानरे तम मिथ क्लान आत या करें आधे ্বাকী আছে তা আর শিখ্তে ক দিন। আর হ একমাগ ষণি ভোষরা এখানে থাক ভাহলে আর দেখ্তে হবেনা। **ट्यामारंगत्र नाम ग**फ़ारत्र या अवात कर्षत्र डेटर्र यात्व, उथन चात्र नीविष्यान देव मना श्राहर कामार्मित छ छहि पहेरव । कर्छात्रा इन्नड এक विन इपिन एकामारमन्न मार्ट्य निरम वार्यन, वन्नूक ছোড়া শিথাবেন তার পর বে রওনা সেই রওনা। বুড়া বাপ মা হাপিত্যেদ করে পথের দিকে তাকিয়ে থাক্বে, তোমাদের আর দেখডেও পাবেনা আর থবর থবরাও পাবেনা। আমার ন্ত্রী সর্বে এই কথা ভনে কাদিতে আরম্ভ কর্বে আর ভার **(मधा (मधि वाड़ी ७६ मात्र मक्टन क्यांनाट आंत्रछ क**र्ना। ভারা একটু শান্ত হলে পর আমি বল্লাম ''দেখ এখন এখনই যদি ছোমরা হেভার বন্দরের রাজা ধরে মার্কিন মুলুকে রওনা হও, ভাষা হলে নিৰ্ধিবাদে বাহাল তবিয়তে দেখানে পৌছে

যেতে পার্বে। সেধানে গিয়ে তোমরা খাসা বাবসা বাবিধ্য করবে, বেশ তু পয়সা রোজগার করবে, তার পয় বে সাধি কর্বে, তগরানের আশীর্কাদে তোমাদের আবার ছেলে পুলে হবে, তাদের যেমন লালন পালন কর্বে তেমনি এ বুজাে বৃজ্বি লগুও টাকা পাঠাবে। জানতাে জগবানের আবেল বাপ মাকে কথনও ভক্তি শ্রমা করতে ভ্লোনা। আমাদের ধর্ম গ্রান্থ আইল্যাক্ যেমন জাকবকে আশীর্কাদ করেছিল বলে লেখা আছে, আমিও ভোমাদের তেম্নি প্রাণ খুলে আশীর্কাদ কর্বে। তোমরা দীর্ঘণীবি হরে জী পুর নিরে হথে ঘরণয়া কর্বে।—এখন কি মত কর্চে, ঠিক করে বলে ফেল।

ভারা তখনই মার্কিন যাওয়। হির করে কেণ্লে।
আমি তালের সারবুর্গ পর্যান্ত আগিরে দিরে এলাম। বুড়ো
বাপের আগীর্কাদ নিক্ষণ হর না। ভগবান মুখ ভুলে
চেয়েছেন, আমি যা যা বলেছিলাম এখন ঠিক ভাই হরেছে;
ভারা ছই ভাই ঘর সংসার নিবে স্থে রাজ্য কর্ছে।
ভালের পাঁচাট কুচা কাচা হরেছে। আর আমার কোন ও
কিছু আবশুক হলে তখনই প্রোর টাকা পার্টিরে দের।

এদের ত্ই ভাইকে ত রওনা করে দিয়ে এলাম, থাক্লেন কেবল আমার লেব বরসের অবলখন সেই সর্বের ছোট সাফেন্টি। বাপ মারে যদি এক ছেলেকে অপরের চেরে বেশী রেহ কর্তে পারে তা হলে তাদের জ্ঞানকে বা তালবাস্তাম তার চেরে যেন একেই বেশী ভালবাসি বলে মনে হর। তারপর আমার মেরে রয়েছে কেফাা, যার সার্ভামে বে দিইছি। জামাইটির নাম বারুম্ থাসা ছেলে, বেমন সাহসী তেমনি ভাল মারুষ। এই মেরেটিই আমার প্রথম স্থাম, তার ক্যানে আমি এর মধ্যেই নাতির মুথ লেখেছি। থোকার বাপের ঠাকুদার নাম ধরে তার নাম রাখা হরেছে দাভিদ। জাবানের থেলা দেখ, বুড়াদের কাঞ ছুরিয়ে লেলে তাদের সরিয়ে নেন আর ভালের খান পুরণ ফর্ছে পারিয়ে দেন এই সব শিশুদের। এবার কেফাার বে থোকাটি হবে, আমার বাপের নাম ধরে ভার নাম রাখ্য বে থোকাটি

>৮) ते गार्म कानेम्यूर्व अवस्तास्त्र आस्त्र या कि पू वरहे हिन ৰতপুর সরণ আছে সবই তোমাকে বল্লাম। এ পর্যান্ত সবই এক স্বক্ষ ভালয় ভালয় বাচ্ছিল কিছু প্ৰায় ছ হপ্তা আগে নৈকৈ সহরেই বল আর পল্লীগ্রামেই বল সর্বত্তেই ফেন কেমন অকটা গোলযোগ উপস্থিত হ'তে লাগ্ল। প্রংসমর কি আর অমনি আসে ? চারিদিকে অর জারি আরম্ভ হল। যুদ্ধে গিয়ে ৰান্না কত বিক্ষত হয়েছে তারা সব এই সময়েই দেশে ফিরতে লাগ্ল, কাকর বা হাত নেই,কাকর বা পা নেই। প্রায় সব ৰাজীতেই দেখ্ভাম, এরকম তু পাঁচটির সেবা ভশ্রবা চলছে। পত ত বৎপর থেকে জন মজুরের অভাব। আবাদ যে হবে ভার আর উপায় নাই। সাবা প্রয়ে সুদ্রে নিয়ে **প্রের্থা জিনিস পত্তের দাম এমন বেড়ে গেল যে বলবার** नत । आए।, महाल, माल, मांश कान कि निवल मखात्र शादात्र বো নেই, মদ পর্যান্ত আক্রা হয়ে পেল। আলু সেস্লোরেনের **दर्गन** किनिगरे जात शांठे चारम ना । स्थाबनरम्त्र मान সব গুলামেই বোঝাই পাক্ল। মাল যদি কাটুভি না হয়ে <sup>ক</sup>ভদাৰে পড়ে থাকে তা হ'লে দে মালও যা ধুলা বালিও ভাই। দেখে মনে হ'ত অভাব কিছুই নাই কেবল যা ছঃথ আরু করের আর বারোম পীড়ার। এর উপর আবার আকাল এনে চারিধার থেকে উঁকি ঝুঁকি মারতে আরম্ভ করে। সে মাহ'ক ভগবান কিন্তু এ ছদিনেও সামার দিকে চাইতে ভোলেন নি। নবেশবের পোড়ার থবর পেগাম কেন্দার আর একটি খোকা হয়েছে আর মা, ছেলে ছুৰনাই ভাল আছে। ভনে বে আমার কি আনন্দ হল তা আর কি বল্ব। আমি তথনই সার্ভান যাব বলে বেড়িয়ে পড়্লান। ফিটুজ তুমি অবশ্র বুঝতে পেরেছ যে শুধু মেরের আর একটি পুত্র সন্তান হরেছে বলেই যে আমি এত খুসি হরেছিলাম তা নয়। এই নাতিটিঃ কুপায় আমার জানাইকে বে বুদ্ধে গিয়ে অপবাতে মতে হবে না এতেই আমার এত আহলাদ। আমার বারুস বাবাজীর বরাংটা মোটের উপর ভাশই বলতে হর। সন্তি সভার ঘোগে সমাট বাহাতুর যথন स्कृम बाती करत्वन व यात्रा व करवंनि जात्मत्र मक्नादकहे यूक

যেতে হবে। ঠিক তার ছদিন আগেই বাকৰের সঙ্গে আমার क्यांत (व रख शिष्ठ । जोत श्रेत यथन क्कूम रण, शास्त्र ছেলে পিলে নেই ভারাও ফুদ্ধে বাবে, ভার পুর্বেই ভার প্রথম ছেলেটি ভূমিষ্ঠ হয়েছে। ভারপর বুদ্ধটা থারাপ বাচ্ছে দেখে যথন কর্ত্তারা চ্কুম জারী কর্ত্তে গেলেন যে এক ছেলের বাপও ৰাদ যাবেন না, ঠিক দেই সময় এই ছোট নাভিটির জন্ম হ'ল ১ वन प्रिथि वावा এতে आनम हम कि ना हम । उथनकात्र কালে জুপাচটি ছেলে থাকা পরম সৌভাগ্য বলুতে হবে। ভা না হ'লে আর কিছুতেই কাটাকাটির ভেডর অপখাত থেকে বাঁচবার উপায় ছিল না। কাজেই সে সময় পুত্রের উপর যত দরদ আরু কিছুর উপরই তত দরদ হওয়ার কথা নয়। সেই জন্মই আমি তনবা মাত্র দেরী না করে লাঠি গাছটা হাতে নিজে বেড়িরে পড়ুলাম ৷ ভাবলাম, যাই গিয়ে प्तर्थ आति नाजिके दक्षन इ'रब्रह् । यति प्रवि "मक्त्वक বাহ্নার" মত মোটা সোটা বলিষ্ঠ হয়ে থাকে তা হ'লে বুঝুঝো তার বাপও এ যাজা রক্ষা পেরে গেল। কিন্তু পথে যেতে যেতে যা সব দৃশ্য দেখতে পেলাম, ভগবান ৰদি আরও বিশ বছর বাঁচিয়ে রাখেন তা হ'লেও তা ভুল্তে পারৰ না। বোঝ বাবা, এক বার—কাজভা থেকে সার্ভান পর্যান্ত শ্বা গাড়ীর সার চলেছে। সব গাড়ী ঝারামী আর মা ওয়ালা দেপাইয়ে আল্সাসের যে সব চাৰা ভূমাদের গাড়ী ঘরে, জোর জাপট করে এই সব অভাগা সেপাইদের সঙ্গে দিয়ে পাঠিয়ে দেওয়া হয়েছিল তারা রাত্রেই জোট করে খোঁড়া খুলে নিয়ে গাড়ী টারী ফেলে দৌড় দিয়েছে। বোলা মাঠ সারা রাত্তের হিম আর বরফ ভালের উপর দিয়ে গিরেছে। যে যেখানে ছিল তেমনি ম'ক্টে পড় রয়েছে, একটু সরতে নরতে পারেনি। এ -বেন প্রকাণ্ড একটা গোরস্তানের লম্বা মিছিল চলেছে ৷ দেখলাম হাজার হাজার কাকে কাল মেবের মত আকাশ ছেরে কেলেছে। ভারা গন্ গন্ শাসে পাণা নেছে বেগে উড়ে বাচে

भार थक गत्म विकठ का का करत ठातिनिक कांशिय जून्रह । সংগারে যে এত অগুন্তি কাক আছে আমি না দেখলে তা কখনও বিশ্বাস কর্ত্তে পারতাম না। কাকগুলা এসে সেই মজা বোঝাই গাড়ীর উপর বস্ছিল আর কাছদিয়ে কোনও লোকের যাতায়াতের সাড়া পেলেই তারা বনকস্তানে'র सकरनद मिरक छेटड़ वाहिस्न ना इब मारनद छात्र। मर्छ वाडीद ছাদের উপর গিয়ে বস্ছিল । আমি সেধানটায় পুর পা চালিয়ে চলে ৰেতে লাগ্লাম। মনে হতে লাগ্ল যেন কত স্ব ছোরাচে রোগ পেছন থেকে তাড়া করে আস্তে। ভাগ্যে **मितात काल्**गवूर्त भीखा এक हे नकाल मकालहे शर्फाइल। দিলিবার্গ হরে নির্মাণ পাহাড়ে হাওয়া হ হ করে বইতে আর্থ কর্ল, দেই হা ওয়ায় যত রোগের বীজ উড়িয়ে নিয়ে গেল। তা নইলে মহামারীর হাত থেকেও বাঁচা কঠিন হ'ত। ভতে পাই নাকি মাঝে মাঝে কাল পেলেগ্ ও দেখা मिहेहिन। नारवष्ट्रत भारत्रत्र व्यथम मिरक यथन निल् कीक तहत्र পেকে এরা হটে আদ ছিলেন এদব দেই সময়কার ব্যাপার। ৰাক্ দাৰ্ভান ত অনেক কটে পৌছান পেল, গিয়ে দেখি महा शालमान महत्रेण रमशाहे, माञ्जि, वन्तूक, कामान, গোলন্দাকে, খোড় সওয়ারে ভর্ত্তি। আমার মনে পড়ে যে, বড় রাম্বার গারে একটা সরাইখানার জানালাগুলো সব খোলা ছিল। ভেতৰ দিকে দেখা যাচ্ছিল একখানা লম্বা টেবিল পাতা রয়েছে। তার উপর খাসা ধোপ দোস্থ চাদর বিছান। থাবার জিনিষ থরে থরে সাজান রয়েছে। বড ঘরানাদের निष्म (व अक्टा क्लोज क्या इरम्हिन मिटे मरनेय क्लक्खिन **(इ.स.** के भग नित्य है फिरंब गांकिन। वाहिरब स्थरक स्थेहे শ্বা টেবল আর থাবার দাবার আয়োজন দেখেই তারা স্বাই हैक हैक त्याज़ा (थरक त्नाव পड़िक्त। दशाहित अप्राद्धाहि তেমনি একটি তক্ষক লোক, সে প্রত্যেকের কাছে আগাম আগাম খোরাকীর থর্চ। আদার করে নিয়েছিল। তার পর बाहाता (वह ८४८७ वरमहरू, अमिन ८११६छेरमत अकमन वी পেছন থেকে দৌড়ে এদে"ওই প্রাসিয়ানরী এল"বলে চীৎকার कता छेठून। दारे (हैहान बाब अभिन मकरन नाकित्व छेठ्ठ

ৰওয়ার হরে ঘোড়া ছুটিয়ে দেওয়া। কোথায় প্রাশিয়ান তার ঠিক নাই, পেছন ফিরে দেখবারও কারুর অবশর হ'ল না। শুন্তে পাই, হোটেলওয়ান। আগে এমনি করে একবারকার খাবার বিশবার বিক্রী করেছিল। এ ত বাবসা নম্ন, বীতিমত ডাকাতি। আমার কতবার মনে হচ্চিল যে, এই সৰ জোচোর दिहारमत भरत निरत निरत नहेरक स्माध्या छाड़ा **अ दक्य** चमवारमित्र व्यात्र रकान ७ खेवश नाहे। त्रहे मिनकात्र त्रहे वावहात (मध्य व्यामात मसमतीत वृशाम छत्र शिताहिन। আমার বনি ক্ষমতা পাক্ত তা হ'লে সেদিন বাঁকি যা কিছু নঞ্জে পড়েছিল তার একটা ছবি একে তোমার শাদ্নে ধরে দিতাম। সেই বারোমী সেপাইদের মুখের চেহারা, তাদের শুরে থাক বার ভঙ্গী, ভাহাদের সেই রোপ ব্রশার চীৎকার আর বারা হাপসে পড়ে আর হেঁটে বেতে পার্চিছণ না কিন্তু যাদের জোর করে হাঁটিরে নিয়ে যাওয়া হচ্ছিল সেই অভাগাদের চোথের জল, এসব ষতই বল্ব ভতই কথা বেড়ে বাবে। শুনে ভোমাদের আরও গা শিউরে উঠবে। থাক আর কাল নাই! একটি কথা আমি কখনও ভূপতে পার্বনা। তানেরির সেই প্রান সাকোটার পাথরের উপর মাধা রেখে একজন অল্ল বয়সী সেপাই ওয়েছিল। ভাল ঘরের ছেলে, বয়স সতর আঠারর বেশী হবে না। সে মাঝে মাঝে উঠবার চেষ্টা কর্ছিল আর তার কাল ঝুলের মত একথানি হাত তুলে দেখাচ্ছিল। বুঝ্লাম, পিঠে খালি লেগে হাত দিয়ে বেডিয়ে গেছে বেচারা বোধহর গাড়ী থেকে কি করে পড়ে গিয়েছিল, তার কাছে কেউ এখতে দাহদ করছিল না। সকলেই বল্ছিল ওর ভীষণ ছোয়াছে রোগ। कि यञ्जना कि कहे। वनव कि भरन कर्दि अ छत्र हता। याक् সে কথা। সে দিন ভার এক ব্যাপার ঘটেছিল, তা তোমাকে এখনও বলা হয়নি। বুঝলে ফ্রিজ, একদম বড় জানরেল মার্শাল ভিক্তরের সঙ্গে সাকাং।

আমার বাড়ী পেকে বার হতে একটু দেরী হয়েছিল। বথন কাল্সবুর্গ গিলে পৌছালাম তথন রাজি হয়েছে। বড় রাতা ধরে যাচিছ, এমন সময় দেথলাম, সলেই হোটেলে মহা

क्षीकृ के बारकार कार्या वित्व चारणा चाम्रह । हकन त्मभरे बाहित्व मैक्टिंग शाहांका मित्रक् । वर्ष वर्ष गर क्यारक्षेत्र भारत्वता त्रण त्वत्राणत देक्षि शत्त व्यन्तत्रत्र वाटक ্ৰান ছে। বাহিরে দেওয়ালের আংটার মন্ত মন্ত ঘোড়া ুরীধ্রা। হোটেলের উঠানটা প্রকাশ্ত। ভারই এক পাশে ুঞ্জ থানি বোড়ার গাড়ী দীড়িয়ে ছিল। সব প্রস্তুত। ্ৰেষ্ঠন হুটো বেন পোহাতি ভারার মত অগছিল। পাহারা-স্থারের। রাস্তা থেকে সব লোক সরিবে দিচ্ছিল। আমার কিছ না গেলেই নর। জামাই বাড়ী দেখান থেকে আরও ্প্রেকথানি আগে। আমি সেই ভিছের ভিতর দিয়ে হোটেলের সামনে পর্যায় এগিয়েছি, অমনি একজন সেপাই "इंदे बाउ" "को बाउ" करत (इंतिरब डेर्डरना। असन मगर ্ভাষেরি একজন উপর ওয়ালা এসে হাজির। গেঁটে ্ৰোৱানগুলি ভাটার মত শক্ত। কটালে গোছ গালপটো ুমাড়ী। খিলেন ওয়ালা ফটক দিয়ে বের হতেই আনাকে ্রেখে চীৎকার করে বল্লে "আরে মোলাস, তুই এখানে এলি ्र (कारथरक, कड मिरानत शत्र (व छात्र मरक रमथा! छत्-সাক্ষাংটা হলো সেও ভাল। এই বলে সে আমার হাও চেপে ধরব। আমি ত একেবারে আকাশ থেকে পড় লাম। মুখ্ত একজন জাদুরেল গোছ লোক আমার মত সাম্ভ মান্দের ্হাত ধরুছে এ রক্ষ ত বছ দেখুতে পাওয়া যায় না। আমি ় শ্বাক হরে তার পানে চেরে থাক্নাম। একটু দম ধরতেই ্ভাকে চিন্তে পার্লাম। সে আমাদের ভ্রিমান,এখন ফৌভে ্চাকরি করে। বড় কেও বেটা নর, একটি দল সেপাইএর রীতিমত দর্দার। পরতিশ বংসর আগের কথা আমার মনে পড়তে শাগ্ল। আমরা তখন এক সঙ্গে "গেনোদে" প্রতিকে পাঠশালে পড়তাম। তথন ছেলে বৃদ্ধিতে গড়ের ্থারে, কেলার মাঠে মাঠে,সহরের রান্তার ছলনে কড যে তুরস্ত-পনা করে বেড়িয়েছি তা আর বল্বার নর। কিছু এই ্রেথায় পর জিমান ভাষা আরও করবার ফাল্সবুর্গ ছরে গেছেন কিছু পুলানো মিতেটিকে আৰু একটি বারও মনে ূপড়েনি।

জিমান আমার হাত ধরে একগাল হেঁসে বলে "আর এদিকে আর, আব্দ ভোর সংশ বড় জাদুরেশ সাহেবের বেখা क्तिय पिरे"। (यह वना जात क्थावाडी क्श्ता त्नह. वकाम नामारक हिए हिए करत है।न्र है।न्र है।न्र मेख वक्हे। হল থরে নিরে উপস্থিত কর্লে। সেথানে ফৌজের বত কর্ত্তা বাক্তিদের আজ্ঞা। তুথানি টেবিল পাভা ভার উপর গোটা হুই বঠন আর কতক গুলো বোডল সাজান। একরাশ काम्रतम कर्लन, काश्वान मारहरत। शामा शामा भाषाक পড়ে হর কছমের টুপি মাথায় দিয়ে পুরে বেড়াছেন। কাকর বা টুপি লাল, সাক্ষরই বা খালক লাগান আর কাক্ষরই বা মাথায় ফলক লাপান ইস্পাতের 'মাথাল' ছলমেট। কোমর (बंदक मन जरबाबान कित्रीह जून एक, डेक्सिंब डेंड कनादब প্রার কান পর্যান্ত ঢাকা পড়েছে। কেউ কেউ বা দাঁড়িয়ে নিজেম্বের মধ্যে কথা বার্তা কচ্ছেন, থাবার দেওয়া হলেই ८५८ठ दरम गांवन । मक्नाक्ट रान किन्न मन्मता मन्मता বোধ হতে লাগুল।

এসব লোকদের ভিতর দিয়ে বেতে ভোমাদের আমাদের সাহস হয় না কিছ করি কি । জিমান তো হাত ছাড়েনি, আপন मरन टिंग्न निरम्हे हरनाइ। स्थर मामना अक्डा हार्ड শরজার কাছে গিরে পৌচালাম। বরের ভিতরের উজ্জল व्याता प्रयादात कीक निरम तात त्थरकरे तिथा याच्छिन। আমরা তুজনেই ঘরে ঢুকুলাম, বেশ উচু বর । পালের বাগানের দিকে গোটা ছই জানালা খোলা রয়েছে। পার্শাল বাহাত্র (महे . च्याह **इ्टिंग**न দেখ লাম খালি ৰাড়িয়ে রয়েছেন। ভিনি মুখে মুখে বে সব হকুৰ দিয়ে যাজিলেন আর ভুই জন লোক তালিখে নিজিল। আমার মনের অবস্থা তত ভাগ ছিল না, সেই লয় আর বেলী কিছু লক্ষ্য করতে পারিনি। আমরা খরে চুকতেই মার্শাল আমানের দিকে ফিরে দাঁড়ালেন। আমি দেখুলাম তাঁহার Cहराता व्यत्नको गरवन (क्यांत हावा क्यांत्मत मणा। (वन গ্রা চৌড়া লোক। বঁরস প্রার পঞ্চাশ আন্দান। মাধার চুলে পাক গরেছে। বয়সের থিসাবে শরীরটা খুব মজ্ব বলেই বোধ হল। জিমান কুনিশ করে বল্লে, মার্পাল ।

আই একজন লোক ধরে এনেছি। জান্তি পক্ত এ।

আমান্তের সক্তে একজে পাঠনালে পক্তো, গক্ত জিশ বছর

বাঁনে গাঁলে খুলে বেড়াজে। আন্মান্ লোরেনের কোনও

অমপাই এর জান্তে বাকী নাই। মার্পাল কাছের গোড়া

থেকেই আমাকে এক ফ্রমা খুলে নিবেন। আমি

ভখন মোটে হাত চারেক ছরে দাঁড়িয়ে টুপিটা হাতেই ছিল,
কেমন বেন বাধ বাধ ঠেক্তে লাগ্ল। ভারপর কেরানিদের

আছি থেকে কার্যালগুলি নিরে নাম বস্তথং করে আমার দিকে

চেরে বল্লেন "আছে। মুক্রি, সেই গত বারকার শড়াইএর
কথা লোকে কি বল্ছে বলত । পাড়ার্থায়ে কি রক্ম শুন্তে

টুন্তে পাও।"

''মুফুবিব' কথাটা ভনে আমার একটু দাহদ হল। আমি . বল্পাম "ছোঁরাচে অরে বোকে ভারি বই পাছে। কেও এখন ও নির্ভর্ম। হরনি। সকলেই জানে সমাট বাহাছর यथन এত कोम नित्र काष्ट्रत গোড়াতেই রয়েছেন"—আথর कथा भिव ना श्टिंह जिनि (यन এकर्रे विव्रक ভाবে वार्या বিষ্ণে বল্লেন লে যাক্ষে, ভারা আত্মরকা কর্তে চার কিনা ভাই বল'আমি বল্লাম আল্সেস লোরেনের লোকেরা সমাটকে প্রাণ দিয়ে ভালবাসে, তাঁর জন্ম ভারা যথা সর্বায় বিসজ্জন क्दुर्ड श्रेष्ठ । डाजा निक्त हे श्रांग शर्व (मन्त्रका क्र (व।" व्यामि निरम्भरक वैक्टिय कथा क्यांग वन्नाम वरहे किछ আমার মুখের ভাব দেখেই মার্শাল বোধহর বুরতে পেরেছিলেন रव, आमि नड़ाई रेफक्षम वड़ जानवानि ना। त्रहे अश्रहे বোধহয় মুখ টিপে হেলে বলেন 'ক্যাচ্ছা; কাপ্তেন, এতেই হ'বে এখন ।" কেরাণীয়া কের আবার লিখ্তে আরম্ভ কর্লে, জিমান আমাকে ইদারা কর্তেই আমি তার দকে বার হরে unin । वाहित्त (विकृत्त किर्मात वन्त "वा स्थातान ভानत ভালর কুটুন বাড়ী যা"। সেবার আর পাহারার আনাকে ক্ষণুলে লা, আমি সোজ। পথ ধরে চলে গেলাম। একটু পারেই বারুখের দরকার পৌছিলমি। বারুখের বড়ৌ বড় পান্নীদের বে আন্তাবল ছিল ভারই পেছনে একটা ছোট

প্রবিধার ভেডর। কি আঁধার রাত। আমি করেক্পার ছুরারে বা দিয়ে সেখানেই দাঁড়িরে রইলাম। পথের দেই দ্ব ভারানক দুখা দেখার পর আপেনার জনের কাছের গোড়ার এলে প্রান্টা বেশ ঠাভা বোধ হজিল। বুক আর সেরক্ষ ধর্কর্কর্ভিল না।

দেখ ফ্রিজ, এই সৰ সায়ের জোরে লড়ালড়ি, এই সৰ

যুদ্ধ জেতার অংকার, যা হ'তে সংসারে এত কট-এ সবই

তথন আমার কাছে নিতাম তুল্ছ জিনিস বলে মনে হজিল।

ছই এক মিনিটের মধ্যেই জামাই গালির দরজা খুণ্ছে ভন্তে

পেলাম। বারুধ জেফাঁনিক আমার জন্ম বেশীকণ ধ্বে

থাক্তে হয়নি।

बाक्य वन्त ''वावा जलन नाकि ?"

আমি বল্লাম "হঁ। আগতে বড় দেরী হ'ল পথে, আটুকা পড়েছিলাম।" 'ভিতরে আহ্ন'।

আমরা থিড়কির রাস্তা দিরে ভিতর বাড়ীতে—
বেধানে আমার জেকাঁ। শুরেছিল সেই বরে গিরে উঠ্লাব।
ধণ্ ধণে চাঁদর বালিলের জন্য মেরেটার রং ক্যাকালে
ক্যাকালে বোধ হচ্ছিল বটে কিন্তু মুখে আর হাসি ধরে না।
আমার স্বর শুনে সে আমাকে আগেই চিন্তে পেরেছিল।
আমি কাছে গিরে তাকে বুকের কাছে টেনে নিলাম।
মনে যে তখন আমার কি আনন্দ, কথার তা কি ধন্ব।
কোলের নাতিটি কেমন হ'ল দেখবার জন্তু এদিক ওদিক
ভাকাছিলাম, শেষে দেখি যে জেকাঁার কোলেই গারের
চাঁদরে চাকা ররেছে।

জেকা। বলে বাবা এই যে থোকা। কেম্ন হরেছে দেখুন।

থোকার গারে পা পর্যান্ত একটা জামা পরান ছিল। জামি লেখেই বৃষ্ণতে পারণাম, নাভিটি বেশ গোল গাল নিরোগী হয়েছে। হাত ছটি জোর করে মুঠি বেধে রয়েছে। বল্লাম, "বারুথ এযে দেখছি জামার বাপ এসড্রাস জাবার ফিরে এসেছেন, মুলল হোক্ মুলল হোক্। জামার ইচ্ছা হল বে ধোকাকে একবার কাণ্ড চোপ্ড খসিরে দেখি। জামি

ভার আনটা পুল্তে লাগলাম । সাত ডালওয়ালা বাতি দানে সাওটা বাভি অবছিল। ঘরের ভিতরটা বেল গরমই ছিল। আমা বুল তে পিয়ে আমার হাত কাঁপতে লাগল। ভাই দেখে আৰাম নেৰে ভাগ সেই বজপুত হাত তথান দিয়েই আমাকে শাহাৰ্য করতে লাগ্ল বলে দাড়ান বাবা,দাড়ান, আমিট খুলে निष्टि এখন, बाषात बाषाहेख (पहान नै। जित तथ हिन । আমাদের সকলেরই চোথ ছল ছল করছিল। গারের জামা **কাপড় সব খোলা হ'লে পর দেখলা**ম, খাস। গোলাপ কুলের **মত রং, চণ্ডড়া বৃক্, মাথাটিও বেশ বড়--একলিকে কাত হ'রে** ররেছে। গোলগাল পা ছুধানিতে মল পরান। শালা সৰ মানান গই। থোকা তথনও জেগে উঠেনি। আর জন্মের বুমের বোর তথনও চোথে লেগেছিল। **डाटक मार्गात डेलत कृत्म मिलाम। हेव्हा इंग्ल आमारमञ्ज** ध्यक्र मनित्र नायुष्पत्र मछ नाम कीर्डन कत्र एक कत्र एक नाहि আৰ মুক্তকৰ্তে গাইতে ২ ভগ্যানের বাদ দাদীদের ভেকে 4 M-

শ্বরে শার তোরা কর্ সবে বিভূ শুণ গান কর তাঁর মহিমা কীর্ত্তন শাস্থ্যা সকাল লে নামের বিরাম দিবি কথন বল

> মন্দগমনের মন্দলের শে অন্ত নাইরে দক্ত জাতির কর্ম্ভা তিনি আকাশেরও উর্দ্ধে তিনি

কার সদে দিবিরে তাঁর তুগনা
বগ্না ভাই কেমন করে করবি রে তাঁর তুগনা
কালা ধুগা থেকে ছেলে তিনি টেনে গন কোলে
তাঁর ফুপা হলে বন্ধ্যা নারী দেখে পুত্র মুখ
আয় সবে গাই তাঁর নাম —

পত্য বল্ছি ক্সিজ মনে হ'ল বটে, এমনি করে জগবানের নাম গান করি কিছু পোড়া সুখে তা বার হ'ল কই, উপু ফল্লাম 'বালা ঝোফা হয়েছে। থালা গড়ন দীর্ঘনীয়ি হয়ে আমাদের জাতির মুখোজন করবে, বুড়া বর্ষে এ হ'তে একটু সুখের মুখ দেখতে পাব।"

তারণার পোকাক্টে তাপ নারের কাছে দিরে টেকৈ টুকে
পাধতে বলে বড়টিকে প্রকবার দেখতে গোলান। দেখলান
সে ভাপ থাটটিভে ভারে অখোরে পুন দিছে। আনরা
আনন্দে পরশ্পরের মুথের দিকে চেয়ে অনেকক্ষণ বলে রইলান।
বাইরে সব পোড়া বাছে। সৈপ্ত সামস্করা চীৎকার কর্ছে,
বড় বড় শব্দে কভ সব সাড়ী চলেছে। ভিতরে সব শাস্ত
সব হির। মা ভারে নিভাবনার ছেলেকে মাই দিছে।

পেথ ক্রিক্স বন্ধ বুড়া হয়ে পড়েছি। দুর অতীতের জিনিস বেন সে দিনকার বঁটনার মত চোথের সামনে খোরে। মনে হলেই বুকের কাছ্টা কেমন করে ওঠে। ভগবান আমাকে থথেষ্ট দয়া করেছেন, আমি সর্বলাই সে হুলু তাঁকে ধলুবাদ দিই। দেথ তাঁর কুপার এই দীর্ষকাল বেঁচে রয়েছি, এই বয়সেই তিন পুরুষের মুথ দেখ্লাম কিন্তু এতেও আমার আশ মেটেনি যদি তাঁর দয়া হয়, ইছো হয় বেচে থেকে আরও হুপুরুষের মুথ দেখে বাই।

ইচ্ছা ছিল সেই সোলেই হোটেলের ঘটনার কথা এদের বল্বা কিন্তু আমার তথনকার আনন্দের কাছে এসব ব্যাপার নিতান্ত তুচ্ছ বলে মনে হয়েছিল। শেবে কেন্দ্যার হর থেকে বার হয়ে পাছে তার বৃষের ব্যাঘাত হয় সেই জন্তু পাশের একটা ঘরে গিরে তুই এক গ্রাস থেয়ে নিরে বারুথকে সকল কথা প্রকাশ করে বল্লাম। সেত তানে অবাক্। আমি বল্লাম, "শোন বাবা আমাকে সে জিজ্ঞাসা কর্লে, লোকেরা আম্রাক্রণা করবে কিনা, এর মানে বৃষ্ণেছো তো। বেশ বোঝা যাচ্ছে, শক্রু পক্ষেরা এদের ভাড়া করে আস্ছে হরতো ক্রোশ পঞ্চাশের মধ্যেই এসে পড়েছে। এঁরা বোধ হর ভাদের আট্কাতে পারবেন না তারা ফ্রান্সে চুকে বেধ আমাদের আনন্দের মধ্যেও সমুথে কত বিপদ কত কট খনিরে আস্ছে। কত ভরের কারণ ররেছে। আমাদের দেশের পোরকোর এই দশ কংসর ধরে অপর জাতির উপর ফে অভ্যাচার করেছে,এখন ভারা তার প্রতিশোধ নিত্তে আস্ছে। আমার মনে হয়—থাক্ ভগবান করুন আমার এ ধারণা বেন ভূনই হয়। এই কথা বর্ত্তার পর আমরাও শুতে গোলমান ভবন রাত্রি আন্দার এগারটা, বাইরে তথনও থুব গোলমান চন্ছে।

প্রীপ্রস্পাস সরকার ঃ

এস।

নুতন করিয়া नवादन यम 47 निज्हे-नव वधू, হাসির জোছনা इड़ार्य जानरन 47 অধরে ঢালিয়া মধু! হে চির-স্বীপাত, পুশ্বিত করি', এস कारत निक्क मम, ব্রিশ্ব পরশে क् इंदि वक 47 মলর মাঞ্ড সম।

আজ আগায় রাতের ° গোপন গেছে শিথিল স∗ম পাশ

3

কামিনী হেন৷ রজনী গন্ধা খুলেছে খুকের বাস! (更强 স্থ্যডি-আকুন ৰকুণ বিভানে পৰন মাতোগারা---नक्त (माक्र ছুটাবে শ্বরিৎ রুসের ফোরারা চু • নিশীথ মাতে শোন ভরিয়া আকাশ পাপিয়া ধরেছে তান, '(बो कथा क ७' माधिया गावी. क्द्रदर दक कात्र मान! পাঞ্চীর গানের ভরণ ধারাক ওগো গৰিমে গিমে, সাধ— विरुद्ध गारे ভোগার পারে ভাঙিয়া সকল বাধ ৷ निश् এমনি রাজে ভোষায় আমায় প্রথম পরিচয়; জীবন আমাঞ শেদিন হ'তে ভব পরশ-অধাময় ! @ J সভ্যি কি মে ুমোদের, থিয়ে: প্রথম মিশন রাতি ? **ভূ**মি নও কি আমার শত জনমের— यूग यूगारखन माथी ? षूनांन विन्यू ছিলাম না ধোৱা ক্ষীরোদ সিন্ধ নীরে ? व्यानिय প্রাতের ষুগল কণিকা त्मानात करून करत १ ভক্ষ পভিকার তুৰের প্রাক্ত त्माहान चारवहैरन १ ন্দ্ৰ নাড়ী **४**क्ष शुर्हेद ক্রোফ সিঞ্ন?

	•		• .	হুটেছি যোগা	क्छ र मार्थ
শোরা	দেখিনি কি দোঁতে প্রেমের জার্ডি			व्यनानि व	াৰ হ'তে,
्र <b>६न(म)</b>		_		আবেরা কভবার	আদিব বাৰ
م د د د د د د د د د د د د د د د د د د د	পঞ্চীর মূলে চু কেলিনি অঞ্চ নির্বাসিভার			ভাগিয়া কালের স্রোতে !	
<b>अ</b> विशेष					
	হুংখে ভ্যাসা কুলে 🔊 দেখিনি কি যোৱা উ চলা গোপিনী				
			স্থি,	rafes rates	নতুন দেখা
	গোকুণ বুন্দাবনে ?		417,	द्यानम स्मारन ह	
	ৰমুনা লংগ্ৰী				
	শ্যামের বাঁ	শীর তাবে 🔈		भू कित्रा स्थु	
***				হারানো রভবে !	
	•			চির শ্বস্থ	
ŧ				নৰ হ্রিং	
जांद्र -	(१थिनि इक्टन		<b>₹</b>	ন্তুন ভারে	পুরামো শ্বৰ
	<b>बूध विकास</b> ,			উঠিয়াছিল বাঞি'!	
4 4	विश्व छेगारम	थगत्र नृङा			
	সভীর দেহ শয়ে ?			>•	
	काषि नाई भावा	**	<b>\$</b> 3 <b>6</b>	এদ <b>কাজ মোর</b>	পুরানো বধ্
	স্থামীর শব কোলে			নুতন আবাহনে,	
	না হ'তে ভোগ	বাদর রাভি			ধরিব ভোমার
;	ভাগিন অকুন কৰে ?			নব আৰি	
	<b>b</b>		আৰ	চিন্ন দেবভার	ন্তন পূজা
				कत्रिव नव वर्ष	
শেরা	ভখনো ছিহ	এখনো আছি		খুণ্ড খুডি	জাগাৰে তুলি'
,	এনেছি কতবার,			क्षेत्र नव रूर्य !	
	শুৰ্ব হুত্ৰে				ञ्चीरवारगणहम्म रहीसूती।
	ভাগ্য ত্ৰ				

# 'রক্তমোক্ষণ ও শিরা বিদ্ধকরণ প্রণালী সম্বন্ধে আলোচনার প্রতিবাদ।''

গভ পৌৰ মাদের প্রতিভা পত্রিকার শ্রীসুক্ত মোহিনী মোহন দাস মহাশয়ের পূর্ব লিখিত প্রবন্ধের হীযুক্ত ল্যোভিষ্চল সরস্থতী মহাশ্য একটা বিস্তৃত আলোচনা বা माराक्रमकान अकाम कविद्याह्म मिक्टि शाहेलाग । साहिनीसाहन मान महान्यत मून अवस्त्रत "किशि" **অতি অম্পট্নতাবে লেখা থাকার জন্য এবং চিকিৎসা** শান্তের কতগুলি বিশেষ শব্দ প্রয়োগ থাকায় মাননীয় শ্রীযুক্ত সম্পাদক মহাশয় প্রবন্ধটি প্রমাদশ্লা করিবার हेम्हात्र श्रवस लिशकत निकरे श्रक (मिथवात सना (श्रवन করেন কিন্তু দৈব ছর্মিপাকে প্রবন্ধ লেখক নিতান্ত ব্যস্ত থাকার জন্য উহা একবার দেখিবারও অবকাশ পান नारे अमिरक दिलब रखत्रात बना উक्त अनक अक मः (मार्षि न न इहेग्राहे भूजि इहेग्राह् अवः अहे कत्रहे প্রতিভার মত কাগদেও এচ ভুগ রহিয়া গিয়াছে। हैश यथार्थ हे दः (४३ कांत्रण मत्मर नाहे र्यक्क व्यामात्मत সরস্থতী মহাশয় এই গঘু পাপে নিভান্ত গুরু দণ্ডের यावश कतिशाह्न (प्रविशा महाई आभवा अवाक श्हेश পিয়াছি। এই প্রফ সংশোধনের জন্য একটা সর্বভীয় প্রতিভা বরচনা করিয়া একজন প্রফ-রিডার ছারা পে কাল চলিতে পারিত। সরস্বতী মহাশ্য যে জ্যের তালিকা দিয়াছেন ভাহা যে কোন্জাতি দেখিলেই বুঝিতে পারিবেন, ইহা সুদাকর প্রথাদ ছারা আর কিছুই ময়। সরস্থতী মহাশয়ও মুদ্রাকর প্রমালের কথা বুঝিতে পারিয়াছিলেন, ভাহা তাঁহার প্রবন্ধ দৈণিলেই বোঝা যায় কিন্তু তাহা স্বীকার করিলে যে কলছ করা হর না।

चामार्गत (मर्भत वृज्ञा) तम्छः वहकाम स्टेर्ड कांग्र ििकर्भी अ श्रेष्ठ ििकर्भा विश्वित हहेग्रा भित्रगार । कांत्र हिकिৎशक याहाता. छाहाता खता हिकि श्रीकरण व वावशाविक व्यवागीत किंदूरे चवशक नाइन। असन कि একটা কত হান বন্ধন প্রণালীও ভাহারা অভান্ত নহেন বা একথানা প্রাচীন অন্তেরও আকার কিরুপ তাহা নিৰ্দেশ করিতে পারিবেন না। যদি তাহা আংশিকও তাহারা জানিতেন তবে ভারতের সর্বাপেকা ख्यान व्याग्रस्तिनीय निकात खिल्हान व्यापान विमानत छ **हिसि कलाक शाम्हाला अञ्चितिकश्मा विकालित महाब्रह्मा** গ্রহণ করিতে হইত না। বস্তুজান না থাকিলে এবং মাত্র কেতাবী বিদ্যা নিয়া যাহারা বসিয়া থাকেন, ভাহাদের নিকট যাহা আশা করিতে পারি, সর্বতী মহাশয়ের নিকট আমরা ভাহাই পাইয়াছি। যে বিধ্যার বাবহারিক ক্রিয়া গরস্বতী মহাশরেরা বহু পুর্বে ছারিয়া দিংছেন ধে সহত্তে কোন আংশাচনা করা বোধহয় আরও একটু অধাবদায় সাপেক। আমরা যতহর জানি বাংলা দেশে লকার শাধারী বংশ চাদ্দীর চিকিৎসক্রণ এবং বোল্ঘরের চক্ষু চিকিৎসক্রপাই মাত্র প্রণালীবন্ধ ভাবে নিয়ম অনুযায়ি অন্ত্র চিকিৎসা করিয়া थारकन । इंशाता मण मण वरमत यावण और हिक्दिमा বিজ্ঞানের আলোচনা করিয়া আসিতেছেন। ইহার गार्धा है। प्रभी एक जाक लाग था। भाक वरमन बावक আতুরালয় প্রতিষ্ঠিত থাকায় বর্তমানে হাসপাতালে বেক্স ব্যবহারিক শিক্ষা হইয়া থাকে, ইহারাও সেই প্রণাণীতে প্রাচীন চিকিৎদা প্রথালী শিক্ষা পাইয়া থাকে। আবার এখন যদি এই দেশে পুনঃ সেই আর্যা মতে অন্ত চিকিৎগা श्राह्म करिएक इप्र एरव इशामा निकृष्ट स्ट्रेर ध्यः नावर नव श्रद्ध करिए इट्ट्र अना छेलात्र नाहे। কাজেই শত শত বংগর যাহার। নানারণ অসুবিধার भर्षा এই विकान तका कतिया तारियाहर, णश्का কি বলে ভাষা একবাৰ শান্ত হইয়া ভনিতে হইবে।

ব্যক্তির তর্কের মধ্যে বস্তুজ্ঞান পাওয়া বাইবে না।
নাহারা শত শত বংসর হইল পৃথক হইয়া সিয়াছে
ভাষাদের সকল কথা তোমাদের সহিত না মিলিতে
সাবে। তাহা ছারা দাস মহাশরের প্রবন্ধতো অখুবাদ
কাহে। কেবল অখুবাদের কি প্রয়োজন—ব্যবহারিক জ্ঞান
কোবার? আর একটা কথা—আমাদের দেশের
কিবিবা শারের বর্ণিত রোগের লক্ষণ তো অনেক
নার্র পশ্চিম দেশীয় চিকিৎসা এছের সহিত মিলে না,
আবার জনেক স্থলে আশ্র্যুরূপে মিলিয়া যায়, এজন্য
কি বলিব যে পাশ্চাত্য গ্রন্থ আমাদের শারের নিরুপ্ত
ক্ষর্যাদ মাত্র ? উহার কোন খাত্রা নাই।

সরস্বতী সহাশর সংস্কৃত জ্ঞানের পুব বড়াই করিয়া করেক স্থানে চক্ষে অংকুল নিয়া দেখাইয়াছেন যথা—

শিরাব্যাধশ্চিকিৎসার্দ্ধং শলাতন্ত্রে প্রকীর্ত্তিতঃ।

--- মধা প্রনিহিতঃ সম্যগ্রন্তিঃ কায় চিকিৎসিতে ॥

ইহার অর্থ মধ্যে লিখিয়াছেন—"পিচকারী ভূগ কার্তি হারা মলহারাদি দিয়া ঔবধ প্রয়োগ। ভূগ্ পিচকারী আর্থ্য শাত্রে কোথার আছে, সরস্থতী মহাশয় আনেন। ইহার পর আবার সরস্থতী মহাশরের ইংরাজি শাদ্র বর্থা—'মাথার উপরে থুলির নাচে রোমাবর্তের ন্যায় কভ্সুলি শিরার একত্র মেলন স্থানকে অধিপতি মর্ম কহে,পাশ্চাত্য ভাষায় ইহাকে Medulla oblengato কহে।" Medulla oblengato মাথার উপরে থাকে? মাধার উপরে থুলির নিচে স্থানটী কোথায় ? ইহা ভাক্তার মহাশয়পণই বুবিবেন।

্লাককে মাত্র দোষ অনুসন্ধান কার্য্যের মত প্রতিভাবান কোককে মাত্র দোষ অনুসন্ধান কার্য্যে বাস্ত না থাকিয়া কৌশিক প্রবন্ধ প্রকাশে অনুরোধ করি।

ही लाभागहरू ५५।

# "পূর্বোক্ত প্রতিবাদের উক্তর।"

আমার আলোচনার প্রতিবাদ করিতে বাইয়া
প্রীযুক্ত গোপালচন্দ্র দত মহাশরের ব্যক্তিগত সমালোচনা
করাটা ঠিক হর নাই। মূল প্রতিপাক্ত বিষয় সক্ষদ্ধে ওধু
মূদ্রাকরের দোষ দিলেই" চলিবে কেন ? মূদ্রাকর রর্ণবিক্তান ভূল ছাপিতে পারে কিন্ত বিষয়ের পরিবর্তন,
বিধি স্থানে নিষেধ বা নিষেধ স্থানে বিধি ছাপিতে
পারে না। প্রেন কপি সম্পাদকায় কার্যালয়েই
আছে, এ সম্বন্ধে কৈন্দিয়ৎ তিনিই ভাল দিতে
পারেন।

वाखिविकशक्त वावशिक अभानी माना ना काकिता সুশ্রত সংহিতার ঐ দব অংশের অসুবাদ করিতে পেদে দাস মহাশয়ের মন্ত বিভয়ন। এতাই হইতে হয়। এই 'রক্ত নোকণ' সম্বন্ধে ১৩২৩ সালের চৈতা মাপের 'প্রতিভায়' আমি একটি প্রবন্ধ লিখিয়াছিলাম, দে প্রবন্ধের প্রফ আমি দেখি নাই; তাহার মধ্যে "চিকিৎসা শান্তের কতগুলি বিশেষ শব্দ'' ব্যতীত বহু সংস্কৃত শ্লোকও हिन छात्रा किन्क सम्मत मूजिङ इट्रेग्नाहिन। त्नरे धारास শিরোগত (মুধের মধ্যের শিরা ব্যতীত) শিরা বেধের वजा अनानी उ नाम महाभट्यत धावएकत "एव मकन শিরার মুখ শতীরের ভিতরের দিকে, সেই সকল শিরা ব্যতীত মন্তকের অপরাণর শিরা বেধেয়" প্রণাশীটা जुननाम जात्नां कता कतितारे नकता वृक्षित भाति रवन, ব্যবহারিক প্রবালীট। কোন প্রবাহ্ধ অমুস্ত হইয়াছে। याँशाता त्कान मिन निरत्नाग्छ नितार्वय करत्न नाहे, ठै। हो दो वे अर्भित मर्या शहरा व्यक्तम, तम विकास मान्य गारे। गाग गराभरात अवस्तात औ अस्तात पूननात ुव्यालाइना कतिया (प्रवाहेटक हरेता, य जाबात बाब-তারিক প্রশালী সম্বয়ে কোন জ্ঞান থাকা প্রকাশ পায়

नाहे वतः डाहात चक्रवालत निक्रण अम्राम अवस्मत সর্বতি বিভৃত্তিত হইরাছে। 'অন্তমুধ বর্জানাং শিরো गडानार'; এই मृतहूक् अक्रवात अमन्द। नाम मरामन **८य भ**तौरत्रत ভिতरत्रत नित्क भितात 'मूथ' कल्लना कविशाहन, छिनि वाबशविक ध्याणी बाबा व्याहित পারেন कि শরীরের বাহিরের দিকে কোন শিরার 'মুখ' খাছে। তার পর 'উরুষয় কুঞ্চিত করিয়া লাসু সন্ধির উপর হাত রাখিয়া হস্তাকুলি মৃষ্টিবদ্ধ করিয়া গলার হই পাर्स् भागन कतिरव।" এই व्यवशांकी **मान म**शांभव দেবাইয়া দিতে পারেন কি ? হস্তবয় জাকু সন্ধির উপর ৰাকিলে তাহার অঙ্গিগুলি কি করিয়া মৃষ্টিবদ্ধ হইয়া भनात इंडे भार्य बाहेर्त, जाहा तुलाहेबा फिर्ड भारतन কি গ অনেক সময় আমাদের শিরোগত শিরাবেধ করিতে হয় ভাষাতে দশ মিনিট হইতে প্রর মিনিট স্ময়ের मत्कातः अ भर्यास तांशी 'मम तक्ष' कतिशा कि अकारत থাকিবে তাহা কলনা করিয়াছেন কি প

প্রতিবাদকারী বলেন – চাদণীর মতে দর্মত্র পুস্তককে अक्रुप्रत्व कदा रव नाहे। छांशात्रा चावशातिक ध्वनानी-ষার। অনেক নূতন তথ্য আবিছার করিয়াছেন। তাহাতে আমাদের কোন আপতা নাই কিন্তু দাস মহাশয় যে ব্যবহারিক প্রণালী অনুসরণ করিয়া উক্ত প্রবন্ধ निविद्याह्मन, जाहा कान विष्ठ वास्तिहै वनितन ना। অপুবাদ দোববহন। কিন্তু অতুবাদ করিয়া অস্বীকার করাটা নিস্তাম্ভ দোষাবহ। দাদ মহাশয়ের প্রবন্ধের প্রথম ৩ পংক্তি বাতীত বাকী সবটা আকরিক ও আমু-श्विक अञ्चारमत (ठष्टे।, जारा मृतः প्रक विनि পড়িয়া-एक छिनिष्टे चौकांत्र कतिरवन। अञ्चलां ना इहेरन এমন পূর্বাপর ক্রম ও রীতি স্থির থাকিত না। মূলের त्रीि এই रय, रकान विवत गर्छ अझाकरत विवत निया ব্যবসায়ার্থ ঐ বিষয় আবার প্রাচীন শ্লোক উদ্ধৃত করিয়া অনুদিত হইয়াছে। রক্ত রোবের চিকিৎসার এইরণ विक्रकि चाहि, छाट। मात्र महानत्र चारूश्रक्तिक टाद

### ष्यूवात्त्र (हरी क्त्रिशाह्न।

যাঁহার। শন্ত্রচিকিৎসা করেন, তাঁহাদের রক্ত রোধক
উপায়গুলি সর্মদা ব্যবহার করিতে হয়। দাস মহাশন্তের
প্রবন্ধ পড়িয়া বোঝা কঠিন যে তিনি ঐ প্রণাদীতে
অভান্ত আছেন। তাহা হইলে 'ক্লন' অর্থে 'বিপরীত
পতি" লিখিতেন না ও 'ভব্সের' হারা পাচন করিতে
চেষ্টা করিতেন না। 'মূলে ভত্ম' শন্তের, প্রয়োগ থাকারই
এই গওগোল হইয়াছে। তাহার অর্থ যাঁহায়া কার্য্য করেব
তাঁহারা প্রত্যেকেই জানেন বে কার বা ভর্ম্যাক্রাত্ত
কোন পদার্থ লাগাইয়া রক্ত রোধ করিতে হয়।
প্রতিবাদকারীকে ১০২০ সালের ভাদ্র, পৌষ ও হৈত্র
সংখ্যা 'প্রতিভা' পড়িতে অমুরোধ করি, ভাহা হইলেই
দাস মহাশরের ব্যবহারিক জানের পরিচয় পাইবেন। ♦

बी(का) विषठ नत्रवरी।

\* কোনও জটিল বিষয় বথা বিহিত আলোচিত
হইয়া প্রকৃত সতা নির্দ্ধারিত হওয়া সর্বোতভাবে
বাহুনীয়। এরপ ইন্ছার বশবর্তী হইয়াই আমরা শ্রীমুক্ত ...
গোপালচন্দ্র দত্ত ও শ্রীমুক্ত জ্যোতিষচন্দ্র সরস্বতী
মহাশয়ের প্রতিবাদ ও তাহার উত্তর প্রকাশিত
করিয়াছি। কিন্ত হুংধের বিষয় আলোচনাটা ক্রমে
বাক্তিগত সনালোচনায় দাঁড়াইয়াছে। এমতাবস্থায়
এই স্থানেই ইহার শেষ হওয়া উচিত। এতৎসক্ষে
আর কোনও বাদার্যাদ প্রতিভাগ প্রকাশিত হইবে না ।

প্ৰতিভা সম্পাদক ।

### ঘুঘুর ডাকে।

শরতের শুভ সন্ধ্যা স্থনর উদ্ধান ঘূলুকোণা ডাকে,— সারা চিত্ত হ'ল মোর উদাস পাধন অবেধি' কাহাকে!

গগনে রঞ্জীন মেঘ কুছুম ছড়ায় কুর্যা বদে পাটে, মৃছ্ল সমীর ধীরে বেন বলে যার ''আয় ফিরে বাটে!"

নদী-বক্ষে জেগে উঠে কণে কণে কণে করুণ বহরী,— ফিরে গেছে পল্লী-বালা শাস্ত-নিকেতনে ঘট পূর্ণ করি'!

বিষ যেন পলে পলে কুছেলী আয়ত
অপনে মিলায়,
অঞ্চাত-বাজের কোন্ অভাত-স্থীত
গুলু বুঝি গায়!

**बिमी (रक्षक्यांत्र मस्य।** 

# জীবের স্বরূপ ও স্বভাব।

আমরা দেহসর্বন্ধ জীব; দেহে আমাদের প্রগাঢ়
আয় বৃদ্ধি। আমরা যে দেহ হইতে পৃথক্ জীব কার্যাতঃ
আমরা তাহা বৃদ্ধি না। বৃদ্ধি না বলিয়াই দেহ সম্পর্কই
আমাদের সর্বপ্রধান সম্পর্ক; দেহ সম্পর্ক ব্যতীত ধে
জগতের সঙ্গে আমাদের আর কোন সম্পর্ক আছে, তাহা
মনেও করি না। এজন্ত জগতে দেহ সম্পর্ক স্থাপন
করিবার নিমিত্তই আমরা আতাদিক ব্যন্ত; দেহ সম্পর্ক
স্থাপন করিতে পারিলেই আমরা আমাদিগকে কুতার্ধ
বোধ করি। দেহ সর্বব্রের পকে দেহ সম্পর্ক জনিত
স্থাই একমাত্র ক্থা। তাই আমরা দৈহিক স্থাধ
সংস্থাবের নিমিত্তই ব্যাকুলতা প্রকাশ করিয়া গাকি।

আমাদের দেকের ভিতরে কয়েকটী ইন্দিয় আছে। দেহের উত্থান প্তনের সঙ্গে এই ইন্দ্রিয়ণ্ডলিরও উত্থান পতন হয়। ঐ ইজিয়ভলির সহিত দেহের নিতা সহয়। छेशालत वाता (माहत तका वहेटाइ किन्न (मशक तका করিবার ক্ষমতা উহাদের নাই। আমরা ইঞ্রিয় ঘারা দৈহিক সুখ সংবিধানেরই নিয়ত চেষ্টা করিতেছি। দেহের সুবের জন্ম ইন্দ্রির গ্রামকে অনিয়মিত পাটাইয়া हीन ७ इर्कन कतिया किनिष्ठिश नमत्र नमत्र पर श्रु(चेत्र क्या हे क्रियंशिनारक डेकाम छ डेक्क्सन कतिया তুলিয়াও থাকি। ইঞ্জিয় দেহেরই বটে, দেহের সহিত ইন্তিয়গণের ধনিষ্ঠ সম্বন্ধও আছে সভা, কিন্তু আমরা দেহ मर्स्तव विवाह (पर जिन्न भागता किছू ना, (पर मतिरा चायता यतिनाम, त्नर नैकित चायता नैकिनाम, त्नर्दक সাজাইলে আমরা সুন্দর সুঞ্জী হইলাম ইত্যাদি আছ বৃদ্ধির বশীভূত হইয়াই ইন্ডিয় ঘারা কেবল দৈহিক মঙ্গলের জ্বত্য, দৈহিক সুখের জ্বত্য আজীবন খাটিয়া খাটিয়া आह काछ इहेट हि। कि इस्ट याग्या नहि। स्टब्स ष्मानता नहि, (पर्छ षानात्मत नहर ।

আমরা দেহার বৃদ্ধি বলিয়াই দেহের জন্য এত খাটি এত করি। ইজ্রিয় সকলের ঘারা দেহের স্থ সংগ্রহ করি। দেহের খাত সামগ্রী যোগাই, দেহের বস্তু জলহার আহরণ করি। সেই খাত সামগ্রী ও বসন ভ্রণের জন্য কত সময় কত গুরুতর অন্যায় ও অকর্ত্তবা কর্মের অস্তান করিয়া বসি। দেহাত্ম বৃদ্ধির ফলেই আমরা হীনভাবাপর ইইয়া যেমন ধর্মে জলাঞ্জলি দেই তেমন সংসারেও খোর অনর্থ ঘটাইয়া থাকি।

(पर यामता निर, এই বোধ यामादित नाई चित्राह षामदा क्षाउत कर्णक इहेम्रा (कवन इः स्वेत इष्टि করিতেছি, হঃখনম অন্ধকারের হৃষ্টি করিতেছি। কিন্তু ইহা কিছুতেই বুঝিতে চাহি না যে,জগতের হঃখ সৃষ্টি করা कि इःथमम अक्षकारतत रुष्टि कता आमारमत कीवरनत উদেশ নহে; আমাদের জীবনের উদেশ জগতের স্থাধর সৃষ্টি করা, জগতে আশা দান করা। আমরা জগতে সুধ দিতে আদিয়াছি, আলো দিতে আদিয়াছি। যে যতচুকু পারি, যতটুকু সাধ্য শক্তি জগতে সুধ দিব, জগতে भारता दिव। यदि ना देश कतिनाम छात्रा इदेशनहे चामता कर्खना बंदे रहेगा मञ्जनात्वत भए राताहेगा हेलत षीत পরিণত হইলাম। কিন্তু আমাদের দেহদর্কবের পক্ষে ৰগতের হিতার্থে সুখ ও আলো দেওয়া নিতান্তই व्यवखर। व्यामता (पर जिल्ल यथन किছू वृक्ति ना, ज्यन **एक्टरक व्यवनयन कतिया यादा कतिएछ शांति, छादाह** कतिया थाकि, काष्ट्रे व्यागात्मत बादा खगरज्य (मह मदान कार्या किছु তেই হইতেছে ना, आमताख शख शनरी ভ্যাগ করিতে পারিতেছি। দেহ সর্বব্যের পক্ষে দৈহিক सूध दिए हिक मध्य छा। कता वर्ष्ट्रे कठिन। एएट्ट অভাব দুর করিতে করিতেই দেহ সর্কবের সকল শক্তি চুর মার হইয়া যার।

(मह चामि नहि कि चामती (मह नहि, चामाप्तत अहे (वांध ना थाकिलाও (मह्हत चूर्ष चामता किस ষণার্থ ই সুখী হউতেছি না। আমরা নিতান্ত দেহাত্ম বৃদ্ধি হটনেও ইহা বেশ পুঝিতে পারি। সুতরাং আমরা সকলেই যে কেবল দেহ সর্বাস্থ তাহা নছে; দেহ বাতীত আমরা একটা বস্তু আছি। আমরা দেহে বাস করিতেছি, সময় হইলে চলিয়া যাইব, দেহ পভিয়া পার্জিবে, দেহ কমি কীটের খান্ত সামগ্রী হইবে, অথবা তত্মে পরিণত হইবে, নিশ্চয়ই হইবে; একদিন না একদিন নিশ্চয় হইবে, ইহা বৃঝি, সময় সময় হিস্তাও করি, সময় সময় ইহা বৃঝিয়া, ইহা চিন্তা করিয়া মনেয় ময়লা কাটিয়াও ফেলি, দেহ যে আমি না এই জ্ঞান আমাদের সকলেয়ই ন্যাধিকরূপে আছে। কিন্তু ঘাই কোথা। বৃদ্ধিতা নিজা আসত্ম ত্যাগ করে না, সদয়ও আগরিত হয় না। দেহ সর্বাব হইয়াই জীবনটা কাটাইয়া দিতেছি।

দেহ সামাদের স্থান্থ নহে, সামরাও দেহ নহি, তথে
আবাদের সর্বার কি, আর আমরাই বা কি, এবল
তাহাই বলিব। আর একটা কথা আগেই বলিয়া রাধি,
দেহ আমাদের সর্বায় না হইলেও আমরা যধন এই
রক্ত মাংসের দেহে বাস করিতেছি তখন, দেহের সহিত
একটা সম্ম আছে; বে সম্ম মুখ্য না হইলেও, বরণীর না
হইলেও একেবারে ব্র্জনীয় নহে। এই দেহকে আশ্রম
করিরাই লগতে আসিয়াছি; লগতে প্রকাশ ভাবে বিরাশ
করিতেছি। লগতের মুধাবলোকন করিয়া আমিও যে
লগতের একজন তাহা বোধ করিতেছি।

কগতের শ্বরণ রূপ রস গন্ধ স্পর্গ শকাষ্মক। এই কগৎরূপ রসের জগৎ, গন্ধ স্পর্শের কগৎ এবং শব্দের কগৎ; এই রূণ রস গন্ধ স্পর্শ শকাষ্মক কগৎকে আমন্ত্রা আপাততঃ এই দেহ দারাই সন্থোগ করিতেছি। এই কগৎকে সম্ভোগ করিবার নিমিতই দেহে ইন্দ্রিয়ের স্ট্রে। এই কগৎ সম্ভোগ ব্যাপারটী দেহের নহে, জামি যে জীব আমার। আমি জীব কগৎ সম্ভোগ করিব। আমি সম্ভোগ করিব, সেই সম্ভোগটী শুধুই আমি কীবের কন্য, ক্যামি গে দেহে বাস করিতেছি, কিংবা যে দেহ

देवनाव २०२१

भौबात किছु मिर्नत वाभगृह, जाशात कना नरश्। भावि ভীবরণ রদায়ক জনংকে পরিপূর্বরূপে সম্ভোগ করিব। স্তরাং আমার জনা জগৎ, জগতের জনা আমি। তবু अविश्व कता चामि नहि। चामि नमश क्राएड कता; দ্মা জগৎটা আমার জন্য। আর এই সমগ্র জগৎটা 🗃ভপবানেরই একমাত্র বিকাশ। জগতে আর জগরাবে কোন পার্থকা নাই। জগরাব হইতেই জগতের উংপত্তি वनदरक नाहान করিতে জগন্নাথকে পাইব ৷ কারণ জগতের अंतरन अगिरन, अनु शत्रामुख आतिया क्यताय আৰ্দের সহিত বিলিত হইতেছেন। তাঁহারই রূপ রূপে अन्द: डीडाइडे गक म्मार्म कगर, डीशाइडे माक कगर। শীভগবান এই পঞ্বিক্মাত্মক অগতের তিত্র দিয়া শ্বামাদের দহিত মিলিত ইইতেছেন। তাঁহার দঙ্গে चारालद (सं महासिनात्त बहावान इहेर्द छाहात श्रम अपर तहना इहै। ছে। জগৎ বছনা করিরা জগলাধ ক্তম ত হইরাছেন; রূপ রুগাত্মক অগৎও তুর্কোণ্য করিয়া-इड्स। अञ्चलवान वर् निष्ठे सबुत वन्त, তাঁহার ভার মিষ্ট अधूत चात्र नाहे। তিनि दिन चूनछ हहेरछन छाटा हहेरन, শীৰে তাঁহার মিট্ড মধুরত উপলব্ধি করিতে পারিত লা। শ্বংও ছর্কোধ্য না হইলে অপতের আহাদন কমিয়া ৰাইভ। জীব ৰে পরিত্রাণে পডিয়া জগৎ আমাদন क्तिटाह, क्राटात मिहेव मध्तक व्याचानन कतित्रा कीत খার পরিত্র হইতেছে না,তাহার কারণও লগং দুংর্কাণ্য चित्रा। कथर दुर्व्हाभा कित्रभः, ना, सभरत এই कमा, कर मुठ्रा, बरे शाति बरे कामा, बरे सूच बरे दृ:व; बरे मन्नम् अरे निभम्-कीत देश ভाविषा अश्वित दहेशा यात्र। শগতের নিপূঢ় তত্ত ব্বিতে পারে না। কিন্তু আখাদন করা শীবের বভাব, তাই দীব ছ:ব পাইয়াও সুবের আকাক্ষা कत्त्व, निभाम यूरामान इरेबाउ मन्नामत्र প्रशीकाव वित्रश वादकः महत् इहेर्व निक्तं कानिशां अव्यादहेत छ। व नरगारत विष्त्रप करता स्थू आचामन कत्राष्ट्र कीरवत्र সভাব। মধু আহরণের জন্তই দেখিবে জীবের বত আয়োজন, মত চেষ্টা। কণ্টকাখাতে কেহ কভ বিক্ত হুইভেছে তবু জীবের মধুর লোভ বাইভেছে না। পরাণ ছাড়িবে তবু মধু ছাড়িবে না। কোবার মধু আছে, ভাহারই সন্ধানে জীব কিরিভেছে।

জীব ক্ষুদ্, ক্ষুদ্ৰ হইলেও স্বয়ং মধুর কণা। প্রীভগবান্ যেমন নিষ্ট মধুর বস্তু, তাঁহার জীবও তজেণ নিষ্ট মধুর যস্ত্র। জীব বিবের কণিকা নহে, জীব বলি নিষ্ট মধুর কণা না হইবে, ভবে একে অন্তকে ভালবাদে কেন দু হলি বল একে অন্তকে ভালবাদে স্বস্থবের জন্ত, প্রয়োজনের জন্তু। যদি জীবের হারা জীবের স্থাহ্ম হল্প, প্রয়োজন দিছ হল্প, ভাহাইইলে বুঝা গেল জীব জীবের স্থাবের বস্তু, প্রয়োজনের সামগ্রী অবশু সকলে সকলকে ভাল না বাদিলেও, একজনকে ত ভালবাদে, একজনকে ত চাহে, একজনের স্থা স্থাতল স্বেহের হায়ায় প্রীতির ছায়ায় দাড়াইয়া থাকে ত। জীব একজন জন না একজনের মুখের দিক ভাকাইয়া থাকেই থাকে।

তবেই জীবের ঘারাই প্রমাণ পাওরা যাইতেছে, জীব যত কেন ছোট না হউক, যত কেন মালন না হউক, জীব বরং মিষ্ট মধুর বস্তা। জীব নিজে মিঠা, চারও সে মিঠা, জাবাদন করেও মিঠা। মিঠা ছাড়া তাহার আবাদ্য কিছু নাই। জীব বেমন মিষ্ট, তেমন স্থানর; পর্যের ভার জীবের রূপ মাধুর্ণা আছে, গদ্ধ সম্পদ আছে, পরিমলও আছে। এই যে মিষ্ট মধুর বস্তা জীব উহার ন্যনে বচনে বদনে আচারে আচরণে মিষ্ট্র ফুটিয়া পভিতেছে। মিষ্ট সামগ্রী জীবের স্কলই মিষ্ট্র।

আছে। দীব যদি মিঠা সামগ্রীই হয়, তাহা হইলে তাহাতে তিক্ত তাব দেখিতেছ কেন? দীবের সংশ্য তীবণ ক্রোধ হিংদা দেখিতেছি, কাম লোভ দেখিতেছি, মদ মাৎস্থ্য প্রভৃতি বিবের ক্রিয়া দেখিতেছি, চিনি মিট বন্ধ, উহাতে বালুকণা নাই। মিশ্র মিষ্টতর বন্ধ উহাতে

পাধরের কন্ধর নাই, জীব বলি বিষ্ট বন্ধ হয় ভাহা হইকে উহাতে তথ্য বালুকণার বত, কঠিন কন্ধরের মত গুরুতর দোষসমূহ দৃষ্ট হয় কেন ? কোন জীব সর্প্র; আবার ব্যাজ, কোন জীব অস্থর, কোন জীব মহুবা; আবার মহুবোর মধ্যেও কোন মহুবা ভাল, কোন মহুবা সরল, কোন মহুবা জুর নিষ্টুর, কোন মহুবা দরাবান, কোমল হুদয়; কোন মহুবা পর সূথে সুখী, কোন মহুবা পরত্রীকাতর, কোন মহুবা পরের জন্ম অঞ্চপাত করিতেছে, স্বীয় স্বার্গ ভ্যাগ করিতেছে, কোন মহুবা ছলে বলে পরার্গ হরণ করিতেছে; এইরূপ বিস্থৃশ -ভাব হুইতেছে কেন?

চিনি যদি বালুতে ডুবিয়া থাকে তাহা হইলে কি ভাহার গুণ নত হইয়া যাগ না? চিনিতে বালুকণা মিশাইয়া দিলে কি চিনি আর সেই চিনি থাকে? সেইরূপ মাহযের মধ্যে যদি রাফ্সের নিষ্টুরতা, পিশাচের অপবিক্রতা মিশাইয়া লওয়া যায় তাহা হইলে কি মাহ্রের দেই অভাব গুণ পাকিতে পারে? কণনই না। কল কণা, মাহ্রুষ তথনই অমাহ্রুষ হইয়া যায়, যখন সে, মাহ্রুষের অভাব নত্ত করে। মাহ্রুষের মধ্যে যে পশুবৎ জীব দৃত্ত হয় ভাহা তাহার সভাব বিশ্বতিই দোব। মাহ্রুষ নিজের সকল ভূলিয়া যায় বলিয়াই ভাহাকে যত দোবের ভাগী হইতে হয়। জীব জগতে মাহ্রুষ শ্রেষ্ঠ, সেই শ্রেষ্ঠ জীব নির্ন্ত জাবের ভাগ কথনই হইতে পারে না, যদি তাহার সরুপ ও স্বভাব বিশ্বতির নাম্ব মায়া।

জীবের স্থরপ মধুময় স্বতরাং তাহার স্বভাব কর্থনও বিষময় হইতে পারে না। তবে বিষময় দেখিতে পাওয়া যার ? এমন্ মহাপ্রভূ বলিতেছেন,—

"শীব নিতা ক্লফ দাস তাহা ভূলি গেল। মায়া পিশাচী তাহার গলায় বাদ্ধিল।" জীব যে খ্রীভগবানের দাস তাহা ভূলিয়া যাওয়াতেই দে মায়ার দাস হইয়াছে। মায়া পিশাচী রক্ষ্ক্রারা লীবের গশদেশ বাহ্মিয়া ভাষার স্বরূপ সভাব জুলাইর। দিতেছে।

> ''মায়া মুক্ক জীবের লাহি স্বতঃ রুক্ত জ্ঞান।" শ্রীচৈতক্তচরিতামূত।

মায়া খারা আছের বৃদ্ধি জীবের তদকং জ্ঞান নাই।
সে যে প্রিতগবানের নিতা দাস এই বাধে ভারার
হয় না। স্মৃতরাং মায়া তাহার গুরুতর দণ্ড করে।
জীবকে দণ্ড দেওয়াই কুহকিনী মায়ার বভাব। সে দণ্ড
কিরুপ না, জীবের স্বরূপ ও বভাব একবারে ভুলাইরা
রাখে। লীব বার স্বরূপ ও বভাব বিস্মৃত হইয়া চিরদির
হুংখ পায়। এই হুংখ ভোগ করা কিন্ত জীবের স্কভাব
নহে। জীবের স্থাব কি এখন তাই বলিতেছি।

শীভপবানের দাসত করা দীবের বভাব। **দ্রীব**শীভপবানের দাসত ভূলিয়া মায়ার হাতে পড়িয়া যক্ত লাখনা ত্রোগ ভোগ করিতেছে। ভগবানের দাসত প্রবণ থাকিলে দীবের কোনই ভর থাকে না; মায়া তথন জীবের ত্রিগীযায়ও স্থাসিতে পারে না।

জীব ভগবানের নিত্য দাস। ভগবানের দাসের বছাব কথনও সহস্র দোবে ছুই হইতে পারে না; কোধ করা, হিংসা করা, বোভ করা, অহস্কার করা, পরপীড়ন করা, পরাদ্রাহী হওয়া, নিষ্ঠুরতা, স্বার্থকতা, নীচাশরতা এই সম্পর জীবের স্থভাব নহে। কার্ম জীবের প্রভাব স্থভাব শীভস্বানের নিত্য দাস। মান্ত্রা পরিত্র স্বভাব করায়, অহন্ত্রার করায়, পরপীড়ন করায়, পরাদ্রাহী করায়, এবং নিষ্ঠুরতা, স্বর্থপরতা, নীচাশম্বভা প্রেড়তি দোবে দ্বিত কলন্ধিত করিয়া থাকে। স্বিদ্রা নাহয়, তাহা হইলে মায়া ছাড়িয়া গেকে জীবের স্বভাব হয় কেন?

পশু পক্ষী ইতর জন্ততে যায়ার অধিকার অত্যধিক।
তাই তাহারা পশুপকী হইয়াছে। মহুব্যে যায়ার অধিকার
অপেকারত কম তাই তাহারা দীবশুর্চ হইয়াছে।

আর জীবশ্রের মানব মানবী যদি মারার দাস দাসী

হইরা পরে, মারার খেলাই খেলে, মারার ইলিভেই চলে

তবে শেও ঐ ইতর জীবের দেহ প্রাপ্ত হইবে। মারার

মাত্যক বশবর্তীতার ইতর জীবের বেরপ প্রকৃতি হিংসা

কোন জোন পরণীড়া পরজোহীতা ইতর জীবের প্রকৃতি;

গ্রেইরপ জোন হিংসা লোভ পরশ্রীকাতরতা পরণীড়া

প্রভৃতি হদি মানুষ্কেরও হর তাহা হইলে মানুষ আবার

নিকৃষ্ট হইরা জপতে আসিবে। ইতর জীবের অবস্থা

জোল ইইরা নানা দেহ ভ্রমণ করিবে।

মানব মানবী প্রীভগবানের দাসত বিস্মৃত না হইলে,
কালাঃ ভাষার দেহ প্রমণ করিতে ও জনমূত্র অধীন
হইতে হইবে না। ব্রজের পোপ গোপী উত্তম মহ্ব্য;
মাসুব্যের পূর্ব আদর্শ। গোপ হইতে গোপী আনর্শ আদর্শের চরম। সোপীর সভাব পূর্বতম মহুব্যের
স্থাব।

প্রত্যেক নরনারীর গোণীর পদাক অনুসরণের প্রবর্ণ अधिकात थाए। मानव मानवी यक्ति औष्ठशवादनव বিভাদার এই ভবের অফুর্মান করিয়া আপনার স্বরূপ ও স্বস্থাৰ চিনিতে জানিতে পারে তাহা হইলে তাহাকে অব্দাণীর সভাব ও অবতা প্রাপ্ত হইতে হইবে। সমগ্র জীব গোপ গোপীরূপে শ্রীভগবানের সহিত মিলিত ः स्टेरत । औष्प्रतान रा भौरतत श्राप्त, भौरतत प्रचा, জীবের স্থল্, জীবের জীবনবল্লত এক দিন না একদিন ভাহার এই শ্রেষ্ঠ জ্ঞানের উদর হইবে। এবং এই জ্ঞান হইতে নিত্য দিছা ভগবং প্রেম যে তাহার জদয়ে . धाष्ट्र व्यवद्वात व्याष्ट्र, छाहात्र छिन्त्र हहेत्त। ভারতম্য অনুপারে ভাহার সেই রভির **ट्वार्य**व ভেদ হইরা থাকে। রতি ভেদেও পঞ্রসের चारह। यांडेक तरमत विठात चांशारमत चमाकात আলোচ্য বিষয় নহে। রতিভেদে যে রুসের ভারভম্য **লাছে, রুগগোলুপ** পাঠক তাহা রুগশাত্রে দেখিয়া . जहरवम ।

ইন্সিয় ছারা আমরা সুলজগৎকে উপলব্ধি করিতেছি । त्रहे छेननिष्य आण नर्सन्य हहेशा कतिरछि । जुनकार स्ट्रेंट अक्षी रा रुच बन्द आहि, कामना जाहा वृतिरङ शादि ना, काद्रव जानदा जाननात्करे हिनि ना। जाद्र व्यापनारक हिनिना बानिना वित्राहे कुन हत्क याश দেখি ভাষাই দেখি মাত্র, সুল কর্ণে যাহা শুনি ভাষাই ত্রিমাত্র, সুল নাসিকার যে আণু পাই, তারাই আছাণ করিষাত্র, সুল বৃদ্ধিতে যাহা বুঝি তাহাই বুঝিমাতা। আমরা যে ফল হইতে ফল চিনার পদার্থ আমাদের বে হক্ষ চক্ষু কর্ণ নাগিকা জিহনা বৃদ্ধি আছে, তাহার খবর রাখিনা। বিভা উপার্জন করি বটে, সে বিভাও সুস বিলা, ধন উপার্কন করি বটে তাহাও সুল ধন। সন্ম विका ७ रूप भरन वागारभत हक्क् यात्र ना, वृद्धि रश्लाना। সুল লটয়াই বড় বাগ্র বাস্ত আছি; কাজেই সুন্ম বিলা স্থাধনে আমাদের তেমন আস্ক্রিনাই। আপনাকে চিনিনা জানিনা ইহাই তাহার একমাত্র কারণ। যদি আপনাকে চিনিভাম, আপনাকে জানিতাম, আপনাকে वृति जाम जारा इटेल जून सगद नहेशा, जून (पर नहेशा স্থুল ভাব ভাবনা লইয়া নিশিদিন ব্যাকুল রহিতে পারিতাম না। হল হইতে সুল হইয়াছে, আবার সুল श्राम याहेबा पॅहिटित। जुन जाबी नहर, जाबी श्रमा। व्यायता (य विकात्कित (श्रीतव कति, (म कून। कुन विमा चात्रा आमारमत अविना। वृद्धिः, अविना।त छांश अविना।त व्यवस्थि कथन् पृत श्हेर्यना; इहेर्ड शास ना। শ্রীমন মহাপ্রভু প্রেমের ফুল্গ তত্ত্ব নির্ণয় প্রাথক শ্রীরামানন্দ রায় মহাশ্রের সহিত যে ক্রোপক্ধন कतिशाहित्यन अभन कर्याभकथन क्यांड श्रात दश नारे। গে অপুর্বা কথার আরম্ভ এইরূপ,—

> "প্রভ্ কংহন বিদ্যা সাধ্য কোন্ বিদ্যা সার। রায় কংহন ক্লেভজি বিস্থ বিদ্যা নাহি আর॥ সম্পত্তির মধ্যে জীবের কোন্ সম্পতি গণি। রাধাকৃষ্ণ প্রেম বার সেই বড় ধনী॥"

ক্ষা ভক্তি ব্যতীত আর বিদ্যা নাই, রাধা ক্ষেত্র প্রেম ব্যতীত আর ধন নাই। এই বিদ্যা বাধার আছে, সেই প্রকৃত ধনী। প্রভুর প্রশ্ন ক্ষা বিষয় লইয়া, রার মহাশরের উত্তরও স্থা বিষয় লইয়া। স্কুল বিদ্যা স্থা ধন জাবের ছংখ ছর্গতি দূর করিতে নিতাছই অসমর্থ; তাই হল্ম বিদ্যা ক্ষাভক্তি আর্থিং মাধুর্য্যময় শ্রীভগবানে ভক্তিই উত্তম বিদ্যা। মাধুর্য্যময় শ্রীভগবানে ভক্তিই উত্তম বিদ্যা। মাধুর্য্যময় শ্রীভগবানে উত্তমা ভক্তি ইলেই জীবের পরম ধন যে প্রেম তাহার প্রাপ্তি হইবে। ওদ্ধা ভক্তি কি না অকৈতব ভক্তি, অকৈতব ভক্তি কি না তাহাতে অজ্ঞানাদি ধর্ম নাই। শ্রীতৈতন্য চরিতামৃতের পরম পূল্য সাধন্যিত্ব গ্রহ্মরপাদ কৈতবের ক্ষণ বলিতেছেন, যথা—

"অজ্ঞানতাময় নাম কহি বে কৈতব। ধর্ম অর্ধ মোক বাছা আদি এই সব।"

এই সমস্ত কৈতব রহিত। যে ভাক্ত তাহা হইতে প্রেম छेद्भन बहरत । य तथा कीरतत अक्याज क्षामन. य প্রেম ৰাতীত জীবের সর্বার্থ দিছি হইতে পারে না ; ভদা ভক্তি দেই প্রেমের প্রস্তি। ভক্তি জননী, প্রেম ভাহার মানন্দ চিন্ময় রসপূর্ণ সুসন্তান। জীবের এই প্রেম ধনের উৎপত্তি শুদ্ধা ভক্তি হইতে হয়, তাই রায় মহাশর ক্ষা দৃষ্টিতে ভক্তি রসের মাধ্যা ও মহিমা বুঝিতে পারিয়া উত্তর করিলেন, বিষ্ঠা মধ্যে কুঞ্চভক্তি অর্থাৎ यांधुर्यामय श्री अगवात्न छक्तिरे नर्क विश्वाद मर्रा छेत्रभ বিছা। স্বার তিনি প্রেমের তত্ত স্বাত হইয়া কহিলেন. बीताशक स्थारात (अम चाहि, तारे मनार्थ धनी। व्यात द्यान धरनत छादभर्या नाहै। दकनना जीवाधाकरक প্রেম ব্যতীত আর যে ধন প্রিবীতে দেখিতে পাওয়া याप्र, তारा जून जगर्जत क्या, जून कीव (मर्द्रत क्या, স্থা কাব বৃদ্ধির ভোপের জন্ত। উহা স্ক্র জীবের ভোগ্য मर्ट, रुम कोर्वत व्याचाष्ठ नर्टन यादाता कून नहेता बाश्य बाह्न, डांशामत मामशिक इःव बादित

নিবারণ হয় বিলিয়া উাহায়া য়ুল হনের এত গ্রেরব্ করেন, সেই সুল ধনের সংগ্রহ করিতে ঘাইয়া দীবন-পাত করেন। যে প্রেমধনে ধনী হইলে আর কোন হঃখ থাকে না, হঃখের আশ্বঃও থাকে না আময়া সেই ক্ষা বিচারে বাধ্য হই না। এই কর্ম ভোগ কেবল আমরা যে জীব, সেই জীবতত্ব, অর্থাৎ জীবের ব্যরপ ও বভাব জাত নহি এই জন্ম। নিজের বভাব ও ব্যরপ্রী পরিজ্ঞাত হইলে আর এই লাছনা, বিভ্যনা পাকে না। সুল বৃদ্ধি আমাদিগকে আর সুল ব্যাপারে ঘ্রাইয়া মারিতে পারে না। দেহাভিমানে দেহসম্পর্কশ্র প্রেম হইতেও আমাদিগকে বঞ্চিত করিতে পারে না।

জীব হল, তাহার শরীর্চী মাত্র স্থুল। জীব হল विभारे जामता कुन पृष्टिक की त्वत रुख मंत्रीत (पृथिक পাই না। আমাদের হস্ত চকু কুটলে, হস্ত দৃষ্টিতে জীবের সেই হল্ম শরীর দেখিতে পাইব। আমি যাহাকে ভালবাসি, সেই আমার কুল চক্ষে কুল বৃদ্ধিতে খুব মনোরম: यতই দেখি ততই দেখিতে ইচ্ছা হয়। কিছ প্রকৃতপক্ষে ভারাকে দেখিতে পাই না, ভারার স্থল नतीति माज (पथि, कात्वरे व्यामात्मत जानवामा दून (मरहत छेशाम् . अकथा विमाल (वाधरम अवाम हहेरव ना। স্ত্র দর্শন শক্তি নাই, তাই প্রিয়লনের স্ত্র মৃতিও দেখিতে পাই না। ভালবাসাও ঐ স্থল দেহেই পর্যাবসিত চট্টা যায়। দেই গেল ত ভালবাসাও গেল. নেই त्रविल छ (पर्देत छेभत्र এकर्छ। है। ने अ तरिल। सिर्दे টানকেই আমরা ভালবাদা নাম দিয়া আদিতেছি। সুতরাং আমরাপ্রেমের সন্ধান পাইতেছি ন। সর্বানন্দ-ধাম যে প্রেম ভাষার সন্ধান পাইতে হইলে ক্সাদশী इटे(छ इटेरव ; कून वृद्धि छा। न कतिए इटेरव, कूरनत প্রতিবে একটা অমামুষিক টান আছে, তাহা ঘুরাইরা श्रुता भिरक मिर्छ दहेरा। न्यूता सिर ध्यामधरनत অধিকারী হইয়া প্রেমামৃত সিদ্ধু শ্রীভগবানের সহিত প্রেমের বেশা বেশিতে সমর্থ হইব না। ঘুরিয়া ঘুরিয়া

প্রত্বাণী, পক্ষী যোগী, কীট পতকের যোগী, অধিক গোডাগ্য হইলে আমুরিক ভাবাপর মাহুব যোগী প্রাপ্ত হইব। উত্তম মহুস্তা হইতে পারিব না। মহুস্য কর উত্তম কর বটে, সে কেবল উত্তম মহুস্তোর করা। মহুস্য মধ্যেও উত্তম হইতে না পারিলে, সেই পণ্ডভাব, সেই পেশাচিক ভাব, সেই কুর নিষ্ঠুর নির্দিরের ভাব রহিয়া গেল। মহুস্য কুলে জরাধারণ করিয়াই বা কি হইল। তাই উত্তম মহুব্য আদর্শ মহুস্য হওয়া আবশুক। তাহা হইলেই হৃদয়ে প্রেমের বন্তা আগিবে, হৃদয় সরস হইবে আর হৃদয় সরস হইলেই যত হৃংখ যত তাপ যত আধিব্যাধি সব দূর হইয়া যাইবে। সর্বাত্মা অম্ভরসে অভিষিক্ত হইবে, আনক্ষরেপ অমুদ্ধি র্কি পাইতে থাকিবে। তাই জীব সর্বাণা স্থভাবে পঁত্চিতে চাইতেছ। সুক্ষের ব্যাপার বাণিজ্য জীবের স্থভাবের নহে, মাত্র স্থভাব পোবণের

সর্বব্যাগী প্রীগোরচন্ত্রকে প্রীদনাতন গোস্বামী বিক্ষানা করিয়াছিলেন, প্রভূ,—

"কে আনি, আমারে কেন জারে তাপত্রয়।"
কৈ আনি, এই বলিয়া বলি প্রীসনাতনের মত আমরাও
কিজাসু হইতে পারি, তাহা হইলে, এই তত্ত্তিজ্ঞাসু
হইগা সনাতন ত্রিতাপের জালা হইতে নিম্নৃতি পাইবার
পথ পাইরাছিলেন। আমরাও পাইব। কে আছ
বিভাপে দক্ষ জীব, একবার এস, প্রীসনাতনের মত বেদনা
বিহবল প্রাণে তত্ত্তিজ্ঞাপার কাতর কর্তে প্রীভগবান্কে
আমরাও ভাকিয়া জিজ্ঞাসা করি—

"হে প্রভূ, হে বামিন্, হে প্রাণরমন, বুঝাইয়া দাও কে আমি আমারে কেন জারে তাপত্রয়?"

श्रीनंत्रदास ध्रा

# শ্বর্ণীয় রায় চন্দ্রকুমার দত্ত বাহাত্রর।

ঢাকা সাহিত্য পরিষদের প্রবীণ সদস্য এবং পরিষদের
"গৃহনিত্রাণ ভাণ্ডারের" রক্ষক অধীতিপর রন্ধ স্থপুরুষ
রায় চক্রকুমার দত বাহাছর গত ২০শে চৈত্র শুক্রবার
রাত্রি ৭টা ৩৫ মিনিটের সময় তাহার ঢাকা আশক
লেনস্থ তবনে পরলোক গমন করিয়াছেন। বিক্রমপুর
তেওটিয়া প্রামে ২২৪৫ সনের ২৫শে বৈশাধ রবিধার
চক্রকুমার বাবুর জক্ষ হয়। তাহার পিতৃদেব ৮মৃত্যুগ্রয়
মুলী মহাশয় তদাবীস্তন ঢাকার একজন অতি প্রাসদ্ধ
লোক ছিলেন। তিনি স্থানীয় জল্প আদালতের সেরেভাদারের কার্য করিতেন। সরস গল্প বলতে মুলী
মহাশয় এরূপ পট্ট ছিলেন যে তৎসাময়িক আরও
একঞ্জন বিধ্যাত লোকের নামের সঙ্গে তাহার নাম
সহযোগে এদেশে এখনও পর্যান্ত একটি ছড়া প্রচলিত
আছে:—

''আলিমিঞার ঘড়ি, নীলাম্বরের বড়ি গোকুল মুন্সীর মোছে তাও; গল্প শোনত মৃত্যুপ্তর মুন্সীর কাছে যাও।" মৃত্যুপ্তর মুন্সীর কাছে যাও।" মৃত্যুপ্তর মুন্সীর চার পুত্র, তমধ্যে চক্রকুমার বিতীয়। প্রথমে চক্রকুমার ঢাকার "পোগোজ" স্থলে পড়িতে আরম্ভ করেন, পোগোজ স্থল তখন আশক জমাদারের গলিতে তাঁহাদের বাল্ডবনের নিকটেই অবস্থিত ছিল। পরে তিনি কলেজিয়েট স্থলে পড়িয়া তথা হইতে সেই সময়কার ''জুনিয়ার" পরীক্ষায় উত্তার্গ হন। তৎপরেই কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের নুতন বিধান প্রচলিত হইলে তিনি প্রবেষকা পরীক্ষা দিয়া সকলকাম হন। কিন্তু পরবর্ত্তী পরীক্ষায় ক্রতকার্য্য না হওয়ায় একটি কেরামীর কার্য্য গ্রহণ করেন এবং কিছু দিন পরে ঐ কাল পরিত্যাপ করিয়া কমিটি পাশ করেন, কিন্তু ওকালতি না করিয়া

পুনরার কেরাণীর কার্য্যে নির্কু হন। পরে তদানিস্কন "কেন্বেলি পরীকা" পাশ করিয়া ১৮৭৩ খুষ্টাকে বরিশালে সবভেণুটর পদ প্রাপ্ত হইর। সম্বরই তিনি ডেণুটি मााकि हि (हे दे पर पे छेड़ी छ इन । छाँ हात विश्वीण व्यवसान कारन रमन विधान रमोनन थांत्र वान "छारक। सिर् ভয়ঙ্কর কড়ে অসংখ্য লোক নানা প্রকারে ক্ষতিগ্রস্ত এবং मृञ्ग्राव পতि उ द्या। (नहे नमस्य विविधालित मािकि छिऐ দাহেণ চক্তকুমার বাবুর উপর জিলার ভার রাখিয়া নিজে धिना छ (न हिना बान। (नई अ ए वित्रभान (कनात অত্যাতা স্থানের –লোকদিগেরও চুর্দ্দশার এক শেব इहेब्राछित । हस्तक्यात वाव् (परे नकन लाकित छुर्फनात कथा मित्रान्य व्यवगढं दहेशा छे भत्र इ कर्या हाती-वर्त्त इकूरमत व्यर्भमा न। कतियाँ निक्र माशिए वह সহস্র টাকা গভর্গমেন্টের পক্ষ হইতে ঝটিকা প্রপীড়িত मिथित वास्किमिर्गत माद्यार्थात अग्र मान कतिया गश्-পরাকাষ্ঠাদেখাইয়াছিলেন। piern কার্য্যের অন্ত গভর্ণমেন্টও তাঁহার প্রতি সম্ভূত হইয়া ছিলেন। প্রায় ২৬ বংসর কাল কঠোর পরিশ্রম সহকারে কার্য্য করার পর ১৮৯৯ খৃষ্টাব্দে তিনি অবসর গ্রহণ कतियाहित्तन । कार्याकात्त्रत अवावश्चि भरतरे जिनि "রায় বাহাতুর" উপাধি লাভ করিয়াছিলেন।

অবদর গ্রহণের পর কিছু কাল তেওটিয়ার বাটাতে ধাকিয়া পরে ঢাকার আশক লেন স্থিত নিজ বাটাতেই তিনি অবস্থান করেন। চন্দ্রক্ষার বাবু প্রকৃত কর্মী ছিলেন। মৃত্যু পর্যান্ত তিনি নানা দেশহিত কার্য্য করিয়াছেন, আলভ কাহাকে বলে তিনি জানিতেন না। তিনি ঢাকা জনমাধারণ সমিতি (People's association) এবং জমিদার সমিতির (Land holder's) association) সহকারী সভাপতি (Vice President) ছিলেন। স্থানীয় জমিদার ৮মোহিনী মোহন দাশের জমিদারির রিমিভার (Receiver) ছিলেন, এবং ইহার পুর্বে ৮ খ্রীশচন্দ্র দাসের জমিদারির কার্যা নির্বাহকের

(Manager) क्यं क्तिशाहन।

শিক্ষা বিষয়ে তাঁহার অদম্য উৎসাহ ছিল। তিনি
ঢাকা "কিশোরী লাল জুবিলি" স্থলের এবং স্থানীর
জগরাথ কলেজের কর্ম কুশল সম্পাদক ছিলেন। দেশ
বৎসল চন্দ্রকুমার দোৎসাহে দেশের কাজ করিয়া সকলের
শ্রহা লাভ করিয়াছেন।

ঢাক। সাহিত্য পরিষং বছদিন তাঁহার আসকক লেনস্থ তবনে অবস্থিত ছিল, এজন্ম পরিষং তাঁহার নিকট চিরদিনই কুভজু থাকিবে।

এতব্যতীত সমাক হিতকর কার্যাও তিনি সর্ক্রাই
অগ্রাসর হইতেন। "পূর্ব্য বন্ধ কারন্থ সভার" তিনি
একজন অতি উৎসাহী সভা ছিলেন। এরন্ধ বর্গেও
কর্ত্তব্যবোধে সন্তানগণ সহ তিনি উপবীৎ গ্রহণ
করিয়া নিজ সমাজের লোকদিগকে উৎসাহিত
করিয়া নিজ সমাজের বাব্র চারিটি পুত্র ও একটি
কল্যা—। তন্মধ্যে প্রথম ছই পুত্র অত্সক্রমার দত্ত বি,এ,
এবং বিপুলকুমার দত্ত তাহার জীবিতাবস্থারই পরোলোক
গমন করিয়াছেন। তৃতীয় আমাদের পরিষদের ভূতপূর্ব্ব সম্পাদক ও বর্ত্তমান সদত্য শ্রীমৃত ভূপালকুমার দত্ত
এম্ এ এবং চতুর্ব শ্রীমৃত অম্লাকুমার দত্ত।

এই ৮১ বংশর বয়পেও চন্দ্রকুমার বাবু প্রাতে সন্ধায় ছইবেলা প্রতিদিন যথা নিয়মে বৃড়িগঙ্গার ধারে বেড়া-ইতেন। তিনি অক্রোধ, কর্ত্তব্য পরায়ণ, এবং সদা প্রকৃষ্ণ ছিলেন।

ছঃধের বিষয় এই শ্রেণীর লোক ক্রমশঃই দেশ হইতে অক্তর্হিত হইতেছেন। ইঁহাদের অভাব আর পূর্ব হওয়ার আশা নাই।

# উপেক্ষিত।

মুক্তি আমি চাই নাই, চাহি না কখন— ভালবেদে যদি আমি ভালবাদা পাই নিঙাড়ি নিঙাছি বক নিংশেষ করিয়া শেব সে রক্তের বিন্দু দিভে আমি চাই।

রক্তবাংগে গড়া আহি স্কাম মান্ব কোথা পাব দেবতার নিছাম সে প্রাণ ! .... জনন্ত বাসনা মাধা হৃদর আমার চার তথু ভালবাসা—দান প্রতিদান ! উপেক্ষিত ভাষবাদা—চরণে ভাহার কেমনে কেমনে কর্মা করিব প্রদান, ঘারেক কটাক্ষে, যদি ফিরে নাহি চার কে এসেছি, কি এনেছি, কিসের এ দান ?

ভৰুও ভবুও হায় দিতে বে গো হয়— শে ড'ৱে ছুলেও কভু তুলে নাহি লয়!

ची-किर्मात सत • ।

প্রতিভা-সম্পাদক

লেশক নিজের নামটি এর অম্পাই করিয়া লিখিয়াছেন বেকুয়ায়রা বহু করেও তাহার পাঠোজার
করিছে পারি নাই। আশা করি লেশক তাহার নিজের লেখা চিনিয়া লইবেন এবং ভবিয়তে প্রবিজ্ঞানি প্রেরশ
কালে নিজের নামটা একটু স্পষ্ট করিয়া লিখিবেন।



১०म वर्ष

रेजार्थ ५७२१

২য় সংখ্যা

# मण्यान।

मानन माज्ये चूँरवत श्रामी। किरन चूरवत भाजा একটু বাড়াইয়া লইবে ভাষার চেষ্টায় সকলেই বাস্ত। মতের আরাধনার মূলেও এই সুধর্দ্ধির স্পাকাজাই বিভ্যমান রহিয়াছে। মছে স্থুপ প্রাণারিত ও গাঢ়ভর এবং ছংৰ প্ৰশমিত হয়। মানবীয় সভাভাৱ ইতিহাসের প্রতি পৃষ্ঠার মন্ত পানের দুগান্ত দেখিতে পাওয়া যায়। কি সভা कि चनला, कि लम्र कि चल्ले नेकन नगात्म है हैशाइ शृका रहेशा शास्त्र।

• মলিনার (Mollinari) প্রণীত "রসায়ণ শাস্ত্র" नामक तरित्र देश्त्राको त्रश्यत्व व्याक्तित्र मामक देवमानिकः পত্ত, পত্তিকাদিতে প্রকাশিত প্রবন্ধাদি এবং কয়েক খানা সংস্কৃত গ্ৰন্থ কৰিতে প্ৰাপ্ত সাহায্য প্ৰবন্ধ লেখক কুভজ্ঞতার সহিত স্বীকার করিতেছে।

अथम कः (वर्षा हे यूता कुरस्त छ एतम रमस्टि नाहे । দৌরামণি ও বাজপের যজের ই**হা একটা বিশেক্** উপকরণ। অমৃত <sup>"</sup>বলিয়াই দোমরদ দেবগণের **প্রি**ক্ষ পেয় इहेग्राहिल এবং মানব সমাঞ্চেও এই দেবা-👣 জিলত পানীয় যথেষ্ট স্মাপর লাভ করিয়াছিল। গুণ-মুগ্ধ মুনি ঋষিরা সমস্ত বিষয় বৈভব ছাড়িয়াও মক্ত ুছাড়িতে পারেন নাই,—এমন কি পর্য যোগী বশিষ্ঠ ও বিখামিতের অভার্থনা করিয়াছিলেন। ইবলিক বুগের পরে তেতায় কবিগুরু বালীকীও ইহাকে স্থুলিতে পারেন নাই। জগত পূজ্যা আদর্শ নারী সাংখী शीका नवताम जास्यव यह नवीदव अक्षागमन व्यार्थन। 🚒ব্রিতে বসিয়া গঁলাকে মনৌর লোভ দেখাইয়াছিলেন। मा जाः (मरी नगकामि आर्यमामि ह लाजता প্রাপ্তরাজ্যে নর বাাঘে শিবেন পুনরাগতে। সুরা ঘট সহজেন মাংস ভূতেী দনেন চ।

गरका बार शीधनार इस्ती पुतीर पुनतः पश्चितः

শবাধ্যার ভার লভার রা বণের অভঃপুরেও ইহার বথেট প্রান্তর ছিল। ভাপেরে যত্বংশে মভের প্রভাব কিরপ বিভ্ত ভইরাছিল তাহা উহার ধ্বংশের ইতিহাসেই ভারাধ্যান-হইরা রহিয়াছে। বলদেব রেবতী এবং 'হালা' উভরকে তুলা রূপে ভালবাসিতেন। পুরস্ত্রীগণও মভের প্রতি বথেট সন্মান দেখাইতে কুন্তিত ছিলেন না উপ্রতি কট।ক্ষণাত করিতে কুন্তিত হন নাই তথাপি ভগবান শীকৃষ্ণ যে মভের মহিমা একেবারে অবসত ছিলেন না এমত নহে। স্থা অর্জ্বনের সহিত তাহাকে মন্ত্রান করিতে দেখা গিয়াছে। কবিশ্রেষ্ঠ কালিদাস অক্সহিবীর মদ্যাশক্তির যে পরিচয় দিয়াছেন তাহাও বিশেব প্রণিধান যোগ্য।

মদিরাকি মদাননার্পিতং মধু পীছা রসবৎ কথং হু মে।
অক্পান্তনি ৰাপ্সদূৰিতং পরলোকোপনতং কলাঞ্জিন্॥
হৈ মদিরাকি, বে তুমি আমার মুখার্পিত তুরা রসবং
শীন করিতে, সে তুমি কেমন করিয়া পরলোকোদেণ্ডে
অঞ্জি প্রদত্ত ৰাপানুষিত জল পান করিবে ?

ভাষিক সাধনার "কারণের" স্থান কেবল আরাধ্যেরই
নীটে। ভন্নমতে কুলাচারিগণ পর্বাদা কুল সলী হইয়া
শীনার রস পান করিবেন, এবং শক্তির উক্লাণ্ডে বলি পূজাপরারণ হইয়া নিত্য স্থরাপানরত থাকিশেন। ভবে,
সংস্কৃত আর অসংস্কৃত স্থরায় প্রভেদ আর্ছে। একটা
শোক প্রাপ্তির পথ অন্তটী ভাষার অস্তরায়, একল সুবা
সামিত্রী প্রস্কৃতি শম্বারা শোধনের উপায়ও প্রদর্শিত
হইয়াছে।

শাসংস্কৃতাং সুরাং পীখা ত্রান্ধণো ত্রন্ধহা ভবেও।
সংস্কৃতার সুরাং পীখা ত্রান্ধণো অসদ্যিবও।
শাবার "ত্রন্ধণক মুরা মোকো মুরাগানে প্রিয়ংবদে"।
ভান্তিক প্রভাবেই এত্দেশে মদ্যের প্রচ্পন বিশেষ
বিশ্বৃতি লাভ করে। ভনিতে পাই আলকাণত কোন
কোন শিক্ষিত ব্যক্তি কারণ' হারা বিভ্নীকৃত অন্ধ গ্রহণ

2. 2.

করিরা থাকেন। বেছি ধর্মের প্রভাবেও স্বরাপান এককালে ল্পু হয় নাই। চৈতন্য অবতারের সময়ও উহার প্রচলন দৃষ্ট হয়।

পীতাপীতাপুনঃ পীতাপপাত ধরণীতলে। উথায় চপুনঃ পীতাপুনজনি ন বিঅতে॥ ্ব্ৰু এই সময়ের উজিজন

তৎকালেও বৈষ্ণব অপেকা শাক্ত উপাদক বেশী ছিল এবং শাক্তগণ মদাপায়ী ছিলেন।

ইউরোপ সভ্যতার আদি গুরুবংশ গ্রীকদিপের মধ্যে আবাধ স্থরাপান প্রচ্জিত ছিল। মদ্য দেবতা ডিয়োন্যসম্ (Dionysus) সর্বা কনিষ্ঠ সর্বশ্রেষ্ঠ দেবতা, তাঁহার পূজার স্ত্রীপুরুব একরে কত আমোদ আফ্রাদ করিয়া মদ্যমান করিত। এই পূজাই ছিল "the widest and the best known worship known to the best spirits of the best commity of Hellas?" গ্রীক কবিগণ, এমন কি দার্শনিকগণও উহার কত প্রান্থা করিয়াছেন। প্রাশ্রাত্য সভ্যতার অন্যতম গুরু—বংশ স্থাত্য বোমজাতির মধ্যে আপামর সাধারণ সকলেই বেকাস্ (Baechus) দেবতার পূজা করিতেন।

"Bacchus ever fair and young Drinking joys did first ordain."

শোৰতা বেকাস্ই নানব স্থাকৈ মণ্য প্ৰচলন
শাৰ্যন করেন বলিয়া ভাহারা বিখাস করিতেন।
শার্ত কবি ওমর বৈয়ামের মদ্য প্রিয়তার কথা
শুক্রেপ বিস্তৃতি লাভ করিয়াছিল ভাহা জানা যায়। মদ্যলগতে পারসোর "সিরাজি" আজও ভাহার প্রেছ আসম
হইতে বিচ্যুত হয় নাই। মোগল রাজ বংশে মদ্যের প্রভাব
যথেষ্ট লক্ষিত হয় এবং বাদসাহ জাহালীর নিজে ইহার

এত গেল আর্যাজাতির বিভিন্ন শাখার কর্বা। **অভাত** স্ভাজাতির মধ্যেও সভ্যানের এচলন দেখিতে পাওয়া

वित्यव उक्त हिलन।

यक्ष । श्रीकी बुष्डिय (प्रवट) दिनादारनत म्हर्फ कवि यिन्छेन विनेत्र गियारहन ।

To him no semple stood

Or after smoked \* \*

In count and palaces he also reigns

and when night

Darkens the streep, than wander forth the lons of Belial slown with incolence and wine." সনন্ত মানবের মধ্যেই ধাহার মন্দির বিরাজ-মান ভাষার ভাষার ভিন্ন মন্দিরের প্রয়োজন কি ?

এবানে ইংলণ্ডের তদনতীন সমাজেরও একটু
আতাৰ পাওয়া যায়। ৰাইবেলেও মন্তপানের বহু দুঠান্ত
দেখা যায়। নোয়ার পানানক্তির কথা সকলেই জানেন।
Holy Sacrament এ আতাপি মন্ত ব্যবহৃত হয়। চীন
আতির মধ্যেও মন্ত প্রচলিত ছিল। অসভ্য জাতিরাও
কুরাপান সুধে বঞ্চিত ছিল না।

যুদ্ধক্ষেরে মদ্যপান দেবী যুদ্ধের সমরও প্রচলিক ছিল।

যায়ং দেবী চণ্ডিকা অভিদর সুরাশক্ত ছিলেন। "গর্জ গর্জ

স্পংমৃত্ মধু যাবং পিবামাহন্" তাঁছারই উক্তি। স্থ্য
বংশের শ্রেষ্ঠ নীর রবু পারস্ত বিশ্বরের পর মন্তবারা

নৈনিকদিগকে পরিস্ট করিছিলেন। কিষিদ্ধ্যাবাদীরা
উর্জ্য পানীয়ের পরম ভক্ত ছিল। এমনকি মৃনি ভর্মাক
রামাব্যণে ভংপর ভরতের সৈন্যদিগকে মদ্য ও

যাংস দানে অভিগি সংকার করেন। "Drinking is
the soldier's pleasure" কথাটা অদ্যাপি প্রচলিত
রহিরাছে। যত দেশে যত স্থানে সৈন্যপ্রের আমোদ

কাল্লাদের বিবরণ পাওয়া যায়, সর্ব্বেই মদের বড়া
দেখিতে পাই। মদ্যপানে শরীর যন্তের উপর কিরপে

কার্ল্য করে ভাছা নির্পত্ন করিবার জন্য যত অনুসন্ধান
(research) করা হইরাছে ভাছার প্রভ্যেকটাতেই

সৈন্যদলের উল্লেখ দেখা যায়।

ব্যাদের ভার হোমরও মতের প্রশংগা করিতে কৃষ্টিত হন নাই। জগতে বিভিন্ন জাতির কত স্থানেছ কবিছ্ণা কাব্য ও কবিতের জন্ত জামরা যে ইহার মিকট এবী তাহা বিলয়া শেব করা যায় না। বিদেশীয় কবিগণের ও, কণাই নাই—আমাদের কবিশ্রেষ্ঠ কালিদাস ভাহার কবিতায় মন্তপানের উল্লেখ করিতে বিলয়া কোধায়ও ইহার নিন্দাবাদ করিয়াছেন বলিয়া জানা বার না। বর্ত্তমান যুগের নটকুল শিরোমণি গিরীশচন্ত্র, মেখনাছ বধের কবি মাইকেল, বৈবতক কুরুক্তেরের নবীনচন্ত্র, নাট্যাচার্য্য মহাশয় প্রভৃতি বে ইহার কিরুপ ভঞ্জা সেবক ছিলেন তাহা সকলেই অবগত আছেন। প্রভিত্তার অকান্ত ক্লেত্রেও বিশেষতঃ যেখানে মন্তিরের কঠোর পরিশ্রম আবশ্রক গেখানেই ইহার মাহায়্য বিশেষ ভাবে দেখিতে পাই।

পাশ্চাত্য দেশে মন্ত অবস্ত পানীয়ের মধ্যে পরিগণিত এবং মন্তর্শুক্ত ভোজন-আদর গৃহ কর্তার কার্পণ্যেরই পরিচায়ক। পিতা মাতার সমুধে সস্তানের মত্তপান প্রাচ্য অগতে বিরল—ইঙ্গবঙ্গ সমাজের সমুদ্ধে এ কথা প্রীযোজ্য কিনা ঠিক বলিতে পারি না।

মন্তপান সংক্রামক ইনফু রেঞ্জা রোগের ভার পৃথিবীর সমস্ত দেশে বিস্কৃতি লাভ করিয়া থাকিলেও ইহার কুমলগুলি যে উপেক্ষিত হয় নাই ভাহার প্রমাণ সর্বজাতির গ্রন্থেই দেখিতে পাওয়া যায়। সোমরস শীত প্রধান দেশেই ব্যবহার যোগ্র ছিল এবং আর্য্যগণ গ্রীম প্রধান ভারতবর্ধে উপ্র পানীরের দোবগুলি বিশেষভাবে উপলব্ধি করেন। তথনই মন্ত অপেরম্, অদেরম্, অগ্রাহং বলিয়া ধোবিজ্ঞ হইল। বিজাতীরের জন্য উহা নিবিদ্ধ হইল, মন্তপাল অপরাধের জন্য প্রায়শ্চিত বিধিবদ্ধ হইল। কেহু কেছু হয়ত বলিতে চাহিবেন "The bigots of the iron time, Had called the harmless drink & crime" কিন্ত দোব ও গুণ তুলনা করিলে একথা বলিবার ধ্যা নাই। মন্ত্র মুক্তিই মন্যপারীর উপযুক্ত E-11 2027

क्षक चित्रिता विश्वीन करत्रने। योक्यवदा द्विनकत्र मुखार के बेना भीन कमिछ भारभन आन्निस कन यानना भिषा कितिरामा आमामा मूमि श्रविताल उपल चुर्वानीत्म वर्षः (नवन धनिक बाजू भारत (मह्लारभत क्षेत्रक्ष विश्वन। अवानित नान (य बानरामर व्यक् শীরে না, এই বভেরও একটা ব্যতিক্রের অবতারণা बेर्क विकानवनछः जुतानात्मक विकालि दर्गजात्मत क्रीके नेर्द्धारतत सार्वक रहेन । देशांट भानत्नाव सन्तर्का क्षिका जागिरमध अरक्षात किंछ जिताहिल दहेग मा। ক্রামাণ ক্রিয়গণ এট विश्व मानित्य नागावर्ग ্রেট্রের ব্যুপান ত্যাপ করিল না। কালেই যে भारियाँ भूटर्स भग्छ नामनीत्र (mandatory) छिन कींची कर्य देशिएएन भविषठ (recommendatory) बहैन। छचन वर्गछाम मामात (अप विचित्र वावश मिनील इंडेन-जामागद शक्य मुद्रा अत्करातार निविध वैदिन के जित्र देवकात भटक विटमन विटमन मैंगा अवर শুলির প্রে স্কল প্রকার মদ্যুট্ সমতাবে ব্যবহার্য্য বলিয়া विवास करा घटेल। (वायवत्र जान्यन अकःश्रुत मामात শ্রভাব বিশেষ বিস্তৃতি লাভ করিয়াছিল, কারণ দেখিতে कार कारायत कमा बहाशान शिहानाक खाश्चित शायत क्षेत्रं वित्रा (पावित प्रशिक्ति।

ত্তি আৰম হইতে সদ্য ব্যবসায়ী বিশেষ গুণার পাত্র

ইইয়া পড়িল। মদ্যপ ব্যক্তি স্থাকে শারিত্যক এবং

শ্বিত ইইয়া ন্থুনই জীবনভার বহন করিতে লাগিল—সে

শ্বিত ইইয়া ন্থুনই জীবনভার বহন করিতে লাগিল—সে

শ্বিত ইইয়া নিজাইল। ক্রেম পানদোৰ আন্ত ক্ষিয়া

শ্বিয়াছিল বৈ চীন প্রাচক Huen Tsang আবং প্রীক

শ্বিয়াছিল বৈ চীন প্রাচক Huen Tsang আবং প্রীক

শ্বিয়াছিল ক্রেমা নিয়াছেন। মহলানীয় ধর্মেও প্রাপানী

শ্বিত করিয়া নিয়াছেন। মহলানীয় ধর্মেও প্রাপানী

শ্বিতি ট্লিলি বিশ্বত লাই বে প্রপ্তার্জীর জ নিবেশাক্তা

শ্বিতি ইইভ। ভাইনি লাক্বরিতে ম্লাপান নিহিদ্ধ

রহিয়াছে এবং সম্রাট উরল্জেবের সময় মদ্যপান একটা কঠিনরপে দঙ্নীর অপরাধের মধ্যে পরিগণিত ছিল। বদিও বাদসাহ জাহালীর নিজে এই অভ্যাসের বশবতী ছিলেন তথাপি যাহাতে প্রকৃতিপুঞ্চ তাহার এ ত্র্কালতার অন্ত্রকরণ না করে তৎপ্রতি ভাহার বিশেব দৃষ্টি ছিল। তাহার সময় পদম্ব্যাদা নির্কিশেবে মদ্যপায়ীকে প্রকার্ভাবে বেঅদণ্ডে দণ্ডিত করা হইত। কি হিন্দু, কি ইস্লাম সকল ধর্মগ্রেই স্বরাপান নিশিত হইয়াছে।

चुतान'त्नत चार्मव (माव। वक्तरामत देवारे स्वरामत কারণ। কোন জ্ঞোন চিকিৎদকের মতে অর পরিখাণে নিঃমিত সেবনে মতা মামৰ শরীরের উপকারই সাধন করিয়া बारक किन्न मक्रभारनद अधान मावह य भदिमिछ भारनद मक्किं। वर्ष (वनी किन थाक ना, विकास कांद्र वह হউক, শীঘুই মাত্ৰা অভিক্ৰম হইয়া গিয়াছে দেখা যায় ৷ পিত, বায় ও দেখা প্রধান প্রকৃতি অসুসারে अञ्चाधिक नगरमत च्या रनयी निर्मात गर्या माध्यत डेखना ও অবলাদের ক্রিয়া আরম্ভ হইয়াথাকে। পুরামানব লৈত্বস্থ ক্ৰমশংক্ৰীণ ও অবসম করিয়া শরীর ব্যাধিপ্রবণ कतिशो তোলে এবং উহার ফল তিন পুরুষ পর্যাত প্রসারিত হইতে "বেঁখা যায়। এমন কি স্থরাপানে বংশরুদ্ধি শক্তির অপ্তর্ন বটিয়া জাতীর ধ্বংশ সাধিত क्या प्रतात्र अभवावशात अभवानी वाकिमिरगत নিঃগ্তান হইবার অভত্তৰ কারণ বলিয়া নির্দারিত क्रेशांट 4 विनेश्चे मण्यात्री प्रतिस्तित वह नक्कारमत वृह्यांच विद्रत मेंदर किंड एविज अमझीव द्वार शासित नमप्रहे মাত্র চুই এক দিনের অভ কুরাপানের সুবিধা পায়-স্থার অপব্যবহার ভাষার পক্ষে কলাচিৎই সম্ভবপর ছইয়া থাকে। মন্তপ ব্যক্তির স্বাদ প্রচাবতঃই ছ্বলি जावः चर्मकात्र वत्र जातः देवात्रहे श्राष्ट्राद देशकामार्चिकं इंदेवात भगातमे वास्तित मरबा। दक्षि पादेरण्डा मत्तावृश्चिश्वितिक व्यवभवः

প্রিপৃষ্ট এবং উদাম করিয়া পরে চিরদিনের জন্ত ভারাদিপকে অবদন্ন করিয়া কেলে।

र्श्वराद चछाविक वावहादि मानाश्रकात साहितक द्वाराव উৎপত্তি হয়। কাহার কাহার বরুত প্রদারিত হইয়া উহার किया विभवाच परेया यात्र अवर क्रब कर वा जेगाम-अष्टे रहेत्र। १८७ । विकित (मत्मत खेनाममित्मत मःथा। णहेशा (पर्या निशास्त (व जावामिश्तत এक ठजूर्वास्यत याधित मृत्वहे भान त्माय। त्कान कीवन वीमा व्याकित्मत > वर्गत्तत मृज्य मरद्या वहेत्छ तम्या नियाह (य, मृज्यत सात बनाभाती निर्मत सर्था मञ्जला ४० वरः चमक्रशामित्मत्र मर्दा मठकत्रा ६१ এवः मःकामक चात्रास्यत्र चाक्रमर्ग क्षष्टमाक्ष्मिर्गत् मर्था भठकत्। २० **चन এবং শেবোক্ত দিগের মধ্যে শতকর। ২০ জন মৃত্যুমুর্থে** পতিত হয় ৷ প্রতি বংশর ইংলতে ৫০,০০০ হাজার, शंद्रि ४८,००० दाकांत्र, ज्रुष्ठभूकं कर्यान नामात्वा ४०,००० दाकार्य, त्निविद्याय २०,००० এवर क्रविद्याप अकनक लाटकं भागत्मावर मृज्य मूचा वा त्यांनकृत्य कावन वेनिया निद्धातिष्ठ रहेशाहा अवान यज्ञी Gladstone क्यन्य मणागृर विविद्या हिर्मिन (य हेश्न (धर वर्ष जिन्ही महामात्रीरक यक लाक क्य हहेग्राह एथ् भानस्वार ভদপেকা অধিকশংখ্যক লোক মৃত্যমূৰে পতিত হইতেছে।

মন্যপান নৈতিক অবংপতাদের কারণ। ইবা শীঘ্রই
বিবেক ও বিচার শক্তির অভতা আন্তর্ম করিয়া
পাপাছ্টান নভবপর করিয়া ক্রোনে। ধর্মাধিকরণে
অভিবৃত্ত ব্যক্তিনিগের মধ্যে জ্বান্ত ৪২ জন মন্যাশক্ত।
ইংলতে ৩৩ জন এবং জর্মাণীতে ৪২ জন মন্যাশক্ত।
কর্মেক জর্মা বিবেক ও বিচার শক্তিরা বাক্তিন, আমাদিপকে
কর্মাণী, অন্তরা ও পানাত্যানের বিরুদ্ধে বৃদ্ধ করিতে
ইইজেতে এবং বতত্র বৃদ্ধিতে পারিতেতি শেবটাই
কর্মাণেকা ভর্মিত বিপদ শক্তা।

असमेविनिरगद्र मरश अक्षेत्र छन बातना वस्त्रन इहेन शिवाद्य स्व बंगाशास मजीव देक थात्क, मील निवादन इंद **এवर कार्याकती मक्ति दक्ति भात्र। पृष्ठेणः मठा घरेरमध** अङ्गडभाक्त छेश छूत । भान कत्रा मां जहें किनिका मां है। খারা মদ্য শরীরের সকল স্থানে সঞ্চারিত হয় এবং তাহাতে পার্মওলী অবশাদগ্রন্ত হটরা পড়ে। চর্ণের অব্যবহিত নীচে বে কৈশিকা নাডী আছে তাহা কীছ হওয়ায় অধিকতর পরিমাণে বক্ত চর্মের উপর আসিয়া शर्फ अवः नदीरद्रत উठान्छ के नदिबाल वहिन्छ হইরা বার। উফ ভাবটা কণ্ডারী মাতা। চতু:পার্শন্থ वाइ यनि चित्राज मीठन शास्त्र, जारा रहेल এड অধিক পরিমাণে উত্তাপ বহির্গত হইয়া যায় যে শীতপ্রধান 🛒 দেশে পরিপার্বে সুপ্ত মাতালকে অনেক সময়ই মৃত্রামুখে পতিত হইতে দেখা যায়। পরীকা বারা দ্বিরীক্লভ হইয়াছে যে শ্ৰমজীবির পক্ষে মদ্য শুধু যে নিম্প্রারেশ ভাহা নহে, ইহাতে ভাহার কঠোর এবং স্থদীর্ঘ পরিশ্রম कविवाद मेळिवे अभिन्य हरेया पारक। भविवार्क दिनि, कांकि এवः हा वावहात कवितन ভाहारमंत्र অধিকতর উপকার হইতে পারে।

জন্মণীতে প্রতি ব্যক্তি বংশরে মোট ৯.৫ লিটার, ক জন্তীয়ার ৮.৯ লীটার, ফ্রান্সে ২২৩, ইংলন্ডে ১০.৮; বেলজিরমে ১৩.০, কবিয়ার ২৭, আমেরিকার মার্কিণ রাজ্যে ৬.৪, ইতালিতে :১৪.১ লীটার মদা পান করে। ১৮৩০ গুরীকে সুইজেন জনপ্রতি ২৭ লীটার পর্যান্ত অবাল ব্যরের পরিমাণ উঠিয়াছিল। ১৯০৫ সনে জন্মণীতে আবাল বৃদ্ধ বণিতা, নির্বিশেবে জনপ্রতি ৪৭ শিলিং বা ৩৫।০ টাকা, পনর বৎসরের অধিক ব্যক্তিগের জনপ্রতি ৮ পাউও বা ১২০১ টাকা এবং সমগ্র দেশে ১২ কোটা পাউও বা ১৮০ কোটি টাকা অথবা সমজীরিদিশের আমের শতকরা ১২ টাকা মদ্যের সঙ্গে উধাও হইয়া পিয়াছিল। যত মদা প্রস্তুত হয় তাহার মধ্যে জন্মণিতি

<sup>🛊</sup> শীটার প্রায় একদের তৃই ভ্টাকের সমান। 🔞

শতকরা হন্ত, জন্ত্রীরার ১৯, ফ্রান্সে ১৮ এবং ইংলকে ১৪ দীটার মাত্র কারধানা প্রভৃতির কার্বো প্রোজন হর, অবশিষ্টাংশ দর শরীর শোবণ ও নরদেহ ভাগ করিয়া বাকে।

আৰ্মাণীতে পঞ্চল এবং বোড়ৰ শতাকীতেই মদাপান আকৃটা ভাতীয় বিপদের নধ্যে পরিগণিত হইয়াছিল। **জাঞ্জিকা মহাদেশে পাশ্চাত্য জা**তিদিগের অভিনিবেশ বংছাপনের গলে সংগই পাশ্চাতা সভ্যতার এই কল্বটীও चानिय निवानी निरंगत नभारक श्रीतम नाए करत अवः **জাহাদিবের ধ্বংবের প**র থাশন্ত করিতে লাকে। ক্রমে এই পাপ ভবায় এত স্তব্ধি পাইলাছিল যে ১৮৯৯ এবং ১৯০৩ সনে সার্ক্তনীন পানদোধনিবারিণী সমিভির (International congress against alcoholism) अर्मन नगरीय अविदिश्त मनाभान दक्षि कदिनात खन और भारेन विधिनक कतिवाद श्रेष्ठान गृशीक द्या শাশ্চাতা সভাতার সহিত এত্দেশেও তাহার দোবওলি मश्कांतिक दरेशाह, अमनकि देशाकी निकात अजारकक , আল বলিয়া মদ্যপান একদিন শিক্ষিত স্মাত্তে স্প্রির विवत इहेग्राहिन। "সধবার একাদশীতে" যে চিত্র ক্ষমিত হইয়াহে ভাষা হইতেই তথনকার শিকিত সমাধ্যের বে কতহুর অধংপতন হট্যাছিল তাহার ্রশালা নির্দেশ করা যায়। কিন্তু এ আধান্ত্রিকভার **एक्ट किराइ देशा अधि**किया बावस प्रदेश थाक. আৰু বার প্রপার্থে কর্দমাক্ত কিংবা নর্দমার পুতিজ্ঞ किए डेकिनिकात शोत्रवाञ्चल एएर ७ मन एविएड शिका यात्र ना। "I shall drink till the bottomof the flash shall be parallal to the ceiting" आप वाराष्ट्रतीत विषय ना रहेबा लब्जातरे कारण स्रमारक ।

া অভাপানের সংক্ষান্য কাতির স্থানীন হুর্দ্ধার এইরপ অমিষ্ট সম্বন্ধ দেখিতে পাইয়।ই এবিগ্নপ্রেমিক অধীক্ষাপণ এই ব্যাধি নিবারণের জন্ত স্থানে স্থানে সমিতি

স্থাপন করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। এই সমিভাচার স্থিতি (Temperance Assolation) পানপোৰ ছুৱীক্রণে मानत्वत विक्रमायन कतिराहर । जामारमत नवर्गमार के व्यावकात्री नी छित्र अञ्चल्या शहे मध्याहक मरमत व्यक्ति यत्वह भराष्ट्रज्जि नृहे रहा। आंतकाही विजाश स्ट्रेड ভারত গবর্ণমেন্ট ১৩ কোটা টাকা রাজস্ব প্রাপ্ত হয়, তথাপি धेरे मार्ग निताकत्रपार्थ ७ दित श्रत यथामञ्जन त्रक्षि कतिहा। मानात शहरान यथामध्य क्याहेबा (मध्याहे अहे नी किंद মুখ্যসন্ত্র। রহিত (Prohibition) করা প্রথা আমেরিকার গুহীত এবং কার্যকরী হটয়াছে। ওফ আমেরিকার (Dry America) লোকের কার্গ্যকরী এবং উৎপাদিকা मिक्कि वर्षा है जाक शाहितारक अवः करेवन केशात करनकरन मना अञ्च कता दूरत पाकृक आलाजतन्त्र वञ्चत महन गएक जाशास्त्र लाम निकाश शिर्वाहिक इत्रेबाटि । चारमतिकात 86 है। बारमिक वारकात (state) 88 है। এই প্রতিবেদ নীঙি সমর্থন করিয়া ভাতীয় পে'রব বৃদ্ধি করিয়াছে। কোন কোন দেশে বেলে, বিশ্রাম খরে বা ভোজনাগারে ইছার বাবহার রহিত করিয়া দেওরা रहेशाह ।

কিন্তু হার ! শ্মাজের প্রত্যেক স্তরেই আঞ্চিও মদিরার প্রভাব পরিল্ফিত হইতেছে। কত সন্মানী वांक्तित मान मर्यामि एक देशांत महिमान नूथ दहेशाए ७ दहेरण्ड, जी शुरवंत पूर्वत बान काष्ट्रिया नहेना कछ मतिज अमबीवि (य देशावु त्ववाच छेदमत याहेटलाइ, আশাও ভরণার ত্বা কত যুবকের ষৌবন ও সাহস, व्यान। अतः छेछाकाङ्का (य हेशाय ভাগিয়া শাইতেছে, **4.5** রণ-কেশ্বীর **শংগ্রাম** कोयन ७ (पोर्गा वीर्था (य अभिवात CHICK कित्रपित्नत गण अध्वत हहेगाए, (क जाहात हेग्रुखा कतिएड भारत ? अहे जारव रेका भातिवातिक व्यव्यागिकित भव প্রশন্ত করিয়া সমস্ত জাতীয় জীবনটাকেই নির্মার্থা, নিভেজ ও উৎসর করিয়া আসিতেছে। ধনীর ও

क्षिणाट्यत क्रों निकात (म श्वरणान्या शास्य शास्य नश्रत भ्रात थातीम भीतरात च्रिकिक्स ११ विश्वमान ब्रहिशाह, क्ष्मुयान श्रेष्ठावित्तत क्ष्मु (पथिट भारेत, कारात जीर्न देहेन खालत छेलात ऐक्बन ककर (वानिक त्रविदादक-'यनिता यविया'।

. শ্রীপরেশমাণ বস্থ।

### অন্তরাত্ম।

भूक्तवर्ती, धाराक माधा ७ वाशीन देखात' वतन সংক্রেপে বুঝাইভে চেষ্টা করিয়।ছি, "মীয়তে অনয়। ইতি মায়া"--- যাহার ছারা জড় জগতের বস্তু সমূহের পরিমাণ করা যায় অর্থাৎ ভাহাদিগের বিকাশ ও বিলয়ের প্রকৃত তথা অবগত হওৱা যায় তাহারই নাম মায়া, যে সকল थाङ्गाङ्किक विधारनत्र वनवर्ती धरेशा कड़ अगर हिन्दिहरू छारामिश्वबर माधावण नाम माया। এक दिमात्व देश विष्णा, अभन्न हिभारत हेश अविष्णा, यथन এই প্রাকৃতিক বিধানের অনুসর্গ করিয়া এড জগতের কার্য্য কারণ वृतिएड (हुई। कता द्य, उथन हैदा विमा वा विख्यान, आत यथन वाधीन देव्हा मुल्लन माकुष व्यापनाटक छ वह वाधा वाँवि नियम्बद अधीन मान कविया देवाद निकृष्ठे मछक व्यवन्छ करत, उथन देश व्यविष्या वा व्यक्तान ।

कारकहे मात्राद निकृष्ठे बाज नमर्भाहे माबूरवद अकन इः स्थत कात्रका शृत्स विनिम्ना हि त्य, विश्वनिम्न खात्र खालात ছংশে পরিপূর্ণ। কিন্তু একটু হল্ম ভাবে বিচার করিলে (मर्थ) यांहेर्त, श्रक्त श्रक्तारत जिनि (करक्के चनस पूर्थ,

্ৰেপ্ৰের মন্ত্রেছ ''উত্তর ক্রেণ ও পরম্পদ" হইতে গুছীত।

व्यवस्य भानमा जिनि टिजनामत ७ हैकायत- जिन बार्तन, डांशांत्र देखांदे निक्ति। गांश कि इ पंतिशांति छ শটিতেছে দকলই তাঁখার ইচ্ছায়। এমত অবস্থায় ডিনি व्यागणपन वहे ब्यात कि हू रहेट अस्तिन कि १

মাত্রকে তিনি স্বাধীন ইচ্ছা দিয়াছেন, স্থার অপরাংশ তিনি এই ইচ্চা হইতে ব্যাঞ্চর ব্যক্ষিয়াকেন। माभूष अथाय व्यासन्यिन है हिन--वादा हैन्सा कि दिया है. ভাহাই তথনই মুর্ত্তি ধারণ করিয়া ভাহার নিকট উপস্থিত इटेशाइ जेवर डाहारक आनत्म विष्ठांत कविशास्त्र । আপনার অসীমতাও অন্তত। অনুভর করিয়া সে व्यागभगत हिन-"िक डार्भिक" नरत्र डाहाक भविष्ठक्रहे हिन ना, "जिठान" उपनाउ धकामरे भार नारे।

यथन (भ भाषात्र मुक्त इरेता व्यालनात व्याधीन रेक्टाक কথা ভূশিয়া গেল, তখনই দে আপনাকে সাত্ত ও স্মীম क्रिया (क्रांग्या, भाषात अधीन क्रज़ अगाउत रश्च नक्रमत विभग्न अथन (म अवभाष्ट्राची चित्रमा क्षीकात कविश्व नहेन-- याश जानवादम जाहात विनात्म काबिट अवर যাহা ঘুণা করে তাহার বিনাশে হাসিতে লাগিল। সে कृतिशाहे (गत (य, हेम्हा कदिलाहे (न नाशांत्रनजः विनासनीत वल्डरक व्यविनामी क्षिया दाविएक शाह्य। एषु जाशहे नहर, এই ভাবে आशनारक्छ रम সর্বতোভাবে মারার হাতে ছাডিয়া দিবা জনা জনাভারের চক্রে ঘুরিতে লাগিল। আজ যে ত্রিভাপের আলার অস্থির হইয়া নে "ত্রাহি ত্রাহি" ডাক ছাড়িয়াছে—সংসার कहेटल भनायामद (हारी कदिएलाह, (नहें जिलान काशावहें निक्त रहि जातान यक्षणमा -- यक्षण रहि कतिवाद्यन, चाचितियु इ रहेशा मायून चमकरनत शृष्टि कतिहा साम **पर्या**५ पश्चितास्क्रतार जिनि निष्करे जनस पूर्य अवर जनस <sup>क्र</sup>हात्यत स्वता नव त्विरिष्ठ नाहरू मा! यह 'ত্ৰিভাপের' হাত এড়াইতে হয়, তবে তাহাকে আৰার স্থাধীন ইচ্ছার বিকাশ সাধন করিতে অতিমায়িক অর্থাৎ অতি প্রাকৃতিক জীরন বাপন করিছে ছইবে। ইহাই তাহার চরম লক্ষ্য ও পর্য পরিণভি।

্বাধীন ইচ্ছার পরিচাপনাই ভাষার 'ব-ধর্ম', 'পর-ধর্ম' ্বার্মিং নারার ধর্ম অস্থ্যরণই ভাষার মরণের কারণ ' ্বইয়াছে।

ে কেমন করিয়া স্বাধীন ইচ্ছার আকার বিকাশ সাধন ্লুক্টরা বায়, এখন সেই সম্বন্ধে একটু আলোচনা করা ্রাইডে পারে।

ः छामात्र आत्पत्र चलक्ल, क्षात्रत्र निकृष्ठ आत्राम, अभग पक्छ। ज्ञान चार्छ (यथान चाराज नानिवासाखरे ্টোমার শিরাম শিরায় কার্যাকরী শক্তি বিভাতের মত ্ছুটিয়া আনে, তখন তোমার অজাতসারেই, আঘাতের ়**প্রকৃতি ও শক্তি অনু**সারে, ক**খ**নও ভোষার চকু ফাটিয়া भव विश्वनिष्ठ शादा चान गड़ाहेबा श्रीक, खबरा खिन ाक्षिक कृष्टिक चारक ; कथनखरा चानरक थान **अम**नहे ्यार्ठायादा दहेश উठ्ठं (ये, अमन (ये कठिन शञ्जोत शूक्रय স্কুৰি সেই তুমিও বালকের মত সরল-তরল হইয়া পড়---্কখনওবা হুই হাত তুলিয়া আশীর্কাদ কর, অথণা ভজিতে ৰাটিতে বুটাবুটি যাইয়াও তৃপ্ত হও না! "ऋषमध्या चारात, जूमि छाविया हिखिया गहेवात शृत्सहै, : दलामात बाक बाहेबा चलरतत याथाठा है कारिया स्मरन ! चन बहेट द जादित जिन्न दम, जादात अकाम रजमन অভবায়ার বিচার শক্তি তথনও অভাতসারে ফলাফলের দিকে দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়া ेबाटक अवर चाहिन चामाम एउत्र कथाती मत्म मत्म भरन ্জাগাইরা ভোলে বলিরা মনের ফোব ভোমাকে গালি াশাশ্য, চড় চাপড়ের বেশী কোন কালে প্রবৃত করিতে ्यार्य मा। किस क्वार्यंत्र कार्यंत्र यथन अपन श्रीवन क क्षाकविक स्त्र (य. त्कांश्वे। এक्वाद्र व्यवदाचात्र ভार्यद्र ेम्बारमानम উবিত रहा, তখন याह चारेन चारागर खंद क्षे (छाबाद बरबहे बारन मा; जूबि बनावारन बाहाद উপর ক্রোধ কর, ভাষার মাধাটাও কাটিয়া ফেল! শ্রেক ভাব সক্ষেই এই কথা। অভ্যান্থার ভাবের ब्बार्ट्यानम छेविछ बहेरन, द्रम कान भाव छूनिया, दृहाउ धेरे (य श्वामही (यथारन आचां जातित राम कान পাত্রের সীমা উভিন্ন যার, এটাই হইন ভোমার অর্থ্যামী অব্যাত্ম। এখানে আঘাত লাগিয়া শক্তির উত্তব না হইলে মাসুবের হাদরে একাত্তিক ভাব ও নিষ্ঠার স্থান हम ना, এবং 'ভাবে বিভোর' हहेमा माक्र, नहक व्यवसाम যাহ। অসাধ্য, তাহা সাধন করিতে পারে না। अञ-स्त्राष्ठदात्र मञ्जून निया (य এकर्र) चविष्टित नीत्रद-(आड अवाहिड इरेडिहि, डारारे व्यवाचा। (व कथा, त्य चर्नेना, त्य मृश्वा त्जामात 'मन्त्र' न्नान करत, जाहात চিত্ৰ এইখানেই অন্ধিত রহিয়া যায়, এবং লামত ও নিদ্রাবস্থায় অনেক সময় তোমার মানস চকুর সমুধে উদিত হইয়া অংখাদিত পূর্ব সুধ ও ছঃধ তোমাকে व्यागात्र व्याचाम कताहेता थाटक। এই व्यवताचात्रहे ভোমার পূর্ব জীবনের চিশ্বা, ভাব ও কর্মজনিত বিশাস্ত गःकात्र निरिच त्रविग्राष्ट्, देशांक जागादेलारे, तारे বিখাস ও সংফার প্রবল হইয়া তোমাকে পূর্বাছুত্বত পরে है। निया लहेया यहित-त्यमन प्रश्ना त्रष्टां कर कर महाताल विशासिकात, विषयनगढि जार नाना वावूद्य नरेशां গিয়াছে ৷

যে মন দিয়া তুমি বহিজ্ঞগতের সঙ্গে আদান প্রদান করিতেছ, তাহা বহির্দ্ধী—সর্বদাই বাহিরের দিকে চাহিয়া রহিয়াছে। যে ভাব-তরঙ্গ এই মন আলোড়িড করিয়া, তাহার অন্তঃতলে অবন্ধিত অন্তরায়া পর্যায় পৌছায় না, সেই ভাব সতত চঞ্চল; যে ক্রিয়ায় ভাহায় প্রকাশ, তাহাও সাবারণতঃ অসার ও অস্থায়ী। ভোমার জীবনের সাধারণ কাজগুলির মূলে বে ভাব ও ইচ্ছা, তাহা এই মন হইতে উত্ত হয়। কাজেই ভাবও গাঢ় হয় না, ইচ্ছাঙ্ প্রবল হয় না এবং ইচ্ছার প্রণঙ ক্লাচিৎই হইয়া থাকে।

ক্রমণ সকল ইজিয়-পথে এক গলে বিষয়-বাভাসের লোভ আদিয়া মনটাকে দশদিকে চালিত করিরা থাকে; তথন কোনই কার্যা হয় না। কথনওবা কোনও বিশেষ ইজিয়-পথে অধিকতর প্রবল বাতাস আদিয়া একদিকে মনটাকে অপেক্ষাক্ত প্রবলবেশ ঠেলিয়া লইয়া হায়। এই সময়ে যে রক্ষের হউক একটা ভাবের,এবং সবল হউক ছর্মল হউক একটা ইচ্ছারও বিকাশ হয়। এটাই হইল ভোষার সাধারণ অংশ; কিন্তু এ সময়েও একটা ইচ্ছা আগরিত হইয়া পূর্ণ হইতে মা হইতেই অপর শত ইচ্ছা আগরিত হইয়া পরম্পরকে বার্থ করিয়া দেয়।

কিন্তু কোনও স্বায়ে ন। কোনও স্বায়ে কোনও বিশেষ ইন্দ্রির-পথে এমন প্রবল একটা ঝাপ্টা আসিরা উপস্থিত হয় যে, তথন মনে যে তরঙ্গ ওঠে, তাহাতে মনের অন্তত্তল পর্যন্ত আলোড়িত হইয়া পড়ে। এই স্মায়ে যে ভাবের ও যে ইচ্ছার উত্তব হয়, তাহার শক্তি আসে, মন হইতে নয়, অন্তরাল্মা হইতে। এই যে ইচ্ছা, ইহার শক্তি অসোঘ, ইহা পূর্ণ হইবেই হইবে।

ষদি দিছিলাভ করিতে চাও, 'মনে' ইচ্ছা না করিয়া অন্তরাত্মায় ইচ্ছা করিও। অন্তরাত্মা জীব ও শিবের মধ্যবর্ত্তী এবং উভরের সংযোগ-হত্ত্ব। জীব মনের দাস, সেই মন দিয়া ইচ্ছা করে, সেই মন দিয়া ভগবানকে ডাকে; কাজেই ভাহার ডাক ভগবানের কাণে পৌছেনা, ইচ্ছাও পূর্ব হর না, কারণ শিবের সঙ্গে যে মনের সোজা সংযোগ নাই। মনের ডাক যদি অন্তরাত্মায় পৌছায়, অন্তরাত্মা তথন ভোমার নিবেদন শিবের নিকট পৌছাইয়া দিবে। ভূমি ঢাকা ছইতে বোজে সংযে কি বোজা 'ভার' প্রেরণ করিতে পার ? ঢাকা-জাপিস ভোমার সংবাদ কলিকাভার কেন্দ্র জাপিসে পাঠাইলে সেধান হইতে বোজে যাইয়া পৌছে, নছ্বা কিছুতেই পৌছিবে না। ভামার কন যথন জন্মাত্মার খারে জালাভ করিবে, অন্তরাত্মায় তথন

ইক্ষার উত্তব হইবে এবং সেই ইক্ষা তগৰানের অনুষ্ঠ ভাঙার হইতে ভোষার ইন্সিত বন্ধ আকর্ষণ করিয়া আনিবে।

নাধারণ জীবনে তুমি এমনই বহির্দ্ধ হইরা রহিয়াছ বে হৃংধের বেদনা কিংবা স্থের কোমলম্পর্শ কিছুই তোমার অন্তরাদ্ধা পর্যন্ত ঘাইরা পৌছেনা। তথে এ কথা ঠিক যে, সুধ অপেকা কুংধের আঘাতটা প্রবিশতর, এবং অনেক সময় সেটা কিয়াও পরিফাণে অন্তরাদ্ধাকে ব্যাকৃশ করিয়াও পাকে; তাহার করে হৃংধের কথা, হৃংধের স্মৃতি হোমার মনটাকে জড়াইয়া ধরিয়া রাখে এবং অন্তরাদ্ধাও ক্রান্থঃ অধিকতর হৃংধুই আকর্ষণ করিয়া আনিতে থাকেন।

ষে হঃ ও তোমার মনে তরঙ্গ তুলিয়া অন্তরাস্থার : मिरक इंडिया हिन्याहरू, जारांदिक वाथा माछ। जारांद्र বিপরীত বস্তটাকে-যাহা পাইলে এ হঃখের আর সম্ভাবনা पाकित्व ना-कन्नना ଓ छार्चना बाला शृष्टे कविना बन ভাৰাতে বাৰিয়া ফেল। আরও ভাবিতে ভাবিতে, क्त्रनाम त्रहे अर्थत हिल क्रिंग्रेश जूनिया ज्या করিতে করিতে, মনটাকে অন্তর্গুখী করিয়া অন্তরান্ধার मिटक कुछ। हेशा माछ। यक्त कमार्य दहेशा এह मूर्यक कृषि করনা করিবে, অস্তরামার আকর্ষণী শক্তি ভড়ট বিকশিত ও পুষ্ট হইতে হইতে সেই সুধ ভোষার वश्न कतिया चानिया पिट्ट पाकित्य। चढ्रताचा स्ट्रेट्ड यसन हेम्हा शांतिल इब्न, ज्यन व्याननात मंकिरक (न এমন শক্তিমান যে 'বিল্ল' তাহার লক্ষ্যই হয় না, 'ভাবের' कथा ভাহার আমলেই আদেনা; 'বিশ্ব' ৬ 'ভাগ' দে বোঝেই না। 'পিছিলাভ করিব' এই প্রবল বিশ্বস্থান্ত ছুটিয়া চলে এবং সাধারণ অবস্থায় বাহা অঞ্চেয় বিশ্বস্থাপ, बनावारम छाटा अन्तर्गिष्ठ कतिया बाशनारक शूर्व करिया থাকে। বাড়ীতে যথন আত্তপ লাগে, তখন গুৰুখামীর बीर्व हर्तन (भरह ७ अयन हे मक्तित मकात हर (म. महज व्यवद्वात (म गांने वाभभग अकरनत किनियश पुनित्क मा

গাঁৱে, ভবন দে আনারাসে একরণ ওলনের জিনিবও ভূলিরা লইয়া বার। এ শক্তি ভাহার কোথা হইছে আসে ;—আসে অন্তরান্মার বিখাস হইছে। 'পারিক কি "পারিক না' মনের এই যে ভাব, তবন ভাহাতে স্থান শার্ম 'না—'বিশ্ন' বলিরা কোনও জিনিব সে বীকার উল্লেখন।

**अवध्यः विश्विं उकाम तकन मनतारक अख**तायात शिक्ष होसिया নিতে বেগ পাইতে হইবে। অনেক সৰয় ভাৰটা গাড় হইয়া কল্পনা সঞ্জীব করিয়া তুলিতে পারিবে না; ভাঁই চুর্বল কল্পনা পুষ্ট ভাবট। যাইয়া অন্তরাত্মায় আকর্ষণী ইক্ষা-শক্তিও জাগাইতে পারিবে না। কিন্তু হতাশ इटेख ना-'चाछात्र रियारगत' यहन नहेख। जनमः मन ৰহিজনৎ হইতে বিচ্যুত হইয়া খির হইয়া আসিতে ও কল্পনার মধুর আখাদ পাইয়া তাহাতে নিবদ্ধ হইয়া ব্রসিতে থাকিবে; এবং কল্লনা যাইয়া অন্তরাত্মার নিকট ट्यांबाद निरंतन कानाइट्य। उथन अन्या देव्हा-मंख्टि শাসরিত হইয়া সুধুবে ভোমার তথনকার অভীপিতই প্রদান করিবে তাহা নহে-অন্তরাত্মায় উদ্ভূত সকল ইচ্ছাই পূর্ণ করিবে। এমন কি, তোমার ঐকান্তিক ইচ্ছা হইলে, তগবানের যে অনন্ত গুণরাজি তুমি আকর্ষণ कविरुष्ट, ভাহারা সমবেত হইয়া ভোমার ইপ্ত মৃটিই প্রত্তা করিবে এবং ভোমার সঙ্গে আলাপ বাবহারও করিবে। হিটিরিয়া প্রভৃতি ব্যারামে ঔষণ পাওয়ার কথা অনেকেই জান। ব্যারাম হইতে মুক্তি লাভের জন্ম রোগীর अस्त्राष्ट्राप्र यथन श्रीवन हेव्हा कांश्रीण दश, ७४नरे (पर् हैका छेरं। रष्टि कतिया शांक अथना आकर्षण कतिया जाति। "ভिक्तित्व मिनाम कृष्क, जार्क बह्दून"-कथात्र व ইহাই সার তব।

মন্ত্র ও ধ্যান ভোমার ঈপ্সিত গুণরাঞ্জির দিকে তোমার বিহিন্দ্বী মনটাকে আকৃষ্ট করিবার কৌশলমাত্র। যে নাম বিশ্ব বন্ধ লইলে ভোমার অজীপ্সিত গুণরাঞ্জির চিত্র জাগিয়া গুঠে,সেই মন্ত্র, সেই নাম তুমি লইতে গার। গুণুঞ্চি যদি পরিষ্ণার ভাবে সর্কালা ভোমার মনে জাগরক থাকে, নাম বা মন্ত্রের ভোমার কোনই প্রয়োজন নাই। ভোমার বোর মৃত্তি ভোমার আরাধ্য ভণাবলির জমাট্ররপ মাজে বলিরা ইহার উপর মনটা সহজেই নিবক হইতে পারে। কিন্তু মৃত্তিতে ভারভিল যদি উজ্জল ভাবে ফুটিরা না ভঠেকিংবা মৃতি ছাড়াও যদি ভাগওলর উপরে মন নিবক্ধ হইতে পারে, তবে মৃত্তির কোনই প্রয়োজন নাই। মোট কথা, গুণগুলিই ভোমার খ্যের ও ইষ্ট। যে ভাবে পার, নেই গুলিতে বহির্ম্থী মনটাকে লয় করাইয়া দিবে। ইহাই জপ, ইহাই ধ্যান।

ভগবানের অনম মঙ্গলময় গুণগুলির এই ভাবে ধানে করিতে করিতে য়খন তুমি তন্ম হইয়া বাইবে, তখন অন্তরাত্মা তাঁহার আঙার ২ইতে দেই গুণগুলির অঞ্জ অবিচ্ছিত্র ধারা তোমার উপর আক্ষণ করিয়া আনিতে থাকিবেন; এবং দেই গুণগুলির সমবায়ে গঠিত করিয়া তুমি ধদি মনে মনে কোনও মুভি গড়িয়া লইয়া থাক, অস্তরাত্রা তখন ভাহাতে জীবন সঞ্চার করিয়া তোসার নিকট উপস্থিত করাইবেন। তুমি তথন তাঁহার সঙ্গে আলাপ ব্যবহার করিয়া পরমানন উপ-ভোগ করিতে পাইবে। যেমন তোমারই একদিন-কার মনের কল্পনা আৰু খড়ি, বালীয় পোত, বোম-যান প্রস্তৃতিতে পরিণত হইয়া তোমার মনে অতুল আনত দান ও তোমার অশেষবিধ কল্যান সাধন করিতেছে. ঠিক তেমনই ভাবে ভোমার কল্পিড মৃতিই তোমার সন্মুধে উপস্থিত থাকিয়া তোমার ছঃখের আতান্তিক নির্তি সাধন করিবে ও তোমাকে ভগবৎ সাকাংকরে সুধ उपाणा कताहरत । देखा कतिल व्यर्कत्मत्र मण, उंश्वान ছম্মে গঠিত বিরাট রূপও দেখিয়া লইতে পারিবে।

আরও বুঝাইয়া বলিতেছি। আজ যে বিমান রথ দেখিতেছ, যে রথ তোমাকে বহন করিয়া শ্ঞে উঠিতেছে ও দেশ দেশান্তরে লইয়া ঘাইতেছে,—সেটা ডোমারই স্টি! সুমি ভাষাকে যেরপ ও যে শক্তি বিয়াছ, সেই রূপ ও সেই শক্তি লইয়া সে তোমার কার্য্য করিছেছে। বাহারপ ধারণ করিবার পূর্বে এই বিমান-রবের উদ্ভব হইয়াছিল তোমার মনে। আকাশে উদ্বিধার একটা বাসনা তোমার বহির্দ্ধনী মনে জাগিয়া উঠিয়াছিল—আপনাকে সর্বতোভাবে মায়ার অধীন মনে করিতেছ বলিয়া, ভিতর হইতে শক্তির বিকাশ সাধনের দিকে তোমার লক্ষ্য যায় নাই, তোমার লক্ষ্য গিয়াছে ক্রত্রিম উপায় উত্তাবনের দিকে। যাহাই হউক, সীমাবদ্ধ ভাবে স্বাধীন ইচ্ছার পরিচালনা করিয়াই ভূমি ক্রমশং কত উরত হইতেছ, তাহা ভাবিয়া দেব।

যধন তোমার মনে আকাশে উড়িবার প্রবল বাগনা জাগিয়া উঠিল, তথন গেই বাগনার সঙ্গে সঙ্গে কল্পনাও জাগিয়া ওঠে। কল্পনা অর্থাৎ ধ্যান করিতে করিতে খুমি ক্রমেই তাহাতে ওল্লয় হইতে থাক। অর্থাৎ তোমার অস্তরাল্লার উপর কল্পনা কার্য্য করিতে থাকে। ক্রমে সেথানে আশা ও ইচ্ছার উদ্ভব হয়, এবং সেই আশা ও ইচ্ছার আকর্ষণেই যে বিমান-যানটা একদিন তোমার মনের একটা ভাবমাত্র ছিল, আব্দ তাহাই মূর্ন্তিমান হইয়া তোমার শত প্রয়োজন সাধন করিতেছে!

সেইরূপ, তোমার আরাধ্য গুণগুলির সমাবেশে এकট। यूर्खि शिष्या वहेया यनि छाहात मर्क चानान ব্যবহার করিতে তোমার মনে প্রবল বাসনা হয়, ভবে কল্পনা সেই মূর্জি প্রথমে ভোমার মানস চক্ষুর সৃত্ব্যে ফুটাইয়া তুলিয়া তোমার মনটাকে বাহিরের मिक् रहेरा अरक अरक होनिया चानिया जाहारा ক বিয়া নিবছ ফেলিবে। তধন ব্যাগিয়া উঠিয়া তাহাতে জীবন দঞ্চার করিবেন। মৃত্তি छथन 'वत्र' मान कतिरव-कथा वनिरव। किन्न तम 'বর', দে কথা, অন্তরাত্মারই বর, অন্তরাত্মারই কথা। শতএব, ইচ্ছা হইলে তুমি মূর্ত্তি গড়িয়া ভগবানের সঙ্গে णामान वादशांत कतिए नात, जात हेव्हा ना हहेता, नां कदिए পার। किंद अवतात्रा मिशा (य हेव्हा করিবে: যে গুণ আকর্ষণ করিবে, উচ্চা পথেই ছাই। সমানভাবে লাভ হইবে।

व्यानन कथा--विर्माणी मनरक व्यस्तर्भी कता ও অন্তরাত্মাকে জাগরক করা। ইহাই হইল দিদি লাতের মূল মন্ত্র। অন্তরাত্মা যথন কাগ্রত থাকেন, ত্বন সামাল একটা কথায়ও এমন একটা প্ৰায়ুস্ত ভীবের ভরল উঠিয়া মানুষকে আকুল করিয়া ভোলে বে, ज्यन आत जाशांत्र भाषात्रण ज्ञात्मत्र मिक् विदिक्, হিতাহিত বোধ থাকে না। সাধারণ অবস্থায় বাহা (म कञ्चना अकरत नार्डे, किःवा मत्न इटेल अ निरु तिया উঠিয়াছে, তখন অনায়াসে পে পেই হুমর কার্য্যপ্ত করিয়া বসে। "বেলা ত' গেল" কথাট। লালাবার জীৰনে শত সহস্ৰবার ভনিয়াছিলেন কিন্তু ভনিয়াছিলেন **ठक्षण** मन निया। अकनिन (य कानअ कायर मंन्छे। নিত্তেক ছিল—বহিজগতের দঙ্গে তেমন সম্বন্ধ ছিল না। এই অবস্থাটাকে সাধারণ ভাষায় আমরা 'ট্রুলাস-উলাস' ভাব বলি, এবং অল বিস্তর পরিমাণে সকলের জীবনেই व्यक्ष क तिया थ। कि मत्नत्र यथन अहे छेतान-छेतान छात, তখন তাহার কাপে প্রবেশ করিল, "বেলা ড' পেল"! मन निरञ्ज, कथांठा यादेश এक्वारत व्यवताचात्र আগত করিল। অন্তরাস্থাই পূর্ব ও বর্তমান জনের সংবোগ-হত্ত অথবা অবিছিন্ন প্রবাহ। সেই আমাতে পূর্বজনের অহুস্ত বৈরাগ্যের ভাবটা প্রবল ভাবে জাগিয়া উঠিল-পরিবারের মমতা, সংসারের বন্ধন ঐ এक कथात्र छित्र दहेशा (शन।

অতএব অন্তরাত্মাকে জাগাইয়া ছুলিয়া ঈপ্সিত গুণ-গুলি ভগবানের অনস্ত ভাণ্ডার হইতে আকর্ষণ করিছে : থাক। ইহাই তোমার একমাত্র কণ্ডব্য এবং প্রকৃত সাধ্যা।

অন্তরায়াকে লাগাইতে হইলেই মনটাকে নিজেক করিতে হইবে। কিন্তু চাপিয়া ধরা অথবা বাঁধিয়া রাখা ত' আর চলিবে না। পাঁচটা ইক্রিয়ের পথে বাহির হইতে শত প্রলোভন, শত আশহা আসিয়া ইরাকে নাচাইরা জুনিভেছে। তুমি বল একটু ঠাও। ইইরা বনিভে, নে আরও উদায ভাবে নাচিতে আরম্ভ করে।

্ৰানিক্তেৰ করিতে হইলে কোনও একটা নিৰ্দিষ্ট विषयात थेणि देशांक शांविष्ठ कतिए होडे। कता। श्रुव (माका, यात मर्या विरम्य (काम्छ छाक-(माँक শাই এমন একটা জিনিব হাতে লইয়া গুৱাইয়া ফিরাইয়া बुरु ভाলরপে দেখিয়া गও। यथन বৃষিবে ইহার সকলই रमिशाह, रकाषाम रकान वित्यवष्ठि चारह, जाहा ठिकहे ভোষার নজরে পড়িয়াছে, তখন চকু বুজিয়া সেই ক্লিনিৰটার চিত্রটি মান্দ চোৰে দেখিবার চেষ্টা কর। अक्वारत रहाक्, अक्नित्न रहाक्, मनमित्न रहाक्-बरुक्ष मा अरे हिल्ली जूबि कूरि। देवा जूबिट शावित, **च्छ्यम् धरे छात्रहे हिल्छ थाकित्। (मत्य क्रक्तिन** निक्ष हिता खेळा रहेन्रा छिटित। छथन चालकाङ्ग्छ ৰটিল বিষয় ব্ৰইয়া কাল আরম্ভ করিও। ক্রমে দেখিতে भाँदेरन, य-विवरमञ्ज छूमि हिन्ना कतिरा वन ना तकन, শুকান্ত বিষয় হইতে উঠিয়া আসিয়া মন ভাহাতেই ডুবিরা यात्र। তथन जात हेक्षित्र-भरत विश्व भी जाकर्रन जानित्रा ভারাকে টানিয়া লইভে কিংবা নাচাইরা ভুলিভে পারে না। ভগবানের আরাধ্য গুণওলির সমবারে পঠিত একটা ৰুর্ত্তি কল্পনা করিয়া ভাষার ধ্যান ও ধারণার যে क्षा, छाराव ७ वरे लका। जन्म (वात्र विवास मनते। এতই ভূৰিয়া ৰাইবে ৰে, ধ্যেয় মূৰ্ত্তির সঙ্গে তুমি একীভূতই हरेत्रा याहेरत-(जाबात शक्त वहिर्क्क १९६) जबनकात यज धारकदार्य मग्न महिता गहिता एवन अखताचा मुल्लुर्व वानक रहेना वनिरवन, अवर विराधवात्र वानव छ। शास्त्र দলে তাঁহার সাক্ষাৎ সংযোগ রহিয়াছে বলিয়া তাঁহার আফৰণে তোমার ঈশ্বিচ বস্তু আসিয়া ভোষার বাসনা लाई कतिरव।

্ট্ৰুদাৰ প্ৰতিতে চলত এজিনের গতি হঠাৎ রোধ

করিতে হইলে গার্ড 'ত্রেক্' কবিরা থাকে। বাই ত্রেক্ কবা হইল, অমনি সাপের মাথার খুলা পঞ্জিল, হঁসু হঁসু কোঁস্ ফোঁস্ করিতে করিতে এঞ্জিল্ছির হইরা দাড়াইল। মনরপ এঞ্জিন্টাকে দমাইরা আনিতেও ভগবান্ এইরূপ একটা 'ত্রেকের' ব্যবস্থা করিরাছেন। গার্ড তুমি ঘুমাইরা রহিয়াছ বলিয়া 'ত্রেকের' দিকে ভোমার লক্ষ্যও হর্ম না, 'ত্রেকের' উপর ভোমার হাতও পড়ে না; কাজেই মন, বেডাবে ইচ্ছা যেদিকে ইচ্ছা, ভোমাকে লইয়া ছুটিরা ঘাইতেচে ।

খাগ প্রখাগ ক্রিক্লাটা এই 'ব্রেক্'। একটু ভিতরের দিকে, চাহিলেই বুঝিতে পারিবে, কথাটা কভ সভা। বখন ছুটাছুটি করিয়া হাঁপাইতে থাক, তখন লক্ষাটা বায় খাসের দিকে, এবং অন্ত ভাবনা চিন্তা দকলই মন হইজে দ্রে সরিয়া পড়ে। আকমিক বিপং-পাতের কিংবা অপ্রত্যাশিত সুখের সংবাদটা যখন ভোমার কানে প্রবেশ করে, লক্ষা করিও, দেখিবে, তখন খাস প্রখাগ দ্বির হইয়া আসিতেছে, এবং মনটাতেও, যে কথা তুমি ভানিলে, সেই কৰাছাড়া অপ্ত কথার স্থান দাই।

তাই, বন নিজেজ করিতে ছইলে খাস প্রখাসটার দিকেও লক্ষ্য করিতে শিখিও। খাস টানিরা ভিতরে কতদ্র পর্যন্ত বায় চালনা কর, এবং প্রখাস কেলিবার সময় কোন্ তান ছইতে বায় বাহির ছইতে থাকে, প্রথমে তাহা কয়েকবার লক্ষ্য করিরা অতীই বিষয়ের প্রতি মনঃসংযোগ করিতে চেটা করিও। এই ভাবে, যুগপৎ শত বিষয়ে চিন্তাপরারণ মন প্রথমে ছিন্ন ছইয়া পরে একটি মাত্র বিষয়ে চিন্তা করিতে শিখিবে এবং ক্রমে ভাহাতে ভ্বিয়া যাইবে।

বনঃ সংঘদের আর একটি উপায় হইতেছে চিন্তা করা বে, আনার কাম ক্রোধ প্রভৃতি রিপুগুলি সামাজাব ধারণ করিয়াছে—আনার মন শান্ত হইয়াছে, আমি সামাজাব ধারণ করিয়াছি—আমিই মৃতিমান শাষ্য। এইরপ ভাবিতে ভাবিতে মনে সাম্যের একটা চিত্র ফুটিরা উঠিবে, এবং মন বাভবিকই বিষয় হইতে বিষয়াকরে চুটাছুটি ত্যাণ করিয়া ক্রমশঃ বীর ও শাত হইরা আদিবে।

ভার একটা কথা কথনই ভূলিও না। দেশলায়ের কাঠির মাধার যে সামান্য একটু কালো বস্ত থাকে, ভালতেই বিশ্বগ্রাসী অনলের লেলিহান্ জিহ্বা ক্রুনরিত ভাতে। ভলে ভিজাও, সে জিহ্বা কথনই বাহির হইবে না; হয়ত একটু একটু করিয়া সে কালো বস্তুটা থিলিয়াই পড়িবে। বালের গায়ে তাহার সমধর্মী কালো বস্তুটার যে একটা বিভ্ত প্রলেপ থাকে ভূসেই প্রলেপটার উপর যবিলে সেই কালো কণিকাটা তথন ভাপনার উজ্জল তেভামের ক্লপ বারণ করিয়া যাহা দাও, ভালাই নিজন্ত —নিজের সঙ্গে একীতৃত করিয়া লাইতে চাহিবে।

ভোমার অন্তরান্মাটা সেই দেশলারের মাথার কালো
কশিকাটুকু—কিন্তু বিশ্বগাসী শক্তি ইহাতে নিহিত।
বন-রূপ জলে তুমি ইহা ভিজাইর। রাখিরাছ ও কালো
প্রলেপটার উপর না ব্যিরা বেখানে সেখানে ব্যবিভেছ
বলিরা, আগুণ আর অলিতেছে না। বছকাল জলে
ভিজিরা কণিকা সঁটাংসেঁতে হইরা পড়িরাছে—অস্থানে
ব্যার ঘ্রার অনেকটা ক্ষয়ও পাইতে বসিরাছে। আবার
জানের উত্তাপে বিশুক্ক করিয়া লও, বিশ্বাস ও আশার
ভাণার হইতে কালো বস্তুটা মুতন করিয়া মাখিরা লও
এবং ভগবালের অনস্তভাণার-রূপ কালো প্রলেপটার
সঙ্গে ভাহার সংযোগ সাধন কর—তথন দেখিবে, সেই
দেশলারের মাথার ক্ষুদ্র কণিকাটুকুর কি তেল,
কি আভা!

অদীমানস্ক ভগবানের অংশ তুমি, ভাষাতেই প্রতিষ্ঠিত, তাঁহাদারাই অনুপ্রাণিত, তাঁহা হইতে অভেদ। বিশ্ব-সংসারের যে দিকে চাহিয়া পদ্ধ, দেখিবে একই ভাবে সকলেরই উংপত্তি, দ্বিতি ও সন্ন। অভএব মণি- মালার অন্তর্নিহিত অলকা স্ত্রেটির মত 'একটা বর্ষ' বে এই অসংখ্য মণিগুলিকে ধরিয়া রাখিয়াছে, এবং সেই 'একটা বন্ধ' হইতে তুমি বে অভিন্ন ভাষা তোমার বিচার-মৃদ্ধিই—ভোমার চৈতনাই—ভোমাকে বলিয়া

সেই 'একের' অনম্ভযুৰী শক্তি, অপরিমের প্রভাব, कांडारक अविद्वित चामि. कांबाद देवकाना देवकामम फ शाधीन हेकार हकायर आधि, डांश वहेट अलभ আমি—আমারও অনস্ত শক্তি, অপরিমেয় প্রভাব---ভোষাৰ অমবানাই তখন ভোষাকে একথা বলিয়া দিবেন। আশা,আকাজ্ঞা এবং চিন্তার তোগার অপরিসীম শক্তি, দে শক্তি তুমি ধর্ম করিও না। অনম্ভ ভাণারের মালিক হইয়া কণিকার আশা করিয়াও ভদমুরপ চিন্তা করিয়া, আপনার অনম্ভ শক্তি তুমি সীমাবছ করিও না। যাতা চাও, তাহার অনস্ত ভাগুার ধরিয়া টান দাও; যত বোরে টান পড়িবে, তত বেলে ও তত পরিমাণে ভান্তার হইতে রক্ত আসিতে থাকিবে। त्रोज, वाइ छ काला व्यान काशांत वहेट नकालहे याचक शहर ক্রিভেছ, তথাপি কাহারও সঙ্গে কাহারও বন্ধ নাই। श्राह्म व्याप्त विकास वि (छात्र कतिर छ। जनवारनद वनव छाखारवद वनाना বতত এট ভাবেট অনত পত্রিবাণ ভোগ করা বার অধচ काबारक व विकठ कवा बग्न ना अवर निरक्त प क्षेत्र क বঞ্চিত হটবার আশকা নাই।

'কোনও প্রকারে দশটা টাকা আনিতে পারিলেই হইন', এইরপ আশা আকাজ্ঞা ও চিকা বাহার, ভাহার প্রাপ্তি দশ টাকার মধ্যেই হইবে। ভারতবর্ধে, বিশেষতঃ বাঙ্গালা দেশে, ইহার দৃষ্টাক্তের অভাব নাই। আর যাহার আশা, আকাজ্ঞা ও চিন্তা পরিমাণের গণ্ডীবন্ধ নহে, যে 'পারিব কি না পারিব' চিন্তা না করিয়া, 'নিশ্চর পারিব' এই বিশাসের হারা অঞ্প্রাণিত হইরা পৃথিবীর মধ্যে শীর্ষহান অধিকার করিতে চার, সে যে শীঘ্রই অনেক জীক স্থান অধিকার করিয়ং বনে, আমেরিকা ও ইউরোপে ভারার ভূরি ভূমি প্রমাণ হবিয়াছে। ধনে বিজ্ঞানে শিক্তের স্থাবিকা তাই এত উচ্চে।
আইডাক বিবরেই এই ভাবে অপরিমের সিদ্ধি লাভ জরা বার, এবং ফর্যাকে ধরিরা গাকিলে যেমন রাত্রির সারিকা পাঙ্রা বার না, তেমন অনস্ত ভাভারের সলে জারিজেরা যোগ সাধন করিতে পারিলে অনকল, ক্রমে লারিজা, রোগ শোক ভাপ জরাব্যাধি মৃত্যুর সহিতও পরিচয় হয় না।

শৃষ্ট হয়, একথা পূর্ব্বে বলিয়াছি। এখন কল্পনা শৃষ্ট হয়, একথা পূর্ব্বে বলিয়াছি। এখন কল্পনা শৃষ্ট্রে সংক্ষেপে কিছু বলিয়া এই প্রবন্ধের উপসংহার শৃষ্ট্রিব।

🗽 চিম্বার সঙ্গে কল্পনা বিজ্ঞাভিত। যে বিষয়েই তুমি ্রিরা করিতে বসনা কেন, একটু পরেই কলনা ভোষাকে ৰুকুই বিষয় হইতে ছাড়াইয়া অনেক দূরে লটয়া স্থায়. এবং নানা রজে দেই বিষয়টাকেও রঞ্জিত अतिया थाटक। যাহার কল্পনা যত প্রবল, তাহার 👺র 🦻 🗷 ব্যাগতি উভরেরই পথ তত প্রশন্ত। আছবের সাধারণ গুর হইতে যে বিষয়েই মাগায়া क्षिण नाज करत, रन विषयाई ध्रथ्य कल्लना जारामिशरक ু**মুহন রাভান নৃতন** যানে ব<u>হু</u>ন করিয়া লইয়া থায়—তার **পরে কার্য্যে ভাহারা ভাহা পরিণত করে।** যাহারা व्यापात्रिक व्यवनयन करत, जाशास्त्रिक दिश वर भागति **শীৰণভাও কল্পনা স**মুষায়ী হই**য়া থাকে**। বড় পণ্ডিত, বড় **रिमालि इट्टि इट्टेल**७ (यमन कल्लनारे अधान व्यवस्त. ্রভ চোর বভ ভাকাত হইতে হইলেও ইহা তেমনই अविगयन। यादारमद कञ्चनामक्ति दुर्सम अथवा नाहे, काशाया (कान मिरकरे वर्ष रहेर्ड भारत ना। मिलता ্রেখন থেলিতে থাকে, তথনও সন্ধ্য করিলে দেখিতে প্রাইবে, যে কল্পনাগ্রিয়, সে নিত্য নৃতন খেলার অবতারণা क्तिमा प्राप्ति दहेना वर्ग; चात्र यादात्र कल्ला नाहे.

সে অকভাবে ভাষার পান্ধনরণ করিরা থাকে লথবা গৃহস্থালীতে বাহা দেখিরাছে পুজুল লইরা ভাষারই অফকরণ করে, ভাত রাখে, ভাত বাওয়ার, বিবাহ দের। বদ্টং তৎকৃতং। এ রক্ষের যাক্তব ভোবার জল।

দারূপ ভয়, উদেগ, আশহা, কাম, ক্রোপ, গোভ প্রভৃতির মৃণেও কল্পনা; আধার প্রবল আশা, আকাজ্ঞা, বিশাস, শ্রদ্ধা, প্রেম, প্রিতির মৃণেও ভাহাই। কল্পনাই তিলকে ভালে পরিণত করিয়া একদিকে ভয়ে মিয়মান, অপরদিকে আশার উৎফুল করিয়া থাকে; একদিকে কলাগাছে ভূত দেখার, অপরদিকে কালো রূপের উপর বিহাৎ চম্কায়।

শিশুর যথন সমুধ হয়, शায়ের কল্পনা তথনই প্রবল বেগে কার্য্য করিতে থাকে। এক মূহর্তে মৃত্যুর দৃষ্ঠাট পর্যায়ও তিনি দেখিয়া লন আর হাদয়ের তেজ ও সাহস এবং দেহের বল ও শক্তি হারাইয়া বসেন! আবার এক টাকার হাঁসের ডিম জিক্র করিতে যাইয়া মৃহুর্তেই, কল্পনার প্রভাবে, রাজা হইয়া বসার দৃষ্টান্তও আল নহে!

थाभारतत श्रीक कार्रात गुर्ने कन्नना ७ विद्या। কল্পনায় আমাদের উন্নতি এবং অবনতি উভয়ই সাধিত হয়। যে কল্পনায় প্রাণ সৃষ্টিত হয়, সন্দেহ অবিধাস ভয় উবেগ পুষ্ঠ ও বলবান হয়, তাহা আমাদিগকে मत्रागत পথে गहेशा यात्र। विष्रोहारक वेष्ठ ७ व्यागनारक (कांठे कहाना कतिएक कतिएक्टे, यादाता अकलिम আকাশে বেডাইয়াছে, আজ তাহারা মাটির উপন্নও বেড়াইতে শ্বচ্ছ নে পায় नाः चात्र वत्न बन्नत পশুর সঙ্গে পশু (वड़ा देशारह, डेफ रहेए क्यम : डेफ उत्र व्यवहात कत्रमा করিতে করিতে আৰু তাহারাই আকাশে উদ্ভিত্তে नमर्थ रहेग्राष्ट् ! তाहात्मद कजनाम आना, विधान, সাহস ও শক্তি বিকশিত ও পুষ্ট হইয়াছে, ভাই ভাহারা বড হইয়াছে।

गर्सनाभी कन्नना कार्रा श्रीतगढ कन्निएड एकामारक

কড় বেশ্ব পাইতে হয় না—বে-ই ভোষাকে বেশ টানিয়া লীচের দিকে লইয়া যাইতে পারে; এবং শায়ীয় বন্ধ, সমাজ ও সংস্কার জনাহত ভাবে আগিয়া তাহার শক্তিবেশ বাড়াইয়া দিরা থাকে। ছুমি যখন মনে ভাব, দশ টাকার বেশা আমার মূল্য নর, তথন কর্মান বন্ধু আনিয়া ভোমাকে দেখাইয়া দেয় যে, ভোমার অপেকা হীনলোকও হাজার হাজার টাকা উপার্ক্তন করিয়াছে ও করিভেছে? বাহার নিকট যাও, যাহার সাহায়া-প্রার্থী হও, দেই বলে, 'বে দিনকাল পড়েছে, ভোমার চাইতে উপযুক্ত লোক হ দশটাকা পায় না। পাও যদি ত' ঢের!"—ভোমাকে আরও নামাইয়া দিল না কি ?

কিন্ত যে কল্লনার প্রভাবে হুর্যোগ সুযোগে পরিবভ হয়,
স্থাকণ ইইতে মঙ্গলের উত্তব হয়, আকাশের মৃত্যুগভ
বিত্যুৎ বরে বসিয়া হাওয়া করে ও আলো দেয়, মাটির
মান্ত্র আকাশে বেড়ায়, সে কল্লনা বড় সহজে মূর্রিমান
ইইয়া বদেনা।

প্রথমতঃ, যাহা বা যাহারা তোমার এই উন্নতিক্ষিত্রী কল্পনায় বাধা দের তাহাদিগকে যদি উপেঞা
করিতে না পার,—ভগবান্ অনন্ত শক্তি, যাহা ইছা
ভাহাই করিতে পারেন; তাঁহা হইতে অভেদ আমি,
তাঁহার শক্তিতে শক্তিমান আমি, অতএব যাহা ইছা,
ক্ষমিও ভাহাই করিতে পারি, ইহা যদি বিচারে তুমি না
কানিয়া থাক, কিংবা বুঝিলেও দৃঢ়রূপে বিশাস করিতে
না পার—ভবে ভাহাদিগের সঙ্গে মিশিয়া ভাহাদিগের
ক্ষবিশাস ও হুর্মলতা গ্রহণ করিও না। যতদিন পর্যান্ত
নিক্ষের উপর বিশাস স্থাপিত না হয়, যতদিন পর্যান্ত
নিক্ষের বাহা বুঝিয়াছ, ভাহাই ঠিক এই বিশাস, অকাট্য
না হয়, ততদিন আপনার কল্পনার কথাও ভাহাদিগকে
বিশিও না।

বিতীয়তঃ, নির্জ্জনে শান্ত মনে ব্যিরা তোমার আরাধ্য ভগবানের মঙ্গলময় গুণ বা তুগগুলির বিষয় চিস্তা করিতে থাকিও। যে যে ব্যাপারে সেই সক্ষ গুণের অসাধারণ বিকাশ দেখিতে পাইয়াছ, শেই গুলি ভাবিষ্টা ভাবিষ্টা গুণগুলিকে জীবন্ধ করিয়া ভূলিতে চেষ্টা করিও। কল্পনার চোধে দেখিতে থাকিও যেন ভগবানের সেই গুণ-ভাগুর হইতে অজক্র ধারায় ভোমার উপর সেই গুণগুলি ববিত হইতেছে, এবং বনে মনে ভাবিতে ধাকিও—আমি অমুক অমুক গুণ। ক্রমে কল্পনাইভোবাকৈ সেই গুণে 'গুণবান্ করিয়া ভোমার চোধের সান্দ্রে ধরিতে থাকিবে। ইহাই ধ্যান। ধ্যান বডই পাঢ় হইবে, শক্তিরও ভোমাতে ভডই স্থার হইতে থাকিবে।

তৃতীয় হঃ, যখন বাত্তব জগতে তোমার কর্মার বিপরীত কোনও ঘটনা ঘটিয়া জোমাকে কাতর ও স্কৃতিক করিতে চাহিবে— যতদিন না প্রবল ইচ্ছা শক্তি বিকশিত ইয়া তোমার প্রাক্তন অর্থাং আরুইপূর্ব ফল খণ্ডন করিতে পারিবে, ততদিন অরবিস্তর পরিমাণে এইরপ ঘটনাই ঘটিবেই,—তথন জোরে জোরে খাস টানিতে টানিতে নিজের বিশাস আঁকড়িয়া ধরিয়া ভবিস্ততের স্থবের তিক্তা বর্তমানে মানস চোথের সমুখে আঁকিতে চেষ্টা করিছে। হুংখের হাতে আত্মসমর্পন করিয়া, 'নাং কিছুই হ'লোলা হু কোনই উপায় দেখি চি না!' এইরপ বলিয়া অথবা কেবল হুংখেরই আশক্তা করিয়া যাহা লাভ হইরাছে, তাহা ত' এ পর্যান্ত' দেখিয়াছ। এখন একবার হুংখটাকে উপেকা করিয়া ও স্থবের কল্পনা করিয়া দেখ, জীবনে নৃতন তেক ও আলার সঞ্চার হইতে হইতে শক্তিময়ী কল্পনা কার্যে বিস্বত হইয়া ব্যে কি না।

শ্ৰীকৃষ্দিনীকান্ত গাস্পী।

## यू मृत्

[কবিতা]

नामान वयन देव तन देव (ना',-

ভাব ্রুম (স-টা ভাষার-'করা'। পুৰিবীর সৰ জাক জমকটা,—

নিব্দের হাতেই ধরিকে 'গড়া'॥

•

আত্মকে বৰন বাবার মেইকো,—

कान्त्र् थार्ग कावात्र रावा !

সম্পূত্রন হারিয়ে এবার,—

ভাব মুম্ অধু "ভোমার" কথা।

0

शिक्षाव<sup>8</sup> ७४न "भाषात्र" (करन,---

चांक्ए धरत्र ए कामात शान।

শাশার "হুরুদ্" 'অভাব' তখন,—

"ভোষার" প্রধান "আশীব"-দান ! শ্রীসুরেশচন্ত ঘটক।

### অবরোধ

(Erckmann Chatriaun শিবিত — Le Bldcus নামক আখ্যায়িকায় বঙ্গাছবাদ ) দ্বিতীয় অধ্যায়

পর দিন থ্ব ভোরে উঠে চারটি জলপান মুখে দিয়ে আদৃন্ত্র্প থেকে বার হ'লান। জেফাঁটা আর বারুথ ক্ষেত্রেই আনাকে থাকবার লগু পীড়াপীড়ি কর্তে লাগল ক্ষিত্র আনি ভালের বুজিরে বল্লাম বে আমাকে আর জ্যোলায় আট্কে রেখোনা, সেখানে ভোষাকের মা আমার জাক পথ ভাকিরে ররেছে, ভার এক মিনিট স্বভি নাই।

এতকণ হরতো কতবার উপর নীচে উঠা নাবা করছে,
কতবার জানালার কাছে সিরে দাড়াছে তার আর ঠিক
নাই। আমাকে আল অবিপ্রি অবিপ্রি বাড়ী যেতে হবে।
তগবানের ইছার তোমরা এখন একটু স্বস্থির হরেছ,
তাকে অন্থির করে এখানে আর কি করে বলে থাকি।
কেন্যা একথা তনে আর কিছু বল্লে না। তার ছোট
তাই সাফেনের জল্ল আমার পকেটে কতকগুলো বাদাম,
আখরোট, নাসপাতি পুরে দিলে। আমি তার পর ছোট
বড় সব কটিকে বৃক্রে গোড়ার টেনে নিয়ে চুমু দিশাম।
বারুল আমার সলে গিয়ে বাগান গুলোর শেবে যেখানে
কিটেনবাক্ আর কুংজেনবুর্গের রাজা তফাৎ হয়ে পেছে,
সেই তে মাথা পর্যার আগিরে দিয়ে গেল।

**मिशाहे मायखब पन गव उपेग हान भिष्ट किवन** পেছনের ছুই এক জন উটকো আর ব্যারামী লোক পড়ে ছিল। অনেক ছুরুর পাহাড়ের এক ধারে সারাবন্দী शाफ़ी खना नव भए तरब्रह्म (मना साहित। स्रात (मध्नीय त्राष्टांत जात शाष्ट्र मरन मरा यक्रतता नव জুनि कार्टे एक (नाम शिराहि। मिरेशन निराहे आयात फित्रा हरत, এই कारना आमारक किছু हक्क करत जूल हिन। তার পর आমি বারুখের হাত ধরে আশীর্মাদ করে ভাকে বিদার দিলাম। আমি ফের আবার ভার ছেলের সুন্নতের সময় আস্ব, এ কয়টি কথা আমার মুধ मिरा विमास मिरा करन तम आभात मन हा**ड़ा कर**तिहन। পথে মেলাই ওকনা পাত। পড়েছিল। প্রায় হুই ফটা व्यामि উৎवारेश्वत मूर्य हानू वान्ता बरव हन् नाम । धकना (यरण (यरण क्वन महे त्यालहे द्यारित क्या क्या निर्मान-এর কথা আর মার্শেল ভিক্তরের কথা মনে হতে লাগলো। বোধ रुष्टिंग नव् कार्यंत्र উপর দেশ हि। প্রকাণ্ড नया ब्बान्नान हुं छ कांच, माथान कांहा शाका हून, डेक्टिंड গাচ্চা কাল করা। ভারপর কেফ্যার বর আর বা ছেলে ত্থনকার কথা মনে হতে লাগ্ল। ভার পর যুহের কথা ভাব ভে লাগ্লাম। চারি ধার থেকে শত্রু সেনা এবে

বিরে ফেলেছে (কত বিপদে যে পুণড়তে হবে কে জানে। বেতে বেতে মাঝ পথে একবার দাড়িয়ে দেখনাম বে এই সব উপত্যকা একটা আর একটার মিশে ক্রমাগত যোগা-বোগ রেখে চলেছে। বত দ্ব দৃষ্টি যার কেবল দেবদারু ওক আর বীফ্ গাছ।

আমি মনে মনে বল্লাম প্রাসিয়ান অটিয়ান বা ब्रानिशानता এই পথ मिर्छ्य एक मिननीत यादन ना ভাই বা কে বল্ভে পারে। কিন্তু আমার ছেলে পিলে-(एत कथा एक प्रमाण वक हूं भूमी इन; यत्न यत्न हे वन् एक লাগলাম ভাবছকি মইদ ভোমার হুই ছেলে ইটুজিগ ব্যার ফ্রোযেন ত কামানের গোলার মরছে না। তার। **এতকণ** ওপারে মার্কিন মূল্কে খাসা খাড়ে মোট নিয়ে शैक्षि शैक्षि वावमा करत्र विकासक, कान्छ विभक्षित সম্ভাবনা নাই। তোমার মেয়ে কেঁফ্যা এতক্ষণ দিব্য শারামে পুমুচ্ছে, বারুপের পাসা হটি ছেলে হয়েছে ভারা বেঁচে থাকুক বুদ্ধ না শেব হওয়া পর্যান্ত আমাইএর জ্ঞ व्यात अप्र नाहे। यात्रा यूक्त यात्र (भ तकतन छोत्नत জ্তা আর ঝোলার জন্ম চামড়া বিক্রি কর্বে বইত নয় তাকে ত আর কিছু আপন বাড়ী ছেড়ে কোথাও বেতে हरत ना। निष्कत त्यरप्रत कथा मरन हामि अल। धावलाम আমার মত পাকা দাড়ীওয়ালা বুড়াকে কিছু আর कर्द्वाता रक्षेत्र एवं कंत्र्रत ना। वामि तृष्टि करत रय 'আগে থাক্তেই ছেলে পিলেদের সুব্যবস্থা করেছি ভা ভেবে মনে একটু ক্ৰি বোধ হ'তে লাগল। ভাবলাম ভগবান তো আমার প্রু-নিজেই পরিষ্কার করে দিয়েছেন এখন আর ভাবনা কি ? দেখ ফ্রিজ निष्मापत अक्रक्रम (राप थूर्म हत्न यार्ष्ट अक्रवी भरनं र'रन राखिरिकरे छाति व्यानक रहा। এই সব ্ভাবতে ভাবতে আমি বিনা হাঙ্গামে লুংজেলবুর্গে এসে পৌছিলাম। পেখানে ত্রেষ্টেনের বাড়ীতে গেলাম পে সারস্পাধী আঁকা এক সাইনবোর্ড টাঙ্গিয়ে খাসা এক रारिन थामा शूलाह जावनाम वह थातिह वक वाजी

'किंकि' (थरत्र निष्टे।

চুকে দেখি সাবানওয়ালা বাণীত আর হার্বারের সরকারী জগলের আগলদার দোনাদিয়ে সেখানে বসে মদ থাছে। ব্রষ্টেনও বলে গিয়েছে তাদের বোতল থেকে ঢেলে ঢেলে দিছে। বার্নাত বোধ হয়' ফেরী করতে বেরিয়েছিল মোটটা পাশেই রেখে দিয়েছে আর দোনাদিয়ের বল্কটা দেওয়ালে ঠেস দেওয়া রয়েছে। বার্নাতকে তুমি বোধ হয় ফখনও দেখনি বেটে খাটো মাসুষটি মাধায় প্রকাণ্ড টাক্ তার উপর আবার গোটাকত বড় বড় আব। বার্নাত আমাকে দেখেই বললে "মোয়াস নাকি, আরে মলো এতো সকালে তুই কোখা পেকে আস্ছিস?"

(एथरण कथात औ, त्र ममन् श्रीन वांश्वता चामारमत तुष्। तुष्। देहमीरक खरे त्रकम पू प्रकाति করতে ছার্তেন না। আমি বললাম আমি চড়াইএর পথদিয়ে সাভান থেকে আগছি আগলদার মশাই वनातन का र'ता कूरे लड़ारेश्य वा (बरका विकाशीस्त्र निम्हबरे (मृद्य आगहिन (मृद्य कि मृद्य दन् दन् एका ? আমি একটু হঃধু করেই বল্লাম তা আর দেখিনি ? कान मक्तात ममग्र ममछ है (पथि वि वाभरत कि छग्नानक দুশ্য ! সে যাহা হোক কিন্তু আর এক কথা ভনেছো (मन ७६ तोक अथन गर भारताङ्त्र बाद्य भिरत्र कूछिछ; ... কাদ্রভার বুড়ো গ্রেদেনে আফি ঐ একথান গঃড়ার ভেতর থেকে তার ভাইপো কোমেফ ব্যার্থার লাস খুলে বার করেছে। সেই হে সেই খোড়া খড়িওয়ালা গুল্দার দোকানে গত বছরেও পে কাজ কথা কর্ত্ত ७न्ছि नाकि धारिनत वह कथा त्राष्ट्रे इस शास्त्रह म्यागमवूर्ग छेण् गाववूर्ग (शतक गारिकत (शारकता मन भिरम राक्तित रात्राह्म नकरण तरे गरन विश्वाम महात शामा পুজলে নাজানি তাদেরও অংগনার জনা কাউকে না कांडिक रहाए। भीख्या गातः । चर्छन बन्दा अभव খনে মন ৰারাপ হয় বটে কিন্তু যা হবার তা আটুকার

কে ? পত ছ্বছর ধরে ব্যবসা পত্র বন্ধ বন্ধ্যেই হয়।

শাষার কারধানার উঠানে তিন হাজার পাউণ্ডের করি

শিলা সব পড়ে রয়েছে। আগে হলে এ মাল হ্মাস

কৈ ছু হপ্তার মধ্যেই কাবার হয়ে বেত আর এখন

শিল্পে পড়ে পচে যাছে। সার্বল, আগসাস বল আর
কোনও দিকেই রপ্তানি নাই কেউ কিন্ছেও না কেউ
ব্রেচছেও না। হোটেলখানারও সেই দশা লোকের

শার পরসা কড়ি নাই স্বাই এখন আপন আপন
বাড়ীতে বসে আলু আর কাঁচা জল থেয়েই খুসি আছেন।

এদিকে আমার মদ টকে যাছে উপরে ছেৎলা জম্ছে।
ভাই বলে কি আর পাওনাদারেরা চুপ করে রয়েছে
বিলটি ঠিক সম্বে এসে হাজির হছে। না দাও তো
পেরাদামশার পরওয়ানা নিয়ে উপস্থিত হবেন।

বার্ণাড বন্ ব গ গার বেশী কি বন্ছ সকলেরই সমান ক্রার্যা। সোকের সাবান কি তক্তা বিক্রী হল আর মা হল তাতে সমাট বাহাদুরের কি এল গেল। তাঁর ট্যাক্স আর লরাইএর রংক্লট রীতি-মত পেলে আর এসব দেখার আবশ্যকটা কি!

পোনাদিয়ে দেখ্লে তার দোন্ত তুই এক প্লাস বেশী
থেরে ফেলেছে। সে আর দেরী না করে তখনই
উঠে বশ্কটা পিঠে কুলিয়ে রওনা হল। বল্লে ভাই
সকল আল এই পর্যন্ত এরপর দেখা হলে এবিষয়ে
কের আবার কথা কওয়া যাবে। কয়েক মিনিট
পরে আমিও ভার দেখা দেখি দাম মিটিয়ে দিয়ে
থোটেল থেকে বেরিয়ে পড়লাম। ব্রেন্তেন আর
বার্গিডে যা বল্ছিল আমার মনেও সেই কথাই হছিল।
আমি বেশ কুল্ছিলাম যে পুরান কাপড় চোপড় আর
বোহালার নিয়ে আর ব্যবদা করা চল্ছে না। বেরিয়ে
ক্রেড লাগ্লাম চরাই ভালতে ভালতে মনে মনেই
বল্তে লাগ্লাম সোরাস চক্র লাব দেখ্ছো কি লবতো

এক রকম বন্ধ হতে চললো, এখন একটা অন্ত কোনও উপায় দেখ। পুলির শেব করিটি পর্যক্ত বলৈ বনে খেলে আর কি করে চল্বে।

এই সৰ ভাৰতে ভাৰতে ওক বনের ধারের কুড়ে-क्ष्रता भाव हरत्र हिनाव छे भरत अरम (नीहिनाम) সেধান থেকে গড়ের নীচের অর ঢালু পাড় আর চারিদিক কার উঁচু মাটির চিবি বেশ স্পষ্টই দেখা যাছিল। হঠাৎ ভোপ পড়তে আরম্ভ হ'ল। বুক্লাম এবার প্রধান দেনাপতি মহাশর রওনা হ'লেন। বাঁদিকে তাকিয়ে দেখি দুরে মিটেল ব্রনের ধারদিয়ে সেনাগুলো সাক্রন্দী হয়ে চলেছে, বড় রাস্তার ছুই পাশে যে পপ্লার গাছের সারি ছিল তারই ফাঁক দিয়ে দিয়ে তরওয়ালের ঝক্ষুকি দেখা যাচ্ছিল। পাছগুলার পাতা সব ঝড়ে শুড়েছিল বলে দেখার কোনও অন্ধবিধা হতিহল না। হৃদার পণ্টনদের কাল কলবাক্টুপি আর পালক লাগানু শিৱদান গুলোর মাঝ্ দিয়েই বোড়ার চড়া কোচমান্রা মার্গানের পাড়ী পানা विदादत्वा इपिता निया हलाइ तथा विन । मुहर्त्ड মুহুর্ত্তে তোপ পড়্তে লাগ্ল, দ্রের দব খাড ্আর উপত্যকার তলা থেকে তার প্রত্যেকটির প্রতিধ্বনি : আস্তেলাগ্ল। এত বড় একজন লোকের **পঙ্গে কাল** পদ্ধা বেলা দেখাওনা হয়েছিল শার্ণ হয়ে নিজেই যেন व्याक हात्र (अनाम, এक अक वात्र छावछ निर्मिनाम বুঝি বা স্বপন দেখ্ছি।

প্রায় বেল্টা দশটার স্ময়ু করাদী দরওয়াকার ফটক পার হ'লাম তথনও বার্কদ দরের বৃক্তের উপর থেকে শেষবারের তোপদাগা হচ্ছিল। দেখলাম সহরের লোকেরা স্ত্রীপুরুষ ছেলে পিলে স্বাই মিলে কেলার প্রাচীর পার হয়ে নেমে আস্ছে স্ক্লেই খুব খুদি যেন কোনও মেলা কি উৎসব আরম্ভ হয়েছে। তাদের জ্ঞান বোধও নাই ভাগবার বৃক্তার ক্ষমতাও নাই কেবল স্ব

### **हीदकांत्र करत** (वकारक ।

আৰু কোনও রক্ষে ভীড় কাটিয়ে বেরিয়ে এলাম। বাড়ীতে পুৰবর আন্ছি মনটা বে বিশেষ বারাপ ছিল তা নয় আমার স্ত্রীকে উদ্দেশ্য করে মনে মনেই বল্তে বল্ভে আস্ছিলাম "নাতীর জন্ত আর তাবছ কি গে ভালই আছে"। এমন সময় তাকিয়ে দেখি সলে টাদনীর কোণে আমাদের সদর দরজার শামনে দাঁড়িয়ে আছে। আমি দেখেই হাঁস্তে ইাস্তে লাঠিবানা উঁচু করে ধরলাম, ইশারায় জানালাম "বারুধ বাবাজী বেঁচে পেলেন এখন যত পার হাঁসি খুলি কর"।

আমার ভাব ভঙ্গী দেখে দে তথুনি বৃষ্তে পেরে বাড়ীর ভেতর চলে গেল, দিড়িতে উঠতে উঠতে আমি ভাকে ধরে ফেল্লাম; ধরে বল্লামু ধাসা ছেলে হয়েছে षिवित्र शोनाशान (यन शोनारिश्व मछ तः। (अक्तात मतीत्र (तम ভान बाहि। ताक्रथ तत निष्त्रहिन কি করি জামাইএর কথা—তাই ক্লুমু দিয়ে তোকে मः वाष्ठी पिनाय। मार्कन् (काशाय ? मर्ल वल्ला तम वाकारत रकना रवहां कर्ष्य । श्वामि "वहड धूव" वरन चामारनत स्थारात चरत शिरत वरन वरन एककात খোকার ব্যাধানা করতে লাগ্লাম, সলে আহলাদে चार्टबाना इ'रत्र व्यामात कथा अन्हिन, व्यात जात वर्ष वर्ष . কাল চোৰ ছটি চেয়ে আমার দিকে তাকিয়ে আমার কপালের খাম মৃছিয়ে দিজিল। বড্ড তাড়াতাড়ি করে এই कत्र त्काम तासा दश्रें जित्रहिनाम, भर्थ जक्रू प्रम शर्यास निहेनि। चार्यात्मत्र कथा रूट रूटरे সাকেন এবে উপস্থিত হ'ল, আমি তার দিকে মুধ ফিরিয়ে (एबएक ना (एबएक (म अरकवादा आयात्र कार्यत উপর এসে চাপ্লে আর হাত পুরে দিয়ে আমার পকেটখানা ভলাসি আরম্ভ কর্লে। বেটা ভারি ধ্র্ত चार्य (थरकरे बान रय (कर्क्य) मिनि जात क्य कि हू ना किहू नार्शाक जून्रव ना जात नरन तेष अकरू जारनन

मानंभाषि हित्रात रेक्श रुप्तिम ।

আর বল্বকি ফ্রিটল তুমিত বুর তেই পাছে একবার নে কালের কথা আরম্ভ কর্লে সবই যেন নৃতন করে মনে পড়ে, এখন ভাবি বুঝিবা গল্প শেব করে আরি উঠ্তে পারবোনা।

সেদিন শুক্রবার আমাদের 'সাবাধ' পরবের আগের रैवकान। शृक्षांनी मात्री भातिहै। এत्र त्रःत्राद्वत काक কর্ম করছে। আমরা আছারের পর বসে নিজেদের ভেতরই গল গাছা করছি। গল গাছা আর কি সেই এकरे कथा; शांठ वात कि ছवादित बात वना रिव्हन क्मिन करत आमात नाक जीमात्वत (मधा द'न म আমায় চিন্তে পেরে কেমন করে বড় জাঁদরেল ছক বাহাছরের সঙ্গে আলাপ করে দিলে, ডাই বর্ণনা कदिलाम। এই गर उन्एंड उन्एंड चामाद ही रन्ति মার্শাল বাহাতর আমাদের এখানে এনে তার সব কর্মচারীদের সঙ্গে নিয়ে কেলার দেওয়াল টেওয়াল ওলো বোড়ায় চড়ে দেৰে এসেছেন। বাইরেকার গড় বুরুজ টুরুজ মাটির ঢিবি যা সব আছে কিছুই দেবতে বাঁকি রাথেন নি। কলেজের রান্তা দিয়ে ফিরবার मभन्न नाकि वालाइन त्य थ महत्र पिन व्यक्तित रात्र मक्लानत भूव चाहिक त्राथ्ए भातरत। चात्र रमती ना करत्र এখন থেকেই অন্ত শন্ত লোকজন কাৰ্যান रिगाना धनित्र रावश केता छेठिछ। अस्त मस्न एक कि আমাকেও কাল জিজাগা করেছিলেন "ভোমরা আত্মরকা কর্তে চাও কি না ?"

আমি সলে কৈ বল্লাম দেও শক্তরা যে আস্বে তাও ব্যক্তি নিশ্চয় বৃঝ্তে পেরেছে। ছর্গের প্রাকারে যথম কামান বসানব ব্যবস্থা করেছে তথন সেগুলো কাজে আস্বে, এই কথা জেনেই করেছে বৃঝ্তে হবে। কোনও দরকারও নাই, কিছুই না মাঝ থেকে তিনি কতকগুলো বন্দোবন্তের তৃক্ম দিয়ে গেলেন এ কথনই সম্ভব হতে পারে না। ক্ষেপাৰ বৃদ্ধ লড়াইএর জন্ধন ব্যবসাটা যদি না চলে তা ক্ষেপাৰাদের দুলাটা কি হবে ?

ক্রিমি ভবেন ভবন আর সহরে চুক্তেও পারবে না ক্রিমেতেও পারবে না আমরা বদে বদে কর বো কি ?

সংশ্বি যে বেশ পাকা বৃদ্ধি সে তথনই দেখা গেল, সে

হৈলে দেখ এ দব আমি আথে হতেই ভেবে

হৈথেছি। লোহা, পুরাণ জুতো,কাপড় এদন চাষারা ভিন্ন

ভার কেউ কিনবে না। এমন একটা ব্যবসা ফাঁদান চাই

নৈ স্বারই মধ্যে চল্তে পারে। এ রক্ম একটা জিনিদ

নিয়ে কারবার কর্তে হবে যে সহরের লোকই হোক্

ক্টেভের বিপাইই হোক্, আর মন্ত্রদারেরাই হোক্
ক্টেভামাদের কাছে না কিনে পারবে না। ব্র্লেতো
এখন এ ব্যবস্থা যাতে হয় তা অবিশ্রি করা চাই। আমি

স্বাক্ হয়ে তার কথা শুন্ছিলাম। টেবিলের উপর

স্বাক্ হয়ে তার কথা শুন্ছিলাম। টেবিলের উপর

্ৰাষি বল্লাম কথাটাত বেশ ভালই বলে। এখন ব্যবসাচা কিসের কর্বো একবার ভেঙ্গে বল দেখি। এমন कि वावना चाट्य याट भरत्वत विवाक लाक यात्र संबुद्धा भवाख आयारमत्र कारहरे (कना कार्त। कत्रात। अदेश विक्रा (भाम महरत्य निश्वत्र अश्वाका यथन वस हर्य स्टिब ज्यन शाहांगा (यदक हाती लाक हो।क बात हार्हे बाद, फिन, मानम ठापम किहूरे जानरू भातरत ना, उपन स्याना विभिन्न ७करना छत्नि छत्रकाति मग्रमा हेशमा या किहू मुद्दे ना बरत बाक्रव छाडे (बर्गड़े बीवन वाहारण बरव। এখন যারা এগব কিনে রাখ্ছে তারা তখন যে দামেই धूनी तारे मात्मरे विकि कत्र्व, जाता (मर्का नन त्र त्नाक रात्र वादव।" अत्न व्यामि अदक्ताद्र व्याम्हर्य। रात्र लिनाय। जात जो वृद्धिक वादश निरा मान मानहे बुक्तान, नरत थ जिन वरनत यावर छा वरकरे आगात या ্কিছু'পুৰ শান্তি। কত আনন্দ যে তুই দিয়েছিস্তা স্থার বলবার নর। আমি এক শোনার বলি লমী স্ত্রী বাঁটি হীরা ক্রোণাও দাগ পড়েনা। সুপদ্মীর মত স্বামীর

गःगात जात कि धनहे वा जाहा। भणवात वरमहि আজও বলছি। কিন্তু তোর যে কি মূল্য ভালা করে বুন্লাম আৰু থেকে ভোকে আরও ভাল করে আদর করতে শিশ্বো। "ষতই এ সম্বন্ধে ভাবতে লাগ্লাম ততই বুকতে পার্লাম এর থেকে পাকা মৃত্তি আর কিছুই হতে পারে না। ভেবে চিত্তে শেষে বল্লাম प्ति नाल भग्ना हेशना या लाएक द्वर्ष (चएक भाजरक তাতো দোকান আডতে নোঝাই রয়েছে আর সেপাইদের याटि चलाव ना इब ला कि त्वत कर्खाता जारा (शरक है ব্যবস্থা করে রেখেছে। যার অভাব হবে বুঝাতে পারছি তা মদ। যারা যুদ্ধে কাটাকাটি করে মরুবে তাদের এটি ना रत हत्त नः। आयता आत कि इ ना कित यन र কিনে রাখ্বো। বত পারি কিনে এখন পাতাল কুঠুরী বোঝাই করা থাকঃ শেকেবিক্রী করতে আরম্ভ করা মাবে। আমাদের বাড়ী ছাড়া এ জিনিস আর কোথাও কেউ পাবে না। আহি তোভেৰে ভেবে এই ঠিক করেছি। সর্বেল্লে এই ক্রিকেই ভান্ধ ডা হলে তাই কর আমারও খুব সম্পূর্প মত অধছে। স্থামি বল্লাম আমি ত। श्ल महाजनारक निष्हि निष्यां या किছू आहि अहे মদের ব্যবসাতেই লাগান যাক্। ওধু বাঁটি আরক व्यानिष्यं व्यायदा निस्कृता कव गिमिद्ध (नय। (य स्थम प्तरत (महे मछ विनिष्त्र दिश्वहे हन्द्र। जन स्मान তৈরী মদ খান্তে বা ধরচা হ'ত এতে তার চাইতে টের কম খ্রচ। হবে। এখানে জলের ত আর অভাব নাই মিছে यिक् करनत थंऽठा निरत यति (कन ? नलि वस (वर्ष कथा (महे छाल। जामता छ इजरन धहे त्रक्य मना भवामर्ग कर्त्व कि कव् नाय। नारकन् दक वनुनाय एव একথা বাহিরে কাকেও বলিস্নে। ভারু মা ভার হরে क्वाव नित्न "তোমাকে आत ওকে সাবধান কর্ছে हरत ना। এ गर रय रमाभन कथा चात्र এর উপর যে শামাদের ভাল মন্দ নির্ভর কর্ছে তা আর সাকেনের বুঝ ছে বাঁকি নাই। ছেলেটা এর কয় আমার উপর

30

রাগ করেছিল, ভেবেছিল বাবা আমাকে নেহাৎ একটা লিক্সিইন করে। তথন থেকেই তার পাকা বৃদ্ধি। আমি তাকে অবৃধ্ধ তেবেছি মনে করে তার বড় হংখ হয়েছিল। এর অনেক বছর পর তার মুখেই এগব কথা গুনে বৃধ্হে পেয়েছি আমার দে সময় এ কথাটা বলা অস্তামই হয়েছিল বটে।

ছেলে বুড়ো স্বারই ঘটে কিছু কিছু বুদ্ধি আছে। ছেলেদের কজা দিয়ে খাটো না করে বরং যাতে তাদের উৎসাহ হয় বাপ মা দের সেই ভাবেই ব্যবহার করা উচিত।

( २व्र व्यथाव ( व्यव )

- শ্রীশুরুদাস সরকার।

#### ঠাকুর মার্গর কথা।

( এएए स् (भकारनत वक कहत करा)

"দেশে বড় বেশী জনল আর জলাভূমি ছিল।
তাহাতে লাভ কতি উভরই হইত। জনলে বাদ, মহিন,
শৃষ্ণ, সাপ থাকিত; সময় সময় হাতীও আসিয়া
কিছুকাল থাকিয়া পাহাড়ে চলিয়া যাইত। হাতীঘাটা,
হাতীকান্দা, হাতীবলী, হাতীধলা প্রভৃতি স্থানের নামই
ইহার পরিচারক। বাদমারা, বাদাদাইড়, বাদবেড়,
বাদাটা,—ইহিববেড়, মহিন থাউরা, মহিনপুর,—প্রভৃতি
নামক গ্রাম একনও বর্তমান আছে। আমি যধন বউ—
তথন একবার জনলী হাতী এদেশে আসিয়াছিল।
মানুষ আগুন দেখাইয়াহাতী ঝেলাইয়া দেয়। বানার
মিকট গল্প গুনিয়াছি,—মহলা গ্রামে একবার রাত্রিতে
করেকটা জনলী হাতী আইসে। ভবনার ভট্যাগ্য

তথন মার কোলের শিশু। হাতী আসিয়া তাঁহাদের ঘর ভালিয়া ফেলে। তাঁহার মা পুত্র কোলে লাইয়া রুক্তখন শিরোমণি মহাশয়ের বাড়ী উপস্থিত শিরোমণি বড় মন্ত তাত্মিক লোক ছিলেন। কিলি একান্ত সাহসী এবং শক্তিবানও ছিলেন। কহিলেন বউ মা ঘরে বসো গিয়ে, ছাতী এখানে আসিলে একটা বোঝা পড়া করিব। তারপর এক হাতে মহাশঝের মালা ও অপর হাতে খড়ল লইয়া পুরুর পাড়ে গাঁড়াইলেন। কহিলেন হাতী আফুক—ভাড় কাটিয়া দিব না এদিকে সেকেলে বিষর বুদ্ধির সেরা পশুত মনোহর তর্কভ্ষণ পুকুর পাড়ের থড়ের ঘরে আধুন ধরাইয়া দিলেন; —আগুন দেখিয়া হাতী পলাইয়া সেল।

পাটধা গ্রামেও চের হাতী আদিত। কৰন কৰন ছ'চার মান থাকিতও। নল থাগড়ার বনে জলাভূমির চতুস্পার্শে আরত ছিল। জল ও জলল না হইলে হিংশ্রেজন্ত থাকে না।

সেকালের মাহ্র ভিশ বুলা। যেমন তেঁমন বাবত কেছ হিসাবই ক. এমন কি বড় বাবও (Royal Tiger)কাইন ভাজে আসিলে—গ্রামিকাম মশাল ও হাতীয়ার লইয়া অক্ষন্দে রাজিতে বিচরপ করিত। ধোয়াড় পাতিয়া বাব মারা ভারী আনন্দ ছিল। বাশ পুতিয়া বেশ করিয়া খোয়াড় নির্দাণ করিত, খোয়াড়ের এক প্রান্তে একটা কুকুর বা ছাগল-ছানা বাধিয়া রাখিত। বাব দরজা দিয়া প্রবেশ করিলেই কৌশলে নির্দ্মিত হার ভীবণ শব্দে বন্ধ হইয়া যাইত। তখন সকলে মিলিয়া সেই খোয়াড়ের ভিতর অবক্ষ বাব্দের প্রাণ নাশ করিত। অনেক সমন্ন শিকারীয়া রাজিতে খোয়ারের উপর বিছানা পাতিয়া নিজা দিত। নীচে আবন্ধ বাব্দ গর্জন করিত। এ সকল গাল পর নহে,—সভ্যি কথা। এই ত সে দিন—৫০—৫২ বছরের কথা, ভোমাদের জ্ঞাতি সুন্দর ঠাকুর বাব্দের গ্রীয়ারের কথা, ভোমাদের জ্ঞাতি সুন্দর ঠাকুর বাব্দের গ্রীয়ারের

উপর রাজি কাটাইয়া সকাল বেলার দশবানা গ্রাম বিষয়ের ক্ষতিয়া বাখ দেবাইয়াজিলেন।

্ৰীর পাতিয়া বাঘ মারাও তখন হইত। বিবাক্ত বাংশ অনেক সময় বাঘ ছাড়া অন্ত প্রাণীও মরিত।

শামরা ভাঁড়ে করিয়া বাবের তৈল রাধিতাম। ইহা শৌড়ো মা, বাভ প্রান্ততির ঔবধ। বাবের দাঁতে, নব শুস্তি ছেলেদের পলায় বা কটিতে সোনা রূপায় বাধাইয়া পরান হইত (বিশ্বয় চিহ্ন কি ?)।

গোয়াল ঘরে বাঘের বেশী আজোল। বাঘে গরু
আজমণ করিলে গৃহত্ব বাশের লাঠা, জাঠা প্রভৃতি দিরা
আইব তাড়াইত। মোট কথা—বাব প্রায়ই জিতিবার
আশোর জলাজলি দিত। ছেটে বাঘকে আমরা "মিছি
আম' বলিয়া ঠাটা করিতাম। এ সকল বাঘ আমাদের
আমানে প্রায় সর্বদাই পড়িত। ভাহাতে বড় একটা
আজে সমন্ত হওয়ার কারণ হইত না। বলাইর মা—
প্রিছি বাঘের" মুব হইতে ভাহার ছাগল কাড়িয়া
আবিল—লাঠার জেপ্রে।

মাধিল—লাসির জেরে।
মহিৰ বড় বেশী মহিবের পালার
পড়িলা অনেকে প্রাণ হার আমার বাবা, বৈশা
অপরাধ ঠাকুর, মৈশা কা কিলবর্তী, বাঘা পরাণ,
কেশা ধমা (ধর্ম প্রায়ণ) প্রভৃতি ভাহাদের অর চিলক
নামের সলে উপাধিরপে ব্যবহার করিত এবং আজিও
বিশ্বাত হইয়া আছে। আমার বাবাকে বহু মহিবে
আক্রমণ করিলে,—তিনি মহিবটীর শিং ধরিয়া বিবহরি
বোড়ীতে প্রতিষ্ঠিত দেবী ) দেবীর চ্য়ারে টানিয়া
আনিয়া বলি দেন। অগলাথ অন্তমী পূজার দিন পথে
মহিব কর্জ্ক আক্রান্ত হয়। হাতে থড়া ছিল,—
অসলাথ এক হাতে মহিবের শিং ধরিয়া অয় মা হুর্না
বিলিয়া এক কোপে মহিব শেব করেও কাটা মাধাটী
ক্রিয়া পূজার বাটী উপস্থিত হয়।

ক্ষেত্র বোধ হয় ভেলানগরের (কুমিয়া জিলার ক্ষীনলক্ষে এলাকাভুক্ত গ্রাৰ) প্রসাদাস ভটাচার্য্যকে দেখিয়াছ। তাঁহাকে একবার মহিবে আ্ক্রমণ করে।
তিনি তখন প্রেচি—শরীরে অর, তট্টাচার্রাই সংশির
ছই হাতে মহিবের ছই শিং ধরিয়া খাড় উণ্টাইরা
তাহার গালে আধ্যণ ওজনের এক কিল বসাইরা
মহিষ্টী ছাড়িরা দিরা বলেন,—'শ্যালা' মহিয়—গলাদাস
শর্মার সে দিন নাই—নৈলে আজ তোমাকে মা দশভুজার
ছুয়ারে নিয়া বলি দিতাম।''

শৃকর প্রায় সকল গ্রামেই আজ্ঞা করিয়া থাকিত। বড় বড় দাঁতালগুলা অতি ভয়কর ছিল। ইহাদের হাতে প্রাণ হারাইত। দেশের চাঁড়ালরা ছিল পুয়রের যম। জঙ্গলে শৃয়র বেড়া দিয়া হত্যাকরা পূরর শারার গল শুনিতে বড় ভয়ানক। একজন অুশিক্ষিক, বলিষ্ঠ ও নিৰ্ভীক শিকারী একটা স্তব্ত জাঠা লইয়া কোন গাছের মূলে হাঁটু গাড়িয়া যদিত। জাঠার গোড়া ঐ গাছের মূলে আটকাইয়া জাঠার মুখ সম্মুখ দিকে লক্ষ্য করিরা ধরিত। অক্সাক্ত জনগণ জললে শুরুর বেড় দিয়া চীৎকার করিলে শুরুর ছুটিয়া পলাইত। যে দিকে 🗳 ব্যক্তি বসিয়া থাকিত, সেইদিকে শুরুর ভাড়া করিবী নেওয়াই ছিল সকলের উদেখ। তাড়া খাইয়া বা ধাইয়া আহত শ্কর যধন সমূধ একটা যাত্র মাতুৰ দেখিত--ক্সথন সে ভয়ম্বর গর্জন করিয়া তাহাকে আজমণ করিত। সেই শিকারী 'আও' —'बाध' विनया गर्छन कतिया मुकद्रतक छाकिछ.— मुकद्राध তীরবেগে ভাহার দিকে ছুটিয়া ঘাইভ। শিকারী এই বিপদের সময়েও স্থিয়ভাবে বসিয়া জাঠা গাছটী সোলা ধরিয়া শৃকরের খাড়ের এক পার্খে বসাইরা দিত। শুকর জাঠা বিদ্ধ হইয়া বিশুণ কোবে কেবৰ প্রাথানর হয় श्रुवर बाठा क्रममः विविष्ठ थाक्त,—च्यावास्य ग्**क**त कुछनभात्री दम्र। देवतार काठा कानिता (शतन वा नका बहै बहेल निकातीत मृज्य व्यवधातिक।

শেরাল, বাঘালিয়া প্রভৃতির উপদ্রবে হাঁস, পাকা কাঁঠাল রাখা দার হইত। শেলা (শলারু) মানকচু নির্বংশ করিত। আমাদের গ্রামে একবার একটা ক্ষেপার দারা পড়ে। পশু পদ্মী যে কত রক্ষের দেখিরাছি, সব বলা সম্ভবপর নহে। এখন সেই রামও নাই, সেই আবাধ্যাও নাই। বাস্তবিক এখনকার দিনের চেয়ে সেকালে আমাদের বড় হঃখেও সুখ ছিল।

नाथ हिन (मर्म विखन । माळ्या ( किউटि ) (भार्त, इरताय, পाछताय, मधानी, आत्ता कछ नाश घतत আনাচে কানাচে পাওয়া যাইত। क ड लांक (य শাপের কামড়ে মারা পড়িত, তাহার সংখ্যা কে করিবে। সাপও সর্বদাই মারাপড়িত। মুগলমানর। বলিত 'সাপ দেখিলে ছাড়িতে নাই'। আমাদের বাড়ী একবার একটা কাল সাপ (কেউটে) মারাপড়ে, বাবা আসিয়া नकनरक मन विलिया। डांशांत्र विश्वाम, उत्ता आभारमव বাড়ীর প্রহরী ছিল। (বাড়ীর প্রহরী সংপের কথা **এখনো ভনি, সুত্য कि ना आ**तिना ७ दि (म भक्त छीवन विषयदात बाता अ भर्गा व्यानित भरतान भारे नारे। व्यवश राष्ट्र गव गर्भ थून मिञ्चत्व थात्क, क्लाहिए नाशित আবে) সাপের ওকা ছিল, তির্মায় ঔধ্ধেরও অভাব हिन मा। व्यावाद धेरे अवाम व किन-

'বারে খার দভ্যির সাপে

কি কর্বে ওঝার বাপে।"

তেবে বহু লোক যে ওঝার হাতে বাঁচিত একলা সভা।
দেশে এখন 'গুনী' লোক ঢের ছিল,—যারা কড়ি দিয়া
মন্ত্রবল সাপ ধরিয়া আনিত এবং সেই সাপ পুনরায়
পুর্ব্ব দপ্ত বাজ্তিকে ছোবল মারিয়া বিধ টানিয়া লইত।
গল্প শুনিরাছি—৪৯ ৫০ বংসর আগেও নাকি ঢাকায়
এক বেখা এক ভেলা হইতে সাপে কাটা মরা বাঁচাইয়াছিল। এদেশে তেমন ঘটনা বহু হইত। কিলোঁরসপ্তের নিকটে লৌকশ বাজারে এক মৃচি কড়ি চালনায়
সাপ আনিয়া দপ্ত বাজিকে আংরোগ্য করে—বহুলোক
ভাছা সচ্পে দেখিয়াছিল বি

জামানের দেশে তথন ধর্ণাভূমি ছিল বেশী— থিকে জন্তও ঢের ছিল। জলা আর জলল ছটাই হিংকে জন্তর আবগুক।

**बी पृर्व**ठक अद्वाष्टाद्यः।

### আটিয়া প্রগণার গ্রাম্য শব্দ।

ময়মনসিংহ কেলার বিভিন্ন স্থানের প্রামাণক বিভিন্ন প্রকার। বেমন কোন কোন স্থানে কটক প্রামাণক 'ভদ্রসন্তান' অর্থেও কোন কোন স্থানে ভবিপরীত অলিষ্ট অর্থে ব্যবহৃত হয়। কোন কোন স্থানে টেডন প্রামাণক যে অর্থে ব্যবহৃত হয়, ডদমুদ্ধপ অর্থে কোন কোন স্থানে টেটন গ্রামাণক ব্যবহৃত হয়, ৯ এত্বতীত একস্থানে করিব, দেখিব প্রভৃতি (ভবিষ্যুত্ত কাল) স্থানে করিতাম, দেখিতাম প্রভৃতি (ভবিষ্যুত্ত অতীত কাল) ব্যবহৃত হয়। স্কৃত্রাং আটিয়া প্রগ্রাক্ক গ্রামাণক সম্বন্ধে নিয়ে আলোচিত হইল।

	. অ।	•
<b>भ</b> क		जर्ब
অভচ		अङ्ग ।
चारवा <del>व</del>	, <b>2</b>	व्यटनाथ
শস্ত		<b>অ</b> পোচ
ष्य गृत्		ভিতর বাড়ী
অকপাইলা	engle	ভাগ্যহীন
<b>অ</b> চ <b>ন্থি</b> ত		व्या = हरी।
<b>অং</b> শগে		व्यवस्त

\* ঠাকুরমার কথার প্রথম দক। গত বংসরের পৌৰ
সংখ্যা প্রতিজার 'বোয়াশত বংসর পূর্বে বঙ্গের মধ্যবিত্ত
পরিবারের সাংশাধিক অবস্থা" নামে প্রকাশিত হইয়াছে।
প্রতিভাসিশাদক।

আ			•
SHI	অনবসর	উচপিচ	উবেগ
শাৰাভি	व्यवह, व्यवदिश्व	<b>উ</b> वज्ञण )	
MINIM	সময়	}	শতিরিক্ত হওয়া
भारेन।	<b>অ</b> থিভাও	উব্রণ )	and the state
শীভাৱে পাতারে }	<b>এ</b> षाटन .	<b>डे</b> नाम	আবরণ শুক্ত
व्याचारत भागारत	(मर्थात	উপারা	বারেনা
শাভি	, হাড়	উব্দর	<b>আপন্তি</b>
चारशाव	भ्य	উন্ধার	নিংশেষ
वामा	অৰ্দ	উনান	गनिषा या ७ म
<b>ৰা</b> ভাপাতা	তাঃ তাঃ	উকা	<b>ट्</b> का
नाद्यहान	नारक कथा	উৰ	শিশির
অ{গন	<b>মলত্যাগ</b>	উয	ডাপ
<b>प</b> [६क]	रंगद	<b>छत्रा</b> ९	<b>₹</b>
वामाक	ভরকারী		<b>L</b>
नारेंग	<b>डेब्ब्डि</b>		
	( चारात्राख	এশা	এখন
খীতান	্ মুধ'ধোতক	<b>७</b> म् (न	<b>बहे</b> शकादि
	অহারান্তে মুখ		<b>*</b>
শাহানি	(ধাত করিবার স্থান	कार्डन	विचाम
वानामा	<b>१</b> थक	কাওড়া	মি শ্রিত
	( সংগোপনে	কটুনা	(य धक्करमञ्जू (मान
ু <b>লানাগো</b> না -	প্ৰস্তাব	, <b>X</b> .,	অন্তের কা <b>ছে বলে</b>
শাদা	অরকার	কুট্নি.	(य जीत्नादक
আক্ৰ	<b>বৃ</b> র্ভিক	Xhid"	কাহারও উপপদ্ধী
वाहि	ঝুড়ি, শক্ত হা		ু বা উপপত্তি স্থিয়ক
শারি শানারি	অক্ত	TUE:	ः क्यक (भवश्रा
আকন	ভাক্ত	THIS	্রাদগার, <b>অনুপ</b> স্থিত
षाक्र	বুদ্ধি	- Alle	<sup>হয়াৰ নায়</sup> , অহু নাছত কপাট।
		ক্ষেত্র কুর	क्यारा चारत्वत्र चा ।
<b>45</b> 1	<b>रे</b> ग	**	
(art)	स्रेट्ड	कारें	चाखद नोग,
ৰিতা ু	<b>শি</b> ত্ৰ	কার্	কারদা

২য় সংখ্যা

कारिन	পীড়িত।	গর,দন্ধ	শাড়।
কিছা	বিবরণ ৷	গর্মা	<b>অ</b> গ্রেপ
কেলেকার	विवाप ।	भवना	খার।প:।
क । मन	কিনারা ৷	तम्बा .	गरहना ।
কেরে	(कन।	গোঘাইল	, গোশালা।
কেরাই	পরিহাদ।	.#.	व
কি <b>শ</b> ভ	.यम ।		
ক্ষিন	অস্তী ৷	<b>ল</b> সি	ভক্ত গোবর।
कार्रेन	কল্য ।	मा हे छ।	ष्यत्र ।
<b>ক</b> †ইয়।	ক†ক।	<b>्यथ</b>	গলার ব্যারাম।
কিচকামি	অশিষ্ঠাচরণ।	খাৰৱাক	ভয়ে কিং কর্ত্তৰ
	খ		বিষ্ট হওয়া
ধামাধা	অনর্থক।		8
<b>गारे</b>	পভীরতা।	চাঙ্গারী	বড় বুড়ি।
<b>ং</b> ণ!ড় <b>ল</b>	গৰ্ত্ত ।	চিল্তা	অপ্ৰশন্ত ৰগু।
শেমা	त्य मत्न गत्न वाग	চারি	কোম।
	করে।	हुका है	_
বেশারা	लिनित्र।	<b>万</b> 都)	हेंक् ।
बृद	ही ग।	চাপা	চুয়াশ।
ৰিটকা <del>ল</del>	খাপত্তি।	<b>টোখা</b>	ভীকু।
(अटे रबंडिया	বিবাদ পরায়ণ।	ि झानी	<b>ही</b> ९ का त
ing the second s	京町	চুপাকর।	গালি ক্ষেত্রা
<b>বৈজ্ঞান</b> ত	পরিশ্রম।	८६गांग	অংকরি করা
পারন	के।कृति ।	চিক্ৰ	স্কু ৷
	গ		<b>5</b> .
গাৰর	অস্থা।	ভ <b>র</b>	<b>উ</b> ग्न ।
গাপা '	পর্ত্ত।	ভেরা	<b>्रं</b> ८ ५ ५ इ
'গু সা	র[শ।	ভাঙ্গণ	বছ বছ
গটি	উক গোশর।	जाहे	শক্ত
গিদর	্ৰ বে অপ্ৰিদাৰ	फ़िन्	क्रीट देगहरड
	• শবে গাকে :	• • •	रिया केरें।

2038 5029 · .					
***	•		-4.	<b>₹</b> .₩	
<b>5-7</b>	, •-	আকৃতি।	বাইৰ	•	বৃষ
	ত		বাদল		बन्धन इष्टि
ভকা		শশহীন	বিচন		পাৰা
<b>७</b> ग	થ		বিছৰ		বী ল
* .	4	**	বরান্দ	•	পছন্দ
্ৰেকাবেকা		অসমান	বড়ই		কুল
শাভাবারি	,	नि <b>र्व</b> ध	বকা		গ†লৈ
<b>बेत्रव्हेता</b>		চ্মকিয়া	বিভিকিছা		বিশৃত্যবা
	P		বিয়ান		প্রাতঃকাঞ্চ
<b>ं</b> क्रम		বিবাদ	বিয়াই		देववाहिक
		( বৰ্ণবিক্বত,	বুগল		নিকট
<b>इत्रम्</b> ता	•	} বিশৃখল।	বেবাক্		नगर्ख .
*		বিশিষ্ট লোক <sup>ল</sup>	বাত্তি		পরিপক
•	4	141.19 Call 2	<b>८व</b> छ।		পুত্ৰ
	ধ			<b>উ</b>	.,
शंगक		<b>७</b> प्र श्रामिन	<b>कामा हे</b> का		ধে কোন কাল
	<b>A</b> .		<b>ाग। २</b> ००।		কর্ম করে না
নাড়াযুড়া		পত্রাদি শৃহ্য	-		ह्या
নক্নালী		ঠাট্রা করা	ভাইল		ছণন। <b>যিখ্যা</b>
কুন		<b>ल</b> न्	ভোগ!	•	(44))
मार्ड		শাউ	•	· 🌉	
<b>*</b> .	N		मृ <mark>ि</mark>		ছোট ঝঠাৰ
পুৰ		উৰ্ব্বগ্ৰহ	মুগ্রা		<b>অবাধ্য</b>
ेश्रमा		<b>일</b> 표	(মলা		च(नक
	***	আঘাত	<b>শাই</b> চা		কেশারা
পিছলামী		ভারাশী		*	
िश्रमा		গীহা	<b>য</b> ্ই	- 71	কুদার
	<b>,</b> इंदे			₹ .	
্ৰে <b>ল</b> ফেলিয়।	•	পাত্ৰী .	<b>秦</b> 布		<b>र</b> ् <b>ग</b> क्र}
*		ণাঙ্গা পিছলাইয়া	রুঠা রুঠা	Market .	রসশূক
<b>本</b> 得朝					রাক্স
गान्		4	त्र:क्ता		

	म	
णर्भ		नरक
निषव		हिडि
	স	
<b>লর্</b> ষ		गण्डा
नाकू		'পুল
·	•	
হৰৰ		আদ্রান লওয়া
		(साठा निया
<b>ब्</b> त्र¶		পরিদ্ধার করা
হপার	•	এইমাত্র
হরাৰ		ক্লান্ত
रामन		অসুরোধ করা
(वहेर्यन!		তখন
<b>হ</b> ত্তিয়াম		পেরারা
दाहेकान		চাটুবাদ
<b>टा</b> त्रेम	.1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.	<b>টিকটি</b>

শ্রীষভয়কুমার বৌলিক।

# व्यक्तीकरणत व्यान्हर्या मिलि।

অধ্বীক্ষণ সাহাব্যে শুধু অত্যন্ত ছোট বন্ধ বড় দেশার সাধারণের এই রূপই ধারনা, কিন্তু ইহাঘারা আরও বে কি আশ্চর্য্য কার্য্য—ক্ষি অভূত আবিদ্ধার সাধিত হইতে পারে নিয়লিখিত ঘটনা ভূইটা হইতেই ভাহা স্বয়ক পরিকৃট হইবে। জনৈক ব্যক্তি হত্যাপরাধে অভিযুক্ত হয় কিন্তু তাহার বিরুদ্ধে কোমও চাক্স্ব প্রমাণ ছিল না। অহসদ্ধানে তাহার নিকট হইতে শুধু একখানি রক্ত মাধা ছোরা বাহির হয়। ছোরার ফলাও বাটে রক্ত শুকাইয়া ছিল এ আসামী জ্বাব দের যে ছোরা দিয়া সে খানিকটা টাট্কা গোমাংস কাটিয়াছিল তাহারই রক্ত লাসিয়া রহিয়াছে। আসামীর জ্বাবে বিচারক বড়ই মুক্তিলে পড়িলেন এবং নিকে কিছুই স্থির করিতে না পারিয়া পরীক্ষার জ্বন্ত এ ছোরাখানি একজন দক্ষ আমুবীক্ষণিকের নিকট পাঠাইয়া দিলেন, আমুবীক্ষণিক উহা পরীক্ষা করিয়া বিরুদ্ধি করিবলন মে—

- ১। ছোরার দাগ প্রকৃতপক্ষে রক্তেরই দাগ।
- २। अ त्रक कान मृड (पर्दत नंदर, कीविड (पर्दत
- ৩। ইহাগো, মেৰ বা শ্করের রক্ত নহে, মহয়েরই রক্ত।
- ৪। রক্তের যধ্যে তুলার আঁশের কার আহিশের অভিড পাওয়াগেল।
- ৫। ঐ আঁশগুলি হতব্যক্তির গলাবদ্ধের কাপড়ের আঁশগুলির সহিত বেশ মিলিত আছে।

আমুবীক্ষণিক সিদ্ধান্তে ইছাই প্রতিপন্ন হ**ইল ৰে** ঐ ছোরা ঘারা কোন জীবিত মুমুয়ের গলা করিঁত হইয়াছে। ঐ ব্যক্তির গলা তুলা জাত বস্ত্র দারা বেষ্টিত ছিল।

আসামীর বিক্লকে কোনও চাকুৰ প্রথাণ না থাকিলেও আহ্নবীকণিকের সিদ্ধান্ত ভাহার বিক্লকে মারাত্মক প্রমাণ হইয়া নাড়াইল। বিচারকও সেই প্রমাণ বলে আসামীর উপযুক্ত লান্তি বিধান করিলেন।

বিতীয় পরীকাটি আরও আশুর্যা জনক। এক সমরে কোনও প্রসিদ্ধ আসুরীক্ষণককে জিলাসা করা হয়, সে অতি ক্ষুদ্ধ একখণ্ড বহু পুরাতন ভদ্ধ উল্লেক্স নিকট দিখে উহা কিদের চর্ম তিনি অমুবীক্ষণ সাহায়ে তাহা নির্ণর করিয়া দিতে পাবেন কি না। উত্তরে তিনি বিশেষ যে, তিনি তাহা পারিবেন। পরীক্ষার কর্ম কিতি ক্ষুদ্র বহু পোচীন একখণ্ড শুদ্ধ চর্ম তাহার নিকট প্রৈরিভ হইল। চর্ম খণ্ড দেখিলে বোধহয় যেন উহা ক্ষতি পুরাতন কোনও তোরকের উপরিছিত চর্ম হইতে ছিড়িয়া লগুয়া হইরাছে।

অধ্যাপক অকুবীকণ লইয়া এই চর্মা ধণ্ড পরীকার প্রান্ত হইয়া ক্রমে ক্রমে তাহার পরীকার ফল বলিতে আয়ন্ত করিলেন।

- >। শুরুচর্মে রোমাবলীর পরিকার চিহ্ন দেখ। বাইতেছে।
  - <sup>ः</sup> २। देश मासूरवज्ञे (नाम ।
- ও। এইরূপ লোম মহুধ্যশরীরে লনাবৃত স্থানেই ক্ষিয়া থাকে।
- ্। যে ব্যক্তির শ্রীরে এই লোমাবলী ছিল শে ব্যক্তি পৌরবর্ণ ছিল তবিষয়ে স্ফেছ নাই।

व्यशाभरकत्र अहे निकारक लाटक अटकवादत जाम्हर्गा-ৰিভ হইয়া পেল। কারণ উক্ত ডক চথা থও যে পুরাতন বিজ্ঞার ক্পাট হইতে গ্রহণ করা হইয়াছিল ভারা সম্বয়ে श्रीष এই यে-वह भड़ वर्ष चड़ीड इहेन कठक छनि कित्यात प्रशा এই शिक्षी लुक्षेन करत, प्रशामिश्वत मर्या ঁকরেকজন ধুত হইয়া স্থানীয় শাসন কর্তার নিকট আনীত श्रदेश मांगन কর্তার वारमभाग्रादर भीवश्व স্মবস্থায় ঐ দফ্যদিগের শ্রীর হইতে চর্ম তুলিয়া লওয়া इस अवर अकृत्क निका विवाद अन के हमा के निक्रांत क्यां हे (यदक मातिया व्यक्तिया मिश्रा द्या । वन বায়ু ও অক্তাক্ত প্রাকৃতিক কারণে সেই কপাটের অনারত श्वात्व हर्ष्यत हिंदू माज हिन ना-उधू हिन (भारतका इंटल्डी याथात नित्रृष्ट्र वर्णहेक्। একটা পেরেক किंग्रेश अशावरे निषय हार्य थल बाजूरीक्निक भरीकात ক্ষা প্রারিভ হইগাছিল।

আমুবীক্ষণিক পরীক্ষায় বহু প্রাচীন জনশ্রতি জকরেই
সভ্য বলিরা নিণী ত হইল। পরীক্ষার্থ প্রেরিত চর্ম্মণ্ড বে
মান্ত্রের চর্ম্ম তাহাতো স্থির হইলই, অধিকল্প বে দিনেমারগণের ন্যায় গৌরবর্ণবিশিষ্ট লোকের শরীরের চর্ম্ম
অধ্যাপক তাহাও সিদ্ধান্ত করিয়া দিলেন।

ত্রী অধিনী কুমার দেন।

## কারে বেশী ভালবাসি ?

কারে বেশী ভালবাদি আমি নাৰি জানি !
স্থাবধুনী শিবে রয়,
'কুলু' 'কুলু' 'বুলু' বয়,
মুখ লুকাইয়া বুকে হাদে পতী রাণী!
কারে বৈশী ভালবাদি আমি নাহি জানি!

কারে বেশী ভাগবাদি নাহি জানি আমি!

একজনা তপদ্যায়

পেয়েছি স্থপন প্রায়,

অপরে লিয়েছে ধরা মোরে জেনে বাদী!
কারে বেশী ভালবাদি নাহি জানি আমি!

 লাহি জানি কারে লামি বেশী ভালবাসি!

একজনা মোর তরে

নরণে বরণ করে,

জপরের তরে আমি কাঙ্গাল উদাসী!
নাহি জানি কায়ে আমি বেশী ভালবাসি!

Ł

নাহি জানি আমি কারে ভালবাদি বেশী!

একজনা সারা দিন

মরমে বাজার বীণ্,

অপরে নিশীথে পাশে মুখা এলোকেশী!
নাহি জানি আমি কারে ভালবাদি বেশী!

9

কারে বেশী ভালবাসি আমি নাহি জানি !

গ্র'জনার প্রাণ মাঝে

খরপের সুধা রাজে,

গ্র'জনা ভূড়াতে চাগ্ন দক্ষ হদিধানি !

কারে বেশী ভালবাসি আমি নাহি জানি ।

बीबीदिक्क्माद मछ।

#### मिनी अ विदमनी

[ মেদিনীপুর সাহিত্য-সম্মিলনে সভাপতির অভিভাষণ ]
আমরা জাতীর জীবনের এক সম্মিছলে দাঁড়িয়েছি।
আমরা পানীর আমনন্দে বিভার ছিনুম—আজ কোন্
মহাশক্তি টিকি ধোরে আমাদেরকে মর্ব থেকে বাইরে
নিয়ে জীবন সংগ্রামের সম্থীন করেছে। আমাদের
মরের মিদ্ধ প্রদীপটি নিবু-নিবু-বাইরের তীত্র বৈচ্যতিক

আবলা আমাদের চোৰ ধাঁধিরে দিছে ওধু,—এখনও
আমরা তা' করারত্ত কর্তে পারিনি। এইবার বাইরের
লংবর্ধ এসে পড়েছে। যাঁরা দোরে বিল দিয়ে বাইরের
এই বলা ঠেকিয়ে রাধ্তে চাইছেন, তাঁরা পার্বেন না।
প্রবাদ আছে মিসেস্ পার্টিংটন আটুলান্টিক সাগবকে
তার কুঁড়ের দিকে অগ্রসর হোতে দেখে ঝাঁটা হাতে
তার গতিরোধ কর্তে দাড়িয়েছিলেন। যাঁরা প্রাচীন
পাততাড়ি বগল্দাবায় করে নিজকে বাঁচিরে রাধ্তে
চাইবেন তাঁরা তা পার্বেন না—কিছুতেই পার্বেন না!
একটা সামন্ত্রের দিন এসেছে। কিছু ছেড়ে দিতে
ছবে—কিছু কিছু বাইরে থেকে নিতেও হবে।

এই বক্লায় আমাদের সব তলিরে না যায়—শেই
দিকে লক্ষ্য রাণ্তে হবে। এখনও পুব তরদার কারণ
পাওয়া যায়নি। জাতীয় জীবনের একটা কলরব শোনা
যাছে মাত্র; এ কি নব জাগরণ, না অন্তিম চীৎকার ?
আমরা শিল্প, সাহিত্য, প্রভৃতি সক্ষ বিষয়েই পরায়ন্ত
হয়ে পোড়ে আছি। আমরা এখনও নিজকে চিন্তে
পারিনি। যেদিন আমরা নিজের শক্তি বৃক্তে পার্ব,
সেদিন আমাদের জীবনের তরদা হবে।

বরুন আমাদের চিত্রশিল্প। রবিবর্দার 'পলার অবতরণ'' একখানি প্রাপিদ্ধ চিত্র; এই আলেংখা শিবঠাকুর ঠিক সাহেবের মত তুপা কাঁকে কোরে কোমরে হাত দিয়ে উর্দুধে দাভিয়ে আছেন, যেন এই মাত্র মুখ হোতে চুকুটটি পোড়ে গেছে। দেশীয় লোকে কি প্রতীক্ষার ভাবে উপরের দিকে চেয়ে কাঁড়ান না দ রবিবর্দ্ধা পুনার কি তা দেখেননি ? তবে এই উৎক্ট ভঙ্গীর অফুকরণ কর্তে গেলেন কেন ? শকুরুলা-বিদায়ের ছবি আর-একজন প্রাপদ্ধ চিত্রকর একেছেন। তাতে দেখ্তে পাবেন—কর্মুনি পাজীর মত্বেশ পোরে পাজীর ভঙ্গীতে শকুরুলাকে আশীর্মান্ত ক্রেন্থিল। ক্রিক্রার ক্রিলীতে চিত্র-বিভা শিক্ষা কোরে দিগ্গন্ধ চিত্রকর হোয়ে ফ্রির এনে

"वर्षक्षी" नामक अक्षामि विक चौक्रान । ठिक स्मर-প্রাংহক সাড়ী পোরে পালে আঙ্গুল ঠেকিয়ে বোসে आर्ट्स, जारकहे बागारमत क्यी (वारन स्मान निरंड क्षा । जातक नवीन ठिखकरद्वत शास्त्र जीका हित क्टिक ; कांता किङ्क् छि मारश्तवत मृत्यद शीन, छाट्यत किया है। क्षेत्र करा वन वात छत्री छून्छ शादत्रन ना, वात्रानी अध्याती चौक्र विश्व (तरे-नकन विष्में छनीत (तथ) अधिका मूर्य टार्थ मूर्ड ७१ । हात्र मिरक रम्भीत ংশাকের মধ্যে বাদ কোরে তাঁদেরই একজন হোয়ে শ্ৰিৰা যে কঙটা শাগ্ৰবিশ্বত হোতে পারি, তা আর কি রব্র। অবনীজ-বারুর স্থবের কোনো কোন চিত্র-কর दर्गारम २ जूनि त्वारन त्वारन छवि नकन कत्र्राहन ; तम्बीग्र विश क्या दकारत वास्क्रन-श्राठीन नर्छन-छत्री, मूझा, এবং হাত পা আঁক্বার প্রাচীন নীতি আয়ত কর্তে ক্ৰাছেন—কিন্তু বাশাণী লাভি গেই বহু পূৰ্বের বীভিতে জাঁদা ছবি দেখে বুৰুতে পারুছে না এগুলি ঠিক कारकार हो व ना विरम्भित। कि वर्त्तमान कीवरनत ৰ এটা অতিহায়া ছবির উপর পড়্বে, ছবি ভভটা জীবল ছবে। বালালী-জীবন লক্ষ্য কর্বার মত চক্ষু কর্জনের ব্ৰ এদেশে আছে তা' খানি না। গগন-বাবু তাঁৱ ৰিক্ষণৰকৈ বৃহত্ত কৰ্তে পিৰে কতকগুলি ছবিতে बाह्यनोद्यीयस्तत किंदू बाठान निरम्रहन, किंतु बानारनत শীৰ্ষে কি ভাব কিছুই নেই যা' গেকে চিত্ৰকর প্রেরণা श्रादक शादन ? अधूनि कि अमीलिय निया निरंत বেছে, আরতির ধূপ-ধূনোর গন্ধ বাভাসে মিশে গেছে ? विकामी कीवरनद रव প्रयास वकांत्र नमीता मासिश्व ক্রেনে গিরে তা' বিখকে প্লাবিত কর্বার প্রয়াদ दर्शदिक्ति, त्म (श्रद्भव वक्ता कि अकवादि व्यवस CHEE ?

क्रिकेट किंब कर, किंब थूरन निरंवत कांत्रिक् रमर्थ

नक्न क्यूरत ? जानानी हर अयन कि सान्नारे निज-क्ला (मृत्य चामत्रा थानिक्षा विषय (वाय क्यू एक भावि, कि इ जारक व्यायात्मत श्रात्वत कुका मिहेरव मा। ब्रालिन মাইকেল-এঞ্জেলোকে চিত্রশালা ছোতে দ্র কোরে मिर्ट रूर्व ना,—(य म्हानंत्र (यहि छान छ।' आग्नुष्ठ कत्र एक रत वह कि। किस सामता पत (यम ना छूनि, व्यामात्मत प्रवृत्थं वा कामात्मत कार्छ वड़-छ।' (यन তুচ্চ কর্তে না শিখি। ম্যাডোনার মুধ নকল না कारत निष्मत यात्रत मूच प्राच चौक्षा क्वि चौका मार्वक ररत। मार्डिना स्टाट बर्माना ७ (यनका वतः (मान वातक कांहि, डांक्त जाव वाक्ता माहिट्डा ছড়িয়ে আছে, এবং बाबास्मत कूँ एएस्त स्न त्रामत की वस बाता अबन्ध वरत्र वाटक 1

একথা বোৰ হয় बना यात्र वि वाकानीत मठ अकुमात्र ভাবের চর্চা ভারতের অগুরু কাতিরা অল্পই করেছেন। মনস্তব্যে এরপ হক্ষ বিশেষণ এদেশের পায়তা আছে कि ना व्यथि बानि ना। डेनाइत्रन-इरन नानरकनि-को मुनीत এक विश्वास्त्र छ हत्व कर्ष् ! अथम साकवित कीन शायाभीकृष्ठ न्यांच्यां । लाठ कक्रन ; एत्य्रान् "কিলকিঞিং" ভাবটি কি অপূর্ব ভারে চোবের কাছে (बाद्य (मध्या रायाह ! त्यांकिटिक मान, नब्दा, ज्या छ शांतिर्क शिर्म हत्कत्र हार्केन कि चार्क्य किंग समस्यात्त्र षाणाम (तथाष्ट् ! कवि প्रिमिकात हार्डेनिष्टिक कूनकित भरत छेलमा निरत त्शंहन, किंद (म क्या मूच क्रंह वरननि ; এই थाछत पूननात्र नाह्निकात छाछिनित कि সুন্দর ও গৃঢ় অর্থ ধরা পোড়ে গেছে ! নায়কের অসভর্কভায় नांत्रिका लाकस्तित्र मार्स कछक्छ। चश्राष्ट्रिष्ठ हार्स পড়েছেন—তথন তার চাউনিটি কেমন ছোরেছে কবি वर्ग वाल्डन-कडकरे। बाग ७ गक्षनाभीन छन्नीएछ ट्रांच ঘক্তিৰ হোৱেছে, যেন পাপড়ির উপর হর্যোর কিরণ এশে वि अपिक त्यन हिन तर्रिय चात्र कठकाम हिन अप्लाह ; उत्तेष बिक्र कार्य का विकास का विकास का विकास कार्य कार्य कर है छकान चात्र नंखींमदात विमाणी हित दिए व विमू मोहीत कुँ छित छे ने व वेगकेन कत्रह ; नात्र क्र

অসত্তৰ্ক আহ্বানে তিনি ক্ৰছা হোৱেছেন, কিছ তা' রোণ করবার শক্তি হৃদয়ে নেই, এজন্ত গেই চাউনি शाएं। पिट्छ न। धनः पिट्छं , त्यमन दकादत कृत्वत কলিটি হাওয়ার জোরকে ঠেকিয়ে রাখতে চার, অধ্চ राष्ट्रे (कारत (नक्ष बता किरत चारल चारल कारल कन श्रम প্রসরতা দেখার। "অবকিনী" শব্দটি হোতে চাউনির শানা গভীর রস এই ভাবে নিঙ্জিছে বার করা হোয়েছে। একটা চোধের ইসারা যে ভাব লগতের কতটা সন্ম সন্ম वैश्वरी दम्बाटा भारत--छात भविष्य अहे स्माक्तिएड আছে। রূপ-গোঝামীর উক্তলনীলম্পি প্রভৃতি বই পড়বে পাঠকের চোবের সাম্নে ভাবের এক নুতন রাজ্য পুলে বাবে। চৈত্রদেবের চোধের চাউনিতে শত শত স্বৰ্গীর ভাবের ইঙ্গিত পাওয়া গেছে। ভা' থেকে क्रभ-रभाषामी এই সকল তথ ব্ৰেছেন। পদকন্তারা जाएनत (मधनी पूर्व मिहेनकल उक्त शहात करवहान। त्वधनो या' (পরেছে তুলি कि তা' পারে না ? একজন देवकव कवि निर्धाहन-"नाश्चिकांत हांबहरि द्वित खमरतत मज-राम मधुराज माख रशारत चारह, छेड़राज भात्रह ना।" त्थ्य-विखात तार्वत चार्तन वृकारक এর চাইতে সরস ভাষা কোঝার জুটবে ? "মধুমাতল ুকিয়ে উড়ুই না পার" চোধের এই ভাব কি তুলিতে কোটে না? ভা' না হলে বঙ্গে যে স্বর্গের মাহুব जारमिक्षान, दम्हे देवज्याप्तवत्क विक्रकत स्थापन कारक धारक प्रभारतन कि रकारत ? जैं। किया कार्यत हार्डिन কি আমরা এত শীঘ্র ভূবে গেলাম ? অক্তর কবি অপাদ-দৃষ্টির কথায় লিখেছেন "কালো তারা চোখের এক কোণে **এ**পে পড়েছ-- यन हेन्सीवरतत मास थिएक छाउग्राम (कांत्र कांद्र जयविष्क रिंदन कर कांद्र कर्मार करने हैं।" এই অপান দৃষ্টি কি ছবিতে আঁকা যায় না ? "বাঁহা বাঁহা তরল বিলোকন পড়ই। তাঁহা তাঁহা নীল উৎপুল ভরই" • নিতাকার গরকারের জন্ম দেশকর নাজসরভালেক দিকে — এই ছত্তে কবি প্রেমিকের ধ্ব নীলমিঞ্জ ভাউনির ুবেনী লক্ষ্য রাণ্ডে হবে— কিন্তু আমাদের শিক্ষা বিভাগ

किरित (पर्वाटक शांद्रम । कार्यन पृष्टित study वाम्ना कविता (य तक्य क्लार्ज (शहरून, त्यतकर्म चन्न क्लार्याच তো দেখিনি; ভার পাশে বাঙ্গলার চিত্রকর চুপটি কোরে বোসে আছেন, যেন তিনি তাঁদের কেউ নন । ভাবের रैविठिखा होहर्व भूर्य कांग्रीवात यह यानयभूना वानानीत সাহিতো বাঙ্গালীর করে অনেক আছে। তা নিছে চর্চা করলে বাঙ্গালী চিত্রকর প্রথম শ্রেণীর আসন অনায়াদে দখন কর্তে পারেন। সে পথ **ভেডে দিয়ে** আমরা এীক আদর্শের অল-প্রতালের গঠন ও নরদেকে बाह्य नगारवम विचारत है। त्कारत (मन कि। मैठेरमक र्य पूर्वज जागामित (नहें, जा' निया क्लाम **जार**न निव कां जित्क विकात विक्रि। व्यथे रुज्ज उत सारवत (भीक्यी, याट आयता करों स्टाइडि, (मणि कार्डत आह्मा (भाक আবিষ'র কর্বার ক্ষতা হারিয়ে ফেলেছি। কেবল नहीरतत गर्रम ७ वाज-भारतत छन्नी मकन कारत कि হবে ? आगमनी गान (बक्, त्रामश्रगात्तत छात (बक--এবনও নরনারীরা এদেশে যে অপূর্ব ভ্যাগ ও স্লেছ দেখিয়ে থাকেন তা থেকে তুলি জীবন্ত রস গ্রহণ করুকা এইটি বিশেষ কোরে জান্তে হবে, বে আমরা সুকুমার-রুভিগুলিকে তপদ্যার রাজ্যে নিয়ে পৌছিছেছে। पक काता छाडि (प्रहे यांजाय छात्मत कर्का करवनि । এই তপদ্যার জিনিবটা তুলির রেখার অভিব্যক্ত কর্তে भावता, कार छ। (मर्थ मूद्र हरत। आयोरमञ्जू काकाङ भग्निन,-- चार्याएत मत्नास्त्रगारे शान-- अकांक्डादक वाजव निषय-छ। वातिरत रकता यनि वामता अन्यत থান বুনে কৃতিত দেখাই কিছা অর্গানের গামের ব্রক্ত केत्रि—छा'र्श व्यामात्मत्र (बारतत्र वाम्रामाना (सर्फ দেওয়া হয়। এসকল বাইরের পাওয়া জিনিব বে আবরা একেবারে ছেড়ে দিয়ে বস্ব—তা বল্ছি না। इन्नड हेत्रिक पिर्तिष्ट्रन छ।' करि रशास्त्र हिळकत्रहे रचनी लोडे कु मगिमनित एक्ट रक्ष्यन-रवन खेनात क्लान

বৈকে অরুণরাগ মৃত্তে কেলা হবে। যা' কিছু এ থেবের গৌরবের, তার জন্য বড় একটা স্থান রেখে বেকে বাজারের হিসেব-নিকেশের ফর্ফ প্রস্তুত কর্তে

🐆 বিদেশী লোকের প্রশংসার একটা মূল্য আছে, কিন্ত ক্ষাক মনের ভিতর বাড়িরে ভাবা উচিত নর। ধরুন, व्यामारणत ठाकूत-राग्य ठात शृष्का- এর সঙ্গে वक्षीय नत-बाजीय कड्यांनि ज्ञानन, वडिं। डेरकर्श, कड निनि-मानवन, बना (पश्चमा, উপবাস कता अवर हम्मन बना छ রখন্দনি হোতে আরম্ভ কোরে, চাবর বাদন ও আর্তির হ্রপা আমাদের মনের পর্দায় পর্দায় জড়িত হোয়ে আছে— এত্রি জাতীয় চিরস্তন তপদারে দামগ্রী। এই তপদাকে হিতা কা সাহিত্যে উজ্জল কোরে দেখাতে পার্লে,জগৎবাসী **অন্মাদের তপদ্যায় বিখাদ কর্বে, নতুবা দেবদেবী** শাক্তে পিয়ে যদি তুমি লাতীয় পুলার ভাবটি ছেড়ে দিয়ে केरहे क्यानात्र माहार्या या किंदू अक्टी ल्यार्ड राजन अवर ৰুদি সেই সন্তা কলনায় কতকটা বাহাছ্য়ী থাকে—ভবে ব্যক্ত ভিন্নদেশবাদী লোকেরা সাময়ীক ভাবে তার পক্ত-भाषी कराज्य भारतम । जाँदमत या जान नात्र जाहे यनि ক্রেষ্টা ক্লোঁরে পড়তে থাক,—ভবে হয়ত বিশ্ব-সভ্যভার এক क्षांत मान नाज कारत माजारज (शएक वारन वकते। অপ্ত হোতে পারে। কিন্ত তুমি বে পর্যান্ত নিলেকে ্লাবিষ্কার কোরে নিজের মূলখন ব্যয় করতে না পেরেছ কে শ্রীত তুমি এই শিল-সাহিত্যের রাজ্যে স্থায়ী শ্রহার जातम नारव मा। छाइ अकास गरन राजात विरायक ু**ক্তি ভোষার তপজা ও শক্তি** কোণায় তা' আবিষার করুতে চেষ্টা কর। নতুবা আফিসেও তুমি কেরাণী, শিল্প-সাহিত্যেও ভূমি কেরাণী-নকল ভিন্ন ভোষার ্ৰত্ত কাজ নেই; তোমার চিরকালই তা'হলে একটা निर्देशकारिकाल साम शता (व बालिय मठेशारी विकास करार सक्त क्यारन न्यादेश प्रतिहत प्रिति शास्त्र न ভাৰ আৰু গৌৰৰ ভা'বলৈ বইল কি ? একটা সাড়া

शाद्य (शहर, वश्वादक जामादमत जिमिक दश्वादक करते. किस निरंबत चरतत किनिय कारण याहेरबत मकनमविष्के কর্লে সার্কজনীনও লাভ হবে না-পৃথিবীর প্রভাক বড় প্রতিভার উপর তার দেশের ও লাতির বে শীল-মোহরটি चाह्य (मिं श्रेश काल कि वे इन्नि, वाकी कि नत्र, সেকৃশ্পীয়ারও নর। আশাদের সাহিত্যও নকলনবিশ-গণের অধিকারভুক্ত হয়ে বাচেত। ইব্রেন, বার্ণার্ড শ, ওরেলস্ প্রভৃতি লেখকগণ তাঁদের সমাজের কটিল প্রশ্ন-छनित्र नमाधान क्यूट मां फि्रस्ट्म। त्रश्रीन जारमञ्ज সভ্যকার প্রশ্ন। বহু শভান্দী বাবৎ স্ত্রীপুরুষের অবাধ সামাজিক মেলামেশায় যে সকল জটিলভা ভাদের মরনারীর সম্পর্কের প্রশ্নকে খিরে ধরেছে—মুরোপীয় লেখকগণ নানারণে দেই সমস্তার মীমাংসা কর্তে চেটিত हरत्रह्म। (माम्यम এकि मुन्दती ও खन्मीना त्रम्वी यकि গায়িকা, নৃত্যকুশলা বা বাক্চতুরা হন, তবে সমাজ তাঁর দেই সকল গুণ উপভোগ করতে দাবী রাখে। তাঁকে ग्रांशिक व्यक्षांत्म (नाट, (भारत, वाक्रकोणन मिरत সকলকে পরিতৃপ্ত কর্তে হয়। সময়ে সময়ে সেই রমণীর উপর সমাজের দাবী ও সহামুভূতি অগ্রগণ্য হোমে তদমপাতে স্বামীর দাবী অস্বীকৃত হোতে পারে। কখনও কখনও সাহিত্যক্ষেত্রে দেখা যায় যে সামাজিক দাবী ও সহামুভূতির ফলে তিনি স্বামীকে ডিক্সিয়ে মার্জনা এমক কি প্রশংসাও লাভ করছেন। যেমন মোনাভানার চরিত্রে আমরা দেখতে পাছি। সে দেশে দাপতা স্বন্ধ একনিষ্ঠ হবার পক্ষে অনেক সময় সামাঞ্জিক প্রথা-রশতঃই কিছু কিছু অন্তরায় ক্রটে যায়। সুতরাহ ট্রব্রেন বার্ণার্ড শ वा छेगक्षेत्र (य नक्न किंब अँ (क्ष्ट्रिन-छ।', जैरिनेत (मर्रामंत्र थै। हि कि । नवनावी मन्मर्कित श्रेष डिएम (हारथेव नागत विविज्ञक्राल कृष्टिन द्वारम छित्रहरू, जात मीमाश्ना जात्रा व्यवश्रहे कत्रत्व।

কিন্তু আমাদের দেশে কি স্থাপুরুবের সমস্তাটা ঠিক গেইরকম বাড়িয়েছে? আমাদের দেশে রীকাভির সে

अक्ट्री बाङादिक गन्दा छ गःयम चाह्न, छ। कि व्यामता বিতা প্রত্যক্ষ করি না? (য-সকল निब-इरन क्लामा (नवक जीरनत्तक करन मेछ कर्ताष्ट्रन, ভার বীভংগতা কি আপনারা অন্তরে অন্তরে উপলব্ধি करवम ना १ जामारमञ्ज পात्रिवात्रिक कीवन कि मठाई এई छे ९क छे । क्षेत्र-मीमाद चिम्र-क्का व्यक्त में। जिया हा धे रे में में के बिसू गृहद हातिपित बाह्न, डाएरत কোনো বাড়ীতে কি এই-সকল ছুনীতি প্রশ্রয় পেয়ে शास्त ? ना, विनाजी नाहित्का या किछू (भरत्रहि, चामारमञ अधीरम (मर्भन्न मास कारत रामन कारत रहाक छात्र नीमांछ। रमधारण दरव-धरे नकनवाकी ना क्वल आयारिक लिथक-कीवन मिथा। दशाय यात ? কোনো লেখক ছাগলের মুখ্ত নরদেহে কিছুতেই জোড়া म पिटि (शदत मूनवमानी नात्रिकात आम्पानी कादत খনের স্থ মিটিয়েছেন-কিন্তু তাতে কোরে মুগলমানেরা ভারি চোটে গেলেন। আমাদের ত্রান্স ভাতাদের পারিবারিক জীবনটাকে আশ্রয় কোরেই এই প্রেমের ভাশুৰ খেলাটা কোনো কোনো লেখক খুব জমিয়ে নিরেছেন। কিন্তু সেই-সকল ভদ্র পরিবার যে এইরূপ দুর্নীতি প্রশ্রর দেন, এটা আমরা কিছুতেই বিখাদ কর্তে পারি না। হিন্দুজাতির নিষ্ঠা ও প্রীতি প্রত্যেক সংশ্রিবারের মজ্জাগত। সে পরিবার গোঁড়া হিন্দু (शम् वा खांत्र (शान, अविवास कारना औष्डम (नरे। किस आफार्रात दिवस आमार्तित खाम वसूर्तित छत्रम ছোতে তাঁদের সম্ভুলুকু প্রতি এই অসমানকর মানির चारतार्भत दकारने विजिना राष्ट्र ना। चामता अन्ति शास्त्र क्रिक छेएडक्ना-यात्र कल कीवन अकवात्त महे इत्य यात्र- (महे উত্তেজनात नाम नाकि तम,-तमहे উত্তেলনার নাম প্রেম, পেই উত্তেলনা জনিত বেচ্ছাচার रमयानहे वार्षे । এই ध्येगीत (मथकशन क्रवन दे।क्रहन ছাঙ্গ ভাঙ্গ ভাঙ্গ, হোক্ না কেন তা' তাজমংল-ওওলি शृक्षाता जामर्ग -- अथन अगकरा द्वास कि राव ? (शक नो छा' निका, नज्जा, विनय- अपकल आठीनरमत মতে সন্তণ; এখনকার গুণ হবে ক্লুবেছাচার, যা! খুরী মনে ব্লুবে তথনই সেই ভাবের দরিয়ার পা ঢালা। কিন্তু এটি যদি সভাই আমাদের দেশ চাইভো, তবে কুড়ুল হাতে কোরে আমিও ভাদের দলে ভিড়ে যেতুম। কিন্তু যেদেশের জীলোকেরা মা' ভিন্ন অন্ত ভাকে বাইরের লোককে সাড়া দেন না, সে দেশে এ সমস্তা আমেনি, একথা মুক্তকঠে বল্তে পারি। এইসকল লেখক এদেশীর নারী-প্রকৃতিতে এরূপ কল্লিভ অসংঘম আর্হাপ কোরে উাদের মা-বোনদের অপমালিভ কর্ছেন। শিক্ষিত লোকদের মধ্যে যাঁরা এই বিলাভী নকল চালাছেন—ভারা উাদের মা-বোন্দের হাতে ভাঁদের রচিত বইগুলি দিয়ে দেশবেন ভারা সেইদকল পুত্তক পোড়ে লজ্জার আড় হেঁট করেন কি না। ভাঁদের মন্তব্য আগে নিয়ে তারপর বই প্রকাশ কর্বেন।

পারিবারিক মেহ ও প্রেম আমাদের জাতীয় তপস্যা। বিলাতে স্বামী-স্তীর সমন্ধ নিয়ে তর্ক উঠেছে। যেসকল জাতি বিরাট আকাজ্ঞা নিয়ে জগতে ঘুরে বেড়াচ্ছেন, ধারা কথায় কথায় আকটিক সমুদ্রের শেব দেবতৈ व्यात्वत्र व्यामा (एएए नित्य कारन यान, त्वानक्था द्वारक चुक कारत चार्डे निया ७ कारनाजा भर्यास नमस त्राप्तित প্রতি বারা অভিনিবিষ্ট, সহত্র প্রকারের বিচিত্র বৈজ্ঞানিক যন্ত্র থান ছারা থারা সমুদ্রতল আলোড়ন কর্ছেন, আকাশকে রাজপথে প্রবর্তিত কর্ছেন,বরে বোদে থাক্বার उाएत अवनत (काथाय ? भातिवादिक नम्मर्क उाएन নিকট খুব উচু হোতে প বে না—উহা শুধু কর্ত্তব্যের আকার (शादा जारमत (हारब शास-छेश जारमत बीवरमत প্রেরণা বা তপ্রভা নয়। কিন্তু বাৎশলা ও দাশ্পতা এখনও বাঙ্গলার তপস্থার দামগ্রী। তার উপরে বা ছিলে गाभारमत (यहे। এখনও একমাত্র ভীর্থ, তার পবিষেতা मह হতে পারে—অক্স কোনো দিক থেকে যে সে ক্তিপুরু হবে—তার ভোগস্তাবনা দেখ ছি না। বৃত্তমান বাঁদানী-कीवरमत मातानित्वत काखित भूत क्रिनाता य शामि

भारह, जात भारत ज्याना कारतिमना खरेमिडिंड वा বনভাষাকে দাঁড় করালে বে হংগহ অভিদাপ আস্বে क्रांटि क्यांत वांगांगीत कूँ एए पत्थानि त्यांत पूर्व थाक् হোরে খাবে। আপনাদের নিকট আমার এই বিনীত अञ्चलां जाननाता मिरकता ना ल्लाए, किया कारना শোকের নিকট গরাট কেমন তা' না জেনে অস্তঃপুরে दर्गारेंगा महन्नद वह भागारिक ना। (क मश्यम ७ ७ विजा ইন্দ্রেশণীর নিজ্প, এই গলগুলি তা দস্থার মত অপহরণ কর্বে। আনট এবং রসের নাম দিয়ে ভারতচক্র যা ক্রেছিলেন, এই গল্পেকগণ অক্তভাবে ভাও ছাপিয়ে উঠেছেন। ভারতচঞ্জের শিষ্য তথন বাঙ্গনায় বিশুর क्षिण, विश्वासम्बद्धत्रं दिनाति "कामिनीकुमात्र" "জীবনভারা" প্রভৃতি পুস্তক রচিত হয়েছিল---সেইস্কল শারীরিক সুৰ-লিপার একটা উৎকট व्यवज्रविका करबिहालन। এ दिन द्वाराज देन क्रिविकां व तिन किन्नर्भ ? (পमानरकाष्ड् छा<sup>र</sup> ममन कन्नर्छ भारति। শাৰার বিখাস, আমাদের নারীচরিত্রে বে স্বাভাবিক লজ্জা ও नित्रति चारह, छ।' निकरक श्रकाम (कारत এই-সকল रिक्ट - थिक्ट कानियात मिन्रा चन्याम (नर्क चायुतका িকোরে এগেছে। এবনকার সেধকেরাও এই যে বিদেশী শিকল টালাতে টাছেন—আমার বিবাস তা এ দেখে नीस्ट्रांट्य मा। अ शारवर व्यानश्यम व्यामात्त्रत नगात्क त्महे, ভা উড়ে এবে কিছুতেই আমাদের অন্তঃপুর অধিকার ক্রীভে পার্বে মা। ভারতচন্ত্র ও তার অমুকরণকারীদের স্তবায়ও ছিল রস, তার মধ্যেও ছন্দালি ও লক্ষরনের ুৰিয়াপ অসাৰাক্ত নৈপুণ্য ছিল বে, সেগুলি সাহিত্যিক শার্ট-বর্মিত বোলে যদিও বা কেউ এ যুগে উভিয়ে দিতে স্থাস-লে বুণে য'দ কেউ দেরপ বল্ভে সাহসী হোতেন তবে পাণ্ডাদের ছাতে তালের অনেক-রকম তুর্গতি হোত, कार्कनाद्य विकि त्याद्य विकाशिति त्यादक द्वार नात्र শেইণকল লেবক সে ধুপের পাতিতো বড় কম ছিলেন শীনী। আমাদের দেশ একনিষ্ঠ ও বছনবোরলনী লাল্যা

এ ক্ষের প্রতেদ বিলক্ষণ জানে নীতাকে উদার কর্বায়
জন্ত বোরতর বৃদ্ধ হোরেছে, কিন্ত শূর্ণনখার নাক কান কাইতে
কিছুনাত বিধা হরনি। কোন্রদ ত্রমরের পের এবং কোন
রস্ মক্ষিকার পের, দে-সম্বন্ধে অনেকগুলি প্লোক আছে।
'রস' কথা ওনেই আমাদের রসনেজ্ঞির আর্ত্র হোমে উঠকে
না। নপ্লতাই বদি আর্ট হয়, তকে পোনাক-পরিচ্ছদের
পাছে আধুনিক কালে এত খরচ বাহলা হচ্ছে কেন্দ্র ?

चामात वक्करा এই या, विनाडी वह পোড़ে পোড़ে দেই নকলে এ দেশে ধারা গল লিখছেন—ভারা আমাদের न्यां कत हिंदि मिल्हम ना। বিশাতী श्रम जागालक श्रम नग्न। यथन कतानी विभन धून Cकारत व्यक्ति ज्यन विशू श्वातान (प्रथापि निटकरक "দিটিলেন টিশু" বোলে পরিচয় দিয়ে কাগলপত্র रिन्देत्राण मखबद कत्र्राजन। चाधूनिक स्मिक्त्रण रिन्देत्रण এको किछू चिनन्न कत्र्छन। श्र्वह याहि धेर गास्त्रापत थानागाम वानामत कि चात्र्रत वार्व ना, डांता रव विवयक्षिन निरंत्र गांपी খামাছেন, তার একটা সুর যদি আমরা এখান থেকে ধরি, তা তালের অবশ্যই ভাল লাগ্বে—তোতা-পাধীর त्रूर्य द्विनाम छत्न (एक्स्प द्विष्टक्स्ता वाद्या मिर् क्षार्कन। (कर्म विकास और दि रम सूत्री वाबारम्ब निरमत भूत, ना अकृष्ठा राष्ट्रदा विमाजी आक्षांनी ? (कडे इत्र ठ तम्(वन—এই সকল সমশ্র) विश्वन अभएछत्र नमना। रहारत्र में। ज़ारन, खितकाल नुमान वा दरन अ जात পুর্বাভাস; কিন্তু আমাদের স্থায়ীক যে কথনও এ नगना आन्द का याता चत-त्रत्याहि क्यू हम जाता वन्न, তার কোনো আভাস পার্ট্রেই 🗫 मा। ७५ ◆रत्रकथन পুরোমাত্রায় বিদেশী চংএ গড়া **देश-वत्र** পরিবারে যদি কিছু অভিনয় খোষে থাকে ভা' সম্ভ বাঙ্গালী জাতির নামে চালাবেন না। বাঙ্গানী রম্ণীরা ভার কোনো ধর্ম রাখেন না, ভা জান্তে চান্ না-वाशनाता भन्ना नितरा तारे भनत जालत निरंद्य किन्-

कडे चामात्र जिल्लाना। चामारनत नवस नवाज (शरक अकी विकात-वानी छोठ वह त्यां वागित्र प्रथम উচিত। योगि धर्म-वृत्रक পুরাণ-কথাগুলি এ দেশে এখন देगुरकरण रात्र थारक, छर्द आयारान्त्र वर्ष्टवान नवारक **টের-টের সভ্যিকার সম্পা। এসে পড়ছে, তা' নিয়ে বেশ** मझ ६ काता (लवा हम्हरू भारत-(महे मकन श्रायत শৰাধান আমাদের দেশ প্রত্যেক চিন্তাশীল শিকিত बाक्षित्र निक्र हाहेर्डन। यात्रा विनाठी वहें अत हतिख-श्वीन मा त्मर्थ क त्मरभंत की वस हित्रक श्वी तर्थ हिन-ষ্ঠারা জানেন এখনকার উপভাগগুলির অধিকাংশই নিশের ব্রের পাশ কাটিরে বাইরের কথা নিয়ে ব্যস্ত द्यादा शाक्ष्य । मुनक्या मिरक कार्य (मार्थ (मर्थ) এकडी मक्ति चाहि, छ। नद्दल चर्कन करा यात्र ना का स्टारक अक्यानि रेक्ट्री वह त्यरक शर्व क हिराबत হায়া নিয়ে ভাড়াতাড়ি কুড়ি ফর্মার একখানি বই লিখে द्यारा दण्डा नर्म ।

প্রত্যুত স্ত্রীকাতির অবাধ প্রের এখন আমাদের সমস্যা নয়। বাজালার পল্লীতে-পল্লীতে ঘুরে দেখুন—বাজালী জীবনের কোন্তলি ওকতর প্রার ?

প্রথম প্রশ্ন উদর্গায় সংস্থাম। কবি ও ওপঞাসিক কর্পের মর শিধিয়ে এই প্রশ্নের সমাধান কর্তে পারেন কি ? স্বাঙ্গালী তল্পলোকশ্রেণী যে ধীরে ধীরে ধানের মৃথে বাজেন,—এথানে আমাদের মহা করুণার ক্ষেত্র; জনস্ত স্থানের বিভীবিকা। কোন্ কবি বা জানী আল স্থানেরেকে বাচবার পথ দেখাবেন ?—ভাবী নিরব্ছির জাবার আকাশে কেউ কি একটি ভারার আলো আলির্মেও ত্রাণের পথ দেখিয়ে দিতে পারেন ?

ৰিতীর প্রশ্ন-কল্পানার। শক্তিমানু লেখক নারী-লাভিয় স্থাবলম্বন, কৌমার্য্য-ত্রত এবং বর্জনোপারের কোনো স্থান্ট ইন্ধিত দিয়ে আগর বিপদ হোতে স্থান্ডিকে উদ্ধার করার পথ আবিদ্ধার করুন।

**कुकीत अन्नष्ठ राष्ट्र अन्न**म अन्नित **चर्काळ**—मानिरकात

ফলে শ্রামানের সন্ধানদের অকালমূত্য, নানা রোগণোক, কুলবন্দনার শাল্পহত্যা অধবা পণিকা-মৃতি অবলমন। বলদেশের ষ্টাটিষ্টিকৃস্ দেখালে গা শিউরে উঠ্বে।

সাহিত্য ওধু একটা রদ নিয়ে থাক্বার কথা নয়। যে সময় আমাদের দেশ কর্ম গছতে মৃঢ়তার আচলে, নিভাক चकार ७ रेमक्रशीकुक बाकित वा दशरत भारक-अलीहें हिश्मा (चन, जामम्बर्जू) कारना कीरनत ममूबीन गृथ छ नक्मीय जाय, शतम्भातरक चारता श्वरामत मूर्य द्वराच দিতে যাছে, বিলাতের নকল কর্তে গিরে প্রীবাসীরী পর্যান্ত বিশাসের সামপ্রীর দিকে ঝুঁকেছে, অবচ কোনো নিকট-আত্মীয় অনশনে নগ্নদেহে প্রাের জ্ঞাবে প্রাণত্যাপ কর্ছে দে দিকে দৃষ্টিপাত নেই—এই প্রা আমরা র্ফিক সেলে বিলাতী-প্রেমের পালাটা প্রের चानत क्याचात्र छ्टे। क्याचि, क्याची ब्याव শক্তকর্ত্ব আক্রান্ত হয়ে একটা অর্থনবাপ্ত থানের व्यवनिष्ठीश्म थ्वरा (ववात अक्ट्रे व्यवनाम कात निरंत-हिर्तिन-वाबता विरामी छारत अवनह बन्धन हरक भएकि (य,यदात विभव्दक विभव वर्गाहे मान क्याहि मा) চতুর্ব সমস্যা,—নিপীড়িত লাতিদিসের প্রতি আন্তান্তের कर्खना द्वित कता। व्यामात्मत्र श्राठीन एडिजा तिहै,

চত্ব সমস্যা,—নিপাড়ত জাতারসের প্রতি আমুক্তর কর্ত্তব্য ছির করা। আমাদের প্রাচীন গুচিতা নৈই, অবচ তার দর্শন্ধী আছে। অনেক হিন্দুই ছন্নবেশী,—লাতিবটা মুবোনে গাঁড়িরেছে। মুবোনটা ঝবিমুনিদের—কিন্তু ভিতরটা সম্পূর্ণ বিপরীত। এই মুবোম পোরে আমরা নিরপ্রেণীর লোকদের ভম দেখাছি, ও নিরেরা ববেছোচার কোরে পরের সহিত বৈবন্যের রেঝা জোর ববেছোচার কোরে পরের সহিত বৈবন্যের রেঝা জোরা কি করে সইবে ? স্তরাং সকল জাতির মধ্যেই একটা বিজ্ঞাবের লিখা জোনে উঠছে। আমাদের আছিরভ এই বৈব্যা ক্রমণঃ কটিল হোরে উঠছে, ও পরীর পাড়ার পাড়ার বিষেবের আলার স্কট কর্ছে। কবি ও উপভাসিক আমাদের সমাজের এই সমস্যা হোতে নানারপ প্রট সংগ্রহ কোরে কি ভাবে শান্তি ও বৈত্তী স্থাপিত হোজে পরে তা' দেখিরে দিতে পারের ।

क्ष नैयगा,-जामारणत नशासदा अक्षाविदीन द्वारत राष्ट्र । बाजीयणारे द्याक किश्ता भावितातिक बापर्न হোক,—শিওকাল হোতে যদি কেউ আত্মপ্রভিষ্ঠা কর্তে र्जात्र, रकारना नित्ररमत्र निकृष्ठ माथा (इंहे ना रकारत, নিজের অপরিপক বৃদ্ধিকেই প্রধান মলে কোরে কিয়া কোনো দলে ভিড়ে, যে স্থানে অবনতি জানালে প্রকৃত শাৰের উন্মেৰ হয়, সেই স্থানে হঠকাঁরিতার সংক কুণ্ডিত হয় ক্রতা হলে স্মাজের ভিত ধানে পড়্বে। बहै द्वाकारात्रिकात बूर्ण वानरकता निर्मम अवः नर्स-প্ৰকার ভক্তিশ্ৰদ্ধবিৰজ্ঞিত হয়ে পড়ছে। এই হৰ্বিনয়ের बृद्वा कारी ध्वरत्नव हाम्रा त्यव्ह लाख निकेदत केर्ड 📆। গেদিন একজন উচ্চশিক্ষিত বিহুবিদ্যালয়ের कृष्वयुद्धश्च उद्भव व्यक्षायक व्यागातक श्रेकामा जात वुल्त्म, "बामि धर्म मानि ना, क्रेबंद्र मानि ना !" निम्हद्रहे क्रभेष्ठे शामितकत त्थरक मञावामी हतिज्ञवान् नाशिकत्क আমরা উচ্চ আগন দিতে বাধ্য, কিন্তু আমাদের তরণ निकिन मध्यमास्त्र मर्ग ७७ वड़ लाई। कि कारत अन! क्षिट्र मा "ज्यानि क्नोत्हन, ज्याति निक्शा" अ नैर्योख चात्र चात्र स्विमिष्ठ इस्तर्ह, अरे परामत्र वह-স্থানের মাটা ভক্তিমান্ নরনারীর প্রদানত কপালের স্পর্শনাত কোরে তীর্ষে পরিণত হোয়ে আছে—এ দেশে 👊 না্ভিকতা কোণা থেকৈ এল প্ৰিবীর ইতিহাস পড়ুগে দেখা যায়, ধর্ম ও ঈশ্বরপ্রেমই সর্বপ্রধান শক্তি-ক্ষিপে প্রত্যেক কাতির জীবনে কাক করেছে। যীত যে কৃতি দিয়ে গেছেন—সেই শক্তি সমস্ত অপতে এখনও কাজ কর্ছে। বুছবিগ্রহ হচ্ছে বোলে যে শক্তির উৎস ্ড্রে ভক্তিয়ে গেছে, এরপ যেন কেন্ট মনে না করেন। रैनिनमध बीक्ट विक्रीय चवठात काउन्डे छेनदेत चीवन-ব্যাপী ভণস্যা কাল্প প্রকৃত প্রতিবর্ণের অভিবের প্রমাণ बिद्य (बहुरन । यश्रवूरन आर्फ्य महित्कन-अक्षरन। ्रब्रह्मि प्रेठ पठ विज्ञकत्-मार्ध्यम्। शिक्षमा-ক্যাধারিন্ আর এরেদ্যাক্র প্রভূতি শত শত সাধু সেই

ধর্মের উন্নত আদর্শ বারা যুরোপকে সভ্যভার উচ্চ হোতে উচ্চতর ভবে নিযে গেছেন; মাটিন্ লুখার ধর্মকে স্থানির্ব কলুতে চেষ্টা পেয়ে যে বিরাট আন্দোলন উপস্থিত কোরেছিলেন-শিক্ষিত মুরোপ এবনও সেই স্বাধীন চিন্তা হোতে প্রেরণা লাভ করছেন। আরব হোভে महत्त्रम धर्मवरम भृथिकीत यूग छेट्छ निरम्राह्मन, नात मशाबीत, पृष्, देवलक व रमामत अमूतल वर्षाणारक नव नव श्रित्रोत्र अञ्चलाङ कारत पृथिवीत्र छेडाव कारत गिर्हन। शृथियोत मर्सक मिनत, मर्सक छवनागांत, সর্বাত্ত ভীর্থ—এই সকল স্থান ধোতে কবিভার গঙ্গামোড, চিত্রের ও আর্কর্যার পারিলাত-কুমুম, নীতির বিশুদ ফুলমালা,—তপ্ৰস্যার হৰ্জন্ম শক্তি, সাম্বনা ও আশার क्षण्यवागी-कानवकाणित निकृष्ट निज्ञविष कान्द्र, जारे व्यामात्मत और कन्यांत्री चत्र वान्यांना दर्शात्राह । হঠকারী আত্মাজির প্রতিষ্ঠা কোরে বাধ্যকাল হোতে तिहे यहामकिएक **अ**डिताध केंद्र (गर्ण कोरनण ভাগের ঘরের মত একটু কোরে হাওয়া বইলেই ভেলে পভবে। এই নাত্তিকতা ও অবিখালের সমস্যা আমানের नभारक जामरक,-- এই সমস্যায় পেইছে অপর জাতির वारतत्र कहरिय मन्छन चारह, छात्री एक छ वा नाग्रन निष्ठ भावत्वन : किन्न जागाम्ब ज्वा (व धाक्ताद्व ভুৰ্বে—ভার কোনো সন্দেহ নাই। কবি ও ঔপভাদিক এই সমস্যা कि ভাবে পুরণ কর্তে চান—ভা দেখ্তে চাই। णात्रभव त्मरणव नात्रा भारतव देखाता भारत तारह, रवाल कृत्नीवनन यात्र-वात्र-मन्त्रकृतिक्ष्यस्य नक्ष्रहरू मरहादमव नात्म माज शर्धवित्रकः दिन्तिनस्थात्रात्र केक-নীচ এক সময়ে ভূবে বেত—দেশের সে আনন্দ কোবার ? इर्तिर्गरत (पार्वार्गरत इतित मूर्ते (र जनक जानम् अ **ভ**ক্তি ছিল—ত। जात-কোনোরপে जायता পাছি कि ?

मारवादगरव मृष्टिसम् लाक्त्र व्यानम्,- वाम्रकान,

ধিষ্টোর বায়নার্থা—তার শিক্ষা অনেক নম্বই অহিতকর

- এवनकात डिलाशी कारत कि जानक नेमांकरके

দিতে পারা বার, তা কে ভাব ছেন ?—প্রত্যুত যে রস দাতীর দীবনকে পোবণ করে, তা হোতে আমরা ক্রমণঃ বিশিত হচ্ছি, যে রস প্রার স্থার সমানকে ক্রংস করে, ভাই বিদেশ হোতে আম্দানী করা হচ্ছে।

এইরপ শত শত প্রহার মধ্যে আমরা কর্মবিষ্ট रहारत्र रवारम प्रस्कृति। वाकानी-कीवन भड़ा मूर्यस् ুকুল্বে সেই পড়া আওড়াতে-আওড়াতেই অবশান হোয়ে बास्क ! भूरत वहे भड़ा कि ছवि भारता, भारत वहे (एर्च वरे (नर्ग ७ इवि (एर्च इवि याँका, जाकित नारहरवत्र रम्या रमस्य रमया—नम्ख वनरम्यो अक्रो বিরাট কেরানীধানার পরিণত ছোয়েছে! আবাদের লেখকদের মধ্যে যাঁদের কথা নিয়ে এতকণ আলোচনা क्रवा शिन, उारिम्य मरक्षा व्यासायक्रवह रमश्राद रवण क्रमका चारक, कांद्रा निका-मीकाग्र दफ्, श्रानिकां दफ्, घनठ चरनरक्रे नचूर ना स्टार पृत्ती (मर्थन; अर्थन (वन नत रत कुर्द्भक्ष किनियहै। (म्यात यक नक किहू तह । কাছের বিপদটা দেখনে—ভার প্রতিকারের চেষ্টা कत्राष्ट्रे ब्रह्म-कठकछ। উद्यावनी मक्तित्र आर्याभ कत्राहर द्वांत- এই চেটার ছুরুছতা দেখেই হোক বা আছ বে ক্রানো কারণে হোক—তারা নকল করাটাই गरम यान करत्राह्म,-- शत्रनी डित (य अकिं। मार छ नुष्ठनक चाह्य, अनात्रात्ने छा' निरत्न हम्किरत्न निर्ण পার্বেই সহকে খ্যাতিটা আয়ন্ত হোতে পারে, কারু কাৰু এরণ- প্রতিষ্ঠা-শিশাও বেন আছে বোলেই त्वांव रम्

স্প্রীত বিশ্ব-বিভাগরে বাসলা ভাষায় এম-এ পরীকা দেওয়ার ব্যবহা হেটিয়েছে। এই ব্যবহার আমাদের যে মহোপকার হওয়ার সম্ভাবনা হোয়েছে, সে সহজে করেকটি কথা বলা দর্কার।

এ পর্বান্ত আনাদের শিক্ষিত সম্প্রদার বাক্লাসাহিত্য
সম্বন্ধ পুব কমই ধবর রাধ্তেন। বাক্লা-সাহিত্যটা
স্বদি হাজার বছরের পুরণো হোঁয়ে থাকে, তবে এর ৯৫০
বছরের বিষয়ণ সম্বন্ধে শিক্ষিত সম্প্রদায়ের শতকরা ৯৯

जनहै अविध्य हिरान । डीरान वर्षा वाता नवानवरन হোরে বালগা-গাহিত্তার কিছু চট্টা কর্তেন, তারা काष्ट्रत किनियती, यात व्यत्नकति विकाली मक्न, ला এত বড় কোরে দেখুভেন, যে, পোড়াফার খা:টার যে কিছু মূল্য আছে তা সীকার কর তেই কুটিত হোতেন। डाएरत गर्था जरनरक जानात तागरमाहन बाह अमन कि বিভাসাপৰ মহাশয়কেও বাসদা ভাষার প্রবর্ত্ত বোলে মনে কর্তেন। শিকিত সম্প্রদার ঠাকুর দেবভার প্রতি वीठम्पृह दलन, क्षक्ठा कीर्त्त छ श्राठीन बाजा भारतात किनिय मान दकारत छ। शास्त्र की मृता दशास (शरनन। कृष्टियांत्र कामीमात्र कविकद्दश्यक मूमिन रमाकात्मत (माठे अमीरणत भारम श्राम निर्देश द्वारत निष्ठिष्ठ (रात्नन; टेड्डिशान्तरक मूहि-मूक-कंत्रारनन हेक्ट्रिय मान कोर्ज जांक जाननांत जन मान कर्राष्ट कृष्ठिত शालन ; (करन तिक्म्भी बत, मिल्टेन, वाहेबन ; क्वन हिनियन, खाडेनिः, (नशी : क्वन वाद्नार्ड'न, (मरवतनिक, देउकिन म्। এই পাঠই পাঠ,-विनाही विष्यिष्ठोत्रहे व्यार्थारम्ब द्यान, त्मन त्कानाव त्नारफ बहेन। দেশের জিনিব দেবে তনে তার পর তা অঞ্জী কর্থে कथा शास्त्र ना। किंद्ध (न किनिय (मध् लीन ना, अनत्त्रन ना, नाक मिं हेरक विनाद कारत मिरनन,-रवनन छारव কোনো কোনো শিক্ষিত হটকারী বুবক ভার মা বাপকে অগ্রাহ্য করে, পিতৃপুরুষের পূজার স্থানকৈ খুণা করে, তেমনই ভাবে প্রাচীন সাহিত্যকে বৰ্জন ক্রুগেব। কিন্তু কালো চাৰ্ড়াটা ত বদ্লান যার না, আর পিতৃপুত্রৰ হোতে পাওয়া মনটার বৃতিও বে দেশীজাবের অমুকৃদ-वहित पृत्व "वा-श-वा" कवृत्व कवृत्व श्वतान दशाह (नर्व निक (यमन जात मारमत चौहन (चारम, नामारमत विश्वविद्यानरात ছाज्रान चाक टचनहे कारत मास्त्रत ভাক গুনেছে, তার। যেন ধাত্রীর কাই থেকে মারের कार्न अरम भड़्रि, अमनहे छात्त्र चानना! त्र्यून গিয়ে কি আগ্রহ সহকারে ভারা কবিক**ছণ্ডব**িভ

ৰমুখাৰতীৰ পান পড়াছৈ, কত টাকা টিমনী কোৰে,ভাৱা हैंबहमा देखिहारमा वातारता (यह तह-नकन वहेरवह मुक्ष (बारक दिल्ल हम्दक डिन्ट्स, देवकव विश्वकरमत भन প্রোক্তে ভারা বিলাভী কবিভার ব। পারলি, সেরপ ভানল लाह्य वा द्वारे नीम त्वारन करन निरम्भिक, जात मरना 🕶 বাণি🗣 পুঁলে পেরে আজাদিত হরেছে। देशस्त्रहिलामुक निहारणे निरत विचविषानिहार छेक-निक्षि भरोगिक मनैस्पर्य (शांत्र गेड् (इन ! (य-नवन बिर्मानीनचार इक्कर उन्हें निवत्त डेर्ट्ड चन्नान दत्रनि, ৰা এডফিন সহল হোতেও সহল মনে কোরে আপ্রাব্য করা कुरबहिन-दुन्हें भरव अरम् नियन क्रमनः द्वर्षः वारकः। बात- . ৰুত্ৰ বিৰয়েই শভ শভ নেটে বুক ও টীকা টিপ্লনী বাজারে किन्द्र भारता यात्र किन्न वाननात होका विज्ञनी बद्यान क क हात डेक्टर बिरन बिर्ण युक्त कारत कत्र हरहा। ल्ह्यक एटान (यम व्यात क्रिय अत्याह, व शाहित्यत স্থায়া নয়, এবানে নিজেদের স্থান্তাবালা নিজেদের কর্তে ब्रुक, जात्र ये मिर्ड ७ स्वाह कि जारह।

প্ৰথম তর হোরেছিল বাজনার এম-এ পড়তে চ্জন অক্তমন্ত্রীয়েই জ্ট্রিক কি লা প্রেল্ড। কিন্তু এই প্রথম অংশরেই তথ জন ছাত্র হোরেছে। তা' ছাড়া প্রিত্তকেন, প্রবীণ গ্রাজ্যেট দলের মধ্যে অনেকে ১৯০০-১০০ ভিল্লেক হোরে পরীক্ষা দেবেন বোলে জ্ঞানর বেধেছেন—ভালের কি উৎসাহ।

বাসনার এব এ নিছে বোলে প্রাক্ত পালীর ও
ছল্পুরুষ্ধ কাবাতবের সঙ্গে আর ১২টি ভাষার বংবা
কোলো একটি জান্তে হবে। সেই ভাষাওলি হছে
জিলা, বৈথিলী, আসামী, হিল্পী, গুলরাটী, ভেন্ও,
জামিল, মরাসী, মলয়ালন, করাড, নিংহলী এবং উর্জ্ ।
কুই ভাষা-গুলির প্রত্যেক্টির জল্প একটা রুভির সংখান
জাছে; সেই লোভে প্রত্যেক ভাষারই অন্ততঃ একটি
কোরে ছাত্র আম্বার পেলেছি। আর সুবের বিষর
রুজনান সময়ে বিশ্ববিদ্যালয়ে এই বাদশটি ভাষা শেরাবার
কিন্তা দাল্লটি অব্যাপকও পাওয়া গেছে। এ বছর

विश्विष हात शाक्ता (गहि, श्रिक्ताल शांत हाहैत्व ভের বেশী ছাত্র পাওয়ার সম্ভাবনা। "পড়পড়ভা একটা दिनांव बहुत्न चांत्र श्रीह बहुद्देश मुख् मुख्य विश्वविष्णामश्र (शास्त्र चाड़ा रे गण चाज वात श्वास दीवा সমষ্টিশত ভাবে ভারতবর্ধের সমস্ত ভাষা জান্ধ্বন। এখন ভারত-ইতিহান ভারুল কালন প্রভৃতি ক্লভ वाबरेनिक विवत्रम, विस्तृभी स्वत्रभातीसम्ब किन् বিশ্বতি এবং যুদ্ধকর্মশরাকর ও ভূমিদানস্চক করেকবানি তাম্বাসৰ ও প্ৰস্তৱলিপি হোতে সংগ্ৰহ হছে। কিন্ত দেশের, লোকস্মাজের, দেশের ধর্মের ইভিহাস অভি माबाक्ष बाबता देशराहि। त्रहे हेडिहान औरहिनक ভাষাসমূহের মধ্যে আত্মগোপন কোরে আছে। এই আডাই শত শিক্তি ব্যক্তির ছারা পাঁচটি বংগর পরে ভারত-ইতিহাবের, ভারত-সাহিত্যের, ভারত-ভারাভারের ন্তন যুগ আরম হথে। বিলেশী পণ্ডিতপণ্ তথন ভারতবর্ষ সম্ব্যে সম্ভ তত্ত্বের জন্ত আবাদের মুধানেকী মুহবন,এখন दिमन बाबता डाटनड मुशारशकी (बाद्य बाह्य। विश्वविद्यानदः वक्रावात अहे नव-विश्वान अक्षा श्रीकाल प्रितिकावत পুৰ্বাভাগ দিছে। এর মূল্য যে কডটা জাজিখন নিব্ৰপণ করা অসতব। এ বিদেশী আপেল নর আইরা সভাই নেংড়া ও ফজ্লী আমের চারা বুনেছি। আমাদের न्डन वात्रात्मत्र विनि यांनी त्रहे चाछरणास्त्र नर्सरणाह्यी শক্তির আগ্ররে এই নবীন তক্তি আমাদের করতকতে পরিণত হবে. এই আশা কোরে আমরা বোসে রয়েছি।

কিন্ত আপনারা তনে হংগত হবেন, বৃষ্টেরের উৎসাহ
ভাবে এই উত্তম ওকিরে বাওক্সর স্থাবনা আছে।
আধুনিক সমরে বলসাহিত্যের সেবা কোরেই আমরা হা
কিছু ক্রতিবলাত করেছি। আল রবীজনাথ বিব-বিলয়ী
বোরে আমাদের এই ভাষাকে লগতের চন্দে উজ্জল
কোরে দেখিরেছেন। কিন্তু দেশীর লোকের উৎসাহ
কই ? বাললার জন্ত এক কপ্রত্যন্ত কেন্দ্র লিজ্পেন
না। আমরা গাঁড়াব কোথার ? বিজ্ঞানের আকাশ-

**कृष्य** अवेग७ प्रमात्रज—िन्ह ज्ञानात्र अनुक*ु*राद्य मार्गिन नक नक क्षेत्र कि मिर्क नाम हाता कि बा পাওমা পেছে ভার মৃদ্য লাপদারা বৃক্বেন না। /একমাত্র কাশিমবাঞ্চারের মহারাজা এবং জমিদার গোপালদাস চৌধুরী সামার টাকার প্রতিশ্রুতি नियार्डन। अ नित्क हिन्नी ७ देशिकी, या अधनक भूग भूतीकात विवन्न (शीरत माँकान्ननि, जात बक्र (भडेनकन দৈশি হোতে প্রায়ই দশ কালার, বিশ কালার টাকার शांन चाम्रह ।-- वाक्रवाद क्य (क्षे काष्ट्राह्म ना ! ৰীয়া ধনী তাঁয়া কিছু "করুছেন না--আৰাদের দীনা বঙ্গভাষা তাঁর ধনী সস্তানদের নিকট হাভ পেতে আছেন व्यापनात्रा ७०० मह०० । १०० । १००० वा कि पूर्व मिटि भारतम, छाटि व्यामता कुछार्व हर । भड़ारात পুত্ৰত তলি টীকাটিপ্লনী সুদ্ধ ছাপাবার খরচ জুট্ছে না; অধ্যাপকস্ণ যতটা সম্ভব সার্থত্যাপ কর্ছেন, কিন্ত धरेखाद कर जान हन्दर ।

चार्च चार्य भागात बननी रत्रज्यित शक (शाट व्यागारम्य गारम्य कार्ष (नवा जावाय वक्त व्यापनारम्य कारक नेष्णिक्कि, এতে आमात अभयान त्नहे, मञ्जा त्नहे, এই বিশ্ববিদ্যালয়ের বাদলয়ে এম্-এর ভার আপনারা धार्य कल्ला, जिला दिश्य (क कत्रव १ आमारमत रय ভাষা या निविद्यिहित्मन, दि जावा जायात्मत्र पूर्व वर्षन প্রথম দুট্ত তথন আযাদের মাতা অমৃত জ্ঞান কোরে चब्टन-डांत कान कुष्टिय (यड ; तिरे गारात मान, ्राष्ट्र याराव कारनत अमृरण्य यशामा यामनाता कत्रान-এইটি আমার্ক্টানর্বন্ধ অভুরোধ। একবার কৌভুহল-िनद्रवे (द्रार्थ मार्गालिक नवगठिक वालना क्रांत्रिक शिर्व (म्यून,--वाभनाम्य वानन राष्ट्री (हानदा कि व्यक्त উৎগাহে পড়ছেন—তারা অপরাপন্ন শিকা-প্রকোর্চকে शांकी गृह नाम निरंत्र एक न- वरः वाक्नात ज्ञान-पत्र विरक् भाइभन्तित (वारन (करनरहरन) अहेर्यारन रय निका इतक, जारड कारत यांगीलंद स्टब्स हे जिल्ला गुजन

কোরে শিখ্তে হবে।

বিশ্ববিদ্যালয়ে আর-একট শাখা আছে, উরি ভারতের প্রাচীন ইভিহাস খুঁলে বাব করছেন। হংপের বিবন্ধ সেই ইভিহাসটা একবারে মারীচাপা পড়ে পেছে, আনেক খুঁড়ে পাধর ও মূলা বারু কোরে সেই ইভিহাসটাকে উদ্ধার করতে হবে। স্থোনো কোনো হানে, বধা স্থারবনে, সেই ইভিহাস আন্থায় অভ বাম ও অপরাপর বাপ্তের বিবর খুঁছাতে ব্রেক্ত করে সে অর্থ কোথায় ?

সম্রভি সিংহল দেশের শিকাকমিশবুনর ফাসী ফ্রেলার সাহের কলিকাভায় এসেছিলেন। ভিনি সেই रित कराना करनावन व्यक्त ; जिनि द्वारे रितान निका नक्षक (य त्रीजित श्रवर्शन (कारताह्रन-कार्या মতে তাই প্রকৃত রীতি। তিনি তারী ছাত্রদের ডেকে वर्ताहम,-- "वर्तरत्र करव्रक मात्र (छामत्र) वाहरत्र थाक्रत, निर्वत कार्थ (मरमी निर्वत रागरक राष्ट्रांव অভ।" একদলকে বল্লেন, "তোমরা তোমাদের সাঁয়ের আশেপাশে কতকগুলি স্থান নিৰ্দেশ কোৱে একটা গঙী ঠিক কোরে নাও,—গেই গভীক ভিতরে যুদ্ধনুমুক্ত क्रभक्षा, श्रवाप-वहन, हिन्छ कथा चाह् छ। मध्यद কোরে এনে সে-সহত্বে পরীকা দিতে প্রভাষ্ত,— घारमत निविष्ठ मम्बर्ड चात्र-मवात हाहेरछ छान स्टब् ভারা গুণামুসারে পুরস্কার ও স্বলারসিপ পাবে।" আর এकननत्क रल्दानन,--"एठायद्या (यथादन भूतात्मा मिनव, छु भ धनः भूताता कीर्डित स्रेश्नावत्मव चार्ड, रंजाबारवद्र গাঁরের আশপাশ থেকে তার একটা তালিকা ডৈব্রী कारत रमधिन जान कारत थूँ एक, जधकी वित स्थानिक निभि ७३ (एवगराव बुखाय धेर नक्ने एएर ७८म वार्व दिवादि भरीकात क्या शक्ष वर्ष भाक ।" वह चारका পুরাণো হাতে দেখা পুঁথি, দেখের ঐতিহাসিক কথা— न्माख्य विवर्तगरे उत्र उत्र कारत शूँक्वांत क्रक क्षाक মহাশ্ব ছাত্রদের নিয়োগ করেছেন।

वास्य'र्ग तय दखत भारतन (शास्त्र थारक, छा'- वास्तात আছাও তিনি সেইরপ ব্যবস্থা করেছেন। বারা এইভাবে अधिशानिक छच कछकडी आयुष्ठ कारत करनाछ.-ভাদের ভিন্নি ভারতবর্ষের নানা স্থানে পাঠিয়ে দিয়ে अ (मर्भन्न अनिष कीर्डिकमान रमन्त्रात क्य निरम्ना কোরে থাকেন। ভারা ঘূরে ঘূরে ভাষমহল দেখছে, भूत्रीत मिनत (पेर्च (ह, अबदा, कागार्क ७ माइता मिनरन ভিনি বল্লেন,—"জুাতীয় শিকা, (मर्थ (वज्ञा मिर्का द्वापक हे डिहान थ (य ना कानत - जात चात कि निका हरेगा ? डांदक किलामा कवा दरना, "विध-विष्णानम कि अहे निका-श्वरुष्ठित चत्रुरमापन करत्रहन ?" ्रिम् (राम् वनुरान, - जाता जात करानकि अथमण्ड disaffiliate क्यात छत्र मिर्ग्नाइएकन, क्यान्छ उारक সম্ভৰ্ক কোৱে দিয়েছেন। কিন্তু তিনি বিলাতের বাঙ্গাল **অর্থাৎ ক্ষ্ম জাতীর—ভার গোঁ** তিনি কিছুতেই 🌉 १८७ मिन 🌬 🐂 वर्षाय छ। त्र करमञ्जू (य-विश्वविमान १४३) অবর্গত তারী হাইলন হোয়ে গেছেন, এমন কি, তার প্রবর্ত্তিত শিক্ষা প্রণাদী তারা ধীরে ধীরে গ্রহণ কর ছেন। धे है (हारक शारक। भूताह्ना चनिश्रानित चन्नकात-भन्न (७ एक याता साम्यापक एरेन, उत्तित शास्त्र (माक-वाबात কাটা বিধবেই—তারা দে-সকল গ্রাহ্য কর লে পৃথিবীটা ত চিরকাশই পিছিয়ে পোড়ে থক্ত।

व्यामारमञ्ज द्वालक निका मण्युर्व ना कारत विरमणी শিক্ষতিকর শূলে জলপেচন করলে ভার বে ফল দাড়াবে---ভা কুফল হবে নিশ্চয়। আমরা কি সাঁওতাল না ভীল বে, আমর্ নুতন কোরে সভাতার পাঠ সুরু কোরে দেব ?—একটা পেন্টালুন পোরে ও বোল্যাহ্যাট মাধায় দিয়ে একেবারে চেহারা বদ্লিয়ে ফেল্বে ? দশহাজার वहत्त्रत ज्येनात क्य व्याप्तता ; ओरे प्रम राजात वहत्त्रत স্বৃতি মুছে ফেল্লে আমাদের প্রবীণতার কি রইল ? শভাভার ইতিহাসে ত'হলে বে আমরা বালক হোরে समा ७ फ़ि निटंड चाइड कत्रा अथन चामतः (नर्णद ইতিহাস পরের মূবে ওন্ছি, দেশের সাহিত্য পরের চোখ ্দিরে দেখ্ছি।—রামারণের তত্ত্ত ওয়েণারের মুখে শুন্ছি, — মৰাভারত সম্বন্ধে হপকিন্স কি লিখেছেন ভাই জানতে े छिन्त्रीय रहारत्र आहि। आभारनत मुख्य ताहरत एक कि वलन, जा कान्यात अन्या आभारमत मत्कात् ·चार्ट-किश्व चामारमत मर्ख-शाम पत्कीत भागारमत ্ৰি আছে, তা নিজেদের জানা। আনরা কয়লনে স্মগ্র

বিশালীকির রামায়ণখানি কিংবা সংষ্কৃত মহাভারতবানি পড়েছি । অথচ সংস্কৃতে এম্-এ পাশু কোরে ওয়েবার ও ম্যাক্স্যুলার সম্বন্ধ প্রাভ হোঁরে উঠেছি।

নিজের দেশের শিক্ষার বর্ণপরিচর না হোতেই আমরা বিলাতে গিঙে শিক্ষালাভের জক্ত বাস্ত হয়ে পড়েছি। এই জক্তই দেশের যা' কিছু তার উপর অবজ্ঞার ভাবটি নিয়ে আমাদের মুখ বন্ধ। এই জক্ত যাঁরা ভগাকখিত শিক্ষালাভ করেছেন তাঁরা নিজেদের আদর্শ একেবামে বিসর্জন দিয়ে বোসেছেন; দুশ্মীর দিন আমরা যেরপ হুর্গাঠাক্রণকে বিজ্ঞান দিয়ে থান্দি — সেই ভাবে বিসর্জন দিয়েছেন। আর বাঁরা নুতন শিক্ষার ভতটা অগ্রসর হন্নি—তাঁরা বাহিরের আলো ও হাওয়ার রক্ষ্ম একবারে ইক্ষ্ম কোরে অরধানিকে অচলায়তন কোরে রেথছেন।

এই হুর্দিনে ভারত-লক্ষীকে আমরা উলোধন করছি। তাঁর করণাবদেওি প্রাসন্ন দৃষ্টিতে যেন আমরা দেশের প্রতি অমুরাগ ফিরে পাই। তার পামের আলতার भाग (एएथ (एएथ (यन व्यामता चरत्र प्रथ हिटन हम्ट्र পারি। তার ওত ঘট যেন ঘরে ঘরে প্রতিষ্ঠা করুতে পারি, তার নৈবেদ্য ও চন্দনার্ত্র পুষ্প बिद्य देवन आमन्त्रा সমস্ত জাতি সন্মিলিক হোতে পারে। দ্বেশকে অন্তরের श्रृहित चुना कारत स्थल स्थायता एम्पहिटेज्यीत इत्रातम পোরে সভাসমিতিভে গিয়ে চীৎকার কোরে করভালির **क्टो-भ**ठे भक्त कात्न जाना ना नागाई। প্রাচীন খাচার বীতি-নীতি এখনকার কালের উপযোগ্য नग्र ७।' सत्री-कृत्नत यठ चर्म পড़्क ; चात्र या चार्यापित সার জিনিষ,--ভা যেন, কাঠরে যেরপ মাণিক পেয়ে (छना (वारन करन निरम्निन, तम जारव करन ना मिहे। গোপাল উড়ে বড় থেদেই গেয়েছিলেন—''কাঠুরে এক मानिक (भन, हिना (वार्त क्ला क्नि-बाधमान के। एडि मानिक महाकत्न (हेत्र (भन ना।" आमत्रा विद्यान (११८७ व्यक्तिक त्वत, किञ्च व्यक्तिमुद्दक छ। ध्रे वी, वतः निष्कत (पण्टक कार्ण (পर्य शिकुणूतंनगर्गत हित्रवेश-माधनात मृशि माणाय द्वारा वाहेरत रहाएंड कि आन्एड भाति (गरे चालियात्म वात रूत)

बीमी (नगहवा (नन।



#### ভাটীয়াল গান

( ৯ • ) \*

- শ্লাগণরে চৈত্তস্তর জাহাজ

স্থরধনীর ঘাটে রে ।

ডুডিন ইেশন হইয়াছে

ঘাটের নিকটে রে ॥

চৈতনোর জাহাজখানা,
আহিংসা তাহার নিশানা,
বেতে পারে যার হয়েছে
উপাশনা;
ওরে মধুমাথা প্রেমিক যারা,
ভই জাহাজে উঠে রে॥

টিকিট কাটে নিত্যানন্দ,
দূৰ্শীনদার অবৈতচন্দ্র,
জলমাপে গদাধর আর
রামানন্দ;
ওই প্রেমের কলে জাহাজ চলে,
কামের ধ্যা উঠে রে ৪

এই ঘাটে টিকেট করে,

যে গিয়াছে বিষয় ছেড়ে,

পূন: স্বার আসতে হর গা

এ সংসারে;

ওরে এক টিকেটে যেতে পারে
কালিনী তটে রে ৫

বিগত হৈত্ত সংখ্যার প্রকাশিত ভাতিরাল গানেব
ক্রমিক সংখ্যা ৭৯ হইতে ৮৯ হঠবে। মুলাকরেরর দোবে
উহা ১ ইতিত ১২ লিখিত ইইরাছে । প্রঃ দঃ।

ভক্তিখন বিহীন যারা,
ভাগের হয় না টিকিট করা,
দণ্ড হয় ভণ্ডামিতে
পইলৈ ধরা ;
ব্যা পড়েছে সন্ধটে রে ॥
( >> )

ওই যে কালা বাজার বাশী পো স্থী, ওই যে কালা বাজার বাশী। জোমরা যেরে বল ভারে পো স্থী, আমি কেমন করে বনে আসি

আমার গৃহ কাজে মন খুন্তক না,
শান্তরী দেব বড় গৃহ্ণনা গো;
তবু সে বে বাশীর করে
মন হ'রে গো স্থী;
আমায় করে যে উদাসী ।

বাণী যতই বলে রাধা রাধা,
ননদী দের ততই বাধা গো;
আমি রাগের ভরে বদে ঘরে গো দ্বী
দদা নয়ন জলে ভাসি॥

গোপী বলে এত ভাবনা কেন, প্রেনের রীভি এদ্নি জেনে গো, ভগো প্রেম পাথারে যে সাতারে গো সথী, মুছে যায় তার মুপের হাসি ॥

কালার প্রেমের এত জালা সই, .
আগে ত জানিনা ৷
আগে জান্লে কিলো

্রাণ সপিতাম, ক্রিমুখে উপায় কি কর বা #

আমিত আমগা নারী, বক্ষে আমার দিয়ে ছুরি, আম্বি মরি করি বাচি বাঁটি, সংক্রমে করি কি তাই বল না ৪

क्षानिकारक दूर कन शांत, दक्षरन भागरत छात्र, जनक विश्व निन्ति नेत्रन सूर्य, क्षां स्विध्यक छोट्य क्षीतक शांद्र मा ॥

्यानारे कानीहत्त्व वरत, त्थान कि क्लेन्द्रक श्रीतत, खात त्थालन त्थानिक ना हहेत्त, त्थान धानत महत्त्व क्लोटन ना ॥

্ নত্ বিনিপিট্ট ভকারে যার, ক্রিলের মন আনে করিতে যাই । জ্রীটোডে সান করিলেরে মন, জ্যুম সর্গ ভবে নাই ॥

আৰি যদি মান্ত করিতে,

ক্রিক্রণালে রেখে নগনেতে,
নাসাতে হয় এক জোলার ভাতে;

তিন ধারাতে তিন দিন বহেরে মন,
যাটে সান করিতে সময় চাই #

সে মাটেতে লান করিতে, া ছাটা দুরি লাবধানেতে, লাড়ে চব্বিশ কেইখা ব্যক্তির মন, কোন্ বাটেতে কান কর্মির মন, রেখো তারে নিশান স্থান

গোসাই গৌরপ্রিরা বলে,
সান করলিনারে সমন্ত কালে,
চূড়ামণি যোগটী গেল বিকলে;
ডোর হয়েছিল, বুথার গেলরে বালক,
আর জনমে হরকি লা হর,

विश्वाम नाई॥

( 88 )

গউর ক্সপে যে ভূইলাছে প্রবোধ না মানে। ক্সপ বিশ্বনে ধৈর্ঘ ধইরে, গুড়ে রক্স সে ক্সেনে গ

গউররূপ কাল ভুক্তকে,
কংশন করে যার অকে,
তার প্রাণ জানে;
ওগো বিষের আলার
হইয়ে জালাতন,
বারিধারা নয়নে॥

জ্ঞান চৈতন্ত হইয়ে হারা,
সদার দের রূপের পাহাড়া
নরনের কোনো;
তারা জীবন বৌবস ধর্ম কর্মান

জনীনের নাই সে রভি, কিনে গভর হয় আন্দিডি, ঐকান্তি নিমে , কি আৰি বাৰা বাজাৰ নেগে বাজা, ফিহুতেছি বনৈ বনৈ ।

( >¢ )

পিরিভের বে এমনি রীতি
আমি আগে ত ছানি না।
জানিলে কি প্রেম করিভাম,
হইল বিষয় বাতনা॥

মন প্রাণ বিরাছি বারে, কেমনে পাসরি তারে; সদাই জাগে হৃদ্ মাঝারে ভারে ভূলিতে পারি<sup>ম</sup>না।

গোগাই উদয়চান্দে বলে, এই রীতি কি জানে সকলে, নিতাইরে তোর কর্মফলে, হল না প্রেম সাধনা।

( 20 )

ভাবের ধরে ডুবলে ভাবের মাহুষ পার। এই মাহুয়কৈ নিতা কররে মন, ভল এই মাহুবের রালা পার॥

গোপীর ভার অলে পর নেই বাছবের গল বছ, সূল পেরে বলে জ্বিক খারে মানুষ ভলন রসের করণু করিছন ক্ষেত্রন

ভবে রূপমন্ত্রীর দরা হয়।

ভাবের মাত্র্য রূপের ব্যন্তে,
বিরাজে বিরজার পারে,
সেই মাত্র্য আটল ধ্রে ;
আটল টলিয়া পোলেয়ে ব্লন,
তবে সে কি রূপের দেখা শার্ম॥

গোসাই গৌর প্রিরার বলে, ডুব্লি না ত্রিপিণীর কলে, ভাবের মাহুব দেই বাটেতে রীর; ভোর কর্মফলে জন্ম মরণ রে,

ভজ্লি না মাসুষের পার্নী

( 29

যন মানুষে মন নিলগো,
প্রাণ গেল ভার লাছে।
আমি হইলাম হইলাম
কলছিনী গো,
আমায় নিয়ে চল ভার কাছে॥

স্থিগো,

একদিন জলের ছলে গেলাম

স্থাধনী কুলে,
ভাষানে স্থান হারাইলাম

না গইনে পাছে;
সেই অবধি দল গো প্রাণ

কিছতে না আর কচে ম

ৰ বিভিত অনকার. বলিতে হইলাম ছাড়খার, ৰ' বুলিতে প্ৰাণ রাখা হইল মিছে; **श्रेमा जिल्ला दारका उन्नम,** আমার ভারো হইল মিছে ঃ

তিনের বরে ছব ধ'রে, नेत्र मित्रा (४ शृंदन करत्र, तिहै जना (य दक्त भारत, ্ৰতিই জনার কাছে ; अवीन वानक मारमद मान व जाणा (51'. ান্যয় কালে রাঞ্বা কাছে চ

আমার মন সদা কান্দেরে পেতে গউর চান্দে— আমার মন স্থা কা ক

रगोत कथा छन्दल कार्त. প্রকে পুরিয়ে দেছ

্র প্রেমের তুফান বছে প্রাবে, **জামার মন পারেনা ছুটে যেভে**রে, পড়ি ছয় রিপুর ফালে ॥

Cera भारत कि (य करित् मुद्रक पश्चिमा-व्यापनपद्र

काम कार्षियात काहाबी: विद्यालिए शहे ना

পড়ি অইপাৰের দৃত বাবে। গউর বলে গা' -ঝাড়িলে: গোপী বলে সকল বন্ধন व्यनायात्म यात्र भूतः ; তাই ভক্তি ভরে নাম সাধিয়েরে, पृत्व थाक् मन (अमानत्न॥

( 66 )

বিরজার পরে মানুষ আছে। नवीन वश्रम, नवीन नाशीख्यन, ভারা বিলাদে মত্ত আছে।।

ত্রিভঙ্গের ভঞ্জিমারূপ, দাড়াইয়াছে অপরপ্র

দিবা নয়ন হটলে সে দেখাতে পারে: ভরে দখী সঙ্গে প্রেমভরজেরে মন, অংক্রেণ মঞ্বী তার কাছে ৷

অসাব ৮৪ নিশাকালে, ভালা চাবি ঘুড়াও কলে, নয়ন ভটী--রেখে রূপের সাধনে ; প্রে--রত্ন বেলির উপরে রে মন, ভারা পেষরদে খেল্তে আছে,

আমার হুটল কপাল মণ্ট. শক্ষপর্শক্ষপ রস গন্ধ, সেই স্থক নাছি আমাতে: অ যার আশ্রনে আরপে সিন্ধিরৈ মন, আছে দেই সম্বন্ধ তার কাছে ৷



১০ম বর্ষ

আষাঢ় ১৩২৭

৩য় সংখ্যা

# বেদান্তের দার্বভৌমিক আদর্শ।

ভারতীয় বেদাপ্রবাদ উদার गार्ख(डोशिक जामार्ग्य ষারা অকুপ্রাণিত। উপনিষ্দই মুখ্যতঃ বেদায়। এই छेभिनित्तको (वर्णक निर्त्ताञ्चाल । বেনের সংহিতা ভাগে বে আদর্শ অকুরিত ভটগাছে উপনিবদে তাহাই অপুস বিকাশ লাভ করিয়াছে। একমাত্র উপনিবদেই সংগ্রায়িক আ জ্ঞাতার বৈচিতা ও সমগ্রতার পরিচয় পাওয়া বায়। কিছ এই কারণেই আপাতদুষ্টতে বোদ হয় যে, উপান্যান পরম্পর বিরোধী মতবাদ স্থান গাভ করিয়াছে। আর এট বিনরাপের মীমাংসার জন্ত উত্তরমীমাংগা—, যাহা সচরাচর বেদান্ত দর্শন নামে অভিহিত হয়,--তাহার উদ্ধা হট্যাছে। বাদরাগণের ব্রহাত্ত মামাংসা দর্শনের মূল প্রস্থ। विविध क्षकारत्र वााथां इहेबाह्य। ভন্মধ্যে ভগবান **भक्तश**िर्या कुछ वाश्यादे खात्रख्य कित्यम श्री रहे। शास्त्र क्तिशाह्य। देशात कात्रण अहे या जिनिहे उपनियालक

আপাতবিরোধী মতবাদের সমন্বয় ও সামগ্রস্য বিধানে সর্ব্বাপেক। অধিক ক্ষৃতির দেখাইয়াছেন। তাঁহারী ব্যাপ্যাতেই উপনিষদের সার্ব্বতেলীমিক আদর্শ সম্পূর্ণ অক্সার রহিয়াছে। অতএব আমরা তাঁহার মত অবলম্বন করিয়াই বেবাপ্তের সার্ব্বতেলিকতা বুঝাইতে চেষ্টা করিব।

সকল দেশের সকল প্রকারের দার্শনিক ও ধর্ম প্রবক্তারাই সর্ম্বাদীনম্মতরূপে থীকার করেন যে, জগৎকারণ সান্ত্রী সীমাবদ্ধ বস্তু নহেন; তিনি অন্তঃ। শতিতেও তাহাই বগা হইয়াছে। 'সতাঃ জ্ঞানং অনন্তঃ ব্রহ্ম।' কিন্তু শত্তরমন্ত্রীয় অবৈত্রাদা বনেন যে 'ঠাংচেছ যদি অনন্ত বলিয়া স্বীকার করিছে করা হয় তবে উংকে অহিতীয় বলিয়াও স্বীকার করিছে হইবে। কারণ, তুল্টী অনন্ত পর্যার্থ ধারণা করা যাইতে পারে না। অনন্ত পদার্থ অপ্রেক্তা বৃহত্তর কোন পদার্থত ক্রনায়ই আসিতে পারে না; উহার সমান কোন পদার্থত অঙ্গী লাব করা যাইতে পারে না। 'ন তৎসমন্তান্তাধিকশ্য দ্শাতে'। এবং সেই কার্যেই এ৮টী স্বসীম ও আরেক্টী,

সদীম পদার্থের পৃথক্ অবস্থান ও ধারণা করা অসম্ভব।
অনক বলিতেই সীমাহীন ব্রায়। অনক পদার্থের বাহিরে
এবং তাহা হইতে পৃথক ভাবে আরেকটী পদার্থের অক্তিড়
করনা করিলেই অনস্তকে সান্ত, সসীম বস্ততে পরিণত করা
হয়। সভরাং ব্রহ্মকে দিতীয় রহিত না বলিলে তাঁহায়
অনস্তর্থ থকা হইয়া যায়। অতএব স্বীকার করিতে হইবে যে
তিনি 'একমেবাছিতীয়ং'। এই শ্রুতি বচনের এরূপ অর্থ
নর যে, ঈয়র এক বই হুই নাই। এই বাকাকে বহু দেবতাসাব্দের (polytheism) প্রতিবাদ স্বরূপ ব্যবহার করা
সকত নহে; ইহাকে কৈডবাদের (dualism) প্রতিবাদ রূপে
ভারহার করা উচিত। ইহার ছারা একেশ্বরণ (monotheism) সমর্থিত হয় নাই; ইহা দ্বারা অক্তেবাদ (monism)
প্রতিত্তিত হইয়াছে। ইহার অর্থ এই বে এক ব্রহ্মই আছেন,
ক্রার কিছুই নাই।

কিন্তু এ সম্বন্ধে আরও একটু স্থা কথা আছে। যাহা

অনপ্ত ভাহার অংশ করনা করাও সন্তব নহে,। অনস্ত
পদার্থকৈ ভাগ করা যাইতে পারে না। যাহা ভাগ করা

মার, বাহার অংশ করনা করা সন্তব, তাহাকে আর অনস্ত

বলা চলে না। সমুদ্র যদি প্রক্রতপক্ষেই অসীম হইত, তবে
ভাহা হইতে এক বিন্দু জল পূথক করা সন্তব হইতা না;
কারণ ঐ একবিন্দু জল সমুদ্র হইতে বিভিন্ন হইয়া সমুদ্রের

অসীমন্থ নই করিত। স্তরাং যাহা অনস্ত তাহা যে কেবল
অবিতীয়, ভাহাই নহে, ভাহা নিরংশও বটে। আর যদি
অনস্ত পদার্থের অংশই করনা কর তবে উহার প্রত্যেক

আংশকেই অমস্ত বলিয়া স্বীকার ক্রিতে হইবে।
পূর্ব হইতে যদি পূর্ণও গ্রহণ কর তবে পূণ্ই অব্নিষ্ট

বাকিবে।

"পূর্ণসা পূর্ণমাদায় পূর্ণমেবাবশিষ্যতে।"

এই শ্বন্থ অবৈত্তবাদী বলেন যে, ত্রন্ধ যে 'একমেবাদিতীয়ং'
ভাষাত বটেই, পরস্ক ভিনি সর্ব্বপ্রকার ভেদরহিত, তিনি
ভাষাত্তবাদার, তিনি নিরংশ, নিবিশেন। তাঁহাতে
সম্পাতীয়, বিজাতীয়, বগত, কোনপ্রকার ভেনই সম্ভবে না।

এ সহবে সারও কথা এই বে, ব্রহ্ম যথন অনস্ক, তথন তাঁহার আদিও নাই, মধাও নাই, অস্তও নাই; 'তিনি অনাদি মধ্যাস্তং'। তাঁহার ভূতুও নাই, বর্তমানও নাই, ভবিষ্যৎও নাই। তিনি 'অভাত ভূতাচ্চ ভব্যাচ্চ'।

তাঁহার যথন আদি অন্ত মধ্য নাই, ভূত ভবিশ্বং বর্ত্তমান নাই, তিনি যথন সর্বত্ত সর্বদা এক অবস্থায়ই বিরাজ্যান তথন বলিতে হইবে যে, তাঁহার বিকারও নাই। তিনি নিত্য এবং নির্ব্বিকার। এক কথায় তিনি দেশ কাল ও নিমিত্তের (Time, space and causality) অতীত। অতএব তিনি নিরুপাণিও নিগুল। তিনি সমস্ত বিশেষণ হজিত, তিনি 'অপল্পমম্পর্শমর প্রবায়ম', তিনি 'অবাঙ্ মনসগোচর' মন তাঁহাকে ধারণা করিতে পারে না। বাক্য তাঁহাকে প্রকাশ করিতে সক্ষম হয় না। "যতো বাচো নিবর্ত্তত্তে অপ্রাপ্ত মনসা সহ"। মন সেথানে পঞ্জ; ভাষা সেথানে মুক। বিধিমুখে তাঁহাকে নির্দ্বেশ করা যায় না। নিষেধ মুখে তাঁহাকে কথফিংরূপে লক্ষিত করা যায় না। নিষেধ মুখে তাঁহাকে কথফিংরূপে লক্ষিত করা যায়। শ্রুতি এইজন্ত তাঁহাকে 'নেতি নেতি' এই লক্ষণে লক্ষিত করিয়াছেন। "সি এয় নেতি নেতি নেতি আয়া অগ্রহ্যা নহি গৃহ্যতে।"

তবে বদি বিধিমৃপে তাঁহাকে নির্দেশ করিতে হয় তবে **তাঁহার** সম্বন্ধে এই মাত্র বলা বাইতে পারে যে, তিনি এক **অধিতীয়,** নির্বিশেষ, নির্বিকার, চৈতন্তসন্তা; তিনি 'স্চিদানন্দং'; তিনি 'একমেবাদিতীয়ং ।' একমাত্র সেই অনস্ত চিৎসতাই আছেন, আর কিছুই নাই।

এখানেই মায়াবাদের বীন্ধ নিহিত রহিয়াছে। এক
ব্রহ্মই যদি পাকেন আর কিছুই যদি না পাকে তবে এই
বিবিধবৈতিব্রামর জগৎ,—গাহা আমরা প্রতিদিন প্রত্যক্ষ
করিতেছি, যাগার তরতিক্রমনীয় প্রভাব আমাদিগকে
একেবারে অভিস্তুত করিয়া রাখিয়াছে—ইহা কি অনীক ?
ইতার ক প্রকৃত অস্তিত নাই ? উত্তরে,শহর মতাবলহা বৈদান্তিক
বলেন, ব্রহ্ম সংগ্রহুতিকে আর সত্য ব লয়া অক্লাকার
করা যাইতে পারে না। ব্রহ্ম চিং, প্রকৃতি অচিৎ। ব্রহ্ম জ্ঞানম্য,

শহুতি অজ্ঞান। অদা নির্ব্ধিকার, প্রকৃতি বিকারশীল।
ইহার মধ্যে কোন্টী সভা ? সাংখ্য বলেন উভরই সভা ।
ইবলান্তিক বলেন ষে, তুইটীই সভা হটতে পারে না। কারণ
ভাহা হইলে চিন্মর অদা পদার্থের অনন্তত্ব বা অবিভীয়ত্ব
অক্ষুণ্ণ থাকে না। অভ এব অবৈভবাদার সিদ্ধান্ত এই যে
এই প্রকৃতি মারা, ইহার কোন প্রকৃত অভিত্ব নাই। ইহা
সং নর; একমাত্র অদা পদার্থই সং। এই অচিং জড়
প্রকৃতি চিন্মর অক্ষাভিরিক্ত বল্প, মুভরাং ইহা অবস্তা।
"বল্প স্থিচিদানক্ষ্মন্বরং অক্ষা। অজ্ঞানাদিসক্ষজ্বস্থ
সমূহঃ অবস্তা।"

কিন্তু প্রাকৃতি যেন সৎ নয়, কিন্তু তাই বলিয়া কি ইহাকে একেবারে অসং বলিতে পারা যায় ? শক্তরমভাবলয়ী বৈদান্তিক বলেন প্রকৃতিকে একেবারে অসৎ বলাও সঙ্গত নর। কারণ ইহার অভিত্বত আমরা ব্যবহার ক্ষেত্রে প্রতিনিয়তই অনুভব করি। স্বতরাং ইহাকে শশবিষাণের মত একেবারে অলীক বলিতে পারি না। ইহা এই অর্থে অসং যে. তত্ত্তানের উদয়ে ইহার অন্তিত্ব থাকে না। স্বপ্ন निन्दबरे अप्तर वा मिथा। कात्रण जागतिक रहेतन देशात অবিত থাকে না। কিন্তু প্রপ্ন মিথা। ১ইলেও স্বপ্নদর্শন মিথা। শশ্বিষাণ্ড মিথাা, স্বপ্নও মিথা : উভয়ই মস্তিক্ষের বিকার মাত। কিন্তু তথাপি এই ছটয়ের মধ্যে প্রভেদ আছে। শশবিষাণ কেই কথনও দেখে নাই বা দেখিতে পারে না: স্বপ্ন কিন্তু নিদ্রিতাবভার আমরা প্রতাক করিয়া থাকি। স্বতরাং ব্রপ্লের অন্তিত্ব নিজিতাবস্থায় সিজ, আগ্রতাবস্থায় অসিষ। মায়াও সেইরূপ ভত্তজানের অকুদরে দিন্ধ, তত্ত্তানের উদয়ে অদিন। অতএব মায়াকে একেবারে অসংও বলা যায় না। তবেই হইল, মায়া সং ও নয়, অসংও নয়, এবং থানিক সং ও থানিক অসং এরপ্র নয়। ইহা অমূভব সিদ্ধ বলিয়া ইহা অভাবরপও नुष्ठ: अछ এव हेश अक अनिर्विहनीय किहू। ্ইহার অধিক আর কিছুই বলিবার যো নাই। "অজ্ঞানন্ত

নদসম্ভানমনির্বাচনীয়ং ত্রিগুণাত্মকং জ্ঞানবিরোধি ভাবরূপং যৎকিঞ্চিৎ।"

किन्न यश्रमृष्टे श्रीनक कि क्रारश्रीतकत म्रक्तारम অমুরূপ ? বৈদান্তিক বলেন, তাহাও নহে। কারণ স্থান্ত ध्येन्टर धिरिनर वार इत्, किन्त बन्नावन्द्नत भून পर्वास क्रार अभिक्ष वाम इस ना । यथ ७ छत्र छाउँ मिथा। इटेरन ९ উहारमव मर्तमा এट প্রভেদ। এই কথা আরেক ভাবের প্রকাশ, করা বাইতে পারে। শ্বপ্লের প্রাতিভাগিক সতা আছে, কিন্তু ইহার ব্যবহারিক সতা নাই: কারণ জাগ্রত অবস্থায় ইচার বাধ চয়। জগতের বাবহারিক সভা আছে. কিন্তু পারমার্থিক সভা নাই: কারণ ভূরীয় অবস্থায় ইহার বাধ ২য়। একসাত্র ব্রন্ধেরই পারমার্থিক সন্তা আছে ; কারণ কোন কালেই কোন অবস্থায়ই ভাঁছার বাধ হয় না। "একরপেন হাবস্থিতো ঘোহর্থ: স পর**দার্থ:।"** একমাত্র অনন্ত পদার্থই ভূত ভবিদ্যং বর্ত্তনান,— দকল সমরেই, এবং সুযুগ্তি স্বপ্ন জাগ্রত তুরীয়,—সকল অবস্থায়ই নির্ব্বাধ হইতে পারে। অতএব একনাত্র ব্রহ্মই পরমার্থ, একমাত্র তিনিই সং। জগং প্রপঞ্চ ব্যবহারতঃ সং, কিন্তু তত্ত্বঙ অসং।

ত্ব দৃষ্টিতে জগং যথন অসং তথন অবৈত্বদীর মতে জগংস্টিও ওবৃদ্টিতে অসং। কারণ, ব্রহ্ম নির্কিনার । কোন অবস্থায়ই এবং কোন কালেই তাঁহার বিকার হইতে পারে না। এই জন্য অবৈত্বাদী বলেন যে, জগৎ স্থাষ্ট ব্রহ্মের বিকার বা পরিণাম নহে; ইহা বিবর্ত্ত মাত্র। পরিণাম কাহাকে বলে ? "পরিণামভাবো নাম বস্তুনো ষথার্থতঃ স্বস্তুপং পরিত্যজ্য স্বন্ধপান্তরাপতিঃ; যথা ছগ্ধমেব স্বস্তুপং পরিত্যজ্য দ্যাকারেণ পরিণমতে"। আর বিবর্ত্ত কি ? 'বিবর্ত্তভাবস্তু বস্তুনঃ স্বন্ধপাপরিত্যাগেন স্বন্ধপার্থবিতঃ; তথা রক্ষ্মস্বন্ধপানিত্যাগেন স্বন্ধপারেণ মিধ্যা প্রতীতিঃ; তথা রক্ষ্মস্বন্ধপানিত্যাগেন স্বন্ধাবারেণ মিধ্যা প্রতীতঃ ।"

তৃথ্য যেমন দ্বিতে প্রিণ্ড হয় ব্রহ্ম দেরপু জগদ্রপে প্রিণ্ড হন না। রুজু ফেনন স্প্রিপে বিবার্তিক হর, ব্রহ্মও দেইরপ জগদ্রপে বিবর্তিত হন।
ক্রন্তুকে সর্পের মত দেখা গেলেও রজ্জুর যেমন প্রাকৃতপক্ষে
ক্রনান পরিবর্তন হয় না, দেইরূপ জগংস্প্রী আমাদের অমুভবশিক্ষ ছইলেও ব্রহ্মের কোন পরিবর্তন বা বিকার হয় না।
ক্রেইভবাদী বলেন এই বিবর্তবাদ না মানিলে অন্তঃ
ক্রিপেদার্থের নির্বিকারত অক্ষুয় থাকে না।

বি কিছ জগৎ যদি প্রমার্থতঃ অস্তাই হইল ভবে 🎒ৰ বি 🕈 জীবও বি মিখ্যা 🕈 যে হেতুবাদে, যে যুক্তিমূলে আঞ্জতির অভিত পণিত হয় সেই যুক্তি দারাই কি জীবেরও ্ৰতিৰ ৰভিত হর না ? বৈদান্তিক বলেন, না তাহা হয় না। **কারণ জীব ও একা** পরশ্পর বিরুদ্ধপ্রাক্রান্ত পদার্থ নহে। ্লাকৃতি অচেতন, ব্রহ্ম চৈত্রসময়: স্মতরাং এই উভয় এক ছইতে পারে না। কাজেই একটাকে মিখ্যা বলিতে হইবে। कि कीर मश्रद रम कथा थाएँ ना । কারণ জীব প্রকৃতির মত অচেতন নতে; জীব চৈতক্রময়। স্বতরাং এক অনস্ত চৈত্ত পদার্থের অভিত স্বীকার করিলে জীবকেও এমাই विगिष्ठ रहेरत। 'कीव उदेश्वत ना श्व:'। আংশও নয়, কারণ অনস্ত পদার্থের অংশ কল্লনা করা সভব नरह । उरव कि कीव ७ बक्ता मध्य कान भार्यका नाहे ? উত্তরে শৈদাত্তিক বলেন যে, জীব দোপাধিক, ব্ৰহ্ম **ঁনিকপাধিক। ঘটাকাশ ও মহাকাশে যে** পাৰ্থকা, জীব ব্ৰংক্ষও সেই পার্থকা। ঘট ভাঙ্গিলে বেমন তন্মধাস্থ আকাশ विश्वासाम नीन स्टेबा यांब, जाराब स्थारनामन स्ट्रांस जीव अ লৈইস্প এসে বিশীন হইয়া যায়। মায়ার গভিকে এক দিকে ি<mark>ৰেমন ৰোধ হয় বে, জ</mark>গৎ সভা, সেইরূপ আরেক দিকে বোধ स्त्र (य, कीव ७ अका शृथक्। এই कछ देवनास्त्रिक्ता वालन বৈ, অজ্ঞানের হইটা শক্তি আছে। একটার নাম আবরণ শক্তি; আরেকটীর নাম বিক্ষেপ শক্তি। অজ্ঞানের আবরণ শিক্তি আত্মার যথার্থ বরূপ চাকিয়া রাখে, সেই জন্য আমরা আত্মগ্রত সর্বব্যাপকভানি অস্তব করিতে পারি না। কুদ্র ুৰক্ষণ মেৰ কোন মতেই বছ যোজনায়তন আদিত্যমণ্ডলকে টাকিতে পারে না; কিন্তু তথাপি উহা আমানের চকু এবং

अधीमश्रामश्राम मधावश्री इहेरन जामारमंत्र त्यांथ इत्र त्यम धे कृति মেঘণ্ড কুৰ্যাকে ঢাকিয়া রাখিয়াছে। এই মেশকর্ত্তক স্থ্যমণ্ডল আবরণের মত অজ্ঞান আমাদের আত্মাকে আকুত ক্রিয়া রাথে। সেইজক্ত আমাদের মনে হয় বে, আমরা ব্রন্ম হইতে পৃথক্। অজ্ঞানের বিক্ষেপ শক্তির গতিকে জগৎভাম উৎপন্ন হয় ; বস্তুতে অবস্তু, বৃচ্ছুতে সূপ্রিম জন্মে, অর্থাৎ প্রাক্ত ভবতঃ অন্ত হইলেও স্থ বলিয়। প্রতীয়মান হয়। "বিকেপ শক্তি বিদাদি একাণ্ডান্তং জগৎ করেদিতি।" षाठ এব এই षाळारनत निवाम हहेरन छेष्ड अवाब समह বিবৃত্তিত হয়; একদিকে দেখা যায় বে, ক্ষগৎ মিখ্যা, উহার কোন ব্ৰহ্মতিবিক্ত সতা নাই; ঋপর দিকে দেখা যাম বে, 'অয়মাত্রা ব্রহ্ম।' এই অজ্ঞান নিরাসের উপায় कি ? उच्छान। देवराधिक वरमन एव, यथन आमारमत उच्छारनत উनत्र रहेरत उथन रमश घारेरत रा, এই প্রকৃতি নাই, সৃষ্টি নাই, ছায়ার মত ইহা বিলীন হইয়াছে; এক একই আছেন এবং আমরাও দেই এক।

> জনাদি মান্তর। হথো যদা জীবঃ প্রব্ধাতে। জ্ঞাননিক্রমবালমকৈতঃ বুধাতে তদা ॥

অভএব বৈদান্তিক বলেন যে, আমাদের এই এম নিরাপ করিতে হইবে। যে হেতু এই জগৎ অসং মিথ্যা, অভএব ইহাকে পরিভাগে করিতে হইবে। সংসার পরিস্তাগ করিয়া ভাবনা করিতে হইবে যে, আমিই সেই; 'সোহহং।' গখন এই জ্ঞান যথার্থরূপে পরিস্টুট হইবে, কেবল মৌখিক উাক্ততে পূর্যার্থিতে না হইয়া ভাবনে উপলব্ধি হইবে, তথনই মুক্তে। অভএব শঙ্করমভাবনমী বৈদান্তিকের সিদ্ধান্ত এই যে, জ্ঞান ভিন্ন মৃক্তি হইতে পারে না। জ্ঞানই মুক্তির একমাত্র উপার।

কিন্ত শহর মতাবলমা অবৈতবাদীগণ যদিও নিশুণ ব্রহ্মকেই পরম ওস্থ বলিরা গ্রহণ করেন তথাপি তাঁহারা সগুণ ব্রহ্মকে বা ঈম্বরকে একেবারে প্রভ্যাখ্যান করেন না। এবং সগুণ ব্রক্ষোপাদনাও একেবারে নির্থক মনে করেন না। যদি করিভেন, তবে তাঁহারা উপনিষদের সার্ক্ষভৌমিক আদর্শ হইতে বিচ্যুত হইতেন্। পুর্কেই বলা ছইরাছে বে, ভাঁহারা জগতের বাবহারিক সভা সম্পূর্ণরূপে খীকার করেন। সভা বটে, তাঁহারা স্থানে স্থানে জগৎকে ব্বরের মত অনীক বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। কিন্তু তদারা बारे निद्धांच कता मण्ड रहेरव ना रम, छै। हाता चन्न महित उ ব্দগৎ সৃষ্টির পার্থক্য একেবারেট শ্বীকার করেন ন।। জগৎ মুটি পরমার্থতঃ সভা নয় বলিয়া ভাচার সচিত স্থা স্টির তুলনা করা হটয়া থাকে। কারণ এক বিষয়ে খপ্লের সহিত জগৎ সৃষ্টির বেশ সাদৃশ্য রহিয়াছে; উভয়েরই বাধ হয়। কিন্তু পূর্বেই বলা হইয়াছে যে আরেক বিষয়ে উহাদের বিশেষ পার্থক্য আছে। একটীর মাত্র প্রাতিভাগিক শস্তা, আরেকটীর ব্যবহারিক সতা। বেখানে কেবল উভয়ের माष्मा (प्रथानहे डिल्प्ना, त्मशात डिज्यहे এकत्रभ वित्रा উল্লিখিত হইয়াছে; কিন্তু যেথানে পাৰ্থকা দেখান আবশাক হইরাছে. দেখানে স্পষ্টতঃ দেই পার্থক্যের উল্লেখ করা হইরাছে। এই বিশ্বকাণ্ডে ব্যবহারিক সন্তার অমুরূপ আর কোন সভাই নাই। স্মৃত্যাং ব্যবহারিক সভার অনিতাতা বুঝাইবার জন্য প্রাভিভাদিক সন্তার আশ্রম গ্রহণ করা হইয়া থাকে। প্রফুতপকে এ উভর সর্বাংশেই একরূপ.--এরপ বলা তাহাদের অভিপ্রেত মহে। 'বৈধ ধর্মাচ্চ ন শ্বপ্লাদিবৎ' এই ব্ৰহ্মস্তব্ৰেৰ ভাষ্যে শঙ্কৰাচাৰ্য্য বলিয়াছেন যে, জাগ্রত অবস্থায় স্থপ্ন সৃষ্টির বাধ হয়, কিন্তু ( তব্জানের অবস্থা ভিন্ন) আর কোন অবস্থায়ই জগৎ ন্যষ্টির বাধ হর না। ভিনি মারও বলিয়াছেন বে, স্বপ্ন স্থৃতির ফল মাত্র, কিব্ জাগ্রত অবস্থায় বাহ্যসগতের বে জ্ঞান হয় তাহা সাক্ষাৎ द्धेशनकित मन।

ব্রদ্ধ যে সর্পে সং ক্ষাং দেই অর্থে সং নহে; অথচ উহা ক্ষাণতের স্থান্টিক ক্ষাণ্ড বাহাকে সর্কেশ্বর, সর্ক্তের, অন্তর্গানী প্রভৃতি বিশেষণে বিশেষিত করিয়াছেন,—জাহাকে প্রতিষ্ঠিত। এইজন্ত জ্ঞাং কেবল মাত্র আমাদের করনার ক্ষাণ্ড বিশ্বন করেন বলির করেন বলির করেন না। বিষয় নহে; উহা আমাদের উপলব্ধির বিষয়। প্রাতিভালিক ক্ষাণ্ডের ব্যবহারিক সন্তাই হউক আর ব্যবহারিক করেন বলিয়াছেন। ক্ষাণ্ড অনুভূতির সন্তা বটে যে মান্নাবাদীর বলেন যে,সপ্তণ ব্রহ্ম মান্নার বিভূম্বন করিয়া অনুভূতির করেন ভাইা ক্ষাণ্ড আর ক্যাণ্ড আর ক্ষাণ্ড আর ক্

পর্যাবসিত হয়। সৌরকর না থাকিলে মুগত্রিক। দেখা বাইত না। রজ্জু-সর্পের দৃষ্টান্তে রজ্জু না থাকিলে সর্প দর্শন সম্ভব হইত না। সর্পরিপ প্রাতিভাদিক সভা রক্ষরপ ব্যবহারিক সন্তার উপর প্রভিষ্ঠিত থাকে বলিয়া সর্প আমাদের জ্ঞানগোচর হয়। সেইরূপ জগংরূপ কবচারিক সন্তা তামারূপ পারমার্থিক সন্তার উপর প্রতিষ্ঠিত বলিয়া ফগৎ আমাদের প্রত্যক্ষের বিষয়ীভূত হইয়াছে। বৌদ্ধেরা ইহা স্বীকার करतन ना। छाहाता वरणन (४, छन्। अन्य निवालयन ; हेबांब পশ্চাতে কোন সদস্ত বিরাজমান নাই; ইহার অন্তরালে শুধুই পুঞা। Subjective idealist দিপের মত তাঁহারাও বলেন বে **এই বাহা জগৎ কেবলই মন: क्लाना माख ; মনের বাহিরে** ইহার কোন অস্তিত্ব নাই। শঙ্করাচার্যা এই উৎকট বিজ্ঞান-বাদের তীত্র প্রতিবাদ করিয়াছেন। তিনি 'না ভাবোপন্ধেং' এই ব্ৰহ্মপ্ৰেৰ ভাষ্যে স্পষ্টতঃ বলিগাছেন যে, উপলীৰ হয় विशा वाहावश्वत अखिय मानिए इहेरव ; याहा जैनविक इन्न তাহা নাই বলিতে পারা যার না। "ন খন্দভাবো বাহারী অর্থন্য অধ্যবসাতুং শকাতে। কন্মাৎ 🕆 উপলব্ধে:। 🛊 🛊 নচ উপণভাষানগা এব অভাব: ভবিতৃমইভি।" এই সমস্ত বৌদ্দত খণ্ডনে অপূর্ক কৃতিত্ব দেখাইয়াছেন বলিয়াই শহগাচার্য্য বৌদ্ধবিদ্ধেতা বলিয়া দর্বত্ত খ্যাতি লাভ করিয়াছেন। স্থতরাং কোন স্থানে অনাবশুক বেংধে ভিনি যদি স্বপ্ন দৃষ্ট প্রপঞ্চের সহিত ভগং প্রপঞ্চের পার্থক্য স্থৃচিত না করিয়াও পাকেন তবু এরূপ কথা বলা দখত হইকে না ষে, তিনি জগতের ব্যবহারিক সন্তা সন্ত্রীকার করেন। এবং বাঁহারা জগতের ব্যবহারিক সন্তা স্বীকার করেন, তাঁহালা জগতের সৃষ্টিকর্তা ঈশ্বর,—শ্রুতি বাঁহাকে সর্কেশ্বর, সর্কৃত্তি, অন্তর্যামী প্রভৃতি বিশেষণে বিশেষত করিয়াছেন,—তাঁছাকে শশ-বিষাণের মত একেবারে অনীক বলিতে পারেন না ! ব্ৰহ্মকে জগতের উপাদান ও নিমিত্ত কারণ বলিয়াছেন ! मका वर्षे य भोगावामीता वर्णन या.म खन उन्न भागाय विक्रुका সমষ্টি অজ্ঞান উপ্তিত চৈত্ত্ত ঈশ্ব কিন্ত ভাহার অর্থ

এই মন বে, তিনি বন্ধাপুত্তের ভার মন্তিকের বিকার মাত্র। ক্ষালে, মারা কি ? মারা বা অজ্ঞান কগৎ ত্রম উৎপাদন করে। ক্ষিত্ৰ অৰ্থ এই বে মানার গতিকে যাহা অনস্ত তাহা সাস্ত, যাহা আমীৰ ভাষা সমীম, যাহা নিৰ্কিকার তাহা বিকারশীল, যাহা 🗪 ভাৰা বছরপে প্রতীয়মান হয়। জীব যথন মায়া প্রপঞ্চের ল্লা দিয়া ব্রহ্মকে দেখিবার চেষ্টা করে, তথন তিনি জীবের বিষ্ট সভা ও সোপাধিক বলিয়া প্রতীয়মান হন। কুল প্রসাক্ষের মধ্য বিদ্যা বধন আমরা আকাশের দিকে দৃষ্টি নিকেপ 😻 বি তথন সমগ্র আকাশ আমাদের নয়ন গোচর হয় না ; কিন্তু कार बनिया (य काम जामामित मृष्टिगाठत इत (महे जाम **বিশা নহে।** যতকণ গৰাক থাকিবে এবং আমরাও গৰান্দের মধ্য দিয়া আকাশ দেখিতে চেষ্টা করিব তত্তকণ স্থাকাশ সীমাবদ থাকিবেই। গ্ৰাক্ষ ভালিয়া ফেলিলে জ্ঞানোর ক্লবিম সীমা চিল্ বিলুপ্ত হইবে। সেইরূপ যতকণ ্ৰাপ বাৰ পাকিবে ততকণ ব্ৰহ্ম সঞ্জণ ও সোপাধিকট शाकित्वन। अन्न ज्यान अन्न अन्न अन्न अन्न वाक्तित्व मा अर्था मुद्रीकर्डा थाकिरन ना, आंत्र थाकिर ना। আছের ৰশিরাছেন "বদা তত্ত্বসীত্যেবং জাতীয়কেন অভেদ **নির্দেশেনাভেদঃ প্রতিবোধিতো ভবতি, অপগতং ভবতি তদা** শ্লীরদা সংদারিত্বং অন্ধণত অষ্ট্রম।" কিন্তু তাহার পূর্ব প্ৰায় সৰই থাকিবে। আমি মতক্ষণ থাকিব আমার **উপাদ্যাদেবতাও ততকণ থাকিবেন। আপতি হইয়াছে** যে **এক ব্রদ্ধ বাতীত আ**র সবই যদি মিথা। তবে বিধি নিষেধাত্মক शांबर विशा धरः त्य दिन्दक बालावामत विवास सामावालीया व श्रीकात करत्रन, त्मरे त्वम व्यवस त्वतमाक तम्बतमवी व्यवस বেশবিহিত বাগবঞ্চ প্রভৃতি সমস্তই মিথা।। উত্তরে শঙ্করাচার্গ্য ৰিনিয়াছেন বে,ভাহা নহে। ত্ৰহ্মাত্মদৰ্শনের পূর্ম প্রয়ন্ত সমস্তই में बंदर रमरे भर्वान लोकिए व दिनिक किया क्वानानिव আছটের। অবস্তই তিনি কর্ম কাও অপেকা জ্ঞান কাণ্ডের **আধার কীর্ত্তন করিয়াছেন। গীতাতেও তাহা করা হট্যাছে। ंदैब ७गा विषत्र।** एपना निरेत्र ७एगा छ्यार्क्न ।' জ্ঞান্ত সকণেরই অনুষ্ঠান পূজাদ্বি একেবারে পরিত্যাগ ক্ষরিতে ছইবে এরণ সিদ্ধান্ত করা সম্পত নহে।

লঙ্করাচার্য্য ইক্স প্রভৃতি দেবজার অভিতর্গ নামেন।
তবে তিনি বলেন যে এগুলি পদের নাম। যে ক্রেছ জ্পস্যা
বলে এই সমস্ত পদলাভ করিতে পারে। যিনিই সৈন্তচালনার
ভার পান তিনিই ঘেনন সেনাপতি বলিয়া অভিহিত্ত হন,
সেইরূপ যিনি ক্রেড্র পদ লাভ করেন তিনিই ইক্স বলিয়া
পরিচিত হন। পুরাণেও দেখা যায় যে নত্ত্ব প্রভৃতি ইক্সড্র
লাভ করিয়াভিলেন। কিক্সোইভ্রাহ্রা স্বরঃ"—চঙ্গী।

অবশ্যই শবর স্বীকার করেন না বে, সগুণ ব্রহ্মই একমার বা পর্যতন্ত, এবং সঞ্চা ব্রন্ধের উপাসনা বাতীত আর কোন উপাসনাই চলে না। তিনি নিশ্চিতই একথা বলেন বে শ্রবণ, মনন, নিদিধ্যাসন ও সমাধিদ্বারা স্ব স্থরূপ চৈতন্ত্রের সাক্ষাৎকার হয়, এবং দেইরূপ উপাসনাই শ্রেষ্ঠ উপাসনা। কিন্তু শ্রেষ্ঠ কিনে ? নির্গুণ ত্রন্মের উপাসকের আত্মার উৎক্রান্তি হয় না; সগুণ ব্রন্ধের উপাদকের তাহা হয়। উৎক্র সগুণোপাসক জ্ব-মুক্তির অধিকারী হন,আর, নিগুণোপাসক विराह्य कि नांड कतिया थारकत । उडरवरे हत्य मुक्ति লাভ করেন, তবে একজন শীঘ্র ও আরেকজন বিশবে লাভ করেন, এই মাত্র বিশেষ। সগুণোপাসনা একেবারে নিরর্থক, এইরূপই যদি শঙ্করের অভিনত হইত, তবে ভিনি উভয় প্রকার সাধনার ফলাফলের তারতমা লইয়া এত বিচার করিতেন না। শঙ্কর যদিও নি ও গোপাসনার শ্রেষ্ট্রক দাবী করেন তথাপি ভিনি একথাও স্বীকার করেন, ঐ পথ নিতান্ত ক্রেণকর ও অতি অলসংখ্যক উচ্চ অধিকারীর উপবোগী ! গীতার দাদশ অধ্যায়ে উক্ত হইয়াছে.---

ক্লেশেহধিকতর স্তেধামব্যক্তাসক্ত চেতসাং ৷

অব্যক্ত বা নিরুপাধি ব্রেক্স যাহাদের চিত্ত আসক তাহাদের সাধনা (সগুণোপাসকদিগের সাধনা অপেকা) অধিকতর ক্লেশকর। এই স্লোক্সের ভাষ্যে শহর এই উক্তির প্রতিবাদ করেন নাই। এই পথ যে ক্লেশকর তাহা তিনি অস্বীকার করেন না। তারপর শহর বলেন যে, ঐ অধ্যান্তের ত্রোদেশ স্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া উনবিংশতি শ্লোক পর্যান্ত অক্সরোপাসক অর্থাৎ

मिल न उत्सानामक मिलाब वर्गना कहा इहैशाए । तम वर्गना কিরপ ? আকরোপাদকেরা সর্বভৃতের অবেষ্টা, নিম্পৃষ্, স্বারস্তপরিত্যাপী হইবেন; তাঁহারা শীডোঞ্চ, স্থগহংখ, মানাপমান, নিন্দা স্তুতি প্রভৃতির বারা স্পতিভূত হইবেন না ; তাঁহাদের হর্ব ছেব, ভভাভভ, শোক বা আকাজ্ঞা কিছুই थाकित मा हेजामि। (वनासमात्रं अक इरेशार व মিজ গোলাসকের শম দম উপরতি তিতিকা সমাধান ও প্রত। সম্পন্ন হওরা আবশুক ; তন্মধ্যে তিতিকার অর্থ শীতোফ স্লখ ছু:খ মানাপমান প্রাকৃতি হন্দ্র (যুগল) সহ্য করা। এরপ वा कि क्यूबन मिरन ? किंख अरनरक निरक्रमत्र अधिकात्र वा যোগ্যতার বিষয় একেবারেই বিবেচনা করেন না। তাঁথারা মনে কবেন যে নিজুণ উপাসনা যথন প্রেষ্ঠ বলিয়া কীর্ত্তিত হইরাছে তথন তাহা সকলের পক্ষেই উপযোগী ও তাহাই এক মাত্র পথ। এই সংস্থারের বলে তাঁহারো দর্বপ্রকার উপর थङ्गारछ हरेशा উঠেন, অথবা সপ্রশোপাসনার সপ্তবোপাসক্রিগকে রূপার চকে অবলোকন করিয়া থাকেন। ই হারা অগতের বাবহারিক সন্তাও অস্বীকার করেন। এই चांजीत्र लांत्कता (य टक्नाटम्रज नार्क्ट नेमिक जानन इंहेट বিচাত হইয়া নিভাস্ত সাম্প্রদায়িক ও সংকীর্ণ মতের প্রচার করেন ভাষা অন্ত্রীকার করার উপায় নাই। কিন্তু ইহা শক্ষ্য প্রচারিত মায়াবাদের অপব্যবহার মাত্র: এজন্ত মারাবাদের (शांष (शक्ता का I

মারাবাদের বিরুদ্ধে এক গুরুতর অভিযোগ আনয়ন করা

ইইয়া থাকে। 'মায়াবাদ ; অসচ্চান্ত ইহা প্রচ্ছয় বৌরুমত .'

কিন্তু সে কোন্ মায়াবাদ ? যে মায়াবাদ বৌদ্ধমত থগুন
করিয়া জগতের ব্যবহারিক সন্তার প্রতিষ্ঠা কারয়াছে সেই

মায়াবাদকে প্রচ্ছয় বৌদ্ধমত বলা ভাষার অপব্যবহার বই আর

ক্রিছই নছে। ফলতঃ বৌদ্ধবিরোগী শক্তরের মায়াবাদের
প্রতি এই প্রাক্তর বৌদ্ধাপবাদ কোনমতেই প্রযোজ্য নহে।

এই অপবাদ কেবল সেই সমস্ত সংকীর্ণ লাক্ত বৈদান্তিক
দিগের মায়াবাদের প্রতিই প্রযোজ্য ইইতে পারে, যাঁচারা

জগতের ব্যবহারিক সন্তা অস্বীকার করেন এবং যাঁহারা

সন্তণ ব্রেক্ষর উপাদনা একান্ত নির্থক বলিরা মনে করেন ।
পূর্বেই দেখাইবাছি যে শহরের সেরপ অভিপ্রায় নছে।
তাঁহার মতবাদে শাস্ত্রোক্ত দর্কপ্রকার বাগবজ্ঞাদি জিরাক্রণাপেরও স্থান আছে। "প্রাক্রক্ষাত্মতাপ্রতিবাধাত্রপপর: সর্বো লোকিকো বৈদিকক বাবহারঃ।" তিনি কিছুই একান্ত ভাবে প্রত্যাথ্যান করেন নাই। আর দিনি অবৈত্রাদী হইরাও জগতের ব্যবহারিক সন্তা অত্যাধ্যান করেন না তিনি অসুষ্ঠান পূজাদি একেবারে প্রত্যাধ্যান করিতেও পারেন না। তিনি কোন্টী উৎকৃষ্ট, কোন্টী নিকৃষ্ট তাহা বলিয়াছেন বটে, কিন্তু কোন্টীই সর্বভোভাবে উপেক্ষা করেন নাই। এপানেই শঙ্কর প্রচারিত মতবাদের উদারতা। উহাতে অধিকারীভেদে দকলেরই স্থাবোগ্যা

वर्कमान कारनव छे९कछ मामावारमव मिरन अहे व्यक्तिकान-ভেদবাদ কেহ আর মানিতে রাজি নহে। সকল স্থানুবেরই যুখন সমান অধিকার তথন একের পক্ষে বাহা বিধি ভার্ছা: অপরের পক্ষে অবিধি হইবে কেন ? অক্তের যাহাতে অধিকার আছে, আমার তাহাতে থাকিবে না কেন ? আমি অন্তাপেকী कित्म कम ? कित्म थाउँ ? A man is a man for a that. এই সমস্ত বুল্কিছারা আনেকে ভারতীয় অধিকারভেল বাদ নিতান্ত অযৌত্তিক বলিয়া প্রতিপন্ন করিবার চেষ্টা করিয়া গাকেন। কিন্তু রাজনৈতিক অধিকার ও আগাজিক অদিকার এক বস্তু নছে। ব্রাহ্মনৈতিক ক্ষেত্রে সকলের সমান অধিকার কিন্ত আধাাত্মিক थाकिल कांक हल : यतः जान हल । কেত্রে তাহা চলে না। মানবের ধর্ম ও সাধনা মানব প্রকৃতির মত বৈ চিত্রাময় ছটবেট ছইবে। ইউরোপীয়দিগের मत्न अ व ते ते कर्म कर्म केंग्रांतिक हडेरलह । हेमानीः আমেরিকার স্থবিখ্যাত দার্শনিক উইলিয়ম জেম্স্ তাঁহার Varieties of Religious Experience नामक आप এই মতের প্রচার করিয়াছেন।

A psychological investigation proves great differences with respect to inner nature

they need different spiritual sustenance, and must differ from one another in religion.—
Harold Hossding on William James in Modern Philosophers p. 215.

🐺 উইলিয়াম জেমস বলেন যে মাপ্রয়ে মান্ত্রে ধর্মের পার্থক্য স্থাকিবেই কারণ প্রত্যেকের প্রকৃতিই বিভিন্ন। এই বৈচিত্রাকে মানিয়ালাইতে হইবে। এরপ কোন ধর্ম প্রচারিত হইতে পারে স্থানা । শর্মবাদীশন্ম তরাপে সকলেই গ্রহণ করিতে পারে । মুখে ২ প্রহার করিতে পারে, কিন্তু কার্য্যতঃ গ্রহণ করিতে কথনই শাস্থিৰে না। অধ্যাপক সেইস (Sayce) বলিয়াছেন, The Chris tianity of a Negro is quite different from the Christianity of an Englishman, মনন্তত্ত্বের আলোচনা ক্ষরিয়া উইণিয়াম জেমন যে স্থানে পৌছিয়াছেন, ভাষাতত্ত্বের শালোচনা করিরা অখ্যাপক সেইস ৪ ঠিক সেই ভানে গিয়া পৌছিয়াছেন। Uncle Tom যে অর্থে এটান প্রিক जिन्नार्क (महे व्यर्थ औष्टीन इहेट्ड भारतन ना। হ্মগতে এক ধর্মের প্রতিষ্ঠা করিতে যাওয়া বিভ্রমনা। তবে অভ্রপ ধর্মের প্রতিষ্ঠা করা যাইতে পারে যাহাতে সকল প্রকার সাধন পদ্ধতিরই স্থান আছে, যাহা এই বৈচিত্রাময় জগতে মুক্র বিভিন্ন চরিত্রের লোকেরই আধ্যাত্মিক তপ্তি বিগান **क्रिटिंड ममर्थ हम ।** अहेजल क्ष्मांहे मार्श्वरको निक धर्म विलिया শ্লভিভিত হইতে পারে। একমাত্র বেদাস্ত শাস্ত্রই সাক্ষতৌমকতার দাবী করিতে পারে। ইহার সহিত **टकान** धर्म्बबरे विद्याध स्ट्रेटिक भारत न।। গীতাতে উক্ত 更看有亿度(4--

বে যথা মাং প্রপদান্তে তাং স্থবৈব ভলাম্যঃ ম্ ।

মম ৰত্মান্ত্বতিষ্কে সন্থয়ঃ পার্থ দক্ষণঃ ॥

ক্রিভাবেশানেত্ব আলার্শ পৃথিবীতে নার প্রচারিত হয় নাই ।

ক্রীভাবেশানেত্ব প্রস্থানত্তবের অভ্যতম প্রস্থান । উপনিষদই

ক্ষাভঃ বেশান্ত হইলেও বেদান্তের তিন্টী প্রস্থান কীর্ত্তিত

ক্ষান্তে । প্রথম শ্রুতি প্রস্থান ধর্যাৎ উপনিষদ; দিতীয়

ভাষ প্রস্থান অর্থাৎ ব্রক্ষণ্ড এবং তৃতীয় স্থাতি প্রস্থান অর্থাৎ ভাগবদ্সীতা। এই গীতা সপ্তক্ষে উক্ত হইরাছে।
সর্বোগনিষদো গাবো দোগ্ধা গোপাল মন্দ্রঃ।
পার্থোবংসঃ স্থাীভোকা হগ্ধং গীতামূতং মহৎ ॥
গীতা উপনিষদেরই সারভাগ। অনেক স্থাপে গীতাতে উপনিষদের মূল সোকগুলিই উদ্ধৃত হইরাছে দেখা যায়। বেদান্ত পাস্তের গাঁতার এই প্রাণান্ত বে শঙ্করাচারী কেবলমান্ত উপনিষদের জাতার এই প্রাণান্ত বে শঙ্করাচারী কেবলমান্ত উপনিষদের ভাগা রচনা করিরাই ক্ষান্ত হন নাই তিনি গীতারও ভাগা রচনা করিরাই ক্ষান্ত হন নাই তিনি গীতারও ভাগা রচনা করিয়াছেন। গীতা যথন উপনিষদের আলদের্শ্ব গারভাগ তখন যে গীতা উপনিষদের আলদের্শ্ব গারা অমুপ্রাণিত হইবে তাহাতে আর আল্ট্যা কি ? এইঅক্ট গীতার জ্ঞান কম্ম তক্তি যোগ প্রভৃতি বিবিদ সাধন পদ্ধতির সমাবেশ দেখতে পাওয়া যায়। এবং উপনিষদের ভার গীতাতেও সগুণ নিপ্তণ উভয় তত্ত্বেরই প্রচার দৃষ্ট হয়।

व्यामत्रा व भर्गाष्ठ श्रामण्डः युक्तित्र मिक मित्रारे नकत প্রচারিত বেশান্ত মণ্ডের আলোচনা করিয়াছি। যে আশ্চর্য্য ও অকাট্য যুক্তিপরম্পরাদ্বারা ডিনি অদৈতমতের প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন, জগতের দার্শনিক সাহিত্যে তাহা অতুলনীয় । আমরা এই কুদ্র প্রবন্ধে গ্রাহার কিঞিৎ আচাদ দিতে চেষ্টা করিয়াছি। কিন্তু শঙ্কর আত্তিক দার্শনিক। তিনি শুভি যুক্তকে তিনি প্রত্যাখ্যান করেন না; কিন্ত যুক্তিই ভাহার একমাত বা প্রধান অবশ্বন নছে ৷ ভাঁহার व्यथान व्यवस्य मांछ। शृत्स्रहे উল्लেभ क्रियाहि (य, व्यक्ति वहरन वाशाउविद्यां पृष्ठे इया .व्यांड वक्तिरक ব্রহ্মকে 'নেতি নেতি' লফণে নির্দেশ করিয়াছেন; আবার অপরদিকে তাহাকেই সংক্ষের, সকাজ, অন্তর্যামী প্রভৃতি বিশেষণে বিশেষিত করিয়াছেন। একৰার বলিয়াছেন त्य, जिनि निर्श्वन, वाका भरनत्र व्यारगाहत्र; व्यावात्र विशास्ट्रन ষে, তিনি সগুণ, জগতের ধাতা ও পাতা। একবার তাঁহাকে বলিয়াছেন, 'দ':, আবার তাঁহাকেই বলিয়াছেন, 'ভৎ' I কিন্তু ভারতীয় সমস্ত আজিক দার্শ নিকদিগের মতেই শ্রাভ অভ্ৰাস্ত। তবে তাহাতে এই সপ্তণ নিৰ্শুন ঘটিত বিষোধ

**टकन ? देव** फिक जिन्नाकारण विकश्च कहाना करा मछ।; কিছ যাহা পর্যতম্ব তৎসম্বেদ্ধ এইরূপ বিকল্প কল্লনা করা क्तिप्त मस्य ? शूर्वहे विन्ताहि (य, वहे वित्तार्थत मोमाः मान অক্তই বাদরারণের অক্ষাহত বচিত হইয়াছিল। আর এই गःकिश ଓ एरकीय जन्नरख व्यवस्य क्रिशाहे व्यदेशवानी मंद्रव. विभिट्टेरिकवामी बामायुक्त 'अ दिकवामी माभव প্রভৃতি সকলেই শ্রুতির আপাতবিরোধের মীমাংসা করিতে **(त्रें)** कतिशा**रक्त । आत्मरक वर्तान (य. मंद्र व्रायन क क्रात्र हें)** ব্ৰহ্মহত্তের ক্ষতিজ্ঞ বা বিক্বত ব্যাপ্যা করিয়া স্বীয় মত সংস্থা-পনের চেষ্টা করিয়াছেন। ডা: থিব (Dr. Thibaut) স্বকৃত শঙ্কর ভাষ্টের ইংরেজী অমুবাদের ভূমিকার প্রথমত: এই মতই প্রকাশ করতঃ ব্রহ্মতত্ত্বের অপব্যাখ্যাকারী বলিয়া তাঁচাকে चूव गानागानि नियाद्यतः किंख व्यवस्थित विवाद्यत (य. ত্রশাহরকারের প্রকৃত মত কি, তিনি এই সগুণ নিগুন ঘটত সম্পার কিরূপ মীমাংসা করিয়াছেন, তাহা নিশ্চিত-ক্রপে নির্দ্ধারণ করার উপায় নাই। আমাদের মতে ওরূপ বিচারের বিশেষ আবশ্যকতা নাই। কারণ এই যে, সংক্রিপ্ত ও চু:র্মাণ ব্রহ্মপুত্রের অর্থনির্দ্ধারণ সম্পর্কে মতভেদ থাকিলেও উভার উদ্দেশ্য সম্বন্ধে কোন মতভেদ নাই। কি অবৈ छ-बानी, कि विभिन्नेदिक्व जानी, कि देव ज्वानी गकरन है अकवारका ক্লীকার করিয়া থাকেন যে, শ্রুতির বিরোধের মীমাংসাই ক্রমপ্রের এক মাত্র উদ্দেশ্ত এবং এই জন্মই উহার नाम भाषाःमामर्भन । सुरुताः (मथिए वरेरा एव कावात बााचा बाबा उम्मप्रका रमहे मर्वावामिमम छल्मना विनिष्टे-कर्ण निष्क इडेग्राटड: काहात वााथा। चात्रा अञ्चि वाता সজোকননকলে মামাংসিত হইরাছে। অতএব শক্তর অক্ষত্তের প্রকৃত ব্যাখ্যা করিয়াছেন কি না. এই বিচার অংশকা, তিনি উপনিষদের বিবিধ আপাতবিরোধী বচনের শমশ্বর সাধনে ক্লতকার্যা হইরাছেন কিনা, এই বিচারই আধিকত্তর প্রয়োজনীয়। এই ভাবে বিচার করিলে শঙ্করের ক্লভিত্ত অত্মীকার করিবার উপায় থাকে না। বিশিষ্টাহৈত--बाबीशब बरमन (ध. मांखराउ रय जन्मरक निर्धाप वना इहेग्राइ

তাহার অর্থ এই যে তিনি সর্বাপ্রকার হেরপ্রণার্কিত: व्यवता, जिनि यथन काद्रगावशाम शंदलन ज्वन जिनि निक्षा যথন কার্যাবস্বায় থাকেন তথন তিনি সঞ্জা। এই নীনাংসা সস্তোষজনক বলিয়া গ্রহণ করিবার উপার নাই। ব্রহা বদি হেরগুণবার্জ ত हन. **उद्ध (हर्मक्ष) चाट्य (कार्बा** हरेट ? डीहाट यनि अल्बरे भारताल कतिए दे उद कनानिश्वन ও द्वालन छेल्यावरे चादान कविराज हरेता। ব্ৰহ্ম কথন (কারণাবস্থার) নিজুণ, কথন (কার্যাবস্থার) সপ্তৰ এই মত্ত বিচারসহ মধ্যে কারণ জীহার সভাপ্ত 'এখন'ও 'তখন' এরপ কোন কথাই প্রযোজা ছটতে পারে না। তিনি কালের মতীত। তাঁহার ভূতও নাই, ভবিব্যুৎও नारे: अजंब नारे, शक्तंदेव मारे; भूतंब नारे, भवक নাই। তিনি 'মহাত্র ভ্রাচ্চ ভ্রাচ্চ'; ভিনি 'মপুর্মনন-পর্মনম্ভরবাহাম'। স্থত্যাং তিনি কথন নির্গুণ, ক্রম সপ্তণ এইরূপ বলিলে সকল শ্রুতি বচনের প্রমীমাংলা হর না। যুক্তিকেত্রেও এরপ মন্তের সমর্থন করা যার না। বাস্তবিক অবৈত্বাদী ভিন্ন অপর সকলেই ব্রম্মের কাণভদ, থবছা তেম কল্পনা কৰিয়া প্ৰাতিবচনের সামগুলা বিধান কৰিয়া থাকেন 🕼 'নৌক। অচল', 'নৌকা সচ্চা', এই গ্ৰহ বাকে)র বিরোধ মীমাংসা कतिएक इहेरल रामन विशिष्क हम रा. स्तीका कथन भाइत, कथन मुड्न ; 'बच्च निर्ख्य', 'बच्च मखन,' बारे घूरे दारकात्र সামগ্রহা করিতে ঘাট্যা বিশিষ্টাবৈতবাদীগণ ও ঠিক সেইক্স वित्रा शांकन या. जन्म कथन निर्श्वन, कथन मखन। कि পাথিব পদার্থ দেশকাল নিমিডের অধীন; ত্রমা দেশকার নিমিতের অভীত। পুডরাং ত্রমের কাণভেন, ক্ষরপাঁজের কল্পনা করা অণন্তব। শুভি বলিয়াছেন যে তিনি নিক্তিকার, কুট্ম : মুত্রাং তাহাতে কোন সময়েই কোন একার বিকার বা পরির্বার্তন সম্ভবে না। এ সম্বন্ধে শঙ্করের দীনাংনা সম্পূর্ণ ভিন্ন প্রকারের। তিনি বলিয়াছেন যে, ব্রহা পরমার্থকঃ निर्श्वन, बावहाब्रेडः मध्यम। এই बाबहाब्रिक ও পারমার্থিक (क्रमनिर्फागरे नक्षत्र मर्भातत्र **व्यमुक् विरागरेय**। তাঁচার অতল কীত্তি। ইহাই তাঁহার নাম অঞ্ন করিছ



মানিংক। ডাঃ পল ডরদেন ( Paul Deussen ) এই
নীনাংকার ভূরদী প্রাণিংদা করিরাছেন এবং ইহা জগতের
ভাল ধর্ম মীমাংদকদিগেরও অনুকরণবোগ্য বলিয়া
নির্দেশ করিরাছেন,—

Taking the Upanishads, as Shankara does, for revealed truth with absolute authority, it was not an easy task to build out of their materials a consistent philosophical system; for, the Upanishads are in Theology, Cosmology and Psychology full of the hardest contradictions. িআমরা বলিব apparent contradictions ] So in many passages the nature of Brahman is painted out in various and luxuriant colours, and again we read, that the nature of Brahman is quite unattainable to human words, to human understanding :-- so we meet sometimes longer reports explaining how the world has been created by Brahman. and again we are told that there is no world besides Brahman, and all variety of things is mere error and illusion; ....... Shankara in these difficulties, created by the nature of his materials, in face of so many contradictory doctrines, which he was not allowed to decline and yet could not admit altogether,-has found a wonderful way out, which deserves the attention, perhaps the imitation of the Christian dogmatists in their embarrassments. He constructs out of the materials of the Upanishads two systems; one esoteric, philosophical (called by him nispeuna vidya sometimes paramarthik

avastha) containing the metaphysical truth for the few ones, rare in all times and countries, who are able to understand it; and another exoteric, Theological (saguna vidya, vyavahariki avastha) for the general public, who want images, not abstract truth, worship, not meditation.

এই পারমার্থিক ও ব্যবহারিক ভেদ শ্বীকার ধারাই
শ্রুতিবাক্যের আপাত বিরোধের সন্তোবজনক মীমাংসা হর।
শক্ষর বিরোধী ডাং থিবও এই কথা শ্বীকার করিতে বাধ্য
হইয়াছেন। এক্ষণুত্রের অপব্যাখ্যা করিরাছেন বনিয়া তিনি
শক্ষরের প্রতি দোষারোপ করিলেও উপনিষদের মীমাংসার্থ
রামানুজ অপেকা শক্ষর অধিকতর ক্রতিত্ব দেখাইয়াছেন,
একথা অস্মীকার করিতে পারেন নাই। ডাঃ থিবর শক্ষ
ভাষ্যের অন্থবাদের ভূমিকাটী বড়ই কৌতৃহলকনক। ইনার
প্রথম ভাগে ভিনি যে সমস্ত সিদ্ধান্ত করিয়াছেন আবার্থ
শেষ ভাগে নিক্রেই তাহার প্রভ্যাখ্যান করিয়াছেন।। তিনি
বলিরাছেন,—

It has been said before that the task of reducing the teaching of the whole of the Upanishads to a system consistent and free from contradictions is an intrinsically impossible one. But the task once being given, we are quite ready to admit that Sankara's system is most probably the best which can be devised. While unable to allow that the Upanishads recognise a lower and higher knowledge of Brahman, in fact the distinction of a lower and higher Brahman, ( ভূমিকার পরবর্তা অংশে ডিনি এট মতের প্রভাগোন করিয়াছেন। সেই অংশও আমরা পরে উদ্ধার করিয়াছেন। we yet acknowledge that the adoption of that dis-

tinction furnishes the interpreter with an instrument of extraordinary power for reducing to an orderly whole the heterogeneous material presented by the old theosophic treatises. This becomes very manifest as soon as we compare Sankara's system with that of Ramanuja. The latter recognises only one Brahman which is, as we should say, a personal God, and he therefore lays stress on all those passages of the Upanishads which ascribe to Brahman the attributes of a personal God, such as omniscience and omnipotence. Those passages, on the other hand, whose decided tendency it is to Brahman as transcending all represent qualities, as one undifferenced mass of impersonal intelligence, Ramanuja is unable to accept frankly and fairly and has to misinterpret them more or less to make them fall in with his system. The same remark holds good with regard to those texts which represent the individual soul as finally identifying itself with Brahman; Ramanuja allow a complete identification cannot but merely an assimilation carried as far as possible. Sankara, on the other hand, by skilfully ringing the changes on a higher and lower doctrine, somehow manages to find room for whatever the Upanishads have to say. Where the text speaks of Brahman as transcending all atitrbutes, the highest doctrine is set forth. Where Brahman is

বলা যাইতে পারে বে, শহর সপ্তণ আপেকা নির্প্ত দেরই অধিকতর প্রাণান্ত দিয়াছেন। কিন্তু উপনিষদেও ভারাই করা হইয়াছে। উপরি উদ্ধৃত বাকো ডাঃ থিব বলিয়াছেন যে, উপনিষদে সপ্তণ নির্প্তণ ভেদ স্বীকৃত হয় নাই। কিন্তু ইহার অব্যবহিত পরেই এই মত প্রতাথান করিয়া বলিয়াছেন যে, শহর যে সপ্তণ অপেকা নির্প্তণের প্রধান্ত করিয়াছেন করিয়াছেন ভাহাও উপনিষদ্-সম্মত,—

Above we were unable to allow that the distinction made by Sankara between Brahman and Iswara is known to the Upanishads; but we must now admit that if, for the purpose of determining the nature of the highest being, a choice is to be made between those texts which represent Brahman as nirguna and those which ascribe to it personal attributes, Sankara is right texts of the in giving preference to former kind......The older Upanishads, at any rate, lay very little stress upon personal attributes of their highest being, and hence Sankara is right in so far as he assigns to his hypostatised personal Iswara a lower place than to his absolute Brahman.

ডাঃ থিব সম্পর্কে এখানে বলা আবশাক যে, তিনি ্লাভির প্রতি সমাক্ শ্রহাশীল নহেন। তিনি সংকীণচেতা ্থ্রীষ্টান। তিনি কিছুতেই উপনিষদ অভাস্ত বলিয়া স্বীকার ্ৰবিতে পারেন না। সুতরাং উপনিষদে যে কোন সামঞ্জত-পূর্ব মতবাদ প্রচারিত হইয়াছে তাহা তিমি স্বীকার করেন ঁ মা। কিন্তু তিনিও এইটুকু স্বীকার করিতে বাধ্য ্ছইয়াছেল বে. যদি উপনিষদ মানিতেই হয় তবে শকর ্র ব্যাখ্যারই আশ্রর গ্রহণ কন্ম উচিত; কারণ তৎসাহাযোই · উপনিষদের বিজোধের স্থানররূপে মীমাংসা করা যায়। থিকা মত সংকীর্ণচেতা ইউরোপীয়েরা ব্বিতে পারেন না ্বে, উপনিষদে অতি উদার সার্প্রভৌনিক সত্য প্রচারিত হইয়াছে। উহা দর্মপ্রকার আধাাত্মিক অভিজ্ঞতার অপূর্ম ভাগার। এই হন্তই শ্রুতির এত গৌরব। ভারতবর্ষে ষ্টিশ্ব না মানিলে কেই নাস্তিক বলিলা অভিহিত হইত না : িকিন্ত শ্রুতি না মানিলে নান্তিকতার অপবাদ হইতে কেইই িপরিআণ লাভ করিতে পারিতনা। ডাঃ থিব পুনঃ পুনঃই বলিরাছেন যে উপনিহদ নানা অসম্বন্ধ তথ্যে পূর্ণ (full of heterogeneous material) কিছু উপনিহদ প্রচারিত সভাের উলারতা ও সমগ্রতাই যে ঐরপ প্রতীতির কারণ তাহা ভিনি ধারণা করিতে পারেন নাই। যাহা সংকীর্ণ তাহা नुर्वाष्टि चविरशंभरमध-वर्ष्कि उ ( consistent ) वनिया প্রাতীরমান হয়। আর যাহা উদার তাহা অনেক স্থনেই শ্ববিরোধনোষ্ম্র (inconsistent) বলিয়া প্রতিভাত ছর। উপনিবদে সংকীর্ণতার লেশ মাত্র নাই। 'একং সদ বিঞা বছবা বদন্তি'। উদারতার ইহা অপেকা উৎকুইতর নিদর্শন কোণায় ? ছঃখের বিষয় সকলে ইহার প্রক্রত স্মর্থ গ্রহণ করিতে পারে না। ডাঃ থিবও তাহাদের মধ্যে の言葉は「

ডাঃ পিব এক জারগার বলিরাছেন যে, জ্ঞানপিপাদা নিটাইবার জন্ত আধুনিক তত্ত্ব জিজ্ঞান্তগণের ভারতীর লাক্তিক নডের আলোচনার বাপ্ত হওয়ার সন্তাবনা অল। উপনিমন্ত ডাঃ থিবর জান পিপাদা মিটাইতে অসমর্থ হইতে পারে, কিন্ত তাঁহা অপেক্ষা অনেক উচ্চদরের চিস্তাশীল দার্শনিক সোপেনহাওয়ার (Schopenhauer) বে এই উপনিষদ সাগরে অবগাহন করিয়া স্বীয় জ্ঞানপিপাসা চরিতার্থ করিয়াছিলেন, ভবজালার শাস্তি লাভ করিয়া কুতার্থ হইরাছিলেন তাহা কি তিনি জ্ঞানেন মা ? তিনি কি জ্ঞানেন না বে, সোপেনহাওয়ার বলিয়াছেন,—

In the whole world there is no study so beneficial and so elevating as that of the Upanishads.....It has been the solace of my life,—it will be the solace of my death?

তিনি কি কানেন মা যে মাাক্স্ম্লার ( Maxmuller ) বলিয়াছেন,—

The Upanishads are the sources of .....the Vedanta philosophy, a system in which human speculation seems to me to have reached its very acme?

ডা: থিব নিজের সম্বন্ধে বাহা ইচ্ছা ডাহা বলিতে পারেন, কিন্তু অপরের সম্বন্ধে মত প্রকাশ করা কি তাঁহার সম্বন্ধ হুইয়াতে ?

আমরা ডা: থিবর মতামত বিশ্বত ভাবে উরেপ করিয়াছি এই জক্ত যে, তিনি শঙ্কর বিরোধী হইয়াও, এবং উপনিষদের প্রতি শ্রমাণীণ না হইয়াও শঙ্কর প্রচারিত মীমাংসা প্রণানীর প্রশংসা করিতে বাধ্য হইগছেন। বিক্রম্বাদীর প্রশংসাই অধিকতর মূল্যবান।

মাক্ষ নিজের ছাঁচেই চিরকাল দেবতা পজিরাছে। সে
নিজে অশক্ত; তাই সে কল্পনা করে যে, ঈশ্বর সর্বাশক্তিমান।
নিজে অজ্ঞানী, তাই সে মনে করে যে, ঈশ্বর সর্বাজ্ঞান।
নিজে অজ্ঞানী, তাই সে মনে করে যে, ঈশ্বর সর্বাজ্ঞান নিজের
মধ্যে সে যাহা কিছু ভাল দেখে তাহাই ঈশ্বরে আরোপ
করিয়া ভৃপ্তি লাভ করে। আরু নিজের মধ্যে সে যাহা কিছু
হেয় বলিয়া অমুভব করে ঈশ্বরে তাহা নাই মনে করিয়া
চিতিজার্থ হয়। বাক্তবিক মানুষের উচ্চতম আদেশেই ঈশ্বর
কলিত হইয়াছেন। হার্কাট শেলন্সার (Herbert Spencer)
বিলিয়াছেন বে, শুক্রেরও যদি ঈশ্বর ধারনা করিবার সামর্থ্য

থাকিত তবে সে মনে করিত যে, ঈশ্বর একটা প্রকাণ্ড শৃকর । ইহারই নাম anthropomorphic conception of God. কি সাকারবাদী কি নিরাকারবাদী সকলের ধারণাই এইরপ anthropomorphic. একমাত্র উপনিষদই এই anthropomorphism এর উর্দ্ধে আরোহণ করিতে সমর্থ হইরাছে। একমাত্র উপনিষদ ব্যতীত আর কোন্ শাল্রে এমন কথা আছে,—

ওঁ পূর্ণমিদং পূর্ণমদঃ পূর্ণাৎ পূর্ণমূদচাতে।
পূর্ণক্ত পূর্ণমাদার পূর্ণমেবাব শিষ্যতে। १

কোন্শান্তে বলা হইয়াছে যে, জিনি 'অপুলমনখছম্মনীর্থন', তিনি 'অপুর্বানন্দরনার রবাহাং;' তিনি
'অস্তবাধর্মাদক্তরাধর্মাদক রোমাৎ কুভাক্কভাৎ, অক্সত্র ভূতাচ্চ ভব্যাচচ;' তিনি 'ন সং ন চাসং শিব এব কেবলং' ? কোন্ শাস্তে তাঁ হার সম্বন্ধে বলা হইয়াছে, 'নৈব বাচা ন মনসা প্রাপ্ত; শক্যো ন চকুষা', 'ষত্তদন্দ্রেশ্যমগ্রাহ্যমগোত্রমচকুং প্রোত্রং তদপানিপাদম্' ? এই উপনিষদ্ ভিন্ন আর কোথার তাঁহার এইরূপ বর্ণনা পাওরা যায়,—

> নান্তঃ প্রজং ন বহিঃপ্রজং নোভয়তঃ প্রজং ন প্রজ্ঞানঘনং ন প্রজং নাপ্রজ্ঞম্ অদৃষ্ঠমব্যবহার্য্যমগ্রাহ্যমলক্ষণমতিন্তাং ক্ষবাপদেশ্যমেকাত্ম প্রত্যর্গারং প্রপক্ষোপশমং শান্তং শিবমধ্যতং চতুর্বং মন্যক্ষেত্র স আ্রা স বিজ্ঞায়ঃ ॥ १

একথা সাহস করিয়া বলা যাইতে পারে বে উপনিষদে ব্রেক্ষের যে ধারণা করা হইরাছে এ পর্যান্ত তাহা অভিক্রান্ত হয় নাই। যে বুক্তিবাদ ইউরোপীর ধর্মজগতে তুমুগ বিপ্লব উপস্থিত করিয়াছে ভাহা একমাত্র উপনিষদের নিকটই মন্তক অবনত করিতে বাধা হয়। ঈশ্বর নাই, যুক্তিবাদ ইহার অধিক লার কি বলিতে পারে ? উত্তরে আভিক্যবাদীয়া (Theists) বলেন যে, তিনি আছেন। উপনিষদ ইহাদের বহু উর্দ্ধে উঠিয়া লোষণা করেন যে, তিনি নি সং ন চাসং শিব এব ক্ষেৰলং'।

नदत्रमात्न किंदु युक्तित्र श्रीधांना कम नरह। छर्द উাহার যুক্তি পাশ্চাত্য দেশের উচ্চুগ্রণ যুক্তিবাদের অনুরূপ নহে। তিনি শ্রুতির অবিরোধী বুক্তিরই পক্ষপাতী। তথাপি এই যুক্তির অত্যধিক প্রাধান্ত দিয়াছেন বলিয়া তিনি ভার্কিক বলিয়া নিন্দিত হইয়াছেন। শঙ্কর মতাবলম্বীদের মতে বিচার তব্জান শাভের এক প্রধান সহায়। কাবেই তাঁহারা মুক্তিকে কিছুতেই পরিতাাগ করিছে পারেন না। কিন্তু শকরাচার্য্য পুন: পুন:ই বলিয়াছেন বে, যুক্তি হারা ব্রহ্মকে ধারণা করা সম্ভব নছে। 'बक्क मर्' नाहन व्यमर्' नाहन', हेरान्न वाशा করিতে যাইয়া শবর বলিয়াছেন যে, একা অতীক্রির পদার্থ ; हेहा घरे। मि हे कियातिक वस्त्र हाय 'आहि वा 'नाहे थहे कहें প্রকার বৃদ্ধির মধ্যে কোন একটা বৃদ্ধির বিষয় হইতে পারেন না। অতএব তিনি আছেন, এ কথাও বলা বার না এবং তিনি নাই, এ কণাও বলা যায় না। এরপ বলিলে ইক্সিয়াতীভ ত্রদা বস্তুকে ইন্দ্রিগ্রামা প্রাথের সহিত এক প্র্যারভুক্ত कविया (कना हम । किस्र जिनि यनि मध्य ना हन, जनरव না হন তবে তিনি কি ? তিনি বে কি, তাহা মানুবের ভাষাই ব্যক্ত করা যায় না। 'অন্তি' এবং 'নান্তি', 'আছে' এবংু 'নাই' ইহার মণাবর্তী বা ইহার অতিরিক্ত কোন অবস্থা মাকুবের ভাষার প্রকাশ করা অসম্ভব। মাকুবের বৃদ্ধি, মাকুবের মন ও এরপ কোন অবস্থা ধারণা করিতে পারে না। এই बना क्षेत्रि विवाहिन, 'यला वाला निवर्त्तत्त्र बन्धाना यमगा मह।' देश (कवन वर्षतान नरह। 'नमूछ व्यमीम,' এই वाका বেমন সমৃত্যের অর্থবাদ যাত্ত-প্রক্রভপক্ষে সমৃত্য অসীয় নহে,-সেইরাপ ব্রহ্ম 'বাকা মনের অগোচর,' এই উত্তি ব্রক্ষের কেবল প্রশংসামূলক স্তুতিবাদ নছে। প্রকৃত পকেই ডিনি 'অবাঙ্মনসপোচর'; প্রকৃত পক্ষেই মাহবের ভাষা ও মামুদের বুদ্ধি তাঁহাকে প্রাপ্ত না ছইরা নিবন্তিত হয়। একা किन्नभ, हेश यथन विकाम। कन्ना कहेन छथन छेमानसमन् শ্বষি ভৃষ্ণীস্থাৰ অবলম্বন করিবা রহিলেন। ভিনি ভদারা বুঝাইতে চাহিলেন যে, ওঁছোর গখনে ভাষায় কিছুই বাজ করা

খার মা। তবে কি ভাঁহার সম্বন্ধে কিছুই ধলিব না ? বলিতে ছয় বল বে, ডিমি কেবল শিব। 'শিব এব কেবলঃ'। অথবা ্ৰণ 🖎 ভিনি 'শাস্ত', ডিনি 'সুনার', ভিনি 'অংৰড'। আইরপ বাহা চর একটা কিছু শব্দ প্রয়োগ করিতে পার। কিছ প্রকৃত কথা এই যে, ভোমার ভাষার ভাতার শূন্য 🛊 দ্বিলেও, অভিধান নিঃশেষ করিয়া ফেলিলেও তাঁহাকে বৈশনা করিতে পারিবে না। বাঁছাকে বর্ণনা করা যায় না. স্থাছাকে ধারণা করা অসম্ভব, যাহা অতীক্সিয়, যাহা দেশ কাল নিমিতের অতীত তাঁহা বৃক্তির বিষয় হইতে পারেন না। ক্ষারণ যুক্তি দেশ কাল নিমিত্ত ছাড়িয়া একপদও অগ্রসর ें हैटल भारत मा। **क**हे बना व भद्रताहाशास्त्र लात्क लार्किक श्रीकेश निका कतियां थाटक शहे अखदाठायां व्यक्टीकरत विविधिहन ্ৰৈ, ব্ৰহ্ম 'শলৈকপ্ৰমাণগম্য', ; শ্ৰুতিই তাঁহার এক মাত্ৰ প্রামাণ। কারণ পবিরা সমাধিবোলে তাঁহাকে উপলব্ধি **ক্ষরিরাছিলেন,** তাঁহার সাক্ষাৎকার লাভ করিরাছিলেন এবং ভাষাবের সমাগ্রণনের ফল উপনিষ্টে লিপিব্র করিয়া গিছাছেন। খার শ্রুতিতে এই অতীক্রিয় অভিজ্ঞতা, এই স্পান্যক অমুভূতি লিপিবন হটয়াছে ৰলিয়াই ভারতবর্ষে 🖚তির এড গৌরব। এই গৌরবের কারণ এডকণে আদরা ংশাধ হয় কিছু ২ বুঝিতে পারিঘাছি। মামুবের অমুভূতি ৰে কত উৰ্দ্ধ উঠিতে পাৱে,উহা যে বৃদ্ধির ভূমিকেও অভিক্রম ভারিমা ভারপেক। উচ্চতর গ্রামে আরেছণ করিতে সমর্থ হয় अक्षात उननिवालत पात्नाहनावहे छोडा भूनंतरभ भविष्कृते एक। উপনিষদ প্রচারিত দতা যদি 'আপ্ত' না হয় তবে व्याश वाका बाव कि १

কোন দার্শনিক মতবাদ বলি এই আগু বাকোব প্রান্তি সমাক শ্রন্ধা প্রদর্শন না করে, অথবা যদি ই হাকে প্রাণ্ডি কাটাইয়া বাইডে চেষ্টা করে তবে সেই মতবাদ কথনই প্রান্তিক দার্শনিক মাত্রেই শ্রুত সানিহাছেন সন্দেহ নাই; ক্রিছ মনেকেই পাশ কাটাইয়া বাইবার চেষ্টা করিয়াছেন।

मगाक अक्षा व्यवर्गन कतिएक मगर्व इहेब्रास्कृत। वाटा निवर्केट अञ्चाभा मनमा मह," 'म मर म हामर भिन এব কেবলঃ' প্ৰভৃতি নিশুণৰ প্ৰতিপাদক ৰচনশুলি একৰাত্ত ভিনিই নিঃসংঘাচে গ্রহণ করিতে পারিয়াছেন এবং তৎকত অপূর্ব ব্যাথ্যার সাহায্যেই আমরা সে গুলির প্রকৃত মর্ম্ম क्थिक्षिरत्राभ क्षत्रज्ञम कतिए अमर्थ इहै। जिनि निर्श्व ना একটুও খাট করিবার চেষ্টা করেন নাই; অথচ ভিনি এরপ উপায় উত্ত'বন করিয়াছেন যাহাতে উপনিধদোক্ত স্পত্র ব্ৰহ্মও প্ৰত্যাখ্যান করিতে হয় না। বাঁছারা ব্যবহারিক ও পারমার্থিক ভেদ মানেন না তাহারা বাধ্য হইরা, হয় হৈতাত্মক, না হয় অহৈতাত্মক বচনগুলি প্রত্যাধ্যান করিয়া থাকেন। তাক্ত বৈদান্তিকেরা—বাঁহারা ক্লগতের বাবহারিক সভা অখীকার করেন-তাঁহারা ত্রন্ধের সগুণত প্রতিবাদক वहन खनि, এবং विभिट्टे। देव उरानी अ देव उरानी गर्ग निम्ध नेप প্রতিবাদক বচনগুলির পরিহার বা ক্রকরিত ব্যাখ্যা করিয়া थारकन । किन्नु मक्दंत्रत भक्त किहूरे भतिशांत क्तांत আবশুকতা নাই। ব্যবহারিক ও পার্মার্থিক তেল স্বীকার করিয়া তিনি অর্থবিক্ষতি না করিয়াও সক্ষ বচনের প্রতিই ষ্থাযোগ্য সমাদর প্রদর্শন করিতে সমর্থ হইরাছেন। এই জন্মই বলিয়াছিলাম যে, তাঁহার ব্যাখ্যাতেই উপনিষদ বা বেদাস্থের সার্কভৌমিক আদর্শ দম্পূর্ণক্রপে পরির্কিত হইয়াছে। ফণতঃ এতদপেকা উদার সমন্বয়বাদ वात व भगाय क्यांक उद्यादिक हम माहे। हेशांक वन मश्रक मकन अकात भातनात्रहे द्यान चाह्ह, मकन अकात উপাসনা প্রণানীরই বাবস্থা আছে। বর্তমান কালের উৎকট বৃজ্জিবাদীগণের জগৎ কারণ সম্পর্কিত কোন ধারণাই मक्त वर्गाचा। मभूडामिक जेनियरकांक अन्तवारक छेर्द উঠিতে পারে না। ভারতী। খাষ্পণ অতীক্রির অভিজ্ঞতা যোগে যে ব্ৰহ্মের সন্ধান পাইয়াছিলেন তাঁহায় সহিত ভক্ত. যোগী ও ক্ষীর আরাধা দেবতার অপূর্ব্ব উপায়ে সামঞ্চা বিধান করিয়া শহরাচার্য্য জগতে এক বিশক্তনীন ও भार्त्राजीयक धर्म मःशानन कतिया शिक्षा हिन ।

মুপ্রশন্ত বেদাম্ব ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত করিয়াই তিনি হিন্দু ধর্মকে প্রথম ব্যক্তিবাদী বৌদ্ধদিগের তীব্র আক্রমণ হইতে রক্ষা করিতে সমর্থ হটবাছিলেন। আর. এই বর্তমান ৰুগের বিজ্ঞানবলপৃপ্ত rationalism ( বৃক্তিবাদ ) **य जाय हेडेरबारभ**त ममन्त्र धर्म्य-विश्वारमत हुर्गीकृष्ठ धरामा-বশেষের উপর দিয়া ভারতের অভিমুখে প্রবল অভিযান করিরাছে,—যাহার প্রচণ্ড অভিযাতে ভারতীর ধর্ম ও সমাজের ভিজি পৰ্যাৰ প্ৰকম্পিত হইয়া উঠিয়াছে,—সেই জ্বস্থ অভিযানের প্রতিরোধ করিতে হইলেও শবর প্রচারিত বেদাস্তবাদেরই পুনরায় আশ্রয় গ্রহণ করিতে হটবে! कान अञ्चलांत्र मध्कीर्ग माध्यलांत्रिक मञ्जातनत बाता जांग প্রতিক্র হইবার নহে। যে মতবাদ মানবের আবিষ্ত সমস্ত দাধনপ্রভির মহা মিলন ভূমি, যে মতবাদ যুক্তি বা বিচারকে একেবারে প্রভ্যাখ্যান না করিয়াও অভীক্রিয় অভিজ্ঞতার মহিমা ঘোষণা করে, যাহা মানব প্রকৃতির অনস্ত বৈচিত্র্যকে অস্বাভাবিক উপায়ে মুছিয়া ফেলিবার हिंही मा कविशा करे दैविहित्कात मधारे अधिकात एकरम कर উদার ঐক্যের প্রতিষ্ঠা করে, যাহা সমস্ত বিরোধের মধ্যে भाषि, नमण वानामकातात मत्या नमवरत्रत व्यक्तनतान करत, **डाहा এই পা**न्छा । मझौर्न युक्तिवारमत छेशत रकवन रा আত্মপ্রাধান্ত সংস্থাপন করিতেই সমর্থ হইবে তাহা নহে, छोटा के युक्तिवानक्षत्र श्रीय छेनात्र श्रीय मरधा मानग्रन कत्रकः উरात धकारम यक्तिवास्त्र यथात्यागा हान निर्फ्न कतियां मिरव।

( ঢাকা সাহিত্য পরিষদের মাসিক অদিবেশনে পঠিত )

बीडेलबाइम खर।

## মতিঝিল।

খলকৈছে বারিরাশি সক্ত নির্মল —গলিত বজত থেন--অরুণ কিবুণে। সরসীর নীলবুকে রক্ত শতদল উল্লাসে বিকশি' উঠে ভ্রমর চুম্বনে ! ভীরতক কুঞ্জ মাঝে দেখা বায় দূরে উন্নত ইমাম বাড়া ওল্ল, সুশোভন; আত্র মুকুলের গদ্ধে, বস্তের সূরে পরিপ্লুত ফাল্গুনের উদার গগন। ভাবুকের মুগ্রচকে ভাগে মভিঝিল —আঁকা যেন চিত্রপটে কবির কল্পনা অতীতের শ্বতিবেরা নিয় অনাবিদ निज्ञीत भवान छाना (मीन्पर्य) बहना ! কালের কঠোর হস্ত করেনি লুঠন আজো তার নৈগর্গিক সম্পদ ভাগোর: নাই সুধু নর্তকীর সুপুর শিক্ষন প্রমোদ-তর্ণী-বকে, সঙ্গীত सञ्चात : मुत्रारम् का अ यथु विवादित मानी-সিরাজীর স্রোত, আর নবাব, নবাবী !

विवारगमध्य क्षित्री।

# ছোটো লেখ।।

[ पृष्टि ७ हिखा ]

( )

'লেখা'—লিনিষ্টার প্রাণ হ'লো যে লেখে ভার ভেতর; এক-এক দিন সেই 'প্রাণের'ই সন্ধান পাওরা ন্যায় না,—সে-দিন কারুই লেখা হয় মা।

আবার এক-এক দিন 'প্রাণটা' এত 'সারা' দিছে । থাকে, —কখনো ধেলায়, কধনো হাসিতে, কধনো সা निक ३७२१

नावाय,— (य ভাকে দে-দিন चात्र किছুতেই 'বিদেয়' कता योद्या।

্ৰে-দিন যিনি 'লেখেন' তাঁকে লিখ্তে হয়; যিনি লেখেন না' তাঁকে কাৰ্তে হয়। নিশ্চেট হাসি হাস্বার কুতুল্ত' সে-দিন কাক নাই।

( )

স্নু, বাদ, তেতো,—এসব্ যদি না থাক্তো ডবে বিটি-টা বোধ হয় চিএকাল ভালই লাগতো না।

্র এক-একটা 'রালা'-করা তরকারী থেয়েও মনে হয় বেন ''নিউ-মার্কেটের" কাঁচা কপি আর শালগম খাছিছ। বেশ তাল জিনিব, -কিন্তু 'রাল্ল' হয় নি।

শাদাদের এক-একটা ছাপার অকরের 'লেখা' প'ড়লেও মনে হয় :"মেটিরিয়াল্ন" (materials) গুলো শাসা ছিল,— কিন্তু 'রালা হয় নি।—হায় সুন্, ঝাল।

্ৰ ছবিটা কৰনো দেৰি-নি তাকে আঁকা যায় না,— আঁক্লে দোৰ হয়।

ৰে ভাৰটীর সঙ্গে আমার পরিচয় নেই, তাকে 'লেখার' আনা যায় না,—আন্বার চেটা ক'রলে অপরাধ্যয়।

'ফ্রেম' ক'রে ছবি বাধানো যায়,—কিন্তু সে-টা লক্ষাপ্তে 'ছবি' হওয়া চাই; 'ছবির' ভেতর প্রাণ থাকা চাই,—তার পর ভার চার-ধারে আলো ও ছায়ার লমাবেশ চাই। কিন্তু বিদি ভাতে স্থ্ আলো অথবা স্থা ছাবাই প'ড়লো, যদি ছবির ভেতরের প্রাণটী না আগ্রো,—তবে ভাকে না-বাধ্বেও চলে।

্ছবি ঠিক হ'লে ভালো 'ফ্রেমে' বাধানো চাই বই কি!

8

মন্যোগ লিনিবটে একটা 'হাত-লঠন',—যখন বে-দিকে ব্রিয়ে ধরা নাম সেই দিকটেতে আলো প'ড়বে। নেই আলোতে 'কেজ-প্রদেশটা' আলোকিত হবে,—ভার পর ক্রমশঃ অল্ল বেশী আলো অথবা অক্কার। তাই 'সে-কালের' মুনির পলায় এক রাজা সাপ বুলিয়ে দিলেও তিনি তা টের পান নি; একালে "জন্তু-মনক" হ'রে রাভা চ'ল্লে খোটর গাড়ী বা ট্রান্ চাপা প'ড়তে হয়।

— मन्छ। य चादिक यात्रभात्र छाई !

ফটোগ্রাফের 'শুপ' (gronp) নেবার সময় কেন্দ্রস্থি (central figure) ঠিক ক'রে'ফোকাস্' (focus) করা চাই। লেখায়ও 'ফোকাস্' চাই।

—তাই সব সমর আমাদের হর মা ব'লে দেখি আমাদের কতক গুলো লেখার অন্ধ্রে লাকচরিত্র,— তাদের ওপর আলো ছায়ার ভাগ হয় নি; অথবা কার্ক্র হাতখানা পা ছাড়িয়ে লখা হ'য়ে নেমেছে, কারু আল্লটী একগাছা লাঠির মতন দেখাছে; আবার কোথাও বা চিত্রের এক পালে পাছানো একটা নয় মৃত্তি সুন্দর, অ্সজ্জিত মধ্য-মৃত্তিকে ডিজিয়ে উঠে' সমস্ত জিনিবটাকে বেন খালি উপহাস ক'ছে!

লক্ষ্য-চ্যুতি দেশ্লে হাসিও পার, কারাও পার। (৬)

মাসুবের মধ্যে কত 'দেবতা' থাকেন।

তাদের কাউকে দেখা যায়,—প্লোর বাবস্থা নিজেকেই ক'রে নিতে হয়; ফুল কুড়োনোর জন্ত লোক পাঠাতে হয়; ঢাক বাজানোর জন্ত নিজের কড়ি দিয়ে ঢুলী ঠিক কর'তে হয়;—তারপর শেষটায় প্লোহ আগনে গভীর হ'রে ব'দে প্লোর 'চাল-কলাটা'ও ভুলে' নিতে হয়।

আনার কাউকে দেখি, তাঁর প্লোর লোগাড়
অনাগাসেই অপরে ক'ছে; তিনি আনেনই না বে
প্লো' হবে আর হ'লেই বা কার এক প্লোর কোগাড়
হ'ছে। তাঁর প্লোর এক "বেদী" গ'ডতে হয় না—বেকোনো আসনেই লোকে তাঁকে 'দেবতা' ক'রে বসাছে;
প্লোর ঢাক-বাদ্য আপনা হ'তেই বেজে উঠ্ছে;
রাতায় চল্বার সময় সকলে তাঁকে আগে বেতে দিছে।
এমন যে দিন দেখি সেদিন বাস্তবিকই "দেবদর্শন" হয় বু

बीयुद्रमध्य मध्य ।

#### অবরোধ

( Erckmann Chatrian निश्ठ 'Le Blocus' নামক আখ্যায়িকার বঙ্গান্থবাল ) তৃতীয় অধ্যায়।

আমি ত পেৰেনার মহাজনকে চিঠি লিখি লাম। পেজেনা नश्य निषि (क्लामु (नशास्त खांछी, यक, (छ्डांत लार्यत धूव कांत्रवात । किमीति बाकीत या पत स्टा तम्म ভাই থেকে ইউরোপের সব জায়গায় বাজার নরম গরম ছয়ে থাকে। ব্যবদায় যে ব্যক্তি হাত দিতে যায় তার এ স্কল থোঁজ রাখ্তেই হয়। রোজ রোজ কাগজে বাজার দর আর ব্যবসা বাণিজ্যের ধবর রীতিমত পড়ে থাকি বলেএ দব সন্ধান আমার আগে থেকেই कानाहिन। अवतरे रम वावमात भाषा वाकी या कि ह, ভা এর পর হাতে কলমে শিখ্তে হয়। আমি পেজেনায় বড় মহাজন 'ফাতায়া' সাহেবকে আমার নামে বার পিপে মদের আরক পাঠিয়ে দিতে লিখ্লাম। করে দেখ্লাম মায় গুদাম জাত করার ধরচা সমেত কিপিপের হাজার 'ফাঁ' করে পড়্বে। গত বছর থেকে লোহার ব্যবসা আর চলছিল না। কোনও রকমে কেবল মজুত মালগুলা সব কাটিয়ে দিয়েছিলাম। হালার কাঁ যে যোগার করে দিতে হবে দেবত আমাকে ভত ভাৰতে হয়নি। তবে ফ্রিজ তোমাকে বল্তে জি টাকাটাও ত নেহাত কম নয়, আমার হাতে যাকিছু ছिन এ তার আধা আধি বল্লেও হয়; পনের বছর ধরে या कि हू (बाक्रगांद करबिलांभ जा अक्कारन स्य सर्व দিতে কি কম পাহদের দরকার তা তুমি নিজেই ব্ৰে দেশতে পার। চিঠি পাঠিয়েই মনে হতে লাগ্ল পারিত **দেখানা ফের**ৎ নিম্নে আসি কিন্তু তথন আর উপায় हिन ना। जाभि वाहित्त भार्म (पथित्र वामात्र जीत्र ब्राम "कान छ जारना नाहे भव छालग्र छालग्र हरत्र गार्व দেখো এখন। ছ্গুণ তিন খণ লাভ মারে কে ?"
আমার মত সেও বাহিরে, হাসি মুখ দেখালে ঘটে কিছা
ভিতরে ভিতরে আমরা ছুলনেই বেশ ভর পেরেছিলাম।

চিঠির জবাব আর চালান বিলটি ওছ মাল এবে পৌছাডে যে হপ্তা ছয়েক লাগ্বার কথা সে কয়দিন আমার রাত্রে ভাল করে পুমই হতো না। কেবল ভাব্তাম মোয়াস রে এইবার বুলি সব হারাতে বস্লি, আর কিই বাধাক্শ বুঝি ভলা ডুবিই বা হয়ে পড়ে। এই সৰ জুভাবনায় আমার গা দিয়ে গল্ গল্ করে पान বেরুত কিন্তু তাই বলে যদি কেউ গানায় বলুতো "মোয়াস তুই স্থির হ তোর ঝঞাট আঁমিই মাধায় করে নিচ্ছি" ভাহলে কিন্তু আমি কোনও মতেই তার কথায় রাজি হ'তাম না! তার মানে আর কিছুই নয়-জামার লোক-সানের ভয় যত বেশী, হু পয়সা লাভ করার ইচ্ছাও ভার চেয়ে বড় কম ছিল না। এই রকম হৃদিক ভেবে যারা চলতে জানে তাদের মধ্যেই বড় সেনানায়ক কি আপন হিক্মতে কাজ কর্নেওয়ালা ব্যবসাদার সোক দেখুতে পাওয়া বায় ৷ আরু বাঁকি যারা তারা সব ভধু কলের পুতুল তারা পারেন কেবল তামাক বেচতে, চুকু চুকু গেলাস টানতে আরু নাহয় ওধু বার কতক বন্দুক ছুড়তে। বড় ব্যবসাদারের যা সন্মান তা জাদেরেশ भाट्यतिम् अधिक तक कम नव। धर्छ (शटन सारिहेद উপর ছোটয়-বড়য় বড় তফাৎ গাকে না বটে কিন্তু মন্ত্রাটি (मथ, हेराना अशाधान कि अक्षेत्रिक (य मुस्कब्हे कवा হোক্ না সুখ্যাত কর্ত্তে হলে লোকে করে কেবল न्तरभाविशन वाराष्ट्रदेव चात यह नवकारमानका निकारण याता नव रमशाहे हाय शिराहितन जाएक नाम । नाइ वका नाइ। निष्करक निर्वाशिक्षरमञ् সঙ্গে তুলনা কর্ব এমন আম্পদ্ধা আমার নাই তবে ধর্মে গেলে আমার প্রায় এখা সর্বায় পুইয়ে বার পিপে मामत हिल्लाति किना अहान स्वत मुस्तत हिला वर्ष क्य বাহাছ্রীর কথা নয়।

শামি যখন এই সব নিয়ে ভাবনায় অন্থির সেই সময়
সমাট বাহাছর বারিতে পৌছিয়েই হকুম কলেন যে তার
চলিশ কোটি চলিশ লক্ষ ঘট হাজার লোক চাই ই চাই।
ভবন শক্রুর দল যে আমাদের ভাল রকম করেই আক্রমন
কর্মে একথা বুর্তে কারও বাঁকী রইল না। সকলেই
ভবন যে দামেই হোক মাল বেচে দিয়ে টাকা গছিয়ে
বাব্তে বাস্ত। আমিই কেবল তাদের দেখা দেখি সে
পথে না গিয়ে তথনও বাবসার টাকা চালতে চলেছি।
একথা সংশ হ'লে বাস্তবীকই নিজে নিজেই একটু বড়াই
কর্মে ইচ্ছে করে। ভাবি আমিই বা সাংসে কম
কোথায়?

এই সব গোলমালের ভেতর ছোট নাতি এস্ডাসের ত্মত দেওরার পমর এদে পড়ল। আমার মেয়ে (कका) ভৰন বেশ সেরে উঠেছে। পাছে আমি ব্যস্ত হই সেই **অন্ত বারুণ বাবাজী** লিপে পাঠিয়েছিলেন যে আমাদের আর যাতায়াতের হাঙ্গামে কাজ নেই, তিনি নিজেই ছেলে পুলে নিয়ে ফাল্গবুর্গে উপস্থিত হবেন। গিলি ত তাই ভাষে থাবার দাবার মেঠাই মণ্ডা তৈয়ারী কর্ত্তে লেগে গৈলেন তা নামই বা কত করব বি-কুগেল আয়ান স্লাপ মনেদ আরও কত কি। এদৰ খাবার অতি সুখাছ **একদম মেওয়া চীজ আ**মাদের বুড়ে। রাক্সি (পুরহিত) আরমানকে দিয়ে আমার ঘরের ভাল মদটা একবার পর্থ করিয়ে নিয়েছিলাম। আর এই উপলক্ষে জন ক্ষেক বন্ধু বান্ধৰকেও নিমন্ত্ৰণ করেছিলাম। মিডেঙ্গ ত্রণের শিজার আর তার স্ত্রী বৌনে. হিশা আর বুর্গে মাষ্টার। বুর্গে আমাদের সঞ্চাতী সাম বটে কিন্তু তার যে রক্ম বিভা বৃদ্ধি আর चांभ्रमी कगडा তাতে তার যে ইত্দি ঘরে জনা হলেই ্রিভাল হত। সম্রাট বাহাছর সহরের ভেতর দিয়ে হিন্দে বৰন অভিনন্দন দেওয়ার আবশুক হত তৰন ্ৰ**বুৰ্জেই তা লিখে টি**থে ঠিক করে দিত। সরকারি উৎসব উপনক্ষে গাল বাধার দরকার হলে বুর্জেই তাহা ভার

ছুই বিয়ার টান্তে টাৰ্তে বেঁধে ওকাণতি বা ডাক্তারের পরীকার জন্ম যদি কারও প্রবন্ধ. লিখতে লিখতে আটকে যেত তা লাটন ভাষাভেই হোক আর ফরাসী ভাষাতেই হোক্ বাড়ীতে গেলেই বুর্জে তার স্থবন্দোবন্ত করে দিত। ছেলে পিলেদের প্রাইজ দেওয়ার সময় যদি বাপ মাদের মন গলিয়ে চোখের জল ফেলনের আবখক হত লোকে বুর্গেকেই পাকড়াও কর্ত। বুর্গে একতাড়া কাগ**জ** টেনে নিয়ে এমন বক্তৃতা লিখে দিত যা অত লোকে দশ वर्भात्र श्रीतात ना। यक्ति कांक्र त तांच भतकारत कि পুলিশের দারগার নিকট কোনও আর্জি লেখার আবশুক হ'ত সে অম্নি বুর্গের শরণ নিত। যদি কোনও কেরারী দেপাইএর পঞ্চ নিয়ে বুর্গে কৌজি আদালতে তার মকর্জামা চালাত তা হ'লে আসামী গোডা বারিকের প্রাচিবের ধারে গুলির ঘায়ে না মরে থাসা থালাস হয়ে চলে যেত। বুর্গে যথন এই সব কাজ কর্মের পর খাসা নিশ্চিত হয়ে সাশ সাল্বলে সেই বেটে ইছদি বেটার সঙ্গে একহাত খেলুতে বদে যেত আর তার কাছে প্রতি নিয়ত টাকা প্রসা হারত তথন কিন্তু বূর্ণের ভালর জ্ঞ কারুর মাথা বাধা হত না। আমি প্রায়ই ভাবতাম যে वूर्ल वाहेत शास्त्र हेिल थूल रानाम करत रा जात्नत चारतकरकर मान मान शून प्रणा कात थारक। (य नव আকাঠ মুর্থেরা আদাশতের পেয়ারী বা পাড়াগাঁয়ে পুলিশের জ্যাদারী করে বলে খুব সর্ফবাদী করে বেড়ায় তাদের লখা লগা কথা শুনে এমন একজন পণ্ডিত লোক कथन रे यान यान ना दश्य थाकृ एक भारत ना। छरत (नाकि। थूरे उस वारशंत कर्छ झान्छ। आत नकन রকম মহবৎ আদব কায়দা তার ভাল করেই অভ্যাস ছিল দেই জন্ম মুধ্ ফুটে কংনও কিছু বলুতো না।

বুর্গে আগেকার আমলে পাদরীগিরি কর্তো, সন্ধা চৌড়া লোকটি যেমন খোপ চেহারা তেমনি মিষ্টি কথা। তার গলার মিষ্ট আওয়ানে ইচ্ছা মা ধাক্ষেত্রন শাপ্নিই নরম হয়ে য়েত। কিন্তু অদৃষ্টের ফের লোকটা
নিজের ভাল মলর দিকে মোটেই দৃষ্টি ছিল না। যে
কেউ এসে ভার গালে চড় দিয়ে টাকা পরদা নিয়ে য়েতে
পার্ভো। আমি কভবার ভাকে বলেছি যে বুর্গে
দোহাই ভোমার ভোডোরদের সঙ্গে আর বাজী রেপে
ভাস থেল তে যেওনা ও সব লকীছাড়া বেটারা কেবল
কাঁকি দিয়ে নেয় বইত নয়। ওরকম করে আর ওদের
ঠকাভে দিও না। কলেজে মাইনে পত্তর যা পাও
আমাকেই এনে দিও যদি কেউ ভোমাকে ঠকাতে আসে
আমি নিজে দাঁড়িয়ে দেখ্বো বেটারা কেমন করে কি
করে। আমি ভোমার নোট টোট সব ওলে গেঁথে নিয়ে
ভোমার পাই পয়নার তিসাব মিলিয়ে দেব। কিন্তু বলে
কি হয় ৽ আপেরের ভাবনা ভার মোটেই ছিল না সে
আগের মতই নিম্পরোয়া ভাবে চল্তে লাগ্ল।

ভ্ৰম নভেম্বর মাস। সে দিন নাতীর স্থয়ত হবে राम योगि यामात अन कार्यक श्रतीन वज्राक मकान স্কালেই ম্ব্যুহু ভোজনের নিমন্ত্রণ করে এসেছিলাম। যথা সাধ্য আয়োজনও করেছিলাম কোন কিছুরই অভাব ছিল না। জামাই মেয়ে থোকা আর তাব ধর্ম বাপ ধর্ম মাকে সঙ্গে নিয়ে বড় একখান গাতি করে খুব ভোরেই এদে পৌছে ছিল। প্রায় এগারটার মনঃ আমাদের ধর্ম ঘরে শাস্ত্র মত্যা কিছু কাজ সব হয়ে গেল। সুলভের সময় খোকা একটি বারও কারেনি! **এতে আমাদের** সকলেরই বড় আহলাদ হয়ে ছিল। ভারণর আমরা বাড়ী ফিরে এলাম। ধারার টারার সব चार्ग (शक्करे श्रष्ठ हिन। श्रथ्रामरे अक्षान वड़ (हेदिन कून हेन फिर्य खन्दर करत मार्कान। খাদা রূপ দন্তার রেকাবিতে খাবার সামগ্রী পরিগাট ় করে পরিবেশন করা। ফল গুলো ছোট ছোট ঝুড়ি कात मालिय ताथा राष्ट्रिल। आमता मन भरा आनात्म ু খেতে ব্দে গেলাম। আমার আহিন ধারে ব্দেছিল । লিদে বুর্গে আর আমাদের বুড়ো পুরুত আযমান আর वां मिरक हिल्लन मारकन, हिर्म आत्र आयारमत् वाक्ष (मरायात हैं। हे हरमहिल (हैविरन मन्त्र বাবাজী। धारत। जाता हातकन मार्ल, (कका), (करान बात (वीत व्यायात्मत मायना माय्नि (वट करमहिन। মেরেদের আর পুরুষদের ভিন্ন ভিন্ন ঠাই হবে,—এই হচ্ছে ভগবানের আদেশ। ভোজের সময় নানা রক্ষ পরম থাবার থাওয়া হয় তার সঙ্গে আবার মদও চলে একেই রক্ত আপনা হতেই গ্রম হয়ে উঠে তার উপর থাকে নেশার আনেজ। সেই জগু আমাদের শারে পুরুষ আর স্ত্রীলোকের এক সঙ্গে খেতে বসতে নাই। বুর্গে বেশ জাকাল রক্ম পোষাক করেই নিমন্ত্রণ রকে কর্ত্তে এদেছিল। গায়ে খাসা ফ্রক কুর্ত্তা ভার নীচে त्तम वार्गान कृत्रतात्र कांनिक ग्लाय थ्रे धर्म नाना টাই। দে সুন্দর ভদী করে উচু গলায় বিশ্বান লোকেরই উপযুক্ত নানা গভীর তত্ত্বে বিষয় **আলোচনা কর্ছিল।** আমাদের জাতের সাবেকী আচার ব্যবহার—আমাদের নানা রকম ক্রিয়াকর্ম।--পাগোভার পরব--নৃতন বছরের পরব, কি হুরা প্রায়শ্চিত্তের নিয়ম—এই নিয়ে দে যে কত কথাই বলুতে লাগ্ল যেন খাট ই**ভদি বংশেই** তার জন। আনাদের ধ্যের আর আনাদের শাত্রকার মুদা পায়গন্ধরের নিয়মাবলীর দে কতই না প্রশংসা কর্ত্তে লাগ্ল। আমাদের গোণনীর 'কাবনে শান্ত' যারা জানে তাদের মত বুর্বেও কাল্দীয়ান ভাষায় সুপ্তিত। যারা দাভার্ণ থেকে নিমন্ত্রণে এদেছিল তারা কানাক।নি কতে লাগ্ল এ লোকটি কে এযে এমন স্থলর স্থলব শাস্ত্র কথা এমন জোরের দঙ্গে বুঝিয়ে দিয়ে যাচ্ছে একি व्याभाषित बाटित পूक्ट ना गाएम मनीवरम्त भर्ग কেউ ?

তারা যথন শুন্লে যে সে মোটেই ইছনী ময় তথন
কলেই অবাক হয়ে গেল। আমাদের বুড়ো রান্ধি
আয়মান ছাড়া আর কেবই তার সঙ্গে অবাব কর্তে
পারছিল না। একই শান্ত পড়া পণ্ডিতদের মধ্যে জারা

বিৰয় নিয়ে যেমন কথা বার্তা হয় এদের ত্জনের মধ্যেও সেই রকমই কথা বার্তা চল্ছিল। তনে বোধ হচ্ছিল হুজনের বেশ মতের মিল আছে।

আমাদের পেছনে আমার নুতন নাতি এদা ভার দিদিমার বিভানায় মশারীর ভেতর বুমুচ্ছিল মুখখানি হাদি হাদি হাত হুটো মুঠো করা। এমনঅগার হয়ে খুমুদ্দিল যে আমাদের হাদির গড়রা, কথাবার্তার শব্দ, গেলাদের ঠন্ ঠনি কিছুতেই তার ঘুম ভাঙ্গছিল না। मार्त गारा এक এक क्रन शिरा তাকে দেখে আস্ছিল, শ্বশেষ বলছিল ''ধাদা ছেলে হয়েছে ঠিক তার মোয়াদ **জালা মহাশরের মত।" তানে আমার** তারি আহলাল হল আমিও গিয়ে তার বিছানার উপর ঝুকৈ অনেককণ धरत रिएथ अनाम, किंद्र आमि रिप्रनाम आगात रहता আমার বাবার চেহারার দঙ্গেই তার মুখের আদল বেশী মিলছে। প্রায় বেলা তিনটার সময় অক্তাক্ত থাবার সব केंद्रिय नित्त्र शिद्र मिष्टि हिष्टि किर्य श्वन । त्वाञन ভान मरएत (शांद्य निष्ठ निरम (भनाम (प्रकाम -- শক্ত বেতিল গুলোর তলায়,--ধুলো মাণা-মাকড্দার খাল খড়ান খুব পুরানো এক বোতল কৃদিল মদ ারয়েছে। আমি আন্তে আন্তে বোতলটি তুলে নিয়ে अरत छिवित्त नामान कृत खनात मर्गा (त्राथ वन्नाम ভোমরা ভ আগেকার বোতলের থুবা সুখ্যাতি কর্ছিলে क्षी (क्रमन क्रकतात (प्राप्त वन मिर्ध।

বুর্ণে পুরান মদের ভারী সমন্ত্রদার এর চাইতে আর দে কিছুই ভাল বামে না। ইাসতে হাঁমতে বোতসটার উপর হাত তুলে পণ্ডিতি চঙ্গে বল্তে লাগ্ল "বে মহিমারিতা স্থবাদেশী এই হুঃথ কপ্তময় সংসার ক্ষেত্রে সামাক্ত মানবের তুমিই বলদাত তুমিই এক নাত্র হিছেতারিণী, বে বোতল দেব! প্রাচীন আভিজাত্যের মা হিছু চিছু ভা সব ভোমাতেই বিদ্যমান দেখ ছি"। এক মুধ ধাবার নিয়ে ভাকে এই সব কথা বল্তে তনে মান্ত ভালে সকলেই বেলে উঠ্ল। আমি সর্লেকে তথনই বোতল—খোলা কর্ক জুটা আন্তে বল্লাম। সলে বাবে বলে যেমন উঠেছে অমনি বাইরে রনভেরী বেজে উঠ্ল। ভানে সকলেই জিজাসা কর্ত্তে লাগ্ল "ব্যাপার বানা কি" ?

ঠিক সেই সময়ে জাবার রাস্তা দিয়ে প্রকাণ্ড জনেক শুলো ঘোড়া যাওয়ার শব্দ শোনা বেতে লাগ্ল। তাদের পায়ের ভারে বনিয়াদ শুদ্ধ বাড়ী গুলা বেন কেঁপে উঠতে লাগ্ল মনে হল পৃথিবীটার উপর হঠাৎ কি বেন একটা বিষম ভার এনে পড়েছে। সকলেই ধাবার টাবার ফেলে জানালার ধারে দৌড়ে গেল।

চেয়ে দেখি ফরাসী দরওয়ালা থেকে ছোট চক
পর্যান্ত সমানে গোলান্দাল সেনার দল চলেছে মাধার
মোমজামা মোড়া বড় বড় পাকো টুপি, জিনের উপর
ভেড়ার চামড়া বিছান। তারা প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড পাড়ী
বোঝাই করে গোলা, গুলি, বোমার খালি খোল, আর
মাটি খুড়বার অন্ত শত্র সব নিয়ে যাছিলে।

দেখে আমার মনটা কিরক্ষ হয়ে গেল যে **ক্লিল** তাত্মি বুঝ**্**ভেই পারছ।

বুর্গে বলে উঠ্ল ভাই সকল দেখ ওই রণচঙী আগিয়ে আস্ছেন আমাদের কাছে এসে পৌছালেন আর কি? এখন আমাদের বিল বছর ধরে "ওর খোরাক পোষাক যোগাতে হবে।"

আমি জানালার চৌকাটের উপর হাত রেখে ভাবতে লাগলাম "তাই তো" দেখ ছি, এখন ভো আর শক্র আগতে বিলম্ব নাই। এরাত সহরটা গড় বন্দী কর্তেই এসেছে। আমার মদ এসে পৌছাবার আগে বদি শক্ররা সহর ঘিরে ফেলে কি পথে আস্তে আস্তে বদি রুপরা কি অষ্টায়ানরা গাড়ী গুলো আটুকে কেলে তাহ'লে উপায় কি হবে। মাল পাই না পাই লাম তাহ'লে উপায় কি হবে। মাল পাই না পাই লাম তাহ'লে উপায় কি হবে। মাল পাই না পাই লাম তাহ'লে উপায় কি হবে। মাল পাই না পাই লাম তাহ'লে উপায় কি হবে। মাল পাই না পাই লাম তাহ'লে উপায় কি হবে। মাল পাই না পাই লাম তাহ'লে উলায় বামার মুখ গুকিয়ে পেল। সলে আমার দিকে চেয়েছিল ভার মনেও ভখন নিশ্চয়ই এই ভাষনাই

एकिन किस रन मूच कूरि किहुरे वन रन ना रकवन रहरत রইল। গাড়ী খোড়া রা্ভা বয়ে নাচলে যাওয়া পর্যান্ত चामता त्रचात्नहे में फ़िरत तहेगाम, त्राचा त्नारक गम् गम्, কয়েক জন বুড়ো দেপাই মিদর মুদ্ধের क्दृह्नि। क्ष्युं -- (म्याद्य, (भागानाव, भावानि, द्यानका विश्व रफोरबत रफकात, रवताबिनात भना श्रात नम्य छिन वरन মাকে লোকে বেরেজিনা বলে ডাকতো এরা সকলে আরও কয়েক জনের সঙ্গে মিলে স্মাটের জয় হোক বলে টেচিরে উঠ্ন তাই ওনে ছোট ছোট ছেলেরা পোলান্দাঞ্চদের গাড়ির পেছনে পেছনে সমাটের জয় বলে ছুট্তে লাগল কিন্তু বেশীর ভাগ লোকই ঠেট हिर्ल हुशीं करत (प्रश्ट नागन, (प्रश्व दाव इन **শক্লের মনেই** ভাবনা ঢুকেছে। শেষ গাড়ীখান 'কুকে'র খোড় ঘুরে চোকের বাহির হতেই সকলেই <sup>\*</sup> সাথা নীচু করে আপন আপন বাড়ীতে ঢুকে পড়ল। আমরাও থাবার ঘরে ফিরে গিয়ে সকলের মুধ চাওয়া চাওয়ি করতে লাগলাম। ফের আবার খেতে বস্বার কারুর বড় ইচ্ছা দেখা গেল না। বুর্গে বল্লে মইদ ভোষাকে যেন কেমন কেমন দেখাছে কি হয়েদে বলত"।

আমি বল্লাম আমাদের এই সহরে এখন কত ছুর্ঘটনা ষ্টুবে তাই ভাব্ছি বুর্গে।

ভয় কি ? সহর রক্ষার যে রীতিমত বন্দোবস্ত রয়েছে, এখন বাকী ভগবানের হাত। যা ঘটবার তা আটকায় কে; ছেড়ে পালাবার যখন জো নাই তখন মাথা পেতে শঙ্রা ছাড়া আর উপায় কি; ভাবছ কেন এসো সকলে বনে পড়া যাক, একটু পুরানো মদ চাখ্লেই মন চাল! হয়ে যাবে।

তাই ওনে সকলেই আপন আপন আয়গায় এগে বস্ল। আমি বোতলটার কাক্ থুলে ফেল্লাম বুর্গের কথাই সভিয় হল। পুরান রুসিল একটুতেই কাজ করে, আমাদের মুখে আবার হাঁসি ফিরে এক।

"বুর্নে আইন আমরা থোকা এড়ার স্বাস্থ্য দান করি। ভগবান যেন ডান হাত খানি বাড়িয়ে তার মাধার উপর মঙ্গল আশীর্কাদ বর্ষন করেন যেন তাকে সকল বিপদ আপদ থেকে রক্ষা করেন।" আমরা পরক্ষারের গোলাসে গোলাস ঠেকিয়ে স্বাস্থ্য পান কর্লাম। একজন বল্লে 'মোয়াস ঠাকুদা' আর সাল ঠাকুর মা যেন দীর্ম জীবী হয়ে বহুদিন সুখ ভোগ করে এস আমরা ভাদেরও স্বাস্থ্য পান করি"

শেষে মদের ঝোঁকে সবই গোলাপী পরদার ভিতর
দিয়ে দেখা যেতে লাগ্ল সকলেই সম্রাটের যশোগান
কর্ত্তে কর্তে বল্তে লাগ্ল তিনি সঙ্গে সঙ্গেই আমাদের
রক্ষা করার অভ্য এসে পড়বেন আর লকীছাড়া শক্ত বেটাদের রাইন নদীর অপর পাড়ে শুড়ো করে রেখে

কিন্ত সে যাই হোক পাঁচটা বাজতে যথন বাড়ী
কেরার সময় এল তখন সকলেই এমন কি বুর্গেকেও
মেন মন মরা মন মরা ঠেক্তে বোধ হতে লাগ্ল।
সিড়ির নীচে আমার হত ধরে বিদায় নেবার সময় ভাবে
তড়ই ভাবিত বলে বোধ হল—বল্লে ছ্লের হেলে
গুলোকে দেণ্ছি আপন আপন বাপ ময়ের বাড়ী পাঠিরে
দিতে হ'লো। আমাদের এখন হাত গুটিয়ে চুপটি করে
বসেপাক্তে হবে। সাভার্নের কুটুছেরা জেকাঁয়া বারুধ
আর তাদের ছেলে পিলের সঙ্গে নিঃশন্দে রওনা হয়ে পেল ভোড়া হটোকে ছুটাবার জন্ম একবার চাবুকের
আওয়াজও কর্লে না।

वी अक्रमान गत्रकार।

WHITE SEED THE

## প্রতিধানি।

বৈ স্কপনী ছায়ার দৰি মুগ্ধা তরুণী

ভীতির গীতি পাঠার তোরে নিত্য ধরণী।

কানন দেবীর কলা তুমি স্বাধীন ললনা

কাহার ধানে মগ্ন থাক আমায় বলনা ?

মও যে কণে অন্ত মনে কুসুম চরনে

দদীর কুলে দীড়াও কভু সজল নয়নে।

আপন মনে বেড়াও তুমি গিরির গায়েতে।

কোন্ শবরীর সঙ্গী তুমি চটুল চরণা

কলে সরল রূপের পরী নিরাভরণা।

বেত বরণী তপল্বনা পুন্ত চরিতে

শুওনা তুমি কথার ভালি ফিরাও বরিতে।

ব্দয় চাহ নিদয় তুমি বিজনন। গিনী

ভাষার তোমার ভূলায় না'ক বিরলভাবিণী।

बीक्यूपत्रक्षन यक्षिक।

ঢাকায় দঙ্গীত চৰ্চা।»

( ঢাকা নগরী ও তন্নি চটবর্তী স্থানের সঙ্গীতজ্ঞ ব্যক্তিগণের এবং ঘাত্রা নাটকাদির মংক্ষিপ্ত বিবরণী )

বদীত সম্বর্ধে বলা বায়:—
কে তোমারে আনিল গো এ ধরণী তলে
স্থার নিঝর সম আলা জুড়াইতে ?
বসম্বের ফ্লরেণু পুরিত অনিক্রেশ
সাবে আন হৃদিকতে হাত বুলাইতে।

অনন্ত কালের কথা মনে থেন পড়ে,
কথনো বা স্থভরে কেঁদে ওঠে প্রাণ,
তোমার ও ধ্বনিগুলি হাদি-পদ্ম ছিরে
যখনে গো ফুটে ওঠে হ'রে মূর্তিমান।—
সবি যেন আপনার, কেহ নহে পর,
এ ধরণী মোরি যেন সেহময়ী মাতা,
বিখের সকলি যেন কেহ গো আমার
মনে হয় ঘ্রে' ফিরে এই সব কথা।
ওগো, ভোমার মধুর ধারা ঝরিয়া নিয়ত
ফেলুক এ চিত ছেয়ে—অপূর্ক অমৃত।

এমন এক শময় গিয়াছে যথন ঢাকা নগরীতে এই
স্মধুর সঙ্গীত চচ্চা প্রচুর পরিমাণেই ছিল। নবাবি
আমলে ঢাকার স্টেকাল হইতে আরম্ভ করিয়া ২০২৫
বংনর পূর্ব পর্যান্তর উচ্চালের সঙ্গীতে এ নগরী মুখরিত
ইইত। শান্তিমন্ধী সন্ধার আগমনের সঙ্গে সঙ্গে সহস্ত্রই
দীপমালায় ভূবিতা হইয়া নগরী যখন নক্ষত্র থচিত নীল
নভের সঙ্গে স্পর্কা করিত, তখন হইতেই প্রত্যেক
কলাভবন হইতে কলাবত-কঠের উদাত অনুদাত
স্বরলহরী,—সেতার, স্বরবাহার, এআজের কলগুলন,
মৃদঙ্গের গল্পীর নির্যোগ ও তবলার চঞ্চলনাদ আকাশে
বাতাদে খেলিয়া বেড়াইত। মনে হইত নগরী খেন
প্রতিরলনীতেই উৎসবে মগ্ন হয়য় আছে।

কিন্তু আর সে দিন নাই। উদরারের চিস্তান্থ আর কেহ তেমন করিয়া সঙ্গীত শিধে না। শিথিশেও তাহার আদর হয় না। দেশে উচ্চাঙ্গের সঙ্গীত বোদারও পা অভাব হইয়াছে। বেক্সবিনে মুক্তা ছড়াইতে কাহার সাধ্যায় ৪ তাই অভ্যন্ত বিভারও হ্লান হইফুছে।

ভারতীয় সঙ্গীতের এপেদ, ব্যাল, টপ্পা ও ঠুম্রি এই
চারিটি অন্ধ। ইহার মধ্যে এপেদ ধেন গভীর গন্তীর
কলনিধি, ব্যাল ধেন প্রবল তরন্ধিনী, টপ্পা ধেন ধেগবতী
পার্কত্য নিকরি, আর ঠুম্রি বেন মৃত্পামিনী লহর গুলু।
ইহা ব্যতীত ভক্তন ও গন্তল কাতীয় আরও চুই প্রকারের

हिता भारिशः बहिन्द्रभः महिन्। अक्टेट्स्स्टर बहिन्।

দলীত আছে, উহা ভক্তজন মনোমুগ্ধকারী। এখানে প্রাসকক্রমে বলা যাইতে পারে যে প্রপদ, ঠুম্রি ও ভঞ্ন हिन्तूंगराव उँखाविक, व्याद बान, हेश्रा ७ गवन प्रत-মানুদের হৃষ্ট। এই কয়প্রকার সঙ্গীতের মধ্যে গ্রুপদই সর্বোচ্চ শ্রেণীর। কিন্তু আজকাল গ্রুপদ বড়কেউ শুনিতে চায় না। উহাতে ত চটুল স্বর্কম্পন 'লীলা নাই; আজকাল এই তর্লতার দিনে কে তাহার সেই সমুদ্র তরঙ্গবৎ গন্তীর পতি-সৌন্দর্যোর রসাসাদ করিবে? তাই আজ এপদী নীরব। সঙ্গে সঙ্গে মেদগর্জনের অফুকারী মৃদক্ষের (পাখোয়াজের) "মিয় গন্তীর নির্যোব"ও লুপ্ত। পাৰোয়াজি থুঁজিয়া পাওয়া ক্রিন। প্রাকের আদর ও বড় একটা নাই। ভারও যে রাজসিক চাল। এখন কথকিং আদর টগ্লাও ঠুমুরির। এগুলি যে সরবৎ ও চাটুনিরই মত আভ **एशिंगा**त्रिनी। এখন মহাকাব্য কে পড়ে? রামারণ, মহাভারত পাঠ করার সময়, সামর্থ্য ও ধৈর্যা কোপায় গ (रैंक्ट बाक भी डामाविना। এখন हम्मक, वक्न, विना, ষুঁই, চামেলির আদর আর বড় দেখিনা, বাগানে वांशात्न तक्षमात्र अञ्-मून ( season flower ) आत পাতাবাহারেরই আদর। কিন্তু এও ত আর চলে না। হিন্দিগান দূরে থাক গন্তীর ভাবের বাঙ্গলা গানও যে ষ্পচল হইয়া উঠিতেছে! কেবলই যে হাসির গানের ফরমাস হয় ? ভানপুরা, সেতার, এস্রাঙ্গ দূরে নিশিপ্ত, এখন হার্মোনিয়ামের কর্কশ ধ্বনির সঙ্গে প্রাণপন চিৎকার না করিলে দঙ্গীত হয় ন।। যেখানে গান **त्महेबाटनहे के वमब**र अन्नभूग अत्कक्ति वाक्का। **এই यञ्ज आमारित काठीय श्वतराव मक्टि नहे क**िया **पिटिंग्डा हैशा (पार्येश यह (प्रहे (प्रायंत्र अक्ष्ये** खनी--आमारनत रिंद हेरात श्री हेरा विवास विवास याही বলিয়াছেন তাহা প্রনিধান যোগ্য। তিনি বলিয়াছেন :--· that the harmonium which he accompanies

himself was ruining his chief asset, his musical ear, and if the girl who learns the pianoforte could see that all the progress she made was as sure a step towards her own denationalization as if she crossed the black sea water and never returned—they would pause before they laid such sacrilegioss hands on saraswati. Excuses may be made for such practices, but there is one objection fatal to them all; the instruments are borrowed......To dismiss from India these foreign instruments would not be to check the natural but to prune away an unnatural growth."-page 16, "The music of Hindus than" by A. H. Fox Strangways, Oxford, Clarandon Press.

অর্থাৎ:--'বিদি মুদলমান ওস্তাদ জানিতেন বে, বে হারমোনিয়াম যন্তের সঙ্গে তিনি গান করেন উহা তাঁহার প্রধান সম্পৃত্তি সুধবোধ শক্তিই নষ্ট করিয়া ফেলিভেছে, u वर यमि लियात्ना यस निकार्यिनी वानिका स्मिट्ड পাইতেন যে যতই তিনি উক্ত যন্ত্ৰে উন্নতি লাভ করিতেছেন ঠিক সেই অমুপাতেই তিনি ভাতীয় আদর্শ হইতে বিচ্যুতা হইতেছেন, এ যেন ভা**হার পক্ষে** "কালাপাণি" পার হইয়া চিরতরে বিদেশ যাত্রারই মত হইতেছে,—তাহা হইলে তাঁহারা সকলেই সরস্বতীর অঙ্গে এইরূপ অপবিত্র হস্তার্পর্বের পূর্বের একটু ধর্মকিয়া দাড়াইতেন। এরপ **অভ্যানের সপকে বলিবার থাকিতে** পারে বটে কিন্ত ইহার বিক্লৈ একটি মারাম্বর আপত্তি আছে, তাহা এই যে ঐ সকল যন্ত্র সবগুলিই ধার করা। 'এই সকল বিবেশীর যুদ্ধলিকে ভারত হইতে উঠাইয়া দিসুর্ সঙ্গীতের স্বাভাবিক উন্নতির দিকে বাধা দেওয়া হইবে না, কিন্ত উহার অধাভাবিক পুরিণতিই দমন করা হইবে।

তবে শল্প কএক বংগর যাবং একটু পরিবর্তন লক্ষ্

করা রাইতেছে। সব বিষয়েই যেমন স্নীত সহস্কেও

সেইল্লপ—আমাদের জাগরণ যেন কিছু কিছু উপলব্ধি

করিতে পারিতেছি। আবার কলাবতকুল মায়কল

মানুলিশে নিমন্ত্রিত হইতেছেন। পিকিত সম্প্রদায়ের

নব্যেও স্নীত চর্চার যেন একটু আভাস পাইতেছি।

করিদের ক্রাগণ সেতার এলাজে ও কঠ স্নীতে

করিতের সাহায্যকল্পে হারুমোনিয়াম যল্পেরই প্রাবল্য

কর্মাণা করা যার ভালের যারুমোনিয়াম যল্পেরই প্রাবল্য

কর্মাণা করা যার ভালের যারুমোনিয়াম যল্পেরই প্রাবল্য

কর্মাণা করা যার ভালের ফান ঠিক হইবে এবং তাঁহারাও

ভানপুরা ও এলাজ প্রভৃতির সলে গান করিতে অভ্যাস

করিবেন। এখনই কেহ কেহ সেইরপ করিতেছেন,

ইহা নিশ্চম্বই শুভ লক্ষণ।

এখন প্রকৃত বিষয়ের অবতারণা করিতেছি। যে

সকল গুণীদিগের বিষয়ে কিছু জানিতে পারিয়াছি প্রথমে

ইহাতে সমরের পৌর্বাপির্য রক্ষা করিতে পারি নাই।
ইহাতে সমরের পৌর্বাপির্য রক্ষা করিতে পারি নাই।
কারণ এতদিন পরে সঠিক থবর পাওয়া একপ্রকার

সন্তব্ধ, তা ছাড়া সব বিষরণ সংগ্রহের আশায় বিসরা

বাকিলে শীঘ্র আর এ প্রবন্ধ দেখা হয় না। এ কথাও

কৈ বে আমাপেকা যোগ্যতর ব্যক্তি এ প্রবন্ধ লিখিলে

স্বিক্তর মনোজ্ঞ হইত। যাহা হউক বিবরণ সংগ্রহ
করিতে আমি সহরের বহু লোকের নিকট গিয়াছি,

এবং সনেকেই অম্প্রহ করিয়া অতি আগ্রহের সহিত

সব কথা বলিয়াছেন। খাহারা এরপ সাহায্য করিয়াছেন

বা ভবিব্যুক্ত করিবেন ই্রেলিগকে আমি সর্ব্বাগ্রেই

সামার আয়রিক ক্রক্ততা ক্রিক্রিকিট্ছি।

কালীচরণ রক্ষিত রায় :—ইনি ঢাকা কেরাণীগঞ্জ
বাদার এলাকাধীন আটা নামক আমের কায়ত ভ্যাধিকারী
বংশান্তব। ইহার পিতার নাম
কালতবা
বায় ।
ইনি বর্তমান প্রবন্ধ নেগ্রক ইইতে অল্প ধারায়

छर्क वन वर्ष भूक्य। कानी हरन राष्ट्र नवारी आमरन **ঢাকায় সদর দেওয়ানের পদে নিযুক্ত ছিলেন। পারশ্য** ভাষায় ইনি সুপণ্ডিত ছিলেন। ইঁহার কঠ অতি মধুর ছিল, এবং সুললিত স্বরে "গলল" গান করিয়া নবাব ও সামির ওমরাহদিগকে ইনি মোহিত করিতেন। ঢাকার তদানীস্তন নবাৰ কালীচরণের 'পল্ল' গান সাধ করিয়া এই কারণে ভিনি নবাবের খতাস্ত: প্রিমণাত্র হইয়া উঠেন। কিন্তু 'বড়র পিরী তি বালির वैथि, कर्ण शास्त्र कृष्णि कर्णाक है। मुन्य कि चर्छनात्र কালীচরণের কপাল ভালিল, তাঁহার সেরেন্ডা হইতে কোন এক পরগণার একটি অতি আবশাকীয় দলিক श्राहिया (भन, किहु उरे छेश श्रु किया भाष्या (भन ना। নবাব শুনিয়া সম্পেহ ক'রলেন যে কালীচরণই খুদ লইয়া উক্ত দলিল সুৱাইয়াছেন। নবাব ভয়ন্ধর ক্রোধাভিভূত হইয়া ত্রুম দিলেন "কালীচরণকো পেটু ফার্কে উওঃ प्रतिन (नकारना!" यामीत अगताराण এই हकूम গুনিয়া গুণ্ডিত হইলেন। তাঁহারা সকলেই কালীচরণকে ভালবাগিতেন; তৎক্ষণাৎ তাঁহারা কৌশলে কালীচরণকে অবিলয়ে প্রায়ণ করিতে উপদেশ আন্তিলন। কালীচরণও প্রাণ ভয়ে পলাইয়া গেলেন। বছদিন **हिला हो जिल्ला क्रिक क्रिका क्रिका क्रिका** काली हत्रावत अक क्तां शे शार्व मुक्क ला कि के है বহু অর্থলাভের প্রলোভনে চুরি করিয়াছিল। ভবন चर्टनाक्रत्म के प्रतिन शाख्या शन अवः कानीहबूरनब निर्द्धायका अभाविक इट्टेन । ज्यन नवाद कानोहत्र(भन्न জন্ম বিশেষ তৃঃথ প্রকাশ করিয়া আমির ওমরাহদিশকে তাহার অসুসন্ধান নিতে অদেশ করিলেন।

এদিকে কাণীচরণ বছকাল দেনে দেনে ছুরিলা
কিছুদিন যাবং নিজ বাড়ীতে অতি গোপনে অবস্থান
করিতেছিলেন। নবাবের একজন ওমরাহ ইহা
জানিতে পারিয়া স্বরঃ কালীচরণের বাটীতে গেলেন ও
তাহাকে সব কথা বিলয়া সভয় দিলেন,এবং কালীচরণকে

পঙ্গে নিয়া নবাব সমক্ষে উপস্থিত হইলেন। নবাব এতদিন পরে তাঁহার প্রিয় কালীচরণকে পাইরা অত্যন্ত সম্ভষ্ট হইলেন এবং তাঁহাকে বিশেবভাবে পুরস্কৃত করিয়া স্থান্তি নির্দেশ করিয়া দিলেন।

কালীচরণ ধার্ম্মিক পুরুষ ছিলেন। প্রথম বর্ষে একবার সংসার বিরাগী হইরা চলিয় যান; কিন্তু প্রত্যাদেশ পাইরা গৃহে ফিরিয়া আদেন এবং একটি পুত্র লাভ করিয়া নবাবের কার্য্য গ্রহণ করেন। তিনি "ভারা কালীচরণ" নামে অভিহিত হইতেন। কাণীচরণ অনুমান প্রার ১৭৫ কুরংসর পুর্বে জীবিত ছিলেন।

৮ বাধারফ রায় ঃ—ইনি ঢাকা কেরাণীগঞ্জ থানার পাইনা গ্রামের কায়স্থ ভূমানিকারী এলাকাধীন পিতার নাম ৮ জিৎরাম রায়। शःरमंद्रित । কলিকাতার নিকটবর্তা কোন রাজ সরকারে দেওয়ানের কার্যা করিতেন। রাধার্যঞ্জর ভাতা ৮ প্রাণক্ষণ রায়ও ভাকার তৎকালীন নবাব সরকারে দেওয়ান ছিলেন। ইংারা হুই ভাতাই সঙ্গীতজ ছিলেন, এবং প্রাসিদ কলাবৎদিগকে থিশেষ পুরস্কার দিতেন। রাধারুঞ্জের ছাই পুত্র ক্ষামোহন এবং ব্রন্ধমোহন রায়ও স্থীতে ইহাদের সময়ে দেবার্চনার তায় বাংপর ছিলেন। किकारम्ब ममीड ठाकीत खना वारगतिक वाम निमिष्ठे हिन। ताक्षक अध्यान श्रीप्र ३२६ वरमत श्रीर्स कोविङ हिलन।

৬ গোপীমোহন রায়—ইনি উক্ত ৬ ব্রজমোহন রায়

মহাশ্যের পুত্র। কবিত আছে ইনি ইংরাজি, সংশ্বত,

জারবি, পাশি, উর্জু, হিন্দি, ওড়িয়া প্রস্তৃতি ভাষা

জারাধিক জানিতেন। ইনি প্রথমতঃ মুন্দেফের কার্যা
করিয়া পরে জালাসদর আমিনের (সবজল) পদে উনীত

হন। সংশ্বতে গোপীবার এতদুর অভিজ্ঞ ছিলেন যে

জাহার বাড়ীতে পণ্ডিতগণ সম্বেত হুইলে তিনি নিজ্নে

উহাদের সলে শাস্ত্রীয় বিচার করিয়া যোগ্যতা অমুসারে

জিলার দিতেন। ইনি উভয় কঠ ও যন্ত্র স্কীতে দেশ

বিখাত ছিলেন। কণ্ঠ অতি মধুর ছিল। এপদ, बाल ७ हैश्रात्र उाहात त्रमान व्यक्तित हिन। श्रथम वश्रम जिनि थानि ७ हेश्री निका करतन, এবং मिर वश्रम গ্রুপদ শিকা করিয়া উহাই পাইতেন। তাঁহার অভত ক্ষমতা ছিল। বাল যন্ত্রের মধ্যে দেতার, সারক, এক্রাক, (वहाना, वामी, (बोमन (होकि, भारताबाब, उदमा, हानक, (थान, हाक, हान, अयन कि नागाड़ा, हिकाड़ा প্রান্ত বাজাইতে শারিতেন। পঞাব পভ্তি দেশ হইতে প্রায়ট বড বড ওয়াদগণ আলিয়া তাঁহার দলে শলীত চার্চা কবিতেন। ভাঁচাবা এক বাকো স্বীকার করি**ভেন** যে এতদকলে এত বিবিধ প্রকারের যন্ত্রে ও দঙ্গীতে এমন সমভাবে অধিকার আরু কাহারও নাই। ঢাকায় व्यानारक छोडात निकृष्ठे मङ्गील निका कतिया था। कि नाड করিয়াছেন। তিনি অবসর সময়ের বিভালোচনা ও দঙ্গীত চর্চায় অভিবাহিত করিভেন। তাহার বাড়ীতে ২া১ জন ওতার প্রায় দর্মদাই থাকিতেন 🗥 কাহারও কর্পনর মিট্র হইটেই ডিনি তাহাকে নিজ বাড়ীতে রাখিয়া লেখা পড়া ও সঙ্গীত শিশাইতেক। ক্ষিত আছে তিনি জ্মিনারির খায় হইতে সাংসারিক সমস্ত বায় নিৰ্বাহ কবিয়া স্বোপাৰ্ভিত অৰ্থ সঙ্গীত চৰ্চায় বায় করিতেন। ইনি ১২৭ গনের আধিন মারে পর্লোক গমন করেন !

ভ আনন্দ্যোহন রায়:—আনন্দ্যোহন উক্ত পোপী মোহনের কনিষ্ঠ। ইনিও ভাগ গাইতে বাজাইতে পারিতেন। থাল, ট্রা, ও সুষ্রি এই তিন প্রকার সঙ্গীতেই উহার অধিকার ছিল। তবে ট্রা গাইতেই ভালবাসিতেন। তিনি শুকি সুক্ঠ ছিলেন। তিনি হাসিতে হাসিতে বলিতেন "গ্রুপদ যেন মিলীখন্ত, খাল মিষ্ট সন্দেশ, আর ট্রা স্থাই শুবুৰং।" তিনি ভবলার বড় ওস্তান ছিলেন, তাঁহার হাতের বোল অভি পরিস্কার ছিল। তিনিও পাথোয়াল, সাইজ, বেহালা ও গেতার বাজাইতে পারিতেন। কীর্জনের সময়ে তিনি ও তাহার ভাতা গোণীযোহন খোল বাজাইয়। শ্রোতালিগকে মুগ্ধ করিয়া লিতেন। গান বাজনার জন্ত ইনিও বহু অর্থ ব্যায় করিয়া গিয়াছেন। আনন্দমোহন বলিতেন যাহারা লান বাজনা ভালবাসে না তাহাদের মুখ দর্শন করা উচিত নহে।" সেক্সপীয়রের কথা মনে পড়েঃ—"The man that hath no music in himself;

Nor is not moved with concord of sweet sounds,

Is fit for treasons, stratagems, and spoils;
The motions of his spirit are dull as night,
And his affections dark as Erebus;
Let not such man be trusted."

—Merchant of venice, Act V. Se. I.
শামাদের নবীনচন্দ্রও গাইয়াছেন :—
"হতভাগ্য সেইজন, যে জন বঞ্চিত্ত

नवन मश्रीक दरम—दरमद श्रवान।"

🎂 🗸 ইরিমোহন রায়:—ইনি পূর্ব্জোক্ত গোপীমোহন পিতা ও পিতৃব্যের স্থায় হরিযোহনও कारवत श्रव। পাথোয়াক, তবলা ও সারঙ্গে সুদক ছিলেন। তাঁথার স্থাগ রাপিনী ৰোধ ছিল, কিন্তু জাঁহার কঠ মিষ্ট ছিল না। ইনি কলিকাতার স্থবিধ্যাত ৮ কেশবচন্দ্র মিত্র মহাশয়ের নিকট পাথোয়াল এবং অনাম ধন্ত তবলচি আছা ছোবেণের পিতা হোবেণ বংগার নিকট তবলা শিক্ষা করেন। তাঁহার হাত বড়ই মিষ্ট ছিল। পশ্চিম দেশী। বড় বড় ওতাদদের সঙ্গে প্রতিযোগীতার অনেক সময়ে তিনি জয়ী হইতেন। তিনি এতদুর সঙ্গীত প্রিয় ছিলেন र्व ৺ भावनीय शृकात नगत्र कान छान छ। ज चानितन ছয় মাসের পুর্বে ভাহাকে ছাড়িতেন না। পরিবারের नंकरन, अमन कि छांबात कर्माहातीयर्श अवेतरा अधितक খারে অগস্থোয় প্রকাশ করিলে ডিনি বলিতেন "উহাদের পাঁদ ত্নিয়া আমি যে পরিমাণ আশুরিক তৃপ্তি পাই द्दांबाद छे प्रकृष्ट अधिकात्मत क्रमण वाभात नाहे।"

তিনিও সুকণ্ঠ ব্যক্তিদিগকে নিজ বাড়ীতে রাখিরা সঙ্গীত শিকা দিতেন। ইঁহার খুরতাত-ভ্রাতা সুবিখ্যাত গায়ক ৮ রাধিকামোহন রায় মহাশয় ইঁহার নিকটই যন্ত্র শিকা করেন। ১২৯০ সনের ২৯শে ফাস্কন দোল পূর্ণিমা দিন ইনি পরলোক গমন করেন।

৬ রাধিকা মোহন রায় :--ইনি পাইনা জমিদার वः भित्र (भव अविधां छ अद्योग । शृर्सीक 🗸 व्यानम মোহন রায় ইঁহার পিতা। বালাকালে ইঁহার পিছ বিয়োগ হয়। রাধিকা বাবুর কঠের ভায় স্থমিষ্ট কণ্ঠ আর কখনও আমর। শুনি নাই। এক্রপ দেব-চুর্লভ কণ্ঠ পাওয়া বড তপক্কার ফল। বুঝি এ বংশের সঙ্গীত-ধারা ताधिका वावू एव व्हेरत वित्रा शृक्षे भूकवा कृष्टिय চ্চিত হইয়া ভাঁহাতেই কণ্ঠস্বর চরমোৎকর্বতা লাভ করিয়াছিল। তিনি যথনই গান ধরিয়াছেন তথনই উহা শ্রোতার 'কানের ভিতর দিয়া মরমে পশিরা করিয়া ফেলিয়াছে। বাধিকা আকুল" বাব ঢাকায় এখানকার স্থাসির টপ্লা পায়ক হয়ু মিঞার নিকট, এবং কলিকাতায় পশ্চিম দেশীয় প্রসিদ্ধ ওপ্তাদ বড় গুনিখার নিকট টপ্প। ও ঠুমরি শিক্ষা করেন। ভিনি সময় সময় পথ চলিতে চলিতে শিশ দিয়া রাপরাসিনী-গুলি এমন চমৎকার ভাবে আলাপ কবিভেন যে রাস্তার উভয় পার্শ্বে বত লোক পমকিয়া দাঁডাইত। তবলার তাঁহার অতি মিষ্ট হাত ছিল। সারঙ্গ, এআজ, সেতার, বেহালা-- থাহাতে হাত দিতেন তাহাই অতি চমৎকার বাজাইতেন, মন মোহিত হইয়া যাইত। একবার বিক্রমপুর বহর গ্রামে শ্বন্তর বাড়ী গিয়াছিলেন। তথায় এক ঢাফিব ঢাক বাজান দেখিয়া তৎক্ষণাৎ खेरा वाकारेय! मकनारक **চম**ংক छ कविया**हितन। अव**छ पूर्व छेटा कथन । वाकान नाहे। देवताशीत मातिका বাজাইয়া এমন মধুর দেহতত্ব গান গাইতেন যে ভা আর कि विनित् । छाहाँ कर्ष ७ दाउ नक्नरे मधु बहेना যাইত, এমনই তাঁহার সন্মীত-প্রতিভা ছিল।

একজন প্রসিদ্ধ গদ্ধী ছিলেন; এবং নানা দেশীয় কথার
নকল করিতে উঁ।হার সমকক এ সহরে কেহ ছিলেন না।
ভানিলে হাসিতে হাসিতে দম আটকাইয়া যাইত। তিনি
বড় রক্ষ লাগাইয়া কথা বলিতেন। একটি নমুনা
দিলাম:—

একবার ঢাকা পিলখানায় বহু নৃতন হাতী ধরিয়া আনা হয়। সহরের বহু লোক উহা দেখিতে হান। বিখ্যাত মন্ত্রবীর বিপুল কায় জীয়ত পরেশনাথ ঘোষ মহাশায়কে সঙ্গে লইয়া রাধিকা বাবুও হাতী দেখিতে যান। এই ঘটনার উল্লেখ করিয়া রাধিকা বাক আমাদের এক দিন বলিগেন ''আমি আর পরেশ যথন গাড়ি হইতে নামিয়া হাতীগুলির কাছে গেলাম, তখন ছোট ছোট হাতীগুলি পরেশকে দেখিয়া ''ঠাকুর ভাই, ঠাকুর ভাই" বলিয়া সমন্ত্রমে পিছু হাটিতে লাগিল। '

বিপত ১৩১৬ সনের ১৫ই আবাঢ় তাঁহার পরলোক গমন হইয়াছে। পূর্ব্বোক্ত হরিমোহন রায়ের পুত্র মোহিনীমোহন রায়েও তবলা শিক্ষা করিয়াছিলেন। কিন্তু তিনিও কর্তৃক মাস সাত্র হয় ইহলোক পরিত্যাগ করিয়াছেন। হায়, মোহিনী বাবুর পরলোক গননের আর "একজন না রহিল বংশে দিতে বাতি!" নিমে রাধিকা বাবুর রচিত একটি বাঙ্গলা গান দিলাম :—

রাগিণী লুম্ ঝিঁথিট্—ঝাপতাল।
কাঁদালে কাঁদিতে হবে, তাকি তুমি জাননারে।
দেবের হুল ও ধনে, তেয়াগিলে অকারণে,
এখন জীবন দানে পাবে না আর দে রতনে।

ত্রিকার কর্মকার:
 ইহার নিবাশ ছিল ঢাক।
ঠাঠারিবাজার। ইনি প্রসিদ্ধ পঞ্জাবী ওন্তাদ কালে খাঁ ও
মহম্মদ থাঁ, এবং পশ্চিম বঙ্গের বিখ্যাত ওন্তাদ ভোলানাথ
চৌধুরীর নিকট ধুপদ শিক্ষা করেন। নিজে খুব
নামজাদা প্রপদী ছিলেন। ইনি ঢাকার প্রধান ওন্তাদ
ছরি কর্মকারের সঞ্চীতওক। অনুমান ৪০ বংসর পূর্বেইনি
জীবিত ছিলেন।

৮ দীনবন্ধ গোপ ওঁ দাও ঠাকুর প্রভৃতিও ইংশ্র সাকরেদ। ৭০ বংশর বর্ষে ইনি পরলোক গ্রন্ করেন। ৩।৪ বংশর হয় উল্লিখিত সাকরেদধ্যও পরলোক গ্রন করিরাছেন।

৮ হবিব্ মিঞাঃ—ঢাক। তক্রামপুর মিঞা সাহেবের
নরদানে ইনির বাড়ী ছিল। ইনি শ্ববিশ্যাত টয়া
গায়ক ছিলেন। শব এত উচ্চ ও মিইছিল যে সচরাচর
সেরল শোনা যায় না। ইনি সপ্তম হবে গান করিছেন।
প্রান্থি নায়ক ৮হফু মিঞা হবিবের প্রথম সাক্রেদ
ছিলেন। ইনি তর্মুও আমির বাঁ। প্রভৃতি অনেক বিধ্যাত ই
টয়া গায়কের নিকট শিক্ষালাভ করেন। ক্ষপিত
আছে ইনি বিবাহের তিন দিন পরেই স্পীত সাধনার
ব্যাখাত হইবে বলিয়া জীবে পরিত্যাগ করেন। নিজে
পালোয়ান ছিলেন এবং নিয়মিত ভাবে ভন
কৃত্তি করিতেন। প্রায় ৮০ বংসর বয়সে াকি ৫০ বংসর
পূর্বে পরলোক গমন করেন।

৺ নটব্য বণিক্য :—ঢাকা কামেতটুলিতে ইংৰার
নিবাস ছিল। ইনি ৺খরবাতি জমাদারের নিকট ওবলা
শিক্ষা করেন। রাগরাখিনীতেও ইংৰার দখল ছিল।
নিজে বিষ্ণা চিত্তে ভজন গান করিয়া সকলকে
বিমোহিত করিতেন ২৭ কি ২৮ বংশর পুর্বে প্রায় ৭
বংশর বয়দে ইংৰার মৃত্যু হয়।

৺ সুবাতি নিঞা :— অসুৰান প্ৰায় ০৫ বংশর পুর্বের ইনি জীবিত ছিলেন। ইহার নিবাস ছিল ঢাকা চাষার টুলিতে। ইনি অতি উৎকট ঢোসক বাদক ছিলেন। শাঁথারি বাজারের অনেকে তাঁহার সাক্রেদ্ হয়। কঠবর অতি মিই ছিল। বিভাস্ক্রের ট্রা ধুব ভাল গাইড়ে পারিতেন। ইতার মধুর কঠে বিমোহিতা ছইয়া জনৈকা ব্যনী ইহার প্রণয়াশকা হয়। কিন্তু কিছুদিন পরে কোনও কারণবশতঃ ঝগড়া হওয়ায় প্রণয়ের প্রতিফল ব্ররপ ইহাকে কোশলে দিলুর থাওয়াইয়া ইহার বর নত্ত করিয়া দেয়। এই শোচণীয় ঘটনার পর স্বাতি মিঞা আর গাইতে পারিতেন না, একেবারে ব্রভন্ত হইয়া শিয়াছিল।

💮 🛩 ছদয়নাথ রায়:—ইনি ঢাকা মাণিকগঞ্জ মত্কুষার ៓ বাড়ী নামক গ্রামের কারস্থ ভূম্যধিকারী দত্ত রায় বংশ में इंड हिर्मि। देशंत्र भिठा ८ ति छत्रान दत्राशिक्त রায়। শ্রীবাড়ীর বর্তমান জমিদার শ্রীযুত অক্রনাণ রায় महानम क्षम योदत पूछ, এवर छोक। माहिन्त পরিষদের শিক্ত রারসাহেব জীয়ত অমর নাথ রায় বি, এ, মহাশর উছোর পৌতা। হাদয় বাবু বহু পশ্চিম দেশীয় সুবিখ্যাত े अञ्चामालय निकृष्टे नक्षी व निका कारता। मन नकारत শানই গাইতেন, তবে খ্যাল গানেই তাঁহার বিশেষত ছিল। পাৰনা জিলা নিবাদী তদানীন্তন প্ৰসিদ্ধ ওন্তাদ দ্বীক্ষেত্র রায় দিল্লি হইতে গান শিক্ষা করিয়া আসেন, ্তাহার নিকটও হালয় বাবু গান অভ্যাদ করেন। मूत्रभिनावादमत खनाम ४० छवनही (शादननवत्र थै। वहिनन িজ্পয় বাবুর নিকট ছিলেন । ঢাকা ইছলামপুরে কতক দিন তাঁহার বাগা ছিল। বীণা, সেতার, এআজ, সারস, বেহালা, পাৰোয়াৰ, তবলা প্রভৃতি যন্ত্রে এবং কণ্ঠ সঙ্গীতে ভিনি অতি বড ওস্থাদ ছিলেন। রৌদনচৌকিও তিনি উত্তম বাজাইতে পারিতেন। একবার তিনি পাংসার অমিদার ভৈরবচন্দ্র রায় মহাশয়ের বাটাতে বিবাহের নিমন্ত্রণ বান । একদিন ভোরের সময় মই বাহিয়া মাণারচিদের নহবৎখানার মঞে উঠিয়া অতি অপুর্বা मानाहे वाकाहेट बावज कतित्वन। अमिरक टेज्वव িল্লায় মহাশয় প্রভাত রাগিনীর এমন সুমধুর আলাপ छनिया निद्धार्थित दहेरतन, এবং विचित्र दहेश नकनरक श्रीतिम्म "विद्यात्र वार्ष रह हमरकात्र वार्षाहरुए "।

কিন্তু গোলাব কলিকা যেমম ক্রমে বিক্সিত হইয়া পরিণত গৌন্দর্য্যে ছলিতে থাকে, শানাইর মনমুক্তর স্থরে রাগিণীটি যথন তেমনই পরতে পরতে কৌশল বিভার করিয়া পূর্ণ প্রস্কৃতিত হইয়া উঠিল এবং চারিদিকের মিয় প্রকৃতিকে স্থরাবেশে ছাইয়া ফেলিল, তথন আর ভৈরব রায় কিছুতেই মনে করিতে পারিলেন না যে নাগারচীরা বাজায়। তিনি নিজেও সলীতে ওভাল ছিলেন। বিশেষ অমুসন্ধানে যথন জানিলেন যে ছলয় বাবুরই এ কাল, তিনিই শানাই বাজাইতেছেন, ভৈরব বাবু তথনই সোৎসাহে মই বাহিয়া নহবৎখানার উঠিলেন এবং নিজেও সেই সলীতে যোগ দিলেন।

ত্রিপুরার তদানীস্তন মহারাজা বাহাত্ব এবং যশোহর টাচরার রাজা বরদা কণ্ঠ রায় মহোদয়গণ ছল্পবেশে একবার ছলয় বার্র গান শুনিবার জন্ম তাঁহার প্রীবাড়ীর বাটীতে যান। ঢাকার রাজাবাবু এবং তৎসাম্মিক নবাব হালয় বাবুকে সঙ্গীতের জন্ম মধেষ্ট আদর করিতেন। বিধ্যাত গায়ক মধুকার তাঁহার নিকট কিছুদিন সঙ্গীত শিক্ষা করেন।

ওন্তাদ রাজ্যাহন রায় এবং হৃদয় বাবু যথনই স্কীত্র্রা
চচ্চি কিরিতেন সেই সময়ে হৃদয় বাবুদের এক আয়ীর য়
বেচু বাবু সেস্থানে উপস্থিত থাকিলে স্কীত আরম্ভ হওয়া
মাত্রই তিনি অল্পত্র চলিয়৷ যাইতেন। একদিন
রাজ্যোহন রায় উহারেকে ইহার কারণ জিল্লানা ক রিলে
বেচু বাবু বলিলেন "তোমাদের ও ক্যাচর ম্যাচর আমার
ভাল লাগে না।" তাহাতে রাজ্যোহন বাবু বলিলেন
"আপনি কাল ভোরে অকুগ্রহ করিয়া আমার অকুরোধে
আমাদের স্কীত ভনিবেন।" কথামত ভোরে স্কীত
আরম্ভ হইল, বেচু বাবুও খুব মনোযোগের স্হিত্ত ভনিতে
লাগিলেন। ক্রমে ভৈরবী রাগিনীর একটি গান ভনিয়া
বেচু বাবু হাউ হাউ করিয়া কাদিয়া ফেলিলেন, এবং
এমনই মুদ্ধ হইলেন বে তদবধি রীভিম্ভ স্কীত রস
উপভোগ করিভেন। পুর্বে কোল দিল মনোযোগ

দেন নাই, নে দিন যেই প্রাণ ঢালিয়া দিলেন অমনি অপার আনক্ষে আকুল হটয়া পড়িলেন।

্ হৃদ্ধ বাবু চৌকোশ লোক ছিলেন। বছ প্রকারের ক্লাবিদাায়ই তিনি অতি আশ্ৰেণা দক্ষতা লাভ করিয়াছিলেন। তিনি নিজ হাতে পাধোয়াজ, তবলা, ভানপুরা, সেতার, এপ্রাঞ্জ, বীণ প্রভৃতি যন্ত্র অতি উৎকৃষ্ট-রূপে প্রস্তুত করিতে পারিতেন। ঢাকার স্থবিখ্যাত শুকলাল মিস্ত্রী যন্ত্র নির্ম্বাণ বিষয়ে তার নিকট অনেক শিক্ষা করেন। ছদম বাবুর নিজ হাতের তইরি একটি প্রস্তুত্ত নির্মিত বাক্স ও একখানি তলোয়ার এখনও আছে। তিনি অতি সুত্রী পুরুষ ছিলেন। বাায়াম করিতেন এবং তাঁহার দেহে অমিত বল ছিল। টাকাগুলি ধরিয়া বুড়ো আকুলে টিপিয়া বেকা করিয়া ফেলিতেন। সাঁতার দিতে দিতে হুই হাতে হুইটি **ফলসী লইয়া জলপূর্ণ** করিতেন এবং একটির পর একটি উদ্ধে তুলিয়া জল ফেলিয়া দিতেন। তিনি অতি সংখভাব, বদান্ত ও দয়াবান চিলেন। টিকিংসার তাঁহার বিশেষ অভিজ্ঞতা ছিল। তিনি প্রধ করিয়া চিকিৎসা শাস্ত্র অধায়ন করিয়া ছিলেন। ২ ৷৩ জন কবিরাজকে বাডীতে রাখিয়া নানা প্রকারের ঔষধ প্রস্তুত করাইতেন এবং প্রার্থীদিগকে বিনামূল্য বিতরণ করিতেন আর গরীব হুঃখীর চিকিৎসা করিতেন। ভাষার কনিষ্ঠ ভাই রূপনাথ রায় মহাশয়ের উপর সংসারের সমস্ত ভারার্পণ করিয়া নিজে সঙ্গীত, শিল্প এবং চিকিৎসা শাস্ত্রের চর্চ্চা করিতেন । তাঁহাদের नगरत ये व्यक्षन इत्रमाथ ७ ज्ञानाथ वावुरक है लारक বাব বলিভ।

ক্ষম বাবুর প্রাতৃত্যুত্র ঈশান বাবু তাঁহারই সঙ্গীত শিক্ত ছিলেন। ঈশান বাবু তথনকার ঢাকা প্রান্ধ সমাজে গান করিতেন। হুদয় বাবুর পুত্র হরনাথ বাবু গানে প্রসিদ্ধ ওস্তাদ ছিলেন। শোনা বার হরনাথ বাবুর মৃত্ত গাইয়ে তাঁহার স্ময়ে এখানে মার কেইই ছিলেন না। তাঁহার এমন আশ্চর্য্য প্রতিভা ছিল যে তিনি পিতা এবং পিতৃসমীপাগত বড় বড় কলাবতকুলের সঙ্গীত আডাল হইতে প্রবণ করিয়াই উহা শিধিয়া किना हिल्ला । পরে यथन छ। होत नाम अतिक हरेश উঠিল তখন একদিন তাঁহার পিতা নেপথো তাঁহার সদীত छनिया यूथ रहेशा शिलन, এवः পूज उछाएन नाराया বিনা কিরুপে তাঁহার অপেকা উৎকৃষ্ট গান শিখিল ইবা **हिस्र। कविर्ड नाशिरनन, शर्व यथन स्नानिरनन (व** ভনিয়া ভনিয়াই হরনাথ এইরূপ অপূর্ব ক্রতকার্য্যভা লাভ কবিয়াছেন তথ্ন আৰু জাঁচাৰ বিশ্বযের সীমা বহিল না। किञ्च दः (धत विषय कृषय वावृत कीविजावशासरे जिमेश গুণী পুলের মৃত্যু হর। ১২৬৪ সালের শেব ভাগে মাত্র ২২ বংসর বয়ুসে দারুণ বসস্তুরোগে হরনাথ অকালে ইহধাম ত্যাগ করেন। পুত্র শোকাতুর পিতৃত্বদর এই ঘটনায় একেবারে মণিত হইয়া যায়। তিনি গান বালনা একপ্রকার ছাড়িয়া দেন। ইহার পর তাঁহার পরিবারে আরও মৃত্য এবং নানারূপ হুর্ঘটনা ঘটে। ছেলের মৃত্যুর কতক্দিন পরে এক্দিন নিজের বাসায় হৃদম বাৰু याष्ठ्रम कतिरमन। मश्त्रत वर्ष वर्ष कमावर अ यञ्जीकृत नकता नमात्र हहेता नवाहरक वितालन "छ।है, সব যন্ত্র মিলাও।" যন্ত্রমিল হইলে প্রাণ ভরিয়া নিজে সঙ্গীত করিলেন ও অত্যের সঙ্গীত গুনিখেন, এবং সেই দিন হইতে জীবনের তরে গান বাজনা পরিভাগে কবিলেন।

১২৬৬ সনের আখিন মাসে ৭মী পুলার দিন প্রায় ৪৮ বংগর বয়সে পকাঘাত রোগে পরম **গুণী ক্রমরনার্থ** রায় মহাশয় ইহধাম ত্যাগ করেন।

৺ কানা গণেশ:—ইনি পশ্চিম বলের লোক। এখানে পাইনার বাসায় ছিলেন। সায়য় ও তবলা বাজাইতেন। তবলা বাজাইতেন পা দিয়া। এজয় কেছ কেছ জাবার তাঁর নিস্পাও করিছ। প্রায় ৪৮ বংসর পূর্বেইনি জীবিত ছিলেন। ৺ রক্ষ বোব: —কারন্থ সন্তান, নিবাস ছিল ঢাকা,
 চাক্ষ্যর গ্রামে। পাইনার বাসায় থাকিতেন। পশ্চমে
 শিক্ষালাত করিয়াছিলেন। টলা ও ঠুম্রি গাইতেন।
 ইনি কানা গণেশের সমসাম্মিক ব্যক্তি।

তৈ চন দাণ বাবাজি:—ইংার পিতা রাণাঘাট

নিবাদী ছিলেন; পরে ঢাকাম বিবাহ করিয়া এখানেই

ছামী হন। চৈতন দাস এখানেই শিবু পাগল ও পাগ্লা

হৈছুব নিকট সেচার শিক্ষা করেন। উত্তম সেতার

যালাইতেন। বোল বাজাইয়া সুমধুর কঠে কীর্ত্তন গান

করিতেন। ইংার ছেলে গোবিন্দ দাস খ্যাল ও টরা।

গানে ওস্তাদ ছিলেন। তাহার কঠও অতি মিট ছিল

গ্রাম্থ ৫৮ বংগর পূর্বেইনি জীবিত ছিলেন।

৺ রতন দাস বাবাজিঃ—ইহার পিতার নাম ৺
নারায়ণ দাস বাবাজি। ইনি প্রথমে চৈতন দাস বাবাজির
নিকট সৈতার এবং কলিকাতার বেণী বারু, হাইদার ধাঁও
মহায়ণ খাঁ নামক ওস্তাদের নিকট এপ্রাজ শিক্ষা করেন।
তাহার সময়ে রতন দাস বাবাজিই এখানকার স্কাপেফা
প্রস্থিত সেতারী ছিলেন। ইনি ৪১ বৎসর বয়সে পরলোক
সমন করেন। প্রসিদ্ধ খনী ৺ রপলাল দাস মহাশয়
ইহার নিকট সেতার শিক্ষা করেন। ঢাকার বর্তমান
স্ক্রিপ্রান সেতারী শ্রীয়ৃত ভ্রপনান দাস ও শ্রামটাল দাস
বাবাজি ইহারই পুত্র। ৪৮,৪৯ বৎসর প্রে জাবিত
ছিলেন।

সেতারী ৮ গুরুলার দেন রায়:—ঢাকা রূপগঞ্ ধানার অন্তর্গত আমদিয়া আমে বৈত বংশে গুরুলার দেন মহাশয় ক্রয়া গ্রহণ করেন। ইহার পিতার নাম ৮ কেবলরুক্ষ দেন রায়। ইনি মন্ত্রমনিশিংহে পিতার নিক্ট থাকিয়া বাঙ্গলা-ও পার্ল্য ভাব। শিক্ষা করেন। পার্ল্য ভাষায় বিশেষ পাণ্ডিত্য লাভ করেন; তাঁহার পার্শি হন্তাক্ষর অতি উৎকৃত্ত ছিল। তাঁহার সহস্ত লিখিত আনেক পার্শি গ্রহ ছিল, কিন্ত ছ্ংখের বিষয় গৃহদাহে শেগুলি ধ্বংশ হইয়া গিয়াছে। পিতার মৃত্যুর পর

धक्नात्र काराकि अ किছू ना ये निया विरम्राम किया यान । তিনি কোণায় গেলেন বছদিন প্র্যুম্ভ ভাঁছা জানা যায় নাই। নানা দেশ পরিভ্রমণ করিয়া পরে তিনি मुत्रिनावारिक चारमन এवः छथात्र नवाव मन्नकारत्रत्र একজন অতি উচ্চ খেনীর দেতারীর নিকট দেতার শিকা করেন। তিনি মুরশিদাবাদে আছেন এই ধবর পরম্পরা শুনিতে পাইয়া তাঁহাদের বাজীর একজন শিকদার তাঁহাকে দেশে আনিবার জন্ম মুরশিদাবাদ বায়। সেই শিকদার তাঁহাদের ভূতা হইলেও অভিভাবক শ্রূপ ছিল। তথনকার দিনের শিকদাররা এইরপই ছিল वर्षे । निकनात्र पूत्रनिनावात्म लीहिया वह अञ्चनकातन গুকুলাস সেতাতী মহাপ্রের বাসার গিয়া দেখিল যে তিনি ৰাগায় নাই। সে তাঁহার শ্যার উপরে নিদ্রার ভান করিয়া চাদর মুড়ি দিয়া ওইয়া রহিল। অরকণ পরে গুরুদাস বারু বাসায় ফিরিয়া দেখিলেন, কে একজন তাঁহার বিছানার শুইয়া আছে। তিনি যেই চাদরটি উঠাইয়া ফেলিলেন, শিকদার অমনি উঠিয়া তাঁহাকে वृत्क क्छाइशा श्रिक्त धवः आनमाश वर्षण क्रिएड नाशिन, शत् व्यविनास छ। हारक नहेबा त्माम कितिन। এই ঘটনার কিছুদিন পরে তিনি ঢাকায় আদেন এবং পাগলা হিন্দুর নিকট সেতার শিংখন। বিখ্যাত পাখোয়াজি ৬ কেশবচন্দ্র মিত্র মহাশয়ের ও পাইনার ৮ হরিমোহন রায় মহাশয়ের সঙ্গে সেতার বাজাইতেন। তিনি বৈজ্ঞানিক প্রণালিতে সেতার শিকা करतन, ७४ नकन कतिहा निर्यन नाहे। अ अकृतन छाहात्र ক্রায় সেতারী বিরল ছিল। তিনি বিভদ্ধ রাগরাগিনীর व्यानाम कविधारे चुनी रहेएजन। তিনি বলিতেন যে ক্রমশ:ই সেতার বাজাইবার চঙ্গের পরিবর্ত্তন ছটতেছে, গন্তীর রাগ রাগিনীর বিশুদ্ধতা রক্ষার দিকে व्यय व्याव (वीक नहि, तक्षमात व्यवकात मांभारेत्रा वाकारेटि भातिरगरे लाक वाराइति मस्म करत। তিনি তুলনা দিয়া ব্লিতেন ''দেশ শালের পাকা বুল

अबन बात (कह भनन करत ना, अबन ठक्टरक तरनतहे বাহার, উহাতেই লোক মৃত্র, সেতার সম্বন্ধেও এরপ, কিছ আৰার কাছে 'এ সব ভাল লাগে ন!। রাপ রাগিনী আলাপ করিয়াযে গভীর আনন্দ পাই, **इंडेक्नांत्र जनकारत** छाहात्र किছूरे शारे ना।" বেতার বড় মার বাজাইতেন, হাত বড় মিঠে ছিল। লোকও বড খোদ মেজাজি ছিলেন। অতি নিয় শ্রেণীর কোন লোক আদিয়াও যদি তাঁহার সেতার গুনিতে চাহিত তথাপি তিনি অতি আনন্দের সহিত তাহাকে সেতার শুনাইতেন। তাঁহার আত্মত্তরির জন্ম বাজাইবার আঞ্চলমন্ত্র নির্দিষ্ট ছিল। প্রতিদিন গভীর রাতে নির্জন ৰসিয়া তিনি সেতারে ঝকার দিয়া যথন রাগরাগিনী আলাপ করিতে করিতে উহাতে মগ্ন হইয়া যাইতেন, তথনই তাঁহার চরম কমতা প্রকশি পাইত। তথ্য গভীর নৈশ প্রকৃতিও যেন তলায় হইলা ঘাইত। কার্বুণ মধুর अब्रखन दाने वा विषय भी दा भी दा भी दा भी दा नी वत नक्छ লোকের দিকে উঠিয়া যাইত।

ঢাকার বিখ্যাত যন্ত্র নির্মাতা ৮ শুক্লাল মিরী
মহাশর গুরুলান বাবুর দেতার শুনিয়া এত মুক্ষ হইয়া
ছিলেন যে নিজহাতে অতি যত্ত্রের দহিত একটি অতি
কুক্রকার উৎক্র দেতার প্রস্তুত করিয়া তাঁহাকে উপহার
দেন। সেতারটি লম্বায় পৌণে ছই হাতের বেশী ছিল
না। শুরুলান বাবুর ওটি বড় প্রিয় ছিল, তিনি অনেক
সময় উহা রাশ্বায় লইয়া বাহির হইতেন এবং চলিতে
চলিতে রাগরাগিনী আলাপ করিতে থাকিতেন।

মানিক গঞ্জের জনৈক ডেপুটি ম্যাজিট্রেট গুরুদাস বাবুর সেতার শুনিয়া আগ্রহের সহিত তাঁহাকে নিয়া শুত্রত্য ফৌজ দারির মহা পেজের কাজ দেন। তিনি জনেক দিন উত্ত কাজে ছিলেন। পরে ঐ পদটি উঠিয়া (abolish) যায় এবং তিনি বালিয়াটির জনিদার দিশুবাবুর সরকারে কার্য্যে নিযুক্ত হন। দিগুবাবুর সঙ্গে তিনি কালী, গ্রা, লক্ষে), মণুরা, জীরনাবন, ও জরপুর প্রস্তৃতি বহু স্থানে প্রমন করেন, এবং সর্ব্ধেই
সুমধুর সেতার বাদন জন্ম বিশেষ ভাবে আদৃত হন।
পশ্চিমের কোন একজন বড় ওস্তাদ তাঁহার বাজনা
শুনিয়া তাঁহাকে বলেন "আপ্কো হাম্ বহোৎ শেখানে
শক্তাহৈ, লেকেন্ য়ায়সা হাত হামারা কৃতি
নেহি হোয়েগা।"

खक्रमान वार्त्र नम वयनी 🗸 क्रीमान तनन नामक তাহার এক ভাতি ভ্রাতৃপুত্র ছিলেন। তুর্নাদাস উৎকৃষ্ট ভবলা বাজাইতেন। রাগরাগিনীতেও তাঁহার অধিকার ছিল। তিনি গুরুদাস বাবুর সঙ্গে সঙ্গীঊকরিতেন। শেষ ব্য়সে বাতে ধরায় গুরুদাস বাবুর হাত আর পুর্বের মত ঝড়বৎ চলিত না, কিছু গীরে বাজাইতেন। প্রথম বয়সে তিনি গান ও করিতেন, কিন্তু শেষ বয়সে গলা ধরিয়াযায়। তিনি ঢাকার ৮ রতন্দ্র বাবাজির সঙ্গে সেতার বাজাইণেন। রতন দাসের পুত্র জীযুত ভগবান দাস সেতারীর বাজনা ওনিয়া তিনি বড় খুসি হইতেন এবং তাহার হাতের মধুর তার অভান্ত প্রশংগা করিতেন। ১২৯২ সনের কার্ত্তিক মাসের প্রথম ভাগে ৭২ বৎসর বয়দে দামাত জর রোগে তাঁহার মৃত্যু হয়। তরুদান বাবুর তিন পুত্র---প্রথম ঢাকা কলেজিয়েট স্কুলের ভূতপুর্ব সর্বাপ্রধান শিক্ষক শ্রীযুক্ত ভূবন মোহন সেন,-এবং তৃতীয় রাজসাহি কলেজের ভৃতপূর্ব অধ্যাপক শ্রীয়ত রাজ মোহন সেন।

৮ হয়্ মিঞা— ঢাকা, গিঞা সাহেবের ময়দানে ইহার
নিবাস ছিল। ইনি হবিব মিঞার শিষা। হয়্ মিঞা
অতি প্রসিদ্ধ টপ্রা গায়ক ছিলেন। কঠ বছ্ই মিট ছিল।
সপ্তম হবে গান গাইতেন। আগ্রহতলায় মহারাজ বীরচজ্র
মানিকা বাহাছ্রের দরবারে বেতন ভোগী গায়ক ছিলেন।
ইনি পাইনার রাধিকা বাবুকে টপ্পা শিক্ষা দেন। রূপপ্র
থানার প্রীবৃত নরসিং ঠাকুরও ইহারই শিষা। প্রার ৮০
বংসর বর্ষে হয়্থ মিঞা পরলোক গমন করেন। এ বয়দেও
ইহাকে সপ্তম হরে গান করিতে শোনা গিয়াছে। প্রায়
১৩০১৪ বংসর হয় ইনি মারা গিয়াছেন।

कुछित श्रीमेंक शानी Chitechi

🏲 🛩 অথন খাঁ--ইনি মিঠন খাঁর নাতি, নিবাদ ঢাকা উদ্বাক্ষার। ইনি অতি প্রসিদ্ধ কুমধুর তবলা বারক हिल्ल । अअन थी, (हारमन रकम, विद्या थी, मानादि थी, আবেদ আলি থাঁ এবং গোলাম আব্বাদ প্রভৃতি শশ্চিম দেশীর অতি উচ্চ শ্রেণীর अशासित निक्छे ভবলা শিকা করেন। অতি উত্তম উত্তম বোল ইহার জানা ছিল। ৰোল পরণ বাজাইবার সময়ে ধেন ফুল ফুটাইয়া শাইতৈন। কত রকমে রকমে তেহাই দিয়া শ্রোতাদের ৰনোহরণ কবিতেন তাহার অবধি নাই,—মনে হইত ধেন একেকটি বুজার কাড় বসাইয়া দিশেন। তিনি বড় খোস ৰেলালি লোক ছিলেন। নিতায় আনাভি গাইরেকেও व्यनमञ्च করিতেন না। ইনি ত্রিপুরার মহারাজকে তবলা ্রিকা দিতেন। ঢাকার নবাব সার আবহুলগণি বাহাহুরের নিকট ভিনি মাদিক বৃত্তি পাইতেন। প্রাসিদ্ধ ৮ তুর্গাপ্রসাদ **লাণা ও তাঁ**তিবালারের শ্রীযুত শশিমোহন বসাক প্রভৃতি **ভাহার শিষ্য। প্রায় ১৫** ১৬ বৎসর হট্ট স্কপ্পন খার মৃত্যু स्रेशाटा

৺ কালী শীল :—ইনি তাঁতিবাজারে ছিলেন। জাতিতে নাপিত। "দীতার বনবাদ" যাত্রার পালা রচনা করিয়া বেশ প্রশংসা লাভ করিয়াছিলেন। ই হার অনেক গান
 ৺ নবকান্ত চটোপাধ্যায় মহাশয়ের "প্রজীত মৃক্তাবলী" নামক
 উৎকৃষ্ট প্রান্থ দেখিতে পাওয়। যায়। অনুমান প্রায় ৫৫
 বৎসর পূর্বেইনি কীবিত ছিলেন।

একবাবি থলিফা,
 শাকু নিঞা,
 ইমানবল্প নিঞা,

अश्वात्रीय कर्णकातः

ই'হায়। সকলেই উৎকৃষ্ট বেহাল।
বাদক ছিলেন। ই'হাদের 'মদ্যে
একবারি থলিফা ও ইমামবল্প
মিঞা প্রায় ৪৮ বংসর, গঙ্গারাম
কর্মকার প্রায় ৪০ বংসর এবং
সাকু মিঞা প্রায় ৩৮ বংসর পূর্কে
পরণেক গমন করেন।

্ শ্ৰমন্ত্ৰীৰ শৃথ্য শিক্য—ই হার নিবাস ছিল ঢাক। শ্ৰোৰানী বাজান। ইনি গ্ৰুপদী ছিপেন। ইনি অনুমান শ্ৰাম ৭০ বংসৱ পূৰ্বে জীবিত ছিপেন। এইটো সংক্র

শ্ৰীষোগেন্দ্ৰকিশোর রকিত।

# तत्र्वाथ (गात्राभी ।

আজ যে সাধক শ্ৰেষ্ঠ পল্লী কবির জীবন বুস্তান্ত সহক্ষে আমরা আলোচনা করিতে প্রবুত হইলাম তিনি এতদঞ্চলবাসী व्याभागत मर्वामात्रामत निक्रे विरम्य छात्र भविष्ठि छित्मन । তিনি কোন সময় জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, তাহা ঠিক করিয়া বলা ধায়না। তবে বৰ্জমান সময় ছইতে প্ৰায় ১৬০।১৭০ বংসর পূর্বে যে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন ভাগার বিশেষ প্রমাণ সংগ্রহ করিতে পারিয়াছি। তিনি সংসারানপক্ত ইইয়া নিক বিষয় সম্পত্তি কালিয়াকুর নিবাসী ৮ দীনবন্ধ চক্রবন্তী মহাশরকে দান করিয়া কালিয়াকুরের পর্কাদিকে ও মাইল দূরবন্তী প্রকৃতির বিচিত্রলীলানিকেতন শাল শক্ষার বুক্ষ পরিপুর্ন নিবিত্ অরণ্য প্রদেশে রাক্সামাটিয়া নামক স্থানে আশ্রম করিয়া শেষ জীবন অভিবাহিত করেন। উক্ত চক্রবর্ত্তী মহাশগ্রকে ১ম পুরুষ ধরিলে তাঁহার বংশধর ৪র্থ পুরুষ আজ আমরা দেখিছে পাই। ও পুরুষে ১০০ শত বংসর ধরিলে গোস্বামী মহাশ্যের মৃত্যুর সমরকে আমরা বর্তমান সময় হইতে প্রায় ১০০ শত বংগর পুর্বেধরিয়া লইতে পারি । তাঁহার জীবিতকাল যদি ৬০।৭০ বংসর হইয়া থাকে ভাষা হইলে ১৬০।১৭০ বংগর প্রবেধি বে ডিনি জন্মগ্রহণ कतियाहितन जाहा भतिया नश्याहा व्यायोक्तिक स्टेटर ना। পকাপ্তরে এদেশ নিবাদী অশীতিপর বুরদের নিকট জিল্ঞানা করিয়া জানিতে পারিয়াছি বে তাঁহারা যথন ৮.১০ বংশর বয়স্ত বালক তথন এদেশে ৮ গোস্বামী মহাশয়ের নাম माधाद्राला श्व आहिन किन जवर मिट महारात २०१२ वर्गन পূর্বে যে তিনি মানবলীপা সংবরণ করিয়াছিবেন এইকথা একবাকো দেই সময়ের সকলেই বলিভেন। এই দেশ প্রচলিত সর্বাদিস্থত প্রবাদ বচন ছইতেও নিঃসংশ্রে বলিতে পারি যে তিনি বর্ত্তমান সময় ছইতে প্রায় ১০০ **७७वरमत भूद्य भानवगीना मरवत्रण कतित्रा निशास्त्रम । सम्** প্রচলিত প্রবাদ বচন, বৃদ্ধদের মুখের কথা, ক্ষমিদারী সংক্রান্ত পত্ৰকে ইতিহাস বা জীবনীয় উপকরণ কবিয়া ঐতিহাতবের আলোচনা করিলে যে ত্রম প্রমানে পতিত ছইতে ছইকে তাহা সকলেএই বিভিন্ন।

ঢাকা বিলার অন্তর্গত তালিগাবাদ পরগণান্থিত কাণিরাকুর একটা প্রাম। ক্ষীণলোভা তুরগা ইহার উত্তর প্রান্তরিয়া পূর্ববাহিণী ও ইদানীং ক্ষমেলাতা বংশী (বংশাই) এই প্রামের পশ্চিম প্রাক্তিদরা দক্ষিণবাহিণী। প্রামে ১টা থানা, ১টা গাবরেণি টারী আফিস, ১টা পোই আফিস, ১টা সরকারী দাতবা 'চিকিৎসালয়, ১টা দৈনিক বাজার, ও ১টা নিঃ প্রাঃ বিভালম আছে। বহু কুজ্জার এই প্রামে বাস ক্রিয়া থাকে। ২ খর প্রাহ্মণ ২ ঘর স্তর্গর ও অন্তর্গতে মুস্লমানও এথানে অবস্থান করে।

**अरे बारमरे महाबा ७ त्रप्रांथ (शंचामी बमा बार**न করেন। ভাষার গণিভার নাম e জরকুক গোলামী। মাতার নাম ৮ নারারণী দেবী। পূর্বে এদেশে ক্যাপণ প্রাণা প্রচলিত ছিল: অর্থান্ডার প্রযুক্ত তিনি নিজবারে বিবাহ স্বিতে অসমর্থ হইয়া. নিজ ভাগিনেয়ীকে বিনা পলে বিবাছ দিয়া তৎপত্মিবর্জে সেই ঘরে বিবাহ করেন। বিবাহের কিছুদিন পরেই জাঁহার স্ত্রী নি:সম্ভানা অবস্থায় পরবোক গ্রন করেন। এই আক্ষিক দৈব বিপদ্পাতে তাঁহার মনে দার্কণ আবাত বাবে এবং মন ক্রমশঃ সংগারানসক হইয়া পড়ে। পরিশেষে মনে একান্ত বৈরাগ্যের সঞ্চার হয়। তথন নিজ बिमम् भाष्णील भूत्सील मीनवन्न ठक्कवर्ती महानग्रदक मिता किछ्मिन नानाञ्चारन खभग करबन। ७९ शब (विज्ञा निवामी পর্ম ভাগ্রত ৮ মাণিকটাদ গোস্থামী মহাপ্রের নিকট জপমালা প্রাহণ করিরা তাঁহাকে দক্ষে নিরা ৭:৮ বংসর কাল ভারতের নানাভীর্থে পর্যাটন ও ধর্মণাস্ত্র অধ্যয়ন পূর্মক **ক্ৰিয়াজ ৬ কিশোর সরকার, ৬ রামকুমার** w बामर्जाबिक रवाय, w ममत्रथ वाडेन, w कड्डान वाडेन, ८ श्रम्हाण वार्षेत. अ वार्धाहत्त्व वार्षेत्, अ शक्हत्वन वार्षेत्र क्षाक्र विश्वास्त्रक्षत्रभारक मान्य वाहेशा (मान्य व्यवसार्थिक कार्यन । • हार्यना (व । দেশে আসিয়া নিজ বাসভান পরিভাগ করিরা রাজা মাটিয়া खाय जायम द्वापम स्राम वरः छक् उक महाशुक्रवगरणः

সহিত শেষ দীবন অতিবাহিত করেন। এই সমর হইতেই
তাঁহার রচনার অধিকার করে। তাঁহার ৮ সোরাক বিষয়ক
রূপরস, বিচ্ছেদ, মিশন, উপাসনা, দেহতৎ, ষড়চক্র,
রংকীর্জন, বাউলিয়া প্রাভৃতি নানা বিষয়ক বহু গান এবেশে
অন্তাপি সর্ক্রমাধারণে অতি নানা বিষয়ক বহু গান এবেশে
অন্তাপি সর্ক্রমাধারণে অতি নানা বিষয়ক বহু গান এবেশে
অন্তাপি সর্ক্রমাধারণে অতি নানা বিষয়ক বহু গান নংক্রহ
করিয়াছি। প্রতিভার পাঠক মহাশ্রসগতে করেলটা গান
উপহার না নিয়া থাকিতে পারিলাম না। তিনি নিজেও
একজন শ্রেষ্ঠ গাণক ছিলেন। স্বর্গতি পদগুনি বিশুর্ক ভাল
কর্ম সংযোগে গভীর ভালাতেশ ঘ্রন গান করিছেন তথন
আপামর সর্ক্রমাধারণ মন্ত্র স্থাবং ইইয়া শুনিত। অতি পার্শ ক্রমণ্ড ক্রক হইরা ক্রইত। 'রিলুর মন্ত গাণক' এই বাকাটী
এদেশে এখন ও প্রচলিত আছে। ইহারারাই তাঁহার গাফ

ভিনি যখন বেস্থানে বে অবস্থায় অবস্থান করিজেন ভথন সেই স্থানেই ভাবাবেশে গান রচনা করিজেন। সঙ্গীক লোকেরা তাথা লিখিয়া গ্লানিতেন। রাজি বিপ্রাধ্যে হঠাও নিজাভক হইল অমনি তৎকণাৎ গান রচনা করিকা গুড় ভিত্তিতে কাঠিদিয়া অক্ষকার মধ্যেই লিখিয়া কাবিজেন। প্রদিন ভক্তপূর্ণ ভাচা িথিয়া কইতেন।

- (১) মনরে বৈরাগ্য ক'রে ভরাও আমাত্রে পারে ধ'রে। বলি বারে বারে।
- ১। জ্ঞান জলে মান ক'রে,ভাবের ডোক কৌপিনপ'রে,;
  ভক্তি বহির্নাদে খিরে রে'থ কটিপরে, সৌভাগা তিশক নিয়ে,
  প্রেম টুপিতে শির সাজাইরে, চিম্বাকান্য গলে নিয়ে, ভাঞান্য
  হ'রে ভাক ভারে।
- ২। গৌরপদে আথড়া ক'রে, সেই আবড়াতে গাক প'ড়ে, পাঁচ ছয় বৈরাগী ক'রে, ব'দে থাক খরে, ভারা সাবে ডিক্লার যাবে, স্থানমধু এ'নে দিবে, স্থাপে'রে কুধা খাবে, ভবে জনম হবেনা তে।
- আশাকৃদি ফলে ক'রে, বিনয় কয়ল ধ'রে; তথা মধু
   জিকা ক'রে রে'ঝ জরে জরে, তৃঞা বালে মধুবু'রে,আয়েবিক্রি

राबाह ४७२१

চিত দিয়ে, মধু থে'য়ে মন্ত হ'লে বেড়াও বে'রে প্রেন বুলিয়ে।

- ্র রম্বনাপে ভেবে বলে, মনের বৈরাগ্য ন'লে, কি হবে ক্ষোপিন পরিলে, বেশ ধ'রে কি ভরে, প্রশস্ত রাথালের বেশে, রাধানে মিশিল অ'লে, স্বভাব হে'রে অবশেষে', কৃষ্ণ ভারে অধানে মারে।
- (২) শাক্ষাতে বস্তু থ'ক্তে চিন্লি নারে "ও" দিন কানা। বার সাবে, বেড়াও জগতে, তার সংথে তোর নাই ঠিকানা।
- (১) আচার বিচার ক'বেছিলি, কত সন্ধ্যা পূলা জপ জাপিলি, নর্ত্তন কীর্ত্তন করিলি, বর্তমানে কেও এ'লনা, আপন শুক্তনা চিনিলি, পারর মে'রে ধ'রে সে'ধেছিলি, পরের ছাতে প্রাণ স্পিলি পর কথন আপন হল'না।
- (২) সিদ্ধি নামে শিক্ষা ক'রে ওমন না দেখিয়ে ভাব লি কারে, মহুথানে ভাব লি থারে সে এ'সে দেখা দিলনা। ছমুবলে শাস্ত্র ছাড়, মান্তুষের সক্ষধব, মানুষের সক্ষ হ'লে প্রিবে মনের বাসনা।
- (৩) শুক্নার তথ্যী স্থাধে চলে, কলের তরী গঠন বিধি
- ১। আছে তরীর মধ্যে দাড়া, বর্দ্ধে বন্ধে জোড়া, গুড়া চাড়া বিধি কতই দিলে, তথীর ছই চাকা যার তে'টে, ছই হাত ছই বইঠে, গণইর পরে ছুইটা মাণিক জলে।
- ২। তরীর মন হয় কাণ্ডারী, ছয়জনা হয় দাঁড়ী সারি সুরি ব'লে পারিবলে, তাতে ব'লে মহুরায় হে'লে হাল ঘুরায়, বে শিক্ চালায় তরী নেই দিক চলে।
- গোলাঞি রবুনাপে কয়, তরী মিথ্যায়য়, আয়া
  লক্ষা হয়, নিভায়লে ইয়া ব'লেছে গোলাঞি; ব্রহ্মাণ্ডে বা নাই,
  ভিত্তীয় মধ্যে তাই পুঞ্লে মিলে।
- 🍇 (৪) দেখ ভাই উন্ট। গাছ চ'লেছে।
- ্ । গাছে উন্টা শাথা উন্টা শিক্ত উন্টা সকল ডাল মে'শেছে। কি থেলা, কি আজবলীলা, দেখ গাছের রূপে ব্যাছ সু'শৈক্ষা

- ২। গাছে উন্টা লভায় আছে কড়ি, অ তার উন্টা কুলে পাঁচ পাপ্ডি, চা'র ফুলে চন্দ্র কুঁড়ি, সাত্রি সাত্রি থাণ ক'রেছে।
- পাধীসব থাকে বংগার, ভারা বাস করে আহারের
  আশার, পাধীর আহারের লাগি পাকাকাঁচা ফল ধ'রেছে।
- হ। সাত কোটর গাছের গোড়ে, চা'র পাথী তার চলে
  ফিরে ভিন কোটরে কপাট পড়ে চার কোটর খোলাসা
  আছে।
- ৫। সাত বিবা গাছের নিয়ম, আছে নায় কোটারে গাছের গঠন উপড়ে ছই কোটারে ব্লণ ঝরে আর মন গ'লেছে।
- ৬। যথন হয় য়দন ঝড়ি, গাছে গাছে হয় জড়ালড়ি, ভূমে যার গড়াগড়ি, বোটাছিড়ে ফল পড়েছে।
- ৭। সাধু সে কণ কুড়াঃ, আপ্নে থায়, আর পরকে বিশায়, ফণ আশে রঘু বদে, রাধাকুঞ নাম ক'পেছে।
- (৫) আমার মন খে'লেছ কি থেলা, ঐ দেখ ভবের খেলা সাজ হ'ল। ভবের থেলা সাজ হ'ল ঐ দেখ বেলা অন্ত গেল।
- থেল্তে এ'লেম আশার পাশা,দান প'লনা ভয়দশা,
   আমি কার উপরে কর্ব গোদা, আট গুটি মোর কাঁচা'রল।
- ২। দশ ছয় আঠাব ষোল, বোগে বোগে এ'লেম ভাল, ও মন যখন গুটি ঘরে যাবে, বে-দানে পাঞ্জি প'ল।
- ৩। তিন "প"র কালে হয় "প" বার, তেরর বেলায় কচ্চে বার, গোদাঞি রঘুবলে পাশ। ছাড়, পাশা বে'দ্ধে হরিবল।

অধিক গান দিয়া পাঠকগণের ধৈব্যচাতি করিতে ইচছা নাই। তাঁহার ভণিভাযুক্ত পঞ্চলশ সর্গে সমাপ্ত আধ্যাত্মিক ভাবে পরিপূর্ণ সংস্কৃত 'ক্তান কর" নামক হস্তলিখিত একখানা প্রাচীন পুথি আমরা সংগ্রহ করিতে সমর্থ হইয়াছি।

পুস্তকথানার ভাব ও ভাষা দৃষ্টে লেথকের গভীর ভগবদ্ ভিক্তি ও রচনা নৈপুঞ্জের পরিচয় পাওয়া যায়। বে<sup>ন্</sup>বে বিষয়ের বর্ণনা করিরাছেন তাহাতে "জ্ঞান কর" লেথকের জ্ঞানকে আদরা বান্তবিক্ট "জ্ঞানকর" আখা দিতে বাধ্য। তত্ত্ব লিজ্ঞান্ত ভক্তের পক্ষে পুত্তকথানা অমূল্য রব্ধ। গ্রন্থে জীব জিজ্ঞান্ত। মন: উত্তর দাতা।

১ম সর্গে—দেব দেবীর বন্দনা। ২য় সর্গে—সন্থ: রজ:
তম: এই তিন ধর্ম্ম বিষয়ের বর্ণনা। ৩য় সর্গে—দেহের
বর্ণনা। ৪র্থ সর্গে—শুক্র বিষয়ক বর্ণনা। ৫ম সর্গে—
রাধাক্তক বিষয়ক বর্ণনা। ৬৪ সর্গে— শুল্লাগ স্থপ্প বর্ণনা।
৭ম সর্গে—শুল্লীরাধান্ততি। ৮ম সর্গে—শুল্লীরক্ষান্ততি।
৯ম সর্গে—শুল্লীরোরাক্ষ বর্ণনা। ১০ম সর্গে—শুল্লীরোরাক্ষ
রূপগুল বর্ণনা। ১১শ সর্গে—খনরোন্তম জন্মদান্দানি বর্ণনা।
১২শ সর্গে—বিগ্রহ সেবা। ১০শ সর্গে—রাগভক্তি বর্ণনা।
১৪শ সর্গে—জন্ম মৃত্যু বর্ণনা। ১৫শ সর্গে—১ম সর্গ হইতে
১৪শ সর্গ পর্যান্ত সর্গগুলির বর্ণিত বিষয়ের সংক্ষেপ্ত বিবরণ ও
স্থাতি। বারান্তরে এই সংক্ষত প্রক্রকথানার বিষয় আলোচনা
করিতে প্রস্থিত রহিণ।

व्यामार्गत (मरभत व्याकाक महाश्रुक्रायत म्बरक्षहे नाना আলৌকিক কথা প্রচলিত আছে। ইংগর সম্বন্ধেও সেইরূপ অনেক কথা দেশে প্রচলিত আছে। তাঁহার সঙ্গে একটা ৺পোপাল বিগ্রহ ছিল। বিগ্রহের নিয়মিত পূজা করিয়া মেট প্রদান মাত্র ভক্ষন করিতেন। অনেক কঠিন রোগগ্রস্ত বাক্তি বোগ মুক্তির জন্ম তোঁহার নিকট আসিত। তিনি রোগীগণকৈ উক্ত ৮ বিগ্রাহের সম্মাথ গড়াগাড় দিতে বলিতেন। রোগীগণও দেই প্রকার করিয়া রোগ মুক্ত হইত। ক্থিত আছে তিনি এই প্রকারে বহুরোগীকে রোগমুক ক্রিয়া দিতেন। তিনি যথন গৃহত্যশ্রম পরিভ্যাগ করিয়া यान त्यारे व्यवधि व्यात शहीत धर्म, সামাজিক व्याচात वावहात मानिएजन ना। कथिक चाह्यः-- माराजभूत निरामी ८ त्राविन्तरमाह्न विश्वाम ( बाक्यन ) महानम व्यक्तिन क्लान अ কার্যাব্যপদেশে রাঙ্গানাটিয়াতে ৮ গোস্থানী মহাশয় আশ্রম উপস্থিত হন। ৮ গোন্ধামী মহাশরের বিধাস মহাশরকে আহার ক্রিতে অমুরোধ করেন। তিনি বার তার হাতে থান, এই মনে করিয়া বিশ্বাস মহাশর খাইতে অমীক্লত হন।

ত গোস্থামী মহাশর ইহার অর্থ বৃথিতে পারিসা বলিলেন :—

'বিশ্বাস মহাশর আপনি ব্রহ্মণ, আনার অর আহার করিছে

সংশর করিতেছেন, অর শোধন করিয়া আহার করন।"

তিনি ভাহাতেও অমীক্লত হন। তৎপর সকলেই দেখিতে

পাইলেন বে ত গোস্থামী মহাশয় অর শোধন করিতে

বসিরাছেন। সেই পরু অরের উপর অগ্নিদেব শত কিহবা

বিস্তার করিয়া জ্লিতেছেন। এই শ্টনাতে সকলেই অভাস্ত

আশ্চর্যায়িত হইলেন ও ভাহাকে সাধক শ্রেষ্ঠ মহাপুরুষ

বলিয়া বিশ্বাস করিশেন। তিনি কুজ্ব করিয়া জ্লের উপর

ভাসিয়া নদীর এক বাক ছাড়াইয়া অন্ত বাকে যাইয়া উপস্থিত

হইতেন : দর্শক্ষপ্রণীতে নদীর উত্তর তীর পরিপূর্ণ হইয়া

যাইত।

তিনি প্রতি বংসর ৩ দিন ব্যাপী একটী থংহাৎসবের অন্তর্জান করিতেন। তাহাতে নানা দেশ হইতে অনেক সাধু সন্নাাসীর আগমন হইত। তাহার সন্ধীয় ভক্তগণ সহ তিনি এই দিবসত্তর প্রীশ্রীনামকীর্তন, মহাপ্রাাদ বিতরণ, দরিত্র ভোজন প্রভৃতি কর্ম করিয়া নির্মাল আনন্দ উপভোগ করিতেন। যে বংসর তিনি মানবলীলা সংবরণ করিয়া তাহার সাধনোচিত ধামে মহাপ্রস্থান করিয়াছিলেন, মেই.বংসর পর্যান্ত এই বার্ষিক ক্রিয়া কন্দী করিয়াছিলেন।

বাদের কত স্থানে এই প্রকার কত নহাপুরুষ আবিতৃতি ছইয়া নিজ কুমুরারা দেশের কত উপকার করিয়া গিয়াছেন, কে তাহার সন্ধান লয় ? কুজ লেখকেন লেখা পাঠ করিয়া যদি কেছ এই প্রকার লোকের জাবনী আলোচনা করিতে-প্রবৃত্ত হয়, তবে লেখক নিজকে হুতার্থ মনে করিবে।

वीमहिनहत्त्व ननी।

### कलगुंग-প्रम।

ধ্য করিলে জীবন আমার

সিধা নধুর পরশ-নানে,
উদ্ধান কর উদ্ধান রাপ
ভাতিল দেখতা আমার প্রানে ।
সরম বইল উবর হনর,
টুটিল আঁখির অস্ত্র-থোর;
বে প্রিয় ভোমার পরশ লভিয়া
হরবে ভরিল পরাল মোর।
চির মধুনর কল্যাল ওংগা—
লহ বন্দনা জন্ম কান্ত,
বিভরি আশীব লক্ষ ধারার

ভাপিত জীবন করিলে শান্ত।

🖺 ভ কিন্দ্রণা রায়।

### थञ्च-मभारनाहना।

সর্ব দ্বাত ও হার্থে: নিয়াম শিক্ষক, প্রথমভাগ, মৃশ্য ১০০ এবং বিতীয় ভাগ, মৃশ্য ১০০ প্রীবৃত রসনীকান্ত রার দ্বিদার, এম্. এ, প্রণীত। এই গ্রন্থ তুইখানির ছাপা, ভাগল, এবং বিংধান উত্তম। এই গ্রন্থের প্রথম তাগের প্রথম হলতে পক্ষম পরিচেন পর্যন্ত পরে বরে সপ্তথ্যর, মাত্রা, ভাল, ধরল পরিবর্তন, রাগ্রাগিনীর ঠাঁট, এবং উছাদের পরিচর, ও বানী, বিবাদী হার প্রভৃতির সম্বন্ধে অতি সরল ভাষার গ্রন্থকার বে প্রাঞ্জন বাধ্যা দিরাছেন উহা বাত্তবিকই উপাদের হইয়াছে। এই উপদেশামুবায়ী জভ্যান করিলে ক্র্যাপীত ও হার্গোনিরাম ব্যুর্ অনেকটা প্রবেশ লাভ হইবে। স্বর্গাপিগুলি, প্রথমেই কঠে বা ব্যুর্জ অভ্যান করিবার চেটা লা করিবা আনে ওপ্রতিকে মাত্রা দিরা কেবল ওপ্রন্থেশ লাঠ করিবার উটা করিবার উপদেশটি অভ্যন্ত উপবোগী। প্রথম ভাগে প্রত্যান করিবার ভাগে

পরিশিত্তে বে কএকটি জান দেওবা হইগাছে উহাও অনাগান-মাধ্য ) প্রথমশিক্ষার্থীগণ অভি অর সমন্ত্রের মধ্যে এই শুর্লি আয়ন্ত করিতে পারিবেন ।

গ্রন্থ করে গণিত, বেছাগ, ও বেছাগড়া রাগিণীকে থাড়ব (ছর ক্ষরের ) জাতীর বলিরাছেন, এবং কৈরবীতে প্রকৃত "রি" প্র লাগে লিখিরাছেন। এ সম্বন্ধে মতবৈধ আছে। লালত, বেছাগ, ও বেছাগড়া—"সম্পূর্ণ" জাতীর রাগিণী বলিয়া অনেকেট বলেন এবং সেই ভাবেই গাইয়া থাকেন। ভৈরবীতে প্রকৃত রেখাব প্রর বহু ওস্থান্ট লাগান না। এ কথা-ভাল গ্রন্থে উল্লেখ করা উচিত ছিল। বেছাগ রাগিণীতে গ্রন্থার নিজেই এই প্রস্থের দিতীর ভাগের ৮৭ পৃষ্ঠার স্থাবিণ্যাত "তারা পশ্মমেশ্রী, কখন প্রকৃষ হও মা,কখন বেড়েশী নারী" এই আস্থানী যুক্ত গানটিতে সম্পূর্ণ সাতটি প্রয় ব্যবহার ক্রিয়াছেন।

ভৈরব রাগ ভেকরে গাওয়াই এ দেশের প্রচণিত রীতি।
উহার সময় বেলা প্রথম প্রহর পর্যান্ত কি ? ঝি ঝিট ও পিলু,
কুল রাগিনী বটে, কিন্ধু ঐ সবল রাগিনীরও প্রপদ আছে;
বলা:— "ভেলোই নমনা বান" (ঝি ঝিট), এবং "ছ্এপতি
আকবর" (পিলু)। প্রথমোক ঝি ঝিটের প্রপদটির স্তরেই
রবীক্রনাথের ঝি ঝিট রাগিনীর "ভোমার মধ্ররূপে ভরেছ
ভূবদ" এই বিখ্যাত গানটি রচিত হইরাছে। াঝঝিটের আর
একটি নাম "দোহাগিনী", এই রাগিনী সকল সমরেই সাওয়া
বার এরূপ একটি মন্তত্ত আছে। বারোয়ার প্রপদ অবপ্র
আমরা ভূনি নাই। কিন্ধু একেবারেই নাই এমন ক্রথা ক্রি

তাছকার তদীয় গ্রাহের প্রথম ভাগের তৃতীর পৃষ্ঠার পাদটিকার দিখিরাছেন:—"কেহ কেহ বলেন, ঐ সকল বজের (হারমোনিরাম, পিরানো) সুর খলি হিন্দু সঙ্গীতের উপযোগী মহে। কিন্তু এই কথার কোন মূল্য নাই। উপপত্তিক ও ক্রা বৈজ্ঞানিক হিসাবে হারমোনিরাম বা পিরানোর প্রয়গুলির কিঞ্ছিৎ উচ্চ নীচ হইলেও, এই উক্কভার বা নীচ্ভার সামাক প্রছেদ কর্পে উপশক্তি হয় না

व्यवः व्यंकि कट्टैं व इत्र ना, वेवः वह भक्त श्राह्म खूत माहार्या ছিল স্থীত ওক্রপে গীত বা বাদিত হঠতে পারে। অবশ্র धर्षे मकन राज मिन्न, कल्लेन हेन्तानि शास्त्र व्यवहात श्रीकान করা যাইতে পারে না, কিন্তু এই সকল যন্ত্রের পুর বিশুদ मनी एउन अपूर्ण राजी नरह।" आमना विन खरे नकन वरात স্থর ভারতীর উচ্চাঞ্চের বিশুদ্ধ সন্দীতের পক্ষে সম্পূর্ণ অনুপরোগী। মিড় কম্পন ছাড়া হিন্দু সঙ্গীত কি পদার্থ ? छेहा स्क्रीय मानव (म:हत ब्रक्त्या:महीन कश्चालबरे यह, हक्ष्म গামিনী কল্লোলিনীর মধুর কুলু কুলু ধ্বনির পরিবর্তে স্বর্ণ রের हाजुदि (भी मासदे यज, कानिमास्त्र "भर्गाश्चभूभ एवकाव-ন্ত্ৰা সঞ্চারিশী পদ্ধবিনী শতার" পদ্ধিংর্তে উহার পূস্পপদ্ধব শুল নীণারিত সঞ্চরণহীন চাঁছা ছোলা আফুতিরই মত নহে कि १ छात्रजीय मन्नीरज्य याहा विस्मयक स्मर्के विक कम्मानहे विक्र वाकाम मा शान परव हात्रामानियाम वा निवासन यह कि क्तिया এই मनोटाब डेनरवानी हरेन ? हिन्सू ननीटा वावका ২২টি শ্রুতি হার্মোনিয়াম বল্লে নাই, শ্রুতির ব্যবহার ছাড়া ছিন্দু সন্ত্ৰীত "গুৰুং কাষ্ঠং তিষ্ঠত্য গ্ৰে" বং শ্ৰবণ কঠোর। ভা ছাড়া অতি কোমল, তীত্র কোমল স্থপ্তলি উক্ত যন্ত্রে বাজান চলে কি লৈবে কি করিয়া রাতপুরিয়া, কাণাড়া, ছিলোল, মালকোল, টোরী বা আলাবরী প্রভৃতি রাগরাগিনী-श्विम शुक्रकाल शंक्रामा निम्नाम वोक्यान मखन इत ? डिक्रास्त्रत দ্বাস্ত্র না শিশিছা সাধারণ গান বা ইংরেজি স্পরের চঙ্গে যে স্কল আধুনিক গান বাহির হট্যাছে সেই সকল গান বাহারা वाकारक हान कार्यापत्र कांच शाद्यानिशास हरन वरहे. धरे পৰাস্ত ।

া ভার পরে প্রান্থের অক্সত্র লেখা ছইয়াছে যে, হারমোনিয়াম বন্ধ বারা "সঞ্জীতে কবিকার করে।" রাম বলুন ! হারমোনিয়াম ৰ্জ্বের স্বারা স্থরবোধই হয় না ভা "নদীতে অধিকার", দে ভ व्यातक बड़ कथा। ध यद वतः मक्ति नहेरे करत। দেৰুন একজন মহাত্তৰ ইংরেজ দলীতজ হারমোনিরান্ 'হইরাছে। এই বরলিপির সাহাব্যে জনারাসে গানগুলি मध्य कि निश्तिष्ठारहन :--''If the Mahomedan अञान कहा यात्र । এই গ্র. ছর ১৭ পৃষ্ঠায় ''' अतिहि स्मानिह "star" singer knew that the harmonium ভাগা তুমি জান ভোজের বাজি, বে ভাবে বে তোমাগ ভাকে

accompanies himself was which he raining his chief asset, his musical ear, ......(he) would pause before (he) laid such sacrilegious hands on saraswati"page 16, Music of Hindusthan by A. H. Fox Strangways, Oxford, Clarendon press. Tagget হওয়ার জন্ম আমাদের পুরাতন তানপুরাই সর্বভেট।

তৎপরে গ্রন্থকার রাপরাগিনী গাওয়ার সমর সম্বন্ধে ধে মত প্রকাশ করিয়াছেন তাহা নিতান্ত অসমীচীন। ভিনি লিখিয়াছেন "সকল সময়েই সকল রাগিনী গাওয়া ঘাইতে পারে।" শেষ রাত্রির রাগিনী গুলি হটতে আরম্ভ করিয়া বেলা ৮টা পর্যান্তের রাগিনী গুলিতে আতে আতে কোমল-ক্রন্ত বাবহার করিয়া কোমল হইতে গঞ্জীর এবং গঞ্জীর ভটাতে কোমলে ঠিক প্রকৃতির সঙ্গে মিল রাখিরা কেমন মনোরম ভাবে লইরা যাওয়া হইয়াছে। পরে ক্রেমে প্রকৃত কুরের ৰাবহার করিয়া আবার ধীরে ধীরে ভাটি বেলার কোমল কর প্রারের করিয়া সন্ধ্যার গিয়া পৌচান ভইয়াছে। সন্ধার পর হইতে ক্রমে শেষ রাতির পূর্ব পর্যান্ত বুঝিরা ব্ৰিয়া প্ৰকৃত ও কোমণ স্থাৱের বাবহার। প্রত্যেক সমধেই निमर्शित मात्र खुत वैश्वा । योता । धमव कतिया विद्यादक्रम প্রকৃতির সলে তালের বড় মাধামাধি ছিল, তাহারা ধেমধ প্রকৃতিকে তাঁছাদের কাব্যে, গানে ও জীবনে একান্তত্ত ক্রিরা নিয়াছিলেন, তেমন সার কেছ করে মাই। বাগ বাগিনী গাঁওয়ার সময় সহক্ষেত্ত তাঁহাদের বাবস্থা चार्क्या शकुछि পर्याद्यक्तरणत कन, উहा ना द्वित्रा डेड्राहेब्र बिल हिन्द मा। जानवानिनी अनम्दर नाहेत्न त्नाहरत ব্ৰশাহত্যা হয় না বটে, কিন্তু সঞ্চীতের মাধুগ্য হন্ত্যা হয়।

সরল সঞ্জীত ও হারমোনিরাম শিক্ষকের খিতীর ভাগে অনেক্স্তলি ভাল ভাল গানের অতি সহল বরণিপি বেওয়া ভাতে তুমি হও মারাজী।" এই প্রসিদ্ধ গানটির প্রচণিত স্থরটি দিলেই ভাগ হইড।

সনালোচনা করিতে ঘাইরা কর্ত্তব্য বোধে কএকটি অগ্রির মন্ত্রা নিপিবদ্ধ করিতে বাগা ১ইলেও উপসংহারে গ্রন্থকার মহাশরকে তাঁহার এই ছাতি সমজ বোগা তুই ভাগ গ্রন্থের জন্ত অংক্তরিক ধন্তবাদ দিভেছি। সঙ্গীত শিক্ষা সম্বন্ধে আমাদের বাঙ্গলা ভাষার কম গ্রন্থই আছে, তাঁহার এই বই কুইখানি দ্বারা প্রথম শিক্ষার্থী দ্বের বিশেষ উপকার স্থানিব।

# ঠাকুরমা'র কথা।

( 0

#### (मकात्नत्र ছाछ।

চারিবিকে চতুস্থানীর ছাত্রগণের মণ্যে সামার জন্ম,— ভারাদেরই মণ্যে এতদিন কটোইয়াছ। আমাদের কর্ত্তা পণ্ডিত,—ভারার চতুস্থানী ছিল প্রায় ৩০ বংসর। আমার কাকা বিশ্বামণি মহাশ্যের টোল দেশ বিখ্যাত। ভা ছাড়া রামণোচন সিদ্ধান্তের টোল, আমার ভাই বিখনাথ বিভারত্বের টোল—আমার ছেলের টোল, প্রামে তর্কভ্রণের টোল, প্রাপ্তি আরো ৫ ৬টী টোল ছিল এবং বহুসংগ্যক ছাত্র ভারতে অধ্যয়ন করিত। আজাবন এই সকল ছাত্রদের কার্য্যকলাপ দেখিয়াছি। স্কর্যাং আমি তাহাদের অনেক কথাই জানি। তাহাদের রাতি নীতি আসার ব্যবহার

সেকালের ছাত্রেরা আনুষ্ঠানিক ধর্মণরায়ণ, পরস্পর সংশিক্ষ্ ভূতি সম্পন্ন, নৈতিক আচার নিষ্ঠ ও কাণ্ডিমান ছিল। কি স্থান্ধর আন্তার্কু ছেলেরা এক একটা চতুপাঠী আলো করিয়া থাকিত। ভাহাদের কলংক্তে আমাদের প্রাক্ষন আনন্দ্রনা ইয়া উঠিত। বাস্তবিক ছাত্র বলিতে ভাহারাই ছিল। ছাত্রেরা ব্রহ্ম মৃহর্তে গাজোখান ক্রিয়া তব পাঠ করিত। মৃথ ধুইয়া সক্ষা বন্দনা করিয়া কেছ মূল বেলপাতা আগিতে ঘাইড, কেছবা পড়িতে দসিত। কিন্তু সকলেই সন্ধ্যা বন্দনা করিত। তিলক কাটা, জিসক্ষা, পূজা, ব্রত্ত উপনাস ছাত্রগণের ক্রেব্যের মধ্যে ছিল। তারপর পড়া আরম্ভ ইত।

চতুপাঠী খার—দরজার ছইদিকে চাটাইর উপর পাটীদির।
অর্ক্ররনর বিছানা করা হইত। বিছানার সন্থুবে নোটা
সরল ও চাঁছা ছোলা একটা বাঁশ দিয়া সীমানা ঠিক করা
থাকিত। আর তিন দিক দিয়া তিন থানি করিয়া বাখারি
বাঁধা থাকিত। উহার নান ছিল—'লাধিকুড়া'। উহাতে
ছেলেরা হেলান দিত এবং ছড়াছড়ির বিপদ হইতে বেড়া
রক্ষা ক্রিত।

ছাত্রেরা তারস্বরে পাঠ আবৃত্তি করিত। কি স্থনার সেই হার। কি আনশ হইত বেই আবৃত্তি শুনিয়া। বেশা দলটা পর্যান্ত সেই আবুত্তি চলিত,—তারপর "পাঠ চাওমা" বা ''বিশদ ব্যাখ্যা'' আহ্নন্ত হইত। এই 'পাঠ চাওয়া' ব্যাপারে সময় সময় মনে ্ছইত যেন দেবাস্থরের বুদ্ধ লাগিয়া গিখাছে। অধ্যাপকে ছাত্রে তথন মহাতর্ক লাগিত। অধ্যাপক ছাত্রের বৃদ্ধির পর্থ ক্রিতে বাইমা সময় সময় ভুগ বুঝাইতেন, বুজিমান ছাত্র তাহা ধরিয়া ফেলিড / তথন উভয় পকে ভর্ক যুদ্ধ হইছ। কথনওবা অধ্যাপকের খাঁটী ব্যাখ্যাতে দোষ দিয়া ছাত্র নৃতন অর্থ করিয়া লড়াই করিত। कान दिन यदि एनरे जार्क काब वादिन जरव राज होत পুর্বে সানাহার হটও না। আর একবার পাঠ চাওরার সময়. ছিল-কাত্রি কাল। রাধাবাড়া করিয়া ভাত লইয়া বিশিষা शांकिकाम-युद्ध काल ना इहेरन भाव रक ? ছाज्बन मधारू কালের আহার শেষ করিয়া পরম্পরের বিশ্বা পরীক্ষা করিত। দিবা দিলা অনে েই করিত না। বিকালে পুকুর পাড়ে,.. मार्कत भरथ, डेकान (करन चालाहन) इहें । रक्रन পুরাত্তন পড়া লইরা পরস্পরের ক্ষমতা প্রকাশ করা চলিত।.. ফলে কেছই পুরাতন পড়া ভুলিবার অবকাশ পাইত না।.

रकान द्रकान हां विकार 'ऋर्थ थांहेवात' आणाय रहनी লইয়া পুকুরে বসিত, কেহ পুণি নকণ করিত; কেহবা গান গাহিত। কোন কোন ছাত্র ত্রহ পত্র রচন। করিয়া \* প**ণ্ডিতের বৃদ্ধি পরীক্ষার অন্ত** মাথা খামাইত। কোন ছাত্র ছবি আঁকিড কেছ বা কাগল তুলট করার সরঞ্জাম দংগ্রহ করিত। ভাগ খেলাটা নৃত্তন-পরে দেখিয়াছি; পূর্বে ছাত্রেরা পাশা ও দাবা লইরা আড্ডা বসাইত। কিন্তু বড় গোপনে। কোন কোন ভোজন-লোল্প ছাত্র আদিয়া আমাদের ভোষামুদ-क्रबड: हिड़ा मुड़ि बाबाब क्रिड। व्यत्नक हाखरे 'लिए देव দারে' না হউক 'প্রের থাতিরে' এবং নিজের চাতুরী - দেখানের জন্তু, খান্ত দ্রবা চুরি করিত। আমি কোন দিন এই মহা অন্তায়ের প্রশ্রম দেই নাই, কিন্তু আমার রুক্ষ শাসন উপেক। कतिवाल ছाত्ৰেता নাবিকেল, कला, कांश्रेल, आम ৰখন যাহা স্থবিধা পাইত,—চুরি করিত। আমার বাপের বাড়ীতে ( স্বামীর বাড়ীর অতি নিকটেই দেই বাড়ী). সরথেশ বাড়ীতে বহু নারিকেল গাছ ছিল। প্রত্যেক বাড়ীতেই তুই পাঁচটা গাছ ছিল। এ সকল নাইকেলের অধিকাংশ ছাত্রেরা চুরি করিয়া পাইত। ছাত্রেরা ৫০।৬০ হাত লম্বা, মঞ্জবুত দড়ি পাকাইত। ঐ দড়ির মধ্যে বাশের Dir পরাইয়া—এ দভি শইয়া গাছে উঠিত। নারিকেল গাছের মাথার ও নিরাপদ কোন স্থানের বুক্ত মলে ঐ দড়ি বাঁধিয়া.—এ বাঁশের চোঙ্গায় নারিকেল ছড়া শক্ত করিয়া বীধা হইত। তারপর নারিকেল ছড়া কাটিয়া দিলেই হড় ইড় করিয়া উহা অভিশ্বিত স্থানে পৌছিত। কেহ কেহ নারিকেল চুরি করিতে গাছ হইতে পড়িয়া হাত পা ভারিরাছে। ধরা পড়িলে শান্তি ছিল ভরত্তর। যে বাড়ীতে চুরি করিতে গিয়া ধরা পড়িত, সেই বাড়ীর কর্তা পরদিন অপরাকে সমস্ত ছাত্রকে নিমন্ত্রণ করিয়া ভাঙা চিড়, ও নারিকেল থাওলাইয়া দিতেন। হয়ত কুতক্ত ছাত্রেরা সেই রাজিতে সেই বাড়ীর হাঁড়ি সমেত চিড়া বা ভাও সমেত

ষ্ট চুরি করিয়া থাইত। চোরের জালার সকলেই আহির থাকিত। তবে এক স্থবিধা ছিল এইবে,— এই সকল চোরের ভয়ে পেশাদার চোরেরা বড় কাবু হইয়া গিলাছিল।

অনেক ছাত্রই বেশ ধাইতে পারিত। উত্তেবের ধাওয়াইতে আরাম বোদ হইত। আছারের সময় এথম যেমন না—আর পারিব না ধ্বনি শোনা যার,— সেকালে ছিল ভার বিপরীত শক—দেহি দেহি। নিমন্তবে, শ্রাদ্ধ, বিবাহ উৎসবে ছাত্রেরা সব কাল করিত। রাঁধা, পরিবেশন, সব ভাহারা করিত। ভাগুর ভাহানের জিল্মা থাকিত। পিপড়ার সাধা ছিলনা যে একটা ক্ষুদ চুরি করিয়া নেয়। কিন্তু কার্যা হরের তুই চারিটা দ্রবা বাদে প্রায় সবই আল্মসাৎ করিয়া উঠানমর ভোজনের মহোৎসব লাগাইয়া দিত। কি সানন্দ দেবিয়াছি! আলও মনে পড়ে—আর চক্ষেক আইসে।

हार्टित्म वर् प्र हिन-शिशक्षेट्र। श्री शक्षेत्र खवा हिक করিতে নাই, ইহা তাহারা দৃচ্ ভাবে বিশ্বাস করিত। দশ প্রবু দিন লেখা প্রারু অংগোচনা বন্ধু থাকিত। ঘর সালানো, পতা রচনা, তবা সন্তার সংগ্রহ, অর্থ সংগ্রহ, পারের बावश हे जानि नहेबा ছाতেबा आश्वत निक्षा जुलिया बाहे छ। व्यक्त वाजीत (हरत भव विश्वत जान करा हाडे--- वह हिना व्यथान উष्मश्र । तकत्व त्राभाग भवागर्ग श्रृष्ठ । दूरी তিনজন হইত নেতা। সামাদের ছাত্রেরা তথন হাটিয়া ঢাকা হটতে অধাপিকের ক্র লাল ও অধাপিক প্রতীর জন্ম বানারদী দাড়ী কিনিয়া আনিত। যাত্রার দলের অধিকারীর হাতে পৈতা বাধিয়া—সেই ধর্মজীক দলপতির খারা শ্রীপঞ্চমীতে গান করাইত। দশপতিরা ইহাতে আনন্দিত হইতেন। নিমন্ত্রিগণকে কোন বাড়ীতে জল ধাবারে কয়খানি জিনিদ দেওয়া হইত-ভাহার হিসাব থাকিও। যাত্ৰা, কবি, কীৰ্ত্তন-ৰাই খেমটার নাচ পর্যান্ত প্রীপঞ্চমীর উৎসবের অঙ্ক ভিল। একবার কলিকাভার নাটক (পিরেটার) ছোদেনপুরে আইনে—ভাই বেশিয়া ন' পাড়া আর মহয়ার চাত্রেরা নাটকের স্ত্রপাভ করে।

 <sup>&</sup>quot;(সকালের পত্র বাবহার" প্রবন্ধে এ সম্ব:র
আলোচনার ইচ্ছা রহিল।-- লেথক।

শ্রীণক্ষীর নিমন্ত্রিলগণের অভার্থনা শেষ হইলে মধ্যরাত্তে ছাজেরা আমাদে মন্ত হইত। ভাঙ্গ্রাপ্তরা এই আমাদের কেইটা বিশিষ্ট অঙ্গ ছিল। নেশার কেই চুর হইরা বাকিত, কৈইউনঙ্গ নৃত্য করিত; কেই বা বাড়ী ঘর, পুকুর পাড় বাঁট কিই আর কেই মার্মে গিরা খেলারি মন্তরী ক্ষেত্রের সমস্ত অপক ফলল তুলিরা ক্ষেত্র সামীর সর্বানাণ করিত। কেই সারা রাত্রিই প্রস্তরে প্রহরে স্থান করিরা প্রানাভ করিও। শ্রীপক্ষীর নেশা ছুটিলে পুনরার বে বাহার পড়া লইয়া বসিত। কংশরে ৬ ৭ মাল পড়ার বাবস্থা ছিল। কোন কোন ছাত্র ছাত্র মালও অধ্যাপকের গৃহে থাকিত। তুথার ছাত্রেরা নিম্ন জ্ঞান পিগালা ও তর্ক যুদ্ধের আকাজ্যা হিটাইতে সমেক সমন্ত কড় পণ্ডিভকে আক্রমণ করিতেও ভীত হইত না। ব্যাক্ষণ করিতেও ভীত হইত না। ব্যাক্ষণ করিতেও ভীত হইত না।

ছাত্রেরা সক্ষার পর কেই কেই রামারণ, মহাভারত, ু আপ্রবন্ত, পঞ্জির। কোন দিন সভীর্ত্তন করিছে। "পোড়া পেটের লাগিরা চুরি করা ছাড়। ইহাদের মধ্যে অন্ত কোন ও ংকাৰ কলাচিৎ কেখা যাইও। চুরির সন্ধান পাইলে ভীবন ं बन्न পদান্ত জুলিলা যাইত। একটা দুধান্ত দিলেই ভাছা বুঝা ষ্টিবে। স্থানার ছেলের ছাত্রের। পূজার পর স্থাবার ্জাসিয়াতে। রামচক্র অধিকারী আসিয়াতে অঞ্চায়ণ बारमब (नव ভार्म किंक मझान्त ममन । (है।न बरवन रमहरन दि कैशिन शांछों कां बहेशाहिन जाशांक भाव बेल्क এক মত্ত ভীমকলের চাক ছিল। প্রাপ্তাব করিতে গিরা সন্ধার ্ৰাজকারের আবছারার রামচক মনে কবিল একটা 'অকালে कार्राम'। मत्न मत्न बहे मन्त्री चार्षिक्ष दायहस्य वे कार्रान চুরি করার অবসর খুঁজিতে লাগিল। ছাজেরা থাইতে পেলে श्लाबहरू ना হাতে নইর। কাঁঠাল কাটিতে পেল। মীচে ক্ষুব্ন-কাঠাল পড়িলেও পত্তন শক্ষ অক্ষরে পৌছিবে না, মনে করিয়া রামচক্র কাঁঠালের বেঁটা লক্ষ্য করিয়া কোপ মারিল। তার পর যাতা হইল-বলিতে এখনো শ্মীর िषिष्वित्र উঠে। वाष्ठिक এक बादन विष्टांना छाडियां উঠিগাছে এবং তাহার প্রায় স্পালে বসক্ষের লাগের মড চিক্ হইরা গিরাছে। রাসচক্র আবিও জীবিত। ভারার মুখে সেই সকল চিক্ এখন ও নিঃখেব লুগু হর মাই।

ইন্নানীং টোলের ছাত্রসংখ্যা ক্রমে ক্ষিয়া আসিতেছিল ।
ইন্থলে পড়ার বাভিক রুদ্ধির সহিত টোলের অবস্থা থারাপা
হইরা গিরাছিল। ছাত্রেরাও একটু বিলালী হইরা উটিয়াছিল।
শ্রীপঞ্চমীর উৎসব শ্রীহীন হইরা গেল। ছাত্রেরা নিক্ষার
হইরা পড়িতেছিল। পড়া শুনাও ভাল হইতেছিল না।
আমার বোধ হর আমি টোলের উন্নতির শেব অবস্থা ও
অবনতির হত্তপাত্ত দেখিয়া গেলাম। ধীরে ধীরে আচার
অমুষ্ঠান সান্ধিকতা, ধর্মজ্ঞান প্রভৃতির যে অধঃপতনের চিক্
কেখিলাম—তাহা পূর্ণাক হইলে দেশের কি ছুর্দ্ধশা হইবে,
ভাহা ভাবিতেও শিহরিয়া উঠি।

শ্ৰীপূৰ্ণচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য।

### হতাশায়।

( পঞ্চামর ছন্দের অসুসরণে )

জীবন জীবন আঁধার জীবন,

জীবন জমাট্ আঁধার আঁধার চু

সকল সময় অবুঝ্বেদন

ঝরায় কেবল নয়ন্-আসার!

শাখাত আবাত কিনের আবাত !

নে বৰ অবোগ মনেই বাহির :
চতুর্দিকেট মিছাই তাকাই,

মিছাই আকুল আশার বাণীর !

দ্বের পণিক কাঙাল কবির,
ভালের জীবন মধুৰ জীবন ;
ভালেম কোমল প্রাণের ভিতর
আশার আলোক দেখার স্থলন !

আমার অতীত্ স্থের স্দিন!
আমার প্রাণের সরল পিরাস!
তোলের দরশ পাবার আশার
হেপায় হোগায় বেড়াই নিরাশ!

বেড়াই ভোরের নীরব সময়, বেড়াই গভীর ছপুর বেলায়, বেড়াই উদাস সাঁঝের আলোধ, বেড়াই নিবিড় গভীর নিশায়!

চকোর যেমন সুধার আশায়
চাঁদের নিকট বেড়ায় কেবল,
পরাণ আমার তেমন করে'-ই
স্থারে আশায় বড়ই চপল!

পাণীর কুজন, চাঁদের স্থাস, ধানের শীবের মধুর দোলন, দিবস নিশায় এখন এসব বাড়ায় হিয়ার আকুল কাঁদন!

বোনের আদর, মায়ের সোহাগ,
প্রিয়ার পেলব হাসির লহর,
এখন এসব বড়ই ঘুণার,
আভন জালায় প্রাণের ভিতর !

কোথার আমার হিয়ার দোসর,
কোথার আমার প্রাণের ঠাকুর !
বাঁচাও আমায়, বাঁচাও আমায়,
বাঁচাও এমন কাঙাল আতুর !

উদার প্রেমের ভরাট্ প্রবন বহুক্ প্রাণের স্তরের ভিতর! নীরসজীবন সরস হউক্ সরস করুক্ জীবন অপর! আমুক্ প্রাণের তিতর আবার অতীত্ দিনের সাধের জীবন! উঠুক্ বিমল স্থের লহর, দেখুক্ হৃদয় দিবস-স্থান!

নিরাশ মেখের আঁধার ছেদন
করুক্ আশার তরুণ তপন!
আবার গভীর প্রেমর নেশার
চলুক্ প্রাণের ভাঙন গড়ন!

वीय शैक्ष अनाम छोडार्गा।

### किञ्चत रमन।

দিলীর সমাট আওরঙ্গজেব বাদশাহের রাজত্বের শেব नमात्र मूत्र निमक्ति थी वाश्ना, विश्वत, উড़ियात अवामात्री এই সময়ে জৈহুদিন নামক এক পদ লাভ করেন। वाकि हगनी ठाक्नात एके बनात हिलन। क्लिनातीनन स्वानादात्र अधीन थाकियार अनिस निस চাক্লা শাগন করিতেন। কিন্তু আওরঙ্গজেবের আমলে এ নিয়মের কতকটা পরিবর্ত্তন ঘটে। তিনি ফৌজদার-গণকে অনেকটা ক্ষমতা প্রদান করায় ভাহারা এরপ স্বাধীন ভাবেই নিঙ্গ নিজ চাক্লা শাসন করিতে আরম্ভ करतन-युवाणात्रक आहाई कतिराजन ना। यूत्रिणक्शि খাঁ দেখিলেন এ এক বিপদ, চাক্লার ফৌলদারগণের উপর যদি তাহার প্রভূষ না থাকে তবে তিনি কি করিয়া रम्भ भागत दाथित्वन, তाशांत च्वामाती शामत मान সম্ভ্রমইবা কি! তখন আওরম্বজেব বাদশাহের মৃত্যু ছইয়াছে, তাঁহার দিতীয় পুত্র বাহাত্রশাহ নাম ধারণ করিয়া দিল্লীর রাঞ্তত্তে আসীন। মুরশিদকুলি খাঁ সমাটকে এ ব্যবস্থায় দোব প্রদর্শন করিয়া তুগলীর

কৌৰদারকে তাঁহার শাসনাধীন করিয়া দিবার প্রার্থনা ভানাইলেন। সম্রাট বাবাদ্বর শাহ স্থবাদারের এ প্রতাবের সারবভা উপলব্ধি করিয়া কোজদার কৈছুদিনকে স্থবাদারের অধীন থাকিয়া কার্য্য করিবার আদেশ করিলেন। কিন্তু স্থাধীন চেতা আত্মসন্মানাভিমানী কৌজদার সম্রাটের এ প্রভাবে সন্মত হইতে পারিলেন না। কাজেই তিনি পদ্চ্যুত হইলেন।

এদিকে সুবাদার মুরশিদক্লি খাঁ ওরালীবেগ নামক একজন খোগলকে ফোলদার নিযুক্ত করিয়া ছগলী প্রেরণ করিলেন। কৈছুদ্দিন ন্থির করিয়া ছিলেন থে, ওরালীবেগ হুগলীতে আসিলেই তাঁহাকে কাগজ পত্র বুঝাইরা দিয়া তিনি দিল্লী চলিয়া যাইবেন। ইংা দ্বির করিয়াই তিনি পূর্ব হইতেই নিজ আত্মীয় স্বজন ও অসুচয়বর্গ সহিত সহরের বাহিরে গিয়া পটমগুপ হার্ণন পূর্বক ভাহাতে বাস করিতে থাকেন। কিন্তু ওরালীবেক বলিয়া পাঠাইলেন—যদি আপনি দিল্লী মাইবার জন্ম বাস্ত হইয়া থাকেন তবে কাগজ পত্র দিয়া বাইতে পারেন। কিন্তু আমার কাগজ পত্র দেখা ও হিসাই কিতাব পরীকা শেব না হওয়া পর্যান্ত আপনার শেক্ষারা কিন্তার সেনকে এখানে রাশিয়া যাইতে

কৈছুদ্দিন পদচ্যত হইরাভিলেন বটে, কিন্তু তাঁহার কৰেই আত্ম সন্মান জ্ঞান ছিল। তিনি ওয়ালীবেগের ক'অজাকে বিশেষ অপমান বোধ করিলেন; বিশেষতঃ অস্থাত প্রভাৱ কার্য্যকারক কিন্তবকে হিসাব নিকাশের হারে এ বিপদের মুখে ফেলিয়া যাইতে তিনি কিছুতেই অক্ত হইলেন না। স্তরাং পদচ্যত ও নব নিমুক্ত কৌজদারের মধ্যে বুদ্ধ অপরিহার্য্য হইয়া উঠেল।
ইক্ত্দিন চুঁচুড়ার ওলনাল ও চন্দননগরের ফরানীবিগের নাহা্যা প্রার্থী হইলে ভাহারা কৈছুদিনের পক্ষ্যীহা্যা প্রার্থী হইলে ভাহারা কৈছুদিনের পক্ষ্যীহা্যা প্রার্থী হইলে ভাহারা কৈছুদিনের পক্ষ্যীহা্যা করিল। এদিকে ওয়ালীবেগও নবাবের দিকট কৈছালাহা্যা ভিকা করিলেন। নবাব ভাহার

সাহায্যার্থ হিন্দুবীর দিলপৎ সিংহের নেতৃত্বে একলণ সৈন্ত পাঠাইয়া দিলেন। উভয় দলই ক্রান্ত্র নিকট দৈল বরিয়া উভয় পক্ষেই শুধু যুদ্ধের উদ্যোগ আয়োজন চলিতে লাগিল। কিন্তু জৈপুদিনের এইরপ অলসতা ভাল লাগিল না। তাই তিনি মনে মনে এক সন্ধর আঁটিয়া নবাবের সৈন্তাধ্যক্ষ দিলপৎ সিংহের নিকট সন্ধির প্রস্তাব করিয়া এক দূত প্রেরণ করিলেন

এই সময় দিলপৎ পরিধা ও তুর্গ প্রাকার নির্মাণ কায্যের পর্যবেক্ষণ করিতেছিলেন। তিনি দূতকে (प्रदेशाति शानका किताब शालि मिला। प्र আসিলে তিনি ভাহার সহিত কথোপকগনে নিযুক্ত আছেন এমন সময় বিরুদ্ধ পঞ্চীয় জনৈক করাসী लालकाक डाँशाक लका कतिया वाकरत व्याखन जिल, চক্ষের পলক পড়িতে না পড়িতে বজ্রনির্ঘোদে কামান গর্জিয়া উঠিল আর সঙ্গে সংক্র বীরবর দিলপতের দেব শতধা ছিল্ল হইয়া দৈক্তমগুণীর মধ্যে ছড়াইয়া পড়িল। দৈক্যাধ্যক্ষের এইরূপ আকস্মিক হৃদয় বিদারক মৃত্তুতে নবাব-দৈশ্ব ভীত জম্ভ ও ব্যতিবাস্ত হইয়া উঠিল। বৈহুদ্দিন দেখিলেন এই সুযোগ;—তিনি ভীম-বেগে তাহাদিগের উপর আপতিত হইলেন। বৈক্তদল পৃষ্ঠভদ দিয়া রণকেত্র ছাড়িয়। তুগলী দূর্বে আশ্রম कहेता जालन (जर बालन मधान रकाय तालिया रिक्सी देकबू फिन गमन वरन निन्छि मरन जाशन गमा शान पिद्योट यह पित्न मर्पा पिन्नी हिला (शालन। देकच्कित्वत्र मृज्य रहा ।

কৈর্দ্দিনের মৃত্যুর পর কিন্ধর সেন দিলী পরিত্যাগ করিয়া মুবশিদাবাদে উপস্থিত হইলেন এবং নিভাঁক্ চিতে নবাবের সহিত সাক্ষাৎ করিছা ভাষার অধীনে কর্ম প্রার্থনা করিলেন।

নবাব কিছর সেন্তে চিনিভেন। কৈছুদিনের লোক বলিয়া কিছরের উপর ভাষার রাগভ ছিল, কিছ তিনি

ভবন তাঁহাকে কিছু বলিলেন না বরং মুধে আপ্যায়িত করিয়া অভি ব্রীষ্ট্রেই তাঁহাকে হণলীর কর সংগ্রাহকের পাঁদে নিযুক্ত করিলেন। এক ব্রুইরফ শেবে সালভামামীর শময় বাৎসারক হিস্পা-নিকাশ দিতে কিন্তর মুরশিদাবাদে नवाव मत्काल्य शक्तित वहालन। किन्न: এই আসার किंदात कान धरेन, जिनि बात हशनी गांरेट भातितन এখন হাতে পাইয়৷ পূৰ্ব্ব কোৰ শোধ দিবার অভিপ্রায়ে 💆 ছবিল ভছরপের মিথ্যাপবাদ অজ্হাতে নবাৰ তাঁহাকে কারাক্ত্র করিলেন। কারাগারে প্রতাহ তাঁহার আহার ও পানীয় জন্ত লবণ মিশ্রিত মহিব ছুগ্নের वंत्राम रहेंग। এই त्रिन्तृम व्याशाद्ध किकत व्यव्यक्तित्व मर्ता है किन छेन बाँगरत याजा छ दहेता अखितन। किछ नेवारवत्र व्यात्मम व्यवशा दहेवात्र छेनात्र नाहे । व्यवस्था এই পীড়াতেই তিনি নবাবের ক্রোধ ও অত্যাচার এবং কারাগৃহের তঃৰ ও যন্ত্রণার হাত এড়াইয়া পরলোক গমন করিলেন। প্রভুভক্ত কিন্ধর নিজের প্রাণ বলি দিয়া প্রভুর অপরাধের প্রায়শ্চিত্ত করিলেন।

কিকর সেনের কোন বংশধর জীবিত নাই। স্থতরাং তিনি কোন জাতীয় ছিলেন কিলা তাঁহার বাসস্থান কোথায় ছিল, তাহা নির্ণয় করা ত্ঃসাধ্য। তবে শুনিয়াছি, বৈল্যেরা তাঁহাকে অলাতীর বলিয়া দাবী করেন এবং ফরাণী চলন নগরের 'কিল্কর সেনের গড়' তাঁহারই বাসভূমির ধ্বংসবশেব বলিয়া নির্দেশিত হইয়া খাকে। সত্য-নির্ণয় প্রভ্রত্ত্ববিদ ও ঐতিহাদিকগণের ক্রেক্সান্ত বিচার-সাপেক।

धैवयिनीक्त्रात्र (तन।

# শ্রীরাধা বা ব্রজগোপীর প্রেম ধর্ম। (পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

স্তরাং জীব রসগ্রাহী সৌলর্ব্যের উপাদক। রস ও (मोन्पर्ग कीरवर मात्र मण्यक्ति। आयामन कराष्ट्र कीरवर বভাব। একত জীব জগত কৈ আখাদন করিবার জক্ত वाछ। कार कीरवत आचामन कतिवात वस दहेरान পরম অস্বায় নহে। জীবের পরম আস্বান্ত একমাঞ मक्न तरमत्र वाधात शिक्शवान । तमरमानूभ कीन -ঞ্জিগবান্কে সর্বতোভাবে আসাদন করিতে পারে। खीछगवान्रक कौव बाजामन कविएड भाविरम**ें ठाराव**े কল জীবন সার্থক হইরা যায়। জীবে যে গোভরাপ একটা শ্রেষ্ঠ প্রবৃতি রবিয়াছে দেই শ্রেষ্ঠ লোভ প্রবৃত্তি টী श्रीडगराम्हक चार्यापन कदिराद खग्र । चात्र श्रीडगराम्हकः আস্বাদন করিতে পারিলেই জীবের লোভের প্রকৃত চরিতার্বতা লাভ হয়। লোভ প্রবৃত্তিময় জীব গোভের বশীভূত হইয়া ধন মান যশঃ প্ৰভৃতি পাৰ্থিব অসার বস্তুর অনুসন্ধান ও আহরণ করিতেছে; কিন্তু বাস্তবিশ্ব-পকে দেই সমন্ত অসার, অকর্মঞ, অচিরস্থায়ী, কণভরুম वस्र । वाजी इहेश कीव वाव मास्रि भारे**. उरह** मा, य**स्**रे জাবের লোও বাড়িতেছে, ডতই আবার দেই ছুর্দ্ধনীর লোভেয় নকে সঙ্গে অংশ্যে আলা পোড়া, বিল্ল বিপঞ্চ আগ্রয়। বিষয় লোভা জীবকে মন্ত্রণার উপর মন্ত্রণা দিতেছে: कार्ष्ट्र कीरवत बात गालि गारे; किय (पर लाक যদি জীভগবানের দিকে যায় ভাষা হইলে জীব গোলুপা হইয়া শ্রীভগবান্কে আধাদন করিয়া ক্রন্ত কতাপ হইছে পারে। জীবের এত লোভ তাং। কেবল ভগবানের अक नुक र ७ दोत्र प्रका । उत्तरात्म व क्रम क्षेत्र (माधी ना **रहेग्रा** धम कन यम गातित अल, भाकि शिष्कत (जातक्रायत कर লালাগিত হওয়াতেই জীবের এত হঃখ, এত জালা এত জশান্তি। লোক সমাজে এত নারামারি কটাকাটি 🕸

ভোগব্যাকুল হইরাই জীব বৃঝিতে পারিবেন বে, তাহার এত লোভ কেন ? কোন পরম বস্তর লাভ হইলে তাহার লোভের বথার্থ সার্থকতা হয়। লোভের প্রেরণাতেই জীব জ্পরান্তে জাহাদন করিবে ইহাই লোভের উদ্দেশ্য।

🗐 छत्रवान्हे जीरवत (अर्घ चात्रागरनत এতগৰানে এত রদ আছে যে, দেই রদের আসাদনের ছুল্য আর আস্বাদনই নাই। সেই ভোগের তুল্য আর ভোগ্য বস্তুই জগৎ সংগারে নাই। রসময় ঐতগবান শীৰের পরম আখান্ত ও পরম ভোগ্য! দীব ভোগী. ৰীৰ লোভী। এই লোভী ভোগী জীবের মহাকল ছোগ আর গোভ। আর জীবের যত হঃব হর্দশা এই জ্ঞাপ ও লোভের কারণে। শাস্তকার শাস্ত করিয়া এই ভোগ আর লোভ বিষবৎ ত্যাগ করিতে উপদেশ দিতেছেন, এই লোভ আর ভোগের প্রতিকৃলে যত কুলি দেখাইতেছেন। কিন্তু, প্রেমিক মহাজনেরা শাল্লের সেই ওক উপদেশ উড়াইয়া দিয়া বলিতেছেন, শীবের ভোগ আর গোভের জন্ম এত ভয় কেন ? জীব ৰদি লোভ আর ভোগ ছাড়িয়া দেয় ভাষা হইলে জীবের পর্ম ভোগ্য পর্ম আস্বাছ্য বস্তু শীভগবানুকে স্স্তোগ ও পাখাদন করিবে কিরপে ? আর তাহা হইলে ত জীবের चनाकीयम नकन्दे तथा हहेन।

শ্রীভপবান্রসময় রিসিক। ভগবানের জাবত কি রসময় বিসিক নহে ? ভারপর রস আখাদন করা কি জীবের প্রকৃতি বিরুদ্ধ হইতে পারে ? কদাচ নহে। রস আখাদন করা জীবের চিরস্তন প্রকৃতি। রস আখাদন ভিয় জীব বাঁচিতে পারে না, বাঁচিয়া থাকিলেও রুদ্ধি সাইতে পারে না, রুদ্ধি পাইলেও সিদ্ধ হইতে পারে না। বিশ্ব না হইতে পারিশে জীবের জনস্ত হঃখ দূর হয় না। বিশ্ব রাণিকের জীব রস বিনা সিদ্ধ হইতে পারে না। বিশ্ব জীব যথার্থ সিদ্ধ হইতে পারে। আর যে জীব বাংকি কি হইল, সেই জীবই রসিক শেবর প্রীভগবানের সাইতে চিরক্তন রসের সম্বাদিত চিরক্তন রসের সম্বাদ্ধি গাচ্তর ক্রিয়া ভগবানের

বঁটামিলনের মহোৎসবে পঁছছিতে সমর্থ ছইল। এতিপ্রানের সহামিলনের প্রাস্ত্র পরে বুলিব।

জীব অরসিক না প্রাকৃত পাক্ষেই রসিক। জীব সকল রসে রসিক বলিয়াই সে চিরুদিন ভোগী; আর সেই ভোগের জন্মই জীব ত্যাগী। রসিক জীবের জন্মই ভগবান রসের স্বাষ্টি করিয়াছেন। রসিক জীব রস আখাদন করিবে, রস আখাদনের জন্মই জীব ভোগী লোভী হইবে, ভোগী লোভী হইয়া জীব রস আখাদন করিতে করিতে রসময় রসিক শেখর শ্রীভগবানের দিকে অগ্রসর হইবে, ইহাই হইল রস স্বাষ্টির মুখ্য উদ্দেশ্ত। আর এই মহান্ উদ্দেশ্ত সংসিদ্ধির নিমিত্তই রসের এত আকর্ষণ এত মাধুর্যা।

আছা, জীব যদি বসিকই হইল, জীব যদি বসের
নিমিত্ত লোভী ভোপীই হইল, ভবে সকল জীবেরই রস
বোধ দেখিনা কেন, আর রসের আফাদন করিতেই বা
দেখিনা কেন ? রস বোধ না থাকিলে, রসের আফাদন
না করিলে জীব এতদিনে রসিক শেখর ভগবানের এই
ক্ষুদ্র রসরাজ্য জগৎসংসার ছাড়িয়া চলিয়া যাইত। স্থাই
সংহার হইত। জীবের বেশ রস বোধ আছে। জীব
রসিক বটে। ভোমরা আমার রসময় জীভগবানের
জীবকে কেহ অরসিক, লোভী ভোগী বলিয়া গালি
দিও না। এ কথায় আমার বড় হুংখ হয়। আমি জানি
জীব অরসিক নহে, রস বোধ ভাহার যথেও আছে।
ভবে ভাহার রসের পাত্তগুলি মলিন এই যা ক্রটি।

তবে রসিক জীবের যথার্থ রসের পাত কে ? কাহার সহিত রসের সম্বন্ধ স্থাপন করিয়ারস আন্দাদন করিলে জীবের রসবোধ সার্থক হয় ? সেই রসিক শেশর জীভগবানের সহিত রসের সম্বন্ধ স্থাপন করিয়া,—রসের সম্বন্ধ তো চিরদিনই আছে, তা থাকিলেও, আবার স্থাপন করিয়া রস আন্দাদন করিলেই জীবের রসিক উপাধি সার্থক হইল। নচেৎ উপাধিত ব্যাধি হইলাপড়ে।



১০ম বর্ষ

আবণ ১৩২৭

8र्थ मरशो

#### (सुष्ठ ।

वात्राना व्यक्तिया "(प्रव्रः मास्त्र वर्ष वाहित कतिरह शिल प्रिचिट शाख्या यात्र या अखिशान-कात "অসভাজাতি, কিরাত, শবর, পুলিন্দ, যবন প্রভৃতি", "পাপরত পাপিষ্ঠ" লিখিয়াই সম্ভোষ লাভ করিয়াছেন \*। षाणियान-कारत्रत (य मांग श्रेगाहि, अथवा जांशांत्र क्षाव পরিভাষা অপেকা সহজে স্বষ্ঠুতর উপায়ে আমরা উবার মূর্ম বুঝাইতে পারি, তাহাও বলিতেছি না। এখন "শ্লেক্ত" यिना, श्रीष्ठे आभवा "वहिन्तू", अवता नित्तभी, विभर्भी, -- এইরপ বৃঝিয়া পাকি। আধুনিক ভাষায়, অহিন্দুর मक चाहत्रण तृताहर्ड, निन्मावाहक "(मुन्हाहात्र" मक्छ বেশ ব্যবহাত হইতেছে। আবার কোন কোন প্রায়ত্ত্বিক এবং শব্দতাত্ত্বিক মহাশয় প্রাচ্যভারতের "মেচ" নামক

कां जित्र नाभ "(सक्ह" এই मस्त्रत अभाग्राम रहेर्ड छेर्पा. ইইয়াছে, এরূপ মত প্রকাশ করিয়াছেন।

জাতি-তত্ত্ব,--বিশেষতঃ ভারতের জাতিত্ব,--এড বিস্তৃত এবং বিবাদবছল যে, উহাতে হন্তকেপ মাত্র कतां ७, वर्तभान श्रेष्ठात चन्नजः, चामारमत উদেশ नरह । थाठीन ভারতবর্ষে, "शार्य" এবং "श्रनार्य" विलाख कि বুবাইত, তৎস্থানে আমাদের যংসামাত অভুসন্ধানের ফল, ধারাবাহিকরপে প্রকাশিত হইতেছে † । বর্ত্ত্যান প্রস্তাবে "মেক্ছ" এই শব্দ উচ্চারণ করিলে প্রাচীন কালে: এ দেখের লোকে কি বুঝিতেন, এবং ক্রমশঃ কালের গতি এবং পরিবর্তনের সহিত উহার অর্থের কিল্পা পরিবর্তন শটিয়াছে, আমরা তাহাই, সাধামত সংক্ষেপে, দেখিবার ১5% করিব। এই শব্দের ক্রম-বিকাশের ধারা

''প্ডিড:.'' ১৩২৬ সবের মাখ মাশ ইইতে ক্র

⁄ স্থবল মিত্তের বাঙ্গালা শভিধান।

বুন্ধাইতে আমাদিগকে সংস্কৃত-সাহিত্যেরই সাহাব্য লইতে ছইতে; স্থতরাং সর্বাঞ্জে আমরা পাঠক-পাঠিকাবর্গের ইবর্যা ভিকা করিভেছি।

কেবল বালালা অভিধান কেন, প্রাণিদ্ধ সংস্কৃত
ক্ষিতিখানেও "মেড্ছ" শব্দের অর্থ "কিরাত, শবর ও পুলিন্দ ক্ষাতি" লিখিত হইয়াছে : । ফলতঃ সংস্কৃত-সাহিত্যের ব্যাবহার লক্ষ্য করিয়াই অভিধান-কারেরা "মেড্ছ" শব্দের অর্থ-নির্ণন্ন করিয়াছেন। পুরাণের ভৌগোলিক অংশ "ভারতবর্থ" বর্ণনার লিখিত হইয়াছে,—

"এই ভারত দীপে মধ্যে মধ্যে মেজ্পণ বাস করিয়া ভাকে; ইহার পূর্বভাগে কিরাতপণ, পশ্চিমভাগে যবনগণ এবং মধ্যে ত্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশু এবং শূলপণ যথা যোগ্য বিশ্বে যাজন, যুদ্ধ ও বাণিজ্ঞাদি ব্যবসায় অবসম্বন পূর্বক

প্রবন্ধ প্রাচীন কালে 'মেন্ড্" শংকর অন্তর্রপ অর্থ
প্রচাৰিত ছিল। সংশ্বত ভাষাভাষিব্যক্তিরন্দ যে সকল
প্রাতির ভাষা বৃষিতে পারিতেন না, অথবা তাঁহাদের
মতে বাঁহারা অন্তর ভাষা ব্যবহার করিতেন, সেই সকল
প্রাতিকে সাধারণতঃ তাঁহারা ''মেন্ড্'' জাতি, এবং
ভাষাদের ভাষাকে ''মেন্ড্ ভাষা," এবং তাঁহাদের দেশকে
''মেন্ড্রেশ'' বলিতেন।

বর্ত্তমান পার্ম্মরাজ্যের পশ্চিমে অবস্থিত ''মেণো-পোটামিয়া" নামক রাজ্যের নাম এখন অনেকেএই

> ‡ ''ভেদাঃ কিরাত শবর পুলিন্দা ক্লেক্জাতয়ঃ।'' অনুর কোষ।

> "ৰীপো হাপনিবিটোহয়ং মেডেরস্থেদু নিতাশঃ।
> পুর্বে বিপ্লাতাহাস্তান্তে পশ্চিমে ববনাস্থতাঃ ৮২॥
> ব্রাহ্মণাঃ ক্রিয়া বৈশ্যা মধ্যে শ্রাশ্চ ভাগশঃ।
> ইক্ষ্যা মুদ্ধ বাণিক্যাভির্বন্তরত্বো ব্যবস্থিতাঃ ॥৮৩॥"
> বায়ু পুরাণ, ৪৫ অধ্যায়। মৎস্তপুরাণ, ১১৪ অধ্যায়।

পরিচিত হইরাছে। প্রাচীন কালে এইদেশ "আসিরিয়া" नीरम विश्वांक किन এই দেশের প্রধান দেবভার नाम अञ्चत, अधान नशरतत नामल अञ्चत हिन। अह अमूत (मान लाकरकरे जाहीन कार्मत आर्याती ''অসুর" বলিতেন। প্রাচীন কালে আর্য্যাবর্ত্তের পশ্চিমে "কালকবন" নামক এক বিখ্যাত স্থান ছিল,ভাহা পাণিনি ব্যাকরণের পভঞ্জলিকত মহাভাষ্যে দেখিতে পাওয়া-यात्र +। व्यानिवित्रा वात्का "नित्नण" नगतीत व्यन्णि पृदत "কালক" নামক বিখ্যাত নগর ছিল, তাহাও জানিতে भारा भिशारक ; । देशबरे आही नाम "अञ्चत" हिन । মহাভারতে দেখিতে পাওয়া নাম যে দেবরাজ ইচ্ছের मञ्चर्तित मर्या "कानरक्य" अस्त्रभण श्रेथान किर्लन, এবং মহাবীর অর্জুন তাঁহাদিগকে পরান্ত করিয়াছিলেন। এই অমুরের বে ভাষার ব্যবহার করিতেন,সংস্কৃতভাবিপণ তাহাকে ''মেছ'' ভাষা বলিয়াছেন।—মহাভাষ্যকার বলিতেছেন,—

"তাঁহারা অসুর। সেই অসুরেরা "হেলয় হেলয়" এইরপ করিয়া পরাভবপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন। সেই জন্ত, ব্রাহ্মণের পক্ষে ফ্রেড্টাবা অথবা অশুদ্ধ ভাবা ব্যবহার করা উচিত নহে। অশুদ্ধ শদকেই "মেদ্দ্" বলে।

পাণিনি হত্ত "শ্কান্য নিরব্দিতানাম্" ২।৪।>।।
 ভাষ্যে কে পুনরার্য্যবর্ত্তাঃ প্রাগদর্শাৎ প্রত্যেক্ কলিকবনাৎ
 –ইত্যাদি।"

+ Another important city was Calak, the Kalakh of the inscription, about 12 miles south of Ninevell. It is now represented by the mounds known as Nimrad.—Nelson's Encyclopædia, Vol. II page 316. Also, Old Testament, Genesis. Also, Encyclopædia Britanica, Vol II, pp 788—789 11th Ed.

हिन्द चानेता ना रहे, अहे कांत्रणे ताकतने शाठे कंतिरह इत्र । डीहाता चक्रत : । '?

ষহাভারতের কর্তা মহবি কৃষ্ণ হৈপারন স্লেক্ত ভাষাকে "প্রশাপ" শব্দে অভিহিত করিয়াছেন। বারণাবত নগরযাত্রী পাশুবগণের আসর বিপদ ব্রিয়া মহাবুদ্দি বিছর যে উপদেশ দিয়াছিলেন, ভাহার প্রথমেই উক্ত ইইয়াছে,—

"প্রাক্ত প্রাক্তপ্রনাপক্ত প্রনাগক্তকে এই বংক্য বিদ্যু মেচ্ছভাষাবিদ্ মুধিন্তিরকে এই বাক্য বলিলেন।— বছ লোকের বিশেষতঃ ধৃতরাষ্ট্র ও তাঁহার পুরুগণের, সমুধে ও প্রতি গোচরে বিহুর এমন এক অহুত ভাষার মুধিন্তিরকে উপদেশ দিলেন যে বক্তা এবং শ্রোতা ভিন্ন আর কেইই তাহা বুঝিতে পারিলেন না। মহাভারতের বিধ্যাত টীকাকার পণ্ডিত শ্রেষ্ঠ নীলকণ্ঠ এই শ্লোকের ব্যাধ্যা করিতে গিয়া বলিতেছেন,—

"কেবল মাত্র সাধারণ নগরবাসি জনগণের নিকট ছইতে গোপন রাধার জন্ম নহে, যাহাতে এক সুনিচির ভিন্ন নিকটের জন্ম আর কেহই কিছুমাত্র বুঝিতে না পারেন, এই উদ্দেশ্যে কবি বলিতেছেন—প্রাক্ত ইত্যাদি।

"প্রাজ" = বৃদ্ধিমান্ = অনেক ভাষা জানেন বলিয়া। প্রাক্তত্ব কি, তাহা বলিতেছেন "প্রাক্ত প্রলাপজ"= श्रक्षेत्रत्भ व्यक्तान, भश्रभात्र त्वम विद्यांनी सम्बन्धनत्त्र क्षत्राभ वर्षार वर्षन्त्र, क्षकृष्ठि क्षेठारम् त्यारम ব্যাকরণের নিয়ম মত নিম্পন্ন নহে স্তরাং অর্থ বুরাইতে অক্ষম এরপ দেশভাষা প্রচলিত বাক্য, কোগাও একটি वर्व नाहे, (काथां आवश्राकत अधितिक वर्ष आसार्ग, (काषां वा विकृष्ठ वार्वत श्रायां मा अक्रम भाग मक्रम देव ভাষাতে থাকে সেরপ ভাষা জানেন যিনি—এই অর্থ। তাহার মধ্যে বর্ণ চ্যুতির উদাহরণ,—কারণাবার শতপব ব্রাক্ষণে অম্বরগণের প্রতি ইন্তের উক্তি-"আপদানের অधिতে এই আমার 'চিত্র' নামক ইউকা থানি পিতে পারি কি ? " এই প্রশ্নের "উপধাস্তে ? "-কথার উত্তরে चम्रदाता 'किन-उपरिश्चि" ना रिलया 'उपरि" वेवर ''তুनिया नहे—चापार्छ १ ''এই প্রশ্নে, ''नউন—चार्षि'' ना विनया "वादि" विनया छेखत नियाहिन।--- धवान "উপদেহি" त "(४" এবং "आतिहि" त "(म" वर्ष कि व्ययुरवदा উচ্চারণ না করিয়া লোপ করিয়াছিল। अदिक वर्तित मृद्वील,-"(गी" এই कथा विलाउ "गावी", গোণী", গোতা", "গোপো তলিকা" এইরপ প্রয়োগ হয়। বিকৃত বর্ণের দৃষ্টান্ত—"দেই অসুরেরা 'বেলরঃ হেলয়ঃ' এইরূপ বলিতে বলিতে পরাজয় প্রাপ্ত হইশ"— বেদেও অসুরের ভাষায় ''অরয়ঃ'—শক্রগণ বলিতে গিয়া "त्र" ज्ञात्न "न" कारतत अर्याग (नवा यात्र। यण्नि विख्त (मुक्क अवात मादारगृहे यू विष्ठित के अशतम मित्रा कि स्वन, তথাপি ব্যাদদেশ তাহা সংস্কৃত ভাষাতেই লিখিয়াছেন।"

"ন কেবলং পৌরেভ্য এব তদ্বচনং গোপনীয়মপিতৃ
সমীপত্তৈরপি সুধিটিরাদনৈ্যপঞ্জাতৃং শক্ষমিত্যাহ
প্রাক্ত ইতি প্রাক্তো বৃদ্ধিমাননেক ভাষাভিজ্ঞরাৎ। প্রাক্তম্বাহ প্রাক্ত
মবাহ প্রাক্ত প্রলাপজ্ঞ ইতি প্রকর্ষেণাজ্ঞানাং পশুপ্রায়ানাং
বেদবিরোধিনাং মেজ্ফানাং প্রলাপোইনর্বকং সম্যক্
প্রকৃতি প্রভায় বিভাগেনী নিশ্পরহাদর্শনিববেধিকং

<sup>‡ &</sup>quot;তেহমুরা:। তেহমুরা বেলরো বেলর ইতি ক্বর: পরাবভূবু:। তন্মাদ আদ্দেশন ন মেচ্ছিত বৈ নাপ ভাষিত বৈ। মেচ্ছো হ বা এম মদপশন:। মেচ্ছা মা ভূষেভ্যদোরং ব্যাকরণম্। তে হমুরা:।" মহাভাষ্য, প্রথম আহ্লিক, হয় পৃষ্ঠা। (বোছাই গভর্নেণ্ট সংকরণ)

প 'প্রাক্তঃ প্রাক্তপ্রদাপক্তঃ প্রলাপক্ত মিদং বচ :।
প্রাক্তং প্রাক্তঃ প্রলাপক্তং বচে হববীং ॥২॰"
শাদিপর্কা, শহুগৃহ পর্কাধ্যার, ১৪৪ অধ্যার, (বোদাই
শংক্ষরণ)।

উপরে মহাভায়েও নীলকঠের উক্ত' ''দেই অসুরের। হেলার হেলার—ইত্যাদি'' লিখিত হইয়াছে। ''অরি'' সংস্কৃত শব্দ, অর্থ শক্ত ; কিন্তু অস্থ্রগণের মূখে উহা ''হলি'' উচ্চারিত হইত। বৈদিক সংস্কৃত ভাষায় রচিত এক্

**সুংহিতায় ব্যবহৃত শব্দের সহিত প্রাচীন পারসী**কগণের

বচনং দেশভাষারপং লুপ্তবর্ণঅধিকবর্ণং বিরুত্বর্ণং চ
শালভাতং যত্র ভালৃশ ভাষাভিজ্ঞ ইত্যর্প:। তত্র লুপ্তবর্ণং
কারণভপাথ ইল্লেণাসুরান্ প্রতি ভবতামগো ইয়াং
চিত্রোখ্যাং মধীয়াং ইউকার্পধাস্থে ইতি পৃষ্টে উপহীত্য
ক্ষুব্রবনং ভথা আদাসোইভ্যুক্তে আহীতি প্রতিবচনম্।
ভত্র উপবেহি আদেহীতি বক্তব্যে বর্ণলোপ:। অধিকবর্ণর
পৌরিতি বক্তব্যে গানী গোণী গোতা গো পোতলিকেতি
প্রস্কৃত্তে। তথা বিরুত্বর্গং তেহসুরা হেলয়ো হেলয়
ইতি বদস্তঃ পরাবভ্বৃবিতি অরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদস্তঃ পরাবভ্বৃবিতি অরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদস্তঃ পরাবভ্বৃবিতি অরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদস্তঃ পরাবভ্বৃবিতি সরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদ্ধঃ পরাবভ্বৃবিতি সরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদ্ধঃ পরাবভ্বুবিতি সরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদ্ধঃ পরাবভ্বুবিতি সরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদ্ধঃ পরাবভ্বুবিতি সরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদ্ধঃ প্রাবভ্বুবিতি সরয় ইত্যপেকিতে রেফ
ইতি বদ্ধঃ প্রতিরং প্রতি বিত্রেগ য়েক্ত্যাবয়েলজং তথাপি
ব্যাসেম ভ্রুমঃস্কৃতে নেবোপ নিবন্ধনিতি।"

প্রাঞ্জ অতুগৃহ পর্বাধ্যায়ের ১৪৪ অধ্যায়ের ২০ শ প্লোকের নীলকণ্ড টীকা। বোসাই সংস্করণ।

প্রাচীন অনুরগণের বাস আদিরীয়া রাজ্যে ছিল, ভাষা প্রেই বলা হইয়াছে। "মিভিয়া" অথবা "উত্তরম্দ্র" দেশেও অনুরদিগের রাজ্য ছিল। মহাভারতের সময়ে মৃদ্র দেশের রাজা শল্য ছিলেন কিন্তু উত্তর মদ্রের রাজা জটালুর ছিলেন ( যথা, মহাভারত,সভাপর্বের, ৪র্থ অধ্যায়ে "জটালুরো মৃদ্রকানাং চ রাজা ইত্যাদি ২৫শ লোক) আবেতা প্রন্থের প্রধান উপাল্ডদেবের নাম "অনুরম্জন্ন" (অনুর মৃদ্র), অনুর নগরের প্রধান দেবের নাম Marduk বা মর্ল্ক ( মৃদ্রক) বেলেও বরুণদেব "অনুর" বলিয়া বির্দেশ এবং পশ্চিমদিকের অধিপতিও বরুণ। প্রাচীন পারসীক জাতি বৈদিক অনুরগণেরই বংশধর বিশিয়া অনুমান হইতেছে।

শর্মপ্রস্থ বিখ্যাত "আভেন্তা" র ব্যবহাত শব্দের তুলনা বাঁহারা করিয়াছেন, তাঁহারা উভয়ের সালৃশ্য এবং পার্বক্য উভয়ই বেশ অফুভব করিতে পারিয়াছেন। সংস্কৃত যে সকল শব্দের প্রথমে "স" আছে, প্রাচীন "আভেন্তার" ভাযায় (যাহাকে পণ্ডিতেরা "ক্রেন্স" বলিয়াছেল এবং প্রাচীন পারগীক ভাষায়ও) ঐ সকল শব্দের "স" প্রায়ই "হ" কারে পরিণত হইয়াছে। ম্যাক্সমূলর প্রান্থ পণ্ডিতেরা বৈদিক এবং "আভেন্তিক" ভাষার তুলনা করিয়া মত দিয়াছেন যে উভয় ভাষা নিতান্ত নিকট সম্বন্ধে সম্বন্ধ এমন কি উহাদিগকে একই ভাষার ভিন্ন ভিন্ন প্রাক্ষেক্ত বন্দা যাইতে পারে।

যাহা হউক, উপরিলিখিত প্রমাণে দেখা গেল যে,
প্রথমে "মেছ্ন" শব্দের অর্থে অন্তদ্ধ ভাষা এবং যে সকল
জাতি সংশ্বত ভাষিগণের মতে অন্তদ্ধ ভাষার ব্যবহার
কবিতেন, তাঁছাদিগকেই বুঝাইত। আরও, সংশ্বত
ভাষিগণ মাঁহাদিগের ভাষা আদে বুঝিতে পারিভেন না,
তাঁহাদিগকেও "মেছ্ন" বলিতেন। সংশ্বত ভাষার
"মেছ্ন" নামে একটি ধাতুও পাওয়া ষায়, উহার অর্থ
অব্যক্ত শব্দ, অকুট শব্দ, অপ শব্দ ইত্যাদি।

ভাষা,—কোনও একটি বিশেষ ভাষা, অবশাই কোন এক বিশেষ মানবজাতির চিরস্থায়ী সম্পদ নহে। সকল দেশের পুরাণেই অবশ্য এমন এক প্রাচীন সময়ের আভাস পাওয়া যায়, যখন মাসুষের এক জাতি এবং এক ভাষা ছিল। পুরাতন বাইবেলে, মাসুষের ভাষা ভেদের যে গল্প প্রচলিত আছে,—অর্থাৎ, বাবেল নামক নগরে সকল মাসুষ মিলিয়া অর্গে যাইবার এক স্তম্ভ (বা গিড়ি) প্রস্তুত করিতেভিল দেখিয়া সর্বশক্তিশালী জিহোবা উহাদের ভাষা পুথক্ করিয়া দিয়া সেই মিলন ভালিয়া দিয়াছিলেন,—কাজেই কর্মাদের কেহ কাহারও কথা ব্বিতে না পারিয়া, কেবল গোলমাল করিতে করিতে অবশেষে পৃথিবীর দিকে চলিয়া গেল,—ভাষা সকলেই জানেন। আমরাও দেখিতেছি সংস্কৃতভাষ ব্রান্ধণের বংশধর এখন তমিড় ভাষা ভিন্ন আর কোনও
ভাষা বুষ্ণেন না,এরপ দৃষ্টান্ত অনেক পাওয়া যায়। মুখল
বাদশাহ জহালীরের সময়ে যে সকল বালালী ব্রাহ্মণ রাজ
মানসিংহের সহিত অভারে গিয়া তথায় বাস করিয়াছিলেন,
—তাঁহাদের বংশধরেরা "বঙ্গালী বোলী" ভূলিয়া
গিয়াছেন। তাই,—ভাষার উপর একান্ত নির্ভির করিয়া
প্রাচীন ভারতে মামুষের জাতির মর্য্যাদা নির্দ্ধারিত হয়
নাই।

রামায়ণ এবং মহাভারতেরও পুর্বের ভারতে "বর্ণাশ্রম ধ্ৰের্" প্রতিষ্ঠা হইয়াছিল। সেই বর্ণ-প্রতিষ্ঠার মূল व्यवमा देवलिक स्थामिक शूक्रवरत्वत्र भावा,-- "बाक्रव **हैं हात्र मूथ रहेरलन, वाहरक का**जिय़ कता रहेल, छेक्र यादा, তাহা হইল বৈশ্য, এবং পদ্বয় হইতে শুদ্ৰ জন্মগ্ৰহণ মহুদংহিতা এই ঋঙ্ময়েরই অয়বাদ कत्रिन" \*। ু করিয়া বলিয়াছেন, ''মহুষ্যের সংখ্যা বৃদ্ধি করার উদ্দেশ্যে पृष्टिकर्छ। मूथ, वाह, छेक अवश श्रेष दहेट यथाकरम ব্রাহ্মণ, ক্ষত্তিয়, বৈশ্য ও শৃদ্রের হৃষ্টি করিলেন †।" এই চারিবর্ণের ব্যাখ্যা যাহাই কেন হউক না, ভারতীয় আর্যাঞাতির আভিজাত্যের মূল এই চারিবর্ণের রহস্যের मर्सा निशेष चाहि। এই চারিবর্ণের মধ্যে প্রথম তিন বৰ্ণ দ্বিজ এবং শেষ বৰ্ণ "একজাতি" অথবা শ্ব ‡। बहे हात्रिवर्णत वाहिरत याहाता, जाबाता दकवन बनागा দহে,—ভাহারা বাহা, ভাহারা দস্য; ভাহারা যদি খুব विश्वक छार्य मश्क्षण छावा मिथिया त्करण त्मरे देनवी

ভাষাতেই আপন আপন কণা বার্তা ও অন্তাম্ভ কার্যা নির্কাহ করে, তথাপি ভাষারা দম্ম; ভগবাদের মুখা বাহু, উরু অথবা পাদ হইতে যাহাদের জন্ম হয় নাই, তাহারা আর্যাভাষা অথবা মেল্ফ ভাষা যাহাই কেন বাবহার করক না, ভাষারা 'দম্মা" ‡।

যেহেতু চাতুর্বরের লোকেরা সংস্কৃতভাষা ব্যবহার করিতেন, -- এবং বর্ণের বাহিরের লোকেরা **অসংস্কৃত** অর্থাং অভ্ন অপ্না ভিন্ন প্রকার ভাষা করিতেন,—সুতরাং বর্ণের বাহিরের লোক দিশকেই ''মেক্'' বলা ২ইড। চাতুর্দর্ণের লোকেরা প্রায়ই বৈদিক যাগয়জ্ঞ করিতেন, বাহিরের গোকেরা ভাষা করিতেন না,—তাই সেরপ লোকের দেশকে "য়েজ দেশ" বলা হইত গ। যাগযভের পুরোহিত বা উপদেষ্টা ব্রাহ্মণ যে দেশে নাই, তথায় যাগযজ্ঞের অনুষ্ঠান হইত না হওয়ার সম্ভাবনাও ছিল না ; স্থতরাং সেরপ দেশ হইতে বৈদিক আচার ক্রমশঃ উঠিয়া যাওয়ায় বেদাক ব্যাকরণের অধ্যাপনা ও অধ্যয়ণও লোপ পাইল। ব্রাহ্মণ এবং বৈদিক আচার বিরহিত দেশের লোকেরা ক্রমণী সংস্কৃত ভাষার বিভদ্ধিতা রক্ষা করিতে অসমর্থ হটরা গেলেন, সুভরাং তাঁহারা ''মুক্ত' এবং তাঁহাদের দেশ "মুক্তদেশ" বলিয়া পরিগণিত হইতে লাগিলেনঃ এইরপে নৈদিক ক্রিয়া লোপ এবং ব্রাহ্মণগণের অদর্শনী জন্ত-পুঞ্, ওড়ু, দ্রবিড়, কাম্বোজ, যবন, শক, পাইদ্ পহলব, চীন, কিয়াত, দরদ ও বশ প্রভৃতি প্রারুত ক্ষতিরে

ব্রাহ্মণোহন্য মুখ্যাসীদ্বাত রজেঞ্ছেতঃ।
 উর্তদ্ন্য ষ্ট্রেশ্ঃ পঙ্যাধ্শুলো অকায়ত॥১১॥

<sup>† &#</sup>x27;'লোকানাং তু বির্দ্ধার্থং মুখবাছক পাদতঃ। ব্রাহ্মণং ক্ষত্রিয়ং বৈশ্যং শূদ্রং চ নির্বর্তয়েং ॥০১॥ মন্তুসংহিতা, প্রথম অধ্যায়।

t "ব্ৰাহ্মণঃ ক্ষ ব্ৰিয়ো বৈশ্য অয়োবৰ্ণা দিজাতয়ঃ। চতুৰ্থ একজাতিস্ত শ্কো নান্তি তু পঞ্মঃ॥৪॥ মন্ত্ৰণংহিতা দশমাধ্যায়।

<sup>্</sup>ম মুখবাহর পজ্জানাং যা লোকে জাতয়ো বহিঃ। মুক্ষাচশ্চার্যাবাচঃ সর্কেতে দদ্যবঃ স্বভাঃ ॥৪৫॥ এ

শ চাত্রণা ব্যবস্থানং যত্মিন্দেশে ন বিদ্যতে। মেক্রেশঃ স্বিজ্যে আন্ত্রিত ভুতঃ প্রশং॥

वायम ३०२१

ঘর্ণের লোকে ধর্মধীন—র্বল—হইরা গণেল ই। এই দুক্তন এবং এইরপ বহু ক্ষত্তির জাতি ক্রমলঃ ''রেছে' ক্ষিনিরা পরিচিত। উহালের ''র্যলড'' অথবা ''মেডড'' ক্ষাক্তি সম্বন্ধে পৌরাণিক আধ্যান এইরপ দেখিতে ব্যক্তিরা বার;—

ই্টাবংশে বাহু নামক এক সমাট ছিলেম। যত্ত-रिनीम देश्यम् धनः जानकज्य क्याज्यभन नक, यदम, भारतः ক্রিৰাৰ এবং প্লেব এই পঞ্চ পরাক্রাস্ত ক্রতিয় জাতির মুৰ্ভি মিলিত হইয়া বাত্রাজাকে পরাত ও নির্বাসিত **উর্মেন। পরাজিত বাছ রাজা পত্নীব্রের সহিত হিমালয়** প্রীট্রিভি বনে গমন করেন এবং কালক্রমে তাঁহার তথায় ৰুত্যু হয়। তাঁহার পদীহয়ের মধ্যে একজন সদত্য হিলেন কিন্তু তাঁহার সপত্নী হিংসা করিয়া তাঁহাকে ক্ষিত্র শিশুর সহিত বিনষ্ট করিবার অভিপ্রায়ে বিব कर्त्यान कत्रिमाहितन। कुछवश्यीय खेर्स सवित আশৌশাংশ রাণীর জীবন রক্ষিত হয় এবং তিনি বিবাদালৈ পুত্ৰ অসৰ কৰেন। এই পুত্ৰ মাতার ভক্তিত বর (বিষ) সহ প্রস্ত হওয়ার তাঁহার নাম "সগর" হয় নিবং ভিনি ওর্ব ধবি ও কুলগুরু বলিঠের নিকট অস্ত্রদান্ত ষ্ট্রীকিট ইইয়া তাঁহার শত্রগণকে পরাস্ত করিয়া নিজ বৈত্ৰ বালা উদ্বার করেন এবং অণ্ণেয়ে প্রতিজ্ঞা क्रेंद्रिम (व भक यंग्नामि क। ठिटक डिनि नियं न क्षिर्तन। জি পথাকিত জাতিরা ভীত হইয়া প্রাণ্রকার জন্ম

ই ''শনকৈ র ক্রিয়া শোপাদিমাঃ ক্ষরিয় জাতয়ঃ।
ইম্পত্ত প্রালোকে ব্রহ্মণাদর্শনেন চ ॥৪৩॥
পৌপু কান্চে:ছ দ্র বিড়াং কাজোল ধবনাঃ শকাঃ।
শারদাঃ পজাবান্টান : কিরাতা দরদাঃ ধশাঃ ॥৪৪॥ ঐঐ
'ব্রুয়ো হি ভগবান্ ধর্মগুলা যঃ কুরুতে হালম্।
ইম্পত্ত তা বিহুদ্বোজ্যান্ধ্যং ন লোপয়েৎ ॥১৬॥''

अ अहेगांगांत्र।

বশির্চের পরণাপন্ন হওয়ায় বশিষ্ঠ উহাদিগকে ''জীবন্দৃত''
করিয়া সপরকে বলেন, 'আমি তোমার প্রতিজ্ঞা
পালনের জন্ত ইহাদিগকে নিজধর্ম এবং ব্রাহ্মণ সঙ্গ
পরিত্যাপ করাইয়াছি। সগর ও গুরুর বাক্য প্রতিপালন
করিয়া উহাদিগকে ছাড়িয়া দিলেন বটে কিছ চিরদিনের
জন্ত উহাদিগকে জন্যপ্রকার বেশ ধারণ করিতে এবং
বেদপাঠ ও যাগযক্ষ হইতে বিরত থাকিতে বাধ্য
করিলেন। কাম্বোজ্ব ও যবনদিগের মন্তক সম্পূর্ণ মৃত্তিত,
শকদিগের মন্তক অর্জমৃতিত, পারদ্দিগের লম্ব কেশ এবং
পঞ্জাবদিগের লম্বাক্র হইয়া দেলেন এবং তাঁহারা আয়্মধর্ম
পরিত্যাপের জন্য ক্লেছ হইয়া গেলেন + 1'

এই গল ৰানুপুরাণ, বিষ্ণুপুরাণ ও হরিবংশে
পাওয়া যায়, সম্ভবতঃ অঞাভ পুরাণেও আছে। বানু
পুরাণের লোক এইৰূপ,—

"সগরঃ স্বাং প্রতিজ্ঞাং চ গুরোক্ষাক্যং নিষম্য চ।
ধর্মং জন্মান তেষাং বৈ বেষাক্তমং চকার হ ॥১৩৯॥
অব্ধংশকানাং শিরসো মৃগুয়িতা ব্যসর্জ্জন্ম ।
যবনানাং শিরঃ সর্বাং কামোজানাং তবৈব চ ॥১৪০॥
পারদা মৃক্ত কেশাশ্চ পজ্জবাঃ শাশ্রধারিণঃ।
নিঃ স্বাধ্যায় ব্যট্কারাঃ কৃতা ভেন মহাত্মনা॥১৪১॥"
বায়পুরাণ, ৮৮ অধ্যায়।

हतिवरम, हतिवृरम्भक्तं, ०त्र व्यक्तात्र।

বিষ্ণুপুরাণ, ৪র্থ অংশ, ৩য় অধ্যায়। অবশেষে আছে
"এ তে চাত্যধর্ম পরিত্যাগাদ ব্রাক্ষণৈঃ পরিত্যক্তা সেছতাং
যবুঃ॥" এধর বামীরও "বিষ্ণুচিণ্ডী" টীকায় "জীবমৃত্ত"
দক্ষের অর্থ আছে,—

''স্থান যা পরিলটো রুকৈশ্চিব ব্রিছতঃ। স্কাব্রেব লোকে হসিন্মুত ইত্যভিষীরতে ॥''ইভিস্তেঃ। স্তরাং দেখা াইভেছে সেকালেও "ব্রকট্" ক্যার ব্রীতি অতি ভয়ানক ছিল। ক্রমশঃ "বেচ্ছ" শব্দের অর্থ ধুব বিস্তৃত এবং ছণিত হইয়া গেল এবং শ্লেছ জাতির উৎপত্তির সম্বন্ধে নানারণ প্রবন্ধের স্প্তি হইল, যথা, -\*

- (১) বিশ্বামিত্র—বশিষ্ঠ বিবাদে বশিষ্ঠ ঋষির গাভীর ফেন হইতে,—
  - (২) উক্ত বশিষ্ঠ ঋষির গাভীর রোমকূপ হইছে,
- (৩) য্যাতি রাজার চতুর্প পুত্র ( শ্যিষ্ঠার বিতীয় পুত্র ) অফু হইতে,—
- (৪) স্বায়স্ত্ৰ মমুৰংশীর অধার্মিক রাজার দেহ-মন্থন হইতে, ইহারা খোর রুফবর্ণ,
- (৫) ত্রাহ্মণাদি চারিবর্ণের সংযোগ ভিন্ন অক্তঞাতি হইডে,—আরও যে গোমাংদ ভক্ষণ করে, বছ বিরুদ্ধ
  - (>) "পদক্জ ফেনতঃ সা গৌ য়েফান্ বছ
    বিধানপি ॥০৮॥" মহাভারত, আদিপর্বর,
    ১৭৫ অধ্যায়।
    - (২) "রোমক্পেয়ু শ্লেছা"চ হারীতাঃ স কিরাতক:: ॥০॥ রামায়ণ, বালকাণ্ড, ৫৫ সর্ব।
    - (৩) "ক্রছো সুতান্ত বৈ ভোজা অনোর মেক্লোতয়ঃ ॥৩৪॥" মহাভারত, আদিপকা, ৮৫ অধ্যায়।
    - (৪) "তৎকায়ান্ নথ্যমানাত্ নিপেতু দ্লেক্জাতয়ঃ।

মৎস্থপুরাণ, ৩৪ অধ্যায়, ৩০ লোক।
শরীরে মাজুরং শেন ক্ষান্তন সমগ্রভঃ ॥৮॥
মৎস্থপুরাণ, ১৩ অধ্যায়।

( e ) ব্ৰহ্মজাতিয় বিট্ শূলা জাতা স্তেহতু ক্ৰমেণ তু। ক্ৰমাভিক্ষ মঙ্গ্ৰাজ্যে মেক্স্তোবৰ্ণ সন্তবাঃ॥ রহৎ পরাশর, ৬ঠ অধ্যায়। ভাষা প্রয়োগ করে, এবং সকল প্রকার আচার পৃত্ত, ভাষাকেই মেজ বলে। †

মেছের ভাষা শিক্ষা করিতে নাই :, মেছের সাক্ষাতে মন্ত্রণা করাও নিষিদ্ধ গ এবং মেছে লাভির প্রতি সন্তাষণ করিলে অথবা সংস্পর্শে আসিলে প্রায়শ্চিত করিয়া: শুদ্ধ হইতে হয় §।

তবেই দেখা মাইতেছে যে প্রথমে অগুরু ভারা।
প্রায়োগকারীকেই "মেচ্ছ"বলা হইড,—এখন পুরের ভা
অধম, অস্পর্না ও রুগ্র অহিন্দুকেই স্লেছ বুঝাইতেছে।
এইরপ অর্থ বৈকলাের মূলে ধর্মনীতি অথবা রাজনীতি
অথবা উভয়ই কার্যা করিয়াছে, তাহার শীমাংসা ভা
সিরান্ডের ভার পণ্ডিতগণের উপর দিয়া আমরা বিদ্যাদ্ধ
লইতেছি।

প্রীঅপিনচন্দ্র ভারতীভূবী।

- † ''গোমাংস থাদকোষণ্ট বিরুদ্ধং বহু ভাষতে। সর্বাচার বিহীনণ্ট মেছ ইত্যভিনীয়তে।'' (প্রায়ণ্ডিত তত্ত ধৃত বৌধায়া শ্বভি।)
- ‡ "ন স্লেক্ত ভাষাং শিক্ষেত নাকর্বেচ্চপদাস্নযু ॥ । কুর্মপুরাণ, ১৫ অধ্যায় । )
- ণ ''গ্রীয়েচ্ছব্যাণিতব্যসান্ মস্ত্রকা**লেহণদারয়েৎ** ॥১৪৯॥ মসুসংহিতা, দ্**রুম অধ্যায়**।
- § "ন মেচ্ছাস্তাবা পতিতেঃ সহ সম্ভাৰণং কুৰ্বাং।" বিফুল্বতি, ৩৪ অধ্যায়।
  - " মেজ্জুনাশনস্পর্শে ক্ষেত্রে বা যদি বা স্থলে।
    উপস্পর্শে শেরঃ প্রোক্ষ্য সংগ্রেছা কারচে বিকর।
    বৃহৎপরাশর, ৬১ স্বাধায়

# আত্ম জিজ্ঞাসা।

ক্রিজাসা মানব মনের স্বাভাবিক রুত্তি। শৈশবে कारनारमारमञ्जलकम मुङ्ग इंड इंड ज अखिरम कीवम अनील নির্মাণের পূর্ণকণ পর্যান্ত মানবের চিত্ত বৃত্তি তরঙ্গ সমূল নাগর বকের ভায় জিজাগার খাত প্রতিখাতে নিরম্ভর ্ব্যান্দোলিত হইতে থাকে। বয়োর্ত্তির সহিত ইন্তিয়-ভালি ক্ৰমণঃ বিকাশ প্ৰাপ্ত হয়। সংগার চিত্রশালার (museum ) নব প্রবিষ্ট শিশুর ইন্ডিয় পরে পতিত व्याप्त । পদার্থ উহার জিজাস। বা প্রশের বিষয়ীভূত হয়। মানবের ইন্তির শক্তি দিন দিন প্রথর হইতে যত প্রশারতর হইতে থাকে, উহার বস্ত ত্রাব বোধ ক্ষমতাও ক্রমৰঃ তদকুরপ বৃদ্ধি পাইয়া থাকে। ইতর জীব জন্তর ্ৰত ৰাত্ৰও ব্ৰহ্মাণ্ডের যাবতীয় বস্তু সম্বন্ধে সামাগ্য জ্ঞানের : আৰু মু অধিকারী। এই স্বতঃ সিদ্ধ বা নির্দিকরক-জ্ঞান (Intuitive knowledge) জীব মাত্রেরই অফুট আত্ম অরপ। অতি নিকৃষ্ট আগুরীক্ষনিক নিমেবজীবী কীট হইতে অত্যন্ত মানব বা দিছা পুরুষণণ যে ভূমিইকাল ্হইতেই বায়স কুলায় জাত কোকিল শিশুর ভ্রান্ত পিতৃ-ভাবের প্রায় ''আমি আমার ইত্যাকার অবোধপুর্বা জানের অধিকারী হন, ঐ অবিচারিত অব্যক্ত আত্ম ंगश्रतपनरे कीरवर ब्लान-मूर्लि याया। यशाय गाम এरे স্থাও অবয়, একরদ ও একাকার জানকেই আত্মা "সদেব সোমেদিমগ্র আদীৎএক্ষেবা विशाहिन। क्रिजीयर'' वात्माशा ७, २, ১। হে প্রিয় দর্শন (বেতকেতো) এই পরিদুশ্যমান বিশ্ব প্রপক্ষ সৃষ্টির পূর্কে এক অভিতীয় ব্ৰহ্ম (আহা) বিদামান ছিলেন। অপাচার্য্য শিরোরত্ব শকরের বাক্য,---

"जिनि क्रिप चक्रपर यर मत्ना वाठा मरणाठत । जिक्र स्थिता पश्चर खक्ष त्निष्ट ना नाखि किक्षन ॥"":

विद्यक हुए। भवि, ६१३।

যাহার লক্ষণ অনিরপনীয় যিনি বাক্য ও মনের অগোচর (করিত নাম রূপময় বাক্য ও সংসার বিক্ষিপ্ত চিত্তের সাহায্যে বাঁহাকে বলিতে বা চিন্তা করিতে পারা যায় না) সেই একমাত্র অব্য ব্রহ্মই এই এগতে বিদ্যমান, তদ্ভিল অপর কোন বস্ত নাই। মহর্ষি বৈপায়ন বলেন—

"বদন্তি তৎভত্তবিদ শুবং যদ জ্ঞান মধর। ব্ৰেক্ষতি প্রমাম্মেন্তি ভগ্নানিতি শৃক্তে॥"

बीभए जागवज, २म, २म, २२।

তব্জ (ব্রক্ষবিৎ) ব্যক্তিগণ অবয় অর্থাৎ একাকার যে জ্ঞান ভাষাকে তব্ব প্রিয়া নির্দেশ করেন্। ঐ ভব্ব উপাসকের যোগাতা অনুগারে, আবিভাবের ভারতম্যে ব্রহ্ম, প্রমাত্মা ও ভগ্যান শব্দে অভিহিত হয়। এই প্রমানগুলির সর্গ সংক্ষপ্র ব্যাধ্যা,

> "জ্ঞান যোগ ভক্তি তিন সাধনের বলে। ব্রহ্ম আত্মাতেগবান ত্রিবিধ প্রকাশে॥"

> > চৈত্র চরিতামৃত, মধালীলা, ৯২।

অতএন সুলতঃ আমরা বেটাকে আয়া বলিয়া থাকি, সেটার নাম আভাগ বা জাব চৈতন্য (Selb consciousness) আর ঐ আভাবের যিনি আশ্রম বা অধিষ্ঠান ভূমি তিনিই পরমায়া বা ত্রন্ধ (The highest Self.) তিতি গার প্রতিফলিত হর্ণা কিরণের ছটার (Reflection) হার চিৎ প্রতিবিভিত পরমায়াকেই আমরা এখানে জীব চৈত্র বলিতেছি। হর্ণা ও ছটার ন্যায় পরমায়া ও জীবায়ার ভেদাভেদ প্রকাশই আমাদের এই জন্মন্ধ আয়্রজানের মূল প্রত্রবণ। এই স্বতঃসভূত জ্ঞানের প্রেরণাতেই আমরা আবাল্য নুতন নুতন বস্তু সকল প্রত্যক্ষ করিয়া উহাদের ভালরূপ চিনিবার জন্য কুত্রলী হই, কৌত্রল জননী অনাদি জ্ঞান পিপাদাই আমাদের স্করপ বা আয়া জিল্পানার নামান্তর মারা। প্রথম হইতে 'এটা কি' 'ভটা কি' প্রণাশীতে ষ্তই আমরা উচ্চত্র বস্ত্র সংক্রান্ত জ্ঞান লাভ করিতে থাকি,

ক্রমে তত্ই মহত্য বস্ত সম্বন্ধে জ্ঞান লাভের আকাক্ষা व्यामारमञ्ज कामरमञ्ज व्यविकाश्म श्राम व्याचाना करता ভোগলোলুপ ইন্দ্রিরে ভোগাকাজ্ঞার মত জানপিপাসু জীবের জিজ্ঞাদা ক্রমশঃ বিস্তৃতি লাভ করে। ্রগ্র इहेट (छाशास्त्रत नाम छान इहेट छानास्त्रत উৎপত্তি প্রকৃতিসিদ। ভোগ্য বস্তু যতই নিক্ট হয়. ঐ বস্তু ভোগকর্তা তত্তই নিরুষ্ট প্রবৃত্তিশীল ও নীচ যোনি-আত্রপে নির্দারিত হইয়া থাকে। এইরণ ভেলা ভক वा छात्नत विषय ( objects ) गृ छेळ शास्त्रत (Highest Standard) হইবে, জাতা (knower) তত উত্তরে তর ফ্লাতম বস্তা বিষয়ের জ্ঞান লাভ করিতে পারিবে না। এতাদ্ধ উৎকৃষ্ট জ্ঞানলিপার প্রতি মানব মনের স্বাভাবিক গতি অনাদি। भूगार्थनात्र व्यास्मान शाव, किन्नु गथनहे तम धूना छाड़ा অপর কোন ভাল খেলনার সন্ধান পায়, তথনই ধুলা খেলা ছাড়িলা ঐ নৰ প্রাপ্ত জীডনকেই আৰক্ত হইয়া পড়ে। এইরূপ বাল্য, গৌবন ও বার্দ্ধকোর চিত্তবিনোদন ফ্রব্রা লাতের উপর মান্ব মনের গ্রন্ধ নিঃগংহতার প্রতি সতর্ক দৃষ্টিকেপ করিলে অসত্য হইতে স্তা, অশিব হইতে শিব, ও অস্থলর হইতে স্থলরের সুখ সলিগ্য बाएलत खना छानवान मानव यञ्जील, देश अनामार প্রতীতি হয়। মহায়া মিল (I.S. Mill) ভোগ ও উৎকর্যাপকণের क दिया। কুছেন্ত্র Q 81 81 8017 দেখিয়াছেন, "It is better to be a human being dissatisfied than a pig satisfied; better to be Socratis dissatisfied than a fool satisfied." ভোগ তৃপ্ত শ্কর জনা অপেকা অবস্তুট দরিদ্র মানব জীবন **मंडछा (शाक्षः। पूर्य (छा गङ्ध धना ए। तर्म अ**या गरन चार्थका निविक्कन कान राशी महक्र करत क्या रकां हि ভারতের অতি প্রাচীন জনপ্রবাদও • थार्थ (अर्ह । বোষণা করে, দানর রাজ বলি একশত মুর্থের সহিত ফর্গে षाहेशा माठकन याज कागीत मध्य পाठारन

গিয়াছিলেন। সূত্রাং জ্ঞানবভাই যে শানবের উৎকর্ষাপকর্ষের মাত্রা নির্দারণের বোগ্যতম মান্ত্র এ বিষয়ে বোধহয় সকলেই সমমতাবলম্বী। এই শ্বতঃ সিছ वा महत्र कानी मिका ७ मश्मर्तव्या क्याम निर्मान পবিত্র ও হল্ম হইয়া থাকে। শাণ গুঠ স্বৰ্রত্বাদির ঔজ্জা বুদ্ধির ভাষ অফুশীলনের সাহাচর্যে। এই স্বপ্রকাশ कानद्रप्र भरशब्दन रहेश भारक। हाशमय सान त्यन्त यथकाम रुगा कितरनत शूर्न श्रकारमत श्राज्यक्त, चार्य-স্থাপ স্থান লাম জানও তেমনি স্থান তামসাক্র হাদ্য-গুহার নিরোধে পূর্ণ জ্যোভিতে প্রকাশ পায় না। ছায়ায় অপগমে পৌরকর নিকরের ভায় অজ্ঞান ভামদের অপ্যারণে উহা স্বয়ংই উদ্ভাগিত হয়। এই অঞ্চান যবনিকা সরাইয়া ফেলিবার একমাত যন্ত্র আত্মভান। মানবের স্বভাবসিদ্ধ স্থাশিকিত জ্ঞান অনুশীৰন ও সংসর্বের প্রভাবে উন্নতির উচ্চ ধারায় পড়িয়া যথন চরস উৎকর্ব প্রাপ্ত হয় ; তথন উহা প্রকৃত জ্ঞান নামে অভিহিত হইছে পারে। অসংস্কৃত ইক্ষুরস গড় প্রভৃতি পরিণামের মঞ্চ দিয়া আগিয়া যেমন বিশুদ্ধ মিলীর নির্মাল আকার ও সুমধুর বাদ ধারণ করে, মানবের জন্মনত অভুন্নত জ্ঞানও 🕼 তেমনি চর্চ্চা,পর্য্যবেক্ষণ ও বিচারাদির ঘারা ক্রমিক বিভঙ্কি লাভ করে। ভোগ জগতের উপাদেয় বল্পগুলির সহিত খনিষ্ঠ পরিচিত মানব যখন স্বভাবের নিয়মে ধীরে ধীরে নিব্রত্তির পথে অগ্রসর হয়,তখন ভাছার হৃদয়ে যে এক নিডা অচঞ্চ অনম্ভ জানের তীব্র আকাজ্ঞা অফুট ভাবে জাগিয়া উঠে, উহাই আত্ম জিজ্ঞাসার মৃশ হতা। ইছর कीत कन्नत भाग (अंश कम्लेट मानरवत कारत हैं केरे এক। स स्रामानाव : भार्थित स्रोध्यार्थात् वामाजितः मर्कातम जारमत चामिकाती दहेगां। জদয়ে শান্তির সুবিমল মৃত্তি প্রত্যক্ষ করিতে পার না, তথন সে এগুলি দরে পরিহার করিয়া কোনও অপার্থিব दिव्हत ७ छात्नत मानगात्र वाक्ति सहेता शांक्ता रच वर्षक बाग्रमभी श्रीवकृत बनरर्वत

ৰিশিয়া চিলিয়া ছিলেন, আমরা দৃষ্টি লোবে গেই ব্রুক্ট পরমার্থরূপে সানলে বরণ করিয়া লইয়াছি। जीवन दकाव ভোজনের আবশাক, কিন্ত 可到 अधि एडायन मणाधि त्यादशत निमान दहेश की वन ্ত্র ব্যক্তির পরিবর্ত্তে উহার ধ্বংসেরই কারণ হয়। क्रिं विक श्रीषाक्रनीय वश्च अवर भारमातिक स्थ चान्हरमात विशास छेलास इहेरन ७ छेश कथन ७ विरवकी मानरवत ি**জান-নির্মাল-হুদায়ে পরম আনন্দের** স্রোত প্রবাহিত ছরিতে পারে না। আমাদের প্রমার্থ দ্রাই। যোগ শাস্ত রচরিতা স্পষ্টই বলিয়াছেন, পার্থিব দ্রব্রোণি আপাততঃ ঘত্ট প্রথময়রূপে প্রতীয়মান হউক না কেন, পরিণামে विरंकीत हाक छेटा इ: रखनकत्र (परे अठी व देश) शादक। "পরিণামে তাপ সংস্কার হুঃবৈওণ বৃত্তি বিরো-बाक कः पार्य नर्दाः विदयकीनः।" পाछ अन पर्मन २ ग পাদ ১৫ ছত্তা। আদি-বিছান সাংখ্যকর কপিলদেবও बुक ठेकिया विनिद्राह्मिन, এই পরিণাম ধর্মী, কণ বিনশ্ব मश्माति कीरवत प्रत्यंत्र व्यामा विख्यना भाव । क्रवाहर छ উলিখিত কবিবর ওমার খৈয়ামের সুগভীর মর্গ্রোজাগের অভিথানি প্রচার করে.

> "মানবের সুব আশা এ ছাড় জগতে ফলে কিংবা শুধু ভগ্নে হয় পরিণত, কোথা মিলাইয়া যায় ক্ষনেক উজলি ধূলিময় মরামূশে ভূযারের মত॥"

পার্থিব বৈভবদেবের একনিষ্ঠ উপাদক পাশ্চাত্য জাতির জান গুরু স্থপতিত স্বাইল (Smile)ও মুক্তকঠে প্রচার করিরাছেন, "Wealth is not necessary for comfort. Luxury requires wealth, but not comfort" স্থপান্তি উপভোগের জন্ম ধনই একমাত্র বিশ্বোক্ষনীয় নহে। ভোগ বিলাদ চরিভার্থতা অর্থের স্থাপেকী কর্মনা বিংশ শভাকীর বিজ্ঞানক্ষি দার ক্রিকানক্ষিত ভাগের জ্ঞান বিশ্বানক্ষিত ভাগের জ্ঞান স্থিকিপীঠ বিজ্ঞান

মন্দির প্রতিষ্ঠার স্বস্তি বাচনে বলিয়াছেন, " আমি মনে করি জ্ঞান বিধাতার দান, তাহা আবঁ লাভের উপার নহে। • • • অমহত্বের বীজ চিম্বার (জ্ঞানে) চিন্তে নহে"। এখন বোধহর প্রাক্ত ব্যক্তিমাত্রেই স্বীকার করিবেন যে, জ্ঞানই মানবের জীবন সর্বস্ব, আর এই জ্ঞান যখন উহার উচ্চতম কোটিতে আরচ্ছর, অর্থং যে জ্ঞান লাভ করিলে আর জ্ঞানাত্রর লাভের কামনাথাকে না, তাহারই নাম আয়ুজ্ঞান। জন্ম মৃত্যুর জৌতদাস মানবের ভাগে। এরপ উচ্চ অবস্থা অতি অল্লই আর্দিয়া থাকে। অল্ল হইলেও ধর্ম ক্ষেত্রে ভারতের সাটিতে ইহার অত্যন্তাভাব ঘটে নাই। বহুম্পতি তুল্য তীক্ষণী রাজমন্ত্রী সনাতন যখন পতিত্বন্ধ নবদীপেন্ধর শান্তি শীতল শীচরণকমলে আয়ু সমর্পণ করেন, তথন তাহার মনে সর্বাপ্রে এই মহান প্রশ্নের উদ্যুহইয়াছিল,—

"কে আমি ? আমারে কেন জারে তাপ্রয়। ইং। না জানিলে জীবের কৈলে হিত হয়॥"

চৈতন্য চরিভায়ত, মধ্যশীলা ২০ পরি। আমি কে, আমার যগার্থ স্বরূপ কি ? আধ্যাত্মিক. আধিদৈবিক ও আধিভৌতিক নামক ভাপত্রয় কেন অংমানে সর্বাদা সম্ভাপিত করে ? আমি যদি ইহা না জানি, অৰ্থাৎ আমি যদি যণাৰ্থ "আমি কে" না চিনিতে পারি, অধচ নিয়ত সংসারজালার অলেপুরে মরি, তাহা হইলে আমার হিত হইবে কি প্রকারে ? र्य निष्क निकास हित्त ना, गठल मःभारत्र इः करहे অর্জরিত; সংগারে ভাহার স্থাপর আশা কোণায় ? তাই আয়ু চত্ত্বদ্ধিৎসু ভোগ বিত্যু জ্ঞানী স্নাতন আমাদের ক্রায় অবোধ জীবের পক হইয়া কাতর করে बिकामा कति एए म. "(द मग्रान अनु और भोताम १ কুপা করিয়া আমার প্রকৃত স্বরূপ বুঝাইয়া দিয়া এই च्यात हः । यातावात वहें ए उदात कदन।" यहिन মানৰ নিজের স্বরূপ উপদার করিতে না পারে, ততদিন নে বাপাসভূত কল ও জলসভূত বাপোর ক্রায় চিয়কাল

এই সংগারে যাতারাত করিয়া ধর্ম মরণের স্থণিত দাস্ত করিয়া থাকে। আমরা মহাত্মা স্নাতনের বিদ্যাবৃদ্ধি, यनमान, भारागीत्रन, व्यव्दिष्ठिय कि छूत्रहे व्यष्टांत किथिए भारे ना। अवश्व भव भाकि एउ कि हूरे नारेत यह छिनि অতি দীনহীন দরিদ্র আর্তের ক্সায় কি যেন একটা অঞ্না বস্তু পাইবার আশায় অহরহ ছটুফটু করিতেছেন। এই (य ছট্ফটানি (Restlessness) वा छोख वा।क्लडा, ইহাই আত্ম জিজাপার প্রস্তি। মহাত্মা পরমহংপদেব শিক্ষা দিয়াছেন, জলের ভিতর মাথা ডুবাইয়া ধরিলে भाग माना (य देवज्ञवा ( Uneasiness ) कात्म, छेटा হইতে আত্ম কিজাদার তব অমুমিত হইতে পারে। भनामि शृष्टिश्वरादित ग्राप्त भनामि कान हरेए आजा मरकाश करिन श्रेत्र यात्र विख्यात्र मानव नमारक श्रेष्ठाने उ विशिष्टि। अग्राज्य व्यक्तिम कान-विकान-जाकात (देप. (राषास, উপনিবদ, দর্শন, রামায়ণ, মহাভারত, পুরান, कावा, नाठेक, व्यायान, উপायानिश क्याक्रां नत्वे এই মহৎ তত্ত্ব বুঝাইবার বহুমুখী চেষ্টা হইয়াছে। কিছ ছ: रचत विषय (य याजत कान का नि ना थाकित्न अ यहा सू-ক্লপ ফল লাভের পর্যাপ্ত অভাব লক্ষিত হয়। আয छाखुत छेभारमण मृतक्षाप्त, श्रावक, निवकामित अञि বাহুগ্য আমাদিগকে সাধকবর তুল্দীদাদের ''গুরু মিলে লাখ লাখ চেলা নাহি মিলে এক।" এই মহা-वारकात घरार्था व्यवे अनग्रम कतिया निष्डाहा । बार्ष বালারে সর্বত্র গ্রন্থ ও উপদেষ্টার ছড়াছড়ি, কিন্তু উপাদ্ধ বিষয়ের বোদ্ধা ও অক্তানতার অভাব পূর্ণ মাত্রায় বিভ্যমান। মুদ্রিত গাঁডাও চণীর পত্রে (কাগজে) বেনে লোকানের মসলা বাধার ভায় ঐ সকল শাস্ত্র গ্রহত্ত धृणि धृपतिष्ठ ७ भनन्तिष्ठ दहेशा "कर्ला (बनासिनः मर्स्य काञ्चरन यालका देव॥" ध्यतहरनत मान तका क्रिक्टिश्ह। कन इः यृष्ठ नाद्धि (ययन यृज्ञात भव भारतत मश्तान निर्ण भारत ना, जखनिर यूक्कीनल भारतभ অসাক্ষাংক্ত পরমাত্র তত্ত্বাইবার অভ ব্রমান্ব স্থাজে

ফিরিয়া আবেন না। কাজেই "থর্মস্ত তবং নিহিতং গুরারাং" নীতিতে পরম রহস্তমর সূত্রেধাধ আত্তম্প্র তিরদিন অজ্ঞান গুহার অবক্ষম্প রহিয়াছে। উহা ব্রাইবার কথা মুখে আনিবার সাহস বা ধুইতা আমার নাই। কেবল পূর্ববর্তী মহাজ্ঞনগণের পদ্ধতি অকুসরণ করিয়া হ' একটা কথা বলাই আমার মুখ্য উদ্দেশ্য। মুখরোচক মিষ্টাল্ল শদ্দের উচ্চোরণে ও শ্রবণে মিষ্টভার অফুতব হয়। পরম ধর্ম আত্মতবের মথামতি আলোচনার কথকিং আত্মপ্রসাদ লাভের আশা নিতাক্ত আভায় নহে। সহজে বোধগম্য হইবে বলিয়া প্রথমতঃ হ' একজন সাধক ও ভাবুক বল কবির রচিত গানের প্রসাদে দেখাবায়—

"বল ভাই সুধাই তাই

ম'লে আমরা কোথার যাই;
পূর্ব জরে কি ছিলাম তা' আমাদের মনে নাই।
পাচে পাঁচ মিশাবে বলে, আত্ম কেবা কোথা বলে,
আত্মা বহির্গত কালে কে দেখে থাতাই;
চর্ম চক্ষুর অগোচর,জ্ঞান চক্ষুর কই গোচর
কৃষ্ণধন ভাবে বহুতর শোনা কথা কদ স্বাই।"
পাঁচালী গাণক ৮ক্ষুখন দাস।

সাধক শিরোমণি রামগ্রাদ গাহিয়াছেন;—

"বল দেখি ভাই কি হয় মলে,

এই বাদ অমুবাদ করে সকলে

প্রদাদ বলে মা ছিলি ভাই তাই হবিরে মরণ কালে,
ব্যনন জলবিধ জলে উদয় জল হ'লে সে মিশায় জলে ॥
উদ্ধৃত বহুজন বিদিত পদ হুইটীতে আমরা আত্মার
প্রজ্ঞে য়ভার স্পাই খবর পাইভেছি। একজন (রুফাখন)
ভাস্ত মানব বৃদ্ধির বশবর্তী হইয়া আত্মার পৃথক অন্তিম্ব
শহদে খোর সন্দিহান। ছিতীয় বিশাসী মাত্তক্ত
সন্ধান রাম প্রদাদ জলবিদ্ধের উপমা দিয়া স্প্রসিদ্ধ
চিরিভাস্ত গ্রেহর,

''এক হইতে জয়ে বিষ একোতে জীবন। ুনেই এক পুনরপি হয়ে যান্ন লয়।'' এই মহা সভোৱ কিংবা,—

भिषयानक सूथा (खार्य) वह्या विश्व वीहतः। देशीकारक विद्योगस्य मात्रा मात्र्य विद्यमार ।'' विः, हः, ८२৮।

্ৰপনিপূৰ্ণ স্থাপান আমাতে বহুবিণ ভব তর্মাবলী নীয়ারণ বাহ্যারা আন্দোলিত হট্যা **বিশীন: হইতেছে। ওরু শ**করের এই স্থান্তীর ক্রিলেরের অথবা লেখকের পূর্কোক্ত পর্যায় ঘটিত (Alternate ) याना निवा पृष्ठी खित पृष्ठ नमर्थन ক বিভেছেন। মহুধ্য প্রবল অবিদ্যার মোহে সমোহিত হুইরা দেহ, গেহ, বিভ, পরিজন প্রভৃতি যে সক্স অনিত্য ्रिक्ताच निवादिक चात्रा वा चामि वनित्रा अ**फारे**शा स्तिधा লাকে, উধার কোনটাই আত্মা নহে। সং, চিং, আনশই আয়ার প্রকৃত বরপ। যাহা ভূত, ভবিষ্যং ও বর্ত্তরান তিন কালেই কোনওরপে গরিবর্তিত, কয় ও । প্রাপ্ত হর না, তাহাই সং। যাহা অঞ বস্তর আহিৰা না লইগা ফৰ্যা ও প্ৰদীপের ভায় স্বপ্ৰকাশ Self luninous) এবং যাহা নিজেতে আরোপিত नक्त भगार्थं धकानक, छाहाई हिर। बिका, निरुष्णिय ( यादात न्यान ও व्यक्ति नाहे ) 💆 वासम्बन्ध भन्न थारमन व्यासात, छाहाहे व्यानमा এहे निका नेडा, निडा कान ও निडानत्मत बनापि, बनस ও মধুর সমবারকে আত্ম। করে। বায়ু, পিত, কফ তিগাতুর विकारिका स्थम मामरवत चाका ७ की वरनत পরিচারक, ক্ষা সভা, ভ্ৰা জান, ভ্ৰানন্দও তেমনি প্রমায়ার বিশ্ব প্রবাস অভিবাশক। যেখানে এ তিনের बर्मातक किंद्रमां विकशानि परहे, छथात्र शाकू देवरमा-ক্ষান্ধৰ বাদ্য বিক্তির ভার আত্মার প্রাভিব্যক্তির एक्षिक ज्ञान प्रशेषत (Tennyson)

"The palace of art" শীৰ্ষ কবিভাৱ প্ৰস্থাবনায় ( prologue ) "That beauty, Good and knowledge are three sisters" ইত্যাদি বর্ণনার **এই সং. 6१ ७ जानम या मिसनी, मःवि९, दलामिनी**-ক্রপিনী প্রমাত্মা শক্তিকে তিন্টী অভিন্ন হার্ম, বিচ্ছেম ভীক সহোদরা ভগিনীর সহিত উপমিত করিয়া উহাদের क्रिक विष्कृत भग्ने छन विष्कृत विष्कृत विष्कृत । কবিধরের স্মানোভিড ( Personification ) আ্মানের অচেত্ৰ ভাৰময় শাস বাকাকে বেশ সজাৰ কৰিয়া তুলিয়াছে। যাহা দত্য, জ্ঞান ও সুন্দর শিক্ষিত মানব মনের মতি বভাবভঃই দেদিকে ৷ আখাদের পাছধাম মায়িক লগভটী অগভা, জ্জান ও অসুখের একটী বিরাট প্রশালা। আমার দেহ হইতে আরম্ভ করিয়া ইহার দশদিকে যে বস্তু স্তু প বিরাজ করিতেছে ইহার সকলগুলিই অল বিশুর পরিমাণে অংসং, অজ্ঞান ও ছঃপাষাদ। মায়ার ছাঁচে ভাস্ত মানবের মনগড়া নাম রূপময় এই জগং প্রপঞ্চ, ইহার কোনটীই আত্মানছে।

ভূমির উপরিশ্বিত সুরুহং অট্টালিকার মত চৈতক্ত-সন্তার অবশ্বনে এই বিখ ত্রনাও দ্রায়মান। অট্রালকার উৎপত্তির পূর্বের ও ধ্বংদের পরে ভূমির শ্বরূপে অবস্থিতির ভায় জগতের স্টির আদিতে ও লায়ের অস্তে কোন এক পাপও চৈত্তা সভার চির অধিষ্ঠান। বর্ষার জলদমালা স্মারত অমাব্যা নিশাথিনীর খোর অন্ধকারে বিভিন্ন নামক্রপধারী বস্তু সকল একাকার দেখায়। প্লাবিত ভূখণে উচ্চনীচ সকল ভূমিই স্মতল ও অসময় দেখাইয়া থাকে। আমদশার ব্রমণ্টিতে আগতিক পকল পদার্থ দেইরূপ ব্রহ্ময় হইয়া যায়। ভিনি সর্গ. मर्डा, भाषानः (नव, नानव, मानव; खान्नव, कालाव, देवणां; कुप, गमी, मागत ; तुक, मठा, खबा ; ममश बन कु সমুক্ষন চৈত্তের পাঢ়রকে রঞ্জিত দেখেন। আভানী **পर्याश्रम्क এकाम्बर अकेशन आक्रात उक्ताती देवश्य** श्रवि क्षमानं कवित्राव (प्रवाहरण्डाम,

"'স্থাবর অঙ্গম দেখে না দেখে তার মূর্ত্তি। সর্বতা হয় ভার ইপ্তদেব কুর্ত্তি।।"

ভানী বাহাদৃষ্টিতে দ্বিতিশীল ও গতিশীল চরাচর জগৎ প্রত্যক্ষ করিলেও তাঁহাদের অন্তর্ষ্টি প্রসারিত হওয়ায় ঐ সকলের জড়ীয় মৃত্তি তাঁহার মান্দ নেত্রে लंजिक निज इस ना। विषमसङीन विषयदात काम जाहात খালা ইন্দ্রিয়গুলি অকর্মান্ত হওয়ায় তিনি তথ্য ভিতরে **टक्वंग मरनामशीत टेड्डिंग मृर्डि वा आश्र मार्मादकारत** ঐ মহাত্ম। আর একটু অগ্রসর নিরভ থাকেন। इहेब्रा शृद्यां क श्वादात विनाम वााचा इत निविद्याहन.

'ভক্ত আমাপ্রেমে বাধিরাছে হাদর ভিতরে। यांश (मज পড उंहा (प्रथम स्थापाद ॥"

বস্তুতঃ প্রেমে ভক্তের অন্তর্গু উন্মাণিত হইলে তিনি তথন বাহিরের কোনও বস্তু দেখিতে পান না। সে সময় তিনি তাঁহার হৃদ্ধ সিংহাসনের একমাত্র অধীধর পর্মে-শরের ভ্রনমোহন রূপের ভাগার উন্তু দেখিয়া व्याज्यश्रा रहेश यान। (य व्यवसाय कीर व्यापनात्क कृत्न, त्म व्यवशाय भारत कथा मान केन य दहरा कि ताल ? फनक्या, बाह्यासियशिन छान चाह्यान यह दहेलाउ मात्मत পরিচালনার অভাবে সময়ে সময়ে উহাদের কার্য। মন ঘণ্ডন ভিতরে মনের মনকে वस बहेशा यात्र। থাকায় বাহ্য ইন্দ্রিয় চক্ষুরাদির কার্য। নিরোধ হইরা थारक। अक्रेभ अध्यमकात अवधः व्र ठक्कृत नगरक পাহাত পর্বত উপস্থিত হইলেও মানব তাহা দেখিতে পায় না, এটা:সহল সভ্য দার্শনিক ভথ্য। ইহাতে সরলপ্রাণ আদিম শাস্ত্রকারদিগের প্রভারণায়ূলক বুলকুগীর (Humbuggery) গোলক ধঁ দোর .Labyrinth) গদ্ধ পাওয়া যায় না। পিত বিদম দৃষ্টি বা রাতকানার मन अ अगट हा नारे वित्र। গগনভেনী চীৎকার করিলৈ, চক্ষান্ ব্যক্তি উহাতে উপহাদেরই श्रुर्दान नाहेत्वन । अक्टन त्नवा वाहेत्वहा (य, जामना

(पर, देखिय, मन, श्रान श्रकृति (यही करे चामा विवर्) मीर्चकान धतिया शांकि ना (कन, উशांपत छिछत्त छुवा-চ্চাদিত তখুলের মত যে বিরাট আত্ম দতা বিরাশিত चाहिन, छाँशात प्रश्रुक्त यनि किंडू मांज शात्रण शास्क, আর ঐ মহতী ধারণাকে উপাসনাদির সাহায্যে ক্রমণঃ পরিশুদ্ধ করিতে यद्गमील इहे. তাহাহইলে একদিন नी একদিন, আঘাতে (Husking) তুবের চাত্তিতে তপুনোই-পত্তির স্থায় তত্তভানের অফুশীলনে ও ক্রম পরিপাকে এই অনায় পদার্বগুলি একে একে বরূপ চ্যুত হইলে व्यवस्थित क विशेष भद्रमाश्चा कामास्य मृष्टिभाष ভোত্যান থাকিবেন। ন,ম বা রূপ কখনও বস্তর প্রকৃতির বিকৃতি ঘটাইতে পারে না। জল,পানি,(Water)বে নামই म'' उ डिराट करनद कमद मुक्ष इटेरव ना। नान, कान, সবুজ যে রঙ্গেই রঞ্জিত কর উহার জলত্ব নই হইবার নহে। ময়ুরপুচ্ছ শেভিত ने। एक कि **বিংহচর্মার** ত গদিত, नीलावर्ग मुनान देशावा (यमन हर्यानि व्यावद्रात अमाद्र हैं। इरेम्रा गर्फड, काक अ मृगागरे हिन्, रमरेक्रम नाम क्रमानि উপাধির যোগে আত্মার কণাংশ মাত্র স্বরূপ চুঃতি হয়' न।। जन्मकापिक विकास वास मः योग दहेत छैद। (एक्स जरकनार अञ्चलित इंग्र. नाम क्स्मानि छेनहिन मम्मर्क হইবা মাত্র সেত্ৰপট আ্যা তত্ত্তান প্রকাশ পাইয়। থাকেন। নামরপ উপাধির তুক্তাসমক্ষে পাশ্চাত্য কবিওর সেকস্পীয়ার উচ্চকতে সাক্ষ্য मिट्डरहन.

"What's Montogue? it is nor hand nor foct" Nor arm nor face, nor any other part Belonging to a man, O! be some other name Whats' in a name ? that which we call a rose By any other name would smell as sweet, etc. Romeo & Juliet, act II, scene I.

এই পভাংশের মর্ম ও উদাহরণ পূর্বেই প্রদর্ व्हेत्राष्ट्रः, चुक्दाः व्याचा शूनकृष्टि मातः। এই इत्रद

আনক্ষের কলেবর পুষ্টির জন্ম আর বাণ্বাছ্ল্য আশেষ্টিন। সুবিধ্যাত পাশ্চাত্য কবির ভাব কালার আশিক্ষন স্থাতি প্রাচীন ভারতীয় দার্শনিক কবির প্রশস্ত আইট্রে কভকাল পূর্ণে কিরণ অনুর্গতি ইইয়াছিল, উহা শেষ্ট্রিয়া এ প্রব্যাের স্মাপ্তি করিভোছ। বিষ্ণ্ শ্রীবের ভিতীয়াংশের তৃতীয় অধ্যায়ে ৯৭ ও ২৮ সংখাক শোক্ষে জানী শ্রেষ্ঠ জন্ত তারত খার্যুত্র লিজ্ঞাস্থ্রে গৌবীর

ন্ত্রপতিকে অতি সংল ও সংক্ষিপ্ত ভাবে বুঝাইতেছেন;

''বং কিমেবং স্থিতঃ কিন্তু শিরস্তব তথোদরং।
কিমু পালাদিকং অং বী-ত বৈতৎ কিং মহীপতে॥
সমস্তাব্য বেভাস্থং পূপক্ ভূপ ব্যবস্থিতঃ।
বিশহ্ৰমিভ্যএ নিপুনো ভূজা চিস্তয় পাৰ্থিব।"

ি 'হে মহারাজ! আমার সমুখে তুমি অবস্থিত; অথবা ভোষার মন্তক ও উদর অবস্থিতি করিতেছে? তুমি কি চরণ প্রভৃতি স্বরণ, অগবং এই চরণাদি তোমার ? হৈ নরেন্ত্র ? এছলে কি বলাউচিত গ ভূবলত ? ভূমি **हत्रनामि भक्त अवस्व रहेट्ड পृ**थक ভाবে অবস্থিত; অর্থাৎ, তোমার কেশাগ্র হইতে নথাগ্র পর্যান্ত কোনটাই ভূমি বা আয়া নহ। এখন "নেভি নেতীতি" বিচার লুবে ঐ পক্ষ অনাত্ম পদার্ব ত্যাগ করিয়। स्मृहकारत किन्छ। कतिया एमप "वासि एक १" मर्नन भारतत এই নারিকেল দলে প্র রস্পত আন্মোপ্রেশ প্রক্রিতা কৰিব কাল্যের ভাষায় পাভুনের ( Manuscript ) মাত্র। ध्या के छ काशांक नाम । (श्रामात वस, भन, वार्, বছন কোনটাই মণ্টেও নংগ (আরা) সংহ। পোলাপ कुल्हें देव नात्मई छाक, देशत विश्व भीठल मधुत क्षेत्रीहरू इंड (बीद्रव किन्नुसाल लूथ इंडरन मा," इंडाकि ক্লাক। পুরাবের সহিত কেবল বর্ণতঃ বিভিন্ন। মাত্র निष्ठ । वर्षछ । वर्षछ । वर्षछ । वर्षा । वर्षा । वर्षा । আমুনিক সমাজের একটা গণ্ডের উপর প্রকাণ্ড বিক্ষোটক শ্বরা আত্মজিজাদা সম্পর্কে ব্রাদাব্য ও বংকিঞ্চিং अधिमहिमा कित्याम। (व उच वाका विधावत्यत

উপবৃক্ত ভাষা অভাপি জগতে আবিষ্কৃত হয় নাই,
পৃর্বোক্ত দেশী কেজগণ যাহাকে "গুরোজ মৌনং
ব্যাধ্যানং বিয়ার ক্রিনেংবরং" বিরা নারব ব্যাধ্যার
কৌশলে জিজাহর সংশয় নিরাসের আভাস দিয়াছেন,
ঐ তর্লোর বিষয় লইয়া নাড়াচ,ড়া করায় অন্ততঃ নিজের
কিছু উপকার আছে বলিয়া মনে করি। মহুস্তরপে জন্ম
পরিগ্রহ করিয়া পুরুষার্থ চতুইয়ের সহিত অল্লাধিক
পরিচিত থাকা মানব মাত্রেরই প্রধান কর্ত্তরা। ধর্ম,
অর্থ, কাম, মোক্ষ এই চারিটী পুরুষার্থের মধ্যে ধর্ম
প্রথম স্থান পাইয়াছেন। সকল প্রকার ধর্মের মধ্যে
আত্মর্শনি সর্ব্ধ শ্রেষ্ঠ। ভগবান গীতাকার 'রাজবিন্তা
রাজগুহাং' বলিয়া আত্ম জানকে জ্ঞানরাজ রাজেশর
পদবীতে ভূষিত করিয়াছেন। যোগাচার্য্য যাজ্ঞবন্ধ্য
আত্মনের পরম ধর্ম আখ্যা দিয়াছেন,—

ইজ্যাচার দ্যাহিংসা তপঃ স্বাধ্যায় কর্মনাং। অয়ন্ত প্রমোধর্মো যদ যোগে নাত্ম দর্শনং॥"

'বজ্ঞ স্থানার দি স্কুল প্রকার ধর্ম হইতে যোগ সহকারে আয়ে দর্শন শ্রেষ্ঠ বলিয়া ইহা প্রম ধর্ম।' কেনো-প্রিষদ ভারস্থরে শিক্ষা দেন;

"পাত্রনা বিক্তে বাঁধ্যং বিজয়া মৃত্যহুতে॥" ২, ৪।
লোক আয়হাত অনৃত্র লাভের বাঁজনীর্যা লাভ করে,
এবং প্রজালিকারারা সাকাহ অনৃত্র অধিকারীহয়।
এই আয়জানরপ অনুত্র লাভের প্রথম ও প্রধান উপায়
আয়জিজানা। সংবার চক্রনেমির গুরুতার লোহ
বেইনীর গুরুত্র আঘাতে পুন: ২ পিষ্ট মানব যদি নিরুষ্ট
জীব অন্তর আন জনা সুবাত আহার, বিহার, নিজা ও বার
বার জন্মবরণকেই মনুধান্তের চরম লক্ষ্য মনে করে;
তাহাইলৈ ঐ সকল আন্তর্গতারিত (Self deluded)
ছ্রাগ্যের ইং জীবনে যেমন স্থের আনা ও ধন পিপাসার
নিবৃত্তি ঘটনার হ্রস্ত, অনান্তি, পর জীবনেও তজ্ঞপ অনন্ত
নরক। ইহাশ কারাগার হইতে প্রায়িত বন্দী। স্কৃত্ত
ছ্রাপ্রের ফ্রেন নেকালার যেমন স্থের ক্লেব ভোগ করে,

কারাগৃহ ভারিয়া প্রায়নের পর ধৃত হইলে তত্তা অধিক দণ্ডে দণ্ডিত হইয়া থাকে। প্রাচীন উপনিয়দশাস্ত্র ইহাদের কঠোর দণ্ডের বিশান করিয়াছেন।

"অহ্ব্যা নামতে লোকা হান্ধেন তমদার হাঃ।
তাংত্তে প্রেত্যাভি গচ্চত্তি যে কে চাম্মহনোজনাঃ॥
আত্মাতিগণ চিরকাল নিরিড় তিমিরাজর খোন
মরকে পচিতে গাকে।, দার্শনিক চুদামণি শ্রীমন্ ভাগবতকারও ইহানিগকে "পুমান্ বিরক্ষেত বিনা পশুরাং"
কপে বর্ণনা করিয়া পশুলাতী নিঠুব বাাণ ও মহাপাতকী
বলিয়াছেন। এই সকল মানব মাত্রেরই মহাকল্যাণ
প্রেত্ম আত্ম জিজ্ঞাদায় ব্রহী হওয়া একান্ত বিশেষ।

श्रीनिভाগেপাল निशानिताम।

#### भवाक्तत्व छेन्द्र हिकिएम।। "छेन्द्र बान्दी बना

এ ভিনে নাই রকা।"

এই প্রাচীন পূর্জনঙ্গের গ্রাম্য প্রনচনটি না জানেন এমন বাক্তি থুব কমই আছেন। বাস্তনিক সংসারে মারাত্মক ব্যানি অনেকই আছে, কিন্তু উদরী ও যত্মা আধি হওয়া মাল রোগী ও তাহার আয়ীয় সঙ্গন যে প্রকার হতাশ হইয়া পড়েন, আর কোন ন্যানিতে সেরপ হয় না। যাহার যক্ষার কোন সংস্তান নাই, এরপ সুস্থ স্বলকায় ব্যক্তি ও অনেক কৃচিকিৎসকের লমে (মুংশর উপর যক্ষা হইয়াভে বলাতে) এত ত্র্বল হইয়া পড়ে যে, সেই ত্র্বলতা হইতেই অনেক সময় তাহার ক্ষয়ের উৎপত্তি হইয়া থাকে। চরক বলিয়াছেনঃ—

> 'মরণায়েহ রূপাণি পশুতাপি ভিষগ্নিদা। অপৃষ্টেন ন বক্ষব্যং মরনং প্রাত্যুপস্থিতস্। পৃষ্টেনাপি নবক্ষব্যং তত্র ষচোপদাতৃকম্ আতৃরুক্ত ভবেদুঃধ মথবাক্সব্যা কদ্যতিং ॥"

"চিকিৎসক রোগীর মৃত্যুচিক দেখিয়া বিপদ হইবে শ্বিক করিলেও, স্বতঃপ্রবৃত্ত হইয়া তাবা রোগী বা তাহার আত্মীয়ের নিকট প্রকাশ করিবে না। এবং বিশেষভাবে জিল্পাসিত হইলেও যে স্থলে তাহা শ্রবণ করিলে রোগীর অনিই হইবে বা তাহার আত্মীয় বজনের ক**ট হইবে** বুবিতে পারা যায় ভালৃশ সাংঘাতিক সবস্থাও প্রকাশ করিবে না।

যাক্, এই হুই ব্যাধির নিছুতির চেষ্টাম পাশ্চার্ড্য 5िकि ९ भक्त ग्राह अकात भदीकाकार्या विश्व **आह्म।** অ'র আয়ুর্বেল বাবধায়ীগণ তাহাদের পরীক্ষিত অবার্থ bिकिरमा श्रीनाकी क्षति शताहेश काक्ष भवन्यता कारम दारुष्टिश (नण्डिएक्स · आभारतत (मरन (581नान् লোকের অভাব নাই, কিন্তু আয়ুর্কেদের মত ছেড়া কাৰা সেলাই করিতে কেহই অগ্রসর হইতেছে না। এমন অপুর্ব তন্ত্র আমাদেরই স্বাস্থ্যের উন্নতির জ্ঞা, আমাদের পূর্বাপুরুষের শত সহস্র বর্ষের অদীম গবেষণার ফল, এই প্রকারে আমাদেরই অনাদরে ধ্বংসের দিকে অগ্রাসক बहेटाइ, देश वड़रे क्लाएं। विवन्न ! প্রাধীনতাকে ঘুণা করিতে শিখিতেছি কিন্তু বিপ্রে পরিচালিত হওয়ায়, আম্বা অশ্লে, বদনে, ভীবন রক্ষার উপকরণে পর্যান্ত পরের মুখের : দিকে চাহিয়া বসিরা আছি।

পাশ্চাত্য পণ্ডিতদের প্রভূত পরিশ্রমের ফলেও উক্ত ব্যাণি ছুইটির সম্বন্ধে বিশেষ কোন উপায় পাওয়া পিয়াছে বলিয়া বোধ হয় না। আয়ুর্সেদে উদর ব্যাধিকে বন্ধা ব্যাণির মত একবারে অসাধ্য বলা হয় না। সুক্রত বণিয়াছেন:—

''অষ্টাবুদরানি, তেখবদাধ্যং বছদ প্ৰিছাৰিচ, অবশিষ্টানি কৃত্যু পাধানি !''

আমাদের দেশে জলোদরের সংখাই বেশী হ**ইয়া** থাকে। একটু চেষ্টা করিয়া চিকিৎসা করিলে ভংলালরে রোগীর বিপদ, হইতে পারে না বলিয়াই বিশাস করি। পাশ্চাত্য মতে পুনঃ পুনঃ টাপে (Tap) করিয়া জল বাহির করিয়া দেওয়াই প্রধান চিকিৎসা, কিছ প্রোর্থী

নিরমের অভাবে ও ভবিষাতে আর যাহাতে লগ অথিতে
না গাবে এমন ভাল কোন ঔবধ না থাকায়, তাঁহাদের
কিলিৎসায় তেমন স্থকগ হইতে দেখা মায় না এবং
আক্রালকার কবিরাজী চিকিৎসাতেও ঐ ব্যাধির ভাল
ভাল ঔবধ প্রযুক্ত হইলেও যথাবং নিয়মের অভাবে ও
ক্রেক্তার হইলে একটু শান্তক্রিয়ার সাহায্যের অভাবে
ক্রেক্তার হইলে একটু শান্তক্রিয়ার সাহায্যের অভাবে

অতি প্রাচীন কাল হইতে সুশ্রত ও চঃকসংহিতায় প্রাক্ষিকে বিস্তারিত ভাবে চিকিৎসার প্রণালী লিখিত ছিহোছে। আমরা তাহা যথাবং অফুসরণ করিয়া বছ আলোলর রোগীকে নিরাময় করিতে সমর্থ হইয়াছি। আলকাল আয়ুর্মেল বাবসায়ী মাত্রেরই চক্রদন্ত, ভৈবলা রন্ধানলী, ভাবপ্রকাশ প্রভৃতি সংগ্রহগ্রন্থ চিকিৎসার প্রশান অবলম্বন হইয়া দীড়াইয়াছে। এই সব গ্রন্থ শায়ুর্মেলের অবনতির মুগে সংগৃহীত হইয়াছে। কোনকোন গ্রন্থ ক্রেলের অবনতির মুগে সংগৃহীত হইয়াছে। কোনকোন গ্রন্থ ক্রিলের অবনতির মুগে কির্নিল বিস্তাহি স্ক্রাণ ক্রিলের অবনাত্র উপজীব্য হইলে উন্নতির আশা ক্রেণার ই চক্রপাণি বলেন ঃ—

''লাতং জাতং জনং স্রাব্যং শাস্ত্রোক্তং শস্ত্র কর্ম চ। জলোদরে বিশেষেণ জবদেবাং বিবর্জয়েৎ।''

কলেদর ব্যাধিতে শন্য-শাস্ত্রোক্ত শস্ত্র কর্ম অনুসারে
নাকিত কললাব করাইয়া দিবে ও বিশেব ভাবে দ্রব প্রথার্থের স্বেন পরিত্যাগ করিবে। এই পর্যান্তই উাহার উপদেশের শেব হইয়াছে। এই অবস্থা দেবিয়া ক্লাবাদের অনুমান হয়, চক্রপাণি হাতে কলমে কোন কাল করিতে লানিতেন না। এবং জলোদরে 'দ্রব' মাত্রকেই নিবেধ করায় ভ্র করিয়াছেন। ঐ ব্যাধিতে ছুবুই এক মাত্রপথ্য ভাষা দ্রব পর্যায়েই পরিগণিত হয়।

উদকোদরিশস্ত বাতৃহর তৈলাভ্যক্তন্য \* \* \* এবং আনুষ্থেশ্যের অগলে। তবভি ৷''

व्यर्थार करनामत (ताभीरक श्रवस्य नातात्रम रेडनामि याचा हेवा ( वित्मव ভाবে উদরে ) গরম জলের বেদ দিছে इहेत्। উত্তয়রূপে স্বেদ দেওয়া হইলে ভার্ছাকে বসাইয়া পিছের দিক হইতে একগন বলবান ব্যক্তি ভাহাকে ধরিয়া রাখিবে। ভারপর একখান চওডা কাপডের ব্যাণ্ডেজ দিয়া ষষ্ঠ পশুকার সমহত্র হইতে নাভির সামাত্র নীচে পর্যান্ত বেইন করিয়া আটিয়া বাঁধিতে হইবে। পরে ত্রীহিম্ণ শল্প (Trokers) স্বারা নাভির নীচে রোমাবলীর বামদিকে ৪ অঙ্গুলি দুরে এক বট পরিমিত বিদ্ধ করিয়া তাহাতে জল প্রাবের জন্ত ছই মুখো কোন্ধাতুনির্বিত নল বা হাসের সরু পেনের অগ্রভাগ লাগাইয়া দিয়া শত্র উঠাইয়া লইবে। ध्यकाद्य यथात्रे ि छेनत्र मुश्चित कन वहिर्नेत हहेन्ना যাইবে। পাশ্চাতা মতে এই বেধ রোমরাজির উপরেষ্ট করা হয়। তাহাতে একটু বিপদের আশকা আছে; যদি বস্তি অধিক মৃত্র পূর্ণ থাকে, তবে ঐ স্থানে বেধ করিলে বঞ্জি বিদ্ন হইতে পারে। উদরে যদি প্রভূত জল স্ঞিত পাকে তবে ত্রিকদিনে প্রল আব করা खे गव दाशीद महीत माद भाष ना श्राकात्र के मनारागड़े कीवनी भक्ति व्यवाहिक शास्त्र, हंठांद नगरा मन वादित हहेता (शतन जुरुः, खत, खिनांत, শ্বাদ প্রভৃতি উপদর্গ হইতে পারে। সূত্রাং দরকার हरेल > 1) द मिन भश भश सज्ज स्वज्ञ करिया **अन** दाहित করিতে হইবে। প্রমাণ মত জল বাহির হইয়া গেলে নলটি বাহির করিয়া ফেলিয়া বিদ্ধ স্থান তৈল ও বৈশ্বর চুৰ্বারা অভ্যক্ত করিয়া উপযুক্ত ভাবে বন্ধন করিয়া दाबिता अन निर्शेष्ठ इहेशा छेन्द्रित चाग्रजन कथिया वाश्वरा भाज फेकरेटि कार्यन बादा ना कवा मा दिना छाटन मर्सना वाक्षिया वाथित्व। नजूना (भी थानि श्रेटलरे औ मुळ अान नाशूभूर्व इटेशा आवात भवत्र है **कल कविवाद** আশব্দা করা যায় ১ তারপর রোগীকে অন্যুন, ৬ মাপ্ কেবল হুণ খাওলাইয়া রাখিবে আর তিন মাল হুণু জ আলা মণ্ড পণ্য দিবে তারপর তিন মাণ ত্থ আলোও লবণ-বিহীন তরকারী দিতে হইবে। এইরপে এক বংসর অভীত হইবে রোগী নিরাময় হইল মনে করা যায়।

চরক সংহিতাকারও স্থাতের বাবস্থার সর্বাধা সমর্থন ক্রিয়াছেন ও পথা সম্বন্ধে বলিয়াছেন :—

"বাহংপর ষ্থামান্ ক্ষারবৃত্তিও বের্মার।

জীন্মাসান্পয়সা পেয়াং পিবেং, জীংশ্চাপিডোজ্মেৎ
জামাকং কোরদৃধং বা প্রসাহলবনং নর:।

সংবংসরে নৈবন্ধয়ে প্রাপ্তাধেব জলে দরম্।"

স্তরাং জলোদর রোগীর কেবল হয় সেবল করিয়া থাকা
স্বাবাদীসম্বাভ । চরকে উরুপ পথ্য স্থাম হেন্দুও দিয়াছেন:—

"প্রয়োগা প্রিভাস্থানাং হিতং ইন্দ্রিবাং প্র:।

স্বাধাতুক্ষরান্তানাং দেবানামমূতং যথা।"
কিন্তু পরবন্তী চিকিৎসক্ষেরা এই অনুলা উপদেশ হারাইরা আজ উদর ব্যাধিকে অসাধ্য বনিত্র, জাগ কারতে কুণ্ঠিত হউতেছেন না। আমরা উক্ত প্রদালী অনুসারে চিকিৎসা করিয়া রোগার ভাদৃশ খারিই শাংল না হইলে শতকরা ১০০টি রোগাই আরোগা করিছে সার্ক হইয়াছি। আশাকরি সকলেই এই প্রণালী অনুসারণ করিয়া প্রাচীন চিকিৎসার উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে দেশের ও দশের উপকার সাধন করিনেন।

ছিলেদের ও বন্ধ গুণোনরকে কার্যচিকিৎসা মাত্র আশ্রম করিলে অসাধ্য বলা হই গছে। শলাভন্তে এতৎ সক্ষমেও বিশেষ বিধান আছে। পাশ্চাত্য মতে কলিকাছা ব্যতাত অক্সতি ক্ষেত্র বিশেষ বিধান আছে। পাশ্চাত্য মতে কলিকাছা ব্যতাত অক্সতি ক্ষেত্র না হইতে পারে ছাহা বোগহয় না। বিশিষ্ট শ্লাছয়ড নাজি ব্যতাত এ কার্য্যে পারদ্দী হওলা কঠিন। প্রাচান কালে যে প্রাণালীতে এই ছাই ব্যানের চিকেৎসা হইত ভাহার একটু উল্লেখ করিলাম। চরক বলেন:—

বামং কুকিং মাপ্যিতা নাভদেশ্চ গুরস্থাম।
মাতা বুকেন শস্ত্রেন পাট্যেন্ মতিমান্ ভিষক্।
বিপাটা-জং তভঃ পশ্চাং বীকা বন্ধকভাজবোঃ।

সর্পিষা ভাজা কেশাদীনবমূল্য বিশোধরেং।
মৃচ্ছিনাদ্ বত্রসংমৃদ্ মন্ত্র তচাবমোকরেং।
ছিল্রান্তন্ত্রত তুষুনৈ দংশদিব। পিগীলিকা।
বহুশং সংগৃহীতানি আবা ছিল্বা পিগীলিকান্।
প্রতিযোগৈঃ প্রবেভান্তং প্রেরাং দীবেন্দ্ বনংভতঃ ।

ব্দ্ধগুণোদর বাণি অন্তের মধ্যে কোন বাহা পদার্থ বা কঠিন মল আবদ্ধ হইয়া অথবা বিস্তানীভূত বায়ুৱারা আছে প্রেট লাগিলে হইয়াপাকে ও অল্লের দহ ভক্ষিত কাঁটা ভূষ প্রভৃতি শগাকাতে অস্ত্রে ছিত্র হটলে ভাষাকে ছিলোদর বলা হয়। এই উভয় প্রকার ব্যাধিতেই নাভির চার আহুল নীচে রোমরাজির বামভাগে কুশপত বা অন্তমুর শক্তবারা পেট চিরিয়া অন্ত্রপরীকা করিয়া আধির অন্ত্রংশে মত মাধাইবৈ পরে ভাহাতে আবদ্ধ মধানি পাকিলে ভাহা বাহির করিয়া দিবে ও পেঁচ লাগিয়া থাকিলে ভাছা খুলিয়া ঠিক করিয়া দিয়া আবার উত্তমরূপে ঘুতাভাক্ত করিয়া যথান্থানে সন্নিবিট করিয়া দিবে। আর অন্তেভিত হইয়া থাকিলে ভিজের স্থান লকা করিয়া তাহা পরিষ্ণারকরতা ভাষাতে কভগুলি ক্র পিপীলিকা 🛊 কামড দেওলাইল ভাষার শরীরটা ছিডিয়া किता (करता अहेकाल के निर्वाहात मार्था निवाह के किका) সম্পূর্ণ সেলাই করিতে এইবে। ভারপর অন্ত্র ছুড্রাঞ্চক कतिया यथाञ्चरम मिस्दिष्टे महिया বাহিরের **উদর-প্রাচীর** খোডার বালচি আদি দিয়া যথানং সেলাই করিয়া অপের र्চिक्टिमा क्रित्र । এवः রোগীকে কেবল ছগ্ধ পণাদিয়া রাখিবে। এ সৰ প্রক্রিয়া বিশিষ্ট হ'াসপাতালেও হয় কি না জানি না। প্রাচীন কালে এরপ প্রক্রিয়ায় সক্ষম বৈত ছিল শোনা যায়। এগন পাশ্চাত্য চিকিৎসাভিজ্ঞ কবিরাজবুন ए पू (পটে के केश्रापत कात्रवात ना कतिया व मव विभाग ८५ है। कंद्रियन कि १ क्षितिक मन्त्रकारिक

ইহাকে গ্রহসাহী জেলায় "মাসকাটা ডাই" বলে।
 ইহারা কামড় দিলে মাথা কাটিয়া কেলিলেও করেক
ছাড়ে না।

#### অমূলক সংস্কার।

ু পৃথিবীতে এমন দেশ বোধহয় কমই আছে, যেথানে প্রাম্বন্ধন অন্ততঃ কতক পরিমাণেও প্রভাব বিস্তার ক্ষে নাই। এই দমাল বন্ধন কতকভালি পরিবারের আচার আরহার নিয়াই শৃঞ্জিত। এক সমাজের আচার নিয়ম আপর সমাজে আদৃত ও পরিগৃহীত হয় না। এমন কি একই পরিবারভুক্ত ব্যক্তিদের মধ্যে ভিন্ন ভিন্ন থেয়াল **শহুসাত্তে বিভিন্ন মত ও সংখ্যার বিভিন্ন আকার ধারণ করিয়া** আহে। এমন কভগুলি ধারনা আছে যাহা ভধু এক সমালের স্ত্রীলোকগণই অধিকাংশ পোষণ করিয়। থাকে। मुमारकत शुक्रवर्गण दमहे ममन्त्र भारत्या वा मश्कात मन्द्रता अविशिष्ठ अन्नि करत । अधु व्यामात्मत्र त्मन विन्ता नत् হুৰুৱ ইউরোপেও একসময় কতক, সংখ্যক গোক এই সমস্ত अधिक मध्यात्वत वनवर्छी छिन। देशनएछत विशां हेश्त्रक নাহিত্যিক জোনেক এডিনন ( Joseph Addison ) প্রায় কুইশন্ত বংশরেরও অধিক পূর্বে "ভ্রান্ত ধারণা" ( Popular Superstitions) নামে যে একখানি রচনা লিখিয়া ্রিয়াছেন, উরা পড়িয়া তাঁহার সমসাময়িক সামাজিক অবস্থা ক্রিক্টা জ্বরক্ষ করা যায়। বাসালা বেশেও থরে থরে নিয়ম বিধান প্রচলিত আছে, যাহা নেয়ে নহলেই ৰুব আছা। এই সমস্ত বিধানকে আমরা "নেয়েলী শাস্ত্র" ঋণে কতকটা মান্তও কার কতকটা অবহেলাও করি। ক্রিম বিচার করিয়া দেখিতে হইবে সেই সমস্ত মেয়েলী শাস্ত্রের क्षिन । मुना बाह् किना वतः উशामत उद्भवित ता কোখার ? আমাবের মনে হয় এক একটা বিষয় অবলয়ন **জ্ঞারিরা সেই** বিষয়ের ভূরোদর্শনের ফলে যেই উপসংহার বা আনাৰে আদিয়া পৌছ। যায় দেই প্ৰমাণই শান্তীয় বিধানরপে প্রারিগণিত হয়। মেরেলি শান্তকে আনরা আপ্রবাকা Authority with reliable source ) বা অনুমান Inference) প্ৰমাণের অন্তর্ভুক্ত ক্ষিত্তে ন৷ গারিলেও

উহাতেও যে ভূরোদর্শনের তথা আবিষ্কৃত হইয়া আছে তাহা আমরা কিছুতেই আগ্রাহা করিতে পারি না। তাই বলিয়া যেনন তেমন একটা কুসংস্কারও যে কুসংস্কাররেশে গৃহীত হইবে তাহা কখনও স্বীকার্যা নহে। শুধু মেরেলোক বলিরা নহে,পুক্ষদের মধ্যেও অনেকে 'শুচিবায়ু' বা 'শুচিবাই' সম্পন্ন চের আছেন। এমন কি ঐ সমস্ত সংস্কার বা ধারণা অবশহনে গোটা বাজাণায় কত ছড়া,কত স্লোক, কত কবিতা, কত বচনইনা বচিত হইয়াছে।

বহু গবেষণার ফলে ভারতবাদী শীলাবভী গণিত জ্যোতিষে অক্ষর কীর্ত্তি স্থাপন করিয়া গিয়াছেন। স্থাবিধ্যান্ত থনার বচন এখনও বালের গৃহে গৃহে সন্মানিত ও আদৃত হইয়া আছে। বর্তমান প্রবন্ধের বিষয়টা যদিও তাদৃশ বৈজ্ঞানিক প্রণানীতে প্রমাণীকত হইবে না—তথাপি বক্ষামাণ-'সংস্কার' গুণিতে দেশ ও কাল ভেদে অন্যাদদের পক্ষে কত্ত্বর উপযোগী বা সম্প্রোগী তাহারই যৎকিঞ্চিৎ আভাস এই স্থানে প্রদান করিতে চেষ্টা করিব। প্রথমতঃ আমি ইংরেজ কবি এডিসন কর্ত্বক উনিথিত সংস্কারসমূহ এই স্থানে উদ্ধৃত করিতেছি—

া কোনও এক গৃহক্তী স্বামীকে বলিভেছন
"You may now see the stranger that was
in the candle last night." এই দেখ সেই নবাগত
অতিপি, বাহার আগন আমরা গ্রুকলা রক্তনীর "ক্যাওল্"
জ্বিবার ভঙ্গী দেখিয়াই অনুমান করিয়াছিলাম। অর্থাৎ সেই
দেশের লোকের মধ্যে এমন একটা সংক্ষার বন্ধমূল আছে যে
যদি কোনও সম্ব একটা ক্যাওল্ আলো জ্বলিতে জ্বলিতে
উহার প্রানীপ্র শিখাতে এক প্রকার অন্ত জ্যোতিঃ প্রকাশ
পার, অথবা বিনা কারণে (বংযুর অভাবে) প্রাণীপ্রী মাঝে
মাঝে কাঁপিয়া কাঁপিয়া কীণ রশ্মিতে জ্বলে তবে ইহা কোনও
নূতন লোকের আগ্যন স্বহনা করে।

আমাদের বাজালা দেশে এমন কোনও প্রথা আছে কি ? ক্যাণ্ডেলের নাম এবং ক্যাণ্ডেলের ব্যবহার ইংরেজ সভ্যতার সজে সঙ্গে আমাদের দেশে পদবিস্থার করিয়াছে, কাজেই ক্যাণ্ডেলের আলো নিয়া কোন সংস্থারই আমাদের দেশে দৃষ্ট মূল হইতে পারে না। তবে শুনা বার বার্লালা লেশের কোন কোনও স্থানে এমন একটা ধারণা নাকি লোকের মনে কাশুক্রক আছে বে ভিলের তৈল বা সরিবা তৈলের ( বেহ প্রাথের ) আলোর বর্তিকাতে যদি কালো রংএর বর্তুলাকৃতি একটা 'টোপ' জরে ( যাহা প্রায়শই জরে না ) তবে নাকি উহা বারা শুভ ক্চনা হয়। সেই শুভ ক্চনাটা হাতে কলমে কেহও প্রতাক্ষ করিয়াছেন কিনা জানিনা। তথাপি ত্লনা মূলক বিষয় বলিয়া এই স্থানে প্রসন্ধক্রমে উল্লেখ না করিয়া পারিলাম না।

(২) মাতা বিস্থারন্তের জন্ম প্রস্তুত শিশু সম্ভানকে বিশিতেছেন "No my child, if it please God, you shall not begin upon Thursday (childermasday) না বৎস, ঈশ্বর না করুন, তৃথি বেন বৃহস্পতিবার বিস্থাশিক্ষা ( হাতে গড়ি ) আরম্ভ করিও না।

গ্রীরে জন্মের অল্প কতক সময় পূর্বে জেক্রজেলামের রাজা কেরন্ড তাঁহার রাজ্য মধ্যে নাকি এক্রপ আদেশ করিয়া-ছিলেন ধে একবংসর হইতে তিন বংগর বয়স্থ সমস্ত শিশুকে হত্যা করিতে হইবে। তদস্থসারে এক বৃহস্পতিবার এই হত্যাকাও সম্পাদিত হয়। সেই দিনটাকে Innocent day (= অবুঝ বালকদের হত্যার দিন) বা childermasday (Massacre of children = শিশু হত্যার দিন) বলা হয়। সেই অবধি প্রত্যেক বৃহস্পতিবারই কোন একটা শুভ কর্ম্ম আরম্ভ করিতে নিধিক।

এই ঘটনা ঘারা আমাদের মথুরাপতি কংস রাজের কথা
মনে পড়ে। তিনিও শ্রীক্ষেরে জন্মকালে নগর মধ্যে
এইরপ একটা আদেশ প্রচার করেন যে সমস্ত শিশু সন্তানকে
ডৎক্ষণাৎ হত্যা করিতে হইবে। এই প্রসঙ্গে আমরা পূতনা
রাক্ষণীর বুডান্তও অবগত আছি। কিন্তু এমন কথা
ক্ষণনও শুনি নাই যে বৃহম্পতিবার দিবস বিদ্যারন্তের জন্ত অপ্রশস্ত। যরং আমাদের (জ্যোতিষ) শান্তের মতে
বৃহম্পতিবারেই (শুক্ষবাসরে) বিদ্যারন্তের প্রশন্ত দিন
ব্লিয়া উল্লেখ আছে। যথা—

'বিদ্যারন্তে গুরু: শ্রেষ্ঠ। মধ্যমৌ ভৃগুভান্ধরো।'
কেহ কেহ এরপ ব্যাখ্যাও করিতেছেন বে বৃহশ্যক্তি
বারের শেষ ছইছোরা বারবেলারূপে উল্লিখিত বলিয়া এবং
সেই বারবেলাতে কোনও গুভকর্ম করিতে নাই বিদ্যা এডিসনের রচনার উদ্বুত উক্তির সঙ্গে আমাদের দেশের ধারণারও কতকটা সাদৃশ্য আছে। কিন্তু টীকাকারের এই

वााथा। आगात्मत निक्रे प्रमोहीन विषया मत्न हय ना ।

of The spilling of salt by chance from any one's hand forebodes some sort of disaster. অৰ্থং (কাহাকেও লবণ দেওয়ার কালে) কাহারও হাত হইতে বা ভাও ২ইতে যদি হঠাৎ সেই শ্বশ মাটিতে পডিয়া যায় তবে ইছাও নাকি মহা অভভের শক্ষণ 📔 কোন ও গৃহক্রীর নিকট মিষ্টার এডিগন স্বয়ংই এই বিবয়ে অপরাধী হুইয়াছিলেন। গুরুক্তী স্বামীর নিক্ট বলিভেছেন "হায় হার, বিপদের উপত্র বিপদ। রাত্তিতে কি কুম্মইটা না দেখিলাম, ভোর হইতে না হইতেই ক্যাণ্ডেলের অভিথি আসিয়া উপস্থিত, অথচ ছেলেটাও বৃহম্পতিবার দিন্ বিখ্যারন্তে যাত্রা করিয়াছিণ; আর তার উপর এই নবীন অতিথি লবণ গুলি আমায় উপর নিক্ষেপ করলে ? (বস্ততঃ এই পর্যান্ত কোনঅমঙ্গলই কিছ হয় নাই। ) তবু গৃহিণী আক্ষেপের সহিত পুনর্বার বলিতে আরম্ভ করিলেন "সেই দিনের কথা তোমার মনে আছে কি-দেই দিন সাম চাকরটা টেবিলের উপর-থানিকটা লবণ ফেলিয় ঠিক সেই দিনই বৈকাল বেলায় কব্তরের টংখানা পড়িরা याम्र ।"

স্থামীও সহিধ্যিনীর কণায় সায় দিরা বলিলেন "বটো বটে, মনে আছে বৈকি, যেই দিন কবুতরের টাটো পাছিরা যায়, তার পরের দিনের ডাকেই কিক্তাশরর আদিয়াছিল বে "আল্মঞা'তে যুদ্ধ বাঁধিয়া গিয়াছে।"

পাঠকগণ! কব্তরের টং মাটতে পজিয় বাওরাটা কতদ্র অভতের চিহ্ন নিজেই অনুমান করিয়া নিবেন্। ইহাও লক্ষ্য করিতে আপত্তি নাই, বেই দিন নাকি ভ্তোহ ৰত হইতে লবণ পড়িয়া গেল তার পরের দিনের ডাকে (সেই দিনের ডাকে নর) খবর আসিল যে কোথার একটা বৃদ্ধ বাধিরাছে। অথচ বৃদ্ধ যে কোন্ তারিখে বাধিরাছে ভাষার সলেও কিন্তু লবণ পড়ার সঙ্গে কোন সম্পর্কই নাই। শীচি দিন পুর্কেও হইতে পারে তুই দিন পুর্কেও হইতে

এখন আমাদের দেশের কথা। আমাদের দেশে হাত ছুইতে গ্রণ পড়িয়া গেলে কোন অশুভের আকাজ্জা করা ইব না ৰটে; কিন্তু যদি কোনদিন কোনও বস্তু বাদংবার হস্ত ইইতে অলক্ষিত ভাবে খলিত হয় তবে আমাদের দেশের **জীলোকেরা মনে করিয়া থাকেন যে ঐদিন**্বাড়ীতে কোনও শারীর বা অভ্যাগতের আগমন হইবে। আভিবের এই উভরের মধ্যে কোনরূপ মানসিক আকর্ষণ বশতঃ পরস্পরের অঙ্গ প্রত্যুক্তে চঞ্চলতা উপস্থিত হয় কি না वनक्कित्रभाग चार्लाहना कहिर्तन। व्यामारमञ् तमत्भव ক্রিক্রক কি রমণী সম্বয়ের সধ্যেই (যদিও অশিক্ষিতেরা **ন্দ্রেট ইছার প্র**ভাব নেশী) এইরূপ একটা থেয়াল চলিয়চ আদিভেছে যে এক জনে অপরকে থাইবার জন্ম হাতে হাতে লবন দিবে না। অর্থাৎ এক ব্যক্তি নিজ হস্তে অপরের रुख्य डेलत देवन कर्णन कतित्व ना। ইহাতে নাকি িনেমকের স্বভূ" রাখিতে পারিবে না বলিয়া আত্মদকো ক্ষাপন করা হর।

ভাষা ছাড়া— আমানের দেশে একজনের উচ্ছিট পাত্রে আপরের থাওরার বিধি আছে। সপ্তান জনক জননীর পাত্রে, আমার পাত্রে, শিষ্য গুকর পাত্রে বা কনিষ্ঠ আহের (পূজনীরের) পাত্রে ভক্ষা দ্রব্য গ্রহণ করিতে পারে। ভিছালেই পাত্রের ভূকাবশিষ্ট লবণ কেহও গ্রহণ করিতে আখি। নর। উহাত্তেও নাকি 'নেমক হারামি'র আশক্ষা আহে।

এইস্থানে ইহাও উল্লেখ করা বোগ হর অপ্রাস্থিক ইটবে না বে আমাদের দেশের হিন্দ্রমণীগণ পূলনীরের উচ্ছিপ্ত বাবে আহার্থা গ্রহণ করে বটে কিন্তু কথনও ভাস্থরের ( সামীর জ্যেষ্ঠ প্রাভা বলিয়া যদিও পৃঞ্জীয় কথাপি ) তাঁহার

ভূকে পাত্রে আহার করে না। সমাজের দিক দিয়া লক্ষ্য

করিতে গেলে এই নিয়মটা বাঙ্গালী রমনীদের পক্ষে একটী
উৎক্রন্ত সঙী-ধর্ম বলিয়া পরিগণিত হইবে সন্দেহ নাই।
নিজকে পরপুরুষের সংশ্রব হইতে দ্রে রাখিবার নিমিত্ত সাধ্বী
রমণীগণ পৃজ্জীয় ভাষ্মরের ছায়াও স্পর্শ করিবে না, ভাহার
প্রসাদ নেওয়াত দ্রের কথা, হক্না তিনি এক পরিবারভূক,
হক্না তিনি স্থামীর ভ্যেষ্ঠ সংহাদর! শুধু এই একমাত্র
কারণেই আমাদের দেশের মহিলাগণ ভাষ্মরের সঙ্গে বা বরুষ
দেবরের সঙ্গে আলাপ পর্যন্তে করে না,—অভ্য পুরুষের সঙ্গে
মর্শা মিশিত দ্রেরই কথা। এই সংস্কারটা বাঙ্গাণী রমণীর
সভাতার নিদর্শন বা বর্ষরতার লক্ষণ তাহা কেহও বলিয়া
দিবেন কি ?

8। A knife (spoon ?) and a fork should not be laid cross-wise. অর্থাৎ একথানা চাকু বা চাম্চে অপর একথানা উক্ন ঠ্যাঙ্গার (প্রান্তভাগে ছই তিন্টা দাড়া যুক্ত চাম্চে) সচে বজাকারে + (cross-wise ?) স্থাপন করা নিবিদ্ধ। ইথার হেতু কি ভাষা স্বরং এডিসন ও কিছু উল্লেখ করিয়া যান নাই। আমাদের দেশে ছুড়ি চামচে দিয়া থানা থাওয়ার প্রথা নাই, কাজেই ওসম্বন্ধে কোন ভাল বা মন্দ ধারণা আসিতেই খারে না।

ে। The shooting of a star spoils a night's rest, অর্থাৎ রাত্রিতে নক্ষরপাত পরিলক্ষিত হইলে সেই রাত্রির স্থানজাই নই হয়। আমাদের দেশে নক্ষরপাত হওয়াটাকে পৃথিবীর একটা দৈবী শক্তি তিরোহিত হইল বিয়া কয়না কয়া হয়। এবং শান্তির জন্ম অর্থাৎ সেই শক্তির পুন: প্রতিষ্ঠার কন্ম ঘেই বান্তি সেই নক্ষরপাত দর্শন কয়ে সে বাদশটী বিশুদ্ধ ব্রাহ্মণের নাম ও বাদশটী ক্লের নাম উচ্চারণ কয়ে। ইহার ভিতর কোনও গুড় রহস্ম রহিয়াছে কিনা কে বলিবে ? প্রকৃত পক্ষেই নক্ষরপাত হইল কিংবা অপর কোনও জ্যোতিষ্ক পদার্থের স্পানন পরিলক্ষিত হইল তাহারই ঠিকানা নাই তবু তাহা নিয়া মাথা মামান ক্ষেন

উদ্ধাপাতে পৃথিবীতে কিছু না কিছু উপদ্ৰব সংষ্টিত চয়ই— ভাষা আমরা জানি, কিন্তু উদ্বাপাত ও নক্ষত্রপাত (shooting of star) এক কপা কিনা বালতে পারিব না। মেথের গর্জনে কাছারও কাছারও মাপাণরা রোগ উপস্থিত হয় এবং রাত্রিতে স্থনিদ্রা হর না সেই থবর বোধহয় অনেকেই রাথেন। এমন কি দিবা ও রাত্রির দন্ধি সময়ে মেঘ গর্জন ছইলে শাস্ত্রচিস্তা ও গভীরতত্বের আলোচনা নিষিদ্ধ; এই কথা আমাদের ব্রাহ্মণ পশুত সমাজে বছ দিন অবধিই চলিয়া আদিতেছে।

স্থা ও চল্লের চতুম্পার্শ্বে মণ্ডলাকারে যদি কোনও একটা বর্ত্ত্রাক্ষতি রেখা দৃষ্ট হয় তবে কেহ কেহ অফুমান করেন যে কোনও দেশে নৃতন রাজা হইতেছে, এবং তল্লিমিত্ত আকাশে (স্থানি ?) ধর্ম্ম-সভা বসিয়াছে। এই পারণার মূলে বৈজ্ঞানিক তত্ত্ব কিছুই নাই বরং বিজ্ঞানের অপলাপই করা হইয়াছে।
স্থা ও চল্লের চারিধারে নানা বর্ণর মণ্ডল লক্ষিত হইলে উহা আকাশে মেঘ্ সঞ্চয়ের স্চনা করে মাত্র।

The screaming of a screech owl at midnight alarms a family more than a band of robbers. মধারাত্তে পেচকের অব্যক্ত ধ্বনি দমার ভীষণ গর্জন হইতেও অধিকতর কানে বাজে। এই উক্তির সঙ্গে আমাদের দেশের উক্তিরও গৌসাদৃশ্য আছে। এ কথা ব্দবশ্যই স্বীকার্য্য যে মধারাত্রিতেই হউক বা পূর্বে রাত্রিতেই অপবা শেষ রাত্তিতেই হউক পেচকের জাতীয় ডাকে নে **डाकिरवर्डे किन्छ के एनहक यांग कान व वाड़ीत मः नध वृक्त वा** অপর কোনও সমিহিত স্থানে ব্দিয়া কর্কশ রব করিতে থাকে তবে সেই বাড়ীর ভবিষ্যৎ অমঙ্গণ আশঙ্কা করা হয়। পেচকের স্থায় আফুডি বিশিষ্ট অপর একটা বড জাতীয় পাখী ( হেতোম ভূতোম = হুতোম পাঁ। চা) আছে। উহার ডাকেও ভাবী অংশ ভ শব্ধিত হয়। দিবাভাগে শিবাধ্বনি বা বাজিতে वात्रम त्रव वश्व छ्टे (मध्मत महामात्री ऋहन। करता वाखीत नीमानात्र विनवा 'हेष्टि कूर्मेन' পाथी ডाक्टि गाकित भी घरे दर बाफ़ीरक देष्ठि ( भाषांत्र ) वा कूढ़े (भव का नामन इटेंदन कारो ुब्बा यात्र ।

The voice of a cricket (worm) hath struck more terror than the roaring of a lion. The ticking of a death—watch (insect) and the whinning of a dog are all evils in some way or another. অর্থাৎ শুবুরে পোকা, গলাকজিল, পু অন্তান্ত তুই এক প্রকারের ঝিঝি (ঝিলী) পোকা যদি অফুট ধ্বনি করে তবে উচাও শুভ লক্ষণ নহে। একদিন প্রবীণ গরণের একটা রমণী গৃহ কুরুরের 'ঘেট ঘেট' শুনিয়া নাকি দাঁতের ব্যাণায় কাতর হইয়া পড়িয়াছিলেন, এবং কুকুরের ডাকই যে সেই দাঁতের ব্যাণার কারণ এবং ইহাতে যে ইনি প্রাণিও হারাইতে পারেন ততদ্ব পর্যান্ত তাহার ছালিক্তা উপস্থিত হইয়াছিল। বস্তুতঃ কে কোণায় শুনিয়াছেন বে দাঁতের ব্যাণায় মানুষ্ মরে ?

व्यामारमंत्र रमर्ग्य मितार्छ नितात स्वभित्र कथा शृर्खिहै বলিয়াছি। এইকণ টিক্টিকির ভাকের ফল সংক্রেপে কিছ বলিব। তুইটা দলের মধ্যে বা তুইটা লোকের মধ্যে পরস্পর কণোপফথন হইতেছে এবং এক পক্ষ নিজের উল্লের দৃঢ়তা প্রতিপাদন করিতে চেষ্টা করিতেছে ঠিক দেই সময়ে যদি সমীপে টিকটিকির ধ্বনি হব তবে তাহার উক্তিটী বে বস্তুতই সত্য তাহাই ধরিয়া নিতে হইবে কেন'না টিকটিকির টিকটিক ধ্বনিতেই সভা ! সভা !! প্রমাণিত হইয়া গেল ! এটাত গেল উল্ফির দৃত্তা (affirmation) প্রতিপাদ্ধের কথা। বাক্যের বিপরীত মর্থ (negation) প্রতিপাদনের বেলায়ও ত্রুপ সংস্থার। সাধারণত: যাতা সময়ে ঠাচি শুনিলেই অক্ত স্চিত হয়। সেই হাঁচি যদি সন্দির হাটি হয় অথবা উপৰ্যাপত্নি যদি তিন চারিবার ইণ্ট পড়ে ভবে कानक्रण यन कन कहात किया जाहात है सिथ गाहें। আধুনিক কেছ কেছ বলিতে চান, একবারের হাচিতেই বাজার বাধা, ছই বাবে বিধি, তিনবারে কার্যাসিদ্ধি। বাত্র। প্রসঙ্গে क्रमन **करमक कथा**ई वला साईएड शादा। जिन बाक्स अब একত্র যাত্রা নিক্ষণ কিন্তু চারি ব্রহ্মণে শুভকর, পঞ্চ ব্রহ্মণ रहेदा ७ कथारे नारे

যাত্রাকালে বামদিকে হ'দ কোনও পাণীর ভাক শুনা বার্ম, অপবা সমুখের বৃক্ষদকল নবপল্লবশেভিত থাকে অথবা আয়ু বদি অফুকুলে প্রবাহিত হয় ভবেই সেই যাত্রা শুভিশংসিমী।

ি ৰাত্তাকালে যদি বামৰপাণে শব শিব। বা পূৰ্বকুন্ত দৃষ্ট হয় অংশবাদ কিল পাৰ্শে সবংদা গাভী, বৃষ, হয়িণ বা আহ্মণ দৃষ্ট ভিন্ন তবে সেই যাত্ৰ। শুভ।

আরও আছে। গ্রমকালে যদি ত্রপানরত বংস তালী একত দেখা যায়, অথবা বৃষ, গল, অখা, দক্ষিণাবর্ত্ত,— আমি, স্থানী জী, পূর্বকুস্ত, ত্রাহ্মণ, রাজা, বেশ্যা, ফুলের মালা, শিতাকা, সন্যঃমাংস, স্থাচ, দধি, মধু, রূপা, সোণা, আমন ধান, এই সমস্ত ক্রথের বে কোনটী পরিদৃষ্ট হয় অথবা অপরের সুখে যদি উহার কোনও একটীর নান শুনা যায় কিংবা নিজে শাঠ করা যায় তবে যিনি যাত্রা করিতেছেন তিনি নিশ্চিতই ক্রাক্ষণকাম হইবেন।

ৰ্যান্তার প্রতিধন্ধকও কতকগুলি বচনের উল্লেখ আছে জীসমল্প প্রকাশ করিয়া আমি সরণপ্রাণ শান্ত্রবিশ্বাসীদিগের জানে সক্ষেত্র (শুচিবাই) চুকাইয়া দিতে ইচ্ছা করিনা।

্রত্বকণ জোদেক এভিসনের উল্লিখিত শেষ গুইটা ্সংখ্যার সকলের নিকট উপস্থাপিত করিতেছি।

(৮) I have seen a man in love grow pale and lose his appetite upon the plucking of a merry thought. সিং এ উপন্ বলিতেছেন ভালবাসায় শিছিয়া একবাজি রুশ হট্যা ঘাইতেছে এবং তাহার শিছিয়া একবাজি রুশ হট্যাছে ট্রা তিনি দেখিয়াছেন। এই সম্বাদ্ধ সেই দেশে নাকি অছ্ত একটা নিয়ম প্রচলিত আছে। একই রুমণীর প্রতি অত্বক্ত অইজন পুরুষ কোনও কুরুটের একটা কথা অত্ব হতে নিয়া অইজনে অইদিকে টানটোনি করিতে পাতে। ফলে হাড়টা ভাজিয়া যায়। ক্রিটোনি করিতে পাতে। ফলে হাড়টা ভাজিয়া যায়। ক্রিটোনি করিতে পোলে। আন বার হাতে লখা টুক্রাটা রুশি ভাছার দশাত বুনিভেই পারা বার। কি বাহিরে কি

ভিতরে কোথাও তার শান্তি শাই, রাত্রিতে নিজা নাই, থাইলে হজন হরনা, শরীর কুশ, চক্ষু: কোটরপত, বিরহের সমস্ত লক্ষণ তাহার মধ্যে প্রকাশিত।—সামাদের ইনেশে কিন্তু এমন কোনও আজগুরি নিয়ম আজ পর্যান্তও পদবিস্থার করে নাই।

৯। এডিদন বলিভেছেন এক দিন তিনি নিম্নাণ বকার্থ কোনও এক বাড়ীতে উপস্থিত হন। আরও ছই চার জন ভদ্রশাক ও ভদ্রমহিলা সেই বাডীতে উপন্থিত ছিল। এমন সময় জানৈক রমণী গণনা করিয়া দেখেন যে সেইস্থানে স্ত্রী ও পুক্ষে তেরজন লোক উপস্থিত! কি সর্বনাশ। তেরজনের সমধায়ে একজনের মৃত্যু যে অবশান্তাবী! কি ব্যবস্থা করা যায়। সকলেই প্রমাদ গণিল। এবং সেই স্থালন হটতে গুই এক জন লোক চলিয়া যাইতে ইচ্ছা করিলেন। এনন সময় কবি এডিসনের একবন্ধ বলিয়া छेठितन य गारेष्ठः गारेष्ठः : व्यापनात्रा कि कारनन ना स्व শ্রীমতী ---- মাসন্ধ প্রাস্থা। স্বতরাং তাহার গর্ভস্কিত দন্তানটা দহ আমরা সকলে মিলিয়া চৌদ হইয়াছি; তারোদশ স্মিলনের কোন আশ্স্কাই নাই। তথ্ন স্কলের মধ্যে এক অট্রাস্যের রোল বভিয়া গেল। বেই ছলে এক ব্যক্তির মৃত্য হওয়ার সম্ভাবনা ছিল সেইস্থলে একবাজির জন্ম হইবে বলিয়া ভিত্তীক্ষত হুটল ৷ ইহাকে কি ভ্ৰাস্ত সংস্কার বলিব না "শুটিবাই" আখ্যা প্রদান করিব ?

সংক্ষাত ও বাজালা সাহিত্যের মধাদিয়া আমরা বে সমস্ত সংস্থারের সঙ্গে পরিভিত্ত, তন্মধ্যে যাত্রাকালীন পাণীর ডাক অঞ্কুল বাডাস প্রভৃতি যে অন্যতম তাহা আমরা পুর্বেই উল্লেখ করিয়াছি। অবোধ্যাধিপতি দশর্থের পুত্র জীরানচন্দ্র ব্যানি বিশাসিত্রের সঙ্গে রাক্ষ্যদল-দলনার্থ দওকারণ্যে যাত্রা করিতেছিলেন তথন কবি ভর্তৃহরি তাঁহার প্রণীত ভটিনাবের পাথীর ভাকের ক্যা উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন।

এই স্থানে অপর একটা সাহিত্যিক-সংস্থারও উল্লেখ করা প্রয়েকেন মনে করি। পুরুষ ও নারীতেদে শরীরের স্থানবিশেষের পারণ ও ভাবী ফলাফল নির্মারণ করিব পাকে। পুক্ষের দক্ষিণ অল স্পাক্ষিত হইলে পদ্ধী বা কাহি লাভ, বামঅল স্পাক্ষিত হইলে অমলন। স্ত্রীলোকের ভাবিপরীত (vice versa)।

আমরা কিন্তু বাজ্পেন্দন অপেকা চক্ষুর স্থাননট মাবে মাবে অনুভব করিয়া থাকি। যাক্, এ সমস্ত অবাস্থর কথা পরিত্যাগ করিয়া আবার বক্তব্য বিষয়েরই অনুসরণ করা যাউক।

বালালার কোন কোন স্থানে এমন একটা সংস্কার বলবান আছে যে বহু দুরদেশে থাকিরা একব্যক্তি যদি নিজের অজ্ঞাতসারে অপর এক ঘনিষ্ঠ আত্মীয়ের নাম মুখে উচ্চারণ करत्र छत्व रमष्टे छेक्रांत्रिक वाक्ति रा करत्रक मिन गांवर অনাহাত্রে আছে তাহাই কল্পনায় ধরিয়া নে ওয়া হয়। মনে করুন বিদেশে থাকিয়া ছেলে অর্থ উপার্জন করিতেছে। জননী গুরুকর্ম ব্যুপদেশে অপর একটা কলাকে ডাক দেওয়ার **কালে ভুলক্রমে বিদেশের** থেই ছেলেটাকে নাম ধরিয়া ডাকিয়া ঞ্লিলেন। তথন জননী বড় বিষয় ১ইয়াই ছঃথ প্রকাশ করিবেন 'কাহা বাছার আমার পেটে কুণা।'' সেই ছেলেটী তথন প্রায় উপবাদী আছে ধরিয়া নে হয়। দেই সময়টায় যদি বেলা ১২টাও বাজিয়া গিয়া পাকে তবু জননীর অস্তরাত্মা বলিয়া দেব যে ছেলের হন্ত আলে কোনও কারণে এখন পর্যায় খাওয়া হয় নাই। কে জানে ইহার মধ্যে কোনও সভা নিহিত রহিয়াছে কিলা। ভবে বর্ত্তমান সময় কেচ কেচ নাকি ইহা প্রমাণ করিছে (6ही कविशाहिन या यनि इटेंडी वक्तु मर्भा अर्थवा इंटेडन আত্মীয়ের মধ্যে উভয়েই বহুদুরে বাদকরে এবং কোনও প্রস্কুর বাড়ীত যদি এক বন্ধু অপর বন্ধুর নাম হঠাৎ মথে উচ্চারণ করিয়া ফেলে বা ভাহার বিষয় চিন্তা করে ভবে টেলিগ্রাম दाরা জানা গিয়াছে যে ঠিক সেই দিনের সেই মৃত্রুপ্ত অপর বন্ধুটাও বিদেশত সেই বন্ধুর চিম্বার কড়িত • किए। मताविकातित आण्ठेश निष्मंत नर्शक १ हेशक ह ্বলেম্মের গতি ও মান্সিক মাকর্ষণ।

গভীর রাতিতে বংশীধর নিজনিশে নানি গার্জনীর গার্জনীর গার্জনীর গার্জনীর গার্জনীর গার্জনীর প্রধান হৈ হার্জনীর আবাদ। কামরা শেষ মত্তের পক্ষপাতী। কেননা শুনিতে পাই সর্প নাকি বাশীর মধুর রব বছরী ভালবাদে। তাই বুঝি সাপ্ডিয়াগণ বংশীকানির বলেই স্প্নিণ্ডে এত সহজে নিক্টস্ত করিলা থাকে।

ভান্সা কাঁসবের ধ্বনিতে নাকি বাড়ী হ**ইতে বন্ধী** (ঞ্জী ৭ সম্পদ) পলাইয়া যাত্ৰ। কথাটার একটা **স্বর্থ হইতে** পারে এই—বাড়ীতে সক্ষদা ভান্সা জিনিব ব্যবহার করা দহিত্যতার চিন্ধা।

নিজার প্রবল ত'জুনার বিমাইতে বিমাইতে একবার্থি যদি অপর এক ব্যক্তির গায় চলিয়া পড়ে তবে সহংসর্থের মধ্যেই নাকি এতত্ত্তরের মধ্যে একজনের প্রাণহানির সম্ভাবনা থাকে। প্রচাচ্যোকে তিল বা সোনা দান করিছা অথবা কুলপুরোহিতকে ভোলা ও দকিলা প্রদান করিয়া উপরি বর্ণিত পাপের আদেনণ হইতে অব্যাহতি পার্যার বিধানও বহিয়াছে।

কেইও হাঁচি দিবার কালে অপর একবান্তি বদি উঠা জনে তবে, ইনি প্রভাক ই'টির সঙ্গে 'কৌব কীবং' ''কীবছু' বলিয়া আশালাদ কবিল পাকেন। হাঁচি দেওবার সঙ্গে সঙ্গেও কি অধ্যক্ষণের মন্তাবনা আছে ?

প্রীয়ন্তেন্দ্রমোচন কাবাড়ীর্থ, সিদ্ধান্তবাগীশ।

# সফল দঙ্গীত।

আজিকে গামায়ে দিয়ে সংস্থারের যত কোনাছৰ,
ভারে মোর প্রাণ।
স্থাভীর ক্ষভার মাঝে বসি আনক্ষে বিভগ্
ভূমি গাহ গান,

ভোষারি সঞ্চীত তানে আজি ওরে আহক ভাসিয়া স্থপনের রাজা হতে, দিশি দিশ হস্ততা রচিয়া मृत् चुम (चात्र,

মানবের আঁথি ভাষা

হয়ে ষাক আজি হারা 1.4 আবেশ বিভোর।

দিবসের কর্মময় বিখব্যাপী জাগ্রত স্পন্দন शीख शीख शीख একটা নিশার তরে কর তুই আজি বিদর্জন স্কুতার নীরে. ঐ উর্দ্ধে মহাকাশে চন্দ্রপুরে রয়েছে জাগিয়া বিশাল নক্ষত্ৰ সভা ভোৱি গান শুনিবে বলিয়া व्यात्मान विकल,

ব্দাকি ভূই থামা ওৱে

মোদের এ বিশ্বপুরে

ব্যথকোলাইল।

তোরি গীতি সুর্টুকু বহি ওরে রজনী বিষোরা মৌন প্রপ্রিলীন। छै (के छे (के भग्न विश्वव भज्जन वाहि। द्रमारम्ब धन्ने विद्व উর্দ্ধে উর্দ্ধে অভিউদ্ধে, আরোউঞ্জে, উর্দ্ধে দীমাহারা বাজাইয়া বীন মহা বিশ্ববাপ্তি করি, তোরি গানে তুলিয়া দোহার মঞ্জল যাচিয়া নিয়া ছার হতে বিশ্ব দেবভার শান্তি প্রাতিময়,

যেনরে দানিতে পারে সাভাগ অভয়।

উज्जन जारगांक यही व्यक्तिकात এ योग त्रवनी মায়ামন্ত্ৰ ঘোৱা চতুদ্দশ বিশ্ব থঁজি আনি' ল'বে দীপ্ততম মনি वर्ग करना करा। ওরে প্রাণ, ভুই ভারে দেবভার আণীকান সম

नड नित्र वित्र गर्य (मेर छात्र शकानि मञ्जूम मान(बद्र छद्र,

মানবের সভামাঝে

बेबीए मक्न कार्य

थान मिति शाहा।

ওরে প্রাণ, তবে তোর আঞ্চীবন সঙ্গীত সাধনা পদ্মিপূর্ণ ভবে

তোরি তরে করে দেবে যোগ্যতম আসন রচনা সফল গৌরবে

দ্বণা মানি শুপ্ত করি ধরা হতে ওরে তোর স্থর शांभित जानम बाका विश्ववात्व भूगत्क काइत,

ওরে মোর প্রাণ া

खदर्शत भारत ८५८व আশা ভরা প্রাণ লয়ে তুমি গাই পান।

क्तोधूती श्रीहिङ्गा (प्रविवर्षा।

# ( ৬ রায় অভয়াচরণ চৌধুরী ) •

উন'বংশ শত্রাকীর মধাভাগে যথন এতদেশে সাহিত্যের গতি অভান্ত মনীভূত হট্যাছিল, যথন বল সংখ্যক পাঁচালী পুথি ইত্যাদি তথা বিধ গ্রন্থনিচয়ের সহায়তা মাত্র লাভ করিয়া সাধারণের মধ্যে কোনও কাবাপিপাস্থ চিত্ত আপন আপন কাব্যামূত রুগাস্বাদের চরম সার্থকতা শুরূপ জ্ঞান করিয়া পর্ম পরিত্থি লাভ করিতেন, তথন সাহিত্যের সেই শ্বরপরিসর ক্ষেত্রে চট্টগ্রামের যে তুই একজন প্রতিভাবান পুরুষ, তৎকাশীন लाक माहिका गर्रत वित्वय भारमानिका प्रयाहेशाहित्वन. ज्यात्मा कमुत्रवीत्मत्र उथा मग्छा ठछ्न शामात्मंत व्हार्य महान 🗸 রাধ অভয়াচরণ চৌধুরী অন্তত্য ছিলেন।

কধুরদীল সাহিত্য সন্তার ১১শ বার্ষিক উৎসবে পঠিত ।

তৎকালীন চট্টল স্থানের যে করেকটা কারস্থ পরিবার মূর্বমান রাজনের অভ্যানর কাল হইছে, আপনার বৈশিষ্ঠ রক্ষা করিয়া আসিতেছিল, তাহাদেরই একটাতে খৃঃ ১৮০১ অবে ডিনি অন্মগ্রহণ করেন। তাহার অন্মপন্নী কর্মপন্নী কর্মপন্নী উন্নতির কেন্দ্রভূমি ছিল বলিয়া জানা যার। কর্ম্বনীলের বিখ্যাত ৮ রায় কীর্ত্তি নারামণ চৌধুরীর ইতিহাস-বিশ্রুত পরিবার তাহার মত স্থপুত্র লাভ করিয়া সম্ধিক গৌরবাধিত হইয়া উঠে।

ৰাল্যকীবনে নানা বৈচিত্তোর ভিতর দিয়া অগ্রসর চইয়া
১৯ বংসর বর:ক্রমকালে তিনি বিদ্যাশিকা সমাপন করেন।
তৎকালীন বঙ্গ সভ্যতার অভ্যতম কেন্দ্র ঢাকা নগরী হইতে
ভিনি "ওকাণতী" পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইরা সর্বাপ্রথম স্থান
ক্ষাধিকার করেন।

क्षिड चाह्न, अकान ही वाबमारत निवृक्त शहेशा छेखत মাউজানে অবস্থানকালীন তিনি স্বাপ্থিম সাহিত্য সাধনার প্রায়ুত্ত হন। এই সময়েই তিনি তথার স্থরচিত দক্ষয়জ্ঞ माहेत्कत्र चाडिनत्र करतन । वना वाह्ना, उर्पूर्व्स हर्देशःम ৰাদী কৰ্ত্ৰক স্থাপ কোনও অমুষ্ঠান হইয়াছে বলিয়া জানা माहै। कनकः, देशांक कांशांत्र अभाशांश्विम ठकूर्णितक এकरे ্বিকীৰ্বইয়া পড়ে যে, তৎকাণীন জল আদালতের হেড্কার্ক স্থনামণক গীতিবাদ্য নিপুন ৮ খ্রামাচরণ থান্তগিরী মহাশায়েব ঐকাল্পিকভার তাঁছাকে অবশেষে সদরে উঠিয়া আসিতে ধ্র। এখানে আদিয়া তিনি "বারিকা-মিলন," "ব্রজবিহার" গ্রভৃতি আরো ক্ষেক্থানি গীতিনাট্য রচনা করিয়া শ্রামাচরণ সহযোগে অভিনয়াদি করেন। মোবারেক আলী থার একমাত্র কন্তার বিবাহ উৎপরে ভারতবর্ধের বিভিন্ন প্রাস্তাদেশাগত বহুসংখ্যক শ্রেণ্ডবর্গের স্থিপনে এবং আনোদ অনুষ্ঠানের বিপুরকোত্র উচ্ছার"বারিকা भिन्न" अভिनंत (र नमाक नकन এवर ठिखित्नामरनत वाश्रुल मामधी हहेगाहिन, उन्हा आहीनात्मत्र मूर्य व्यक्ति व क्ष इस. बारः नवीनत्तत्र निक्षे अक न्यक्षी उद्घे काहिनी 

আন্দুল করিম সাহিত্যবিশার্থীন মহোদর লোকমুবে প্রক্রে ইইরা সাহিত্য ক্ষেত্রে স্থারী করিবার নানসে উক্ত নাটকাবলীর অন্তর্ভুক্ত কভিপর গান সংগ্রহ করিরা 'প্রাচীন কবির গান'' শীর্ষক একাধিক প্রবন্ধে কল্লিকাভার বিখ্যাত পান্ধিক পত্রিকা 'সাম্বিননীতে' প্রকাশ করিয়া আমাদের অশেষ গন্তবাদ ভারেন ইইরাছেন। প্রদেষ শীষ্ক অথিকচন্দ্র নাগ মহাশন্ধের স্বৃত্তি ইইতে, আমিও যে কয়েকটা সংগ্রহ করিয়াছি, তথা হইতে ত্র' একটীর উল্লেখ করিয়া আপনাদের চিত্ত বিনোদন করিছে চেষ্টা করিব। ভাঁছার "ব্রঞ্বিহারের" রাধিকার সুথে :—

"প্রামের বংশীধবনি শুনে ধনি শ্বহে বৈতে নারি।
শুনগো চিতে, ন্তিরচিতে, রসময় বাজায় বাশরী।

ইধর্য না ধরি শুনে বাশরী,—

চল স্থী যাই জীবন ভূড়াই ব্রেক্স জীবন হৈরি।
স্থাহা ম্রি মরি প্রোণে মরি—
স্থামার কাল হৈল সোহন বাশী, সহচরি।

গুই শোন বিপিনে বাজে শ্রামের বাশরী। "' ১॥
স্থাবা—''ধারিকা মিলনো'র—

"শুন প্রাণস্ট, দৈগ্য কিসে স্ট,

যতন করে আর রাখিতে নারি স্ট,

ইইয়ে (१) পরবাসে এ তুদ্ধ-আকাসে

অভাগিনীর বাসে এলোনারে সই ॥

বৈধুর পরশে নিকুল্ল নিবাসে

অথের নিশিদিন গেছে অনারাসে,

(এথন) বিনে সে তিভঙ্গ বিচ্ছেন ভূজঙ্গ,

দংশিতেছে অল, সই, কিসে সই '॥২॥

কৈছা—"চরণ ধরি ননদী গো, হৃংথের নদী কররে পার।

দেপে আসি কুক্তেতে কুক্তগন, জীবন রাধার।

আল্ল পতি যে বাগ্য ভোমারে।

ভাম প্রতি যে রাগ ভোমারে।
সম্প্রতি আজ ক্ষমা করে।
মোর প্রতি করণা করে।
নয়ন দিরাও একবার ॥
দেখাও বদি ব্রক্ষের জীবন



भाव जीवन हरत जीवन, कु:च मरत्रक द्वारत जीवन जीवरनत जीवन द्वारादा"॥ शा

ইডাাদি গানের ভিতর দিয়া আমরা ব্বিতে পারি এই

শবির অনুভূতিতে রাধিকার ব্যাকুলতা কি ভাবে ধরা
পাড়িরাছিল। বর্ত্তমানের অধিকাংশ প্রাণহীন কাব্য-সাহিত্যের
শহিত তুলনার এই সমুদ্র গানের স্থান কোথায় রচিত হইতে
শারে, ভাহার বিচার আপনাদের উপরই গ্রন্ত হইতেছে।

প্রাচীন সাহিত্যারুশীগনের অপ্রতিহনী সমাট প্রদ্ধের শুকী আক্ল করিম সাহিত্য-বিশারদ মহোদয়ও তাঁহার **অভাবসিদ্ধ অমুসন্ধিৎসার** বলে এবস্থিধ প্রায় তিরিশটী সঙ্গীত সংগ্রহ করিয়াছেন। তৎসম্বন্ধে তিনি যে অভিমন্ত প্রকাশ ক্রিয়াছেন, সাহিত্য ক্ষেত্রে তাঁহার মূল্য কত অধিক, তাহা, **শুর্তমান বঙ্গদাহিত্যে মুক্সী দাহেবের প্রতিপত্তির বিষয় থাহারা** আরগত আছেন, তাঁহারাই বুবিতে পারিবেন। তিনি বিধিতেছেন," সংগৃহীত কয়েকটা গান হইতে বুঝা যায়, যথন খাংলা সাহিত্যের গতি অপেকাকত শিখিল এবং অনিয়ম্ভিত ছিল, তথনো কেমন অসলত বৈক্ষৰ কবিতার মাধুরীমভিত **নীতিনাট্য এতদেশবাসী কর্তৃক** রচিত এবং অভিনীত হইয়া লোক সাহিত্য সংগঠনে সহায়তা করিয়াছিল।" আমার নিজের বিবেচনায়ও কবি কৃষ্ণক্ষণ গোস্বামী প্রমুপ শ্রেষ্ঠ বৈষ্ণৰ কবিগণের কাব্যপ্রতিভা এবং বক্ষামান বিষয়ের নায়ক 🛩 রার অভয়াচরণের কাব্য প্রতিভা সমশ্রেণীর বলিয়া মনে अस । छित्रात्म कृष्टे वरमत काल वानकात्रकीरवत कार्या कृतिया ক্তিনি বখন কুমিলার মুক্তেফি পদ গ্রহণ করেন, তৎকালে শক্তিভূদীননে এবং গ্রন্থ সংক্রানে সমধিক সনোনিবেদ করেন। ত্মিপুরা নিবাদী জনৈক ভণ্ডগোক শ্রীযুক্ত কেদার নাথ প্রাপোধ্যার মহাশয় ''রায় অভয়াচরণ চৌধুরীর জীবন কথা'' নাম দিয়া বদ বিখাত 'বিশ্বমতী' পত্তিকায় তাঁহার জীবনের শ্রীনা গৌরবনর কাছিনী প্রকাশ করিয়া আমাদের ক্রভজতা-कांचन व्हेत्राटकन ।

কুমিয়ার কিছুকাণ "মুকোফি" করার পর তিনি সবজন্মের ক্ষেক উন্নীত হন, এবং মৃত্যুর অব্যবহিত্ত পূর্বেই বৃঃ ১৮৭১ অব্দের শেষ ভাগে রংপুরের অন্থায়ী জেলা জজের পদ প্রাপ্ত ইইরা ১॥ মাস কার্যা করার পর ত্রস্ত পৃষ্ঠত্রণ রোগে ইইলীলা সধ্বরণ করেন। রাজকার্যা বাপদেশে এবং পিভামহের বিস্তৃত অমীদারীর উত্তরাধিকারীত্বে তিনি পর্য্যাপ্ত উপার্জ্ঞন করিরাছিলেন এবং বিপুল অর্থবারে নানাস্থান ইইতে খ্যাতনামা পণ্ডিতমণ্ডলী আনয়ন করিয়া অসংখ্য গ্রন্থাদি সংকলন এবং সংগ্রহ করিয়া এই দেশের জক্ত একটা বিরাট প্রকাশের রাখিয়া গিয়াছিলেন, ফলতঃ এভদর্থে তিনি নিজেকে নিঃম্ব করিয়া গিয়াছিলেন বলিলেও অভ্যুক্তি হয়না।

কিন্তু আজ আমি এই খানেই ক্ষান্ত হইব। আমার হাতে তাঁগার সংগৃহীত অনধিক দেড়শত পুঁলি এখনো বর্ত্তমান আছে। ধাদ কোনও দিন স্থবিধা পাই, তবে আপনাদের সনক্ষে আবার ভাগে প্রকাশ করিতে চেষ্টা করিব। আজ তাঁগারই বদেশে, বাণী পুজার মিশন অফুটানে আমরা ভাগার আশীকাদ ডিক্লা করিয়া ইহার সম্পূর্ণ সকলত। কামনা করি।

होर्दी औ अगव शेशनाम (मनवर्षा I

## থাকু দে বিচার।

2

কারে বেশী ভালবাসি পাক্সে বিচার!
আমি জানি গঙ্গা গোরী হ'জনা জামার!
হ'জনার বক্ষোময়
বেং অমিয় উপলয়,
নিময় হইয়া ভায় ভূলিই সংসার!
কারে বেশী ভালবাসি পাক্সে বিচার !

কারে বেশী ভালবাসি কি হবে বিচারে ? আমি যে প্রেছি ধন্য পেরে ছ'লনারে ! শুণানে মশানে বাস্ক ভারা ভো ছাড়েনা পাশ,
ভাপনা বিশ্বতা ক্থী করিতে আমারে !
ভারে বেশী ভালবাসি কি হবে বিচারে !

٠

কারে বেশী ভালবাসি বিচার কৈ করে !
মার করে দীেছে কত সয় অকাতরে !
ভূত প্রেত সাগী মোর,
রহি যে নেশায় ভোর,
তবু তারা নিশিদিনতোবে সমাদরে !
কারে বেশী ভালবাসি নিচার কে করে !

8

কারে বেশী ভালবাসি বিচারে কি ফল!
ত্ব চিত্ত করে দোঁতে পীযুষ শীতল!
আমি তাই অবিচারে
ভালবাসি হ'জনারে,
পারি করিবারে পান তীত্র হলাহল!
কারে পেশী ভালবাসি বিচারে কি ফল!

विकोरवसक्षात मछ।

#### ''দে কাল এ কাল''।

সে কাল এ কাল। = ঐচিক্রশেশর কর প্রনীত। পরারে লিখিত কুল পুস্থিকা। মূলা চারি আনা। কিন্ত প্রছ্থানি কেল-কাল্-পাত্রের হিসাবে অম্ল্য।

সে কাল্ এ কালের রচনা স্থানর। রচনার উদ্ধেপ্ত আরও
ক্ষার। বে সভাবে অনুপ্রাণিত হইরা সন্থার কর মহাশর
সে কালের গহিত এ কালের তুলনা করিয়া সে কালের পৰিত্র
শ্বিতির উদ্বোধন করিয়াছেন, তাহা সন্ধাপেকা স্থানর।

গ্রন্থের পরিচয় দিবার পূর্বে গ্রন্থকারের ছবি মুদ্ পড়িভেছে। চজ্রদেশর বাবু এ কালের লোক कि त्म कारमत्र हैं रह होना। हल्रामध्य कन्न नारम 'वावू, कि মনে সেকেলে পণ্ডিত। চন্ত্রশেখর বাবু এ কালের শিক্ষার . শিক্ষিত, কিন্তু সে কালের দীকার দীকিত। তিনি ধর্মতীক, भिविद्य छक्तिभावात् । एक (कटन हिन्सू। **हक्यानंबद बायू**) হাকিম ছিলেন, কিন্তু চিবলীবন, ধর্মের, নীভির, শাত্রের সংস্থারের ও বাঙ্গালীর সামাজিক বিস্তাদের 'ভকুম' মানিরা আসিয়াছেন। সে কাল তাঁছাকে এ কালে রাথিরাছে। এ কালেও তাঁহার জীবনের, তাঁহার সাহিত্যের অবলম্বন—সে কালের মুখমুতি। তিনি সে কালের ভাবে: ভোর। এ কালে চক্রদেখর করের গ্রাভুরেট, ভেপুট माबिट्डिं हे इस्ट्रान्थत करवेत चाविडीव, ववर छाहात दन कारनत ভাবে ভোরপুর সাছিত্যের অভ্যানর amomaly বলিয়াই मान रूप। anomaly वाहे, किन्नु क्षेत्रां प्रान, तम विवास मत्मर नारे।

চন্দ্রশেখর বাবু সে কালের উকীল, নদ্ধীর, পৌরাণিক, ও বাাখ্যাতা। এদমাজে চক্রশেখর বাবুর **উপবােগিতাও** আছে. আবশ্বতাও আছে। আমাদের নবভাব প্লাবিত বঙ্গে চম্রুশেথর বাবু প্রোতে ভাসিরা ধান নাই। ব্যেক্ত-প্ৰেডপাউডাৱের পার্ষে বিবাসিণী বক্তাসিণী-দিগের ডে্দিং 'টেবিলে' সক্ষিত এ কালের 'বিওছ' টলা-সাহিত্যের সঙ্গে চক্রশেথরের 'অনাথ বালক' ঠাই পার না বটে, কিন্তু আমাদের সমাজে তাহার স্থানাভাব হইয়াছে. এমন কথাও বলা যায় না। চফ্রলেখর বাবুর সাহিত্য বহু প্রচারিভ না হউক, তাহা বহুণ সমাদৃত বটে। তাহার বিশ্বভি অর, কিন্তু প্ৰভাব গভীর। ইহাই স্বাভাবিক। ধাসা মোধা ৰাভাগার মত বিকাইতে পারে না। ভাহার কারণ ফুম্পাই। থাসা মোভার স্থান স্বতন্ত্র। মাত্র্য গুণের আদর করে, কিন্তু .चानक मन्दर्भ 'ठिएकत्र' आहत्र श्वर्थत्त्र छात्त्रा घरते ना। डेशांख खानत नाचव इत्र ना ; खनशाशीत बाह्यखाडे यहिन **ठळरमध्य नार्व अशारमी—नामानीव निवय वय-**

केश्या - वाषामाधारम रमञ्जूष मार्ककनीम ग्रमापत नाक करत महि देशाय बाजित बातगिक देवसके एकि द्या क्राधि खेगर्य बिक्रमा, क्रहे भर्या कर्कि, क्रहे अमृत्ड विकासक क कारकर कक्षा । कहे बनाई क कामरक--नानाविश ইট্রভির আশাপ্রণ আভাবের আভার সমৃজ্জন এ কালকে আৰু ক্ষিতে হয়। অন্তঃ আম্রা ভর করি। विकान. ক্ষিন, সাহিত্য প্রভৃতির অভানরেই ভাতির উপচয়। বালানা ব্ৰুট অভাদ্যের অক্ণাভার উত্তাসিত—আশার কথা বটে। ক্ষিত্র এই অক্সাদরের ভিত্তি কি ?

ু বে মহুবাছ কাভির ভিত্তি, সে মহুযার কি আমাদের ক্ষ্মান উম্বভিত্ন সহিত সমবেগে অগ্রসর হইতে পারিতেছে ১ ্ষ্রাষ্ট্রতৈর অবদান ও ছতি কাতির নিংখাস ৪ প্রথাস। সে **্রেজনিতের স্বরূপকে আ**ময়া কি বর্তুমানের অবলম্বন করিরাচি প জতীতের সব ভাল, এবং বর্তমানের সকলমন্দ নহেই। ्रमहीएड. युन धरार्थक विद्धाधी, बहु भरवाकी, खडवार वर्ड्कनीय বিষয়ের অভাব ছিল না। অতীতের পাপেই কর্ত্যানের ्रार्थभा । किंद्र भागीराध्य शृत्मारे वर्डमात्मक कीवन ७ गवा. **জাহার সং**শীর। অতীতকে অবলমন করিবাই বর্তমানের लाजन्मचा क्रिक्ट स्त्र। পূর্ব্বপূরুষ অভীতের ভাব ও **্রের্ডানের আধার। আর, পূর্মপু**রুষের পরিণতিই উত্তর শ্বৰ জতীতের উরোধন জাতির উরোধনের জনাই ্মবেশ্যক। বিভিত্ত, পরতন্ত্র, দেশা মবোধহীন জাতির বাকে অন্তীতের প্রবণ, মনন, নিধিধ্যায়ন কেবল আবশ্যক मह, व्यवस्थितांगा।

এই জন্য সামরা "সে কাল এ কাল" নামক বোল প্রভার পুরিকার প্রসলে বোল কাহন কথার অবভারণায় ্ৰাষ্ট্ৰ হৈছি। ৰাজালায় 'বাৰো হাত কাঁকুডেৰ ক্ষেত্ৰ হাত क्षिक् वरेमारे क बानाव्य कावताव कावन । याहा "डिक: बह्नामातिह," छाहान व्यक्तात्वत स्ना सामना हमहे महासन 'नहात' श्रीक स्टेबाडि ।

আছে। বে কাৰ তাহরে আলো এ কাল কাহার ছারা।

আলোও সভ্য, ছারাও প্রভাক। ছাহা বলিয়াই ভাষা এ कांग नवाद कांव्यनायामा त्र कांग माग्रा नरहा ভঙাব ভাবুকের মনশ্চকে দেদীপামান। 'মে কালন্ত এ কালের' প্রণেতা সে কালের পক্ষপাতী: ভক্ত। छ्टें विष्यवंदे भर्तास इटेन ना। তিনি গে কালের উপাসক। চন্দ্রশেশর এই নবা বঙ্গে, নবভাবপ্রবৃদ্ধ নবপথের পথিক নবা বাঙ্গালীর সমবায়ে ও রুচির-লীলা-বিহ্বল নব-সাহিত্যে এক জন দেকাল পদ্দী। তিনি পরারে সে কালের धना चार्कि क दिशास्त्र । हेशहे अलाविक ।

সে কাল পরারেট আপনার ছবি রাখিরা গিয়াছে। ত্রিপদী, ত্রোটক, প্রভৃতি পরারের সাহচর্যা করিয়াছে। কিন্তু পদারই বাঙ্গালীর অনুষ্ঠুপ। কালীদাস, কুল্ডিবাস, কবিকঙ্কণ, খনরাম প্রভৃতির ভাবের বাহনই পরার। নে কালে প্রারই বাঙ্গালীর মানস-ভাবের মুকুর ছিল। প্রারই বাঙ্গালীর প্রতিবিশ্ব ধরিরা রাখিয়াছে ৷ সেকালপত্নী চন্দ্রপেগরও সে কালের স্মরণে পরারকেই বাহন করিয়াছেন। পূর্বেই বলিয়াভি যে, ইছাই স্বাভাবিক। এ কালের পরারে অরুচি সেকালপন্থীতে থাকিতে পারে না। আবার

> "পঞ্চপরে ভস্ম করে করেছ এ কি সন্ন্যাসী. বিশ্ব সাবে। দিয়েছ ভারে ছড়ারে।"

**এই অতৃগনীয় ছন্দের ঝহারেও চম্রশেধরের উদ্দেশ্য** দিশ্ধ হইত না। যে ছলে কু<del>তি</del>বাস কালীদাস বালালীকে মনের অমৃত পরিবেশন করিয়াছিলেন, যে ছান্দে খনরাম লিথিয়াছিলেন,---

'धूमनीत धमरकरा धूरना छेए गात', **এবং যে ছলে কবিকরণ গিপিরাছিলেন**---'তুমি থাও ঘটে জল, জামি থাই ঘাটে',

तिहे हमारे ठळालबन नातू वाहिना **महेनात्ह**मा निमेन ্যুগের অনেক বরেণ্য কবি এ ছন্দকে বয়ণ করিয়া দইয়াছেন। श्राहीन भवात नवीरमञ्ज छेशहारम हामिश्न वाकिरव, किंद ে কাল এ কয়ল" ৰাজালার ও বাজালীর ছবি খরিয়া বাহ নাই। " জীকনীখজি ছিল, ভাই বাঁচিয়া चाह्य, ध्वर नव गाहिरछा । चार्नमात्र वाजाव विकास

করিরাছে। বেবদ্জের মন্দাকান্তার বে সৌন্দর্যা :ক্টিরাছে, ধর্বা এলারেছে তার মেখনরী বেণী'তে পরার তালারই কতকটা ধরিরা রাখিরাছে। নবা বাঙ্গালার মহাক্বির কাব্যে পরার উদান্ত ভাবে ভোর ইইরা ধ্বনিত ক্রিরাছে—

'मत्न इत्र अप चि जिल्ला प्रतान ।''

চক্রশেধরের পরার সে পর্যায়ের আত্মবিশ্বত ও বিবর্তিত পরাং নছে। তাহা বাঙ্গালীর জীবনকণার অভ্যন্ত 'নেকেলে' পরার। আমাদের মনে হর, এই অন্যই চক্রশেধরের পরার সে কালের শ্বরণে এত উপযোগী ছইরাছে।

এক জন সমালোচক চন্দ্রশেধরের এই পরার পড়িরা ছলিরাছেন—"রুত্তিবাসকে মনে পড়ে।" প্রশংসা বটে, কিন্তু ভিত্তিহীন। ক্রুত্তিবাস প্রধানতঃ পরারে রামায়ণ গান করিরা পরারকে ও বাজালীকে ধন্য করিয়া গিয়াছেন সত্য, কিন্তু পরে তাঁছার পরবর্তী কবিকঙ্কণের কাব্যে তাঁছার পরারেরও বিবর্ত্ত হইয়াছিল। কুত্তিবাসে বাছার উন্মেষ, ভারত চল্লে ভাছার বিকাশ। ক্রুত্তিবাসের পয়ার ছন্দ্রশাল্রের নিগড়ে সর্বাত্ত নিয়মিত নহে। তাহা কতকটা আছি, স্বতরাং আদিমতার, চিন্তু বর্জ্বিত নহে। চল্লশেধরের পয়ার ক্রুত্তিবাস ও ভারতচল্লের মধ্যবর্ত্তী কবি-গণের পয়ারের মত বিবয়াস্থগত; ভাহাতে স্বৌরাচার নাই, বাছারা সে কালের ভক্ত, চল্লশেধরের পয়ার তাঁছাদিগকে তথ্য করিতে পারিবে।

চল্রশেশর বাবু সে কালের বড় কণার সহিত ছোট কথাও

ত্মরণ করিয়াছেন। আচার্য্য অক্ষরচন্দ্র সাহিত্য সন্মিলনের
অভিভাবণে মালেরিয়ার প্রসন্তের অবতারণা করিয়া একপ্রেণীর
উপহাস উপহার পাইয়াছিলেন; চল্রশেশরের 'সে কাল এ কাল' তাহাদিগকে নাসিক। কুঞ্চনের অবকাশে দিবে,
ইয়াও আমরা লাভ বলিয়া মনে করি। দেশ মালেরিয়ার
মুমুর্, এবং দিবাচক্ষে দেখিতেছি, সাহিত্যেও ম্যালেরিয়ার
সমস্ত উপদর্শব বর্ত্তমান। কিন্তু এই ম্যালেরিয়ারার সাহিত্যেও
ম্যালেরিয়ার উল্লেখ করিবার উপার নৃষ্টি। বে সাহিত্যেও
ম্যালেরিয়ার উল্লেখ করিবার উপার নৃষ্টি। বে সাহিত্যে সর্ক্রে ম্যালেরিরার বিবে জর্জারিত, সে সাহিত্য কল্পানসার, কীবনী শক্তি শৃক্ত। ম্যালেরিরার জীব দেশের সাহিত্যেও কারণগুলী ম্যালেরিরার প্রকোশ অবক্তন্তারী। তথাপৈ সে সাহিত্যে বলি কেহ সিন্কোনার চাব করে,নব্য বালালী ভাষাকে উপহাস করে। ইহাও এ কালের ধর্ম। কিন্তু বাহারা দেশের কল্যাণ কামনার সে উপহাসকে শিরোধার্য করেন, তাহারা আমানের নমস্তা।

শ্বে কাল এ কাল" প্রাচীন ব্ণের "কাব্যং রসাম্বর্ধং বাকাং" এই লক্ষণে উপেত মহাকাব্য নহে, থওকাব্যও নহে। ইহা পরারে রচিত, হুকৌশলে কথিত, 'তথাবিবৃতি'। সে তথ্য বালালীর অবস্থ জাতব্য। তাহা বার বার বালালীকৈ ভনাইলে ভাল হয়। গভে, পভে, যেমন ভাবে ও ভাষার হউক, আমরা বালালীকে তাহা ভনাইতে চাহি। চন্দ্রশেশর বাবু ভাহাই করিয়াছেন।

পূর্বকালে গ্রাম্য কবিরা পরারে এইরূপ অনেক উদ্দেশ্ত
সিদ্ধ করিতেন। চল্লাপেবর বাবু সেই পথের পথিক
হইরাছেন। কবিছের বিভায় বন্ধ বিভাসিত ক্ষিলার অভ্
"সে কাল এ কালের" স্টি হয় নাই। দরদী প্রস্কার
সে কালের মামুলী প্রথার বান্ধালীর শোচনীর অবস্থারত চোপে
আকুল দিরা দেখাইরা দিরাছেন। এই পুর্বভার আনি।
বিষ্ণে চ মধ্যে চ' ভাহার প্রমাণ স্কুলাই।

"নে কাল এ কালে"যদি কেছ কমণবিনাসী কবির কমণীর কবিতার বা মেঘদুতের মেঘমজের আশা করেন, নিশ্চগ্রই নিরাশ হইবেন। সে কালের পাঁচালীকার কবিরা এক কেত্রে- যে উদ্দেশ্র সিদ্ধ করিবেন, চক্রশেশর বাবৃও সেই পথে সেই উদ্দেশ্র সিদ্ধ করিবার জন্ম পরারের রেথাপাতে এই ছবি আঁকিয়াছেন। তাঁহার উদ্দেশ্র সিদ্ধ হইয়াছে।

আমাদের সাহিত্য বড় বড় কথার পূর্ণ। কিন্তু সমাজে ছোট ছোট কথারও প্রয়োজন আছে। আপাততঃ 'আমাদের বড় বড় কথার প্রীণর কথকেরা যাহাকে অত্যন্ত ছোট মনে করিয়া উপেক্ষা করিতেছেন, তাহা অনেক বড়ু কথা অপেকাও বড়, ইহা শ্বরণ করিবার সময় আসিয়াছে। দৈ দক্ষ কথা অভাস্থ ছোট বটে। কিন্ত ভাহার সমষ্টিভেই আছির বাটি গঠত হর। আর সেই ব্যষ্টির সমষ্টিই ভাতি. ইয়া বেন আমরা কথনও বিশ্বত না হট। ছায়ায় ঢাকা, পাথী ছাক। পদ্ধীবাটে গীতি কবিতার ঝন্ধার আছে, কিন্তু পদ্ধীর ৰাবিদ্রা স্থকোমল গীতি কাবা নতে, কঠোর 'ট্রাফিডী।' শুধু "(मानाव बानाना'हे कांवरवव এकमात छेनकीया वा छेकीनक মারে। তাহতে তথারও অধিকার আছে। আমরা তাঙা **র্জাণরা যাইতেছি। চল্রশেণর— উপরাণিক চল্রশেথর তারা** বিশ্বত হন নাট। তিনি উপগ্রাসে, প্রবন্ধে, এবং সেকেলে পদারে বাঙ্গাণীকে তাহা শারণ করিবার জন্ম উদ্দ **ক্রিভেছেন। "সে কাল এ কাল" তাঁগার এই ব্রভের অভাতম** উপ্ৰয়ণ- 'কুচো-নৈবেল্ব।' "সেকাল একালে" যাহা বিবৃত ্ষ্টীরাছে, চন্দ্রশেধরের সাহিত্য-সৃষ্টির তাহাই প্রাণ, 'সে কাল এ কাল' সেই ভাব প্রবাহের একটাক্দ উৰ্ণিয়, কিন্তু किर्मक्रमीय नरह।

্ৰেক্ত কালের পল্লীবাসী থেত হুণ ভাত ক্ৰেনেকে হুবেলা এবে পাতে নাক পাত ং

সে কাল এ কাল ৭ পৃষ্ঠা।

বালানার কোনও কাবাপ্রকাশে কোনও অলহারের
ক্রিনানরণ অরুপ উনাজত না নউক, উক্ত ছই পংক্তির ব্রাল
কর্পা অজ্যন্ত সভা। সেকালের সভিত এ কালের এই
অসাপৃষ্ঠ টুকু পরারের ভাষার পলীবাসীর মনে যদি মুদ্তিত
ইইরা বার, ভাহা হইলে ফাভির ল'ভ আছে। সে কালের
সহলেলভা হব ভাভ কোথার গেল • কেন গেল • এ কালে
বাহারা হ'বেলা পাত পাতিতে পায় না, ভাহাদের হুর্ভাগার
ক্ষারণ কি • এইরূপ জিজ্ঞাসাই জাইার মুক্তির জননী।

( १ ) "বেচিত না ভদ্র লোক বাগানের ফল, বেড, আর বিলাইত দরিজে সক্ল। এবে যদি কেহ কারো পাড়ে হুটী কুল, চোর যদি ধার দিয়া করে হুলস্কুল।"

হৈ।ও অভান্ত সভা। বে ৰালাণী বাগানের কণ সূটাইরা ক্লিড, সেই ৰালাণী কেন কুণ চুরী করে, সেই বালাণী কেন

কুল চোরকে জেলে পাঠার ? এ প্রাশ্ন উচ্চ সাহিত্যের অক না হইতে পারে, বাঙ্গালার থাস বিশ্বসাহিত্যেও ভাহার স্থান না থাকিতে পারে, কিন্তু বাঙ্গালা দেশে এ প্রশ্নের যথেষ্ট অবকাশ আছে, ইহাত অবীকার করিতে পারি না।

''সে কাল এ কাণ'' বর্ত্তমান যুগের পাঁচালী।
পাঁচালী সক্ষাধারণের সাহিতা; সৌধীন সাহিত্য নহে।
যাহা সৌধীন নয়, তাহাই যদি সাহিত্য না হয়। তাহা
হুইলে আম্বা নাচার।

(৩) জলো ত্ধ থেরে মলো শিশু ছেলে যত, সাজ পোষাকের বারে প্রাণ ওঠাগত।

শিশু 'জলো' ছধ থাইয়া সতাই মরে, অথচ সাজ পোষাকের বায়ে পৃহত্তের প্রাণ ওঠাগত, সমাজগত এই দারুণ তদ্দশা ত অস্বীকার করিবার উপায় নাই। এ উজি করিছ নয়, সহজ, সন্থল, খাটা সত্য। এ সত্য এই পরস্পর বিরোগ তইটা সত্যক্ষে এক হতে গাঁথিয়া 'সে কাল এ কালের' বাধনদার আমাদের বুদ্ধির উপর যে কটাক্ষ করিয়াছেন, আশা করি, আমরা তাহার মর্ম বুঝিয়া লাভবান হইতে পারিব।

''দে কালের মৃচী শুচি শ্রীক্লকে ভজিলে, এ কালে নেগর মাজ প্রদা থাকিলে।"

১০ পূৱা ৷

ইহা রসরচনার lipigramatic; সে কালের সহিত্ত এ কালের সমস্ত স্থুপাই ও অম্পষ্ট প্রভেদের হস্তামনক! ''মায়বং সংগভূ এযু বং পণ্যতি স পণ্যতি" যে দেশের উপদেশ, সে দেশে "পত্তিত জাতির উদ্ধার" করিবার জ্ঞান্তেই করিতে হউতেছে, ইহা সতাই শোচনীর! কিন্তু কাঞ্চন-কোলীনা যে দরিক্র মহাকুলীনকেও পতিত করিতেছে, সমৃদ্ধ অকুলীনকে কুলীন করিতেছে। মূচী প্রীকৃষ্ণ বা পরবন্ধ, যাহাকেই হউক, এক জনকে ভলুক, শুচি হউক, তাহাকে মাথায় করিয়া রাখিব। কিন্তু 'অথগুমগুলাকার' অর্ণ-পাত্ত সঞ্চয় করিয়া যে সকল মূচী কোন্তু দেবতাকেনা ভলিষাই সমাজে সিংহ হইয়া হন্ধারে দশ্দিক প্রতিধ্বনিত

করিভেছে, ভাহাদের জীতণাস হইয়া আমরা কি এ কাণের সাম্যের গৌরব উজ্জ্বল করিভেছি ? সে কাল যতই মন্দ হউক, ভাহার অচল আরভনে 'মামনে'র প্রতিমা প্রতিষ্ঠিত কবিয়া সেকেলে লোক এমন একনিষ্ঠ-ভাবে ভাহার উপদেশ করিত না।

> "পূজা বিন: উপবাদী পৈতৃক ঠাকুর, কটী মংাদ থার মুখে পালিত কুকুর :"

> > ः १ श्रेष्ठा ।

কি মর্মান্তিক! ইহাও অত্যক্তি নহে। কঠোর সভা। **धक** मित्नत कथा मत्न इडेटिड्ड। कर्न उम्राधिम द्वीरि কোনও মাসিক পত্রের কার্যালয়ে বসিয়া নবীন সম্পাদকের সঙ্গে গল্প করিতেছি। এক জন ঔপ্যাসিক—ভিনি এখন বলে মুপ্রসিদ্ধ-সেই গ্রীবথানায় উপত্তিত হটলেন। সঙ্গে একটা থেঁকা কুকুর; আমাদের খদেশী কুকুর—'কালো কুড়-कुर्ह देश हो देश हो अपूर्व । কিন্তু থেকী **প্রতিভাশালী ওপ্রা**সিকের পোষা, পেয়ারের কুকুর—্রেন্ট্র ও (यैकी ! विनाकी (देवियात नरह, कनी नरह, स्निकार्ड नरह, বুল নহে, ম্প্যানিয়াল নহে, গ্রে হাউও নহে, ভাপানী পুতৃগ नरह, हीत्नत हाछ नरह। अपन कि त्नशालत्र, कृतातत बाँकिए। लाम अमृता 'कुछ।' अ नरहा थांती खर्फिना (गंकी কুকুর ? গুপ্ত কবির—"বিদেশের ঠাকুর ফেলিয়া" মনে পড়িল। ভানিলাম, কুকুরটা মামুষের ভাড়াদিয়া হুদুর সাগধপারে গিয়াছিল, আবার প্রভুর দঙ্গে ফিরিয়া আদিয়াছে। সে এইরূপ যাতায়াত করে। শুনিলাম, সে প্রত্যক্ত তু'টাকার वारात्र थाय, मत्क्मन, तमरशाला, शका, थाका; व्याराद ह्न, কাট্লেট, কোপ্তা ইত্যাদিতেও তাহার অকাচ নাই। মন্ত্রমুগ্ধ स्रेवा अनिवाम। নীতিশাল্লে পড়িয়াছিলাম, কাহাকেও **হিংশা-করিতে নাই। "বুকে হাত দিলা" বলিতে পারি** তথন **নেই প্র**তিভাশালী ঔপক্তাসিকের সৌক্তরশালী কুকুরকে খুণাক্ষরেও হিংসা করি নাই।

ভাষার পর সারমেয়-স্বামী ঝনাৎ করিয়া টেবিলের উপর একটা টাকা কেলিয়া দিলেন সন্মিতিত ভোটেল হতৈ চপ্, কাট্ণেট্ আসির। উপস্থিত হটন। সেই খেকী কুকুর নীরবে নিশ্চিত্ত চিত্তে একটাকার চপ্, কাট্ণেট উপরক্ষ করিল। আনন্দে একবার ও লাঙ্গুল নাড়িল না। ব্রিলাম, এইরপ ভোজেই সে অভ্যন্ত। তথন তথন ত্রিফ্লাকাথ-বিনিন্দী চা পান করিতে করিতে সেই ভালাবান কুকুরকে একট্ হিংসা করিয়া ফেলিয়াছিলাম।

কুক্রের চপ ভক্ষন দেখিতে দেখিতে গুনিভেছিলার,
নিমে রাজপথে কৈ লাভর কঠে হাঁকিতেছে 'গুংথী কানাকে
একটা পরসা দাও বাবা'। গুংথী কানা—ভাবিলার সে গুংথী,
অন্ধ, ভিখারী বটে, কিন্তু কোনও সৌথীন প্রভুর কুকুর
নহে। সে কাহারও পালিত ও প্রির নহে। সে শুর্থ গুণী,
অন্ধ ভিথারী। মানব-সমাজে এমন বিভ্ন্নার সংখ্যা হয় না।
এ বিভ্ন্না সার্বভৌমক। ইহা নিশ্চরই বঙ্গের নিম্নত্ব
বা বালালীর একচেটে নহে। কিন্তু কিছুদিন পুর্বেও
বালালার কুক্রেরও পেট ভারত, ভিথারীও উপবাসী থাকিত
না। পৈতৃক ঠাকুরের কথা আর না তুলিগেও চলে।
অতএব, উমিখিত প্রাকটী কবির করনা বা গাঁচালীর জননা
নহে; খাঁটী সভা, গ্রুণ সভা, দিজেক্র বাব্র ভাষার সার-সভা
এবং আমার চাকুন সভা। 'সেকেলে' চক্রশেশের বারু এই
সভা epigramatic ভাষার পরারে বাক্ত করিয়াছেন।

'সে কাল এ কালে' পুন্দে যাথা ছল,ভাগার পরিচর আছে ।
তাহাকে নির্বাসিত করিলা পরে যাথা স্থাতিটিত ছইরছে,
তাহারও পরিচয় আছে। প্রবিত ও পুন্সিত ভাষার।
কোমল-কান্ত পরাবলীতে কবি হর সৌরত মাধাইরা সে
তালিকা রচিত হয় নাই সতা, তাহা নবগাতি কাবোর ধরা,
রস ও নীতির অনুগালা নহে, তাহাও সতা। কিছ্
তাহাতে বৈশিষ্টা আছে। সে বৈশিষ্ট এই যে, তাহা স্থাতির
উদ্দীপক, পূজার প্রবর্ত্তক, চিন্তার জনক। ভাহাতে
রচিয়তার সন্তব্যাত ও জাতির প্রতি মমতার পরিচর আছে।
কুল্ডের উপর যেমন দূল দুটিয়া পাকে, 'সে কাল এ কালেছ'
স্লোকের বৃস্তেও তেমনত চিন্তাশাল ভাব্কের মনোরম ভাবনার
কুল মুটিয়ালাছে। সে কুলে মা'র পুলা চলিতে পারে ।

अविश्वत वृति सेपंत छित्र व्यक्त व्यवतावन ना बाटक, छाटा रहेरन क्रांकि क्थानक এই प्रकृत म्यांखिक ও সাংখাতিক তথ্যের आधार प्रेटिक शांतिरव मा। किन्द्र शश व्यावश्वक, श्वमा-क्लीक्ट होम इंदेलिंड छाठा वक्षीत । "विका मत्नांवातिक क्रम कर बहुः।" किन्नु तम कारणत श्राद्वन, ध कारणत महिन्छ ें छाहात्र छुननात्र ममार्गाहन 'हिड' ও वर्त, धवर रम्रानंत्र कथी, আৰ্থ্য কথা বলিয়া 'মনোহারী'ও বটে। - 'সেকেলে' क्रकामध्य वालानीरक क्रिकेन कथा खारियांत खरकान ক্ষিত্র ধ্যাবালের ভাকন হটমাছেন। সমাজের সকল ভারের আছে সাহিত্য চাই। 'অনাথ বালকে'র রচরিতা পাঁচালী-ছবে দেখের কথা গাইয়া দেশী লোক-সাহিত্যের সৃষ্টি ক্ষেমছেন। 'সোণার ভরীর' দহিত এই দেশী তাল কাঠের काला यकि वाकानीय चाटि नार्ग, जारा रहेरन विचनाहिला লা ছউক, ৰাশালী কল্যাণ লাভ করিবে। তথাকথিত \*ক্ষেষ্টিকৰা আর না ভাবিলে নর। তাই চক্রশেখরের সে কাল ক্ষতের এই অসম্পূর্ণ পরিচয় লিপিবন্ধ করিলাম।

আমরা আদার ব্যাপারী। জাহাজের থবর রাখি না।

এই উপলকে আমি বাহা বলিলান, তাহাও আমাদের

সমমেণীর ব্যাপারীদের জন্ত। জাহাজে বোঝাই দিয়া

ইযুরোপে পাঠাইবার জন্ত নয়। ইহাই আমার কৈফিলং।

विक्रात्महस म्यामन्डि।

### সে কালের ব্রাহ্মণ পণ্ডিত \*

আমাদের বাড়ী ছিল এক্ষণ পণ্ডিতগণের একটা আড্ডা।
ইবাদীং এই গরীবের ছ্যারে লক্ষীর পা পড়িতেছিল স্বতরাং
ক্রী বশক্ষ 'পণ্ডিত ভারা' গাঁহাকে অনুগ্রহ করিয়া আপ্যায়িত
ক্রীক্রেন। সে কালে এই শ্রেণীর বন্ধু সমাগ্যের সৌভাগ্য
ক্রীক্রাক্য বাবে বঞ্জের অপেকা কর বোধ হইত না।

আমাদের বাড়ীতে ০০।৩৫ জন দেশী ও বিলেশী ছাত্র
পড়িত। গ্রামের ছাত্রেরা নিজ নিজ বাড়ীতে থাইছে
সত্য;—কিন্তু মাসে গড়ে ১০।১২ দিনই এথানে থাইছে।
ছাত্রেরা পড়িত, পড়াইড, হল্লা করিত। এখন বেমন্
ইন্থনের ছেলেরা সকল কালে অগ্রণী; তখন টোলের
ছেলেরাই অনেক কাল করিত। তখন অবশ্য এত কাল
ছিল না; কিন্তু বাহা ছিল,—তাহা ছাত্রেরাই করিত।
তাহাদিগকে সাধারণে 'হিসাব' করিরা চলিত এবং সন্মান
করিত। বছরে করেক মাস পড়িরাই এক একটা ছাত্রে
দিগ্রন্থ পড়িত হইল্লা বাইত।

ছাতেরা নিষ্ঠাবান ভিল। অনেকে নিরামিব খাইত i আবার কের আমির ভিন্ন গ্রাস ধরিত না। কোন কোন ছাত্র অধ্যাপকের শ্বন্ধে লড়াই করিবার মত বিভাগাঞ্ ক্রিত। কেহ বা বিষম তার্কিক হইত। সেকালে "शंकि" ছিল মন্তবড় পরীকা। 'ফাঁকি' অর্থে কৃট প্রশ্ন। এই ফ'াকির অবাব দিবার ক্ষমতা লাভ করিতে না পারিশে কোন পণ্ডিত উপাধি প্রচারে সাহসী হইতেন না। ফ<sup>া</sup>কিয় উত্তৰ দিতে চটলে সমগ্ৰ শাস্ত্ৰথানি—ময় টিকা টিপ্লনী আৰম্ভ করিতে হইত। এখন বেমন একজন পঞ্চীর্থ বা সপ্ততীর্থ হুইয়া পাঁচ সাত শাস্ত্রের সমগ্র বিষ্ণা জাহির করিছে চান, (मकाल छाड़ा कवाहिए मखत बहेछ। अथन मन्नकांत्री निर्दि बहै अब निर्दि चर्म याज পिएवा जीर्वप नाफ स्त : (मकार्म এक अक्षे। भारत अधिकात माछ अतिरक्ष कीवन-नाडाक छेशश्चि वहेंछ। এখন छ कांठा बद्धतिहै সৰ পণ্ডিত হয়। এখন আর তেমন 'অজা গলা' পণ্ডিত हम मा: (नकारन रहेछ। आमारमय आमरन अधानक পণ্ডিত ছিলেন মহ্যার মনোহর তর্কভূবণ। তাঁহার বঙ্ক পণ্ডিত না कि তখন দেশ বিদেশে আর ছিল मा। বিক্রমপুর নবছীপের ছাত্রও আগিয়া তাঁহার টোলে পড়িত। ভারণাত্র আর শ্বৃতি তাঁহার মুখ্য ছিল। डांबात नात्म পভिতनमान माना त्मात्रावेख ! डांबात नयनागरिक करवक्षम बढ़ शक्तिकत माम करिएकि।

<sup>্</sup>র । ঠাকুরমার কথার চতুর্থ দলা। 'সে কাল' বলিতে লোরাশক বংগর পুন্ন ধরিতে হইবে।

देशास्त्र नारम रमन रभीवनाविक किन। छित्र किन। व्यामार्ले किनारक शूर मानिया हिन्छ। ভ্রক্তৃষণ বাজীত এ জিলার আর কোন পণ্ডিত বিক্রমপুর हरेल '(वानवाना विनाय' आध हन नाहे। मत्नावत ভর্কভুবণের সমদাময়িক ও কিঞ্চিৎ পরবর্তী প্রধান পণ্ডিত-উদ্বির রামশঙ্কর বিদ্যামণি, মহয়ার লোকনাপ চূড়ামণি ( ইহাকে বিদেশে ময়মনসিংহের গবর্ণর পণ্ডিত বলিত), ও কবি রামগঞ্চা বিদ্যাবাচপতি মহীনন্দের निवासम विकाशिकालि, कुनश्रत श्रीशाम विकाल-বাগীশ, গছিহাটার গৌরদাস তর্কসঞ্চানন, আঞ্জিয়ার ফকির ভর্কভূবণ বা কৃষ্ণমঙ্গল ভর্কভূষণ, রামমোহন তর্কবাগীশ, তারাকাস্ত জায়রত্ব, কাটিহালীর কাশীনাপ শিরোমণি এবং পরবর্তী সময়ে নওপাডার আনন্দকিশোর मात्रिमकात्र, আমতলার গুরুদা স সিদ্ধান্তবাগীশ. আগুজিয়ার কালীকান্ত ভায়রত্ব, ধর্লীকুড়ার কালিদান সিল্লান্ত, চাকদার কালীকিল্পর ফ্রায়পঞ্চানন ও কম্লা-কাস্ত শিরোমণি, শিবপুরের তারাকাম্ভ ভায়রত্ব প্রভৃতি তথন দেশবিখ্যাত পণ্ডিত ছিলেন। শিবানন্দ তুৰার প্রিত ছিলেন। শুনিয়াছি নবখীপের কোন বিখাত পণ্ডিত ইহার সহিত ১৭ বার তর্কমুদ্ধে পরাক্ত হইয়া-ছিলেন। লোকনাথ চ্ডামণি ও ফকির তর্কভূবণ যেমন ষড় পণ্ডিত তেমনই ছুপুরুষ ছিলেন। গে কালে পণ্ডিত কি এক একটী স্ভাদেখিলে দেব সভা মনে হইত। (एर शुक्रम ! कि भारताद्य काञ्चि ! कि अननमा श्राष्ट्रा-मंन्नम ! कि मतन डेक दानि ! कि डेमात दापश ! कि व्यक्ष ने के का । याश मिलाहि, বৃষিয়াছি, তাহার जुनना जगर नाहे!

আর একখন ছাত্র ছিল কমল চফ্রনর্তী বা 'পোনার কমল।" শুনিরাছি ইংার মত অসাধারণ প্রতিভা-সম্পর ছাত্তের কথা কেহু নাকি শুনেন্তু নাই। কমল ছই ছাতে স্মানে ছইটা বই লিখিতে পারিত। যে কোন ক্ষা শুইয়া যে কোন সংস্কৃত ছম্পে অনুর্বাগ কবিতা রচনা করিতে পারিত। তাহার গুণে মুগ্ধ হইরা দেশের লোক তাহাকে 'সোনার কমল' তাকিত। নাগুবিকই দে সোনার কমল ছিল। একবার তাহার অব্যাপকের নিমন্ত্রণ ছিল এক জমিদার বাড়ীতে। পত্তে প্রতিনিধি প্রেরণের নিষেধ ছিল। অব্যাপক পীড়িত থাকার কমল চক্রবর্তী শত নিষেধ দিল। অব্যাপান করিলেন। কমল ছাড়িবার পাত্র ছিলেন না। তিনি স্বয়ং প্রান্ধ কর্ত্তা দিকট উপস্থিত হইলেন। তথ্য জানিলেন, প্রান্ধ কর্ত্তা দত্তক পুদ্র। কমল চক্রবর্তী সহজ ভাবেই বলিয়া কেলিলেন,—

্"যত্র প্রতিনিধিলেতি কুল্মান ধ্নানিচ, হাহা প্রতিনিধিস্তত্ত ভোক্তনিয়া সূত্রভা।"

শ্রাদ্ধকর্ত্ত চনংকৃত হইয়া কমলকে পণ্ডিতের স্মান
সম্মান প্রদান করিলেন। কোনও বিশেষ স্মারোহ
বাপোরে বহু পণ্ডিত সমার্ত সভায় জনৈক রুকভাবী
পণ্ডিতকে বিচারে পরাস্ত করিয়া কমল শভকঠের
ভ্রম্বনির মধ্যে পরাজিত পণ্ডিতের "ব্রহ্মশাপ" প্রাপ্ত
হইলেন। ভূভিগ্যিক্রমে ইহার দেড়মাস মধ্যে কমল
ইহলোক ত্যাগ করে। তথনও তাহার ছাত্রাবস্থা!

ছাতাবহার হরিপ্রসাদ সিদ্ধান্তবাগীশও তুর্ধ লোক ছিলেন। তিনি যথন মহরা মনোহর তর্কভূষণ মহাশয়ের টোলে অধ্যয়ন করেন, তথন তনিলেন, ঢাকা জিলার চক্রধা গ্রামে কালীকিজর জায়পঞ্চানন ও কমলাকাল্প শিরোমণি নামে হুইজন বড় পণ্ডিত আছেন। হরিপ্রসাদ শেইখানে বিচারার্থ গিরা উপস্থিত। হরিপ্রসাদের ভন্ন তথন পণ্ডিত মহলে বনীর ভয়ের মত ছিল। খুঁটিয়া, থোঁচাইয়া সৃদ্ধ করার বাতিক তথন সকলেরই ন্নানিধিক ছিল, কিল্প হরিপ্রসাদের মত শক্তি আর কাহারও চথন ছিল না। তনিয়াছি মে লোকনাথ চ্ডামপি কোন দিন বিচারে পরান্ত হন নাই, তিনিও একবার হরিপ্রসাদের নিকট নির্ভ্বন হুইথাছিলেন। ভনিয়াছি, বিক্রমণ্রেরণ

हिंडिज श्रेयत जगरुष्य गार्स्स हो । इति श्रेमाप्टक जाराजी

শামাদের বাড়ীতে অনেক পণ্ডিচই একতা হইতেন।

শাক্ষাল দেশে রাড়ী ও রারেক্স সমাজে যে একটা বিষম
ভেদ দেখা যায়,—আমরা তাহা দেখি নাই। এমন কি
কে রাড়ী কে বারেক্স জানিবার স্থোগ ঘটিত না।
শাহারে বিহারে কথাবার্তায় কোনও ভেদ চিহ্নই
ছিল না। দাদা, ভাষা প্রস্তুতি সম্বোধনই পণ্ডিতগণের
প্রস্পারের ভাক ছিল।

ৰ্বিপ্ৰসাদ বাবেজ ছিলেন এবং তাঁহার মনে রাটা বিৰেব ছিল। ইনি ভয়ানক দান্তিকও ছিলেন। তাঁহার বংশ পুঞ্চ হইয়াছে। আজ হবিপ্রসাদের একটা বিচারের কথা ব্যায়া বক্তব্য শেব করিব।

मुकाशाकात अभिनात सेनान तात्त मारप्रत आह । ক্সত্ৰত্য স্বার-পণ্ডিত ত্রিলোচন তর্কলকার (শাক্তা নিবাসী) मुद्धानाषात्र देशेरानवना जिपनान निर्मा मीननाथ ভটাচার্য্যকে কহিলেন—"মহাশ্য, সাবধানতার সহিত মন্ত্রমনসিংহের পশুত নিমন্ত্রণ দিবেন। এবার পশুত "বাৰাইয়া লইব।" এই সভায় সিদ্ধান্তৰাগীৰ—যে শান্ত কথনো পড়েন নাই, সেই স্মতিশান্ত্রে এক অতি কৃট প্রশ্নের সম্বন্ধর দিয়াছিলেন। তাঁহার নবঘীপস্থ অধ্যাপক পেই সভায় উপস্থিত ছিলেন। তিনিও বিশয়ের সহিত, किंद्राण द्विथाना वह थाता उँउत निवादन, विकामा **করিলেন। হরিপ্র**সাদ উত্তর করিলেন, "আমার জনৈক वेषु छै।हात व्यशां शरकत निकर्षे अहे व्यश्य व्यश्यन कतात সম্ম আমি সেখানে উপস্থিত থাকিয়া প্রায় ধঘটে। ব্যাপী ভর্কযুদ্ধ ও মীমাংশা শ্রবণ করিয়াছিলাম। আজ ভগবতী बीमाशांशित कुशांत्र २१।১৮ वदमत शत (महे ममल कथा শামার মনে অাসিয়াছে।" গুনিধা সকলে ভাত্তিত इट्टेंट्यन ।

শামাণের বাড়ী পণ্ডিতগণের আড্ডা ছিল, পুর্বেই বলিরাছি। বিজমপুর বা নবদীপু বাইতে হইলে

> । । २ द अने कृष्णि व्यथात्न व्यागित्री । भागक कहेंगा वाव्य করিতেন। বরের বউ হইরাও আমরা চৌপাতি বরের পণ্ডিত তর্ক্যনের চেঁচামেচিতে অতিষ্ট হইয়া উঠিতাম। কত্পিন হপুরের ভাত সন্ধ্যার পূর্বেই আর রাত্রির ভাত উনাগমে কর্তার। উদরস্থ করিয়াছেন, ভাহার ঠিকান। নাই। হংখর বিষয় ছিল এই যে সেই ভয়ানক ভর্কযুদ্ধেও यत्नामाणिक कथरना श्रमाहै। त्र कात्नत कोलाइत ছাত্রেরা পণ্ডিত পাইলেই কাঁকি করিত। 'ফাঁকির' উত্তরে 'ফাঁকি' দিয়া পণ্ডিতেরা ছাত্তের কেরামত পরীকা করিতে কমুর করিতেন না। গুনিতে পাই আঞ্জাল পভিতেরা-- 'আপোষে বিচার' করেন 'ছাতের ফাঁকি' গ্রহণ করেন না এক বিবিধ'তীর্থ' হইয়াও নির্দিষ্ট পঞ্জীতে 'ফাঁলক' আবন্ধ রাখেন। সে কালের তর্কগুরু,রাম রাবণের যুদ্ধবং হইত। ও এরপঞ্জ জার করিয়া অরাপর হইতেন व्यवः भठद्रकि व्यामन छिटिशा मध्या दहेत। वाद এখন নাকি পরিচিত পণ্ডিতে তর্কযুদ্ধ হাস্থ্য পীরিহাসে મોમારાયક શ્રા

শেকালের পাওতের। অনেকেই দীর্ঘায়ু ছিলেন।
আচারের এণানে তাঁহাদের সময় বাগ হইতা সংখ্যে
তাহারা আত্মরকা করিতেন। কি উন্নত গৌরকান্তি
গন্ধর্মপাকরিতেন। কি উন্নত গৌরকান্তি
গন্ধর্মপাকরিতেন। কি উন্নত গৌরকান্তি
গন্ধর্মপাকে একত্র সমাসীন দেবিয়াছি,—আজও
মনে পড়ে। যেন এক একটা দিক্পাল। আজকাল
তেমন সুলী, সুগঠিত, আন্তাপুর্ন, সরল প্রশাস্ত
মুধ—মানুষই চক্ষে পড়ে না। কোন আড়ন্তভূ নাই,
বেশভূবার কোন পারিপাট্য লাই,—কাবে উন্তরীন্ত্র
নর্মদেহ—বিপুল উন্নত চেহারা কি দৃশ্যই—সেই সকল
পণ্ডিতমন্তিত সভায় ছিল, তাহা অনুমান করাও এখন
শক্ত। কাহারো গলার কলাক, কাহারো তুলসী মালা।
কাহারো রক্ত চল্পনের তিল্ক। আমার বৈধি হর
ভোমরা সে সকল সভা দেবিলে নিঃসক্ষেত্র 'দেবসভা'

বলিতে পারিতে। প্রত্যেক ব্রাহ্মণ-প্রাবে ছুই চারিজন পণ্ডিত ছিলেন, ছুই চারিটা টোল ছিল। ছাত্রেরা অপরাক্তে দল বাধিয়া অপর টোলে যুদ্ধার্থ বাইত। কেবল আলোচনা—কেবল আলোচনা তখন পরীকা ছিল না, ভাই শিকা হইত।

পণ্ডিতদের মধ্যে, সমাজিকগণের মধ্যে অনেকেই প্রচুর আহার করাটাকে গর্কের বিষয় মনে করিতেন। অবশ্র যে যতটা সামলাইতে পারিত দে তত ধাইত। খাবার সাম্মী স্থলত ছিল—লোকে খাওয়াইতেও পারিত। প্রচুর মাছ দিয়া মাথের ডাইল,--এক একজনে যাহা ধাইতেন, এখন দশ জনেও তাহা পারে না। খাওয়াও খাওয়ান উভয় কাজেই উৎসাহ हिल। व्यत्नातक नमध नमस वड़ वड़ नामकाना (डाकन-পটু লোকদিগকে নিমন্ত্রণ করিয়া খাওয়াইতেন। মাছ, মাংদ, তৈল, বি, তুগ অপগ্যপ্ত পাওয়া যাইত। খাওয়ায় **(अ**पे हिन्द (पर्व) भिशाहि । जनानम ठक्क वर्षी नामक কুমিল্লার একটি ব্রাহ্মণ দাদশ জনের ভোজন কার্য্য একাকী সমাধা করিতেন। আর আজ যেন কেবল कान क्षकारत कीवन शांत्र कण भगताभ चाहारतत्र यावश्वा । जनकात लारकत थाउँनी हिन, भारि यसि हिन, निर्यन आदात्मत अवकाम हिन-भरीद शाणीत বল ছিল-অভাব বড় সামাত ছিল, সুতরাং ভোজন পটুতার সার্থকতা ছিল।

পণ্ডিতেরা ছাত্রাবস্থায় দেশে বিদেশে জ্ঞান অর্জন করিছেন। ধুতি নামাবলী সম্বল করিয়া বিক্রমপুর, দ্বাইন প্রত্তি দেশে আমাদের ছাত্রেরা পড়িতে মাইন । আর এখন পড়িতে গেলে বারা বিছানার কুলা ছুইজনের কমে হয় না। ছাত্রেরা অনেক স্থানেই নিজেরা বাঁধাবাড়া করিয়া খাইত। ব্যাকরণ, নাহিত্য, ভায়,ত্বতি প্রভৃতির গ্রন্থ বয়ং নকল করিয়া লইত—ভায়ণর পড়িতে হইত। আর এখন বরে মারে ছাপান বুলি। গেলাংল ফুলার ইন্তান্ধরের বিশেশ আদ্ব ছিল। করেন্দ্রক

এখন সুন্দর লিখিতে পারিত যে—'নুক্তা পাঁতির নালাই বলিয়া ভাষার আখ্যা ছইত। বাঁশের কলন, কভের কালীতে, তুলট কাগলে—এক একটা দিশ্যল পভিতের কীর্ত্তি শতাকী ধরিয়া অক্ষুল্প রহিয়াছে। কেছ কেছ সুন্দর লেখাও অভিক্রত শেব করিয়া প্রশংলা পাইত। আমার ভাই বিখনাগ বিদ্যারত্ব প্রভিন্নান করিয়া ভালপাতা ও কালী কলম লইয়া বদিত,—আর স্ব্যান্তের প্রে সমগ্র মার্কভের চণ্ডা লিখিয়া তবে আহারাধি করিত। এরপ প্রশংলাই তখন চুই দশকন পাঞ্জা যাইত।—আর এখন ?

পণ্ডিতগণের মধ্যে সুগায়ক ছিলেন অনেক! रतिनाम कौर्छन ब्याद तामश्रमानी भानतीर जनन त्यरण বিশেষ প্রচলিত। কবির গান, তুর্গাপুরাণ ও কীর্ত্তন প্রভৃতিই তথন বড় বড় মঞ্জীব মুগ্ধ রাখিত। পশুতের गर्या काहाब काहाब हा कुछ। हिन,-किन्त বিশিত হইবে যে এক জোড়া জুতা ১৫া২০ বংগর বেশ চলিত। ছাতা ছিল পোল পাভার। সে কালে চশমার বাবহার কদাচিৎ ছিল। জীবসানে প্রায় কেইই চকু चात माठित गांधा चाहेठ ना। वाठ, चनीर्व, चात्र चानभा वड़ हिन ना। यन खता छलि हिन, सिरह প্রচুর শক্তি ছিল। প্রাণেবল ছিল। अ সকল ছিল বালগাই—ভরা ব্রহ্মপুত্রের স্রোতে ভীষণ বড় ভূফানের মধ্যেও লোকনাথ চূড়ামণি গুরুবাক্য বন্ধার অঞ্চ বাঁপ দিয়া সাঁতারিয়া— ত্রহ্মপুত্র পাড় হইয়াছিলেন। গ্র छनियाहि, विश्वामानव नाकि मारगानव পाछि मियाहिएनन ; কিন্তু লোকনাবের ত্রহ্মপুত্র পাড়ি দেওয়ার ভুলনা চলে ना। भक्त विष्णार्मा विषयाहिलन,-लाकमार्थ, আমার প্রাধে তুমি 'বিরাট' পড়িও। অধ্যাপকের মৃত্যু সংবাদ পাইয়া লোকনাৰ বহু চেষ্টায়ও ভয়ম্ব বৃত্ ব্রষ্টিতে নৌকা পাইশেন না। তাই খক আঞ্চা বুকা করিতে আখিন মানে ত্রহ্মপুত্র সাঁতার কাটিয়া পার इदेशक्रिणन। **ভোগার মাভাষ্য থানের পড়ের ছাউনী**  শ্ব শৃণারি পাভার বেড়া দেওরা ঘরে বাস করিয়া প্রথম
শীবন যাপন করেন। আমার খাওড়ী বলিরাছিলেন
শ্বেদের প্রাদ্ধে বড় বড় পণ্ডিত সমাগম হয়—তাদের
সোজাগ্য।" কর্তা কথাটা মনে রাখিলেন। ক্রমে
ভাষার অবস্থার উন্নতি হইতে লাগিল। তিনি তাঁহার
শান্তের প্রাদ্ধে একরপ সর্বান্ত বরিয়া বিক্রমপূর,
শব্দীপ, পূর্বান্তলী প্রভৃতির পণ্ডিতবর্গ নিমন্ত্রণ করিয়া
শারের সাধ পূর্ব করিয়াছিলেন। তাঁর পুণ্যফলেই আজ
ভোমরা এই ক্টারের ভিটায় দালান দেখিতেছ। সেই
বাম্ন পণ্ডিভের মনের বল কিন্ত বর্তমান সম্পত্তির
শবিকারীর নাই। আর একজন পণ্ডিত ল্রাতৃশোকে
শব্দিট শীবন উন্নাদ হইয়া কাটাইয়াছেন।

श्री भूर्वहम् छ छ। ह। या।

## লাঞ্ছিতা।

গালশ বর্ষে যবে একদা দ্রাায়
গলাললৈ গেল মার শাঁখা ছটি ভাগি,
সমালে সাপের মত বিষক্ষা তুলি
অভাগী বিধ্বা-বেশে দাঁড়াইফু আসি।
সমাল মুক্ট যারা—দের নিত তারা
অধীর হৃদরে কভু প্রবোধ সান্ত্রনা,
লভিয়াছি চিরদিন ঘুণা অপমান'
বিধ্বা পার না বুলি বিশ্বের করুলা!
ভারপর কভদিন স্থান্তের কাছে
যাচিল ভ্ষিত্ত—চিত্ত এক ফোটা ফল,
আভনের শলা দিয়ে নেতা ভার যত—
দক্ষ করিয়া দিল মরমের তল।
অভ্প্র আকাক্ষা আর অনম্ভ বেদনা
বক্ষে বহিয়া লাগে লাভিতা ললনা!

এই পতি প্রশন্ত বোৰ।

# ঢাকায় সঙ্গীত চৰ্চা। •

( )

৮ হরিচরণ কর্মকারঃ—ইঁহার আদি নিবাস ছিল বিক্রমপুর-শেষরনগর গ্রামে। তথা হইতে যাত্রার ছোক্রার্পে ঢাকায় আসেন। সেই সময়ে ঢাকা বৈষ্ণীতে "নন্দবিদায়" যাত্রার অভিনয় হয়, উহাতেই হরি গান করিভেন। তৎপর ঢাকা উয়ারি "মদনমোহন বদাক" রোড শালপার বাড়ী করেন। সর্বপ্রথম হরি পুর্বোক্ত কৃষ্ণদাদ কর্মকারের নিকট সন্ধীত শিক্ষা করিতে আরম্ভ করেন। সে সময়েও ঢাকা নগরী একটি বিখ্যাত সঙ্গীত-কেন্ত ছিল। নানা দিদেগশ হইতে ওভাদগণ প্রথমতঃ অভিবড় দলীত রুদ্ ত্রিপুরাধিপতি মহারাজ বীরচন্দ্র মানিকা বাহাছরের রাজ্যামী আগর্ডলায় উপস্থিত হইতেন. महोतास्त मनीक खनाहेबा हाका अवः स्वापियपूत ध কাশিমপুর হইয়া অন্তত্ত ঘাইতেন। হরি পরে এই সকল ওন্তাদদের মধ্যে কলিকাতার স্থপ্রসিদ্ধ প্রপদী ভোলানাথ চৌধুরী, অঘিতীয় প্রতিভাশালী ভানরাঞ্চ यङ् छ छ । कारण थे। यहात्रव थे। त्र मृत्व अभिने , आधिन थे। এবং অভাভ হিন্দু মুশলমান গায়ক বাঁহারা এখানে আ পিয়াতেন ভাষাদের নিকট শিকালাভ করিয়া আপন জ্ঞান-ভাগার পূর্ণ করিয়াছেন। বছ পুরাতন স্থীত রন্ধ তাঁহার ভাণ্ডারে দঞ্চিত ছিল। তিনি অতি বড় সুরবোগা ছিলেন। তানপুরাট ছাতে নিয়া মূথে মূথে যাবতীয় शास्त्र अत्रविशि कतिया पिट्या। शत्रकीयस क्ष्त्रमृह्द् **ভূতপূ**र्व हेनि(अक्टेर ⊌ तांग्र मीननांव रमन मार्ट्य এवा বাইনাজুড়ির জমিদার পরলোকগত রামবাবুর সঙ্গে বছ अपन ७ थान गान्य यत्निमि करतन। अ शाद् वनपार य प्रका वत्रिश थनानी अकानिक इहेग्राह्न, व्यामार्गित हाकात छडानिक थानी करमसार्थका महत्त-

<sup>· (</sup>চাকা বাহিত্য পরিষদের স্থাবিক অভিবেশনে প্রিক।

বোধ্য। ইহাতে তাল মাত্রা শিক্ষার ব্যবস্থাও অতি স্থলর
ও সরল। ১০।১২ বংসর হয় ৬২।৬৩ বংসর বয়সে
ইরি কর্মকার পরলোক গমন করিয়াছেন। তদীর
মৃত্যুর সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার আজীবন সংগৃহীত সঙ্গীতরাজি
এবং স্বরলিপিসমূহ নষ্ট প্রায় হইয়াছে। হরিকর্মকার
ফ্রপদ ও খ্যাল উভয়ই গাইতেন, কঠ উভম ছিল।
শেষজীবনে তারা গ্রামের স্বর ভাল গাইতে পারিতেন
না, কিন্তু উদারার স্বর এমন চমংকার গাইতেন যে মনে
ইইত যেন কোন যন্ত্র হইতে স্বর নির্গত হইতেছে। অতি
অপ্রক্তি আশ্চর্য্য কোশলে তালের বাঁট করিয়া ধামার
প্রেভৃতি কঠিন গান অনায়াসে গাইতেন।

ঢাকার ভূতপুর্ব উকিল সরকার বহু পরিস্র ছাত্রের অব্লদাতা পরায় ঈশরচন্দ্র ঘোষ বাহাত্বর সঙ্গীতের একজন বিশেষ পৃষ্ঠপোৰক ছিলেন। তিনি নিজেও কিছু কিছু বেহালা বাজাইতে জানিতেন এবং উচ্চকঠে "সপ্ৰবিলাস" "রাই উন্মাদিনী" প্রভৃতির গান উত্তম গাইতেন। পঙ্গীত বিভালয় ছিল। ঈশরবারর বাসায় একটি ছরি ওস্তাদ উক্ত বিভালয়ের এবং তৎপূর্বে জগনাথ স্থলের मनील विद्यालायत मनील व्यक्तांशक जिल्ला। इति কর্মকারের প্রধান শিয় ঢাকার বর্তমান সর্বশ্রেষ্ঠ গায়ক শীরুত এম্বাদ্ধা। শীরুত অনাপ কর্মকার, মহেন্দ্র বসাক, রন্দাবন কর্মকার, স্থভাচ্যা নিবাসী শ্রীযুত আদিতাচন্ত্র চক্রবর্ত্তী প্রভৃতিও হাঁহার সাকরের। বর্তমান প্রবন্ধ লেখকেরও কর্তমান মাত্র তাঁহার নিকট দলীতের পাঠ নেওয়ার সৌভাগ্য হইয়াছিল।

ছরি ওস্তাদ নিজে অনেক উৎকৃত্ত উচ্চাঙ্গের দলীত মচনা করিয়া গিয়াছেন। নিয়ে তাঁহার একটি গান উদ্ভ করিলামঃ—

শ্বর্থ কারণানঃ—
শ্বর্গ কারণানঃ—
শ্বর্গ — চৌতাল।
শাস্থারীঃ—বুগত মোহন মুরত শ্যামগর পারী
শাস্ত ক্সমে মনিময় মুর্তন জড়িল তেলোরে।
শ্বর্গ — কৌন স্বী বাজাওয়ে বীণ,

কোন স্থী গাওয়ত গুণ,
কোন স্থী বাজায়ে মৃদক

মধুর বোলে !
সঞ্চারীঃ— গরজে বাদর বিমান,
বারি করত বর্ষণ,
এতে সুগন্ধ শাওনি প্রস্ন মন্দ মন্দ চলত;
আত্যোগঃ--হরিভনতা নন্দলাল,
স্বোবর ভর হয়ে,
ভীরপর হংস সার্গ লোলে বোলে ।

একদা উপেজনাল ভট্টাচার্যা নামে পশ্চিম বলের একজন গুণী ওস্তাদ ঢাকায় আপেন। তিনি বড গাইয়ে. धवर मानाहेत मक्त गनामान निखतम यश्च वाकाहराज्य সুদক ছিলেন। ক্লপবাবুর বাড়ীতে উপেক্স বাবুর গানের মজলিস হয়, তাহাতে তিনি অতাত গানের সঙ্গে একটি গ্রুপদ তিন রকম বিভিন্ন রাগিনীতে ও তালে গান করেন। ইহাতে সকলেই তাঁহাকে বিশেষভাবে প্রশংসা करतन। উপেজ वाव वाषाई अपिए अंत्रभ निका ক্ষেন: তিনি এরপভাব প্রকাশ করেন যে এনেশে ওরপ কেউ গাইতে পারে না। এ মজলিনে ঢাকার হরি কর্মকার উপস্থিত ছিলেন। তিনি বলিলেন বে এ আর এমন কি কঠিন যে এ দেশের অক্স কেউ পারিবে মা ? উপেন্দ্র বাবু হরিকে জিজ্ঞাদা করিলেন যে ভিনি পারেন कि ना १ जबनहे क्रणवात वनिरमन स इति अक्रम ভিন্টি বিভিন্ন রাগিনী ও তাবে একটি নির্দিষ্ট পান পাইতে পারিবে তিনি ১০১১ একশত টাক্ষা পুরবার पिरवन । **आंत्र विक्**रित अक्ष्म इन जरन के अपने भूतकार्सन টাকা উপেজ বাবুকে দেওয়া হইবে। হরি সম্বত হইরা नर्वगयाङिकास द्वित्क এক মাদের সময় চাহিলেন। 'ঐ সমর দেওয়া হইল, এবং "জয়জয়তী" রাগিনীর निम्नानिथित अतिक अपिषि ठिक कतिया वना दहेन स क्रीहितके विकिन्न खुत्रकारने भारेएक बरेरनः-

শগ্ৰথ জী — চৌতাশ।
শাস্থায়ীঃ — প্ৰথম মানে ওঁকার, দেবন মানে মহাদেব,।
ভানন মানে পোরথ, বেদ মানে ত্রন্ধ।
শাস্তায়ঃ — গীত কো গলীত মানে, সলীত কো আছার
মানে,

ভাল মানে মৃদপ্ত, নেত মানে রস্তার।

স্কুনী:
বিভা মানে সরস্বতী, নদীন মানে গলা;

नारकामः -- करह खन्नवाश्वतात्रा श्वनित्र त्यालागमान, त्नन भारत स्वत्र, त्रश्ना भारत हस्त्र।

द्विष्टि (पंचिट्ड এक मान नगर हिनिया (शन। निर्फिट्डे ब्रिस्न क्रभवावूद वाड़ीरड व्यक्ति अमकान मर्जानम विनन। স্ত্রের যত ওতাদ, সমজনার সকলেই ঔংক্রের সহিত **ভবায় উপস্থিত হইলেন।** ওস্তাদ উপেজ বাবুও তথায় সামারত্ব স্মানীন। রায় দীননাথ সেন সাহেব প্রভৃতি প্রমুদ্ধ ব্যক্তিবর্গও দেই শঙ্গীত সভার গৌরব রৃদ্ধি করিয়া ক্রিরাছিলেন। মধাস্থ হটলেন পারশ্য ভাষায় হুপণ্ডিত अनुवाही व्यशायक 🗸 इतिसाहन मात्र। उथन श्रथान अदिबाहाकि नाम वनिका भारबाहाक सदिस्तन, रमठाही, অক্সাজি যে ৰার ষন্ত্র মিলাইলেন, হরির নিজ হাতে এক ক্ষানপুরা সার তাঁর শিশু এমদাদ মিঞার হাতে অন্ত আর कि छानपूरा। नकन यह भिन दहरन प्रदाद अधनह समाहे ্ৰীবিয়া গেল যে সভা থেন ইক্স ভবনে পরিণত হইল। স্থারি পান ধরিলেন। সরস্বতার রূপায় ধরা মাত্রই গান আহিয়াগেল। আন্মে-জেমে হার সাতটি বিভিন্ন রাগিনীও 🐙 টি ভিন্ন ভিন্ন ভাবে গানটি স্মধুর ভাবে গান ক্রিলেন পরে আরও ৩৪টি অপ্রচলিত রাগিনী এবং 👼 তাল, ব্রহ্মতালে ঐ গান্ট গাইয়া শেষ করিলেন। क्रांत्रिकिक इटेटिंग अन्तरमा ध्वानरिंग मधामध्य मूर्वात्र में का निकास के अक्टारिका प्रश्न के किए के निवास के निव পুৰ্বৰ্জের সমান বকা হইল। বথাৰ্ব গুণা উপেজ বাৰুও विचित्र इटेबा इतित धामश्मा कतित्वन। कथिक भूत्रशास्त्रत उन्ने अक्मण है। का उपनेह द्वित्क (मध्या द्देग।

আর একবার কলিকাভার সুবিখ্যাত পাধোয়ালি কেশবচলে যিত্র মহাশয় ঢাকায় আসেন। কেশব বায়ু বঙ্গমাতার সুসন্তান হাইকোটের স্থনাম ধরা বিচারপতি প্রবোক গত সার রমেশচন্দ্র মিত্রে মতোদ্ধরে সভোদর। দেই স্থয়ে ঢাকা মালীটোলার গোদাই বাড়ীতে **গানের** মঞ্জলিস হয়। তথায় হরি ওস্তাদ এবং ঢাকার পাথোয়াজি রামকুষার বদাক মহাশয় প্রমুপ গুণীগণ উপস্থিত ছিলেন। र्वात अञ्चाप व्यापकारू विवास व वारा अन्य भारे (जन, ভাহাতে রামকুমার বাবুর পাথোয়াজের সঙ্গত করিছে किছু अभूविश श्रेष्ठ विषया छिनि श्रीक अक्रे अन कति (कनेव वावू क (म कथा वर्णन। क्मिन वायुत्राक्ष द्वित शूर्काई विश्मिष शतिहम हिन, এবং তাহার সঙ্গে অনেকবার সঙ্গীত করিয়া প্রশংসা-লাভ করিয়াছেন। এদিন প্রথমতঃ রামকুমার বাবু হরির সঙ্গে সঙ্গত করিভে ছিলেন। হরি বিলম্বিত লয়ে গান ধরায় সঙ্গতে বড় সুধ হইতে ছিল না। রামকুমার वातू चाठि वर् सूत्रदवाका हाईरला दिनवक्रत्य रत नमस्य পাথোয়াজও সামাত একটু বেসুরা হইয়া পড়িয়াছিল। ভখন কেশব বাবু একটু বিজ্ঞপের ভাবে বলিলেন "রামকুমার বাবু, এতো খোল নয় যে মুচি একদিনই স্থুর दिर्द निरम्न चात्र कानिनिन वैष्ट इरव ना ? सूत्रहे। गिमिशा निन।" এই कथात छेशरत तामकूमात वात् কেশব বাবুর হাতে পাঝোয়াজ দিলেন, তিনিও যদ্ভের সুর মনোমত বাধিয়া হরিকে ইচ্ছামত বিলম্বিত লয়ে গাইতে বলিলেন। হরিও যথাগাধ্য বিলম্বিত লয়ে পান ধ্রিলেন। অতি অপুর্ল সঙ্গত হইতে লাগিল। গানও চমংকার জ্মিয়া গেল। ঘটাকে ঘটা পার হইয়া घाइँ वाशिन, (कहरे विश्व गप्त हाएन ना। किनव वावू (पशिक्षान (य इति कर्षकात्र जैवाद भिष भी मात्र (भी हित्राह्म, जाद (वनी मण केत्रण शाहेरन कर्ड) সভা ওছ লোক মত্রমুক্তবং बात कुनाहरन ना। उनिटिह, अमन नमात्र अर्जुर्स क्लोनाल ও अनामान

শিক্ষার পরিচয় প্রদান করিয়া কেশব বাবু চমংকার একটি তেহাই দিয়া ক্রন্ত লয় ধরিয়া দিলেন, হরিও বাহাত্রির সহিত ঠিক সেই লয়ে গান ধরিয়া যেন হাফ ছাড়িয়া বাঁচিলেন! সভাগৃহে যেন একটা বিহাৎ খেলিয়া পেল। উল্লাস স্তক বাহবা ধ্বনিতে গৃহ পূর্ণ হইয়া গেল।

च्यात এक लिएमत कथा निवा है हति अञ्चारमन कथा (मद कतिय। वित्रमान तारमञ काठीत प्रक्रिंग ताड़ीम কায়স্থ জমিদার রাজা নরনারায়ণ রায় একবার ঢাকায় আসিয়াছিলেন। তিনি পাখোয়াকে অতি উচ্চ শ্রেণীর ঢাকায় অনেক মজলিগই তাঁহাকে প্রণী চিলেন। मेरेब्रा इरेन, किन्न गर पित्तत्र कथा विनय ना, এक पित्तत्र কথা মাত্র বলিব। গুণগ্রাহীরা সকলে মিলিয়া পরামর্শ कतिरलम (य नकल नमरप्रहे व्यवदाङ এवर दालिय রাগরাগিণী গুলিই কেবল শোনা হয়, ভোরের बागवागिनी काणाज (मानाव ऋषाग ऋविश दय मा, অতএব এবার ভোরের রাগরাগিণী শোনার বন্দোবস্ত कतिरु ट्टेर्ट । चाल এव श्वित ट्टेन रा कदिशाहिन निवाभी शाविक कविशास्त्र वाकीए निर्फिष्ठे पितन ভোর রাজে গান হইবে। গান করিবেন হরি কর্লকার এবং সঙ্গৎ করিবেন রাজা নরনারায়ণ রায়। রাগি ৩টা হইতেই লোক জড় হইতে আরম্ভ হইগ। शृद ভतिया (श्रम । ताका नतनातायण ताय ताय पाटरन দীননাথ সেন, প্রীযুত আদিত্যচন্দ্র চক্রবর্ত্তী এবং অভাত বছ ভন্ত, সজ্জন, ওতাদগণ ক্রমে ক্রমে স্মিলিত হইলেন। यञ्चाणि यथन मून्यतक्रात्प मिल हहेशा त्रल, उथन वाड़ीत कर्छ। बनी छिलद बुद्ध ४ कुक्छ हता बहुदी देशित एव (पर, ভ্ৰ কেশ গুদ্দ, এবং গুৰু পরিচ্ছদ সহ সভামগুপে छिनश्चिष्ठ इहेमा कर याए भनाम कः श्रे यथन विशिन "আৰু আমার কি সোভাগ্য! আৰু এই দীনংনের কুটীরে কত রাজা মহারাজা রায় বাহাত্রের ওভাগমন ब्हेबाह्य, व्यामि कि निधा छाहात्मत अछार्यना कतिव?"

এবং এই কথা বলিতে ব্লৈতে বৃদ্ধ যথম আবেশ ভ্রেক্ত কাঁদির। ফেলিলেন, তখন হইডেই সভার ধেন কেম্বর্গ একটি করণ গন্তীর ভাব বিরাজ করিতে লাগিল। সেই পবিত্র উবা কালে হরি রাগরাজ "তৈরব" রাগের আলাপ আরম্ভ করিলেন। আলাপ এমনই জমিল যে বোধ হইল যেন মুর্তিমান রাগ সেই স্থানে আবির্ভু হইলেন। কি জানি কেম সকলেরই চক্ষে জলধারা বহিতে আরম্ভ হইল। সে কি এক অনাবিল পবিত্র আনম্দ আছে! সকলেরই হুলয় গলিয়া গিয়াছে, কর্পে মধুধারা বর্বিভ হইতেছে। এমন দৃখ্য ঢাকার আর কথনও ক্ষেত্র কেবনও ক্ষেত্র বিলয়া বলিতে পারেন না। বহুক্স আলাপের পর ভৈরব (ভয়র্রা) রাগেরই গ্রুপদ গীত হইলঃ শ্রোতাগণ সকলেই কি এক অপুর্ব প্রশীয় ভাব ক্ষরের লইয়া গ্রহ ফিরিলেন।

थ ताम कुमात वमाक :-- जाका मवावणुदा देशक বাসস্থান ছিল। ইনি ভন্তবায় কুলসভূত। রাম কুমাঞ্চ বাবুর পিতার নাম ৩ নক্ষার ব্যাক। ইনি স্থীত শাসে পণ্ডিত ছিলেন। উচ্চ শ্রেণীর পাঝায়ারি ব্লিয়া তাহার খ্যাতি ছিল। ইনি ৮ খরুরাভি ক্সালারের নিকট পাখোৱাল শিক্ষা কৰেন ৷ বাগৱাগিণীতে ভাব বিশেষ দুখল ছিল। বিদেশ হইতে ঢাকায় কোনত अञ्चाम वाशित डाँशांत एवरनई छै.शांपत वास्ताम सहेख, এবং উচ্চার বৈঠক খানার গান বাজনা না করিটা কাৰারও তৃপ্তি হইত না। ইনি স্পীত চর্চার অস্ত লকাধিক টাকা বায় কলিয়াছেন। রামকুমার কর্ व्यागत्रज्ञाय वीत्रव्यः भानिका वाराष्ट्रदेव प्रवर्गाहेक भारवामाक वाक:हेरजन। जिनि "वानरकनि कोमूनी" এবং "কোকিল সংবাদ" নামে ছুইখানি যাতার পাঞ্চা , বিধিয়াছেন। দানকেলি কৌমুদী "ঢাকা বাদশা यात्त्र" बृज्जिङ इहेग्रा ১२७० गत्नव २०१म खास छातिए श्रकाणि व्या वहे वाष क्कनीना अवनयस निमित्र

ইইয়াছিল। ইহার রচনা বড়াই কট মট, তবে পান-শ্বলির সুর ভাল অভীব পরিপাটী। নম্নাবরূপ একটি শানের কিল্লংশ উক্ত হইল।—

"চণ চল দখী মুধ, মধুরাতে হবে ব্রত, বেচে স্থত, পাবে ক্ষত ফল, মনোমত। আব্যো জরতী প্রতি, ভগবতীর যুক্তি. পতি পতি রতি দতি যত॥" ইত্যাদি—

শকোকিল সংবাদ" প্রকাশিত হয় ১২৮৫ সনের ২লা আবিন। প্রকাশক পারজোয়ার শুভাচ্যা নিবাসী ৮ অপমন্ত চক্রবর্তী। উক্ত গ্রামের দীনবন্ধ চক্রবর্তী মহাশয় অবং অক্তাক কতিপর যাজির উৎসাহে ও অর্থব্যয়ে এই মাজার অভিনর হয়। ইহার রচনা অত্যেকারত সরল, সুর বিকাশও স্থালর। এ গ্রন্থও ক্রফগীলা ঘটিত বিবরণ স্থান্থান্য নিধিত। নিয়ে ২টি গান দেওয়া পেলঃ—

গাগিনী সিল্ল — তাল জলদ তেতালা।
 "ওরে শঠ মধুকর নিচুর নিদয়।
 গালির অবের হেন মুলাঞ্জণা নয়॥
 শালের গালির গালিরে চুত মঞ্জরী,
 লাভিলে নব নিলিনী ভূলি সে প্রবায়;
 শোলির প্রাণ মনে, ভূলিলে তারে কেমনে,
 এ নহে পিরীতি রীতি, কঠিন জলয়॥"

এটি শক্তলার বক্ষানান গোকটির অতি প্রকার অভ্যান ঃ—

**্ৰ হিণ্ব মহ**লোকুবো ত্মং তহপরিচুথি অ চ্তমঞ্জিরং।

ক্ষমন্ত্রমন্ত নিক্লোম্ভ লর বিস্মরিলোসিণং কহং॥"

দিতীয়:গান্টির বিবর হইতেছে এই ;—একদা উন্নব বুলাবনে উপস্থিত হইরা রাখাণ্দিগকে বলিলেন "প্রভূ সু'লিন পরে বুলাবনে আসবেন। আমি এ সংবাদ নিয়ে আস্পানাদের নিকট এসেছি।" রাখালদের মধ্যে একজন আই সংবাদ প্রথণ করিয়া গাইলেন—

২। রাগিনী দেশ—তাল পোন্ত।

"বউক মেনে জুড়ালেম মোদের এই ত ভাল।

ভারের স্থান দেখা ঐত ভাল।

কৃষ্ণ পুন, আগবে হেখা, কেউ ত বলে না কোলা,

স্থাংবাদের মিথা। কথা সেও ত ভাল। মদব্ধি স্থা গিছে, এমন গুনি নাই কার কাছে, বাক্ রোধ বিকারের প্রলাপও ভাল।"

নবাবপুরের কোন এক স্থানে এক দিন একটি মঞ্চলিক্টে গান বাজনা হইতেছিল। সঙ্গীত ধুব জমিয়াছে, এমন সময় রামকুমার বাবু তথায় উপস্থিত হইলেন। গুছে প্রবেশ করিয়াই বলিলেন যে নিশ্চয়ই কোন যন্ত্র বেশ্লরা আছে। ওখানে সেতার, এআজ, তানপুরা, তবলাঃ প্রস্তৃতি নানা যন্ত্রই বাজিতেছিল। শেবে অস্থুসন্ধানে দেখা গেল যে একটি এআজ একটু সামাল বেশ্লরা আছে বটে। এমনই ভাঁহার স্থরবাধ ছিল। রামকুমার বাবু তদীয় পুত্র প্রীযুত উপেক্সকুমার বদাক মহাশরের হত্তে নিজের পাখোয়াজের বিভা গুল্ড করিয়া ইহধাম ভ্যাগ করিয়াছেন। প্রায় ৩০ বংসর হয় ইনি পরলোক গমন করিয়াছেন।

 भावूहद्रण विका: — व्यवाद निवास हिन छाकः काराबर्षेनिट । हेनि भूवर्ग विनिक क्रामाङ्ग । मासूहब्रम পুর্বে ধররাতি জমাদার এবং পরে পশ্চিম দেশীয় আক্ষা ওক্তাদ রাজারামজির নিকট শিকা লভে করিয়া পার্থোয়াঞ্চ ও ভবলায় অতি বড ওস্তাদ হন। কলাবভগণ এখনও বলেন যে সাধুর মত ''কুঘর'' সঙ্গতিয়া তাঁহারা কলাচিৎ দেখিয়াছেন। নিভান্ত আনাড়ির সঞ্জেও তিনি অনায়াসে শঙ্গত করিয়া গিয়াছেন, কাহাকেও অপদস্থ করেন নাই। হাতের বোল অতি পরিস্কার ও সুমিষ্ট ছিল এবং গানের সঙ্গে তাঁহার বোল পরণ এমন মিলিয়া ঘাইত -যে গায়ক মাত্রই তাঁহার বাত্মের সুখ্যাতি করিতেন। যত বড় गारेरावे आयून ना रकन, मछावृत्म माधु निर्शिक श्रनस তাঁহার সহিত সঙ্গত করিতেন। তিনি গান ধরা মাঞ্ট वृतिया नरेटबन, कान जान वाकारेट रहेत्य, अमनहे তাহার আক্র্যা প্রতিভা ছিল। তিনি মহাতাপ ও (जानाभ नार्य इंहे भूख दाचित्रा खात्र २० वरमत एत्र পরলোক গমন করিয়াছেন। ইহারা উভয় ভ্রাতাই অভি कुल्द कर्गा वाकाम ।

গৌরমোহন বদাকঃ—ইনি ঢাকা নবাবপুর নিবাদী
ছিলেন। ইনিও ধয়রাতি অমালারের নিকট তবলা
শিক্ষা করেন। ভাল বাজাইতেন। গৌরমোহন বাবুও
প্রায় ৩০ বৎসর পুর্বে জীবিত ছিলেন।

ভ আনন্দ মোহন বগাক :—ইনিও নবাবপুর
নিবাসী। আনন্দ মোহন পাথোয়ানি ছিলেন।
কলিকাতার ৬ পাচুমিত্রের নিকট তিনি মৃদদ্ধ বাত্য শিক্ষা
করেন। পরে ঢাকায় রামক্মার বদাক এবং গৌর
মোহন বগাক এই উভয়ের নিকটই শিক্ষা করেন। শ্রবণ
মাত্র তিনি বোল শিথিয়া ফেলিতেন। চাকার বর্ত্তমান
শ্রেষ্ঠ তবলা বাদক প্রীযুত প্রসন্ন ক্মার বণিক্য মহাশয়
বলেন যে আনন্দ বাবুর মত পাথোয়ান্দি ঢাকায় আর
কথনও হয় নাই। তবলাও লতি উৎরুপ্ট বাজাইতেন।
তিনি যথনই যে সভায় বাজাইতেন সেথানেই আনন্দের
ঢেউ থেলিয়া যাইত—তাঁহার আনন্দ নামের সার্থকতা
হইত।

একদিন রামকুমার বাবু ছুই একজন বন্ধু সঙ্গে বিকাল বেলা নদীর ধারে বেড়াইতে ঘাইবেন বলিয়া बीत्र बीत्र नवावपूरत्र पूर्णत थात्र निकरेवर्छी श्रेशास्त्र, এমন সময় শুনিতে পাইলেন যেন অতি দুরে গন্তীর মেঘ আকাশের দিকে চাহিয়া গর্জনের শব্দ হইতেছে। **(मर्वित्मन (य नीमाकाम स्निर्मम--- अक विन्मू (मण्ड** নাই। সঙ্গীরাও ঐ শব্দ শুনিভেছিলেন। তাঁহারা আর महीत शादा (शालन ना, कितिया हिलान। तामक्यात বাবু, যতই নিজবাটীর নিকটবত্তী হইতেছিলেন শব্দ ভতই লাইতর হইতেছিল। আরও নিকটবর্তী হইলে ৰুঝিতে পারিলেন যে উহা মৃদঙ্গনিনাদ। কে বাজায়? कोज्हनाकास रहेशा निक देवंठकथानाम गिमा (पिरान আনন্দ বাদ্য অভ্যাস করিতেছেন। মুধে আনন্দকে विशासन "भाषाम," किंख निक भोतवरमाशामकात बार मान कि चार करें इहेरनन्। चानमध छारव ঃশীতে তাহানা ব্ঝিলেন এমন নহে। चानम এर

ঘটনার পর আর বেশী দিন বাঁচিয়াছিলেন না। ঢাকার তুর্ভাগ্য যে অকালে কাল তাঁহাকে কবলিত করিক। অফুমান ৩৫ বংসর হয় আনন্দনোহনের মৃত্যু হইয়াছে।

৮ শ্রীদামচন্দ্র দাসঃ—ইহার নিবাস চাকা নবাবসঙ্ক, বাদলপুর। ইনি সাহা কুলোত্তব। ইনিও উক্ত হোবেন বন্ধের শিস্তা। অতি উত্তম তবলা বাজাইতেন।

ভ হুগাপ্রসাদ লালা:—ইহার নিবাস ছিল ঢাকা
উর্দ্ধু বাজারে। ইনি পশ্চিম দেশীর কারস্থ সন্তান
নবাবী আমল হইতেই কএক বর পশ্চিম দেশীর ভল্পনাক
নানা কার্য্যপদেশে ঢাকায় আসিরা উর্দ্ধুবাজারে
বসবাস করিতেছেন। হুগাপ্রসাদ লালা স্থ্রবিখ্যাত
অপ্পন বার শিয়। ইনি তবলায় বিশেষ অভিজ্ঞ ছিলেন।
রায় বাহাহর ঈশ্রচন্দ্র ঘোষ মহাশয়ের সঙ্গীত বিদ্যাসরে
ইনি তবলা শিকা দিতেন। ইহার রচিত তবলা শিকা
বিষয়ক উৎকৃত্ত মুদ্রিত গ্রন্থ আছে। অনুমান ২৫ বংশর
হয় লালাজি অর্গে গিয়াছেন।

৺ খামাপ্রদাদ রায় চৌধুরীঃ—ইনি ঢাকা, কালিমপুরের স্বিপ্যাত কায়ন্ত জমিদার বংশোন্তব। ইনি সঙ্গীতের একজন প্রধান পৃতপোষক ছিলেন। প্রবং
নিজেও উৎকৃত্ত তবলা বাজাইতেন। ওভাদ হোবেণ
ব্রয়ের নিকট শিক্ষা লাভ করেন। ইহার পুত্র প্রীবৃত্ত
নারদাপ্রদাদ রায় চৌধুরী মহাশয়েরও তবলায় বেশ
হাত।

শ্বিষাচরণ য়ায় চৌধুরীঃ —ইনি চাকা, গাছার
নাম্ব কমিদার সন্থান। ভাল তবলা বাজাইতেন।
নাম্ব বাবুর আমাল বর্ত্তমানে বলদার জমিদার প্রীয়ত
নরেজ্ঞ নারায়ণ রায় চৌধুরী মহাশয় উত্তম এপ্রাজ
বাজান। নরেজ্ঞ বাবু বহু অর্থ ব্যর করিয়া পশ্চিম দেশীয়
ভাল ভাল ওভাতদের নিকট হইতে এপ্রাজের উৎক্ট
গল সমূহ সংগ্রহ করিয়াছেন, এবং উহায় কতকাংশ
'সলীত শিক্ষা" নামক গ্রাহে প্রকাশ করিয়া দিয়া এপ্রাজ
শিক্ষার্থীদিগের মহৎ উপকার সাধন করিয়াছেন।
বৃহ্বীধ্যাত স্থানধীর নিকট তবলা শিক্ষা করেন।

ভ বাজপাইলাল :—ঢাকা উৰ্দ্বালার ইংার নিবাদ ক্লি। ভাল ওবলা বালাইতেন।

পরপার কৈ দেবপুরের ক্ষপ্রদিদ আকাণ রাজক্লসভ্ত।
বাদীর রাজা কালীনারারণ রার মহোদর ইহার পিতা।
বাজা কালীনারারণও সঙ্গীত রগজ্ঞ ছিলেন। রাজা
রাজ্ঞে নারারণ অতি উৎকট তবলা বালাইডেন।
এলেশে উহার মত জ্ঞুত লয় আর কেইই বালাইডে
লারিজেন না। তাহার হাতও বড় মিঠে ছিল। ভারতবিখ্যাত তবলতি আতা হোধেণ বা তাহার তবলা ভনিয়া
বালিরাছিলেন:—"মহারাল, আপ কো হাম বহোৎ রোজ
বাতিলানে শক্তাহৈ, লেকেন য্যারসা হাত হামারা
কতি নেছি হোরেলা। হাম্ বন্ বালাভাহৈ, তব্ মান্ম
হোতা কি লক্জিলে কি তবলাপর য্যারসা মাকি
বোল্তা।"

ীর্ণা বাধার্র অতি মধুর বাশী বাজাইতেন। তিনি
বিশেষভাবে স্কীভের পৃষ্ঠপোষণ করিছেন। বিদেশ
ক্তিতে যথনই কোনি ওপ্তাদ এধানে আসিয়াছেন তথনই
ভিনি ভাষাদিগকে বন্ধশ করিকা নিমাছেন, এবং মধেষ্ট
ক্বিশিহায় করিয়াছেন। ভারতবিধ্যাত রবাবী ৮ কাক্ষি-

বালী খাঁ। সাহেবকে বহু দিন তিনি বেডন দিরা রাখিয়া ছিলেন। ঢাকার প্রত্যেক ওন্তাদই তাঁহার নিকট যথেই সমাদর প্রাপ্ত হইরাছেন, সকলকেই তিনি যোগাতা অসুসারে অর্থ দিরা পরিভোষ করিতেন। তাঁহার এবং ঢাকার মবাব সার আবহুলগনি বাহাত্রের অভাবে ঢাকার ওন্তাদকুলকে বড়ই বিপন্ন হইতে হইরাছে। এখন আর এমন কেই নাই বে এই সকল গুণীর উপর্ক্ত পুরস্কার করে। ১৯০১, ২৬ শে এপ্রিল তিনি স্বর্গে ঘান।

ভ তীর্থনাসী মাল ঃ—চাকা এনামোৎগঞ্জের টাদপুর নামক পল্লীতে ইঁধার নিবাস ছিল। ইনি জাতিতে
কৈবর্ত্ত। পুন্দর টলা গাইতেন এবং উৎক্তই বেহালা
বালাইতেন। "লীজার বনবাদ" এবং ক্ষক্ষক গোস্বামীমহাশ্ম রচিত শতরত মিলন" যাত্রার অভিনয় করিয়া
বেশ নাম করিয়া ছিলেন ? সর্ব্ব সাধারণে তীর্থবাসীর
যাত্রা বড়ই পঞ্চল করিছ। মুসলমানদের মধ্যে নিয়
শ্রেণীর অনেকে বলিত "যাত্রা শোনত বাস্ ডিথা"
অর্থাৎ যাত্রা গুলিতে হইলে তার্থবাসীর যাত্রাই শোনা
উচিত। অলুমান ৪০ বৎসর পূর্ব্বে ইনি জীবিত ছিলেন।

৺ গগনচন্দ্র দাসঃ—ইহার নিবাস ঢাক। হত্তাপুরে।
ইনি সাহা বংশোভাব। ইনি সাধু বণিক্যের নিকট
ভবলা শিক্ষা করেন। পাথোয়াজও বেশ বাজাইতেন।
ভাল লয়ের বাট করিবার ইহার বিশেষ ক্ষমতা ছিল।
ব্রভাবস্থার অল্পদিন হইল প্রলোক গমন করিয়াছেন।
ভাষার বহু শিশ্ব আছেন।

৺ সঙ্গল শৃথাবণিকাঃ—ইহার নিবাদ ছিল ঢাকা
শাঁধারী বাজার। তবলাও ঢোলকে বেশ হাত ছিল।
অসুমান ১৫ বংগর হয় ইনি জীবিত ছিলেন।

ভাত্ম কর্মকার ও
 ভারকা শভাবনিক্য

তাতিবাদার কামারনগর এবং মিতীয়ের নিবাদ শাশারী
বাজারে। ইহারা হুইধনই হুলির গান রচনা করার জন্ত
প্রাদিক ছিলেন। দোলের সময় লক্ষ্মীথালার স্থালাবার্ম

বাড়ীতে এবং উর্দুবাঙ্গারে দহরের বাদিন্দা লোকদিণের
মধ্যে বে হলি গানের প্রতিধন্দিতা হয়, উহার ইসলামপুর
পক্ষের বছ গানই প্রতি বৎসর ইহারা রচনা করিতেন।
এই দকল গান হিন্দিতে রচিত হইয়া থাকে, এবং ইহার
একেকটি গানে নানা রকমের রাগ রাগিনী ও তালের
কৌশল দেখান হয়। একটি গানে ৫টি তাল থাকিলে
উহাকে "পঞ্চরল", ৭টি তাল থাকিলে "দপ্তরেল" বলে।
অল্প কয়েক বৎসর হয় দারকা শাধারী এবং কঞ্জ মাস
হয় ভাল্ল কর্মকার পরলোক গমন করিয়াতেন।

মধুস্দন মাগ: — ইংগার নিবাস টাকা এনায়েৎগঞ্জ। ইনি কৈবর্ত জাতীয়। ইনি একজন গ্রপদী। উর্দ্দু বাজারের ছলির দলে ইনি বছ গান রচনা করেন।

বেশ্বচন্ত্র রার:

 পারজোয়ার মান্দাইল নামক
 গ্রামে ইঁয়ার নিবাস। ইনি কায়ন্ত সন্তান। কণ্ঠসঙ্গীতে

ইঁয়ার অভিজ্ঞতা ছিল। উৎকৃত্র ছলির গান রচনা
 করিতেন। ইঁয়ার এক ছেলে ঢাকা কালেইরীতে কাজ
 করেন। অনুমান ২৫:৩০ বংসর পূর্বেইনি জীবিভছিলেন।

৺ মদনখোহন বদাক:—ইনি ঢাকা নবাবপুর নিৰাদী। ইংলাকে নবাবপুরের লোকেরা 'মুরগী মদন" বলিত। সেতার, এআলে, কানন, ললতরঙ্গ প্রভৃতি নানাবিধ যত্নে ইংহার অধিকার ছিল। অনুষান ১৫।২০ বংশর হয় ইনি প্রলোকে গিয়াছেন।

শ ক্ষক্ষৰ গোলামী: — ক্ষক্ষৰ নদীয়া জেলার
শবংপাতী ক্ষগন্ধ থানাৰ শবীন ভালন ঘাট প্রামে
১২১৭ সাথের আবাচ মানে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন।
ইনি বৈদঃকুল সভ্ত। পিতার নাম ৬ মুরলীবর গোলামী।
ক্ষক্ষল ১২৯৪ সনের ১২ই মার পরলোক সমন করেন।
২৫ বংশর ব্যবে ঢাকা আন্সেন। বহুদিন তিনি এখানে
ছিলেন, এবং "স্থাবিলাস", "রাই উন্নাদিনী", "বিচিত্র
বিলাস্" এবং "তর্ত মিলন" নামক উৎকৃত্ত যাত্রার পালাভালি রচনা করিরা প্রশিদ্ধ হইয়াভিলেন। তদীয় "স্থান
বিলাপ" ও "রাইউন্নাদিনী" প্রকৃত গাহিত্য রুস্বুক্ত গ্রহ।

এই श्रह्मदेशक गाम छनि च्लभूक्, -- (यमन भन्दिता।म তেমনই উপযুক্ত পুর সংযোগ। সেই সময়ে ঢাকা এই नकन यांकात ननीज अवरा आनम नागरत यथ हरेगा থাকিত। তথন ওপর্যন্ত যাত্রা গানে বর্তমান ভূরিপ্রথা পাপাত্মা' দখোধনে কর্ণপীড়া দায়ক উৎকট বজ্ঞভার थाइकीर दश गारे। अवनकात याजा श्री मा नाहेक ना याजा, हेशां का ना है कहा का विकास का विकास का विकास নৈপুঞ্জ নাই সঙ্গীতের মধুরতাও নাই। পুর্ফো ষাজার नान एनिया लाटक टाएबर करन छानिया नियास्का षात्र अधनकात्र कृतित गान अवः हाकत्रात्मत्र अकालाम-হীন সন্মিলিত শিবাধ্বনি নিশিষ্ট চিৎকারে কর্ণজাল্য উৎপাদন করে। তথনকার বাজার পানে বাহার। ভুর দিতেন তাঁহারা সঙ্গীত শাস্ত্রে অভিজ্ঞ ছিলেন; ভাই मग्राक्रवाधी चुनाव चुत मः त्याम कविया भानखंगि वहमा করিতেন, এবং বিশুদ্ধ ভাবে দেওলৈ পীত হইভা इक्कमन (शायांभी मशानत्त्रत अद्यावनी नक्क आमात्र विष्मय किंदू वर्गा निर्श्वाशायन, कात्रग अ म्याप्त अभिक्ष সাহিত্যিক রায় সাহেব ত্রীযুত দীনেশচজ দেন মহাশয় ভদীন 'বদভাবা ও দাহিত্য" নামক পুস্তকে, এবং চাকা সাহিত্য পরিষদের সহকারী সম্পাদক আমার প্রিয় বৃদ্ধ প্রীযুত নলিনীকান্ত ভট্রশালী মহাশয় এই পরিবং গুছেই আলোচনা করিয়াছেন। গোলামী মহাশয়ের প্রথমোন লেখিত ৩খানি পুতকই ''কৃষ্ণক্মল গ্রন্থাবলী'' নামে তদীয় সুযোগ্য দোহিত্র শ্রীযুত ক্রিক্সার গোৰামী মহাশন কর্তৃক মৃদ্রিত ও প্রকাশিক ক্রিয়াছে। কমলের একটি কুদ্র স্বীত মাত্র আধীমে উচ্ছ করিশাম। রাধিকা চিত্র লিখিত নিবিল্পরণ শালিক সুন্দরকে সঞ্জীব ভ্রমে সম্বোধন করিয়া বলিভেছেন-

রাগিনী মনোহরগাথী—তাল লোভা।
"এগ এগ নাথ রাখি হিয়ার মাঝারে ভরিয়ে
দু'টি নয়ন প্রহর্ম করিয়ে।

্র । জাসিরে কংশের চর, কাটিরে মোর এ পাঁজর বঁধু তোমার নিতে জার নারিবে হরিয়ে।

২। আমার হ্বদর মাঝে, বিচিত্র পালন্ধ আছে,
ভাহে স্থাধ শরন কর তুমি,
হটি শীতল চরণ দেবি আমি,
বঁশু ডোমার প্রাণান্তে না দিব ছাড়িয়ে।"

৺ রাজচন্দ্র দাস:--নিবাস হত্তাপুর, ঢাকা। ইনি ৰালাকার বংশে জন্মগ্রহণ করেন। রাগ রাগিনীতে জীহার বিশেষ অভিজ্ঞতা ছিল। हैनि अगळळ द्वाय এবং ভক্ত চৈতন বাবুর সাহায্যে "রূপ অভিসার দীলা" লামক একটি যাত্রার পালা রচনা করিয়া ছিলেন। এই আছে ঢাকা "নৃত্ন যত্ত্ৰে" মৃত্তিত হইয়া হ্ত্তাপুর হইতে ं ३२७१ मानत २१८न माच जातिएच श्रकानिक दत्र। अहे अइ७ क्कनीन। चरनपरन निधिछ। ইহার রচনায়ও दिकान विरम्बद नाहे, निष्टि मक अवारवरमञ्जाहमा। কিৰ রাগরাগিনী ও তাল লয় অভ্যক্ত মুসিরানা ও বাহাছ্রীর দলে বিক্তত হইয়াছে। দৃষ্টাত পরপ একটি পান দিলাম। ইহাতে অষ্টাদশট বিভিন্ন রাগিনী ও ্পঞ্চল টি ভাল ব্যবহৃত হইরাছে। ইহা গাওয়ার সময় শোকে চমৎকৃত হইয়া যাইত। স্কীতজ্ঞ ব্যক্তিবর্ণের কৌত্হল পরিত্তির জন্ম গুনিমে রাগিনী ও তালগুলির नाम अमल इहेन--

त्रानिनी--(>) कानाड़ा, (२) मध्याधवी, (७) नाउन,

(৪) রারোয়া, (৫) শিল্প, (৬) বাগেঞী,

(৭) ম্লভান, (৮) গৌরী, (৯) গারা,

( > ) तिच-रेख्तवी, ( >> ) निध्नन, ( >২ )

मा (३९) मूम, (১৪) (वहान, (১৫)

वाक्षक, (১৬) विदलता, (১৭) ভাটিরাল-

বৈৰণি, (১৮) দরবারি কানাড়া।

্রান - (১) চোঁতাল, (২) তেওড়া, (৩) ফ্রেদন্ত, (৪) আড়বেমটা, (৫) একতালা, (৬) যৎ,

(৭) ব্রহ্ম, (৮) ভগাা, (১) ঝাঁপ, (১০) রূপক,

( २२ ) क्या, ( ४८ ) ८गाग, ( ३० ) क्रथक, ( २२ ) क्या, ( २२ ) भागाति, ( २७) मधामान,

( ३८ / छवा।, (३८ ) हेल ।

वानि इन्यात छेकि । छहा बहे :---

রাগ দাগর—তাল ফেরতা। ''ধরম করিয়ে দাখি হে বহু বহুভ কান,

বল মম উপদেশ কছু না করিবে আন । মোদের রাই রসবতী, বিনে তার অমুমতি,

জনবিন্দু ধনমতি, আর না করিবে পান। স্নাই আজা বিনে রাধান পতি,

পদ আধ কোপা না করিবে গতি, দিয়ে দাস থত, তার অমুগত,

রহিবে শৃদত, দিবস রাভি কদাচ ভরমে চন্দাবলী নাম,

মুখে না আনিবে হে লম্পট শ্যাম, কুঞ্জে দিশে তার না চাহিবে আর,

কর অঙ্গীকার করিয়া শপণি। প্রতিশক্ষগণ সনে, না করিবে আলাপনে,

हित्रपिन वृन्पावरन,

দেশা হইলে কোন স্থান। পরিহরি হরি অমূল্য মাণিক,

তুচ্ছ কাচে তব লম্পট লাল্য অধিক। হইরে উন্মন্ত, ত্যালিয়ে অমৃত,

ক্ষারে হইলে রত। তেই তোমার ধিক ২০ অকলক শশী করি অনাদর,

ক্ষুত্ত নক্ষত্তে সদা সমাদর।

नित्रत्र ज्या र्वामा हिन्दा हिन्दा,

অরসজ্ঞলনে কি কব অধিক।

हिहि मंत्रि नात्क, कि नाहरम এहि नात्क,

প্রভাতে রাই কুঞ্জ মাঝে,

করিয়েছিলে পয়ান। তথু জ্বান শ্যাম নয়ন ভলীতে,

उध्यान नाम नम्रन छनाट्ड,

কুলবতী সভী যুবভী ভূলাভে,।

শীরাধার পিরীতি, অলোকিক রীতি,

पूमि चल चलि, कानित कि मत्छ। सूर्युक्त व यनि क्षित्र कत्त्र मान,

পায় ধরে মান করে স্মাধান। রাই পদ ধরি, রইতে যদি পারি,

শ্বশ্ৰ কিশোরী হৈত দ্যাধিতে।

বিধি ভোমাৰ প্ৰতিকৃল,

লাভে হারাইলে মূল, হারাইলে বৈরিক্ল,

......

শ্রীযোগেজকিশোর রক্ষিত।

ক্ষান্ত্র-পরিবং-অমুস্ত্র ক্রমিক সং শ্রেপ্তী সং





১০ম বর্ষ

ভাদ্র ১৩২৭

৫ম সংখ্যা

### ক্ষেত্ৰ ও ক্ষেত্ৰভাঞ

সভাপতি মহাশয় ও বন্ধুবর্গ। প্রবন্ধ লেখক তাহার
মৃত্যুল চিস্তা শ্রোত্বর্গদিগকে উপহার দিবার ইছে।
প্রাণোধিত হইয়াই সাহিত্য-সভায় প্রবন্ধ পাঠ করিয়া
খাকেন, শ্রোত্বর্গও তাহার নিকট নৃত্যু কিছু প্রত্যাশা
কবেন,উভয় পক্ষেরই এই ইছে। ও প্রত্যাশা সম্পূর্ণ সম্পত্ত ও
স্বাক্ষাবিক। আমার নির্নাচিত বিষয়টী অতি পুরাতন।
আপনারা সকলেই এই বিষয়ে চিস্তা ও আলোচনা
কবিয়াছেন, মৃত্যুল কিছু আপনাদের সমক্ষে উপস্থিত
কবিবার শক্তি ও সামর্থ্য আমার নাই। তবে আপনাদের
ক্ষুত্ত শিক্ষিত বন্ধুবর্গের সহিত আলোচনা কবিয়া উপকৃত
হইব এই বাসনার বশবর্তী হইরাই আপনাদের কাছে

ভ ছাক্ষা সাহিত্য-পরিষ্ণের মাসিক অধিবেশনে গঠিত।

উপস্থিত হইয়াছি। আমাদের পরিষদের সুযোগ্য সম্পাদক
আমার শ্রমেয় বন্ধ উপজে বাবুর নিকট একটা প্রবন্ধ
পাঠ করিব, হাগিতে হাগিতে একদিন বলিয়াছিলাম।
কিন্তু প্রবন্ধ লিখিতে বসিয়া দেখি ইহা আমার কাল
নহে। তাঁহার নিকট অন্যাহতি চাহিয়াছিলাম, তিনি
ছাড়েন দাই। আমার আলোচ্য বিষয় "ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রক্ষ"
বা "প্রকৃতি ও পুরুষ"।

প্রীশীমন্তগ্রনগাতা অতি সৰ্শা এই। আপনারা
সক্ষেই ইহা পাঠ করিয়াছেন। উহার অব্যোদশ
অধ্যামের নাম "ক্ষেত্রজেবিবেক অধ্যাম" বা "প্রকৃতিপুরুষবিবেক অধ্যাম"। অভ সভায় ঐ অধ্যামেরই একট্ট
আলোচনা করিব।

' ১**૫** লোক—

ইনং শরীরং কৌন্তের । ক্ষেত্রমি ছাভিনীয়তে। এতম্বোনেতি তং আহাত ক্ষেত্রজ ইতি তবিদ্যা আভগবান বলিভেছেন—হে কৌৰেয়, এই যে শরীর ইহাকে ক্ষেত্র বলে, যে ইহাকে জানে তাহাকে ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞবিদ্যাপ ক্ষেত্রজ্ঞ বলিয়া পাকেন।

বিদ, ইন্দ্রিয় ও প্রাণাদি সম্বাসত বে ভোগায়তম দেহ ইহার নাম ক্ষেত্র, আর দেহাভাত্তরে থাকিয়া যে পুরুষ ইহার তথ অবগত হইতেছেন, তিনি ক্ষেত্রজ্ঞ পদ বাচা। এই ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ নাম—ভগবান বলিতেছেন—আমি দিতেছি না, ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞবিদ্ অর্থাং প্রকৃতি ও পুরুষ, উচ্চরকে ধাঁহারা জানিয়াছেন, তাঁহার।ই এই আধ্যা

#### र्व स्थाय -

কেত্রজ্ঞাপি মাং বিদ্ধি সর্বক্ষেত্রেষু ভারত।
কেত্রকেত্রজ্জার নিং যতক জানং মতং মম॥
কিল কেত্রের মধ্যে সামাকে কেত্রজ বলিয়া জানিও;
কৈত্র ও কেত্রজের যে জান ভাহাই জান, ইহাই আমার

শাব্রদণ্ড পর্যন্ত যাহা কিছু উপাধিবিশিষ্ট কেতা বা লাভ আছে, তৎসমুদয়কে ঈশর জানিতেছেন—এজন ঈশর শর্মকেতা মধ্যে কেত্রজ্ঞ। এই যে কেত্র ও কেত্রজ্ঞের জান ইহাই তথ্জান।

বে কিছুর থাকিতে হইলেই উথা কাহারও জানে
বাকিতে হইবে। জান বলিখেই জাতা ও জাতব্য হুইই
বাকাচাই। ক্ষেত্রজকে ছাড়িয়া কেত্রের অন্তিষ্ক বেমন অনভব শাবার ক্ষেত্রজ আছেন ক্ষেত্র নাই ইহাও সম্ভব নহে।
ইপমাভিন্ন প্রকৃতি ও পুরুষকে বুঝাইবার কোনও ভাষা
কাই। ক্ষুৰক ভাষার ক্ষেত্রকে যেমন জানে—জানা কেবল
চিনা মহে—ঐ ভূমি কি ফল প্রদানে সমর্থ—কি উপায়ে
কান কি ভাবে ব্যবহার করিলে উহা ইপ্তিত ফল প্রদান
কানিবে, কাক যেমন জানে, ক্ষেত্র ও কুবকের যেমন মিত্য
সক্ষে, পুরুষ ও প্রকৃতির সম্বন্ধ ও অনেকটা দেইরূপ।

ভশবান বলিতেছেন ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞার যে জ্ঞান ক্ষাই আনে। জ্ঞান স্থাৎ অসুভূতি realisation, মান্য জীবনের বিশেষত্ব এইখানেই। আমাদের শরীরস্থ আজা বে কেবল শরীরকে জানিরা খাকেন ভাষা নথে, তিনি নিজের অরপকেও জানিতে সমর্থ। ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ—দেহ ও সর্বভূত এবং দেহস্থিত ও সর্বভূতস্থিত আয়াকে জানাই প্রকৃত জান বা তত্ত্তান।

সু গীয় প্লোকে ভগবান বলিভেছেন—

তংক্ষেত্রং যদ্ যাদৃক্ চ যদিকারি যতক্ষ यৎ। স চ যোয়ৎ প্রভাবন্চ তৎ সমাসেন মে শুদ্ধ।

এই কেত্র কি, ইহার সক্ষণ কি, ইহা মাহা হইতে এবং যে যে কার্যারূপে উৎপন্ন হয় এবং ইহা হইতে যাহার যাহার উৎপত্তি হইয়া গাকে আর সেই কেত্রজ্ঞ ও বা কি এবং তাহার প্রভাবই বা কি, সংক্ষেপে ভোমাকে বলিব। ৪র্থ লোক—

> ঋষিভির্বহণ গীতং ছন্দোভিবিবিশৈ পৃথক্। ব্রহ্মস্ত্রনপদৈশ্চের হেডুমদ্ভিবিনিশ্চিতঃ॥

অনাদিকাণ হইতে বাশঠাদি ঋষিরা পৃথকভাবে বছ প্রকারে বেদউপনিষদাদি দারা এবং অসংশয়িত যুক্তি-যুক্ত বাক্য দারা ইহারই বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন।

প্রভাবতঃই মনে হইবে—ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের শ্বরূপ বাং লক্ষণ বর্ণনা করিতে গিয়া হঠাৎ ভগবান বেদ উপনিবদ ও অধিদের দোহাই দিলেন কেন ? অর্জ্ঞ্ম হয়ও ভাবিতেছিলেন, আমি আল যাহা ওনিতে যাইতেছি ইহা কেহ কথন বলেও নাই ওনেও নাই। অর্জ্ঞ্জা ভগবান অর্জ্ঞ্নকে সতর্ক করিয়া বলিতেছেন-ন্ত্র্ম কথা বলিতেছি না, অর্জ্ঞ্ন! অনাদিকাল হইতে বশিষ্ঠ প্রভৃতি অধিগণ অসংশয়িত ও যুক্তিযুক্ত বাকুয় যারাই ইহার বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন এবং বেদ উপনিবদানিতেই ইহারই কথা বর্ণিত হইয়াছে। আজকাল অপয়েয় নুত্রন কণা ও নুত্রন চিন্তা নিজের আবিষ্কৃত ও চিন্তাপ্রত্বত বলিয়া দশকনের নিকট প্রকাশ করিবায় ইজ্যু আনাদের কত প্রবল। আর বাহার চরণারবিক্ষ হইতে বেদ উপনিবদ প্রস্তে, বাহারে জানিয়া

ষশিষ্ঠাদি ঝবিগণ মহিমায়িত তিনি শাস্ত্র ও ঝবিগণের মহিমা কীর্ত্তন করিয়া অর্জ্জুনকে শিকা দিতেছেন। কি স্মুদ্দর শিক্ষা!

আরও একটী দিক আছে। কুরুক্তের যুদ্ধের প্রাবস্থে
পাওবকুশ-ভরদা, প্রীপ্রির ক্ষেরি প্রিয় দধা, ধর্ম সংস্থাপনো
প্রধান সহায়কারী কুন্তীপুরে অর্জ্বন যুদ্ধ করিবেন ন
বিনয়া বাঁকিয়া বসিয়াছেন; দেহাত্ম বোধ তাহাকে এমনই
মোহাছের করিয়াছে যে ধর্মার্থে বা আত্মরক্ষার জ্ঞাও
ভিনি স্বজন নিধন করিতে প্রস্তুত নহেন, এ অবস্থায়
ভগবানে বা ভগবছাক্যে অবিশ্বাস অর্জ্বনের পক্ষে সম্পূর্ণ
স্বাচাবিক। কেবল নিজের মতে আর কাটিতেছে না।
নজির না দেখাইতে পারিলে যুক্তি তর্ক কিছুই টিকিতেছে
না; কাজেই প্রীক্রফকেও যুদ্ধের পক্ষে ওকালতি করিতে
গিয়া নজিরের উল্লেখ করিতে হইয়ছিল। মাহুব অনেক
সময় ভগবানকে না মানিতে প্রস্তুত কিন্তু ঋষি বাক্য বা
শান্ত উল্লেখন করিতে প্রস্তুত নহে।

পঞ্চম ও ষষ্ঠ প্লোক—

सहा ज्ञान्तकः (ता वृद्धित्रवाकः स्व । हेना नि
सहा नि नि नि नि नि नि नि नि नि स्व । यहः स्व । यहः । यह

শব্যক্ত বা মায়া হইতে বৃদ্ধি, বৃদ্ধি হইতে অহংকরে, শহংকার হইতে মহাত্ত সকলের স্থাই । অহং বহু স্যান— শামি বহু হইব; প্রকৃতি অইধা ভিয়া—প্রকৃতি আট ভাগে বিভক্ত হইবেদ—মায়া, বৃদ্ধি, অহংকার ও পঞ্চলাত। প্রণতন্মাত হইতে একাদশ ইঞ্জিয়—মন, প্রঞ্জানেজিয় ও পঞ্চ কর্মেজিয় এবং রূপ রূপ মঞ্চ লক্ষ্ম কর্মাবেশ হেতু ইচ্ছা, সুখ, তৃঃধ, চেতনা, ধৃতি ইত্যাধি সম্বাস্থিত দেহ। ভগবান বলিতেছেন ইহা স্বিকার ক্ষেত্র ।

অব্যক্তকে, মূল প্রকৃতি, মায়া, পারমেশরী শক্তি মানা নামে বর্ণনা করা হইয়াছে। যায়া অনতিক্রম-নীয়া নহে তবে হুরতিক্রমনীয়া, তাহাতে আর সংক্রহ নাই। মায়াকে অতিক্রম করাই মানব জীবনের চরম লক্ষা। এই মূল প্রকৃতিকে অন্যক্ত বা অনির্বচনীয়া বলা হইয়াছে। বৃদ্ধি উথাকে অভিক্রম করিতে পারে না। ভাষা তাহাকে প্রকাশ করিতে অসমর্থ। বুদি ও বাক্ উভাই এই প্রকৃতি হইতে উভ্ভা জড় বিজ্ঞানও বলিতেছেন উহা অণ্যক্ত। Atom বে জন্ত অগতের মূলীভূত কারণ দেই theory একণে exploded theory. Ether theory &, Electron theory na একে একে গিয়াছে বা যাইতেছে। বর্তমান জডবিজ্ঞান বলিতেছে রূপ-রূপ-শব্দ-ম্পর্শ-গন্ধায়ক যে এই জড়জগ্ ইহার কারণ এক energy বা শক্তি; যাহা কিছু সমুদ্র পেই একই energyৰ manifestation বা অভিব্যক্তি माज । श्रद्ध उठिरत-एनरे energy द्व यद्भ कि । विकान-বিদ বলিবেন উহা আজও অব্যক্ত। Inductive বা Deductive Logic अत्र नाशाया अहे अवारकत খরপ বা এই অব্যক্ত দারা আরুত ক্ষেত্রস্কলে বৃধিবার বা প্রকাশ করিবার সাধা নাই। এই यि गःकत थ. বিকল্পাত্মন এই মন মহাতৃত ও অহংকারাদির বিকার ব। প্রকৃতির একটা অবস্থা। এবং **অহংকারাদি বৃদ্ধির**ি এবং বৃদ্ধি মায়ার পরিণত একটা **অবস্থা; কালেই** প্রকৃতি বা মারা মনোবৃদ্ধির অগোচর। युनि এই প্রকৃতিকে সেই জড় বিজ্ঞানবিদের ভাষার জড় আধ্যা अमान कतिएक हारहन, करत मन कर्छत्रहे अकृति चन्छ। মাত্র। গেইমন মূল প্রকৃতি বা পারমেখরী শক্তি 📲



কৃত্যিক ক্ষিত্র ক্ষর করিয়া ধারণা করিবে ? বড় বড় কনেক ইউরোপীয় পণ্ডিতগণ মনের বাহিরে কার বাইতে পারেন নাই এবং মনকেই অব্যক্ত কৃত্যি প্রকাশ করিয়া গিরাছেন। প্রসিদ্ধ মনোবিজ্ঞানবিশ্ব পণ্ডিত হারবাট স্পেন্সার উহার বিধ্যাত গ্রন্থ The Principles of Psychology র এক স্থানে বলিতেছেন—

Carried to whatever extent, the enquiries of the psychologist do not reveal the ultimate nature of mind any more than do the enquiries of the chemist reveal the ultimate matare of matter. Though the chemist is gravitating towards the belief that there is a primitive atom out of which by varriously arranged unions are formed the so-called clements, as out of these by varriously arranged unions are formed oxides, acids and salts and multitudinous more complex substanes yet he knows no more than he did at first about this hypohetical primitive atom and similarby though we have seen reason for thinking that there is a primitive unit of consciousness that sensations of all orders are formed of such units combined in various relations, that by compounding of there sensations and their various relations are produced perceptions and ideas and so on up to the highest thoughts and emotions yet this unit of consciousness remains unscrutable. Suppose at to have became quite clear that a shock in consciousness and a molecular atom are the subjective and objective faces of the samellting: we continue utterly incapable

of uniting the two, so as to conceive that reality of which they are the opposite faces,

মনোবিজ্ঞানবিদ্ পণ্ডিত ভাৰার গবেষণা যতই প্রারণ করন না কেন, মন যে কি বন্ধ, ভাৰা তাৰার নিকট অল্পাত। আবার Chemist ভাৰার গবেষণা যতই প্রশারণ করুন না কেন, জড় বে প্রকৃত কি বন্ধ ভাষা ভাষার নিকট অল্পাত। Chemist এর বিশ্বাস মূল atom বা জড়ামু হইতে এই বিশ্ব ব্রশ্বাণ্ডের স্থাই কিছ পেই atom কি বস্তু বা ভাষার প্রকৃতি কি, সে সম্বেদ্ধ ভিনি পুর্বেও বেমন অল্প ছিলেন, এখনও ভেমনই। সেইরূপ মূল চৈছক্ত-অণু হইতে এই বিশাল চিন্তা ও ভাব রাজ্যের স্থাই, মনোবিজ্ঞানবিদ্ পণ্ডিভের ইয়া ভাবিবার যথেই মুক্তি আছে কিন্তু এই চৈতক্তামুর স্বরূপ কি ভাষা সম্পূর্ণ জল্ঞাত। এই জড় ও চৈতক্ত একই স্থার তুই দিক—ইহা পরিষ্কাররূপে বৃন্ধিতে পারিক্যে বড়ই ভাল হইত কিন্তু এখনও আমরা ইহা ধারণা করিতে পারিভেছি না।

আর গীতা বলিতেছেন,তুমি যাহাকে মন ও চেতনা বল আর যাহাকে জড়াহ বা জড়জগৎ বল, এ সমুদরই এক মূল প্রকৃতি বা মায়া বা পারমেখরী শক্তি বা অব্যক্ত energyর ছই ভিন ভার নিয়ের অবস্থা। তুমি যদি মূল প্রকৃতিকে জড় বলিতে চাও. তবে দেই জড়ের বিকার এই মন ও চেতনা।

হারবার্ট স্পেন্সার ঐ পুস্তকেরই আর এক স্থানে বলিতেছেন—

See then our predicament. We can think of matter only in terms of mind, we can think of mind only in terms of matter. When we have pursued our explorations of the first to the uttermost limit we are referred to the second for a final answer and when we have got the

back to the first for an interpretation of it. We find the value of x in terms of y, then we find the value of y in terms of x and so on we may continue for ever without coming nearer to a solution. The antethesis of subject and object—never to be transcended while consciousness lasts—renders impossible all knowledge of that ultimate reality in which subject and object are united.

ভাবার্ব-

আমাদের অবস্থাটা একবার ভাবুন। তড় মনের সাহায্যে আমাদের চিন্তার বস্তা। আর মন ও জড়ের সাহায্যেই আমাদের চিন্তার বিবয়। জড় সম্বন্ধে আলোচনা করিতে করিতে শেব সীমার উপস্থিত হইয়া দেবি বে উহার প্রকৃত মিমাংসা মনের আলার মনের শেব মিমাংসার জন্ত পুনরার জড়েরই আলার লইতে হয়। হব্যু এবং পূ এর ফল হয় প এর ফল ম্বারা এবং পূ এর ফল প তে পাওয়া যাইতেছে না। চুড়ান্ত মিমাংসা অসম্বন। জড় ও চেতনা subject ও object, ভিতর ও বাহিরের এই যে antithesis বা হম্ম তাব যতক্ষণ আমাদের consciousness বা জ্ঞান আছে উহাকে অভিক্রম করা অসম্বন্ধ এবং কাজেই যে স্বাতে এই উভয়ের স্থিতি, সেই যে ultimate reality বা বেশ স্থা, তাহা জানাও অসম্ভব।

গীতা বলেন, অসম্ভব নহে।

এই প্রাকৃত জগতের অতীত মনোবৃদ্ধির অগোচর কোনও জগৎ থাকা সম্বন্ধে পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের মধ্যে বিশেব মত ভেদ আছে। হিগেল প্রমুখ মনস্বী পাশ্চাত্য মার্শনিকগণ বৃদ্ধির অগম্য কোনও ক্লিছুর আভিত্ব স্বীকার ক্রিডে প্রস্তুত ন্ধেন্। ভাহারা বলেন আমাদের অভিজ্ঞতা যে ছইটা লগতের সাড়া দের তাহাদের একটা একাদশইন্দিরগ্রাহা, রূপ-রস-শব্দ-ম্পর্ল গদ্ধায়ক অড় লগত; আর একটা বৃদ্ধিরন্তির লগত। বিজ্ঞান, দর্শন, আইন, ধর্ম-নীতি, সমাজতত্ব, ললিত-কলা সমস্তই চিন্তাপ্রস্ত ও বৃদ্ধি রন্তির গম্য। আর ক্যাণ্ট,হ্যামিণ্টন, স্পেন্সার প্রস্তুতি দার্শনিক পণ্ডিতগণ বৃদ্ধি রন্তির অতীত চিন্তাশন্তির অগম্য এক লগতের অন্তিম্ব শীকার করেন কিন্তু তাহারা বলেন উহা অজ্ঞের। উভয় পক্ষ এ বিষয়ে এক প্রকার এক মত যে বৃদ্ধির অগম্য লগত থাকিলেও তাহা সম্পূর্ণ অজ্ঞের।

এজগৎ, গীতাও বলিতেছেন, বুদ্ধির অগম্য। আমাদের
মন ও বৃদ্ধি যে শক্তি ছইতে উৎপন্ন ছইয়াছে শেই
অব্যক্ত মায়া বা পারমেররী শক্তিকে মন ও বৃদ্ধি ধারণা
করিতে কি ভাষা প্রকাশ করিতে পারে না, ইহা
সভ্য কিন্তু উহাকে জানা যার না এমন নহে। এমন কি,
মায়া দ্বারা আর্ড যে পরম পুরুব তাঁহাকেও জানা যার।
এই ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের যে জ্ঞান তাহাই প্রকৃত জ্ঞান বা
তত্ব-জ্ঞান। ইউরোপীয় মনসী দার্শনিক পণ্ডিতগণ অনেকেই
মন ও বৃদ্ধি ব্যতিরেকে জ্ঞানলাভের অপর কোনও ইল্পিন্নের
অন্তিত্ব সীকার করেন না। কিন্তু সর্কদেশীয় অধিগণ মন ও
বৃদ্ধাতীরিক্ত অপর এক অতীক্রিয়ের অন্তিত্ব সীকার
করেন এবং সেই অতিক্রিয়-লদ্ধ জ্ঞানই realisation বা
অন্ত্রভূতি।

নেও ম্যাপু তায়েশি অধ্যায়—The kingdom of heaven is like unto treasure hid in a field, the which when a man hath found, hideth; and for joy thereof goeth, and selleth all that be hath and buyeth that field.

স্বর্গরাজ্য কোনও ক্লেন্তে বুকারিত ওপ্ত ধনের মৃত। যথন সেই ওপ্ত ধনের মামুষ অসুসন্ধান পার তথ্য সর্ধায় বিক্রেয় করিয়া সেই ক্লেন্ত ক্রের করে।

হ্ৰব্ত মৃহ্মাৰ ব্ৰেন্—It is what the eye hath

BTH . 579

not seen, nor eaer heard nor ever flashed

েই পরম বস্তু চকু কর্ণাদি ইক্সিয় ও মনের অভীত

ক্রম-ক্রম ভর অতিক্রম করিয়া, অব্যক্ত বা মারার আবরণ উন্মোচন করিয়া দেই সর্বভৃতে অবস্থিত ও আমাদের দেহাভারতের অবস্থিত ক্ষেত্রভা কে জানাই মান্য জীবনের চরম লক্ষ্য। এজকুই মান্য স্থানে ভাতের আবাভাবিক আকাজ্য।

ভগবান । স লোকে বলিতেছেন—ক্ষেত্র ও কেত্রজের বৈ জ্ঞান বা অমুভূতি তাহাই সমাক জ্ঞান বা তত্তলা। এই জ্ঞান কি বন্ধ, জ্ঞানের স্বরূপ কি এবং জ্ঞেয় বস্তু কি রূপ জ্ঞান লাভ করিয়াই বা কি কল লাভ হয় ইহাই হইতেছে

লাধাই বলা হইয়াছে। মূল প্রকৃতি বা মারা অব্যক্ত। এই আন বা অকুভূতি—ইহাও ভাষা বারা প্রকাশ করা বার লাভিবে বে ব্যক্তি জ্ঞান লাভ করেন, তাহার কতক ওলি লাভৰ প্রকাশ পাইয়া পাকে। এজন্তই গীতাকার জ্ঞানীর লাভাব বা জ্ঞান-সাধন-ওল্ভলিকে জ্ঞান বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন। এই জ্ঞান বিংশতি প্রকার। যে প্রকৃত জ্ঞানী, লাজকাল শিক্ষিত ব্যক্তিগণের মধ্যে সদ্ গুরু লাভ্যের জন্তু বিশ্বর আকাললা দৃষ্ট হইতেছ। ইহা উত্তম। তাহারো জ্ঞানক সমরে জিজ্ঞানা করেন—সদ ওক কে, তাহাকে ক্ষেত্রন করিয়া বুরিয়া বা বাছিয়া লাইব গণিতার ১৩শ অব্যান্থের সপ্তম হইতে একাদশ প্রোক্ত তাহাদিগকে বিশেষ সাহায়া করিবে ইহাই আমার দৃঢ় বিশ্বাস। যথা

- (১) অমানিদ—আব্দ্লাঘাকে বলে মানিহ, তাহার অভাব অমানিদ।
- (২) অবস্থিত—নিজের কর্ম প্রকটা করন বা প্রচারের নাম দক্তিয়, উহার অভাব অবস্থিত।

- (৩) অহিংদা—হিংদার অভাব। প্রাণীপীড়ন পরশীতন বর্জন।
- (৪) ক্ষান্তি—ক্ষা, অপর কের অপরাধ করিবেও কোনও retaliation বা প্রতিশোধ নাই।
  - ( ८ ) चार्कवय्--शकु छात, चरकप, मत्रनछा ।
- (৬) আচার্য্যোপাসনা—বিনি মোক্ষসাধনে উপদেষ্টা তাহার সেবা ভশ্রবা কর্বাং গুরু সেবা।
- (१) শৌচং—কায়িক শৌচ ও মানসিক শৌচ;

  মৃত্তিকা, জল অথথা আজকালকার অবস্থা মুসারে সাবান ও
  জলাদি ঘারা প্রকালন। হিন্দুদের স্থান ও আচমনাদি,

  মুসানমানের কছু কায়িক শৌচ। আর প্রতিপক্ষ ভাবনা
  ভার্থাৎ ক্রোধান্ধি অপনম্বন—মানসিক শৌচ, মনের
  নির্মালভাব, মনের কছে অবস্থা। এই অবস্থায় ঠিক ঠিক
  সকল জিনিধ মনের নিকট প্রতিভাত হয়।
- (৮) স্থৈ<del>গাং</del>—স্থির ভাব। স্থির ভাবকেই মোক मार्न वना ब्हेबार्छ। नकन हे हनमान। ञ्चावत अन्न म जीव জন্ত জনত সূৰ্য্য গ্ৰহ নকতা আর আমাদের এই কণ্ডসূর कीयन नकनरे हिनाउदि— य मिरक मुष्टिभाष कद्रन (पिश्वित्न (कवणहें अश्वित्रा), (कवण हथन हा। देश्री (क শ্রীপ্রীভগবান জ্ঞান বলিতেছেন। জ্ঞানী শ্বির। শরীর তাঁহার ছিঃ, বাক্য তাহার স্থির, মন তাহার স্থির। कांग्रिक देश्या-भागीतरक श्वित कथा कि महस ? भागीत मर्कानांटे छ्लान । कांध्रा श्वित कतिवात अग्रूटे व्यामन ख शानायामाणित वावशा। छेदा छानीत्क छानमात्छ. মোককামীকে যুক্তিগাতে বিশেষ সহায়তা করে।---वाहिक देवर्ग-डेश महस्र नरह। वाहान्छ। सामारमत क्ष অনিষ্ট করে তাহা বর্ণনীয় নছে। অপত্য কথন, অর্থনত্য क्षन, चित्रक्षन, श्रवनिका, चाय्रवाचा देशांवि व नक्नरे কি বাচালতার ফল নং ? মান্দিক হৈব্য-প্রকৃতিতে भरमत यञ चात त्वां इत हक्त वच किहूरे नारे। कि हकन ! महिद मृत्य मृतिबाद ख्रांत्रिक्छ यठहूँक् मस्त्र,मार्गक वित्रण ७७ हेक्थ मध्यमद नरह । दक्षम हरिएक, दक्षम

চলিভেছ, ধরা বড় শক্ত। মনের স্থিরতা, নির্বাত নিছম্প দীপ-শিধার মত।

- ( > ) সাত্মবিনিগ্রহঃ—প্রবৃত্তিমার্গের নিরোধ। কেহ
  হয়ত বিজ্ঞাসা করিবেন—প্রবৃত্তির আবার নিগ্রহ কেন 
  মন্ত্রা ও পশু জীবনে পার্থকা এই নিগ্রহেই। যত নিগ্রহ,
  তত জ্ঞান; কেন জানি না। ইহাই নিয়ম। আহারে
  সুধা নির্তি—জলপানে পিপাসা নির্তি ধেমন নিয়ম,
  প্রবৃত্তি দমনে জানলাভ, ইহাও তেমনই নিয়ম।
- ( :• ) ইচ্ছিয়ার্থের্ বৈরাগ্যম্—শন্দ রূপ রুপ গন্ধ শর্পার্থতে উদ্ভূত ভোগ্য বস্তুতে বিরাগ ভাব।
  - ( >> ) व्यनद्यात्र-व्यव्हादत्र व्यवात ।
  - ( ১২ ) अवागुज्यकाताधिकः थ (नावाक्षणनिम —

এই জন্ম মৃত্যু জরা ব্যাধিতে যে হু:খ তাহার দোষ
অক্সপনি করিয়াই শাকাসিংহ পরম প্রেয়সী ভার্যা, মায়ার
আকর পরম সেহ ভাজন সুকুমার আত্মজ, পরম সেহশীল
পিতা মাতা, সমৃদ্ধি শালী সামাজ্য এক কথায় সর্বর্ব পরিত্যাগ করিয়া পরম সর্ববধন বা বৃদ্ধত্ব লাভ করিয়াভিলেন।

- (১৩) অদক্তি:--বিষয়ে যে প্রীতি তাহার অভাব।
- (১৪) পুত্রদারগৃহাদির অনভিষ্ণ:—পুত্র দারা
  গৃহাদিতে অভিষক্তের অভাব। আমার পুত্র, আমার জী,
  আমার বাড়ী, আমার ধন, প্রী পুত্রাদির স্থান্দ সুধী ও
  ছঃধে ছঃখী, ভাষাদের জীবন সরণে নিজের জীবন ও
  মরণ, এই ভাবের অভাব।
- (১৫) নিভ্যং সমচিত্তখন্ ইটানিষ্ট উপপত্তিযু— ইষ্টকি আনিষ্ট উপত্তিত হইলে স্কলি। সমচিত্ত চা।
- (১৬) মার অন্তবোগেন অবাভিচারিণী ভক্তি:—
  অপৃথক সমাধি ছারা অর্থাৎ ভগবান ভিন্ন আর অন্য
  কেছ নাই, তিনি ভিন্ন আর গতি নাই এইরপ নিশ্চিত
  একম্মা ভক্তি।
- (১৭) विविद्धारान्यतिषम्—ैनिर्श्वनाम्नारात्। । भञ्जोत्रः खत्रकः, विदाष्ठेः भव्यकः हृष्णां, निर्श्वनः नगीरेनकः

প্ৰতীর বিশিথে নক্ষত্ৰ পচিত উন্মুক্ত আকাশতল, জন প্ৰ অশান, এই সকল স্থানে বাস করিবার ইচ্ছা।

- (১৮) অরতিজনসংস্দি—জনতার মধ্যে থাকিতে । অনিচ্ছা।
- (১৯) অধ্যয়জ্ঞাননিত্য অধ্--নিত্য অধ্যাত্ম জ্ঞান-দেবা। সর্বাদ আছবিষয়ে জ্ঞান বা উপলব্ধি।

(২০) তত্ত্তনার্থ দর্শনম্—তত্ত্ত্তানাবশোকনে এবং
তৎসাধনামুষ্ঠানে প্রবৃত্তি, মোক্ষের জন্ত তত্ত্তানের
প্রয়োজন ইহা দর্শন, নিত্যানিত্য বস্তর বিচার,
জীবামা ও পরমায়ার অভেদ জ্ঞান প্রভৃতিকে জ্ঞান
বলা হইয়া পাকে। ভোগা বস্তর অনিত্যতা সম্বন্ধে সর্বাদ।
বিচারও এই যে ক্ষণত্ত্র ব্যাহর অবলম্বন পরমায়া এই সর্বাদা পরিবর্ত্তনশীল জড় জগত্তের অবলম্বন পরমায়া এই উভয় একই, এই যে অভেদ জ্ঞান ইহার নাম
অধ্যাহ জ্ঞান নিত্যত্তম। ক্ষণিক নহে, সংশ্যাবিষ্ট নহে,
এই আদিল আবার গেল এমন নহে। স্থায়ী জ্ঞান, দৃদ্ধ
জ্ঞান।

এই যে অমানিত্ব হইতে অধ্যাত্ম জ্ঞান—বংশতি অবস্থা এই সকলই জ্ঞান আর যাহা কিছু ইংলা বিপরীত তাহাই অজ্ঞান। মানিত্ব, দত্ত, হিংসা, ক্ষমার অভাব, অসরলতা, গুরুসেবায় অনিচ্ছা, অশৌচ, চাপল্য,নাসনার বশবর্তীতা, ভোগ্য বস্তুতে আস্কি, অহংকার, জন্ম মৃত্যুজরাব্যাবির মধ্যে থাকিয়াও তৎস্বত্তে আলোচনার অভাব, সঙ্গণাভেক্তা, পুরুদারা সৃহাদিকে আলবোধ, সামাত্ত ইউ উপস্থিত হইলে উল্লাস এবং এক টু অনিষ্টের আশক্ষায় বিষন্নতা, ভগবানেতর বস্তুতে ভক্তি, পর্বাদা তেলাগ্যে থাকিবার ইচ্ছা, সভা সমিতি ও আমোদ উল্লাস, ক্লাব বা বৈঠকথানার প্রতি অস্কুরজি, দেহাত্ম বোধ ও অনিত্য বস্তুতে নিত্যবোধ ইত্যাদিকে অজ্ঞান বলিয়া উক্ত হইতেছে।

এই বিংশতি প্রকার অবস্থাকে জ্ঞান বলিয়া উল্লেখ । করিয়াই ভগবান ক্ষান্ত হইলেন না। বাদশ গোকে তিনি বলিতেছেন—যাহা বা যিনি জেয় পদার্থ, যাহাকে আনিলে অমৃত প্রাপ্ত হওয়া যার, যিনি অনাদিমৎ পরজ্ঞা, আছেন কি নাই এইরপ কোনও কথা আরা ভাহাকে ব্যক্ত করা যায় না। ইন্দ্রিয় ও অনোগোচর পদার্থকেই আমরা 'আছে' বলি। বঁট আছে, ঘট ভাজিয়া গেল; ঘট নাই। আমাতে ভাছার কত মেহ ছিল—এইরপ 'থাকাও না থাকা' করা যায় না। আর তাহাকে আনিতে পারিলে অমৃতত্ব লাভ করা বায়। উপনিবদে এই ব্রন্ধকে সমন্ধ রহিত, অধ্য, অবিষয় আরা বলা হইয়াছে। যতোবাচো নিবর্তত্তে—বেথানে পিয়া বাক্য ফিরিয়া আগে—অবাঙ্মনগোগোচর—তিনি বাক্য ও মনের অগোচর।

ইহা হইল প্রকৃত সরপের লক্ষণ। কিন্তু একটু
কুনিল হইল। ভাহাকে বলা যায়না, ভাহাকে মন বারা
বারণা করা যায়না, অর্জুনের নিকট এ সকল কথা
বিলিয়া ভগবান ভাবিলেন, এত কিছু হইল না। জেয়
বারকে বুঝাইতে গিয়া ভাহাকে বুঝান যায়না বলিয়া
ভাৱ থাকিলে অর্জুন যে তিমিরে সেই তিমিরেই
বাকিয়া যইতেছেন। শীভগবান সেই ভাষার অতীত
বস্তুকে ভাষা ঘারা কিঞ্ছিৎ আভাবে বা ঈলিতে বুঝাইতে
চেঠা করিলেন।

অয়োদশ প্লোকের ভাবার্ধএই—তাঁহার সকল স্থানে হল ও পদ, সকল স্থানেই তাঁহার চল্পু মন্তক ও মুধ, সকল স্থানেই তাঁহার কর্ণ, সকল লোকে তিনি সকল আবরণ করিয়া অবস্থান করিতেছেন। অর্থাৎ তিনি অনস্তপাদ, অনস্ত চল্পু, অনস্ত মুধ, অনস্তম্বক, অনস্তশ্রভিদশার, তিনি অনস্ত ওপ সম্পর। তিনি সকল দেখিতেছেন, সকল শ্রনিতেছেন, সকল শারণ করিয়া রহিয়াছেন, ভিনি সর্বঞ্জ, সর্বল্জিমান।

भारात अकट्टे मुक्ति एरेन ; अकट्टे चार्य रव गकन

ইজিয় ও ইজিয়গাহা বন্ধকে ডিনি প্রকৃতি বা কেত্রের विकात विवा वर्गना कतिरानन, अकरण रमहे शक्कित বিকার বা তৎবোধক শব্দ ছারা অবিকারী ক্ষেত্রজ্ঞ रहत्क श्रकाम कतिए सहिएएछन। अर्ब्ह्सित श्रक् প্রশ্ন করা খুবই স্বাভাবিক-এই না তুমি বলিলে একাদ খ ইন্তির প্রকার ক্ষেত্র আবার একণেই বলিতেছ তিনি विक्रित क्रिक्, यक्षा, वक्षांत्र, यक्षांत्र, वक्षांत्र, वक्षांत्र, বড় কান, তিনি দকল আবরণ কয়িয়া রহিয়াছেন—ব্ঝিলাম তিনি না হয় একটা ৰড় আকাশ তিনি হউন্না যতই বড় ক্ষেত্র বিকার তো বটেন দেই ক্ষেত্রের মধ্যেই গিয়া তিনি তো मांडारेलन। विनि अवाड यनमावरगाठत-छाराद বাকা দারা প্রকাশ করিতে যাইয়া শ্রীশ্রীভগবান দেখিলেন তিনি self-contradicted হইতেছেন। আর একটু পরিস্বার করিতে চেষ্টা করিলেন—ভাবায় যতদূর সম্ভব অবচ ভাষার একেবারেই অসম্ভব কিন্তু সাধকের অভুভৃতি সাপেক। क्रनकारणत क्रम त्याशक्त बहेना शकिरमध অৰ্জুন সাধক তে। বটেন।

চতুর্দশ গ্লোক—সর্কোন্দ্রিয় গুণাভাসংসর্কেন্দ্রিয় বিবর্জ্জভঙ্গ ইত্যাদি। তিনি সকল ইন্দ্রিয় বিবর্জ্জিত কিন্তু সকল ইন্দ্রিয় গুণ প্রকাশক। দর্শন, শ্রবণ, গ্রাণ, স্পর্ণ, আখাদ, পঞ্চজানেন্দ্রিয়ের বে শক্তি এবং পঞ্চ কর্ম্বের্টিয়ের বে শক্তি এবং মনঃশক্তি এই সকল শক্তিরই মূলাধার তিনি। অসকং সর্কভ্জিত—কিছুতেই লিপ্ত নথেন অথচ সকল ধারণ করিয়া রহিয়াছেন। নিগুণং গুণভোক্তৃচ—তাঁহার কোনও গুণ নাই অণচ সকল গুণের ভোক্তা।

পঞ্চদশ শ্লোক—ভুতানাং বৃদ্ধি চ অন্তঃ চ—ভিনি
সকলের ভিতরেও বাহিরেও। অচয়ং চরং এব চ— হাবর
অসমাদি বাহা কিছু তাহা হইতে অভিরিক্ত কিছুই নবে
অবচ এসকল কিছুই তিনি নহেন। স্ক্রছাৎ আবিজ্ঞেরং—
তিনি এত স্ক্র যে অবিজ্ঞের। দুরস্থং আন্তিকে চ তথ
তিনি অতি দুরে আবার অতি নিকটে।

(वाफ्न शाक-वावश्यक वृष्ठव देणानि किनि)

व्यविकक बहेगा क नकन वचार विकक्त ऋरण दिल, जिनि किनिमा या वृतिनाम हेश क्रानी वा morbid imagintien ভুতভূর্ত-সক্ষদ বস্তার পোৰক, তিনি এসিফু, প্রদারকালে এক্রশীল; ভিনি প্রভবিষ্ণু, ভাহাতেই অক্তির বা বিকাশ in whom we all live, move and have our being, ভाराएउरे कोरन, जाराएटर हनन, जाराएउरे शिक्ति। किनि (कर्ष)

আনেকেই বলিবেন ইয়া Hopeless, irreconcilable contradiction किम्बाधि महायाक नाठे नर्क द्वावान्डरम ৰাছাছুর এখানকার পণ্ডিত স্থলীর সারস্বত সভার निक्टे अर्थ कतिशाहित्तन (य दिनाय पर्नान्त पर्वेड বাবের স্থিত এই কড জগতের স্বার বিলন বা শামগ্রস্য কোণায় ? শিক্ষার্থীর এই প্রপ্র অতি স্থীচীন ও অসমত। কের কের বলেন পণ্ডিত সমাজ ইহার क्रिकः मिरक शास्त्र नाहे हेदा वखहे मञ्जात कथा। चामि निक्कित वह नाहै। (य श्रात्त छेन्द्र चावाय श्राकान कतिएक शिव्रा दिन्यू पर्नन्यास्त्र देव ठवान. व्यदेव ज्यान. विनिष्ठे देवज्याम, विनिष्ठे।देव उताम,देव छाटेव छताम, विनिष्ठे देश्डादेश्कवाम देशामि—कठ श्रेकांत्र वामश्रकिवादमत शृष्टि बहेबाएक चामारमत পणि उम्छनीत देशात छैछत मिट्ड भातित्वन ना अकवा चामि चारते विधान कतिए भातिना। महामाग्र नाठे वाहाकृत चामारमत শাস্ত্র পড়িকেছেন-বড় সুখের ও গৌরবের কথা, কিন্তু मर्भ न (philosophy) এक श्रार्थ चात्र मर्भन (realisation ) ঋণর এক জিনিব। কেবল মন বৃদ্ধি প্রভৃতির দারা বৃথিতে চাহিলে irreconilable contradiction किश्व शांधरकत निकृष्टि महत्व मछ। यति महामान नार्षे বাহাত্তর প্রকৃত পক্ষে জানিতেই চাহেন তবে তাঁহাকে খন প্রশালী খবনমন করিতে হইবে। প্রশ্নোতর ছার। उद्दान विवारण नाहै। (कान s system of philosophy (एक साहे-औक प्रनंतित गाहे वर्षा प्रनंतित माहे। गांबरकत अधिक हात्र महिल रामान भारत्रत मन्तूर्व मिन । नापका अधिक बन रव जाति नाम कि एक किनाम,

नरर, श्विवाध धरेक्षण चक्छिं कवित्रा छारालंब অভিজ্ঞতা লিপিবত করিয়া লিবিরাছেন। শাস্ত্র সাধকের অভিক্রতার বা সামুভ্তির Corroboration মাতে। শাস্ত্র বা দৰ্শন পভার যথেষ্ট উপকারীতা আছে স্বীকার করি किस जामार महन वर मामीकाल मांबाका नाता के सर्वन ব্যবহারে উপকারীতা অনেক বেশী।

श शिलग्दान (मिल्यान आह्र कि विकास कार्या कि विकास कि कान विनाय, टब्डा विनाय कि बामि शाह वर्षम् মনে করেন জান, জেয়, জানগমা বা জানকল এওলিতো ভিন্ন ভিন্ন। তাই সঞ্চদশ লোকে বলিতেছেনভাোভিবাম্পি ভজ্যোতিঃ--ব্ৰদ্ধোতির জ্যোতি,তৰসঃ পরং--অব্কার वा अलान छादारक म्मन कविर्छ भारत मा, आम-चमानिवानि चवष्टा, (छत्र:-- उन्न वा भन्नमभूक्रव, छानभूष्टें) সম্ভান্তৰ অৰ্থাৎ অমৃত-স্কলই ব্ৰহ্ম। তিনি স্কলেই অবস্থিত --বড় আশার

चहीपन शास्त्र जगवान विवाह हम-स्मा कि. छान कि. (छप्र कि नः क्लांश (छामादक रानिनाम। व्यागात जल हेरा कानिया व्यागात जात आध हमं व्यामाएउ गुरु इन वर्षा (याक नांड करतन।

উনবিংশ স্নোকে ভগবান বলিভেছেন-প্রকৃতি । পুरुष উভয়কেই धानानि विभाग नानित्व। देशाला কাধারও আরম্ভ বা শেব নাই। প্রকৃতি হইতেও পুরুষের উৎপত্তি নহে, পুরুষ হইতেও প্রকৃতির উৎপত্তি नत्। विकाशांति अर्थाः विकाशांतित छन अर्थाः ञ्चकः धरमाशांति शक्ति दहेर उ छड्ड वनिया आमर्त । বিকার বোলটা-পঞ্চ মহাভূত ও একাদশ ইঞ্জি। বৃদ্ধি অংকার ও পঞ্চনাত্র এই সাতনীকে প্রকৃতি বলে :

বিংশ শ্লেকের ভাবার্য-কার্য্য কারণ প্রস্কৃতি ৰল হইতে বাষ্প, বাষ্প হ**ইতে ৰেখ**, মেখ হইতে জল। বিবয়ের ধান করিতে করিতে সঙ্গ, সঙ্গ হইতে কাম, কাম **হইতে জোৰ ই**তাৰি-

ইহার নাম একতি। বাসনার পরিত্থিতে সুধ, জ্বামাণ্ডিতে হংগ--বাসনাই স্থ হংগের কারণ। আর উক্তম বা জীব স্থা হংগ ভোগ করেন বলিয়াই পুরুষ।

একবিংশ শ্লোকে —পুরুষ নির্ন্তণ, নিজিয়," নির্ণর্য, ্রাশার্থ তবে তিনি কেমন করিয়া ত্রণ চুঃধাদি প্রফুতির খণ বা বিকার ভোগ করেন 📍 এ প্রশ্ন অতঃই মনে উদয় হইবে। এজন্ম ভণবান বলিভেছেন— পুরুষ প্রকৃতিস্থ হওয়াতে অর্থাৎ প্রকৃতির মুক্ত হওয়াতে অথবা প্রকৃতির সহিত যোগ হওয়া হেতৃ দেহাত্মবোৰ হওয়াতে দেহ বা প্রকৃতি হটতে জাত শ্ৰুৰ হঃৰ মোহাদি ভোগ করেন। রাম ত্রুৰী, আমি হঃখী, ্র্ধব্যক্তি মৃত, তিনি পণ্ডিত এইরূপ ভাব অবিদ্যা প্রস্তুত श्रीवर शिक्ष व्यविमाण्डल व्हेशाहे आहेक्स मत्त करत्। 🐃 রে এই গুণ সঙ্গই ভিন্ন ভিন্ন জন্মের কারণ। কাহারও প্রেব জন্ম, কাহারও মানব জন্ম, কাহারও পশু জন্ম। পুরুষের এইরূপ প্রকৃতিত্ব হওয়াই অথবা অপ্রকৃতিস্তও विवास भारतम, पूर्व हः ४ छ कत्मत कात्रन। পুরুবের অপ্রকৃতিভূ হওয়াই কুথ চঃপ ও জনা মৃত্যুর হাত হইতে এডাইবার একমাত্র উপায় বানব জীবনের हेदम बका भूकरवत व्यक्षकित्र द्वा। ্বে নিজ্প ও নিক্রীয়, দেহাতিজনা ইছা realise বা - অনুভব করা।

খাবিংশ শ্লোক—উপদ্রতী অনুমন্ত। ইত্যাদি—এই দেহে
পিত যে পরম পুরুষ, তিনি দেহ মন ইন্দ্রিয় ও আমিরে
সহিত যুক্ত থাকেন বলিয়াই তিনি উপদ্রতী—অর্পাৎ
পুথক হইয়াও সামীপাহেতু সাকী প্রাকৃতিই সব কাজ করেন, তিনি সাকী মাত্র। তিনি অনুমন্তা—অনুমোদন কার্বক ইহাও সামিপা হেতু। কিছু করেন না আর কার্বক ক্রেনিত প্রতিপক্ষাব নাই—সন্তোম ভাবে দ্র্মান্তেন। তিনি ভর্তা, বিশায়ক । আহ্রার সারিধানা না। তিনি ভোক্তা—পাশক **অর্থেও কেহ কেহ** ব্যবহার করেন। তিনি মহেশ্বর এবং প্রমা**লা।** 

ত্রয়োবিংশ প্লোক — ধিনি এই পুরুষকে এবং স্বাধান এই প্রকৃতিকে জানেন তিনি সর্বাণা দকল স্থানে বর্তমান থাকিয়াও আর জন্ম গ্রহণ করেন না। জন্ম মৃত্যুর হাত হইতে উদ্ধার পাইবার একমাত্র উপায় এই পুরুষ ও প্রকৃতিকে জানা।

প্রীভগবান ব্যিলেন অর্জুন এপনই **জিঞাসা করিবে** क्मिन कतिया छेरा भारत १ अहे अन मसीहीन हरेता। প্রারের প্রতীকা না করিয়াই। চতুর্বিংশ শ্লোকে বলিতেছেন-কেটিং ধানেন আত্মনি (দেহে) আত্মনা (মনসা) আত্মানং পশান্তি। কেছ কেছ ধানে নিজের দেহ মধ্যে আত্মাকে দর্শন করেন। ধ্যান কাছাকে वाल १ क्रभ, तम, गक्क, म्लान मक्तान इहेट हे खिन्न ভালিকে সংযত করিয়া মনেতে ভাপন করার নাম ধান । একাগ্রতার সহিত চিত্তনই ধ্যান। আরাধ্য বা ধ্যানের বস্তু ভিন্ন ব্ইতে প্ৰৱে, ভাহাতে কিছু আসিয়া যায় না। भित्रहे हुछेन, काशीहे हुछेन, औक्रक्ष**हे हुछेन, नाताप्रव-**চুত্র হউন, প্রীশ্রীগোর্নিতাই হউন বা প্রীশ্রীওফুচরণ-প্রক্রই হউন, প্রণালী বা কৌশল একই। আমনি আহানং পশানি আতা সাজোন বোগেন-আর কেই व्याचारक प्रमेन करतन मार्श यात्र बाता वर्षार নিতা।নিতা বিবেক সাধন ছারা।

অপরে কর্মণোগেন—- সার কেহ কে**হ কর্ম থোগ ছারা,** ফলাকাজ্ঞা পরিত্যাগ পূর্বকি সকল কর্ম ব্রহ্মে সমর্পণ করিয়া কর্ত্তব্য জ্ঞানে কার্গ্য করিয়া **যাওয়ার নাম** কর্মণোগ।

পদবিংশ শোক — অত্তে তু এব অজানতঃ অভেড্যঃ
শ্রম আরানং উপাদতে। অজ্ঞানী বাহারা আচার্ব্যের
নিকট শুনির! বা উপদেশ গ্রহণ করিয়াই আতাকে
উপাদনা করেন। এইরপ শুভিপরায়ণ বাহারী
তাঁহারাও মৃত্যুকে অভিক্রেমন করে। আবিদের বিভ

### लाटकत भटक हैदा वड़हे चाभात कथा।

শাবার প্রীতগবান একটু পুনরুক্তি করিতেছেন—

শর্কেন বা পাছে ভূলিয়া যান। কথাটা দৃঢ়রূপে তাহার

শংল বেন বন্ধুল হয়, ইহাই ওাঁহার ইচ্ছা।

ষড়বিংশ শোক—হে ভরতর্বত! যে কিছু স্থানর অসম বস্তু, সমুদ্রই কেন ও ক্ষেত্রজের সংযোগে জন্ম হয়, ইহা জানিও। পরের কথাগুলি বলিবার জ্যুই এই পুনরুক্তি।

সপ্তবিংশ শ্লোক--নমং সর্কেষু ভূতেষু ইত্যাদি। স্বভ্তে স্মভাবে অবস্থিত, বিনাশ প্রাপ্ত হইয়াও অবিনশ্বর, এই পর্মেশ্বরকে যিনি জানেন, তিনিই প্রকৃত (ए(थन। এडकर्ल चामन क्यांहे। व मिरमञ যে কালের করালগ্রাদে প্রতি মুহুর্তে সমস্ত প্রবেশ कतिया ध्वःन श्रांश व्हेटिए एक -- (मिरिक ठाँहे (करल श्वःम. (करन मुठ्ठा, (करन विनाभ,--- এই नकरनत मर्ता प्रमाणार অবিনশ্বর বন্ধ পর্যেশ্বরকে যিনি দেখিতে পান তিনিই প্রকৃত দ্রষ্টা।এই স্থানে ভগবান বিনাশ।ও মৃত্যুর কথা উত্থাপন করিতেছেন কেন ? সকল নষ্ট হইয়া যাইবে, এই ধর্মকেত্রে কুরুকেত্রে আগ্রীয় অগনের ধ্বংদের কারণ তুমি হইতেছ জানিয়া তুমি শোকাকুল হইতেছ কেন ? হে ভরতর্বত, তুমি যেমনতেমন লোক লও। তুমি व्यक्ष जुड़े। इत । यात-छात मठ व्यक्तानीत मठ (पश्चि ना। এই বিনাশের মধ্যে অবিক্রখর যে পর্মেধর डीशंदक'(मथ।

অষ্টবিংশ শ্লোকের ভাবার্থ এই—সর্বজ্ঞ সম-অবস্থিত
উবরকে দেখিয়া নিজ নিজকে হিংলা করেন না।
বিনি আত্মাকে স্বজ্ঞ সম্ভবস্থিত দেখিতে পান,
ভিনি আর কাহাকেও হিংলা করেন না।
ভিনি হত হন না, হত করেন না। হত বা
আহত করিলাম বা,হত বা আহত হইলাম এরূপ মোহ
ভাহাকে অভিভূত করে না। কুরুক্ষেত্র বৃদ্ধ উপস্থিত,
অর্কুর্গ অন্তব্যরণ করিয়াছেন। একদিকে হিংলা ও

অপরদিকে মৃত্যুভয়, জ্ঞাতি নাশ আশকা, মোহ ও শোক উপস্থিত হওয়া ঘাভাবিক। সর্বাদ্ধ সম আবীদ্ধা ঈশ্বকে তিনি দেখিবেন। তিনি এ সকলো অতীত। তিনি পরাগতি লাভ করিয়া থাকেন। প্রকৃত তব্ব জানিয়াবা প্রকৃত জন্তী হইয়া মুদ্ধে প্রবৃত্ত হও। যদি মৃত্যু হয়, ভন্ন কি,—পরাগতি লাভ হইবে। সংসার সংগ্রামেও ইহাই জন সভা।

উনজিংশ লোক—গকল বস্তুর মধ্যে আমি এবং আমার মধ্যে সকল বস্তু এরূপ দেবার নাম আয়দর্শন। আয়দর্শন হইলে মামুবের আয়াপরতেল, হিংসা, বেব কিছুই থাকে না যাহা কিছু ক্রিরা লে সকলই প্রাকৃতির। আয়াকে যিনি অক্স্তা বা ক্রিরালি ক্রিশ্ত দেবিতে পান, তিনিই আয়াকে দেবিতেছেন—হে অর্জুন, দেহায়াতিমানী হইয়া ভাবিওনা তুমি মারিতেছ বা তুমি মরিতেছ । তুমি কে?

ত্রিংশ শোক—যংকালে যাহা কিছু এই আয়াতেই অবস্থিত ইহা জীব যথন দেখিতে পারে-এই আয়া হইতে ত্রন্ধাণ্ডের উৎপত্তি বুঝিতে পারে, তথনই জীব ত্রন্ধত্ব প্রাপ্ত হয়।

এক জিংশ শ্লোক—হে কৌ তের! এই যে অব্যর পরমাত্রা তিনি অনাদি এবং নিগুণ বলিয়াই শ্রীরস্কু হইয়াও তিনি কিছুই করে না। কর্মফলও ভাহাকে স্পর্শ করে না।

কেবল তুমি কর্ত্যভিমানী হইয়া লাভ হইতেছ-তুমি নিগুণি, অনাদি, অবায়,অবিকারী পরমাত্মা।

শ্রীভগবান আর একটু পরিছার করিয়া বলিতেছেন—
উপমা বা দৃষ্টান্তের সাহাব্যে। আকাশ ও স্থা দারা
তাঁহাকে কথকিং বুঝান ঘাইতে পারে। অগীমতা ও
ক্লতা ও সর্বগডতা আকাশের প্রধান ধর্ম। ব্রশ্নকে
বুঝাইবার জন্ম এই গুণগুলির স্থায়তা গ্রহণ করিয়া
দৃষ্টান্ত দিতেছেন।

বাজিশে মোক প্রকাকাশ বেরপ সর্থপত হইরাও ইবাকা নিবছৰ কোনও বস্তুর সহিত লিও হর না বেইবাশ আত্মা সর্কদেহগত হৈইরাও কিছুর সহিতই বিশ্বাস্থানাঃ

্রেরোজিংশ রোকে আরও একটা দৃষ্টার দিতেছেন— ক্রেন্সারত, বেমন এক হর্ব্য বমন্ত বোককে প্রকাশ করে, কৈইরপ ক্ষেত্রী বা আলা নমন্ত ক্ষেত্র বা 'জড়' বন্তকে ক্রাকাশ করে।

চতুতিংশ সোক—বিনি জান চকু বারা এই কের ও কেরজের অন্তর বা বৈদক্ষ দেখিতে পান, ভূত সকলের শাহতি ব্য়পা অবিদ্যা ও তাহার বিকোভনের তব অবগ্র হব, তিরি পর্য বস্ত প্রাপ্ত হইয়া ধাকেন।

পারন বন্ধ বা পারনপদ বা অমৃতগট্টনাভের একমাত্র উপার ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রভের জ্ঞান সাভ। আর জ্ঞ ক্রোনও উপার দাই।

পুরাতন বিবয়ের আলোচনা করিতে পিয়া ক্রাপরাবের ক্ত যুশ্যবান শ্যয় নই করিয়াছি। মার্জনা ক্রাবেশ।

এ বিভূচরণ খব ঠাকুরভা।

# भृषिवौ ।

শ্বন্ধতে ভেলেছে গণ্ড, বালো কঠ রোধ, সহিরাছি আলা ঝঝা, প্রকৃতির ক্রোধ। শকরূণ পুরে কড কাটারেছি কাল, সহিরাছি নির্যাত্তন, কডই শ্বন্ধা। উবহ এ বীন ক্ষ নৌন্ধ্য বিহীন শাশা গণ চেরে তথু ছরে এলো কীধ। তথু হিংলা তথু বেব অত্যাচার কর্জন থত।
তার মাবে ছিলু আমি কুর্লার মত।
একদিন ওতদিনে তুমি এলে হরি,
কুজ এ গ্রীহীন বন্ধ ভোলপাড় করি।
তুমি এলে প্রেমমর রূপের পাণার,
কুপা করি পরশিলে এ দেহ আবার।
ছিলাম কুংসিং কুলু কত যে বর্ষ
করিলে সুন্দরী ভাষা ভাষের পরশ।

वीक्ष्मवश्रव महिक ।

ছোট লেখা। [ দৃষ্টি ও চিন্তা]

())

এই 'হাসি' আৰু 'কান্না' কিনিবটে নিয়ে বাবে **বাবে** ভাবতে ৰ'দ্তে হয়।

এক একটা দিন হয় তো সকান থেকেই হাস্তে হয়,—সে বড় কৰ। এক—এক দিন এখন হয় খেন সকান থেকেই কাদুতে ইচ্ছা ক'রে।

কেৰ কালা পায় !—'ৱাৰ' আৱ 'ৰুংধায়' 'কক্ষ' আছে, আৰাদ্ধ নেই, এই ব'লে কি !

-मा, ना, त्यारहेरे ना।

( ? )

মনে হর 'রাম' আর 'ব্রো' আমার চেইতে কড়া কড়:—তাই তাদের 'লত' আরে; আমি ভাবের চেইতে কড় ছোট ! ভা'তে ও আমার 'এড' আয়ে কেন ! কে এত নিবে দিলে ! কেন দিলে !—তা আকার জেন # এই 'দানের' বোঝাটা যত বড় তা সইবার সাধ্য আমার কই ? আর বোঝাটা এত 'আমার', এত 'চিরন্তন' বে তাকে কেলে দিয়েও পালানোর উপার নেই,—আর পালিরে কোঝারইবা যাওরা বাবে ?—ভাই কালা তো পারই, আবার হাসিও পার।

(0)

কাদতে—কাদতে হাসি, আর হাস্তে-হাস্তে কারা,
—এই কি একটা বেলা চিরকাল চ'ল্ছে।

শাছবের জীবনে এই 'সমতা' জার 'বৈচিত্র্য,---'সমতার' ভেতর 'বৈচিত্র্যে',---'বৈচিত্র্যের' ভেতর 'সমতা', ---বেন 'জাইনের' কড়া নিয়মে পরিচালিত।

(8)

गमण मानव भीवन 'गमष्ठिंग' रवन अकेंग स्मीर्घ 'कांग' नाना,—जात इर्टा बात रवन इंटे—भावरत वैवाराना; मबारमण पिरत कन ठ'रन वारक, कवरना सान रिज डिंट्र्ड, कवरना वा सन 'गमान' जारव घ'न्ड्ड।

কল বথন সমভাবে চ'লছে তথনো তার তেতর দেখে যেন চেউগুলোর 'শেঁকড়' পজিয়ে উঠ্ছে; বথন কলের উপর চেউ দেখা যাছে তথনো তার নিরদেশ থেকে একটা সমতা সৃষ্টি করবার শক্তি ক্যাছে। চেউগুলি তারপর থেমে আস্ছে, তারপর কল জাবার ছিয়।

বীধানো 'ধারের' ওপর একবার] ঢেউ-এর 'মাধা'-'গা' ভেঙে পড়্ছে; কাটা নালার ওপর জলের লক বুছুবুড়ঞলো পড়ছে,— জার মিশে বাছে।

बूह्यूह्, श्रद्धांत ७०व क्यत्न। श्राकाम (४८क भूद्ध किद्द्रन १९६६,--क्यत्न। या श्रीण स्थरपद हाताहे अक्रिदिकिक वंशकः। ( t )

**এমন এकটা '(बना' तक (मबा यात्र ना।** 

এক-এক দিন দ্বির লগের ওপর রোদের আলো পড়ছে বটে, কিন্তু নীচে থালি চেউ; আনার বেদিন আকাশে থালি মেঘ, জলে থালি চেউ, তথন হয়তো নীচে সমতা সৃষ্টির ক্রিয়া চ'লুছে।

এক নার ঝড়ে সব ওগট পাণ্ট, আবার সব স্থির। কারা দিয়ে হাসি গড়াচ্ছে, হাসিতে কারা।

( 6)

करनत त्मत्म छात्रा थानि क्यांत्क, डांड्र्ड, विर्व यात्कः, जावात क्यांत्कः, जावात हानि-काता।

তাদের এতটুকু হানি, এতটুকু কারাও কোবাও 'কেলানো' বাচ্ছে না; অনম্ভ দৈর্ঘাবিশিষ্ট, সুবছ-প্রাপ্ত সেই 'নালার' ভেতর সমন্তই অমা থাক্ছে। সেওলো দিরে আবার হানি-কারার স্টে হ'ছে।

( 1 )

কে এই 'নালাটা' কাটালে ! আমরা কভ বুদ্বুদ্ ভাতাবতেও বুঝি পারি না।

७र् तृन्तृन् ता शाम्राह्, कीम्राहः ;—डाडाहः, मझहर, बात्र अन्यत त्थाक अकवन अको जिलात शानि सान् ह्वतः।

( **v** )

**এक पिन क- त्रक्य श्रीत छन्त्र्य ।** 

—হানির ভেতরও 'ৰাতিভেদ' আছে বোধ হয়। ভাই বল্ছি।

( % )

[ अन्य ] त्राम शाम्राक, बहुत्क (पार्थ । अन्तरक (मार्थ शामि, शून अध्यादकः "(वाः, (वाः", अवीक "তুমি কর ছোট, আমি কত বড়!" কিন্তু সে হাসিতে বহুর উপর, মানব জাতির উপর বোধ হয় অনাস্থা নাই, ভাই লোকে সে হাসিটা ওন্ছে, যদিও হয়তো অনেকে প্রশাসক্ষে না।

( > )

[ বিজীয় ]—করাধী হাসছে, ভীষণ হাসি।
ভার কারু উপর আহা নাই,—নিজের ওপরে। নয়।
শে হাসিট। ভন্দে গা চম্ চম্ করে,—মাহুষ শিউরে উঠে।

( >> )

্তৃতীয় ] মধু হাস্ছে নিজেকে দেখে,—তার হাসিটার ভুন্ন কালার রাগিণীতে বাধা। কিন্ত বে সিকেকেও বিশাস করে, অপরকেও বিশাস করে।

ৰদি দে কথনো বহুর দিকে তাকিয়েও হাসে, ভৰু সে হাসিটীর লক্ষ্য থালি যহ নয়,—যহু আর তার দিক্ষের ভেতর হাসির হিসাবে যেটা সাধারণ সেইটীই ভার লক্ষ্য।

সে হাসিটা মন্দ নর।

( ; > )

্চিতৃৰ্ব ] আর একট। হাসি,—সেটী শোল্বার নয়. দেখ্বার ; তার কথা বল্বার নয়, ভারবার ।

द्वारि। द्वारि। द्वारि। द्वान खता (थना क'ट्यू,-निकरि सम्बो में ज़िद्य। द्वानदा वाम्ट्य, निख वाम्ट्य,-स्वननी वाम्ट्यन।

্ৰপতের প্রভাত থেকে এই শিশু ধেলা ক'ছে, এই জননী হাস্ছেন!

এই হাসি সাধু, সিদ্ধ মহাত্মা মানব সমাজে বাস

এ হাসি দেবতার,—ভাই মাহব সব সমগ্ন এটা ভাল কেবুভে পার না; ব্যক্তিদেবে তথন তার একটা 'তীর্ব দর্শন' হয়!

वीम्रावमहत्व परेक।

## আমার পরীক্ষা গ্রহণ।

গত বংসর এই নামের প্রথম প্রবন্ধ প্রকাশিত ইয়াছে। তাহাতে আমি বিএ পরীক্ষার বালনা রচনা দেখিয়া যে অভিজ্ঞতা তংকাল পর্যান্ত লাভ করিয়াছিলান, তাহা সংক্ষেপে উল্লেখ করিয়াছি। এ বংসরও পরীক্ষার্থীদিগের রচনা হইতে বাললার রচনাপ্রভি যে দিকে যাইতেছে ও যাইবার সন্তাবনা দেখা যায় তাহা কতিপয় দৃষ্টান্ত যারা বিশদ করিবার চেষ্টা করিব। যাহারা আজি ছাত্র, তাহারই কালি সমান্ত পরিচালক হইবে। স্কুতরাং ইহাদিগের রচনা হইতেই ভবিন্তঃ অবস্থা উপলব্ধি করা যায়। গত বংসরের স্তান্থ এ বংসরও ছাত্রদিগের মানসিক অবস্থার যেরূপ পরিচর পাইলাম তাহাত্তে এতদেশের ভবিন্তং স্বদ্ধে চিস্তার্ক্ত না ছইয়া উপায় দেখিনা।

आभि (य मकन भद्रीकार्थीमि भाव छेखद मिर्बशाहि ভাহার। সকলেই ঢাকায় পরীকা দিয়াছে। সম্ভবতঃ जावारमत माला व्याना करे होका व्यक्त वा बाज । यहिन चामात्र कथा छाल मकल अकालत हाळिनिश्वत वित्तहा. তথাপি ঢাকা অঞ্লের ছাত্রগণ একটু বিশেষ ভাবে विद्वहना कवित्व बागि कुछार्थ शहेत । व्याभि द्य नक्न क्या विनितं जाशात माथा जापान कथाई এই य बाजीय जैनिज অবনতি জাতীয় ভাবের এবং জাতীয় ভাষার উপর অনেক পরিমাণে নির্ভর করে। ভাব সংযত ইইলে কর্মণ भाष इस अवः पृष्ठात महित पीर्यकान **अमृहित इहेर**ज পারে। ভাব আক্ষিক উত্তেপনা অথবা নিরর্থ অমুকরণ মুলক হইলে কর্ম দৃঢ়ভার সহিত অহুষ্ঠিত হইতে পারে না; व्यवः मोर्च काम शृशी दश ना। (मधा शहराहर, कि वर्ष विष्टा, कि ग्रास मध्यादा. कि चेर्बनी जित्र चोटनाणता, कि दावनीछित कात्मानत-नकन विवस्त्रहे ताका त्रामरमारन तारात नमग्र स्टेस्ड विकामानत व्राप्तत नका

मिया वर्खमान मुमग्न मर्गाख व्यामामिश्मत दकान व्यक्तकी नहे মুদুছার দহিত স্থায়ী ভাবে প্রবর্ত্তিত হইতে পারিল না। প্রায় সকলেই চুইদিনের জন্ত অনুষ্ঠিত হইয়া মরিয়া গেল। এ ভাব জাতীয় উন্নতির পরিপন্তী। আমাদিগের এই ভাব বিধি সঙ্গত নিয়মে পরিবর্ত্তিত করিতে হইবেই। त्महे मकल विधि वज्रख वहनात व्यात्नाहन। कतिशाहि। कि इ देशा अधान कथा है दहेट एक, छेष्ट्र धना निवादन। উচ্ছুৰ্যাল ব্যক্তি যাহা যথন স্থ্যিধা বোধ করে, ভাছাই करत। छाद्यां कार्यात भर्षाः भश्यमः शास्त्र नाः পুর্বের আচরণের সহিত শৃঞ্জা থাকেনা। প্রভাব পরিবর্তনশীল, সন্দেই নাই। কিন্তু সে পরিবর্তন शूर्व्यत्र व्याष्ट्रताचत्र महिल मश्यांग त्रका ना कतिता ভাহাকে ক্রম পরিবর্ত্তন বলা যায় না। উহারই অপর नाम ध्वःम। भूताञ्चलक ध्वःम कतित्व इंहेरव नाः উহাকে ক্রমে বিবর্ত্তিত করা আবশ্যক হইতে পারে। নোপর ঠিক থাকিলে ঝড়ে নৌকা ডুবে না; নোপর हिं ज़िशा रगतारे जूरत । (य ताकि नित्रस्थत अशोन नरह, পেই উচ্ছু**শ্বল। সে মানব সমাজকে ধ্বংশ করিতে** পারে, রক্ষা করিতে পারে না; উন্নতি করা ভো ভ্রের কথা। গোলা গুলির সংগ্রামেও যেমণ, জীবন সংগ্রামেও তেমনই नियरमत अधीन ट्रेश कार्याकता अधी ट्रेनात श्रधान ময়া। সে নিয়মও দীর্ঘকাল প্রচলিত আত্রভাবের সহিত ওরতর রূপে অসমঞ্জন হইলে জ্য়ী হইবার আশা সুত্রপরাহত হয়। পূর্ব, স্থিতিভান্ধিতে সকলেই भारतः; गड़ारे चडाख् कठिन। এ इरम এकी। पृष्ठाख দিব। কোন গারক উত্তম গাইতে পারেন, কিন্তু তাঁহার লয় বোধ নাই। ছারুমোনিমের সহিত গান করেণ ভাৰই। মিষ্ট এতদেশীয় তব্লা অথবা পাথোয়াজের স্থিত গান ক্ৰিতে গেলেই ওস্তাদ বাদককেও বাছ ছাডিয়া দিতে হয়। এই অবস্থায় তিনি সময় সময় ্লজ্ঞাও পাইরাছেন। তখন তিনি ইহার দার্শনিক অর্থ বাহির করিকা আত্ম প্রভারণা করিতে লাগিলেন। একণে

ভাগার ত্রবস্থা এমণ হইয়াছে যে দেশীয় সঙ্গীত সমাজ ইালিতে বাজের সহিত তিনি আর গান করিতেই পারেণ না। তিনি দার্শনিক অর্থ বাহির করিলেন যে, সঙ্গীত ভাবের উচ্ছাশ; ভাব উচ্ছাসিত হইলে তাহা কি বাধা নিয়মের শিকল পারে দিয়া মামুলী ধরণে চলে ? সুতরাং নিয়মের বাধ ভাঙ্গিয়া ফেল; ভাব বে দিকে যতক্ষণ যাইতে চাহে, তাহাকে সেই দিকেই ভত ক্ষণ যাইতে দেও। লয় কি ? লয় তো শৃত্যল, লয় তো বাধ। ও সকল উচ্ছ্ সিত ভাবের নিকট কিছুই নহে। তাহাই গাও, যেনন ইচ্ছা তেমনই করিয়াই যাও! ভাগাই সঙ্গীত। তাব লয়ের মিল অগ্রাহ্য।

हेशांकहे नाम छेल्ड्याना। हेशांक छात्रांबाइ; গভাষায় না ৷ এরপ করিলে সকলে সমবেত ছুইলা च्यूकान, कता चमछन्द्य। नःयह अरा निम्नत्मत अरीन हरेन भड़ीत जानरमत यथा निया य नकन्छ। **जारन** তাহা উচ্ছুঞ্লেরা কেমন করিয়া বুঝিবে ? আকামের बार नक्षत भक्त नियस्यत अधीन ना दहेल यथा छथा हुई। ছুট ঠোকাঠুকি করিয়া ভয়ন্তর প্রবায় উপস্থিত করিছে পারিত, ইহা নিশ্চিত। কিন্তু ভাহারা নিয়মের অধীন इहेशा हलिट्डिए ; रानियम गहन भर्यारनाह मा कविर्म গভীর আনন্দের সহিত ভক্তিরস ক্রম্মকে ছাইয়া কেলে। नकन विष्युष्टे पूर्वकश्य अकथा यून्यञ्च अक्रम (यन स्पर्धः অকিত করিয়া রাখেন। উচ্ছেশ্রনতা সর্বনাশের নামান্তর नियम भागति । भागम । भागति । পরীক্ষার্থীদিগের উত্তর পরীক্ষা করিতে করিতে সংব্যের অভাব এবং উচ্ছেজালভার আবিভাব লক্ষ্য করিয়া বহুবার পরিতপ্ত হইয়াছি। বর্তমান সময়ে, প্রাচীনে আয়াহীন वास्तिश्व भाषा (कद (कद क्षाठांत क्षिट्टिंग (य, क्षाँ ভাষা ও লিখিত ভাষা মিশাইরা রচনা করা উচিত 🕄 তাহাতে ভাবে জোর বাবে। अक्षकवा সম্পূর্ণ মিগ্যা নহে। আমার একটা বন্ধ দুখাত বর্তে একটা সমীল বার্ক্ত DIA 3051

किछात्रंग कतिया महमत्र । छार (पत्रंभ मृह 😉 प्यूम्पडे ক্ষিয়াছিলেন ভাষা ভিনি দশ পংক্তি সাধু ভাষা লিখিলে পারিতেন না। কিন্তু ভাই বলিয়া সেরপ কচনা কি बुबसीह मरह १ यारा रखेत, नात । बाकरणाव सूरवाशासास, আৰু কুমার সরকার প্রভৃতি মনীসী ব্যক্তিগণ বছবার ভীত্রভাষার এরপে কার্য্যের নিন্দা করিয়াছেন। আরও व्यक्तिक भगा माळ पालि এইक्रम बहनारक इननीय मरन करतम । कथा छावा तहनाम वावशत कता, विश्ववजः व्यवाका रमारव कृष्टे भक्त अवश विरामय विरामय ज्ञारनत অভারণ ভজি সর্বজন পাঠ্য রচনায় প্ররোগ করা আদি <del>প্রভাগ গোবাবহ মনে</del> করি। এরপ করিলে বাহার দাহা ইক্ষা সে ভাৰাই লিখিতে পারে। সে রচনাও বালালা क्रांनी बहेरव नहा, किंद्ध अक अक्ष्रानत वानानात तहना लक्ष्मकदलक वाकामी वृश्विरवना। विरम्भीत वाकिनम क्या नामामा निका कता अगलत यहन कदिरत। जार कर्म सममा छारात हिल ना चहिल बहेरत ; वालागीत क्षेत्र इकि वहेर्द, ना द्वान वहेर्द १ "रन पूनः पूनः জ্ঞুলা ধরিয়া দকলকে অভিন করিয়া কেলিল'—এই প্রদ এক দিন একখানি গ্রন্থে পাঠ করিয়ে আমার একজন अख्यात्रक मियानी वच्च वृत्थिट्ड भारत्रन माहे। "वायना" 🕽 📆 अवर भूर्सनक अध्यवनिक भन्न प्रक्रिय राज श्रवनिक 🅦 🖎 । यनि पश्चिम राज्यत क्षेत्रजिङ भन्न मकन यात्रानीत शीम शहर वावशांत्र करा (मारवत्र मा बत्र, जरव छेन्त्र उ मूर्विवद्भव श्राम् । अश्रामित्व वावशाद कवित्व भूको बना मण्ड नरह। ताथ इस अहे छारवत नवकी ब्रह्माई चरमक भरीकार्वी निविद्यारहर,-

রংশ বুণ ১; ভাত্বিরুণ ২; কুলে ৩; নোজনে একতা পরিতাম ৪; আমূল ৫; মছ্বুগ ৬; লেখা পড়ি ৭; পরিবার ৮;

মছ্মুদন ৯; যগড়া ১০; কাখ ১০;

ডুকিয়াছে ১২; অক্ত ১০; হয়ত ভাষাদের
কুশল বার্তা জিগাইলেন। ১৪

ভোগ অর্থে বৃগ এবং ঝগড়া অর্থে বগরা ব্রিয়া উঠা ध अक्षा वर्ष किन। (कर कि देखा करतम (य वाजना গ্ৰহাদি এই ভাষায় লিখিত হউক।' কথা ভাষা ধীহার। **गिपाल अठनित्र क**तिए हेव्हा करतन, जीशांपिरनत मक **अरे नक्न मुहोस चात्रा (तक्रश छाट्य चलिछ हरेंब्राह्य** त्मक्रण व्यक्त धकारत राग रत्न रहेए हें भारत ना। कहे সকল পরীকার্থী শক্ত তর্ক নিরস্ত করিয়ে দিয়াছে। क्टि विस्कृता कविदयम मा त्व हैंशां कार्यना विश्वा ঐক্লপ লিখিয়াছে। না, আমার সে ধারণা হয় নাই। रेराणिरगत याया व्यानात्वरे छेळालानेत नवत गारेनाए **এবং ভাষাক্রানের উত্তম পরিচর দিয়াছে। ইহার।** त्वांव रम (कालक वनवर्की रहेमार्डे अक्रांश कविताहर । কলিকাভায় লেবক যদি গেল্ম, কচ্ছি ইভাদি লেখে তবে ভাহারা কেন বুগ লিখিবে নাণ এইরূপ জেদ कारां निरात यस्त केन्द्र रखा व्याक्तर्रात विनन्न महा। व्यवता उधु व्यक्षकत्र गृत्ति अक्रम तहमा हहेए भारत वज्ञवत तात्र नारश्व भीरननहन्त्र (नन वि, अ भहानत्र यनि পুৰবন্ধ নিবাদী হইয়াও --

দাড়িরেছি; ছিলুম; বাইরে; ধাধিরে:
একেছেন; ধারে; বোলে; ইত্যাদি লিখিছে
পারেন; তবে ঈদুশ নির্বদ অভ্যক্রণ প্রিয়তা সংক্রাম্য হওয়া কিছুই আশ্চায় জনক নহে। তাদুশ ব্যক্তি ঢাকাং

<sup>(</sup>১) মুংৰ ভোগ; (১) প্ৰাত্বিরোধ; (৩) কোলে; "
১) মু'ৰনে একত পড়িতান; (৫) আনোদ; (৬)

सत्मारकात्र ; (१) रमधा भएत ; (४) পख्लितः ; (४ समुर्यमम ; (१०) कंगएत ; (१०) केतन ; (१०) कृकिझाल (१०) भक्क ; (१०) व्यव-… विकासा क्षित्रमम् ।

लान बरेग्रां "हिरनन" लायन । जरव शृक्तवन्नवात्री भन्नीकार्थिपिरभन्न मसीर्थ चर्ममश्चित्रका काशांविभरक "লিপাইলেন" লিখিতে প্রবৃত করিবে না কেন? এইরূপ अक्टा विखाद खाव. বিক্ত चाज्रमशामाद्यांत. ভাৰাদিপকে উচ্ছখনভার দিকে লইয়া গিয়া লিখিত ভাৰার চির প্রচলিভ নিয়বের বাঁধ ভালিয়া ফেলিয়াছে. ইহাই আমার ধারণা হয়। কথা ভাষা এতাদৃশ হুইভাবে नाक्ष प्रव्याप्त काम भाके एक भारत ना। आमि यनि ठिक ৰুঝিয়া থাকি ভবে সাহস করিয়া বলিতে পারি যে, যাহারা ঐরপ লিখিয়াছে তাহারা পরিণত বয়সে সমাজের অনেক বাঁধ, অনেক স্থনিয়ম ভঞ্ক করিয়া সমাঞ্জকে অবনভ করিবে: ভাহালিগার অনেক ভাব ও কর্ম অমঙ্গলজনক হইবে ; তাহারা শিক্ষিত গণ্য হইলেও আচরণে স্মান यता डेव्ह् यागजात श्राजिम् हिं विनया पृथिक स्टेरित। गश्यम ७ माधना धक भनार्षित छूटे क्लिक । देश ना ट्रेटन আভীয় উন্নতির আশা করাই রুগা। এই সকল চিন্তা ৰংন উদয় হইয়া এবং এতদ্দেশীয় যুবকগণের উদ্বত ভাব লক্ষ্য করিয়া আমার চিত্তে এখন অবদাদ আদে যে আমি ভাহা প্রকাশ করিভেই গারি না। হা, ভগ্রান, তুমি এ (मर्ने डाला कि निविश्राह, डाहा ड्रियेह जान। आयां जिन्दक सुमाजि प्रथ. का नवानी माधनात जिन्दानी कत्र, देशहे जह भीत्नत्र जकान्य शार्थना ।

যাহা পরক্ষরের সহিত মিশে না; বিশিলেও ভয়ন্বর
শব্দরবর্ণ উৎপন্ন হয়; তাহা একটা পরীক্ষার্থী বেমনভাবে
মিশাইরাছে,তাহা দেখিবার বিষয়। এই ভাবে আমাদের
কথা, খেলা, গৃহসজ্জা, সঙ্গীত, পরিচ্ছল—এক কগায়
সমস্ত প্রকার জাতীয় চিন্তা ও জাতীয় বিকাশ খিচুড়ি
ইইয়া গিয়াছে। ইহারা মেটে ফারেলার সহিত তুলনীয়।
ক্ষীক্ষার্থী লিখিয়াছে। "একবার না পেড়ে উটা ফেলে
রাখ্তে গেলুম।" এই বলশক্ষর কোন্ জাতি ?

देशात वर्ष कि ? चिंठ करहे देशात चर्ष वृतिया महता व्यागारक नश्त पिए इरेबाए ! डेशर्तव डेब्ड इरेबडी পূর্ব্ব ও দক্ষিণ বঙ্গের ভাষা-শঙ্কর । কিন্তু বিদেশীয় ভাষা-শবর ও ভাবশবর জাসিয়া আমাদিগকে প্রায় সম্পূর্ব আত্মবিশ্বত ও আত্মর্য্যাদাহীন করিয়া তুলিয়াছে। বাঁটী **এখন আ**র আমাদিগের প্রায় কিছুই নাই। বেমন মাসুৰ मार्ट कितिकी हहेला इंडेर्जा भी प्रक्रिशत था था भा मा, ভারতীয়দিগের গুণও পার না ; যেমন ফিরিকী, মুলেটা প্রভূতিরা খাটা পিতৃকুল মাতৃকুল,উভয় হইতেই অবঃপতিত हहेगा वात्क: छावल जाशह द्या छावल एमी विषमी. ঐরপে মিপ্রিত হইলে মন অধ্পোতত হয়,মনের বল বাটা ভাবের মত থাকে না। কোন মানব কিছা কোন মানবজাতি যে দিন তাহার নিজের মনটা হারাইল পেই দিন তাহার সব গেল: তাহার বাজিছই গেল। দেশ গেলে দেশ ফিবিয়া পাওয়া যায় কিন্তু মন গেলে ভাৰার चात्र किहूरे थाकिन मा ; तम चात्रविकी उरहेता तन। এরপ হইলে পরিণামে ধরংশ অনিবার্য। উন্ধৃতি তো বাত্লের প্রলাপ মাত্র। গত বুয়র যুদ্ধের অবসানে বে मिक्क शत बहेगां हिन छाश्व अने ही तिनात अहे हिन त्व, वृश्यतिमारात एक् भाषा विल्यानात्त्र, विष्ठात्रानात्त्र, व्याकिन् ই গ্রাদিতে বাবহৃত হইবে, অন্ত ভাষা বাবহৃত হইবে না। व्यभारतत जाया श्रेष्ट्रण करा अवः निस्त्रत यन क्षित्रा विश्वा তাহার মন লইয়, জীবিতকাল অভিবাহিত করা, তাহার ছার্মাত্র হইয়া মনরূপে জীবিত থাকা একই কথা। কিন্ত যে প্রকৃত বেদিয়া, সে সাপ লইয়াও খেলা করিছে ला(त ; याता यात्र ना । यान यन दाताहेशा ना (कन, নিজের অভিত্ব বিকাইয়া না দেও; তবে অপরের ভাষা हहेट निष्मत छान वृद्धिकता पृथनीय नहर। किन्न ध कठिन (थना यथन निदालक नर्द, उथन चलरात छ।वा নিবদ্ধ জান ৰঙই নিজ ভাষার প্রতিত করা যায়, ততই ভাল। এই নিমিত্ত এ সকল কেত্রে সাহিত্যালোচনার এक श्राम वक, व्यूपाम।

প্রাচীন কাল হইতে ভাব ব্যক্তির নিমিত্ত লিখিত ও কৰা ভাষার বে প্রভেদ চলিয়া আসিতেছে তাহার মূল স্থিয় রামিয়া শাখা প্রশাখা পরিবর্ত্তন করা সাংঘাতিক প্রতিভাশালী ব্যক্তি ভিন্ন নহে; কিন্ত ভাহাও স্থিরেণের কর্ম নহে। লিখিত ভাষার বর্ণবিত্যাস, ব্যাকরণ, বাকা হোজনার পদ্ধতি বিভিন্ন দেশে বিভিন্ন স্মাজে বিভিন্ন প্রকার। কোন নির্দিষ্ট দেশে কোন নিৰ্দিষ্ট জাতি তদেশীয় লিখিত ভাষাকে বহুকাল হইতে কৃতকণ্ডলি নির্মে আবিদ্ধ করিয়াছে। সে সকল নিয়ম শিক্ষা করা শ্রমশাধ্য, কিন্তু বঙ্গদেশীয়গণ যেন এখন ক্রামুই শ্রম্পাণা চেষ্টার অমুপ্যোগী হইরা উঠিতেছে। ভাষাতেই কোন নিয়মে আবন থাকিতে সমর্থ হয় না। উচ্ছুখণভার ইহাই মূল কারণ বলিয়া বোধ হয়। আমরা এখন "নভেল" পড়িতেও ছোট গল্প পাইলেই সুবিধা द्वांधकति । শ্ৰমণাধ্য চেষ্টায় এতই অসমৰ্থ হইয়া সাধনা বড়ই কঠিন পদার্থ। সে স্থলে क्षेत्रियाचि । আমরা মাহার যাহা ইচ্ছা তাহাই করা ভাল বোধ ইহা আমাদিগের অবসরতাই প্রমাণ করিতেছি। করিতেছে। নিয়ম মানিয়া চলা বড়ই কঠিন ; কিছুই না শানা অতি সহল। কিন্তু এইরপে সহল খুঁজিতে পিয়া স্বেফাচারনে প্রশ্রম দেওয়া ধ্বংশের পূর্ববর্তী লক্ষণ। কোন কোন পরীক্ষার্থী 'বর্ণ বিক্যাদে যেরপ স্বেচ্ছাচারের শরিচর দিয়াছে তাহা দেখিলে ত্রিয়মান হইতে হয়।

ृषिदि (১); श्रीविदैष्ड (२); श्रीम (०); मून्या (८);

কেব কি শিধিত ভাষায় এই সকল দেখিতে ইচ্ছা করেন ? যে পরিকার্থী একস্থানে মুক্তর লিধিয়াছে দেই ক্ষাত্র মৃত্যু লিধিয়াছে এ একল হয় ভ্রম,না হয় পরিহান। ক্ষাত্ম ভয় ভবে বিশ্ববিভালতে বাজলাকে পাঠারূপে ক্ষিত্রি করার যে মুক্তুদেশ্য ভাহা এই পরীকার্থীরা ব্যুণ

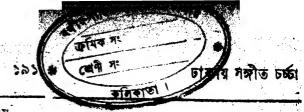
(२) चौद्धाः (२) पृथिनोट्डः (२) (श्रम (৪) मञ्जूनाः (८) पृशीतं जीयस्म ।

করিতেছে। আর যদি পরিহাস হয়, তবে ইহাদিপের
মন কিরপ ভাবে গঠিত হইতেছে, তাহা বিবেচনা করা
আবশ্রক। যাহারা পরীক্ষা মন্দিরে বসিয়াও রহক্ত
পরিহাস করিতে পারে; বিশেষতঃ পরীক্ষকের সহিত্
পরিহাস করিতে সমর্থ হয়, তাহারা কতদ্র স্মৃতিত।
এই সকল লগুচিত ব্যক্তিগণের নিকট এ দেশ কি আশা
করিতে পারে? ইহারা ভবিষ্যৎকে অন্ধকার—সমাচ্চর
করিয়া ত্লিতেছে, দেখিয়া কোনও হদয়বান ব্যক্তি
ছির থাকিতে পারেন না। মনে হয়, যেন আরও
পঞ্চাশ বৎসরের মত এই হতভাগ্য দেশের সকল আশাই
অতল জলে তুবিয়া গেল।

সকল বিষয়েই ইংরাজির অনুকরণ চলিতেছে। যাহা যাহা আমার নিজের তাহা সব খোয়াইয়াছি; এপন আমরা অপরের ছায়ামাত্ত। অপরে বাহা করে আমরা তাহাই করি। আমাদিণের নিজের কিছুই নাই। माछिति, इटिन्हें देशानि शृक्षान् बरेबाहि ; शाहे काहि পরিতেছে; ইংরাজি অক্র ব্যবহার করিতেছে; ইংরাজি খেলা থেলে। তাহাদিগের নিজের কিছুই নাই বলিয়া। ভাহারা বর্লর জাতি, উলঙ্গ হইয়াথাকিত। আমরাও কি তাহাই ? আমাদিগেরও কি নিজের কিছু নাই! আমাদিগের বাক্য-তঙ্গী পৃথক; ভাষা অন্যের সহিত মিশিবে কেন ? Student Life ইংরাজের বাক্যভন্নী; কিন্তু আমাদিগের বাক্যভন্নী "পাঠ্যাবস্থা"। खेशांक "हाज-कीवन" विनाम हिनाद किन ? खे **मक** অবচ বহু পরীকার্থী নানা স্থানে বাঙ্গলাই নহে। লিখিয়াছে.

'পাঠ্য জাবন"; 'প্ৰণয় জীবন"; 'ব্ৰমনী জীবন"; 'ছাত্ৰ জীবন"; ''গ্ৰহী জীবন"।

ইছারা সকলই ইংরাজী ছাঁচে ঢালিতে চাহে। যদিও কোনও বিখ্যাত লেখক "স্বৰ্থ স্থোপ" কথাটা gold opportunity অংশ চালাইতে চাহিয়াছিলেন। কোন কোন হানে ব্যবহারও করিয়াছেন। তথাপি এ স্কল



অমুকুরণীয় নছে। ইহা কোনও খাঁটী বালল।নিস্ युर्व ना। देश्ताकीत विकाछीत्र श्राष्ट्र अ मकंत नक मक्त मर्का পরিহার্যা! যেরপ ফ্লাভ ভাব থাকিলে "সুবর্ণ সুযোগ". "প্রণয় জীবন" ইত্যাদি শব্দ কলমে বাহির হয়, সেইরূপ छात्रहे मात्राचक। छेहाई आमामिश्र व्यवनाम इतम নামাইয়া দিতেছে। ঐ ভাব সম্পূর্ণরূপে পরিত্যক্ষ্য।

ভাব হইতেই আমাদিগের চেষ্টা ও কর্ম অনুষ্ঠিত হয়। **নেই ভাব বাহাতে জাতীয় জীবনের কল্যাণকর হয়** छोटारे व्यामामिरगत विरवहा। 'छेटा ब्राडीय कीवरनत क्नानिकत रखता अवः क्नानिकत याका हारे। जायात यदानिया काजीय मत्न मात्राध्यक विव श्राराम ना करत: ব্যক্তিগত চরিত্র এবং জাতীয় মন কলুবিত না হয়, এ দিকে সর্বাই সচেষ্ট থাকিতে হইবে, আমরা আমরাই: আমরা অন্ত কেহ নহে: এ কথা কখনই বিশ্বত হওয়া উচিত নহে। আমরা উল্লত হইতে চাই: किंद व्यभाद भदिनं हरेल हारे ना ; अक्या (यन मकन পরীকার্থীরই অরণ থাকে।

এই প্রসঙ্গে একটী কথা না বলিয়া নীরব থাকিতে পারি না। কোনও কোনও পরীকার্থী হিন্দুর সম্ভান ष्टेग्रां अपनहे आयहात्रा हहेग्राह्य (य हिन्दूत (पर (वरीत निक एडम्ड जात ना। একটী পরীকার্থী मिथिशाटक.

"কানীতে বিশ্বনাথ দেবীর মূর্ত্তি…" काणीय विधनाव कि (मव, ना (मंदी ? खाश वशक दिलू দ্বান এপোলো, ভিনাসু প্রভৃতি দেব কি দেবী তাহা चांक्राम वनिया नित्व ; किस विश्वनाथतक तनवी वनित्व। ইহা অপেকা পরিতাপের বিষয় আর নাই। এ কেত্রে कि विभव, छाहा छाविशाह भाहे ना! दक्वन मीर्च नियान স্থারের ওর ভার লঘুকরে; আর গভান্তর নাই।

(ক্রমশ:)

. শ্রীশশধর রায়।

### "নব্জরপু"

আয়ার এ জন্ত্রের রাজের স্থান ত্যিতে করেছ গ্রভু জতালন মান কভরপে:----

কভূ ভূমি শিশুমূৰ্ত্তি ধরি এপেছ আমার কাছে, হে আমার ছরি রমনীর রূপে কভু আমার ছয়ারে मैं। ज़ारम् मधु शिमि माथिमा व्यरत, জননীর ভত্ত হাসি, স্লেহ অন্তরাঙ্গে, वन कर त्रीमा भिष्ठे क्रम्य चाड़ाल, ভ্রাতার গোরব মাঝে, ভগিনীর শ্লেছে, প্রকৃতি মাতার নিম্ন কম কাস্ত দেছে. ভোমারে পেরেছি নাথ।

আজি আর বার. वज्ञक्राभ चानिश्राष्ट्र क्षत्र चामात्, তবু তব পরীকার হল নাহি শেষ, चात्र कि मूडम (बना (बनिरव श्राराम !

क्षित्री औरतिक्रभा रमन्दर्भ

# ঢাকায় সঙ্গীত চৰ্চা।

৬ কাশীনাথ রায়—ঢাকা কেরাণীগঞ্জ থানার আটি नायक शास देवात निवान हिल। देनि कत वश्नीह कार्य मुखान । अञ्चान १७ वरमद भूर्व हेनि जीविड हिल्लन। काणीतार "तावनवर" ७ "इति कारतात चर्ना-রোহণ" নামক ছুইখানি যাত্রার পালা রচনা করিয়া-

চাকা সাহিত্য-পরিধদের মাদিক অধিবেশনে পঠিছ )।

धारक रहेन।

ছিলেন। আটার তদানিজ্বল ভ্রাধিকারী অর্গার বাদকিশোর রাজত রাম মহাশরের উল্যেগে ও অর্থ ব্যরে এই ছুইট পালারট অভিনয় হইত। ব্রজকিশোর রাম মহাশর নিজেও স্কঠ ছিলেন। তিনি বর্ত্তমান প্রবন্ধ কোকের পিতামহ। আটা অঞ্চলে "হরিশ্চজ্রের পালা" শ্বিশেষ আদৃত হইরাছিল। ইহার গানগুলির রচনা মৃত্তই প্রাঞ্জন, একটিও কট মট শব্দ নাই। অক্তান্ত সাবেকী যাজার মত ইহাতেও কথা বা বক্তৃতা পুবই কম। সংলগ্ধতা রক্ষা করিবার জন্ত যেখানে কথার প্রয়োজন ভাষার অধিকাংশ স্থলেই "অধিকারীর" পরার দিয়া সারা হইরাছে। এই প্যারগুলিও স্বর সংযোগে গীত হুইত। এই "হরিশ্চজ্র" পালার ছুইটি গান নিয়ে

( রাজা হরিশ্চক্র কাননে যাইয়া লভাপাশ বছা অব্দয়াদিগকে দেখিতে পাইয়া গাইলেন )— রাগিনী মিশ্র—ভাল একতালা।

> ''তোরা কে গো হুন্দরী, করে' ধরাসন, প'ডে পঞ্চন

> > বন্ধন কেন হৈরি।

क्षि इन इन नवन महान, महामह करन एक्षान् रहाम,

খানৰ ছ্হিতা, কিবা বক্ততা,

রূপেতে বিদ্যাধরী। হেরি অপরূপ মনোমোহিনী, বলু ভোরা কার কুলকামিনী, কি ভাবিয়ে মমে নারী পঞ্জনে

थान थ कानाम वन त्या छनि।

क्षिण करत (स्ति विवय वसन, करन करेंड्डड, करनटक (इंडन,

करा भरव्यक्र, करनरक रव्यक्त, रक्त रहत छात,—नवात थ कि छात.

বুঝিতে নারি।"

ৰিভীর গানটি এই ; ইহাতে দর্শন্ত মৃত বোহিদ্য কে

কোলে করিয়া সাম্রাজী শব্যা বিলাপ করিয়া বলিতেছেনঃ—

"কোধারে মোর বাছ মণি, করে' আমার অভাগিনী ছবিনীরে গেলিরে ভোজিরে।

ত্রিলগতে কে আর আছে । দীড়াব আর কার কাছে, কার কাছে গেলি সম্পিয়ে।

স্থারের বাছা করি কোলে চাঁদ মূথে ভাক মাবলে, জন্মের মত শুনিরে প্রবণে।

ওঠরে প্রাণের ধন, ওরে আমার বাছাধন, কি হুখেতে শুরে ধরাসনে।

যথনে হইয়ে দানী, ছিজের নিবাসে স্থানি, অঞ্লে ধরিলে ছুই করে।

বিজ করিয়ে ভর্জন, ছাড়াভে নারে কর্থন, সঞ্চে এলি মরিবার ভরে।

এখনে বাপ কোখা রলি, মারেরে কি বলৈ গেলি, ভাগাইলি শোকের দাগরে।

রাজ্য ভাপেতে তাপিত, শোকানলেতে আইড, আর কত সহিব অস্তরে।"

এই "হরিশ্চক্রের" অভিনয় আৰি দেখিয়াছি। যথনই এ ধরণের গান গাওয়া হইত তথনই সভাগত্ত লোক আশ্রু মোচন করিতে থাকিত। বহু পিতা মাতার হৃদয়ের ক্লব্ধ শোকরাশি উপলিয়া উঠিত আর তাঁহারা হাহারেবে "ভুকরিয়া" কাঁদিয়া উঠিতেন।

কাশীরার মহাশয়ের বেশ উপস্থিত বৃদ্ধি ছিল।
লোলের সময় ভিলি প্রভিবারই হলীর গান রচনা করিয়া
পাইতেন। একবার পোলের সমর রকিত বাড়ীতে
হলি গানের বৈঠক বিসিয়াছে। প্রভিপক্ষ চুই দল রহৎ
আলিষার উপবিষ্ট। একদল নিক আচীর, আর একদল
নিকটবর্ত্তী গ্রাম শিকারী টোলার। শিকারীদের গাদ
বাজ্নার বড় স্থ ছিল। তাহারা নামা জনে দানা রক্ষের
পাগড়ি বাঁধিরা গানের আগরে বার্দিরা বসিয়াছে।

কাহার পাগড়ি লাল, কাহারও গোলাবা, কাহার কমলা, কাহার সবুজ, কাহারও নীল, কাহারও হল্দে, কাহারও বৈশ্বী, কাহারওবা সাদা, এইরপ কত ভলিতে ভলিতে বর্ণের বাহার ! দেখিয়া কাশীরায় তৎক্ষণাৎ গান বাধিয়া নিজ দলের লোকদিগের সঙ্গে গাইলেন :---

"দেখো ভবন চিলা সব বয়ঠে গাই।
বিচ্বিচ্মে হ্যায় চলনা,
দো একঠো গাপুয়া ময়না,
ক্যা এক চিরিয়াখানা
বাহার বাড়ীমে দেখ্নে পাই!
দেখো ভবন চিলা সব বয়ঠে গাই।"

ভদ্রচিত আর একটি সঙ্গীতে গ্রাম্য হাসির গানের একটু মমুনা দেখুন। "হরিশ্চস্র" পালার বিধামিত্র খুনীর ফুল বাগানের খালী ভার বন্ধবর্মের নিকট গাইতেছে:—

"আমি চাক্রি করতে বাই,

মুনীর চাক্রি করে আমার

পদ হয়েছে ভাই।

দরমাহা পাই পর্সা চারি,

কিন্তে পেলাম ঢাকাই লারি,
ভাতি মারে জোভার বারি

কার দিব দোহাই।"

শ্বক এ গান রচনার সময়ে গ্রাম্য কবি ইচ্ছাপূর্মকই কালবিপর্যয়দোবের (anachronism) দিকে দৃষ্টি করেন নাই।

শাটীতে নিতাই দে নামক কাশীরারের সমসামরিক শার একটি লোক ছিল, সে লেখাপড়া বিশেব শানিত না, কিন্তু বেশ গান রচনা করিত। নিব্দে গাইতেও পারিত। নিমে তার ছুইটি গান দেওয়া পেল:—

( ১নং )

''ওরে অবোধ সম্ভান, আমায় দোৰ অকারণ। ঘার বে ললাট লিখন, ককু না বায় খণ্ডন॥ ওরে জীব প্রাপ্ত মতি, তার সাকী গণপতি,

যম পুত্র হয়ে কেন তার হল পলানন ॥'\*

( ২নং )

( এটি ছলির গান )
"ঝোলে খাম স্থলর, রকভাছ ছলারী ॥
খানিক কাঞ্চন জড়িদ হঙারা।
চমকে ব্যায়সা আশমান ভারা,
মণি মুকুতা কি ওড়ে ঝালার ॥
ময়ুর মুকুট শিরে, মোহন মুরলী করে,
রাধেজিকি বামে ডারে রভন হওরাপরে।
মোহনী মোহন দোন, রূপে মোহে জপ্যন্ত,
করো স্থি, দরশন, বিরাজে রাধা ক্ষিণ্ণ,
দারি সারি স্ব স্থীগণ ডারি,
আনন্দে খেলে চত্রল হোরি,
কোই স্থী উড়াওয়ে আবিরি ॥"

ঢাকা **नरदित उ**পदि अवर निक्**ष्टेवर्डी बाब नमृद्ध वह** ঘাত্রার পাৰা রচিত হইরা অভিনীত হইরাছে। সকস श्वनित्र विवत्न मर्थार कता बात्र मारे. मध्यक नरहा चूर्व्साहाबिठ भागा खाग हाजा हा हा का मा 'कूरवर को भिगमः' "নারদ সংবাদ," নবাবপুর পোরাইলাড়াতে "এমরগীতা," लावाननगरत "विश्वनिमी विष्याननी" अकतामशृद्ध "পাতারবত", "রূপ স্নাতন," ঢাকা জাফরাবাজে ভভাচ্যায় ''গোপেশ্ব বিলন,'' বাশ ডা প্রাদে "কলছভঞ্জন" শাক্তাম "মুক্তাবন বিলাদ" প্রভৃতি যাত্রার অভিনয় হইয়া निप्राह्म। छवनकात्र मित्न (भानाखता धाम, वाधान ভরা গাই,আর পুকুর ভরা যাছ ছিল, লোকে পেট ভরিনা পাইত আর মনের আনন্দে গদীত চর্চা করিত। আর अधन (পार्टेड मार्ड शान्त वमान कर्ड हरेड "आहि আহি" ধানি নিৰ্গত হইতেছে। গৈ দিন কি আছ किदिया आंत्रित ना ?

' রাষাভিবেক নাটক ঃ—তদানিত্তন কমিসনার সাহেবের পাস নাল্ আশিষ্টাণ্ট, অসীয় রায় অভয়াত্মার দাস বাহাত্ব এবং ক্ষিণার মোহিনী খোহন দাস মহাশয় প্রস্থৃতির উচ্চোপে সর্বাগাবারণের টাদার বর্তমান জনরাথ ক্রেক্সের অধ্যক্ষের বাড়ী যে স্থলে অবস্থিত সেই স্থানে প্রকৃতি প্রকাশু গৃহ নির্মিত হইয়া অনুমান ১২৭৮ সনের ইচ্ছা মাণে প্রাচীন সাহিত্যিক ৮ মনোমোহন বস্থ মহোদয় গণীত "রামাভিষেক নাটকের" অভিনয় প্রথম

ঐ সংখর অভিনয় ব্যাপারে তদানিত্বন গ্রন্থনৈত্ত্তিয়ে উপেশ্রনাথ থিতা ও ঢাক। কলেজের প্রাণদ্ধ কীনাথ পণ্ডিত মহাশয়ঘয় পুরোহিতের, মৃড়াপাড়ার অধিদার ৬ রাষ্চত্র বন্দ্যোপাধ্যায় দশরথের, কলিজিয়েট ছলের শিক্ষক ৬ সাধূচরণ শীল কৌশলার, প্রাণদ্ধ ত্রাম্বর, অধিদার ৬ চন্দ্রনাথ রায় মহাশয় রামের, ছড়াপাড়ার অন্যতম জনিদার ৬ উমেশচক্র রায় মহাশয় শীতার, এবং সুসীগঞ্জের উকিল জন্মচক্র রায় মহাশয় শাতার, এবং সুসীগঞ্জের উকিল জন্মচক্র রায় মহাশয় শাতার সহিত অভিনীত হইনাছিল।

উক্ত গৃধনির্মাণের খারা ঢাকায় সর্বসাধারণের একটি খুবের (Public hall) অভাব পূর্ব হয়। জয়দেবখুরের রাজা ৺ কালীনারায়ণ রায় মহোলয়ের "রাজা"
উপাধি এই খানেই দেওয়া হইরাছিল। পরে
বিদেশ হইতে যখনই কোন নাটকের দল ঢাকায়
আবিষাছে, এই স্থানেই চাহার অভিনয় কার্য্য সম্পর
শুইরাছে। ঢাকার প্রথম রাজ নৈতিক প্রাদেশিক
স্বিজ্বন ও (Provincial conference) এই খানেই

প্রণর পরীক্ষা নাটক:—ভদনন্তর বনোবোহন বসু শ্রহাশর প্রণীত 'প্রেণয় পরীক্ষা'' নাটকও এই মঞ্চেই শ্রহিনীত হয়। স্ত্রাপুর নিবাদী বিপিনচক্র হায়, প্রচন্দ্রনাথ রার, কমিদনারির কেরাণী প্রীর্ত খামাচরণ শেন, মহামহোপাধ্যার প্রসন্নচক্র বিভারত্ব, দেনহাটি শিশাশী প্রশাসকুষার দাদ, স্পান্নাথ খুগের প্রিক্ বৈকু ইচক্র ্বেন মহাশয় প্রাকৃতি ভর্তনাকগণ এই নাটকের অভিনেতা ছিলেন।

মহাজ নাটক:—অতঃপর ঢাকার খনামধন্ত দানবীর
নবাব সার আবত্লগনি বাহাত্রের বিশেষ উৎসাহে
তারকেশরের মহাস্তবটিত নবীন এলোকেশী ব্যাপারে
দেশে যে ভ্যানক আন্দোলন উপস্থিত হইয়াছিল, তাহা
অবলখনে এই মঞ্চেই "মহাস্ত নাটকের" অভিনয় হর।
ইহার যাবতীয় ব্যয়ভার সহাদয় নবাব বাহাত্র বহন
করেন। ৬চজনাথ রায় নবীনের, পণ্ডিত শ্রীমুন্ত
বৈকুঠচজ্ল নাথ এলোকেশীর,এবং নশ্যান ক্লের জনৈক
পণ্ডিত নবীনের শন্তরের পাঠ গ্রহণ করেন।

এই নাটকের অভিনয়ে নবীন কর্ত্ত এলোকেশীয় হত্যাব্যাপার এখন সংকৌশলে প্রদর্শিত হইয়াছিল যে নবাব বাহাত্র বিধন্তিত এলোকেশী এবং রক্তাক্ত অভিনয় মঞ্চ দর্শন মাত্র দাড়াইয়া উঠিয়া অভিনয় ক্তেত্তি উপস্থিত ভদানিস্তন পুলিস স্থপারিন্টেভেন্ট্ মিষ্টার ওয়েদারল্ (Weatherall) সাহেবকে বলিলেন "নবীন কো পাক্রো, উঙঃ তো একলম্ কতল্ কিয়া ।"

এই ঘটনার অনুরপ আর একটি ঘটনা মনে পড়িল।

একবার লক্ষাবালার রাজাবাবুর বাড়ীতে মানভঞ্জন

যাত্রার অভিনয় ইইতেছিল। বহু শ্রোতার আবিপ্রাব

হইরাছে। কলবর হইতে অনেক সেপাইও যাত্রা
ভানতে আদিয়াছে। গানও পুব জমিয়াছে। শ্রীকৃষ্ণ
রাধিকাকে কতই স্থাতিমিনতি করিতেছেন, কিন্তু ক্ষেত্রীয়
মান কিছুতেই ভাঙ্গিতেছে না, অবশেবে কৃষ্ণ দেহি পর্যপলবম্" বলিয়া রাধার পায় ধরিয়া জন্মন করিতে
লাগিলেন, কিন্তু তথাপি রাধিকা ধর্মন অভিনানে মুখ
কিরাইয়া পা স্বাইলেন, তখন দর্শকলিপের মধ্যের

একজন দিপাহির আর সহিল না, সে পাকা বাঁপের

যোটালাঠি উঠাইয়া জনতা ঠেলিয়া আসিয়া বলিতে
লাগিল "তে গোয়ালিনীকো ক্যা কছে, মেয়া কিবণ জি
তেরা পায়ের পর গিরারছা, ভব্ছি ভেরা মান টুট্তা
নেহি। এক ডাওানে তেরা শের ভোড্ডাকুল।"

मकुक्रमा !-- जाका नवावशृहत्त्र अकारतम व्यर्शर নৰাৰপুৰ বংশাল ব্লোভের উত্তর পার্যে একটি পুরাতন পুষ্ दिनी आहर छेरात श्रृज्ञात मक निर्माण कतिया "শকুস্থল্য" নাটকের অভিনয় হয়। দক্ষিণ নৈষ্ণী मित्रानी পश्चित त्रायहरू हक्तवर्ती कविवक्त महायश काल-দাবের শক্ষলার বলাফুবাদ করিয়া নাটকাকার দেন। উছার সমত গানগুলিও তাঁহারই রচিত। প্রীযুত সার कुक्रावाविक श्रेश्व महान्यात्र किन्छ जोका 🗸 शक्रावाविक ভার পানি বাবু) মহাশয় ইহার মোসন মান্তার ছিলেন। देनि भरत (छपूषि गाकिरहें इन। भानिवानूत উष्णार्शह धरे नाहरकत अछिनम्र रम्। हेनि नामा (मनीत छारात নৰল করিয়া কথা বলিতে দক্ষ ছিলেন। শ্রীযুত ৰত্নাথ বসাক, প্রির্নাথ ব্যাক, ৺ব্সন্তক্ষার ব্যাক প্রভৃতি সকলেই পানিবাবুর উৎসাহে উৎসাহিত হইয়া चकालत चर्वतात्र महकात्त्र अहे कार्या मयाश कत्त्रन। ইবার অভিনয়ও উত্তম হইয়াছিল।

धक्ना हाहेरकार्द्ध छिक्नि ए हतीरमाइन मान यहानंत ज्लीव ट्लाई। क्या श्रीमजी नद्रना द्वांत महानंताटक লইয়া ''শকুস্বলা" নাটক দেখিতে যান। ইহার অব্যবহিত शृर्तिरे উक कबात ७७विनार कार्या ७७। जिनात्री डांख्नांत धीनतक्षांत तांत्र ( Dr P. K. Ray ) मरहांबरस्त সঙ্গে কলিকাভার সম্পর হইয়াভিল। (मर्डे मयरम **জামাতার দক্ষে ক্**ঞা যথন পিতভবন ত্যাগ করিয়া খামির আলয়ে যাত্রা করিতেছিলেন তখন হুর্গামোহন रांदू कका विष्कृत्म राष्ट्रे व्यवित हहेगा शासन। अहे व्यक्तित प्रणीत कारण ७ मकुछन। यथन कथ मुनीत निकर्ष रहेए विषाय लहेगा द्वारस्त चानरत याजा कतिरानन তখন যোগী শ্ৰেষ্ঠ কুলপতি কয় শকুম্বলার বিচ্ছেদ জনিত সম্মাবেগ যে ভাবে প্রকাশ করিয়াছিলেন তৎপ্রবলে इर्तिस्यादन वार् अकामा जारत कांत्रिया रक्तियाहितन। "मुक्का" माहेरकत्र अकृष्टि भाग निस्त्र (प्रथम) (智可 2"আজ কেন এ ভাব, নৃপতি তব,
বুঝিতে না পারি।
শীমুখ মনিন বল বল কেন.
তাপিত তকুক্রচি,
শকুক্তপা মনে পড়ে কি এখনে,
অফুডাপিত পরাণ ?
বঝিব তা আজ ভাল করি।"

মালতি মাধব: -শকুন্তলার সম সময়ে অর্থাৎ দপ্তমান সময় হইতে প্রায় চল্লিশ বৎসর পূর্ব্বে তাঁভিবাজার প্রীরুত্ত (कमरवान रमाक महाभएवत देवर्रक बाबात श्रम्हार) मिरकत वागात नुजन मक निर्माण कतिता "मामणी मांधव" नांहेरकत चाखिनम इस। हेदा "मकुखना" নাটকের সঙ্গে প্রতিহন্দীভাবে অভিনীত হইরাছিল তদানিত্তন অন্যতম সবৰজ ৮ প্ৰসাচৱৰী সরকার মহাশয় "মালতী মাধবের" অভিনয় ভরিছে পরামর্শ পরগোকগত প্রবীন সাহিত্যিক অক্ষয়চন্ত্র মহাশরের পিতা। ইনিও সাহিতারদে রদিক ছিলেন্। পৈতৃগুণ পুলে অধিকতর ভাবে প্রাকৃতিত হয়। তাঁকি-वाकारतत्र 🗸 त्राधिकारमाहन वनाक, त्रीयुष्ठ (कनवनाक वनाक, बीयूड (शाविष्यनान वनाक, अस्तरहस्य वनाक, ও শীমুত মদনমোহন বদাক প্রভৃতি ইহার প্রধাক উভোক্তা ছিলেন। গোবিন্দলাল বাবু ইহার সম্ভ বায়ভার বহন করেন। মহামহোপাধ্যায় ৮ প্রাণয়চক্র বিভারত মহাশ্য অক্লান্ত পরিশ্রম ও মুদুঢ় অধাবশায়ের সহিত এই অভিনয় ব্যাপার স্থান্সন্ধ করেন। তিনি **ইহার**ু বহু গানও রচনা করিয়া দেন। উকিল প্রীরুত হৃদরনার মজুমদার, কমিদনার আপিদের প্রীযুত আদিভাচক ठक्रवर्डी. এবং ৮**८ छ**नाथ द्राप्त सरामग्रद्ध अहे शास्त्रकः श्रुत (पन ।

৬চন্দ্রনাথ রায়, অংখারখণ্টের, ইঞ্জিনিয়ার আপিদের শ্রীর্ত সীতানাথ বন্দ্যোপাধ্যায় মালতীর, কলতাবাজারের শ্রীর্ত প্রিয়নাথ বসাক মাধ্বের, ওঁ তিনাজারের শ্রীর্ত মদনমোহন বসাক মালতীর স্থীর, এবং কালেক্টরীর ভূতপূর্ব কেরাণী বসন্তক্ষার বোৰ কপালকুওলার পাঠ অভিস্কৃতার সহিত অভিনয় করেন।

শাসতী মাধবের" দুশাপটগুলি বড়ই মনোজ ক্রীক্সাছিল। ইবার প্রজাবনার দুশ্যে যবনিকা উড়োলিত ক্রীক্সাছিল। ইবার প্রজাবনার দুশ্যে যবনিকা উড়োলিত ক্রীক্সাছিত, এবং ঐ পলের মধ্যে অপূর্ক সরস্বতী মূর্তি ক্রেমা যাইত। তথনই নিয়লিখিত স্কীত মুইটি সীত্তিইত—

( > )

विअक्षानी-र्रुशित ।

कियं मिष्ठि इंटर- निमञ्जि प्रियं प्रमिश्च विश्व निष्ठि इंटर- निमञ्जि प्रियं मिष्ठि इंटर- निमञ्जि प्रियं प्रमिश्च क्रियं निष्ठि इंटर- निमञ्जि प्रियं प्रमिश्च क्रियं निष्ठि इंटर- निमञ्जि प्रमिश्च क्रियं क्र

٤)

न्यकि किष्ठ— এক তালা।
"ভाরতী জননী মলিন বদনী,
আল জল মুখে শোক-শেল বুকে,
কাঁদেন ভারত-ছ্থে দিবস রজনী।
ভারত শাশানে সঞ্চারিতে প্রাণে,
সাধেন কি শক্তি ধ্যানে মৃত সন্তীবনী।
यদি পুন জাগে, সে দীপক রাগে,
নিক্ষীব ভারতে পুনঃ হবে জম্বনি।"

এক্সবাতীত নবাৰপুরে ''বিষমলল'' ও ''সীতার ব্রবার'' নাটক্ষর অভিনীত হয়। বৈষ্ণীর রামচন্দ্র ক্ষরতী ক্বির্ছ মহাশ্য ইহার গান রচনা করেন।

পণ্ডিত মহাশরের জ্যেষ্ঠ প্রাভা গোবিস্ফলে ভাগবভভূবণ সহাশর "কুঞ্জেররী মিলন" ও "কুরুক্তে হিলন" যাজার পালা রচনা করেন। এই ছুইটিও নবাবপুরে অভিনীত হয়।

চক্রহাস নাটক—ইহা ঢাকা নবাবগঞ্জে অভিনীত

ইইয়াছিল। ইহার প্রধান উদ্যোগী ছিলেন ঢাকা
কলেজের ভূতপূর্ব লাইত্রেরিয়ান শ্রীযুত রাধাকান্ত দাস
ও ভাজ্ঞার দলিত মোহন দাস প্রভৃতি। সোশন মান্তার্দ্ধ
ছিলেন ঢাকা কলেজিয়েট স্থলের অকন বিদ্যার শিক্ষক
শরচ্দ্রের দেব মহাশয়। ১২৯৯ সনের পৌবা মাস হইতে
আরম্ভ হইয়া ১৩০০ সনের আবাদ্য মাস পর্যান্ত এই
নাটকের অভিনম্ন হয়। ঢাকা বাখলপুর "আর্য্যনাটর
স্বিতি" ইহার অভিনয় করেন।

উক্ত নাটা সমিতি পরে "ত্র্কাসাদ্যন" বা "অব্রীশের ব্রহ্মশাপ" নামক নাটকের অভিনয় করিয়াছিলেন। ইহার প্রধান উল্যোপী ছিলেন ত্রীবৃত রাধাবলভ দাস, প্রাণবল্লভ সাহা, এবং রামচক্র দক্ত।

উক্ত "চন্দ্রবাস নাটক" অভিনরের স্বয় ঢাকা রায়ের বাজারে প্রীযুত অভয়কুষার দণ্ড এবং গিরিশচক্ত দণ্ড প্রভৃতি "বরিশক্ত" নাটকের, বৈষ্ণীতে "প্রকাল চরিক্রের", এবং পরে ডাইল বাজারে "হরিরাজ" এবং রায়ের বাজারে "নর্মেধ্যজের" অভিনর হয়।

পূর্বোরেণিত সমস্ত যাত্রা ও নাটকই সংখ (amature ভাবে) অভিনীত হইরাছে। কছদিন হইতে ঢাকার "ক্রাউন" ও পরে "ভারেমত জ্বিদি" বিষেটার নামে হুইটি ব্যবসাদারী অভিনয়মকে নানা নাটকের অভিনয় হইতে থাকে। বস্তমানে "পায়ন" থিরেটার চিশিভেছে। ক্রাউন বিধেটারও নানা নামে চিশিভেছে বটে।

৺ শুকলাক মিদ্রী—ইনি হত্তধর জাতীয় পশ্চিষ্ দেশীর লোক। ঢাকা তাঁতিবাজার বাগাবাড়ী লেনে ইহার নিবাসবাটী মুবৃদ্ধিত। যদ্রাদি একরূপ বাজাইছে কানিতেল। কিছু সর্বাহ্রকারের বন্ধ উৎক্রান্তর্গে প্রস্তুত্ত করার ভালাই ইহার দেশ বিব্যাত অভিতীর দাম।

অবনও তকলাল মিন্ত্রীর হাতের পুরাতন যন্ত্র পাইলে
লোকে চত্ত্রণ মূল্যে বরিদ করে। বীণ, প্রবাহার,
লোকে চত্ত্রণ মূল্যে বরিদ করে। বীণ, প্রবাহার,
লোকে তত্ত্বণ মূল্যে বরিদ করে। বীণ, প্রবাহার,
লোকে গ্রহাত করিতেন। পশ্চিম দেশীয় বড় বড়
ওভাদরাও তকলাল মিন্ত্রীর হারা যন্ত্রের "জোয়ারি"
ঠিক করাইয়া লইবার জন্ম আগ্রহ সহকারে তাহার
মিকট উপস্থিত হইতেন। তাহার ছেলে মৃত পুরুবোত্তম
মিন্ত্রীও দক্ষ কারুকর ছিলেন। এখন পুরুবোত্তমের
পুত্র শ্রম্যুত রামলাল মিন্ত্রী এবং তাহার ভাতাগণ উত্তম
বন্ধ প্রস্তুত করিয়া ঢাকার পুনাম রক্ষা করিতেছেন।

 ভ্রনমোহন গোলামী—ইহার নিবাদ ঢাক। মালীটোলা। ইহার পিতার নাম রাধানাথ গোদ্ধামী। ইহারা অবৈতবংশ সমূত। वर शुक्रव यावर नवधीन ছইতে ঢাকায় আসিয়া বাদ করিতেছেন। গোৰাই মহাশয় পাথোয়াজি জিলেন। তিনি পশ্চিম वरकत अविविधाती शाखामी, मनावश्रवत शीवरमादन বসাক এবং আনন্দ্রোহন বসাকের নিকট পার্থায়াত্র শিক্ষা করেন। ইহার জোর্চ ল্রাডা ৮ বনোয়াবিলাল পোস্বামী মন্ত্রাপর হরি কর্মকারের নিকট গ্রুপদ শিখিয়া-নবাবপুর লালটাদ মকিষের গলির শ্রীষ্ড মহেল্লনাথ বসাক এবং নবাবগঞ্জের ত্রীযুক্ত অক্ষয়নাথ अर्चेकांत्र छुनन (भाषांत्री महाभारतत भाष्यांत्राकी भिया। তাভিবাৰারের অফিদার প্রীযুত গোপালচজ বসাক অবং বিক্রমপুর নগর কগরার শ্রীযুত মধুরানাথ স্বর্ব विभिन्न এই इटेबनरे भट्टल वनाटकत निका। हैंशता **উৎकृष्टे वाका**न ।

৺ প্রাণ বলভ গোলালী ঃ—ঢাকা ঠাঠারি বাজারে ইহার বাসভান। ইহার পিতার নাম ৺ গোপী বলভ লোবামী। ইহারা নিভানন্দ্রন্থে সভ্ত। প্রায় ৭ ৮ ব্রুমণ বাধ্য আধিয়ান ধর্ম ইইতে ঢাকার আসিয়া অবৃহিতি করিতেছেন। প্রাণ বর্গ গোসারী প্রাণী পুরের ৮ কিলোরী নোধন বসাকের নিবট পাখোরাক দ ভবলা শিক্ষা করেন। এলাল প্রকৃতি অন্তাই ব্যৱহ ভাষার হাত ছিল। তিনি মনোধরসাহি পালবারী নাথে অভিজ্ঞ ছিলেন। সোবানী মহালয় শালেও প্রাথীনী ছিলেন। ৪৯ বংগর বর্গে ১৩২১ স্বের ২১শে প্রাথীনী তিনি পরলোক গমন করেন। ভাষার পুঞ্জ বিশ্বী রাধাবর্গত গোলামী মহালয় বেশ ভবলা বাকাক।

৺ রোহিনী কুষার রার কথকার:—ইংলার শিবার 
টাকা তাঁতিবাজারে। শিতার নাম ৺ গোবিশ টার 
কর্মকার। বড়ই হুংবের বিবর অয়ারন ইবল ইয়ারিল 
মৃত্যু হইয়াছে। বয়্দ অফুমান প্রায় ৫০ বংশর ইয়য়ারিল 
ইনি অতি স্থক চয়া গায়ক ছিলেন। প্রাসিধ বার্মিক 
ইনি অতি স্থক চয়া গায়ক ছিলেন। প্রাসিধ বার্মিক 
ইন্দ বিঞা, ও রাধিকা বাবু প্রভৃতির নিকট টয়া বিশ্ব 
করেন। আগরতলার ইংলার কর্মকার জোকান বিশ্ব 
তথার মহারাজের সরকারে গায়ক তাবে য়ানিক 
তথার মহারাজের সরকারে গায়ক তাবে য়ানিক 
ইহাকে বড় মেহ করিতেন। মহারাজ বীর্মিক 
মহারাজ রোহিনীর বিধবাকে মানিক ২০, করিয়া 
রিম্বার 
বিশ্ব 
উপলক্ষে নগল ও০০, টাকা সাহায্য দিয়া ভশ্রাহিনী 
এবং কর্ম্বর জানের পরাকার্ডা লেখাইয়াছেল।

তিনি তথার গান করিতেন এবং গান রচনাও করিতেন।
বিভার বাব মহালয় বাবা মহালয় বাবা মহালয় মহালয় বাবা মহালয়ে বাবা মহালয় বাবা মহালয় বাবা মহালয় বাবা মহালয় বাবা মহালয়ে বাবা মহালয় বাবা মহালয়

**াম-নামন্মাংক ভিনি প্রথম গান করেন। জাহার** 🕦 🛊 শব্দে ভদানিত্তন ক্ষিস্নার সাহেবের ক্রিক্রানিই। বা বাদ্য অভয় কুমার দাস বাহাত্র এবং काबिएड्रेड अबन सुन्दत गित गरशंदर चठार **বিশ্ব এবং তাঁহার সলীত শিকার বন্দোবত করি**য়া ৰ প্ৰায় কিনি হফু বিকার কাছে ৮ মাস শিকা ক্রিছ ভাষার কঠখর টল্ল। গানের উপযোগী না क्षा अबर रक् विका ७ डाँबात कर्शनरयानी अनम ক্ষা দেওয়ায় তিনি আর তাঁহার নিকট শিখেন না। क्षित्र तम्र तम्राम यथन त्राम मीननाथ रमन भारवर হিন্দ হবি, কর্মকারের সঙ্গে উচ্চাঙ্গের সঙ্গীত আলোচনা ত্রের জন্ম তিনি হরির কাছে এক বৎসর গ্রুপদ অভ্যাস वाम । वाम मदानारात कर्श वाजि छेळ ७ मिट्टे हिन, প্রীত্ত গাইতে এতদেশে তিনি এক প্রকার অবিতীয় জ্বাহার বয়স প্রায় ৭২ বৎসর হইয়াছিল কিন্ত ব্যালাক জার কৡষর অতি উচ্চ, স্পষ্ট ও নিষ্ট ছিল। হাৰা, উরারিতে বাদ ভবন নির্মাণ করিয়া ত্রিয়া তাহার এক ছেলে মুনদেক এবং আর ক্ষেত্ৰ তেপুট ম্যাজিপ্টেট। বর্ত্তমান প্রবন্ধ লেখকের স্থাত সাহীত চৰ্চাও সৰ্বপ্ৰথম চন্দ্ৰনাথ বাবুও ত্ৰহ্মদঙ্গীত ক্রি এবং কর্মও কর্মণ বা তাঁহার নিকট কিছু কিছু ক্রা ক্রিয়া আরম্ভ হয়। অতি জংশের বিষয় विवर्गन ३०२१ महनत ३१हे व्यावाह (प्रश्रात Marigan I

্রিশ্বন ঢাকার জীবিত শ্রেষ্ঠ সঙ্গীতত গুণীদের সংক্ষিপ্ত বিশ্ব দিলাই আমার বর্তমান প্রবন্ধ শেষ করিব।

নিষ্ক জ্পবান দাস সেতারী:—ভগবান সেতারীর নি আবার বাটী ১১নং সবলিমহাল, ঢাকা। তাঁহার কৈ নাম পুরুতন দাস বাবালি সেতারী। ইনি কি জীবার শিতার নিকট সামাথক্রপ সেতার শিলী। জিংগবে প ক্রপ্বার্থ কলিকাভার ৮ ন্যান কি গোরী জুশতান ব্রু, হোরেণ হা এবং শার্ও

वह छात्र छात्र खनी वाल्नि शैवित्र। हाकात्र चानित्रार्द्धत वादाप्तव निकृ देहें व निका नांड कविशास्त्र । (मणावी यहां गत्र विद्याहरून य एका त्वत नामा सम्मात्त याहेशा जानिनिया जान अलाम कतिरल अवर मा, द्व, গা, या निविट्धे डांदात वहणिन हिनत्रा शिक्षाट्य। यथेन বেশ শিধিলেন তখন এমন রাত্তি অনেক গিয়াছে যখন প্রথম বাত্রে তিনি বাজাইতে ব্রিয়াছেন, কি ভাবে সময় চ্লিয়া যাইতেছে ভাহার কোনই খাল নাই, धावात জিনিস ঢাকা পড়িয়া রহিয়াছে তিনি কেবল অনুত্র মনে বালাইতেছেন, পরে যখন প্রভাতের আলো গৃহে প্রবেশ করিয়াছে তখন দেই দিকে দৃষ্টি পড়ায় তিনি হঠাৎ দেতার ছাড়িয়া উঠিয়াছেন। বাজারের পয়সা নিয়া বাজারে যাইতেছেন পথে হয়ত কোন স্থানে কেহ তাঁহাকে ডাকিয়া একটি সেতার হাতে দিয়া বাজাইতে বলিল, তিনিও বাজাইতে আরম্ভ করিয়া তন্ময় হইয়া একেবারে সঙ্গীত রসে ডুবিয়া গেনেন, কার বাজার কে করে ? অসময়ে শৃঞ্ভাণ্ড লইয়া সুহে ফিরিয়া মাতার নিকট অপ্রস্তুত হইয়াছেন। এইরপ একাগ্রহা ও সাধনার ধারাই তিনি এমন আশ্চর্য্য সিদ্ধিলাভ করিয়াছেন। ভগবান সেতারীর বর্তমান বয়স প্রায় ৬৫।৬৬ বংশর হইবে। এক সময়ে তিনি ও রায় সাহেব দীন নাথ সেন এবং বানিয়াজুরীর রাম বাবুর সঙ্গে স্বর্থলিপি ছারা শেতার निका किरात कोमन उडावन करतन। देशत निविछ. উত্তম উত্তম গদ সম্বলিত একখানা স্বর্থলিপি পুস্তক পাণুলিপি আকারে আছে। ওন্তাদি ইহা ছাপিতে মনস্থ করিয়াছেন। হরি কর্মকার এবং ভগবান সেভারী এই ছই ख्नीवाकिय हाकाय यत्रविभित्र वाबहात अहिन्छ কবিয়াছেন।

এক সমধ্যে ভগবান সেতারী কলিকাতার প্রানিদ্ধ "ভারতস্থাত সমাজের" দেতার শিক্ষক ছিলেন। ইনি মিউতিক্ ডাঞার মুহারাক শৌরীক্ত মোছন ঠাকুর মহোদয়কে শেতার ভন্তবিয়া প্রশংস্থাত্তক সাইফিকেট नारेबाएका। निष्म छेरात नकन (मख्या (भन :--

"Pathuriaghata Rajbati, Calcutta, 23rd February 1896"

Babu Bhagabau chandra Das of Dacca is a good player on the setar. He gave me some specimens of his practical skill before me the other day, and I was much pleased with his performance

Sd. Sourindra Mohan Tagore
Musc. Doctor."

**টাকার ভৃতপুর্ব কমিগনার মিষ্টার পিলু ভগবান** শৈতারীকে পুরস্কার স্বরূপ একবার মোহর দিয়াছিলেন। চাকার নবাব বাড়ী হইতে তিনি ৩০১ এবং পরে ৫০১ শাসিক বৃত্তি পাইতেন। একদা তিনি ভীর্ব ভ্রমণ উপলকে মধুরাধামে গিয়াছিলেন। তথাকার মহাত্মা শইমি প্রসাদ দেঠ তাঁহার স্থমধুর সেতার বাদন ওনিয়া अञ्जूद मूक्ष इरेबाहित्नन (य अञ्चापिक यञ्जिन मथूताव - ভিলেন ততদিন পর্যায় তাঁহাকে অতি যতের সহিত निकालाय वाचियाकित्वम अवः किविया चानिवात नमय পুরস্কার স্বরূপ নগদ ৫০১ টকি। আর একটি উৎকৃষ্ট ও यरनात्रम मुख्नात अञ्चता नान करतम। अञ्चलिन श्रेन ঢাকার বর্তমান নবাব ত্রীবৃত হবিবুলা সাহেব বাহাত্র সৈতারীকে একটি পদক পুরস্কার দিয়াছেন। পদকটি মবাৰ বাহাত্বের পক্ষ হইতে বঙ্গের শাসনকর্তা লর্ড রোণাক্ত্রে বাহাত্র নেতারীকে সহস্তে वानान कर्त्तम ।

ওত্তাদনি জপদ, ব্যাস, টপ্লা, ঠুমরি সর্ব প্রকারের কঠ সদীতের সঙ্গেই সেতারের অতি উত্তম সম্পত করেন। শানের সঙ্গে এরপ সেতারের সন্ধৃত ঢাকার সেতারী-কের বিশেবছ। ইনি লয়েও অতি পরিপক। ভগবান ইবাই ছাতে এমনই মধু মাধিয়া দিয়াছেন বে ইনি বাধাই

ভগবান দেতারীর কনিষ্ঠ প্রাতা স্থাম দেতারী থ তাঁহার ভাগিনের অন্ধ যত্নাথ দাদ হঁহারই নিকট কেছার শিখা করিয়াছেন। প্রীযুত ইন্ধ্রমোহন সেতারীও প্রাকৃতি ইঁহার নিকট কিছু দিন পাঠ নেন। ইহার, বহারী অতি মনোরম।

শ্রীযুত এন্দাদ্ থা। — এন্দাদ্ থার বর্তমান বাস্থানি ১৫০নং দক্ষিণ মৈবতী, ঢাকা। ইঁহার পিতার নাম বর্ত্তম ব্যাপারী। বর্তমান সময়ে ইনিই ঢাকার সর্ব্বশ্রেষ্ঠ স্থান্ত গায়ক। গ্রুণদ এবং খ্যাল উত্তম গা'ন, ইয়া ঠুম্বিজ্ঞ বহু জানা আছে। তিনি লয়ে বিশেব অভিজ্ঞ, নামার্কি প্রকারে লয়ের বাঁট করিতে অতি দক্ষতা প্রদর্শন করিয়া থাকেন। অতি অরু সময়ের মধ্যে সূবে মুবে শ্রিষ্টা থাকেন। অতি অরু সময়ের মধ্যে সূবে মুবে শ্রিষ্টা বর্তান করেয়া দিরা তিনি আশ্রুণ্ড স্ববোধের পরিষ্টা দেন। এম্দাদ্ মিঞা অতি বোসমেলালি লোক। বর্তমান সময়ে ইঁহার বয়স ৬০ বৎসরের কিছু মুবে হইবে। শ্রীযুত সমিউল্লা মিঞা, রাধারমণ বলাক, জেবাটি ম্যাজিট্রেট্ শ্রীযুত নরেন্দ্র নাথ সেন প্রভৃত্তি ইহার বিশ্বটি এম্দাদ্ মিঞা বর্তমান প্রবন্ধ বর্তমান প্রবন্ধ বর্তমান প্রবন্ধ বর্তমান প্রবন্ধ বর্তমান প্রবন্ধ নাথ সেন প্রভৃত্তি ইহার বিশ্বটি এম্দাদ্ মিঞা বর্তমান প্রবন্ধ বেবন্ধও সন্ধীত অক্সং

বাল্যকাল হইতেই ইনি অতি সুকণ ছিলেন। ১২।১৯
বংসর বরসের সময় তিনি একদিন ভোরের সময়ে নাই
ইইতে বাহির হইয়া নিকটবর্তী একটি পুরুষ্ণাটে নাইছা
দেখিলেন যে একজন পশ্চিম দেশীর স্থার গঠন ওক ছেছা
সাধুপুরুব নাভি পর্যন্ত জলে নামিয়া অভি মুধুর কুট্রি

क्षाम नाम कतिरवरहमां स्री छन्न भूकीकान क्षिक रहती निवादक बाख । जुबलान दिवा नमीत्रन वीद्य क्षेत्र वंदिए एक । अम्मान वं। छवम मुक्ष हिटल ক্ষুৰ পাটে শিভাইয়া শিভাইয়া নেই পুদ্দিত সঙ্গীত ক্ষাৰ লা শেব বইল ততক্ৰাই ওনিলেন। তীহার क्षा क्षेत्र क्षेत्र वहेश (नग, नगेज निवित्त हेका हेरेग। ক্রিলৈ স্থীতের এক বর্ণও বুঝিতে পারেন নাই, কিছ ক্রেই ভাষাকে পাগল করিয়াছে, কথায় কি কাল ? বিষ্ণা বছলেই হল্পি কর্মকারের শিকার গ্রহণ করিয়া প্রতিত শিবিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি নিজে ক্রীয়াছেল বে বখন কিছু অগ্রসর হইলেন তখন ভোরের ৰক্ষা ক্ৰমণ্ডৰা **খন্ত** সময় ভানপুৱাট হাতে নিয়া প্রয়েয় উত্তরে কোল্পানীর বাগানে অর্থাৎ বর্ত্তযান क्रिक्न विरम्प्र क्रिक छेल्द्र पिरकद वानात्व चवता चन्न क्रिक्क निर्मान शादन हिनद्रा निदाहिन, बवर छथात्र इस्ति नामस्य थान बुनिया यत मारम कतियासम। क्षा एक राश निवाद नाहे, ठांड्रा कदिवाद नाहे-নাৰ তব্য প্ৰকৃতি মাত্ৰ প্ৰোতা, আর ক্লুক্র বিহলুকুল ক্রমের শারী। বনের গান্তীর্যা, বন্ত কুসুমের নির্মাণ সৌন্দর্য্য विकाल जाप समद्भूतन मध्य खक्षन भव धक्का हहेता বিষ্টা বনে এক অপূর্ব ভাব আনিয়। দিত আর তিনি ক্রান বুলিরা সঙ্গীত গাধনা করিতেন।

শিক্ষার কোন এক মন্লিনে তদীয় দলীত গুরু হরি

কাষ্ট্রের সংল ভিলি গিয়াছিলেন। আরও বহু পারক

কাষ্ট্রের উপস্থিত ছিলেন। দেই থানেই দর্মপ্রথম

কাষ্ট্রিরার্থায়ণের দম্যুক্ত ভিনি শুরু কর্তৃক গান করিছে

কাষ্ট্রিরার্থায়ণের দম্যুক্ত ভিনি শুরু কর্তৃক গান করিছে

কাষ্ট্রেরার্থানা ভবন তার অতি তরুণ বয়স।

কাষ্ট্রেরার্থার করিয়া গান বরিভেই উহা অমিয়া গেল।

ক্রির্বার্থার রূপ বাবু উপস্থিত ছিলেন। তিনি এই অর্

ক্রের্ট্রেরার্থার গান গুনিরা এরুপ খুনি হইলেন স্বেরার্থানাক্রিরার্থার ক্রিলেন।

ক্রির্টার্থার রূপ

ক্রিরার্থার ক্রিরাক্ত ১০ টাকার একথানি নোট বাহির

ক্রের্ট্রার্থার ক্রিরাক্ত নির্দাকে পুরন্ধার ক্রিলেন।

শীযুত উপেজ কুষার বসাক ঃ—উংপল্ল বাবুর বাসস্থান নবাবপুরে। ইনি ছবিবাাত রাষকুষার বসাক মহালয়ের পুত্র। বর্ত্তমান সময়ে ইনিই ঢাকার সর্বশ্রের পাবোরালি, নিজ পিতার নিকটই ইনি শিক্ষা লাভ করিয়াছেন। আগরতলা রাজবাটাতে ইনি পাবোরাল বালাইতেন এবং মাসিক ৫০০ টাকা করিয়া রুভি পাইতেন। উপেজ্র বাবু দিল্লি দরবারের সমর তথায় পাবোরাল বালাইয়া বশর্মী হইয়াছিলেন। পশ্চিম দেশীর ওত্তাদকুলের মধ্যে এক্লম্ব, মশোলাভ করা ঢাকার পক্ষে কম পৌরবের কথা নথে। উপেল্ল বাবুর বর্ত্তমান বয়স ৬০ বংসেরর উর্ক্লে হইবে। ইহাদের বাড়ীর পরলোকগত বিরজা বসাক, শ্রীপুত পারীজ্র বসাক প্রস্কৃতি ভাল বাদক। উত্তিরাজ্যারের জনিদার শ্রীপৃত গোপালচক্র বসাক মহাশ্র উপেল্ল বাবুর পাথোয়ালী শিশ্ব; পোপাল বাবু তবলাও উদ্ধন্ধ বাজান।

জীযুত প্রদর্মার সাহা বণিক্য, – ইহার নিবাদ ২৪নং যুগীনগর ঢাকা। পিতার নাম ৮ মদন মোহন সাহা বণিক্য। ইবি ঢাকায় 🛩 পৌর মোর্ন বসাকের निक्र भार्यायां ७ छवना निका करवम। फर्भरब মুর্নিদাবাদ যাইয়া ভত্রতা জগবিখ্যাত তবলা বাইক चाछा हाराव की मारश्यक निकृष कि कि कि कि कि कि कि करवन। देशव निक मूर्य छनिवाहि य देनि माकि अक्षिन हाकात छमानियन मर्साम्बर्क छवना बायक সুপ্লন বাঁকে বলিয়াছিলেন " আপনি ত এত বড় ওভাছ, वृद्ध रहेशास्त्र, अथन व्यापनात विकाशहारक २। ६ कत मिकार्थित मुल्लून विद्या याहरू भारतम छाहाहे কর্ম। তাহা হইলেই আপনার নাম থাকিবে ।!! देशांक जडाम मुझन थी छेलत कविरामय "धामक बात. बाप्ताडा विका बाग किनि का निहि (एता, जाश्मा नाबहुक (व बारत्या।" এইम्रम উভরে প্রসন্ন ব্রিকা মহালয় अध्यक्ष मर्पार्क रहेरनम् अवश् नित्क बारा कि मिका कविवारक्तः छावा अवकः श्वकाकारक क्षकाम कृतिक

নেরে বাহাতে এই বিভা শিকার্থী মাত্রেই শিথিতে পাবে ভাষা করিতে ইচ্চুক হইলেন; এবং সেই ইচ্চার ফলেই ইন্নি ভাষীর প্রসিদ্ধ পুত্তক "তবলা তরন্ধিনী" ও "মূদদ প্রবেশিকা" প্রকাশ করিয়াছেন। "তবলা তরন্ধিনীয়" ভূতীর সংকরণ হইরাছে। " মূদদ প্রবেশিকার" মূদ্রন বান্ধা কুড়াপাঞ্চার অক্তম জমিলার শীর্ত কেশবচন্ত্র বাজ্যোপান্যায় মহাশন বহন করিয়াছেন। এই চুই প্রয়ে সম্ভ বিষয় এমন পাতিত্যের সহিত অতি সহজ ভাষায় নিশিষ্ট হইরাছে যে শিকার্থীগণ মূদদ ও তবলা নাদ্ধে ইহা হইতে বিশেষ সাহায্য প্রাপ্ত হইবেন। এই প্রস্ক কলিকাতার "বেদল্ মিউজিক্যাল স্থলের" পাঠা।

ইনি বর্ত্তবাদ টাকার অভিন্তেট তবলা বাদক।
একস্বরে ইনি কলিকাতার "ভারত সলীত সমাজের"
সক্ত অব্যাপক ও বাদন শিক্ষক ছিলেন। ১৯০২ সবে
কলিকাতা "ভবামীপুর সলীত সমিলনী সভা"তে তবলা
বাজাইরা বণিক্য মহাশর একটি পদক পুরস্কার
প্রাপ্ত হইরাছিলেন। তবলার পারদর্শিতার জন্ত (For proficiency in Tabla) হাই কোটেরি প্রসিদ্ধ উন্দিদ্ধ ক্রেলানক্ষ মুখোপাধ্যার মহাশরের পুত্র প্রীযুত উন্ধানুমুদ্ধ মুবোপাধ্যার মহাশর ভাহাকে এই পদক
প্রদান করেন।

ত্রীমৃত ভগবান দাস সেতারী এবং প্রসরক্ষার বণিকা
মহাশন্ন একসন্থেই মহারাজ শোরীপ্র মোহন ঠাকুর
মিউজিক ডাজার মহোদন্তের সমক্ষে পরস্পর সেডার
ভ ভবলা বাজান। মহারাজ উভয়ের বাদন কৌশল
স্থারেই জভ্যন্ত প্রীত হ'ন। বণিক্য মহাশারের 'ভবলা
ভরজিনী' পাঠ করিয়া মহারাজ নিজে এবং 'বেফল
মিউজিক্যাল স্থানর অবৈভনিক স্থপারিণ্টেভেন্ট ৺ কালী
প্রায় বন্দ্যোপাধ্যার মহাশন্ন উহার বিশেষ প্রশংসা
ভবেশ, এবং মহারাজ উহাকে নির্মিধিত সাটিজিকেট্
বেশা

"পাধুরিয়া বাটা সালবাটী, কলিকারী ২০ শে ফেক্রমারি, ১৮৯৬

"চাকা নিবাদী ত্রীমৃত বাবু প্রসন্ন কুমার সাধা বণিকা একদিবস আমার বাটিতে তবলা বালাইরা ভিনেন, এবং এই সুযোগে আমিও তাহার বালনা প্রকাশন ভিনাম। আমি তাহার বালাইবার প্রকৌশন ভিনাম। মিপুনতা দেখিয়া অত্যন্ত আমন্দ লাভ করিয়াছিও বোহিছ ইইয়াছি।"

(পাকর) প্রশোরীর নোইন ঠারুর ।
প্রশার বণিক্য মহাপরের একটি পুত্র অতি ক্ষমন্ত্র
তবলা পিকা করিতেছিল। কিন্তু বছুই পরিভার্ত্রের
বিবর বে যাত্র ২২। ২০ বংশর বরুলৈ গে পরবারক চলিকা
সিরাছে। বানকোড়ার জমিলার প্রীরুত কেন্সইন্তর রাজ্ব
এবং মুড়াপাড়ার অমিলার প্রীরুত কেন্সইন্তর রাজ্ব
থবং মুড়াপাড়ার অমিলার প্রীরুত কেন্সইন্তর বংশাপানার
মহানরবর প্রশারক্ষার বণিক্য মহানরের নিক্ষা ভবলা
বিশ্বা করিয়াছেন। ইহার বর্ত্তরান বরুল অনুমার
৬০বংশর হইবে। জমিলার হেম্চক্ররার মহানের প্রভারী
বিশ্বাত ভুগন বাঁর নিক্ট তবলা শিক্ষা করেন।

শ্রীবৃত ভাষ দাস সেতারী :—ইনি থার্ড ভর্মান করি সেতারী বহাপরের সহাদের কনির্চ ভাই। জারের নিক্টর ইনি সেতার উত্তম শিকা করিয়াছেন। প্রবাহার ও এলাল ইনি বেশ বাজান। বর্তমান বর্ষ ৫৭ বঙ্কা হটবে।

প্রীবৃত ইক্রমোহন সেতারী :—ই হার নিবার দ্বাস্থার গোরাল নগর। ইনি হরেণর লাতীর। ইনি প্রবৃত্তি বিশ্ব দাস সেতারীর নিকট লার কিছুলি সেতার নিকা করেন। পরে অক্সান্ত বহু লোকো বাভ ভনিরা নিকট ও প্রথমে বাভ ভভাাস করেন। ইনি মেনানা ইনি প্রভাক, সেতার, তাসপুরা প্রভৃতি যন্ত্র প্রথমে বারি করিছ করিছ প্রাক্তি বার প্রভৃতি বার প্রভৃত করিছ প্রাক্তিন। ইহার বর্তবান বরস প্রার্থ ৬০ প্রথম হইছে

আৰকাল বিজনপুর কুক্টিরা গ্রাম নিবাসী প্রীয়ত চারু

ক্রেই দণ্ড মহাশর কএক বংসর যাবং কলিকাত। হইতে

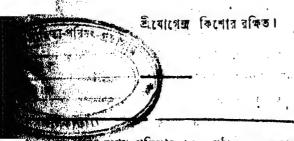
আদিয়া ঢাকার অবস্থিতি করিতেছেন। ইনি কারস্থক্লহ্রেইব দাভা কালী কুমারের পৌত্র এবং ডাক্তার রেবতী

হ্রাইব দাভা কালী কুমারের পৌত্র এবং ডাক্তার বিখ্যাত

ক্রেইব শুক্তা প্রথমন নাপ বন্যোপাধ্যায় মহাশরের নিকট

ক্রেইভি শিকা করিয়াছেন। কঠ উচ্চ ও মধুর।

া নার্থনান্দ সমরে দেভাবে ভগবান দাস, কণ্ঠ সঙ্গীতে আনুলাত বা, মুদ্ধে উপেন্দ্র বসাক, এবং তবলার প্রসাম বিশিক্ষা প্রাকৃতি মহালারগাপ যে পর্যান্ত জীবিত আছেন বিশিক্ষা প্রাকৃতি মহালারগাপ যে পর্যান্ত জীবিত আছেন বিশ্বান্ত উল্লেখ্য চাকার গোরব। ইহাদের অভাবে সিলার উল্লেখ্য সক্ষাত ক্ষেত্র তমসার্ভ বলিয়াই অফুমিত ইতিছে। তবে একে বারে নিরালইবা হইব কেন প্রভাৱে শালোহারং নিরবধিঃ'—ভবিন্যতেও বহু গুণীর প্রাকৃত্রিক প্রার্থনা যে ইহারা যেন আরও বহু বংসর স্থাতিক প্রার্থনা যে ইহারা যেন আরও বহু বংসর স্থাতিক ক্ষাত্রিক প্রার্থনা যে ইহারা যেন আরও বহু বংসর স্থাতিক ক্ষাত্রিক প্রার্থনা নারিমর জীবন লাভ করিরা ঢাকাবাসীর সাম্বান্ত বর্ধন করিতে পাকেন। সরস্থতীর স্থাতক্র ক্ষাত্রকা নারব হইরা যায় না।



ক্ষা প্ৰশিক্ষ সংখ্যা প্ৰতিভাৱ ১৭৮ পৃঠার ২য় গুল্পের মুন্দান্ত (৪৬) স্বংস (১৬) মুইবের ।

### সাহিত্যিকের নানাক**থা** (১)

মমু বকুৰিশেষ নিঃস্পৃহা গুণগৃহ্যা বচনে বিদন্দিতঃ ।
( ৮শশধর)

পণ্ডিত প্ৰীযুক্ত শৰ্ণৰ তৰ্ক চূড়ামণি সম্বাদ্ধ প্ৰস্কৃতঃ মন্তব্য করিতে গিরা পূর্ববঙ্গেরই পত্রিকা বিশেবে ভদীর नार्यत शृर्त्व "" हिट् बकादिक क्षेत्रस क्षेत्र হইয়াছিল। পণ্ডিত শশবর পূর্ববঙ্গেরই লোক—**তাঁহার** সঙ্গে মতের অমিল পাকিতে পারে কিছ তিনি যে একজ্ঞম দেশবিখ্যাত পঞ্জিত এবং বঙ্গের গৌরবের সামগ্রী. একথা বোধ হয় সকলেই স্বীকার করিবেন। অধচ এ লোকটি জীবিত না মৃত এ সংবাদ শিক্ষিত স্বলেশবাসী অবশ্বত নহেন। অথচ আমেরিকা বা ইউরোপের কোইও বিখ্যাত মনস্বী সম্বন্ধে এইরূপ ভূল করিলে নেধক কজায় অভিভূত হইয়া ক্রটী শীকার করিতেন। এন্থলে কিন্তু এরপ কিছুই হয় নাই, কেননা এই जून (मथारेगात अध्याननीय्राहे छेभनक रत्र नाहै। জীবিত ব্যক্তিকে মৃত বলিয়া খ্যাপিত করিলে নাকি তাঁহার আয়ু রুদ্ধি হয়—আমরা স্কান্তঃকরণে পণ্ডিত ममक्रावर नीर्यक्षीयन कामना कति। वित्मयकः अहे त्थानीत ষেটি যায় ভেমনটি যে আর হইতেছে না।

### नु इत्न (शांकरपांत्र ।

"একটা নৃহন কিছু কর" বলিয়া যিনি হাসির পালে বিজ্ঞাপ করিয়া গিয়াছেন তিনিই একটা নৃতন করিছে গিয়া গোল করিয়াছেন। পূর্বেন নাটকের প্রারম্ভে "নাটোলেখিত ব্যক্তিগণ"বলিয়া নাটকে বর্ণিত নর নারীর পরিচয় দেওয়া হইত। বিজেলাল ভাহাতে সন্তই না ইইরা তংহলে "কুনীলব" লিখিয়া নৃতনত্ব প্রদর্শন করিলেন, কিন্তু "কুনীলব", শুজে যে কি বুঝার সে বিজেলেন বৈদ্যাল করেন নাই। 'কুনীলব' অর্থ বাহারা অভিনত্ত্ব করে— ক্তিনরের বিষয়ীভূত জীপুরুব এউবারা বুরার না

শালকাল প্ৰব্যের কাপলে নাটকাভিনয়ের বিজ্ঞাপনে
মধ্যে মধ্যে কুশীলবদের নামও ঘোষিত হইয়া থাকে ।
১৫ বংসারে বি, এ, পাস।

. अहे कविद्रहे नाठेक-विरमस्य अकृषि शक्षम् वर्शीत्रा बानिकारक 'वि, ७, भाम्' (प्रधान व्हेशारक । मकताहारी वा अन् हे प्राप्टियिन् 'एका जहताहत (पथा यात्र ना त्य অভাল বয়সেই পণ্ডিত হইয়া উঠিবে। তা শক্ষরাচার্যাও यि (यि कूलमन पिछिन, তবে छांशांक ১৬ वरमत পর্যায় অপেকা করিতে হইত। অবশ্য বিগবিতালয়ে মধ্যযুগে বয়দের কোনও বাঁধাবাঁধি ছিল না-কিন্তু তখনও ১৩। ১৪ বৎসরের কমে এন্টে ন্স্ পাস্ চইত বলিয়া দেখা ষাইত না। যাহা 'সাধারণতঃ' ঘটে, কবি ভাহাই (प्रवाहरतम-जाहे शक्रममनवीशास्क अल्पे न्म ्रिक्षांहेरलाई यरणेष्ठे हहे**छ। अथ**वा बि.ब. পान् रिक्षांहेर्ट হইলে বালিকার বয়স অগত্যা 'অষ্টাদশ' করিলেইত কোন্ত গোল বাঁধিত না। বরং ইহাতে গ্রন্থের श्रृमितिहर्णात्वतः व्यर्थ (मोर्कत व्यक्तिकत्वत वहेल । यथा "ः धन ১৫ বংশর পর্যান্ত ভাষার অবিবাহিতাবস্থায় রেখেই তাকে বিকা দিয়েছ, তথন অস্ততঃ তার ভবিষাৎ বিষয়ে তার ্রীতকে অগ্রাহ্য করতে পার না।" পঞ্চদশ বর্ষীয়ার অপেকা অষ্টাদৰ বৰীয়ার "ভবিষাৎ বিষয়ে" মতামত সম্বিক গ্ৰাহ্য।

### कानिनारमत 'भूतिम्'।

শামি সর্কাট শক্ষলার ষঠ অক্রেল প্রবেশকে চিত্রিত "পুলিশ" দিন্টাকে নাটকের স্বাপেক। উপাদের বস্তু বলিয়া মনে করি। এমন সঞ্জীব চিত্র'

\* আর একজন বিশিষ্ট লেখকের প্রণীত উপন্যাস বিশোধে দেখিয়াছিলাম ''শিংশপা' মা'নে "শিমূল''। একখানি বিশিষ্ট পত্রিকায়ও শ্লীলতা অর্থে 'শোলীনতা'' শব্দ বাবহৃত হইয়াছিল। লেখকগণ মধ্যে মধ্যে অভিধান প্রীক্ষানেশিকে এ সকল বিভ্যনা ঘটে না।

বিতীয়টি আর দেখি না। ছু হাজার বংসর পরেও থেক इंश ठिक् 'की वस कृति' विभिन्न खठी ठ दम्। जालकान পুলিশের যেরপ নিশ্ম আচরণ উৎকোচ গ্রহণ ও মছপান हैजानि बासा याम-कानिवादमत नगरत्र श्रीमानत সেইরূপ অবস্থা লক্ষিত হইত। চোর বলিয়া গুড় ও ভাডিত মংস্ঞানী—গোধাদী বিপ্ৰস্কী যে জানপ্ত কৰা नानग्राह, (यक्तन उपावण (प्रचारमाहरू, मीहजाजीप রকিন্বয়েতো তাহা নাই-ই, অপিতু রাজ্ঞালক--অভএই ভদ্র জাতীয়—নগরপালও ভাদৃশ চরিত্রবলগন্দার বলিয়া বোধ হটল মা। বাজভালকের বিভার পরিছয় প্রাকৃত ভাষা ব্যবহারেই বুঝা গিয়াছে; ভগিনীর থাতিরে চাকুরি জুটিয়াছে। আশ্চর্যোর বিষয় এখনও পুলিশ বিভাগের চাকরি এইরপ থাতির অনুরোধেই কুটে : উচ্চপদস্থ भिक्तियामापत (कान-भिल याता अन विकार काक्दि করিবার যোগ্যতা অর্জন করে নাই, ভারাই প্রারশঃ অপারিটেওেট অব পুলিস্ ইয়া গাকে। বেমন এখন, ভেমন তখনও যে পুলিশ বিভাগে এক্সপ ভার-श्रकात (मधा यात्र काहांत्र भाष्ठ कात्रण এই वि श्रीकृत्यत्र লোককে চোর বদমাইশ্প্রভৃতি নিয়া কারবার করিছে হয় : দুচ্হতে এ সকলকে শাসনে রাখিতে হয় অবচ এক ক্ষমতা পাইয়াও আত্মসংখ্য করিবার নিমিতে বভট্ট निकामीकात প্রয়োজন অনেক ছলেই ভাষার অভার थाक। लाहे उरकाह शहरा मण्यान हेलाबिट वरने कहे पामक वरेता भारत। तथी वर्षाय भारता वर्षाया কাজেতো বিভাবুদ্ধি অপেকা গায়ের জোরই অধিকভার थारप्राक्त । এ अवस्थि এ अपराम अप का कियार প্রত্যাদা করা যায় গ

#### ভাগাড়ে নবর।

পেদিন একপানি বাজগা পুত্তক দেখিলাখ—লেখাটি বৈশ। বিষয়ও নীতিধগুম্লক। পাঠ করিলে উপকার ইইবারই কথা। তারপর 'ইনার টাইটেল পেক্ ধানিতে দেখা গেব ভূই দিকে ভূটুকরা কাধ্যের বেটেক 

#### ्रशिश्यक्रकत मृत्या ।

পুরুক পাঠ্য করিবার সময়ে ছাত্রহিত্তবীরা ফ্ল্যের বাক্তিও দৃত্তি রাখেন, এটা বাঞ্চনীয় এবং কোনও কোনও কোনও ছব্দে স্থলতার বিকেও কর্তৃপকীর্য়র নজর রাখার কথা ক্রিয়াছি। কিন্তু বিশ্ববিদ্যালয়ের কোন কোন পাঠ্য ক্রেয়ের মুল্য দেখিলে বোধ হন্ত কর্তারা ছাত্রখের বিত ক্রেয়েলা গ্রহকর্ত্বিশেশ্বর উপনার নাধনই খেন কর্ত্বা ক্রেয়েলা গ্রহকর্ত্বিশেশ্বর উপনার নাধনই খেন কর্ত্বা ক্রেয়েলা গ্রহকর্ত্বিশ্বের উপনার নাধনই খেন কর্ত্বা ক্রেয়েলা গ্রহ বিশ্ববিদ্যালয়ের গরীকার্ত্তির বেশ বাধার আছে ক্রেয়েলারের পাঠ্যে চক্চকে মলাটের আবশ্যক হইবে।

#### माभिरक ७६ भव।

্বীত্তকের ভাষ মাদিক পরগুলিতে প্রবন্ধ হচি থাকে কিছ তারি পত্র থাকে না। আমার বোধ হয় মাদিক— কুমাদিক—বৈমাদিক প্রভৃতি যে দকল পত্রিকা গ্রাহকগণ বিশ্ববিদ্যান্তাব্দেন, দেওলির ভ্রম্পিত্র থাকা একান্ত আবশ্যক।

 বিশবিভালয়ের ক্ষতাশালী ব্যক্তিগণ বে কতর্ব ক্লিকিটভনী, পরীকাগুলির ফিস্ বৃদ্ধিতেই ভাহা বৃঝা বিহাৰে।

'সাহিত্য পরিবং পত্রিকা', 'প্রতিভা' প্রভৃতি করেকবানি ভিন্ন আর কোনও পত্রিকার অব্যক্ষণণ প্রবন্ধ লেখাক্ষর নিকটে প্রফ পাঠান মা । আছে সাহিত্য ভারতবর্ষ প্রধাসী প্ৰত্তি ছ'চাৰিখানি উচ্চাঞ্চের পত্ৰিকা ভিন্ন অপন্ন পত্রিকার পরিচালকগণ ভাল কবিয়া প্রাকট লেখেন আ দেখা যায়, পত্তিকার সম্পাদক একজন উচ্চলিকিত কক্ষি -रेश्ट्रवी ७ वनजारात्र छमा मान्द्रात कृती-क्यांनि তৎসম্পর্কিত পত্রিকায় বিশুর ভূপ থাকিয়া সেল। কোনও বিশিষ্ট সংস্কৃতক্ত পণ্ডিত বে পঞ্জিকার অধ্যক্ষ ভাষাতে দেখা গেল সাৰাভ সংস্কৃত প্লোকে লক্ষাজনক ভুলসহ প্ৰবন্ধ ছাপান বইয়াছে। পত্রিকা সম্পাদন কার্যা স্কুচরাং সকল श्रुत विरमेर मान्वारन कता हरू ना-जाहे जून खान्ति कह থাকিয়া যায়। একল লেকদৰ্শণও যে অনেকটা কাং দায়ী, অনেকেক হাতের দেবাও ফে ক্লাষ্ট—ভাহাও बीकार्गा। उपक्रि मण्याक्क महावस्त्रक यह कविहन हानात छन व्यत्किको मःत्नादन कतिका निरुष भारतन । त याता रुके जन आकि शंकितनरे-विरमक्कः बकःयानव (नवकापत अवाक-(कनमा कनिकाणात (मधकरान यहर व्यक् (मधाह यूविका इन्हरू) व्यक्ति इति देखा कतित भारत भारतम। अल्बर एकि गाउद थार्ग पाक्ति थारक रमस्कर्म श्रीप काराबद छन ভাবিত্তनি প্রিকাধ্যকরণের নিক্টে লিবিয়া পাঠাইতে প, বিভেন। পত্তিকা বাঁধাইবার সময়ে হুচিপত্তের मान के एकिनवाल मार्जाक्य दहेंगा। देशांटक अविका পরিচালকগণের কিঞিৎ বারাধিকা হয় সক্ষেত্র মাই, कत्र विषय् कि श्रास्त्रीय वहके. अवर छण्टर्व वर्षवात्र अ अम्बीकात कर्खवा यहन कति।

A

क्षा विश्वाविद्यान्त्र ।

#### গ্ৰন্থ সমালোচনা

३। **পরিপান। উপভাদ, ध**রুদাস চট্টোপাণ্যায় এও সন্প্রাশিত আট্নানা সংস্রণের অইতিংশ গ্রহ। **एतम मूनम् (क्रा** (बांड्नारिनिङ, ১৫৯ পृक्षी, मूना ॥•। हां पा कांशव, वांधार (वण । शियुक्त अस्मान नतकात এম, এ, প্রণীত। মৃত্যুর কথা শইয়া পুত্তক থানির রামপ্রদা মিত্র, নেটভ খুটান, ছোট আদালতের জন। দীর্ঘকাল রোগভোগ করিয়া তিনি মারা গিয়াছেন। জল, মুন্সেফ ও উকীল মহলে তাহা महेशा चालाहना बहेएछछ, छाहात छिरताशान कक. মুন্সেফদের কাহার কিরূপ পদোন্নতির সম্ভাবনা,-ইত্যাদি ইত্যাদি। সবজ্জ মনোহর বাবু রামপ্রসন্ন বাবুর আবাল্য স্থক্দ। বিভীয় মুস্ফেফ রমণ বাবুও কার্য্যক্ষেত্রে রামপ্রদন্ন বাবুর সহিত স্থ্যতা হত্তে আবদ্ধ। উভরে রামপ্রসন্ন বাবুর শোক শন্তপ্ত পরিবারের সহিত সহাত্ত্তি প্রকাশ করিতে গেলেন। বন্ধর এই অকলাৎ তিরোধানে তাহাদের দৈনন্দিন জীবন যাত্রা যেন কোনরপে ব্যাহত না হয়, এমন কি সাদ্ধ্য তাস খেলাটাও যাহাতে একদিনের জক্তও মাটি না হয় সেই বিষয়ে উভয়ের সতর্কতার বর্ণনা উপভোগ্য। সম্ম বিধবা স্ত্রীর এবং সদ্য পিতৃহীন পুত্র ও কন্যার বাহ্য শোক প্রকাশ ও অন্তরের বিরক্তিও কম উপভোগ্য নহে।

ভাষার পরে রামপ্রনাম বাব্র কর্ম জীবনের ইতিহাস

শারদ্ধ ইইয়াছে। তাঁহার কোটশিপাগ্লক বিবাহ,
বিবাহের পর ছইবৎসর মাইতে না মাইতেই লাপ্রতা

শীবনের সমস্ত স্থ শান্তির অন্তর্গনি, শান্তির আশায়
রামপ্রশন্ধ বাবুর সরকারী চাকরীর কর্ত্তবাবলীকে
দৃদ্ধপে আকড়িয়া ধরা, ইত্যাদি ইত্যাদি। অনেক দ্র
পর্যান্ত পড়িতে পড়িতে পাঠকের প্রাণ হাঁপাইয়া উঠে।
কি উদ্দেশ্যে যে গ্রন্থকার এই সব রাবিশের উপর দিয়া

भार्करक (देहजादेश गरेश) हिनम्राह्य छादा हुना नाम ब्देश एटिं। किंक यथन ब्देट्ड ब्राम्थनव स्थेत् इवाद्यांक्र वार्षिए बाकार बरेश मधानक बम अत्र वर प्रभाव প্রাপ্ত অপরাধীর মত মৃত্যুর অপেকা করিছে গাছেকু **७**थन रहेएउँहे भूखक **ए**शकत क्रियाकर्सक हुईहा দাড়াইয়াছে। রোগের সহিত তাঁহার যুদ্ধ ; কুত্রিম শাচার वावशास्त्रक कवनीकृष्ठ माभाविक बीरवर निर्वत व সমাজের বাজিবর্গের হাতে সহজ রক্ষমের উৎপ্রীতুর পরিজনবর্গের স্বার্থনর্পক মূলয়হীন ব্যবহার; আজীবন্ধ তথাক্থিত কর্তব্যপালনের শাস্তিপ্রদানে ব্যর্বতা; সভাপথের নিদ্দেশ অসুসন্ধান; গ্রামান্তর্য হারাধনের সহিত সভাসমাৰের কণ্ট সরলভার মর্থবিদারক পার্থকা ইত্যান্তি প্রত্যান্ত ব্যবহারের নিপুণতার সহিত দেখান হইয়াছে। গুরুদায় রাইয় ভাৰাটি হুৰ্ভাগ্যক্ৰমে তেমন সতেৰ, সহৰ, অৱাধিত-প্রবাহ নহে। কিন্তু তাহা সত্ত্বেও বর্ণনা কুশল্ভার মঞ্জন্ম বিশেষ ক্ষুত্র হয় নাই। পুত্তকের শেষাংশ পড়িতে পঞ্জিতে আমাদের কেবলি ক্লম ঔপঞাসিক ভটভেম্বিল্ল অপুৰ্ব কলাকুশল রচনাগুলি মনে পডিয়াছে। আর একটি कथा यत दहेशांह, खद्रनान वांतू क्या कवित्वत, मा वित्रा शाविनाम ना। दक्विन मत्न ब्रेशाइ, ब्रिशानि रयन विरम्भी छात्र। इट्रेट अनुमिछ दा विरम्भी पुष्क व्यवस्थान (सथा \*। व्यवश्र लागात न्युला न्युक्ते। करे शांत्रभात क्रम माग्री। अञ्चलानि यनि अक्रमान तात्व राष्ट्र নিক্ষ হইয়া থাকে তবে ভবিশ্বতে গুরুদান বাবুর নিক্ট হইতে থুব ভাল জিনিষ পাইব বলিয়া আৰা রাইবা 🛒

এই স্থালোচনা লেখা হওয়ার পরে প্রতিষ্ঠা

সম্পাদকের নিকট অবগত হইলাম যে ওকদান বাবু পত্রমোগে ভাহাকে জানাইয়াছেন যে পুস্তক্থানি ক্রম
উপভাগিক টলস্টয়ের কোন গ্রন্থাবলম্বনে নিধিত। এই

বিৰাতী প্ৰকের সার একটি স্কুল এই প্রথে বিজ্ঞান । বিহাতে জীবনের গুরুতর সমস্তার বিচার জীবে,—অভ্যত সম্বভাবেই আছে,—কিন্তু সমাধানের কোন তেটা মাই। গ্রন্থবাবে সমাধানের যে আভাস আছে ভাষা একেবারেই যথেষ্ট নহে।

একারপাশিক।

ং। ব্যক্তির উক্তি। প্রীবৃক্তা ইনিরা দেবী চৌৰুরাণী প্রণীত। আকার ৫ ২ × ৪ ই ইঞি, আর্ট পেগারে হৃদ্ধতিত, ও উত্তম বাধাই। ১৫৪ পূর্চা, মূল্য ১ । শ্রীষ্ক্ত প্রমণ চৌধুরী, এম, এ, বার, এট্-ল কর্তৃক প্রকাশিত।

া সাতটি প্রবন্ধের সমষ্টি। প্রবন্ধগুলি মাসিক পরিকাতে वारित्र रहेश्राहिन वनित्रा मत्न इत्र ; जबन পড़ित्राहि किमा मरम পড़िতেছে ना। এখন সমাপোচনার জন্ম अक्रांत धनः धनक धनित धन (श्रीतर्य मूक इहेग्रा একাৰিবার সাগ্রহে পড়িয়া মনে হইতেছে যে পুর্বেনা শীদ্বি থাকিলে ভাল করি নাই। আমাদের মানিক প্রায়গুলি এক পাঁচ মিশালি ব্যাপার। তাহাদের শাচ রক্ষের পাঁচটা প্রবন্ধ এক নিবাদে পড়িয়া উঠিয়া, नद्भ दिनानग्रीय कथारे मत्म बाटक ना,--यनि ना क्षीरात्मत्र मत्या वित्मयं कामठी मत्मत्र छेलत त्यम अकर् পভীর ছাপ রাধিরা যাইতে সমর্থ হয়। निक्ति पाकि छात धेह क्षेत्र खनित क्या गत्न थाक। উচিত ছিল, কারণ এই রচনা গুলিতে, এক অনুদিত এটা 🐞 রোমছাড়া আর সমগুগুলির মধ্যেই এমন কিছু প্রায় বাহা মনের উপর দাপ বদার।

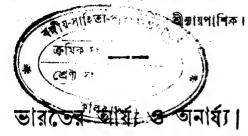
আৰকাৰ এই শ্ৰেণীর রচনা একটু ত্ব'ভ হইয়া উটিয়াছে। আৰক্ষী কেহ লিখেন ভাষাতত্ত্ব, কেহ বা জাতিতব, কের প্রয়ন্ত কের প্রয়ুই তব ;—কিন্ত সতোর ব্দয়প্রাহী প্রকাশে কন্মন দিলের মনের কথা ওলিকে এই তাবে আনকাল আর ক্লাহাকেও ওছাইরা বলিতে দেবি না। রবীজনাধের গত প্রবন্ধগুলির মত সমৃত মা হটলেও তাহাদের উক্তগুণটি এই প্রবন্ধগুলিতে প্রচুর আতে।

মেঘ বর্গণের সহিত এই শ্রেণীর রচমাণ্ডলি উপাসিত হইতে পারে। হলরে আবেগ সঞ্চিত হইল, মনের আকাশে কতকণ্ডলি সরস কথা ঘনাইয়া আসিল, বর্বণ আরম্ভ হইল, মধ্যে মধ্যে বিহাৎ চমকিতে লাগিল। এইরপ বিহাৎ চমকানের ঘন ঘন সম্ভাবী আক্ষিক উজ্জ্বতা মেঘ্বর্শনের, তথা রচনার মনোমদ অলম্ভার। আধুনিককালের কলে প্রস্তুত সাহিত্যে তাহা হুর্লভ দর্শন হইতেতে।

প্রবন্ধ গুলির মধ্যে মধ্যে বীরবলিয়ানা দেবিয়া হঠাৎ এই গুলি বীরবলের রচনা বলিয়া ত্রম হয়। কিন্তু পরকণেই সেহকোমল মকলকামনা পূর্ণ কণ্ঠ গুনিতে পাইয়া নিজের ভূল বুলিতে পারা যায়। বীরবলের কথায় বিদ্রোহ জাগে কিন্তু এই নারীর উক্তিতে মতভেদ সত্তেও বিদ্রোহের অবকাশ নাই। কারণ ইহাঁকে জনাজীয়া বলিয়া মনে করিয়া লওয়া কঠিন। আমরা এই নারীর উক্তি মাধা নোয়াইয়া গুনিয়াছি, গুনিয়া আনন্দ পাইয়াছি এত পাইরাছি যে শীঘ্র এইরূপ পাই নাই।

গুণের আদর থাকিলে এই গ্রন্থ বিশ্ববিদ্যালয়ের, বিশেষতঃ ছাত্রীদিগের পাঠ্য রূপে দেখিতে পাইব বলিয়া আশা করিতে পারি। বর্তমান স্ত্রীশিক্ষা বিচার, সম্বন্ধ, আদর্শ ও ভদ্রতা,—এই চারিটি এই গ্রন্থের শ্রেষ্ঠ প্রবন্ধ। পড়িয়া ্থে কেহ আনন্দ পাইবেন। শিকিতা নারী, বিশেষতঃ কিশোরীগণের অবগু পাঠ্য।

ক্ষা কাৰিবার আগেই আমি যে ইং) অনুমান করিতে শ্রিয়াছিলাম এই জন্ম আনন্দ হইতেছে। ভায়-পাশিক। ০। স্মতিকা। ছোই বিতার স্মন্ত। প্রীক্ষতীজনাথ ঠাকুর প্রণীত। আকার ১২ × ৪২ ইঞি। সাধারণ রক্ষের ছাপা কাগজ ও বাধাই। ১১২ পূঠা মূল্য ৮/০। সক্ষাভিসারী, মৃত্, তুই একছানে হ্রদয়গ্রাহী। কিন্তু ভাব, ভাষা ও ছক অধিকাংশ স্থানেই বিশেষত্তীন।



চতুর্থ প্রস্তাব,—ভারতীয় মত, প্রথম অংশ।

চতুর্থ প্রস্তাব আরম্ভ করিবার পূর্ব্ধে তৃতীয় প্রস্তাবের ( "প্রতিভার" গত চৈরেদংখ্যা ) অস্তর্গত ৪৮৮ পৃষ্ঠার দিতীয় স্বন্ধের একটী মুদ্রাকর প্রমাদের সংশোধন করিতেছি । ঐ শুদ্রের উপর হইতে তৃতীয় পংক্তিতে "আর্য" শন্দের অর্থ মহাকৃষ, কুলীন, সভ্য, সজ্জন ও সাধু বাক্যটি মুদ্রিত হইয়াছে কিন্তু প্রথমেই "আর্য" স্থলে "অর্থ" ছাপা হইয়াছে । বিজ্ঞ পাঠকগণ অবগ্য এই ভূল বুঝিয়া ভাহার সংশোধন করিয়াছেন; তথাপি, আমার কর্ত্ব্য বোধে ইহার উল্লেখ করিতে হইল। কারণ, ম্যাকসমূলার প্রমুপ পণ্ডিতগণ "আর্য"কে "অর্থ" ভারিয়া, "মহাকৃল প্রস্তুত্ব সক্ষর"কে "চার্য" করিয়াছেন।

ষাহা হউক, গত প্রভাবে আমরা দেখিরাছি যে মুরোপীর পণ্ডিতগ্রণ "আর্থ" শব্দের Aryan অন্থবাদের ছারা "পৃথিবীর এক বিশেষ ভাষাভাষী জাতিবৃাহ" এবং "এক বিশেষ মানব জাতি"—এই উভয়বিধ অর্থ ই ব্যিরাছেন। সংস্কৃত, পারগীক, গ্রীক এবং লাতিন এই কন্ধটি মূল ভাষা এবং উহাদের হইতে উভ্ত বহুতর শাখা ভাষার যে সকল মানব জাতি কথাবার্তা কহিয়া থাকেন, তাঁহাদিগকে মুরোপীর পণ্ডিতবর্গের মধ্যে অনেকেই "ক্মার্থ" ক্লাভি বলিয়া থাকেন; জারাব খেডকার, দীর্ঘ

খোগ, দীর্ঘকরোটিক, শাহ্রবন্তন, উচ্চদের মানবন্ধাতি বিশেষকেও তাঁহাদের অনেকে "আর্থলাতি' বিদান্ন থাকেন। তাঁহাদের আর একটি বিশান বলবৎ আছে ধে, যে দেশে এই জাতির আদিম বাসন্থান ছিল, দেই দেশের সকল অধিবাসীই এই জাতির অন্তর্গত ছিল। আর্থলান্তির আদম বাসন্থানে যে সে কালে কোন আর্থেতর জাতি বান করিত, একথা তাঁহারা স্বীকার করেন না। এইরপ ভাবেই তাঁহারা আর্থ, দেনিটিক ও তুরানীয়, ইত্যাদ্ধি লাতির বিভাগ দ্বির করিয়াছেন।

ভারতীয় মতে "আর্য" শব্দে কাহাদিগকে বুঝাইড, তাহাই আমাদের প্রতিপাত বিষয়। প্রথম প্রস্তাবে "ভারতবর্ধর" এবং বিভীয় প্রভাবে "আর্থাবর্জের" ভৌগোলিক পুরাতন সংস্থান আমরা যথাসাধ্য নির্দেশ করিয়াছি। "ভারতবর্ধ" সেকালে যে কতবড় এক মহাদেশকে বুঝাইত, ভাহার উল্লেখ করিয়াছি এবং "আর্থাবর্জ" শব্দেও যে অতি বিস্তৃত এক দেশকে বুঝাইত ভাহারও আভাস আমরা দিয়াছি। একণে এই বিস্তৃত "আর্থাবর্জ" এবং বিস্তৃতত্ত্ব "ভারতবর্ধে" সে কালে 'আর্থ' শব্দে কাহাদিগকে বুঝাইত, একণে ভাহা বুঝিবার জন্ত চেষ্টা করিতেছি।

প্রাচীন ভারতবর্ষের প্রাচীন সুগে মে ভাষা সভ্যা সজনগণ ব্যবহার করিতেন, তাহারই আধুনিক নাম বৈধিক ভাষা এবং সে কালে ঐ ভাষার মে সকল অপজ্ঞা, ভাষার প্রচলন ছিল, তাহাদের একটিই এক্ষণে "কেক্ষ" ভাষা বলিয়া পরিচিত হইয়াছে। বৈধিক বুগে কেন্দ্র ভাষাকে মেছে-ভাষা এবং ঐ ভাষা ভাষীকে মেছে এবং অস্থ্র বলিত এরপ অসুমান করিবার কারণ স্লাছে। আমরা প্রথমে ইহার একটু প্রমাণ দিবার চেটা করিতেছি।

ুপাণিনি ব্যাকরণের "মহাতাক্তের" ভূমিকার ম্বর্থি প্রঞ্জলি ব্যাকরণ শাস্তাধ্যরনের জ্ঞাবস্থকতা বুরাইতে গিয়া বলিতেছেন,— ত হত্তরাঃ। তে হত্তরা হেলয়ে। হেলয়ে। ইতি কুর্বন্তঃ পরাবভুবুঃ।" তত্মাদ্ আক্ষণেন ন মেচিতে বৈ নাপ ভাষিত বৈ। মেচেছা হ বা ক্রম যদপশকঃ। মেচছা মা ভূমেত্যধ্যেয়ং ব্যাকরণমাতে হত্তরাঃ॥" \*

ইহার নার্য:—তাহারা অনুর। সেই অনুরেরা হে
বাদ্য বাদ্য (অনুয়: শক্ত স্থলে) এইরপ বলিতে বলিতে
পরাব্দর প্রাপ্ত হইয়াছিল। গেই জন্ম নার্মণের পক্ষে
ক্রেইটানা বাধনা অপভাষা প্রয়োগ করা উচিত নহে।
বাহা অপশন অথবা অভন শন তাহাকে মেল্ছ ভাষা এবং
বাহারা উক্ত মেন্ড ভাষার ব্যবহার করে তাহাদিগকে
ক্রেইবানের বাহাতে আমরা মেল্ছ ইয়া না যাই, গেই
বাহ্য বাহার অধ্যান করিতে হয়। যাহারা মেন্ডভাষী,
ভাইারা অনুর।

মহাতারতের আদিপর্কে জতুগৃহ পর্কাণার আরম্ভ হইবার স্বরে যখন মুবিটিরাদি পঞ্জাতা মাতা কুন্তীর সহিত পুর্বোধনের ভলনার বারণাবত যাইতেছিলেন, সেই সমরে মহামতি বিহুর অক্টের অবোধ্য মেচ্ছ ভাষার মুবিটিরাদির প্রাণরকার জন্ম কতকগুলি অতি মূল্যবান উপদেশ দিয়াছিলেন । ভগবান বেদব্যাস অব্দ্র সেই সক্ষে উপদেশ সংস্কৃত ভাষার অস্থ্যাদ করিয়াই লিপিবদ্ধ করিয়াইছেন; ভ্রাপি, তাহার সেই সংস্কৃত ভাষার লোক হেলাক্ষি কৃত হইয়াছে। মহাভারতের টাকাকার করিয়ারেণ পতিত নীলকণ্ঠ প্র লোকের টাকাম্বে মুক্ত ভাষার বিলয়াছেন, ভাষা মহাভারতের উল্লেখ্য ক্ষিত্র বিলয় বিলয়াছেন, ভাষা মহাভারত্র উদ্ধানেরই মত; ভবে তিনি আরগু চুইটি বৈদিক ক্ষিত্র করিয়াছেন। প্রভাবের বাহল্য ভবে প্র

প্রমাণ এই স্থলে উদ্ধার করিলাম না। ফগতঃ তৎকালে প্রচলিত ভাষার অপ প্রয়োগকেই যে "মেছে ভাষা" বলিন্ত, এবং মেছেভাষা ভাষিগণের সংস্থানার বিশেষকে অসুর্ব বলিত ভাষা নীলকণ্ঠও বলিয়াছেন। আমাদের তৃতীর প্রভাবের ৪৮৬ পৃষ্ঠার দিতীয় স্থন্তে আমরা দেখিয়াছি যে সংস্কৃত ভাষার ''আর্য" শব্দ জেন্দ ভাষায় "এর্য" এবং প্রাচীন পারদীক ভাষায় "আরিয়া" রূপে ব্যবহৃত হইত। "মেছে" নামক প্রস্তাবে আমরা এই বিষয়ের বিভৃত্তর ভাবে আলোচনা করিয়াছি স্কৃতরাং এখানে আর অধিক লিখিবার আবশুক্তা নাই।

অগ্নিদেবের উপাদক বর্তমান বোম্বাই ও গুজরাত প্রভৃতি প্রদেশ-প্রবাসী পারসীক জাতির ধর্মগ্রন্থ ''আবেস্থার'' ভাৰা যাঁহারা বৈদিক ভাষার পহিত মিলাইয়া পাঠ করিবার স্থাবিধা পাইয়াছেন, তাঁহারা উভয় ভাষার মধ্যে ঐক্য দেখিবা স্থির করিয়াছেন যে অতি পূর্বকালে এই हुइँडि ভाষা অভিশয় चनिष्ठे मचस्त्र मचक्क हिल এবং এই উভয় ভাষার ব্যবহারকারী বৈদিক আর্ম এবং প্রাচীণ পার্দীক জাতিও পরম্পর অতি নিকট জ্ঞাতিও বন্ধনে বদ ছিলেন। এদেশে বৈদিক গাছিত্যেরই রীতিমত অধ্যাপনা অধ্যয়ন একপ্রকার উঠিয়া গিয়াছে, কেন, পজেৰী এবং প্রাচীন পারসাক প্রভৃতি ভাষার ত কথাই নাই। रेविषक माहि छात छेख्यदान चक्र्मीनत्तत्र महिछ (कन्द्र, পজাবী এবং পারদীক ভাষার অধ্যয়ন ও অধ্যাপনার নিষিত্ত দেশে একটি বিশেষসহায় সম্পদশালিনী সমিতির প্রতিষ্ঠা হইলে তবে আমাদের দেশের প্রাচীন সভ্যতার ইতিহাস সঙ্কন করিবার উপায় হইতে গারে । ভতুপরি, त्यत्मात्मात्वेशिया व्यथवा लाहीम काम्हिया, अमितिया, वार्तिलानिया अवश्मिमात्रत माथा त्य मकन छेलालान এ পর্যান্ত আবিষ্কৃত হইয়াছে, ভাবতীয় বিশাল সভ্যভার निक हरेए के मकन छेशानान वावहात कतिए शातिरन **छ** त्वे आयात्मत आमा नक्ष्म घेटेल भारत । आमात धृष्टेका (व, चक्रमिनीय श्राहीन व्यवना नवीन कावाद कवा

 <sup>&</sup>quot;বাকেরণ-বহাতাবা" বোদাই গতর্থনেও সংক্রেল,
 প্রথম ভাগ হিতীয় পৃঠা।

<sup>ो</sup> चानिभूक, ১১৪ चयात्र।

মুরে থাকুক, খদেশের বৈদিক সাহিত্য কেত্রে প্রবেশ দরিবার বোগ্যতাও আমার নাই, অথচ আমি মহাভারতের মহা সভ্যতার ইতিহাসের প্রথম তত্ত্ব "আর্থ্য" সমস্তে অমুশীলন করিবার জন্ত অপ্রসর হইয়াছি। আমার মত বিচার-বিমৃদ্ সাহসিককে লক্ষ্য করিয়াই কবি শিরোমণি কালিদার বিলয়াছিলেন,—

" বিষ্ণু করমে প্রয়াস ধাহার— সেজন নিশ্চয় লভে অপ্যান।" •

যাউক সে আকেপ। যাহা নাই, হইবার আশাও नारे, जारात्र क्र इः क कतिया कि रहेरत ? रेविक সাহিত্যে আমাদের মত লোকের প্রবেশ করিতে যাওয়া এক মহা বিভন্নার বিষয়। নিরুক্তকার যাত্তঋষি প্রথমেই बिलाएड इन रा दिरामत मक्तामित राभिक व्यर्व हे शहन করিতে হইবে; স্থতরাং ভাষাকার অথবা চীকাকার-দিগের স্বার্থ উদ্দেশ্য, এবং ব্যাকরণ শাস্ত্রে পাণ্ডিত্যের গভীরতার অমুপাতে বেদবাকোর নানা প্রকার অর্বভেদ हरेगारह। ''रेख" भर्म अकलन बनिराठाहन जनाम-খ্যাত ''দেৰবাদ'', অত্যে বলিতেছেন ''বৰ্ষণকারী আকাশ" ;-- "অখ" শকে একজন বলিতেছেন "বিখ্যাত প্তবিশেষ" অঞ্চে বলিতেছেন —"রাষ্ট্র" পুতরাং প্রত্যেক বেদমন্ত্রের আদিভৌতিক, আদিদৈবিক এবং আধ্যাত্মিক এই ত্রিবিধ অর্থ ত আছেই, আবার তহুপরি অবৈতবাদী, विनिष्टादिकवाली, देवजवाली अमन कि नित्रीयंत-वाली প্রাপ্ত আপন আপন মতের অহুকুল অর্থ করিয়াছেন। পুনরপি যুরোপীয় পণ্ডিছের পাণ্ডিত্যের প্রবল প্রতাপে বেদ নিতান্ত নিরকর গ্রাম্য চাধার মুখনিঃস্ত জড় বপ্তর ষ্ঠিবাদে পরিণত হইয়াছে। এরূপ ক্ষেত্রে আমার মত অজ লোকের পক্ষে বেদ-বিবাদে অগ্রসর না হওয়াই

কর্তব্য; এবং খামি ভাষাই করিয়াছি। বর্তমান প্রস্তাবসংক্রনে পারতপক্ষে খামি বেদের সংহিতা ভাগের প্রমাণ খণাহার করি মাই।

অথচ আমি 'ভারতীয় মতের" 'পরিচয় দিবার প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, "প্রাচীন ভারতীয় মত" বলিতে देविषिक मलरके वृकाहेशा बाहक अवर रक्षे बाहीन ভারতে সর্বাপেকা মৃল্যবান্ প্রমাণ বলিয়া পণ্য হইয়াছে। (यम चार्भोक्रस्य चर्थाए ब्राक्षत्र निकृष्ठे दहेरू धाष সুতরাং মতঃ প্রমাণ বলিয়া আর্য্য ধবিগণের সংক্ষাক্ষে পুজিত হইয়াছে। এরপ অবস্থায়, বেদকে পরিত্যাপ कतिरान, आमारिया कथात मृत्रा कि ? अदे अर्थत उष्टर् व्यामता विवाद संस्थित (य चार्क भूतान । हेडिशानः শাস্ত্রকে বেদের অসুবন্ধ মাত্র বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন, আমরা সেই প্রমাণ অবলম্বন করিয়াছি। স্বতিশাস্ত্র-সমূহের মধ্যে মন্থুসংহিতার আদন সংক্রিত এবং মহাভারত "ইতিহাস" পদবাচ্য। মমুসংহিতার দিবিও 🗷 र्देशां हि त्य मयू महाद्वां मर्त्र अवर मर्त्र विदासम आ মহবি বেদব্যাস মহেতিহাস মহাভারতের আরম্ভ রুপেই বলিয়াছেন,—

"ইতিহাস এবং পুরাণ-শাস্ত্রছার। বেদ-যাক্ষ্যের পৃষ্টি সাধন করিতে হয় এবং বেদ অম্বিজ্ঞানগণের নিক্ট ভীত হন বে পাছে উহারা তাঁহাকে প্রহার করে।" •

ত্মতরাং যে স্থৃতি পুরাণ এবং ইতিহাস গ্রহাবলীর উপাদেরতা আমাদের দেশের সকল পঞ্জিতহাই সীকার

গ্রহকার কৃত অনুবাদ। মৃল্টি এই
 ক্রেবা নক্ষাং পরিভবপদং নিক্লারস্ক মৃত্যাং ॥৫৪॥''
প্র্বিমেশ। মেখল্ড।

 <sup>&</sup>quot;যঃ কশ্চিং কশ্যুচিদ্ধমে। মহুনা পরিকীর্তিতঃ।
 স সর্বোহতিহিতো বেদে সর্বজ্ঞানময়োহি সঃ॥१.।
 মনুসংহিতা বিতীয় অব্যায়।

<sup>&#</sup>x27;'ইতিহাস পুরাণাত্যাং বেদং সমুপরং হয়েৎ ॥২৬৭॥ বিভেত্যক্সতাবেদো মাময়ং প্রহরিষ্ঠি ।২৬৯॥\* প্রথম অধ্যায়, আদিপর্বা, মহাভারত বি

ক্রিয়া আরিয়াছেন, আম্র। তাহাদিগকেই আল্রয় ক্রেয়াছি।

পাণিনি মুনির মতে "ৰ হলোণ্যৎ।। ০। ১। ১২৪।।"
ইত্তাহ্বসারে? ''ৰা" ধাতুর উত্তর "ণ্যং" প্রত্যয় করিয়।
শ্বাধ্যঃ" পদ নিপায় হইয়া থাকে; আর ''ঝ" ধাতুর
কর্মাণ্যতি"—যথা 'ঝ ফ গতো"। এই বা ধাতু হ্বাদি
ক্রীয়া ব্যাকরণে ভাদিগণীক আর একটি বা ধাতু
আহে, ভাহার ''অর্থ প্রাপণে'', এবং উহার উত্তর ''যং"
শ্বাধিনি ৩। ১। ১০০। কিন্তু সংক্রিপ্ত সারের মতে
ক্রিং" ক্রম্বপাদ । ২০৫।) প্রত্যয় করিয়া 'অর্থং'' পদ
ইইয়া বাকে। হেম্চজ্র ক্রত "অভিধান চিন্তামণি"র মতে
শ্বাধৃত্বিশ্প্রাণা বৈশ্যা উরোব্যা উরুজা বিশঃ।''

"মহাকুল কুলীনার্যঃ সভ্যসজ্জনসাধবঃ॥"

শবং অবংরর মতে "অর্যাঃ আলিতি আছো?"

শবং—" এহালুকলকুলী লার্যাঃ সভ্যসভ্জন আরার্থ বারঃ" পাওয়া যায়। সুতরাং লৌকিক সংস্কৃত আরার্থ "আর্থা" পান্ধর হারা "মহাকুলপ্রস্কত", "কুলীন", "স্কৃতা", "সক্জন", এবং "সাধ্" এই সকল অর্থ ই প্রকাশ হারা পাকে। নাটকীয় ভাষার সহোধনে "আর্থা"

শবে অক্লনকে ব্রাইয়া থাকে এবং লী পাত্রের মূপে
শবার্থাক্ত—অক্টত" শব্দে "রামী" এই অর্থ ই
ক্রাব্রিক হইয়া থাকে। "সাহিত্যদর্পন" নামক

শব্দার প্রক্রের ষ্ঠ অধ্যায়ে "আর্থা" সহোধনের

শব্দার প্রক্রের ষ্ঠ অধ্যায়ে "আর্থা" সহোধনের

শব্দার প্রক্রের ষ্ঠ অধ্যায়ে "আর্থা" সহোধনের

শব্দার প্রক্রের ষ্ঠ অধ্যায়ে গ্রাহ্যা বাছে।

শংকত সাহিত্যের ব্যাকরণ ও অভিধানে "আর্য্য' প্রাক্তর সাধারণ অর্থসাত্রই প্রকাশিত হইয়াছে, কিন্তু প্রিশেষ বিশেষ শাস্ত্রে উহার বিশেষ বিশেষ অর্থ ভোতনাও ক্রেক্তে পাওয়া যায়। "আর্য্য' শব্দ বৈদিক সাহিত্যের ক্রেক্টে সংহিত্যন্ত্র অনেকবার দেখিতে পাওয়া গিয়াছে। ভাত্রো উহার্থ অরপ নিয়ের মন্ত্রাই অধ্যাহার ক্রেন্ত্রাইতে পারে, ধ্থা,—

## "বিজানীহ্যার্যায়ে চ দশুবে। ব**হিন্নতে**

রশ্বয়া শাসদ ব্রভান্"

( ৰাধেদ,প্ৰথম মণ্ডল,৫১ হত্ৰ,৮ম মন্ত্ৰ।। "উত্ত শূদ্ৰে উতাৰ্য্যে।"

( অথব, ১৯ কাণ্ড, ২৬ বর্গ।)

উদ্ত বেদমশ্বের প্রথমটিতে ''আর্য্য'' এবং ''দ্মুয়'' এবং দিতীয়টিতে "আর্য্য'' এবং "শৃদ্র'' শব্দ পাওয়া গিয়াছে। এই ''আর্য্য'' ''দ্ম্য'', এবং ''শৃদ্র'' শব্দ কি অর্পে প্রযুক্ত হইয়াছে, তাহা আমরা শ্বতি ও পুরাণাদি শাব্র হইতে বুঝিকে চেষ্টা করিব।

মমুসংহিতা গ্রন্থে "আর্বা", "অনার্য্য" এবং "দম্যা"
শব্দ ব্যবস্থা হইরাছে। দশ্ম অধ্যায়ে মনুক্ত স্মাজের
বর্ণভেদ কণিত হইরাছে। প্রথমেই লিখিত হইরাছে,—

"ব্রাহ্মণ, ক্ষরিয় এবং বৈশ্য এই তিন বর্ণ **ছিলাতি,** চতুর্থ শৃদ্র একজাতি,—পৃঞ্চম কোন বর্ণ নাই।" । চতুর্ব লোকের অন্থবাদ। (দশম অধ্যায়)

"লোক সম্বের বৃদ্ধির নিমিত্ত কৃষ্টিকর্তা নিজ মুখ, বাহু, উরু এবং পদ হইতে যপাক্রমে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্র এবং শুদ্ধক উৎপন্ন করিলেন।" প্রথম অধ্যায়, ৩১ লোকেব্রু অর্থ।

"ব্রাক্ষণ ক্রিয়ো বৈশ রয়েয় বর্গ বিকাতয়ঃ।
 চতুর্ব এক জাতিস্ত শ্রেয় নান্তি তু পঞ্চয়ঃ॥৪॥"

 >৽য় অধ্যায়।

"লোকানাং তুবিরদ্ধার্থং মুধবাছুরূপাদতঃ। আদ্ধাং ক্রিয়ং বৈশ্বং শূদং চ নিরবর্ত্তয়ৎ ॥৩১॥ ১ম অবগায়।

'মুখবাহুরুপজ্জানাং যা লোকে জাতয়ো বহিঃ।
মেচহবাচখার্য্যাচঃ শুর্বে তে দখ্যবঃ স্মৃতাঃ ॥৪৫॥
১০ম অধ্যার।

मून, वाह, छन्न असे नेत हरें ए एडं छिन्न जान एठ कांकि जारह, छाहाता जार्नछान्नाहे बर्गुक जनवा सिक् जानाहे वन्क, नकनरकहे "मन्ना" वर्निर ॥' मनम जहान बह स्नारकन जर्न।

এই তিনাট মহু বাক্য এক এক বিলে দেখিতে পাওয়া বাম বে সেকালে প্রাহ্মণ, কলিয়, বৈশু এবং শ্লু ভিন্ন আর বত জাতি ছিল, সকলকেই "দুলু" বলা হইত। শ্লু "ক্স্লু" গণ্ডো অন্তর্নিবিষ্ট ছিল না, কিন্তু তাহাকে "আর্থ" শ্লীর মধ্যেও ধরা হইত না। মহু মহারাজ বলিতেছেন,—

প্রশ্ন। "ফদি কোন কারণবর্শতঃ ত্রাহ্মণ কোন আনার্যা নারীতে সস্তান উৎপন্ন করেন, অথবা কোন আনার্যা ত্রাহ্মণ কন্যার গর্ভে পুত্র উৎপাদন করেন, এই উভয় প্রকার সন্তানের মধ্যে কে শ্রেষ্ঠ হইবে ?"—৬৬ শ্লেক, দশম অধ্যায়।

উত্তর। "আর্থ পুরুষ হইতে অনার্যা নারীতে উৎপর সন্তান আর্থগুণসম্পন্নই হইবে, কিন্তু আর্থনারীর গর্ভে অনার্য পুরুষ বারা উৎপন্ন সন্তান নিশ্চয়ই অনার্য ইইবে।" ৬৭ শ্লোক, দশম অধ্যায় ।†

উল্লিখিত প্রশোষ্তর হইতে বুঝিতে পার। পেল যে
মহ মহারাজের মতে ধিজ তিন বর্ণ ই "আগ্য" শ্রেণীর
অস্তর্ভুক্ত এবং শ্রু "অনার্য্য" শ্রেণীর অস্তর্ভুক্ত; আবার
এই চারিবর্ণের বাহিরের জাতিগুলি আর্থা-ভাষাই বনুক
অথবা শ্রেক্ছ ভাষাই বলুক, তাহার। "দফ্য" নামধেয়।
এক্ষণে পূর্বের উদ্ধৃত বেদমন্ত্রের "আর্য্য", "শ্রু" এবং
"দফ্য" এই তিনটি শব্দের মহুস্মতিসম্মত অর্থ জানিতে
পারা গেল। আর অশুদ্ধ ভাষার ব্যবহারকারীদিগকে
বেং "শ্রেক্ত" বলা হইত, তাহা পূর্বেই বলা হইরাছে।

† "অনার্যাধ্যাং সমুৎপল্লো আক্ষণাত যুদ্ভেরা।
আক্ষণান্যান্যান্যান্ত শ্রেমখং কোত চেদ্ভবেং॥
৬৬॥
ভাতো নার্যামনার্যামান্যান্যান্ত বেদ্ভবৈং
ভাতোহ্পা নার্যাদার্যায়ামনার্য ইতি নিশ্চয়ঃ॥৬৭॥
১০ম অধ্যায়।

ি । "ব্ৰাদ্ধণোহস্ত মুখমাসীদ্বাস্থ্ৰ রাজস্তঃ কুতঃঃ

উর তদস্য ষদ্বৈশ্যঃ পদ্তাা শৃদ্রো

অজায়ত॥ ১১॥"

অর্থাৎ "ব্রাহ্মণ এই পুরুষের মৃথ হইলেন, বাহ্ময়কে ক্ষত্রিয় করা হইল; তাঁহার উরদ্ধ যাহা, তাহা বৈশু, পদ্ধর হইতে শুদ্র জাত হইল।"

অনেকে বলেন যে এই পুরুষ এবং তাঁহার মুখ
ইত্যাদি রূপকের ভাষায় লিখিত হইয়াছে। একই
সমাজরূপী পুরুষের এই চারিবর্ণ চারি অঙ্গবিশেষ;
গুণ এবং কর্মা ভেদে তাঁহাদের উচ্চ বীচ করা
হইয়াছে মাত্র। যাঁহারা এইরূপ বরেন, বাহারা
মহাভারতীয় প্রীমন্ভগবদ্গী চার ভগবদ্বী কেরিক বিরুষ্ট বির

"আমি গুণ এবং কর্মের বিচার করিয়া ভাষাদের বিভাগাত্মপারে মহুধ্যের মধ্যে চরি ব**ের্ হাট** করিয়াছি।" ♦

"চাতুর্বর্গাং ময়া স্বষ্টং গুণকর্ম বিভাগশঃ।
তদ্যক্তাবম্পি মাং বিদ্ধা কর্তারমব্যয়য়্॥ ১৩॥
চতুর্ব অধ্যায়।

कार्यके इष्टेक, नुक्षाक नमास्त्रत रहे खडाई हान स्वष्ठा इष्टेक मा देकम, मझ महाद्राक छारारक "वार्य" (अनीरठ सर्वमा सरक्षक नाडे विज्ञाहे अवस्य मरन हह। वरत, सर्वकारक विस्तृहमा कता गाडेरत।

শুক্তবে "আর্থ্য" শব্দের ভিতর কে কে বাকিবেন,
ক্রান্তানেশ্ব বাউক। প্রীপ্রমন্থ মহারাদের মত সংক্ষেপতঃ
ক্রিন্তান্ত করিয়াছি। অভিধানের অর্থও দেখিরাছি।
ক্রেন্তান্ত করিয়াছির অভিধানের অর্থও দেখিরাছির
ক্রেন্তান্ত করিয়াছির মতে "আর্থ্য" শক্তের অর্থ
ক্রিন্তান্ত্র"; ভাষ্যকার সায়নের মতে "বিজ্ঞ" "ফলাখ্ক্রিছা", "বিজ্ঞভোতা", "উত্তমর্থ", "ত্রেবর্ণিক",
"বৈদিক কর্মবৃক্ত" ইত্যাদি।

सर महात्रामण "देखवर्गिक" अहे व्यर्व हे कविशास्त्रन।

•		<b>भूक्</b> ष	+	खी	-	
	<b>b</b> n	ব্ৰা <b>স</b> ণ	+	ব্ৰাহ্মণ কন্তা	==i	
eric Garage	۹1	বাশণ	+	ক্তিয় কন্তা	. ===	
*	91	বাৰণ	+	বৈশ্য কথা	=	
	8 1	ত্রান্দণ	+	শুদ্ৰ কথা		
	<b>e</b> }	ক ত্রিয়	+	ক্তিয় ক্যা	==	
eris Programa	41	क्जित्र	+	देवन क्या	7	
	91	ক্ষত্তিয়	+	শুদ্ৰ কথা	=	
* . · · · ·	+1	रेवज	+	বৈশ্য কথা		
	21	বৈশ্ৰ	+	পুদ্ৰ কথা	<b>**</b>	
1	2.	ক্ষত্রিয়	4	বান্ধণ কন্তা	-	
3	15	ু বৈশ্ব	+	বাগণ ক্যা	275	
	5	বৈশ্য	+	ক্তির ক্থা	=	
	$\Delta$	<del>,</del>				

মন্থ্যংহিতার মত এখন একট্ট বিস্তুতরূপে রুবিয়া দেখিতে চাই।

১। ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশু, এই তিন বর্ণ, অর্থাৎ বিলাতি। (৪র্ব লোক, ১০ম অধ্যায়)

२। आर्थ भूक्त बंदेख धनावा नातीरा छिरभन्न मुखान आर्थक्षण मुलाबादे हहेरत । (७१ स्नाक प्रमुख धारान)

৩। আৰ্থ পুক্ৰ ছইতে আৰ্থ। নাৰ্বাতে উৎপন্ন স্থান আৰ্থই হইবে।

এই শেণোক্ত ছুইটি হুৱের মধ্যে প্রথমটি অমুলোম বিবাহমতে জাত মুতরাং শাস্তান্ত্রাে দিত এবং বিতীর্টী অমূলোম প্রতিলোম ছুই প্রকার মিলন হুইতেই উৎপন্ন; তন্মধ্যে প্রতিলোম-মিলনকে শাস্ত্র নিন্দা করিয়াছেন। শাস্ত্রে এইপ্রকার ব্যবস্থা দম্ভ হয়। যথা:—

the district and the first of the same							
<b>শন্ত</b> ান	( সম্ভানের জাতি )।						
ব্ৰাহ্মণ	( সবর্ণা বিবাহ। )	व्य (भाक।					
<b>মু</b> ধাতিবিক্ত	( অহুলোম বিবাহ)						
অম্বন্ধ	(图)	৮ম শোক।					
নিষাদ বা পারশব	( 🔄 )	৮ম খ্লোক।					
ক্ষতিয়	( नवर्ग निवाद )	৫ম শোক।					
মাহিষ্য	(অফুলোম বিবাহ)	,					
উগ্ৰ বা গোপাল	( ঐ )	वय (भाक।					
বৈশ্য	( नन्नी निवार )	৫খ (লাক।					
করণ	( खञ्चलाम विवाह।)						
স্ত	(প্রতিলোম মিলন)	.•					
देनंदमश	(3)						
मागम	(4)	১১শ শোক।					
	( মন্ত্ৰ্যংহিতা,দ	नेम व्यथाति )					

শ্বিকবর্ণের তুল্যান্থ পত্নীক্ষত যোদির।

স্থান্ধনোব্যেন সংভূতা জাত্যা জেয়াল্ড এব তে ॥१॥
ব্যাক্ষনভর জাতান্থ বিজ্ঞের ও পাদিতান স্থতান্।
সদৃশানের তানাহমাত্দোষ বিগহিতান্মতা
ব্যাক্ষণবৈশ্যকন্যাযা মন্ধর্চো নাম জায়তে।
নিবাদ্য শুদ্র কন্যায়াং যঃ পারশ্ব উচ্যতে ॥৮॥

ক্ষাব্রিয়া শুদ্র কন্যায়াং কুরাচার বিহারবান্।

ক্ত শুদ্ৰ পপুষ্ণ গুৰু গুৰু গোনাৰ প্ৰস্থাতে ॥৯॥ ইত্যাদি।
দশন অধ্যায়ে।

"মূর্ণাভিষিক্ত", "মাহিয়", এবং ''করণ" অফুলোম বিবাহ জাত এই তিন নাম সমূসংহিতায় নাই, যাজ্ঞবক্যাদি স্থৃতি শাল্তে আছে। ষাজ্ঞবক্ষাও প্রাশ্রের মতে ''অষষ্ঠের'' নাম ''আছ কি'' ও বলা হইয়াছে। अहे वायम अकार महाद्वाद म्हन्य क्रिक्ट निवाह, मध्य.

केर वा त्मानान अवर नवम करा। अहे जिनवम वार्ष
भूत्व ७ जावी माद्रीत महत्वादम उपत्र अवनिष्ठे
महत्वाहे जार्य भूत्व ७ जारी नात्रीत महत्वादम ( नवर्ष
ज्ञाहाम जनवा अजिताम यिनन हरेएछ) छे९भव।
मह्ममःहिजात मर्छ है दाता मक्रमहे "जार्व"।

এই শুলি ভিন্ন আর এক শ্রেণী "ব্রাত্য দিজ" নামে ক্ষিত হইরাছেন। তাঁহারাও আর্থ নারীর গর্ভে আর্থ পুরুবের দারা উৎপন্ন, কিন্তু ব্ধান্দরে বিক্লোচিত সংস্কারে সংস্কৃত না হওরার "ব্রাত্য" নামে নিন্দিত হইরাছেন। মহ বিবিরাছেন,—

"ব্রাহ্মণ কুমারের পক্ষে বোড়শ বংসর, ক্ষব্রিয় তনয়ের পক্ষে ছাবিংশ বংসর এবং বৈশ্র সম্ভানের পক্ষে চতুর্বিংশ বংসরের মধ্যে উপনয়ন সংস্কার অবশ্র কর্ত্তবা। যদি এই নির্দ্ধারিত কাল অতিবাহিত হইয়া যায় অথচ তাঁহাদের উপনয়ন সংস্কার না হয়, তাহা হইলে তাঁহাদিগকে আর্য বিগ্রিড 'ব্রাড্যা' বলে।" (মনুসংহিতা, বিতীয় অধ্যারের ৩৮৩২ স্লোক।

"ৰিজাতিগণের সবর্ণা ভার্যার উৎপন্ন সন্তানগণের বদি
বথা সমরে সংস্কার কার্য্য সম্পন্ন না হয়, সেই সাবিত্রী ভ্রষ্টবিজ্ঞপণ্ডে "ব্রান্ত্য" বলিবে। ব্রাহ্মণ "ব্রান্ত্য" হইতে পাপাত্মা
ভূজাকটক, আবস্ত্যা, বটাধান, পুলাধ এবং লৈব এই কর
জাতি, ক্ষত্রিয় "ব্রান্ত্য" হইতে বাল, মল, নিচ্ছিব, নট, করণ,
বস ও ত্রবিড় এই কয় জাতি, এবং বৈশ্র "ব্রান্ত্য" হইতে
স্বধ্যা, আশ্চর্য, (অথবা স্বব্যাচার্য) কার্য্য, বিজ্ঞা: বৈত্র ও
সাবত এই কয় জাতি উৎপন্ন হইয়াছে।" (মন্থুসংহিঙা,
দশ্য অধ্যান্তের ২০।২১।২২।২৩ ল্লোক।)

আরও "ক্রমশঃ ক্রিয়া লোপ হেতু এবং ব্রাহ্মণের অদর্শন জনা নিম্নলিখিত ক্ষত্রিয় জাতি সমাজে "অধার্শ্মিক" এই খাডি প্রাপ্ত হইরাছে; সেই জাতিগুলি বলা,—(১) পৌগুক, (২) গুছু, (৩) দ্রবিড় (৪) কালোক (৫) ধবন, (৬) শ্ব, (৭) পারদ, (৮) পজ্লব, (৯) চীন, (১৭) ক্রিয়ত, ( ১১ ) वर्षम् । असः ( ১२ ) अन्<sup>9</sup> । ( वस्तरहिन्<mark>सः ।</mark> व्यक्षात्वत्र ४०।४४ (क्षाकः । ) +

উল্লিখিত তালিকা হইতে দেখা গেল যে "খন", ধ "প্ৰবিড়" এই ছইকাতি "ব্ৰাত্য" এবং "কথাৰ্শিক" এই ছই শ্ৰেণীতেই ধনা পড়িখাছে।

উল্লিখিত দশম অধ্যারের ৪৩ লোকে "বুষরুষ্থ রাজ্ঞীতী আছে। টাকাকারগণ "বক্ষানান কবির জাতির "বুজুরু প্রাপ্তি" অর্থ করিরাছেন, বেহেতু "বৃষল" শক্ষের অর্থ "বুজুরু"র্থ হর। আমরা কিন্তু অন্থবাদে "অধ্যাত্মিক" লিবিয়াছিও শাস্ত্রকার মন্থ মহারাজ পরং "বৃষণ" শক্ষের নিক্ষক্তি নিহক্তি করিরাছেন। তিনি বলিয়াছেন,

"আবোড় শাবোল্দণত সাবিত্রী নাভিবর্ততে।
আবাবিংশাং কত্রবন্ধারা চত্রিংশতে বিশঃ ॥০৮...
অত: উর্জং ত্রবোহংপাতে ইবাকাল মসংস্কৃতাঃ।
মাবিত্রী পভিতা ব্রাত্যা তবস্ত্যার্থ-বিগর্হিতাঃ ॥৩৯॥

বিত্রীর অধ্যারে।

"বিশাতরঃ সর্মনাস্থ জনরতা ব্রতাংভ মান্। তান্ সাবিকী পরিব্রীন্ বাডাানিভিন্নিদিশৈৎ

প্রান্ত্যান্ত্ কারতে বিপ্রাৎ পাপান্ধা ভূক কটকঃ।
আবস্তাবাটধানো চ পূজানঃ শৈব এব চনাং সা
বলো মলত রাজনাদ প্রান্ত্যানিছিবিরেবচ।
নটত করণতৈব থলো জবিড় এব চনাং মা
বৈশ্যান্ত্ কারতে প্রান্ত্যাৎ ক্ষরাচার্য এব চনা
কারক বিজয় চ মৈত্রঃ সাহত এব চনাং আ
লনবৈদ্ধ ক্রিয়ালোপানিমাঃ ক্রিয় জাভরঃ।
ব্যক্তং গতালোকে প্রান্তান্ত্রনিল চনাং আ
পার্কাঃ পক্রবাতীনাঃ ক্রিয়ানা ব্যকাঃ বহুলাঃ ৪৪॥
পার্কাঃ পক্রবাতীনাঃ ক্রিয়ানা ব্যকাঃ বহুলাঃ৪৪॥
সারকাঃ প্রান্তানা

্ৰিষ্ণ ভগৰান খণেৰ নাম, বে বাজি সেই "ব্ৰকে" বিশ্ব কৰে দেবগণ (বিধান্গণ) তাহাকেই "ব্ৰণ" বলেন, বিশ্ব কৰিছে ধৰ্মকে লঙ্গন করা কর্ত্তব্য নহে।" •

( মনুসংহিতা, জইন মধ্যায়ের ১৬ প্লোক )।

ক্রিইলানা ঐ ক্রিয় জাতিগুলিকে "অধান্মিক" অধনা
ক্রিইলে" ইলিয়াছি। অবদাতি যতই কেন অবনতি প্রাপ্ত
ক্রিইলে—দৈ নিকুইতর ''অবই'' থাকিবে, কদাপি গো
ক্রিই মহিব হইরা বাইবে না। তক্রপ কোন ক্রিয়ে বৈদিক
ক্রিয়াশী ব্যক্ত তুক্ত করাত, সে "ব্যক ক্রিয়" হইবে,—শুড়
ক্রিলা। বেহেতু প্রবিগণ শুদ্রের কোন প্রতি সঙ্গত
ক্রিলার করেন নাই,—ভাই তাহারা শুদ্রকেও হম্মহীন
ক্রিয়া ব্যক্ত ব্রিয়াহেন। †

প্রক্ষণে এতদুর বাহা দেখিলাম, তাহাতে আমাদের মনে

 প্রে ''আর্য' শব্দের ভিতর আদিম বিজ জাতি, তাঁহাদের

 শ্রেলার এবং শ্রের সহিত অহলোম বিবাহ জাত সন্তান,

 শ্রেলার এবং শ্রের সহিত অহলোম বিবাহ জাত সন্তান,

 শ্রেলার রুবা পরস্পার প্রতিলোম জাত সন্তান, ব্রাত্য

 শ্রেলার এবং কোন কারণবশতঃ ধর্মচ্যুত বিজবংশ ইঠারা

 শ্রেলার পঞ্জিতেছেন। ইহাদের মধ্যেও পরস্পার শোণিত

 শ্রেলার কলে যে অসংখ্য অবান্তর উপজাতির উৎপত্তি

 শ্রেলার কলে যে অসংখ্য অবান্তর উপজাতির উৎপত্তি

 শ্রেলার কলে কোলাই ''আর্য''। অন্তঃ মন্ত্র্যংহিতার

 শ্রেলার কলিক সংস্কারে সংস্কৃত থাকিয়া আজ পর্যান্ত বৈদিক,

 শ্রেলারিক অথবা তান্তিক ধর্ম কর্ম পালন করিতেছেন,

 শ্রেলার বর্তনাল ভারত থণ্ডে ''বিজারারী হিন্দু' নামে পরিচিত

 শ্রেলারে বর্তনাল ভারত থণ্ডে 'বিজারারী হিন্দু' নামে পরিচিত

 শ্রেলারের বর্তনাল ভারত থণ্ডে 'বিজারারী হিন্দু' নামে পরিচিত

 শ্রেলারের বর্তনাল ভারত থণ্ডে 'বিজারারী হিন্দু' নামে পরিচিত

করিলে, দেখিতে পাঞ্জা আরু বৈ আচীন জালাণ করিব এবং বৈশু এই মূল তিন বর্ণ এখন সহক্র সহক্র লাখা প্রাণাদ্ধি বিভক্ত হইরে দেশ বিশেষে বিভিন্ন বিভিন্ন নামে পরিচিত্ত হইতেছেন। তথাপি, যে নামেই উাহায়া পরিচিত খাকুন, তাঁহায়া আজও তাঁহাদের সেই স্প্রাচীন "ঝার্য" নাম গোরবের সহিত বহন করিতেছেন এবং সেই পরিচারে পৃথিবীয় নানবের নিকট পরিচিত হইতে চাহ্রিভেছেন। হিন্দু জাতি এবং হিন্দু সমাজতত্ত্বর মূল দেশে বিশেষ সাবধানতার সহিত অহুসন্ধান করিলে এখনও প্রত্যেক জল আচরণীর হিন্দুর দেহে আর্থ লোণিত সম্পর্কের প্রচুর প্রমাণ পাওয়া যাইবে।

আমরা দেখিরাছি যে প্রধানতঃ বৈদিক পুরুষ স্কুকে
আশ্রম করিয়া ময় মহারাজ ত্রাহ্মণ ক্ষত্রির এবং বৈশু এই
তৈর্বর্ণিক আর্থের উৎপত্তির সংবাদ দিরাছেন। রামারণ,
মহাভারত এবং মহাপুরাণাদি গ্রন্থ হইতে এ সহক্ষে কড়দুর
আনিতে পারা যায়, একণে ভাহাই দেখিতে হইবে। স্ক্রিশান
আর্থাবর্ত্ত এবং ভান্নতবর্বের ভিতর এই আর্থজাতির প্রদার
এবং প্রভাবই বা কতদ্র বিভৃতি লাভ করিয়াছিল, ভাহাও
অনুসদ্ধান করিতে হইবে। প্রথমে রামারণের কথাই আরক্ত
করা যাউক,—

"হে মহাবাহো রখুনন্দন, পূর্বে বাহারা প্রজাপতি হটরাছিলেন, আমি একে একে তাঁহাদের সকলের নাম কীর্ত্তনি করিতেছি। প্রথম কর্দম, তৎপরে বিক্লভ, শেব সংশ্রের, বাগ্যবান্ বহুপুত্র স্থান্ত্র, মরীচি, অন্তি, ক্রত্ত্ব, পুলন্ত্যা, অলিরা, প্রচেতা, পুলহু, দক্ষ, বিবস্থান্ অরিষ্টনেমি ও কশুম। দক্ষ প্রজাপতির যশন্দিনী লোক বিখ্যাত ঘাটটি কন্যা জয়ে। তন্মধ্যে অদিতি, দিতি, দম্ব, কালকা, তান্ত্রা, ক্রোধবশা, ক্রন্তু ও অনলা এই আটটি ক্রমধ্যনা কশ্রাকে কশুপ প্রজাপতি বিবাহ করেন। তান্ত্রী ক্রমধ্যনা ক্রাকে কশুপ প্রজাপতি বিবাহ করেন। তান্ত্রিশ দেবতা অদিতির গর্ভে জয়্ম গ্রহণ করেন। বৎস, দিতির গর্ভে অনেক ফল্মী পুত্র হয়, তাহারা দৈতা নামে বিখ্যাত। দম্ব অস্থ্রীব নামক পুত্র প্রস্থ করেন। কালক প্রশ্ন সাম্ব করেন। কালক প্রশাস্ত্রীব নামক পুত্র প্রস্থ

ক্রিটাধিকারো ধর্ণেইডি ন ধর্মাৎ প্রতিবেধনম্ ॥১২৬॥ ( মৃত্যুংহিডা, দশন অধ্যার )।

<sup>্ &#</sup>x27;বুংবা হি ভগবান্ ধর্মজন্ত য: ক্রণতে ইলম্। বুষলং তং বিহু দেবান্তশাদ্ধম্ম ন লোপদ্ধের ॥১৬॥" সমুসংহিতা, অইম অধ্যায় ।

<sup>&#</sup>x27;'বিশ্বংসো হি দেবাঃ' শথপথ আহ্মণে। "নুশুদ্রে পাতর্কং কিঞ্চিন্ন চ সংস্কান মইতি।

করেন। তামা ভাসী, খেনী, ক্রোক্ষী, খুডরারী ও তবী এই পাঁচটি লোক বিখ্যাতা কল্পা প্রসব করেন। ক্রোধ্বশা মৃগী, মৃগানলা, হরী, ভদ্রমদা, মাতঙ্গী, মার্দ্ধলী, খেডা হ্ররভি, সমস্ত ভ্রুলকণ যুক্তা হ্ররসা ও কল্রু এই দশটী কল্পা প্রসব করেন। আনু মহাত্মা কল্পপের ওরুদে ব্রাহ্মণ, করিয়, বৈশ্র ও শ্র এই চারিবর্ণে বিভক্ত মন্ত্যাদিগেকে উৎপন্ন করেন। বেদে কথিত আছে যে ব্রাহ্মণেরা মুখ হইতে, ক্রিয়েরা বক্ষংখল হইতে, বৈশ্যেরা উরুদ্ধন্ন হইতে এবং শ্রেরা পাদবন্ন হইতে জন্মগ্রহণ করেন। সমস্ত ভ্রু কলজনক বৃক্ষ অনলা হইতে উৎপন্ন হয়।" রামারণ, আরণ্যকাণ্ড, ১৪শ সর্গ। (বন্ধবাসীর অমুবাদ)।

 'পূর্বকালে মহাবাহে। বে প্রজাপভয়োহভবন্। তান মে নিগদতঃ স্বানাদিতঃ শুণু রাঘব 🕪 কর্দম: প্রথমন্তেষাং বিক্বত তদনন্তর:। **अवन्द्र मः अवस्थित वह्न भूवन्द्र वीर्यवान् ॥१॥** शांतू मंत्री वित्र जिल्ह क्व कुटेन्डव महावल। পুৰস্ত্য-চাঙ্গিরা-চব প্রচেতাঃ পুৰহন্তথা ৷৮॥ দকোবিবস্থান পরে। হারষ্টনেমিশ্চ রাঘব। কশাপশ্চ মহাতেজা স্তেষামাসীচ্চ পশ্চিম: ॥৯॥ প্রঞাপতেম্ব দক্ষতা বভুবুরিতি বিশ্রতাং। ষষ্ঠি ছ'হিতরো রাম ঘশস্বিক্যো মহাঘশাঃ॥ ১০॥ क्नानः প্রতিজ্ঞাহ তাসা মষ্টে। স্থমধ্যমাঃ। व्यविভिक्ष विভिद्येषय नष्ट्रमित ह कालकाम्। ভাষাং ক্লোধবশা ঞৈব অনুকাপানলামপি ॥১১॥ অদিত্যাং জজিরে দেবাস্ত্রয়স্তিংশদরিক্ষম । আদিতা। বদবো কড়া অধিনৌ চ পরস্তুপ ॥ ১৪ ॥ মনুমনুষ্যাণ জনয়ৎ কাশ্যপশু মহাত্মনঃ। ব্ৰাহ্মণান্ ক্তিয়ান্ বৈশ্বান্ শুড়াংশ্চ মহুজৰ্মভ ॥ ২৯॥ মুখতো ত্রাহ্মণা জাতা উরসঃ ক্ষত্রিয়া স্তথা। উক্জাং ক্ষিরে বৈশাং পঙ্কাং শুদ্রা ইতি শ্রুতি ॥৩০॥ बामायन, त्यावनाकाख, ३८म मर्ग। বামান্তপের মতে আমরা দেখিতেছি বৈ প্রকাশীক্তি কশুপই লীকলপতের জনক। তিনি অনেকগুলি নারীক্তি বিবাহ করিরাছেন; এবং তাঁছাদের পর্জ হইতে দেই দানব, দৈতা, অন্তর, নাগ, পক্ষী, পণ্ড, বৃক্ষ, লকা এবং ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশু এবং শুদ্র এই চারিবর্গে বিক্রম্ব মহয়ের জন্ম হইরাছে।"মানব" এই শব্দে আমরা "প্রকার্গতি মন্তর পূত্র" ইহাই জানিতাম; কিন্তু রামান্তপ বলিতেছেল বে ক্ষান্তাশিক্তা অন্যাত্রমা প্রী মন্ত্রমা করান বলারা আমরা "মানব"। রামান্তপ আরও বলিতেছেল বে ব্রাহ্মণাদি বর্গ চতুইর একই দম্পতী অর্থাং ক্ষান্ত্র্যান হালির ইতে উৎপন্ন হইরাছেন। তবে জ্বানেই, মুগাদি হইতে ব্রাহ্মণাদির উৎপত্তির প্রাচীন উপাধার্য ও "ইতি শ্রুতিঃ" বলিয়া রামান্ত্রের থবি লিপিবছ করিয়া গিরাছেন।

কেবল রামায়ণ বলিয়া নহে, হিন্দুর নানা প্রামাণ্য গ্রন্থে একই মানব সম্প্রদায় পরে গুণ কর্মান্ত চারিবর্ণে ক্রমশঃ বিভক্ত হওয়ার ইতিহাস পাওয়া ক্রম ক্রমশঃ আমরা সেই সকল অতি সংক্রেপে নির্মিষ

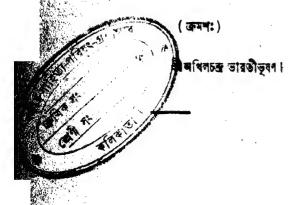
১। বৃহদারণাক্ উপনিষং।—"প্রথমে একমাত্র প্রশ্ন অথবা প্রাহ্মণ ছিলেন। এক ছিলেন বলিরা শ্রেষ্টরূপ ক্ষতিয়ের স্বষ্টি করিলেন; এই সকল দেবগণ ক্ষত্রিয়,—বথা—ইন্স, বরুণ, সোম, রুদ্র, পর্জপ্র, যম, মৃত্যু এবং ঈশান। দেই হেতু, ক্ষত্রিয় অপেকা উত্তম কেহ নাই, সেই হেতু প্রাহ্মণ অধোদেশে থাকিয়া ক্ষত্রিয়ের উপাসনা করেন; রাজহুর্যে ক্ষত্রিয়ই তাঁহার (প্রক্ষের) যশ ধারণ করেন;—ক্ষত্রিয়ের উৎপত্তি স্থান প্রস্কা। ক্ষত্রিয়ের পর তিনি বৈশোর স্বষ্টি করিলেন; যে সকল দেব গণ ছারা আধ্যাত্ হন, বস্তু, ক্ষত্র,

 <sup>&</sup>quot;বৃদ্ধ ক্রাদরক্মান্মনোজাতার মানবা ঃ ॥"

মহাভারত, আদিপবা, ৭৫ ন অধ্যার।

আবিতা, বিষেক্ষেৰ, মকং ইন্ডাদি। পরে তিনি শৃত্ত রুণা ছাই ক্ষিক্ষের,—ইন্ডাদি।" প্রথম খণ্ড, চতুর্থ ক্রাক্ষণ। † েএই উপনিষ্দিকী শ্রুতিবাণী সেই প্রীম্দ্রগ্রদ্গীতার ক্রুক্ষের্থ বিভাগ হইতে আমি চারিবর্ণের সৃষ্টি করিয়াছি" ক্রিক্ষের্থই ক্ষাক্ষ্য বিশিষ্য বোধহয়।

প্রকাশকে উপনিবদ, রামারণ ও মনুবাকোর একত্র তুলনা ক্রিয়া অর্থ করিছে গেলে ইহা স্পষ্টই প্রতীত হয় যে আদিম-ক্রিয়ার উরতি সহকারে মাত্র বর্তমান ছিল এবং ক্রমণ: ক্রিয়ার উরতি সহকারে সমাজে গুণামুসারে কর্মভেনের ক্রিয়ার ইরতি সহকারে সমাজে গুণামুসারে কর্মভেনের ক্রিয়ার ইরতার সঙ্গে সঙ্গে বর্ণভেনের ব্যবস্থা হয়। মহাভারত ক্রিয়ার্শির হিন্দুরাণ গ্রন্থাবনীও এই ঐতিহ্যই বহন করিয়া

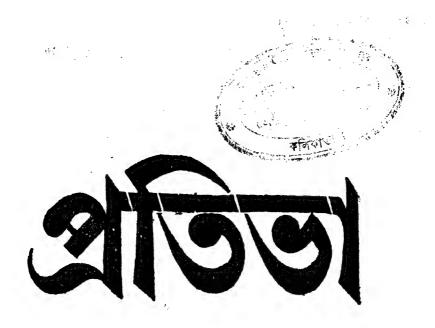


া "ব্রহ্ম বা ইনমগ্র আসীদেকমেব তদেক ৮সর ব্যাভবন্তক্রেরারপমত্য ক্ষরত করেং যান্তেতানি দেবতা কর্তাণী
ক্রেরারপমত্য ক্ষরত করেং যান্তেতানি দেবতা কর্তাণী
ক্রেরারপম: সোরো ক্রন্ত: পর্ক লো যমো মৃত্যুরীশান ইতি
ক্রেরাই করাৎপরং নান্তি তত্মাদ ব্রাহ্মণ: করিরমধন্তাত্পান্তে
ক্রাহ্মণের করে এব ভদ্যশো দধাতি সৈধা কর্ত্ততানি দেবজাতানি
ক্রির্মান ক্রেরারার বসবো কর্তা আবিত্তা বিশেষেরা মকত ইতি
ক্রিন্ত আব্যারত্তে বসবো কর্তা আবিত্তা বিশেষেরা মকত ইতি
ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিভাবং স শৌলং বর্ণক্র্যান্ত ইত্যাদি॥১৩॥"
ক্রিন্ত ব্যাহ্মণ।

#### Z:

বুঝিবে কি আৰু सननी सामात्र। আঁথি কল অভাগার ? জাগে লুকাইয়া মরমের মাঝে দিবানিশি হাহাকার। কত যুগ যুগ কোন ছুরাশার হ'মেছি গো গৃহ হারা আপনার মনে कि त तिर्म पर्म वृथारे পागन भावा। জানিনা গো কবে শেষ হবে মোর **१४-**5ना डिव्रक्ति. चाल्डात चाला হারালো কোথার निविष्ठ व्याधारत नीत । ওগো বা আমার! সস্তান তরে নীংবে সহিছ কত! मर्च (वहन, কত লাখনা. আগে বুকে অবিরত ! कि गाउँ हात्र अर्गा त्त्रहमश्री বেদনার প্রতিধান ? ७१ करन बरन গ্ৰহণ শত অকারণ অভিযান ছুলি ছুলি উঠে তাই ভাবি আৰু গভীর বেদনা প্রাণে, क्ष्मान वृकाहे এ বাতনা আমি ব্যৰ্থ ভাষায় গানে ? কিবা দিব আৰু **53(१ अर्था ?** কি রচিব উপচার ? नर चांथि जन. লহ তুথ জ্ঞালা, (सहमत्री मा व्यामाद । থী আণতভোৰ বাম

" ","



১০ম বর্ষ

আশ্বিন ১৩২৭

৬ঠ সংখ্যা

### বঙ্গদর্শন !

( প্রথম প্রস্তাব )

ক্ষলাকান্ত শর্মা পণ্ডিত লোক হইলেও গুরুতর জ্বাফিনথোর ছিলেন; তিনি যে বালালা সাহিত্যের up to date থবর রাখিবেন ইল্লা আশা করা যায় না। তাঁহার অদৃষ্ট স্থপ্রম ছিল বলিয়া এক জ্বোড়া বিনামা ক্রয় করিয়া বন্ধ দর্শনের সন্ধান পাইয়াছিলেন। কমলাকান্তের বঙ্গদর্শনকে না জানিবার যে করেণ ছিল, আশা করি সাহিত্য-পরিষদের সভাগণের ভাহা নাই; আর বিশেষ বঙ্গদর্শন এখন up to date সাহিত্যের সীমানা পার হইয়া প্রায় প্রভূত্ত্বের সীমানার মধ্যে গিয়া পড়িয়াছি। এখন বঙ্গদর্শনের পাতা দিয়া আর জ্বা নোড়ান হয় না, ভাহা কাচের বাক্সে থাকে। বঞ্গদর্শনের পরিবর্তে বঞ্গদর্শন সম্বন্ধে আলোচনাকারীর প্রবন্ধ দিয়া থদি ক্ষলাকান্তের মত কোনও পাহিত্যিকের বিন্মার মোড়ক

ভৈয়ারি হয় তবে ভাদৃশ প্রবন্ধ নেথকের **অদৃষ্ট যে নিছাত্ত** মন্দ ভাহা মনে করি না।

সে যাহা হউক—যে কণা বলিতেছিলাম—সাহিত্যিক
সমাজে এখন বঙ্গদর্শনের আড়ম্বরপূর্ণ বা বিশ্বত পরিচর
দেওয়া ইদানীং নি হাস্তই অনাবশুক। তথাপি একটা
কথা আপনাদিগকে অরণ করাইয়া দিলে হয়ত আপনারা
আমার প্রতি অসন্তই হইবেন না। বঙ্গদর্শন মোট চারি
পর্যায়ে প্রকাশিত হইয়াছিল। বহিমচন্দ্র স্বরং কেবল
প্রথম বারের সম্পাদক ছিলেন, দ্বিতীর বারের—সম্পাদক
ছিলেন ব্যাসিচন্দের জ্যেষ্ঠ লাতা সঞ্জীবচন্দ্র; তৃতীয়বারের—
সম্পাদক ছিলেন ৮ শ্রীশচন্দ্র মজ্মদার মহাশয় এবং
চতুর্গবারের—শ্রীযুক্ত রবীক্রনাথ ঠাকুর। অত্য আমরা
ক্রেবল প্রথম পর্যায়ের (অর্থাৎ ব্যাহ্ম সম্পাদিত)
বঙ্গদর্শন সম্বন্ধ আলোচনা করিব।

বন্ধিমচন্দ্র ধখন বঙ্গদর্শন প্রকাশিত করিতে আরু করেন, তথন তাঁহার প্রণম তিন্থানি উপস্থাস মাঞ্ ইংশে একিনী, কপাল কুণ্ডলা ও মৃণালিনী ) প্রকাশিত

ইংশিছে। তাঁহার চতুর্ব উপক্যাস বিষর্কের প্রথম

ইংশি পরিছেল ক্রোড়ে করিয়াই বলদর্শন বাঙ্গালা

কাহিত্যের আসরে অবতীর্ণ হয়। এই সময়ে বরিম

ইংশিশুরে ডিপুটি ম্যাজিট্রেট ছিলেন। স্বর্গায় অক্ষয়চজ্র

ইংশালা সাহিত্য চর্চার মাহেল্র কণ উপস্থিত ইইয়াছিল,

ইংশালা সাহিত্য চর্চার মাহেল্র কণ উপস্থিত ইইয়াছিল।

ইংশালা রাম্লাস সেনের বাড়ী ও স্থিপুল গ্রন্থার এই

ইংশালি ছিল। কবি গঙ্গাচরণ সরকার মধ্যে মধ্যে বহরমপুরে আসিয়া অবস্থিতি করিতেন। অক্ষয়চন্দ্র সরকার

ইংশালে এই সময়ে ওকালতি আরম্ভ করিয়াছিলেন।

সাঁচটা উচ্চসংশ্রম গ্রহের একত্র সমাবেশে দিলীপের
কুলদীপক পুত্র অনম্বকীর্ত্তি রখুর জন্ম হইগ্লাছল, একথা
আলিদার বলিরাছেন। তথার বালালার শিক্ষিত সমালাকাশের ঐ দশটা মহাজ্যোতিছের একত্র সন্মিলনের
আহাবে বলবাণীর ক্রোড়ে যে শিশুর আবির্ভাব হইগ্লাছল
ভাষার ভাগ্য সম্পদ কম হইবে কেন ? কিন্তু রঘুর কীর্ত্তি
ক্রীর্ত্তিন করিবার ভার লইগ্লাছিলেন কালিদাস, বল্পদর্শনের
ক্রীর্ত্তি কাছিনী বিহত করিবার ভার এখনও কোনও
ক্রিকাশালী সাহিত্যিক গ্রহণ করেন নাই।

ৰালালা সাহিত্যের পরিপুষ্টি বিষয়ে বঙ্গদর্শনের দৃষ্টান্ত প্রতাব কিরূপ কার্য্য করিয়াছে তাহা গোড়াতেই শুষ্টুরূপে নির্দেশ করিবার চেষ্টা করিব। বন্ধদর্শন যে

> গ্রহৈ শুতঃ পঞ্চিত্রক সংশ্ররৈ র স্থাগৈঃ স্চিত্তাগ্য সম্পদ্য । অস্ত পুত্রং সময়ে শ্রা সমা তিসাধনা শক্তিরিবার্থমক্ষয়ম্ :

র্যু, তৃতীয় দর্গ, ১৩শ লোক।

সে সময়কার সকল পত্রিকা হইতে সুলিখিত ও স্থ্যম্পাদিত ছিল তাহা বোধ হয় না বলিলেও চলে। तक्रमर्नात्तवहे आमार्ग छेखतकात्म वास्तव, आर्वामर्गन, প্রবাহ, নব্যভারত, ভারতী, সাধনা, সাহিত্য, প্রদীপ, জন্মভূমি, প্রবাদী, মানদী, প্রতিভা, ঢাকা রিভিউ ও স্মালন, ভারতবর্ষ, নারায়ণ, মালঞ্জ, এবং আরও ক্ত উৎকৃষ্ট মানিক পত্র প্রকাশিত হইয়া বাঙ্গালা সাহিত্যের অসাধারণ উন্নতি সাধন করিয়াছে। ইহাদের মধ্যে 🅇 কয়েকথানি ইতিমধ্যে ভৌতিক লীলা সংবরণ করিয়া অক্ষয় সার্থত স্বর্গে—মাতৃভাষা ও মাতৃভূমির শ্রেষ্ঠ সেবক-গণের স্ভা অমরধামে—বঞ্চর্শনের সাযুক্য লাভ कतियाह : बवर कराक्षानि नाना পतिवर्छन, छेथान, পতনের মধ্য দিয়া নুনোধিক উজ্জিল ভাবে বঙ্গ যথেষ্ট সেবা করিয়া সাহিত্যের ও বঙ্গদমাজের আগিডেছে। বস্ততঃ বাঙ্গালা সাময়িক সাহিত্যের ইতিহাদে বঙ্গদর্শনের স্থান অতান্ত উচ্চ, তাহা কে না স্বীকার করিবে কিন্তু অতীতের অফুরাগবশতঃ আমরা যেন এমন পিদ্ধাপ্ত না করি যে, বঙ্গদর্শনের মত সুলিখিত বা সুসম্পাদিত, বা বিচিত্র ও গভীর চিঞ্চাপূর্ব মাসিকপত্র আর হয় নাই। কথাটা বিশেষভাবে অরণ করাইয়া দিবার হেতু এই যে, এখনও व्यत्न क्य मत्न (महेक्स भावनाहे वक्षमून विनशा मतन हत । অলে পরে কা কথা? রায় সাহেব হারাণচন্দ্র রাক্ষত প্র্যান্ত বলিয়াছেন, "বঙ্গদর্শন জাতীয় সাহিত্যের একমাত্র কোহিত্ব"। বঙ্গদর্শন যে বাঙ্গালা সাময়িক সাহিত্যের প্রথম পত্র নহে—ভাহার পূর্বেও যে তর্ববোধিনী প্রভৃতি ৰাঙ্গালা সাহিত্যের ও বাঙ্গালা সমাজের নিতান্ত তুচ্ছ সেবা ও নগ্য উপকার করে নাই—তাহাও যেন রায় সাহেব নিখত হইয়া লিখিয়াছেন, "বল্পদর্শনের সৃষ্টি হইতেই ৰাদালী ভাবিতে শিখিল, তাহার চক্ষের ঠুলি থুলিল ইত্যাদি।" অমুরাগ ভাল, অমতা ভাল নহে। আমরা আমাদের দেশ ও সমাজের গৌরবময় অতীভের প্রতি

চিরদিনই ভক্তিযুক্ত; আমরা ইহাও বিখাস করি যে, ু শতীতের প্রতি সমুচিত অফুরাগ না ধাকিলে বর্তমানকে ভাল করিয়া আনা যায় না এবং বর্ত্তমানকে যথার্ব ভাবে লানিতে ও বুঝিতে না পারিলে ভবিশ্বৎ বড় অনিশিত, विष् विभएनकूल धाकिया यात्र। वलपर्नन वालाना শাহিত্যের পরিপুষ্ট বিষয়ে যে শাহায্য করিয়াছে তাহার पूनमा नारे, रेश जामता मृह्छात्व विश्वाम कति, किन्न रेश শীকার করি না যে, বঙ্গদর্শন হইতেই বাঞ্চালী ভাবিতে শিধিয়াছে। কেন করি না ভাহা পরে সাময়িক পত্রিকার ইতিহাস অলোচনার সময় বুঝা যাইবে। वक्रमर्मन वाक्रामीरक क्षथम ভाविতে निशास नाहे, তবে বঙ্গদর্শন যাহা শিখাইয়াছিল, তাহা পূর্বতন কোনও পত্রিকা শিখার নাই। বঙ্গদর্শন দেখাইয়াছিল, কাব্যক্রবা বল, বিজ্ঞান বল, দুৰ্শন বল, ইতিহাস বল, চটুল রসিকতা वल. शक-शसीत श्रेष्ठक वल--- नकल विषये वानावाय বচনা কৰা যায়, এবং লেখক ক্ষমতাশালী হটলে তাহা মনোজ ও শিক্ষাপ্রদ উভয়ই হইতে পারে। বঙ্গদর্শন বুঝাইয়াছিল, বালালা যে তৎকাল পর্যান্ত শিক্তিত বাঙ্গালীর ভাবপ্রকাশের বাহন হয় নাই তাহার প্রকৃত কারণ বাঙ্গালা ভাষার অপ্রতিবিধেয় দারিদ্রা নহে. শিক্ষিতসমাজের কচিবিকার এবং লেখকগণের অরসজতা ও ক্ষমতাহীনতা। তুর্গেশনিনী ও কপালকুগুলায় আমরা বাঙ্গালা সাহিত্যের নবোদ্ভিন্নযৌবন-প্রতিমা দেখিয়াছি ;\* বঙ্গদর্শন দেই প্রতিমার সর্বাঙ্গীণ প্রসাধনের ফুচনা क विशाष्ट्रिण।

বলদর্শন যে বাঙ্গালা সাহিত্যের একমাত্র কোহিত্বর"
নহে, ইহা প্রতিপাদনার্গ প্রমাণ প্রয়োগ নিতান্তই
অনাবশ্রক। তবে বঙ্গদর্শন যেরূপ স্থবিধা ও অস্থবিধা—
অসুকুল ও প্রতিকুল অবস্থার মধ্য দিয়া আয়প্রতিষ্ঠা

সাধন করিয়াছিল, যেরপ ভাবে আপনার গন্তব্য প্রে জনল আপনি কাটিয়া লইয়া সগৌরবে সাহিত্যের কর নব কেত্রে মাতৃভাষার বিজয়-পতাকা প্রথম প্রোপিট করিয়াছিল, তাহার উদাহরণরপে বৃদ্ধিচন্তের একটি উক্তি উল্লেখগোগ্য। একদিন শ্রীযুক্ত সমাজপতি মহাশয়ের সহিত কথাপ্ৰসঙ্গে বৃদ্ধিম বলিয়াছিলেন, "এখন যে স্ব কাগৰ বাহির হইতেছে, বঞ্চদর্শনের যে সুবিধা ছিল, তাহাদের সে সুবিধা নাই। তথন বাঙ্গালায় অনেক জিনিব লেখা হয় নাই, श्रांतक लिथा प्रदक्ष हिन । त्य विवस्त्र लाक् किंद्र कार्य नी. त्य विषय यथ्यामां विविध्व हे हिन्छ. **लाएक छात्राह**े পড়িত, সেই টুকুই শিশিত। এখন আর তাহা চলে সা এই তোমার 'দাহিত্যের' কথাই ধর। উমে**শ বটব্যালের** মত original research করিয়া 'বঙ্গদর্শনে' কেছ অবস্থ मिर्यन नारे। वर्षेत्रारमय देवनिक खेवस्थनि, नार्मन खरबंद 'मृञ्जाद भरत'—डेह मरदद रमधा। **এরকম প্রবন্ধ ছাপা হয় নাই।" † विषयहत्य यादादि** "সুবিধা' বলিয়াছেন, আনুরা ভাহাকে একটা গুরুতর অসুবিধাও বলি; বন্ধিম কতকটা আয়ুখাবা পরিছার করিবার জন্মই ঐরপ বলিয়াছেন তাহাতে সম্পেই नारे। वन्नवर्भान्त्र मण्यान्कताल जाराक स्वयन नारे नान। विषय (तथा देण्यादि कदिए इहेग्राह, एवम्नि লেখক ও তৈয়ারি করিতে হইয়াছে। ইহা যে বড় সইছ ব্যাপার তাহা নহে। পথ প্রস্তুত হইলে তাহাতে চল সহজ, পদে পদে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বাধা প্রতিহত করিতে করিছে ক্লান্ত হইয়া পড়িলে বুহৎ ব্যাপার সাধন করিবার শক্তি का (का है कम हम । तक्रमर्गन क चानक विवास है अब প্রস্তুত করিয়া লইতে হইয়াছিল—এবং ঐরপে কুর কুর বছ বাধা প্রতিহত করিয়া অত্যের পক্ষে স্বল্প কিন্তুর

পত্রিকান্তরে স্বতন্ত্র প্রবন্ধে এ বিষয় স্নালোচিত

ইইয়াছে।

রাধানমূহ অভিক্রম করিবার অবিধা করিরা দিতে। এইবাছিক।

বাদালা সাময়িক পত্তের ইতিহাদ অতি বিচিত্র। বিষয় বাজনারায়ণ বন্ধ মহাশয়ের "বাজালা ভাষা ও মাদাদা সাহিত্য-বিষয়ক প্রস্তাব" হইতে জানা যায় ১৮১৬ **এটাংশ গলাণর** ভট্টাচার্য্য নামক কোনও এক বাক্তি **्रियमन (गरफरे''** এই ইংরাজী দাম দিয়া একখানি মাদালা সাময়িক পত্র প্রকাশ করেন, উহাতে বিভাস্থলর, ক্রে**ভালপটিশী প্রভৃতি** কাব্য প্রতিকৃতি সহ মুদ্রিত হইত। অভাষিক আর কিছুই উক্ত পত্রিকাখানি সহয়ে জানা বার না। ইহার ছইবৎসর পরে ১৮১৮ খুটাকে জীরামপুর इद्देश्य विस्तातिशास्त्र উष्णात्भ ''निश्नर्सन''-नामक সাসিক পরে বাহির হয়। বেলল গেন্ডেট মাসিক কি ব্রথাছিক পত্র ছিল জানা যায় না। সূতরাং দিগ্রশ নকে জালার প্রথম মাসিক পত্র বলিলে বিশেষ কোনও দোষ আইবে না। বাজালা অভিধানের ভায় প্রথম বাজালা ब्रिंकि शेखा श्रेष्ठीन सिननातीशरणत मान। "मिश्मर्नन" লামে সংবাদ পত্র ছিল,কার্য্যতঃ ইহাতে নানাবিষয়ক প্রবন্ধ পাৰিত। 'দিগদর্শনের' সময় বাঙ্গালা সাহিত্যের নিভাত **শংশাগণ্ডাবস্থা ; ভাহাতে আ**বার অধিকাংশ প্রবন্ধের **দ্রেখকগণ বিদেশী মিশ**নারী ছিলেন; স্মতরাং ভাষার হিশাবে উহা যে কি অপূর্ব্ব বস্তু ছিল তাহা অনুমান করা মাইতে পারে। তথাপি ইহা বলা ঘাইতে পারে ইহার তিন বংগর পরে প্রকাশিত রাজা রাম্যোহনের 'ব্রাক্ষণ-দৈৰণি নাসিক পত্ৰ অপেকা ইহার ভাষা মোটের উপর আৰু। রামমোহনও 'দিগ্দর্শনে' কয়েকটি প্রবন্ধ शिषिशाष्ट्रियन । निग्नर्मात्मद ७८ वरमत भटत वन्ननर्मात्मत **াবিডাব হয়।** ছুইখানি পত্রিকায় নামের সাদৃশ্য লক্ষ্য 🐃 বিখার যোগ্য। কিন্তু এই ৫৪ বৎসরে বাঙ্গালা দাছিত্য বৈষ্ণা অভাবনীয় উন্নতিসাধন করিয়াছিল তাহা যথার্থ ই বিশ্বস্থকর। দিপ্দর্শন তিনবৎসর কাল ভাগী হয়। ক্লান্ত্রপ্রবিধির জীবনকাল মাত্র একবৎসর। ইহার পর माना नात्य वह वानाना माखाहिक, दिनिक, वार्विक ख মাসিক "দংবাদপত্র" বাহির হইরাছিল। এবং প্রায় সবগুলিতেই ষৎসামান্য সংবাদের সঙ্গে নানাবিধ গম্ম পদ্ম প্রবন্ধ বাহির হইত। ১৬৯১ গৃষ্টাব্দে প্রচারিত The Gentleman's Journal নামক যাসিক পত্ৰধানিতেই নাকি বিলাতের আধুনিক মাসিক পত্রসমূহের বীল উপ্ত হর। ঐ পত্রিকাধানিতেও আমাদের বালালা দেশের পূর্ব্বোক্ত প্রাচীন পত্রগুলির ন্যায় সংবাদ ও গছ পছ প্রবন্ধ প্রকাশিত হইত। ১৮১৭ খুষ্টাব্দে Black-wood's Edinburgh Magazine প্রকাশিত হয়। উহাই वन्नमर्गतित चामर्ग हिम विनिधा (वाध द्या। चन्न डेड्य পত্রিকার পাদৃশ্য বড় খনিষ্ঠ। Scott, Lockhart, Hogg, Maginn Syme, এবং John Wilson প্রভৃতি তদানীস্তন প্রধান লেখকগণ Blackwood's Edinburgh Magazine পত্রিকায় লিখিতেন। বঙ্গদশ নৈর কৃতিম্বত্ত উহাতে সাময়িক কয়েকজন প্রধানতম লেখকের রচনার একত্র সন্মিলন সাধনে। বাঙ্গালা সাময়িকপত্রের সবিশুর ইতিহাস বর্ণন এম্বলে সম্ভব নহে। কিন্তু এতৎসম্পর্কে कराकशानि পত्रिकात नाम ना कतिराम कर्छवा व्यमन्त्रुर्व থাকিয়া যাইবে। প্রথম গুপ্ত কবির "দংবাদ প্রভাকর"; हेशाएँ अभवक्रमात मछ, कवि तत्रमाम, मीनवक्र, বঙ্কিমচন্দ্র, মনোমোহন বস্থ-প্রভৃতি সাহিত্যমহারথগণের नकल्पदरे अकत्रभ दारा थाए द्या প्रधाकत श्रवस्य मुखारिक हिन, भारत दिर्मानक हुए, ज्याचात्र छहात বাহির হইয়াছিল। খাসিক সংস্করণও ১৮৩১ খুটান্দে প্রভাকর প্রবর্ত্তিত হয়। ইহার পর অক্স কুমার দত্ত ১৮৪২ খুষ্টাব্দে প্রভাকরের অপর এক জন লেখক প্রসন্মর বোষের সহিত মিলিত इहेश ''বিভাদর্শন" নামে এক মাসিক পত্র বাহির করেন। विणापर्गत्य छेखबकाणीन वन्नपर्गत्व लाग्न पिश्वपर्गत्व नार्यत गन्न चाष्ट्र। বিজ্ঞাদর্শন যাত্ৰ চলিয়াছিল, ইহার পরে ১৮৪৩ খুটাকে মহর্বি দেবেলানাৰ। ঠাকুরের উন্থোগে তত্তবোধিনী সভা ও তদানীস্তন ব্রাক্ষ-শ্যাব্দের মুখপত্ররূপে "তত্ত্বোধিমী পত্রিকা" প্রকাশিত ছয়। ঐ পত্রিকাথানি অত্যাপি জীবিত আছে। বিভাদর্শন ও তত্তবোধিনী বাঙ্গালা সাময়িক সাহিত্যে নুতন আদর্শ স্থাপন করিয়াছিল। উভয়ের রচনা গম্ভীর ও তেজঃপূর্ণ ছিল। তত্তবোধিনীর পর পুণ্যস্থতি বিভাসাগর মহাশর ও মদন্মোহন তর্কালকারের ''দর্বভতকরী'' -নামী ম্ভিলামনোব্জিনী মাসিকা পত্তিকা ও বাজেন্দ্রলাল बिराजन "विविधार्थनःशह" উল্লেখযোগ্য। विविधार्थ-সংগ্রহের বিষয়বৈচিত্র্য তত্ত্ববোধিনী অপেক্ষা অধিক, কিন্তু छात्रा भीत्रम ७ लागशैन छिन:। এই সময়ের কিছু পরেই মফঃরলেও সাময়িক পত্রিক। প্রচার আর্ক ইইয়াভিল। ঢাকা নগরী হইতে জ্যে জ্যে তিন্ধানি পত্রিকা "মনোরঞ্জিক।" ( ১৮৯৯ ) "কবিতা কুমুমাবলী" (১৮৬১ ) ''চিত্তরঞ্জিকা" (১৮৬২) প্রকাশিত হয়। প্রথমধানির শম্পাদক ছিলেন কবি কৃষ্ণচন্দ্ৰ মজুমদার, দিতীয় ও সম্ভবত: তৃতীয় ধানিরও সম্পাদক ছিলেন কবি হরিশ্চন্দ্র মিতা। বাঙ্গালা সমাজের ভায় বাঙ্গালা সাহিত্যেও শৈশবমৃত্যুর উৎপাত বড অধিক। উক্ত প্রত্যেকধানি পতाই বড় श्रद्धं की वी ट्रिय़ हिल । ১৮৬০ शृही हिल "বামাবোধিনী" ও তৎপরবৎসর "ধর্মতত্ত্ব" প্রচারিত হয়। বামাবোধিনী অ্যাপি জীবিত আছে। ধর্মতত্ত এখন यफ এक है। पिथिए शाहे ना, उनिए शाहे छेशा नाकि শকুরাবার কঞ্কীর মত "প্রস্থানবিক্রবগতি" হইলেও আসর ছাড়ে নাই। ধর্মতত্ত্ব কেশবচন্দ্র সেনের নেতৃত্বাধীন ভারতবর্ষীয় ব্রাক্ষণনাজের মুধপত্র ছিল। ইহা প্রথমে মাসিক পত্তিকা ছিল, পরে পাক্ষিক হয়।

দিগ্দর্শন হইতে আরম্ভ কয়িয়া বলদর্শনের পূর্ব পর্যান্ত প্রকাশিত বালালা সাময়িক পত্রের সংখ্যা বড় কম নহে, কতকগুলি কেবল দলাদলির পুষ্টি ও গালাগানিই শীবনের প্রধান ব্রত করিরা লইরাছিল। অনেকগুলি —বিশেষতঃ তম্ববোধিনী—দেশীর স্থাদকে সুনীতি ও

সুকৃতি শিক্ষাদেওয়াও মিশনাবিগণের আক্রমণ ছইটে হিন্দুসমাজকে রক্ষা করা প্রধান কর্ত্তব্য বলিয়া शिद्ध করিয়াছিল। বস্ততঃ ভত্তবোধিনী বঙ্গদর্শনের কার্যাকেত্র আংশিকরপে প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছিল। তত্ববোধিনার তত্ত্বপা কতকটা এক খেঁয়ে ছিল। কিছ তাহাতে জানিবার, ভাবিবার ও শিধিবার বিষয় ষ্টের থাকিত। ভাবক পাঠকেরা তত্তবোধিনীকে আদর করিভেন ভত্তবোধিনী দারা সমাজের যে উপকার হইতেছিল ভাষা শারণ করিয়া তাহার প্রতি ক্বতজ ছিলেন। তদানীয়ান বাঙ্গালা পাঠকগণের মনের উপর ইহার প্রভাবত কর বিহুত হয় নাই। কথিত আছে, তথবোধনীতে বাায়ামেছ थ्राधाननीय्या-विषयक थ्रवस थ्रकानिय हहेरन वह वाकि নিজ নিজ বাডীতে ব্যায়ামশালা নির্মাণ করিয়াছিলেন আমিষ অপেকা নিরামিষভোগনের শ্রেষ্ঠতা সম্বন্ধে প্রবিশ্ব প্রকাশিত হইলে বহু হিন্দু ও আন্ধ যুবক মংস্ক-মাংস বৰ্জন করিয়াছিলেন: মছপানের বিক্লপ্তে প্রবন্ধ প্রকাশিত হইলে কেহ কেহ নাকি মন্তও ত্যাগ করিয়াছিলেন 📲 তার পর একদিন যখন তত্তবোধিনীর তৈয়ারি আগত্ত বঙ্গদৰ্শন বিচিত্ৰ স্থার ও বিচিত্র তালে বাধা সম্পূর্ণ নৃত্তন ধরণের সঙ্গীত কঠে করিয়া আবির্ভূত হইল, তথ্য সামাজিকগণ সমস্বরে জয়ধ্বনি করিয়া ভাহাকে অভ্য**র্বিভ** করিলেন; তাঁহারা পাষ্ট উপলব্ধি করিলেন যে. সাময়িক সাহিত্যে এত দিনে অধামার প্রতিভার জগুরোহিনী আলোকজটা পতিত হইয়াছে। যাঁহারা বিলাভী magazine এর বিষয়বৈচিত্তা ও রচনাকৌশলের অনুরাগী ছিলেন, তাহারা তদকুরপ বস্তু বাঙ্গালা ভাষায় পাইয়া

কাহার আদর করিতে আরম্ভ করিলেন। প্রণম সংখ্যা ছুইভেই বঙ্গদর্শনের প্রতিষ্ঠা দেশে বছমূল হইল—তার ন্ত্রীর বেঁ চারিবৎসর বঙ্কিম উহার সম্পাদকতা করেন তত দ্বি এ প্রতিষ্ঠার ক্রমশঃ বৃদ্ধিই হইয়াছে। শচীশবাবুর আছে দেখা যায় 'বঙ্গদৰ্শন' প্ৰথম সংখ্যা একসহস্ৰ মাত্ৰ बिजिड इहेबाहिन। हातिमान मर्गाई ऐदात आहकनःथा। ব্রুক্ত ব্য়, পরে বিভাগ হইয়াছিল। বঞ্চিম যথন বিষয়েশন উঠাইয়া দেন তথন উহার গ্রাহকসংখ্যা নাকি রোলশত। দে যাহা হউক, এখন যে বাঙ্গালা দেশে শিকার এত বিভার ও বাঙ্গালা সাহিত্যের, বিশেষতঃ শ্বীৰালা সামন্ত্ৰিক সাহিত্যের প্রতি বাঙ্গালীর এত আদর মুট্যাছে ত্রনিতে পাই, এখনও কয়ধানি মাসিকপত্তের शिक्षा সে কালের বঙ্গদর্শনের গ্রাহকসংখ্যা হইতে অধিক ? हादिवदेनत भारत विक्रम यथन के भवाबानि छेठाहेशा (हन, জ্বন ব্যক্ষালা পাঠকসমাজে যে বিবাদ ও পরিভাপ দৃষ্ট হুইরাছিল ভাহার তুলনা কোনও দেশের দাহিত্যের केंकिशांश मिल मा। कति नवीमठख निविधारकन, ীরমুদ্দ নের অদশ নের সহিত বন্ধ সাহিত্যে এবং अधिकारमञ्जू अंतरम (यन এक है। नित्रानन ও निक्र शार প্রশারিত হইরাছিল।" \* প্রতিযোগী মাসিক পত্রগুলি লার্যায় 'বঙ্গদর্শ রের বিদায়ে' আগুরিক ছ:খ প্রকাশ 📆 दिशाहिन। व्यार्थानम न-मण्यातक निविद्याहितन "(कार्ष मुद्रेशांक दात्र मृञ्जा भरवारिक (म या उना, এই সংবাদে আজ আখাদের সেই যাত্না উপস্থিত হইল। ... আঞ্ **ারিবৎশর বঙ্গদর্শ**ন বঙ্গীয় সাহিত্যসমাজের এক অপুর্বা সৃষ্টি ক্রিলিয়া পরিকীর্ত্তিত হইতেছে ···· আজি চারিবংসর ৰনীয় সাহিত্যসমাজে এক নবজাবন সংক্রামিত হইয়াছে ্ৰ প্ৰাণি বিষয়ে বিষয় বিষয়ে বিষয় বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে

**প্রসন্ন খোষ স্বা**য় স্বভাবণিদ্ধ অন্তপুষ্টিসহকারে লিবিয়া-

ছিলেন, "আমরা আশা করি বলদর্শন শীঘ্রই আবার অ্ত কোনও মৃর্ত্তিত পুনজ্জীবিত হইবে। বাদালার আজিও সাহিত্যসমাজ প্রতিষ্ঠিত হয় নাই, আজিও শিক্ষাভিমানী বাদালীর সহিত বাদালার দৃঢ় সহল করে। মাই, আজি পর্যন্তও বাদালার অভাব ও প্রভাবের সীমারেখা নির্দিষ্ট হয় নাই। যে পর্যন্ত শা এ সম্ভ ভক্তর কার্যা স্থাপপন্ন হয়, সে পর্যন্ত আমরা বদদর্শনের মত প্রতিভাবিত সহায়কে বিদায় দিতে পারিব না।" †

বাদালা সাহিত্যের এমন গৌরবের বস্তু, বাদালীর এমন আদরের ধন বঙ্গদর্শনকে বন্ধিনচন্দ্র অকালে কেন উঠাইয়া দিলেন তৎসম্বন্ধে অনেক জলনা হইয়াছে। চতুর্প বংশরের শেষ সংখ্যায় বন্ধিনচন্দ্র 'বঙ্গদর্শনের বিদায়' নামক প্রথক্তে লিখেন—

"চারি বংসর গত হইল বন্ধদর্শন প্রকাশ আরপ্ত হয়।

যখন ইহাতে আমি প্রবৃত্ত হই, তখন আমার কতকগুলি

বিশেষ উদ্দেশ্য ছিল। প্রত্যুচনায় ই কতকগুলি ব্যক্ত

করিয়াছিলাম; কতকগুলি অব্যক্ত ছিল, একণে তাহার

অধিকাংশই সিদ্ধ হইয়াছে। একণে আর বন্ধদর্শন
রাখিবার প্রয়োজন নাই।

যথন বঙ্গদশন প্রকাশারস্ত হয়, তথন সাধারণের
পাঠযোগ্য অথচ উত্তম সাময়িক পাত্রের অভাব ছিল।
এক্ষণে তাদৃশ সাময়িক পাত্রের অভাব নাই। যে আভাব পূর্ণ
করিবার ভার বঙ্গদর্শন গ্রহণ করিয়াছিল, এক্ষণে বান্ধব,
আর্য্যদর্শন প্রভাবর ধারা তাহা পূরিত হইব। অভএব
বঙ্গদর্শন রাধিবার আর প্রয়োজন নাই। যদি কেহ
বঙ্গদর্শনের এমত বন্ধু থাকেন যে, বঙ্গদর্শনের লোপ
তাঁহার কইদায়ক হইবে, তাঁহার প্রতি আমার এই
নিবেদন যে যথন আমি এই বঙ্গদর্শনের ভার গ্রহণ

<sup>🏓 &</sup>quot;आमात भीवन" २व छात्र।

<sup>।</sup> व्याग्रामम न आर्रेग, ३२५०

र्ग वाक्षव व्यावार्, ১२৮०

<sup>‡ &#</sup>x27;বলদশ'নের' হচনা প্রবন্ধ 'বিবিশ্পাবন্ধ" বৃদ্ধ ভাগে মুদ্রিত হইয়াছে।

করি, তথন এমত সন্ধর করি নাই যে যত দিন বাঁচিব এই বন্ধদর্শনে আবদ্ধ থাকিব। তেই সংসারে এমন আনক গুরুতর ব্যাপার আছে বটে বে, তাহাতে এই জীবন মৃত্যুকাল পর্যন্ত নিবন্ধ রাখাই উচিত। কিয় এই ক্ষুদ্র বন্ধদর্শন তাদৃশ গুরুতর ব্যাপার নহে।

বঙ্গদর্শন আপাততঃ রহিত করিলাম বটে, কিন্তু কথনও যে এই পত্র পুনজ্জীবিত হইবে না এমত অঙ্গীকার করিতেছি না। প্রয়োজন দেখিলে স্বতঃ বা অন্ততঃ ইহা পুনজ্জীবিত করিব ইচ্ছা রহিল।

'वक्रमर्गानत विषात्र' अवस्त विक्रमहत्त वक्रमर्गन উঠাইয়া দিবার স্পষ্ট কোনও হেতু দেন নাই। পুজনীয় মহামহোপাধ্যায় হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশ্য এতৎসম্পর্কে বলিয়াছেন. "( বঙ্কিমচক্র বঙ্গদর্শন ) কেন ছাড়িয়া দেন, অনেকবার জিজ্ঞাসা করিয়াছি, কোন খোলদা জবাব भारे नारे। द्वाकात खलात त्य छेश छाएम नारे, ভা নিশ্চঃ · · · তিনি ছাপাধানার কাজ বেশ ৰুঝিতেন। তবে সম্পাদকতা ছাড়িক্টো কেন. ঠিক ৰুষা যায় না। বোধ হয় তিনি ঝঞাট আল বাসিতেন না, এবং সঞ্জীব বাবুর একটা উপায় হয়, সেটাও তাঁহার देन्द्रा दिन । मञ्जीवतात शूत त्रिक लाक हिल्ला, धकारिन अकलन वर्ष भारत्यत्व महिल त्रमिकला कतिएल গিয়া জাহার ডেপুটিগিরিট যায়। তখন জিনি স্ব-বেজিষ্টার থাকিলেন, কিন্তু এখানেও তিনি বিশেষ স্থবিধা করিজে পারেন নাই। তাই বঙ্গদর্শন একবংগর বন্ধ থাকার পর ১২৮৪ সনে সঞ্জীববাবুর সম্পাদকভায় ষ্মাবার বাহির হয়। কিন্তু বঙ্কিমবাবু কার্য্যতঃ বঙ্গদর্শনের मर्सियम कर्छ। हिल्लन, जिनि निष्क ज निविद्यान्ते. अन বোকের গেখা পছন্দ করিয়া দিতেন, অনেককে বঙ্গদর্শনে ্**লিথিবার জন্ম লও**য়াইতেন, অনেকের জোখা সংশোধন করিয়া দিতেন। পূর্মেও তাঁহার কর্তৃগাধীনে যেমন চলিত বঙ্গদৰ্শন এখনও তেমনি চলিতে লাগিল ।\*

भाक्षी भशामत्र (य निविधाह्यत, "नश्चीववावृत अकेती উপায়" করা বঙ্কিমের বঙ্গদর্শন উঠাইয়া দিবার অকতত্ত্ব উদ্দেশ্য হ'ইতে পারে, ভাষা স্মীচীন মনে হয় মান ডাহা হইলে বৃদ্দৰ্শন পুনঃ প্রচারিত হইবার পুর্বে এক বংগর বন্ধ থাকিত না। এতংসম্বন্ধে কবি নবীমচন্ত্র প্রভৃতি যাহা বলিয়াছেন সব মিলাইয়া দেখিলে মনে वश अवान छः পত্তিকাপরিচাশনের अक्षारहेत पक्षाहे विक्रिश्र क्षेत्र क्षेत्र के विद्या त्या । हाक विद्या विकास উপর 'বঙ্গদর্শনের' ঝঞ্চাট তাহার নিকট প্রায় আত্মকত ব্যাধিতুল্য হইয়া উঠিয়াছিল। হয়ত ধুমা**য়মান** পারিবারিক অশান্তিবাইও তাঁহার বঞ্জাটের বৃদ্ধি করিয়া-हिल। किन्न इशहे भमश कात्रण नरह। विह्यवार् কবি নবীনচন্দ্ৰকে বলিয়াছিলেন শেষ দিনে বঙ্গদৰ্শনৈত্ৰ প্রায় তিন ভাগ লিখিবার ভার তাঁহার উপর পড়িয়াছিল 📢 নিজের ঘাড়ে লিখিবার ভার অধিক পড়ায় অনেক শব্ধে তাঁহাকে সমূরতার সহিত রচিত অপেকারত অসভর মুক্তিপূর্ণ প্রবন্ধবারা 🔹 বন্ধদশনের ফর্মা পূর্ব করিছে হইয়াছে। বাহিরে প্রতিষ্ঠা সম্বন্ধে বাহাই হউক চতুর্থ বর্ষের 'বঙ্গদশন' যে প্রথম তিনবৎসরের 'বঙ্গদর্মন'. অপেক্ প্রবন্ধবিলীর গুণগরিমায় থীন হইয়া পড়িডেছিল, ইহা বন্ধিমচন্দ্র নিশ্চয়ই লক্ষ্য করিয়া থাকিবেন। এদিকে 'আর্য্যদর্শন', 'বান্ধব' জভপদে বঙ্গদর্শনের স্মক্ষতা লাভ করিতেছিল। বঙ্গদর্শনের ব্র**ভোদ**্ যাপনাৰ্ব প্ৰথম হইতেই বৃদ্ধিমচক্ৰকে বাধ্য হইয়া নানা বিষয়ে প্ৰবন্ধ লিখিতে হইত। সাহিতাসেবার জন্ম ববীক্রনাথের ক্যায় বঙ্কিনের অবসর পর্যাপ্ত ছিল না 🎼 মাত্র সকলকে ফাঁকি পিতে পারে, চাকরিকে কাঁকি षिट्छ शाद्र ना। **हाक्**द्रित देशनियन पात्र (बाल व्याना পরিশোধ করিয়া দাহিত্যসেবার জন্ম তিনি ধে সময়টুকু পাইতেন, 'বিজ্ঞানরহস্য' 'লোকরহস্থ' 'সদ্য প্রদাং'

नाबाध्रण, टेवनाथ २०२२ ।

সতয় প্রবধে এতংসয়য়ে য়বিভর আলোচয়য় করিবার ইছয়া রহিল।

ক্ষুভিতে সংগৃহীত প্রবদ্ধাবলীর অধিকাংশের ক্সায় विकास विवादित किया निवास के स्वादित के विवादित के विवाद হুইলে অন্তঃ প্রধানতম উদ্দেশ্য বলিয়া মনে হয়, ডাদৃশ প্রক্রমাশার রচনায় সে সময়টুক্ও ক্রমশঃ অধিক পরিমারে প্রয়োগ করা বদ্ধিমের পক্ষে মহত্তর কার্য্য সামন পটীয়দী শক্তির অপপ্রয়োগ নয় কি ? ডিনি ছারিবংসর যে ভাবে বঙ্গদর্শন চালাইয়াছিলেন, ভাহা নিক্ষাত্র তাঁহার ক্যায় লোকোত্তরপ্রতিভাশালী লোকের প্রিক্ত সম্ভব ছিল। কিন্তু এই চারিবৎসরে তিনি इंग्रंड यत्न कतिशाहित्यन (य. तक्षमर्गत्नत वे नक्ष हुठेकि প্রিলানীর প্রতি তদীয় প্রতিভার শ্রেষ্ঠ দান নহে: এবং তিনি ষ্থের অবসর পাইলে যাহা দিতে পারেন, বল-**বাদ্রীদিগকে ভাহা হইতে বঞ্চিত করিতেছিলেন। ভাই** 👣 🕶 স্বদেশবাসিগণকে স্বীয় প্রতিভার যোগ্য দান बहैट कि विविध का बाधियां वे जिल्ला, वज्र कि लिख শ্রীত সময়ভাবের ফলে 🛊 বঙ্গদর্শন উত্তরোত্তর सिक्डेक्द्र बहनाय शूर्न ना दय (गई क्छ वहियहस विषय निवास निवासिक्षा कि विद्यास কালিদাসের क्रीबाम विक्रमान्य वश्रमण (नव ''यमःगवीदा प्रवाल'' इडेवा ভাষার "ভৌতিক পিণ্ডে অনাস্থা" প্রদর্শন করিয়াছিলেন। ু শনেক বিজ্ঞ ও কৃতীµলৈধক ই 'বন্ধদর্শ নের' ব্রতোদ্ माश्राम शारीया करवन । छ। शास्त्र श्रामन करवककरन्त्र লাম এত্তল উল্লিখিত হইতে পারে; দীনবন্ধ মিত্র, ইংমচয়ে বন্দ্যোপাধ্যায়, জগদীশনাথ রায়, ভারাপ্রসাদ **डोहार्गा, कृष्ककमन डोहार्गा, त्राममान (नन, अक्सर्ट्स** नत्रकात, अकूत्रहा वान्याभाषाम्, नानायाहम विमानिष, **बीक्र**क मान, (बार्शक्याच्या चार हैगानि। আধুনিক কালের যাসিক পত্রিকাগুলিতে যেমন প্রায় প্রত্যেক প্রবন্ধেরই নীতে লেখকের নাম দেওয়া হয়, বঙ্গদর্শনে তাহা হইত না। কলাচিৎ হুই একটি নাম দেখা যায় মাত্র। বঙ্কিমচন্দ্র গল্প ও উপকাস ছাড়া স্বয়ং যে সকল প্রবন্ধ ও সমালোচনা রচনা করেন, তাহার প্রায় সকলগুলিই তিনি উত্তরকালে গ্রন্থাকারে প্রকাশ ক্রিয়াছিলেন। বৈজ্ঞানিক প্রবন্ধগুলি তিনি "বিজ্ঞান ব্রহন্ত" (১৮৭৫) নামে প্রকাশিত করেন। "লোকরহস্তে" ক্রেকটি কৌতুককর চুট্কির সহিত ক্ষচিবিকার-প্রভৃতির প্রতি তীত্র কটাক্ষপূর্ণ প্রবন্ধ সন্ধিবিষ্ট হইয়াছে। 'বিবিধ সমালোচনা' (১৮৭৬) 'উত্তর চরিত' শীৰ্ষক প্ৰবন্ধ 'অবকাশ রঞ্জিনী'র সমালোচনাথক 'গীতি কাবা' প্ৰৰয়, 'প্ৰকৃত এবং অতি প্ৰকৃত' 'বিছাপতি 😉 জয়দেব', শ্রামাচরণ শ্রীমাণি-প্রণীত 'ফ্রা শিরের উৎপত্তি ও আর্য্য জাশিরে শিল্পচাতুরী'-নামক এছের সমালোচনা-মূলক 'আর্য্যজাতির হল্ম শিল্প'-নীর্যক প্রবন্ধ, ও 'দ্রৌপদী' (প্রথম প্রস্তাব) প্রকাশিত হয়। ঐ প্রবন্ধগুলি পরে 'विविध क्षवस' >म चए छान भारेशाहि। 'विविध क्षवस' দ্বিতীয় খণ্ডেও বঙ্গদর্শনের কয়েকটি প্রবন্ধ স্থান পাইয়াছে। উহার অন্ত প্রবন্ধ গুলি প্রচারে প্রকাশিত হয়। 'কবিতা পুস্তকে' (১৮৭৮) বাস্ক্রমের কয়েকটি স্বর্রচিত কবিতা ও ভিনটি ণক্স প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়, স্থিতীয় সংস্করণে ('গন্ত পত্তে') বঙ্গদর্শ হইতে আরও একটি গল্প প্রবন্ধ ( 'ছর্বোৎসব' ) এবং প্রচার হইতে 'পুষ্প নাটক' ও 'রাজার উপর রাজা' কবিতা সলিবেশিত হয়। 'কমলা-কান্তের দপ্তরে' ( ১৮৭৬ ) প্রথমে তাঁহার স্বকৃত কয়েকটি প্রবন্ধই প্রকাশিত হয়, পরে ঐ গ্রন্থ সঞ্জীবচন্দ্র-সম্পাদিত वन्नमन्न इहेट विकास इहिए "कमनाकारसन भाव"-শুলি ও "কম্বা কাণ্ডের পোনান্যন্দী" প্রবন্ধ এবং তাঁহার

<sup>•</sup> ঘিতীয় পর্যায়ের বঙ্গদশনের প্রথম সংখ্যায় বিশ্বদর্শনের পুনরুখান'' প্রবন্ধে বৃদ্ধিম লিখিয়াছিলেন, ইউরোপীয় সাময়িক পত্র ও এতদ্দেশীয় সাময়িক পত্রের বিশেষ প্রভেদ এই যে, এপানে যিনিই সম্পাদক, তিনিই প্রধান লেখক, ইউরোপীয় সম্পাদক সম্পাদকমাত্র— ক্লাচিং লেখক। পত্র এবং প্রবন্ধের উদাহের তিনি বিশ্বদাত্র, স্বয়ং বরক্তা হইয়া স্চরাচর উপায়ত হন না। ধ্রবার বঙ্গদশন সেই প্রণাণী অবস্থন কবিল।"

क्ष्मणां पिछ वक्षम न बहेर्छ अध्यक्षत्रका नवकाव विविध **"চন্তালোকে**" বাজরুক মুখোপাধ্যার "শ্রীলোকের রূপ" এই প্রবন্ধর্য সহ "কমলাকান্ত" **এই मननारक टाकामिछ ह**रू। वनावाङ्गा अक्तर्राव ७ वोकक्ष्य वावृत ध्वेवस्त्रम वन्नम् रन কান্তে"র নামেই প্রকাশিত হইয়াছিল। চতুর্থ বর্বের रक्षण देशत क्षेत्रं मःशाप्तं क्रमनकारस्य নামে প্রকাশিত "মশক"- শীর্ষক প্রবন্ধটি কিন্তু পুণমু দ্রিত হয় নাই। বন্ধিম বলিয়াছেন, উহা তাহার নিজের লেখা मत्द, कादाव (नथा जादा वत्नन नाहे। ध्रवकृति. कि ভাবে, कि बहुनाकी भाव, क्रमताकारखंब সকল প্রবন্ধ হইতে একটু খাটো। "টে কি"-শীর্থক कि थेवक विकास निक तहना हरेलि जुनकार "কমলাকান্তের" দিতীয় সংস্করণের পূর্ব্বে প্রকাশিত হয় नारे। कि ভाষার মাধুর্য্যে, कि ভাবের মনোহারিছে, কি শুত্র, সংযত, সরস রগিকতায়, কি অকৃত্রিম স্বদেশপ্রেমে क्रमनाकास वन्नमर्गत्नत (गीत्रव। क्रमनाकास এकदारा কবি, দার্শনিক, সমাজশিক্ষক, রাজনীতিজ্ঞ, ও বদেশ-প্রেমিক; অথচ তাহাতে কবির অভিমান, দার্শনিকের আভ্রের, সমাজশিক্ষকের অরসজভা, রাজনৈতিকের কল্পনাহীনতা, স্বদেশপ্রেমিকের গেঁ।ড়ামি নাই। হাসির সঙ্গে করুণের, অভ্তের সঙ্গে সভ্যের, তরলতার সহিত মর্মদাহিনী জালার, নেশার সঙ্গে তত্তবোগের, ভাবুকতার পৃথিত বস্তুত্তভার, শ্লেষের সহিত উদারতার এমন মদোমোহন সমন্ত্র কে কবে দেখিয়াছে ? কেহ কেহ এখনও জিজাসা করে কমলাকান্তের দপ্তরের মৌলিকতা ক্তৰানি ? হায়রে অনৃষ্ঠ ! "মৌলিকতা মৌলিকতা" (मरमंत म्हिंगात्वरे আপনাদের মৌলিকতা সন্দেহ করিতে করিতে, দেশটা অধঃপাতে ষাইতে বসিয়াছে। কৈশোৱে "কমলাকান্ত" প্রথম পাঠ করিবার পর যখন বিশ্বরে আত্মহারা হইয়াছিলাম. ভেখন ইংরাকী সাহিত্যে জানাভিযানী এক ব্যক্তি বড়

গন্তীরভাবে বলিয়াছিলেন, "ওটা De Quinceyর Contessions of an English Opium-Eater অনুকরণ।" বড় হইয়া বৃথিয়াছি উহা পণ্ডিতের বেলাক উক্তি নয়। কমলাকান্তের ত্ই দশটা উল্লিব অনুর্বাধ উক্তি বিশাল ইংরাজী সাহিত্যের কোবাও নাই এবন কথা বলিব না, কমলাকান্তের লোবানবন্দীর আদেশে রহিছ ইয়াছে ভাহাও বিখাদ করি, তরু বলিব উথাতে কমলাকান্তের মৌলিকভার হানি হয় নাই।

সেকালের কোনও লোককে এখন বল্প বের विष्यायुत कथा किळामा कतित थात्रहे छना है। বঙ্গদৰ্শ ন গ্ৰন্থাদি সমালোচনায় যে ক্লতিভ দেশাইলাছিল তেষনটি আর বাঙ্গলা সাহিত্যে হয় নাই। বঙ্গদেশ নেয় সমালোচনা সম্বন্ধে বলা হইয়াছে, বঞ্চিম একইট পুलायाना, अन राष्ट्र मन्त्रार्क्तनी नरेशा পुत्रक्रमार्गाइनाइ অগ্রসর হইতেন। যে সকল লেখকের রচনার প্রতিভার চিহ্ন না পাইতেন, বালালা সাহিত্য ভাহাদের হ কণ্বয়নের উৎপাতে উৎপীড়িত ও ভারাক্রাঞ্চ না পড়ে তজ্জ্ঞ তিনি এমন তীব্ৰ সমালোচনা করিতেন ক্র তাদৃশ লেখক যেন গোড়াভেই সাহিত্যস্থীর ছুরীলা পরিত্যাগ করে। কিন্তু বৃদ্ধিমচন্দ্র যথার্থ ভব্বাস লোককে যথোচিত স্বাদর করিতে কুণ্ডিত হইতেন ন এমন কি প্রতিযোগী পত্রিকাগুলিরও মৃক্তকঠে গুলী कतिएक । 'वार्यानम न' मद्यक वक्रमम न विद्या किर्मन "এবানির বিশেষ পরিচয় দেওয়া অনাবশুক, আপন্তি গুণে ইহা সকলের নিকট পরিচিত হইয়াছে।" "বাৰ্ট্ট্রী পত্তিকা প্রকাশিত হইলে বঞ্চিম বলিয়াছিলেন- পাটিক বাদালায় অনেক গুলি উৎকৃষ্ট মাধিকপতা প্রকাশিত হইতেছে, কিন্তু পূর্ম বাঙ্গালায় সেরপ ছিল না। খ্রাচ পুর্ববঙ্গবাসিগণ পশ্চিমবঞ্গবাসিগণ অপেকা বিভাবুদিতে নান ইহা আমরা স্বীকার করি না। অভএব ঢাকী হইতে এই উৎকৃষ্ট মানিক পত্তের প্রকাশ আরম্ভ হ**ইয়ালে** 

শাৰ্থক বিশেষ প্ৰীতিলাভ করিয়াছি। ···· ক্তু হইলেও গুণে অন্ত কোন পত্রাপেকা সমু শ্রমাদিগের বোধ হইন না। রচনা অতি পুন্দর লেখকদিলের চিন্তাশক্তি অসামায়। ইহা যে विद्वा धंकेषानि मर्स्कारकृष्टे भक्त यासा भना हहरक शिरत व्यायोगिरणत मः मग्न नारे।" · म्यारलाहरकत ব্যবস্থাৰ বৃদ্ধিয়ে এমন উচ্চ ধারণা ছিল যে. মান্ত্রে হারাণচন্ত্রকে তিনি বলিয়াছিলেন, "যদি হৈছ্যের যথার্থ উপকার করিতে চাও, তবে প্রকৃত ক্রিকা করিতে সুরু কর।" অবশ্য সমালোচনার ৰীয় কথনও কথনও বহিম যে মাত্র। অতিক্রম ৰিয়া না যাইতেন তাহা নহে। কবি আনন্দচন্ত্ৰ विक्तिना कार्याद मगार्गाहना देशाद पृष्ठीखन्त। পরে আর ঐ বিশ্বতপ্রায় সমালোচনার বিবেশ উদ্বত করিয়া উক্ত কবির প্রতি সাধারণের ব্যাহর নবীরত করিতে বাহা করি না। বস্তুতঃ কবি নিক্রত বে শক্তিহীন ছিলেন তাহা নহে; বঙ্গদর্শনের বে লোচনাই তদীয় যথোচিত প্রতিষ্ঠার প্রধানতম ভার ইইরাছিল।

শ্বরুদ্ধ নের স্মালোচনায় শ্রন্ধাপদ অক্ষয়চন্দ্র স্বকার মারা বৃদ্ধিনির প্রধান সহযোগী হইয়াছিলেন। অক্ষয় শূলিক্ষান্ধবিশের পঞ্চ" নামক পুতিকাখানি উপলক্ষা ক্রি ক্রার প্রতিভাশালী গছলেখক অন্নই বন্ধদেশে ক্রেই করিয়াছেন।" + স্মালোচনায় অক্ষয়বাব্র তথা ক্রেইনার ক্রতিহস্থাকে শ্রীর্ক্ত বিপিন্চক্ত পাল মহাশয় শূলিয়াছেন তাহা এপ্তলে উদ্ভ ইইবার যোগ্য— এক স্ময়ে অক্ষয়চন্দ্র বৃদ্ধিনিত ব্রুদ্ধ নির প্রধান ক্রিইয়া উঠেন। সেকালের ব্রুদ্ধ নি অক্ষয়চন্দ্রের (काम कान बहुन। कर्ष विषयहास्त्रेत वित्रा भरेलक बहुक । গ্রন্থসমালোচনার ভার অক্ষাচন্দ্রের উপরই অর্পিড ছিলা শন্তবতঃ কোন কোন সমান্সোচনায় বহিমচন্দ্রের ভাপ'ও-থাকিত। সেই সব সাহিত্যসমালোচনার মধ্যে উাদাদের ग्र अगन कतिया अथरत मधुरत मिनाहेर्ड अगन करून কঠোর ক্যাঘাত করিতে আর ক্রেছ পারিতেন কি কা भत्नर। 'भानकनिवाभिनः मधुरुकन भन्नकात्रश्च' (क बहे ত্রিশ পঁয়ত্তিশ বৎসরেও ভূলিতে পারি নাই। ..... ফলভঃ विकास विकास के अठात विकास विकास करिया वाकाला . শাহিত্যে সেরপ সমালোচনার নিপুণতা আর কোথাও **प्रिंग्डिं का । नवश्याप्र वश्रमण (न औयुक्त हम्रात्मधन्न** মুবোপাধায় মহাশয় কিছুদিন সে ধারা রাখিয়াছিলেন, व्यात भारत भारत नाहिङा-मन्नाहक महानग्न (म भूतान স্বৃতিকে জাগাইয়া তুলেন। কিন্তু সচরাচর আর বাঙ্গালা সাহিত্যে সমালোচকের ধর্মাগনে এমন একটিও যোগ্য वाक्तिक क्षिथिटल भारे ना। देश्वादबंद लामानटल रयमनः মোকদমার সংখ্যা যতই বাড়িতেছে, ততই সরাসরি বিচারের পদ্ধতিটাও অঘণা পরিমাণে প্রচলিত হইরা পড়িতেছে, কালালা সাহিত্যেও গ্রন্থকারের সংখ্যা যভই वाषिया याहेट अरह, ७७३ मनामति ভাবে मभामाननाई প্রবৃত্তি ও বীতিও যেন বাড়িয়া চলিয়াছে। বাসালা गहिए। এখন অনেক एटल স্থালোচকের পদে মোসাহেব অধিষ্ঠিত হইয়াছে। এ অবস্থায় সাহিত্যের প্রমানরক। বান্তবিকই দায় হইয়া পড়িয়াছে। আর চারিদিকে এই অবনতিধারা প্রতাক্ষ করিয়াই বৃদ্ধিচন্ত্র ও অক্ষয়চন্ত্ৰ যে কাজটা একসময়ে এমন অসাধারণ ক্বতিত্ব সহকারে করিতেন, তাহার মূল্য ও মর্গ্যালা যেন আমার চলে ক্রমেই বাভিয়া যাইতেছে।

বিপিনবারু কয়েকজন দক্ষ সমালোচকের মার করিয়াছেন বলিয়া স্তোর অভবোধে বলা আবশ্যক যে:

ब तकमण ने आवित २२५३। के वकमण ने बाधिन २२५३।

<sup>\*</sup> ইাসুক্ত বিশিন্চন্দ্র পাল-প্রণীত "চরিতকথা" ২১৮-২১৯ পৃষ্ঠা।

শ্বিষ্ণের স্থান্থারিক সাহিত্যিকগণের যথ্যে আর একজন
শ্বারণী স্থানোচনায় যে কৃতিত্ব প্রদর্শন করিরাছিলেন,
এক বৃদ্ধিচন্দ্র বাতীত তাহার অন্ত তুলনা নাই। ইনি
শাদ্ধবস্পাদক পরলোকগত কালীপ্রসন্ন বোষ মহাশর।
স্থানিপুণ গুণগ্রাহিতায় কালীপ্রসন্ন বক্ষিম অপেকা বড় নান
ছিলেন না। পলাশীর যুক্ত, দশমহারিদ্যা, বুত্রসংহার
প্রভৃতির স্থালোচনা ইহার দুরাত্রস্থল। কিন্তু কোনও
গ্রাহের নিন্দা করিবার সমন্ন ব্যাহ্রসন্থল। কিন্তু কোনও
গ্রাহের নিন্দা করিবার সমন্ন ব্যাহ্রসন্থল। কিন্তু কোনও
গ্রাহের নিন্দা করিবার সমন্ন ব্যাহ্রসন্ধালোচনার তার ভদীর
স্মালোচনার বিদ্যুপের ফিল্ডালা কদাপি উৎকট ভাব ধারণ
করিত্র না। কালীপ্রসন্ধ সাধারণ ভাবে দোহ প্রদর্শন
করিয়াই ক্ষান্ত হউতেন, কথনও কথনও বা উদারতাবশে
গ্রন্থকারের অন্তভাকে মুদ্রাক্রের প্রমান বলিরাও উপেকা
করিতেন। অ্যোগ্যের প্রতি বৃদ্ধিনের তাদুশ উদারতা
কথনও দেখা যাইত না।

সমালোচনা অর্থে সাধারণতঃ কোনও একথানি গ্রন্থের **लामखन जनमानहे द्याप्र।** বন্ধিমের ও কালীপ্রসম্পের नमारनाहमात्र व्यानर्ग देश व्यापका व्यानक डेक्ट हिन। গ্রন্থসনালোচনা উপলক্ষ্য করিয়াও লোকের বুঝিবার, শিথিবার ও ভাৰিবার যোগ্য কত কথার অবতারণা করা ঘাইতে পারে বাঙ্গালার সেকালের বঙ্গদর্শন ও বান্ধবের সমালোচনা ভাছার উদাহরণম্বল ছিল। বঙ্গদর্শন ও বান্ধবের পরে বাণীর বরপুত্র রবীজনাথ প্রাচীন ও আধুনিক নানা গ্রন্থ লইয়া এরণ. এমন কি স্থলে স্থলে তদপেকাও উজ্জলতর, সমালোচনা আমাদিগকে ভনাইয়াছেন। রবীক্রনাথের "প্রাচীন সংহিত্য" "আধুনিক সাহিত্য" "লোক সাহিত্য" নামক গ্রন্থত্যে অক্স কতকগুলি সমালোচনা প্রকাশিত হইয়াছে। বাঙ্গালায় সংস্কৃত গ্রন্থের সমালোচনা বিদ্যাসাগর মহাশ্র হইতে আরক্ বিদ্যাদাগর মহাশব বীটন দোদাইটিতে रुषेत्राट्ड। (Bethune Society ) "সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্য-বিষয়ক প্রাক্তাব" নামক এক প্রবন্ধ পাঠ, করেন, উহাতেই ৰাঙ্গাণায় সংস্কৃতসাহিত্যের আলোচনা প্রবর্তিত হয়। বিদ্যাদাগুর মুহাশয়ের আলোচনা অপেকারুত সংকিও;

किन प्रक्षि इहेरा ३, এम्पल कावामभागाताहमात्र आहे। व्यानकातिकगरनत व्यवनश्चित्र भग शतिहातश्चरिक मुजन हो যুকোপীয় সমালোচকগণের অবলম্বিত পদ্ধতি সর্বাধ্য উহাতেই অধুস্ত হয়। আমাদের দেশের আলভারিকগণের বিবেচনায় রসাত্মক বাক্যমাত্রই কাব্য ছিল। কাবাকে বড় খুচরা ভাবে দেখিতে দেখিতে তাঁহারা সমুদ্ লোচনার আদশ খুব ফ্রা করিলেও বড় থকা করিব ফেলিয়াছিলেন। যে প্রত্যেক লোমকৃপ নিপ্রভারে পর্যাবেকণ করিতে চার, সে সমন্ত দেহের সৌন্দর্যা উপলব্ধি করিবার যথেষ্ট স্থযোগ পায় না ; এমন কি, হয়ত জমে জমে তাহার সে কমতা লুপ্ত হইয়া ধায়। প্রাচীন স্মালক্ষারিকগণেক **ट्रिक्ट एति पछित्राहिल. এवर उँ। शास्त्र इत्लायू वर्धन करि** কবিগণেরও নেই দোষ ক্রমে বড় বিকটাকার ধার্ম क्रिक्सिष्ट्रिंग। रेन्यभहित्रे के विक्रि-क्रित्र डेमारुत्रम्। नेन्-দময়ন্তীর কথা মহাভারতের অন্তর্গত একটি অতি রম্পীর खेलाशान । नन मगत्रश्रीत शुक्रताश, विवाह, विवाहक शर्ब উভয়ের রাজাচাতি, বনবাদ, নল-কর্তৃক দময়ন্তীতাগি, শিক্তি প্নশ্বিলন-এইরূপ উহার সকল অংশই মনোরম হইবের বিবাহের পর হইতে পুনর্শ্বিলন পর্যান্ত অংশটুকুই অবশ্ব मर्ट्सारक है। किन्न बीर्स नग-ममस्त्रीत कथावनवरन कांबा লিখিতে বসিনা কেবল পূৰ্বরাগ ও বিবাহ অংশটুকু গ্রহণ করিলেন, এবং উটুকু লইয়াই 'রদায়ক বাকা' বোজনা করিতে করিতে স্থণীর্ঘ দাবিংশতি সর্গ লিথিয়া ফেলিলেন এমন অমুচিত ফেনান ফাপান সত্ত্বেও আমাদের দেশীয় পশ্তিভগণের ঢক্ষে উহাই সর্কোৎকৃষ্ট কাব্য। "তাবছু 🕏 ভারবের্ভাতি যাবনাগজ নোদয়:। উদিতে নৈবধে সারো ক্ল মাখ: क চ ভারবি: ॥" ইতালীর রিনাইসেন্সের (নববুগের) পরবর্ত্তী কালের শিল্প ও সাহিত্য সৃষদ্ধে বলা হইয়াছে বে, Seits there was an absence of what is big, and in its place there was excess. कानिनान ভবভৃতির পর হইতে সংষ্ঠ সাহিতোও বৃহৎ কিছু পট হয় .नाहे : याहा इटेबाएक जाहाएक जाहकाविकशन कर्जक

ক্ষাংসিত, কতকগুলি ধর্মের অয়থা বাড়াবাড়ি দেখিছে শাই ৷ বিদ্যাসাগর মহাশর স্বভাবসিদ্ধ স্থক্তি ও সঞ্চরতা-ব্রালা, এবং সম্ভবতঃ ইংরাজীশিক্ষার গুণে আলঙ্কারিকগণের ক্রবলম্বিত সামালোচনপ্রতির সঙ্কার্বতা লক্ষ্য করিয়াছিলেন। 🗱 ভরচরিত সমালোচনায় বঙ্কিনচন্দ্র একটু অভিরিক্ত জেদের गहिन्ह আলম্বারিকগণকে আক্রমণ করিয়াছিলেন। আৰম্ভারিকগণের রীভিতে ছই একটা দোষ থাকিলেও ভারতে কতকগুলি গুণও আছে, কিন্তু ব্যৱস্থিত জেদ ীৰ্শতঃ ভাহাদের যথার্থ গুণগুলি আদৌ দেখিতে পান নাই। প্রশিষ্ঠাত্য দেশে কাবা স্থালোচনায় এডিশন, জনদন পর্যায় প্রায় একই ব্রীতি প্রচলিত 1871 অবশা প্রত্যেক সমালোচকেরই নিজ নিজ বিশিষ্টতা আছে। এই ব্লীভিতে প্রাচীন (এীক) আলিকারিকগণের প্রভাব অধিক। জনসনের পর এক অৰপদ্ধতি প্ৰবৃত্তিত হয়। এই যুগের সমালোচকগণ এীক আল্ছারিকগণের প্রভাব হইতে প্রায় মুক্ত ছিলেন। স্মেশরিক, মেকেল প্রততি ইহার উদাহরণ। ৰিছমন্ত্র **অভিসারেই হউক বা অজ্ঞাত্যা**রেই হউক মেকলের সমালোচন -আছতিই আপর্শ করিরাছিলেন বলিয়া মনে হয়। তবে ক্ষেত্রবের মত তিনি অহচিত অত্যক্তিপ্রিয়তা প্রদর্শন করেন শাই। পে ঘাহা হউক, উত্তর চরিত বা জ্মদেৰ বা বিভাপতি জাৰৰে বৃদ্ধিমচন যাহা যাহা বলিয়াছেন, তাহা সুবই অলাভ ৰীৰা বিখাস না করিয়াও তাঁহার স্ফ্রচিন্মত রুলজ্ঞতা 🛊 হল্পদৰ্শিতার প্রতি আমরা চিরকাল আদরবুক্ত থাকিতে সারি ব 💌 এডুকেশন গেজেটে প্রকাশিত ও ভূদেবলিথিত

ক বিষমচক্র 'জন্মদেব ও বিদ্যাপতি' প্রবন্ধে যে সব মন্ত ক্রম্ব করিন্ধাছন, শ্রদ্ধান্পদ শ্রীকৃক সতীশচক্র রায় এম্, এ, ক্রম্বার অসম্পাদিত সাহ্যাদ গীতগোবিনের ভূমিকার উহার স্বিক্রির আলোচনা করিনাছেন। জন্মদেবসম্বন্ধে সতীশবাব্র ক্রম্বানিক সর্বার বিনাপত্তিতে প্রহর্ষণাগ্য হর নাই। বহিনের ক্রম্বেরসম্বন্ধিনী উক্তিশুলিতে বিশেষ আপত্তিকর কিছু নাই,

ওড়াবলীর্সমলোচনা ও অন্তর্গপি হাদরগ্রাহী। ইহার পর স্থীবচন্দ্র সম্পাদিত বঙ্গদর্শনে ৮চন্দ্রনাথ বস্তু শকুন্তলার সমালোচনা করেন। কবি নবীনচক্র নানাকারণে চক্রনাথ বস্তব প্রতি ক্ট ছিলেন, তাই 'আমার জীবনে' কোথাও তাহাকে "নইচক্ত" বলিয়াছেন, কোথাও "নন্দী" বলিয়া বিজ্ঞপ করিয়াছেন, কোথাও বা বলিয়াছেন যে চক্রনাথ বত্র 'বিশ্বমহর্ষ্যের প্রতিভায় প্রতিভাত চন্দ্রমাত্র, সন্ধ্যার সময়ে বঙ্কিমবাবুর স্বাড়ী প্রত্যহুই জুটিতেন, এবং বৃদ্ধিমবাবু যে সন্ধ্যায় যে বিষয়ে আলাপ ও ব্যাখা করিতেন, তিনি পরদিন তাহা বিনাইয় ফেনাইয়া প্রবন্ধ লিখিতেন"। \* কিন্তু চন্দ্রনাথ বস্তব শকুন্তলাতত্ব এক সময়ে থব আদরলাভ করিয়াছিল। অবশ্র ইহাও স্বীকাৰ্য্য যে শকুমূলাভত্ত থুব দীপ্তিমতী প্ৰতিভা ৰা च्रमुत्रवािशिनी मञ्च्यमञात श्रीताश्च नत्ह, वार तारे कारे রবীক্রনাথের ''শকুন্তলা" ও 'কুমারসম্ভব ও শকুন্তলা" প্রভৃতি প্রবন্ধ প্রকাশিত হইলে উহা মান ও বিশ্বতপ্রায় হইয়া পড়িয়াছে। চক্রনাথ বহুর পরে প্রাচীন সাহিত্যের বছ স্মালোচকের অভাদয় হইগাছে, সকলের ক্রতিত্ব এ প্রথম व्यात्नाहमीत्र नरह। त्रवीक्तनार्थत्र नाम शूर्व्यहे উन्निधिष्ठ হইয়াছে: পণ্ডিতবর রাজেজনাথ বিভাভ্যণের কালিদাস, 'শ্রীকণ্ঠ' প্রভৃতি গ্রন্থও অনেকেরই পরিচিত। সর্বশেষ

কিন্ত বিশ্বাপতিবিষয়ক উক্তিগুলি চণ্ডিদাসকে উপলক্ষ্য করিয়া বাললেই বোধ হয় বন্ধিমের প্রয়োজন অধিক সিদ্ধ হইত।

"বিষ্তুক্ষে" ছ্রনেব ঘোষালের পত্তে প্রসক্ষক্রমে সংক্ষেপে কান্যে প্রবিদ্ধর আদর্শ আলোচিত হইয়াছে। ঐ স্থানে হরদেব ঘোষাল কালিদাস, বায়রণ ও জয়দেবকে এক শ্রেণীতে ও সেক্ষণীয়র, বাল্লীকি, ও শ্রীমন্তাগবতকারকে অস্ত শ্রেণীতে কেলিয়াছেন। হরদেব ঘোষালের মতে কালিদাস রূপন্ত মোহের কবি। এই উক্তি নিতান্তই অসমীচীন ও অযৌজিক।

" "আমার জীবন", হেম ভাগ ৩০---৬৭ পুঁঠা ব

কিন্ত কোনও কোনও হিদাবে সর্ব্বোপরি, পূজাপাদ মহামহোপাধার শ্রীযুক্ত হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশরের নাম উল্লেখযোগ্য। পাশ্চাত্য দেশে অপেকারুত আধুনিক কালে সাহিত্য সমালোচনার 'বৈজ্ঞানিক প্রণালী' নামে যে প্রণালী অবলন্ধিত হইরাছে, তদমুরূপ সমালোচনা বাঙ্গালার একরূপ মহামহোপাধ্যায় শাস্ত্রী মহাশর হইতেই আরক্ষ হইরাছে বলা যায়। কিন্তু ইহা আরম্ভমাত্র। বিজ্ঞ ও সহৃদয় ব্যক্তিগণের হতে ইহার বহল প্রসার বাঞ্জনীয়।

( ঢাকা সাহিত্য-পরিষদের মাসিক অধিবেশনে পঠিত )

প্রিঅক্যকুমার দত্ত গুপ্ত কবিরছ।

### অতিথি। ( ক্বিতা)

( 5 )

সে-দিন প্রভাতে অজ্ঞানা অতিথি দাঁড়ালো' হয়ারে আসি;
কিছু না বলিয়ে,—চলে' গেল কোথা; অধরেতে মৃহ হাসি।
ভাকিছ ভাহারে; বলিল সে সুধু,—''আলকে চলিছ ভাই;
ভূলে' এসেছিছ; অপরে ডেকেছে;—তুমি মোরে ডাক নাই।"

( 2 )

বিংশতি বর্ষ চলিয়া গিয়াছে;—তার কথা মনে নাই।
সহসা সে-দিন মনে হ'লো,—'তার কোথা গেলে দেখা পাই'!
তথ্ম,—আফাশে বড় ঘনঘটা,—চপলা চমকি ধায়;
ভীম প্রভন্মন,—প্রবল বঞ্জা,—মেদিনী কাঁপায়ে যায়।

(0)

ভাবিত্ব গে-দিন,—বৃষ্টি-বাটিকা থামিলে পুঁজিব ভারে; ভথনি দেখিতু,—অভিথি দাঁড়ারে আসার কুটীর বারে। এ-ঘোর ত্র্যোগে আমার সন্ধানে সহিন্নাছে ক্লেশ কও । —কেন-জানিনা-কো, তাহারি চরণে করিন্ন মস্তক নত !!

बीक्रात्रमहत्त्र चढेक ।

# মুর্শিদাবাদে একদিন।

বাংলা সাহিত্যে ভ্রমণ বৃত্তান্তের অভাব নাই। তার্ক্তর
ভ্রমণ" "দক্ষিণাপথ ভ্রমণ" ''উত্তর-পশ্চিম ভ্রমণ" "কার্ক্রার
ভ্রমণ," ''ফুলরবন ভ্রমণ"—ভ্রমণের একেবারে দিখিকার
ভ্রমণের ঘূণীবায়ুতে একবার পাইয়া বসিলে চরিরা বেডাইবার
ইচ্ছাটা যে দেশ চতুঃদীমার মধ্যেই আবদ্ধ থাকিবে, অন্ধ্র
হুইতে পারে না। কাজেই ''চীন ভ্রমণ" ''আপান ক্রমণ''
ও ''ইউরোপ ভ্রমণ"; "কবরের দেশে" ও ছনিরার পশ্চিক্তর
প্রান্তে ''গতাগতি; এবং ভূপ্রদক্ষিণ।

সে দিন আর নাই—যথন আমাদের মহিলারা জন্ধার্কন স্বের সংকীণ গণ্ডির মধ্যেই জীবন কাটাইরা দিতেল এবং অকাল বৈধব্যের আশকার লেথাপড়ার চর্চা হইতে ধবাসকর দূরে থাকিতেন। ত্রমণ এখন তাঁহাদের পক্ষে অবাভাবিক্তির প্রকিল্যাক্তির করিতে পারিলে, সমন্ত পৃথিতীই সম্মূথে মৃক্ত—প্রসারিত। আর বাংলার কথাসাহিত্যকৃত্র কিথন তাঁহাদের কলরবেই মুথরিত; কবিভার তাঁহাদের কলরবেই মুথরিত; কবিভার তাঁহাদের কলরবেই মুথরিত; কবিভার তাঁহাদের কারবেই মুথরিত; কবিভার তাঁহাদের কারবেই মুথরিত; অবং বালনৈতিক সাহিত্যগগণেও তাঁহারা উকি ঝুকি মারিতেত্বেল, আভাব পাওয়া যায়। এমন অবস্থার আমাদের কোনও ভূতপ্রা, অম্থাত্রপার্গা 'নিশীথ স্বর্যার দেশ' পর্যাটন করিয়া 'নমাওকে ভ্রম্ব' লিখিলে বিশ্বিত হইবার কারণ নাই।

বংসর করেক পূর্বে প্রতাপাদিভ্যের ধীলাভূষি ঈশরীপুর (প্রাচীন বশোর ) এবং বিশুকুলোভ্তর কবি শ্রীমধুস্বদেশ

সাধ্য সাগারদাতী দেখিতে গিয়াছিলাম। চারিদিকে স্রমণ হৈছে ছয়ছড়ি দেখিয়া মনে হইয়াছিল যে আমিও একটা বুতার বিথিয়া ফেলি—''ঈধরীপুরে অর্মঘন্ট।" কি প্রিক্সাড়ীতে দতেরো মিনিট"এমনই একটা কিছু। কিন্তু কুলায় নাই। তারপর গঙ্গা, ব্রহ্মপুত্র ও মেঘনার দেক ভল সাগরাভিমুখে বহিয়া গিয়াছে। অনুমান ক্রিতে পারি বে অন্ততঃ অমুবাদের অমুবাদ সাহাযোও আক্রাল অনেকেই "৮০ দিনে ভূপদ্ফিণ" করিয়াছেন, বেলুনে পাঁচসপ্তাহ" উড্ডীর্মান হর্যা "আকাশ ক্ষিয়াছেন। "দাৰ্জিলিকে ছই স্থাহ" কি সম্প্ৰতি প্রান্ত শান্ত নিকেতনে একরাতি" যে আমার নির্বাপিত-ত্তিংসাহকে উদাপিত করে নাই তাহা বলিতে পারিনা। স্থান আমার "মূশিদাবাদে একদিন" সাধারণ্যে প্রকাশ নিক্ত সাহসী হইয়াছি। তবু এখনো একটা প্রোপ্রি ক্ষে আসংর নামিতে ভরসা পাই নাই। চাই কি, শ্ব এঘন দিনও আসিতে পারে বর্থন 'ব্যাগরদাড়ীতে বিনিট "বুইয়া লোকসম্পে দাড়াইবার ছপ্রবৃত্তিও ব্যক্তেশককে পাইরা ব্যাতি পারে।

ুলাড়াতেই একটা কথা রলিয়া রাখাভাল। সামার

ক্রিন্দ রুত্তান্তে ''ভ্রনণ'' ৪ বিশেষ নাই, এবং 'বৃত্তান্তেম' ও

ক্রিন্দ বৃত্তান্তে 'ভ্রনণ'' ৪ বিশেষ নাই, এবং 'বৃত্তান্তেম' ৪

ক্রিন্দ বৃত্তান্তেম 'ভ্রনণ'' ইকুর জন্ত টি. টি. চি. চি.

ক্রিন্দ বৃত্তান্তিম টেবল (মূল্য মাত্র হই আনা) দেখিলেই

ক্রেন্দ স্থানারাদ দর্শনে আমার মনে যে ভাব হইরাছিল,

ক্রিন্দ্রে ভাষা ইকিয়া রাখিবার থেয়াল হইয়াছিল। আজ

ক্রিন্দ একটি ক্রে প্রবন্ধাকারে পাঠকবর্গকে স্নক্ষোচে

ক্রেন্দ্র করিতেছি।

নৈশিদাবাদ কাহিনী' পড়িয়া অবধি মুসলনান কীর্ত্তির

ক্ষেত্রান মুর্শিদাবাদ দেখিবার জন্য একটা প্রবল আগ্রহ

ক্ষেত্রাজিল। সে বংসর শিবরাজির ছুটা উপলক্ষে এই

ক্ষেত্রাজিক ক্ষিত্রার স্থযোগ ঘটে। রাজির ট্রেণে

ক্ষেত্রার ক্ষেত্র সাম্যা তিন জন বংগানা হই। ক্রমে

আমরা মুশিদারাদ ষ্টেশনের সন্ধিতিত হইলাম। ভোরের আলো তথন সবে মাত্র ফুটিয়াছে। ঔৎস্কের সহিত বাহিরের দিকে চাহিবামাত্রই অদুরে মতিঝিলের রমণীর দৃশ্র দৃষ্টিপথে পতিত হইল। কি স্কল্য !—বেন নিপুণ শিল্পার সবদ্ধ অভিত একটি মনোরম আলেখা। "The morning shows the day" (প্রভাতেই দিবসের স্কুচন্ট হয়)। স্কুডরাং দিনটা বেশ ভালাই কাটিবে মনে করিয়া আমরা উৎস্কুল্ল হ্রুনয়ে ষ্টেশনে ক্ষর্ভরণ করিলাম।

প্রাচীন মূশিদাবাদ এখন বহরমপুর জেলার বালবাগ
সবভিভিদনে পরিণত ইইয়াছে। এই থানেই মতিঝিল,
এবং মূশিদকুলি থার সমাদিমন্দির কাটরার মসজিদ;
এইথানেই মবারক মঞ্জিল এবং ক্সপ্রাসিদ্ধ ভাষান কোষাভোপ;
এই থানেই নবাবের হাজার ছয়ারি প্রাসাদ; অনতিদ্রে
জাফরাগক্ষে মিরজাফরের ভবন, সিংক্রের বগাভূমি, এবং
নবাব নাজিমগণের সমাধি স্থান; মহিমাপুরে জগৎ শেঠদিগের ভবনের ধ্বংসাবশেষ। ভাগিরথীর অপর তীরে
থোসবাগের ছায়া শীতন আমকুজে সিয়াজ ও আলীবর্দি
চিরনিদ্রিত।

মুশিদাবাদের প্রতি ইইক এবং প্রস্তর থণ্ডের এক একটা ইতিহাস রহিলাছে বলিলে অত্যাক্তি হয় না। প্রতিপদে তাহার অভাত গৌরবের জীর্ণ ভ্যাংশ মাত্র দৃষ্টি পথে পতিত হইরা ফ্রন্থ মধ্যে কেমন এক করুণ বেদনার স্থান্ট করে। অর্থপাওকারুতি মতিঝিলের স্থুরমা জলবেনীর মধ্যে প্রাক্তি মুকুলিত আত্রকুঞ্জের আড়াল হইতে স্থা-ধবল ইমামবাড়ী কাল্পনের বিপ্রমন্থর উবালোকে আমার মুগ্রচক্ষে সে সৌন্দর্য্যের ছবি ফুটাইলা তুলিরাছিল, তাহার আভাসমাত্র দেওমাও আমার পণ্ডে অন্তর্য। যদিও মতিঝিলের জলরাশিকে আর "pearly" (মুক্তাসন্তিত) বলা যার না; মদিও আত জানে ভাবে শুক্ হইরা পড়িরাছে; যদিও জ্যোৎমা-পুল্কিত বানিনীতে ইতন্ততঃ সঞ্চরমান প্রমাদ ভ্রণীর উপর হইতে কলক্ষ্ঠ গামিকাগণের স্থম্বর সন্ত্রীতল্ভরী মতিঝিলের স্বির্বাশিকে আর উব্লেক করিয়া হোকেনা;

তবু এখনও তাহ। মনোহর। এখনও তাহার নিশালবক বিকশিত কমলদলে পূর্ণ; এখনও তাহার তীরস্থ উল্লান-বাটিকার পথগুলি ''লাখা থরগর, পাতা-মুরুমর, ছায়া স্থশীতন"; এখনও তাহার আকাল ''কপোত-কৃত্রনকরুণ'', তবে উলাদের পরিবর্তে বিষাদের অদুভা অথচ অনুভবণীয় একটা কৃত্ব আবরণে যেন ভাহার স্বর্ণাংশ আবৃত।

কাটরার বিরাট মসজিদের প্রবেশ দ্বারের সোপানাবলীর निश्च धकर्ती कुछ अक्षकात्रमय आकार्ष्ठ मुनिमानाम नगतीत প্রতিষ্ঠাতা মূর্শিদকুলি গাঁ অনন্ত নি দায় শয়নে রহিয়াছেন। মস্জিদ-প্রবেশার্থী পুলামালনের পদর্শল যেন তাহার বংকর উপর পতিত হয় এইজ্ঞা সোপান নিম্নে সমাহিত ১ইবার ইচ্ছা তিনিই প্রকাশ করিয়া গিয়াছিলেন। সহিত বিনয়ের অপুর্বে স্থিলন। প্রবেশদায় অভিক্রম कविता विभाग हजुद्र । हाक्त्रव पश्चिम पार्च अनुस्य मन्त्रिम । অন্ধভন্ন গগনস্পাণী গমুজ চুড়া তাহার পূর্বগোরবের শেষ চিহ্ন। কিন্তু বিশ্বদংগা কাল বুঝি অভি রেট সে শেষ চিহ্ন টুকুও বিলুপ্ত করিয়া ফেলিবে। মস্ভিদের পশ্চান্তারে যে শত শত প্রকোষ্ঠ একদিন অসংখ্য কোরাণ পাঠার্থীদিগের আরাত্ত-দলীতে মুথরিত হইয়া উঠিড, আজ সেগুলি শিবরেরে শব্দায়িত দর্শবাপদ সমুল। তবু দেখিলেই 'Ruins of great things are great' কথাটার মথার্থা উপলাক हत्र ।

জাকরাগঞ্জের যে ভবনে নথাব হটবার পূর্বে নীরজাকর অবন্ধিতি করিতেন, তাহা সাধারণের নিকট "নিমকহারাম দেউড়া" নামে পরিচিত হট্যাছে। কেননা, নীরজাকর "ধর্মা কিমজন দিয়া আজন্ম যাহার অলে বন্ধিত শরীর" তাহারই বিপক্ষে 'ক্ষতম্বচা অসি" উত্তোলন করিগছিল। কেবল তাহাই নহে। সেট বিধাসবাতক আজন্ম অয়নাতার রাজ্য লইয়াই সন্তুষ্ট রহে নাই, পশুর প্রায় তাহার জীবনহননও করিয়াছিল। নিমকহারাম দেউড়ার উত্তর পুরেকোনে নিক বৃক্ষতলে বাংলার শেষ স্বাধীনতার বধাড়াম। বিধানেই বীরজাক্রের পূল নীবণের হাদেশে পাণিত সহম্বাধী

বেগের তরবারীর আবাতে হততাগা নবাক সিরাকটানীরা "তপ্তশোণিত তর্নন" ধরাতন রঞ্জিত করিয়াছিল।

মুখ্যান্তের অফ্রজনে সে পাপ ধৌত ছইবার নহে।

মহিমাপুরে জগৎশেঠদিগের বাসভবনের ভাষাবনের দেখিলাম। দেখিলাম, যে শেঠবংশের ঐশ্বর্ণার কথা একসমার সমস্ত ভারতে প্রবাদের মত রাষ্ট্র ছিল, যে জগৎশেঠের মার বাঙ্গে বগাতথা লক্ষ্মদা-সমকক্ষ ছিল, যাহাদের অভুল বিশ্বর্ণ বাহ্যবিকই মনে হইত—

''সন্তব হ*ট*বে লুগু শারদ চক্রিমা অসম্ভব হবে লুগু শেঠের গরিমা।"

সাহ্বশত বর্ষ সভীত হইতে না ১ইতেই সেই জগত শেঠিছিলেই সরম্য হর্মা আজ চুর্ণাক্তি—প্রক্রর-পণ্ড মাত্রাবলিই। 'নীক্রে সেতার বীনা মুরজ মুরলী"। ধে স্থানে একদিন রম্বীর উপ্তান শোভা পাইত আজ তাহা আস্তাওড়া ও কাল কাসিন্দার জন্মলে আছের। ভাগিরগীর সালল সীমা প্রাক্তি বিশৃত যে অন্দর পথ একদিন শেঠপুরবর্গণের চরনাম্পাক্তির রাগে রঞ্জিত হইত এবং কঞ্চণ নিজ্পে কাল হর্মা উঠিত, আজ ভাহার উপর দিয়া শুগাল ক্রেক্তির পিটালি জ করিতেছে। ভাগা বিপ্যারের কি নিশাক্তি

আর দেখিলাম ভাগিরগীর অপরতীরে পত্র পরব-নিবিদ্ধ্য মিভৃত, নিজন মোসবাগ; আলীবদ্ধা ও সিরাজ, ছই প্রকৃত্তি নবাবের অন্তিম বিশ্রাম ভূলি। অপরাক্ষ সাড়ে পাঁচ ঘটিকার সময় আমরা নৌকার চড়িয়া খোসবাগ আভিমুখে চলিলার। সেই সময় 'সহজ কিরণ' বারেক আর ফিরিরা না চারিরা অন্তাচলে গমন করিলেন। আমাদের এনৈক সলা আখেগা পূর্ণ কঠে গাহিতে ছিলেন—

"আসন মনে উদাস প্রাণে, দীরে দীরে কোণা বহিয়া বাও বল গো তটিনী ওনি কার ধ্বনি কাহার মহিনা জগতে জানাও " আমরা যখন খোসবাগের নিকট নৌকা হইতে অবভর্মী করিলান, সন্ধার বিষাদ্ধলিন ধুসর ছায়া তথন চারিদিকে

পারিতেছিল। অর্জোন্মক ফটকের মধ্য দিয়া ক্ৰমে চুইটা প্ৰাৰণ द्यानगरन श्राटन कविनाम । অভিন্তিয়া আম্বা স্মাধি মন্দিরের বারান্দার আসিয়া ব্যাহ। এক কোণে একটা মাটর প্রদীপ মিট মিট अविरुक्ति।—সেই স্তিমিতালোকে অন্ধকারটা আরু বনীতৃত হটয়া উঠিতেছিল। জনপ্রাণীশৃত্ত-विकृति । आमना त्मोन, मछ भून क्षमरम काज़ाहेगा। সিরাত, ভাহার প্রিয়তমা পদ্মী লুৎফুরিসা, আলীবর্দী ভাষার বেগম চির নিজায় নিজিত। व्यामीवकी अ তিয়ার আত্মা ইহজীবনে শান্তি লাভের অবকাশ পার **ইংখোৰবাগের ভারাজ্জন নীরবতার মধ্যে পাইয়াছে কি ?** শ্বেসবাগের সমাধিভূমি হইতে অপর পারের লিৰ দিকে চাহিয়া সিরাজের প্রেতামা আজ ও দীর্ঘ-ক্রিকে কি না ? শিবচতুর্দশী রজনীয় ঘনান্ধকারে বিশ্বাদ্যশানের উপর নিম্পন্স ভাবে দণ্ডায়মান সমাধি क्षिरक हार्डिया (पर्वापित्वर महात्वरत शामनिक्त সভার মর্তি আমার মনোমধ্যে ভাগিয়া উঠিতেছিল। আৰু অনিৰ্বাচনীয় ভাকে সকলেইট জনয় ভবিয়া জিল। কথা কহিবার টচ্চা যেন কাহারও ছিল না। ক্রিকেই বাভিতেছিল। আমরা ফিরিয়া চলিলাম। क्षिद्र ধীরে যাই, ফিরে ফিরে চাই।" ফিরিবার ই ছা হইতেছিলনা। কি একটা আকর্ষণ যেন বিশকে খোদবাগের অভিমুখে টানিতেছিল। মতিঝিল বাবে কাব্য সৌন্দর্যা জাগিয়া উঠে, থোসবাগ দেখিয়া বৈষ্ণালে ভাবে কৃদ্ধ ভবিষা যায়।

ভিত্তির আবার নৌকায় চড়িলাম। অপর পারে
নিক পার্কত রাজপথে কয়েকটি আলো অলিভেছিল এবং
নিক হইতে সন্ধা আরতির শব্দ ঘণ্টার ধ্বনি মৃতভাবে
আই আসিতেছিল। মনে পড়িল, একদিন "দীপাবলীকিন্তিলিত নাটাশালাসম" বাংলার রাজগানী মৃশিদাবাদ
আপোক বালাধ সজ্জিত হইবা ঝল্মণ্ করিত; আর

করিয়া আফ্লাদে কুলুকুলু রবে বহিয়া হাইত। কিন্তু হার, সে মূর্নিদাবাদ আর নাই। মূর্নিদাবাদ শ্রীহীন, তাগীরবীও গৌরববিহীন। এক সময় যে মূর্নিদাবাদ "was just like London, only it was more populous and more wealthy"—সে মূর্নিদাবাদ কবির করনা, সংশ্রেষ্
বিভ্রম বলিয়া এখন মনে হয়। আর মনে হয়

শ্বহপতে: কগতা মথ্রাপুরী
রবুপতে: কগতা উত্তর কোশলা।

একটি দীর্ঘ নিঃখাদে ভাবনার পরিসমাপ্তি হয়।

वियारगमहत्त्र रहीश्री।

### কবিরাজ রহস্য।

প্রতিভায় 'কবিরাজ' উপাধির বহুসা নির্ণাষ্ট্রে চেষ্ট্রা मिश्रिमाम। "रेक्स" मक्ति कां कि व्यर्थ अंडन मा कविश 'চিকিৎসক' বা 'ভিষক' অর্থে গ্রহণ করিলেট কেছ কেছর মতে সমস্ত লেউ। চুকিলা যায়। আমাদেরও সেই মত। এবিষয়ের বহু পূর্বের শ্রীযুক্ত উমেশ পণ্ডিতের ভূতপূর্ব মন্দার মালার কিঞ্চিৎ আলোচনা করিয়াছিলাম। আবার উঠিয়াছে তথন পুনরাবৃত্তিতে দোষ নাই। বৈদ্যের। কবিরাজ কি ডাক্তার ? যাঁহারা ডিন ঘণ্টা অস্তর এক এক দাগের বাবস্তা করিয়া প্রস্থান করেন, তাঁছারা ডাব্দার : আংগালার "মধু" ময় কাবারস পান বা লেছন করিতে সত্রপদেশ দেন, তাঁহারা অবসিক কবিরাজ। ই। কাব্যরস পান করাই বটে; কারণ কবিরাজী ঔষধে নানা অমুপানের ब्रम ब्याह्य: धवः वमग्रकस्माकत् वमः महनानम् स्माहकः চিন্তামণি চতুৰ্মুণ, ভৃঙ্গরাঞ্চ প্রভৃতি ভেষত্ম ( কত নাম বলি 🔻) নিয়তট কবিত্বের ঝঙ্কার করিভেছে। বিদ্যা ও কবিছের मावीएडे देवगुनान ( हिकिश्नकनान if you please) কবিরাল। আর কবি হটলে ডাক্তারও হটতে ইয়া। দুষ্ঠান্ত; রবীশ্র নাথ এতকাল ছিলেন কবি—রাজ, এখন ধইয়াচেন ডাজার। প্রাচীন কবিরাজ ও আধুনিক ছাজার উপাধি এই-ই এক, তা চিকিৎনার ডিপ্লোমাই বল, কিংবা অন্ত কোন বিভাবভার ডিগ্রিই বল। মোট কথা, সংস্কৃত আমলে বিভা মন্দিরের সা-দরজায় লগুড় হল্ত প্রহরী অন্তপ্রহর থাড়া থাকিত; কাব্য জ্ঞানের নিদর্শন না থাকিলে ভিতরে প্রবেশ নিষিদ্ধ ছিল। এখন সে পাহারার কড়াকড়ি নাই। এখন সরজা দিয়া চুকিতে না পারিলেও unable to paas the Entrance examinar 'কবিরাজ কি হোমিওপ্যাধ। অন্ত গাত না থাকিলেই কাসী কিংব!—কবিরাজী।

कविताक कथा हित नर्सा (प) हिकि ६ मा (अत परिज क्या न पर

বিপ্রস্থা সেবধির্মিয়া বিষ্ণা তু জ্ঞানর পিণী।
বেদান্তবেদর পা সা সর্ধশান্ত অর পিণী।
আারাধিন্তা সদা মহাৎ জ্ঞানেতি ব্রহ্মিচারিভি:।
ব্রহ্মবিদ্যা সমাধ্যাতা মহাবিতা তথাপি সা।
'ক্ষে' প্রত্যম সমাধ্যোগাং বিষয়া চ তথা কিল।
বৈষ্ণা শব্দ সমুৎপন্ন: বিশ্ববালয়ত শ্চ স:।
আধীত সর্ধ শারোধাঃ চতুর্কেদ-পরায়ণাঃ।
আপ্রমন্তাং সদা শান্তা বৈদ্যা জ্ঞেয়ান্তথা কিল।
ক্রন্দা-কিক্ষর।

বৈশ্বঃ ও কবিরাজ শদের একটিও পরমার্বতঃ ভিষ্যা বাচী নহে।বেদ + ক্ষা বা বিদ্যা + ক্ষ = বেদজ্ঞ বা বিদান। ভদানীস্তন অষ্ঠানি চিকিৎসকেরা অশেষ শারে পারস্থী ষ্টভেন, চারিবেদে ক্কুল্লম থাকিতেন। এক্লুই ভাহাদিগকে লোকে বৈল্প বলিত। এবং ভজ্জ্ঞ্জ কবিরাজ শক্ষের জ্ঞায় কালে বৈল্প শক্ষ্য চিকিৎসক অর্থের দোভিনা আরম্ভ করে। কবিনু রাজা ইব ক্ষিরাজঃ। ভদানীস্তন চিকিৎসকেরা সকলেই ক্কবি হইচেন। ধ্যমন মুদ্ধ বোধ ও ভাগ্যক প্রবেশ্য বিদ্যুক গ্রন্থকার ভিষ্ক কেশ্ব

নন্দন" বোপদেব গোস্বামী, সাহিত্য দর্শন প্রবেজী নবহট কাচড়াপাড়া নিবাসী বিশ্বনাপ কবিরাজ প্রস্তৃতি। ইহারা ও গীতগোবিন্দ প্রবেতা জয়দেক আয়ুর্ব্বেলাচার্যা চক্রপাণি; তৎপুত্র জগদীধর জাতিতে বৈশ্ব ছিলেন কি না সে তর্কে প্রয়োজন নাই। একথা সন্ত্য-পূর্বে বাহ্মদেরও "কবিরাজ" উপাধি ছিল। কপুর্বমন্ত্রী প্রবেতা স্থাসিজ মহারাষ্ট্রীয় ত্রাহ্মাকবি রাজ্যশেষ্ট্র

সমূর্টো যত্রাগাঁদ ওণগণ ইবাকাল জননিঃ
স্থানন্দঃ সোহপি শ্রবংপটপেয়ান বচসা।
ন চান্যে গণায়ে তরল কবিরাজ প্রভৃতয়ো
মহাভাগ স্তশিশ্লরস্কনি যায়াবর ক্রলে।

অর্থাং, যে বংশে • • • "কবিরা**ক" প্রভৃতি**মহামা আবিভূতি হইয়াছিলেন সেই প্রসিদ্ধ ধ্রুকুলে তাঁহার জন্ম। হাঁ, গোরবের কথাই বটে, কারণ
মহামহিমাধিত কবিরাজ তাঁহার বংশের অভতম
পূর্বপুক্র।

মহাত্রা অমৃতাচার্য্য বৈশুজাতির বীজি পুরুষ। তাঁহার দৌহিত্র বংশের দাশ, গুপু, সেন প্রভৃতি মহাপুরুষণণ মহারাজ আদিশুরের সভা পণ্ডিত ছিলেন। ইহাঁদের উপাধি কবি ছিল। স্থা কবি দাশ। এখন যদি দাশ জীবিত থাকিতেন এবং নোবেল প্রাইক্তে স্থারাথিতেন তবে ইউনিভানিটের কর্ত্পক কর্তৃক নূতন নাম হইত ডাজার দাশ।

পূর্বে জানী মাত্রেই "কবি" ছিলেন। এমন যে কটমট ব্যাকরণ, ভার কর্তারাও কবি! "রাপ্রাপ-সমর্ব • • • উপদর্গবিধি: কণিতঃ কবি না ট কাব্য কি ? কাব্যং রদায়কং বাকাম্। পূর্বে বিজ্ঞানের গ্রেও কর্কশ ও নীরদ বাকোর ব্যবহার ছিল না। শমস্ত শালের ব্যবহার কাও দেখিয়া কোণায় পাগতের মাত্র বিজ্ঞানির কারে কাও দেখিয়া কোণায় পাগতের মাত্র বিভ্নাম উচ্চারণ করিয়া গণ্যের আল্যন্ত্রার করিবেন।

ভাৰাক্ষা করিয়া নেহাৎ ভাল মালুবের মত বলিয়া কৈলিকেন কি না কোমল মধুর প্লোক! আনাদের উপনিষৎ "কেন" "কঠ" গুলিও ছন্দোবছ। জানের কঠোর উপদেশময় কথাগুলিও "গীতা" (Song)। Schlegel গীতাকে the most philssophical poem of the world বলিয়াছেন। ভারতের চকুমান দার্শ নিকেরা এই বিশ্ব ব্রহ্মাণ্ডে সমস্তই ছন্দোবছ নৃত্ধালিত পদ্যময় দর্শ ন করিতেন। কি বিজ্ঞানের রাজ্য, কিকবিভার রাজ্য, সকলই পৌন্দর্য্যময়। আধুনিকেরা রাজ্য, বিজ্ঞানের লক্ষ্য এবং কবিভার লক্ষ্য সৈত্য এবং কবিভার লক্ষ্য সৈত্য এবং কবিভার লক্ষ্য সৈত্য এবং কবিভার লক্ষ্য সৈত্য এবং কবিভার লক্ষ্য করিছা সভ্য ভাহাই ভো ক্ষমর। প্রভরাং ক্রেক্সান্য করিছানিক পণ্ডিতদেরও কবিরাজ উপাধি বীকার করা স্বাভাবিক।

এদেশে সর্বতেই কেবল পদোর বিকাশ। স্বদেশী সাব্দোলনের সমুজ-মন্থনে উৎপত্ন হইল ভাধু বুলবুল শোশ, আহামরি এদেল আর ললিতলবল তৈল। শুলদুপর্ম কলেবর হইরা কেইই এ পর্যান্ত কল কব্জায় হাত্তির গদামর গদাঘাত কবিল না। কেবলই প্রার 😻 পদ্য কৰন। মনে হয় সেই দ্বিতীয় পাণ্ডব গদাধৰ খ্রীম, বিনি ভূ-ভারত ও ত্রন্ধপুত্র অতিক্রম পূর্বক ফাদের শিক পাইয়া একবার মাত্র খাটি গদা উচ্চারণ করিতে উল্যত হইয়াছিলেন। ভারতে গদ্য সাহিত্যের সৃষ্টি সংশেক্ষাকৃত নৃত্ন। ,মেখিক পারিবারিক কথোপকধন কিংবা বাজার হিদাব ও ধোবার হিদাব গদোই ব্যক্ত ছুইভো, সম্বেহ নাই। কিন্তু শুদ্ধ মনে বসিয়া কালীতে ক্ষুৰ্য ভ্ৰাইয়া ত্ৰীহুৰ্গা বা ত্ৰীহুৱি প্ৰৱণ পূৰ্বক যাহ। লিপিবদ अन्द्रा इहेड छाटा भना ना ट्रेगा यात्र ना! विष्यु नामकदान भागात एउँ (बला। श्रवक नश्ती. শ্বশাস্থান্তি তরজিনী, শব্দকরজন, পদকলতক, কৌষুদী, চমৎকার চন্তিকা, ধর্মতত্ত্বীপিকা, সাহিত্য ৰপৰ, প্ৰীভাননি ইত্যাদি।

ূৰে অভিয়াৰ গোন্ধায়ীর প্রণামে শালগ্রাম শিলা

विमोर्ग बहेबा गाइँछ, बाहात अनारम जीनिछानम अकृत करत्रकी भूख विनष्ठे दहेग्राहिन, त्रहे अनाम रण भूकर প্রধান অভিরামের প্রণাম সতেকে গ্রহণ করিয়াছিলেন কে ? তিনি তীৰ্ণ নিবাসী বৈদাকুল চূড়ামণি জীরখুনব্দন ঠাকুর, যাঁছার শ্রীহন্ত হটতে স্বঃং শ্রীহরি গোপীনাৰ লাড় ভক্ষণ করিয়াছিলেন। এ হেন রঘুনন্দনের পিতা মুকুন্দদাস গুপ্ত ও পিতৃব্য নরহরি ঠাকুর উভয়েই কবিব্ৰাজ উপাধি ভূষণে ভূষিত ছিলেন। শ্ৰীমশুকুন্দ দাশ সর্ক্ষাস্ত বিশারদ অপিচ গৌড়াধিপতির সভাসদ ও हिकि ९ न इ हिल्ल । ( देव छव १ ग . व ल न ) है नि है शूर्व ব্ৰহ্মামে শ্ৰীক্ষাবভাৱে এীরন্দাদেবী ছিলেন )। শ্ৰীনরহরি কবিরাজ শ্রীকৃষ্ণভজনামৃত নামক সংস্কৃত অমৃশ্য গ্রন্থ শ্রীমন্ত্রণ প্রভুর উৎসাহ বাকে। বচনা করেন। তাঁহার প্রাণাধিক প্রিয়তম শিষা কোগ্রাম নিবাসী লোচনানন্দ দাশ পাঞ্চিত্য গুণে "কবিরাজ" ছিলেন, চিকিৎসাবিদ্যায় नहर । कविदाक ना रहेरल कि आत और हिण्यामन राजद ক্রায় অতুল গ্রন্থ রচনা করা যায় ? আধুনিক কাল হৈইলে আমরা লোচনকে কবিরাজ না বলিয়া সাহিত্য-সমুটি বা অন্ততঃ সাহিত্য-ফুলতান বলিয়া ঘোষণা করিতাম। ঝাষ্টপুর নিবাদী চৈত্র চরিতামৃত প্রণেতা বৈছ কুল-তিলক ক্লগদাস কবিরাজ মহাশয়ের নিকট বঙ্গদাহিত্য বিশেষরপে ঝণী। আরও বৈদ্য জাতীয় কবিরাজের নাম স্থানিদ্ধ পদকর্তা পরম ভাগবত মনে হইতেছে। हिल्ला भेषेत्र कवित्राक्त, श्लानिन्त्रवात्र, नग्नानन्त कवि-छिख्स, দিতীর বিদ্যাপতি কবিরঞ্জন রায় ইহারা সকলেই চিকিৎসায় নতে পাণ্ডিতো কবিরাজ ছিলেন।

পরবর্তী কালে যখন কবিরাজী শব্দ চিকিৎসার্থের দ্যোভক হইতে লাগিল তখন প্রকৃত কবিরাজগণ কবিরত্ধ, কবিভূষণ, কবিকজণ, কবিরঞ্জন প্রভৃতি নব উপাধিতে ভূষিত হইতে লাগিলেন। যথা কবিরঞ্জন রাম্প্রসাদ পেন, অনেকে বিনয় বশতঃ "কবিদের মধ্যে রাজা" ধেতাৰ গ্রহণ না করিয়া ওধু "কবি"ই রহিয়া গেলেন। 100

ষণা কবি ঈশর গুপ্ত। সুবের বিষয় গুণগ্রাহী সদাশর স্বর্ণমেন্ট বিশান চিকিৎসকদের সন্মানার্ণ বৈদ্যবত্ত্ব ভূষণের অর্ডার করিয়াছেন।

এখন ভেদাল পাচন বিক্রয় করিয়া বেণেরাও কবিরাজ হইতেছে। বাথগেট কোম্পানীর শিশি ধোওয়া জল শইয়া গিয়া মপঃস্বলের রাম খ্রান যত্তরাও ডাক্তার বনিয়। রাইতেছে। কবিরাজ ও ডাক্তার শব্দের দে গৌরবায়িত व्यर्थ नारे। व्यत्न एक कार्तन ना एव अम्- ि छाड़ा এল-এম-এম্ কিংবা এম-বি হইয়া কেহই প্রকৃত ডাক্তার নহেন। সাহিত্য, সঙ্গীত, বিজ্ঞান, দর্শন, আইন প্রভৃতি শূর্বিদ্যায়ই ইংরাজী মতে ডাক্তার বা প্রম পণ্ডিত উপাধি আছে। কবিরাজ শব্দের অর্থ ডাক্তার বা পরম পঞ্জিত। যথা ডাক্তার দেন গুপ্ত, ডাক্তার সরকার, ডাজার বন্দ্যোপাধ্যায়: তাঁহারা ওকালভিই করুন. শ্বধাপনাই করুন কিংবা চিকিৎসাই করুন। देवनारमञ् मस्या वहरताक शृर्व পाणिका खराई कविताक हिरानन ছিলেন। তারপর উত্তরাধিকার হত্তে পাচন, বড়ি হাতে পাইয়া রাম ভাম যতু স্কলেই 'কোব্রেজ"। ष्यदेखव निवमञ्जा

**শ্রিপর্যেশপ্রসন্ন রা**য়।

# চাঁদকেদার ও পর্ত্তুগীজ।

বিজমপুরের বারভূঁঞা টাদ ও কেদারনাথ রায়ের
নাম ঐতিহাসিক মাত্রেই স্থপরিচিত। ইতিপুর্বে বছ
মাসিক পত্রেই ইহাদের শোর্য বীর্যা ও কার্যাবলী সম্বন্ধে
নানারপ আলোচনা হইয়া গিয়াছে। আমরা পূর্ববর্ত্তী
ঐতিহাসিক গণের কয়েকটি মত নিঃসন্দেহে গ্রহণ
কির্তে পারি নাই বলিয়াই বর্তমান প্রবন্ধের অবতারনা

করিতে বাধ্য হইলাম। এ সংলে শুধু পর্তুগীজগণের দহিত উক্ত ভাতৃষয়ের সম্পর্কিত করেকটি প্রার্থী আলোচিত হইল।

लाकत्र वेण्डिशामिक बीत्रुक व्यानमनाथ तात्र धवर বিখকোৰকার নিজ নিজ গ্রন্থে লিপিবছ করিয়াছেন বে টাদরায় ও কেদার রায় পর্ত্তীঞ্চ দিগকে পরাজিত করিয়াছিলেন। স্বমত সমর্থক কোন নঞ্জীরই বিশ্বকোষে छक्ष छ इय नारे ; वतः हाम (कमात्रक मक्षमम मछासीत শেষভাগে স্থাপন করিয়। উক্ত গ্রন্থকার ভ্রমে**ই পতিভ** इहेब्राह्म । गम्छ ঐতিহাদিক প্রমাণই ভাহাদিগুকে বোডশ শতাকীর শেষভাগের লোক বলিয়া প্রতিপন্ন করিতেছে। আনন্দ বাবু লিখিয়াছেন যে চাঁদরার পর্গীল দত্ম গলালীদকে পরাজিত করিয়াছিলেন (১)। কিন্তু সমত সমৰ্থক কোন প্ৰমান আনন্দ বাবুও উল্পুত कदान नारे। अमिरक देखिशारम मिसिक भाषा बाज य गङ्गानीम ১७०६ शृहीरक वक्रामान वागमन करत **अव**र তৎকালে দে সামাত লবণ ব্যবসায়ী মাত্র ছিল (২)। ठाँप त्रारत्रत भवतर्जी क्रिपात त्रात्र हेशात वह शूर्क हहेरा है। রাজ্য শাসন করিতেছিলেন। কাজেই ঐ সময় চাঁছ রায় की विक हित्तन ना, राह्यकू नकत खेलिशानिक है होत রামের মৃত্যুর পর কেদার রায় সিংহাসনাবোহণ করিয়াছিলেন বলিয়া স্বীকার করেন। ফলে টাদ রায় কর্ত্তক দত্মা গলালীস পরাজিত হইয়াছিল, এই কাহিনী ঐতিহাসিক সত্যরূপে গ্রহীত হইতে পারে না।

কিন্তু পর্জুগীল গণের পরিত্যক্ত বিবরণী হইতে অবগত হওয়া যায় যে এন্টোনিও ডি স্থলা পড়ীনো (Antonio de Souza Godinho) নামক কনৈক পর্জুগীল ১৫৯০ খুটাকের কাছাকাছি কোনও সময়ে

<sup>( &</sup>gt; ) শীৰ্জ আনন্দনাৰ বাদ প্ৰণীত ফ্ৰিদপুৰের ইতিহাস

<sup>( ? )</sup> Portuguese in India,

চট্ট্রামের তুর্গ কথল করিয়া বংলাপদাগরন্থিত দক্ষীণ নামক বীপটিকে তাহার অধীনম্ব করিয়া লয় (১)। ছুমারিকের এছপাঠে অবগত হওয়া যায় যে সন্দীপের মানিকানা সভ্য বস্ততঃ শ্রীপুরাধিপতি কেদার রামেরই ছিল কিন্ত শোগলগণ খদদেশ জয় করিয়া উক্ত দীপ सियाम्बर बाकाङ्ख कतिया नया এখন मिथा याउँक थृष्टीत्म गडीता यथन मन्त्रीप व्यक्षीनम् 36 20 ক্রিয়া লয়, তথন সন্দীপের অধীধর ছিলেন কে? ३०४७ पृष्टीत्मछ (व ठाँक तात्रहे ताका मानन कतिएछ-ছিলেন এবং কেবালুদিন আকবরের দৈলগণ কিছতেই ৰৈ ভাষার বৈভগণকে আটিয়া উঠিতে সক্ষ হয় নাই. ইংরেজ পরিত্রাক্ষক রামক্ষিচের বিধরণ হইতে তাহা আৰ্থিত হওৱা যায় (২)। ম্যুম্ন্দিং সুদ্ধ রাজ শ্রিবারে বংশ পরম্পরা ক্রমে প্রবাদ চলিয়া আসিতেছে বে উক্ত বংশের স্থাপয়িতা রখুনাথ মহারাজ মানসিংহের সাদেশে বিক্রমপুরের ভুঞা চাঁদও কেদার রায়কে পরাজিত করিয়াছিলেন। (৩) মানসিংহ ১৫৮৯ খুষ্টাব্দে অক্রেমে আগমন করেন এবং তাহারও পরে চাদ ৰাৰ পরাঞ্জিত হন। কাজেই ১৫৯০ বা তৎ-কাছাকাছি (कामंश्र नगरत्रे हैं। प्र द्वार शदाकित दहेता शकिर्तन। **এই-পরাজ্যের পরে দুলীপ যোগল করায়ত্ব ছট্যা যার।** कारक है भड़ीरन। रथन भक्तील चाक्रमन करत, उथन होत ক্ষার বন্দীপের লখীখন ছিলেন। কারেই চাঁদ রায়ের শহিত পর্জীলগণের যুদ্ধ সম্বন্ধে যে প্রবাদ প্রচলিত শাহে, তারা একেবারে অমূলক বলিয়া উড়াইয়া দেওয়া हर्ग मा।

কিন্ত উপরোক্ত পর্তুগীল বিবরণীতে যে দেখিতে পাওয়া যায় যে গড়ীনো সন্দীপকে তাহার অধীনন্ত করিয়া লইয়া ছিল, তাহা সম্পূর্ণরূপে সভা কি না তাহাও বিবেচা। কারণ পাইমেন্টা প্রমুধ পর্ভুগীক পাজী-গণের যেই সমত বিবরণী প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহাতে এই यहेनात कानहे छिल्लं पृष्ठे दम ना। भाहेरमाही छ গড়ীনো প্রায় একই সময়ে এই দেশে অবস্থান করিতে ছिलान। घटनाटि मञ्जूर्वकाल मन्त्र दहेता लाहरमणी এত বড ছাতীয় স্বার্থটির বিষয় উল্লেখ করিতেন না এরূপ বিখান হয় না। ডুজারিকের বিবরণী হইতে স্পষ্টত:ই বুঝিতে পারা যায় যে মোগলগণ কেদার রায় বা ভাহার शृक्तिवर्ती है। प त्रारम्न इन्छ इटेट इंगमील निक अधिकांद-जुक किया नरेशाहिन। गृजीता मश्कास विवर्ग मठा হইলে ডুকারিকের এই উক্তিও মিথা৷ হইন্না দাড়ায় ( > ) পাर्कामध निविद्यालिन (य किमात वारवंद्र मार्वी विद्यार्थ ১७०२ गृहास्य कार्जाला ७ महित स्थान इस दहेर छ দদীপ পুনরাধিকার করেন (২) যদি সত্যসতাই মোপন বিলয়ের পূর্বে সন্দীপ গড়ীনোর হস্তগত থাকিত তাহা इहेरन পर्द शिक्शन किलांत द्वारम्य मानी ना बित्रमा निकामन দাবী ধরিয়াই সন্দীপ আক্রমণ করিতে পায়িত। সন্দীপের মত পুরক্ষিত স্থান একবার হস্তগত করিতে পারিশে তৎকালে তাহা পর হস্তে সমর্পণ কর। পর্ত্ত গীবদের মত নিরাশ্র জাতীর পক্ষে নিতান্তই অস্বাভাবিক ছিল। কাজেই উক্ত কাহিণীর সম্পূর্ণ সত্যতা সম্বন্ধে আমাৰের वित्यव मत्यव वर्षमान द्रविद्याद्य । भाष्टीरना वर्षन मस्योभ व्याक्रमण करत. ख्यन हाँ ह तात्र मानिशिश्य विक्रस्त खीरण गुरक निश्व छिलन। काष्ट्र है। ए तात्र পर्द्य शोक निगरक পরানিত করিয়াছিলেন এই উক্তি সতা হইলেও, উক্ত মোগলের বিরুদ্ধে যুদ্ধকালে, পর্ত্তুগীজগণের শহিত সৃষ্ধি স্থাপন না করিয়া তাহার উপারাস্তর ছিল না। आমাদের

<sup>(5)</sup> One Antonio de souza godinho about 1590 had captured by force of arms the fort of Chittagong and made the island of sandwip tributary to it Campos's Portuguese in Bengal Ch VI pp. 67-68.

<sup>(4)</sup> Harton Ryby's Ralph Fitch pp. 118-119

<sup>(</sup>०) औरगारमञ्जूनाव ७७ अनी छ क्लाइ हाइ।

<sup>( &</sup>gt; ) Pierre on Jarric's work Ch XXXII.

<sup>(</sup>२) Purchas his Pilgrims Book IV Part IV

মনে হয় তৎকালে সন্দীপের জন্ত পর্জ্ গীজলিগকে কিঞিৎ কর' দিতে স্বীকৃত হইয়া চাঁল রায় তাহাদিগকে শান্ত রাধিরাছিলেন। কিন্তু সন্দীপের উপর চাঁল রায়ের সম্পূর্ণ অধিকারই বর্ত্তমান ছিল এবং সে জন্তই তুজারিক লিধিয়াছেন যে উহার মালিকানা সত্য কেলার রায়েরইছিল। আনন্দ বাবু হয়তো গডীনোকে গল্পালিস মনে করিয়া ভ্রমে পতিত হইয়াছেন। এন্থলে ইহাও উল্লেখ করা উচিত যে কেলার রায়ের পূর্ব্বে সন্দীপ বাকলাধিপতির অধিকারভূক ছিল, বাকলার ইতিহাস প্রণেতান্ন এই উক্তি সমধিক যুক্তিযুক্ত প্রমাণ না পাওয়া পর্যন্ত উপরোক্ত কারণে ঐতিহাসিক সত্য বলিয়া এহীত হইতে প্রাপ্তেনা।

होंग बारमंत्र भरत क्लांत बाम जीभूरतंत्र निःशामतन श्राद्वांद्र कतिराम । भौज्ञ श्रापात सागरमत विकास **बी पूर्व द्वारक द** जीवन युद्ध अभिवाध्य दहेता नाछा हेल। ভৎকালে আকবর বাদশাহের জগত বিখ্যাত সেনাপতি যানসিংহ ঢাকায় আবস্থান করিতেছিলেন, তিনি গগৈনো বিক্রমপুর আক্রমণ করিলেন। কেদার রায় স্বয়ং ভাহার বিরুদ্ধে অগ্রদর হইয়া পর্ত্তগীক জাতীয় সেনাপতি কার্ভালোকে স্নীপ পুনরোদ্ধার কবিরার জন্ত প্রেরণ 'করিলেন। পুরুত্ হইলেও বিজমপুর শীরগণের ভীষণ बाक्रमा ननीत्न वर्ष दलन दहन। এই ভीवन युक्त খোগল পক্ষ সম্পূর্ণরূপে পরাজিত হইল। পুনরায় সন্দীপ মোগলের হন্ত হইতে মৃক্ত হইল। ভুজারিক निर्विशाह्न (य এই यूष कर्यक्षन পর্জ্ গীঞ্জ দৈছাও कार्जातात शक रहेता रगागालत विकास युक्त कतित्राहित। ममीन स्थानला इस इरेड मूक इरेन वर्षे किन्न পীম্বই মুদলমানগণ আবার বিদ্রোহী হইয়া ভীবণ ভাবে কার্ডালোকে আক্রমণ করিল। কোন মতে কার্ডালো आश्र तका कतिए माशिलन वर्षे, किन्न वृक्षिलन रव বাহিরের দাহাধ্য বাভীত এ বাত্রা ভাহার উদ্ধারের আর छेनात्राचत्र मारे। विकामनुताकरन क्लात्र तात्र यग्रः খানসিংহের বিক্লছে ভাষণ যুদ্ধে লিগু। কাজেই রাজধানী হইতে সাহাষ্যের আশা রুধা। কার্ভালো পর্ছু গাজগণের সাহায্য প্রার্থনা করাই শ্রেয় মনে করিলেন। সাহায্যের বিনিময়ে পর্জুগাজ দিগকে সন্দীপের অর্দ্ধাংশ ছাড়িয়া দেওয়া হইবে বলিয়া স্থিরিক্ত হইল। ভাষারা ৪০০ গৈছ সহ এমাফ্য়েলডি ম্যাটুস নামক একজন সেনানামককে সন্দীপে প্রেরণ করিল। বুদ্ধে অনেক বিজোহীই হত হইল। অবশিষ্ট যাহারা ছিল, ভাষারাও পলাইয়া আছারক্ষা করিল। বুদ্ধে জয় লাভ করিয়া ম্যাটুস সন্দীপের অর্ধাংশ প্রাপ্ত হইলেন (১)।

কোন কোন ঐতিহাসিক লিখিয়াছেন যে কার্ডালো
ও ম্যাটুস সন্দীপ অধিকার করিলে কেদার রায় সন্তঃ
হইয়া নিজ সেনাপতি কার্ভালোর হল্তে সন্দীপের
অর্ধাংশের এবং পুরস্কার স্করপ ম্যাটুসের হল্তে অপরার্ধের
শাসনভার অর্পণ করেন। আমরা কিন্তু এই উক্তির
সমর্থক কোন প্রমাণই প্রাপ্ত হই নাই। পন্দান্তরে
আমরা দেখিতে পাই যে সন্দীপের মত স্বৃদ্ধ কুর্গ্
হন্তগত করিয়া বিশাস ঘাতক কার্ভালো পর্ত্ত্বপাদের
রাজাকে লিখিয়া পাঠাইলেন যে তাহারা তাঁহারই অধীনে
সন্দীপ শাসন করিতেছেন, পর্ত্বালাধিপতিও সন্তঃ
হইয়া কার্ভালো ও ম্যাটুসকে নানারপ রাজসন্ধানে
সন্মানিত করিলেন (২)। এইরপ বিশাস্বাতকতার

Pierre Du Jarric's work Ch XXXII.

Mattos were jointly governing the island, the former wrote to the Portuguese king that they held authority under the crown of Portugal In recognition of their brilliant services, the king of Portugal created Carvalho & Mattos "Fidalgos dacas a Real" (ie nobles) & beslowed on then the order of Christ. "Portugese in Bengal."

ক্ষণার রায় যে কভদ্র ক্ষু ছইয়াছিলেন, পরবর্তী ঘটনা ছইছেই ভাহার সম্যক উপলন্ধি হইবে।

ু স্কীপ পর্ত্তীজগণের হন্তগত হইলে আরাকানরাক ক্ষাদ গণিলেদ। নানারণ রাজনৈতিক কারণে তিনি শুলীপ হইতে পর্ডুগীজ দিগকে বিতারিত করিতে কত সম্ভৱ হইবেন। বিখাগ ঘাতকতার প্রতিদান প্রদান উদ্ধেশ্যে ত্রীপুরাধিপতিও আরাকানাধিপতির সহিত ্রু**শিলিত হইলেন। ১৫০ থা**না জাচাজ লইয়া আরোকান আৰু এবং ১০০ জাহাজ লইয়াকেলারনাপ রায় পর্ত্তুগীজ विभारक व्याक्तियन कतिरामन। वालाभित्राभितते कुरम कुरम ছীয়া সমরানল প্রজ্ঞলিত হটল, হুই দিকে আক্রান্ত 💓ইয়া পুর্ত্তুগীজগণ ব্যতিব্যস্ত হইয়া পড়িল। ডায়েক। বন্দরে শত শত পর্তুগীজ ধরাশায়ী হইল। ভায়েঙ্গার ছুৰ ও পর্বীক্গণের কতকগুলি জাহাল শত্রুপক্ষের হয়পত হইন। স্বয়ং ম্যাট্পও আহত হইলেন। এ বার সংয়ারত দৈলগণ ফিরিসিগণের পত্তরতা সম্ব লুঠন করিয়া দইল। পর্গীজগণের আশা প্রায় অন্তমিত ছইতে বসিল (১)।

আশ্রেষ্ট্রের বিষয় এই যে প্রায় সমুদর বাজালী তিহাসিকই এই বৃদ্ধ প্রসঙ্গে লিপিয়াছেন যে কেদার রায় কুনী লগণের সহিত সন্মিলিত হইবা আরাকান রাজের করেছে মৃদ্ধ করিয়াছিলেন। নজীর অরপ ভাহারা নিজ ২ ছে বাছা উদ্ভ করিয়াছেন, বস্তুতঃ ভাহাও ভাহাদের মৃত্তের বিরুদ্ধেই সাক্ষ্য প্রদান করে। যাহারা কার্ডালোর আবীনে প্রীপুর সৈক্তগণকে অসীম সাহসীক তার সহিত আহাকান রাজের ভীষণ মৌবাহিণী ধ্বংশ করিতে দেবিয়া বিশ্বিত হট্যাছেন, ভাহারা অথই দর্শন করিয়াছেন, প্রকৃত স্বায় ভাহাদের মান্স নেত্রে পতিত হয় নাই।

ভাক্তার ওয়াইজ লিথিয়াছেন যে পর্তুগীলগণ পরে কৃষিলিত মগ ও বাঙ্গালী দৈত দিগকে পরাজিত

( > ) Pierre du Jarric's work.

করিয়াছিলেন। মগদিগকে পর্ত্তুগীলগণ পরাজিত করিয়া। ছিলেন। পার্কাস ডুজারিক প্রভৃতির গ্রন্থে তাহার বিভৃত বিশরণ প্রাপ্ত হওয়া যায় বটে কিছ কেলার রায়কে পরাজিত করিয়াছিল, এরূপ কোন প্রমাণই ঐ সম্ভ প্রান্থে দৃষ্ট হয় না। পকান্তরে কেদার রায় পর্ত্তুগীল-দিগকে পরাজিত করিয়াছিলেন, এরপ প্রবাদ প্রচলিত আছে (২)। ম্যাটুদের হর্দশাও ভায়েকার পরাজয় काहिनी मन्त्रीरा राष्ट्रित उरक्रनाद भाष्ट्रितत माहायार्थ কার্ভালোকে ভায়েকায় যাত্রা করিতে হইয়াছিল। তথম যে কেলার রায় ১০০ জাহাজ লইয়। যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত ছিলেন, উপরেই তাহা উক্ত হইয়াছে। কাজেই ডায়েঙ্গা যাত্র। কালে বাধ্য হইয়া কার্ভালো তাহার পূর্ব প্রভূব সহিত দ্বন্ধি স্থাপন করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। বস্ততঃ এইরূপ প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া যায় যে ইহার পরেও আবার कार्जात्मा (कनाव वारम्ब शक्क दहेया यूकानि कवियाहित्मन। কাজেই কেদার রাগকে কার্ভালো পরাজিত করিয়াভিলেন फालात अगरियत अहे छेलि निःगत्मत्र शहल कवा চলে না, পকাষ্টরে কার্ডালোই হীনতা স্বীকার করিয়া কেদার রায়ের সহিত সন্ধি স্থাপন করিতে বাধ্য ছইয়া-हिल्लन विवार यत्न इश्व। এই यूष्ट्रत পরে মগ ও किती क्रिशास्त्र माथा (व ममल मुक्का कि मश्चिष्ठ इस कारात সহিত কেলার রায়ের কোনই সংশ্রব ছিল না।

দলীপের বিতীয় মুদ্ধের পরে আরাকান রাজ কর্তৃক বিতারিত হইয়া কার্ভালো শ্রীপুরেই আশ্রয় গ্রহণ করেন। পূর্বেই দল্ধি স্থাপিত না হইয়া থাকিলে কার্ভালো কোন্ সাহদে শক্রর আতিথ্য গ্রহণ করিতে পারেন। কারেই এই ঘটনাও আমাদের মতেরই সমর্থন করিতেছে। এই সময় মোগলগণ কেদার রায়ের বিরুদ্ধে সেনাপভি মন্দারায়কে শ্রীপুরে প্রেরণ করিলে কার্ভালো নিজে

<sup>( ? )</sup> J. A. S. B Wise on Twelve Bhuyas of Bengal.

শুক্তর ভাবে আহত হইয়াও মোগলদিগকে পরাজিত ও মন্দারায়কে নিহত করিয়া কেলার রায়কে বিপদ মুক্ত করেন (১)। কাজেই অনুমিত হয় যে কেদার রায় ও পর্ত্ত গীজদিগের মধ্যে যে সন্ধি স্থাপিত হইয়াছিল, তাহার অকতঃ একটি সত্ত এইরূপ ছিল যে কেদার রায় পর্ত্ত গীজ-षिशक मनीथ ছाভिয়া पित्वन এवং তৎविनिময়ে, তৎ-कालीन अन्याना अधीनम् कमिपात्रशायत मक, कार्जात्मा बुकाणित मसत्र (कर्णात बोग्ररक मार्शाया कतिरवन । এ श्रत একটি প্রশ্ন উঠিতে পারে এই যে যদি উপরোক্ত সংবই निक्क रहेशा शांकिरत, তবে मन्मातारात निर्वे युक्त कार्ण मकीश हाताहेगां कार्जाला (कनांत वांग्रक माहाया করিতে যাইবেন কেন ? ইহার উত্তরও ভুঞারিকের গ্রন্থ হইতে প্রাপ্ত হওয়া যায়। তৎকালে কার্ডানো শন্দীপ ভ্যাগ করিতে বাধ্য হইলেও উহা পুনরুদ্ধার করিবার বাসনা তথনও ভাহার হাদয়ে বিশেষ বলবঙী ছিল। তজ্জনাই তিনি যশোরে প্রতাপাদিতোর সহিত মিলিত হইরা মগরাজকে আক্রমণ করিবার প্রস্তাব করিয়াছিলেন। এই সময়ই কার্ভালো প্রতাপের হস্তে নিহত হইয়াছিলেন ( > )।

"কেদার রাম" প্রণেতা লিথিয়'ছেন যে ১৬০০-৪
খুষ্টাব্দে কেদার রাম ও মোগলের মধ্যে শেব যুদ্ধ সংঘটিত
ছম এবং এই যুদ্ধেই আহত হইয়া কেদার রাম মৃত্যুমুথে
পতিত হন। তিনি আরও লিবিয়াছেন যে প্রতাপাদিতাই
কেদার রায়ের পূর্বে মোগল কর্ত্বক পরাজিত হইয়াছিলেন। এ দিকে ভূজারিকের গ্রন্থ স্পষ্টতই সাল্যা প্রদান
করে যে কার্ভালো ১৬০০ খুষ্টাব্দে নিহত হন। কাজেই
১৬০০ খুষ্টাব্দের পরে অর্থাৎ কার্ভালো নিহত হওয়ার
পরে প্রতাপাদিত্যা পরাজিত হন এবং তাহারও পরে
১৬০০-৪ খুষ্টাব্দে কেদার রায় আহত হইয়া মৃত্যুমুথে পতিত
ছন। অগচ উক্ত গ্রন্থকারই আবার লিখিয়াছেন "যে দিন

কেদার বীর বন্দী ও মৃত্যুম্থে পতিত হইলেন সে দিবস কার্জালো পুমঃপুঃন আহত হইয়াও ধেরূপ অপুর্ম বীরন্ধ, সাহসীকতা ও রণ নিপুনতার পরিচয় প্রদান করিয়াছিলেন, তাহা ভাবিলে বিশ্বর সাগরে পতিত হইতে হয়। ঐতিহাসিককে এইরপ উক্তি করিতে দেখিয়া খামরা কিন্তু বিশ্বরে মহাসমূদ্রেই পতিত হইয়াছি।

**बीक्षाः उत्पर्व कृत्याणागात्रं ६** 

#### বর্ধা-প্রভাত।

বৃষ্টি নাই, মেখাচ্চন্ন গগন-বিতান বধণের পূর্কাভাস করিছে স্চনা। নাড় লট বিহঙ্গম ভূলে গেছে গান, গুমরিছে কবি বক্ষে করুণ কল্পনা।

আর্দ্র শ্রাম তৃণদল, আর্দ্র তরুলতা, প্রকৃতির অঞ্চধারে নির্মাল কোমল ; শীতল সমীর প্রাণে কয় কার কথা সকল হৃদয় করে পাগল চঞ্চল!

পরিপূর্ণ যৌবনের কান্তির উচ্ছাস জাগিছে সরগী-চিত্তে সোহাগে বর্ধার; কুমুদ-কজ্ঞার দেয় মধুপে আখাস নিরখি' বিকচ আস্থানীরে বারংবার!

তরুণ তপন-কর লুপ্ত (ম**খদলে** বিশের বিরহ ব্যথা বয় নে**একলে**!

बीकोरवसक्यांत्र गचा

#### গ্ৰন্থ সমালোচনা

পরিমাল শিক্ষা। এীয়ুক্ত রাধার্মণ গুরু अब. ति, हे लागील कार्य मश्चत्र । हेश अक्षाना कतिल ্বিষয়ক গ্রন্থ। জবিপ বিষয়ে বাজালা ভাষায় বোধ হয় ্রীহাই একমাত্র গ্রন্থ। ইংরেজীতে জরিপ বিষয়ে অনেক পুত্ৰক আছে। কিন্তু যাহাত্ৰা ইংৱেজী ভাষায় অনভিজ্ঞ ভাহাদের পক্ষে জারপ সহত্যে ভান লাভ করিবার अधिक अधि अहा वंद्यान मार्ड इरन वालाना नवीन हाळश्रावत्र श्रावनाधिकात चाहि। चात्र तनी मिन रव ত্রীছা থাকিবে এর প্রাধ হয় না। মাহা হউক সার্ভে শিক্ষার্থী বাঙ্গাকা নবীস ছাত্রদিপের জন্মই এই পুত্তক লিখিত হইরাছিল এবং সেই জনাই বোদ হয় এই পুরুকের সপ্তাধিক সংক্ষরণ প্রকাশিত হইয়াছে। কারণ এ দেশে স্বুলপাঠ্য বহি ও নবেল ব্যতীত অন্যু পুক্তক অতি অৱই বিক্রীত হয়। গুরুগন্তীর রচনার প্রতি আদরের অভাব এবং ইংরেজীর প্রতি অভাবিক শ্রছাই ইহার কারণ। তবে যে হোমিওপ্যাথি জরিপ প্রভৃতি ীৰীৰয়ে বাঙ্গালা গ্ৰন্থ বচিত ও প্ৰকাশিত হয় ভাহার কারণ এই বে বাঙ্গালা নবীশ ছাত্তের। ঐ ঐ বিষয় অধায়ন করে। आर्तिकार नयानि कृत्वत नितन कानिकि, विकासिकि, বীৰগণিত, পদাৰ্থ বিষ্ঠা ও রদায়ন শাস্ত্র প্রভৃতি সম্পর্কে বালাণা ভাষায় অনেক উৎকৃষ্ট গ্রন্থ রচিত হইয়াছিল। কিছ এখন সেই সৰ গ্ৰন্থ প্ৰায় লুৱা হইয়া গিয়াছে। ইংরেজী ছল কলেজে যে পর্যান্ত না বিজ্ঞানাদি সমন্ত বিষয়েই বাশালা ভাষায় শিক্ষপ্রদান করায় পদ্ধতি প্রবর্ত্তিত ইয় নেই পর্যায় বালালা সাহিত্যে এই জাতীয় গ্রন্থের শভাব থাকিয়া যাইবেই যাইবে। হাজার সাহিত্য পরিবং ও সাহিত্য সমিতির প্রতিষ্ঠা করিয়াও বাঙ্গালা खाबात्र अरे ज्ञांत श्रुवन कता गञ्चन हरेत्व ना। वात्राना ভাষায় শিক্ষাদান প্রথা প্রবর্ত্তিত না করিলে বালালা ভাষা **ठित्रकाल के किया था नार्याल के काल के कालिया गाउँदर ।** অতা বিষয়ে ইতার আরে কোন উত্ততি হটবে না। ইতার কারণ এই যে কবিতা ও নবেল ব্যতীত অভ কোন বিষয় অধায়ন করিতে হুটলে এক মাত্র বাঙ্গালা নবীখ कुरनत हाज वावील बात मकरनहे (महे २ विवस हैश्रवकी এম্ব পাঠ করিয়া থাকেন। ইংরেজী রাজভাষা; ইহা না শিধিলে চলে না। এওডিয় মাতৃক্রোড় ত্যাগের পর হইতেই ইংরেজী ভাষা অধায়ন করার এদেশীয় লোকের সনে ইংরেজী ভাষায় এৎকর্ষ সম্বন্ধে এক প্রকার ফুলংক্ষ क्रिया गाय । देश्द्रकी निका देश्द्रकी ख्वानहे कीव्यनद এক ইয়ার আদর্শ বলিয়া পরিগনিত হয়। যে ভাল ইংরেজী কালে দেই মহা পণ্ডিত ও বৃদ্ধিমান বলিয়া সমাজে থাতি ও মর্যাদা লাভ করে। ইহার ফলে যে স্ব বিষয়ে বাঙ্গালা গ্রন্থ বুচিত হইখাছে সেই সব বিষয়েও लात्क वाकाना अब फिनिया हैश्द्रकी अब भार्र करता তবে বাঙ্গালা কবিতা ও বাঙ্গালা নবেলের স্বাদ ইংরেজী कविठा ७ देश्तकी नत्त्व भाष्या यात्र ना। अह কারনেই বাধালীরা বাধা হইয়া বাঙ্গালা কাব্য ও নবেল পাঠ করিয়া থাকে। অনেকে বলেন বিজ্ঞান প্রভৃতি विषय वाकालात श्रष्ट तहना कता व्यवस्थव । अकवा त्य ঠিক নহে আমাদের আলোচা গ্রন্থই তাহার প্রমাণ। বৈজ্ঞানিক উপায়ে জবিপ কবিবার বীতি এই গ্রম্ভ বাক্লালা ভাষায় বিশ্বত্বপে ব্ৰিভ কুইয়াছে। ইকার সাহায়ে ইংরেজী অনভিজ্ঞ ব্যক্তিরাও অনায়াসে বৈজ্ঞানিক উপায়ে জরিপ করিবার রীতি সম্পর্কে বেশ জ্ঞান লাভ করিতে পারে। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া नरीम विक्राणामा है है বাঙ্গালা চ ব্র প্রভৃতি খারাও ভুচারু রূপে কার্হা সমাধা করিতেছে। ভবে বাসালার देवका निक গ্রাম্ব পারে না এই আপতির হইতে ভিভি (काशाय ?

বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে জরিপ এ দেশে নুত্র সন্দেহ ৰাই। পুর্বেও এদেশে ভূমি পরিমাপের পদ্ধতি যে हिनना छारा नरह; जरत यजनूत काना यात्र शृर्त अर्पि ने का अकन कतात श्रेश हिन ना। বন্দোবন্ত এবং জমিদারি সংক্রান্ত কাজ কর্মের জন্ম ভূমি জরিপ করা আবশুক হইত। সেই জন্ম ধদড়া জরিপ **अठिंगिछ हिल। छ**रत अथन (यमन मिकल वा टिएनव ( ফিতা ) সাহায্যে পরিমাপ হয় পূর্বে দেরপ হইত না। পুর্বেন লের হারাই পরিমাপ হইত। স্কুতরাং পরিমাপ বিশেষ শুদ্ধ হইত না। নলীরা ইচ্ছামত জমির দৈর্ঘা প্রস্ত বাডাইতে কমাইতে পারিত। এতত্তির কোন প্রকার কোন পরিমাপক যন্ত্রের ব্যবহার ছিল না; অথচ ভূমি ত্রিভুঙ্গাকারে ভাগ করিয়া লইয়াও জরিপ করা হইত না। আবার পরিশুদ্ধরূপে উত্তর দক্ষিণ দিন্ত্নির্থ করার নিয়মও ছিল না। স্থতরাং নক্সা বা ম্যাপ তৈয়ার করা এক প্রকার অসম্ভব ছিল। তবে ন্যার পরিবর্তে প্রভা জারিপে আরেকটা কাগজ তৈয়ারী হইত তাহা অনেক পরিমাণে নকার অভাব পূরণ করিত। তাহার নাম চিঠা। ইহা বর্ত্তমান সময়ের ফিল্ড বুকের কতকট। অহুরূপ তবে किन्छ वृक्त 'वाबिश' अ यान अ कान २ (हेगत्नत আনামত ভিন্ন আর কিছুই থাকে না; চিঠায় প্রত্যেক ভূমির দৈর্ঘ্য, প্রস্থ ও ভূমির পরিমাণ এবং চৌহদি ও দর্শলকারের নাম ও জ্মির রক্ম প্রভৃতিও লিপিবন্ধ হইত। ফলত: চিঠাতে প্রত্যেক ভূমির পূর্ণ পরিচয় পাওয়া যাইত। চিঠায় দোষ এই যে উবার মাপওলির উপর দম্পূর্ণ নির্ভর করা যাইতে পারে না; কারণ প্রেই বলিয়াছি যে নলের গাহায়ে মাপ গ্রহণ করিলে পরিমাপ পরিশুদ্ধ হওয়ার সম্ভাবনা অল্প। কিন্তু তথাপি চিঠার যে কার্য্যকারিতা ছিল না ভাহা নহে। চৌহদি পরিভ্রন্তরে লিখিত হইলে তংসাহায়ে ও পরিমাপের দারা জমি চিনিয়া লওয়া যাইতে পারিত। তাজকালও দেওানী व्यामान्य बार्न हार्न तीत्रामा हिठा छाउहाँ हैया है अध्यत

বিচার নিপাত্তি করা হইতেছে। একণে নকা অভন করার প্রবা প্রবর্ত্তিত হওয়ায় চিঠার প্রয়োজনীয়তা কমিয়া গিয়াছে; কিন্তু একেবারে লুপ্ত হয় নাই। কালেইটী ও **(म**अग्रानी चामान्छत गांहीगाता (माकक्रमात्र এवमर्खः চিঠা তৈয়ারী হয়। প্রক্রপক্ষে এই সব কার্য্যে দেশীয় ও विषिणीय छेल्य अथारे जावनिष्ठ द्या कन अक्रुप ভালই হয়। আলোচা গ্রন্থে দেশীয় ও বিদেশীর উভয় श्राथायूरे विभाग विवत् श्राप्त करें बार्क । देशांक (5 हैन.) কম্পাদ, প্লেন টেবল, লেভেল ও গিওডোলাইট প্রশ্নতি আধুনিক যথাদির পরিস্কার বিধরণ লিপিবছ হইয়াছে এবং তৎসহ তাহাদের ব্যবহার প্রণালীও বিশদরূপে বর্ণিত হইয়াছে। চিত্র দ্বারা মন্ত্রাদির গঠন প্রণাদী প্রভৃতি সুন্দররূপে বুঝাইয়া দেওয়া **হই**য়াছে। **আবার**্ বাঙ্গালা ধদড়া জরিপের প্রণালীও সংক্ষেপে বিরুত ছইয়াছে। গ্রন্থের ভাষাও যথা সম্ভব সরল। বে সম**ত**া বিষয় হাতে কলমে শিখিতে হয় সেই সমস্ত বিষয় কেবল গ্রন্থ লিখিত বিবরণ পাঠ করিয়া সম্পূর্ণরূপে আয়ত করা याग्र ना। এ कथा कि देशदृत्त्र की कि वान्नाना मकन वह সম্বন্ধেই প্রযোজা। শিকাণীনিগকে অবশুই হাতে কলমে বিষয়টী শিখিতে হইবে তবে গ্রন্থ হইতে যে পরিমাণ সাহাম্য পাওয়া আবশু দ এই বই হইতে ভাহারা ভাহা খনায়াদে পাইতে পারিবে।

গ্রন্থে অনেক ইংরেজী পারিভাষিক শব্দ ব্যবস্থ হইরাছে কিন্তু ভাহা না করিয়া উপায় নাই। পূর্বেই বলিয়াছি যে কোনরূপ কোণ পরিমাপক যন্ত্র এ দেশে প্রেলিছ ছিল না। স্কুডরাং আমাদের ভাষায়ও যন্ত্র সম্পর্কিত ইংরেজী পারিভাষিক শব্দের অনুস্তরপ শব্দ নাই। কালেই গ্রন্থকার বাধা হইরাই ইংরেজী নাম ও ইংরেজী পারিভাষিক শব্দ ব্যবহার করিয়াছেন। নুভন বিষয়ে বাঙ্গালা ভাষার পুস্তক লিখিতে হইলেই এইরূপ প্রধানীই অবল্যন করিতে হইলে। ইহা দোষাবহ নহে। বাঙ্গালা ভাষার পুস্তক লিখিতে হইলেই এইরূপ প্রধানীই অবল্যন করিতে হইলে। ইহা দোষাবহ নহে। বাঙ্গালা

अत्मक विवास आमारमञ्ज भरतत निकृष्ट बात कविर्छ बरेरन। मकन (एट्निड এडेक्स कर्ता ट्डेम बाक। हैश्देश एका यथन आगालित क्लीय क्लीन भारतत লালোচনাম প্রবৃত হয় তথন তাহারাও বাধ্য হইয়া সংক্রত দার্শনিক পরিভাষা ব্যবহার করিয়া থাকে। ক্ষেত হইতে শব্দ গ্রহণ করিতে হয় বলিয়া কি ভাহারা ভারতীর দর্শনালোচনা করিতে পাশ্চাৎপদ হয় ৭ তাহা হয় মা। স্থরতাং ইংরেজী বৈজ্ঞানিক পরিভাষা বাবহার ক্ষরিতে হর বলিয়। আমরাই বা কেন বালালা ভাষায ইনজানিক গ্রন্থ লিখিতে বিরত হইব ? এবং কেছ ক্রাঙ্গালা বৈজ্ঞানিক গ্রন্থে ইংরেজী পরিভাষা ব্যবহার করিয়াছেন বলিয়াই বা কেন বলিব যে বালালা ভাষায় বৈজ্ঞানিক এছ রচিত হইতে পারে না ৭ বালালা ভাষায় लुलाए वेषु कम नरह। देशाउ नवहे इहेट भारत। किन्न **उन्युक्त प्रसाग प्र**तिशांत अভाবে किंदूरे दहेरछहा ना । द्व भरी । ना वाकाका धावाय विविध विषय भिकालान করার রীতি প্রবৃত্তিত না হইবে সে পর্যান্ত কিছুই হইবে না, देश भागात्मत्र हित विदान।

#### মরবের খেয়াল।

চাল হে পিয়ালা ভরি,— পরীরা ধরুক তান ; ক্ষতি নাই দলি মরি, দে মরণে পাব প্রাণ।

गाँच भाषा—चाभ मून भविद्य इटेस्ट गणि,— भवद्य यह प्रशी वटार्ड कोचूही-महो। প্রিয়ারে সংবাদ দাও।
নিমন্ত্রহ বন্ধুগণে.—
মরণের ভোব্দে তুই
ক'রে যাব জনে জনে।

ভেঁকে মহাজন দলে ঝা পরিশোধ দাও ; খাতকে ডাকিয়া বল,— 'বন্ধু, মুক্ত তুমি—যাও !'

ভাক স্থা! স্থিদলে,
শক্ত মিত্র, দাস দাসী;
কমা দিব—ক্ষমা লব
আমি স্দা কটুভাষী।

কাপজ কলম লও
মরণের গান গাব;
মরিলে হয় ড' স্থা,
বিরহেতে ব্যথা পাব ১

ছে আকাশ, হে বাভাস, বিদায় বিদায় তবে ! হে প্রিয় হরিণ শিশু, জ্বার নাহি দেশ হবে !

বাজাও বাজাও স্থা,
দাও প্রিয়া ত্লুথবনি ;—
মরিতে হইবে যদি
ভয় মাত্র নাহি গণি।

वीकाकनिक्तांत्र पत

## গোপাল-যশোদা গীতি।

সঙ্গীত কেত্রে বাজলা মায়ের কোমল বক্ষের বিপুল কেহরাশি ছুইটি ধারায় প্রবাহিত হুইয়াছে। পুত্র কেহধারা বহিতেছে গোপাল-যশোদা অবলমনে আর কন্সা কেহধারা বহিতেছে উমা-মেনকা চরিত্রা-বলম্বনে। আজ আমরা প্রথমোক্ত ধারার পরিচয় দিব। সোক্লে গোপরাজ গৃহে গোপাল অন্যান্ত রাধাল ধালকদের সঙ্গে গজিত হুইতেছেন, আবার সাজিতে লাজিতে বালস্ক্ত চপলতা বশতঃ ধাকিয়া ধাকিয়া নুভা করিতেছেন,—

"श्रंष्ट्र श्रवान नत, नव अक्षा कत,

ত্রজ বালক সঙ্গে সাজে। ক্রিক ক্রমন বেলি

**কুটিল ক্তল** বেভি, মণি মুক্তা ঝুরি কটি তটে ঘুস্থুর বাজে ॥

নাচত মোহন বাল গোপাল।

বরজ-বধু মিলি, দেই করতালি

বোলই ভালিরে ভাল ৷

नम श्रमत, यत्नामिक दाहिनी

আনন্দে স্ত মুখ চায়।

षद्भग मृत्रकन, काबरा दक्षिण

हानि हानि मनन (म्थाप्र ।

वामी कब्रे गव, खब त्रमीनन

আনন্দ সাগরে ভাস।

্রেরইতে পর্নিতে, লালন করইতে

ন্তনকীর ভিগল বাস ॥"

"হাসি হাসি দশন দেখায়" এই একটি মাত্র ছত্তে কি মনোরম এবং স্বাভাবিক শিশু-চিত্রই না অঙ্কিত হইয়াছে। ঐ কচি মুখণানি ঐ ফুট্ কুটে দাত কটি দেখিয়া, ঐ নধর দেহটি স্পর্শ করিয়া মাতৃ হৃদয়ের মেহ রাশি শুক্তরূপে প্রবাহিত হইয়া বুকের বসন ভিজাইয়া ফেলিতেছে।

গোপাল একদা ননী খাইয়া ছিলেন, কিন্তু ভাল করিয়া কেহ ভাহার মুখখানি ধোয়াইয়া দেয় নাই,—
"অরণ অধর উরে, নবনী লাগিয়াছেরে,

মরি মরি বাছনি কানাই।

হেরি যশোমতি, প্রেমেতে প্রিত **আঁবি,** 

আয় কোলে বলিহারি যাই। কর মোছে অধর মোছাই।

আয় মোর বাছনি কানাই ॥"

ছোট ছেলেটির রাঙ্গা টুক্ টুকে ঠোটের উপর একটু-পানি ননী লাগিয়া রহিয়াছে দেখিয়া মায়ের জাঁখি "প্রেমতে প্রিত" হইয়াছে, মা অমনি ছেলেকে কোলে ভুলিয়া নিলেন। কেমন স্থলর চিত্র !

গোপরাজ-গৃহে গোপান্ধনারা দ্বি মন্থন করিয়া মাধ্য প্রস্তুত করিতেছেন। প্রভাতে উঠিয়া কৃষ্ণ বলয়াম ধেলা করিতে করিতে সেই মন্থন ধ্বনি শুনিয়া নাচিতে নাচিতে তথায় আদিয়া উপস্থিত হইলেন,—

"नवि यह श्वनि, खनहेट नौनयनि,

আওল দক্ষে বলরাম।

যশোমতি হেবি মুখ, পাওল পরম সুখ,
চুম্বয়ে চাঁদ বয়ান ম

কহে গুন যাত্মণি, তোরে দিব কীর ননী— ধাইয়া নাচহ মোর আগে।

নবনী লোভিত হরি, মায়ের বছন হেরি— করপাতি নবনীত সাগে॥

রাণী দিগ পৃরি কর, । খাইতে রঙ্গিমাণর অতি মুশোভিত ভেল রায়।

ধাইতে থাইতে নাচে, কটিতে কিৰিনী বাৰে, হৈরি হয়বিত ভেল মায়॥ নন্দ কুলাল নাচে ভালি।

<sup>•</sup> ঢাকা সাহিত্য পরিবদের মাসিক অধিবেশনে পঠিত।

इंडिंग यहन एछ. **উপ**शिंग गरानम স্থনে দেয় করতালি॥ रमंब रम्ब द्याहिनी, গদগদ কছে রাণী.— याङ्गा नाहिष्ड (मर्थ (यात्र। रेणद्रीय मान कर्र. রোহিণী আনন্দময়, इस (जन श्राम निरमत ॥" অ অপূর্ব নৃচ্য দেপিয়া মায়ের প্রাণ কেমন করিয়া উঠিশ। তথু নিজে দেখিয়াত আর তৃপ্তি হয় না। এ रिमाष्ट्रा रागिदाकरक ना रमधाहेरल नवह रव व्यपूर्व तरिहा ৰায়। কত রক্ষে রক্ষেই না নূত্য চলিতে লাগিল,— "কত ভঙ্গী জান পোপাল নাচিতে নাচিতে। অরণ কিরণ দিছে চরণ তুলিতে। বাভি নৰ মণি হার হিয়ার মাঝারে দোলে। ্ চরণে নৃপুর কিবা রুণু রুত্ব বোলে॥ গোপাল নাচিছে তুরি দিয়া। িকোৰা গেল নন্দরায়, আনন্দ বহিয়া যায় দেশসিয়া নয়ন ভরিয়া॥ চিক্র বিচিত্র নাট, চরণে চাঁদের হাট, **हल्या चक्र निया शांधी**। 🖟 পাধ করিয়া যায়, নুপুর দিয়াছে পায়, शा बानि जुलिया नां एवि॥" নিকরাণী বমুনার জলে কলসী ভরিয়া গৃহে আদিতে-हिन. भर्ष भागांग काल छिठिवात क्र जात वक्रम ব্রিয়া আর্ট্ করিতেছেন। যশোষতি মেহ গলাদ-ভাষে ভাছাকে বলিলেন,-শ্ৰমরি বাছা ছাড় রে বসন।

কিল্মী উলাইয়া তোমারে লইব এখন।। विद्वि देशांद रामाहे महेबा, चार्य चार्य हम शहेबा. पाचत्र नृश्तं (क्यन वास्क छनि। बाना नाहि पिर बाटा, (चनाइ७ जीनात्मत नात्य, नदा शिल जिय कीत मनी ॥ पूर्व अरेग्र (जामा गरेगा, ग्रह कर्य (गण बरेगा,

তোরে ইবে কেমন উপায়। कननी नागिन कैरिय, हाफ दा अलागी मारक, ছোর মেঘ ধবলী পিয়ায়॥ "भारतत कत्रना ভाष. शुनित्रा ছाডिन वान, আগে আগে চলে ব্ৰন্ধায়। কিলিনী কাছনি ধ্বনি, অতি সুমধুর ভনি রাণী বলে সোমার বাছা ধায়॥ ভুবন মোহিয়া উরে, আঙ্গুলের নধ বরে, সোনায় বান্ধিয়া খোপা ভায়। অধিক আনন্দ উঠে बारेबा गारेट शिर्फ, नद्रभिःश् नाम खन नाम ॥" यामानात आर्गित त्राभाग नग्नत्तत्र मणि अथन अक्ट्रे

করিয়া গোপালকে গোঠে যাওয়ার জন্ম ভাক্তে এসেছেন। তার ভাক শুনে মা যশোদা বলিলেন,— "বলাই ডাকিস্ নেরে, শিঙ্গা বাজাস্ নেরে, গোপাল পোর্চে যেতে দিব না। যাবি পোচারণ করিতে, সব রাখাল সঙ্গেতে গহন বনেতে—আমার নীলমণি আৰু বনেতে যাবৈ না ॥ निमि (मरव, (प्रथ त्म्य अक्षार्यत्म (मान वलाई विल ट्डार्ज-इत्राचा क्रस्त्र हरत्, निर्द भारत कृष्ण धनरक हृति करत। व्यामि त्मान वनारे जारे वनि—त्य कृः त्थत मीनमिन, জানে বোহিণী -- আমাৰ নীলমণি আজ বনেতে বাবেনা 🕈

विक नविक हरवरहरू। नाना वनाहेत मदन अधन मार्स

भारत (शार्ट या अया दय । जारे वलारे चाक मित्रा ध्वनि

কিন্তু বলাইর ডাক ভনিয়া গোপাল ছুটিয়া আদিলেন। त्राथान वानकानत मान प्रहे नीन यसूनात जीत जीत वन्नावरात गवूक चारम छाका निशंख विकृत मार्छ (संकू চড়াইতে, ছুটাছুটি করিতে যে কি আনন্দ, ভাষার আখাদ তিনি পাইয়াছেন। গোপাল কি আর গৃহে আবর্ষ थाकिए भारतम १ किनि मास्य विशासन,-"(शार्ठ व्यामि याव मा (शा (शार्ठ व्यामि याव।

শ্রীদান স্থাম সলে বাছুরি চরাব॥

ছুড়া বান্ধি দেগো মা মুরলী দে মোর হাতে।
আমার লাগিয়া শ্রীদান দাড়াঞা রাজপথে॥
পীত ধড়া দেগো মা, গলায় দেহ মালা।
মনে পড়ে' গেল মোর কদক্ষের তলা॥
শুনিয়া গোপালের কথা মাতা যশোমতি।
সাজায় বিবিধ বেশ মনের আরতি॥
আলে বিভূবিত কৈল রম্নভূবণ।
কটীতে কিন্ধিনী ধটী পীত বসন॥
কিবা সাজাইল রূপ ত্রিভূবন জিনি।
পুল্প শুল্পা শিবি-পুচ্ছ চূড়ার টালনি॥
চরণে নুপুর দিল তিলক কপালে।
চন্দনে চর্চিত অল রম্বহার গলে॥
বার্মান দাসে কয় সাজাইয়া রাণী।
ব্লেহায়ে গোপাল মুখ কাতর পরাণী॥"

ছেলের চঞ্চল স্বভাবতি মায়ের বিশেষ করিয়া জানাছিল। হায়! এই চঞ্চলতার জন্ম কতদিন মা ইইয়াও কঠিন হাদ্যে ছেলেকে শান্তি দিতে হয়েছে,—কথনও বা লুকাইয়া ননী খাইতে যাইয়া দ্বি-ভাও কাত করিয়া ফেলার জন্ম, কথনও বা গোপীদিপের কক্ষয় জলতরা কলসী চিল ছুড়িয়া ভান্নিয়া দেওয়ার জন্ম, কথনও বা এমনই কোনও কিছুর জন্ম। তাই আজে মা তাঁর এই ছোটা তৃষ্ট ছেলেটিকে উপদেশ দিতেছেন,—

শ্বামার শপতি নাগে, না ধাইও বেহুর আগে,
পরাণের পরাণ নীলমণি।

নিকটে রাধিহ ধেহু, পৃথিহ মোহন বেণু.
বার বসি আমি বেন শুনি।
বলাই ধাইবে আগে, আর শিশু বামভাগে,
শ্বীদাম পুদাম সব পাছে।
ভূমি ভার মাঝে ধাইও, সঙ্গ ছাড়া না হইও
মাঠে বড় ঋপুভয় আছে।

কুৰা হইলে চাইয়া থাইও, পথ পানে চাইয়া ঘাইও,
অভিশয় তৃণাছুর পথে।
কাক বোলে বড় দেফু ফিরাইডে না যাইও কাল,
হাত ডুলি দেহ মোর মাথে॥
থাকিহ তক্তর ছায়, মিনতি করিছে মার
রবি গেন না লাগরে গায়।

ঘালবেন্দ্রে সঙ্গে লইও, বাধা পানই ছাতে পুইও
বৃথিয়া যোগাবে রাঙ্গা পায়॥"

গোপালকে উপদেশ দিয়াও মায়ের মনে "সোয়ান্তি"
নাই। এ চপল-মতি বালককে বিশাস কি ? তাই তিনি

বলরামকে বলিলেন,—
"ও বাছা বলরাম রে গোপাল আমার দিলাম ভারে হাজে
সঙ্গে সঙ্গে রেখাে গোপাল, দিও না দ্র বনে যেছে।
নিকটে চরাইও ধেক, ছ্'তাইয়ে বাজাইও বেপু,
রোদেতে খামিলে তকু, বসাে তমালের ভলেতে।
গোপাল আমার কেলেগােনা, ছখের বার্তা কি তা জামে
না, কীর সর নবনী ছানা দণ্ডে দণ্ডে দিও খেতে।"

এ দিকে অভাভ রাধাল বালকেরা গোর্টের সাজে সাজিয়া আসিয়া বলিল,—

ভৈরবী-একতালা।

"হেদে গো নক্রগী,
আমাদের শ্রামকে ছেড়ে দাও।
আমরা রাধাল বালক দাঁড়িরে ঘারে
আমাদের শ্রামকে দিয়ে যাও।
ছের গো, প্রভাত হল, স্থ্য ওঠে ফুল ফুটেছে বনে,
আমরা শ্রামকে নিয়ে গোঠে যাব
. আজ করেছি মনে।

গুগো পীত ধড়া পরিয়ে তারে কোলে নিরে আয়, তার হাতে দিও মোহন বেণু, নৃপুর দিও পার। বোদের বেলায় পাছের তলায় নাচব স্বাই মিলে, বাজুবে নৃপুর রুণু রাজুবে বালী মধুর বোলে। यम प्राप्त शीव व माना निविद्य वित न्यार्थव शता ॥'

( ब्रदीक्ताथ । )

ভারা আবার গাহিল,—

সুরট্—আদা।

শ্বাদ সুলের মালায় সাগবে ভাল

রাম কাত্র ছ'ভাই,

সবে তবে আয়ন। রে ভাই

শ্বাদ ভরে' সাফাই।

কাশ ভবে' সাভাই।

ক্লপের ছটায় মাত বে গোকুল,

দেখ্য স্বাই পরাণ আকুল,
( প্রাণ ভবে' সাজাইব )

চোখের দেখায় আশ মেটেনা,

প্রাণের দেখা চাই.

थ्यान जिल्हा थान त्नम तत्न जाहे ने ना तन्या नाहे ॥"

মা তো গোপালকে প্রস্তুত করিয়াই রাশিয়াছেন। তথন—

প্রেণ্তি করিয়া নায, চলিলা যাদব রায়,
আগে পাছে ধায় শিশুগণ।
খন বাজে শিলা বেণু, গগনে গোক্ষুর রেণু,
ক্র নর হর্ষিত মন ॥
আব্র আগে বংসপাণ, পাছে ধায় ব্রজ বাল,
বৈ হৈ শক্ষ ধন রোল।

দধ্যে নাচি ধার খ্রাম, দক্ষিণে সে বলরাম, ব্রঞ্গবাসী হেরিয়া বিভোর॥

ন্বীম রাধাশ সব, আবা আবা কলরব, শিরে চূড়া নটবর বৈশ।

আবিয়াবনুনাভীরে, নানা রঙ্গে বেলাকরে, কচ কত কৌভুক নিশেষ॥

ক্ষেত্ৰায় ব্ৰুষ্টান্দে, কেহু কার চড়ে কান্ধে, কেহু নাচে কেহু কেহু গায়। এ দাস যাধ্য বলে, কি শোভা যমুনা কুলে রাম কানাই আনন্দে ধেলায় ॥''

বাম কানাই আনন্দে বেলায়।"

গৃহ প্রাঙ্গন হইতে রাখাল-জননীগণ গোপরাণীর সঙ্গে
ভানিতে পাইলেন তাহাদের বাছারা গাইতেছে,—

'প্রাণের টানে প্রাণ-গোপালে সঙ্গে লয়ে যাই।
আ্যাদের সেই রাখাল রাজা কানাই বলাই।

হেলে হুলে' নেচে চলে গোঠবিহারী,
চঞ্চল দিঠি মিঠি রঙ্গে বিগারি॥

বন্ধিম ঠাম শিরে শিখি-পাখা শোভয়ে,
সুন্দর পীত ধটা কটিতট বেড়য়ে,
নুপুর রুগুরু রুগুরু,
মাচত বাজত বংশী বোলায়ত;

वीदि किदि हां से प्र प्यू वृंशित ॥''

गात्राक्ति स्थू ह्वाइनात शद्य यथन दिना व्यत्नात्म

प्रगुक्ति काम ह्वाक्ति वर नीन यम्नाम छत्रन ताना

हानिया कितन छथन ताथानगर किविया हाहिया किन्न य शिक्तिमकारम—दिश्वानगर किविया हाहिया किन्न य शिक्तिमकारम—दिश्वान नीन ने के काम ध्रमीरक वर्ष काइ हित मक वानिक्रन किविया तियाहि , त्रहेशात कि स्मा निक्तित हैं। कि हानिया कियाहि ! किसिट क्विट ति भाका मिनाइया कियाहि ! किनिट । वर्षन क्यां श्रमण हाया श्रमण वाहे मवह हाकिया किनिद । वर्षन क्यां श्रमण हाया श्रमण वाहे मवह हाकिया किनिद । वर्षन क्यां श्रमण वाहे कित्र । भार्यत मुथ त्य मत्म शिव्या (श्रक्त ! व्यक्तिक त्रम्य मत्र वृद्य वर्षन व्यक्तियाह । कानाह क्यां मिनिट मत्र मत्र वृद्य वर्षन व्यक्तियाह । कित्र विवास किनाह क्यां स्थापन कित्र मां कित्र विवास कित्र मां कित्र विवास किन्न किन्न मां किन्न किन्न किन्न किन्न मां किन्न किन्न किन्न किन्न किन्न मां किन्न किन्न किन्न किन्न किन्न किन्न किन्न मां किन्न किन किन्न किन किन्न किन

'পাল অড় কর প্রীদাম, দান দেও শিকায়।
স্বনে বিষম থাই, নাম করে মায়।
আজি মাঠে আমাদের বিলম্ব দেখিয়া।
হেন বুঝি কাঁদে মা পথ পানে চাঞা।
বেলি অবসান হৈল, চল যাই ঘরে।
মায় না দেখিয়া প্রাণ কেমন জানি করে।
বলরাম দাসে কহে তুনি কানাইর বোল।

(প্রেমদাস)

সকল রাখাল মাথে পড়ে উতরোল ।"
তথন গোপাল নিজে—

"সব ধের নাম কৈরা, অধরে মুরলী লৈরা,
ডাকিয়া পূরিল উচ্চ অরে।
তথনিয়া বেণুর রব, ধায় ধেরু বৎস সব
পুচ্ছ ফেলি পিঠের উপরে॥
ধেরু সব সারি সারি, হাছা হাছা রব করি
দাড়াইল রুফের নিকটে।
হুয় অবি পড়ে বাটে, প্রেমের তরঙ্গ ওঠে,—
সেহে গানী ভাম-অঙ্গ চাটে॥"

তথন ধেমু বংস লইয়া ভাম সঙ্গে রাধাল দল
গৃহাভিমুখে চলিল। তাহাদের আনন্দ কলরবে ''ঘাট
বাট তট মাঠ'' প্রতিধ্বনিত হইয়া উঠিল। ভামাদা
সন্ধ্যাদেনী থিক্ষ নক্ষত্র-নেত্রে ছায়াছ্যলা গোর্লীমণ্ডিতঃ
ধরণীর পানে নীরবে চাহিয়া সেই স্নেহ দৃগ্য দেখিতে
লাগিলেন।

কানাই বলাই রাখাল ও গোধন দক্তে গৃহে পেলেন। গোবংসগুলি থলা স্থানে রাখিয়া ভাহারা সকলেই মা যশোদার নিকট উপস্থিত হইলেন। তাঁহার সেহ-হত্তের দেওয়া নবণীর ভাগ না লইয়া কি কোঝাও যাওয়া যায় ? নক্ষরাণী সকলকে ননী বন্টন করিয়া দিলে ভাহাদের একজন উহা খাইতে খাইতে খাইতেই গোপাল পথে যাইতে যাইতে কি সব কার্যা করিয়াছে ভাহাই মা যশোদার সিধ্যোজ্জল চক্ষের দিকে চাহিয়া বর্ণন করিয়া বলিতে লাগিল,—

"নিরমণ যন্না— জল মাহা হেরই
আপন আপন তমু ছায়।
দশনহি অধর, নয়ন করি বৃদ্ধিন,
কোপ কর্মে পুন্ তায়॥,
বেনে ভিরিভন্ধি রন্ধি করি করু করি,
কণে কণে বেণু বাদার।

विभन (परे तमहि ক্ষণে ভক্ষণর उक्तिय ठत्रन (मानाय ॥ विवयरे गन इनान। मुक्ष पूत्रकी करत, गरम खन्नावनी, চৌদিকে বেণ্ডি ব্ৰহ্মবাল।।" কামুর কাণ্ডের কথা শুনিয়া সকলেই হাসিতে माशिरमन। उपन--'রাণী ভাগে আনন্দ দাগরে। बार्ग वमारेशा मानि, किम्प्त वमारे ताब. **চুब (मेरे पूर्व-ऋ्षाकरत्र ॥** कीत, ननी, रहना, भन्न, आनिहारह यरत यन व्यार्ग (५३ वास्यव वहरन । পাছে कानाहेत्र मूर्यः, त्या दानी महाऋर्य निविध हैं। प्रमृथ शास ॥ গোপের রুমনী যত, চৌদিকে শত শত মুখ হেরি লছ লত্ গোলে। মাতা যশোমতি খেলি, মগল হলাহলি আরতি করয়ে কুতুহলে॥ জ্বালিয়া রতন বাতি, করে দবে স্থারতি হর্ষিত যুগোমতি মাই। करह रामद्राम पारम. व्यानम मागरत छारम.

ইহার পরে বহু দিন চলিয়া গিয়াছে। রুন্দাবনের
আর সে দিন নাই। আজ গোকুল অন্ধকার। দারুল
অক্র আদিয়া গোকুলচক্রকে সপুরায় লইয়া গিয়াছেন।
ব্রজে কেবল গগণ ভেদী হাহাকার। গোপীদিগের
বিষাদ মাধা মানমুখে আর কেহ হাসির রেখাটি পর্যক্র
দেখিতে পায় না, তাহাদের নীণ্নয়ান অবিরও অঞ্চ ভারাক্রান্ত। রাখাল বালকগণ গোপাল-বিরহে আর তেমন করিয়া খেলা করে না, ছুটাছুটি করে না, নাচে না,
গায় না—ভাক্রানের স্বাভাবিক চাঞ্চল্য ভাহারা পরিভাগে
করিয়াছে। কেবল মাঝে মাঝে গ্রাণ গোপাল কোথা

इट कालि विशासि याहै॥"

গ্ৰেশি রে" বলিয়া দীর্ঘ নিখাদ ত্যাপ করে। পাভীকুল আবি তেমন প্রকৃল ভাবে তুণ ধায় না। কনও বা শাইতে শাইতে উর্দুণ হইয়া দাড়াইয়া থাকে, কবলিত তুপগুদ্ধ মুধ হইতে পড়িয়া যায়। তুঃধিনী মা-ঘশোদার ক্ষণা আর কি বলিব ? তিনি দিবসের অধিকাংশ সময়ই **অটেডক্স অবস্থায় থাকেন।** যথন চৈতক্স লাভ করেন ভৰনই বুকদাটা হাহাকার ৷ অঞ ঝরিতে ঝরিতে আমাৰি-কুবলয় জ্যোতিহীন হইয়াছে। উনাদিনী। তাঁহার হুংখে, ভামের বিরহে গোকুলের প্রপ্রকী ভরুষতা প্র্যান্ত নিরানন্দ, প্রভাতে সন্ধ্যায় পাধী আর তেমন করিয়া গায় না। তাঁহার প্রাণ-পোপালের যে মধুর বাশীর রবে মূগকুল থমকিয়া দাড়াইত, ক্ষম্ম ফুটিয়া উঠিত, যমুনা উজান বহিত সে পাগল-করা অভ্ৰস-কৰা বানী আৱ বাজে না! হায় গোপাল কোপায় ুণেল ৯ সে কি আর আসিবে না ? কেন তিনি অক্রের ক্লান্ত বিশ্বাস করিয়া হ'দিন পরেই গোপাল ফিরিয়া আসিবে এই আখাদে তাহাকে ছাড়িয়া দিলেন ? মা মুখোলা কপালে করাঘাত করিয়া বলিতে লাগিলেন.-

ললিত-যোগিয়া—আড়া ঠেকা।

"হার আমি কি করিলেন, পেরে রতন হারাইলেম,
পরের কগার দরে দিলেম অনল গো॥
অক্তুর বা কোপাকার কে, দে আমা স্বাকার কে,
ভাহাকে বা চিনে কে?
দে কেন নীলম্বিকে হরে' নিল্॥"
শৌক্ত-বিহুল্য পুনরায় কহিলেন,—

भधूकारावत चूत — र्रुःति ।
"निन मूनि नीनमिष रा पिन,
चामात मरन दहेन रा पिन,
फिर्ति कि चात द्वर अगन पिन ॥
रा शास्क ना जिल्लाक रहर्ष,
जाम्ल किर्ति पिरुम रहर्ष,
रा कृत रहर्ष मरू रार्जिय रा पिन ॥

'ওমা যাই ষাই' বলে' কারে বা সুধার গো, 'নেরে থারে ফীর নণী' কে তারে বলে গো, কারে বা বলে জননী, কেবা দেয় ফীর ননী ? খায় কি রে সে ফীর ননী, তুথিনীরে মনে হয় কি একদিন ॥"

-- ( মধুস্দন কিন্তর )

যশে। মতি একদিন তাঁহার প্রাণ গোপালকে স্বশ্নে দেখিয়াছেন। গোপাল যেন সেই ছোটট, সেই যেন প্রফুল্ল নাল পল্লটি। তাঁহার সঙ্গে কতই আদার করিতেছেন। কতই না মধুর প্ররে মা বলিয়া ডাকিতেছেন, ক্লণে নবনীত চাহিতেছেন, ক্লণে বা আকাশের চাঁদ পাড়িয়া দিতে বলিতেছেন, আর না পাইকে কাঁদিতেছেন, স্পন্ন-ভঙ্গে নিশাবসানে রাণী গোপরাদ্বে বলিবেন,—

্ৰেছাগ — একতালা।

"শোন ব্ৰহুৱাজ, স্বপনেতে আজ,
দেখা দিয়ে গোপাল কোথা লুকালে।
বেন সে চঞ্চল চাঁদে, অঞ্চল ধরে' কাঁদে,

'জননী দে ননী দে ননী বলে'॥

नीन करनवत, ध्नाय ध्मत,
विश्रम् (थ रयन कड़ रे मध्य कत
मकातिय छारक 'मा' वरन'।
यड कैं। एन वाहा विन मत मत,
आमि अड़ा भिनो विन मत् मत्,
वर्षाम नाहि अवमत, रकना निरंद मत,
अम्नि मत् मत् विन रफनिरनम रिटन ॥
ध्ना स्वर्ण रकारन जूल निरंग होन,
अकरन म्हारनम है। एन वनन है। एन,
भूनः है। एक कै। एम है। एक होन है। एवं

সে কেন কৃঁদিবে বলি 'চাঁদ চাঁদ,'
বিলেম চাঁদের মাঝে তুই অকলম্ব চাঁদ,
ঐ দেখ্ চাঁদ আছে তোর চরণ তলে ॥"
—( ৮ক্ষকমল গোসামী )।

এই ত অবস্থা। ইহারই পরে একদিন প্রভাত সময়ে ভ্রম বেশ- ভর কেশ, ভর গুদ্দ, ভর দেহ, ভর মাল্যধারী নারদ ঋবি বীণাযম্ভে মধুর হরি নাম গান করিতে করিতে মন্দরাজপুরে উপস্থিত হইলেন। ঋষিপ্রবর গোপরাণীর অবস্থা দেখিয়া বড়ই ছঃখ প্রকাশ করিতে লাগিলেন। ভিনি মধুরায় যাইবেন ভনিয়া রাণী তাঁহাকে বলিলেন,---

"বলো' বলো' নারদ মূনি
মধুরার এই তৃঃখের সমাচার,
দিবানিশি ব্রজবাসী করে হাহাকার।
কোঁদে কোঁদে ব্রজের রাখাল
ধ্লাতে লুটার,

গোপাল বিনে ত্রব্দের গো-পাল উর্দ্ধ মুখে ধায়।

যেন শতবর্ষ কৃষ্ণ হারা, হায়, এ ছ্থিনীর বাঁচা ভার ॥"

( আনন্দচন্দ্র মিত্র )।

এ দিকে রাধাল বালকগণ আর কিছুতেই গোপালহীন নিরানক্ষ লাবন সহা করিতে না পারিয়া যমুনার
উত্তাল-তরঙ্গাকুল নীল জলরাশি পার হইয়া "হা ক্ষাকোথা কৃষ্ণ" বলিয়া খুঁজিতে খুঁজিতে দেই "নিঠুর
চূড়ামণি"র নিকট উপস্থিত হইতে মনন্ত করিয়াছে।
এমন সময়ে তাহারা দেখিল নারদ-মুখে সংবাদ পাইয়াই
হউক বা যে কোন কারণেই হউক তাহাদের প্রাণ
কানাই আনিয়াছে। তাহারা আনক্ষাশ্রু বিস্ক্রেন
করিতে করিতে পুলকাঞ্চিত দেহে তাহাদের প্রাণের
পোপালের হাত ধ্রিয়া ব্লিতে লাগিল,—

ভূপালী—কাওয়ালি। "এস এপ ভাই কাক নাই আর বিণয়ে, এপ এম ভাই। বুন্দারণ্য করি শৃষ্য ও কি জন্য ছিলে অন্য ঠাই,

কানাই চল চল অবিলয়ে ষাই ॥
'গ্রাম তো ব্রজবাসী-হিত-কারী',
বলে' থাকে এ রুজান্ত দৰে স্থনিতান্ত,
ভেবে আছি শান্ত হয়ে' ভাই,
ভেবে ভেবে মা যশোদা সদা বুরে,
কাঁদ্ধে কাঁদ্তে ফিরে, থেকে পেকে
ভাকেরে কানাই ॥

সুবের এজগাম শুধ্যাত আছে নাম, স্বিরাম হা হা শক ভিন্ন নাই ॥" (৮রামকুমার বসকি)।

মুহূর্ত্ত মধ্যে গোণালের গোকলে আগমন সংবাদ রুলাবনের পথে ঘাটে, বরে ঘরে, বনে প্রান্তরে রাষ্ট্র ইইয়া পেল। ব্রঙ্গের আবাল রুদ্ধ বনিতা এই অসম্বাবনীয় সুখের সংবাদে অধার হইয়া ছুটিয়া আসিল। আলুলায়িত কুন্তলা, শিশিল বসনা, বিবশা মশোদা আশুজলে ভাসিতে ভাসিতে, গড়িতে পড়িতে ছুটিয়া আগিলেন। গোপালকে কোলে টানিয়া সে টাদমুধ দেখিয়া দেখিয়া, কত কালাই না কাহিলেন। কথিকিৎ শান্ত হইয়া বলিতে লাগিলেন,—

**পद्रक-यशुगान** ।

"কে এলি আমার রতন্মণি, বল শুনি।
ধর্ম-মাত<sup>ব</sup>-পিতা নিয়ে ছিলি মধুবাতে,
পরের মাকে মা বলিলি, মতি সেই হুং**খেতে**,

বুকেছিলি ননী দিবে,
তাই পিতা ভাক্লি বস্থদেবে,
দে নবনী কোপা পাবে—

ক্র দেশ্বে সেপেছি ননী ""

(৬মধুজনন কিল্লুর) [

হিন্দু ভক্ত তাঁহার সভানের চল চল কচি মুখখানিতে বেই বিষব্যাণী স্নেহ রাশির প্রোজ্ঞন প্রতিবিষ হেবিয়াই—সেট অমন্ত সুন্দরের স্বর্গ নিরীকণ করিয়াই, বাংস্লাভাবে তাঁর সেবা করিয়া ধন্ত হ'ন।

প্রিযোগেজকিশোর রক্ষিত।

নিযুক্ত হইলেন, সেই স্বার্থসর্কান্থ ব্যক্তিগণকে "বৈশু" করিলেন, আর বীহারা শোকগ্রন্ত ক্টরা ভয়ে ছুটাছুটি করিত, অবচ অপরের পরিচ্যাাও করিত, সেই নিস্তেল এবং অরবীর্ব্য জনগণকে "পুল্র" আখ্যা প্রদান করিলেন এবং তাঁহাদের চাতুবর্ণা রক্ষার নিমিন্ত ধর্ম ও লীবিকার নির্দেশ করিন্ধা দিলেন।" বায়ুপুরাণ, প্রথম পাদ, ৮ম অধ্যার। •

### ভারতের আর্য্য ও অনার্য্য

্চতুর্থ প্রস্তাব—ভারতীয় মন্ত প্রথম অংশ (পূর্ব প্রকাশিতের পর)

বর্ণ ভেদের প্রাক্তালে আর্গাদিগের কিন্তুপ গুণ কর্ম স্বভাব ছিল এবং তাঁহাদিগকে কি বলিয়া পরিচিত করা হইড, ভঃসহস্কে প্রাচীনতম বায়ু পুরাণ বলিতেছেন,—

"সেই আদিব্রে সতা, অলোভ, কনা, তুটি, তথ ও দম
সকলেরই ছিল। রূপ, আয়ু সভাব ও ক্রিরা ধারা সকলেই
সমান ছিল, কাহারই কিছুমাত্র বিশেষত ল লিত ইউত না
কেইই ভাল মন্দ বিবেচনা করিয়া কার্যা করিত না, পরস্তু
অভাবই কর্মা করিত। সভার্গে শুভাশুভ কর্মের প্রবৃত্তি
ছিল না, বর্ণাশ্রমের ব্যবস্থা ছিল না,—পরস্তু বর্ণশহরও
ছইত না।" ধাযু পুরাণ, প্রথম পাদ, ৮ম অধ্যায়।

"পরে সেই প্রজাবর্গের জীবিকোপার বিহিত চইলে, ভগৰান ব্রহ্মা ভাহাদিগের মধ্যে বিবাদ-বিসম্বাদ নিবারণের জন্ত কতকণ্ডলি বিধিবাবস্থা প্রণায়ন করিকেন। তাহাদিগের মধ্যে বাঁহারা বলবান্ ও ভূপরিগ্রহীতা এবং বিশেষ ধর্মা-পরারণ নহেন, তাঁহাদিগকে 'ক্ষরিগ্র' পদে স্থাপন করিলা জালার সাধারণের পরিকাণের জন্ত নিযুক্ত করিলেন। সেই ক্ষরিরগণের নিকট নির্ভারে ব্যহারা উপস্থিত চইতেন ট্রেপাস্মা করিভেন) এবং সভাবাদী ও সর্পাভূতে বন্ধবাদী ছিলেন, ভাঁহাদিগকে, 'ব্যাহ্মণ' করিলেন। আর গাঁহারা ইহাদের ক্ষপেক। ত্র্মণ অথচ হিংসাপুর্ণ কর্মে (ক্লবি) "ভেদাস তাম লোভশ্চ ক্ষমা তৃষ্টি: স্থং দম:।
 নির্কিশেষান্ত তাঃ সর্কারূপার্ংশীল চেষ্টিতে:।
 ব্যুদ্ধি পূর্বকং বৃত্তং প্রজানাং জায়তে স্বরম্ ॥৬০॥
 শুরুদ্ধি: কৃতবৃগো কর্মণো: শুন্ত পাপরো:।
 বর্ণাশ্রম বাবস্থাশ্যন ভদাসন্ ন সকর: ॥৬১॥
 "সংসিদ্ধান্ত বার্তারাং ততন্তানাং স্বরং ভূবা।
 র্মাদা: ছাপরামাস যথারদ্ধা: পরস্পরম্ ॥১৬১॥
 বে বৈ পরিপ্রহীতার স্থাসামাসরুদান্ত্রিকা:।
 ইতরেষাং কৃতত্যাণা: ছাপরামাস ক্র্যুক্তি স্থাকা
 উপতিষ্ঠির যে তান্ বৈ যাবস্থা। নির্ভিরাম্থা।
 সত্যং ব্রহ্ম যথা ভূতং ক্রবস্থা ব্রাক্রাশিক্ত ভেলা
 ॥১৬৩॥

বে চান্তেংপাবলান্তেষাং বৈশসং কর্মসংস্থিতাঃ।

কীনাশা নাশয়ন্তি অ পুথিব্যাং প্রাগতক্সিতাঃ।

বৈশ্যাক্রে তানাভঃ কীনাদান্ বৃত্তি সাধকান্

॥১৬৪॥

শোচস্কল্ড প্রবন্ধল্য পরিচর্গ্যাস্থ্য বে রতা: ।
নিস্তেজনোহল্লবীগ্যাল্ড শূড়াং স্তান এবীতুস: ॥১৬৫॥
তেষাং কর্মাণি ধর্মাংশ্চ এক্ষাত্ বাদধাং প্রাভূ: ।
সংস্থিতে প্রাক্তায়াস্ত চাতুর্কার্ণমা সক্ষশ: ॥১৬৬॥
বায়ুপুরাণ, প্রথমপাণে, অষ্টম অধ্যায়ে ।

(3.3)

ব্দাওপুরাণ পূর্বভাগ, অষ্টম অধ্যায়।
মংস্থাবাণ, বিষ্ণুপ্রাণ, ও মার্কভেয় পুরাণেও এই
প্রধার মত প্রকাশিত হইয়াছে দেখিতে পাওয়া বায়।

উল্লিখিত বায়ু (অথবা ব্রহাও ) পুরাণের প্লোকাখলী इहेट एका राज या चानिम यूर्ण नमान शांभरनत माम माम हे मबाच तक्क किया वार्वत श्रीतिकी हरेश-ছিল এবং পরে সভ্যতার উন্নতির সহিত উক্ত ক্ষত্রিয় यार्थि व्यक्तिवृत्मत्र भाषा कर्षकाल (कह खान्नान, (कह देवमा अवर (कहवा मृत इहेब्राहित्मन । इहलाव्याक छेपनियम् अ आमता এই नीजित आजाम भारेग्राहि আর বৌদ্ধ এবং জৈন সম্প্রনীতিতেও এইরূপ বর্ণ বিভাগের পরিচয় পাওয়া গিয়াছে। প্রাচীন "বৌদ ভারতের ইতিহাস'' নামক গ্রন্থে ডাক্তার 'বিস ডেভিস'' বলিভেছেন যে, বৌদ্ধ সমাজে রাজাদিণের সন্মান भरक्षाक हिन जवर बाक्षणितित मचान छांशामत वानक নিমে ছিল । জৈনদিগের প্রামাণিক গ্রন্থ "জিন मः हिछ।" वनिशास्त्र-

''ক্ষত্রিয় বৈশ্য এবং শুদ্র এই ভিন বর্ণ কুর্বলের রক। हैजानि अन्वन्छः एष्ठे द्रेशाहिन। क्वित्र कुमात्रश्वत মধ্যে ধাঁহারা অণুত্রত পরায়ণ ছিলেন অথবা অধিকতর ধর্ম কর্ম করিতেন, ভরত তাঁহাদিগকেই আগণ কবিয়াছিলেন ইত্যাদি।" +

- মহাভারত শান্তিপর্কে কিন্তু ঠিক বিপরীত মতবাদ প্রচারিত হইয়াছে। তথার উক্ত হইয়াছে,-

"প্রশ্ন। চতুরিশ বর্ণের প্রভ্যেক বর্ণের মধ্যেই যখন नर्स धकात वर्ष ( तड्) विमाधान त्रश्यात्व, ज्यन क्वन वर्ग ( तु ) (पवित्राहे भक्ष्यागरात्र वर्ग (छात् ( काछिरछात् ) किञ्जाल द्वित श्रेटिक लादि ? (मधून, नकन माक्ट्रे काम, द्याप, ७४, (गांड, प्याक, ठिस्र), क्रूपा ७ शत्रधम चांता वार्क्न रम्, अवः मकरमत (मह रहेर छहे (अम, मृज, পুরীষ, শ্লেমা, পিত ও শোণিত নির্গত হইরা থাকে। অতএব কিরপে বর্ণ বিভাগ করা যাইতে পারে ?" ‡

हेशलांक वच्छः वर्तत्र हेश्व विस्त नाहै। ममुनग्र कगरहे जान व्यर्थार जन्मम् हिन। यस्याग्न भूत्यं विभाषात्र। एहे दहेत्रा कृत्य कृत्य कृति ষারা ভিন্ন তিল বর্ণে পরিগণিত হইয়াছে। যে ত্রাক্ষণণণ প্ৰভাৰে কামভোগপ্ৰিয়, १९४१ का সাহসী ও তীক্ষ হইয়া স্বধর্ম ত্যাগ করিয়াছে, ভা**হারা** त्रक्रवर्ग जनः क्वित्रव ; यारात्रा तकः ७ ७ स्माधन अस्ति পতপাৰন ও কৃষি কাৰ্য) অবলঘন করিয়াছে, ভাছারা भी जर्न बनः देशाप बनः याहात्रा जत्माखन **अलाद** दिश्माभव, नुक, भक्षकत्याभाषाना, विशानानी अत्मीह लंहे बहेगा छेठियाहरू, जादाताहे क्रक्टवर्ग ७ मूनव शांख হইয়াছে। ত্রাগ্রণগণ এইরুপ ভিন্ন ভিন্ন কার্য্য হারাই भुषक भुषक वर्ग लाख कविशाहन।" • महाखात्रछ, भाष्ठिशक्।

#### ± "**अवबाज** छेवाह ।

চাতুৰ্ণাস্থ বৰেন যদি বৰ্ণো বিভিন্ততে। मर्द्यवाः चन् वर्गानाः मृश्रास्त वर्गमङ्गः ॥ कायः (कार्या ७३१ मार्छ। (नाकन्तिका कृतान्यः)। দর্কেষাং য প্রভবতি কন্মাদ বর্ণো বিভিন্নতে । त्यम्यू भूतीयानि स्त्रपा भिक्त न त्यानिक्य । छम्: क्वांड भरतंवाः क्वाम् वर्शा विविश्व**र्छ** ॥ क्यमानाभगः (व) द्वाः द्वाचतानाक काठवः। তেযাং বিবিধ বর্ণানাং কুতোধর্ণ বিনিভিয়ঃ 🚧

মহাভারত, শান্তি পর্বা, ১৮৯ অধ্যার। ব্ৰাহ্মণ। পূৰ্ব হাইং হি কৰ্মভিব বিঠাং প্তম্॥

<sup>•</sup> Dr. Rhys Davis' The Buddhist India, Chapter IV.

<sup>† &</sup>quot;चित्रियः इवि-विष्यंवानिकानिक्रियेखानि। क्यानि यष्ट्र विश्वानि श्वाः अवाकीवन (इंडवः । खशः क्षाबित्र विष्टे नुषाः क्रक्रवानामि छ देनः । ক্তিরেষু কুমারেষু যে হণুত্রত পরায়ণাঃ। क्षेट्रांट बाक्षनाः भकात् छत्राञ्चाकारवयमा ॥'' हेलाति \* ''न वित्मरवाहिक वर्गानाः मवर बाक्षिमार कगर्। किन गरिका, ठकूर्व श्रीताक्ष्म, विश्वत्कावश्र ।

পুর্বে বায় পুরাণাদির মতাছদারে দেখা পিয়াছে যে

নিমান্ধে আদেশ ক্ষান্তির প্রকাশিত হইয়াছিল এবং পরে

ক্রেমশঃ ক্ষান্তিরবর্ণ ই গুণকর্মাদির তেলবশতঃ চাত্বর্ণে

বিভক্ত হইয়াছে, কিন্তু একণে মহাভারতের বাক্যাবলী

হইতে দেখা গেল যে পুরাকালে দমালে প্রথমে একমান্ত রাক্ষণ বর্ণ ই ছিল এবং ক্রমশঃ তাহারই ক্রমাবনতি হেত্

পুণর নিক্টতর বর্ণের উত্তব বা বিকাশ হইয়াছে।

মহাভারতের পরিশিষ্টভাগ অর্থাৎ "হরিবংশে" আবার

এক দক্ষ প্রজাপতি হইতেই ব্রাক্ষণাদি চারিবর্ণের উত্তব

কীর্তিত হইয়াছে, যথা:—

'ই ক্সিয়জনিত ভেদজান বিরহিত, ত্রহ্মণন্ডব যোগী, বিষ্ণুক্ষণী-দক্ষ প্রজাপতি হইয়া বহুদংখাক প্রভার কৃষ্টি করেন। অক্ষয় অথবা সহময় নিজাম শুরু ধর্ম হইতে ক্রেন্ডবর্শ ত্রাহ্মণ এবং ক্ষর অর্থাৎ হলঃ সহময় কর্মা প্রধান ধর্ম হইতে রক্তবর্গ প্রজার এবং উক্ত উভয় প্রকার নিজাম ও সকাম ধর্মের বিকার হইতে পীতবর্গ বৈশ্য প্রম্য অথবা হয়েতে ক্রেন্ডবর্শ শ্রের বিকার হইতে পীতবর্গ বৈশ্য প্রম্য অথবা হয়েতে ক্রেন্ডবর্শ শ্রের স্থাই ইইয়াছে। এইরূপ খেত রক্ত পীত ও নীল এই উ্টুর্বিশ্ব বর্ণের চিন্তাহারা ভগবান্ বিষ্ণুক্ষপী দক্ষ প্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশা ও শুল এই চারি বর্ণের কৃষ্টি করিয়াছেন। প্রথম তিন বর্ণের লোকের আক্রতি একই প্রকার, ভাহাদের পৃথক প্রক ধর্ম হইলেও সকলেরই বেদ

কাৰভোগপ্ৰিরাতীকাঃ ক্রোধনাঃ প্রিয়সাহসাঃ।
ত্যুক্ত সংমা রক্তাকান্তে বিকাঃ ক্রতাং গতাঃ॥
শোভ্যো রক্তিং সমাস্থার পীতাঃ ক্র্যুপজীবিনঃ।
স্বামানাস্থতিঠন্তি তে বিজা বৈশ্যতাং গতাঃ॥
বিংসান্তপ্রিরা লুকাঃ সর্কর্মোপজীবিনঃ।
ক্রমাঃ শোচ পরিভারীতে বিজাঃ শ্রুতাং গতাঃ॥
ইত্যেতিঃ ক্রমিভির্যুক্তা বিজা বর্ণান্তরংগতাঃ।
ব্রেম্য ব্যক্তক্রিয়ান্তেবাং নিত্যং ন প্রতিবিব্যুক্ত ॥"

्रात् सङ्ख्यात् मृश्चिश्का अन्त स्थापा।

বিহিত কর্ম ও সংস্থারে অধিকার আছে, কিন্ত নির্মাণ অধবা শিল্পরণ জীবিকা হইতে সম্লাত শুলের বেদ বিহিত সংস্থার ও কর্ম নাই। † হরিবংশ, ভবিষ্যপর্ম।

ব্রক্ষের অঙ্গের মূথ ও বাছ প্রভৃতি চারিস্থান, স্থারমূব
মন্থ এবং বৈবস্থাদি মন্থর ঔরস, কশাপ ঋষির পদ্ধী
"মন্থর" গর্জ, দক্ষ প্রজাপতির ঔরস অথবা সমাজের
কোন এক বিশেব অবস্থা হইতে ব্রাহ্মণ, ক্ষর্রেয়, বৈশ্য
এবং শ্রু এই চারি বর্ণের উদ্ভবের কাহিনী ভিন্ন ভিন্ন
শাল্লে ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে কথিত হইয়াছে। মন্থ
মহারাজের মতে প্রথম তিন বর্ণকে, অর্থাৎ ব্রাহ্মণ,
ক্ষর্রের ও বৈশ্য বর্ণকে, "আর্থা" এবং শ্রুকে "জনার্য্য"
স্পিটরূপে বলা হইয়াছে। অক্যান্ত শাল্লে যেরূপ লিখিত
হইয়াছে তাহাতে বোধ হইতেছে যে শ্রুবর্ণ ও প্রথম
তিন বর্ণ হইতে মূলতঃ একেবারে পৃথক ছিল না; ক্রমশঃ
ভণকশ্মাদির অপকর্ণ হেতুই উচ্চবর্ণের কতকগুলি ব্যক্তি
শ্রুবে অবম্মিত হইয়াছে। কেবল "বোধ হইবার"
ক্রা মহে, তাহার প্রমাণ আমরা দিতেছি।

"বাতিরিক্তেক্তিয়ো বিক্ষোগান্বা ব্রহ্মসন্তবঃ।
দক্ষঃ প্রজাপতিভূ বা স্কতে বিপুলাঃ প্রজাঃ ॥৮॥

অক্ষরাদ্ ব্রাহ্মপাঃ পৌন্যাঃ ক্ষরাদ্ ক্ষত্রিয়বায়বাঃ।

বৈশ্যা বিকারতকৈব শ্লা ধুম বিকারতঃ॥৯॥

ষেত লোহিতকৈব বৈঃ পীতেনীলৈক ব্রাহ্মপাঃ।

অভিনিব বিতা বর্ণাশিক্ষরানেন বিক্পা ॥>৽॥

ততো বর্ণহুমাপয়াঃ প্রজা লোকে চতুর্বিধাঃ।

ব্রাহ্মপাঃ ক্ষত্রিয়াঃ শ্লাক্তেম মহীপতে॥>>॥

এক লিঙ্গাঃ প্রপা ছপদাঃ প্রমান্ত্রাঃ।

যাতনায়াতিসন্প্রা গতিভাঃ সর্ব কর্ম ব্যক্তিঃ।

ততো নির্মাণ সন্ত্রাঃ শ্লাং কর্ম বিব্রক্তিঃ।

ততা নির্মাণ সন্ত্রাঃ শ্লাঃ ক্য বিব্রক্তিঃ।

তথায়াইন্তি সংস্থারং নহাত্র ব্রহ্ম বিদ্যুতে॥>৫॥

ছরিবংশ, ভবিষ্যপর্ক, ২০শ প্রধার,

व्यवस्य किन आक्रान अ कालिय को इरे वर्त्त मन्द्र इंदे अकृष्टि कथा वना व्यावमाक। বায়ু প্রভৃতি बरापूतार्पत गएउ "क जिय" वर्षे अवस्य हिन, भरत কোন বিশেষ হেতুতে ক্ষত্রিয়বর্ণের কতকগুলি লোক উন্নত হইয়া ''আহ্মণড'' পাইয়াছিলেন এবং অপর ক্তকপ্ৰলি অবনতি মূলে বৈশ্যত্ব এবং শুক্ত লাভ क्तिशक्तिता আবার মহাভারতের শান্তি পর্বের উল্লিখিত প্রমাণে দেখিতে পাওয়া যায় বে জগতে আদিশকালে একমাত্র "ব্রাহ্মণ" বর্ণেরই অন্তিত্ব ছিল, পরে সামাজিকবর্ণের গুণ কর্মের অপকর্ষ কতকগুলি লোক ক্রিয়ন্তে, বৈশ্যুত্তে অথবা শুদ্রত্তে অবন্মিত হইয়াছে। ত্রন্ধার মান্স পুত্র বা ত্রান্ধণবংশীয় অত্রি ও মরীচি প্রমুধ পরম্বিগণের ঔরস হইতে দেব দানব ও চারিবর্ণের মহুষ্যের সৃষ্টি হইয়াছে, তাহা আমাদের সর্মণান্তেই দেখিতে পাওয়া যায়; কিন্ত ক্ষত্রিয় নরপতিগণের বংশ হইতেও যে ক্রমোন্নতির ফলে অনেকগুলি ব্রাহ্মণ শাধার উত্তব হইয়াছে সে কথা সেরপ श्विषिण नाइ अवर त्में क्याहे वाक्षी विश्वामिए व ব্রাহ্মণৰ প্রাবির স্থয়ে এত গর ভনিতে পাওয়া যায়। আমরা এছলে বছতর "ক্রোপেত" অথবা ক্রিয়-কুলোভব ব্রাহ্মণবংশের পরিচয় প্রদান করিতেছি।

প্রথমতঃ স্থাবংশের ক্ষত্রিয়গণের কথাই গ্রহণ করা যাউক। স্থা্রে পুত্র বৈবেখত মহর অক্সতম পুত্রের মাম ধৃষ্ট ; সেই ধৃষ্ট হইতে ''ধাষ্ট'' নামক ; আহ্মণ বংশের উদ্ভব হইরাছে। (১) শ্রীমত্তাগবত, নবম হন্ধ।

মস্পুত্র দিষ্টের পুত্র নাভাগ ুবৈশ্যতা ব্রোপ্ত হইলেও পরে তাঁহার পুত্রবয় ত্রাহ্মণত লাভ করিয়াছিলেন। (২) হরিবংশ। স্থাবংশীর ধ্বনাখ, রাজার পুত্র হারীভের বংশ ব্রাহ্মণত লাভ করিয়াছিলেন। (৩) লিলপুরাণ ও বায়পুরাণ।

হর্যাবংশীর বিরূপের পুত্র র্থীতর হইতে র্থীতর গোত্রের ব্রাহ্মণগণ উদ্ভূত হইয়াছিলেন। (৪) ঐ বংশ্ বিষ্ণুর্ব রান্ধার পুত্রেরাও ব্রাহ্মণ হইয়াছিলেন। (৫)

চন্দ্রবংশীর ক্ষত্রির রাজবংশে, অসংখ্য ত্রাহ্মণ গোত্রের উৎপত্তি ইইয়াছিল; তন্মধ্যে বিশ্বামিত্র, গৃৎসমদ, শুনক, আইবেণ ও বেণুহোত্র, রাজার বংশে উৎপত্র ত্রাহ্মনগণ বিশেষ রূপে মাননীয় ইইয়াছিলেন (৬)। তপস্থার বলে যে সকল ক্ষত্রির নরপতি ত্রাহ্মণ্য লাভ করিয়া সংসারে অষরত্ব লাভ করিয়াগিয়াছেন, তাঁহাদের মধ্যে বিশ্বামিত্র, মান্ধাতা, সংস্কৃতি, কবি, কপি, পুরুকুৎস, সভা অনুহবান্, ঋথু, আইবেন, অজমীচ, ভর্ম, কন্দীবার্, শিক্ষয়, রণীতর, ক্রন্দ এবং বিশ্ববৃদ্ধ প্রভৃতির নাম সম্বিধ্ব প্রসিদ্ধ (৭)। এক্মাত্র বিশ্বামিত্র ইইতেই কুড়িলি

- (৩) "হারিতো যুবনাস্বশ্য হারিতায়স্ত **আগ্রদাঃ।** এতে হ্যঙ্গিরসঃ পক্ষে ক্রোপেতা দ্বিশাতয়ঃ ॥" লিঙ্গপুরাণে, বায়ুপুরাণে, ৮৮ **জঃ**
- (৪) "প্ৰদ্ধো বিরূপক্ত তক্তপুতো রথীতরঃ ।আ রথীতরাণাং অবরাঃ ক্ষাত্রো পেতা বিজ্ঞাতরঃ।" বায়ুপুরাণ্চচ অব্যাদ্ধা
- (৫) "বিফুব্র: পুতস্তস্ত বিফুব্রা বতঃ স্বতাঃ। এতে হালিরদঃ পুত্রাঃ কাতোপেতাঃ সমাপ্রিতাঃ ॥৮২॥ ঐ ৮৮ অধ্যার।
- (७) वायू भूवान २०। 🕭 व्यवात ।
- (१) "বিখামিত্রো নরপতির্বান্ধাতা সংকৃতিঃ কবিঃ । ১.৫॥
  কপিত পুক কংসক্ত সত্যকান্ধবান্ধা।
  আটিবেণা ২লমীচুক্ত তর্গো ২ক্সোভতবৈবক ॥ ১৬॥
  কন্সীবাকৈব শিক্ষয়ভাৱেত সহারধা।
  রগীতরক্ত কৃদ্দত বিভূবনাদ্যো নৃপাঃ ॥ ১১৭॥
  সাত্রো পেতাঃ স্বতা হোতে তপসা চর্বিতাং গভাঃ।"
  বাহু পুরাণ ১১ অধ্যায় ।

<sup>( &</sup>gt; ) "ধুইাদ্ধাষ্টমভূৎ ক্ষত্তং ত্ৰহ্মভূমং গতং কিতো।" শীমদুভাগৰত, নৰমন্বন্ধ, বিতীয় স্বধায়।

<sup>(</sup>२) "माण वातिरहें। शूर्त्वो रनो देवरणा, बाक्षणणः नरकी।" बिन्दिन, बिन्दिन्मभक्त, २२म समात्र।

কৌশিক পোত্রের সংবাদ পাওয়া যায়। আখালরনের প্রোতহত্তে এবং মৎশুপুরাণে ত্রান্ধণগণের যে পোত্র প্রবারের দীর্ঘ তালিকা আছে, তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত স্করিলে দেখা যাইবে যে হুর্যা এবং চক্রবংশীয় ক্রিয়ে শ্রণতি হইতে অনেক ত্রান্ধণ গোত্রের উৎপতি হইয়াছে। প্রান্ধি গোত্রকার ভর্মান্ধ ব্যাং শক্ত্রণাপুত্র ভরতের প্রোক্তপুত্র এবং ক্ষাত্রের রান্ধা। মৌদ্গলা, শৌনক, মুখীতর, হারীত, সাংস্কৃতি ও বাৎশু প্রমুধ গোত্রের খনি বে ক্লান্তর রান্ধা ভাহা যে কোন মহা পুরাণ পাঠ করিলেই বে ক্লান্তর যান্ধা যায়।

পূর্বকালের সামাজিক নিয়মান্থুনারে ত্রাহ্মণ ও ক্রিনের সম্বন্ধ পুব নিকট ছিল। যে কোন মহাপুরাণ আবং মহাভারত পুলিলেই দেখিতে পাওয়া যাইবে যে মম্ব এবং প্রেলাপভিগণের জামাতা ও দৌহিত্রগণ ত্রাহ্মণ অবচ মুক্ত এবং পৌত্রেরা রাজচক্রবর্তী। সাংসারিক আচারের করে অব্হিত ঋষিগণ প্রায়ই রাজবিগণের করা নিবাহ ক্রিছেল। কোন কোন রাজা (যেমন য্যাতি ও অণুহ) ব্রাহ্মণ ঋষির ক্রাণ্ড বিবাহ করিয়াছিলেন এবং তাহাতে ক্রোনহ্মণ দোৰ হয় নাই। ত ভিন্দিগের সমাজে ছিজ ক্রিবর্ণের সংখ্যে পরস্পরের বিবাহ বিধি সম্বত ছিল। †

সমাজের বে প্রয়ের কথা এই সব শাস্ত্র বলিতেছেন, ভগ্ন ক্ষত্রের হইতে প্রাহ্মণ হওরা আদে আসম্ভব ঘটনা ছিল না; এমন কি তখন গুণকর্ম ধারা উচ্চবর্ণও নিয়-বর্ণে স্বন্মিত হইত এবং গুণকর্মের প্রতাবে নিয়বর্ণও

শ্বাভি বালা তকাচার্য্যের কলা দেবযাণীকে এবং
লিপুত বেংবাদেশ্ব
ততের কলাকে বিবাহ করিয়া
ভিশেষ। মহাভারত; আদিপর্ব এবং হরিবংশ, হরিবংশ
লব্ব। দেবী ভাগবত ইত্যাদি প্রায় সমন্ত পুরাণ দুইবা।

"ত্রৈবর্ণিকেন বোঢ়বাা: স্থাৎ ত্রেবর্ণিক কন্সকা:॥" প্রিন্সংবিভা। চতুর্ব পরিছেদ, বিশ্বকোষ ধৃত। উচ্চবর্ণে উল্লীত হইত। এই সময়ের সমাজের বর্ণ-ভেদকে লক্ষ্য করিয়াই মহর্ষি আপক্তম স্থকীয় ধর্মসংশ্রে বলিয়াছেন,

"ধর্মাচরণ ধারা অধন বর্ণও ক্রমশং জাতির উৎকর্ব ও পরিবর্তন লাভ করিয়া উচ্চ হইতে উচ্চতর বর্ণ প্রাপ্ত হয় এবং শ্রেষ্ঠ চর বর্ণও অধ্যাচরণের ফলে ক্রমশং হীন হইতে হীনতর বর্ণ প্রাথ্য হইয়া থাকে।" \*

यस यहाताक ७ विविद्या एक,-

"( তথা ও কর্মের প্রভাবে ও জায়ের উৎকর্ষ হৈছু)
শূজও ব্রাহ্মণতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে ব্রাহ্মণও শূজতা
প্রাপ্ত হন, এইরপে ( শূজার সংসর্গে) ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্ব
হইতে জাত সন্তানও ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্ব হইয়া থাকে।" †

মংশোরতের ঋষিও ঠিক এই বাক্যের প্রতিধ্বনি করিয়া বশিতেছেন,—

"যে ক্ষতিয় অথবা বৈশ্য আক্ষাপধর্ম অবস্থন করিয়া জীবিকা নির্কাহ করিয়া থাকেন, তিনি আক্ষাপত প্রাপ্ত হন; কিন্তু যে আক্ষাপত পরিত্যাগ করিয়া ক্ষতিয় ধর্মের সেব। করে, সে আক্ষাপত হইতে চ্যুত হইয়া ক্ষতিয় যোনিতে জাত হয়। এইরূপ যে নির্কোধ আক্ষাণ ছর্মান্ত আক্ষাপ্য পাইরাও লোভ মোহ বশতঃ বৈশ্যের কর্ম্ম করে গে বৈশ্যত প্রাপ্ত হয়, এবং বৈশ্য আবার শুদ্র প্রাপ্ত হয়। প্রত্ব প্রাপ্ত হয়।

"ধর্মচর্ময়া জবভোবর্বঃ পূর্বাং পূর্বাং বর্ণমাপয়ভে

জাভিপরিরভৌ।

অধর্ম চর্মা পূর্বো বর্ণো ক্ষতং ক্ষতং বর্ণমাপন্ততে । আপস্তম ধর্মস্ত ।"

া "শুজো ত্রাধণতা মেতি ত্রাধণ শেচতি শুক্তাম্।
ক্ষতিয়া জ্বাডমেবর বিভাগ বৈশ্বাৎ তবৈব চ ॥৬৫॥"
মন্ত্রগংহিতা, দশম প্রধার।

কিছা শুভকর্মের আচরণ করিলে শ্রুও ত্রাহ্মণত এবং বৈশ্বস্থ ক্রিয়ত্ব লাভ করিয়া থাকে।'' ‡

এই সকল শাস্ত্র থাকোর আলোচনা করিলে ক্ষেষ্ট রুমিতে পারা যায় যে শিক্ষা দীকা এবং আচার বাবহারের যারা সে সমরে সভ্য মান্ত্রের সামাজিক সম্মান নির্দ্ধারিত হইত এবং তথনকার লোককে সেই সম্মান রক্ষা করিবার জন্মও বিশেষ যত্ন করিতে হইত। অপরা এবং পরা বিশ্বার পরম পাণ্ডিভ্য লাভ এবং শম দম তপস্তাদি সম্পত্তি হেতু ত্রাহ্মণের এবং তেজঃ ও বীর্ষ্যের প্রাচুর্ণ্যের নিমিত্ত ক্ষত্রিয়ের ও প্রাথান্ত সক্ষা করিবার জন্য প্রাণ্যণ চেটা করিতে হইত। অভি প্রাচীনকালে অধ্যণতি কেকর, কাশীরাজ, অজাতশক্ত,

 "বৈত্তি লৈ বৈ রাজনা ওজো বীর্যাং ত্রিষ্ট্র বোজ লৈইবনং তদিজিয়েল বীর্য্যেল সমর্জয়ত।" ঐতরেয় লাক্ষণে, (১।৫.২)।

''সভাংদানং ক্ষমা শীল মানু শংস্তং তপো ঘূণা।
দৃশ্বয়ে যত্ত্ৰ নাগেল স বাক্ষা হৈছি স্মৃতঃ ॥''
মহাভারত, বন্পকা, ১৮০ অধ্যায়।

भाषातिष्ठित, देनदार्थनक धरः देखवान . श्रवाहन প্রাকৃতি নরপতিগণ বন্ধবিভায় গ্রেক্সপ ও অভিক্রম করিয়াছিলেন, ভদ্ধা ভৃত্তা গোত্রীয় জ্বদ্ধি এবং তাঁহার পুত্র রাম, গোত্রম গোত্রীর क्रभ, खदबास भाजीय त्वान वतः छै।शत भूज अवश्वामा অস্ত্রপত্তের পাণ্ডিত্যে এবং শারীরিক পরাজ্ঞান বহু ক্ষত্তিয় রাজাকে পরাজিত করিয়াছিলেন। তথাচ ক্র্যাবংশীয় तामहस्त, भूक्रवरनीय जीव धनर यहनरभीय खीक्रक माहब छ শত্রে সর্বপ্রকারেই আদর্শ মহুধাত্তের দুলাস্ভ রাখিরা गित्राष्ट्रन । रेन्छ अ मूलगण **डांशायत की दिकार्का**तन कना वाशुक शाकाय निकाद निक आदि महानिहत्व করিতে পারেন নাই বলিয়া মনে হয় এবং ভজ্জন্য অর্ডি প্রাচীন যুগের ইতিহাসে ছুই চারিজন বৈশ্র ও শুদ্র বংশীয় মন্ত্ৰ দুটা খৰির নাম পাওয়া গেলেও তাঁহারা ক্রমেট সমাজের নিয় হইতে নিয়ত্র করে অবন্মিত হইরা ছিলেন। বৈশ্বনপরি বৈদিক কথাকাওে এবং সামাজিক সংস্কারে নাম মাত্র অধিকার স্বীকৃত হটলেও প্রকৃত প্রস্তাবে সমাজ অথবা সভাতার উপর তাহাদের আদে কোন প্রভাব ছিল বলিয়া বোধ হয় না। ক্রম্শঃ বহু অন্রাণ্ मध्येनां प्र नत्न पानिया भूजगत्व प्रम भूष्टि कवांत करन व्यतम्पर म्जान वार्ग (जनी २३८७३ आत्र भुषक् रहेत्रा পড়িলেন। প্রথম প্রথম "আর্য্য শুদ্র" এবং "অমার্ক্য শ্রের" ভেদ সমাজ ব্বিতে পারিতেন এবং তদখুসায়ে প্রথম শ্রেনীর শ্রেরা কিয়ৎ পরিমাণে ভদ্ধ বলিয়া পরিগৃহীত হইতেন। পাণিনি হত্র 'শূদ্রাণামনিরববিজ্ঞা-माम्" । त्रमारकत এই অবস্থার প্রমাণ प्रकृत विशासाम्

† পাণিনি ২০৪০ তে তের মহাজার করে। জনার ছই প্রকার শুদ্রের কথা আছে। এক বৈশি উদ্দিষ্ট কাংখ্য পাত্র ভাষ দিয়া মার্জন করিলে বিভন্ন হয় এবং ভাহা বিজ্ঞাতির ব্যবহারে আসিতে পারে কিন্তু বিতীয় শ্রেণীর ঐরপ পাত্র আর শুদ্ধ করা চলে না, কেলিয়া দিকে হয়।

পাকিয়া পালও দেই সময়ের কীণ স্বতি মনে আনিয়া বিভেছে। কলতঃ ক্রমশঃ ''চাত্বর্ণ্য সমাজে'' বর্ণের প্রক্রেদ দৃদ্ধ ইতে দৃঢ়তর হইতে লাগিল।

> ক্রমশঃ শ্রীঅধিসচন্ত্র ভারতীভূবণ।

# ঠাকুরমা'র কথা।

( 0 )

সোরাশত বংগর পূর্বে বাঙ্গালার পল্লী গমাজ ] ख्यन (मर्म भन्नीरे हिन (मर्मन ख्रामा काम्मा। बिट्न छर्दाना नहत् टेज्यात हम्र नारे । आमता छनिजाम वित्री: नारशात, मुनिवावाव, ठाका ও कनिकाछात कथा। এইড এ দেশের সহর। সহরে বাস করার লোক শাষাদের ছিল না। সুতরাং পরীতেই দেশের ছোট ক্রু সকলের বাদ ছিল। পল্লী সমাজ সেই ছোট বড় পুরুষের সমবায়ে গঠিত ছিল। প্রত্যেক লাতির বিভিন্ন সমার থাকিলেও অনেক স্থানেই বান্ধণগণের প্রাধান্য किन। खाराना कदात यह यागाडां डांशानत हिन। की बाबिनाक श्रीत नकरवारे 'कर्छा' जाकिछ । এই कर्छा अक्षे आधुनिक वांबू, दावा, महादाब প্রভৃতি সারশ্না ক্রিপাধির চেরে অনেক গৌরবাত্মক ছিল। প্রত্যেক গ্রামে बक अक्री नमाक हिन এবং २।८।> बाना लाम नहेबा একটা ক্রির সমাল'ও গঠিত হইত। গ্রামা সমাজের 🕶 এক বা দুইকনের হাতেই সাধারণতঃ গুলু থাকিত। অঞ্চল ইহাদের সাহায্য করিয়া গ্রামের কার্য্য विकाब कतिरुक्त। এখন বে "গণতত্ত" বা "अन अक्षांत्ररमत्र" कथा अना शाय- हेरा अरमरम न्यम नरह विकर है हो है अ लामन आहोन ने निकृष बिकाना ना कविया, 'य-नग' ना गरेशा (कांठे तक क्यान

কাজেই কেব করিতে পারিত না। স্বরং আগড়তলার মহারাজ। বাহাত্র গে দিনের 'গণ' উপেকা করিয়া সমাজের বাহিরে পড়িলেন;—আজিকার গঠিত 'গণ'ও তাঁহাকে তুলিতে পারিল না। 'গণ' শক্তি তথন বড়ু ভয়ন্তর ছিল।

সমাজ ছিল তিন প্রকার। (১) থাওয়া দাওয়ার লমাজ (২) সামাজিক শাসন সংখ্যারক সমাজ (৩) কার্যানির্কাহক সমাজ।

(১) পাওয়া দাওয়ার সমাজের মধ্যে নানাবিধ কড়াকড়ি ছিল। কেহই কোন নির্দিষ্ট আইন সজ্বন করিলে ভাহার বাড়ীতে থাওয়া দাওয়া বন্ধ হইলা ষাইত শ বিশেষ দণ্ড গ্ৰহণে তাহাকে অব্যাহতি দেওয়া হইত। 'বরে ধাওয়ার' রীতি অভান্ত কঠোর ব্যবহার স্থাবস্থিত ছিল। 'ঘরে পাওয়া' অর্থে বাড়ীর श्वीरमारकत्र ग्रांधा এवः পরিবেশন পূর্বক যে খাওয়া। সকল বাড়ীতে সকলের খরে থাওয়া উৎবাইত না। এমন কি নিজ জ্ঞাতি গোষ্ঠির মধ্যেও হরে থাওরা কথন কখন নিষিদ্ধ হইয়া পড়িত। ইংগর মধ্যে যে একটা লুঢ় পবিত্রতার ভাব ছিল, আমরা ভাহা স্বীকার না করিয়া পারি না। এই 'ঘরে খাওয়া'টা জাতি ভেদের একটা গুরুতর শক্ত সংস্করণ। কতকগুলি বংশ 'সমান বংশ' विषया कथिक इहेक। এই পাল্টী पत्र विवाद आधान প্রদান করিতে হইত। কোন কারণে কেহ এই পান্টী খর পরিত্যাগ করিয়া সমস্ক করিলেই ভাষার প্রীর পাকস্পর্শ লইয়া সমাজে কলহ হইত। এমন কি কোন কোন বাক্তির পত্নীর পাকস্পর্শ জীবনেই কেহ করিত না। (म वाक्ति 'चत्र नेपालत' वाहेदत-'वाहित नेपाल' চলিতে পারিত। এইরপ করার কারণ ত্রিয়াছি.-পবিত্রতা ও মর্গাদা রক্ষা। যে সকল ধরের রক্ত শামরা व्यामालित नमान विश्वश व्यानि, शाशालित गय, दकः প্রভৃতি ঋণগুলি আমাদের সমান—আমরা তাহাদের র্দ্ধিত বা পরিবেশিত অল ভোগন করিতে পারি।

शहात तरकत मःवान कानि ना,-- लागत मः आदि गाहेव ना. এই ছিল সে কালের ব্যবসা। সম্ভবতঃ ভালই ছিল। **শেকালে একজনের পরিধে**য় ধুতি, গামছা, বালিশ, বিছানা পর্যান্ত অত্যে ব্যবহার করিত না। সকলেরই বিস্থাস ছিল পরের বাবজ্ত জব্য বাবহারে তাহার দেহের ধর্ম সংক্রামিত এ সকল কারণে হাতে ধার্যা ছওয়ার আশকা আছে। भारतमन भगास वात्रक खाल निधिक हिला। ता मकल বাড়ীতে 'ঘর খাওয়া' ছিল না.—দেই সকল বাড়ীতে ব্যাপার উৎসব উপলক্ষে ইছারা নিম্প্রিভ ছইলে নিছেরা রাল্লা ক্রিয়া খাইতেন। খনিষ্ঠ সম্পর্ক ব্যুতাত কাহারও বাড়ী অভিধি হইবে অভিধির র দিয়া খাওয়ার রীভি ছিল। এই বাবস্থায় উভয় পক্ষের কেহই অপুনানিত মনে করিত না। এখন সকলেই মনে করে,—"ইস উনি ভারী কুলীন—আমার ঘরে थारवन ना रकन १ ना थान अञ्च थान।" এই यে এक है। धार्गा. हेटा आगदा প्रकृत कति मां। काहात अ शक्क दे এह কার্যা মন্দ ছিল না। ইহাতে আভিজাত্যের কোন সম্পর্ক हिन ना। याशायां व्यानत्क हारि- छाशायां मत्नर कर्य-'आभाष वा डिनि ८५। हे भटन करवन १'

পংক্তি ভোজনের মধ্যেও যথেষ্ট কড়াকড়ি ছিল। কে কোথায় বিদিবে তাহা নির্দিষ্ট করিয়া লাইতে হইত। ইহাতে মর্ণ্যাদার লক্ষণ ছিল। এ দেশের রাক্ষণ সমাজ মধ্যে কেবল পাকস্পর্শের সময় এই ব্যবস্থা আছে। কিন্ত কায়ন্ত সমাজে এই সন্মান রীতি এখনও আছে। আমি এই নীতির প্রতি শ্রহা করি।

সে সময় আহারাদি বাপারে আছোর চিন্তাই বেশী ছিল। অনেকে স্বপাক খাইতেন। সকলেই সর্বাদা শ'হুত ভাবে ব্যন আত্মরক্ষার্থ সতর্ক থাকিতেন। খাওয়ার কথা এখন যাহা শুনি, সে সকল ব্যবস্থা সত্য হইলে ভয়ের কারণ বটে।

অনেকে অপর জাতির স্পৃঠ জল পর্যান্ত থাইত না। ব্রংশ্বরো আচারের একান্ত অবীন ছিলেন। সুধু এাদ্রগ কেন প্রত্যেকেই আবার নিষ্ঠ ছিলেন। অনাচারীর সম্মান নষ্ট ছইত। নিরামিধ আহার, মাস ব্রত, বার ব্রত প্রভৃতিও আহারের প্রতিপালিত হইত। আতপ চাউলই উচ্চেশ্রেণীর হিলুরা ব্যবহার করিতেন। সিদ্ধ চাউলের ভাত নিন্দানীর ছিল। মাটার বাসনে বা অগত্যা পিতলের বাসনে পাক হইত। লোহার কড়াই প্রায় কেহই আবহার করিতে না। অস্ততঃ সামাজিক নিমন্ত্রণে নিষিদ্ধ জব্য কেহ ব্যবহার করিতে সাহস করিত না। মহুরী ডাইল অনেক ব্রহ্মণ ও উচ্চ শ্রেণীর হিন্দুরা থাইতেন না। দেবতার নামে উৎসর্গ না করিরা প্রায় কেহই কোন জব্য ভক্ষণ করিত না। হিন্দুর দেবলের ও মুস্থমানের দ্রগার বহু মান্ত সিল্লি ঘাইত।

সামাজিকগণের নিমন্ত্রণাদিরও বিভিন্ন পদ্ধতি ছিল, ক্রনে সে গুলি উঠিরা গিয়াছে। আভিভাতেরে সভিত নিমন্ত্রণ প্রণালীর ব্যবস্থা হইত। তত্তী আটা আটি প্রশংসনীয় না হইলেও এখনকার মত একেবারে সামাবাদ আমরা পছনদ করি না। পতা লিখিবার পাঠে যেমন আমরা গালিগত। সম্মান ও শিষ্টাচার বিশ্বত হইতে পারি না, তেমনই সামাজিক ব্যাপারে ব্যক্তিগত এবং বংশগত সন্মান ছিল। তাহা প্রায় উঠিয়া গিয়াছে। আমাদের বাবেক্র সমাক্রেই দেখিয়াছি, কোন কোন গ্রামের লোক কোন কোন গ্রামের বা বংশের লোকের সহিত এক সভায় বসিতে বা ভোজন করিতে পারিত না। উহারা সমাজে অনেকথানি হেন এবং অপরিচিত ছিল। ভাষার কারণও ছিল। কার্যাভায় এবং আচার ব্যবহারে উহারা এত জ্বন্ত ছিল যে সমাজ তাহাদের সঙ্গে কোন প্রকারে সম্বন্ধ হইতে চাহিত না। সে সকল বিধিঃ ব্যবস্থাও উলটীয়া গিয়াছে। রাটীয় সমাজে সেগুলি এথনো কতকটা আছে। আমার মনে হয়, একটু থাকা উচ্ছিত্র। প্রভাক কিয়েরই একটা আইন, একটু শাসনের ব্যবস্থা না थांकरत उष्णुक्षता भारेरा। आमारतत ममारब उष्णुक्षता প্রাকেশ করিয়াছে! আমরা প্রথম ও মধ্যবরদে যাহা দেখিয়াছি, এখন তাহার ভয়ত্বর পরিবর্ত্তন দেখিতেছি। বে সকল গ্রামের নাম পর্যান্ত ভামি নাই, এখন ভানিতেছি ঐ এ গ্রামে আখামত। পর্যান্ত হইতেছে। সমাজ বিস্তারে এ

चाचिन ३०२१

ভালির বথেট প্রবোজন থাকিলেও মুড়ি মুড়কীর পার্থকা পালা অনাবশুক নহে।

শে কালে কেন, কিছুদিন আগেও পরিচারক 'ঠাকুরের'

হাতে প্রায় কেহ থাইত না। গৃহদেবতার পূজার ভার

হাতুরের উপর দেওয়া হইত না। ঠাকুরেরা কাহারও আগ্রের

থাকিয়া দিন কাটাইত। এখন ও ঠাকুরনের প্রভূষ গৃহদেবতার

অনেক উপরে। আমার ত বিশ্বাস—ব্যারক পরিত্তি থানার বারা

শাল্রির। এখন সামাজিক নিমন্ত্রণে ঠাকুরের র'দাই প্রশস্ত।

আগে ছিল সিলেটী ঠাকুর, এখন ক্রমে কট্কা ও পশ্চিমা

উপরীভধারীগণের আমদানী দেখিতেছি। ব্যাপার সঞ্চীন
বটে। এই বিষয়ে এভ দব কথা আমার মনে আসে যে সব

আলা আনাবশ্রক। বহু দিন ধ্রিয়া আমাদের সমাজে

আহারাদির কত বিধি ব্যবস্থাই দেখিলাম। কত পরিবর্ত্তনই

শেথিলাম। আর একটা কপা বলিয়াই এ বিষয়টা শেষ

করিম।

बाभाइनि डेनमर्क वाड़ीय वा भाड़ाइ (वीबा डावावाड़ा अबिर हम । शक्त वाहीत (वो वामा घरत याहेर ज ना तर हम না এমন সব ঘরের মেরেরা বা বৌরা পাক করিতে ্বাইতেন,—বাঁহাদের ঘরে আহার করিতে নিমান্ততগণের মলে ছেই মাপতি করিতে পারিত না। পরিবেশন কালেও आहे बावला किन। পाक ७ भतित्वमन ६२८७ ममग्र ममग्र दिसान दमान द्योदक वास्त्रि कतिया भर्षा ॥ , दमश्रा हरेसार्छ । সে দক্র নাম নিশান এখন উল্লেখ করা অনুচিত। কোন কোন বাড়ীর বেয়ের। ডাক দাইটে র'।ধুনী ছিলেন। অবিদায় তাল্কদারের বাডীর বৌরাও পাক করিতে বাধা ছিলেন। তাহাতে আনন্দ ও প্রতিষ্ঠা ছিল। शनाव মারুদের বাড়ী, গাঙ্গাটীয়ার বাবুদের বাড়ীর মেধেয়া নাকি মিলেরাই পাক পরিবেশন করিতেন। স্থদপের মহারাজগণ মিজেরাই নিমন্ত্রিত ত্রাহ্মগগণকে পরিবেশন খাওরাইতেন। কি সুশুঝানা পৰিত্রতাই ছিল। আজিও क्षाहात कीन दावा जामारवत्र स्थान स्थान आरम जनः नःरन

বর্ত্তমান আছে। তোমরা সে গুলি গইরা গৌরব করিও—
উপেক্ষা করিও না। পাক পরিবেশনে বৌ বি মরে না—
বরং বাড়ে। মরিলে এই সাড়ে চারিকুড়ি বছরের র ধাবাড়া।
পরিবেশনে আমিই বেশীবার মারতাম। রোজ ৩০।৪০
জনের পাক পরিবেশন—সম্পূর্ণরূপে অন্তের সাহায্য নিরপেক্ষ
হইরা আমি একাকী করিয়াছি। ত্রুক্ষেপও করি নাই।
ঘর লেপা, জল আনা, মশলা তৈরি করা, বাসন কোশন ধোরা
সবই ত নিজে করিয়াছি। তথন শুল চাকর এ সকল কাজ
করিতে পারিত না। কৈ—মনে ত পড়ে মা যে—সে জন্ত কথনো কট বোধ করিয়াছি। পুশ্র বধ্, দেবর পুত্র বযু
যথন আসিরছে,—তথন জীবনের প্রায় বার আনা শেষ
করিয়াছ।

তথন অধ্যাপকের বাড়ীতেও কোন কোন ছাত্র স্থপাক খাইত। ইহাও সামাজিকতার নিধ্নে বাধ্য হইর।। এই ব্যবস্থা শেষে অনেকটা লঘু হইয়াছিল।

(২) সামাজিক শাসন সংস্বার-সমাজ সামাজিক উচ্ছ খল । নিবারণের জন্য সমাজের কঠোর শাসন ছিল। কোন কোন অপরাধের থিচার নিজ গ্রামের মধ্যেই মীমাংসিত। হইত। কোন কোন অপরাধে নিজ সমাজভুক ৪।৫ খানা প্রামের প্রতিনিধি লইয়া বিচার হইত। সমাজ শাসন না মানিলে নাপিত, ধোপা, গুরু, পুরোহিত পর্যান্ত বন্ধ করা ক্রটী স্বীকারে কোন কোন অপরাধ মাজিক **৩ইত। কোন কোন অপরাণে প্রায়শ্চিত বাবস্থাও ছিল।** অপরাধ বিশেষে কোন কোন বাজিকে স্থাঞ্চাত প্রাঞ্ क्या श्रेज। किस धरे मक्न बालात निक का'ज গোষ্ঠীর বা গ্রামবাসী সন্মানিত ব্যক্তির মর্যাদা লক্তন করিছে (पथा घाइँ ज ना। এখন ७ (माना घाघ, मसाटक श्राधाना করার অভিপ্রায় ভিন্ন গ্রামের বা যে কোন সাধারণ ব্যক্তির সহিত স্বার্থ সংশ্রবে পড়িয়া নিজ জ্ঞাতি গোটার সন্মান নষ্ট क्रिकिं वात्रक विशे क्रि मा। वदा व्यापान छान করে। বাহাতে নিজ গ্রামের অপমান হয়, জ্ঞাতি গ্রোমীর কৃতপূর্ব পুরুষীয় শক্তচা উদ্ধারের থনা কোন কোন নীচমনাঃ সমাক্ষপতি এখন প্রাণ প্রতিষ্ঠা করেন। ই হার।
"রাতির" লোহাই দিয়া যে সকল অসকত কার্য্য করেন,
তাহা সে কালের সমাজের রীতি ছিল না! সেকালে যে
উদারতা ছিল,—এখন তাহা নাই। এখন নীচতা, স্বার্থ
এবং নির্ব্যাতনের স্পৃহাই দৃষ্ট হর। এই জন্য সমাজের
শাসনপ্র উচিত মত হর না।

(৩) কার্গা নির্মাহক সমাজ। – সমাজে কতকগুলি কাল ছিল, যে গুলি সমাজের পাঁচজনে নির্বাচ করিত। ভাষাতে শক্তভা মিত্ৰভা বা অন্য কোন বাধা ছিল না। গ্রামের বা বংশের কাহারো মৃত্যু হইলে সকলেই সেখানে গিয়া উপস্থিত কার্যা নির্মাহ করিত। কোন প্রাচীনতম ব্যক্তির মুক্তাতে কেহই সামাজিক 'আঁথুটী' করিত না। • এখন করে-উদারভার ক্রটী। স্বধ্যাপকের মৃত্যুতে ছাত্রগণ সমাজ বিচারের প্রতীকায় বদিয়া থাকিত না। সমাজের প্রাঞ্জন স্থাল পুরুষ হুলা বাড়ার কার্যা ভার গ্রহণেও কোনত্রণ ছেব কেহ করিত না। তীর্থ যাত্রায়ও এরপ সহায়ুকৃতি দেখা যাইত। আহ্বান, কায়ন্ত, বৈষ্ঠ, শুদ্র প্রভৃতি এ সকল কার্য্যে সমান ভাবে অধিকারী ছিলেন। কোন সময় **एक मामाकिक व्याभारत महमा विभन्न इहेन्। भ**िहत्त. অনেকেই ভাষা হইতে বিপদ্ধকে বুকা কবিতে অগ্রসর হইতেন। মুক্তর্দিরার রায় ও বনগ্রামের চৌধুরীগণের এ সম্বরে বহু স্তথ্যতি আমি শুনিয়ছি। সে সকল বুতান্ত বিস্তৃত ভাবে ৰলিলে হয় ত কেহ বিব্ৰক্ত ও ইইতে পাবেন। আমাদের चाउँ । वार्ष्य व प्रकृत कथात्र चार्ताहर्मा चहत्र इरेड । নিকা ৰ প্রশংসার সমালোচনা এত বেশী আমরা গুনিতাম যে ভাহা মুখত্ব হইরা গিয়াছে। শ্রীহট্টের ভট্টেরাও যে সকল স্থাম গুর্নমের ছড়া স্বাওড়াইড,—তাহাতেও অনেক ব্যক্তির পরিচর পাইডাম। সেগুলি উল্লেখ করা অনুচিত।

কোন ব্যক্তি অনাথ পরিবার রাধিয়া মায়া গেলে পদ্লী সমাজ তাহার শ্রাদ্ধ শান্তি ও পরিবারবর্ণের ভরণ পোষণের বাবস্থা পর্যান্ত করিত। অনেকের ঋণ সকলে মিলিয়া আলায়া করিয়া দিত। দীনহীন ব্যক্তিও উপবাসে মারা পরিত না। ভাহার বাবসা হইত।

ছ্শ্চরিত্রের কঠোর শাসনের ব্যবস্থা ছিল। মাথা
মুড়াইরা, পংক্তি ভোজন চইতে উঠাইরা দিয়া শাসন করা
হইত। ত্রপ্তারিণী স্ত্রীণোককে নৈহাটী, কাশী বা
কলিকাভায় নিরা ছাড়িয়া দেওরা হইত। তথু সমাজের
পবিত্রতারকার জন্তা, বাপ দাদার নাম অকলন্ধিত রাখার
উদ্ধেশ্য। তানিয়াছি,এই শ্রেণীর একটী স্ত্রীণোকের পারে ছালা
ভরা মাটী বাধিয়া ভরা ব্রহ্মপুত্রে ডুবাইয়া দেওয়া হইয়াছিল।

म कारण कवन अध्यक्षका कविशा निक उन्ने विधानके সকলের লক্ষ্য ছিল। যেন পাকা ধান ক্ষেত্টিকে সর্বাবিধ অনিষ্টের হাত হটতে বকা করার জন্ম সভাগ গুল্প সভক্তার: সহিত দিন রাত্রি খাড়া পাহারায় নিযুক্ত। উঠিতে ব্যিতে চলিতে থাইতে শুইতে কেবলই একটা ব্যবস্থা মানিয়া চলিতে হইত। কেই কেই বলেন-এটা বড অক্তার! অত কি মানিয়া চৰা যায় 🕈 কিন্তু স্বেক্ষা চাৰিত্ৰে প্ৰোতে গা চালিয়া চলিতে ভ কাহাকেও আপলোষ করিছে গুনি না। একটা কথা বলিলে त्वाथ हत्र तक विद्रक्त करेद्वा मा। कथाएँ। এই-এই श्व সে কালের লোকগুলি চিল ব্রহ্মণ, কায়স্থ, বৈগ প্রভৃতি— বাঁছারা অশনে বসনে বিশেষ নিয়ম পালন করিভেন, বাঁছারা ব্রাহ্ম মুহুর্তে গাত্রোথান করিয়া প্রাতিয়ান করিতেন, ফুল বেলপাতা, তুলনী, দুর্বা সংগ্রহ করিতেন তাঁহারা সকলেই পাগল ছিলেন না। এবং আমি দুট্টার সহিত বিশ্বাস করি कि भागीविक गांगाश कि यानगिक वान, कि विकास, कि: বৃদ্ধিতে তাঁহারা এখনকার প্রধানতম ব্যক্তির অপেকা কোন व्यः (महे (इश हिलान ना ! वदर मन्त्र विषया (मुर्छ हिलान ! তৌলে ওজন করার ম্পৃহা যাহার আছে. তিনি নিজের পিতা পিতামছের গুণবত। শ্বরণ কবিবেন। এ সকল প্রমাণের জঞ पृद्धि यां अप्रांत श्राद्धान नाहे।

সে কালের পলা সমাজে একদিকে উদারত। প্রচুর ছিল;
স্পারদিকে সন্ধীর্ণতারও অবধি ছিল না। কে কাহাকে কোন্

<sup>• &</sup>quot;मारमञ चाँहिन पति, करह कि चाँथ्ही कति"।
—- अ: मण्यानक।

লিক্ষনীয় হইত।

কারণার চাপা দিয়া রাখিবে, কোন রক্ষে আপন বাধ্য রাখিবে, তাহার জন্ত মাথা ঘামাইতে ত্রুটী করিত না। অন্তের জ্ঞাবিশ্রক জমি গোপনে ক্রন্ন করিয়া তাহার অফ্রিধা ঘটান ক্রেক্তি শ্রেণীর কার্যা করার লোক তথন একেবারে ছিল না, ক্রেক্তা বলা যায় না। তবে এ সকল মার পাঁচে থেলিবার ক্রবৃদ্ধি কলাচিং দেখা ঘাইত। যাহারা এ সকল কুটনীতির

আন্ত্রন্ত ভাষ্টের উপাধ ছিল "কায়েড"। সে

ুঁ, সে কালে গলীতে অবিখাদের বিষ প্রবেশ করে নাই। का कि कि दिन अभा (न अभा अदनक भगत श्व (भाभरन इहें छ। আমার টাকা আছে, একখা গোপন রাখা তথন নানা কারণে আবশুক হইত। টাকা কজি আনিয়া, শোগ করার জন্ম খাতক আপ্রাণ চেষ্টা করিত। কারণ ধাণ লোগ না করিয়া অবিলে সাত পুরুষ নরকে গাওয়ার ভর ছিল। কদাচিৎ त्भवा भड़ा हहे**छ। टामात्र मामा ১২৮७ कि ৮৫ म**न्न कानु अक्टोहार्यात्र निकंत स्ट्रेंटि धाक्ति २६८ होक। कर्ष्य करत्र, ইবিল বিধিয়া নিয়া। সে দিন আনাদের উপর এক শাক্ষিক বিপদ্পাত হইয়াছিল। ছগার ইচ্চার সেই দিনই টাকা আদার করা হয়। এর পূধে দলিলের কড়াকড়ি প্রতিবেশীর মধ্যে বড় ওনি নাই। জনি জিরাত বৈচাকেনা পুরা 💮 🔭 হইত। আনরা প্রথম বরুসে গ্রামের জমির ৰে ক্ৰিবা থালানা দেখিয়াছি, তাহা শুনিলে হয়ত তোমরা বিশাস করিবে না। চাবীরা হালচাষ করিতে নিজ জমিতে বৃষ্টিতেছে; লাঙ্গণ জোৱাল বলদের ঘড়ে বোভা আছে, যদি শ্বৈরাৎ কোন পতিত ভূমিতে তাহার লাঙ্গলের 'রেখা' পড়ে, জাৰে ঐ জামি ভাষার ছোত ইইবেই ইইবেৰ। কেন বে ঐ 🗃 মির উপর দিরা এমন অগাবধানে গেল। স্বরং পৃথিবী ভাগার গাল্প চাহিতেছেন, অতএব সে বিনা নজরে, ছই ক্রিমানা থাজানার ভুমি চাষ করিবেই। ব্রুক্লাত্তর, চেরাগা প্রভৃতি দান আনরাই কত দেখিরাছি। শান্তা পিতার লাকে, গামারের উংকট অমিথও প্রোহিতকে

भान क्याब रावशा ६२०। ..

আমরা প্রথম ও মধ্যবন্ধদে চৌড়া লালপেড়ে মোটা সাড়ী পরিতাম। এখন বৌ ঝিরা বেমন আঁটা সাঁটা করিয়া বাহার দেখাইতে কাপড় পরেন, সে সময় এ রকম ছিল বড় নিন্দার বিষয়। আমরা আড়াই পাঁচি কাপড় পরিশাম। কোমরের বাঁ দিকে কতকটা কাপড় ঝুলিয়া রহিত, এখন যাহা নিতম্ব বেইনে বায়িত হয়। ঘোমটা প্রায় বক্ষদেশ স্পর্শ করিত। হাতে ছিল "কলসের কান্দা শাঁখা"। শাঁখা পরিতে প্রাণাস্ত, ধরিতে প্রাণাস্ত, খুলিতে প্রাণাস্ত। সেই শাঁখার নাঁচে অনেক স্থলকায়া অভাগীর ঘা হইত, গহনার মধ্যে নথ, বিশ্বপত্র বাজু আর বাতেনা, গুজরী যথেই। সোণার বালা বড় লোকের জ্ঞা

বৌ ঝিদের লেখা পড়া শিক্ষা ত্র্রাগ্যের কারণ মনে করা ছইত। কলাচিৎ কেহ 'পণ্ডিত বৌ' থাকিলে দে চোরের মত থাকিত। শিশু বোধক মার হরিনাথের বিজয় বসস্ত—এই রকম তুই একথানা ছাপার বইর নাম আনরা প্রায় শেষ বয়সে শুনিয়াছি। আগে ও হাতের লেখা রামায়ণ, মহাভারত, পদ্মপুরাণই পাঠ হইত। হাতের লেখা বই বৌ'রা পড়িতে পারিত না। দে নাকি ভারী শক্ত বিস্তা। গিরিদের নাম ডাক সব ছিল "চুলার ভিতর"। আর কতকটা ছিল আভিন্নতোর উপর। শাণ্ডিল, কাশুপ, গণিত, বাগচী এই চারিঘর তথন পূর্বে মন্তমাসংহের শ্রোতীন বারেক্ত সমাজের সর্ব্ব শেষরা ছিলেন। ঐ সকল ঘরের মেরেরা ক্রমে অস্ত বংশে বিবাহিতা হইলে ভাহাদের সঙ্গে আমিক উন্নত হইয়া উঠিত। এই নেয়েরা তথন স্বর্গের দেববালার অভিনান লইয়া আসিত। আই সেরেরা তথন স্থাকি বিবাহিতা হইলে ভাহাদের সংক্

তথন মেষের মূলা ছিল। এখন বেমন মেয়ে হইলে বাপ মা আগ্রীয় ক্লাণে ত্রিচন্তার শেষ থাকে না,—তথন মেরে হইলে একদণ লোকের আনক আর ধরিত না। এক একটা মেয়ে হাজার হাজার টাকায় বিবাহ হইয়া যাইত। আজকাল বাহারা সমাজে পাড়া হইতে চাহে,—তাহাদের আনেকের মা, পিতানহীকে ত্রুল'হইতে বহু অর্থের বিনিম্যে আনা হইয়াছিল। এ স্কল বিষয় ব্লাবিড় ভাল নয়। সুভ্রাং চুপ করাই ভাল।

ই পূৰ্ব হয় ভট্টাচাৰ্য্য।





১০ম বর্ষ

কার্ত্তিক ১৩২৭

৭ম সংখ্যা

# বঙ্গদর্শন।

( দ্বিতীয় প্রস্তাব )

বঙ্গদর্শন বালালাগাহিত্যের সেবাত্রত গ্রহণ করিয়া উহার যে পরিপুষ্টি ও প্রসাধন করিয়াছিল পূর্বপ্রব্রে व्यागता छैहा यथामध्य मः किश्व ७ म्लंडे जात्व निर्द्धन कतिवात टाहा कतिशाहि। वर्खमान श्ववत्त्र छेश वजीव সমাজের কিরূপ দেবা করিয়াছিল ভাহাই আলোচনা করিব। অবগ্ৰ কথা সহজেই একটা বে!ধগমা হইতে পারে। সংসাবিতাের সেবামাত্রই পরোকভাবে সেবাও বটে, কেন না **न्याद्य**त সংগাহিত্যপাঠে যেমন বৃদ্ধিবৃত্তির হলতা ও ব্যাপকতা শাধিত হয়, তেমনই সল্পয়তারও হৃদ্ধি হয়। বপ্ততঃ गाहिजाहकी बातारे मञ्चली वत्तव नकी शीन कृष्टि अ পরিণতি ঘটে। শেই লগ্যই কবি ভর্তবি বলিধাছেন, "সাহিত্যদন্ধীতকলাবিহীনঃ সাক্ষাৎ পশুঃ পুদ্ধবিষাণহীনঃ।
এই পরিছেদে আমরা এরপ পরোক্ষ সমাজদেবার কথা
বলিব না, আবশুক হইলে অগুপ্রসঙ্গে তৎসম্বন্ধে কিঞ্চিৎ
আলোচনা করা ঘাইবে। বঙ্গদর্শন বলীয় সমাজের
ক্রমান্তিব্য যে দশায় উহার সেবাবৃত গ্রহণ
করিয়াছিল, তথন কেবল পূর্বোক্তর্ম্প গৌণভাবে
সমাজদেবায় সম্ভই না থাকিয়া তাহাকে বলীয় নঁশাজের
অতীত, বর্তমান ও তবিগুৎ আদর্শ সম্বন্ধে নানা কথাই
আলোচনা করিতে হইয়াছে। এই আলোচনাগুলিই
অক্তবার প্রবন্ধে আলোচা।

বন্দর্শনের সমাজদেবার প্রকৃতি নির্দেশ করিতে আমরা প্রধানতঃ বন্দর্শন সম্পাদকের তদানীত্ব রচনাগুলিই প্রমাণরূপে উল্লেখ করিব। সাধারশ্রী পাঠকের চক্ষে বন্দর্শন অপেকা বন্দর্শন-সম্পাদকের আদের অধিক—যোগ্যকপেই অধিক। ইহা ছাড়া প্রথম পর্যায়ের বন্দর্শনে সম্পাদকই বে প্রায় স্ব ছিলেন,

মিডীয় পর্যায়ের স্ট্রনায় বন্ধিমচন্দ্র স্বয়ং তাহা ব্যক্ত कविशारहम । यञ्च ३ मन्नामक एक वाम मिन्ना वनमर्गत्नव ৰাহা কিছু থাকে ভাহার মূল্য বড় অধিক নয়, ভাহা আছ স্কাংশে বন্ধিয়ে নিজ ভাবেরই প্রতিংবনি। ুঁ**ৰ্ত্বিংমর জন্মকালে** বাঙ্গালার সামাজিক অবস্থা কিরূপ ছিল তাহা কিঞ্চিৎ বিভূত ভাবেই খতস্ত্ৰ প্ৰবন্ধে আলোচনা করিয়াছি ।। তাহাতে আমরা দেবিয়াছি, **পাশ্চাত্য শিক্ষা বন্ধী**য় সমাজে একটা খোরতর বিপ্লব **উপন্থিত করিয়াছিল।** ঐ বিপ্লবটা প্রধানত: তদানীস্তন ইংরাজীশিক্ষিত সমাজে আত্মপ্রকাশ করিলেও উহার প্রভাব সমাজের নিয়তম শুর পর্যান্ত পৌছিয়। চিল। **বাড়ে নদী ও** তড়াগের জলের উপরিভাগ যেমন **পালোডিত করে,** নীচের জলকে তেমন আলোডিত করে না; বিস্তু উপরিভাগের জল পুন: পুন: তটে অভিহত रहेका कर्षमाल दरेल तम कर्षम नीतित कल शक्ति मा **ক্রিয়া ছাড়ে** না। বাঙ্গালা সমাজেরও সেই দশা ষ্টিগাছিল। তাই তখন সমগ্র বসসমালই বিপ্রবর্গন্ত বলিলে কোনও অত্যক্তি হয় না। পাশ্চাতা সভ্যতার व्ययम बाइति भवन वामानात शीत-नीत्र कीवन-श्रवाहरक প্রহত করে তখন ঐ প্রবাহ ভাটার অতি ক্ষীণ অবস্থায় डिननीक इंडेग्राहिन। त्रहे क्य डिश अत्मार्भ वासाशाश्च छ दब्दे नारे, भवत अपनाक किडूगाज विषाद-विद्यहन। না করিয়াই সমাজের নানা অন্তনিহিত শক্তির প্রতাবে উহাকে সাদরে বরণ করিয়া লইয়াছিল। এই দেশ ্ৰদি পৃথিবী হইতে সম্পূৰ্ণ বিচ্ছিন্ন, আপুৰি সম্পূৰ্ণ একটা ভ্ৰনবিশেষ হইত, তাহা হইলে स्त्रफ छैरा পृथियोत व्यक्षात्र थ छ स्टेर्ड अञ्चलात निर्देश ্রীচন্তা, সভ্যতা, শিক্ষা, সংস্কার লইয়া তুগু থাকিতে পারিত.

এই প্রবন্ধ গতবংশরের ''প্রতিভা'' পরিকাদ
 প্রকাশিত হইবাছিল।

হয়ত ঐ ভাবেই নিম্বের উত্তরোতর উন্নতিরও একটা না একটা ব্যবস্থা করিতে পারিত। কি**ন্ত এই দেশ ভ লগৎ** ভাডা নৰে। অধাদশ শতাকীতে ভারতের বাহিরে অর্থাৎ পাশ্চাত্য দেশসমূহে বে উন্নতির বক্তা বহিতেছিল উহারই কয়েকটি তেরল ইংরেজের রাজনৈতিক শক্তি-রূপ অমুকুল প্রনে উত্তালতর হইয়া এ দেশীয় স্মাজের দীর্ণতট পুনঃ পুনঃ প্রহত করিতে আরম্ভ করে। সে অবস্থায় উহা একেবারে উপেক্ষা করিয়া চলা সম্ভব ছিল না। অধ্য মনে রাধিতে হইবে যে, অষ্টাদশ শতানীর ররোপীর সভাতার আদর্শ এ দেশের চিরপোধিত অনেক সংস্কারের, এমন কি প্রাচ্য সভ্যতার মূলীভূত অনেক ভাবেরই বিরোধী ছিল। ওক্তির তিতর যথন হঠাৎ তুই চারিটা বালুকণা ঢুকিয়া পড়ে, তথন শুক্তি প্রথমে তাহাকে निल (पर रहेए वाहित कतिया पिवाबरे (हरी করে; দণন তাহা অসম্ভব দেখে, তখন তাদুশ নিক্ষক প্রয়াদ ক্টতে বিরত হইয়া নিজ দেহনিঃসত রুদ ছারা ভাহাকে মুক্তায় পরিণত করে। দেশীর সমাজ হধন प्रिथन (ग भागांजा मण्डांजा वर्ष्ट्रेन ना উপেকा क्रिया हना अकरादारे अमुख्य, ज्यम दम शीदा शीदा शीम আদর্শের সভিত উহার সময়ম সাধনের আবশুক্তা উপশ্কি করিল। বলা বাহলা ব্যাপারটি বড় স্থপাধ্য ছিল না। কুদ্রতম পুস্টি প্রদাব করিতেও প্রকৃতি-মাতার প্রদ্ব-বন্ত্রণা কম হয় না। বহু বন্ত্রণাভোগের পর স্মাক্ষাতৃকা একে একে প্রাচ্য ও প্রতীচ্য ভাবের মধ্যে সমন্বর্দাধনক্ষম করেকটি পুত্র প্রাস্ব করিলেন। রাম্মোহন রায় বল, দেবেন্দ্রনাথ বল, বিভাসাপর वन, ज्राप्त वन, किनव वन, नाविक्रय वन, नमारकत मिक् इटेएंड (मथिएंड श्रांत है शाम अपने अ কার্যোর সফলতা পরিমাপণ করিবার गानगण এই - हैं शास्त्र भएषा एक कि शतिभारण পুর্ব্বোক্তরণ সাম্প্রস্থ বা সম্বয় সাধ্য করিতে সম্ব इरेशाइन ।

अक रिनार्य उपर्वाधिनी ও वनपर्यन-श्रकृष्ठित्र व्यक्षामहै-- अहे नमस्त्र नागत्नत्र अक्टा विवार बाद्यांकन । यथन रक्तर्मन थ्रकानिक इग्र कथन मामास्त्रिक विशादव উৎকট ভাবটা কিছু মন্দ হইয়া আদিয়াছে; কিন্তু अस्वरात यात्र नाहे। छ९पूर्व्स्वे देश्त्रांकी वानाना नानाविष छेळ ७ निम्नात्रनीत विष्ठांगम (मान्य वर्ष्णात শংহাপিত হওয়ায় জাতিবৰ--নির্বিশেষে নানান্তবে কিয়ৎপরিমাণে জানের বিস্তার সাধিত दरेब्राहिन, धरः ७९मत्त्र मत्त्र (गाँछ। हिन्सू मगाव्य किव ঘটিতেছিল। পরিবর্ত্তন অকাদিকে যদিও **ত্রান্দ**শকের উৎসাহী নব্যযুবকদল উপবীত ও উপবীতধারী আচার্গ্যগণকে যুগপৎ বর্জন করিবার উৎসাহে ও অতাত কয়েকট কারণে "আদি সমাঞ" হইতে পৃথক্ হইয়া "ভারতবর্ষীয়" সমাজ স্থাপন করিয়াছিলেন এবং নুতন মুধপাত্র ও মুধপত্র অবলগন করিয়া হিন্দুসমাজকে ও হিন্দু সমাজের সহিত অপেকাক্তত **অবিক সহাত্বভূ**তি সম্পন্ন আদি ব্রাহ্মগণকে বেশ মিঠা কড়া--যত মিঠা নয় তত কড়া--উক্তি গুনাইয়া निष्ठिहित्मन, धरार यनिष्ठ छ। हात्म त्रहे कह कह विन्तू धर्म অপেকা খুষ্টার ধর্মে উন্নততর আদুশ এবং অধিকতর শাষ্ট্রনার স্থল লক্ষ্য করিয়াছিলেন, তথাপি ইহাও স্বরণ বোগ্য বে, তাঁহারাও খুষ্ট প্রচারিত নীতির অমুরাগী हरेग्रां थेडोनि सान जाना शहन करतन नारे। भगारकत নবজাগরিত আত্মাদরের ফলে তাঁহারা স্ক্রিংশে অন্ধভাবে পরাফুকরণের পক্ষপাতী ছিলেন না। সমাজের আ্যাদর কেমন প্রবলভাবে বাডিয়া বৈহিতেছিল তাহার প্রমাণ-রূপে বলা ঘাইতে পারে যে, যেমন একদিকে বছ লোক বাক্ষধর্ম অবলম্বন করিতেছিলেন, কেছ কেছ বা খুৱানও হইতেছিলেন তেমনই অক্সদিকে দেশের সর্মত্র বহ হিদুধর্মগরকিণী সভাও স্থাপিত হইতেছিল। यमिश्व कडे গুলিতে স্বধর্মারকার কুশংকার ও কুমাচারের অসুচিত প্রশংসাও চলিতে-

ছिन, তথাপি প্রতিক্রিয়া হিনাবে ইহা पूर्वीक विश्व यांगामित श्रेतृष्ठि द्य ना। তর্কস্তলে এক-পৰপাতিতা দোষাবহ নহে--গোঁড়া হিন্দুর পক্ষেত্র नरह, हिन्दूरहशीत शतका नरह। • তবে তর্কের জন্ত কোনও স্মান্তের অফুচিতনিন্দা কথনও স্মর্থন্যোগ্য नत्द। এই সময়ে কোনও পক্ষই যে লে লোৰ इटेएड मूख ছिल्नन, छाहा नहर । वखकः "मःश्रात्रक"-भृत्वद् व्ययभा निन्मा वा व्यक्तास्त्रित करने दिन्मूत्रभारमञ्ज व्यापामञ्ज জাগিয়াছিল। কিন্ত এই আত্মাদরেরও विष्यय हिन। निकिठमभाष्ट्र हैदा शौत मध्यादात **अरक्**राद्ध विद्धां के किन ना। विकामां गर्द्ध अर्थे खिंद विश्वाविवाद्य आत्मानन देशा छेनाव्यत । नकन विस्टे देशाय विद्यांशी हिल ना। अपनाटक वरे माना इन এইরপ ছিল,—'ইহা যদি শারদম্মত হয়, তবে চলিতে বাধা নাই। আরও একটি উদাহরণ উল্লেখযোগ্য। वक्रमर्भन श्रेकांभिक दहेतात সমকালে বা अन्नशृह्य अकाम्भाग त्राक्रनातायण तम् हिन्तूशरर्यत् (अर्ह्डा विवयस এক বক্তা করেন। রাজনারায়ণ বাবু ব্রান্ধ হইলেও এক গোঁড়া হিন্দুসভা তাঁহাকে "কলির ব্যাস" আখ্যা দিতে প্রবুত হইয়াছিল, আর বহু দিন ধরিয়া নবা

\* জন ই যাৰ্চ মিল বলিয়াছেন,—No sober judge of human affairs will feel bound to be indignant because those who force on our notice truths which we should other wise have overlooked, overlook some of those which we see. Rather he will think that so long as popular truth is one-sided it is more desirable than otherwise that unpopular truth should have one-sided asserters too. Liberty, Chap, II,

ত্রাধাণ তাঁহাকে লক্ষ্য করিয়া কটুজি বর্ধণ করিয়াছিলেন। রাজনারায়ণ বাবুর বস্তৃতা অবশুই কুসংস্কার বা
শৌজামির সমর্থক ছিল না; কিন্তু যে ভাবে প্রায় সকল
শৌলাই ছিল্পণ এবং অপেকারত ধীরপ্রকৃতি ব্রাহ্মণণ
শৌলাই আহি প্রতি আদর প্রদর্শন করিয়াছিলেন, তাহাতে
বুলা বায় প্রাচ্য ও প্রতীচ্যভাবের সমন্বয় জন্ম দেশটা
বিশেষ ভাবেই আগ্রহান্তিত ইয়া উঠিয়াছিল। এই
আগ্রহকে অবলম্বন করিয়াই বস্বদর্শনের সমাঞ্জশিক্ষাশৌলাইকে অবলম্বন ও স্কল হইয়া উঠিয়াছিল।

े भवना সামাজিক সমস্তা নানাবিধ; তাহার কতক-খিলি কোনও না কোনও আকারে চিরন্তন, আর ক্তিক ভালি দেশীয় সমান্দ পাশ্চাত্য সভ্যতার ও চিস্তার স্কুৰ্বে আগার অপেকায়ত নুতনতর আকারে আবিভূতি হইয়াছিল। সমস্ত সমাজটা যথন নৈমিভিকপ্রলয়গ্রন্ত ভবন চিরন্তন সমস্যাগুলিও কিছু উৎকট আকারে আত্ম-**একাশ করিবে ইহাতে আ**শ্চর্য্যের বিষয় কিছুই নাই। नीशांबनिका, डेक्टनिका, जीनिका, नमाटक जीनावत অধিকার, বিধবাবিবাহ, বছবিবাহ, জাতিভেদ, ধর্ম-শংকার, শান্তাহগত্য, সাধীনচিন্তা ও স্বাধীন আচরণ, শিল, রাজনীতি-সকলই তথন শিক্ষিত ব্যক্তিমাত্তের আংশোচ্য হইয়াছিল এবং সকল দিকেই আমূল পরিবর্ত্তন আবশুক বলিয়া এক শ্রেণীর লোক সময়ে শ্রসময়ে তারস্বরে বোষণা করিতেছিল। বলদর্শন কোনও পক্ষ অবশ্যন না করিয়া শিক্ষিত সমাজের মুখপত্ররূপে উহাদের কতকগুলি সমস্যা সমাধান করিতে প্রবৃত देरेगाहिन। "बहे भव चामत्रा कुछविना मुख्यनारम्ब ইতে এই কামনায় সপর্পণ করিলাম যে, তাঁহার৷ ইহাকে শাপনাদের বার্তাবহ স্বরূপ ব্যবহার করুন। वैयाद देश डांबामित्त्रत विमा, कन्नना, निशि कोनन, अवेर हिर्छा कर्रव भित्र किन । छारा मिर्ग छिक बर्ग कतिका देश विकासि कार्मित क्षेत्र करूक । ... अरे शक कामछ वित्यव शक्यत मध्यन कम्र वा कान সম্প্রদায়বিশেবের মঙ্গলসাধনার্থ হয় হয় নাই। 
শ্বাহাতে
এই প্রিত্ত সর্বজনপাঠ্য হয় তাহা আমাদিগের বিশেষ
উদ্দেশ্য। যাহাতে সাধারণের উন্নতি নাই, তাহাতে
কাহারও উন্নতি সিদ্ধ হইতে পারে না।"

রাজনীতি ও ধর্মসম্বন্ধিনী সমস্যাগুলির বিষয় পরে স্থবিধা হইলে প্রতম্ভাবে আলোচনা করিব। ধর্ম ও রাজনীতি ছাড়া বঙ্গদর্শনের যুগে বঙ্গীয় সমাজের ভাবিবার যোগ্য অগ্রতর রহৎ সমস্যা ছিল—বালালী উচ্চশিক্ষা नाष्ठ कतियां ज्ञाननवन्ततः এवः ज्ञानवकायनाय कि वात्रामीहे थाकिरव, ना यलमूत्र मञ्जब मारहव मानियात्र চেষ্টা করিবে ? ছুই পকেই গোড়ার সংখ্যা প্রচুর ছিল। বাদালা সাহিত্যের প্রতি সেকালের বাদালীর অবহেলার कथा नर्सकनविभिछ। वालाना विह পড़ा पृत्त थाकूक, শিক্ষিত ব্যক্তিগণ অনেকে বাঙ্গালায় কথা বলা পৰ্যন্ত निष्यं विषा ७ कृति व्यवमाननाबनक मान क्रिएन। वन्नमर्गामत "भव रहना" श्रवाहर विकारत निविधा-हिलन, "এখন नवा मुख्यमारम्य मर्या कान्य कान्य रेश्द्रिक्टि. বিদ্যালোচনা বাঙ্গালার হয় না। गांधात्रत्यत्र कार्या, मिष्टिः, त्वक्ठात्र, अरम, व्यमिष्ठिःम् সমুদয় কার্য্য ইংরেজিতে। যদি উভন্ন পক্ষ ইংরেজি कार्तन, তবে कर्याशक्षन हैश्तक्षि है दम्, क्षन (यान जाना, कथन वांत्र जाना हैश्द्रिक । ..... भे व रन्धी कथनहै वानानात्र हत्र ना। आमत्रा कथन पिथि मारे दि रियात উভয়পক देश्तिकत्र किছ कात्नन, त्रयात्न वानानाम् भव तन्। इरेग्नाइ। आमापित्भन्न अमन् ভরশা আছে যে, অগোণে ছর্গোৎসবের ময়াদি देश्दाबिए गठिं वहेरव।" अहे त्राव आधुनिक कारन भूकीरभन्ना कम दहेरानु, अरक्तारत यात्र नाहे। अर्थ ইংরেজী ভাষায় যাঁহার কিছু জ্ঞান আছে, তিমিই कारनन, अधिकारन वाजानी देश्द्राकी निविद्ध वा बनिए গিয়া ঐ ভাষার কিরূপ বিভূষনা করে। মাতৃভাষার চর্চার অভাবে বা উহার প্রতি অবংশোর

প্রভাবে, তাহারা ঐ ভাষাও ওম্বরণে লিখিতে ও বলিতে পারে না। এই ভাষাসমস্যা সম্বন্ধে বৃদ্ধিম কি স্যাধান করিয়াছিলেন ?

"आभवा देश्दाक वा देश्दात्मत्र (चयक निर्। देश वनिष्ठ भावि (य, देशदाक हदेएक व (मामद्र लाक्तित यक উপকার হইয়াছে, ইংরেজিশিক্ষাই তাহার মধ্যে প্রধান। **चनस्रद्रश्र**थरिं देश्ट्रिक ভाষার यठहे चल्मीलन द्रा, छठ्डे छान। व्यात्र विश भगाष्ट्रत मन्त्र क्य কতকগুলি সামাজিক কার্য্য রাজপুরুষদিগের ভাষাতেই সম্পন্ন হওয়া আবশ্রক। আমাদিগের এমন অনেক গুলি क्षा चाहि, यादा दाखपूक्षमिनारक वृकाहेरण दहेरत। সে সকল কথা ইংরেজিতেই বক্তব্য। এমত অনেক কথা चार्छ (य डाहा (करन वानानीय वज नरह, ममख ভারতবর্ষ তাহার শ্রোতা হওয়া উচিত, সে সকল কথা देश्दाबिष्ठ ना विनात भग्ध ভात्रज्यर्थ वृक्षित्य दकन १ ভারতবর্ণীয় নানাজাতি একমত একপরামর্শী একোখোগী. না হইলে ভারতবর্ষের উন্নতি নাই। একপরামর্শির, একোম্বম, কেবল ইংরেজির দারা गांधनीय ; (कन ना मश्युष्ठ अधन नुख इहेग्राह् । वात्रानी, महाबाडी, टेजनश्री, शाखावी-इंशानिश्व মিলনভূমি ইংরেজি ভাষা। এই রক্ষ্তে ভারতীয় ঐক্যের এছি বাঁচাইতে হইবে। । অতএব যতহুর ইংরেজি চলা व्यावश्रक, छछमूत हनूक, किञ्च এक्वादि देशदक दहेश

• বৃদ্ধিনচন্দ্রের এই মৃতগুলি কংগ্রেস স্থাপিত হওয়ার
পূর্বে প্রকাশিত হয়। কংগ্রেস তাহার মৃতগুলি সফল
করিয়াছে। এখন কিন্তু রাজনৈতিক সভা সমিতিতেও
প্রত্যেক প্রদেশেই স্থানীয় মাতৃভাষার ক্রমশঃ প্রশার
হইতেছে। কেন না এখনকার আন্দোলন আর পুর্বের
মৃত বৃহর্ষ্ণ নহে—উহা একমাত্র বিদেশীয় রাজপুরুষগণের অবগতির জন্ত করা হয় না। এখন উহা অনেকটা
অন্তর্ম্ণ; স্বদেশীয় জনগণকে শিকাদানই ক্রমশঃ উহার
উদ্ধেশ্ত হইয়া উঠিতেছে।

वंत्रित्न हिन्दि ना। वात्रानी कथन इराइन इरेड शांतित्व ना। वांकांकी वालका हैशत्व व्यानक्षांत खनवान् अवर व्यानक सूर्य सूथी। यति अहे जिन कार्षि বাঙ্গালী হঠাৎ তিন কোটি ইংরেজ হইতে পারিত, তবে (म मन हिन ना। किस जारात कान मुखावना नारे।। আমরা যত ইংরেজি পড়ি, যত ইংরেজি কহি বা যত हैश्टबंकि गिथि ना किन, हैश्टबंकि किवन आमिनिश्वे মুত্রিংহের চর্ম-বরূপ হইবে মাত্র। ভাক ডাকিবার সময় ধরা পড়িব। পাঁচ সাত হালার নকল ইংরেজ ভিন্ন जिन कार्षि गारिक कथनरे दरेशा छेठिए ना। शिलाए পিতল অপেকা বাঁটি রূপা ভাল। প্রস্তর্ময়ী সুন্দরী সৃষ্টি অপেকা কুৎদিতা ব্যানারী জীবন যাত্রার স্থপহার। নক্ষ देश्ताक व्यापका थाँडि वाकानी न्यूटनीय। यञ्चिम मी সুশিকিত জানবন্ত বাদালীরা বাদালা ভাষার আপন আপন উক্তি সকল বিশ্বন্ত করিবেন, তভদিন বাদাণীর উন্নতির কোনও সম্ভাবনা নাই।

হঠাৎ তিন কোটি বালালী তিন কোটি ইংরেজে পরিণত হইতে পারিলেই যে বালালীর পক্ষে সেটা একটা পরম গতি হইল তাহা বন্ধিচন্দ্র যথার্থ ই মনে করিজেন কি না বলা যায় না। বিশ্বসভাতায়, কেবল ইংরেজেরই

া তৃতীয়বর্ষের বঙ্গদর্শনে "প্রাচীনা ও নবীনা" প্রবন্ধে বিদিয় ছিলেন, "আমাদিগের সমাজসংখারকেরা নুতন কীর্দ্রিগানে যাদৃশ ব্যক্তা, সমাজের গতি পর্য্যবেক্ষণে তাদৃশ মনোযোগী নহেন। 'এই হইলে তাল হয়, অতএব এই কর' ইহাই তাহাদিগের উক্তি, কি করিতেকি হইতেছে তাহা কেহ দেখেন না। ...... দিন কত ধ্ম পড়িল, প্রীলোকদিগের অবস্থার সংস্কার কর..... পাঁচী, রামী, মাধীকে বিলাতী মেম করিয়া তুল। ইহা করিতে পারিলে যে তাল, তাহাতে কোন্ও সন্দেহ নাই; কিন্তু পাঁচী যদি কথন বিলাতী মেম হইতে পারে, তবে আমাদিগের শাল তক্ষও একদিন ওকরকে পরিণত হইবে, এমন ভ্রদা করা বাইতে পারে।

孝(信事 ) 00 9 श्रीन चारह, वाशानीत कानव द्वान नारे देश मरन कता শ্ৰয়েক্তিক। সামাজিক উন্নতিবিধানসম্পর্কেও বে ইংরেজ लिंद क्या विनिशास्त्र वा त्यम कार्या कविया किनियास्त्र ভাছাও নহে। এ কথাওলি আধুনিক কালে আমরা 🖛 মৃশঃ অধিক স্পষ্টরূপ বৃঝিতে পারিতেছি। বছিমের শ্বদ্ধে ঐ সভ্য ততদুর স্পষ্ট উপলব্ধ হয় নাই। তাই অপরিশিখিত কথা গুলিতে বাঙ্গালীকে বাঙ্গালা লিখিবার শ্লিবার আবশুকতা বুঝাইতে গিয়া বঞ্চিমকে অভ্যরূপ ছুক্তির অবভারণা করিতে হইয়াছে। অবগ্র ইহা স্বীকার জারতে হইবে যে, বিশ্বসভ্যতায় যে বালালীর স্থান আছে ৰা ক্ৰিয়া লইতে হইবে এ ধারণাও বালালীর বঙ্কিমযুগেই আর্থ ও উত্রোভর বর্জমান আয়াদরের ও তৎসহকৃত পাৰপরিচয়ের ফল। ইদানীং সার জন্ উত্রক প্রভৃতি ৰনীৰী ব্যক্তিগৰ যেত্ৰপ বুক্তি দিয়া ভারতবাসীকে **রিমাতী সভাতার** বিনিময়ে স্বীয় স্নাতনী সভাত। বিশ্বন দিতে নিবেধ করিতেছেন, তাহা একালেও শৃক্ষের পক্ষে সহজবোধ্য নহে; সেরূপ যুক্তি বঞ্চিমের হবে প্রদত হইলে বালালী বুঝিত কি ? কেন না তখন শিকিত ব্যক্তিমাত্রেই পাশ্চাত্য সভাতার চাক্চিকা ও পাশতাত্য জাতিসমূহের বৈষয়িক উন্নতিদর্শনে একান্ত মুগ্ধ, 📭 বর্ষবিষয়ে তাহাদের অমুকরণ করিতে উভত। ভাষারা আপনাদিগকে ত চিনেই নাই, যাহাদের অসুকরণে ব্যগ্র ছিল তাহাদের সভ্যতারও যথার্থ প্রকৃতি অব্যুদ্ধ করিতে পারে নাই। একের পক্ষে যাহা পথ্য, ভাষা যে অফ্রের পক্ষে বিষ হইতে পারে, ইহা সামাজিক ব্যাপারে সহজে সকলে উপলব্ধি করে ন।। তাই সে কালে পরিষ্ঠ কার্যাকারিতা বা বহুত্যলোকের ভূমিষ্ঠ ইপকারিতা প্রভৃতি যুক্তি ছাড়া বহিমুন বাদালীকে অন্তর্ম থ করিবার উংক্টতর উপায় ছিল না। বঞ্চিয নেই উপায়ই অবলম্বন করিয়াছেন, তিনি কোনটা সুসাধ্য, কোনটা অগাধ্য, কোনটাতে উপকারিতা বহুজনব্যাপী ও কোনটাতে তাহাই দেখাইয়া দিয়া শিক্ষিত বালালীকে

व्याच्छावात्र व्यक्नीमन कतिए छेन्।

व्याधनिक कारण वालाभीत व्यापालतत श्रीवरणा व्यावात्र व्यत्नक श्रुत्व देशत्रकविष्यं वेष्ठ्र व्यक्तिक भाजात्र প্রকাশ পাইতেছে। বন্ধিমের যুগেও ইংরেজবিথের ছিল কিন্তু তাহার প্রকৃতি অন্তর্ম ছিল। ইংরেজ ও ইংরাজীর প্রতি ঐকান্তিক বিষেষ যে এদেশবাদিগণের উন্নততম স্বার্থের বিরোধী তাহা বঞ্জিম ম্পষ্ট বুঝিয়াছিলেন, এবং তাহা কুত্রাপি স্পষ্টভাবে প্রকাশ করিতে কুষ্টিত হন নাই। তবে এক্ষেত্রেও অন্ধ অমুরাগের ফল যে বালালীর পক্ষে মল্লা ও শোভন নয় তাহাও তিনি স্পষ্ট ভাবে বলিভে कृष्ठिक इन नाहै। वाश्रामीत देश्ताकी (भाषाक व्यवस्म ঐরপ অন্ধ অমুরাগের চিহ্ন। ইহা বন্ধিম কদাপি প্রীতির চকে (मध्यन नारे। विक्रिय देशांक मार्की वृद्धि मान कतिशा निका कदिवाद्यन । "अकमा आठः एर्याकित्राभए-ভাদিত কদগাকুলে শ্রীমান্ হণুমান্ বায়ুসেবনার্থ পরিভ্রমণ করিতেছিলেন। ... এমত সময়ে দৈব্যোগে বুট कां (अंदे नन, रहन, हम्मा, हुक्रें, हायूक्यात्री, টুপ্যাবতমন্তক এক নব্য বাবু তথায় উপস্থিত। হনুমান্ ठल न्त्र रहेरण এই অপুर्समृधि (पिया मान मान ভাবিলেন, কে এ ? আকার ঈলিতে বোধ হইতেছে নিশ্চয় এ কিছিস্কা। ইইতে আসিতেতে। এরপ পরামুক্ত বেশ, গমন, চাহনি প্রভৃতি অন্ত কোন দেশে অসম্ভব। এ আমার খদেশী ও বজাতি অতএব ইহাকে আমি অবশ্য আদর করিব।"

বাঙ্গালীর বিদেশী পোশাক ব্যবহার-সম্বন্ধে অনেকে আনেক কথা বলিয়াছেন। বাঙ্গালীর প্রাচীন পোষাক আধুনিক কালের পরিবর্ত্তিত সামান্দিক অবস্থার উপযোগী নয় ইহা সত্য—তাই স্ত্রীপুরুষ সকলকেই উহা আংশিক-পরিমাণে সংশোধন করিয়া লইতে হইয়াছে। বাঙ্গালী

 <sup>&#</sup>x27;(লাকরছস্ত', 'হনুমদ্বাব্ দংবাদ'।

পুরুষ ধৃতি চাদরের সহিত দেশী ধরণের সার্চ কোট •

এবং ত্রীলোকগণ সাড়ীর সহিত সেমিজ জ্যাকেট পরিতেছেন। ইহার অনেকটাই আবশুক সংশ্বার, এবং ধুব

একটা গুরুতর পরিবর্ত্তন নহে। কিন্তু পুরুষের পক্ষে
হ্যাট কোট প্যাণ্ট গলাবন্ধ, স্ত্রীলোকের পক্ষে গাউন
রাউজ ইত্যাদি সম্বন্ধে সেকগা বলা চলেনা। এতটা
পরাস্করণ তাহাদের জাতীয় আয়স্মানের বিরোধী ত
বটেই. এমন কি স্কুরুচি ও সৌক্ষ্যিবোশেরও পরিচায়ক
নহে।

 আফিস আদালতে প্যাণ্টালুন ও তৎসঙ্গে **চাপকান বা কোট পুরুষগণের পক্ষে অবশু**রাবহার্য্য বলিয়া বিধি আছে। যেখানে কোনওরপ বাধ্যতা নাই ভথায় ধৃতি চাদর ও পাট বা কোট না পরিয়া হ্যাট কোট পড়িয়া विक्छ नात्नत छातात. "विम्मो नामत" शास्त्रवात कि श्रादाकन ? नामानी माट्यी कार्षेत्र একটা দেশীয় সংকরণ করিয়াছে; তাহা মন্দ নয়। ধৃতির সঙ্গে ও আফিস আদালতে প্যাণীলুনের সঙ্গে উহার অসমগ্র হয় না। কিন্তু তথাপি দেখা যায় লোকে भाषि। मूरनत भरम रामी भत्र एवत रका है ना भतिया विवाजी श्वराव भवाकां है। दकां है, भवावक, शहे हे छा कि भरतन । আফিশের বাহিরে কখনও কখনও দেখা যায় ধৃতির সঙ্গে পৰাকাটা কোট ও গলাবন্ধও (necktie)পরা হয়। মে-रयता रममानत रमिक,विष्म (शिवित्कार निषाद्वन,रकवन ("নেটিভ খুষ্টান" ছাড়া অক্স মেয়েরা ) অক্সাপি গাউনটা **ट्रिम मार्डे। इमानीः जा**वात डांदाता जाटक वा विजय ছাভিয়া মেম সাহেবদের অমুকরণে ব্লাউজ ধরিয়াছেন। মেযেরা যতদিন পুরাহাতা ব্লাউজ পরিতেন, ইহারাও **७७ मिन (महेब्रल ब्राउक श**र्तिएन। व्यातात (मर्भता ষেই হাফ হাতা ব্লাউক ধরিলেন, ইহারাও অমনি সেইরূপ अष्टिक शतिया बाह्य त्मीक्यानिकारण मत्वारणाविनी

পরামকরণরতি ধারা বাঙ্গালীর পৌন্দর্যাবোধের কিরপ বীতৎস বিপর্যায় সাধিত হইয়াছে, তাহা ভাবিলৈ বেমন বিশায় জন্মে তেমনই হাদয় ছংখে গ্রিয়মাণ হইরা পড়ে। আধুনিক কালে ভারতের সর্বাত্রই এই অবন্তি লক্ষিত হয়। ইহার প্রকৃতি ও হেতু মহামতি হাভেল, শ্রীবৃক্ত কুমারখামি-প্রভৃতি অতি স্পষ্টভাবেই নির্দেশ कतियाहिन। इः त्थत विभय अहे (य, अहे नकन सहाजव ব্যক্তির একান্তিক চেষ্টাতেও শিক্ষিত্যমালের ক্রৃষ্টি পরিবর্ত্তিত इटेटिए मा। এककारम नियस्त्रीत हिन्पूगराव गरधा निभूग भी मर्यादान ७ निज्ञकान रम्बो ধাইত; গৃহদজা, তৈজ্বপত্র, হাঁড়িকুঁড়ির মধ্যেও বিচিত্র শিল্প দেখা যাইত। কিন্তু সমাজের উচ্চ-গুরের লোক-দিগের ক্রচিবিকারের ফলে নিমন্তরের লোকেরাও मिल्लाम अवर उदमक्त-रभीनग्राताथ शाताहेत। (किन्नाटक । विक्रमञ्च वाश्रामी कीवत् "रुज्जिभिद्धित" व्यनामन नकः। করিয়াছিলেন, এবং তাহাদের কচিবিপর্যায়ও স্পষ্টভাবে প্রকাশ করিয়াছিলেন। হাভেল বা কুষারুখামী वा व्यवनीखनाव विक्रभगूरगत বহ পরে শিলকলার আদর্শব্যাখায় প্রবৃত হইয়াছেন। বৃদ্ধির শিলবিচারশক্তি ইহাদের তুলা সমূরত না হইলেও ইহাদের বহুপূর্ণেযে তিনি দেশীয় সমাজে শিল্পকার অবনতি ও দেশীয় ব্যক্তিগণের শিল্পদ্ধে পরশুক্ত হার প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছিলেন, ইহা তাঁহার পঞ্ कम (भी अटवज विषय नटर। जिनि चारकण करिया निविश्वाहितन--

ু'কাণ্য, দক্ষীত, নৃত্য, ভান্ধণ্য, স্থাপত্য এবং চিত্ৰ এই ছয়টি পৌন্দৰ্যালনিকা বিস্থা। · · · এই ছয়টি

**হইলেন** ! বালকবালিকাদের ত বিদেশী পরিচ্ছদ অবশুপরিদেয় বলিয়া গণ্য হইয়া উঠিয়াছে। মার্কটী রুতি আর কাহাকে বলে ? অগচ ইহাব যাম স্কুক্চি! বিভাৰ মহস্তভীবন ভূবিত ও প্ৰথময় করে। ভাগ্যহীন স্থানালীর কপালে এ সুখ নাই। স্থানিরের দলে তাহার ৰত বিহোধ। তাহাতে বালালীয় বড় অনাদর, বড় श्रुणा वाष्ट्राणी पूर्वी देशे छात्म ना। श्रीकात कति স্কুল দোষটুকু বাঙ্গালীর নিজের নহে। কতকটা মালালীর সামাজিক রীতির দোষ। ... ... কতকটা বামালীর দারিড্রা অক্স। · · · কতকটা হিন্দুধর্মের द्विष्टां ... ... पूरे ठातिकन थनाठा वातू देश्टतक-খিলের অসুকরণ করিয়া ইংরেজের ক্রায় গৃহাদির शांत्रिभाष्ठे। विधान कतिया थारकन। वाकाणी नकमनविभ ভাল, নকলে শৈধিল্য নাই। কিন্তু তাঁহাদিগের ভার্য্য ध्वरः ठिजमः श्रद्ध ए पिराने रे ताथ दश (य, अश्रुकत्रन-लक्षा एक अन्तर माध्य परिवाह - नहिर त्रीनार्या ভাহাদিগের আন্তরিক অমুরাগ নাই। এখানে ভাল-अत्मन विठात नारे, मरार्थ दहेताहे दहेत ; महित्रत्भन शांत्रिणांग्रे नारे, मरबााय अधिक बरेटनरे बरेन।"

বন্ধদর্শন রা বঞ্জিমচন্দ্র এই বিষয়টি যুত সংক্ষেপে আলোচনা করিয়া ছাড়িয়া দিয়াছিলেন, এখন মনে হয় বিব্যান্ধ শুকুত্বহিসাবে ভাহা সমীচীন হয় নাই। তবে দেশটা তথ্যও এশিকার জন্ম প্রস্তুত হয় নাই। স্থানিপুণ শিক্ষকেরও অভাব ছিল। এখনই কি দেশ সম্পূর্ণরূপে প্রস্তুত হইয়াছে? এখনই কি দেশীয় চিত্রকলা বা অভ শিক্ষ বিলাতী অস্থকরণের মোহ হইতে মুক্ত হইয়াছে? বিষয়টা সকলেরই বিশেষ প্রণিধানযোগ্য বলিয়া এবিষয়ে রবীক্ষমাধ্যের কয়েকটি কথা নিয়ে উদ্ধৃত হইতেছে।

"আটমুলে ভতি হইরাছি, কিন্তু আমাদের দেশের শিক্তকার আদর্শ যে কি তাহা আমরা জানিই না। মদি শিক্ষার ধারা ইহার পরিচয় পাইতাম, তবে যথার্থ একটা শক্তিকাভ করিবার স্থনিধা হইত। কারণ, এ স্থায়র্শ দেশের মধ্যেই আছে—একবার যদি আমাদের সৃষ্টি খুলিয়া যার, তবে ইহাকে আহাদের সমন্ত দেশের ম্থ্যে, থাশার, ঘটিতে, বাটিভি, রুড়িতে, চুপ্ড়িতে, মন্দিরে, মঠে, বসনে, ভূবণে, পটে, গৃহভিভিতে নানা অবপ্রত্যক্ষপরিপূর্ণ একটি সমগ্র মৃত্তিরূপে লেখিতে পাইতাম, ইহার প্রতি আমাদের সচেষ্ট চিত্তকে প্রয়োগ করিতে পারিতাম... পৈতৃক সম্পত্তি লাভ করিয়া তাহাকে ব্যবসায়ে থাটাইতে পারিতাম।

আমরা দেখিয়াছি, জাপানের একজন স্থবিখ্যাত চিত্ররসজ্ঞ পণ্ডিত এদেশের কীটদন্ত করেকটি পটের ছবি দেখিয়া বিময়ে পুলকিত হইয়াছেন—তিনি একখানি পট এখান হইতে লইয়া গেছেন, সেথানি কিনিবার জক্ত জাপানের জনেক গুণজ্ঞ তাঁহাকে অনেক মূল্য দিতে চাহিয়াছিল, কিন্তু তিনি বিজয় করে নাই।

আমরা ইহাও দেখিতেছি, য়ুরোপের বহুতর রস্ক্র ব্যক্তি আমাদের অধ্যাত দোকান বাজার ঘাঁটিয়া মলিন ছিন্ন কাগজের চিত্রপট বহুন্ল্য সম্পদের ভায় সংগ্রহ করিয়া লইয়া যাইতেছেন। সে সকল চিত্র দেখিলে আমাদের আর্টস্থলের ছাত্রগণ ন্যাসাকুঞ্চন করিয়া থাকেন। ইহার কারণ কি? ইহার কারণ এই, কলাবিভা যথার্থ ভাবে যিনি শিখিয়াছেন, তিনি বিদেশের অপরিচিত রীতির চিত্রের সৌন্দর্যাও ঠিকভাবে দেখিতে পান-ভাঁহার একটি শিল্পদৃষ্টি জন্মে। আর বাহারা কেবল নকল করিয়া শেখে, তাহারা নকলের বাহিরে কিছুই দেখিতে পায় না।

"পিয়ের লোটি" ছলনামধারী বিখ্যাত করাসী
ন্দ্রমণকারী ভারতবর্ধে ভ্রমণ করিতে আসিয়া আমাদের
দেশীয় রাজনিকেতনগুলিতে বিলাতী আস্বাবের
ছড়াছড়ি দেখিয়া হতাশ হইয়া গেছেন। তিনি
বুঝিয়াছেন যে, বিলাতী আস্বাব্থানার নিতাশ্ত ইতর
শেণীর সামগ্রীগুলি খবে সাজাইয়া আমাদের দেশের

বড় বড় রাজারা নিতাশুই অশিক। ও অজ্ঞতাবশচই গৌরব ক্রিয়া থাকেন।

মুর্ভাগ্যক্রমে সকল দেশেরই ইতর সম্প্রদায় অশিক্ষিত।
সাধারণ ইংরেজের শিল্পজ্ঞান নাই—স্কুতরাং তাহারা স্বদেশী
সংখ্যারের হারা অন্ধ। তাহারা আমাদের কাছে তাহাদেরই
অসুকরণ প্রত্যাশা করে। আমাদের বসিবার ঘরে তাহাদের
দোকানের সামগ্রী দেশিলে তবেই আরাম বোধ করে,—
তবেই মনে করে, আমরা তাহাদেরই ফরমায়েসে তৈরি সভা
পদার্থ হইয়া উঠিয়াছি। তাহাদেরই অশিক্ষিত করি
অসুসারে আমাদের দেশের প্রাচীন শিল্পদেশা সলভ ও
ইতর অমুকরণকে পণ ছাড়িয়া দিতেছে। এ দেশের শিল্পারা
বিদেশী টাকার লোভে বিদেশী রীতির অজুত নকল করিতে
প্রের্থ্য হইয়া চোধের মাথা থাইতে বসিয়াছে।

বেমন শিল্পে তেমনি সকল বিষয়েই। আমরা বিদেশী প্রশালীকেই একমাত্র প্রশালী বলিয়া ব্রিতেছি। কেবল বাহিরের সামগ্রীতে নহে, আমাদের মনে, এমন কি, হ্রদয়ে নকলের বিষবীক্ষ প্রবেশ করিতেছে।" \*

দেশীয় লোকে উচ্চপ্রেণীর ইংরেজের আচার-বাবহার
রীতি-নীতি ইত্যাদি অন্তর্গ দেখে। অপেকারত নিম বা
সাধারণ শ্রেণীর সাহেব-মেমেরাই তাহাদের আদর্শ। তাই
সমগ্র দেশটা কাপড়চোপর, আদবাব-পত্র, শিল্প, দঙ্গীত,
কাব্য, উপন্যাদ,—সর্কিষিয়ে বিলাতীর এমন হীন অন্তকরণে
মন্ত, ও বিপদ্প্রস্তা। যে কথা আজ আমরা হাভেলের মুথে
ভানতেছি, সমাজের প্রাণের যে নিগুড় আত্মাদর আমাদের
অবনীজনাথের তৃলিকায় এবং রবীজনাথ ও কুমারস্বানীর
লেখনীতে উজ্জল হইরা ফুটিরা উঠিয়াছে, দেশীয় লোকের
হর্মাজেতে বা অক্ততার, বা মোহে তাহা এখনও দক্ষের
প্রাণম্পর্শ করিতে পারিতেছে না।

সঙ্গীতবিক্ষা উপলক্ষ্য করিয়াও বঙ্গনশনে বন্ধিমচক্র অনেক সারকণা বলিয়াছেন। শিকিত বাঙ্গালী দেশীয় সব সংখাবনে

• ""वाम "-"(मनीध-तामा"-नीर्यक श्रवस्र।

খুণা করিতেছিল—দেশীয় সঙ্গীত তাহার অন্তত্ম বিজ্ঞান করিতের মধ্যে সঙ্গীতের চর্চা ছিল, কিন্তু অপরিবারের বিজ্ঞান আবেইনের মধ্যে নয়, ইয়ারের দলে বারাঙ্গনা মহলে। সঙ্গী এসম্বন্ধে প্রাচীনগণের স্কার্শনিতা ও নিপুণ রসজ্ঞতা ব্যার্শনের দৃষ্টি এড়ায় নাই। সেকালে রাগরাগিণীগণের মৃত্তিকল্পনা অনেকে রহন্ত বা রসিক ভাসাত্র মনে করিত, এখনও অনেকে করেন। কেন্ত ভাবিয়া দেখে না এরপ মৃত্তিকল্পনার দেশীয় সঙ্গীতরসজ্ঞ চিত্রশিল্পিণের কিন্তুপ নিপুণ রসজ্ঞতা ও বিচারশক্তি প্রদর্শিত হইয়াছে।

"ছুই একটি উদাহরণ দেই। আনেকেই টোড়ি রাগিণী সহাণয় বাক্তিরা ভচ্ছাবণে যে ভনিয়াছেন। অনিক্রিনীয় ভাবে অভিভূত হয়েন, তাহা সহজে বক্তব্য নহে। সভরাভর কবিরা যাহাকে আবেশ বলিয়া থাকেন, তাহা ঐ ভাবের একাংশ কিন্তু একাংশমাত্র। তা**হার সঞ্চে** ভোগাভিনাৰ মিলিত কর। দে ভোগাভিনাৰ নীচ প্রবৃত্তি নহে। যাহা কিছু নির্ম্মণ, স্থাকর, অন্তর্জনের অসংপেকঃ কেবল আগ্যাত্মিক দেই ভোগেরই অভিলাব। কিন্তু সে ভোগাভিলাবের দীমা নাই, তুপ্তি নাই, রোষ নাই, শাসন নাই। ভোগে এবং ভোগস্থাৰ অভিনায় আপনি উছলিয়া উঠিতেছে। আক্ষাজ্ঞা বাড়িতেছে। প্রাচীনের এই টৌড়ি রাগিণীর সৃষ্টিকল্পনা করিয়াছেন। সে পরমক্ষদরী যুবতী, বস্থালয়ারে ভৃষিতা, কিন্তু বিরহিণী। আকাজ্ঞার অনিবৃত্তি হেতুই তাহাকে বিরহিণী কলনা করিতে হইয়াছে 🖟 এই বিবৃতিলা ফুলরী বনবিহারিলী, বনমধ্যে নির্কান একাকিনা বসিধা মধুপানে উন্মাদিনী হট্মাছে, বীণা বালাইরা গান করিতেছে, তাহার বনভ্ষণ সকল থাণিত হইলা পভিতেছে, বনবিধারিণী সকল আসিয়া তাহার সম্বাথে ভটছ ভাবে দীভাইয়া বহিহাছে।

এই চিত্র সনিবর্চনীয় স্থলর—কিন্তু সৌলব্য ভিন্ন ইছার আর এক চমংকার গুণ আছে। ইহা টোড়ি রাগিণীর মথার্থ প্রতিমা। টোড়ি রাগিণী শ্রবণে সমে যে ভাবের উদ্ধ হয়, এই প্রতিমাদর্শনে ঠিক সেই ভাব ক্ষাবে।"

উপরিশিখিত উজিটি এক্দিকে যেমন প্রাচীনগণের লদীতরগভাতা ও বিচারশক্তির সমর্থক তেমনই আধুনিক **স্টালের সঙ্গীতরসিক্ষানী বাবুগণেরও ভাবিবার যোগা। উহাদের অনেকেট আপনাদিগকে দলীতপ্রিয় বলিয়া প্রচার** ক্ষেন, কিন্তু রাগিণী আলাপ শুনিলে সম্ভত হইয়া সভাস্থল-ক্রাবের উল্ভোগ করেন। ই হাদের ধারণা এই যে, সাদা সিধা একটা স্থরসংযোগে গানের পদগুলিকে অধিকতর **চিতাক্র্বণক্ষ ক**রিয়া ভোলাই সঙ্গীতের একমাত্র প্রয়োজন। স্নাগরাপিণীর যে গানের পদ-নিরপেক একটা মর্য্যাদা, একটা অৰ্থ একটা ভাৰোছোধিকা শক্তি আছে, ইহা মনেকে ধারণা করিতে পারে না। এই অরসজ্ঞতার সহিত পরাণুকরণ প্রবৃত্তির মিলনের ফলে বাঙ্গালা গানের সঙ্গে অনেকভূলে বিশাতী বা্ত্রের অসফল গঙ্গত আরক হইরাছে। ইহাতে সাধারণের উপভোগা মংঝারি রক্ষের সঙ্গীতের কাজ একরূপ ফুলিয়া যাইতেছে বটে, কিন্তু দেশীয় সঙ্গীতের উচ্চতম আদর্শ ক্রম হইতেছে। বিলাভী দঙ্গীতের প্রাণ—দঙ্গতে বা ্রী **দ্যতানে বা** harmonyতে ; আর দেশীয় সঙ্গীতের প্রাণ— মর হইতে খরের আরোহাবরোহপ্রক্রিয়াগত বৈচিত্তো, বা ভাহার হন্ধাতিহন্দ্র পদার আদায়প্রণালীতে বা melodyতে। বিশাতী হারমোনিয়ম, অর্গান বা পিয়ানো দ্বারা ভাষা ज्यामांबदवांशा नदह। তাই দেশীয় গানের আদর্শ ক্ষিৎপরিমাণে কুল না করিয়া উহার সহিত হার্মোনিয়ন है जानि मण ह-यज्जात्भ वावहार्या नरह। विकास स्वरः तम्भीत 🥦 বিশাতী সঙ্গীতের এই আনর্শগত প্রভেদ উপল্জি ক্রিয়াছিলেন কিনা বলিভে পারি না, তিনি নিজে হারমোনিরমসংযোগে সঙ্গীতের পক্ষপাতী ছিলেন, কালোয়াতি পান নাকি বড় একটা পছল করিতেন না। কিন্তু তদানীম্বন শিক্তি সমাজেও মহারাজ ঘতীজ্ঞােহন ঠাকুর প্রভৃতি নিপুণ্তর দঙ্গীতরদিক বহু বাক্তি বংবের হারমোনিয়নের ষ্টিত্রাধী ছিলেন। ব্রাহ্মন্থাক্ররাই বোধ হয় হারমোনিয়নের **্রিটেশন আরক্ত হয়। কিন্তু এখন ব্রাক্ষদ্মাকেরই কভিপর** শণার্শলী চর দকা स्विकिश उ মহিলার

হারমোনিরদের স্থানে ধীরে ধীরে এআক বেহানা ইন্ডার্ছি আসিতেছে। কিন্তু ইতিমধ্যে সঙ্গীভক্ষচিতে যে বিপ্লব ও অপকার সাধিত হইয়াছে তাহা অৱ নহে।

তবে হারমোনিয়ম এক কাজ করিয়াছে, মাঝারি রক্ষের সঙ্গীত বাঙ্গাগার ভদ্র গৃহে কামিনীকঠে পর্যন্ত চালাইয়া দিয়াছে। \* পূর্বে মেরেরা বিবাহে ও বারত্রতে বে গান গাহিতেন, অনেক স্থগেই উহাকে সঙ্গীত বলা চলিত না, উহা উৎপীড়িতা সঙ্গীতকলার আর্ত্তনাদমাত্র ছিল। এখন হারমোনিয়মের কুপার তাল বা লয়ের এবং অনেক সময়ে স্থরেরও যথেইয়প শ্রাদ্ধ হয় বটে, তবু তাহা সঙ্গীতনামবাচ্য। তাল ও লয়ের ভঙ্গ অক্ষনতা বা অশিক্ষাকৃত; স্থতরাং সংশোদনযোগ্য। কিন্তু উচ্চ কণ্ঠধননিমাত্রকেই সঙ্গীত মমেক করা কুঞ্চির পরাকাষ্টা।

পরিবারমধ্যে সঙ্গীতপ্রচলনের আবশুক্তাসময়ে বঙ্কিম ব্লিয়াছেন—

"যেমন র'জনীতি, ধর্মনীতি, বিজ্ঞান, সাহিত্য প্রভৃতি সকল মহযোরই জানা উচিত তেমনি শরীরার্থ স্বাহ্যকর বাায়ার্ম

\* বেছালা এস্রাজ ইত্যাদি মিলাইয়া লওয়া বড় হাঙ্গামা। হারমোনিয়ম ইত্যাদি নিত্যবাধা যন্ত্রে সেব-লাই নাই। তাই মাঝারি সঙ্গীতের উহা উপযোগী বটো তবলা মিলাইবার ঝঞ্চাট মিটানের জন্তই প্রাচীন কালের মাঝারি সঙ্গীত ওয়ালারা থোলের প্রচলন করিয়াছিল।

বেহালার স্থাবাধার ঝঞ্চাট সম্পর্কে চক্রশেণর প্রথমখন্ত প্রথম পরিচ্ছেদে দলনীর বিভ্রনা এবং পরিশেষে "কলিকাতার ইংরেজেরা যে বাজনা বাজাইয়া গীত গাম" তাহার জন্ম আবদার স্মরণযোগ্য। ক্রফ্টকান্তের উইলে দানেশ খাঁর কালোয়াভির প্রতি বঙ্কিন যে কটাক্ষ করি ছেন, ভাহা তাহার সমসামধিক শিক্ষিত বাজিগণের কচির প্রতিভাস। বেভারেও লাগবিহারী দে কালোয়াভিগান সম্বন্ধে বলিজেন, "It is notoing but cutting geometrical figures in one's mouth." ঢাকা রিভিউ, জুলাই, ১৯১৭ ম

এবং চিত্ত প্রসাদার্থ মনোমোহিনী সন্ধীতবিদ্যাও সকল ভদ্র লোকের জানা কর্ত্তবা। শাস্ত্রে রাজকুমার রাজকুমারীদিগের জান্ত্যাসোপযোগী বিদ্যামণ্যে সঙ্গীত প্রধান স্থান পাইয়াছে। বালালীর মধ্যে ভদ্র পৌরকভাদিগের সন্ধীতশিকা যে নিধিদ্ধ বা নিক্ষনীর তাহা আমাদিগের অসভ্যতার চিহ্ন। কুল-কামিনীরা সঙ্গীতনিপুণা হইলে গৃহমধ্যে এক অত্যন্ত বিমলানক্ষের আকর স্থাপিত হয়। বাব্দের মদ্যাশক্তি এবং জান্ত একটি গুরুতর দোষ অনেক অপনীত ভইতে পারে।"

আপনারা লক্ষ্য করিবেন পাশ্চাত্য ক্রচির সহিত দেশীর ক্ষতির সমন্বর করিতে গিয়া বৃদ্ধিম প্রাচীন আচারের উল্লেখ করিতে ভূলেন নাই। সে ঘাহা হউক, শাস্ত্রে রাজকুমারীগণের পক্ষে দলীতশিকার ব্যবস্থানত্ত্ব, ভদ্র পৌরক্সাদিগের মধ্যে সঙ্গীত যে অপ্রচলিত ও ক্রমে নিন্দনীয় হটয়াছে তাহার কারণ এই বে, এদেশে বালাবিবাছ ও একায়বর্ত্তী পরিবার প্রথা প্রচলিত থাকার, ক্যাগণ, বিশেষতঃ স্কল্পবিত ও মধ্যবিত্ত পরিবারের ভদ্র ক্যাগণকে বালাবিধিই গৃহকর্মাদিতে ৰাত পাকিতে হনত। তাঁহারা সঙ্গীতশিকাও সঙ্গীত চর্চার অবসর অল্লই পাইতেন। যাঁহারা পাইতেন উঁহোরাও অবরোধ প্রথার দরুণ উপযুক্ত শিক্ষক পাইতেন না। এখন সমাজগঠনের পরিবর্ত্তন হইতেছে—যে কারণেই হউক মেরেদের বিবাহ বিলম্বিত হইয়া পড়িতেছে, একালবন্তিতা লামে মাত্র পর্যাবদিত হইয়াছে, সহরে বাস করার দরণ পৃত্কর্ম সংক্ষিপ্ত হইয়া আসিয়াছে, রুচিরও পরিবর্তন ঘটিরাছে, তাই ধীরে ধীরে ভত্রকন্তাগণের নানারূপ শিল-কার্যোর প্রতি দৃষ্টি পতিত হইয়াছে। গৃহে সঙ্গীতচটোর ৰাবস্থা করিলে "মদ্যাসক্তি ও অন্য একটি গুরুতর দোষ" व्यभनोष्ठ इरेख अयन व्यामा व्यामात्मत्र नारे। মানি শিল্পশিকার প্রয়োজন কেবল utility নৃছে। সঙ্গীতের विटमवक्कका भतिवातका महिलाभागत भाक्त मखावा नहि। বিলাতেও সেটা বাৰসায় বিশেষেরই আয়ত। তবে এখনকার মড দেশীয় সঙ্গীতকলার আদা না করিয়া বদি পরিবারমধ্যে ख्वात ठळात स्विधा इत्र, खाद एवं नक्न स्मारतात्र क्रमण अ

অবসর আছৈ, তাহাদের পক্ষে সঙ্গীতচর্চা ক্থনই অবাহ্নীয় হইতে পারে না।

বৃদ্ধির অনুচিত ইংরেজ বিদ্নে ছিল না ভাষা পুর্বেই উল্লিখিত হইয়াছে। বাঙ্গালী জাতি কর্ত্ব ইংরেজের অনুকরণের অনেক হুলে নিন্দা করিলেও তিনি উহার বে একান্ত বিরোধী ছিলেন তাহা নহে। একান্ত বিরোধীর সম্বর্গচেপ্টা সম্বত্ত হয় না। ১২৮১ সালের বৃদ্ধান্দিন তিনি রাজনারায়ণ বাব্র "সেকাল আর একালে"র স্মালোচনা প্রসঙ্গে লিখিয়াছিলেন—

"অমুকরণ মাত্র কি দ্বা ? তাহা কদাচ হইতে পারে না। 
া বাঙ্গালী যে ইংরেজের অমুকরণ করিবে, ইহা সক্ষত ও বৃক্তি দিদ্ধ। 
া বাঙ্গালী বে ইংরেজের অমুকরণ করিবে, ইহা করিতেছে, ইহাই বাঙ্গালীর ভরসা। 
া বাঙ্গারা আমাদের কত ইংরাজের আহার ও পরিজ্ঞেদের অমুকরণ দেখিয়া রাগ করেন, তাঁহারা ইংরেজকত ফরাদীগণের আহার পরিচ্ছদের অমুকরণ দেখিয়া কি বলিবেন 
াইহা আমরা অবশু বীকার করি যে, বাঙ্গালী যে পরিমাণে অমুকরণে প্রবৃত্ত, তত্টা বাঙ্গানীয় না ইইতে পারে। বাঙ্গালীর মধ্যে প্রতিভাশুক অমুকরণে প্রবৃত্ত না হইয়া দেয়ের্লার অমুকরণে প্রবৃত্ত দেখা যায়। এইটি মহাহংখ। বাঙ্গালী গুণের অমুকরণে তত পটু নহে, দেযের অমুকরণে ভ্রন্তংল অম্বিতীয়।''

প্রকৃত কথা এই যে, যথন ভারতবালীর লাভ বৈষ্টি বীপারে হীনাবস্থা বিভিত জাতি ইংরেজের ন্যার সমৃদ্ধত্তর বিশ্বেত্গণের সাফলাদর্শনে মুগ্ধ হটনা তাহাদিগের অক্তকরণে প্রবৃত্ত হয়, তথন ভাহাদের কেন্টা যে দোষ কোন্টা গুণ ভাহা স্পষ্ট উপলব্ধি করিতে পারে না। পদে পদে মনে হয়, 'ইহারা যে এত উন্নত ইহার হেতু বুঝি এই। আমাদিগকেও এরপ না হইলে চলিবে না।' স্মাজসংস্কারকগণ্ড অনেক ক্রেটে এরপ বৃক্তিরই ছড়াছড়ি করেন। সামাজিক ব্যাপারসমূহে কার্যাকারণসম্বন্ধনির্গ্ধ এত ক্রম যে, সক্তর্ণার অসক্ততা সকলে লক্ষ্য করেন না। তাই ক্রেক্

বিশানী মাহারত ব্যক্তিগণ নহে, অনেক ধীরত্বতাব ব্যক্তিও বিদেশী আচারের অনুক্রণপ্রিয় হইলা পড়িয়াছেন। সেই-অন্যাই প্রকাশ্পন রাজনারায়ণ বস্থ মহাশরের ''দেকাল আর প্রকাশ' নামক গ্রন্থে পরাস্ক্রণম্পৃহা পরিহারপূর্বক দেশীয় ভাবকে সমাজসংখ্যারের ভিত্তি করিবার আবশ্যক্তা বিশেষ-ভাবে উল্লিখিত হইয়াছে। রাজনারায়ণ বাবু লিখিতেছেন—

শইংরাজী অমুকরণের দক্ষণ সমাজসংস্কারের গতি বিপথগামী হইতেছে। প্রকৃত গতিতে যদি সমাজসংস্কারের স্রোত
প্রাথিত হইত, তাহা হইলে সমাজসংস্কার কার্য্য এত দিনে
বে কত অগ্রসর হইত তাহা বলা যায় না। আমাদের দেশের
সমাজ সংস্কারকেরা যদি অদেশীয় ভাবকে পত্তনভূমি করিয়া
সমাজসংস্কারে প্রবৃত্ত হয়েন, তাহা হইলে কৃতকার্য্য হইতে
পার্নেন সন্দেহ নাই। শ

थर्य वन, व्याहात वन ७ ममाक्रामवा वन, विक्रम **সর্বাক্তেই অনা**স্তরিকতাকে বড় ঘুণা করিতেন। বাঙ্গাণীর ইংরেছামুকরণ প্রিয়তার যে অংশটা আন্তরিকতাহীন ভাহার আভি তিনি দৰ্কাণ গজাহন্ত ছিলেন। Humbug Sham,—প্রবঞ্না, ভাণ, অনাম্বরিকতা ইত্যাদি তাঁখার हकू:मून हिन। जिनि ''देश्दाजित द्वयक" हितन ना, কিছ ইংরেজকে ভুলাইবার অত ইংরেজি বুলির বাড়াবাড়ি করিতে সহা করিতে পারেন নাই। তাই বঙ্গদর্শনের रहनांबरे जिन विश्विषाहित्वन,"रेंश्टबिक्ट ना विवास रेंश्टब ब्रिका, हेरदब्ब ना वृश्वित्व हेरद्रदक्षत्र निक्छ मान मर्गाना हें मा : रेश्त्रादक्त कार्ष्ट मान मर्गामा ना शांकित्व कार्या । श्रीरकना, वा थाका ना थाका नमान। हेश्दबक याहा ना ভনিদ সে অরণ্যে রোদন, ইংরেজ যাহা না দেখিল তাহা ভাষে শ্বত।" ইহা ইংরাজী বা ইংরেজের প্রতি দেষ নতে আন্তরিকভাহীন খনেশপ্রীতির প্রতি কটাক। ঐ কথাই আৰার "ইংরাজ-শুোত্রে" তীব্রতর ভাষার উক্ত হইয়াছে,—

'ৰে অন্তৰ্গামিন্! আমি যাহা কিছু করি তোমাকে জুলাইবার অক্ত। তুমি দাভা বলিবে বলিয়া আমি দান করি; তুমি পরোপকারী বলিবে বলিয়া পরোপকার করি;
তুমি বিধান্ বলিবে বলিয়া আমি লেথা পড়া করি।
আমি তোমার ইচ্ছামত ডিস্পেন্সাবি করিব, তোমার প্রীত্যর্থ
স্থল করিব, তোমার আজ্ঞামত চাঁলা দিব; তুমি আমার প্রতি
প্রসন্ন হও 
তেহে সৌম্য! যাহা তোমার অভ্যমত তাহাই
আমি করিব। আমি বুই প্যাণ্টালুন পরিব, নাকে চন্মা
দিব, কাঁটা চামচে ধরিব, টেবিলে থাইব—তুমি আমার প্রতি
প্রসন্ন হও ।
তেমার ভাষা ত্যাগ করিয়া তোমার ভাষা
কহিব
তামার বাবু নাম ঘুচাইয়া মিষ্টার লেথাইব
তামাকে প্রণাম মরি।
তামাকে প্রণাম মরি।

উপরে স্থলে ফলে যাহা বলা হইয়াছে ভাহা হইভেই বুঝা যাইবে, দামাজিক সমস্যাসমূহসভানে বৃদ্ধিমের সব সমাধান এবং সব যুক্তিই যে অভ্ৰান্ত ও তত্তবিষয়ে শেষ কথা ইছা মনে করা অন্যায়। বস্তুত: বঙ্গদর্শনে ব্রিমচ্জু সকলবিষয়ে থুব তলাইয়া দেখিবার ও বুঝিবার অবসর পাইরাছিলেন विषया मत्न रव ना। किःवा मकल त्लात्कवरे त्यक्रभ মানসিক বৃত্তিসমূহের জ্বপরিণতি হয়, বৃদ্ধিমেরও তাহাই হইয়াছিল; তাই তিনি শেষে অনেক মত বৰ্জন ও সংশোধন করিয়াছিলেন। বিরল অবসরে সামাজিক সমস্যাসমূহের আলোচনায় প্রবৃত্ত হইয়া যুগধর্ম্মের ও শিক্ষার প্রভাবে জিনি অনেক অয়োক্তিক উক্তিও করিয়াছেন। তাঁহার "সাম্য" প্রবন্ধটি ইহার একটি উত্তম উদাহরণ। এই প্রবন্ধটি বঙ্গদর্শনে তিন প্রস্তাবে প্রকাশিত হয়। 🚜 গ্রন্থাবারে প্রকাশ করিবার সময় 'বঙ্গদেশেয় ক্রযক'-শীর্ষক অপর একটি প্রবন্ধ হইতে এইটি পরিচেছে উহাতে যোগ করা হয়। সে যাহা হউক বঙ্গদৰ্শনে প্ৰকাশিত তিন্ট প্ৰস্তাবের প্ৰথম व्यक्षांत्व विक्रम माधाक्रणं आदि ममात्व ह्या वेष्, धनि मित्रस. বিজিত বিজেতা, রাজপুরুষ ও সাধারণ প্রজা, সুন্দর অসুন্দর,

ত্ৰকাল আর একাল ৭০ পৃষ্ঠা।

শেব প্রস্তাব চতুর্থবর্ষের বঙ্গদর্শনের কার্ত্তিক-সংখ্যাপ
প্রকাশিত হয়। মানসী পত্রিকায় 
শ্রীষ্ক্ত প্রভাতকুমায়
মুখোপাধ্যায় লিখিত 'বঙ্কিম জীবনপঞ্জী"তে এই বিষয়ে
কিঞ্চিৎ ল্রম হইয়াছে।

বৃদ্ধিনান্ মূর্থ প্রভৃতি নানাবিধ বৈধ্যের কথা আলোচনা করিয়াছেন। প্রসঙ্গক্রমে প্রাচীন ভারতে উৎকট বর্ণবৈব্যাঞ্জনিত সামাজিক মর্যাদা ও অধিকারের তারতমালোপের জক্ত বৃদ্ধদেবকর্তৃক চেষ্টার কথাও আলোচিত
ইইয়াছে। বিতীয় প্রবন্ধে ক্রেয়া ও তৎসমদাময়িক ফরাসী
সমাজের অবস্থা এবং তৃতীয় প্রস্তাবে বঙ্গীয় সমাজে স্ত্রীপুরুষে
অধিকারবৈধ্যের কথা বিশেষভাবে বণিত হট্যাছে।
এই সকল বৈধ্যা প্রদর্শন করিবার সময় ব্রিমচন্দ্র অনেক
স্থানেই সমুচিত ধীরতা ও নিরপেক্ষতা রক্ষা করিতে পারেন
মাই। প্রথম প্রস্তাবে তিনি মেকলের স্থায় ধেন কতকটা
ভাষার বৈচিত্রা-সৃষ্টির লোভেই স্বীয় লেখনীর নিরম্পুশ
উক্ত্রশাতাকে প্রশ্রের দিয়াছেন।

"অমুক বড় লোক, পৃথিবীর যত ক্ষীর নবনীত সকলই ভাগকে উপহার লাও। ভাষার সাগর হইতে শক্ষরপ্রগুলি বাছিয়া বাছিয়া তুলিয়া হার সাঁথিয়া তাহাকে পরাও কেন না, তিনি বড় লোক। যেথানে ক্ষুদ্র অনৃশ্যপ্রায় কণ্টকটি পথে পড়িয়া আছে উহা যত্মসংকারে উঠাইয়া সরাইয়া রাথ—
ঐ বড় লোক আসিতেছেন, কি জানি যদি তাঁহার পায়ে ফুটে। এই জীবনপথের ছায়ামিয় পার্ম ছাড়িয়া রৌজে দাঁড়াও, বড় লোক ষাইতেছেন। সংসারের আননক্রম সকল সকলে মিলিয়া চয়ন করিয়া শ্যারচনা করিয়া রাথ, বড় লোক উহাতে শয়ন করন। আর তুমি—তুমি বড় লোক নহ—তুমি সরিয়া লাড়াও, এ পৃথিবীর ভাল নামগ্রী কিছুই তোমার জন্য নয়। কেবল তাঁব্রঘাতী লোলায়মান বেজ তোমার জন্য—বড় লোকের চিত্তরজ্ঞনার্থ ডোমার পৃষ্ঠের সঙ্গে মধ্যে ইহার আলাপ হইবে।

বড় লোক ছোট লোক এ প্রভেদ কিসে ? রাম বড় লোক বছ ছোট লোক কিসে ? তাহা নিশ্কুক লোকে একপ্রকার বুঝাইয়া দেয়। যত চুরি করিতে জানে না, বঞ্চনা করিতে জানে না, পরের সর্বস্থ শঠতা করিয়া গ্রহণ করিতে জানে না, স্ত্রাং বতু ছোট লোক। রাম চুরি করিয়া, বঞ্চনা করিয়া, শঠতা করিয়া ধন সঞ্চয় করিয়াছেন, স্থতরাং গ্রাম বড় লোক।
অথবা রাম নিরীই ভাল মামুষ, কিন্তু ভাহার প্রশিতামুদ্ধ
চৌর্য্যক্ষনাদিতে স্থলক ছিলেন, মুনিবের সর্ক্ষরাপহরণ করিবা
বিষয় করিয়া গিয়াছেন, রাম জ্যাচেতরের প্রপৌজ, স্থতরাং
সে বড় লোক। যত্র পিতামহ আপনি আনিয়া আপনার
খাইয়াছে—স্তরাং সে ছোট লোক।……

অথবা রাম দেলাম করিয়া, গালি থাইয়া, কলাচিৎ
পদাঘাত সহা করিয়া, অথবা ততোধিক কোনও মহৎকার্যা
করিয়া কোন রাজপুক্ষের নিকট প্রানাদপ্রাপ্ত হইয়াছে।
রাম চাপরাস গলায় বাধিয়াছে—চাপরাসের বলৈ বড় লোক
হইয়াছে।....প্রভুর নিকট কীটাকুকীট, কিন্ত অঞ্জের
কাছে ধর্মাবভার!! ভুম যে হও হই হাতে সেলাম কর্
ইনি ধর্মাবভার! ইহ:র ধর্মাধর্ম জ্ঞান নাই, অধর্মেই আস্কির্
ভাহাতে ক্ষতি কি? রাজকটাকে ইনি ধর্মাবভার। ইনি
গণ্ডমূর্থ ভুমি সর্বাশাস্ত্রবিৎ—দে কথা এখন মনে ক্রিও না,
ইনি বড় লোক ইহাকে প্রণাম কর।"

এইরপে সাধারণভাবে সমাজগত নানাবৈষমা প্রদর্শন করিয়া বঙ্কিম হিন্দ্সনাজের বর্ণ বৈষম্য আক্রমণ করিতে প্রাকৃত্ত ছইলেন।

"আর এক প্রকারের বড়গোক আছে। গোপাল ঠাকুর, "কন্সাভারগ্রস্ত কনাভারগ্রস্ত" বলিয়া ছই চারি পরসা ভিকা করিয়া বেড়াইতেছে—এও বড় গোক। কেন না, গোপাণা রাহ্মণছাতি। তুমি খুল,—যত বড় লোক হও না কেন, ভোমাকে উহার পায়ের পূলা লইতে হইবে। কুই প্রহর বেলা ঠাকুর রাগ করিয়া না যান—ভাল করিয়া আহার করাও, যাহা চাহেন, দিয়া বিদায় কর। গোপাল দরিস্তা, মূর্থ, নরাধর, পাপিন্ঠ, কিন্তু সেও বড় লোক। তামহন্ত্রে মহন্তে বেমান প্রাকৃত বৈষ্যা আছে (যথা,—কুম্দিনী অপেকা সৌলামিনী

<sup>\*</sup> সঞ্জীবচন্দ্র সম্পাদিত বঙ্গদশনে প্রকাশিত বৃদ্ধিমচন্দ্রের 'মুচিরাম গুড়ের জীবন চরিত' নামক কুদ্র আধ্যায়িকাথানিও এইরূপ গুণহানের উন্নতি ও পদমর্য্যাদার প্রতি পরিহাস গু তীব্র কটাক্ষপূর্ণ।

কৃষ্ণী; কৃষ্ণিনী ক্ষিণারের ত্রী, কৃষ্ণিনী পাট দাটে ) তেমনি অপ্রাক্ত বৈষমা আছে। ত্রাক্ষণে শৃত্রে অক্লাক্ত বৈষমা। ত্রাক্ষণবধে গুরুপাপ, শৃত্রধে লঘুপাপ; ইয়া প্রাক্তিক নিম্নায়ক্ত নহে। ত্রাক্ষণ অবধ্য, শৃত্র বধ্য ক্রমাক্তিক দিলা, ত্রাক্ষণই কেবল গ্রহীতঃ কেন দুন্নন

পুৰিবীতে যতপ্ৰকার দামাজিক বৈৰন্যের উৎপত্তি হইয়াছে, **মার্ডবর্ষের পূর্বকালিক বর্ণবৈব্যার ন্যায় গুরুতর বৈষ্যা** ক্ষিত্র কোন সমাজে প্রচলিত হয় নাই। অনাবর্ণ অবস্থাসারে ৰ্থা—কিন্তু ব্ৰাহ্মণ শত অপরাধেও অবগ্য। ব্ৰাহ্মণ তোমার লক্ষ্মকার ক্রিষ্ট করুক; তুমি ব্রাহ্মণের কোনও প্রকার 🖷 নিষ্ট করিতে পারিবে না। তোমরা আদাণের চরণে লুটাইরা জীয়ার চরণরেপু শিরোদেশে গ্রহণ কর-কিন্তু শুদ্র অপ্রায়। **্রুমাণ্ট জন পর্যান্ত অ**বাবহার্যা। পৃথিবীর কোন স্থান্থ শুদ্র শ্রিকারী নহে, কেবল নীচবুত্তি তাহার অবলমনীয়। জীবনের **জীবন যে বিশ্বা ভাহাতে** ভাহার অধিকার নাই। সে শাস্ত্রে **ীয়**ে **অথচ শাস্ত্র যে** কি, তাহা তাহার শ্বচকে দেখিবার আধিকায় নাই, ভাহার নিজ পরকালও প্রাক্ষণের হাতে। আৰুৰ ৰাহা বলিবেন তাহা করিলেই পরকালের গতি, নহিলে পতি নাই। এাক্ষণকে দান করিলেই পরকালের গতি, কিন্তু বিলের সেই দান গ্রহণ করিবেও ব্রাহ্মণ পতিত। ব্রাহ্মণের বেৰা ক্রিলেই শুদের পরকালের গতি। অথচ শুদ্র মহুধা, আছাৰ প্ৰথা। প্ৰাচীন ইউরোপের বন্দী এবং জভনগো যে বৈষ্ণা, ভাষাও এমন ভয়ানক নহে।.....

কাটীন কার্বতের বর্ণ-বৈষম্য সম্বন্ধে বৃদ্ধিনের উক্তিগুলি কানে সভা বলিয়া স্থানার কভিলেও বুলিতে ইইবে বৃদ্ধিসকল কাটালৈ এই সভাটি উপস্থাপিত করিবাছেন, ভাষাতে উষ্পর কাটালৈ ক্লিড হয় নাই। সদ্বৃক্তি ও নিরপেক্ষবিচারের ভিক্তেক রাগালের প্রভৃতি ভাবের মধ্য দিয়া সভ্যের দিও নাত্র কাটিল হইলে সে সভা মিথ্যা ইইতে বড় দ্রুবর্তী হর না। কাটিল ভারতে বর্ণ বৈষম্য ছিল, এবং ইহাও স্থাকার করি কাটাল ভারতে বর্ণ বৈষম্য ছিল, এবং ইহাও স্থাকার করি কাটাল ভারতে ব্যাহিত্ত হইরা বৃদ্ধেব উহার বিলোপসাধনী সফল কামও হইরা'ছলেন। কিন্তু দেখা যাইতেছে তাঁহাঃ
প্রায়াসের ফলও চিরস্থায়ী হয় নাই—নরং করেকণত বংসরমধ্যে
বর্ণ বৈষম্য আর্য্যসমাজে উৎকটতর আকার্যেই ক্প্রেভিন্তিত
হইরাছিল। কেন হইরাছিল ? অবশুই ঐ "অপ্রাক্ত"
বৈষম্যের পশ্চাতেও এমন কোনও প্রাক্তত শক্তি চিরকালই
কার্য্য করিতেছিল, যাহার আত্যন্তিক ও ঐকান্তিক নিরাকরণে
বৃদ্ধদেবের চেটাও সমর্থ হয় নাই। একজন মনস্বী ইংরেজ
\* বলিয়াছেন,

অর্থাৎ সমাজবিজ্ঞানে দেখা যায় শাসক, যুক্ষাবসারী, বাণিজ্যব্যবসারী, কৃষক, দাস প্রভৃতিরূপ জাতিভেদ সর্ব্বেই আছে। এরূপ ভেদ ভদ্রতাতিমান হইতে জম্মে মা। কিন্তু সমাজের সভাবান্ত্রত অভাবসমূহ এবং উহার গঠন হটতে উৎপন্ন হয়। শ্রেণী ভেদ এবং (কার্যতঃ) জাতিভেদ অন্যও পাশ্চাভ্য দেশে আছে। অনেকেরই মত এই বে, যুগে যুগে বেরূপ পরিবর্ত্ত আকারেই হউক, সমাজে শ্রেণী-

\* Sir John Woodroffe-Is India Civilised? Sociology shows the existence of caste everywhere as rulers, warriors, merchants, agriculturists, servile population and so forth. These distinctions do not arise from snobbery but from the inherent needs of society and Its organisation. Classes and (in a practical sense) castes exist in the west to-day. Many are of opinion that classes will always exist however much they may shift. Thus Professor Giddings the sociologist says. "Classes, do not become blended as societies grow older; they become more sharply defined." He considers that any social reform that hopes for the blending of classes is fore-doomed to failure.

ভেদ থাকিবেই। সন্ত্রে বিদ্ অধ্যাপক গিডিংস ও বলিরাছেন ''সমাজ পরিণত অবস্থা পাইলেও শ্রেণীভেদ সূপ্ত হয় না, বরং স্পষ্টতর হয়।'' তাঁহার মতে ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীর মধ্যে মিশ্রণ (শ্রেণীভেদের লোপ) বে সমাজসংখার প্রসাদের উদ্দেশ্য উহার বৈফ্লা খনিবার্যা।

মুতরাং দাঁড়াইয়াছে এই-প্রাচীন ভারতে যে বর্ণ रैवरमा ছिल উहारक ''अशाकुछ'' देवनमा वना यात्र ना। তদানীস্তন সমাজের অভাব ও গড়ন ধারাই ঐ বৈষ্ণা নির্মত ছইতেছিল। বিশেষতঃ শুদ্র বলিতে এখন আমরা দাহা বুঝি খুব প্রাচীন কালে ঠিক তাগাই বুঝাইত না। শুদ্রগণের অধিকারসমূহ বস্তুত: ভাহাদের অহুরত মানদিক ও নৈতিক অবস্থার যোগাই ছেল। ব্রাহ্মণাদি উচ্চবর্ণের যে বিশেষ বিশেষ অধিকার ছিল ভাহাও সমাজের তদানীস্তন অবভার একান্ত প্রয়োজনীয় ছিল। অবশ্য কালক্রমে যুখন শুদ্রাদির অবস্থার উল্লাভ ঘটিতে লাগিল, তথন ধীবে দীরে সমাজে **অসম্ভোষেরও সৃষ্টি হইতে** গাণ্ডিল। বুদ্ধবের স্মাজ-সংস্কার প্রয়াস ঐ অসংস্থাথেরই চিত্ত ও ফল। কিন্তু বৌদ্ধ-গণের সমাজসংস্কার ধর্মসংস্কার-প্রাকৃতির চেষ্টারও যথন কিঞ্চিৎ বিকটতা আদিয়া পড়িন, তথনত তাহার প্রতিক্রিয়ায় আবার হিল্পু পর্ম ও হিন্দু আচার স্মাজে (কথঞ্চিৎ পরিবর্টিড আকারে) পুন: প্রতিষ্ঠিত হইল। ইহার ফলে প্রাচান শুদ্রজাতির অবস্থার কিছু উন্নতি হইল বটে, কিন্তু ক্ষার্থাদি অন্তজাতির প্রাচীন অধিকারসমূহ থকা হইল। বুলদেবের পুরে যেখানে বাহ্মণ ক্ষতিয় বৈশ্য শুদ্র চারি বর্ণ ছিল, বৌদ্ধধর্ম লুপ্ত হটবার পর সেখানে ফলতঃ এক্ষণ ও শুর ছুই বর্ণমাত্র অবশিষ্ট রহিল।

অবশ্য বলা যাইতে পাবে সাম্য প্রবন্ধ বল বৈষ্ণ্য সম্প্রে স্বাহ্য প্রাথ করা হয় নাই তাহাতে কি 
 বর্ণ বৈষ্ণা সমাজের স্বভাবামূগত অভাব হউতে উৎপন্ধ হইলেও উহার উৎপীড়ন ত ছিল 
 এথনও কি নাই 
 বন্ধ থাকে তব্ব আংশিক হইলেও তথ্য প্রাথ করা 
হবৈ না 
 এবং ভারভাবেই প্রকাশ করা হইব না 
 বি

वर्ग देवस्थामश्रद्ध (कन, त्काम ७ विश्वद्राष्ट्र विक्रम भड़ প্রকাশের প্রতিরোধী হওয়া কাহারও পক্ষে যুক্তিসমূত 🐞 স্তারামুনোদিত ব্যবহার নতে, ইহা পূর্বে বলিয়াছি। পর্মতের প্রতি অস্হিষ্ণুতা কুশিকা, কুসংস্বার, কুফ্চির চিচ্চু। কথা এই-বঙ্গদর্শনের যুগে হিন্দুসমাজের প্রতি অবণা আক্রমণ কারীর অভাব ছিল না। সামাজিক বৈষ্ঠ্যের আলোচনার অযথা তারতা ও অপরিমিত গরল ঢালিয়া দেওয়ার ফলেই ফরাসি রাষ্ট্রবিপ্লবের উৎপত্তি। वन्नरमान अकरमनी সমংলোচক, অষ্টাদশ শতাকীর ক্রাসি লেখকগণের মাঞায় না হউক, দেশকালপাত্রবিবেচনায় কিঞ্চিৎ অমুচিতমাতায়ই গরল উদ্গার্ণ করিতেছিলেন। তাহাতেও যে কিছু পুঞ্চল হয় নাই ভাষা বলিব না। হিন্দুসমাঞ্চ ভাষাতে আসিরা উঠিয়াছিল। বন্দদর্শনের বুগে আঘাত জনিত বাগা আপেক্র সমাজের দেহ ও মন উভ্যের পুটকর ভৈষ্কা প্রারোধের প্রায়ের ই অধিক ছিল। হিন্দুসমান্ত বলিতেছিল, "হে আমার হিতিবিগন, আমাকে গুধু গালি দিও না, গুধু আছাত করিও না। আনংকে এমন সব কথা ওনাও যাহাতে व्यामात्र मन ७ क्षण छ छत्यत । श्रादान करणा । এমন কিছু উপদেশ দাও যাগতে আমার বাজিত কুটা করিয়া--- আমার সহস্র সহস্র যুগব্যাপী সাধনার সহিত্র নামঞ্জনা রক্ষা করিয়া--্রে গুলি সমাজমাতেরই যথার্থ গৌরবের বিষয় দেইগুলিতে নুতনযুগের সভাজাতিগণের সমকক হইক চলিতে পারি।" বাঙ্গমের মনে প্রথম হটতেই সেই স্মাজতৈতনার ফুর্তি হইয়াছিল বটে, কিন্তু একেবারে সমগ্রভাবে হয় নাই। তাই 'সামে' তিনি প্রকৃষ্ট সমন্তরের পথে যান নাই, পরে 'প্রচারে' ও 'নব জাবনে' প্রকাশিত नाना अनुरक्त शिवां इस्तिन। \* 'मारमा' मिनि आहिन

আধুনক কালের মানকাঠী দ্বারা যাহারণ আহিন্দু
কালের স্মাজিক ব্যবস্তাসমূহের বিচারে আহুত্ত হইরা
আচীনগণকে গালাগালি দেশ উংহাদিগকে মনীধী কর
ইুয়াউ মেলের ভাষার স্বিন্ধে এইটুকু মাত্র বলিব কে
সামাজিক অন্বক্ষ সমস্তাই no two ages and scarcely.

কারতে রাক্ষারে স্থানে অসংহঞ্চা প্রদর্শন করিরাছিলেন ; স্থান্ত্রে ডিনি লিখিতেছেন—

্ত্রিক। (ত্রাহ্মণগণ ) বে বর্ণশ্রেষ্ঠ ও ক্সাপামর

বিশেষ ভক্তির পাত্র, তাহার কারণ এই বে

ক্রের্টিক বিশেষ ভক্তির পাত্র, তাহার কারণ এই বে

ক্রের্টিক ত্রাহ্রতবর্ষে সামাজিক শিক্ষক ছিলেন।.....

ক্রের্টিক ত্রাহ্রতবর্ষে সামাজিক শিক্ষক ছিলেন।....

ক্রের্টিক ত্রাহ্রতব্রিকার ভারতবর্ষি এত

ক্রের্টিক বিশ্বরাই সহক্রে উরতি লাভ

ক্রিরাছিল। তাহারা যে আপনাদের প্রতি লোকের

ক্রের্টিক আদিষ্ট করিয়া ছিলেন তাহার স্বার্থের জন্য

ক্রের্টিক ক্রান্টিক বিরায়া ছিলেন তাহার স্বার্থের জন্য

ক্রের্টিক ক্রের্টিক ব্রাহ্রতির নহে।

ক্রির্টিক ক্রেন্টিক নহে।

্ **বিয়া। ডা ৰাক্।** এপন দেখি ত আন্সণেরা লুচিও আইন, কটিও বেচেন, কাণী খাড়া করিয়া কসাইয়ের বিসায়েও চাশান। তাঁহাদিগকেওভক্তি করিতে হইবে ?

্ । কদাপি না। যে গুণের জন্ম ভক্তি করিব, গৈ গুণ বাহার নাই, ভাহাকে ভক্তি করিব কেন ? সেখানে জিক্তি অধ্বৰ্ধ। এইটুকু না বুঝাই ভারতবর্ধের অবন্তির জিক্তি গুকুতর কারণ।.....এখন ফিরিতে হইবে।

শিবা। অর্থাৎ ব্রাহ্মণকে আর ভক্তি করা হইবে না।

শৈক্ষা ঠিক ভাহা নহে। যে ব্রাহ্মণের গুণ আছে,

শৈক্ষাং বিনি ধার্মিক, বিধান্ নিদ্ধান, গোকের শিক্ষক, তাঁহাকে

শিক্ষাং করিব; বিনি ভাহা নহেন গোহাকে ভক্তি করিব না।

শৈক্ষাং বিবেও যে শুদ্র ব্রাহ্মণের গুণসূক্ত অর্থাৎ যিনি ধার্মিক,

try two countries have decided alike and the decision of one age is a wonder to another. It the people of any given age and country to more suspect any difficulty in it than it it is a subject on which mankind had always. The a subject of the country—Introduction.)

বিখান নিকার, লোকের শিক্ষক, জাহাতেও ভাক্তি করিব।" •

'সাম্যের' তৃতীয় প্রস্তাবে স্ত্রী পুরুষবৈষ্যা সম্বন্ধে বৃদ্ধিয যাহা লিখিয়াছেন তাহার অনেক কথাই জনষ্টুয়াট মিলের--Subjection of Women নামক পুস্তকের প্রতিধ্বনি ! আমর। উহা সমগ্রভাবে আলোচনা করিব না। এই প্রবন্ধে তিনি বিধবাবিবাহ সম্বন্ধে আলোচনা করেন। ইহার কুড়ি বংসর পূর্বে ১৮৫৬ খুষ্টাবেদ হিন্দুর পক্ষেও (হিন্দু সমাবেদ প্রচলিত কুমারী বিবাহের মন্ত্রাচারাদিলারা সম্পাদিত) বিধবাবিবাহ আইনসমত বলিয়া বিধিবদ্ধ হয় ৷ বিভামচন্ত্ৰ বিধবাবিবাহের কতদূর পক্ষপাতী ছিলেন বলা যার না। বিষরুক্ষে দেখিতে পাই, স্থামুখী কললমণির নিকট এক পত্রে লিখিজেছে "আর একটা হাসির বিখ্যাসাগর নামে কলিকাতার কে না কি বড় পণ্ডিত আছেন, তিনি আবার একথানি বিধবা বহি বাহির করিয়াছেন। যে বিধাবার বিবাহের ব্যবস্থা দেয়, সে যদি পণ্ডিত, তবে মূর্থ কে 📍 স্বর্গং বিচ্ছাগাগর মহাশয় ঐ উক্তিটির জন্য বৃদ্ধিমকে ক্ষমা ট**ল ছাড়া ইংরাজন্তোত্তে ব্**রিম**চক্ত** লিখিয়াছেন, "আমি বিধবার বিবাহ দিব, কুলীনের জাতি মারিব, জাতি ভেদ উঠাইয়া দিব—কেন না, তাহা হইলে তুমি আমার স্থাতি করিবে।" এইরপ ভাবের কথা বিশ্বমের গ্রন্থাবলীর আরও অনেক কলে আছে। সে **যাহা** হউক বালবিগবার বিবাহ শাস্ত্রদমত, ইছা বঁদদর্শনের যুগে হিন্দুসমাজের বহু লোকেই বেশ বুঝিয়াছিল। বিভাসাগর-

<sup>\*</sup> ধর্মতন্ত্র—দশন অধ্যার। সমূব্যে ভক্তি। সমগ্র অধ্যায়টিট পঠে করা আবশুক। আধুনিক সমাজে ব্রাঙ্গণের স্থান নিয়া অবেক আলোচনা হইষাছে। অক্ষয়চন্দ্র সরকারের "সনাতনী" গ্রন্থে ব্রাঙ্গণ—ব্রাঙ্গণের প্রভূত্ব' শীর্ষক প্রবন্ধ, রবীন্দ্রনাথের "ক্ষণেশ" নামক গ্রন্থে 'ব্রাঙ্গণ'-শীর্ষক প্রবন্ধ ভইবা।

প্রভৃতিও বালবিধবাগণের বিবাহ হউক ইহাই চাহিতেন। লাভটি সন্তানের পিতা বিপত্নীক হইলে তাহার পুনব্বিবাহে অধিকার আছে বলিয়া সাত সন্তানের योजा विश्वा हरेल श्रूनर्सिनादत व्यक्तिति इश्रा फैिक, अयन छे९क है नामारवाधवाता व्यर्गाविक बहुता বিভাগার ও তাঁহার সহোজোগিগণ বিধবাবিশার প্রচলন জন্ম বন্ধপরিকর হয়েন নাই। অন্তর বৃঞ্জিয় विषराविवाद मचरक याशह वलून, "मार्या" कडकी বেইরপ অন্তত যুক্তিই দিয়াছেন। "আমরা বলিব, विषवाविवाद ভाष्ठ अरह यन्छ नरह ; मकल विश्वाद विवाद रुख्या कलाह छान नरह, তবে विधवानर्यंत ইচ্ছামত বিবাহে অধিকার থাকা ভাল :.....বিধবার हिन्देवषया यनि न्यां क्या मन्नक व इय, ज्य गृज्जार्या शुक्रस्तत्र हित्रभञ्जीशीनछ। विशान कत्र ना (कन १ ..... ভূমি বিধান কর্ত্তা পুরুষ ভোমার হতরাং পোযাবারো। ভোমার বাহবল আছে, স্থতরাং তুমি এ দৌরায়্য করিতে পার। কিন্তু জানিয়া রাখ যে এ অভিনয় অভায়, श्वक्रव अवश धर्म-विकन्त देनस्या।" अवेशान वला আবশুক যে. 'সাম্য' গ্রস্থাকারে প্রকাশ করিবার সময় বৃদ্ধিচন্দ্র তৃতীয় প্রস্তাবের প্রনেক সংশ কাটিয়া ছাটিয়া ফেলিয়াছিলেন, শেষে সমগ্র সামা গ্রন্থানিই বিলুৱ বছ বিবাহ আইন ছারা নিষ্ক করিয়াছিলেন। করিবার বিজ্ঞাসাগর মহাদয়ের প্রবর্ত্তি 5 আনোলনগভাছে ব্ভিমচন্ত বঙ্গদৰ্শনে যে আলোচনা कर्त्वन, ভাহাতে বছবিবাহ সমাজের অনিষ্টকারক ৰীকার করিয়াও তিনি বলিয়াছেন :--

"দশ সহজ হিন্দুর মধ্যে একজনও অধিবেদন পরায়ণ কিনা সন্দেহ! এই অল্লসংখ্যকদিগের সংব্যাও থে

্ । বিবিধ প্রবন্ধ ২য় বণ্ডে 'বঙ্গদেশের রুষক' শ্রীৰুদ্ধের ভূমিকা এইব্য। দিন দিন কমিতেছে, স্বত্যই কমিতেছে, ভাষাও বক্ষেত্র জানেন। কাহারও কোন উলোগ করিতে হইতেছে না —কোন রাজবাবস্থার আবশুক হইতেছে না, আপন্ত হইতে কমিতেছে। ইহা দেখিয়া অনেকেই ভরুষ্ট করেন, এই কুপ্রধার যে কিছু অবশিষ্ট আছে, ভাষ্ট্র আপনা হইতেই কমিবে। এমত অবস্থায় বছবিৰাহরপ রাক্ষসবধের জন্ম বিভাসাগরের ভায় মহারথীকে ধৃতাক্র দেখিয়া অনেকেরই ডন্ কুইল্লোটকে মনে পড়িবে।"

আপনারা লক্ষ্য করিবেন বৃদ্ধির বৃদ্ধবিশৃক্ষণার জীপুরুবে অধিকারসাম্যের বৃদ্ধি অবভারণা করেন নাই। পরস্ক ইতঃপুর্বে বিষর্কে প্রশিষ্ঠ জীপচন্তের নিকট নর্গেক্ষের চিঠিতে তিনি ভালুল সামানীভির অবৌজিকভাই প্রদর্শন করিয়াছিলেন। নগেক্স লিধিতেছেন,—

"ত্মি বলিবে যদি এক পুরুবের ছই ত্রী হইজে পারে, তবে এক ত্রীর ছই বামী না হয় কেন ?—উত্তর, এক ত্রীর ছই বামী হইলে অনেক অনিট ঘটিবার সভাবনা । এক পুরুয়ের ছই বিবাহে তাহার সভাবনা নাই। এক ত্রীর ছই বামী হইলে সন্তানের পিতৃ নিরুপণ হয় মাঃ পিতাই সন্তানের পালন কর্তা—ভাহার অনিভ্রে সামাজিক বিশ্রুগতা জন্মিত পারে, কিন্তু পুরুবের বিবাহে সন্তানের অনিভ্রেতা জন্মে না ইত্যাদি আহিছে অনেক কথা বলা বাইতে পারে।"

বহুবিবাহ-বিষয়ক প্রবন্ধে দেখা যায়—ছবিদার বিভার দারা বীরে ধীরে সমাজের সাভাবিক প্রতিতে বে পরিবর্তন বং সংস্কার সংধিত হয়, বহুমতন্ত্র উষ্টার পক্ষপাতী; আইন প্রণয়নদারা ক্রত সমাক্ষময়ের ঘোরতর বিরোধী। এই মত বে প্রকৃত্ত মত ভাষ্ট্রে সন্দেহ নাই। যে সংস্কার ভিতর হইতে সাধন কর্ম সন্তব্য, তাঁগার জন্ম রাজবিধির বাহ্যদাসন আশ্রয় কর্ম প্রত্য ভাগ্র অযোজিক ভাষা যহিন উপদাহ করিয়াছিলেন। বিধুবাধিবাহ সন্তব্ধে ঐরপ সাধ্য শাস্ত্র ক্ষা হ্রাব হর পতান্তর ছিল না। কিন্তু বহু বিবাহের নিবেরের জকু উহা আবশ্যক ছিল না। বহু বিবাহের বিবেশ অভাবেও ঐরপ ''শ্রশানচিকিৎসার'' ব্যবস্থা জরাইকই বিভাগাগর বহিষের পত্রিকার অমন তীব্রভাবে ক্ষাইকই বিভাগাগর বহিষের পত্রিকার অমন তীব্রভাবে

িশিকতে অশিকিতে, ভল্লে ও ইতরে সহায়ভূতির জ্ঞাৰ স্থানাদের একটা গুরুতর স্থপবাদ। স্বরং বিশ্বতরও ইবার বাথার্থ্য অংশতঃ অঙ্গীকার করিয়াছেন। বিষ্টান্তর বিশেষ গৌরবের কথা এই যে, তিনি विवर्गीत विवासित क्रिकशालित क्रववशा, स्विमात्रशा छ ক্রিটেরে কর্মচারিগণের হত্তে ক্রবকদিগের নিরস্তর প্রার্থনা, প্রানীত্তন রাজবিধির, বিশেষতঃ জ্পভিন্নবিদের চিরস্থায়ী বন্দোবন্তের ফলে ভাহাদের বিভ্ৰমা, এ বিভ্ৰমা সংশোধনের প্রতি রাজপুরুষগণের কাৰীৰ প্ৰভৃতি সম্মে অতি বিস্তৃত আলোচনা করেন। শালোচনা ফলপ্রদ হইয়াছিল। বহিম স্বরং বিশিয়াছেন, কৃষকদিণের অবস্থার "এক্ষণে যে উন্নতি লাবিত হইরাছে উহাতে তাহার হত্তপাত।" কৃষকগণের বৰ্ণনে বৃত্তিমচল বোধ হয় ছলে ছলে একটু क्ष्रीक्कि कतिशाहित्तन। এवश क्षरकशत्वत पूर्वनात কাছভিক কারণগুলি নির্দেশের সময় Buckle এর distory of Civilisation হইতে কতকগুলি মত ভিত্ত নির্বিচারেই গ্রহণ করিয়াছিলেন বলিয়ামনে 🗱 এ মতভলির প্রতিবাদ ৮তুদেব মুখোপাধাার বিহাপ্তের সামাজিক প্রবন্ধে কৃত হইরাছে। ইবা ছাড়া <del>্ষ্তিবেশের ক্র</del>বক" প্রবন্ধে অর্থশাল্রপটিত এমন क्षेत्रक भीन कथा चाह्य हाहा विक्रम निर्वाह भाव भीवरन ব্ৰেছাৰ বিবেচনা করিতেন না। এই সব ক্রটি সংৰও विकास रहेरव के शवक्षि वन्न नरिनंत्र व्यक्ति रंगीवत ।

**बी वक्य क्यांत्र महत्वश कित्र ।** 

# আগমণী

এই তো বুঝি চরণ রেখা
শিউগী-ঝরা ত্র্বাদলে !
এই বুঝি মার মেহের আঁথি
মেত্র হল সগণতলে !

এই বৃঝি গো আঁচল রাজে
ধানের ক্ষেতের খ্যামল লাজে !
ছক্ল ছেপে স্থন্যধারা
উথ্লে ওঠে নদীর জলে !

শায় মা ভাবার বরষ-পরে
শশ্রুবরা আঁধার বরে !
কে মিটাবে মাধের মত
দেহের ত্যা হিয়ার তলে ?

কোণায় আমা বঙ্গভূমি
'ধন ধান্য পূপা ভরা'!
কোণায় নিবিড় শান্তি ওমা,
মোহন হাগি ভূবনহরা!

শনহীনের কাঁদন মাঝে
শন্তার বোধন বাজে!
হাহাকারে বন্দনা মা,
শর্মা এবার নয়নজলে!

**बी** पतिभगकुमात (थाइ)

### অবরোধ।

(Erckmann Chatrian निविত 'Le Blocus'
- নামক আখ্যায়িকার বলামুবাদ )
চতুর্থ অধ্যায়।

এ সব আর কি ভনছ ফ্রিজ আমাদের অদৃষ্টে যা কিছু ্ছঃ খ কষ্ট ছিল এত স্বে তার আরম্ভ। পরের দিন সহর ভদারক করার ধুম পড়ে গেল। বেলা প্রায় এগারটার नमय देखिनियात कोटकत कर्खाता भाविन है। हिन दमर्थ বেড়াতে লাগ্লেন। তথনি তথনি সহরময় রাষ্ট্রয়ে **গেল যে বুরুজের ভেতর বাহত্তরটা উঁচু চৌতারা** করা হবে। আরও ওন্লাম আমাদের সহরের জামান **শরওয়ালার** বাঁয়ে ডাইনে—বোমা পড়ে কিছু না কর্তে পারে-এমন জবরদন্ত গোচ খান তিনেক বরও তৈরী হবে। প্রত্যেক ঘরে জন ত্রিশেক করে লোক ধর বে আর গড়ের মাঝখানে বড় বড় গাছের গুড়ি পুঁতে খুব শক্ত ারকম বেড়া দিয়ে উপতুর্গ গোছ একটা বেশ সুরক্ষিত আয়গা করা হবে, আর সেই বেড়ার কাট। ফাক ওলো पिएइ (गानान्यारक्ता (गाना छनि हानार्त। এই त्रम ममें । तिष्। (पत्रा काश्यात त्रावशा दरव जादार्ज हिल्म জন করে লোক ধর্বে। আর বড় চকে মিউনিসিপাল **আফিসের কাছে** যাকে আমরা মেরি বলি সেইখানটায় শারও গোটা চারেক বড় বড় বোমা-বাঁচান ঘর বানান একশ জন করে লোক থাকতে स्य। (म पत्र পারবে। সকলেই ক্রমে জান্তে পারলে যে এ সব কিছুই সুরকারের খরচে করা হবে না,সহরের লোকদেরই विशास बितात बाहान करव-छाताके निकालत बंखा. (कारान, जिनिन भक्त वहेवात कक र्ठना गाड़ी जात या र ৰীবভক হবে সৰ আপনাৱাই নিৱে আগবে। আর ब्रिस्टिश् बदन गांह ठेक खरना काण्टिन कारनित वाजा

मित्र वहेत्र चानां शता छताहै छ नव हक् विक সর্লে সাফেন আর আমি আমরা এ তিন অনে এসর গাছের গুড়ির বেড়া আর বোমা থেকে রক্ষা পারার আশ্রম গুলো কি রক্ম করে কি হবে তা ব্যক্ত পারছিলাম না। আমাদের পড়্শী বন্দুকওয়ালা বেঁট্রী वूर्ड़ारक विकाम कर्छ रम हिंदम वर्स थ नव वृक्ष है र्गाल व्यानक कथा। এর পর यथन পোলা अवित मन्मनी आत तामा काठात मक अन्दर ज्यन आशिक्ष বুঝ তে পারবে। ভাই হে মান সের শিখ বার বয়স আন না। ভাল কথা বল্লেও এ সব লোকেরা কি রকম ভলীতে व्यवात (मध এकतात तुरक्षेष्ट (मध। व्यामात मान मह আমাদের মিউনিদিপালিটির বড় কর্তা ব্যারন পার্মেরিয়ে একটা বক্তা দিয়েছিলেন তাই ওন্তে সহরের সময় লোক চক্বাজারের দিকে ডেলে ছিল। আর সকলের रमवा रमवि बागताछ राहे निरक इटि रानाम । मर् আমার হাত ধরে চলো আর বাফেন আমার চিটে আমার পেছন দিকটা চেপে ধরে যেতে লাগ্ল পাতে ভিড়ে আমরা ছাড়া ছাড়ি হয়ে যাই। মেয়ার অফিনের সন্মুখে মেয়ে পুরুষ, ছেলে পিলে সারা সহরের লোক গোল হয়ে চুপটি করে বদে সব ভনছিল আর মাঝ থেকে এক একবার সমাট বাহাছরের জয় বলে চীৎকার कत् छिन। পार्भाखिए एको कामत गांत्रम चरतत निष्कृत উপর দাঁডিয়ে কোমরে তিন রঙ্গা কোমরবন্দ বেঁছে বক্ততা দিচ্ছিল। আর তার পেছনে আর সব মিউনিস্থি পালিটর কর্তারা দাঁড়িয়েছিল। রোগা লম্বা লোকটি গায়ে একটা আসমানী রঙয়ের পেছন দিক ঝোলা ল্যাক ख्याना (कार्षे: शनाय मामा शना वस ।

পার্মান্তিরে বল্তে লাগ্ল "ফালস্ব্র্বাসীপর্ণ" আছি তোমাদের সাত্রাজ্যের উপর অফ্রাগ দেখাবার সময় এস্ক্রে, গত বংসর সমস্ত ইউরোশের লোকেরা আমাদের কথা মতই চলেছিল আজ তারা আ্মানের বিশুক্রে নাড়িরেছে। দেশের গোকের বলি উৎসাহ সাংগ্রে বিষ্ণ বিষ্ণাদের অভাব ঘটে তা হ'লে একের
বিষ্ণাদিক ভর করবার কারণ আছে ঘটে। আল বে

ক্রিট নিজ কউবা থেকে বিরত থাক্ষে সে মাতৃত্যির
হৈ বিখাদ-জোহী হবে। বে ফালস্ব্র্গ নিবাসীপণ
স্থারা বৈ কি তা আল সকলকে দেখাও। তোমাদের
ক্রেট দিউদেরা যিত্র শক্তিদের বিখাদ-ঘাতকাতেই
কালৈ প্রাণত্যাপ ক'রেছে। তোমরা ভার প্রতিহাই নিতে অগ্রসর হও। ফ্রান্সের পরিত্রাণের জন্ত
ন পক্তেরই সামরিক বিভাগের হকুব নান্ত করা

कांक कथा अत्नहे नात्र कांग्रा नित्र छेठे न। जामि ৰ্নেই বলতে লাগ্লাম ''হায় বে অদৃষ্ট! আমার ব্যব্দিশা করটা আর এনে পৌছাল না। শক্রপক ক্ষিত্র ছরাবের গোড়ার এসে পড়েছে দেখছি।" এলিয়া निष्टे बार किलाअहाना कान त्य त्नजी बामात कारहरे ক্রিছে। আর স্বাইকার মত "স্ত্রাটের জয় विक अवाज ही कांत्र मा करत्र जात्रा मिरकरमंत्र मरश ৰিষ্টি কয়ছিল "বেশ কথা আর কি আমরা ত আর ক্ষাৰ অমিদার দই। বাারন ডিউক কাউণ্টদের कि बानम वाहाल है द्वा (नन-छाति छात्रत गाया শ্বিষ্টাৰে আমাদের দিতে নজর কর্বেন।" কিন্তু যত শুরাণ ধোদার যারা সাধারণ তত্ত্বের আমল থেকে লৈশাইগিরি করে আস্ছে তারা সকলেই যেয়ার শ্রীরেম্ব কথার সার দিরে "ফ্রাস্মারী ফ্রাসের জর" ক্রে টেচাতে লাপ্ল। আর বল্তে লাগ্ল এবার क्षिति करी राज बना कवा छाडे हे छाडे।" यावा बहे ক্ষাৰ আকালন কর্ছিলেন ভাদের স্বারই প্রায় শেষ क्षेत्र स्मार्ग ७ दह। नमछ हुन छ र्ठ शिरत माथा छनि বেই শীৰা হয়ে গিয়েছে। কোক্লা মূথে পাইপ ধরার के के हर हो है। उसे हिंद किना नत्येर महिला ব ওল্টা আরু বিশন্ন কেরতা দেখারে এই গব

শার্ডে লাড়ে কাল্নে শেকীর দিকে চাইছে নান্ধ।
শানি তার কানে কানে বল্লান ''লাত লোহাই তোর
কাল্যে তুই চুল কর—তা নইলে এখনই ওরা তোকে
ছিছে ফেলে দিবে।

法自己等。据某事的目标。2018年1

আমি কথাটা বড় মিধ্যা বলিনি। বুড়োরা বে মুক্স করে কট্মট করে তাকাচ্ছিল তা দেখ্লেই প্রাণ্ ওকিয়ে যায়, রাগে তাদের মুখগুলো পাঙাশপানা হয়ে গিয়েছিল চোয়ালগুলো ঠক্ ঠক্ করে কাঁপ্ছিল।

কালাৰে আবার কথা মত আর পাচলনাই সলে বেরিরে বাড়ী ফিরে গেল কিন্তু এলিয়া বক্তভার শেব শী শুনে উঠল না। বাইরে যখন লোকেরা ভিড় করে রাম্বা দিয়ে বেতে যেতে সমাটের জয় ছোক বলে চীৎকার কর ছিল খে তখন আর চেপে থাক তে না পেরে ইড়ি-ওয়ালা বুড়োকে বল্তে লাগ্ল "আছা খল্টা ভোষাকৈ ত ওয়ালিৰ লোক বলেই জানি, তুৰিত কোনও কালেই त्माला विवासन कि कि कि ना-जाक की परक्रीरेंब ডোল বদলে তাঁর পক হয়ে প্রাণপণে লড়াই করা চাই বলে যে টেঁচাচ্ছ এটা কেমন ধারা হল বলতো। লড়াই कता कि तार्थ आमारमत काल । आंगता कि रमहे मरतव लाक (व बेलुक चाएं जिलारे त्रशारे वरम गार्थ ! जाई গত দল বৎদর ধরে আমরা যে ক্রমাগত ফৌলের জর লোক যুগিয়ে আস ছি সেটা ভাহ'লে কি হ'ল ? প্রাভা হৈ মরে গেল তাতেও কি আশ মিটুছে না ? এখন যত সং ব্যারণ ডিউক আর কাউণ্ট (ক্যাৎ) বাহাত্র্রদের ঠেকো मिए शिर्म (नेवकारन आमारिक्त कि के के मिए इस्स १<sup>९)</sup> श्वनमें। तूर्ण कि इ जांत्र जांत्र कथा त्यव दर्ज निरम मा রেগে তার দিকে ফিরে বলতে লাগ্ল "শোন বল্ছি এলিয়া ভাল চাওত মুখ সামাল দিতে শিখো। এখন স্বীয় क्यांत्र अक्षात्र विहान कवृतात नमत्र नाहे अधन और के नि রক্ষা পার তাই কর্তে হবে। আনি বাপু তোমাকে जारन शिक्ष नायदान करत विनाम पूर्वि विक कार्य हर्ति। यह विकि बार्ड रिश्मीत कोम करने मा नहार है।

বৃষ্টের তো। এখন লাভে লাভে পথ দেব। আরও জন
করেক প্রানো দেপাই এদে আমাদের বিরে ফেল্লে।
এলিয়া কোনও মতে সম্বের একটা গলিতে চুকে পড়ে
দেব বাজা বেঁচে গেল। ভার পর কলিন ধরে নানা রকম
ইতাহার জারি হতে লাগ্ল। জার জাপাটি করে বেগার
বর্তে লাগ্ল আর বাড়ী বাড়ী সব সরকারের লোক ব্রে
মুরে বত সব যত্তরপাতি থতা কোদাল ঠেলাগাড়ী
বৈধাক টেদে নিয়ে বেতে লাগ্ল। স্বাই আপন আপন
বাড়ীতে চোর হয়ে বসে রইল। সরকারী লোকেরাই
সর্কায় কত্তা। যা কিছু সবই বেন ভালেরই নিজম।
ভবে দল্লা করে একটা রসিদ দিভেন এই যা।

আমার লোহার গুলামে যা কিছু কাজের মত হাতিয়ার ছিল সব ক্রমে ক্রমে গড়ের দেওয়ালের উপর গিয়ে পৌছল ভাগ্যে আগেই বেশীর ভাগ বিক্রি করে কেলেছিলাম তা না হলে এই সব কাগজের চিরক্টের বছলে মাল দিতে হলেই আমার সর্বনাশ হতো আর কি!

মাঝে মাঝে মেরার মহাশর এক এক বার বজ্তা ফর্তেন আর সহরের শাসন কর্তা মহাশর বেশ মোটা সোটা লোকটি—মুখে ব্রনের দাগ—তিনিও যে বাসিন্দা লোকদের উপর পুসি আছেন তাও জানিয়ে দিতেন। এতেই পরসা কড়ি দিয়ে সকলকার দাম মিটিয়ে দেওবার কাজ হয়ে খেত।

আমার যখন গাঁতি ঠেলাগাড়ী নিয়ে কাল কর্তে
যাবার পালা এল আমি কারায়া বলে একজন করাতির
সলে বল্লাবস্ত করে ফেল্লাম সে আমার
বললৈ কাজ কর্তে চলে পেল। বলদেখি একি কম
আপত। এমন হালামা যেন আর কাকেও কখনও

ত্রিক্তে গ্রপর বাহাত্র আমাদের উপর যেমন চক্ম ভালাতে লাগ্লেন ওদিকে তেমনি চাবাভ্যাদের ধরে বেলার বেওয়ার জন্ত পুলিশের কল অন্ত আছর বাইরে ক্ষিত্র হ্রতে লাগ্ল। সংগ্রেম ব্রেক্টাভায় পুল পার

বিছু দেখ্বার বোটি ছিল না কেবল লক্ষা লবা সাছিতি
সারি। সেই সব সাড়ীতে শুদ্ধ পুরানে। পুরানো
গাছের শুড়ি বোঝাই। বোমা আটকাবার দ্ধর তৈরারী
হবে বলেই এই সব কাঠের জোগার হতে লাগ্ল। ভালী
আশু শুড়ি সাজিরে বড় বড় বুরুক বানান হবে লার জার
উপরটাও এ রকম শুড়ি দিরে ছেয়ে ফেলে মাটি চাদিরে
দেওরা হবে। থিলান করা ছাদওয়ালা বরের থেকে একম
দ্বর নাকি টের মজবুং। উপর থেকে যুতই বোমা রা
হতে থাকুক্ না কেন এর ভিতরে কোথাও একট্ সভুবে,
চড়বে না। এ আমি পরে শুচকেই দেখেছি এই নম কার্
আবার আর এক কালেও লাগ্ত। শুড়ি গুলো কেটে
উপর দিকটা ছুঁচলো করে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বেড়া কেটেই
ছতো। শুলি চালাবার জন্ম মধ্যে মৃল শুলির
কাক রাখা হত। লোকে এই গুলোকে বল্ভ শীলাকী
কাঠগড়া।

এখনও মনে হর সেই চাবীদের চীৎকার, বৌদ্ধার্থ চিহি, চাবুকের শব্দ সবই বেন ঠিক কানের বেংক্তার শুন্তে পাছি। রাজি দিন গোল মালের আরু সেই ছিল না।

এক এক বার মনে হত যে এ সময়ও বলি বিশো পিপে কয়টা এসে পড়ে তা হলে আর সে ওলো রকা কর্বার জন্ত বেশী কট্ট পেতে হবে না। তারিমান প্রাসিয়ান কি অধীয়ানদের দল চুকে পড়ে বে আমার মদ্টি সাবাড় কর্বেন তা এখন আর বড় সহক্ষ হয়ে উঠবে না।

এই ভেবেই বা একটু মনে খাতি প্রেডার। প্রেডার। প্রেডার। ক্রার্থিত সকালে সর্লে মনে কর্তো ধে আলকেই বাের বার বার আমালের চালান এবে পৌছাবে। একলির বার্থিত আমালের সকলেরই ইচ্ছা হল বে কেরার ব্রেথা বি বার্থিত কাল চল ছে একবার দেখে আকি। বাং তােই বাং প্রাথা বিবাধ গলগাছা কর্ছিল আর সক্ষে আর্থারে বাছ বিভি এবে বল ছিল্লাইবা ভারিই কাল প্র এপিটা

চলেছে লেখে এলাম।" শেলা থানার সামনে বোমার ভিতর সৰ্মশ্লা টশ্লা বারুদ টারুদ প্রছে কামান ভলো সৰ্বার করেছে, গড়ের পাচিলের উপর সে গুলো টেনে টেনে তুল্ছে।

ভেশেটাকে আটকে রাধা মুন্তিল হরে পড়েছিল।

মাধন আর তার বাজারে গিয়ে বিক্রি কর্বার কিছুই ছিল

মারি আর বাড়ীতে আটক হয়ে চুগটি করে বসে পাকা

হার পঞ্চে ভারি কঠকর হয়ে পড়েছিল। সে গহরময় ছটে

রেড়াত আর বাড়ী এসে আমাদের সব ধবর দিত।

শৈলিন সারি সারি বিয়ালিশটা কামান এক সঙ্গে সাজান

হারেছে আর পদাতিকদের বারিকে বুক্লের উপর তথনও

শাল চল্ছে তনে আমি সল্লেকে বল্লাম "শালটা গায়ে

ইতির নাও একবার গিয়ে কিহছেে দেখে আসা যাক্।"

হারিছে আমরা নীচু রাস্তা ধরে ফরাসী দরওয়ালা পর্যান্ত

বার্থি আমরা নীচু রাস্তা ধরে ফরাসী দরওয়ালা পর্যান্ত

হারেছ আমরা নীচু রাস্তা ধরে ফরাসী দরওয়ালা পর্যান্ত

হারেছ আর পারীর রাস্তা বাঁ। দিকে চলে গেছে সেই

ভারাণা থেকে বুক্লের চালু ধার বয়ে শত শত ঠেলা

বার্থী উপর পানে টেনে নিয়ে চলেছে।

উপরে অনেক জন মজুর দেপাই আর সহরের লোক বিলে প্রকাণ্ড একটা তেকোনা মাটির চিপি তৈয়ার করেছিল। লঘার চওড়ার প্রায় ছপো কিট্ করে আর উচুতে প্রায় প্রকাশ কিট্ আলাজ। ভনলাম একজন ছোলি ইঞ্জিনিয়ার দ্রবীন দিয়ে দেখেছে যে সামনের ওই ছোলি ইঞ্জিনিয়ার দ্রবীন দিয়ে দেখেছে যে সামনের ওই ছোলি সাহাড়টা থেকে বুরুজের গোলাগুলি চালান যেতে পরির। সেই জন্য সকলে মিলে চিপিট। পাহাড়ের নমান উচুকরে গোটাছই কামান বসাবার জন্ম উঠে পড়ে সেইছে। দেখনাম সকলেই চারধারে এই সব কাজে গোলা বুরুজের ভেতরটা মায় চৌতারা সামত বরের করে করে করে চারিদিকে আটকান। ছাদটা প্রায় সাত করের করে করে করেছে করে তৈরী যে একদম আসমান ছাড়া লাভ করাছার থেকে তার উপর কিছু পড়বে এমন বোটি, করিছে করেছে দেখনাম বে স্থানের চাপরা লাগান মাটির

বেওয়াল কেটে কতক গুলা সক্ষ সক্ষ পুল পুলি তৈয়ায় হয়েছে। ঘূল পুলির গর্ত্ত বাইরের দিক থেকে ছোট দেখার বটে কিন্তু ভেতর দিকটা চওড়া দেখতে কভকটা ফনেলের মত। মস্ত মস্ত গাড়ীতে লাগান কামানের নল গুণো এই ছিন্তের মধ্যেই লখা ভাবে লাগান রয়েছে ইচ্ছা করলেই সে গুলো স্বদিকে উঠান লাগান পুরান ফিরান যায়। কামানের গাড়ীর পেছন দিকে আংটার সঙ্গে স্ব মোটা হাতল লাগান আছে তাই দিয়েই ইচ্ছা মত পেগুলিকে সড়াতে নড়াতে পারা যায়। এই আট চল্লিশ নম্বর কামান গুলো দাগা হলে কেমনতর শব্দ হয় ভা আমি শুনিনি বটে কিন্তু মাচানের উপর যে ভাবে চড়ান রয়েছে তাই দেখেই সে গুলোর যে কি ভয়ানক শক্তি তা আমি কতকটা ধারণা কর্ত্তে পেরেছিলাম।

সল্লে চারিধার দেখে বল্লে খাসা হয়েছে, খাসা তৈরী করেছে দেখেছ। সে ঠিকই বলেছিল বুরুঞ্জের ভেতর দিকটা বেশ ভাগ করেই সাফ্ করা ছিল। কোথাও একটা ঘাস পাতাও পড়ে ছিল না। আর একটা নুহন জিনিস নজরে পড়ল কাগান গুলোর পাশে পাশে খুর্ উ চু মাটি বোঝাই বস্তা ঢাপান, বুরুলাম গোলান্দা-জ্বের বাঢাবার জ্ঞই এই ব্যবহা হয়েছে। কিন্তু এসব খাটনি শুরু জলে ফেলা। এর কি আর কিছু মূল্য আছে। যখন মনে করি যে এই এক একটি কামান একবারকার লাগ্তে হলে এক একটি লুই মোহরের কম থক্তা পড়ে না তথন মাহর হয়ে মাহুর মারবার জ্ঞাব্য থেকি বর্তটা কর্তে হয় তা বুরতে পাবা যায়।

শেবে দেখি সকলেই উঠে পড়ে গড়বন্দীর কালে
লেগে গিয়েছে আপন পাক। ক্ষল কাটবার সময়ও
কর্তাদের এমন করে বাট্তে দেখি নাই। আমার আনেক
বার মনে হয়েছে যে ফ্রাসী জাতটা যুদ্ধের পেছনে না
লেগে যদি এত বৃদ্ধি এত পরিশ্রম ক্ষমি ব্যবসা কি কল
কারখানার উন্নতিতে লাগাতে পার্ভ তা হলে থকে
অর্থে সেইছাগ্যে তাদের সলে আর কোনও সেইছা

লাকের তুলনা হত না। করেক বছরের মধ্যেই ইংরাজ বাকিনদের কোধার ছাড়িয়ে চলে বেত। কিন্তু কর্পতিটা দেশ কত পরিশ্রম করে কত শর্চ বাঁচিয়ে বেই আয়বা শালা বালা রাজা, বড় বড় দাঁকো, অন্দর স্থলর বন্দর, তৈরী করলাম খাল টাল দব কাটান হয়ে গেল, বাবদা বাণিজ্যের উন্নতি হয়ে চারিধারকার ধন দৌলং দেশে এনে পড়তে লাগ্ল আর কোখা থেকে লড়াইএর ঝোঁক এনে পাড়েত লাগ্ল আর কোখা থেকে লড়াইএর ঝোঁক এনে পাড়েত লাগ্ল ভিন চার বছরের মধ্যে বড় বড় ফোঁকে কামান, গুলি বারুদ্দ, লোক যোগতেই দর্মনালটা বেশ ভাল রক্মই হয়ে গেল—যেমন ত্লিন স্থ হয়েছিল এখন তেম্নি হুর্বস্থা। কয়েকজন দেলাই মিলে হলেন দেশের কর্তা তাঁরা মামুষকে মামুষ বলে জান কয়েন না এমনি তাঁদের অহলার। মুদ্ধ হয়ে এই ভোলাভ।

( कुगमः )

श्री धक्ताम महकात।

## চয়ন -- বঙ্গের বাহিরে বাঙ্গালী।

শ্রীযুক্ত ভানেজ্রমোহন দাস "বলের বাহিরে বাছালী" নামক একখানি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ লিখিয়াছেন। বল্পমাতার যে সমুদ্য কৃতী সপ্তান ভারতবর্ষের অক্তান্ত প্রেলেশ গোরব ও প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছেন, তাঁহাদের সংশিপ্ত বিবরণী এই গ্রন্থে লিপিবন্ধ হইয়াছে। এই সমুদ্য পাঠ করিলে বাঙ্গালীর জাতীয় চরিত্রের উৎকর্ষ স্বভাই উপন্ধি হয় এবং প্রভাক বাঙ্গালীই ভাহাতে বিশিষ্ট আয়-প্রসাদ অকুভব কুরেন।

্ প্রীযুক্ত জ্ঞানেজ বাবু প্রধানতঃ আধুনিক যুগের বালালার কথাই লিবিয়াছেন। কিন্ত প্রাচীন কালেও গ বালালী ক্রীয় দেশ হইতে বহুদুরে কীর্ত্তি ও প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়া গিরাছেন, প্রাচীন শিলালিপি সমাক্ আলোদ চনা করিলে সম্বতঃ তাহার প্রমাণ আবিষ্কৃত হইছে পারে। সম্প্রতি তিনধানি শিলালিপিতে আমি এইরের বিবরণ পাঠ করিয়াছি। নিয়ে ইহার সংক্ষিপ্ত-সার লিপিবন করিলাম। যাহারা প্রাচীন লিপির আলো-চনাম নিযুক্ত আছেন, তাহারা সকলেই যদি এই বিষুরে দৃষ্টি রাখিয়া এইরেপ বিবরণগুলি প্রকাশিত করেন, ভাষা হইলে বালালীর একটি লুপ্ত প্রাচীন গৌরবের পুনক্ষার্ম সাধিত হইতে পারে।

#### ১। বিশেশর শিবাচার্য্য।

খৃষ্টীয় ত্রয়োদশ শতান্দীতে কাকতীয় বংশের রাজগণ উড়িয়ার দক্ষিণে বাঙ্গোপদাগরের উপক্লে বিশ্বভ্র রাজেগন উড়িয়ার দক্ষিণে বাঙ্গোপদাগরের উপক্লে বিশ্বভ্র রাজ্যের অণীশ্বর ছিলেন। এই বংশের গণপতি-রাজ্ম ৬২ বংশরের অণ্ট্রক কাল রাজ্য করিয়া মৃত্যুম্বে পভিত্র ইইলে, রুদ্রদেবী অবলা রুদ্রান্ধ নামা তারার করা, রুদ্রান্ধ এই পুক্রননাম ধারণ করিয়া সিংহাল্মনে আরোহণ করেন। ইঁহারই রাজ্যকালে ১২৬২ খুরীকে মাজ্যাজের গল্পর জিলার অন্তর্গত গল্পর তার্ক কৌর অধীন্ধ মাজ্যেশ্ব নামক ধানে গুছগাতে উইলের অধীন্ধ মাজ্যাপ্রম্ নামক ধানে গুছগাতে উইলেকীর বিশিব ইইতে বিহায়র শিবাচার্যের বিশ্বরণ অবস্ত্র হওয়া ব্যর্থ)

লাগতে স্পাঠ উল্লিখিত হইয়াছে যে বিধেবর শিবাচার্যা গোঁও দেশের অন্তর্গত রাড়া প্রদেশের পূর্বরাশ্ব নামক স্থানের আদিবাসী, স্বতরাং তিনি যে বাঙ্গালী ত্রিসায়ে কোন সন্দেহ নাই। ইনি ধর্মশন্ত্ নামক শৈব জ্বের নিকট দীকা লাভ করিয়া বেদাদি শাল্প অধ্যয়ন করেন। কাকতীয় রাজ, মালব-রাজ, কলচুরি-রাজ

(১) মূল লিপিথানি এখনও প্রকাশেত হয় নাই।
১৯১৫—১৯১৬ সালের দক্ষিণ বিভাগের আকিওলজিক্যাল
স্বলারিণ্টেভেণ্টের বার্ষিক রিপোর্ট (৪৪ পুঃ) ও ১৯১৭
গালের গভর্নান্ট এশিগ্রাফিটের রিপোর্টে (১২২ শুঃ)
ইহার মর্ম প্রকাশিক ইইয়াছে।

हु होन-दोक धारा. अकांक डाकनन है होत महानिया বৈশ্ব কাকতীয়-রাজ গণপতি নিজেকে ইহার পুত্র क्ति कतिशाहिन। ভাহার রাজহকালে बार्बाहरू वित्नय क्रमठा ও প্রতিপত্তি ছিল এবং ক্রিল দেশের বহু শৈবাচার্য ও কবি কাকতীয়-রাজ কুৰি বিশেষ্ট্রভাবে পুরস্কত হইয়াছিলেন। বিপিধানিতে ইংবাছে যে আলম্বিত কর্ণভূষণ, কণ্ঠহার ও হেম-क्रीक बहाबादी, প্রতিভা-দীপ্ত মুখ্ম ওল বিষেধর-শভু ক্ষুণ্ডি রাশার প্রাণাদে বিভামগুপে উপবিষ্ট क्टूडन, ज्यन जिनि এकि नित्य प्रमीय वस विवा क्षेत्रहरूका। ১১৮० मकात्म , ১২৬১ थृष्टोरम ), त्रानी कार्यको चार्छा विषयंत्र-मञ्जूक कथा नमीत पक्तिन প্রার্থ সম্পত্ন ও অক্সাঞ্চ কয়েকবানি গ্রাম ও কিঞ্চিং क्षान করেন। মলর নামক এামে আচার্য্য 🚒 अका निवसनित, मठे ७ व्यवग्र द्वालिङ द्य । ক্লিক বানে বহু বান্ধণ পরিবার প্রতিষ্ঠাপিত করিয়া कारक "वित्तवंद (शानका" नाम श्रमान करतन। काक-ক্ষু সাণীর নিকট হইতে তিনি যে ভূমি প্রাপ্ত হইয়া-ক্রিকার, তাহার কিয়দংশ ষাটটি জাবিড় ত্রাহ্মণ পরি-আন্তঃক্র থংখা বিভরণ করেন। অবশিষ্ট সমান তিন कान कित्रा, अध्य जाग निव मिन्मरात्र ताग्र निक्षां हार्य. ক্ষিত্রীর ভাগ তম্ব লৈবগণের মঠ ও ছাত্রগণের ভরণপোষ-হুৰ নিমিত এবং তৃতীয় ভাগ একটা মাত্মন্দির, একটি क्षिक्य हिकिथ्नावत ७ এकी सत्तन्त्रत वात वश्न अविवास अन् निषिष्ठे कतिया यान। अक्, यक् ७ नाम বুৰ প্তাইবার নিমিত তিন জন এবং ভায়, সাহিতা ও আপুৰের মিনিত্ত পাঁচজন অধাপক ছিলেন। এতহা-ক্ষাক্ত একজন সুদক চিকিৎসক ও একজন হিসাব निष्क समूक रहेशाहिन। हेशापत अत्जात्कत कृहे नुष्टि छूमि बहाक हिन। मन्तिरह क्लंबन ৰ আটখন বাদাকর ছিল।ুনঠ ও অরণত্রে এক-अस् कामीत दल्लीय नाइक, अनेवनन नाविका, वंद्रवन

मर्कि, पुरेकम शाहक बाला, हातिकम पुरा, व्यक्त धरे वीवण्यन ন্দ্ৰমু ভূতা ও দশকৰ বীরতন্ত ছিল। গ্রামের পাহারায় নিযুক্ত থাকিত এবং গ্রামের রক্ষার निमिल कावश्रक रहेता छेत्रत. बिस्ता ও मछक कर्डन করিত। এতদাতীত বিশবন বীরমূটি ভ্তা ছিল। ইহারা শিবপন্থী, এবং স্বর্ণকার, তাত্রকার, কর্মকার, রাজমিস্ত্রী, কুছকার, স্থপতি, হুত্রধর, নাপিত ও শিলীর কাৰ্যা কবিত। উল্লিখিত একাশী অন প্ৰত্যেকে এক পুট্টি করিয়া জমি পাইত। এতবাতীত বিষেশ্ব আচার্য্য খীয় জন্মভূষি পূৰ্বগ্ৰাম নিবাদী ৩০ জন প্ৰীবংদ গোত্ৰ ও সামবেদী ব্রাহ্মণকে তৎপ্রতিষ্ঠিত গ্রামের আয়ব্যম-প্রীক্ষক নিযুক্ত করিয়াছিলেন এবং ই হারা প্রত্যেকেই এক পুটি #ান খান করিয়াছিলেন। অল্পতে যাহাতে वाका छ्लाम निर्मिष्य मकलाई मकन আহারাদি পাইতে পারে তাহার ব্যবস্থা ছিল। মন্দির, व्यवभज, महे 9 जाग- এই भग्नदात कार्यानि भर्यादकन করিবাব জনা একশত নিষ্ক বেতনে সর্বোপরি একজন व्यक्षक विवृक्त वर्षेशिक्षित्त । এই व्यक्षक उष्टित कार्या অব্রেলা করিলে, অথবা অন্য কোনরূপ কুব্যবহার कतित्व, भानीम देनव द्विमध्येनाम अकत्यार्थ छै।बादक পদচাত করিয়া অঞ্অধাক নিযুক্ত করিতে পারিবেদ अहेत्र निर्मित्र किन ।

উল্লেখিত মহদক্ষান ব্যতীত বিশেষর আচার্য্য আরও नामा द्वारन भठ, भिर्यात्र ଓ अत्रमुख श्रेष्ठ्ि श्रीठिहा करियाहित्तन अवर छৎनगुष्यत वाय निर्सादार सनि নামাত্রসারে पान कतिप्राहित्वन। निष्यंत्र "বিশেষরনগর" নামক একটি নগর ও "বিশেষর**লিক**" নামক একটি শিবলিক প্রতিষ্ঠা করেন।

প্রায় সাত শত বৎসর পূর্বের বাঙ্গালার এই কর্মবীর, অুদূর দাকিণাতো গৌরবময় রাজগুরু পদে অভিবিক্ পাকিয়া, এই দক্লুধর্মাহুষ্ঠান সম্পাদন কর্তঃ বাদালীর यन उक्तन कविता निर्दार्कन ।

#### २। जेमान मित्।

थाहीन शकान (मामत चलर्गत, युक्त शामक वहा-उन नामक शांत थाथ वक्षानि निवानिभिष्ठ(२) **জার একজন বাঙ্গালী শৈব সাধকের পরিচয় পা**ওয়া খুষ্টীয় ঘাদশ ও ত্রয়োদশ শতাকীতে গঞাল দেশে রাষ্ট্রকৃট বংশীয় রাজগণ রাজ্য করিতেন। ঈশান শিব নামক গোডদেশীয় একজন শৈব সাধক এই বংশের দশ্ম রাজা অমুতপালের গুরু এবং একটি মঠের অন্যক্ষ ছিলেন। তিনি বৎসভার্গর গোত্রীয় এবং ভার্গর, চাবন আপুবান, উর্ব ও জনদ্ধি এই পঞ্চ প্রবর্ত বাজা हिल्ला मत्रम कन्नीमख्य अभाव मःभाव जान করিয়া তিনি পরমাত্মার ধ্যানে নিযুক্ত হন। কালক্রথে ত্রিনি রাজগুরু ও মঠাধাক পদে অভিধিক্ত হইয়া, একটি **শिरम्मि**त निर्माण करत्रन। মন্দিরের বর্ণনাচ্চলে উক্ত হইয়াছে যে, মহাদেব কৈলাদগমনে বিমুধ হইয়া ঐ মন্দিরেই বসতি করিতে এবং হুর্যাদেব আকাশ্যার্গ পরিভ্যণে **অ**বিরত ক্লান্ত মুহুর্ত্তের জন্ম ইহার উচ্চচুড়ায় বিশ্রাম লাভ করিতে পারিতেন।

বিশেষর আচার্য্য ও ঈশান শিবের জীবনী আলোচনা করিলে ইহা সহজেই অত্মিত হয় যে, ত্রেয়াদশ শতাকীতে বাঙ্গালায় শৈব ধধ্যের বিশেষ প্রতিপাও ছিল এবং শৈব সম্প্রদায়ভূক্ত বাঙ্গালী ভারতবর্ষের বিভিন্ন স্থানে প্রতিষ্ঠা লাভ করিতেন।

#### **ा श**नाध्या

আথা জিলার অন্তর্গত বটেখর নামক স্থানে প্রাপ্ত এবং চান্দেলরাজ পরমন্দিদেবের রাজত্বগালে ১২৫২ সংবত্তে (১১৯৫ থৃঃ অঃ) উৎকীর্ণ একথানি শিলা-লিপির (৩) নিম্নলিধিত ক্ষেক্টা লোকে আগ্রা

প্রদেশস্থিত একটি বাঙ্গালী পরিবারের পরিচয় পাঁওর

"গৌড়াষরৈক তিলকস্থ গদাধরাখ্যো লক্ষ্মীবরস্থ তনয়ঃ কবিচক্রবর্ত্তী। বিভাবতাং স পরম: পরমন্দিদেব সংধানবিগ্রাহ মহাসচিবো বস্তৃতী তস্থায়জে। দেবধরঃ কবীক্তঃ প্রশন্তিমেতামত্শাঞ্চকার।

क्रूरगाचागकनिल्लिल्थ।

এই শ্লোকদর হইতে জানতে পারা বার বে, গৌড়া দেশীয় লক্ষীধরের গদাধর নামক এক পুত্র ছিল। ইবি কবি ও বিদান বলিয়া প্রাতিলাভ করিয়াছিলেন এবং চান্দেল্লরাজ পরমন্দিদেবের সাদ্ধি-বিগ্রাহিক এই নামবের সন্মানিত ও ক্ষমতাযুক্ত প্রধান মন্ত্রীর পদ প্রাপ্ত হইয়া ছিলেন। ইঁহার পুত্র দেবধরও একজন উৎকৃষ্ট কবি ছিলেন এবং পুর্বোল্লিখিত লিপিখানি তাহারই বচনা।

বে সময় বালালা দেশ উপযুক্ত রাজনীতি জ্ঞান অভাবে ক্রমণ: ধ্বংসের পথে অগ্রসর হইয়া যবনগণের পদানত হইতেছিল, ঠিক সেই সময়েই এক জন বালালী অনুর আগ্রা এদেশে সান্ধিবিগ্রাহিক নামক উচ্চ অমাত্য-পদে অভিষিক্ত ছিলেন।

(মানদী ও মর্মবাণী) **শ্রীরনেশচন্দ্র মজুমণার**।

#### শরতে ৷

শরত রাতে

কোন অভিবি

এলগো মোর থারে ?

পরাণ আমার

**कुँ**जन रन

তারি বীণার তারে!

निख्नो फू(न

পরশ তারি,

नोन चाकार्य चांवि

<sup>(</sup>२) अशिवाकिया देखिका, २म प्रत्या, ७० शुः।

<sup>(</sup>৩) এপিগ্রাফিয়া ইণ্ডিকা, ১ম সংখ্যা ২১১ পৃ:।

কাৰের বৰে, চাৰর লোলে,
বন্দমা পার পাবী!
বিনির ফোটার অঞ্চ কি তার!
কমল দলে প্রাণ!
বাদের ক্ষেতে শিউরে উঠে
টেউ লোলামো পাণ!
বালেরে বোর হিয়ার বালে
পেই অতিথির বানী,
বারে যে তার পায়ের ধ্বনি,
বাইরে যে তার হাসি!

### ক্রম বিকাশ।

শতীর প্রার্থ অনেকেরই মনে উদর হয় যে বিভিন্ন
শতীর প্রাণী এবং বৃক্ষ গুরু কিরপে উত্তুত হইল। ভির
শতীর প্রাণী এবং বৃক্ষ গুরু কিরপে উত্তুত হইল। ভির
শতীর প্রাণি বিভাগ কি জন্ম হইতেই হইরাছে কিয়া এক
শেষী হান কাল ও অবস্থার পরিবর্তনে বিভিন্ন আকার
শার্ক করিরাছে। ইহা বস্তুতঃই একটী জটিল প্রশ্ন এবং
শির্ক করিরাছে। ইহা বস্তুতঃই একটী জটিল প্রশ্ন এবং
শির্ক করিরাছে। ইহা বস্তুতঃই একটী জটিল প্রশ্ন এবং
শির্ক করিরাছেন যে সামাত্র প্রকৃতিন। এরিইটেল (Aristotle)
শির্কিরাছেন যে সামাত্র গুরু হইতে উচ্চ শ্রেণীর জীবের
শ্রুমে এরপ একটা সম্ভ দেখিতে পাওরা যার বাহাতে
শীর্কারের মূল উপাদান এক বলিরা মনে হয়।

বিশ্বতি (Bonnet) এই মত পোষণ করেন।

বিশেষ্টের প্রাকৃতিক চিতা" নামক পুত্তকে (Contemblation of Nature) দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছেন

কিরুপে নিয় শ্রেণীর প্রাণী উচ্চ শ্রেণীতে উপনীত হওয়া

কিরুপে নিয় শ্রেণীর প্রাণী উচ্চ শ্রেণীতে উপনীত হওয়া

কিরুপে নিয় শ্রেণীর প্রাণী উচ্চ শ্রেণীতে উপনীত হওয়া

কিরুপে নিয় শ্রেণীর প্রাণী কিরুপি নিয় বিশ্বতি

কিরুপি নিয় শ্রেণীয় কীবের উদ্বর ইইয়াছে। দেমার্ক

বস্ততঃপদে উত্তিদলগৎ এবং ক্ষুদ্র জীব স্থক্ষেই জানোক্রা করিয়াছেন। উত্তিদলগতে ইহা দেখা বার বে অনেক উত্তিদ বৃলতঃ এক উত্তিদ হইতে উৎপদ্ন হইরা বিভিন্ন আকার বারণ করিয়াছে। চেটাবারা উত্তিদের আকার ফুল ফল ইত্যাদির পরিবর্ত্তন করা বায়।

कन राणि(तत (John Hunter) नमन्न इहेट्ड हैहा व्यानका मुष्टि व्याकर्षण कतिशास्त्र (व कीवक्रशास्त्र विভिन्न (अगीत श्रामीत श्रामीत श्रामी मुन्छः अक्ष्रे व्यानोत । वाहरतत भाषा, त्वत्वत र्ठक, करमत भा, মাসুবের হাত এবং মংস্যের ডানার অস্থি অনেকটা এক ছাচের। কেবল উহারা বিভিন্ন কার্য্য সম্পাদন করে विनया छेशारमञ्ज्ञ थाकात विভिन्न हरेगाहि, आवात काम কোন প্রাণীর এরপ অঙ্গও দেখা যার যাহা ভাছাদের কোন কাৰেই আদে না কেবল উহার অকুরপ শ্রেণীর याता थे गर अन कार्याकती (प्रशासाय । (य जालत कार्या मांहे जाहा बाकियात जादनया कि ? चनास खननाती অত্তর মত ভিমি মংসোরও দল্প দেখা যায় কিন্ত উহা চোয়ালের অস্থিতে সবদ্ধ নহে। সেরুণ বৃহৎ বোরা সর্পের (Boa constrictor) চর্মাচ্ছাদিত (পিছনের পা বৰ্তমান আছে কিন্তু তাহা কথন বৃদ্ধি পায় না ৷ বৃদ্ধি ভগবান এ সকল প্রাণীকে স্বাধীন ও স্বতন্ত্র তাবে স্ক্রন করিয়া থাকেন ভাহা হইলে ঐ স্কল অকর্মণ্য অঞ্চ पि अप्रांत श्रीयां के १ (कान दिलान वर्ष्ण (पर्व) याद्र পিতা পিতামহের অঙ্গে কোন তিল কিছা বিৰেষ কোন हिन्द बाकित्न मुखान मुखालिश्व जाहा भाहेगा बादका मिहेक्स विभि ७ (वादा नर्भ (व काहारमद सामि श्रेक्स द कार्याकती व्यक्त शतिवर्ष्ट वर्खमात्म व्यक्तिक शत ধারণ করিয়া জন্মগ্রহণ করে নাই তাহা কে বলিতে भारत ?

ভন বেয়ার (Von Baeyr) আর একট্ট বিশ্বের বিবয়ের প্রতি সকলের মৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছেন, ক্র্যিক ক্লুক্ত ক্রাবস্থাতে উচ্চ শ্রেণীর প্রাণী ও সরীস্থাপের ব্যুক্ত শোন বৈৰ্বা লখিত হয় ন। বদি আণী ভিন্ন ভিন্ন শাখারেই হ'ও হইয়া থাকে তাহা হইলে ক্রণাবস্থাতে ইকুল, মংস্য কিবা পাণীতে কোন বৈৰ্ম্য নাই কেন ?

🦟 এ ভ গেল জীবিত প্রাণী সম্বন্ধে, এখন পুরাতন যুগের অন্তরীভূত অন্থিয়ে আমরা কি দেখিতে পাই তাহারই আলোচনা করিব। এইস্তলে ইহাও বলিয়া রাখা প্রােশন বে ভিন্ন ভিন্ন দেশে ভিন্ন ভিন্ন জীবের অবস্থান দৈখিতে পাওয়া যায়। কেবলমাত্র অষ্ট্রেলিয়াতে क्लिक अवर वनि विनिष्ठ कीव मिविष्ठ शाख्या यात्र। নেইরপ কেবল মাত্র আমেরিকাতে স্লব পাওয়া যায়। শাবার শট্টেলিয়াতে যে সকল প্রস্তরময় করাল পাওরা बांग्र जाहाताल बनिविधि कीव दिन किस अबन जाहारनत वश्य विराम बहेग्राष्ट्र । (महेक्रम हेऊ (तार्भरण ध শক্ৰ ক্ৰাল পাওয়া যায় গেই জাতীয় জীব এখন বৰ্তমান मारे। এখন প্রাণীতত্বিদ্যুগ জিজ্ঞাসা করেন যে वर्डमात्न चार्डेनिया, चारमविका किया हेडेरवार्श ख সকল প্রাণী বর্তমান আছে তাহারা ঐ পুরাকালের धाखती खूज कका नाविषष्ठ की वशावत वश्मधत कि ना ? কিছ বর্তমানে ও অতীতে এই আকার বৈষ্মা কিরপে देश ! त्रहेक्रभ वर्खमात्न (य मकन भक्त, मुक्त किया নেকডা বাঘ দেখিতে পাওয়া যায় তাহারা প্রস্তরময় কঁছালে পরিণত গরু, শুকর কিছ। নেকড়ার বংশধর कि ना ?

প্রাণীতথ বিদ্যার যতই আলোচনা করা যার ততই ক্রতীয়মান হয় যে অতীত কাল হইতে বর্ত্তমান কালের জীবগণের আকার বৈবম্যের সলে সঙ্গে ক্রমোরতি হইতেছে। অতি প্রাচীন ভারে যে সকল প্রভাগীভূত করাল আছে তাহাতে শমুক, মংস্য ইত্যাদি জলচর তির বানর কিবা কোনরপ চতুপাদের চিক্ত পাওয়া বার না। আবার প্র্রোলিখিত মংস্য করালের মংস্যও বর্ত্তমানে দেখা যার না। ইইার কিঞ্চিং উপরেম্ন ভারে শ্রিটিব প্রভার মংস্য করাল পাওয়া যার। আরও

কি কিং উপরে পদবিশিষ্ট জীবের পদচিক নের্ছা গিরাছে এবং ভেক জাতীর একরূপ প্রাণীর কড়ালর পাওয়া গিরাছে।

ক্রমান্তর মৎস্তের আবিপত্য ক্রমে ক্রিয়া পিয়া
কুতীর ও পর্প জাতীয় প্রাণীর আবির্ভাব হয়। ইহার
পরে বাছরের মত পক্রবিশিষ্ট সরীস্থেপর উত্তর হয়।
ইহাদের এক ডানা হইতে অপর ডানা পর্যান্ত বিভার
প্রায় ১৬ ফিট ছিল। ইহারা নির্ধিবাদে বিচরণ করিছার
ক্রমান লাই, কারণ তথন ডাহাদিগকে হনন করিবার
ক্রেছ ছিল না। ইহার কিছু উপরের গুরে ছুই শ্রেণীর
ক্রমান পাওয়া গিয়াছে। এক শ্রেণীর প্রাণী প্রায় কর্তরের
সমান; উহার অর্ক্রেক সরীস্থপ ও অর্ক্রেক পার্থীর আরুক্রি
এবং অপর জাতীয় প্রাণী ক্রমশং ক্রম্ম হইতে আরুক্র
করিল এবং চতুসাদীর প্রভাব বাড়িতে লাগিল।

প্রায় ঐ সকল ভরে কৃতিয়ার (Cuvier) পারিশের নিকটে অতিকায় হত্তী জাতীয় প্রাণীর ক্**ডাল প্রাঞ্জ** হইয়াছেন। ইহার সমসাময়িক ভরে প্রথম বানর জাতীয় প্রাণী পাওয়া যায়।

ভ্গতে কন্ধাল প্রাপ্তির ইহাই মোটামোটি বংশি।
অতি প্রাচীনকালে নিয়প্রেণীর এবং ক্রমেই উচ্চপ্রেশীর
প্রাণীর কন্ধাল ভ্রুবের পরিলন্ধিত হইরা থাকে। ইহাও
লক্ষ্য করা গিরাছে যে এক ভরের প্রাণীসমূহ প্রান্ধ এক
আদর্শের এবং উহা হইতে নব্য ভরের প্রাণীর আকৃতি
অক্সরপ। যে সকল ভরে কন্ধাল প্রাপ্ত হওরা গিরাছে
তাহার মধ্যবর্তী ভরেও প্রাণী বিভ্যমান ছিল ভাহার
সন্দেহ নাই। কালেই মধ্যবর্তী ভরের প্রাণীর সম্বন্ধ ছির করা
চুক্র। তথাপি আমেরিকার সরীন্থপ-পাথীর (Reptific birds) কন্ধাল পাওয়া গিরাছে। উহাদের অতি
পাথীর মত কিন্তু চোরাল এবং দক্ত স্রীন্থপের মত।
খামেরিকার প্রভর ভূপে এরপ প্রাণীও দেখা গিরাছে
বে ক্র লাভীর ক্রমে খুর ছিবভিত এবং উহার উপর্ক্ত

ক্ষাৰ বিশ্বভিত পুর বেদ একীভূত হইয়া আৰাদের ক্ষান অৰু পুৰের আকার ধারণ করিতেছে এরণ ক্ষান্ত বেধা গিয়াছে।

শুরু করু পরিবর্তন কেন হইয়া থাকে ইহার মীমাংসা

শক্ত । প্রথিত নামা প্রাণীতত্ববিদ্ ডারুইন

ইরুদ্ধান প্রবং ওয়ালেন (Wallace) ইহার উত্তর

রক্তে চেটা করিয়াছেন । উনবিংশ শতাব্দিতে পণ্ডিত

শক্তিন তাহার প্রাকৃতিক নির্বাচনবাদ প্রচার করেন ।

১৮০১ সনে ডাজ্ডার ডারুইন তাঁহার ২২ বৎসর ব্য়সে

বিসিন্ধ নামক জাহাজে দক্ষিণ আমেরিকার তীর দেশ

শ্রীরেশ্বন করিয়া পৃথিবী প্রদক্ষিণ করেন । সে সময়ে

শ্রীরেশ্বন করিয়া প্রতিন জীবের বিভিন্ন শ্রেণীর উৎপত্তি

শ্রীরেশ্বন বাসে তিনি জীবের বিভিন্ন শ্রেণীর উৎপত্তি

শ্রীরেশ্বন বাসে তিনি জীবের বিভিন্ন প্রেণীর উৎপত্তি

শ্রীরেশ্বন বাসে তিনি জীবের বিভিন্ন প্রেণীর প্রস্থ প্রনয়ন

শ্রীরেশ ।

ক্লাকৃতিক নিৰ্বাচন স্বংদ্ধে আমরা একটু চিত্ত। জিলিবেই দেখিতে পারি যে জীবগণ এরপ ভাবে বর্দ্ধিত ক্রাবে বৃদি উহাদের ধ্বংস না হইয়া কেবল বৃদ্ধিই হইত **ভাষা হইলে এক জাতীয় জীবেরই পৃথিবীতে স্থান** मा। बान्ताजात्वत ठ कथाई नाई। উनाइद्रश क्षि एपिए रगरन अक्साज मरुष्ट यपि निर्दिशास विकित्य विक जादा बहेरल नहीं नागांत्र मध्यात हान বাছলম হওয়া অসম্ভব হইত। কাজেই নানা কারণে প্ৰকৃষ্ণতে বহু মৎস্য মৃত্যুমূপে পতিত হইয়া অবশিষ্ট আহা প্রাক্তে ভাষারাই বংশ রুদ্ধি করিয়া থাকে। বিভারত। চুটটি জীবিত প্রাণী কথনও একরণ হয় না। ক্ষা প্রত্যেক প্রাণীই ভারাদের পিতা মাতার দোব ৰা ও ৰভাব অলাধিক পাইয়া থাকে। এখন মনে क्त इरेने भारीत नावक बन्नियारह ; উदारमव अकनि ক্রিবং লগরটা ছুর্মল। সবল লাবক উড়িয়া সর্ক্তর বিদ্বাস্থিত বাগিল কিছ মুর্বলটা উড়িতে অকম।

কিন্ত ত্র্বলের পালকের রং পালের সভ বঙরাতে উহা কোনপ্রকারে পেচক প্রভৃতি শক্তর চক্ষের অন্তরালে থাকিয়া জীবন নির্কাহ করিতে লাগিল। সময়ে ত্র্বল ও সবল শাবক্ষয়ের তুই শাখা হইতে তুই শ্রেণীর পাশীর উৎপত্তি হইতে লাগিল। উহালের এক শাখা থেচর এবং অপর শাখা ভূচর। সলে ২ উভয়ের প্রকৃতি ও আকৃতিও বৈষম্য হইতে আরম্ভ হইল। কবুতর ইহার আর একটী উদাহরণ। এক পার্কত্য কবুতর হইতে বর্তমানে এও বিভিন্ন জাতীয় কবৃতরের স্টি হইয়াছে।

জীব করের বৃদ্ধি সহকে ওয়ালেন্ (Mr. Wallace)
বলিয়াছেন যদি এক জোড়া পাখীতে বৎসর হুই জোড়া
বাচ্চা দেয় হুবে নির্বিবাদে বৃদ্ধি পাইতে পারিলে ১৫
বৎসরে ২৫ কোটি পাখীর উৎপত্তি হুইবে। এবং
হাক্ন্লি (Mr. Hunby) বলিয়াছেন যে বৃক্ষে বৎসরে
৫০টা বীজ উৎপন্ন হয় যদি উহা নির্বিবাদে বৃদ্ধি পার্ম
ভাহা হুইলে ৯ বৎসরে পৃথিবীতে অপর বৃক্ষের স্থান
হওয়া গ্রহা।

এই সকল কারণেই উদ্ভিদ ও প্রাণীজগতে আত্মরশার্থে
নিজেদের মধ্যে ভীষণ সংগ্রাম উপস্থিত হয়। সেই
সংগ্রামে বে জয়লাভ করে সে অপরকে ধ্বংস করিয়া
নিজ প্রাধান্ত স্থাপন করে। এই জীবন সংগ্রামে একদল
জয়ী হইয়া ক্রমোয়তি লাভ করে এবং বিজেতাগণের
অপকর্যতার দকণ ক্রমে আফতি ও প্রকৃতি বৈষম্ম হইয়া
থাকে। তখন মূলতঃ এক বংশলাত জীব হুই শাখার
বিভক্ত হইয়া হুই শ্রেণীতে পরিণত হয়। ইহাকেই
ক্রমবিকাশ বা অভিব্যক্তিবাদ বলা হইয়া থাকে। এই
প্রণালী লারাই প্রটম্লোকেম ( Protoplzem ) হইতে
উদ্ভিদ, উদ্ভিদ হইতে নিয় শ্রেণীর জীব এবং ঐ জীব
উর্মিত লাভ করিয়া উচ্চ শ্রেণীতে পরিণত হয়। বে জাই
প্রথিবীর সর্কা নিয় স্তরে যে সকল জীব পাওয়া হায়
ভল্পের্ক তাহা হুইতে উর্ম্নত জাবের কলাল দুই হয় একং

ল্মে তাৰা হইতেও উর্গ্নিত জীবের পঞ্চর দৃষ্ট হইয়া মানেন।

শর্তবানে ভাজার জগদীশচন্ত্র উদ্ভিদের প্রাণের
শক্তির প্রমাণ করিরাছেন। সময়ে উদ্ভিদ ও প্রাণীর
মধ্যে এরপ একটা নিকট সমন্ধ বাহির হইবে যাহা দ্বারা
ক্রেম-বিকাশবাদ আরও স্পাইরাপে প্রমানিত হইবে।
প্রাণীর প্রথম উদ্ভব হইতে বর্তমানকাল পর্যান্ত কণ্ড
লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ বংসর অতীত হইয়াছে ভাহা কে বলিতে
সারে ? কাজেই ক্রমবিকাশের শৃত্রাল কতবার ছিল্ল
হইরাছে ভাহার অবধি নাই। সেই জন্য বর্তমানে
মৃত্রিও অন্থমানের উপরে অনেক নির্ভর করিতে হয়।

ত্রীহরিচরণ গুপ্ত।

### শিক্ষারহস্য।

শিক্ষা মানব জাতির সর্বপ্রকার উন্নতির মূল।
কর্মক্ষেত্রে, বাণিজ্য ক্ষেত্রে, রণক্ষেত্রে কি ধর্মক্ষেত্রে
সর্বার শিক্ষাই মানবকে সফলতার কনক কিরীটে মণ্ডিত
করে। জাতিভেদে ধর্মের প্রকার ভেদের ভার দেশ,
কাল ও সমাজ ভেদে শিক্ষাপদ্ধতি বতম্ব ইইলেও উহার
প্রয়োজনীয়তা সর্বার সমভাবে অস্কুত হয়। শিক্ষা
শক্ষে নিয়মিত অভ্যাস ব্রার, বিভাভ্যাসের ভার
কৃতকণ্ডলি নির্দিষ্ট বিশিষ্ট নিয়মের অধীন থাকিয়া
বে কোন বিষয়ের অভ্যাসকে শিক্ষা বলা যাইতে
পারে। এই ভাবে যোগাভ্যাস বা যোগ শিকা,
বৃদ্ধাভ্যাস বা যুদ্ধ শিক্ষা প্রভৃতি কথা চির, প্রচলিত
ক্রিয়াছে। জীবনের সকল জংশেই সময় ও স্থ্যোগমত
ক্রিছিত যে কোন বিভাগের প্রয়োজনীয় বিবয়

नब्दरंक आंब्रेड कदिवाद প্রকৃত চেই! বিশ্ব नामाखत । পণ্ডिতবর এমদ म (Emerson) व्राम्य "Education should be as broad as man व्यर्था९, भागव कीवम यउछ। अभक्ष প্রসার হওয়ার দরকার। স্মতরাং বাল্যে বিভারভের मिन क्टेंटि अविया मःक्षातात्भत भूक सूर्व भेदान নিয়মিত কাল। এজন্ম লাস্ত্রে ছেখাখার विख्याद । প্রাজ্যে বিদ্যামৰ্থ वश्य श्रित नमालाहक देशत छेलत अक्षे हैका के निका विमाहिन; "बाजा शामात्र तुष्ट्य" तुष् वर्शन बाज বিষ্ণা শিক্ষা উপহাসের কারণ। উপহাসের ভাষাটা বোধহয় "नড় তে নারে বাদুক বাড়ে"। য়াহ'ক নবম বা प्रमाय प्रमाय श्राविका मिकाही आगादमत (मर्म **डेश्हा**नी হইলেও শান্তশিক্ষা বা যে কোন বিদ্যাভ্যাস চিত্ৰ বর্ণীর । প্রাচীন কালের পাঠ্য তালিকার ( Syllabus ) প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে স্থুলতঃ এ কয়টা বিষয় ভৎকারে পাঠা রূপে আমাদের দৃষ্টিগোচর হয়। आशेक्कि ( Logic and Metaphysics ), अशे (the triple Veda ), বার্ডা ( Practical arts such agriculture; commerce, medicine etc.) দুখুণীতি ( the science of Government )। कि कि পরবর্ত্তী কালে এই তালিকা একটু ৰাড়াইয়া চারিটীর স্থলে থক, যকু, সাম, অবর্ধ এই ৪ বেদ, शिक्क (স্বরের উচ্চারণ পদ্ধতি), কর (অমুষ্ঠানের নিয়শ) ব্যাকরণ (শব্দের প্রকৃতি প্রতায় বিভাগ নির্দেশ্ক 🔀 निक्क ( देविषिक अधिवान ), इन्यः गांव अ (क्यांकिय **এই ७ इत्र (तमात्र, भूर्स ता कर्य भी गाश्मा, उत्तर का** तम बीमाश्ता अहे र पर्नन, स्थान ( वृति ) ७ शुद्धान **এই इटि** भिनिछ हहेगा ठ्रूफंग्डी श्हेगाट । स्मर्नेक श्राकात्रि ७ नगात्म श्रामन गर्ड चात्र्स्म ( किकिना भाषा ), वकूटर्सन ( भाविताता ), शास्त्रस्तन ( अवस्थि विमा। ), वर्षभाञ ও চতুঃवृष्टि कनाविमान स्पीर्थ कर्पा

ক্ষালিকার পুষ্টি বর্মন করিয়াছে। একণে কলির শত ৰ প্ৰিনিত প্রমায় বিশিষ্ট অম্নচিতা কর্জারিত একজন ক্ষিত্ৰ বদি অৱতঃ উলিবিত বিষয় সমূহের স্থুল সুল তথ জিলিও ব্যাহর অভাগে ও আয়ত করিতে হয়, তাঁহাইইলে ক্রিক্স সরিত্রম, স্বাস্থ্য, বৃদ্ধি, অধ্যবসায়, ও প্রতিভার ক্ষার ভাষা বুদ্ধিনান্মাত্রেই সহতে বুঝিয়া থাকেন। क्षिकारन क्षांक कान्वात गठ (परन (परन, नगरत नगरत बंदकारी वर्ष সাহায্যে অথবা সাধারণের অর্থে विद्यानिक जक विद्यानरात वाहना ना बाकांत्र हाज প্রাক্ত অকুণুৱে থাকিয়া বিদ্যাভ্যাস করিতে হইত। ক্রিকা বুলামী তপবী গুরু নামে মাত্র উহাদের বা দাতা হুইলেও কার্য্যতঃ ছাত্রগণই অরণ্য সুৰভ করে, मा दूरा ७ भाक निवादानि चाहत्र कतिहा निष्करमत्र विकाशानक वर्शित देवनिक आहारगात मध्यान বিত্র তথে। নিরত শাস্ত্রচিম্ভা ব্যাপ্ত ছাত্র বংসল বিশ্বৰ বাসনা হীন নিৰ্মাণ চিত্তে প্ৰতিভাত তত্ত্বনিয়ম ক্ষিত্র প্রবিশ্বী ভিতেলিয় বিনয়ী ছাত্র সংঘকে উপদেশ ৰিয়া প্রমানশে কালাতিপাত করিতেন। দৈনন্দিন বিশ্বনীর তব্য সম্ভার সংগ্রহের অস্ত দৈহিক পরিশ্রম বিভানিত্মিত বাায়াম চর্চার ফলভাগী ও স্বাবলম্বী ত্রিকার অপর দিকে মহবি আচার্যারকও তেমনি अक्षिरमञ्ज बाहार्यानि बादत्र हिष्टारियुक शनरत्र नानत्म ক্রিবার, শান্ত চিন্তার, ও অধ্যাপনায় ব্যাপ্ত থাকিয়া ক্ষাৰ ভাৰ ও ধ্যান ধারণার উত্তম স্থোগ পাইতেন। ক্রিয়ার বিভার্বিদের পঞ্চে বিভা শিক্ষার পথ এভাদুল ক্রাক্রার কথা আমরা ভারতেত্র দেশেও ভূমিতে প্রান্থাতীন গ্রীপের বিখ্যাত দার্শনিক পিথাগোরাদের ক্রিক উপদেশ।বাঁকে সপ্ত:ছকাল মৃত্তিকার নিয়ে অন্ধকার क्ष अवस्य बाकिएछ इरेछ। এरे दृःव वहन अवरदारबद्व ্ৰ শিশাৰী তাহার নিকট বিভা লাভের আকাক্ষা করিভেন, তিমিই কেবল তাঁহার শিকাৰ লাভের ক্ষিয়ে ভাৰন হইতেন। জান বা বিভা অমর্থ লাভের

নিদান। উহা লাভ করিতে হইলে ইঞ্ছাবৃত্যু দেব ব্ৰভেন্ন ভাষ কঠোর ব্ৰহ্মৰ্য্য ধারণ করিতে হয়।

সংসারের কোলাইল ইইতে দূরে অবহিত শাস্ত্র তথাবনের ছারা নিগ্ধ নিজ্ত পর্ণ নিকেতনে ক্লতনিবাস বক্ষলবাস ক্লপতি অবির পাদমূলে উপবিষ্ট আক্ষায় ব্রহ্মলারী বদচারী বিভার্থিরনের বিভাত্যাস কিষ্ণুপর ব্রহ্মলার ও মনোমদ ছিল, তাহা অধুনা বিলাস সহচয়ী বিশ্ববিভালয়ী শিক্ষার প্রসাদপুষ্ট তথা কথিত শিক্ষিতগণের কর্মনার সীমা বহিত্তি মনে হয় । এইরূপ কঠোর সংযম, গুরুতর পরিপ্রম, পরিমিত তেল গ্রহণ, আদর্শ গুরু শিশ্বের মধ্ময় সংস্কের মধ্যে থাকিয়াও ছাত্র শিক্ষা সম্পর্কে গুরুর নিকট কতথানি সাহায্য পাইতেন তাহার সন্ধান লইলে দেখিতে পাই;—

"আচাৰ্ছাৎ পাদমাদর্ত্তে পাদং শিশুঃ ব্যেৎয়া। কালেন পাদ মাদত্তে পাদং ব্যবস্থচারিভিঃ॥"মন্তুঃ।

ছাত্র প্রধ্যাপকের নিকট হইতে এক পাদ জান লাভ করে। স্বীয় বুর্রির সাহায্যে ঐ জ্ঞান দ্বিগুণিত হয়। বয়োবৃদ্ধি সহকারে উপার্জিত জ্ঞান ত্রিগুণিত হইয়া थारक । अन्वत नहांशात्रिगण्य मान आलाहना ( ७४ বিতর্ক) করিয়া উহা চতুম্পাদ বা সম্পূর্ণ হইয়া থাকে। महर्षि मञ्जूत नश्किश्व त्याक्रीत मर्गा आमता भूताकारणक একটা সুদ্দর প্রণাণী (process) বিভাত্যাদের দেখিতে পাই। দেটা এই ;--একবার মাত্র দর্শন শ্রবণ বা পঠনে কোন বিষয়ের বোল আনা জান লাভ সম্ভব-भव नरह। पृष्टे क्षण वा भठिल विषयि मभाक्त्रभ আত্মগাৎ করিতে হইলে উহার পুনঃ পুনঃ দর্শন, প্রবর্ণ বা অধ্যয়নের একান্ত আবশ্রক। পুন: পুন: পাঠাভ্যাস ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ। অভএব ছাত यथन अक्रमूर्य (छत्र विषय्री अथम अवन करत, खनम উহাতে ভাহার কতকটা ধারণা অমে সত্য, কিন্তু পূর্ব জ্ঞান ক্ষাতে পাৰে না। তাৰায় প্ৰ পঠিত বিষয়টার विद्यात गार्वारमा मरन पूनः पूनः आरमानन कविरन क

প্রথম কিঞিৎ অনিক ধারণা ক্ষে। তৃতীয় অবসায় গুরু শ্ৰুৰে প্ৰান্ত ও স্ব বৃদ্ধির সাহাব্যে সমালোচিত তৰ্তী কাল नवेकारत निवस्त भर्गारकार्यत (Experience) करन আরও পরিকট হইয়া উঠে। বয়োর্ভির সঙ্গে সঙ্গে ज्योगात्मत वह विवर्शत महिल भतिहत गरहै। जागता यल ্ৰাবিক বিষয়ের সংস্পার্শ আসি, চিন্তাশক্ষিত তত্ত চালনা হওরার, আমাদের বন্ধি মার্জিত হইতে থাকে। শৈশবে বে পাঠ অভিচন্ত্ৰ বোধ হইত, কালক্ৰমে উহাই আবার অতি সহত প্রতীয়মান হইয়া পাকে। ইহার চতুর্থ বা শেৰ অবস্থায় ঐশ্ৰুত, সুচিন্ধিত, অভান্ত তথ্টী সহ পাঠি বর্গের সহিত অসকোচে ( যাহা হয়ত গুরুর নিকট অসম্ভব किन ) छर्क विछर्क बाता अमरक्रम बहेशा थारक। अहे চতুর্ব অবস্থার কথা আমরা সকলেই বেশ বুঝিতে পারি। পাঠাবস্থায় এক বিস্থালয়ে বা এক ছাত্র নিবাসে এক সঙ্গে ও একতা কতিপয় ছাত্র অবস্থিতি করে। তাহাদের সকলেবই বিভা বৃদ্ধি, মেধা প্রতিভা, পরিশ্রম ও আধাবসায় সমান পাকে না। সভরাং পঠে গ্রহণ কালে একজন ছাত্র যে স্থান ভাল বুঝিতে পারে নাই, অঞ হরত তাহা তাল ব্রিয়াছে; পক্ষান্তরে পে যেন্তান ভালরণ বৃথিরাচে, অফোর তাহা বোধগমা হয় নাই, এক্রপ ক্ষেত্রে উহাদের পরস্পারের মধ্যে ঐ সকল স্থল আলোচনার ফলে অভাত বিষয়ে ভানলাভ ও ভাত বিবারে অধিকতর ধারণা জনিবে, ইহাতে আর বিচিত্র कि ? जागालत श्रमणिंड कामात्ता इत्तत वह श्रमानी है। আধাতিৰ শাল্লে প্ৰবৰ্ণ, মনন ও নিলিধাাসন সংজ্ঞায় অভিহিত হইয়াছে। যেখানে এ তিনের অভাব, সেখানে ৰাত্ৰা দলের পানের শ্রোভার কায় বিকার্থীর অধায়ন কেবল ওকের পাঠ মাত্র। অশেষ শান্ত প্রণেতা ভগবান প্রশ্নতি ইহাদিগকে শক্ষা করিয়া তংক্ত সুপ্রসিদ্ধ .মহাভারে লিখিয়াছেন; "বাহা কেবল অধ্যয়ন মাত্র बहेबार, कारनत कोरेख (नीरंक नारे, कालान वर्ष किक्ति विक्र व्या अक्रम व्याप्त व्याख्या मी व्राप्त कार्ड वासि

नश्रयारगढ खाव चरु:कत्राक कथन७ चारवाचि করিতে পারে না।" এরপ শিয়ের চিত জামালোকে সমূজৰ না হওয়ায় উহা চিরকাল অজ্ঞান ভামস সম্মান্তর থাকে। এরপ অর্দ্ধ শিকা বা কৃশিকা হইতে অশিকা হ শিকার একান্ত অভাব অনস্ত ওপে শ্রেরম্বর। ভারী ব্যক্তির অভিনত ; "No education is better than bad education". এक करे "अञ्चितिका क्राइकी" এ দেশের স্নাতন জনপ্রবাদ। আলম্ব ও বিশ্বাহের আলোর মত এরপ বিকৃত শিকা কেবল মামবের ব্রি अः भारत कारण शहेया वारक। अमरण प्रविष्ण **होरद रा** বর্তমান ছাত্র সমাজ স্থানিকা লাভের উপযোগী এ আটীন পদ্ধতি অবশ্বন করিতে সমর্থ কি না, আর ঐক্লপ ভারে অধ্যয়ন অধ্যাপনার কোনও উপযোগিতা আছে কি মা উত্তরে এই মাত্র বক্তব্য যে, অধ্যয়নের প্রথম ও প্রথম উদ্দেশ্ত জ্ঞান লাভ, দিতীয় বা অবাস্তর লক্ষ্য ধনোপাৰ্কন। যাহারা বিতীয় পথের পথিক অর্থাৎ অর্থকারী বিভার উপাসক, তাঁহাদের বিভাশিক্ষার এরপ প্রতির সহিত্র व्यविष्ठा (मायान्य सह । कांत्रण विश्व विश्वासक्ति महायहिय "हालवान" जात यही बनी क्रमार्थ থাকিলেই তাঁহাদের স্বান্দ্র। কিন্তু পড়ান্তনা বীয়া कान नाट्य वर्श्व मान करवन, अवः नक्काम अन्यक्त উপকারার্থে নিঃসার্থ বিতরণই বারা জীবনের মহাত্রত 🛎 मञ्चारवत निमान वनित्रा वृश्या थारकम ; छ। हारक সকলেই আমাদের আলোচিত প্রতির প্রপাতী বলিছা আমরা তাঁহাদের সম্বন্ধেই ধংকি কিং আলোচনায় প্রবৃত। দিতীয় শ্রেণীর ব্যক্তিদের স্থাতে कनिकाण विश्वविनानिष्यत जृडभूक Changellor वफ़ नार्ड नर्फ कार्कन् य श्रनश्मावाम कार्यका ছেন উহাই যথেষ্ট; "They came to the University to earn and not to learn, det < अभीत विश्वार्थीत मःशा अकारम अकार विक्रम स्ट्रेरमा अदिक्वादि अञ्चार पणियादि अक्ना वना यात्र मा

वाक्ष्यक अन्तरीमहस्त, काहारी शक्तहस्त, वाननकृषात ক্ষ্যার অভৃতির মাম এখনও আমাদের শ্বতির किस्टि निर्माटन जामन शाहेग्रा बाटकन। (मटे (मटन क्षा करिया छ। हारमजु निया अक्षियाग्य छ। हारमजु ক্রমীয় আদর্শ একেবারেই গ্রহণ করিতে অকম, ইহা শাসরা বিখাস করিতে পারি না। স্বার্থরকার্থে অর্থ ক্ষাইবাক হইলেও দেবের সিংহাসনে দানবের মত উহা অবনও ভাষরপ পরমার্বের প্রাপ্য পূজার দাবা করিতে विदियं मा। अपन (महे कान यांगी विमार्थिनियांत कि बाक्क न मनामानत क्या के नकन वार्गा वर्नशहुत्त ক্ষিত্র কিন্ত্রপ মহৎ উপকরণ সঞ্চিত থাকে, তাহা বিশ্বেষ্ করিয়া দেখাইতেছি। ভারতের অমর কবি ক্রীনিদান ত্রুপীত মহাকাব্য রঘুবংশের তৃতীয় সর্গের ক্রিক্রাকে রোকে রাজ কুমার রত্ব বিদ্যাশিকা প্রসংক ক্রিয়াছেন; "উৎকৃষ্ট বৃদ্ধি রাঞ্জুমার রঘু তদীয় বৃদ্ধির প্রাম্বর ভণের প্রভাবে ক্রমশঃ আয়ীকিকী প্রভৃতি ক্ষীর বিদ্যার পারদর্শী হইলেন।" রঘুর স্থবিধ্যাত প্রাক্তার পণ্ডিত প্রবর মলিনাথ ঐত্তা বৃদ্ধির আট ক্রিক জনের উলেধ করিয়াছেন। সে আটটা এই: ভাৰা, প্ৰবাস আগ্ৰহ (Earnestness) >, প্ৰবৰ্ Hearing ) 2, গ্ৰহণ (acceptance) 0, বারণ Digestion ) 8, 50 ( Thoughtful discussion and selection ) c, जन्नार (Thoughtful rejection) প্ৰবিজ্ঞান ( Comprehension ) ৭, তত্ত্তান nowledge of truth )৮, অভ্যাস বা অফুশীগন হাৰ বৃদ্ধির কিপরিমাণ উৎকর্ষ সাধন হইলে তবে ক্ষাৰ শিক্ষিত বা জানী হওয়। বায় কবি শেখর ক্ষ্মান্ত্রাৰ ভাষা ঐ লোকে স্পষ্ট ইন্সিত করিয়াছেন। অন্ত্ৰীয় আধুনিক ছাত স্মাঞ্চের সহিত ক্ষিপ্রভাষায়েক্কবৃদ্ধি বৃত্তির গুণোৎকর্বের তুলনা করিয়া ক্ষি কিকারণে পুরাতন ও নবীন শিকার্থীর শিকার ক্ষ্মিক এক কাৰ্ডমা ঘটিতেছে। শিকাৰ্থীর প্রথম

क्रिं बद्यानक वा बाहारी कि छन्। एम बिल्डरहर्म छन्। আগ্রহের সহিত শোনা। বিংশতি বৎসর শিক্ষভার অভিজ্ঞতার ফলে যাহা দেখিতেছি ও বুৰিভেছি তাহাতে বর্তমান বিশ্ববিভালর রূপ বাহাতে ছাত্রগণের পঠিতবা বিষয় সাতাৰে শুনিবার विस्थि पत्रकात इस मा। व्यक्षिकाश्म हात्वत्र शार्ड মনোনিবেশের পরিবর্তে নিজাবেশের সহিত পরি-চয়টা ঘনিষ্ঠ হইয়া উঠে। তারপর পাঠ্য বিষয় মনোযোগের সহিত প্রবণের বেলার দেখিতে পাই चार-रक्तरे अवर्ग चरेश्या श्रवन ७ विषयास्त्र मनन। यनः गरयारगत अखार यथन अकुष्ठ हका निनामध শুনিতে পাওয়া যায় না, তথন শতাধিক ছাত্রের মধ্যে দনৈক অধ্যাপকের অফুট, অর্ধকুট বা পরিফুট বাকোর মর্ম গ্রহণ করা কত গহজ তাহা ভুক্তভোগী মাত্রেরই স্থাবিদিত। যাহা ভনিবার আগ্রহ ন।ই, যাহাতে মনঃ-সংযোগ **इ**ग्न नाहे এতারুশ বিষয় আয়ত করণের চেষ্টা পঞ্জাম মাত্র। ঐরপ অঞ্চ, অবুদ্ধ ভাষের বিচার বা শারণা একান্ত অসম্ভব। অজ্ঞাত বিষয়ে বাদ বিভক্ত করা ঘোর সংগারীর ব্রহ্ম উপদেশের ক্সায় ৩% বাচালতা মাত্র। ভারপর অপোহ বা বিচার মুখে হের বর্জনের শক্তিও পূর্বোক্ত ছাত্রের পক্ষে একাস্ত তুর্বভ। ঐরপ অপরিণত বৃদ্ধি ছাত্রের বস্তর শর্প উপলব্ধি সুদ্র পরাহত। এতাদুশ অমার্জিত বৃদ্ধি শিক্ষের **७व का**न विशा क्यारकत हस्य पर्णन प्लातं छात्र। दर পবিত্র জ্ঞান লাভ করিতে পারিলে জীব পরা শান্তির व्यक्तिको देश, छेटा मामाक वस्त्र महि। शूद्रम्छ शाहासा পদ লাভের ক্যায় এই অপার্থিব জ্ঞানরত্ব লাভ করিতে दहेता यानत्वत्र वाकीवन कर्त्वात्र नाथनात्र व्यावश्रक । अह गावनात कछ महााभी माञ्जित तत्न वाहेल्ड इहेर्द मा। खेरा शृंदर वित्राहि खेलबुक खक्रत नाहार्या खेलिक পদ্ধতির অনুসরণ করিয়া বৃদ্ধি বৃত্তির ক্রমোৎকর্ম লাভ করিতে পারিবে। ঘর্ষণে যেমন দর্পণের মালিক অল্পট

বৃদ্ধ কতাল বা প্রকৃত শিকার প্রতাবে সনের যালিনাও তেরনি ক্ষিত্রে দ্বীভূত বইরা বার। বিমল মনি ভিজিতে স্বাবিব প্রতিক্লনের যত নির্মল বৃদ্ধি বৃদ্ধিতে পরত্ত্ব স্মল স্বতঃই প্রতিভাত হইতে থাকে। চিত্তের এই উল্লেখ্য অবস্থা সম্পাদনের জন্ম চাই আন্দর্শ গুরুকুল, ভ্যানী আচার্য্য পরিষদ, বিধেয় ছাত্র মণ্ডলী। আর চাই উহাদের বিহিত সংযম, নির্মাত পরিশ্রম, নির্দেশ স্বাধারণ ও কঠোর ব্রহ্মচর্য্য ব্রত্থারণ। ব্যক্তি ও জাতির স্কির পক্ষে আন্দর্শ শিকাই নিরাপদ পস্থা। "নাক্যং পদ্যাঃ বিশ্বতে হর মার।"

শ্ৰীনিতাগোপাল বিদ্যাবিনোদ।

## আগমনী ও বিজয়া। \*

আনি অন্তর বলিয়াছি "সঙ্গীত কেত্রে বাঙ্গলা নায়ের কোমল বন্ধের বিপুল স্বেহ-রাশি হুইটি ধারায় প্রবাহিত হুইরাছে। পুল্র-স্বেহ-ধারা বহিতেছে গোপাল-যশোদা অবলম্বনে, আর কন্তা-স্বেহ-ধারা বহিতেছে গোপাল-যশোদা তরিরোবলম্বনে।" আজ আমরা শোবোক্ত ধারা কি ভাবে শক্ত শত বংসর ধরিয়া বাঙ্গালীর প্রাণ সিম্বতায় ও স্বস্তায় ভরপুর রাঝিয়াছে তাহারই কিঞ্চিৎ আভাস দিতে চেষ্টা করিব। এ বিষয়ে যে সকল অসংখ্য মন্ত্রীত বিরচিত হৈইয়াছে তাহা সাধারণতঃ "আগমনী" ও "বিজয়া" সঙ্গীত নামে পরিচিত।

. , "হুজ্লা-ছুফ্লা শগ্যগ্রামলা" নদী মাতৃকা আ্যান্তের নোমার বাল্লার প্রকৃতির গুণেই বাঙ্গালীর ঘরের জননী-বাদর বড়ই রেব-কোমব্ব-ফুলেরবা সর না। সেই বাড় হাধ্যের নালা ভাবের চিত্র এই প্রকল সাবে এবদ হলার ফুটিয়াছে যে ও। আর কি বলিব।

উমা-মহেশ্র-চরিত্রই এ দেশের কন্সা-লামভিন্নি, यागी-जीत गर्सारक है जानर्ग। बाकानी जाक जगक পূर्व द्रारेक्यर्ग (उमन हार मा। विमान वानमा ग्रहार्छ অব্যাহত ভাবে পূর্ণ হইতে পারে সে দিকে তার ভেমন অক্যানাই। তাই তার ক্যা কুল এখনও ব্রন্ত করিতে ব্যাসিয়া গ্রামে গ্রামে প্রিবের মত বর চাই" ব্রিয়া (पराठात निकाम शार्थना करता। अवश वर्षमान हैश्रेतिक भिक्षिजातित गार्या अधिकाश्य (महमूहे अथन आह अहं श করে নাতা স্বীকার করি, কিন্তু সমগ্র বাঙ্গলার পৌক্ত সংব্যার তুলনায় তাহাদের সংখ্যা আর কতই বা হইবে भिव जिथाती निवा जाशास्त्र काम वानि माहै, তাহার। দেখে শিবের মহত। তেমন ত্যাগী, তেঁমন (अभिक-विभि मठीत गृज रेम्ब भगांख करण मिन्ना विस्तृत হইয়া প্ৰিণী পৰ্যাটন করিয়াছিলেন—ম্বনিত ছুত ব্ৰেছ পিশাতে পর্যান্ত ইন্তার অপার করণা, যিনি করতের मक्रात्य क्या अठेन देशा दनाइन शान कतिया सीन्क इटेबाएन, यिनि दिमालय मन्य विभाग-वशु, त्योत-कार्कि ब्रीत्वत ज्ञानर्ग, गञ्जीत (मोध्मर्गात ज्ञावाम-जूबि, रज्यन चात विकीय (क चारक ? कार वाकानीय (माम निवन মত বৰ কামনা কৰে।

আর জগনাতা বে তাবে দক্ষ-যজ্ঞে সামী-নিজা শ্রবণে তমু ত্যাগ করিয়াছেন এবং পর-জন্ম হিমালতে দেই জগৎ-পিতা শিবকে সামী রূপে পাওয়ার জন্ম যেরুশ কঠোর তপদ্যা করিয়াছেন, তাহা প্রত্যেক হিন্দু ক্ষরে ভির-পরিস্ট রহিয়াছে। দে তপশ্চণ্যা সময়েও ছন্ম বেশি মহেন্যরের মুখে শিব-নিন্দা শ্রবণ-ভয়ে বিনি ব্লিখা-

> শনিবার্থাতাথালি। কিমপ্যরং বঁটুঃ । পুনবিবস্থঃ ফুরিতোতরাধরঃ।

<sup>় •</sup> ঢাকা সাহিত্য পরিবদের মাসিক অবিবেশনে •
পাঠিত।

ন কেবলং বো মহতোহপভাৰতে
শ্ৰোতি জনাদশি বং স পাপতাক্ ।''
বিব্ৰু চবিত্ৰ নাবী জীবনের আদর্শ হইবে না ত কাহার
ক্ষিত্র হইবে ? মৃত্যু অৱ্যেওত দল্শতির সম্পর্কের শেব
বিশ্বা মান্ত না এ যে চিরৱম ।

ক্ষাই আবার বলি বে উমাই বালালীর আদর্শ কছা, জন্প বিশ্ব, আর উমানাথ শহরই তাহাদের আদর্শ জনাতা, আদর্শ যামী।

বৈষ্ঠিবনের চিত্র দেখাইবার পূর্বে গৌরীর শিশু চিত্র স্থিত করিতে গিয়া বল-কবি অমর রাম প্রসাদ কি রূপ ক্রেক্স রেখাপাত করিয়াছেন তাহাই দেখাইব।

্র্পক্ষিন হিমালয়ের রাজ প্রাসাদে উমা মায়ের কাছে বিয়া আছেন; কিন্তু নিশি অবসানের থানিক পূর্বে জ্ঞানা ইইয়াছেন, গ্রাক্ষণথে চন্ত্র কিরণ আসিয়া ক্রিয়াই চালমূপে পড়িয়াছে; তিনি অমনি বাল-স্থলত-ক্রেয়াই কাল হাতে পাওয়ার জন্ত বায়না ধরিলেন, ক্রিয়া পাইয়া বড়ই কালিতে লাগিলেন। গিরি-রাণী ক্রিয়াকে কিছুতেই শাস্ত করিতে না পারিয়া রাজাকে ক্রিয়াকে,

भितियत, जात जाशि भाति त्न द्र,
व्यादाध मिट उपारत।

कैंगा किंगा करत जिल्मान, नाहि करत छन्नभान,
नाहि थात्र कींत्र ननी मरत॥
किंज जराभव निर्मि, गंगतन उपार मनी,
वरन उपा धरत'रम उदारत।
कैंगिर कुनारम जाशि, मनिन ७ मूथ (मिथि,
मारत देश महिराज कि भारत।
जात्र जात्र मार्थ वित्र कर-जक्नि,
रयरण गांत्र ना कांनि कांशारत।
कांग्र किंगांच जात्र, गांत करत धर्म गांत।
कांग्र किंगांच जात्र, गांत करत धर्म गांत।
कांग्र किंगांच जात्र, गांत करत धर्म गांत।

উঠে বনে পিরিবর, করি বহু স্মালর,
পোরীরে লইরা কোলে করে।
সানন্দে কহিছে হাসি, ধর মা এই লও শনী,
মুকুর লইরা দিল করে।
মুকুরে হেরিরা মুধ, উপজিল নহাস্মধ,
বিনিন্দিত কোটি শশধরে।

কহিতে কহিছে কথা, স্থনিজিতা ধ্বগন্মাতা, । শোয়াইল পালন্ধ উপরে''।

( श्रांम প্রাণ দেন )।

জগত ললামভূতা উমা পলে পলে দিনে দিনে

অপূর্ব সৌন্দর্যো ভূবন মনোমোহিণী রূপে বাড়িয়া উঠিতেছেন, দেখিয়া মায়ের কি আনন্দ। তিনি আমীকে
দেখাইয়া বলিলেন,—

"কাঞ্চন জ্বেবের চন্দ্র কি মাল, বিলম্বিত ঝলস্ক,
কো বিধি দেয়ল আনি ॥
হিমকর বন্ধন, রদন মুক্তা বলি,
করতল কিশলয়, কোমল পাণি।
রাজিত তহি কনক মনিভূষণ,
দিনকর ধাম চরণতল থানি ॥"

( अवाभश्रमान (मन )

তখন রাণীর

"দর দর দর বরত লোর, চর চর চর তকু বিভোর, কবছ কবছ করত কোর, থোর থোর দোলনা। রাণী বদন হেরি হেরি, হসতি বদন বেরি বেরি, চোরি চোরি ধোরি থোরি মন্দ মন্দ বোল না॥ বুছর বুছর নাদ, কিছিনী রব উভয় বাদ, পদতল স্থল-কমল নিন্দি, নথ হিমকর গঞ্জনা। কলিত ললিতা মুক্তা হার, মেরু বিকচ হিমকরাকার, বিবুধ ভটিনী বিষদনীয়, ছলে তত্ম রঞ্জনা॥ কবিত কনক বিমল কান্তি, মনহিভাপ করত শান্তি, তত্ম-তিরপিত নয়ন-সূথ, কলাম নিকর ভঞ্জনা।" ( তর্মপ্রশাদ দেন)।

क्षत्र ।

"নির্ধি নির্ধি বদন ইন্দু। পুলকে উপলে প্রেম নিজু ॥
ছল ছল ছল নয়ন। লোল চজ্রবদনে চূথন।
নধুর মধুর বিনর বাণী। পদ গদ গদ কহত রাণী॥
কোটি জনম পুণ্য জন্ত। কোলে কমল লোচনা॥"

( ध्वांमध्यमां म (मन)।

হিন্দু তাহার স্নেহ মাধা কন্তা-বদনে সেই বিশ্ববাতার

শুবের প্রতিবিঘই দেখিতে পার।—তাই সে রূপ অনুরস্ত,

দেখিয়া দেখিয়া দেখিয়া তার আর আশ মেটে না। অসীম
সোশর্যোর কে কবে অন্ত পেয়েছে ?

বিশ্ব সৌন্দর্ব্যে-সার-স্বরূপা উমা ক্রমে প্রাপ্ত যৌবনা হুইয়াছেন। তাঁহার বিমল রূপ দেখিয়া স্বতঃই বলিতে ইছা হয়—

> "সর্কোপমা জব্য সমূচ্চয়েন যথা প্রদেশং বিনিবেশিতেন। সা নির্মিতা বিশ্বস্থজা প্রযন্ত্রা দেকস্থ সৌন্দর্য্য দিদুক্ষয়েব॥"

পিরিরাক হিমালয় এবং তদীয় মহিধী মেনা দেবী দেবিলেন যে তাঁহাদের খেহের উমার

> "উন্মীলিতং তুলিকয়েব চিত্রং স্থ্যাংশুভিতি ন্নমিবার বিন্দম্। বভূব তদ্যাশ্চতুরস্র শোভি বপুর্বিভক্তং নবযৌবনেন॥"

ভথন, তাঁহার। কৈলাগ নাথ শিবের সঙ্গে তাহার বিবাহ দিলেন। উমাত পূর্ব হইতেই শিবস্থরের চরণে প্রাণ স্বন সমর্পণ করিয়াছিলেন।

গিরি জায়া বালালী মায়েরই মত জামাতাকে বলিলেন—

> শ্বর তুমি আয় ত আমার পর নয়, আমি মেয়ে দিয়ে ছেলে পেলেম, জামাই আমার মৃত্যুঞ্জয়। প্রাণসমা উমা আমার,

আজি হ'তে হ'ল তোমার, আদরে রাখিবে জানি, তবু মাকে বলতে হয় ॥"

উমা সামী সঙ্গে কৈলাসে চলিরা পিরাছেন। क्या সমর্পণ করিয়া হিমালয় কতকটা নিশ্চিত, কিছ বানী মেনকার হৃদয়ে হেহের কভার দারিতের আশ্বায় ব্রি ব সমরে সময়ে ক্ষণিক বিবাদের একটু ছারা পাও হইত। শত হইলেও মায়ের প্রাণ ত! পরে একদা লোক মুর্বেশ্ব পোক আবার যে সে লোক নয়, স্বয়ং ব্যবিপ্রকা নারদের মুবে তিনি ভানতে পাইলেন তাঁহার "প্রাণস্ম উমা" সেই ভিপারীর ঘরে বড় হৃংবে আছেন। মায়ের প্রাণ অমনি উথলিয়া উঠিল, তিনি রাজাকে বাইয় বলিলেন,—

পিলু বাহার ষৎ।

"গিরি, এবার আমার উমা এলে,
আর উমায় পাঠাব না।
বলে বলবে লোকে মন্দ,
কারে। কথা শুনব না॥

যদি এদে মৃত্যঞ্জয়, উমা নেওয়ার কথা কয়। এবার মায়ে ঝিয়ে কয়ব ঝপড়া, জামাই বলে, মানব না।

खत्निक् नातरानत मूर्यः উमा ज्यामात शास्त्र कृश्यः। नित ग्रामास्त मनास्त किरतः, बरतत हिन्दा करत ना॥"

( ध्वाम श्रीमा )

কলার কথা ভাবিতে ভাবিতে রাণী স্বপ্নে ভারার

• দর্শন লাভ করিয়া জাগিয়া উঠিলেন, কিন্তু হার, সে
কোথায় ? নিমাকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন,—

নিজোখিত গিরিরাজ রাণীর বিধাদ মাধা বদনে

স্থান কল দেবিয়া কারণ জিজ্ঞাসা করিতেই তিমি

বিশ্বনা,—

ष्ट्रेटेंख्रवी এक जाना। "পিরি, কি সুবাও হে স্মাচার ? चन्छ (म चर्नन, ना चरत वहन, (परा (भारक मन, वरह अक शांत्र। নিশিতে যেমন, ভেবে উমা ধন, व्यत्नक वाशास्त्र मूरवि नयन, चननि चलरन कदि एत्रमन नित्रत्व विश्वा (यन या कामात्र। नाहात नाहे (म तत्रण, नाहे व्याख्यण, **टिमानी रहेशाह्य क**िनीत वत्रन. বেরে তার আকার, চিনে উঠা ভার, त्म जेमा जामात्र, छमा नाहे दर जाता উমা বদিয়ে শিয়রে, কহিল কাতরে, कड चात्र पत्रा शांकित्व भावत्त. छिषाक्षीत करत नमर्थन करते. ८कन कक किरत. चक्र ना मा अक्वात #" ( अवितिमहत्य मिख )

रम्बिट्ड रम्बिट्ड नबरम्ब बडीड स्ट्रेंट हिना श्रीभाजी वर्षा प्रमादी बीदशरण हिना शिनारकत । ''मसर्थः শরণ" কজ্ঞপ-নীল চিত্তপ মেখমালা "ক্রবিলাসাক্তিয় श्रीषि-विश्व-वनश्य-वर्-भाइन कर्ड्क श्रीत्रभास्<sup>17</sup> हरेता चांत्र शश्न मण्ड चांच्या कतिया गें। छात्र ना, "वर्षक्र-কেশর বিশিষ্ট হরিত কপিশ" কদম বা কেতকী কুলুযের भक्त विक नवीत आंत्र आरमानिक दश ना, "वन नदी कीत जाठ উভান মুথিকালাল" আর "নত জলকণা" পাতে শিৰবিয়া উঠে না. "আকুলাবিদ তোমা বিপুলা উন্মাৰ্গ জল বাহিনী" লোভকতী সমূহের আর সে তেজ নাই। ''প্ৰজ লক্ষ্য'' শারদ লক্ষীর স্মাগ্যে তাহারা নিৰ্দ্মল ও বরতোরা হইয়া নীল নভের প্রতিক্রারা বকে ধারণ করিয়াছে। "নির্ত্তিপর্বন্ত জলাভিবেকা বসুধা" বিচিত্র শ্রী ধারণ করিয়াছেন। আকাশ নির্মাণ मीन, উজ্জन र्या किंद्रान উद्धानित, क्षेत्र वा विध्निष्ठ ভুষা রাশীর ভায় শুভ মেব খণ্ড নিরুদেশে ভাসিয়া যাইভেছে, বলাকা শ্রেণী তাহার তলে বিচিত্র মালা গাঁপিয়া চলিতেছে, দেখিয়া মনে হয় "ধৃত্রার মালা ধেন ধ্র্জ্জনীর গলে।'' ভীরে নীরে খেত রক্ত কমল স্বাব্দি প্রক্রু-টিত, শেফালিকা কুঞ্জ অজতা জুলে ফুলময়, মধুর বাতাস কুত্ম গদ্ধে আপুরিত। সবুত্ব কেত্রে শারদ লক্ষীর त्मानात थान राण रुर्शकित्राण क्षेत्र कल कितालाह । सूर्ण क्रूल, इसीपरल मिनित विम्तू मकन मूळा मानात या छन চণ করিতেছে। আর ত যেনারাণী প্রাণপুত্তলী ক্যার মুখ कमन ना दिश्या थाकिए शादतन ना। अधनह दि जैद्व चानिवात नमग्न, এখনও कि मारक चाना बहैरव मा ? ৰম্বংশর বে তার কাছে যুগ যুগান্তর বলিয়া মনে হইতেছে। তিনি গিরিরাজকে বলিলেন,---

দেবগিরি-বিভাস-একভালা।
"বিলম্ভে কৈ কাল যাও গিরিরাল, এনে দাও আমার পরাণ পুতলি। সম্বাদ্য গড়, মুখে কব কত, সরবে ভর্রে বে জালার জলি।।

উমা বে জামার সরলা ললনা,
ভাল মন্দ বাছা কিছুই তো জানে না,
ভিষারীর খবে মারিজ বাতনা,
সবে সে কেমনে, বুঝ তো সকলি।

শবে মাত্র কলা উমা যে জামার,
বুক চেরা ধন, সংসারের সার,
ভাই তোমার যে বলি, বলি বার বার
কোলে এনে দাও সোনার কমল কলি।"

বিশালয় পাষাণ হাদয় হইলেও আর থাকিতে গারিলেন না। গন্তীর হিমালয়ের ঐ পাষাণ হাদয় ভেদ করিয়াইত তাঁহার গভীর সেহ ধারা কত শত নিঝ রিয়পে প্রবাহিত হইতেছে। তিনি কয়া আনিতে কৈসাসাতি-মুশে যাত্রা করিলেন।

পিতাকে নিজালয়ে দেখিরা কন্সার যে কি জানন্দ ভাষা কেমন করিয়া প্রকাশ করিব ? বাললার গৃহে গৃহে এ মধুর দৃশ্য। উমা পিতার পদতলে বসিয়া ধীরে ধীরে বীজন করিতেছেন, হিমালয় ভাষার তরজায়িত কৃষ্ণ কেশগুছে ললাট হইতে কোমল ম্পর্শে সরাইয়া দিতেছেন। উমা মায়ের সংবাদ জিল্ঞানা করিতেই বিরিয়াল বলিলেন,—

#### विंविष्ठे—चत्रता।

"কি সুধাও মা আর, রাণীর সমাচার, এক মুখে তার দশা বলা ভার। রাণী ভোর অদর্শনে, আছে অনশনে, দেখ বি গে নয়নে, অন্থি চর্ম সার॥

नमा नर्ककन, वरन' छैमाधन, कतिरह त्यानन, मादि मिवायन, करत थरवाच वहन, करत ना ज्ञवन, विश्वन छचन करत हाहाकांत्र है রাণী পাগলিনী প্রার, পথে গে' দীভার, যার দেখা পায়, বিনয়ে প্রধার, 'কৈলালে কি কেউ গিয়াছিলে হায়, দেখেছ কি কেউ উমারে আমার ॥'

ধাণী গগনে নির্বি শরত-চজনা, ভ্রমে বলে ঐ এল বুঝি উমা, মেঘে ঢাকিলে শশীরে, কর হানি শিরে, মুর্চ্ছা হয়ে পড়ে, করিয়া চিৎকার গ

রাজীর বে রূপ লক্ষণ, করি নিরীক্ষণ, বাঁচে যে এমন, নাহি লয় মন, তার দেহে যে জীবন, আছে এভক্ষণ, দে কেবল ভোরে হেরিতে একবার॥

( ४ व्यामध्य भिख)

পিতার মুখে মায়ের অবস্থা গুনিয়া উমার নিন্দান দয়ান অঞ্জলে তাসিয়া গেল। তিনি দীর্ঘ নিশাল ত্যাগ করিয়া বেপপুমান বক্ষে মহেশের নিকট গেলেন। শাল শরুত গিরিনিত' মহেশ্বর ধ্যান-ন্তিমিত-লোচন। পালি মুগল অন্ধ দেশে স্থাপিত—যেন ছইটি রক্ত কমল স্টেরা রহিয়াছে। পর্বত শ্রের উদার উন্মুক্ত বাতাস তাহার জটা কলাপে সন্তর্পণে খেলা করিতেছে, আসন-বেদী সংলগ্ন নব দেবদাকরে পত্রগুলি সর সর করিয়া কাপিতেছে, উদ্বেশি নীলাকাশ, সন্মুখে। কলনাছিনী স্বরশৈবলিনী চকল গমনে বহিয়া যাইভেছে। পার্বাতী ব্যান তর্পের অপেকা করিতে লাপিলেন; স্থান তক্ষ

'এসেছেন পিতা অচল, আঁথি কৃটি ছল ছল, কেবল বল্ছেন চক্ত চল, কি আজা হয় প্রথতি ?

স্থান্য হটল গত, या आयात कैं। पिर्ट्न कछ, वागिर (इ प्राविठ, ৰবি আমি এই মিনতি॥"

শ্বসূমতি দিতে আগুতোৰ অগ্ৰথা করিলেন না। গৌরী 💘 পঞ্চানন সঙ্গে পিতৃভবনে চলিলেন। নিশি শেষে ন্ত্ৰী আদিয়া রাণী থেনা দেবীকে ডাকিয়া বলিলেন,--

''রাণী গা ভোল গো, উমা এলো হিমালয়, ু সর্মে কমল হাদে, আকাশে ভাত্র উদয়। (कांकिन डाकिछ. यक्षण भारे छ. শীতল সমীর সেরিভ বয়,

कुर्ने। कुर्ने। यूर्व

ভুবন ভরিল,

অতুল আনন ভারতময়।" 🖣 🕏 हिल मधी व्यावाद विलालन,—

স্থালাইয়া-কাওয়ালি।

"বাণী কর কর কর মঙ্গল আচরণ, হয়েছে গুভক্ষণ। লহ শুহ গণপতি পশুপতি হৈমবতী. গিরিরাজের হইল ঐ আগমন। द्वांत शा (वादा (भा, (कन ग्रह बाद, দেখোগে কেমন শোভা ভোমার প্রাণ উমার, নিরিপুরে আজি গো টাদের বাজার, কার শক্তি বর্ণে রূপ অভরার ; শহ গো ধরণ করি, শঙ্কর আর ওতঙ্করী, **ভাক শব পু**রনারী, করুক জয় উচ্চারণ ॥

ছুঃখের নিশি হল তোমার অবসান, बाद्याल माजान अत्य ज्ञेनानी जेनान, খেরিয়ে জুড়াল তাপিত মন প্রাণ, আনন্দে উথলে গলিয়ে পাষাণ। ঐ ওন শব বাছ করে, সুমঙ্গল বাছকরে, নম্পার নকল গান গাইছে গায়কগণ।"

( ৮ হরিশ্চন্ত মিতা)।

ত্ৰন পুরনারীগণ আসিয়া বলিলেন,—

माणजी।

''আল ভভনিশি পোহাইল ভোমার। এই (य निमनी चाहेन, वर्तन कतिया चान चरता मृथभनी (एथ जानि, मृत्त यांत्व इथ तामि, ও টাদ মুখের হাসি, স্থারাশি করে। ্ভনিয়া এ শুভবানী, जलाइल संत्र तानी,

বাস না সমরে।

यत यत या विश्वास, গদ গদ ভাবভরে, পাছে করি গিরিবরে, অমনি কাঁদে গলাধরে॥ · भून (कारण वनाहेग्रा, চাক মুথ নির্বিয়া,

চুম্বে অরুণ অধরে। বলে জনক তোমার গিরি, পতি জনম ভিধারী, ভোমা হেন সুকুমারী, দিলাম দিপম্বরে॥

তথন

इर्ग चानिक्छ यन, "যত সহচরীগণ, (वर्ग (वर्ग अर्ग श्रु करत्र। करह वरशरतक हिल जूल, এত প্রেম কোথা খুলে, कथा कर मूर्वजूरम, প্রाণ মরে गরে॥" ( ৺রামপ্রসাদ দাস )

রীণী তথন ছু'টি হাত বাড়াইয়া উথাকে কহিলেন,—

. कै। कि-भशुभान।

"बाग्र गा, जाग्र गा डेगा, আয় তোরে কোলে করি। কত দিন নিরাশে অকুল অন্ধকারে পড়ি! তিন দিনের তরে বছর গেলে, মা আমার আসিবি বলে, चाना পথে नयन किता हित्र निम शिष्ठ :

क्लाम इति, नव कूमात्र, अहे छेमा अत्मिहन आमात्र, শয়ন ভরে যা ভোমার কচি মুখের ভাতি হেরি॥"

ইহার পর উমা গুছাভাত্তরে গিয়া গণেশকে কোলে করিয়া বদিলেন। মাধের রূপের প্রভার গৃহ আলোকিড धरेता (गेणः। जगमाणात अरे (भाषा प्रतित क्रेटनक मर्क्य गरिता छेठिरनम,---

#### মিশ্ৰ-খাঁপভাল।

"বিদিশেন মা হেম বরণী হেরছেরে নিয়ে কোলে।
হৈরি গণেশ জননী রূপ রাণী ভাগে নয়ন জলে॥
বজাদি বালক ধার, গিরি বালিকা সেই ভারা,
পদতলে বালক ভাসু, বালক চন্দ্রমা ভারা,
বালক-ভাসু জিনি তমু বালক কোলে দোলে॥
আমি মনে ভাবি উমারে দেখি, কি উমার কুমারে দেখি
মুগল রূপ পশিয়ে রাখি আঁথি মুগলে;
দাশরণী কহিছে বাণী, ত্ই তুলা দ্যশনে
হেরি ব্রহ্মমন্নী রূপ, ব্রহ্ম রূপী গ্লাননে,
বৃদ্ধ কোলে ব্রহ্ম ছেলে ডাকিছে মা বলে॥"

এদিকে রাণীর আনন্দাঞ্জে আঁথি ভরিয়া গেছে, সেহের পুতলির রূপ দেখিবার বড়ই অসুবিধা ইইস্ লাগিল। তিনি বলিলেন,—

মলার-মধানান।

"থাক থাক থাক নয়ন থারা,
নয়ন ভরিয়ে একবার নিরখি নয়ন তারা।
না হেরে যে উমা তারা, বহিতে প্রাবণের থারা,
এল সেই নয়ন তারা, এখন থারা একি থারা ?
নিরখিতে উমা ধনে, বহু দিনের সাধ মন্ত্রে,
হৈরিতে সে চফ্রাননে, বাধা দেও এ কেমন থারা ?
একে পলক বাধা চোকে, দেখতে দেয় না অনিমিধে,
ভূমি তাহে হলে বাদী, হেরি বল কেমন থারা ?"
( ৬ হরিশ্চক্র মিত্রা)।

স্থেহ বিগলিভা জননী তথন ঈষ্দ্রাগ্যম্য়ী উমাকে বলিভে লাগিলেন,—

লণিত—আড়া ঠেকা। "কেমনে মা ভূলেছিলি এ ছ্থিনী মায়। পাৰাণ মন্দিনী তুইও কি পাৰাণীয় পায়। শবংসর ব'ল গন্ত, তো বিরবে অবিরন্ত।
কেঁদেছি কবিব কড, আমি মা ভোষার ॥
শরমে ছিল দা পুথ, পদাই বিবন্ন মুখ,
পেরেছি কন্তই ছখ, দিবা যামিমী;
আকাশে হেরিয়া শুনী, ভাবি তুল মুখ শুনী,
নাপিতান সারা নিশি, কাঁদিতাম হার ॥
কখন স্পানে ভোষা, হেরিভাম ও মা উমা,
পড়েছে মুখে কালিমা, কাত্রা জুধার;
আমনি জাপিয়া উঠি' বাইভাম পণে ছুটি,
বলিভাম যারে ভারে, এনে দে উমায় ॥"

( ७ वाञ्चक्क प्राप्त )।

পরে রাণী কন্তাকে নিহতে জিজাসা করিলেন,— সাহামা—ঝাপতাল।

"কেমন করে হরের বরে, বাকিণ উমা বল্না তাই।
কতলোকে কত বলে, লাজে আমি মরে ঘাই॥
চিতা ভঙ্গ মেবে অঞ্চে, লামাই বেড়ার রকে ভকে,
ছুই নাকি তার সঙ্গে সঙ্গে, সোনার অঙ্গে মাবিদ ছাই॥
ভিকার কুলি কাঁণে করে, লামাই নাকি ভিকা করে।
এবার এলে বলব হরে উমা আমার ঘরে নাই॥
উমা মাত্র তিন দিনের জন্ত পিতৃতবনে আদিয়াছেন।

ড্মা মাত্র তিন দিনের জন্ত পিতৃত্বনে আন্ময়াছেন।

দেখিতে দেখিতে স্থের দিন চলিয়া গেল। হায়
এমনই করিয়াইত যায়। বাঙ্গালীর ঘরে কক্সা বিদায়ের
দৃশ্য বড় করুণ, বড় মন্দুর্শাশী! মা ভগিনীর হুদয় থে কি
ব্যবায়, কেমন বেদনায় উদ্বেল হইয়া ওঠে তাহা
বিলবার নয়। কঠিন পুরুষ-হুদয়ও কভার হুল হুল
আঁথি ত্'টি দেখিয়া কেমন করিয়া ওঠে, আর নীয়ের
ধারা বহিতে বাকে। তাই শক্তালাবিদায়ের সময়ে
তর্দশী কুলপতি কয়ও বলিয়াছেন,—

"যাস্ত্রাল্য শকুস্তলেতি ভ্ৰন্মং সংস্পৃষ্ট **মুৎকঠনা**•কঠঃপ্রভিত বাশান্ততি কলুযশ্চিন্তাজ্ঞ্জং দর্শনম্।
বৈশ্লবাং মম তাবদী দুশমিদং বেহাদ্রন্যৌকসঃ

9.4

নীভাবে গৃহিনঃ কথংখু তনরা বিলেবছংবৈশ বৈঃ ।"
কৈবল আপনার জনেবই কি ? পাড়া প্রতিবেশী
কর্তবেহই চোবের পাতা ভিজিয়া উঠে। এমন কি যে
নিজন গৃহপানিত পণ্ডপক্ষী প্রতিদিন কন্যা হস্ত প্রদন্ত
ক্রিনিটা ও জাদরে পরিত্প হইত, যে সকল তরুলতার
বিশ্বে কলা প্রভাতে এবং সায়াহে কল সিঞ্চন করিত,
ভৌহারা পর্যান্তও বেন তাহার বিরহে ব্যথিত হয় !
ভাইত ববি বাশগদাদ কঠে বলিয়াছেন,—

"ভো ভোঃ সরিহিতা ভণোবনতরবঃ
প্রাত্থন প্রথমং ব্যবস্থিত জনং ব্রাস্থপীতের্যা
না করে প্রির মণ্ডনাপি ভবতাং সেহেন যা পলবং।
জালোরঃ কুমুম প্রস্তি সময়ে বস্যা ভবত্যুৎসবঃ
কৈলং বাতি শক্তনা পতিগৃহং স্কৈর্ম্জায়তাম্॥"
সাণী মেনকার হৃদয়ে সেই ভোবী বিচ্চেদের ছায়াবিভের্মিছে। তিনি বলিতেছেন,—

वानारेग्रा-वाड्रपमहा।

শ্বাধার এই ভয় মনে, বিজয়া দশমী দিনে,
শকুৰে ভাসায়ে যাবে শিবে শিব ভবনে ॥
নবমীর নিশি হলে' অবসান, অন্ধকার করে' হ'বে
সভর্ষান,
শক্তিবেন হুর্গা অস্থানে প্রস্থান, নিজ পরিবার সনে ॥
ভাই করি প্রার্থনা করি ষোড় হাত, যেন এ যামিনী
আর না হয় প্রভাত,
শার যেন উন্ধ না হয় দিননাথ এই ভিচ্চা চরণে ॥"
( চুর্গাপ্রসন্ন চৌধুরীপ ।

িকিছ হার। তাহা কি বর ? প্রকৃতি কি কাহারও

ক্ষেপ ক্ষেপনে কর্ণপাত করে ? রাজি প্রভাত প্রায়

ক্ষ্মীক। দ্বী করা পার্কতীকে জাগাইতে আদিলেন।

ক্ষেপ্ত বিক্ষালা রাণী ভাহাকে বলিলেন,—

ननिज—चाड़ार्ठका।

্'বাণাইও না হরজারার, জয়া তোমার বিনয় করি। বাংক বলে' নারানিশি কাদিয়া পোহাল সোরী। নিশিকেগে কাতর হ'বে, আছেন উমা প্রাইরে,
বিবাদেও বিধুবদন মলিন হয়েছে মরি ॥
নিজাভদ হ'লে পরে, হিমালর জাধার করে',
উমাশনী কৈলাসপুরে, যাবে পরিহরি।
নিতে এসেছেন হর, ভাই বলি বিলম্ব কর,
যতক্ষণ ঘুমারে থাকে, ও বিধুবদন হেরি ॥"

( ৮ হরিনাথ মঙ্মদার )। রাণী পরে পাগলিনীর মত ঘাইরা রাজাকে বলিলেন,---

''ওতে প্রার্থনাথ গিরিবরতে, ভয়ে তমু কাঁপিছে আমার।

কি ভানি দারুপ কথা, দিবলৈ আঁথার ॥
বিছারে বাবের ছাল, ছারে বলে' মহাকাল,
বেরোও গণেশ-মাতা, ডাকে বার বার ।
তব দেহ হে পাষাণ, এ দেহে পাষাশ প্রাণ,
এই হেতু এতক্ষণ না হলো বিদার ॥
তব্যা পরের ধন, বুঝিয়া না বুঝে মন,
হাল্ল হায় একি বিভ্ছনা বিধাতার ।
প্রশাদের এই বাণী, হিম গিরি রাজরাণী,
প্রভাতে চকোরী যেমন, নিরাশা স্থার ॥"

( ध्वामक्ष्याप (मन )।

কিন্ত কিছুতেই কিছু হইণ না। শেবে বিদারের সময় আসিয়া পড়িল! বিদর্জনের বাজন! বাজিয়া উঠিল! রোদন করিতে করিতে কুবলয়াক্ষীর লোচন যুগল আরক্ত হইলা উঠিয়াছে। উলা মাকে প্রণাম করিতে অবনত হইলেন, রোদনপ্রায়না জননী তাঁহার প্রাণ-উমাকে হাতে ধরিয়া বক্ষে টানিয়া বলিলেন.—

टेडब्री-मधामान।

"এদ কোলে করি উমা, বল মা বিধুবদনে।
তোমার মাকে মা বলে মা, কে লাছে তোমাবিনে ॥
তুমি আমার নয়ন তারা,
তোমার বিদার দিয়ে তারা,
তারা হারা নয়নে
কেমনে রব তবনে॥

জিল দিনের তরে পাসিরে,
নির্বান আগুন জেলে দিরে,
নিদর হয়ে বিদার দিতে
বল গো কি কারণে;
নাগর-সিঞ্চন-নিধি—
ভাগোতে মিলালেন বিধি,
নিজ দোবে হারাই বদি,
পাব না আর এ জীবনে॥"

( ४ इतिनाथ मञ्जूमनात )

হায়, উমাকে যথন একান্তই ছাড়িতে হইল তখন বিষাদ-করুণ কঠে বলিলেন,—

ললিত-বিভাস—একতালা।
''আমার উমা বার কৈলালে, হিমালর করি প্ন্য।
নর্ম ভারা হলেম হারা, নর্ম তারা ভারা ভির ॥
জ্বা দে গো মুক্তকেশীর

কেশ করি পরিচ্ছর। পুরবাসী দে গো আসি,

মায়ের সিঁধায় সিন্দুর চিহ্ন। তিন দিন না গত হ'তে,

ত্র এসেছেন নিতে।

डिया बरन विकास किएछ.

क्षत्र द्र विषी व

मित्न चौधात इ'न चामात्र,

স্বৰপুরী হেরি শ্না।

হরি বলে মা আমায়

(म গো विमात्र यांच जूर्व।"

( ४ हिनाथ मञ्चमनात )।

পূর্বেই বলিয়াছি বালালীর গৃহে গৃহে এই আগমনী বিজয়ার লীলা নিত্য সংঘটিত হইতেছে। গৃহের এই নিত্য লীলাই মহামায়া বিশ্বজননীতে আরোপ করিয়া বালালী শরদাগমে ক্লাভাবে তাঁর আরাধনা করে। ভক্ষগৃহী চন্তীমন্তপে সেই লগননোমাহিনীর মুধারবিদ্ধে निम क्छात मूर्थव्हित जनार्गन कित्रा मा मा विनिन्न कि हिन्नो नाकून हत। आत तिम्मा मम्मोत न्यात व्यक्त शिक्षा मम्मोत न्यात व्यक्त शिक्षा भम्मोत न्यात व्यक्त शिक्षा मम्मोत न्यात व्यक्त त्यात मानात न्यात न्यात व्यक्ति तिमा क्रिया मिन्ना क्यात व्यक्ति विन्ना क्षित्र तिमा व्यक्ति विन्ना व्यक्ति विन्ना विन्ना कित्र तिमा व्यक्ति विन्ना विन्ना कित्र तिमा व्यक्ति विन्ना विन्ना कित्र विन्ना विन्ना व्यक्ति विन्ना विन्ना व्यक्ति विन्ना वि

প্রবী—**সা**ড়াঠেকা।

"উবার আলোক গড়া মা ভোমার প্রতিমায়।

চেলে দিলে যে কিরণ, সে কোণা ভাসিরে যায়।

শেব তপন আকাশে, শেব সে কিরণ ভাসে,

শেব বিজলির হাসে দুরে সলিলে মিলায়।

যত মুরে দুরে যাও, ভেবে ভেসে ফিরে চাও,

না জানি কি ব্যথা পাও, সোনার কমল কার।

তবু না ফিরিলে আর, ঐ সে তরল বিধার,

নীল অকুল পাধার নিল তুলে মা ভোমায়।"

ঘদি একাত্তই গেলে মা,—তবে বাও। ভক্তসংক্
আমরাও বলি,—

"গচ্ছ গচ্ছ গৃহে গচ্ছ অস্থানং পরমং স্থানং। সম্বংসর ব্যতীতে তু পুনরাগ্যনায় চ॥"

মা শক্তির দিণী, আবার আসিও। আবার আসিরা তোমার এই অধম সন্তানকুলের হৃদরে শক্তি স্কার করিও।

निवयस्य ।

ত্রীযোগেল কিশোর রক্তি।

### युष ।

তুণে পুলে কিস্করে শ্যামলে কোমলে
হাঙ্গি-মৃত্য-গন্ধ-গানে হিলোলে কলোলে,
লাত ছলে আনলের বিচিত্র বিকাশ
ভরিয়াছে দিগন্তের অনন্ত আকাশ।
স্থমধুর যেই হেন আকুলি-ব্যাকুলি
এ বিখ-সরসী-বুকে উঠে ফুলি' ফুলি'
প্রাণ মোর ভারি মাঝে রহে প্রস্ফুটিয়া
শতদল সম ধীরে দলট্রবিকলিয়া
অসীম উদাসে চেয়ে তব মুখ-ছবি
সহল হংখেরে ঠেলি', ছে আরাধ্য রবি।
সাধ হয় বুক ভরা সবধানি চালি'
ভানিমির ধাকি চাহি'—চাহি গো কেবলি।
শাধি ভূলে যদি ভূমি নাহি চাহ—ভব্
কমল সফল মানি' সুধী রবে, প্রভূ।

वी अवगीरमारम ठक वर्षी।

# পুস্তক পরিচয়।

মহাবর্গ বার্তিক—"কৃতি অন্তিদ।" প্রীযুক্ত কানি বৈহন মুখোপাধ্যায়, বি, এ, সম্পাদিত। প্রভু জগবন্ধর ক্রিক্ত জালি উপদেশ সাধারণে প্রচার উদ্দেশ্যে এই বিভিন্ন হচনা। ভূমিকা পড়িরা বোব হইল তাহার উপদেশগুলি হক্তাকারে মুদ্রিত করিয়া তংশবন্ধে বিভারিত আলোচনাও ভায় লেখক ক্রমশঃ সংখ্যাকারে প্রকাশ করিবেন। প্রথম সংখ্যার হক্ত "কৃতি অন্তিহ।" নাম ভানিলেই একটু সমস্থায় পড়িতে হয়। কিন্তু লেখক বিভিন্ন আমাদের জন্ম দে সমস্থা ভন্নন করিতে প্রয়াস বিভিন্ন আমাদের জন্ম দে সমস্থা ভন্নন করিতে প্রয়াস বাইয়াছেন। প্রতিকার ভাব ও ব্যমম জ্ঞান, ভাষাও ক্রেমি ছর্মোব্য। যদি মহাপুর্বধন্ধ মহাবাক্য সাধারণে

প্রচার করাই এই পুজিকার উদ্ধেশ্ত হয়, আহা হইবে
অপেকারত সহল বোষ্য ভাষার ভাষা প্রকাশিত হওর
আবশুক। নতুবা সে উদ্দেশ্ত শাধিত হইবে সা। লেখকের
সমুদর মতের সহিত কিলা এই প্রছের সমুদর প্রতিপাধ
বিবরের সহিত আমরা একমত হইতে না পারিলেও ডিনি
যে উদ্দেশ্ত লইয়া ইহা প্রশাস ও প্রচারে প্রস্তুত হইয়াছেন
ভাষা অতি সাধু উদ্দেশ্ত। মহাপুরুবের মহাবাদী সাধারণে
বতই প্রচার হয়, ততই সমাজের পক্ষে মন্দ্র।

## কোজাগরী।

বিখের সকল শোভা মৃর্জিমতী হয়ে ক্ষাপৃথিমার নিশি করেছে উজ্জন ; ক্ষাণ্ডের স্থা-স্রোতে ধরিত্রী-হৃদ্রে স্থানম্বের বঞা বহে শাস্ত স্থাডিল 1

জাকাশ বাতাস আজি কিবা ৰধুষয়,
কিবা মধুময় আজি অন্তর আমার ;—
চক্ষলা রমার হাসি বুঝি ফুটে রয়
ডব্র শেফালির কুঞ বুকের মাঝার!

মরমের রুদ্ধ-বার নিঃশব্দে খুলিয়া কে জাগিবে সারা নিশি কে জাগিবে আজ,— তথু সেই হাগিটুকু লইতে আঁকিয়া নিভ্ত প্রাণের প্রাণে ভুলি' বিধা-লাজ!

আত্মার গোপন ককে কে কহিছে ডাকি' মেলিবারে বিশ্বপানে আজি অন্ধ আঁথি!

वीकीरवसक्मात पछन

# d tex

# পাতালভেদী রাজা।

মুগলমান রাজত্বের শেষভাগে বর্জমান যশোহর
নড়াইলের প্রান্ধি পদ্ধী নিলিয়ার অনভিদ্রে এক হিন্দ্
রাজা ছিলেন; রাজার আসল নাম কি ছিল—তিনি
কতদিন রাজ্য করিয়াছিলেন—ধন দৌলত্ত, সৈত সামত্ত,
কমতা 'যোগ্যতা তাঁহার কেমন ছিল,—তাঁহার রাজধানীকেই বা লোকে কি নামে অভিহিত করিত—
শতমুখী জনশ্রতিও সে বিষয়ে সম্পূর্ণ নির্মাক।

প্রবাদ আছে—রাজা বহিরাক্রমণ হইতে আপনার ধন সম্পত্তি ও পরিবার বর্গকে স্থরক্রিত ও নিরাপদ রাধিবার অভিপ্রায়ে ভূনিয় একটা গুপু পাতাল গৃহ নির্মাণ করেন; এই জন্মই লোকে তাঁহাকে সাধারণতঃ পাতালভেদী রাজা নামে অভিহিত করিত।

ইচ্ছাতেই হউক আর অনিচ্ছাতেই হউক, রাজ্য রক্ষা করিতে হইলে রাজ-রাজ্যার যুদ্ধ অপরিহার্য। কালে এই পাতালভেদী রাজারও গ্রহবৈগুণ্যে কোন মুগলমান নরপতির দহিত যুদ্ধ বাধিল। যুদ্ধ যাত্রার পূর্বের রাজানিজের ধনদৌলত ও পরিবারবর্গকে সেই পাতাল গৃহে নিরাপদ রাধিরা যাইবার সমর বলিয়া গেলেন—"আমি যুদ্ধে চলিলাম। ভগবানের রুপায় যুদ্ধে দক্র জর করিয়া আবার আদিয়া তোমাদিগকে লইয়া স্থ্য শান্তিতে জীবন অতিবাহিত করিব। আমি ফিরিয়া না আদা পর্যন্ত, তোমাদিগকে এখানেই থাকিতে হইবে।" পরিবারবর্গের নিকট বিদায় লইয়া রাজা যুদ্ধে চলিয়া গেলেন। কিন্তু মানুষ্য যা তাবে তা হয় কই!—তা যদি হইত তবে কি জগতের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যন্ত শোক ছঃখের করুণ ঝলারে দিক্বিদিক আকুলিত হইরা উঠিত!

রাশা আশা করিয়াছিলেন তিনি যুদ্ধে শত্রু সংহার করিয়া বিজয় গৌরবে গৃহে ফিরিয়া আদিয়া পরিবার বর্ণের সহিত হব শান্তি ভোগ করিবেন। রাজ-পরিবারও

দিন গণিতেছিলেন—রালা বৃদ্ধান্তে দেশে আদিরা

তাহাদিগকে পাতাল গৃহ হইতে উদ্ধার করিবেন—
তাহারা স্থ্যের আলোকে, রাজার সোহাণে আবার

তংকুল হইরা উঠিবেন। কিন্ত গুলগন—কাহারও
আশা পূর্ব করিলেন না। রাজা বৃদ্ধে নিহত হইলেন।

সেই পাতাল গৃহের সন্ধান কেবল মাত্র রাজাই
জানিতেন। তাহার মৃত্যুর সহিত তাহার পরিবারবর্ণের
আশার শীণ স্তেট্কুও ছিডিয়া পেল। তাহারা সেই
পাতাল গৃহে চির সন্ধানি লাভ করিলেন।

বিজয়ী মুশলমান নরপতি শৈশু সামন্ত লইয়া রাজার রাজধানী বিশ্বত করিয়া ফেলিলেন। রাজা পেলেন— রাজার পরিবারবর্গ, ধনদে)লত, রাজা, রাজধানী স্ব গেল—রহিল কেবল—জনশুতি কালে বুঝি তাও বায়।

এ প্রদেশের আপামর সাধারণের ধারণা, ভূপতেঁ এখনও রাজার সেই পাতাল পুরী বর্তমান আছে। এই জন শুতিতে বিখাস স্থাপন করিয়াই যশোহরের প্রানিদ্ধ নীলকর মি: আর, উইলিয়াম একবার সেই সমস্ত ইতন্ততঃ বিক্লিপ্ত ইঠক ওপের একটী আমূল খনন করিয়া জন্ম শুতির মূল রহস্যোৎঘাটনের চেটা পাইয়াছিলেন। কিছ এমন সময় যশোহরে ভীষণ নীল বিজ্ঞাহ উপস্থিত হওয়ায় উত্যোগী উইলিয়াম বিপন্ন হইয়া নিজ সকল পরিত্যাল করিতে বাধ্য হইলেন। 'পাতাল ভেলী রাজার' মূল রহস্য ভূগর্ভের যে তিমিরে সে তিমিরেই রহিয়া গেল।

কিন্তু কে বলিতে পারে—এই অগনিত স্থানিয়ে এই পাতাল গৃহের গুপ্ত কক্ষে পাতাল ভেদী রাজার' কোনও অজানিত পরিচয় পত্রে বাদল৷ ইতিহাসের কোনও অজাত পৃষ্ঠা লুকাগিত আছে কিনা!

এ অধিনীকুমার সেন।

## মৃত্যু বরণ।

( > )

শার ভো তালো লাগ্ছে লা গো, বরণ করবো মরণকে!
বিষয়িত তরা আাতে মরা কাল কি রেপে জীবনকে!
ওগো বন্ধ ওগো আমার—
নমর বুঝি হোলো যাবার!
বৈশাট এবার চুকিয়ে দেবার চাইগো লেবের মিলনকে!
আার প্লক্ষেত্র সুক্ষেনা—বরণ করবো মরণকে!

( ২ )
কালার মত কাঁহতে পেলে হাকা হোতো হলগটি!
হট্টটি আরি সর কি প্রাণে যখন পাবার সময়টি!
চাওয়ার পানে ছুটে ছুটে,
মর্ছি বিবম কাঁটা ছুটে,
হৈবের অংল চাইতে হোলো চরম পাওয়ার বিষয়টি!
হট্টটি আর সর কি প্রাণে যখন পাবার সময়টি!
( ৩ )

বার মেবের মত আর তো নীল পগনে ঘ্রবো না!
কো?লা রাতে পরীর সাথে হাওরাতে আর উড়বো না!
কালো মেঘের মত এবার,
উঠ্বো কেগে চমৎকার,

বিশ্বলোকের প্রাণের অভাব না প্রিয়ে ছাড়বো না! ক্রিক বৃত্তি কর্বো এবার, অনাস্টি রাণ্বো না। ( 8

यनिमछा (पथ्रम आवात गर्कारवा (गा गर्कारवा!

नो यात एक वस्र थाना मृद्यू ह वर्कारवा!

एम (पत्र आना मृत कतिरक,

धवात आगि हारू यितरक,

विक्नी-आला आनित्र यत्रात भाभरक छोवन हम्कारवा!

नवरक (मार आनिकिरत मस्मूरत पूस यारवा!

( ¢ )

এস আমার শীতল হাওয়া, পুলক দিতে চিততে; জান্ছো বিহে হুদ্য দিয়ে চাইছি প্রাণের বিভকে!

কুলের পালে চুমো খেরে,
বন্ধু এস গন্ধে থেরে,
কেমন কোরে কেল্বে ছিঁড়ে নিবিড় প্রেমের বাঁধনকে!
মর্লে কড়ু প্রেম মরে না—এম্নি জেনো মিলনকে!

( 6 )

বিন্ধু বিন্ধু হোরে বধন মিশ্বো অসীম সিকুতে, তথন পাৰো বৃক্টি ভোরে, হার কি মিলন বন্ধুতে ! সলাই তথন মিলন-সুখে,

চেউগুলে৷ সব নাচবে বুকে, গাইবো তথন যে সব গীতি গুন্বে জগৎ উলাসে! আর পারিনে এসো প্রিয়ে বুক ফাটে গো উচ্ছাসে!

विषठीव्यनाम च्हानार्ग।



১০ বর্ষ

অগ্রহায়ণ ১৩২৭

৭ম সংখ্যা

# ভারতের আর্য্য ও অনার্য্য।

চতুর্থ প্রস্তাব—ভারতীয় মত, দ্বিতীয় অংশ।
ক্রমশঃ সমাজে বর্ণভেদ উত্রোভর ব্রম্প হইয়া গেল।
ত্ত্বপ এবং কর্মালুসারে বর্ণভেদ হওয়া দূরে থাকৃক,
প্রত্যেক বর্ণের জন্ত পৃথক পৃথক কর্মানির্দিষ্ট হইয়া গেল।
মূল চারিটী বর্ণের মধ্যে পরস্পর বৈধ এবং অবৈধ যৌম
সন্মিলনের ফলে শত শত উপজাতির স্থাই হইল এবং
প্রত্যেক জাতির পৃথক পৃথক "জাতীয় ব্যবসা" নির্দিষ্ট
হইয়া গেল। আন্ধণের যাজন,অধ্যাপনা এবং দান গ্রহণ,
ক্রিয়ের রাজ্যপালন এবং যুদ্ধ, বৈশ্যের কৃষি, বাণিজ্য,
পশু পালন ও কুসীদ এবং শ্রের পক্ষে দ্বিজ ত্রিবর্ণের
সেবা এবং নানাবিধ শিল্প কার্য্যের ব্যবস্থা হইল।
ক্রার্যার অন্থলাম বিলোমাদি, উপায়ে ভিন্ন ভিন্ন বর্ণর

তাহাদেরও প্রত্যেকের জন্ত বিভিন্ন প্রকার জীবিকার ব্যবস্থা বিধিসদ্ধ হইল। মনুসংহিতার দশম স্বাধারে এইরপ বিভিন্ন বিভিন্ন জাতির দীর্ঘ তালিকা এবং তাহাদের প্রত্যেকের জীবিকার বিভ্ত ব্যবস্থা বর্ণিক ইইয়াছে। সমাজের এইরপ স্বব্দা হইতেই ক্রমশার্গ ক্রপতের স্কর্টম আশ্চর্যোর বিষয় ভারতের "ক্রান্তি ভেন্ন" প্রধার প্রবর্তন হইল।

আমরা পূর্বে দেখিলাছি যে শাস্ত্রের ব্যবস্থা এইব ছিল না,—অর্থাৎ প্রথমে সমাজেও জাভির বা জীবিকার এত কড়াকড়ি ছিল না। বৈদিক নিক্লুকার যায় আই এক ঐতিহার পরিচর দিয়া বলিরাছেন যে ক্লুবশীর শস্তুম মহারালার জ্যেষ্ঠ সহোদর দেবাপি অবি এবং কনিষ্ঠের পুরোহিত ছিলেন । মহাভারতেও দেখিতে

"দেবাপিশ্চান্তিবেশঃ শন্তপ্নত কৌরবৌ ভাতত্তে
বভ্বত্ত.....দেবাপিত্তপঃ প্রতিপেদে। ভদ্বাচ দেবানি
পুরোহিতত্তেহসানি যালয়ানি চ বেতি।" (২।১০)

নাওবা বার বে দেবাপি আদ্ধণ্য লাভ করিয়াছিলেন † ; ধনন কি থক সংহিতায়ও এই ঐতিহ্যের সংবাদ আছে কিয়া পভিতেরা বনেকরেন ‡। আর ফর্র্ড্রংশীর রাজা ইয়াবের বজে পৌরহিত্য লইয়া বশিষ্ঠ থবির সহিত কিয়া বংশীর রাজ্যি বিধাসিত্রের ঘোরতর হন্তের কথা বৈশিক্ষ এবং পৌরাণিক সাহিত্যে ধুবই প্রায়ক্ত

কোন শুনির প্রাচীন কালে রামণের জীবিকা বিশ্বন্থ করিলে তিনি রামণই হইরা ঘাইতেন, অর্থাৎ মুণ্ড কর্মের বারা হীন বর্ণের ব্যক্তি উচ্চবর্ণে উরীত ইতিকন, ইবার ব্যবহা এবং দুটাব্যের উল্লেখ আনহা পূর্বেই করিরাছি। এবন, স্যাকে বর্ণ এবং জাজিতের ইচ হইলে নুতন নির্ম এই হইল যে কোন বর্ণ ই ক্রমের্ণের হতি অবলয়ন করিতে পারিবেন না; এবং ক্রমের্ণাল করিতে হইবেন। তবে, আপৎকালে, অর্থাৎ ক্রমের্নালা নির্বাহ করিতে অপারপ হইলে উচ্চবর্ণের ব্যক্তি নির বর্ণের রভি অবলয়ন করিতে পারিবেন, ক্রমের্ণ বিশ্বান রহিল বটে, কিন্তু নির বর্ণেরকেহ

্ৰ "বিদ্বাপক রাজবির্দেবাপিক মহাতপা। ু ব্ৰাহ্মণ্যং কৰবান্যতা বিখামিতভগাম্নিঃ॥"

মহাভারত, শলপের্ন, ৪০ অধ্যায়।

 শুলাটি বেশো হোত্রস্থিনিষীদন্ দেবাপির্দেব

্ট**্ৰ "আটি বেণো** হোজয়্যনিষীদন্ দেবাপিদেব **বিষ্টিং চিকি**খান্।" ঋক্ধংহিতা (১০:৯৮৫)

শ ৰক্সংহিতার ০য় মগুলের ৫৩ হক্তে বশিষ্ঠ ঋষির ক্রীভ বিশামিতা ঋষির অভিশাপ বর্ণিত হইয়াছে। এইখাছ এখনও বশিষ্ঠ গোতের ত্রান্ধণেরা ঐ হক্ত পাঠ ক্রায়েন না। শৌনকীয় রহদেবতার ঐ নিবেধের পরিচয়

্রেবাবেবাপ্ত তাঃ প্রোক্তা-বিত্যাকৈবাভিচারিকাঃ। বিশিষ্ঠান্ত ন শৃঞ্জি ভদাচার্যাকসময়তম্ ॥ ক্রিকাক্ষ্রবাদ্বাপি মহান্দোবঃ প্রজায়তে॥ ২৪॥"

विश्वकाषध्य ।

উচ্চবর্ণের বৃত্তি অবলখন করিলে, রাজা তাহাকে গুরুতর
কণ্ড, (এমন কি প্রাণ কণ্ড পর্যান্ত) দিবেন এইরূপ শাল্লাজ্ঞা
প্রচারিত হইল। আর, প্রাশ্বণ সকল লাতির শ্রেষ্ঠ এবং
শূল সকলের হেয়, এই নীতির প্রতিষ্ঠা হইল। শূলের
প্রতি সে কালের সভ্য আর্যাসামাজিকগণ যেরূপ
ব্যবহারের প্রমাণ রাখিয়া গিয়াছেন, এরূপ কঠোর
ব্যবহারের প্রমাণ রাখিয়া গিয়াছেন, এরূপ কঠোর
ব্যবহারের প্রান্ত পৃথিবীর অক্তন্ত প্রকৃতিই বৃজিয়া বাহির
করা কঠিন। ত্রাক্ষণের শ্রেষ্ঠ এবং শ্লের হেয়্র সম্বদ্ধে
আমরা সংক্ষেপ কিছু প্রমাণবাক্তেরে উরেণ করিতেছি।
অক্ত শ্রুতি অক্রা প্রাণাদির উরেণ না করিয়া সর্বদেশে ও
কর্মকালে শ্রিশ্বলাতির মহামাননীর এবং অপেকার্কত
উদার মহ্ন মহারাজের আলেকেরই পরিচয়্ব দিতেছিঃ—

थ्यंपम, ज्याकरणत (अर्थेष नच्यक्---

"ব্ৰহ্মার উভমান্ধ ( মুখ ) হইতে উদ্ভব, সকল বর্ণের প্রথমে লাজ, এবং বেদজ্ঞান নিবন্ধন ব্রাহ্মণ সমুদান্ধ লগতেরই কর্মতঃ প্রভূ।" ১০। স্ট পদার্থের মধ্যে প্রাণিগণ ক্রেচ, প্রাণীদিগের মধ্যে বৃদ্ধিমুক্ত প্রাণীদাগের মধ্যে বৃদ্ধিমুক্ত প্রাণীদাগের মধ্যে মুখ্যা প্রেচ, বৃদ্ধিমান, প্রাণিগণের মধ্যে মুখ্যা প্রেচ এবং মুখ্যা দিগের মধ্যে ব্রাহ্মণ প্রোণিগণের মধ্যে মুখ্যা কিছু আছে, তাহা সকলই ব্রাহ্মণের, ব্রাহ্মণের মহুত্ব স্বর্ধাপেকা অধিক; এইজন্ম-সংগারের সকল সামগ্রীতে ব্রাহ্মণেরই অধিকার। ১০০ এ প্রথম অধায়ে॥" \*

"জগতে মতরূপ অপরাধ মাহুষের করা মন্তব, সেই সকল অপরাধন্ত যদি কোন ব্রাহ্মণ করেন, রাজা তথাপি তাঁহার কথনত প্রাণ দণ্ড দিবেন না। কিন্ত তাঁহার

"উত্তনাখোদ্ভবাজৈষ্ঠ্যাদ্ ব্রহ্মণশৈচব ধারণাং।
সর্বাদ্যোবাস্য সর্বস্থা ব্যাহ্যার প্রাক্তিনাং প্রত্যানাং প্রাণিনাং শ্রেষ্ঠাঃ প্রাণিনাং বৃদ্ধিকীবিনাং।
বৃদ্ধিমৎকু নরাং শ্রেষ্ঠা নরেযু ব্রাক্ষণাং স্বাত্যাঃ ॥ ৯৬ ॥
সর্বাহ্য বাদ্ধানাদ্য বংকি কিজ্জপতীগতম্।
শ্রেষ্ঠানাভিজনেনেদাং সর্বাং বৈ ব্রাক্ষণাহতি ॥

> • • ॥" श्रथम ज्यसात्र ।

বার্দার ধনপুলান্তি সহিত তাঁহাকে রাজ্য হইতে বাহির ক্রিয়া দিবেন। ৩৮০। ত্রাহ্মণ বধের তুল্য অধর্ম প্রিবীতে আর কিছুই নাই; সেই জন্ম রাজা ত্রাহ্মণ করে করা যনেও স্থান দিবেন না।

७৮) । बहुम व्यशांत्र॥" +

"বরুণদেব দণ্ড প্রদানের কর্ত্তা, কারণ রাজগণেরও দণ্ডবিধাল বরুণই করেন; কিন্তু বেদক্ত প্রাহ্মণ সম্পূর্ণ অগতের ঈশ্বর। ২৪৫। প্রাহ্মণদিগের নিকট ইইতে যতই কোনি পিদ্ প্রাপ্ত ইউন না; রাজা প্রাহ্মণগণকে কথনই কোপিত করিবেন না; কেন না প্রাহ্মণেরা জোধারিত ইইলে সৈক্তালাত্য অশ্বনজালি গহিত রাজাকে সক্তই মারিয়া ফেলিবেন। ৩১০। যাঁহারা অগ্নিকে সর্বভ্রমান্তেন, আহাদিগকে জেগোরিত করিলে কে না নাল প্রাপ্ত ইবনে ? ৩১৪। অগ্নিকে সংস্কার করা ইউক বা নাই ইউক, অগ্নি মহতী দেবতাই বটেন, তজ্ঞপ প্রাহ্মণ মুর্থই ইউন আর বিহান্ই ইউন, মহান্ দেবই বটেন। ৩১৭। যদি প্রাহ্মণ সম্পূর্ণ কুৎসিত কার্যোও নির্ক্ত থাকেন, ভ্রমণি তিনি সর্ব্পেকারেই প্রানীর,—বেহেত্ তিনি পর্বন্ধ দেব স্করণ। ৩১৯।" মবম অধ্যার।

শ্রম্ববর্ণের মধ্যে বিশেষতা, স্বভাবের শ্রেষ্ঠতা, নিয়মের পালন এবং সংখ্যারের স্বধিকার হেডু আন্ধ্রণ সর্ববর্ণেরই প্রভূম ৩। দশম স্বধার। ৬

- † "ন ভাতৃত্ৰাহ্মণং হন্যাৎ সর্বাগাপেৰণি ছিতম্।

  য়াষ্ট্রাসেনং বহিঃ কুর্বাৎসমগ্রধননকত্ম্॥ ৩৮০ ॥

  ন ব্রাহ্মণবর্ধান্ ভূরানহর্ধো বিভাতে ভূবি।
  ভাষান্স্য বধং রাজা মনসাপি ন চিন্তরেৎ ॥ ৩৮১ ॥"

  ভাইন অধ্যায়।

এখন শৃষ্টের হেয়তা সম্বন্ধে-

শ্রের একমাত্র কর্ম ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্র এই তিন বর্ণের প্রীত মনে সেবাই ভগবান নির্দেশ করিয়া ছেন। ১১॥" প্রথম অধ্যার।

ব্রাহ্মণকে গালি দিলে ক্ষত্রিয়ের দুও একশত পুণ বৈশ্যের দেড়শত অথবা ছুইশত পণ আর শুদ্রের প্রাণদ্ভ। २७१। यनि गुज विकालिक थूर करें क्या रिनेशा मरन कहें (मग्र, তবে তাহার किহ्বা काष्ट्रिया मिए इटेर्ब, যেহেতু সে ছোট লোক। ২৭০। যদি শুদ্র শক্তা করিয়া विष्कृत नाम वा काठि जूनिया शानि (मम, जारा दहेरन সেই শুদ্রের মুখে অগ্নিবর্ণ জলত লোহময় দশালুল শী ( भिक ) अदयन कत्राहेश किरत। २१>। विक मूल मूल করিয়া ব্রাহ্মণকে ধর্ম সমস্কে উপদেশ দিতে আসে, রাজী তাহার মূথে ও কানে ফুটন্ত তৈল ঢালিয়া দিবার আঞা मिर्दिन। **১**१२। अञ्चल लोक रय कोन अब मित्रा শ্রেষ্ঠবর্ণের লোককে আঘাত করিবে, মন্থ বৃদিয়াছেন তাহার দেই অঙ্গ কাটিয়া দিতে হইবে। ২৭১। উচ্চবর্ণের লোকের সহিত একতা বসিবার জয় অভিথায় করিলে নিম বর্ণের লোকের ( শৃদ্রের ) কটিতে লোহা পোড়াইয়া कांग किया निकायन कल किरव अववा छाकात शंकारकर्ष

বৈঃ কৃতঃ সর্বভক্ষোহয়িরপেয়ন্ মহোদধিঃ।
ক্ষী চাপ্যায়িতঃ গোনঃ কে। ন নকেৎ প্রকোপ্যতান্

অবিঘাংশৈর বিঘাংশ ত্রান্ধণো দৈবতং মহৎ। প্রশীতশ্চাহপ্রশীতশ্চ যথাহয়ি হৈবতং মহৎ॥ ৩১৭ । প্রবং যঞ্জণানিষ্টেয়্ বর্ত্তরে সর্ককর্মস্থ। সর্বাধা ত্রান্ধণাঃ প্রমাঃ পরমং দৈবতং হি তৎ। ৩১৯ ।

नवम चशाद ।

"বৈশেষ্যাৎ প্রকৃতি শৈষ্ঠান্তিরমন্তর্কী ধারণাৎ। সংস্কারন্ত বিশেষাক বর্ণানাং ব্রাহ্মণঃ প্রভু: ॥ ৩ ॥

मनम अकाहि

श्राह्य) अक्वारत काणिता निरव । २५० ।" बहेम अधात । "যদি অন্তাজ ( শুদ্র ) নিজের ছই হাত দিয়া শ্রেষ্ঠ সিবের (ব্রাহ্মণকে) লোককে মারিবার জন্ম তাহার আখার চুল ধরে, তাহা হইলে রাজা নিশ্চিত মনে উহার वार्च की। काणादेश निरंपन; अवश्यन तम अकरन क्षिण मित्रा आद्यारणत शमचत्र, माष्ट्रि, धीरा व्यवता আছকোৰ ধরে, তাহা হইলেও তাহার ঐ ছুইহাত क्रिकेश मिर्वन। ২৮০। ব্রাহ্মণ ভিন্ন অন্য কেহ 🌉 দি পরস্ত্রীর (বিবাহিতার) সতীব নষ্ট করে (বল পুর্বক হৈটক বা না হউক ) তাহা হটলে তাহার প্রাণদত ছওরা কর্তব্য; বেহেতু চারিবর্ণের লোকের পকেই বিশ্বনীয় দ্রব্যের মধ্যে পত্নী সর্বশ্রেষ্ঠ ৩৫৯। কোনও द्वीमदर्श्व क्या। (अदिवादिछा) यपि (कान छे ९ इंडेड व अस्ति शुक्रावत (भवा (वा किठात) करत, जाहा श्रेल देनहें कमान जाएं। कान भाष्ठि इटेर ना ; किन्ठ यन ক্ষ্যা কোন হীন ধর্ণের পুরুষকে ভল্মা করে, তাহ

শ্রেক্ষের পৃথক্ত প্রভুঃ কর্ম স্নাদিশৎ।
প্রভেলবেশ বর্ণানাং শুক্রবা মন্ত্রয়। ॥ ১১ ॥
প্রথম অধ্যায় ।

শৈষ্ঠং বাস্থানাকৃত ক্রিয়োদশুমইতি।
বৈশ্বাহণ্যৰ শিবং বেবা শুদ্তর বধ মইতি ॥ ২৬৭ ॥
একজাতি বিজাতীংক বচাদারুণয়া কির্পণ।
ক্রিয়োরাঃ প্রায়ে ক্রেছলং জ্বক্তপ্রভাবের হিসঃ ॥ ২৭০ ॥
নামলাতিগ্রহং থেবা মভিজোহের কুর্ব ভঃ।
বিশেপ্যাহরোময়ঃ শুদ্রর লনাতে দশাকৃনঃ ॥ ২৭২ ॥
বর্ষাপ্রেশং দর্পের বিপ্রানামত কুর্ব ভঃ।
ভর্তবাসেচকেন্তেলং বক্তে প্রোত্রে চ পার্বিঃ ॥ ২৭২ ॥
বেন কেন্চিদদেন হিংভাচ্চে জ্রেইমন্তর্জঃ।
ক্রেয়ার ভর্তবাস্ত তন্মনো রক্ত্রাসন্ম্॥ ২০৯ ॥
নামান্যভিপ্রেপ্রেক্ত ক্রিভাচে বাহ্যাববর্ত্রের ॥২৮১।
ক্রিয়ারভাভোনিব্রিঃবিভাচে বাহ্যাববর্ত্রের ॥২৮১।
ক্রিয়ারভাভোনিব্রিঃবিভাচে বাহ্যাববর্ত্রের ॥২৮১।

ভাইলে আর সে এরপ করিতে না পারে এইরপ ভাবে ভাইকে সংযত করিয়া গৃহে রক্ষা করিবে ৩৬৪। যদি কোন হীন বর্ধের পুরুব (পুরু) কোন উভম বর্ধের (বিজের) কন্যাকে গুজনা করে (ব্যভিচার) ভাইল হইলে তাহার বব দও হইবে কিন্তু সমান বর্ধের পুরুব হইলে পিতার ইচ্ছাস্থ্যারে গুরু দিবে। ৩৬৪। যদি পুরুবর্ধের পুরুব বিজ্ঞাতি কোন ত্রীলোকের (সেই ত্রীলোক কোন পুরুবের আশ্ররে রক্ষিতা এবং অন্তঃপুর নিবাসী হউক বা না হউক) সহিত সহবাস করে, তাহা হইলে ''অরক্ষিতা' গমনে শুরের অক্চেম্ব এবং সর্কর্ম্ব দও হইবে এবং ''রক্ষিতা' গমনে বব দও হইবে। ৩৭৪। অইম অধ্যায়। ৬

শুদ্র কীতদাস হউক বা না হউক রাজা তাহাকে

দিয়া ব্রান্ধলের দাসত্তই করাইবেন; কেননা স্বয়ং ভগবান

শুদ্রকে ব্রান্ধণের দাসত্তর জন্যই স্থাই করিয়াছেন ৪২৩।

শুদ্রের প্রস্তু তাহাকে দাসত হইতে মুক্তি দিলেও লে

দাসত হইতে মুক্ত হইতে পারে না; কারণ দাসত্ব

তাহার স্বান্ধাবিক, ভাহা হইতে কে ভাহাকে উদ্ধার

করিতে পারে ? ৪১৪। ব্রান্ধণ নিশ্চিত্ত চিত্তে শুদ্রের

সম্পত্তি লইরা অংগিবেন, কারণ উহার ধন সম্পত্তি কিছুই

নিজের নাই, সকলই স্বানীর (ব্রান্ধণের)। ৪১৭।

অন্তর্ম অধ্যায়। \*

\* "(क त्नेच् गृङ्करा वर्षो (इमरवम्बिष्ठा त्र स्व । भाषाया माजिका सार्ष्ठ औवा द्वार व्यव हु ॥२५०॥ च्या च्या चार्षे व्यव व्या व्यव चार्षे व्या । इच्छा चार्षे वर्षा चार्षे व्या चार्षे व्या । च्या च्या चार्षे च्या चार्षे व्या । च्या चार्षे व्या चार्षे व्या चार्षे व्या । च्या च्या चार्षे च्या चार्षे चार्षे । च्या च्या च्या चार्षे चार्षे व्या चार्षे व्या । च्या च्या च्या चार्षे चार्षे चार्षे । च्या च्या च्या च्या चार्षे चार्षे । শ্বাহারা লড়বন্ত সহারে ( তাল পালা ইত্যাদি হারা )
কিবো প্রাণীদিগের হারা (বোড়া বা বাড়ের দৌড়;
বোরণ প্রকৃতির বৃদ্ধ ইত্যাদি ) জ্বা থেলিয়া অর্থোপার্জ্ঞন
করিয়া থাকে; কিবো অপর কাহারও হারা করাইয়া
( অর্থোপার্জন উর্দ্দেশ্রে) থাকে রালা তাহাদের সকলকেই
দৈহিক দও বা খ্যদন্ড দিবেন, এবং বিজচিহ্নবারী
শ্রেণণকেও এরপ দও দিবেন ॥২২৪॥ শ্রেবর্ণের কোন
হাজি যদি ইচ্ছাপ্রকি কোন ভান্ধাকে কোনও প্রকার
ক্রেণ দের, তবে রালা সেই শ্রুকে নানাপ্রকার ভরকর
শারীরিক পীড়া প্রদান করিতে করিতে বর্ণ করাইবেন॥
২৪৮॥" নব্য অধ্যায়। 

•

"অধম কাতির কোন লোক যদি উৎকৃষ্টবর্ণের আচরণীয় কোন জীবিক। অবলয়ন করেন, রাজা তাহাকে নির্ধন করিয়া নির্ধাসন দণ্ড দিবেন ॥৯৮॥ শ্জের পক্ষে প্রান্ধণের সেবাই পরম উপাদের কর্ম্ম; এই কর্ম্ম ভিন্ন সে আর যাহা কিছু করে, তাহা সবই নিম্মল।১২৩। উক্ত সেবক কে (ত্রাহ্মণ প্রভু প্রাণবারণার্থ নিজের) উচ্ছিষ্ট অন্ন (পরিবানের জন্য) জীর্শ বন্ত এবং জীর্ণ পরিজ্ঞদ এবং ভেইবার জন্য) বানোর বড় (পোরাল) দিবেন।১২৫।

শুত্রং ছু কারবেদদাস্যং ক্রীতমক্রীতমেব বা।
দাস্যাহৈব হি ক্টোহসৌ ব্রাহ্মণসা ব্যহজুবা ॥৪১৩॥
ন বামিনা নিক্টোহপি শুদ্রো দাস্যাদ্ বিমৃচ্যতে।
নিগর্গজং হি তত্ত্বস্য কন্তব্যাৎ তদপোহতি ॥৪১৪॥
- বিশ্রহং ব্রাহ্মণঃ শুদ্রাদ ক্রব্যোপাদন মাচরেও।
স হি তস্যাত্তি কিঞ্চিৎ বং ভর্ত্বার্থবনে! হি সঃ ॥৪১৭॥
আইম অধ্যাত্ত।

 শুজের পকে কোন সাপ নাই, ভাষার কোন গংগাই নাই, কোনও বর্দ্ধে ভাষার অধিকার নাই, (আর সে কিই করিলে) ভাষার পক্ষে কোন নিষেধ নাই।১২%। শুজের ক্ষমভা থাকিলেও সে কখনও ধন সঞ্চয় করিবে না। কেননা শুজ ধন পাইয়া ব্রাহ্মণগণকে অমাক্ত করিতে পারে।১২৯।" দশ্য অধ্যার। ২

"বিড়াল, নকুল, চাষপক্ষী, ভেক, কুঁছুর, গোসালী পেচক ও কাক এই সকল প্রাণীকে বধ করিলে শুক্ত হত্যার প্রায়শ্চিত করিতে হয়।১৩১। একাদশ অধ্যায় ৩।

"প্তকে কোন পরামর্শ, যজের বোম শেব অথবা উদ্ভিষ্ট দিবে না; উহাকে কোন ধর্মোপদেশ দিবে না। কিংবা কোনও ব্রতেরও উপদেশ দিবে না।৮০। বে ব্রাহ্মণ শূতকে কোন ধর্ম অথবা ব্রতের উপদেশ দেন তিনি সেই শুজের সহিত অন্ধকারময় "অসংবৃত" নামক দরকে গমন করেন।" ৮১। চতুর্ব অধ্যাম। ৪

(या लाजानधाम काणा की त्वर उदक्षेकर्पाणः।

छर बाका निधानर क्या कि श्रास्य श्रवानर प्रदेश ।

विश्वराने त्वर ज्वा कि श्री कर्प की छा छ ।

यम जाशा कि क्यर छ जर्जवणामा निक्तम ॥ > २०॥

छि व्हिंदेम ब माजवार की नेशिन वममानि छ ।

भूमाका निक्व माजनार की नेशिक व महिल्ल माः ॥ > २०॥

मामाधिकाता सर्पार्श्व न स्थार श्रीज्यमा ॥ > २०॥

मामाधिकाता सर्पार्श्व न स्थार श्रीज्यमा ॥ > २०॥

मामाधिकाता सर्पार्श्व न स्थार श्रीज्यमा ॥ > २०॥

मामाधिकाता वा मामाधिकाता वा मामाधिकाता ।

मुर्का विश्वनमामामा जांका ना स्वर्थ मान्य स्था ॥

ৰাৰ্তায়নকূণী হলা চাধং মণ্ডুকমেবচ।
খগোৰোলুক কাংশ্চ শুত্ৰহত্যা ব্ৰতং চয়েও ॥১৩১॥
একাদশ প্ৰায় ।
নশ্ভায়মতিং দ্লাৱোজ্জিং ন হৰিষ্কৃতম্ ।

मन्सात्रमाजः वन्तारताः ऋडेर न स्वकृत्यः। न जारमाभविष्यम् सर्यः न जामाळकमाविष्यः॥৮०॥ maeige 3029

न्यवर्शन छनन बहेन्न नावशान क्वन माळ मण्ड् वेदानारकार व्यक्तानिक जारा मारः चि जनर व्यक्तान नारकर न्यापति छनन करेन्न, जर्पना व्यक्तारंगकाल व्यक्ति मिलून नारदात व्यापन विद्यारका। नारका परित व्यापना जारात छनान व्यक्तिमाम ना। न्राक्ति महिल क्षत्रिक्त महिल विनाम वित्रां नारका वाला व्यक्ति क्षत्रिक्त महिल विनाम वित्रां नारका वाला व्यक्ति क्षत्रिक्त महिल विनाम वित्र व्यक्ति, व्यक्तार कारात महिल मठा मठा कार्यन वित्र व्यक्ति, व्यक्तार कारात महिल मठा मठा कार्यन वित्र व्यक्ति, व्यक्तार कारात महिल मठा मठा कार्यन

বোঁ হাসা ধর্মমাচটে ৰে৷ শৈরাদিশতি ব্রতম্। নোহনং বৃতং নাম তথঃ সহ তেনৈব মার্জতি ॥৮॥ চতুর্ব অধ্যায়।

শক্তিরং চৈব সর্গং চ বাধাণং চ বহুপ্রতম্ ।
নাবৰক্তে বৈ ভূক্ং কশানপি কলাচন ॥ ১৩৫॥
শতবাগং হি পুক্ষং নিদ্ধি দ্বমানিতম্ ।
ভূকাদেভএরং নিভ্যং নাব্যভেত বুছিমান্ ॥ ১৩৬॥
চতুর্ব অধ্যার ।

े मारुवम क्यागुडाणि नारुक्ताः वस वर्षाण। विस्तृत्वाः ह गरमूक निष्ट् हासूबवर्षाण । ७२२ ॥ শাৰর পূর্বে দেখিরাছি বে ক্ষজির, বৈশ্র ও পূরা বর্ণের ব্যক্তির বৃত্তি এবং ওণের ফলে প্রার্লণাদি বর্ণে উঠিয়া গিয়াছেন। ক্রমে চারিবর্ণ এবং ক্ষলা ভাতি ভেদের কঠিন বৃত্ত প্রস্তুত হইলে নিয়বর্ণের লোকের আর উচ্চবর্ণের কর্মে অধিকার রহিল না। অধিক ক্ষি ক্ষজিয়ের পক্ষে ও প্রাক্ষণের বৃত্তি একেবারে নিবিদ্ধ হইল, ব্রাঃ—

''আপং কালে ক্ষাত্রির বৈশু রৃত্তি কৃষি বাণিল্যাদি জীবিকা অবশ্যন করিতে পারেন, কিন্তু রাহ্মণের কৃতির কথা কখনও মনেও জানিবেন না।'' ১৫। দশ্ম অধ্যায়। ‡

অবন্ধ, প্রাচীন কালের নিয়ম ছিল যে উৎকৃষ্ট জীবিকাশ এবং কার্যোর দারা নিয় বর্ণের লোকের যেরূপ উন্নতি শুইত, তক্রপ জারূণ শ্বীনবর্ণের বৃত্তি অবলম্বন করিলে শুসই শীনবর্ণে অবনমিত হইরা যাইবে। বস্থু বলিয়াশ্লেন যে জারূণ মাংস, স্বণ ও লাক্ষা বিক্রম করিলে স্বাঃ পভিত, এবং ছ্ক বিক্রম করিলে তিন দিনেই শুক্রম প্রাপ্ত শুইবে। ৯৮। এবং অভাত্ত পণ্য দ্বোর বিক্রম করিলে সপ্তরাজের পর বৈশ্ব হইয়া বাইবে। ৯৩।" দশ্ম অধ্যায়। §

কিন্তু এখন ব্ৰাহ্মণ স্কাৰ্য্য ক্কাৰ্য্য যাহাই করন না কেন,তাহার সাত খুন মাপ হইবার নিয়ম হইল। বে মছু পূৰ্ব্বে বলিয়াছিলেন যে, কাৰ্চময় হন্ত্ৰী, এবং চৰ্মময় মুগ বেরূপ নাম মাত্র হন্ত্ৰী ও মৃগ মাত্র, (কিন্তু বন্ধতঃ হন্ত্ৰী

‡ कीरवरणस्य दाककः मरविशासमान्यश्रास्यः। म (चवकाध्रमीर दर्शिमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसमान्यसम

मन्य ज्यशात्र।

§ স্দ্যঃ প্ততি মাংসন লাক্যা লবণেন চ।
ত্রোহেণ শ্রোভবতি ব্রাহ্মণঃ দীর বিক্রয়াৎ ॥ ৯২ ॥
ইতরোবাং তু প্র্যানাং বিক্রয়াদিক কাম্ভঃ ।
ব্রাহ্মণঃ স্প্রাত্তেশ বৈশ্বভাবক নিৰ্ম্মতি ॥ ৯৩ ॥

व्यवता मृग मटर, ) छक्तभ मूर्व वाक्रम७ टक्वन वृथा नाम সর্বাস্থ বাস্থ্য বাজ। ১৫৭। নপুংসকের স্ত্রীসক বেরপ নিক্ষা, থাতীর সহিত পাতীর সলম বেমন বুণা, অক ব্যক্তিকে দান করা যেরপ, বেদে অনভিজ্ঞ বিপ্রও इनरेक्क्स विकल बाखा > १४ । (व विक दवन गार्ड ना করিয়া অভ বিবয়ে পরিশ্রম করেন, তিনি লীবিত কালেই नवश्य नीयरे प्राप शास रहेता पारकत । ১৬৮ । विजीव অধ্যাদ্র"। সেই মকু সংহিতারই স্বাবার পাওয়া যাইতেছে, 'खांचन चनानमा मारे कक्रन, छिनि याक्रम मारे कक्रम অধবা নিশিত দানই গ্রহণ করুন, কিছুতেই তাঁহার দোষ হরদা, কারণ তিনি অধির বারা উত্তপ্ত জলের ভার ?। ১০৩। বে বান্ধণ প্রাণরকার ব্যক্ত বিব্রত হইয়া যে সে दीन भौतिका अहन करतन ; आकान रायन शरक पृतिक হরমা.-তজ্ঞপ তিনিও পাপে লিপ্ত হন না। ১০৪। अनेय जशाय।" \* जावात क्लित धर्म क्षेत्रका शतानत वि माजा हफ़ारेश विमालाहम,—"बाक्षण विम इःमील छ হন, তথাপি তিনিই পুলনীয়; শুলু বিতেমিয়ে হইলেও নে পুলা হইবে না; কে ছুটা গাভীকে পরিত্যাগ করিয়া

"বধা কার্চময়োহন্তী বধা চর্ময়য়োয়ৢগঃ।
বদ্ধ বিপ্রোধীবানয়য়য়ে নাম বিত্রতি॥ ১৫९॥
বধা মন্টোহকলঃ জীয়ু য়ঝাগোগবি চাফলা।
বধা চাজেহকলং দানং তথা বিপ্রোন্চোহকলঃ॥ ১৫৮॥
বোহনধীতা বিলো বেদমক্তর কুকতে শ্রময়।
স্কীবয়েব প্রথমান্তগছ্তি সাবয়ঃ॥ ১৬৮॥
বিতীয় অধ্যায়।

নাধ্যপনাদ্যাজনাদ্যা গহিতাদ্যা প্রতিগ্রহাৎ।
দোংখা-ভবতি বিপ্রাণাং জ্বলনামুসমা হিতো ॥১০৩।
জীবিজ্ঞান্তায়মাপরো যোহর সন্তিবতন্ততঃ।
জাকাশ্মিব প্রেন ন স পাপেন নিপ্রতে ॥ ১০৪॥"
দশম সধ্যায়।

সুশীলা পদতিকৈ দোৰণ করিতে বার ।" ৩২। অটন অধ্যার। †

बाक्त क्रमणः चार्रामगाच्य चार्यमात्र व्यक्तिशिक्ष चुक् वाषादेश "वर्गकरमत आकारे एक" এই चारमध जानारेका निःभक रहेबार्छन । भृत्यद वर्गना **(एपिका म**्र इम्र (य, कारन मृन्छः जादा जन्म कर्नामार जनमञ् मुंखात नरवा। अछाउ कम दहेता नित्राहिन अवर अनावा সহাসাগর হইতে উদ্ধৃত কৃতক শুদ্রের হারাই আর্থাগণ্য সামাজিক সর্বপ্রকার সেবা চলিতেছিল। সেই স্কল শ্রের সভাতার তর আধুনিক কোল, ভূমিল, মুডা, সাঁওতাল এবং ধন্দ প্রভৃতি বছ অধবা প্রতীয় জাতিব্যুহের সভ্যতার ভর বপেকা অনেক নিম্ন ছিলঃ শিকা ও ধর্ম যে কি পদার্থ, তাহার কোনই মংকেড ভাহাদের মধ্যে দেখিতে পাওয়া যার না। পাত্রকারপথ **এই नकन मछाद्रछ वन्नश्छीद्देक स्व अकृरिय** আর্য্যসভাতার শৃত্রণ পরাইয়াছেন, তাহার বিবরে চিত্রা করিয়া দেখিলে ধবিদিপের কৌশলের চমৎকারিছ এবং বৃদ্ধির প্রাপার দেখিয়া বিশিত হইতে হয় 🖟

বন্ধ ও পার্কাভীর জাতি সকল এখনও আছে, তর্মান্ত ছিল। সভ্যজাতির সহিত তুলনা করিলে তাহালের শরীরের গঠন, মুখের এবং মন্তকের আকৃতি, চল্পুই বিশেব আকার, ও দেহের বর্ণ ইত্যাদি বাহ্য শভাষ যেমন পৃথক ছিল, তাহাদের আন্তর শভাব চরিত্রেরও তজাপ বিশিষ্টতা ছিল। কত শত শত বুল শতীক হইয়াছে, ভারতের রাজনৈতিক এবং সামাজিক কেন্দ্রে কত প্রবল পরিবর্তনের প্রভাব দৃঢ় ভাবে বদিয়া গিয়াছে, তথাচ এখনও সভ্যের সহিত অন্ত্রের সমতা সাহিত হয় নাই। সে কালে এই পার্থক্য যে কত অধিক ছিল, তাহা সংগ্রেই অন্থনেয়। আমরা রাজনৈতিক প্রধা

† "কুঃশীলোধাপ বিজঃ পূজ্যোন শুজোনিজেতিরেঃ। কঃ পরিভাষ্য তৃষ্টাং গাং ক্রেচ্ছীলবলীং ধরীম্ ? ॥ ৩২ ॥ পরাশরগৃংহিতা, আইম অধ্যায়। বৃষ্ণ নৈতিক সংকার প্রার্থীর চকুতে এই সকল সমস্তার
প্রতি বৃষ্টি করি নাই। আমরা কেবল মাত্র আর্থ্যজাতির
পত্যক্তর বিকাশের,—উরতি অথবা অবনতি—প্রতি
করা রাখিরা এই সকল তথের অনুশীলন করিরাছি
করা নেই লক্ষাকেই মনে রাখিবার জন্ত প্রোত্বর্গ ও
শাইক মণ্ডলীকে সাগ্রহ অনুবোধ করিতেছি। ত্রাক্ষণের
ক্ষাত্যাচার অথবা শ্তের নির্ধাতনের চিত্র কেন স্থতিলাত্তর
ক্ষাপ উজ্জলবর্ণে লিখিত হইরাছে, সমান্ত তথের ইতিহাস
বীহারা অধ্যয়ন করিবেন, তাঁহারা উহার কারণ
ক্ষাপ্রদান করন।

্ঞাচীন নার্যাশান্ত্রসমূহে "বর্ণ" শব্দটি বার বার লিখিত ब्देशर्ड रहिंदिङ भाख्या यात्र । "वर्ग" मरक्त वर्ष "वृक्ष" এবং এই "এড়" কেই কেহ কেহ ব্ৰাহ্মনাদি বৰ্ণের ছোতক শবিষা মনে করিয়াছেন। মুরোপীর পণ্ডিতবর্গও এই ্ৰীৰ্ড্" বা "colour" এর কথার উপর খুব প্রীতি প্রকাশ ক্ৰিয়াছেন ৷৷"আৰ্য্য" ভাতিবা বে চিরকানই খেতকায়,— এই তদ্ম যুরোপীয় পণ্ডিভেরা 'বড় প্রশাব সহিত ব্ৰিয়াছেন এবং বেহেতু ভারত বঙে সভাতি বিভন্ন देवे कांत्र मञ्च मञ्चारायय अक श्रकांत्र क्रांत प्रियाह. কাই তাঁহারা ভারতবাসী উচ্চপ্রেণীর "হিন্দু" জাতির ও "বিশুদ্ধ আর্যান্ব" স্বীকার করিতে চাহেন না এবং যে **अस्तिमंत्र छन्तालित वर्ग यछ कान (न (मर्गत लाकरक छाराता एड व्यक्ति शतिमार्गः 'व्यनांग इहे" विद्याहर्त ।** दक्रवन बुद्धांभीत পভিতের। একথা বলিলে आমাদের बिरमद कठि छिन ना ; किन्तु जांशास्त्र "शलाकर्ज" वा "ৰান্দ পুত্ৰ" খদেশী আহ্মণ সন্তানও যে তাঁহার খলাভির লর নারীয় মুখে বর্ণ সাকর্যোর কালি পুর ঘন করিয়া बांबारेश निशाहन,-अयन कि बागमात्मध बगाइि দেশ নাই:—ভাই আমাদের বড় কোভ হয়। "দ্রবিভূ", "ব্লোন" ও "নক" প্রভৃতি শব্দ শুনিরাই বে মুরোণীর क्षेत्र ७ डीबालन समीव नियालन मत्न "बनार्ग्यकर" कांत्रा कानिता উঠে :-- क्रिक्ट विठात वर्षका विव्यक्ता मा

कतित्राहे कित भवानिक देवाने बाक्यरम् व्यवदा आकरः वरदम "बानार्ग त्मानिक गरंधह" बौकात कृतित्रा रमनी विरमनी खादात क्षकात कृतित्रा रमन, खादारकहे व्यानारमञ्ज् व्यानिक।

वाहा रुके "वर्ष" मर्क्य "बढ्" वर्ष महेन्रा मार्ख विठात विरयजना पृष्ठे हरेशा थारक । शूर्स अखारव वाबू बदः उन्नाक भूतात्वत छेड्ड अमार्य नामना स्विताहि द क्रजिरवत वर्ष ब्रक्कवर्ग, रेवरश्चत्र शौष्ठ वर्ग अवः भूरस्रवः कृत्क वर्तत क्यात छेत्रथ चार्छ अवः महाजात्रजीत मास्तिन्तित উদ্ধৃত আমাণে উক্ত মতের প্রতিবাদ করা হইয়াছে। ফগভ: শান্তে ভাকণের বর্ণ খেত, ক্ষতিয়ের রক্ত, বৈশ্রের পীত এক শুদ্রের রুঞ্বর্ণের কথা পাঠ করিয়া সে কার্গে व्यानक विक वाकित्र मान मान्यादत छेनत रहेता किन। আৰু কালকার ইংরাজী শিক্ষিত ছাত্র বেষন গুরুর মূৰে গুনিতে পায় যে বিশুদ্ধ খেতকায় আৰ্য্য নৱনাত্ৰীয় সহিত कुक्ष्वर्व व्यनार्या नवनावीव योन निवास्त्र करन ক্ষত্রিয়াদি নিম বর্ণের লোকের দেহের "রঙ্ ধারাপ" इहेग्रा निग्राष्ट,--वर्षा क्रकनाम পরিমাণের ভারতন্যামুগারে ক্ষত্রিয়াদির দৈহিক বর্ণের তারতম্য ঘটিয়াছে ;- এবং এইরূপ তব শুনিয়াই ভাহারা मुख्डे दरेश यात्र ; (म कारनत हार्विता अठ महरन मुख्डे হইতে পারিত না। আর্ব্য ত্রৈবর্ণিকের মধ্যে অফুলোম विवादित श्रेश नाम माज पाकिरमञ्ज त्मकारम "বর্ণসাধ্যা কে" লোকে বড় ভয় করিত,—একথা সকলেই कानिक : व्यवह, जिमारक डेक्टवर्लिव मरवाल कुक वर्लिव লোকের অভাব ছিলনা; স্বতরাং বর্ণ বা "রঙ্" দইয়া काठिएसम्ब निकार्य जादारम्य मन छेठिल ना। जामदा नकरनरे बानि रव तचुवःभावतःभ वीताबहत्व, यहवःभीव **बीक्षक्रम अवः कृद्रवः भीश व्यक्तित वर्ग (यस वर्शन) वर्क** ছिलना, পরস্ত ভামবর্ণ বা কৃষ্ণবর্ণ ছিল, এমন কি অপাধারণ त्योक्यानानिनी त्योलमी त्वती,-वादादक छाहात सालव প্রাথব্যার জন্ম মহাভারতের অবি--'নিখিল ক্রিয়ের

শংসরশিনী' ভাষ্যা দিয়াছেন,—এবং বাহাকে দেখিবা ৰাত্ৰ বুৰিটিবাদি পঞ্জাভাষ্ট মনে মুগপৎ দারুণ লালসার উদয় হইরাছিল \* তিনি নামে ও গুণে' কুকা ছিলেন। শ্বিদিশের মধ্যেও অনেকেরই "রঙ্'' কাল ছিল। এইরপ নানাবর্ণের লোকই আহ্নণ ক্ষত্রিরের মধ্যে দেখা ৰাইন্ত। তাই তবিজ্ঞপুরাণের শ্ববি বলিরাছেন,—

"त्यथं, खाक्षण मार्र्जित वर्ग हर्स्वत क्यांच्यात मह स्वन नरह, व्यथना क्रिक्त मार्र्जिह किश्क भूरणेत मह बक्तन नरह, व्यथना देनस्थात हित्रहाल हित्रहाल मह भीज नरह किश्ना म्राज्जाल व्यक्तात्वत मह क्रिक्षन नरह 1851 कि हमन, कि त्यरहत व्यथना रक्तात्वत क्रिक्त क्रिक्ष हर्श्य रवाध कि स्वम्यव्या व्यक्तिमारम त्रक्त व्यथना पक्, बाहाह त्यथ, हात्तिवर्त्वत क्रिक्त मान, हर्स्व हात्वत क्रिक्त क्रिक्त व्यकार्त्व हर्हेर्ड भारत १८२। क्रिक्सांत क्रिक्त क्रिक्त ब्यकार्त्व हर्हेर्ड भारत १८२। क्रिक्सांत क्रिक्त व्यव्यक्त ब्यकार्द्व हर्हेर्ड भारत हर्हे हर्हेग्राह्म, ह्यांत क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त हर्हेन १ क्ष्मान, मृक्षेत्र, क्ष्माम बाहाह हर्हेक ना रक्त, भन्नीका हात्रा हर्हान्त श्रुव,

শহাভারত, আদিপর্কা, স্বয়ংবর পর্কাধ্যায়।
 ১৯১ অধ্যায়, পরে উদ্ধৃত হইয়াছে।

''ন ত্রাকণোশ্চল মরীচি শুক্লান ক্ষত্তিয়াঃ কিংগুক পুশাবর্ণাঃ।

ম চাপি বৈশ্বা হরিতাল তুল্যাঃ খুদ্র ন চালার স্মানবর্ণাঃ ॥৪ ১॥

পাদ প্রচারৈত্তমূর্কণ কেশেঃ স্থাপন ছঃখেন চ শোণিতেন।

ৰঙ্যাংসমেদে। হছিরলৈ: সমানা: চডু: প্রভেদ। বি কবং ভবক্তি॥ ২ ।।

স এক এবাএ পতিঃ প্রকানাং কথং পুনর্কাতিকতঃ প্রভেমঃ।

প্রমাণ দৃষ্টাক নর প্রবাবৈঃ পরীক্ষামাণে। বিষচ্ছমেভি ॥৪৫॥

স্থৃত্যাং সকলেরই একলাতি, পিতার বধন ভের নাই, তথন পুরের মধ্যে জাতিভেদ কেবন করিছ। হইবে १৪৬।" †

**এই যে नकन क्षत्र, देशांत्र क्लाम नक्छ छैलव नाहे।** चानन कथा এই द्य ''नव'' ''तबः'' अवर ''ठमः'' नारदा দর্শনের এই ভিনটি গুণের'' প্রয়োগ হেতু "খেত রক্তাদি" বর্ণের আরোপ করা হইয়াছে মাত্র। আলকারিক हिमारि हास्त्रत वर्ष रयक्रि (वड धवर क्वारवंत्र वर्ष माहिड रविमा मध्या स्य, (भरेक्श **भव खरनेत खंद**ांब श्विकात्रक (चेठवर्व, ब्राब्धा खर्गत्र "तात्र "द्यमानित्र" श्वि-চারক রক্তবর্ণ, এবং ত্যোগুণের "জড়তার" পরিচারক क्रकार्वित चार्ताल कता दहेतात्व माला। नात्व देव मन त्य व्यर्थ श्रमुक इरेग्राह, तरे मनतक तरे वार्य ना লইলে, গ্রন্থকর্তার অভিপ্রেত ভাব স্থদগত ক্টতে পারে मा। कारामाख्य "वन" देवसमाद्य अंत्रभान अविदेख গেলে লাছিত হওয়াই স্বাভাবিক। তাই ত্রামণ काखित्वत विनि भागा व्यवता नान त्रष्ट्र (मिवतात व्यामा করেন, তাঁহাকে রুরোণ প্রভৃতি অতি কটিন শীতের निवान इत्न निवा तन तम्मी माइक कावाविन शिक्टक भाराया गरेए बहेरत । छात्रात "त्रु" (मर्वित्रा कांकि চিনিয়া প্রয়ার উপার কোনও দিন ছিল না এখনও नारे।

মহাভারতের প্রশিক্ষা স্বাস্থা নারীকুল শিরোমণি কৌপদী দেবা যে "ক্ষা" ছিলেন, ভাষা বলিফাটি। একটি ক্ষবর্ণ। নারীর, অন্ত মহাভারতের রাজমন্ত্রী, প্রাপ্ত পণ কারদ্র। পঞ্চাল নগরে উপস্থিত হইয়াছিলেন এবং ভাষাকে দেখিবামাত্র রাজসমূদ্র "চ্ছেলেল্যারস্তইকাল্প

> চৰার একগাপিত্য স্থতাশ্চ তেবাং স্থতানাং ৰক্ কাভিরেকা।

এবং প্ৰজানাং হি পিতৈক এব পিত্ৰৈক ভাৰাৎ ব চ লাতিভেন্য ॥৪৬" ভবিশ্বপুৱাণ, আঞ্চলক, ৪২

TUTE !

নিনিঃ" বিশ্বর বইরাছিল এবং অধিক কি তাবার মৌলুরে বুগপং বুছিটিরাদি পঞ্চরাতার মনেই বিশ্বর বিশার উৎপর ঘইরাছিল ০, তারা ওনিলে অধুনা প্রকৃতই বিশ্বত হরতে হর। এখন আমাদের সমালে "রিহুলী" কর্মা "আমানি" বিবি এবং তাঁহাদের ধবণবে রঙ্ বিশারে বিশ্ববিভাগয়ের বিভাগিরণের আরাধনার বস্ত ইয়াছে এবং কোনও বালিকার রঙ "একটু ময়লা" ক্রিমেড এবং কোনও বালিকার রঙ "একটু ময়লা" ক্রিমেড একটা জ্পুলার উত্তেক এবং তরিবন্ধন নালিকার রুমানিক আকৃষ্ণন ঘটিয়া থাকে; অধ্বচ, এই দেশে, ক্রিছেনের উপজীব্য অলভার শান্তে স্থন্দরী শ্রেষ্ঠ 'প্রিরাশি নারীর পরিভাবা করিতে গিরা শান্তকার ধ্রীরাশেন, বে—

শুৰাৰ দৰ ভাষা কাপি চাল্যের পৌরী,'
শীৰ্মাৎ "পদ্মিনী" নারীদের কাহারও বা মীলপন্মের
ক্রিয়ের নক, এবং কাহারও বা চাঁথা ফুলের মত রঙ্"
কিঃ ক্ষাবিক কি, সে কালে, সেই অতি প্রাচীন
হৈছিক মুখে," নহাকুল প্রাণ্ড তত্ত্র এবং সভা সজনেরা
ক্রিয়াল ক্ষেত্রণ না দিলে, কাহারই কোনও কথা কেহ
ক্রিয়েক না,—সুভ্যাং প্রমাণ দিতেছি।

कानाः वि क्रभः भाषानाः विश्वाविद्यिकः यदम् । प्रमुख्याविक्यमाः छाः भर्ककृत सत्नादतम् ॥ २८॥ विद्याबद्धिः, चामिभक्तं, यशस्वत्रद्वभक्तं २०२ चनातः।

110 C 11

देवनिक बूर्ण "गर्जावान्त" मासाव दे अठिक्छ दिस्क छोदो ज्ञानस्ट छिनियाद्द्रमं, अवस्थ देखांव दिस्क निर्द्रावान् दिस्पृणिवराद्रव छेदाव ''नाम चाव्य'' ज्ञान्नस्ट नार्द्रव ''नाम माव्य' अदे सक विनायि द्वा अवक देविक वाक्रम मश्चाद्रव ( क्षणिक नार्द्र, — वाक्ष्मक्षे वाहे, — जामबा व्यव कवि मादे ) क्षणिवर्षेव अक्रक ज्ञाहीन मादे। जाद्द्रवंव अवश व्यव ग्रेडाइवम्र मृष्टि ज्ञाह्य छोदांवा ज्ञाह्य क्षणाद्रव कथाव मण्डक क्षणिवनः वाह्य क्षणिक कविद्यन। यादां वर्षक, ज्ञामवा ''गर्जावान्य' वश्चाद्रवस्त्र मण्डक मश्चाद्रव्य क्षणिव क्षणिन ''इंद्रकावगृह्य छेपनिवर' इंद्रेटल छेदाव कविद्यक्षि इ—

"यति (कर रेक्टा करतन, आयात शुक्त करूवर्व बर्छकः একটি বেদ পাঠ কৰুক, পূৰ্ণআয়ু লাভ কৰুক, তবে কুঞ্চেত্ৰ বহিত ততুল পাক করিয়া হতের সহিত প্রীপুরুষ বৃইকলে खन क्रिट्रन। >8। अथवा विन (क्ट हेन्द्र) करवम् आधात शूक किन वा निक्रम वर्ष हर्छक, इट्टी दिल नार्ड করুক, সর্বা আয়ু লাভ করুক, ভবে ভিনি এবং তাঁছার পদ্মী দৰিক্তে তণুল পাক করিয়া হতের সহিত ভোগদ कतित्वन । २८। विवि (कर देश करतन, सामात अनवर्न, বোহিত নেত্র পুত্র হউক, তিনটি বেদ পাঠ করুক, পূর্ণ আয়ু লাভ করুক, জলের সহিত তণ্ডুল পাক করিয়া ত্রতের সহিত দম্পতী ভোজন করিবেন। ১৬। বদি क्टि हैका करवन, यागांत शिख्ठा कहा रहेक अवर अर्स আয়ু লাভ করুক, তিলের পহিত ভঙুল পাক করিয়া च्राक्टत गरिक मण्यको (काक्य क्रियन : ১৭। यहि কের ইচ্ছাকরেন যে আমার পুত্র পণ্ডিত, সভার মধ্যে गमन्त्रीन, वयगुक्त, त्रकन (नारकद धामःभाषाक्रम अवर मुम्बत वानीत छ।विका इंडेक, प्रभूमात्र (वर्णत भातन इंडेक, পুৰ আয়ু লাভ করুক, তাহা হইলে মাবের দহিত ততুল পাক করিয়া ঝাষ সনামক ফীবণীয় ওয়বিকন্দ এবং স্বতের সহিত ভোজন করিবেন ॥ ১৮॥" 👟

• "न व देत्वः भूत्वा त्म खह्मा बादम्ख तम मम्बदीख

উপদ্বিশ্বত प्रदेशांविधा अधिक अधिकन याद्या 'বাবৌদনের'' হলে অনেক মৃত্তিত পুৰ্তকে 'মালসোদনং' পাঠ কেবিতে পাওয়া বায় এবং ভাষাকার প্রীমক্তর্যাচার্য্য এই পাঠই গ্রহণ করিরাছেন। তাঁহার মতে 'ভিক্লেন খাতে ৰা" বাক্যের অর্থ পুলোতীয় গোর-অর্থাৎ ধাড়ের মাংস এবং সমুদার পদের মর্মার্থ এই যে উলিখিত শশ্রী রুষের মাংসের সহিত ততুল পাক করিয়া যুতের में हिड ভোজন করিবেন। ভগবান ভাষাকারের উপর भागात्मत्र उक्ति कारांत्ररे चार्यका नान नरह, कि এবানে আমরা তাঁহার গুহীত অর্থ গ্রহণ করিতে পারি গেই প্রাচীন কালে বজাদিতে ও অতিধি मंदकारत्वे संभ (भावन कता इहेछ, छाहा मछा अवः অবনও বিবাহে জামাতাকে পাছৰৰ্ঘ দিবার সহিত छाडात एडाकनार्थ अकृष्टि श्रीवर कविवाद मरकरवत পরিচয় পাওরা যায়। এমন কি বৈবখত মহুপুত্র প্রঞ দ্বাশার ৰজে নিত্য নিত্য অপরিমিত গ্রামাংস ভোজনের নিমিন্তই ত্রাহ্মণদের অতিসার রোগ ভারতে প্রথম नस्यायदिशावि छ সর্পিশ্বস্ত कीरवीमनश পাচরিছা मत्रीप्राजामीयात्री समितिष्ठ देव॥ २८॥ स्वयं व टेप्ट्र भूखा व केलिमः लिक्ता बादाङ को त्वावसूखवीङ नर्सनात्रतिशांविक परशोपनः পাচয়িত্বা সর্পিয়ম্ব मनीपाणाभीवाती जनविक देव ॥ ३६ ॥ व्यव म रेटक्ट शृत्वा ৰে ভাষো গোহিতাকো লায়েত ত্ৰীনু বেলানমূত্ৰবীত नर्समाइतिहानिक्रामानः পात्रिका नर्निक्यनतीयाठा मीपर्दा क्नेबिछ देवं॥ ३७॥ अथं व देव्हिएक्टिछा व পাঁওতা জায়েত সর্বমান্তরিয়াদিতি তিলোলনং পাচরিয়া भर्तिवृद्धवन्त्रीवालाभीवादी सनवित देव । २१॥ अथ व देख्य भूरता स्व পভিচো विवित्रीकः गविकिताः अक्षिकार बाहर काविकां बार्यक गर्साम रवेशायनविक স্ক্ৰাছু বিয়াদিতি या (योगमः পাচয়িত্বা ৰ্দ্মীয়াভাষীৰত্নে জনমিত বা উক্ষেম বা ধৰ্বভেগ বা ॥১৮॥" ्रें देश्यांत्रगुक केथिनिवर, बंदेम अशाम, रुष्ट्रं बामन ।

লাবিসূত হইরাছিল, এই রূপ ঐতিহা লার্কেরে
পাওয়া বায় • । তথাপি এই পর্তাধানের প্রস্কার
দশতীকে পোষাংস ভক্ষণের ব্যবস্থা দেওয়া হর মাই
পরস্ক ভেবল এব্য বিশেবের সহিত মাৰকালাই এয় সমুই
বিচুড়ী বাওয়ার ব্যবস্থাই দেওয়া হইয়াছে, ইহাই
আমাদের ধারণা। গুরু আমাদের ধারণা নহে, "এমগুল
নামক ওমধ বিশেষ গর্ভাধানের যে বিশেষ অন্তর্কার
তাহা আমরা আয়ুর্কেদে দেখিয়াছি। অনুর্কেদেও
ইচ্ছামত শ্যামবর্ণ এবং রুঞ্চণ্ পুত্র উৎপাদ্দের প্রক্রিয়া
ক্ষিত হইয়াছে, যথা—

"যে নারী রহৎকায়, বেতবর্ণ, নিংহের স্থায় (পীতবর্ণ)
চক্ষ্, তেলবী এবং গুরুস্থলনা পুরের কামনা করেন।
গুরু মানের পর তাঁহাকে খেতবর্ণের ববের মর, মুধু জু
ঘতের সহিত মিপ্রিত করিয়া খেতবর্ণের বংস সহিত খেতবর্ণা গাভীর হুয়ে প্রকেপ দিয়া এবং আলোড়ন করিয়া রৌপা অববা কাংস্থ পাত্রে সপ্তাহকাল সভত নান করিতে দিবে এবং তিনি প্রাত্যকালে শালি উপুর্ব,
অববা ববের অর বিকার (অর, বিচ্ড়ী, পায়স ইত্যাফি)
হবি, মধু, ঘত অববা হুয়ের সহিত ভোলন করিবেম। ১৪।" †

† "না চেদেব নানীত বৃহত্তবদাতং হৰ্ক্ৰেক্সিক্টিটে স্বাংশক পুত্ৰিক্ত্ৰেক্সিটি। তথ্য নান্ধি প্ৰক্ৰিটাই সংক্ৰা ক্ৰেড্ৰাইড় সেহস্বদাতং ব্যানাং মধুপৰ্শিতাং সংক্ৰা নেতাগ্নাঃ গো সূত্ৰপ্ৰংসাধাঃ প্ৰসাণোভা বাজতে কান্তে বা পাৰ্ত্তি কালে সন্তাহং সভতং প্ৰযুক্ত্ৰং পানাগ্ন প্ৰাত্তক লালিব্ৰাদ্ধ বিকাগান্দ্ধিমধুস্পিভিঃ প্ৰোভিব নিংক্ৰা

ের নারী বিশ্ব ভাষবর্ণ, লোহিত নেত্র, বিশাল বখা

এবং নরা বার পুত্র কাষনা করেন অথবা বিনি কুকবর্ণ,

কুইনীর্ষ কেন, এক চজু, গুরু মন্ত এবং ভেলবী পুত্র প্রার্থনা

কুইনার, কিনিও উজরুপ হোম করিবেন কিন্তু উপকর্প

কুইনার, কিনিও উজরুপ হোম করিবেন কিন্তু উপকর্প

কুইনার, কেইরুপ বর্ণের উপকরণ সংগ্রহ করিবেন। ২১। ''

ক্রিনার, সেইরুপ বর্ণের উপকরণ সংগ্রহ করিবেন। ২১। ''

ক্রিনার, প্রায়বর্ণের স্বৎসা গাভীর ত্যু ইভ্যাদি )

শবে বে নারী বেরপ পুরের আকাক্ষা করিবেন,
আব্দা বেরপ বেরপ দেশের গোকের মত পুরের প্রার্থনা
উরিবেন, তাঁহাকে তাঁহাকে গেইরপ ক্রিরার উপদেশ
সিবেন এবং নেই সেই দেশের লোকের মত আহার
বিহার পরিক্ষণ ইত্যাদি উপভোগ করিতে বলিবেন।
ক্রিয়া

্ৰী মাৰ কৰা বারাই বে কেবল সন্তানের বর্ণের ইজা বিশেষ হয়, ভাবা নবে কিন্ত তেলোগাড়, লগগাড় ও ক্ষাক্রীক্ষাড় প্রায়ই খেতবর্ণের উৎপত্তির কারণ হইরা ক্ষাক্র) পুথিবীধাড় এবং বার্থাড় ক্ষাবর্ণের হৈত্ এবং ক্ষাক্রের সমান সমবারে ভাষবর্ণের উত্তব হইয়া

পুংসবনের জন্ত জন্তান্ত উপচারের সহিত্ত "জীবক', 'কুষড', 'অপামার্গ', এবং 'সহচর' ভেষক বাটিয়া সমস্ত প্রকৃত্ত অথবা যথেই হুডের সহিত পদ্মীকে পান করাইবে। 'কুষ্ট'' তুরুক সংহিতা,(বারীর স্থান, অইম অধার।

কুৰীত 🛚 ১৪ 🛊 চরকসংহিতা, শারীরস্থান, ৮ম অধ্যার।

পাতী এবং বংগ উভরেরই খেতবর্ণ হওরা চাই,—
এছপু গাতীর হুবই এই প্রক্রিরার জন্ত আদিই হইরাছে।

• "বা ভু লী জাবং লোহিতাকং ব্যুটোরস্থং মহাবাহং
পুরিরাশানীত বা বা কৃষ্ণং কুঞ্চুত্ববিক্রেশং গুরুবাহ্ব কুর্মির্মানীত বা বা কৃষ্ণং কুঞ্চুত্ববিক্রেশং গুরুবাহ্ব কুর্মির্মানীর কিন্তু পরিবর্হবর্ণবর্জাংভাৎ পুরুবর্ণাহ্যরপদ্ধ বিশ্বীরেক্সন্তরোধ্ব বিহিবর্হেক্সং কার্য্য ভাব ॥ ২১॥ আর্কের শার বারিবির কৌরতরম সুরুশ চরক
সংবিতা"র উরুত উপদেশ হইতে আমরা দেবিলাম বে
লোকে কেবল বে বেতকার (গৌরবর্ণ) পুরেরই সাব
করিত তাহা গরে, পরত শুমবর্ণ এবং রুকবর্ণ পুরের
আশারও কত সাধ্য সাধনা করিত। বরক চরক থবির
মতে সর্কবর্ণের অপেকা শুমবর্ণেরই শ্রের্ডিড দেবা
নাইতেহে; বেহেতু তিনি বলিতেহেন পঞ্জুত সমুখিত
পঞ্চাতুরই একত্র সমস্রিবেশেই শ্রামবর্ণের পুরের জন্ম
হইরা বাকে। পুর্নোক্ত বৃহদারণ্যকীয়া ক্রতি-বাক্যেও
ভারারই সম্বর্ণন দেখিতে পাওরা যায়।

এইমাত্র আমরা চরক মুনির বে ৩২ সংখ্যক বাকা উদ্ধৃত করিশাম, উহাতে অভান্ত ভেবজের সহিত "ঋষভের" উল্লেখ আছে। উহা যে "ধাঁড় গরু" নহে, ভাষা বৈজ্ঞপাল্লের সহিত নাম মাত্র পরিচিত ব্যক্তিও বুঝিবেন। আর বৈজ্ঞপাইত্রের সহিত পরিচয়েরই বা আবশুকতা কি ? চরকের "পঞ্চাশং" গণের উত্তিজ্ঞোবধের মধ্যে "জীবনীয়" গণের অন্তর্গত "অষ্টবর্গ" শ্রেণীর মধ্যে "ঝবড" একটা অভি উৎকৃষ্ট ঔবধ, ভাষার প্রমাণ পাষ্টীকার উদ্ধৃত করিভেছি। †

"ৰা যা চ যধাবিবং পুত্ৰমাশাসীত তল্পভাষাং তাং পুত্ৰাশিষমপুনিশম্য তাংভাঞ্জনপদানাং মহুফানামপুত্ৰপং পুত্ৰমাশাসীত সা সা তেবাং তেবাং জনপদানাধাৰার বিহারোপচারপরিজ্ঞদানস্থবিধীয়বেতি বাচ্যা ভাৎ।২৩

"ন তু ধরু কেবগমেত দেবকর্ম বর্ণ নিাং বিশেশকরমণি তু তেলোধাতুরগ্যদকান্তরীক্ষ্ট্র থাতু প্রায়োহবদাভবর্ণ করো ভবতি। পৃথিবী বাষ্ধাতু প্রায়ঃ কৃষ্ণবশকরঃ সমন্ধাতু প্রায়ঃ ভাষবর্ণকরঃ ॥২৪॥

ভিবেশবারীবকর্মভাশামার্গন্তরক্ষাংক র্গপ্তে-কৈকশো ব্রেইং বাপ্যাপসংস্কৃত্য প্রসা॥ ৩২॥ । চরকসংহিতা, শারীর স্থান। অট্টম অধ্যার।

† "जीवकर्षण्टको (यहा बदारमहा खादकानी कीवकारकानी म्लामांग्रार्था जीवजी मधुकविकि हर्भवानि

"बीरमीय" नामन वर्ष "बीरमश्रव"-वर्षा देखाकोत Life giving । अरे ममाष्टे युवद निक्छ ভारमिरञ्ज <sup>"</sup> বুটবর্ণের" যৎসামার প্রভেদ আছে। ভাষমিশ্রের भटि "जीवक, बरठक ; त्यम, महात्यम ; कार्कानी, শীবকাকোলী; খৰি ও বৃদ্ধি এই আটটি ভেবল। **इंब्लांपि चायुर्जिए भारत वर्ज्यकात वनवीर्वाध्यम अवर** शक्षिक व खेरा, श्रेष्ठ अवर खरामहामि चाह्न, खर्वाद त्रमावन धार वाकीकर्त व्यक्तिहारात यक वह वह खेरर उ प्रकानिय यावना चाहि, नकनश्रमिए है अहे "बहेदर्श्व" चान-धक्छ। एडे रहेब्र। वात्क । ''हावनश्राम,'' ''व्यवनकाषुठ,'' "কুমার কল্পভ্রমন্থত" ইত্যাদি বৈদিক কিংবা ভাগ্লিক देकान खेरपरे करे चारि खेरव ना बरेटन दह मा; चवर चाटकरभव विवय कडे रव भछ भक्ष व वरमव बहेन. कडे खैबरश्रीन चामारमञ् देवचताकवर्शन चलाना वहेगारक ध्वरः ভাববিশ্রের উপদেশমত "মধু অভাবে গুড়ের" কার छेदारमञ्जूषा अञ्चलका वावहा हिनाफरहा। यादा इछक. ৰবন্তরি দিকণ্ট প্রভৃতি শাস্তে কবিত হইয়াছিল "ধনত' রস্থানের ভার কন্দাকৃতি অধচ দেখিতে বুবশুদ্ধের মত এবং উহা विमानम भर्ता छ बाद्य। य एक छेवा प्रविष्ठ "দ্বশৃলের" স্থায় সেই জন্ম সংক্রত ভাষার স্ববের বতগুলি र्गशात्र चाट्ड, चांगारम्य '(मर्गत त्रिक "कवितावनन" बाहे केवरवत व्यक्तिक त्नहे कति वावहात कतिवाहहम ध्यर त्मरे रहलू जीमव्हकताधारग्रत कांत्र महा श्रीकिकामानी প্ৰতিতও "উক্" এবং "ৰবত" শব্দে উভিজ্ঞ বিশেষ না ं बुलिका "वाँ व शक" वृतिवाद्यम । वर्षमान ध्रष्ठात धरे विवय व्यवस्था क्रिक्ष व्यवस्था (वार्थ व्यवस्था व्यवस्था क्यांश्वनि निथित बहेन। मलाति त्नथावत अवसम र्मन जर श्विक रेना हिमानम शर्माण 'भीवक', 'बारकक' अवः '(यम'' अहे किमाँडे (क्वरकद नक्षान পাইয়াছেন এবং তিনি শীঘুই এ বিবন্ন সাধারণের গোচরে

লানিবেন বলিয়াছেন। অসুসন্ধানের লভাবে পাৰ্থা ধে কত মূল্যবান গৈলিক সপতি হইতে বঞ্চিত হইয়াছি। এবং হইতেছি, ভাষা যমে করিলেও ক্লেশ হয়। অইবর্গের উবধন্তলি আব্য আয়ুর্কেদের অভি মূল্যবান্ ঘ্যোইবর্গ বিনি এই পুঞ্জ গ্লন্থতির উদ্বার সাধ্যের নিমিত্ব পরিশ্রম্প করিবেন, ভিনিই আ্যাদের সম্ভা

বাবা হউক, আমনা দেখিলাম বে প্রাচীন কালে,
সভাসমাজের লোকে স্থামবর্ণ এবং কুক্ষবর্ণ পুরেরও
আদর করিও। বদি আর্গুগণের মধ্যে আদে। কুক্ষবর্শের
ব্যক্তি না থাকিতেন, অথবা কেবল খুনিত আনার্যার করি
কুক্ষ হইত, ভাহা হইলে এরপ সাধনার সভাবনা ছিল না।
প্রাক্ত পক্ষে অবিগণের মধ্যেও অনেক কুক্ষবর্ণের লোক
ছিলেন, এবং সামাজিক স্থামন ক্ষত্রির ও বৈশ্বনিপ্রের
মধ্যেও কুক্ষবর্ণের ব্যক্তির অভাব ছিল না। ফ্রন্তঃ গারের
রঙ্, দেহের গঠন বা উচ্চতা অথবা শ্রক্ষর প্রাচ্ন্যা
আর্থ্যের কোন চিক্ষ অথবা পরিচারক ছিল না। বার্যা
দেহের গণের উপর বর্ণজেন কোনও কালেই নির্ভর করে
নাই।

অবচ, আমরা বারবার বলিয়াছি বে খাণ এবং কর্মের উপর নির্ভর করিয়াই আর্থ্য সমাজে বর্ণের ভেল হইয়াছিল। গুণের কথা পূর্কেই বলিয়াছি, সেই খাণ সাংখ্যোক্ত স্থ রজঃ এবং ভ্যাং, ইহারই উপর নির্ভর করিয়া দৈব খা আসুর প্রভাব নির্নাত হইয়াছিল। এক্সণে কর্মের কথা সম্বাদ্ধ পুনশ্চ কিঞ্ছিং লালে।চনা করিতেছি:—

মছ মহারাজ বলিয়াছেন,—"সেই মহা তেম্বা পরমপুরুষ এই স্টের রক্ষার নিষিত্ত মুখ, বাহ, উক্ল এবং পদ হইতে জাত ব্যক্তিরুশের মিনিত পুথক, পুথক, কর্ম ছির করিয়া দিলেন ৮৭। আন্দণপথের ক্ষক্ত তিনি ক্ষাপাশনা, অধ্যরম, যাকন, যাকন, দান এবং প্রতিশ্রেই । ক্ষারেরপণের জন্ম সাধারণতঃ প্রকাশ ক্ষাম, মঞা, ক্ষার্যন এবং সাংসারিক বিবরে নিভাত মুক্ত না হওয়া; বৈশ্রপণের ক্ষম্প পশুণালন, দান, যক্ষা, কায়মন, বাণিক্ষা,

जीवनीश्रामि चवडि ।२८॥" চরকসংহিতা, ख्रवश्राम, छूर्व

क्रुनीय अन्य क्रवित ह अन्य मृद्धभरनत निर्मिष्ठ अक्रमाञ्च कर्म क्रीष्ठ सरम अने जिस स्ट्रनीत भविष्यां ह राज्य। कविरमय। क्रिकेट केरवा अन्य अन्याह ।

শীৰক্তসৰ্থগীতাও বলিয়াছেন,—"ৰে শজতাপন, ইন্সিক, ক্ষান্ত, বৈও ও প্ৰসংগর খভাবলাত গুণাস্থায়ে ক্ষান্ত্ৰপ বিভক্ত ইইয়াছে ।৪১। অন্তঃকরণের নিরোধ, ক্ষান্তেলিকের গংবন, শাল্পনির শালীর ক্লেন, শোচ, কমা, ক্ষান্ত্রীয় জান, বিজ্ঞান এবং ব্রন্ধে বিখাগ এইগুলি বীনাবের খাভাবিক কর্ম ।৪২। শোর্য্য, ভেজঃ, বৈর্য্য, দক্ষভা, ক্ষান্ত্রীয় কর্ম ।৪২। ক্ষান্ত্র, এই গুলি ক্ষান্ত্রের ক্ষান্ত্রীয় কর্ম ।৪৩। কৃষি, গোপালন এবং বাণিজ্য বৈশ্বের ক্ষান্ত্রীয় কর্ম ।৪৩। কৃষি, গোপালন এবং বাণিজ্য বৈশ্বের ক্ষান্ত্রীয় কর্ম গালিক কর্মায় গ্রের খভাবলাত

শ্বিকাশ্য তু সর্বস্থ গুণার্থ স্বাহাতিঃ।

সুম্বাইদ্বাকানাং পৃথক কর্মাণ্য করেমং ॥৮৭॥

স্বান্য ক্রিকাশ্যনং মঞ্জনং মাজনং তথা।

স্বান্য ক্রিকাশ্যনং মাজনং আজনং তথা।

স্বান্য ক্রেকাশ্যনিক স্বান্য নিব্র ।

স্বিশ্বেকাশ্র ক্রিকাশ্য ক্রিকাশ্যন নেব্র ।

স্বিশ্বেকাশ্র ক্রিকাশ্য ক্রিকাশ্যন নেব্র ।

স্বিশ্বেকাশ্র ক্রিকাশ্য ক্রিকাশ্যন নেব্র ।

স্বিক্রেকাশ্র ক্রিকাশ্যন ক্রেকাশ্যন নেব্র ।

স্বিক্রেকাশ্র ক্রিকাশ্যন ক্রেকাশ্যনিকাশ্য ।

স্বিক্রেকাশ্র ক্রিকাশ্য কর্মাণ্য নিব্র ।

স্বিক্রেকাশ্র ক্রিকাশ্যন ক্রেকাশ্যনিকাশ্য ।

স্বিক্রেকাশ্র ক্রিকাশ্যনিকাশ্যনিকাশ্য কর্মাণ্য কর্মাণ কর্মাণ্য কর্মাণ্য কর্মাণ কর্মাণ্য কর্মাণ্য কর্মাণ্য কর্মাণ্য কর্মাণ্য কর্মাণ্য কর্মাণ কর্মাণ্য কর

विश्व कि विश्व कि स्थान कि प्रश्व कि स्थान कि स

खायावत अनश्मायक याका लगवा द्वांक विक्विरगढ मकन भारत विवादन देनेबादन अठ चारह व वेखनि अक्ज कतिरम अक्षानि खड्डर शुक्क बहेरछः शास्त्र। ইত:পূর্বে এরণ কতকঙলি মোক মহুদংহিতা হইতে উদাৰ কৰিয়াছি। মহাভাৱত গ্ৰছও ভ্ৰাদ্দণের প্রশংসাবারে গুত প্রোভ ভাষে পূর্ব। আর কেবল হিন্দুগার কেব, द्योद्यशतम निक्षेत्र जाकागरण्य जामत कम हिन नान অদিত 'বর্ষপদ'' নামক পালিভাষার প্রতক্ষেত্র পের শ্বায় 'প্ৰাহ্মণ বগুংগা' কেবল ব্ৰাহ্মণন্ততি স্বারাই পরিপরিত। কজিরের প্রশংগাও শাস্ত্রে অর নাই। खेशमिव**रम्य छेक** छ वारका स्वाभन्ना मिविशाहि य श्रीमा লোকপাঞ্চাণ ক্ষরিয়, ক্ষতিমগ্রই ব্রক্ষের খৃশঃ প্রচার करवन, बक्कारनदा वाकश्रम कजिय्रक छेनामना कवियाः बादिन, क्वित कर्णका (अर्ड कड़े मश्माद काव दिक्ड मारे। अहे रुक् कानवान बायन अवर वीर्यान कविरवत व्याठीन व्याद्वानमास्य अठ व्यापत ।

আচীন ভারতের সমাজকেত্রে সভাতা হর্ব্যরশ্বির এবন্ধ विकारनत महत्र महत्रहे (व. ७० ७ कर्पए एक व्यवानमूह्य सर्धाः वर्गस्थापत्र क्षात्रस रहेशाहित, जाहात निवर्णन क्षांत्रिः স্বৃত্তি, পুরাণ এবং ইতিহান প্রভৃতি শাল্পের স্ক্র দেৰিতে পাওয়া বায়। একই পিতার চারিপুত্তের মধ্যে श्वन एकरम बर्गामा एकरम्ब कांग्र कांत्रक्रदर्वत महानमारक দাসাজিক বর্গের মধ্যে গুণ কর্মের উৎকর্ব এবং অপকর্বের ভারতয়ে বেলাব্যারী,বজনিরত ত্রান্ত্রপারক্রণীলারাক্র का कवित्र, कविवाधिकाणि छेलारम श्रेका नावात्रस्यक्ष खानब्रकाकावी वनिक वा देवछ अवर धार्य किम वर्षा স্ক্ৰিধ পুথ সাচ্চদ্যের সহায়ক পরিচারক বা শুদ্র এই মুক্ চারিবর্ণের উত্তব বে প্রথম হইয়াছিল, তাহা স্পষ্টই जबूकुछ रत । উৎवृष्टेणात एत नवस्त वादारे रहेक, बैदारमत व्याकात क्षेत्रात करः महाकात गाता क्रिक अके ब्रार्व हिन् अवर टैं।बाता नकरणेरे व्याप्त नमान द्वारम्य অকপ্রতাক বরণ ছিলেন। এই আদিম স্বর্থ এই ক্ষের পার্ক্য নিবন্ধন সামাজিক শ্রেণী গঠিত হাইছেল, এবং এই প্রেছেল ক্ষমেন পরিবাশে তরল বভাব ছিল, পার্থকোর কঠিন প্রাচীর তখনও নির্মিত হয় নাই। ব্রন্তিরও তখন যেরপ তত কড়াকড়ি ছিল না,—সেইরপ বর্ণ তেলেরও তত বারামারি ছিল না। সেই কালে ক্ষত্রির, বৈশু এমন কি শ্রু শ্রেণীর গুণবান্ ব্যক্তি বিশেষও উচ্চতর বর্ণে প্রবেশ করিয়াছে এবং উচ্চতর বর্ণের প্রবেশ করিয়াছে এবং উচ্চতর বর্ণের পারবর্তনের ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত সাহিত্যে এইরপ বর্ণ পরিবর্তনের ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত ব্যক্তির ব্যক্তি শান্ত সমূহ্দ সেইরপ পরিবর্তনের অনুকৃল ব্যবস্থাও প্রদন্ত হইয়াছে।

পরে, সভাতার উভরোভর বিকাশের সহিত প্রবল बाह्रे कि व छेडर बर छेत्रिक इंटेंट नानिन बर कर्म क्राय मुजन मुजन वृक्ति वा बीविकांत উপরের সহিত मुख्य मुख्य बाखिएक रहतून हरेए नानिन। বিভিন্ন প্রকার জীবিকার আশ্রায়ে বিভিন্ন প্রকার জাতির श्रृष्टित मरक मरक नाना डेकावर ध्युनीय नवनादीय श्रीन মিলনের ফলে আরও অধিকসংখ্যক উপজাতির উত্তব হইল এবং এই সময়ে উচ্চবর্ণের মধ্যে আভিজাভ্যের সন্মান বোৰ জ্বাদঃ পুপ্ৰতিষ্ঠিত হইতে লাগিল। অফুলোম এবং অভিলোম মিলন হত্তে উৎপন্ন জাতি ব্যুহের মধ্যে পুরুষ अवश् सीतं चाल्काका प्रभागासिक अमानातास्व सार्वा বিশেষকৈ আশ্রয় করিয়া নুতন কাতি সমূহের সামাজিক স্থান স্থিরীকৃত হইতে লাগিল। মৌলিক চাতুর পার বৈছিবের অসভা আর্ণা অথবা পার্বতীয় জাতির বহু ব্যক্তিও নানা কারণে আর্য্য সমাজের ছারে আসিয়া উপত্তিত ছওয়ায় নৈশর্গিক আকর্ষণের বশে আর্যাদিগের মুখ্যে নিকৃষ্ট শ্রেণীর লোকদিগের সহিত সমাজ बाह्यकां जिल्ल कियर शतियात विज्ञा करेया ताता। क्राम क्रांस व्याचा नमारक अहे क्रांतिन कहेरल क्रांतिनलय সমস্তা আদিয়া উপস্থিত হওয়ায় স্মাঞ্জের ব্যবস্থাপকগণ ক্তক্তিল নিয়ম সংস্থাপন করিবেন। জাতীয় ওছতা রকা

করিবার উদ্বেশ্র বিবাহের পুর কড়া কড়ি নির্ম হিনাক্তর্ভারত হৈল। বিজ তিন বর্ণের পরপার মিলপের কলে উর্নেক্তর্ভাতি সমূহকে এবং বিজগনের সহিত্ব অন্থলার ক্রেক্তর্ভাতি সমূহকে এবং বিজগনের সহিত্ব অন্থলার ক্রেক্তর্ভাতি আর্যাণ্ড অনার্য্য শুদ্রনারীগণের সভানগণকে ব্যবস্থাপকগণ "আর্যা" আর্যা দিরা সমাজে এহণ করিবেন এবং শুদ্রদিপের প্রতিলোমজাত সন্তাম বিগকে। "মন্ত্রুমান সমাজের বাহিরে নিজেপ করিয়া দিলেম। "মন্ত্রুমান সমাজের বাহিরে নিজেপ করিয়া দিলেম। "মন্ত্রুমান বিলিল্ল বিলিল্ল করিয়া লাল করিয়া দিলেম। বিল্ল সম্বাহত আরম্ভ করিয়া "রহমুর্ন্তুমান" বর্ত্তাত প্রাহত্তর প্রবাহত করিয়া পরিচর পার্যা বার, ভাষার ভিতর এই সামাজিক তর্বের মূল গভীর ভাবে নিহিত্ত বহিরাতে।

धरे बाछि एवर क्रमनः कठिन स्टेट्ड कठिनक्र थाठीत बाता जावक दहेबाटक अवर देशात जुबूरमाधिक नीविका अन्न कव अवर निवाह नयना अनेक विस्तरी পণ্ডিত মহাশয়গণের यांचा बुतान्स्या विशाह । दवन एकरव, একট জাতির সামাজিক সন্মান কোণারও উচ্চ এবং কোবায়ও বা নিয় দেখা গিয়াছে। তবে ইহা এক প্ৰকার निण्डत कतिता वन। याहेटल शास्त्र त्य, जायादकत दक्रानक रय कान अरमरन रय रय कालिक "कन चाहत्रीत" चर्चा "७६" रनिया गना कता दहेशा थारक, अञ्चलकान कविरा প্রকাশ পাইবে যে ঐ সকল জাতি কোনও না কোন योगिक विश्व कांजि उदेखि छेरभन वदेशाहा वह नहता বংসর ধরিয়া ধর্মবিপ্লব এবং সামাজিক নির্ব্যাতন বশভঃ অনেক উচ্চতর ভাতির স্থান নামিয়া গিয়াছে এবং किं त्रिक के किंद्रा वर्षी वाह्य वर सम्बन বলের সাহায্যে নিয় শ্রেণীর লোকেও উচ্চতর স্থান অধিকার করিয়াছেন। আশ্চধ্যের বিষয় এই যে বর্তমান কালে, এই রাজনৈতিক,ভারতের কোন স্থানেই মৌলিক শুলবর্ণের সাকাৎ পাওয়া যায় না এবং অবিমিঞাবে ও আদিম অনুস্থায় অবস্থিত বৈশ্ববৰ্ণকে পাওয়াও নিভাক কঠিন। याहाई इंडेक. यस महादाख्य मण्ड व्याकाद, अन, कव

क्षर जीविकात প্রতি সক্ষা রাবিরা অকুসরান করিবে নির্বা জাতিকে আজিও চিনিরা গওরা বাইতে পারে • ; বাবরা আসাধী বাবে দেইরপ চেটাই করিব।

> ক্রমশঃ শ্রীঅবিশচন্ত্র ভারভীভূবণ।

শাবর্ণ পেত্রমবিজ্ঞাতং নরং কল্ববোনিজন।
আব্যান্তপ্রিবানার্য্য কর্মভিঃ বৈর্মিভাবয়েৎ। ৫৭॥
আনার্যভা নিষ্ঠুরভা ক্রভা নিজ্ঞান্তা।
পুরুষং ব্যান্ত্রীহ লোকে কল্ববোনিজন্। ৫৮॥
অসম অধ্যার।

#### প্রার্থনা

( গান )

ভোষার মলয় এনেছে বহিন্না
ভাষার প্রাণের বাধের সন্ধ ।
ভোষার বাধার প্রাণের সাহে কহারি
ভাষার প্রাণের প্রাণের চলিত ছক্ষ ।
ভোষার সেকালি দিয়াছে গো ঢালি
ভাষার প্রাণের বিপুলানক,
ভোষার ত্বনে মর্জ্যে গগণে
ভাষার হিন্নার ধেরান লাক্ত ।
এ জীবন চর্মাল দিব অঞ্চলি
দাও হে তোষার চরণ-প্রাত্ত,
তব প্রধৃলি নত শিরে তুলি
হইব ধক্ত হে প্রাণ-কাক্ত ।
ভীজগদীশচক্ত বার ওপ্র।

#### বিশ্বের বিশালত্ব।

- বন্ধর আকৃতি অভুসারে তাহার মাপ কাস হইনা थारक। मुत्रस्वत्र मान व्यक्तास एक्टार्ट नहेरल করাসী মাপ মিলিমিটারের (millimetre) সাহায্য नरेए इम्र ; किन्न वस्त्र सरेशन क्रांव रेकि, अन, अवक व्यात्र वह वहेटन माहेटनत भावाया अवन कतिए वह । क्यां जिक्किए एवं वर्षन त्योत क्यार वहेर् नक्यां नारकत দুর্ব গ্রহণ করিতে হয় তথন তাহাদের মাপ কাঠটি अक्र वह ना कतिरम डेभाव नाहे। तह यान कांक्र शृत्ति किन (Light year वा) चारनारक बांवरनव । चर्चार चालाक्षेत्र शिष्ठ अक त्राकाल > नक ४७ हाकात महिनी ইহার এক বংসর সময় কাাপী গতির পরিমাণ একখানা মাপকারী। অপর কথার বলিতে গেলে হুর্যা হইতে পুৰিবীর দুরুছের ৬৩ হাজার খাণ খাণবা ৬০০০, ০০০, • • • • • माहेन । चर्डमात्न कहे मान क्रिशामा चार धक्षे इषि क्वा स्टेशाह्य। धरे वर्ष कांत्रेबानात नाम Parsee देश Light year रा आरमारकत वरनातत ७ २७ ७१। व्यवना भृथियी दहेरछ स्ट्रांत पृत्रस्य र मक 1 78

ঘণ্টার ২০০ মাইল বেগে চলিতে পারে এরপ একধানা এরোপ্লেন (Areoplane) করনা করিলে, জবিপ্লারভাবে চলিয়া উহা ৫ দিনে পৃথিবীকে একবার প্রদক্ষিণ করিতে পারে। এবং উহার চক্র লোকে পৌহছিতে ৬ সপ্তাহ সময়ের প্রয়োজন। এ খ মান খানা ৫০ বংসরে স্থা লোকে পৌহছিতে পারে। ইয়াকে শক্রের (veuus) কলে পৌহছিতে ১৪ বংসরের কিঞ্ছিৎ উর্দ্ধ সমরের প্রয়োজন, এবং তথা হইতে আরও ১৮ বংসর স্থোর দিক অগ্রসর হইলে বুধের (mercury) কলে উপনীত হওয়া যাইবে। বদি আমরা স্থোর দিকে যাতা না করিয়া বহির্দেশে মুলল ও অপ্রথার

বাবের দিকে বাত্রা করি তাহা হইকে আমাদিগকে বলনের কক পার হইতে ২৭ বৎসরের অধিক সময় লাগিবে। যদি ঐ ব যানে বহস্পতিতে যাইতে ইচ্ছা করি তবে ছই পুরুষেও পারিব না, কারণ উহা অবিবৃত্ত চলিয়াও ২০০ শত বৎসরের উর্দ্ধে উক্ত গ্রহের কক্ষে উপনীত হইতে পারিবে। শনি গ্রহে পৌহছিতে ৪৫০ ইউরেনসে এক সহত্র এবং নেপচুনে ১ ই হাজার বংসরের প্রাক্তন।

শহবোর একজীবনে এরপ মন্বরগামী যানে সের জগতের এবাদি পরিভ্রমণ করাই অসম্ভব আবার নকত্র লোকে যাইবার বাসনা করা রুগা। করনার যানেই ুষ্ণন ভ্রমণে বাহির ইইরাছি তথন ইহার গতি আর একটু বৃদ্ধি করিরা নেওয়া যাক।

चार्यात्मेत्र वियानशामा चारमारकत (वर्ष हामाहेर्छ शांतिरण (पर्या याक कि कता यात्र। अर्थाए विमानशानात প্রতি সেকেণ্ডে ১ লক্ষ ৮৬ হাজার মাইল চলা দরকার। এই যানখানা একটু জ্বলামী বলিয়া পুথিবীকে প্রদক্ষিণ করিতে উহার ২ সেকেও সমর লাগিবে, এবং চল্রালোকে পৌছছিতে ১১ সেকেভের প্রয়োজন হইবে। এবং হ্যা একটু দুরে বলিয়া তথায় যাইতে ৮ মিনিট সময়ের দরকার सरेटा । श्र पाछात्र कि थिए है अं भगत्त्र आगता तन भूहा पत कंक शांत रहेश नकललात्कत मित्क याता कांत्रह পারি। কিন্তু এই পথটার দূরত নিতান্ত কম নতে, কারণ এই সুদীর্থ পথে ১বংসর অগ্রসর হইয়াও অকুল সমুদের <mark>সংখ্য থাকিতে হইবে। নক্ষত্ৰ লাক তথনও বহ</mark> ভূৱে ব্দবস্থিত। এখন আমরা এতদুরে আসিয়া পড়িয়াছ **एक अधारम क्रांत क्षांम आभिट अवरभन्न समा**रहत बोद्यायन। जन्म ाम १३ वर्भन्न वा अक भागरमक ( Prasec ) পথ অভিবাহিত করি, কিন্তু তথাপি কোন वाह कूरनत मधान मिनिर्य ना। यनि अरे पूर राज्य रहेर ত্র্যাপ্ত পুথিবীকে দেখা সম্ভব হয়, তখুন উহাদের মধ্যে **रकाम यायमान পরিলক্ষিত ছও**য়া হৃষর। প্রবল দ্রবীকণ

বোগে বছ চেপ্তায় এই ব্যবধান দৃষ্ট হইলেও উহাদের দ্বার মাত্র ১ সেকেও হইবে। এখনও আগরা আরু এক বংসর পর অগ্রসর হইলে নিকটন্ত উজ্জ্ল নক্ত্রে (Alpha centauri) উপনীত হইব। তখন ২০১ টা নক্ষত্র আগরা পৃথিবী তইতে বেরূপ দেখি ভাষা অপেকা এক আগটুকু উজ্জ্লতর বোগ হইলেও হইতে পারে, কিন্তু অনিকাংশকেই পুর্বের মত ক্ষুদ্র বোর হইবে। কারণ তখনও আগবা মাত্র ফংকিঞ্ছিৎ অগ্রসর হইয়া নক্ষত্র লোকের সামানায় পোহছিল। এইন্থল হইতে রাশিচ্জের কোনই ব্যাতিক্রম দৃত্র হইবে না।

এই উজ্জ্ব নকর (Alpha centauri) শামাদের সুর্গ্য মন্তবের মত নহে। ইহার। এইটা মুগ্ম স্থা উহাবের সাধারণ ভার কেন্দ্রের চহুর্দিকে ঘূড়িতেছে। এই বুগল স্বর্ধার পরস্পার ব্যবধান মাত্র ৪৪ আলোক বংশর।

যদিও (Alpha centauri) আমাদের সুর্যা মণ্ডলের নিকটস্থ উজ্ঞান ক্ষত্র, কিন্তু হয়ত এখন দিন আদিবে যথন অন্ধ নক্ষত্র এই স্থান অধিকার করিবে। কারব আমাদের সুর্যা মণ্ডলণ্ড গতিশীল, উহা সেকেণ্ডে ১২ মাইল বেগে চলিতেছে।

আমাদের পূর্বোক্ত ঘণ্টায় ২০০ শত মাইল গামী বিমাণে নেপচুণের কক্ষে পৌত্তিতে যদিও ১ ছুজিার বংসর লাগে, কিন্তু উহাতে ( Alpha centauri) নক্ষ্যে আসিতে হইলে ১ কোটা ৪৫ লক্ষ্য বংগরের প্রায়েজন।

পৃথিবীকে কেন্দ্র করিয়া এবং ১৬ আলোক বৎসর দ্রহ নিয়া একটা বৃত্ত করিলে উহার মধ্যে মাত্র ২০ টী জ্ঞাত নক্ষত্র পড়িবে। ইহা হইতেই বুঝা ষাইবে যে নক্ষত্র মন্ত্রী করুপ বিরগভাবে কি এক বিশাস স্থান অধিকার করিয়া আছে। যদিও রাজিতে নক্ষত্র মন্ত্রীর প্রাত্তি করিলে মনে হয় যেন উহাক্রাক্ত ঘনই সন্নিবই রহিয়াছে। এখন বুঝাগেল যে উহাদের সহক্ষে পরক্ষর স্বত্র ইবার কোনই তয়নাই।

আৰাদের হুব্য মন্তৰ বিপুল বেগে শৃণ্য মার্লে কোটী ২ বংশর চলিয়াও আজ পর্যান্ত কাহারও সক্তর্বে চুর্নীকৃত বর বাই। এবং তবিশুতেও বে হইবে সেরপ সন্তাবনা এবনও বেবা যার না, কাষেই বিখের বিশালত বর্ণনাতীত, এবন কি আমাদের ক্রণারও অতীত বলিতে হইবে।

এই বিচরণ খল।

#### তদাত।

কেবলি স্থতিতে বেরা আমার জীবনধানি, শারাটা জলয়ে জাগে তোমারি প্রেমের বাণী। ভোষার মধুর হাদি এখনো বাজায় বাণী

त्रांशन महत्य त्यांत

**নেই মত** নিশিদিন !

মোর পুর-সার-আশা

लामाल्डे इ'न नीन !

নীয়ৰ বীণার স্থর আকাশে কি থেলে ভাজ।
দিলাৰে সুকাল কিবা মাধবীর ফুল-সাল।
জপনী মাননী রালি! কিছুইত নাহি জানি,

ৰলে হয় ৰোৱ বুকে

ভৈামারি শোমিত বয় ! আমি আজ 'আমি'-হারা

হরে গেছি ভোষাময়!

বৈশ্যের বেলা-খরে ভোমা গণী পেয়েছির ! কেম্বন জাপনা-খারা ভোমা ভাল বেদেছিত্য ! व्यात्न शात्न हु,जमात्र

क वेशिन चनिवाद

करत मिरम अकाकात

বোগে শোকে খুবে ছুবে ৷

यूगन छिनी मिनि'

छूछिल माभव-मूर्व !

আৰু বৃঝি মৃছে গেছে আমার জীবন-রেখা !
তৃমি শুধু মোর মানে পলে পলে দাও দেখা !
জীবনের পর পারে

জীবনের পর পারে

ভোমারে লভিয়ে প্রিয়ে.

ভুলেছি বিরহ গান !

बाषण-प्रक्रनी (यन

(क्राइमाग्र जानमान !

बीबीदवस कुमान मण।

# ঠাকুর মা'র কথা।

( . . )

( পল্লীর অগ্রাস্ত কথা )।

সে কালে আমাদের পাড়াগাঁরে যে সব আমাদ প্রমোদের ব্যবহা ছিল, দেগুলিতে 'গুলী'র পরীকা ছিল। আর সে সকল আমোদের মধ্যে আহ্যের প্রচুক্ত উপকরণ সঞ্চিত ছিল। সে কালটাই অনগত আহ্য-সম্পদ ও আহীন সরলতার মুগ ছিল। সুধ বলিতে যাহা বুলি, ভাহা আমরা ভোগ করিয়াছি। এখন সুধ অর্থে আহার বিহাস—একটা প্রভারণা মাত্র। স্ভিচ্ স্থি ক্রেপ্ত स्थित एक उप्ति करतन, व्याप्ति वर्ष अको विद्यान कित मा। छरव अवस्तकात ये छ छात्नत व्याप्ताक छवन विद्या व्याप्त नाहे; ह्हिल त्या दि कि नवाहे कि उपति कि नवाहे कि उपति अधिक ना। व्याप्ति कि नवाहे कि उपति कि नवाह कि नवाह कि नवाह कि विद्या कि विद्य कि विद्या कि विद्या कि विद्या कि विद्या कि विद्या कि विद्या कि

(व) विराय भंदीत शूर मामायमा हिन-कार्य ভাৰারা মেহানভ করিত। বর দেশা, উঠান-মহ शायथाना वाँ है एए छत्रा, शतिकात कत्रा, धान निष कत्रा, শুৰ্কান, ধান ভানা, ধান ঝাড়া, প্ৰভৃতি বাহিরের কাল এবং অল তোলা, মৰলা বাটা, বাঁধা বাড়া ও ৰাওয়ান শাওয়ান প্রভৃতি গৃহকাণ্য মেয়েদের করিতেই হইত। व्यक्ति अर्थाता ( >७ २०।२) त्रत प्रश्निक ) व्यक्तिम २।७ মণ ধান কুলার ঝাড়িতেছি। আমি এখনও ম্বপাকেই बाह-टाबाल्य भविद्यमन कवित्रा बाख्याहै। ज्द चौषाचत्र रहेटल मानात्मत्र वाजान्यात्र निहा-भिर्दियन . क्रिए कहे इस ; छाड़े नाड ् वील्य दिसा छाछ खबकादी चानाहेश धार्म शतिर्वन कृति। त्रकाल ত্র সকল পরিশ্রম প্রাত:কাল হইতে প্রায় দেভ প্রবর রাত্রি পর্যান্ত করিতে ধইত ৷ বাল ভানা, চিড়া কোটা প্রভৃতি अम कास्त्रिक्ष भागारमञ्ज द्योवा विष्ठेतियात भागात शारेपार्हन।

ছেলেপিলেরা মাটার সমস্ক কদাচিৎ ত্যাগ করিত।
ক্তা আর কাহারও ছিল না। বড়ম কেবল শরন কালে
পা মুইতে ব্যবহার করা হইত। মাটাতে চাটাইর উপর

পাটী কেলিয়া শগ্নমের ব্যবস্থা শতকরা ৯৫ জনের ছিল।
ভাবশুক হইলে গা মর মাটী মাধিরা ছট্ পাট্ করিয়া
লিন কাটনের স্থবিধা অনেকেরই ছিল। মোটা ভাত
ভার মোটা কাপড় ইতর ভক্ত সকলেরই ঘরে ছিল।
মিহি চাউলের ভাত ক্রের প্রা ছিল।

মণ্ডরী ডাইল (কাঁচা) স্নানের পর আমরা লাল কির নাই। ব্যাপার উৎসবে মণ্ডরী ফর্পেই ছান পাইও না। প্রায় নবাই হোহো করিরা উচ্চ হাস্ত করিত। সেই ঘরফাটা হাসি এখন আর শুনি না। ছেলে, বুৰক, বুদ্ধ সকলে মিলিয়া হরি সন্ধীর্ত্তন করিত—প্রার্থ সারারাত! এখন বেমন করাসের উপর বেহালা বাই লাইরা সন্ধীর্তন হর, তখন তাহা ছিল না। এ।৭।১০ ঘটা হার চলত। উঠানমর উদাম নৃত্য, আর চিতান রাগিলীর গাল। সেই শুদ্ধ সপ্তকে গাহিরাও কাহারও গলা ধরিত না;—কেহ বেন প্রান্ত হত না। বাহারা মৃদক বাজাইত, তাহারাও মাচিত, —পরীরে শক্তি ছিল বলিয়া। এখন দেশের ছেলের দল "গোয়ালের বাছুরের মত কেবল শুইরা, লাকুল নাড়িতে মন্তব্ত।" •

('পরীর গান'—সংগৃহীত হটগে—সেই প্রবন্ধে এবিবর বিস্তৃতরূপে লিখিবার ইচ্ছা রহিল)

বো বিরাও উচ্চকণ্ঠে গীত পাছিরা উৎসব বারী
মুধরিত করিয়া তুলিতেন। অরপ্রাদন, কর্ণভেক্
উপনরন, বিবাহ প্রভৃতি ব্যাপারে গীত একটা মত ব্যাভা অল। এই সকল উৎসব অত্তে 'কাদা ধেলা' বা 'পেক

\* গোরালরা গাভী দোহন করিয়া সভোজাত
বাছুরের অন্ত আর হৃথ অবশিষ্ট রাথে না এবং ছিন্দাবে
আর গাভীর নিকট বাছুরকে ঘাইুতেও বের না।
ভাই পোরালের বাছুর অলস হইয়া ভইরাই দিন কাটার
এবং সম্বরেই পঞ্চ প্রাপ্ত হয়। এবেশে হর্মল ছেলেবের
প্রতি এই উপনা ব্যবহৃত হইয়া গাকে। —লেপড়।

द्रिमा ( नी।क-हेकि छड्डान्) इहेछ। त्र बक् विक्रा हे गानाव । छेडारमञ्च मशास्त्र कर्वकमनी कन ছাপিয়া, কিছু মাটা ও গোবর তাহাতে ফেলান হইত। কাৰ উপন গড়াগড়ি, হড়াইড়ী—ঘণ্টার পর ঘটা চলিত। विक्रिं गांचजी, त्याम, निनि मा- अर्थार मन्नर्क वाष्ट्री व ক্রেভিল না। সংক্ষেপ্রে গানও চলিত। সে স্কল সাবের মধ্যে শীলভা বড় রফিত হইত না। যথেষ্ট আদিরস মিশ্রিত গানগুলিও খাঙড়ীর সঙ্গে পুত্রবধু হ্বাৰ্টার মূখ ঢাকিয়া অচ্ছলে গায়িয়া যাইত। এই शक्त देगांनीः धात्र छेठिया शिवादह । क्रिकारका कांत्र के शकन भन्नोर ह रशकारण देशरीहा छि बहैंड ना-नकरनरे मिलियानी दिन,-- कारन देश्राष्ट्राडि ৰাভাবিক। এমত শবস্থার এগুলি উঠিয়া যাওয়াই ঠিক। हर्द कामारवणात' बृशा चाह्य-विशे शाका छित्र विन । बात्र थाका উচিত ছিল—काञ्चरनत रतोरज ক্লাবির বেলা। তুটার সকেই বাস্থ্যের স্বদ্ধ আছে শ্বিষ্ঠা আমার বিশ্বাস। তবে কোন কোন স্থলে মেরে কুৰুৰে মিলিয়া কাদা বা আবির লইয়া লুটাপুটির কণা अभिनाहि,—(मधीन यहास भरिछ।

কাদ। ধেলার মধ্যে পুরুষ মধ্যে নারিকেল ধেলাও

ক্রিকা। একটা নিটোল নারিকেল—ছোবড়া গুল

ক্রিকাজ করিয়া কাদায় ফেলিয়া দেওয়া হইত। একবাজি
ক্রিকারিকেল আকড়াইয়া ধরিয়া উপুর হইয়া পড়িত—
ক্রেকাজি ভাহাকে চিং করিতে পারিলে—সে নারিকেল

ক্রিয়া যাইড,—আর একজন ভাহাকে ধরিয়া ফেলিত।

ক্রিয়া বারিকেল কাড়াকাড়ি" ধেলার যথেষ্ট শক্তিয়

ক্রেমাজন ভিল।

প্রতি পারি দা। নেশা করাটা তথন অনেকের নিতা ক্রিকিকিক চাজের মধ্যে গণ্য ছিল। অন্ততঃ উৎসব ক্রিকিকি নেশার প্রাক্ত অনেক গ্রামেই হইত। সিদি ক্রিকিকে নেশার প্রাক্ত কা। পাইপ তথা মুদ্ধ সহয়।

চলাচলি চের জারগায়ই হইত। এমন কি বড় গামলার यम ग्रामिश यश्वास्त अकते। (शामाश सून दाया दरेख। वृहे छाहे दृहे भारत नव नागाहेश मक्ष्मान कतिराजन ;--यादात है। त्न त्रानान कूल यात्र-छादात क्य बहेछ। उनिग्राहि,-किमिनातरम् मत्या मन बाउगाठी ना श्टेरण्डे চলিত না। শুনিয়াছি, যে সকল ব্যবহারজীবের চরিত্রদোষ না থাকিত, ডিনি সমাঞ্জে অত্যন্ত নিতীহ গোবেচারীর মত কুটিত থাকিতেন। এমন কি নাম পাক্ষর জন্ম বয়ঃপ্রাপ্ত পুত্র বেভাগয়ে ির। পিতার পার্থে দাড়াইতে বাধ্য হইত। এগুলি সহরের কথা। কি আনেও তখন হাট বাজার গুলির ভারী বদনাম ভনিতাম। বাজারে বাজারে বেখালয় নাকি অগণিভ<sub>র</sub> ছিল। এবং ভাহাই মালীকের বড আররণে পণা হইজ। ভানিয়াছি, অল্লবাড়ী, হয়বতনগ্র ও বৌলাইর মুর্ণমান জমিদারগঙ্গের এলাকায় বারবণিতার আত্রয় ছিল না। গ্রামে উৎশব উপদক্ষে বাইনাচ হইত। বাইনাচের সভার পিতা পুত্রে উপস্থিত থাকার সংবাদও ভনিয়াছি এবং চিকের আড়ালে বৌ'রা বণিত! কালা খেলাম বাই (वभक्राता शूक्रव्रापत भारक्षां ७ कान काम করিত। কোন কোন বংশের ছেলেদের অন্ন প্রাশনের नमत्र गरम शाकृत छुदाहेश। छादा (छरमत मूर्व (मध्या इरेड। (कर (कर यम थारेशा रा) मिन (बहुन इरेशा পড়িয়া পাকিত। ভান্তিকগণের কথা স্বভ**ন্ত। ভৰে** भू (बंद विषय अहे, मकन आय । भकन ममारक अ नकन वांवश हिन ना। अक्षा निक्त त्य यम ७ व्यत्मासूर वषु वषु वनिश्रामी ष्ट्राक छन्। क्त्रियाट्ड।

हेनानीः (मानद क नकन क्रिन्छ चारमाण नृश्च रहेप्राष्ट्र । चामि त्याद्व तिराह त्या — छाटे चारमण क्या प्रतिनाम, — चार्छ प्रतिराह निराह है चारमण्डम स्टेर्स ।

कर्त अवहा कथा अहे स्व छथन स्मान नजीरखत हाई। बूत हिन अर फारांत करन नमश्रामन कानममत्र थाकिछ। পেট ভরিয়া ধাইলে পিঠ ভরা কীল সহে। তখন '**কাহারো থাবার** চি**ন্তা ছিল না,—স্থতরাং আঘোদ** উৎসবে नमत्र कांगेरिए कहे दहेल ना। वानी नाकाहरण, भान नाहित्ज, मीन नित्ज এक এकটा खलात्र वित्मय বাহাত্রী দেখা যাইত। বিশ্বস্ত লোকের নিকট छनित्राधि, वार्णय वानी वाखाहेरछ अमन भव एक लाक ■ अवः व हिन,—शंशास्त्र वाभीत शास्त्र विषयत त्राप्त আসিয়া নাচিত এবং গরু মুখে খাস লইয়া চাহিয়া পাঁকিত,—গাঁছে পাখী নীরব এইত। যশোদলের মুরারি **িটোধু**গী নামক এক**টা যুবক এই সে দিন বাশী** বাজাইয়া মারা পডিয়াছেন। তাহার বানী ভূনিয়া নাকি এক বিষম বিধধর আসিয়া তাহার মাথার উপর ফণা বিস্তার করিয়া হেলিতে ছলিতে ছিল। হঠাৎ সাপটা দেবিয়া মুরারি বাবু বাড়ীতে ছুটিয়া যান এবং সহসা ভূতলে পড়িয়া পিয়াছিলেন। তাঁহার হংপিও ফাটিয়া তৎক্ষণাৎ ভাষার মৃত্যু হয়। এ সংবাদটী ভানিয়া আমরা বিশ্বিত इंडेजांग ना। जयन वांभीत शास्त नाश व्यागात मश्याप মৃতন ছিলন। এজতা রাত্রিতে বালী বাজান, শিদ বৈওয়া নিষিদ্ধ। এক-পুত্রবতী বিধবা জননী রাত্রিতে বাদীখননি ভনিলে সে রাত্রিতে কল এহণও করিতে शांद्रम मा।

আমরা খুব ভোরে শ্যাত্যাগ করিয়া বাড়ীময়
গোষয় ছড়া দিতাম। তুলনীতলা, বিলৃতলা লেপন
করিতাম। আদিনা ঝাট দিতাম। সন্ধ্যাবেলায় ঠাকুর
বর লেপিভাম, ধ্পদীপ দিতে হইত,—এখনও হয়।
গোশালায় প্রদীপ দেবাইতাম। উৎসব সময়ে এগুলি
গুরুকর্তীর কর্তব্য হইত। কারণ, আমরা দেবিয়াছি
উৎসব বাড়ীতে, ঠাকুর, ছেলেপিলে আর গোরু বাছুরেরই
স্ক্রীপেকা অরম্ব হয়। লাভ কর্ম হইতে প্রত্যেক মাললিক

উৎসংবাই গীতের ব্যবহা আছে। 

এই গীতের মধ্যে
রামচন্দ্রের প্রাধানা। কামর পশার প্রায় নাই বলিলেই
চলে। অনেক ব্রত প্রায়ও গীতের নিয়ম আছে।
বেন কেবল আনন্দ উৎপব করিয়াই বৎসরের দিনগুলি
—আনোদগুলি কাটাইরা দেওরাই এদেশের প্রশা
ছিল। পৃথিবীর অন্তদেশেও এ প্রধা আছে কি না
আনি না।

আমাদের রাধালগণ এক অতি আদরের বৃষ্ণ ছিল।
লেংটী পরা রাধাল বালক আমাদের আদর বৃদ্ধে বাজী
ঘর মা বাপ ভূলিয়া যাইত। "কিনা" চাকর ও "আছি"
চাকর আমার ঘরে ৭৮ বৎসর বরসে রাধাল নিযুক্ত হয়।
কিনা ৩৭ বংসর ও আছি ৪২ বংসর চাকরী করিরী
গিয়াছে। বৃদ্ধ 'আছি' আজিও দিনে একবার আমাদেছ
কি অভাব,কি চাই—আনিতে আইলে এবং কোন কাজ
পড়িলে "উড়িয়া আসিয়া জুড়িয়া বসে।" আজ কালের
চাকর বাকর গুলা কেবল মাহিয়ানার সম্মন্ধ রাধে।
আগের চাকররা নিজ ব্যবহারে মাহিয়ানার দেশে

রাখাল বালকেরা ভার বিহানে সরম ভাত মাড়গরী, একদলা ননী-মূন মাধিয়া খাইত—তার পর দরীলাইয়া মাঠে চলিয়া ঘাইত। দোরাল সরু লইয়া চ্পুরে বাড়ী আসিত, সরু দোহাইত এবং নিজেরাও খাইরা মাঠে চলিয়া যাইত। সেখানে অনেক রাখাল মিলিরা খোলা খুলা করিত। মাঠ আমাদের বাড়ীর বড় বেলী দুরে নহে—নিরুম মধ্যাহে আমরা রাখালের মধু বাজা কঠমর তনিতাম। কিসের বা বেলালা বাদী—কোঝার লাগে কোকিল পালিরার সান। সেই রাখাল কঠ বর্মা বায়ু সাগর মহন করিয়া খরে খরে অহিয়া বিলাইড, তথ্ন কি আনক্ হইত, বলিতে পারি না। সেই সরুল সামিও

<sup>• • &</sup>quot; याराव नान" श्रायक—चामता कविनय ननीक नमार्यम कविव।—रनवक।

लाइ छनि ना. तिरे शूनक बाबा कर्डछ जांत्र वाश्नात লাই ৷ লোনার বাংলার লোনার ছেলেরা অভাবের আয়ৰে পাৰত বইয়া পিয়াছে ;—নীরস—ভাবহীন—প্রাণ निका अपन भाव (गरे गाठावरनव क्य मिनस विक्र ৰাঠত নাই, সেই প্ৰন্থ প্ৰপৃষ্ট দেহ গোৰনত লাই, সেই ছবত নাই। সেই নবর কান্তি রাখালও बाहै। এখন ছথের সেই শক্তি নাই,—বিলে সেই ৰসীয় পথ নাই। কাৰণ দেকালে গৰুকত লাতীয় জ্ঞা পাতা খাদ ধাইত,—তা'র ফলে ছব বে খঞ্জি बाराम कतिक, अपन छक्ना वड़ चात देवन शहेशा शक ক্রেমন উৎক্ট ইং দের না। আমরা ধংন যি আন দিয়াছি, পাড়া ময় সৌরতে তরিয়া গিয়াছে। আর ক্ষৰৰ তেখন গাই ৩।৪ সের ছুগ দিত। এখন ৩।৪ क्षक इनक्यांना गारे शास्त्र नारे। गक्र कनि कीर् कि क्रम । कि छीरन इजिंदम देशांसन वरन अन श्रीत विकारकः द्रम्य (कर्य मा। अहे (क्षमवानी नाहकान क्रमहेत्राच नांत्री नटर, त्यागनयानच नांत्री नटर :--लात्री स्मरनेत दाव्या अभिनादिता। देशालत कृषित कृषा कांडीयरणद मण वाजित्र। हिनत्राहित . टकान क्यानाद्वत আৰুগাৰ দশ পাঁচ বিষা গোচারণ ভূষি জন সাধারণের ক্ষালভিক আছে! তবু যে গ্রাযে সরকারী গড়ক লাকে পেৰানে গোরু দাঁড় করাইবার একটা খোলা জারণা আহে। আরত কোথাও তাহা নাই। দেশের ক্ষা বেশ, আদ্ধা গেল, শালগ্রাম গেল;—আবার যদি ব্যালি বয়, এ দেশের উন্নতি কেব আটকাইতে शांतिस्य ना। जात यनि এश्वनि जात ना छैठं, এই ৰুমিংশয় দেশ পোলাও কোৰ্মা ও উদ্ধান লাচারের ক্লিড দিয়া উটিবে না,৷ সেই আতপ ততুল, কাঁচকলা ও ब्राइड माड़ीएक के नकन बाह्य इक्स बरेटक शादा ना ;--ক্ষেত্না। গোচারণ ভূমি নাই ;—আমণের ত্রন্যেতর नार वाकायत संबद्धाः सूत्र। ठीक्रवद त्रवा श्वा महि। अधिक स्थानता छेनदारम्ब क्या महन क्रिया।

अश्वनित्र म्ना जारह। रावणा जारहम, स्वरात निक्ष कम नरह। मनगर्स अश्वनि ज्निश्वना। विश्व कि वनिराजिक्ताम,—

चांगारतं कारंकतं चर हिन ना। चर्क अन्त कांच हिन ना,--वादा नदेश अवनकात यठ "आवशन" कतिएड रहें । চরকায় হ'ভা কাটা, कांशा দেলাই, তুলা পিঁজিয়া পৈতা কাটা, ডালা কুলা বুনা (তখন উল স্তার কাল चामारमत हिन ना) थूद तक नित्र हिन। चामता चत्र ক্লার কাল করিয়াই সুখী ও সম্ভ ছিলাম ৷ কর্তারাও দেদার বিপ্রায় করিবার সময় পাইতেন। বিশ্রাম অর্থে जनम ভাবে न्या (क्ल नहर; নিশ্চিত্তে শাস্ত আলোচনা করিবার অবসর উহোদের ছিল। রাজা রাজরা ও ছোট বড় সকল তালুকদারই পণ্ডিত গণের পূর্বপোষকতা করিতেন। ব্যাপার উৎসর সারাবছরই (मर्न बाकिक, এবং পভিতগণের নিমন্ত্রণের সংখ্যা ছিল না। বাড়ীর ভাত বছরে এক চৌধও ঘটিত কিনা गत्मह। अब श्रामन, विष्ठात्रस, डेशनव्रन, विवाद, श्राह्म, नांकि चलावन, गृह श्रातन, श्रह्यांग, विकृश्या-कण कि दि काम कर्म दिल्दर्भ हिन,-छारात देवला नाहै। চারিদিকে হল্থানি, শঙ্খধনি গুনা যাইত; ধুপ ধুনার शक्त विम् भन्नी मानम शास्त्र मछ (वाद श्रेष्ठ । नम्म नमञ् (पत्न शूर राष्ट्र राष्ट्र नमार्ताहरत कान इहेछ। তাহার প্রশংদা ধ্বনিতে আমাদের আদিনা পুলকিত হইরা উঠিত। মুক্তাগাছার লক্ষী দেব্যার মহাভারত পाठ, मग्रमनिशरहत प्रथमशाविष्ठा शृका, ताक त्रारक्षतेशे পুঞা, আভারিয়ার হেমবাবুর মায়ের তুলা পরশ, রামগোপালপুরের কাশীবাবুর প্রাঞ্জ, সুস্থকের মহারাজের প্রাছ, কালীপুরের তারিণী বাবুর প্রাছ, ভাওরালের রাজা त्राध्यक्त नाताग्रतिम विवाद, भ्रताशामात्र सेनान वातृत मारत्र थाय अरु अरुका नाकि वित्राव ताक्यरत्रत मक कां कांत्रवानां इहेंबाहिन। तन नकन वानारवा द व्यन्त्रा, (व वात्र विधान, (व मृष्यना, (व जानम डिस्न्द्रवर्ष

स्था अनिप्राद्धि,—अथम छादा मख्य कि मा मत्मद ।

तम कारनत नाथ है। कांत्र कांक अथन मननाथ हो कांत्र छ हत्र किमा आमात्र आनंदा हत्र । आत तम्हे छेमात्र तम्पत्र अस्त मनकाय हिमात्र आनंदा हत्र । आत तम्हे छेमात्र तम्पत्र अस्त मनकाय भिनित्रा आभिन कारनत्र मछ तम्हे कांक निर्माद कित्राहिन. तम्हे तम्म आत मनकाय भाषत्र वांत्र कि मा, किंक त्रित्रा छेठित्छि ना । तम्हे ताम अम्बा माद्दे,—तम्हे अत्याधाल नाहे । तम्बंधान तानत्याभाण-भूत ख्वाभिभूतत्र तमान छेदमत् भागत्र क्रमात्र क्रमात्र भ्रमात्र क्रमात्र भ्रमात्र क्रमात्र भ्रमात्र क्रमात्र विख्या स्वाम मित्र क्रमात्र विख्या व्याम स्वाम स्वाम मित्र क्रमात्र क्रमात्र विख्या व्याम क्रमात्र क्रमात्र क्रमात्र क्रमात्र विख्या व्याम क्रमात्र क

विभूर्वतव खडेगार्गा।

#### সম্বর হ্রদ ( ভ্রমণ রক্তান্ত )।

একদিন আগরার বন্ধুগৃহে বসিয়া সম্বর হুদ দেখিবার আলোচনা করিতেছি, তার পর দিনই আলোচনাটা কার্যো পরিণত করিবার আয়োজন করিয়া মধাছে আগ্রার বন্ধুগৃহ হইতে আহার করিয়া যাত্রো করিলাম। টেসনে গিয়া দেখি একজন ভরতপুর রাজবংশের ভদ্রোক আগরা হইতে ভরতপুর যাইতেছেন, কথায় কথায় জানিতে পারিলাম, তিনি ভরতপুরীয় দম্যুগণ কর্তৃক আগরার ভীষণ ডাকাতিতে সাক্ষ্য দিতে আসিয়া-ছিলেম। সে ভদ্রশেক আমাধক ভরতপুর দেখিয়া বাইবার অন্থ্রোধ করিলে, আমি অন্ধ কথারই রাজী হইলাম। তরতপুর সাধীন রাজ্য তথন স্থারাজ্য নাবালক, তাঁহার অভিভাবক ইংরেল গ্রথণেট, পূর্বে রালকর্মচারী অনেকটা বালালী ছিলেন কিন্তু এই আম্বেল বিভারিত হইয়াছেন। কেবল একটা ডাক্তার মাত্র বালালী আছেন, ভিনি কায়ত্ব স্পুতরাং আমি দেই মব পরিভিঞ্চ বন্ধু গৃহেই অভিধি হইলাম।

ভধনও বেলা অনেকটা আছে। পথে পথে মনুরের নৃত্য, হরিনীর করুণ রূপা চাহনী আহাকে মুক্ত করিয়াছিল। যাঠময় মনুর ও হরিনী আনকে নাচিয়া বেড়াইতেছে।

বেশ একটু বেলা আছে, রোজও উন্তাপশালী।
ইহারা ভিতর ভরতপুর টেননে আদিরা উতরে নামিরা
পড়িলান। আনার বিছানা, বাল্ল, গাটরী, লটবহরে
কুলী আদিয়া নামাইল। বদ্ধু গৃহ হইজে বে অর্থানা
আদিরা ভামরা তাহাতে উঠিবার অগ্রেই আমাবের
লটবহর উঠিল। গাড়ী আমাবের বন্ধুগৃহের হারে
পারাইলেই নানিয়া পড়িলান। বিশ্রামারে চা অর্থানা
হইল।

পরদিন ভরতপুর রাজদরবার ও পুবিবী বিশ্বাভাগেই মাটার কঠোর কঠিন প্রাচীর বেষ্টিত শুরু জিন্ত হুর্গ দেখিলাম। তুর্নবার বৃহৎ, এই বার দিয়া আরোহীস্থ রহৎ হজ্ঞী অনায়াসে প্রবেশ করিতে পারে। প্রহিম্ন দিক্তবন্ দর্শন করিয়া আসিলাম। দিক্তবন হিছুনামক স্থানে অবস্থিত। ইহা অত্রত্য মহারাজের প্রীয়াবাল বাটিকা। এখানে এমন একটা বন্ধ আছে বহারা বর্মই ইচ্ছা ক্রত্রেম বৃষ্টি বর্ষণ করান, যাইতে পারে। ইহা এখান হইতে মথুরা বাইবার পথে, দিক্ রোজ নামক রায়ার উপরে। এই পথে মখুরার দিক্ বর্মজালা অতিক্রম করিয়া মধুরায় প্রবেশ করিতে হয়। এখানকর বালালী ডান্ডোরের সলে দেখা হইল, বালালী সঙ্গীহীন হইয়া তিনি বড় ছঃখিত। এই মাবালক

মহারাজের আবলে ইংরেজ রাজা অভিভাবক হইরা অন্ত আইন প্রচলন করিবার আরোজন করিলে রাজপুতগণ শৈশিয়া উঠিয়া কহিয়াছিল "আগে আমানের অন্তের স্থানে আইনকারীর অন্তের সংগ্রাম হইরা পরাস্থ হইলে আন্ত আইন মানিয়া সইব।" ইহার পর অন্ত আইন আক্রজনের অভিপ্রায় সমূলে পরিত্যাগ করিয়া সরকার শৈশবাসীকে সম্ভ রাধিয়াভিলেন।

বিশ্বনাহার করিয়া হুপুর রোদে বাজা করিলাম।
বিশ্বীতে উঠিয়াও রোদের ঝাল আমাদের গায় লাগিতেছে
বিশ্বনাঠের মাঝে ময়র বয়ুরীর ও হরিণ হরিণীর নৃত্য
কেথিতে দেখিতে আমরা সব ভূলিরা গেলাম। ভরত
পূর্বের একটা করা বলিতে ভূলিয়া গিয়াছি। ভরতপুর
রাজা ইংয়েল গ্রণ্থেউ ভাহাদের বহুতর সৈল আনিয়া
রক্ষা করিতেছেন। মাঠে উহাদের সৈল্পাবাস বা
ক্ষিতিন্দ্র প্রণ্থেউ ভাহার হই দিকেই মাঠের মধ্যে
ক্ষিত্র পাটন্থেউ, এই সকল স্থানে ভাহাদের গৃহে
ইল্পেগ্রেক গাড়ী হইতেই দেখা যায়। অধিকাংশই
ক্ষিত্রাম দেশী সৈল, গোরা সৈলও মাঝে মাঝে

বৈশা বৰন প্রার চারিটা আমি তগন সুলেরা জংসন ইসিনে উপছিত হইলাম। নদীয়া জেলাবাদী বার্ সান্ধী রার এই ষ্টেসনে একটা ভাল কাজ করেন। সান্ধীবার আমাকে পাইয়া গাড়ী হইতে নামাইয়া ইতেন, উলার গৃহে নিয়া প্রচুর জলখোগ করাইলেন, ভারাই জার প্রানে ভ্লিতে পারিব না। পাঁচালা ভারক লাশর্থী রায়ের নামের সহিত সাদৃশু আছে বানিয়াই ভারাকে পুব মনে করিয়া রাবিয়াছি। এখান ইতি গাড়ী বদল করিয়া সম্বর যাইতে হয়। দাশর্থী লাই আমাক এখানে হাঁচ দিন ধাকিয়া যাইতে কবিশেন করি আমাক প্রত্যা স্বর বাত্তিক বিশেন করি আমাক প্রত্যা স্বর বাত্তিক বিশেন করি আমাক সম্বর্গ স্বর বাত্তিক বিশেন করি আমাক সম্বর হল দেখিবার আগ্রহ বেশী স্বরাধ্বী সাম্বাতিই সম্বর হল দেখিবার আগ্রহ বেশী স্বরাধ্বী

अश्यम रहेरक नाफी हाड़िना मार्क वृतिवह धूनि উড়িয়া আকাশ, বাযু—খেত শোভা ধারণ করিয়াছে, अधानकात गांकीत मांख्य कम, तक बोदत हरन, मार्टित मारक अक अकी (हेमन, निकार वाड़ी वा कमनम नाहै। यञ्चत ठातिमितक मुष्टि ठाल यान दश्र (यन ठातिमितकते व्याकांन माजिए नानियाहि, नाह नाना नाहे, मार्थ गात्य (छाठे (छाठे काठाशाह । यक्कृतित यक्षा निया রেল গিয়াছে। এই জনহীন প্রাস্তরের ষ্টেগন গুলিছেও माश्य छेठिए नामिएएए। छेटाता (य गाँहेएएए, पिदिल मत्न दश अक रधन चाउँ की व, मानक क धुंछ. পায় নাপতাই জুতা, মাণায় গন্ধমালন সদৃশ বিশাল পাগড়ী, পায়ের জুতার গুড়ালী ভালিয়া অমুত চটীর ष्पाकात इरेग्नाल, रेरालित ठऐ्भेठांभठ मत्य ठातिलिक মুণরিত হইতেছে, আরু তাহাদের আসাতে ধুলি রাশি পথিকের মাণা পর্যান্ত উঠিতেছে, মাধার চুল, গোপ, দাড়ী, শেততত্ত্ৰ হইয়া গিয়াছে। আমি তাবিতেছি ইহারা কোণা হইতে আদিল, কোণায়ইবা যায়, বিশাল বিশ রাজ্যে ইহাদের আশ্রয় তান কভদুর। পরে জানিলাম ইংাদের গ্রাম অনেক দুরে, মরুভূমি ছাড়িয়া তাদের আবাদ এ হেন মরুরাজ্যে ইহারা বাদ कतिरमञ्ज ভारामिगरक मिथित भरत रम देशामित चाहा বাঙ্গালী অপেকা অনেক ভাল।

যবন সদ্ধান সমাগত তখন আমরা সম্বর রেল টেসনে আসিরা পড়িরাছি। গাড়ী থামিলেই দেনি ক্ষুদ্র একদল বালালী গাড়ীর এ মাথা ও মাথা করিভেছে। আমার কাছে আসিয়া জিজাসা করিলেন, ''আপনি কি আসরা হইতে আসিয়াছেন?" আমার নিকট সহ্তার পাইয়াই আমার লট বহর নামাইয়া লইলেন। আমি তাহাদিগকে জিজাসা করিলাম যে তাহারা কেমন করিয়া আমার অল্পকার আগমন বার্তা অবগত হইলেন, তাহারা বলিলেন 'আসেরা হইতে পত্র পাইয়াই আমরা প্রায়

শইতেছি তার পর আজ ফুলেরার দাশরথী বাবুর তার পাইরা জানিতে পারিলাম আপনি এই টেণে আগিতে-ছেন। ভখন বুঝিতে পারিলাম দাশরণী বাবুই আমার আগমন সংবাদ দিয়াছেন। ছই সারি মেহগনি গাছের ভিতর দিরা চলিলাম। ষ্টেদন হইতে মুণের আফিদ ও वानानी वाव्रावत वाना अक माहेरनवे कम। भव चारे (वन च ज्वर ज्रात्मान है अमन वारक, वर्षाकार वार পরিছার। বাঙ্গালার মত এখানেত আর রুষ্টি হয় না। স্থুতরাং ভূমি আমাদের মত শ্লাশালিনীও নহে। हैश्द्राक्य वा वार्ति वानिया व जाने हो क बादा शतिकात ও রান্তা খাট উন্নত করিয়াছেন। ইহাদের কৃত বাগান ও রোপিত রক্ষাদি আমাদের দেশের তায় সতেজ ও मश्रहे नट्ट, তবে দৈনিক ইহাদিগকে धन দেবা করিয়া কোনপ্রকারে তেজ রকা করিয়া বাচাইয়া রাখা ঘাই-रिक्टा मन, भूमानि আমাদের বেশীই হইয়া থাকে। অতি কট্টে তরি তরকারীর গাছ-खिन वाहिया दिवाहि। कुप दहेर खन पूनिया गाहि দিরা তাহাদের জীবন রক্ষা করা হয়। আমি তারপর 'ভাৰার দকে বাড়ী প্রবেশ করিলাম ও আহারাত্তে নিদ্রা (श्रमाम ।

প্রভাতে গাত্রোখান করিবার পূর্বেই দেখি বালালী বাবৃগণ গৃহবারে সমাগত হইয়াছেন, তাহারা প্রাভর্ত্তর মণে বাহির হইবেন ও আমাকে লইয়া যাইবেন। প্রাভক্ত্যাদি সমাপণ করিয়া আমিও তাঁহাদের সহমাত্রী হইলাম। ছদের পাশ দিয়া যে রান্তা গিয়াছে আমরা সেই রান্তা দিয়া থেড়াইতে চলিলাম। ছদেরী অপূর্বে জিনিব, ইহার দৈর্ঘ্য ২০ মাইল, প্রশন্ত ৬।৭ মাইল, জলের গভারতা তিন হাতে, ইহার মধ্যে কোন বন, জলল নাই—বড় পরিস্কার, দেখিতে স্থান । ইদের অপর দিকে আকাশের পানে অকটা রক্তবর্ণ স্থান দেখিয়া বলিলাম, "প্রাতে ত আকাশ অমন লাল হয় না।" সহবাজীরা বলিলেন "ইহা গিরি নারীর পাহাড়। এই পাহাড়ের মাটীই পেরুয়া মাটা

নামে প্রসিদ্ধ, ইনের উপরে স্থপাকার সাজ্জিত লবণের তিপি বহুসংখ্যক দেখিতে পাইলাম; স্থানে স্থানে বৃদ্ধু বৃদ্ধুর খনন করা রহিয়াছে, ভাহার ভিতর নানা আবর্জনা, ইহার এমন হুর্গদ্ধ যে নাফ চাপিয়াও চলা কঠিন। হুদ হইতে এই পুক্রের ভিতর শুল আনা হয় পরে ভাহাতে বালুকা ও নানা আবর্জনা ফেলিয়া রাখিলেই ফুল হয়। এ সকল মখন পচিতে থাকে তথ্য বিষম হুর্গদ্ধ হয়। সেধানকার লোকদের এই গদ্ধ সহা হইয়া গিয়াছে। বাবুরা একজন স্থেশের দারোয়ানকে বিলয় দিলেন যে আযাকে সঙ্গে লইয়া সমন্ত দেখাইয়া দিবে, ইহার পর হইতেই দারোগা ও একজন স্থারোয়ান আমার নিকট সর্বাদাই বাকিত ও গদে নিয়া নানা স্থান দেখাইত।

**এशान इरावज-शृहान मिननबीरमत এक पाला** আছে। দেশে তাহারা বেশী সংখ্যক খুষ্টান করিতে भारतन नारे। भिमनतीरमत এक है। यथा देश्ताणी कृत अ चाह्य। हात थात्र बक्नड, देश्ताकी श्रष्टां देश व श्रुहोन शार्टित्रता, वाक्रमा श्रुहान दश्र ना, त्म रहनी जाता भिका (मग्न तम (मभीय भिक्र किता, **উहा**ता भिष्मतीरमञ्ज বেতন ভোগী, বাঙ্গালী বাবুদের পুত্রদের বাঙ্গলা শিথিবাঙ্ক डेलाइ এबारन नारे। चामि अक्षिन स्मिनदौराद कुन (एशिए गियाहिनाम, देशतक मिननतीता **आ**मारक श्वे খাতির করিয়াছিলেন। তাহারা সুলে বাইবেল পড়ান ও তাহাদের স্ত্রীলোকেরা গৃহস্থ বাড়ীতে পিরা উলের 😉 স্চের কাল শিকা দেন এবং কিছু কিছু ভাৰা **पिया** वादकन। शिलनदीका THE IVE त्म (मभीशामत भाष्य थून छान नावरात करते। হোমিওখ্যাথিক বিনা মুল্যে ভাহারা চিকিৎসা • क दिन. मित्र प्रमिग् क টাকা ধারও (पन । ভাগ ভাহারাও সাহেবদের 7(7

ক্ষিয়া থাকে। বিশনরীদের বাগনা ওলি ও তৎগ্র ক্ষান্য শত্তিকাল ও পুলর।

क्रिया अक्षेत्र मार्शिका ६ अक्षेत्र वात्रवाम का अरोबाबी आवाद गरक लाव गर्यकारे बारक। नवद ক্ষিত্ৰ প্ৰদিন আহাৱাতে আমি ফুণের ইন দেখিতে ক্রিভার। গাটা কেমন কেমন করিতেছিল ব্রাণি উৎপাহ কম হয় নাই। কতক দুর মুণের আদি-প্রেকাতে যখন গিয়াছি তখন গা ব্যাবসি করিতে कारिका उपदा अध्य दि में गीर वास्कावानि छेख्छ । विशेष नामि পড়িয়া পিয়া অটেড্ড হইলাম, অটেড্ড दिनाय नमय छणवात्मत नाभ यत्र ग्रहण ना। (प्रत्यत जी ব্রাদির কথাই মনে পড়িন। ভাবিলাম হায় এ হেন শ্বৰভী দেশে আপনার জন ছাড়া হইয়া মারা গেলাম। अवनहे जारन अङ्गाज्य- अग्रान्त भग्रान्य कृतिया कि क्षेत्रम भारत देवज्ञ नाए कतिनाम मत्न मारे, জীক্ষান্ট আৰু আদিলে চাহিয়া দেখি আমার কাছে क्रिक्टिनंद न्यक्षा वानानी ७ इंडेनि हैरद्रम अवर कारी আগ্রেটিভ সে দেশী লোক। সাহেবেরা মুপের কর্তা, অঞ্চলই আমাৰ পরিচর্যার বাস্ত : সম্ভ পোল। চেত্রা লাভ করিছা দেবি আমার গাময় তাত, বুরিলাম বমি শিরিয়াছি। বনি করার দরণই এতটা শীন্ত চেতনা লাভ व्यक्तिक भारिप्राद्धि। अ नवप्र डाक्टात व्यानिका श्वहिता-क्षिमा अवस्थान जीलाक शशिक कृत हरेटड कर कुलिया किया बाबाद हिट्हिन। चामात क्रम भाषी चानिवाद ক্ষিত্ৰ হুইয়াছিল কিন্তু আমি কোন অসুস্থতা বোধ क्रिक्टिकाम ना चूर्जतार दाविताहे दानाव राजाय। এই উপস্তবের পরে আমার আর কোন অমুস্থতা বোধ বাই। গৃহতাৰী বাদার আদিরা আমাকে ঔবৰ প্রাপ্তরাইলেম, ডাজারও অনেকক্ষণ পর্যন্ত ভাষার কাছে किलान । जाकारती शक्षाव लामनात्री. हैरदाजामत विकस क्षानी हैनि सूर्वत आधिर्वत ७ कृतीरमन ठिकियमा

करत्रन । वाहिरतत्र (शांनी शहिरमञ्ज नित्रा बाहक्त्र) अ (समीरवदा छाळाडी सेवस वज्र (नमी बात ना ।

আমার এতটা উৎসাহ যে ধরে বসিয়া থাকিছে शांतिनाम ना। किङ्कान शांत भूतव पांताशांदक ডাকাইয়া হলে হুগের কাজ দেখিতে যাত্রা করিলায়, গুৰুসামী সে দিন বিশ্রায় করিতে বলিয়া গিয়াছিলেন। व्यामि व्यात शूर्णत व्याकिरमत किक किश रमनाम ना। चानका यकि वावूत बाहेरल निर्वय करतन, -- छीहाता मान করিয়াছেন আমি অসুস্থ। আমি একবারে সুণের ইপের कांद्रधानाव कार्ष्ट्र शिया हाजित हरेलाय। (कर् अर्थ হইতে ধাল কাটিয়া পুকুরে কল জানিতেছে, কেহ क्लामानी सिंग्रा कुन जूनिएउट्ड, क्ट दिन कार्डेन्द्र जिन्द्र গাড়ীতে ছণ বোঝাই করিতেছে, ষ্টেমন হইতে রেশ লাইন মুশের হল পর্যান্ত গিয়াছে: গাড়ী বোঝাই হইলে ইলিন সহযোগে তা ভেমনে আদিয়া ফল তল চালান रहेशा यात्रा व (लभी स्वत्रा कहे सुनहे (तभी श्राप्ता कहे इतित क्व का कान शास करा कतित्व दम्हें काव श्राहिक ষাটা ধরিতে পারে তা ফুণ হইয়া ব্রায়। কেই ফুণ প্রস্কৃত করিয়া বা প্রস্তৃতি মুণ বিনা অনুমতিতে নিতে পারে না, ভাহা হইলে ইংরেজ কর্ত্তক তাহাদের অর্থ ও কারাদ্রও হইতে পারে।

এই ইলের মালিক লয়পুর ও বোধপুরের মহারালয়্ম তুল্যাংশে। এবানে মহারাজনের এলমালি কাছারী ও কেলথানা প্রভৃতি আছে। ইংরেলেরা (গরণ্টেন) এই ইল বছদিনের করা ইলারা কইয়া মুক্রের কারবার করিছে- ছেন। মাড়োয়ারী সদাপরেরা ইহাদের মুক্রে কারবার করিছে- ছেন। মাড়োয়ারী সদাপরেরা ইহাদের মুক্রে কারবার করিছে- করিয়া প্রচুর ধনার্জন করিতেছেন ক্রিয়া প্রচুর ধনার্জন করিতেছেন ক্রিয়া রাজ্যানীয়া কেবলই গোলামী করিতে জানে, নেধনেজার বাজানী বাবুরা মুগের কারবারে থাকিলেও রুমে উরার সাক্রার কথা মনে ভাবেন গা। এখানে বাজানের বিচারাদালয়েই স্ব কাল হয় তবে মুগের রুবসা সংক্রার অপ্রান্ধের বিহার

ইংরেজের। সে ক্ষতা প্রাপ্ত হইরাছেন। এবানকার ইংরাজদের জেলধানার ৫।৭ জন করেদী থাকিতে পারে। বেশী করেদী হইলে রাজাদের জেলধানার পাঠাইরা দেওরা হর! রাজ সরকারে ইংরেজদের প্রতিপত্তি বেস আছে। ইংরেজেরা রাজ আদালতে আসামী হইরা প্রেশেও আসন পান। এধানে একটা বাজার আছে ভাহাতে সাধারণ মত জব্যাদি ক্রয় বিক্রের হয়! সপ্তাহে ক্রইদিন হাট বসে।

नव्दित ब्रूर्णित इत नव्दिक अथारिन अक्टी श्रीवान वाका প্রচলিত আছে। আমি তাহা বাবুদের মুখে ভনিয়া মুরস্থিত কালী বাড়ী দেখিতে মনস্থ করিলাম। সে धाराम वाकाति अहे-अकमा (याषभूत्यत वह भूर्ववर्ती बहाबाका अधाकांत्र कांनी (मरी माधना कविया वव श्राश হ্রম বে ভিনি অখারোহণ করিরা পশ্চাতে না ফিরিয়া শুভদুর বাইবেম তত্ত্বর পর্যান্ত সে স্থানে সোণা ফলিবে। कानी (पर्वोध डांहाद मत्म चनुष्ठ छार्व बाहेरवन। মহারাঞ্জা অধারোহণ করিয়া ক্রত চলিলেন। বহু দুর পর্যান্ত निया को जुरुगाविष्ठे हहेगा शन्ठाट हाहिया स्मर्थन शिक्षरमञ्जूषिक नवह क्या बहेबा शिवादक। क्षिपीत्क कहिराम "मा, अकि कतिरा नवरे स जन।" स्यो किस्तम "अिंडिअंडि यह चार्मि এইशानिह इंडिनाम जात वाहेव ना। এই অলেই ভোমার সোণা कॅलिएको हेरीए७ थाइत नवन छेरलत हहेरव।" महा-রাজাও থামিয়া পাড়লেন। এই বিরাট জলাশয়ই न्यून हुई। अपारम ध्यक्ति वदनत वह नक है।कात दूर अध्यक्ष वह । स्ववादन द्वारी दृष्टितन त्ववादन यनिवापि ক্ষরিয়া তাঁহায় দেবা পূজার ব্যবস্থা অভাপি তথায় रिशिष्ट । अंदे धाराम वाका कंडमूत मंडा त्या ना শেশেও কার্যাভার কতক্ট। সত্য ব্রিরা অকুমান করা बाब। रंगरे कानी त्वरीत भक्ति भूत्व बाकिन रहेरण किए परिनम्दर जनविछ।

व्यावि राष्ट्रे कांगी (परीत मन्पित (प्रियात व्यक्ति व्यकां कतित वावृता कशितन, "व्वविवात्र चानूक, है मिन चाफिन वक, चामदा (गा-गाड़ी कदिश चानमार्टर नहेबा वाहेर।" आबि डांशामद कथाब हाकी में हरेशा शतकिन बारेव वावहा कतिनाय। धक्कन युवा गार्टरवत निक्रे जानाश कतात्र डिमिश्र जायात्र महरार्ड इटेरिय क्षकान कतिराम, जिमिष्ठ ता साम स्मर्थ नारे। পরদিন যাওয়া সাবাস বইল- উভয়ে অখারোর यादेव। मारहतरमञ्ज कम्रोडा अन्य रम्बारम आरहा साहा गांछी (मधात्म हरणना। छादा वधात्म माइ। शत्रकि কিছু বাত্ৰ পাকিতেই গাৰেবের তৃত্য আমাকে আসির कामाहेन । निक्षाचित इनेशा कुत्रादक हा श्रवत करिए कहिया श्राजकुका पि गातिया नहेगाम । हा श्रुष्ठ वहेंद्र বাড়ীর ভিতর হইতে কিছু জল যোগের আয়োজন করিছ विन । ভাড়াভাড়ি ভাহা গলাংকরণ করিয়া সাহে আমি অতি প্রত্যুবে যাত্রা করিলাম। গুহবাসী উঠিয়া व्यायामिश्रक याजा कताहेता भिन्ना (श्राम्ब) क्रज्याची श्रवाताहर श्रामता मक्छ्मित উপর निया हिनया रक्षे নমুটার সময় কালী মান্দরে উপস্থিত হইলান। আন্ দিগকে দেখিয়া কালীর সেবাইতেরা ও সে আম্বানীরী छील इहेन। नकता आभामित्यत छिलत्रक महस्य ব্লিয়া সাব্যস্থ করিল। একজন সাদা আর একজ্জ कारणा मारहत। मारहरत्त्राध इहे ब्रक्त देव देवहि छाद्यापित बातना वहेता। दत १२ ए व्यामात्र अ नारक्षी পোৱাক ছিল। আমরা বধা সম্ভব বিপ্রায় করিছা এদিক ওদিক বেড়াইরা আসিসাম। তৎপরে আরি সাদাহিক করিলাম, সাহেব আর স্থাম করিলেন না আৰাকে ভদবস্থার দেখিয়া পরে ভাহাদের **বারণা বর্তক** আৰি পুণের আফিনের একজন বালালী বাছু। আবাদের লাহারের লক গেবাইত বান্ধণেরা স্চি, মিঠাই প্রভত 🕏 কুল্লাদি সংগ্রহ করিল। আদরা ভাষা আহার করিনা বেশ তৃত্তি গাত করিলাম। এই কালী মেৰীয় বেৰাই

বাদ রাজ সরকার হইতে জনি ও মাসিক রভির বরাদ আছে। আনরা আহারাতে বিলাম করিয়া বেলা ভিন্টার সময় তথা হইতে গৃহাভিমুখে যাত্রা করিলাম। আমাদের আবারের বায় তাহারা লইল না, সেবাইত ক্রামণিবিসকে কিছু দিয়া আদিলাম। তাহাদের ব্যবহার আথাদের নিকট বড় ভাল লাগিল। ভারতের হিন্দ্রা

ক্ষামরা সম্বার সমর সভরে আগিয়া পঁতছিলাম। আৰ্ম্যা কি দেখিয়া আসিলাম উহা কেমন স্থান তাহা বানিবার জন্ম সকলে আনিয়া একতা হইয়াছেন। अभिवाध यवा मछव देक कियर निया द्वराई भारेनाय। अवानकात्र गारश्रतत्रा वात्रांनी निगरक चुना करत्रन ना वंतर বিশক্ষ সমাদরই করিয়া থাকেন। ভাষারা পরম্পর বিশক্ষণ বছুতা ভাব রক্ষা করিতেছেন, উহাদের মধ্যে ক্ষাৰ, চাকর সম্বন্ধ ভাব নাই। সন্মার পর চা ও জল-বৈংশের পর সলীতালোচনা হইস। কেহ বাদক কেহ পারক। সামার এ বিষয়ে মূর্থতা জানিয়া ইতাৰ হইলেন। এ দিন সাহেবও আসিয়া আমাদের স্ত্রীভালোচনার যোগ দিলেন। সাহেব গান বুঝিলেন না আমাদের মধ্যে একজন দোভাষী হইয়া সাহেবকে গানের ক্ষিত্র বাইরা দিলেন। রাত্রি ১১টার সময় সমাত পভা জিল হইল। আমরাও আহারাত্তে নিদ্রা গেলাম। প্রদিন আতে প্রতিপ্রমণায়ে আহার করিয়া সকলে আফিসে देशरहान, चामि नरवाम भवा ७ भूछक महेशा विधाय कतिए विनिनाम ।

শার নাত বিশ্রামান্তে সংগের দারোগাকে ডাকাইর।

কিন্দানা গো-গাড়ী আনাইলান। সাহেবকে পুর্বেই
কো-গাড়ীর কথা বলিয়া দিয়াছিলান। আমি দারোগা ও
কাসরালী সহ গাড়ীতে উঠিয়া গিরি মাটীর পাহাড় সেপিতে যাত্রা করিলান। হুদের পার দিয়া বে রাভা কিহাতে যাত্রা করিলান। হুদের গাড়ী চলিল। গিরি
নির্মান শাহাড়ের নীচে পাড়ী রাবিয়া পদত্রকে পাহাড়ে উঠিলাম। পাৰাড়ের সৰ মাটাই পদ্ধ পলাশ বর্ণের।
আমরা দেখিলাম একস্থান হইতে কোদালী দিরা পিরি
মাটা তুলিতেছে ও তাহা পো-পাড়ীতে বোঝাই করিয়া
টেশনে লইরা যাইতেছে। হুই তিন বংশর জমাগত
একস্থান হইতে পিরি মাটা তুলিলে শেখানে তার অভাব
হয় ও পরে অন্ত দিকে পিয়া তুলিতে হর। তার পর
কয় বংসরে আবার এখানে মাটা হইলে তা তুলিবার
যোগ্য হয়। সন্ধ্যার সময় আমরা ফিরিয়া আসিলাম।
মক্তুমির উপর দিয়া পিয়াছি বলিয়া আমাদের গাড়ীর
ছড় মড় মন্ব হয় নাই, বালুকা রাশির উপর দিয়া গাড়ীর
চাকার ফন্ ফন্ শক্ষ হইয়াছিল। বাতাসে আমাদের
গা ময় ধুলি বিভার হইয়াছিল।

যাহা এখানকার দ্রষ্টব্য তা দেখিলাম। এখামে বছ কুপ আছে তাহাদের কোন কোনটার লোশা জল আর খাকি সব মিঠা জলের। লোগা কুপের জল বাসন বসন ধোয়ে ও কাপড় কাচে। মিঠা কুয়ার জল পান করে। লোগা কুপকে খাট্টা কুয়াও পানীয় জলেয় কুপকে বিঠা কুয়া কছে। এখানকার মাটীতেও লবণের ভাগ বেশী, তাই বলিয়াও এখানে নারিকেল গাছ দেখিলাম না। আমি বড় আদর আপাায়নে এখানে কয়টা দিন কাটাইলাম। কতক বালালীহীন বা বয় বালালীময় স্থানে প্রবাসী বালালীরা দেশের লোক পাইলে এমন করিয়াই আদর করেন। আমি তথা হইতে যাইবার আয়োজন করিলেও তাহারা ছাড়িতে চাহেন না এমনই ভাব।

পরদিন বেলা ৪ টার সময় এখান হইতে অভত যাতা করিলাম। বালালী বলুরা ষ্টেগনে আসিয়া আমাকে বুখা সন্তব আদর করিয়া বিদায় করিয়া গেলেন। বেদ কয়দিন আনন্দে কাটাইয়াছি। এমন আনন্দ কি জীবনে আর একবার পাইব না ৪ কন্ত্য করিয়া ট্রেণ চলিয়া বেল, আমি আমার ব্দেশী বন্ধদের প্রতি চৃষ্টিপাত করিতেছিলাম ভাইাদেরও তদবস্থা। বভদ্র পর শুব ষ্টি চলিল ততদ্র পর্যায় একই ভাবে চাৰিয়া রহিলান, ভার পর বির∤ট মাঠের মাঝে বছ দুরে গিয়া প্রস্পর অদৃভা হইরা পড়িলাম। ইগাই আমাদের অফুত্রিম বলুতা। হার, কি অফুত্রিম আন-শ।

তীরাজেজকুমার মজুমদার শাস্ত্রী, বিক্তাভূবণ।

## योवत्वत मगाथि।

আজি তব নাহি রূপ, বর্ণ তব কবিত কাঞ্চন
আজিকে গ্রেছে স্নান. তেজে।হীন ভোমার ময়ন।
নাহি শোভা চিকুরের, ওঠাধরে নাহিক রক্তিম।
আজিকে নীর্গ রুচ্ মধুম্য়ী ভোমার ভঙ্গিম।
তব রূপ লাবণার জীবনের হরেছে মর্ণ
তুমি তার মৃত দেহ, কাল সবি করেছে হরণ।
এবে বক্ষোবাহু রুচা স্মাধিতে করিয়া নিহিত
নিশি দিন রবো জাগি আগুলিয়া চির স্মাহিত।

শ্ৰীকালিদাস রায়।

#### অবরোধ।

(Erckmann Chatrian निविত-Le Blocus নামক অব্যায়িকার বঙ্গাছবাদ) চতুর্থ অধ্যায়।

(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

এই দ্ব গোল মালের ভিতর আগবুর্গও পারি সহর থেকে ডজন ডজন লোক ধবর নিয়ে আস্তে লাগ্ল। প্র দিয়ে যেতে হলেই একজন না একজন সভয়ার চোধের উপর পড়তো। তারা সকলেই জার্মাণ ক্রডয়াজার কাছেই বক্লোনংসের দৃষ্ধে পবর্ণর নাৰেবের কৃঠিতে এনে থামতেই ভালের চার ধারে লোকে গোল হয়ে খিরে দীড়াত তার পর হরকরা খোড়া থেকে নামতে না নামতেই সহরময় গুলব রটে যেত বে ক্রাকরে এসে শত্রু সেনারা জমায়েৎবস্ত হরেছে আর व्यायात्मत मत्नत (भनाता दे। (ताहन ) नमीत दीश करणा तका कराहा कर्यनल वा अनुजाम ১৮०० (बर्क ১৮১६ সাল পর্যান্ত যে সকল ফৌজে কাজ করেছে ভালের সকল (करें! जाका राम्रहा (करन ১৮) ध मारन यात्रा **वर्जी** हरत्रिक ভবিষাত युक्त कत्र्व श्राम ভाष्मित्र<del>रे च्य</del>ू व्यामाहिमा करत त्रांचा स्टाइहा छात्रा क्छक व्याह নেত্ৰে কতক আছে বোমোতে আর কতক আছে ছুরুঃ বন্দরে। তারপর আবার একদিন ভন্লাম কানা ভুরা हम्हा (य मिल्य अधिनिधिता नवारे अक लाहे एस কাৰু কর্তে গিয়েছিল বলে তাদের নাকের সাম্নে ব্যাহ সভার দরওয়াকা বন্ধ করিয়ে দিয়েছে । এই বিশ্বস কত যে আজগুৰি সংবাদ আস্তো আর বলবার নয় 🖟 গ্রোফটাল পিরমাজা কাইজার স্লাটভারর্থ আরও স্ব কাছাকাছি গাঁ থেকে যেসৰ লোকেরা চোরা গোলা व्यावनातित किनिय व्यामनानि करत तिहेमतात काल काली ফ্রন্স সেপ্তেল আরও কত গব লোক ব্রকিয়ে বুকিয়ে এলে চুপি চুপি বলে বেড়াভে লাগ্ল যে রাশিয়ার সমটি चालकवान्त्रात 'क्ष्रीयात मुम्राते कारभावा वादकव चात्र আশাণির ফ্রেডারিক উইলির্ম ছোবনা করে দিয়েছে বে ভারা এই যে যুদ্ধটা কর্ছে সে তথু সম্রাট নেপোলিয়নের भूत्व, कताभी काणीत भरक नग्न। (मर्शानियम बार्फ इंडे(बान्हें। ध्वान करत ना क्ला करें छाएम अवान উদ্দেশ্য। তারা নাকি বলেছে যে ভারা ভাবগারি টাবগারি या किছू हें। अ चार् नव जूनिया त्वरव । नक्षा त्वना वह मन छान लाक्त्रा त्व कि कत्त छ। छात भाकिन मा। अक्षिम मकाण (बनाव भव शतिकात सर्व र्थन। त्यहा त्यांव दम्र व्याहेरे कि मन्नरे जित्यका। वायिमार माज फेडिंहि छ्वम्थ (भावाक भवि बाहे अवस

मिन्न के जिल्ले हैं है दिया व भने छन्ट लिनामें। उमे नार्य हरूम विश्वतिक देव नेकारण काष्ट्रियों कांत्र नेकार्य क्र देखाँ ने नेवर्ष क्र हैंने कि कर किर्देश रेंबेज़ीत नीर्रंटर्वत के छात्रीर छ क्या ट्रिंग। इसके स्वत अध्यों मा करते। नकरने जानेन जानन कार्जन वार्ष ज्ञांतरकां है नित्र वान्त- यात्रां ना वान्त्र छात्रा क्षेत्री मानागर्छ जनव राव । अरक्ट वरण वार्याव শেৰ আটি। যারা গড়াইরের লারেক ভারা ভর্ম क्षिक स्कार्य मेरण भर्म पूर्व पूर्व (विकास्तिम । वृक् क्रिया तिनारेश नय नगत वर्ग तंका करेहिन। दर नर স্থ্রের পুখবাসী ভারিক কে লোক চিরকার্গ বাড়ী বংগ विषेत्र देश बार्गम बार्गन विवेद कर्य (पर्य जान हि अवन करिया में मार्चना महिल्य नीविटनंत्र छेनव माफ़िया विश्वकी हतिहरू वग्रंड हरव। गर्ल किছू ना वर्रन क्षेत्रक भाषात्र मिरक छाकित्रहिन आयात्र यूच निर्देश कि अप वात रिक्त ना। श्रीप्र मिनिष्ठे भनव भरते ক্ষাপ্ত ভোগর ছাড়া হলে খামি বল্লায় 'ভুলি ভুক্যাটা क्षेत्री स्टूब क्लेम कामि विद्यात मार्टियत क्यांनरम निरंब ব্ৰুক আৰু কাৰ্ড্ৰদের বাৰটা নিয়ে আসি।" তখন সে अप कार्य का भारत राम के म "रक करव एक रहि हरू अ वहर्न आवात पूर्व कत्र एक दिल्ल करते हा जनवान ! कि विनेषरे जान किन्ति" आबि आब कि छेखे । एवं इक्सर्व संबंधान नवरे अनुत रेष्ट्। ।"

अधि त्वाक त्विष्ट्र पण्नाम। यन ते कि वाजान कर्म तेन की वाजान नव। का कि का वाज वाज्यात नव। का के क्लिंग की वाज वाज्यात नव। की की वाजादवर त्यादक अधिक में कि वाजादवर त्यादक अधिक में कि वाजादवर त्यादक अधिक में कि वाजादवर वाज्यात व्यादक वाजादिक। कि वाजादिक वाजादिक। कि वाजादिक वाजाद

र्वाम निर्मित्र यामारमेश बीत माधून पूर्व कर्री मिता वीं अही। आबि के किहूरे बूद्य छें हैं के शादकि मां। क्षेत्रव कि बामात वड़ होन परन रहेक्र है ना। रन परंत्र कै किन राणा कि ? तून्तृन मा मिन्दन किर्ड निरंप्रदेश माध ठागांट रश" किन्न, जांत जायात्रात्र कांचि **रां**जिहिना (मृत्य वूर्ति रहा 'वाल यात्राम। अथन करत यन बातान करता मा ध उर्ध धक्छ। निश्म तक। वरेष्ठ नश्च। यूक कत्रवाद भ्रष्ठ लाक्ति अथाति वेषु अजाव स्त्वा, आमता ७५ भाराता ष्ट्रीहाताहे (नव। चिन वाहेर्त शिक्ष चेळे रममारकत मरण শড়াই কর্ছে হয় কি তারা আগিয়ে এলে তাদের ভাড়িয়ে দেওয়ার আবিভাক হয় তা'হলে কি আর আমাদের পাঠাবে ভেবেছ ? আমাদের দৌড়াবার মত কি বয়স আছে না শুকু চালাবার ক্ষমতা আছে ? তুমিও দারী চুগ পाक्ति होक् होक शाष्ट्रिय अकनन नाम ब्रह्म গিয়েছ ছোমার আর ভাবনা কি ? মন চালা কর ।" चामि वहाम ''दा जा मिछा वर्षे किन्न वृक्षा दरमञ जूमि যতটা ভাব্ছ দেহটা বোধহয় এখনও ভত্ত ভেলে পড়েন।" ভাষার কথা কি, ভালই তা যাও এখন গিয়ে বলুক কাৰ্ড্ৰ নিয়ে এগ।" আমি জিজাদা করলাম ভাৰলে আমাদের কি বারিক মরে গিয়ে বাকুতে হথে नाकि १ (भ ७६न दश दश करत (व दि छेर्ग। বল্লে "না হে না বারিকে কেন আমরা আপন আপন বাড়ীতেই থাক্ৰ।" ভারপর সে আমার হাভবরে विनाम निर्मा भात भाव भाव विनाम क्या नतकात एण्डव মেরারের কাছারিতে চুক্লাম। নিড়ি একদম লোকে ভর্ত্তি, নাম ডাকা হচ্ছে খোনা পেল। ফ্রিক সেই সময় ঘঁদি তুমি থাক্তে ভাবলে দেশুতে ट्यांकेटमाक ट्विकारमंत्र त्रकंगबीमा। त्रवित्म, खेषित्म, भावित्य बंडनेय है। मिख्राना मानलकामा दशका এর সব আর আর সময় কোবাও একটু কাম আছে ভৰ্গে পাতৰাৰ করে সেলাৰ করে টুপী খুলে ল ডিৰি व कि जर्म में व देविका एक क्लिका माना है कि कर

बुक क्रमिता मीन मिएल मिएल माछिता नकरनत मिरक (युन (नवार एवा करत (हरत चारहन। चार्माक (पर्व अकृत्वीं तुन्त "बारत साम्रान त्वयं हिन् कि, पूरे छाति ব্রংলার দেশাই বনে যাবি। হাহাহা এবার তেমার গোফ জোড়াটা আৰ টক্ছে না ফৌলা দন্তৰ মাফিক क्रिंट (इंटि (इप्रिक्ट (मर्टन ।" अहे तक्म आवछ क्र कि काब (नभी कर ए नाग्न। निष्ण निष्ण नरहे द्भम वम्राम शिखाक ताम द्राध करण नाश्म। ৰত সব পুরান যোদা ভার কেউ হলেন জমাদার কেউ इराम हाविनहात आह क्उं हराम चुराहात आह স্থামুরা যত সব যেন কেউ কোথাকার নর ভাগতে ছাপুরে এপেছি। যুদ্ধ এপে যেন সবই উণ্টে দিলে "নীচ হইল উচ্চ গামী উচ্চ হৈল নত।" কে কেমন বুদিয়ান ভার আর কেউ থোঁজ করলেন না থেঁ।জ পড়ন কেবল কুচ কাওয়ালের। কাল যে ব্যক্তি নোংরা শর্পোর সাফ করে দিয়ে বেত এমন বৃদ্ধি ছিল না বে আর কিছু করে পেটের ভাত করে এখন তিনি তিনি যদি र्मन जानाएव क्यामात्र माट्य । 'লালা' কে "কাল" বলেন তার উপর কথা কইবার (बाहि मारे याक्रिश (म कथा। (मबारन निरम्न (मिन चकी चात्रक माँ जिल्ला थाकाव शत व्यागात नाय ভাক হল। মোয়াস বলে হাকছে ভনে আমি উপরে প্রেল্যাম। দেবলাম উপরে বড় বল ব্রটায় লোক चार्टेट माः चामाटक देव प्रवाहे बन्दिक गांत न भावान टात व वार् चार्क समा दशमा तमि। ७४। दत अक्वार्त (हरत एवं करे बादन शाता में तिरत तरवरह ষ্ঠই ৰুদ্ধে পুৱান পাৰ্ড পণ্টন। দেখ ছিল ত কেমন লব জোয়ান! ভোকে নিশান ওয়ালা করে দেওয়া शाता जूरे जाता जाता नित्य आभातित महाह क्छ করিয়ে নিয়ে আস্বি। "এই নাবলে উলব্ক (विद्या ना (हेना (हेनि करत हैं। भी हैं। नि व्यात्स कत्ता। আমি আর তাদের দিকে না চেরে কোন স্বাব ট্বাব मा तिरम गुणेन हरण रणवाम। श्द्रक (छडव निरुद्ध मिष कात कात कोटन (याक हार का यूकि करत हिन् করা হচ্ছে আর বুড়া কর্তারা সব আড্ডা করে বসেছেন। গ্ৰপুৰ সাহেব সেনাপতি পেটিছে ন মেয়ার মলাই,তার পেডার ফ্রিনার উর্লী বিভাগের কাঞ্চের বনেয়া এই বৰুম ছয় সাত জুন বেতো রূপী সহরেয় পাঁচ পাড়া থেকে একত্র হয়ে ছোট থাট এক বৈঠকে শুলি हरत्राप्तन-(कडे वा वरत आह्न तक्षे वा मृश्क्रिय आहुत वागाक पूकरण (मर्व वृद्धाता मन हाम् कृ मान द्वा) छात्रा निरम्पत्र मर्था या श्रव वनावनि ऋतुहिन छु আমার কতকটা কানে গেল ওনলায় একজন ব্যুদ্ধে "ও এখনও খুব শক্ত আছে ও ঠিক পারবে।" সার সার नकरमध राहे छारवहे कि नव वन्छ मानुरनः। आहि मत्न मत्नहे वन्नाम (य ट्यामता या श्रुति न्द्रत याश्वमा কেন ভোমরা যে সব খোস চেহারা বিশ বছরের হোকরা ত। अति (कडे मान कत्रह ना। मान याहे क्रांतिना द्वान मूच क्रि चात किছू वन् नाम ना। अतर्व मारहाम (सम्राय वदानसम्बद्ध नत्त्र कर कारन कि सिद्ध क्रमा वार्क किक्टिनन। रुठां९ किरत माजालना। सार्वास मुख् টুপিটা মাণায় কাত হয়ে পড়েছে। আমার দিকে ব্যুক্ত পড়তেই ভিনি বলে উঠ্লেন ভোষাদের স্নামেল ধানা কি বলতে। এই একটা আধ্যৱা বুড়ো ভোস্কুতে নিয়ে ভোষরা কর্বে কি ? ও বে হাঁটুর উপর ভর ছিলে मैं। ज़ार्डेर भारतना (नर्हि। जुरन वामात मरन कड़ती স্বতি বোধ হতে লাগ্ল। আমে আর ওদের কুরাই कान ना पिरा थक् थक् करत अकट्टे अकट्टे कान्ए चूक कुरत विनाम । भवर्गत भारत्व वरलन "जूनि वदर वासी किर्त विकि পিয়ে ভোমার দলী কাশির একটা ব্যবস্থা করুবে। व्यामि बत्रकात कित्क भा ठारतक अभिरम्भ कुमन मुम्ब ्बबादात (भक्षात क्षिमात वरण **केंग "क्र्यि** मृह्यूय क व देवित त्यामान-क कत हुई (इरलरकड़े मार्किन मुत्र भाकित प्राव्छ। व्यक्त थाक्त अविका

ক্ষাৰে ভাই ২০ হতো।" শক্ষীছাড়া ফ্ৰিগার ব্যাটা দামার কিনে সর্কনাশ কর্বে তাই খুলে বেড়াছিল মুপরার ওরও টাদ্ণীতে পুরানো জামা কাপড়ের ब्याकाम, आयात्र छारे हावा जुवाता अत लाकात ना শিলে আমার গোকানেই কেবল ঝোঁকে এই জন্ত যে भाषात छेनत हाए हरि हिन। स्रात किहू ना लित कारन এই तक्य करत व्यामात नार्य नाशिय निर्म ! বি লাগান অম্নি গবর্ণর সাহেবও টেচিয়ে বল্লেন । একটু দাড়িয়ে যাওত। বুড়া, ভারি ধুর্ত তুমি না ? ৰুক শেরানে বৃদ্ধি যাহোক ছেলেদের ফৌলে কাল क्राई राव वरन मार्किन मृनुरक भाष्ठित प्रथम राम्रह । ব্ৰমো ভৌমার হচ্ছে। ওরে কে আছিল দেভো বুড়োকে বন্দুক ভররাল আর কার্ত্রদের পেটিটা দেভো। विशादात छेलद (तर्ग चामात श्रीम प्रम रक हरात अभिक्रम रुक्ति। रेक्ता रन दूकवा अभित्र पिरे किन्न भौत्रणीय मा। पाचि (वहा हिवित्यत शाल वत्य दान्ह স্থার কি गिৰ্ছে। আমি আর কি করব। ওয়ার্ণার বলে अक्रम करनहेरानत मरक मान चारा चारा हरत (भगाम। লালের একটা হলে বন্দুক কার্ড্য তরয়াল সব বোঝাই करें दे दाषा र दिल्ला (नहे बारन आमात्र निर्देश (भना জ্বাণার নিজ হাতে আমার পিঠে কার্ডুসের পেটি আর শ্বৰ বুলিয়ে দিয়ে বল্লে "মোগাস যাও এখন কিছ ডাক শৃষ্টু আদা চাই।" আমি ত দেই দঙ্গলের ভিতর ছিল্লে বেডিয়ে এলাম এত রাগ হচ্ছিল যে হতভাগা হৈটারা হো হো করে ই।স্ছিল তা পর্যন্ত ভালকরে কানে याप्रवि ।

ৰাড়ী কিবে ভিত্তৈ চুক্তেই মলের সঙ্গে দেখা হল পৈত আমাকে আসিয়ে আননার জন্ম বার হয়ে আস্থিল। সব ভনে তার মুখ ধানা পাঙাশ পানা হয়ে শৈল। ভারপয় চোধের পলক পর্তে যা দেরী সে টুক্ও আছি চুপ করে ধাকতে পার্লে না বল্তে লাগ্ল ওই শিক্ষার দেখ্ছো ও আমাদের ইত্নী লাতের শক্ত।

ওবে আমালের কত স্থনা করে তা আমার আমা আছে।
কিন্তু তোমার হাত ধরে বল্ছি তুমি এখন কিছু বলোমা।
রাগ করেছ যে তা বৃক্তেও দিওলা ঠাওা হয়ে চুপটি করে
থাক। এর শোধ এরপর নেওয়া যাবে। সে স্থবিধা
হবেই হবে জেনো যদি ভোমা হতে না হয় ভা হ'লে
ভোমার ছেলেরা বা তালের ছেলেরা একপা ভূল্বে নাঃ।
ভোমার নাতিরাও অক্তঃ মনে করে রাখ্বে যে তালের
ঠাকুরদাদাকে অমুক লোক এমনি করে নাকালে
কেনেছিল। এসব কথা তারা টের পাবেই পাবে।

তথন আমাকে বুব দেওয়ার জন্ম এর থেকে আর বেশী বল বার কিছুই ছিলনা; আমিও মনে মনে এই সব কথা ভাব ছিলাম কিন্তু রাগটা এত বেশী হয়েছিল বে তখন বলি আধেক সম্পত্তি ঘ্টিয়েও হতভাগা ব্যাটার স্বানাশ করা বেত ভা হ'লে তাতেও পিছপাও হতাম না। সে তারিখে সারাদিন ধরে এমন কি রাজিতেও আপম মনে সেই কথাই জেবেছি বার বার বিশ্বার কেবল বলেছি "বেটা খুনে ভাকাত আমিত বেরিয়েই গিয়েছিলাম—ভারাতো আমাকে যেতেই বলেছিল— ওই বেটাই তো মাঝে পড়ে আমার স্বানাশটা ঘটালে। "ভার পর থেকে ফ্রিঙ্গওর উপর আমার এমন রাগ ছিল থে তোমাকে আর কি বল্বো। সে যে আমাদের পেছনে লেগে এমনি বিপদে ফেলেছিল তা আমরা লী প্রথম এক দিনের জন্মও ভূল্তে পারিনি আমাদের ছেলেপিলেরাও ভা ভূল্বে না।

(ক্ৰম্ণঃ)

बि एक्नांग ग्रकांत्र ।

### F HSI

# বিদায় সঙ্গীত।

(পূরবী)

কোৰা যাও ভাই मत मत्र कारत का थि कन। দিতে গো বিদায় कारि कार वाष ष्ट्रेष्ट यांत्र श्राप्त नव वन ॥ इ'मिरमद राषा এত माथा माबि, কেন এনেছিলে প্রেম ভরা আঁবি. श्वनंत्र इतिया यनि नित्व काँकि मध्राता कति कुनमन। ভারতী পূজার বিজয়া দশমী, वानी चूजनन जीहत्रान निम्, नां (काना कृति, याँ थि कन চुमि সারা বরুষেরি সম্বল 1 অতিথি সেবার শত শত ক্রী. कुर्श मिन व्यर्धात मुहि, कर्छ कड़ारत छोटे वाह क'ही क्या शकि शास्त्र अवित्र । ৰুগ যুগ হ'তে যেন পরিচিত, चना खरत रखि मिनिछ, वागीत हत्राण चारक मकिछ. न्छ मिन्दात ७७ कन। মিশনের শ্বভি বহিয়া এ মনে. বিজেদ বাৰা গৃহিব কেমনে वाहित मीर्च चारमत शतरन

ভালা ছদিত্রী টল মল।

ত্রীকালিদাস রায়।

# **जीरवत मात मन्पछि कि ?**

জীবের সার সম্পত্তি কি, এই প্রশ্নের উত্তরে সামরা এক কথারই বলিব বিশ্বজনী সহান প্রেমই স্থাবের এক মাল সার সম্পত্তি। সভাসতাই মহান প্রেম বাকীপ্র জীবের সার কোনও উত্তম সম্পত্তি নাই। থাকিতেও পারেনা। সেই ধন কিন্ত জীবের ঘরেই আছে। জীবের ঘরে থাকা আপন ধনে ভাহার দৃষ্টি পভিত হউক, আগ্রন্থ ধন লাভের জক্ত ভাহার লালসা শতগুণে বৃদ্ধি পাউক, চেটা যত্র হউক। ধনীর ঘরে ধন থাকিতে শীনবীশ্র কালাল হইয়া চিরদিন অন্নবন্তে কট পাইবে ইয়া দেখিকে কাহার না হুধ হন? কেবা বাথিত হুদরে ধনীর সেই ধনের সংবাদ দেন?

প্রেমাবতার শ্রীগোরাল দেব জগতে জীবের বেরী
মহাধন প্রেমের অপূর্ব সংবাদ লইয়া আবিয়াছিলের।
ধনীর সন্তানকে দীনহীন কালাল, অয়বয়ে রেই দেবিয়া
তিনি ধনের সংবাদ দিয়াছেন, তিনি এই বলিয়া জগতে
জীবের ধনের সংবাদ দিয়া গিয়াছেন যে, "হে জীর,
ত্মিওত মহান প্রেমধনে ধনী। তোমার সেই সহান
প্রেমধন তো তোমার আছেই, তবে ত্মি অমন করিয়া
ব্যবজীবন হইয়া দীনহীন হইয়া জগতে কিরিতেছ কেন্দ্র
লৈ দেধ, তোমার ধন যথেই আছে। ত্মি তোমার নিজের
ধন লাভ করিয়া ধনী হও, তোমার আর ছঃধ করিতে
হইবে না, তোমার আর ভিধারীর ক্রায় ঘ্রিতে হইবে মান
আমি তোমার ধনের সংবাদ লইয়া আসিয়াছি ।"

শ্রীগোরচন্তের এই সক্ষণ্ড সংবাদ ত্রিয়া বাঁথায়ের ভাগ্য ভাগ তাহারা, ধনী হইরাছেন, আর যাহালের জ্বার্গ্য ভাগ নহে তাহারা বেমন ছিল ছেন্দ্রই বহিরাছে। ভাইারা ধন থাকিতেও কালাল হইয়া কট্ট ভোগ করিতেছে। ব্যারচক্র কিনা জীবকে ভাষার প্রেমধনের সংবাদ ছিলা গিলাছেন। জীব যে নিধনি নহে, জীবের ঘরেই বৈ আৰ্ল্য ধন আছে সেই সংবাদ দিলা গিলাছেন। আনরা এইন মলিন এবন হুভার্গ্য যে ভুচ্ছ ভোগ স্থাধ রভ হইলা দুইনারে কেবল মালামারি কাটাকাটি করিয়া মরিভেছি; ছাই বলিভেই ইচ্ছা হল আমাদের আবার প্রেমধন ক্রোমার পানরা আবার প্রেমধনের অধিকারী হইব কি । আমাদের ব্য়ে অম্ল্য প্রেমধন থাকিলে বাহিরে আম্রা এইরপ পশুবৎ হইলা ফিরিব কেন ? কথা কেবল বিধানিত।

শৌরহরি অহেতৃক রুণাসিরু, জীবে বড় করুণ তাই किन जानीराज्यक्त, जीव जातमा, वा मश्वाम बार्यना শ্লিয়াই অব্বা জানিয়া রাখিয়াও আলস্য বশতঃ বুদ্ধির साम परतंत्र धन प्रे जिल्ला नज ना। छाटे कीरवर এত इर्फना, এত লাছনা। হে জীব, তুমিও প্রেপের অধিকারী, তুমি শ্রীকে অর্গিক নও; তোমারও প্রেম আছে, (कामात्रक त्रतकान चाहि, छत् कीव (छामात ध्यमधन कृषि बहेवात्र हिनिया वृत्तिया मध, कीवत्न वक रहेत्व। আর তুৰি শীর সার সম্পত্তিতে বঞ্চিত রহিও না; ধন পাইলেই ত ভোমার হঃৰ দুর হইবে। যদি কেহ একথা খুলেন খে, প্রেম ধারা জীবের কিরূপ দুঃধ যুচিবে ? ছুর্ভোগ দুর হইবে প্রেমর্থে জীবের সার সম্পত্তি বুলিবার ভাৎপর্যাই বা কি ? আনার বলি, জীব হুংপ টাৰ না, চাৰ কেবল সুখ, কেবল আনন্দ। একমাত্র दियार ति पूर्व, चानत्नत अञ्चर्त । (अम जिल्ल कोर चुने इहेट शादा ना।

আছা, প্রেমই বদি জীবের একমাত্র স্থাবর প্রস্রবণ হইল তাহা হইলে ইহাও জানা আবশুক যে, সেই প্রেমের হুলি নিয়ন্তির কি শক্তি আছে? আমরা জানি জীবের হুলি নিয়ন্তির শক্তির প্রেমবাতীত আর কোন বন্ধরই নাই; নিজাত্র প্রেমের সেই শক্তি আছে। চিরদিনই গাকিবে প প্রেমের সেই মহীয়নী শক্তির বলে জীবের অসাধ্য সাধন

হয় : প্রেমের বিচিত্র শক্তিতে শোক যায়, ছঃব যায়, রোগ বায়, সকল অর্থ নিবৃত্তি হয়। আর কি হয় थ्यामत वरण श्वनत्त्रत नकन वाशिष्ठ शत्र। स्वत्त्रत्ते वाशि कि ? क्लांव दिश्मा एवं मनः माध्मश्रा अहे भक्त समरबंब वारि। এই সমূদয়ও याय ? সকল বাাধিরই শাতি হয়। প্রেমিকের হিংসা নাই খেব নাই, ক্রোধ নাই অহতার नार, गर्स नारे, बाद नारे कि ? प्रश्नि प्रक्रिके पूर्व कि ছুরভিসন্ধি প্রেমিকের নাইণু কেন নাইণু প্রেমে স্বভাব নাই। প্রেমের স্বভাব কি ? প্রেমের স্বভাব সব পবিত্র করা। প্রেম অপবিত্রকে পবিত্র করে, অসারকে সুসার করে; ক্ষকে ভাগ করাই প্রেমের ধর্মবা প্রকৃতি। প্রেমে পশুর পাশব ভাব দূর হইয়া যায় ৷ মাত্রবের বে পাশব বৃদ্ধি আছে দেওলিও ফি প্রেমে উন্নত উজ্জল হয় ? হাঁ মামুখের ভিতরে যে পভভাব আছে, নিষ্ঠরতা, স্বার্থপরতা, কুদ্রতা, সংকীর্ণতা আত্মন্তরিতা বে কিছু নিকৃষ্ট ভাব আছে, তাহা দুর করিয়া দেয় একমাত্র ८श्राम ।

আছা,পণ্ড ভাব দুর হইলে মানুষের কি কল? কল
মানুষ ভ্রমানুষ হয়, বাটি মানুষ হয়। গুরু মানুষ বাটি
মানুষ হইলে কি কল? ফলের তুগনা নাই। মোট
কথা অন্তঃকরণটা নির্মাণ নিরাময় হয়; অন্তঃকরণ নির্মাণ
নিরাময় হইলে কি হয়? সেই নির্মাণ নিরাময় অন্তঃকরণে
আনন্দ উপস্থিত হয়। যে আনন্দের ক্ষান্ত জাব এত
লালায়িত, যার জন্ত জলে আগুনে ঝাপ দিতেছে, সেই
আনন্দ লাভ হয়। পূর্ণ আনন্দ পরিপূর্ণ ভাবে লাভ
হইলেই জীবের ছঃব গেল, শোক গেল, ভাপ গেল,
আলা গেল, বন্ধন গেল, রোদন গেল, স্ব হুর্গতি
গেল।

তাবে আর এক কথা জিলাগা করি ? প্রেম ছাড়া কি
জীবের আর কিছুতেই ঘণিত পশুভাব দুর বইতে পারে
না ? বিশ্ব বেলাও উচ্চস্বরে বলিতেছে, প্রীতগবানের
প্রেমাবতার শ্রীকৃষ্ণতৈত্না গ্রন্থ বলিতেছেন, সামরাও

विद्यक अपूर हर्ग रित्रा विनिष्ठि (श्रेम राष्ट्रीण विद्या वात गर्सालम गण्डि नाई। कोव (श्रम वाज इहेल व्यानिप्राह्म, प्रथम कार्याह्म भण जूनिप्राह्म, गर्थ भर्य कांनिएएह्म, भर्थ कांनिए भार्य कृष्टिएएह्म व्यानांत्र यथन कोर्या (श्रम कांक हरेरा छथन मित्रवामहान श्रम प्राह्म हिन्सा बाहरा । कार्याह्म श्री स्वरंग महिन्स मित्रवामहान श्री प्राह्म हिन्सा बाहरा । कार्याह्म श्री स्वरंग महिन्स प्राह्म स्वरंग स्वरंग कार्याह्म स्वरंग स्व

#### "প্রীতি পরম সাধনম।"

প্রীতি পরম সাধন কেন ? না, জীবের চিরবদ্ধ চির
স্থান্দ চির স্থান্ধর প্রীতগনানের সদে প্রেমেই জীবের
বিশন হইবে। কেন, প্রেমে মিলন হইবে কেন ? প্রেম
বন্ধটী আকর্ষণান্তক—আকর্ষণ করা প্রেমের একটা
প্রেষ্ঠধর্ম বা শক্তি। প্রেম ছাড়া আর কিছুতেই অর্থাৎ
কিছু দারাই শ্রীভগবানকে আকর্ষণ করা বায় না। প্রেমের
স্থাকর্ষণেই তিনি আরুষ্ঠ হল।

মানিলাম প্রেমের অন্তত আকর্ষণ শক্তি আছে; ঞ্জিগবান সেই আকর্ষণে আরুষ্ট হন কেন গুনা খ্রীভগবান প্রেম্মর, সুতরাং তিনি প্রেমের আকর্ষণেই আরুষ্ট হইয়া थारकन। करन कन भिरम, इर्द इद भिरम, रमहेक्र প্রেমে প্রেমই মিলে, প্রেমকে প্রেম দারাই টানিয়া আনা যায়; কাম বা অত কিছু ছারা আনা বা ধরা ষায় না। এতিগবান খয়ং প্রেম স্করাং প্রেমেই তিনি बद्रा (पन। चात्र अक्षाई वा विन (कन १ औ जगवान শকলের ওরু; প্রীভগবান হইতে ওরু বস্ত আরু কিছু ্ৰাই; কিছ প্ৰেম বছনী প্ৰীভগবান হইতেও গুৰু। ্ডাহা হইবে প্রেম সকলের গুরু; ত্রীভগবান জীবের ্পর্য ওরু। সেই পর্ম গুরু বস্তকে পর্ম গুরু বস্ত ্ধিরাই ধরিতে হয়। প্রেম ছাড়া শীভগবান হইতে গুরু ্ৰক্ আর কিছুই নাই; পুতরাং প্রেমই একমাত্র ্ৰীভগবাদকে ধরিবার বস্ত। কাম্বেই শাস্ত্র বলেন প্রীতি, ्रभुद्रम् भाषम् ; ज्ञानद्रमित्क अञ्चलनान्त्कः भाष्ट्रम् जीवः भव सार्वेतः। शिष्ठभवानरक मा भारेरण कीरवत नवरे करण

পেল। প্রীভগবান যাহার প্রাপ্তি হইল, ভাহার বিজাবিধন মান বল পোরব সকলই পাওরা হইল, কিছুই বাকী রহিল না। আমরা কিন্তু মনে মনে রাজা হই। আমরা ভাবি আমার বিজা, আমার বৃদ্ধি আমার ধন জন মান মধ্যালা শংসারের যা কিছু সবই আমার। কিন্তু ভাবিয়া দেখিলে ভোমার আমার কিছুই নাই, সবই প্রস্কলগতের কর্তা প্রীভগবানের। তবে বাঁহার সকল, তাঁহাকেই লাভ করিনা কেন ? তাঁহাকে পাইলেইত স্বল্যাইব। একমাত্র প্রেম হারাই ভাহাকে পাওয়া যায়—এই বাঁটি সংবাদ বধন পাইয়াছি, আর সেই প্রেমের উদীপন করিনা কেন ? প্রেমের উদীপন করিনা কেন ? প্রেমই বাহা তথন সেই প্রেমের উদীপন

মহাপ্রভূ জীরামনিন্দ রায়কে সাধাসাধনভাষ্টের আলোচনায় জিজাসা করিলেন—

"সম্পত্তির মধ্যে জীবের কোন্ সম্পত্তি পণি।"

প্রভাৱ প্রশ্নের উদ্দেশ্ত এই—জীবের ভোগের শাস্ত জনেক প্রকারের সম্পত্তি আছে। তন্মধ্যে থাছি দিছি প্রভৃতি বিভার সম্পত্তি। এই বে জীবের থাছি দিছি প্রভৃতি জনেক প্রকার সম্পত্তি তাহার মধ্যে কোন্ সম্পত্তি। বাস্তব পক্ষে জীবের নিজস্ব।

> শীরামানন্দ রায় উত্তর করিলেন,— "রাধারুঞ প্রেম বার সেই বড় ধনী।"

খন্ধি নিদি প্রভৃতি সম্পত্তি বাহার আছে, সে ধনী নহে, আর সে সমৃদয় সম্পত্তি প্রকৃত পক্ষে সম্পত্তিও নহে। তবে জীবের প্রকৃত সম্পত্তি কি ? না, রাধারক্ষে প্রেম। তাই প্রভুর প্রশ্নে রায় উত্তরে কহিলেন—

"त्राधाकृत्क यात्र त्थाय त्मारे वक् धनी।"

কেন, এই জ্নিরাদারীতে রাশি রাশি মণি মানিকা নোণা রূপা আর অইপিছি প্রভৃতি এত এত বড় বড় নুলাজি থাকিতে রার মহাশর বলিলেন কিন্তু রাধারকে ধোনই লীবের বড় ধন। রাধারকে প্রেমকে বড় ধন বলিলেন কেন ? প্রেম আবার ধন কি ? ও ধনে লীবের কি ছ্থা

क्या द्वान त्याक चलाव चलिएवान एवं स्व? जारह श्रीकांक कार्याकरण (अया दावाहेवा (क क्रकहेवा (क वैद्यातिनदेक दश्चेमहैरा कि ? व्यानि मनिन बीर, कारमत किन्द, बीमि कि त्थम दुवि, मा द्वाराक्षक दुवि । आमि ৰাৰ বন দৌলত, আমি বুকি অণিমা লখিমা অষ্ট সিদি; ৰামি বুৰি হাৰৰ গাত, আমি বুৰি পাণ্ডিতা, আমি বুৰি मि क्नीन पानि गहर, पानि द्वि जानि धनी, जानि नीती, चानि कानी; चानि द्वि चानि वछ, चात्र नकतन हिनि मानि द्वि चानि श्रष्ट चात्र गत्वरे मान। तारा-किए दिवा नमावि वृश्वि कि त्थियहै त्य वृश्वि ना। आवात क्रिक्क, बाबारमञ्जू यठ गणिन बीरवत नांधादण्डः अहेत्रण बाइन । किंद वहेंकन बादना य कीटवर हैकाक छ छारा बाह्यका । विक वंगा यात्र मिनन कोव छ एश्रम (वार्यना. द्वारक काम, बाव्हा यादीत कारम त्वांच जारह, छोदात ह्यामदेश व शिक्टिय मा (कम १ यक्ति में जा मंजाई जी दिव নাৰ বোৰ বাৰিয়া বাবে। তাহাহইলে নিভিতরপেই वनी बहिए शांद्र कीरवर यथन काम ताविध चाहि, জ্বৰ ভাষার প্রেম বোধটাও আছে ; প্রেমের মুলভি তিও ক্রী, ক্রায় কানের মূল ভিত্তিও ইচ্ছা। তবে এক ইচ্ছা शिक्षा भाव अक्टेका मिना। अक्टेकांत मर्था निस्तृत স্থাপ কাপরিটী আছে, আর এক ইচ্ছার মধ্যে পরের ভোগ বাগারটা আছে। ব্যাপার একই কেবল আমার ক্ষাৰ ভোষাৰ এই যা পাৰ্থকা। তবেই বলিতে পাৰি बार्डिकार चारहे, छारात तथान चारह । चारन चार क्रिकी वर्णिएकि, यादात रेका आहि, छादावर कावल नारक व्यक्ति चारक । हेम्बात वृष्टे मृति वा इहे छाव । अक दिश्वन देखी चांत काम देखी। चौरवत यथम देखा विनश ৰিকটা বৰ আছে; তবন তাহার কামত আছে প্রেমণ্ড विद्या रेक्श वर्ग निर्मन दम वर्ग चतुर चतुर जान करन ति भूव अस्म करवन्छवनह तिह होना त्याबाल केलिकाल भार देखा वर्ग पंत्र (छात्र करत कि (छात्राध हिन्दे वह कर्नर कार्यप्रदेश शतिश्व देव। अक देखीर

কৃষিরণৈ প্রকাশ পার। এবন বিজ্ঞাসা এই বলিন জীবের
বাস্থ ত্যাস হইবে কেন । মালন জীবের বাস্থ ভ্যাস
হইবার অর্থাৎ হই প্রকার প্রধের সন্ধান পার তথন লৈ
ভাহার একমাত্র বস্থ অভি অকিঞিৎকর বলিয়াই ভাহা
অনায়াসে ত্যাস করে। যে তৃইটী বানিক্য পাইবার
সন্ধান পার সে কি আর একটী মানিক্য না লইয়া বরে
আনে । জীবও ইহা স্পান্ত বুঝে; কিন্ত বুঝিয়াও ইচ্ছা
করিয়া এক বস্থা লইয়া বসিয়া আছে, পর প্রবির জন্ত
অর্থাৎ প্রেমের জন্ত প্রস্তুত হইতে পারিতেছে না। কিন্তু
জীব যতই মলিন হউক না কেন সে কামও বোবে প্রেমাও
বোবে।

कीव देशव ना वृक्षित व्यानम हात्र (केन ? व्यानम हांशिल है कि त्थ्रम द्वित ? जानम छ कारम आहें। कारमध्योनम चाह्य मठा किछ तम चानतम मानवाचा उसे हेंग्र मी। कार्यात्र जामरमा कंपकिए कांग जाचात्रका ব্য বটে; কিন্তু কিছুতেই আতাবিভার হয় না। আত্মবিস্তার করা যে মাহুবের প্রকৃতি। প্রেমে আত্মরকাও যেমন হয় আত্মবিস্তারও তেমন হয়। প্রেমের দার্গই यानंबर गंडिक रहा, कारगढ़ यात्रा रह मा। (क्षेत्र अपूर्क, कीय भद्रमें। कार्य एम्ह नाम हम्न, भीवन माम ईव मञ्जूष्य नाम रहा। (अस्म (क्ट्रांक चक्रम करत, जीवनर्रक जक्य करतः, प्रकृष्णचरिकं नमुख्यन करता। (श्रासंत्र चर्नान र्यमन जनिर्महनीय ७ जलावनीय त्यरमय में किए एकमि विभिक्तिनीय ७ विष्या। त्यायतं व्यक्ति मात्र हरेल अवीद वृष्टि माज हरेंगि मामूदवत दे अपूर्व अवैद्या हत्र छारा धकवात वानताहि ; धक्रान देश वनिरामे वर्षह इंडेटर्न दर, त्थार्यय म्मार्ग्यम भागतं देखि खेम अक्वाद्व पृत्र दहेशी यात्र : छाशात करेंग चन्दे नदे देश, वार्वेशक श्रार्थशक बंद, मिर्क्ष प्रशानीन बंद दिन्छिनीनी र्देश जाराणियं देव, कुक र्दियान बहेबा बाब 1 कुरीमर्देक cela nan wie wienes eniel die aler dem বিশ্ব করে; তেইবর এখনই মহীরসী শক্তি বে, কোট কর্মের মলিন জীবান্ধার সকল মরলা ত্ব করিয়া দিয়া তেই বৃষ্ট করিয়া ভোলে। আর কি করে ? আর তাহার বে চির পুন্দর চির মনোহর অপূর্ব স্বরপটা তাহা ফুটাইয়া তোলে। তথন মানবান্ধা স্বীয় ভ্বন মোহিনীর রপটা তোলে ইইয়া আনন্দে নৃত্য করিতে থাকে। তাহার নৃত্য তেই জন্ম বে, সে তথন স্পত্ত ব্যক্তে পারে আমি বাহা, তাহা ইইয়াছি। আমার যাহা ছিল তাহাও এই সঙ্গে পাইয়াছি। হারান ধন পাইলে কার না আনন্দ হয় ? কেইবা না নৃত্য করিয়া থাকে ? কেহ নয় প্রকাণ্ডে নাচে,

তাই বলিতেছিলাম প্রেমের এতই মহিমা। প্রেম

কীবান্থার এইরপই শুভ সম্পদ। আছা জীবান্থার
কোমের উৎপর হইলে আরওকি কিছু হয় ? হয়। কি হয় ?
প্রেম জীবান্থা কে—অনুচৈতক্ত জীবান্থাকে বিভূ চৈতক্ত

ক্রিউগবানে আন্থামর্শণ করায়। ভগবানের সহিত যে

কীবের আনাদি সম্বন্ধ রহিয়াছে তাহা বুঝাইয়া দেয়।

ক্রিবির আনাদি সম্বন্ধ রহিয়াছে তাহা বুঝাইয়া দেয়।

ক্রিবির জীব যে ভগবানের সহিত নিত্যসম্বন্ধে সংবন্ধ তাহা

দেখাইয়া শুনাইয়া বুঝাইয়া দেয়।

গৰত স্থাপিত হইলে গদীম জীব আমি অসীম ইইছা ঘাইব। বেমন স্পাৰ্শ মনি স্পাৰ্শে লোহ গোণা হইছা বিষ্ণা তেমন অনম্ভ শীভগবানের গহিত স্পাৰ্শ হইলে জীবেইও শাস্তপদ ঘৃচিয়া অনম্ভ পদ লাভ হয়। প্রেমের বিশেষ্ট অক্সনীব চৈত্ত বিভূ চৈত্তে পরিণ্ড হয়। ক্রেমের এমনই অবিতীয় শক্তি; ভগবান্ ইইতেও প্রেম বড়া

আছা প্রেমের তবত এক প্রকার গুনিলাই । প্রথম লানিতে চাই রাধা ক্রফকে প্রেম করিব কেন । রাধার্থক কি । তাঁহাদিগকে প্রেম করিবে আনি বঙ্গ ধনী কিরুপে হইব ।

প্রেমের তথ যদি আংশিক রূপেও বুবিতে পারা বিশ্ব তাহা হইলে রাধার্ক্ষ তথও বুনিতে কঠিন হইখে বা বিদ বুঝিবার বাসনা থাকে তাহা হইলে বুকিতে পরি বায়; আর ইচ্ছা নাই; একটা তর্ক উপত্তিত করিবার, মন অন্ত থানে রহিল, শোনা আব্দ্রক একটু ওনিবার, এমন হইলে রাধার্ক্ষ কি তাহা শত বালিলেও বুঝা ঘাইবেনা। প্রেমের সহিত বুঝিতে হইবে গ

কেন ? প্রেম দিরা না বুঝিলে কি রাধান্তক তবি বুলি।
বায় না; প্রেমের চক্চ দিরা রাধান্তক দেবিতে ধর,
প্রেমের কাণ দিয়া রাধান্তক কবা ভানতে হয়; প্রেমের
ভাবিত চিত দিয়া রাধান্তক তব ধারণা করিতে হয় নেচেৎ
উহা বুঝিরা উঠা কঠিন।

একটা কথা এন্থলে বলিয়া বাই। প্রেম দিরাই সকল তথু বৃথিতে হয়; প্রেম দিরা না বৃথিলে কোন ভথাই বুঝা বায় না, দেখা বায় না, শুনা বায় না। তোজা পাখীর মত পুথি পড়িয়া পণ্ডিত হওরা বায় না, বে এক অক্সর প্রেমের সহিত পড়ে সেই পণ্ডিত হয়। এই আন প্রেমের সহিত রাবায়ক কথা শুনিতে বিভিত্তি

দিনী আনি কুনাইবে না। সৈ আনন্দ আন কিছুতেই দ্ব "ন্নাধায়ণে প্রেম বাব সৈই বঁড় বনী" প্রীনানিক ইইবে না। প্রভগবাদ ত শান্ত জীব মহেন—যিনি অনত, ন্নাহেন্ত এই বে কথানি ইহা অনুন্য। জীরাবা প্রতিগবানেন্ত উহিন্তি নিষ্ঠিত প্রেম হইলে সেই প্রেমানন্ত অমত অন্তপ শক্তি। আনন্দমারিনী শক্তি; প্রকৃতি বন্ধ ওগবাদ অপ্রিমীয় হয়। আমি জীয়ত স্পাধ। অপীয়ে প্রেম শীবকে জোন তক্তি হিতে, প্রাথতগবাদ্ধে জীবেন্ত নিকি জালবানিতে হর, কামের দাস, বিষয় সুধ্মর সুল বৃদ্ধি ইলছবী জীবকে ভাহা শিকা দিবার জন্ত আদর্শ নায়ক জালব নায়ক জালব নায়িকার বেশে আসিয়াছেন। উভরেই রূপে জিবে অভুলনীয় অনির্কাচনীয় অভিজনীয় হইয়া আসিয়াইছিলেন। তোমার আমার মত ঠিক ঠিক মহন্ত মূর্ত্তি ধরিয়া জাছেবের ভাব ধরিয়া গুধু মাসুব হইয়া আসিয়াছিলেন, যেন ক্রি ভাষাদিগের রূপেগুণে আরুই হইয়া ভাষাদিগেক ক্রিমা ব্যাবহি ভালবাসিতে পার।

আৰম্ভ কাব্যে রসগ্রন্থে নায়ক নায়িকার প্রেষের করা, প্রাণের করা রূপের করা, বিরহ মিলনের করা, হাসি রোগনের করা পড়িয়া রসাখাদন করি; আর রারক নারিকার আদর্শ ছবি আ্যাদের অন্ত হন্য দর্পণে শ্রিকার আদর্শ ছবি আ্যাদের আনন্দের সীমা রাকে না। আমাদিগকে সেই রস দিবার জন্তই না এইবার আদর্শ নায়ক নায়িকার হুই রা প্রজে আসিয়াছিলেন। আক্রে নায়ক নায়িকার হুই হুংখের প্রসঙ্গ শুনিয়াই বারক নায়ক নায়ক। উত্তম অপ্রাক্ত নায়ক নায়ক। উত্তম অপ্রাক্ত নায়ক নায়ক। শ্রীর্থাক্তের দীলা প্রবণ করিয়া অপার আনন্দ না বার্থিক। করেয়া আনার আনন্দ না

जीमत्रक्ष गत्र।

#### विक।

সাবাদ্ধ শিগীলিকা হইতে আরম্ভ করিয়া অমিতত্তেল। হাত, গা, কান, জিহা, ইজিয়, গবই আছে বিশ্বিক গিছে পর্যন্ত করে আয়ালের চক্ষে পড়িতেছে ক্ষুবা তৃষ্ণা লালগার অব নাই। সাময়িক ক্ষুবাই দেখিছেছি একই দশা। সকলেই মাতৃগর্ভ ক্ষোভবিক্ষোতে ভাষাকেও বিচলিত করে ক্ষুত্ত কুষ্মিক হইল—মাতৃগ্রন্ত পানে ক্ষেত্র ক্ষুব্য এক অমুত কথা বলে—গে বলে, যে এইর ক্ষুব্য ক্ষুব্য স্থাধীন কাবে আবাদ্ধ বিহার, ক্ষুত্ত , অধীনকা বীকার করাই ভাষার ধর্ম নয়।

লাগিল—পুঞাদি উৎপাদন করিল, বৃদ্ধ হইল,— সবদেবে
মৃত্যুর করাল আগে ভাষাদের জীবন লীলার অবসান।
এই জীবনের পঞ্চাল নাটকের ববনিকা পতনের পুর্বা
পর্যান্ত দেখিতেছি—উহাদের সারাটা জীবনই অভিবাহিত
হইতেছে একই ভাবে। পেই স্থেবর জক্ত আতান্তিকী
লালসা—হঃখে প্রগাঢ় বির্বাক্ত ও ছ্রান্তিস্ক হাহাকার!
সেই জুবা তৃষ্ণার পরিত্তির জক্ত দিনের পর রাত,
রাত্রের পর দিন বাটিয়া মরা, সেই পরস্পর কাড়াকাড়ি,
মারামারি! সেই ইন্তির লালদার চরম চরিতার্থতা।
সেই অভি সামাত হঃখেই তীব্র যাতনা বোধ—অত্যুগ্র
উত্তেহনা।

এক ক্থার বলিতে গেলে পশুদের কীবন সম্পূর্ণ প্রাকৃতিক। প্রকৃতির পরপারে আর যে কিছু থাকিতে পারে পে ক্রুভূতি ও পে জ্ঞান তাদের নাই। প্রাকৃতিক নির্বাচন ক্ষাতক্রম করিয়া আপন স্বাতস্ত্র্য প্রদর্শন করিবার স্থার্থ্য উহাদের ঘটে নাই। প্রকৃতিই উহাদিগকে পরিচালিত করিতেতে, প্রবৃত্তিই উহাদিগকে যথেচ্ছে পথে লইয়া যাইতেছে, কুধা তৃঞা কাম ক্রোধ লোভ নোহেরই দাগ্যৎ উহারা লিখিয়া দিয়াছে।

এই ভাবই বলি প্রাণী পর্যায়ের গতিবিধি শেষ পর্যায় চলিত, তাহা হইলে প্রকাতর উপরে অন্ত কিছুর বোধ আমাদের থাকিত না। তাহা হইলে পাপকে পাপ বলিয়াই জানিতাম না সুখে এবং আনন্দে কোনো ভেত্ব ব্রিতাম না।

কিন্তু এ রকমটা শেব পর্যায় চলিল না, পশুর পর্যার আভিক্রম করিয়া দেখি মাহ্রবকে । মাহ্রবণ ছাগ মেরাধির বতই সমগুণবিনিষ্ট একপ্রকার প্রাণী । মাহ্রবেরও ছাত, পা, কান, জিহ্বা, ইজির, সবই আছে । ভাষারও ক্রা ত্থা লালসার অন্ত নাই । সামন্ত্রিক উত্তেজনার ক্রোভবিক্লোভে ভাষাকেও বিচলিত করে । ক্রিন্থ সে এক অনুত ক্রা বলে—সে বলে, বে এইরংগ প্রস্তুত্তির ক্রাই জালার লগী নয়।

নৈ বৰিয়াছে যে এই কাছাই তার পূল হইতে প্রির, বিভ হইতে প্রির, এবং যাহা কিছু আছে সকল হইতেই প্রির। সে বলিল বে এই আছাকেই সে পুল্রের মধ্যে দেখে, তাই পুল্রও তাহার প্রিয়। এই আছা যাহা অবঙ, যাহা অনাদি, যাহা অনন্ত। এই আছাতত্তকে যখন সে অমুভব করে, তখনই সে তার বিতীয় জন্ম লাভ করে, তখনই সে বিজ !

এই বিভীয় জন্ম কিন্তু প্রথম জন্মকে অস্থীকার করে না
কিন্তু ভাহাকে স্থনিয়ন্তিত স্থাংযত করে। সে বলেনা,
যে সে দেহ মনকে জ্ঞাহ্য করিয়া রূপ রস গন্ধ স্পর্শকে
মায়া মোহ বলিয়া উড়াইয়া দিয়া বৈরাগ্রত অবলম্বন
পূর্বাক নির্বাণ সাধনায় মন দিবে। এমন কি সে বলে,
যে দেহের পকে আ্মা বেমন অবশু-দরকারী আ্মার
পক্ষেত্ত দেহ ভার চেয়ে কম দরকারী নয়—সে বলে যে
দেহই হচ্ছে আ্মার প্রবেশের সিংহ্লার! সে বলে যে
রূপের মধ্যেই জ্রমপের আবির্ভাব। ভাই সে রূপকে
বাদ দেয় না কিন্তু বলে "আনন্দরপ্রমৃত যদিভাতি"।
যাহা কিছু দেখিতেছি ভার মধ্য দিয়াই আনন্দরপ,
জম্তরূপ, সেই আ্মার প্রকাশ হইতেছে।

ভা নর, তবে ভাহার সমস্ত মিখা। ও তৃক্কতা অপ্নারিত করিরা ভাহাকে সভা করিয়া ভোলে। প্রেম রংশির্ মধ্যেই দেহেরমধ্যেই, সেই অরপ ব্রক্ষের মৃতিমান্ত প্রকাশকে গভীরতর ভাবে অনুভব করিয়া তৃতি লাভি করে।

ধর্ম মানেই হচ্ছে অস্তর্ভম স্বভাব। সে বলিল বে ভার বাহিরের স্বভাব যাহাই হৌকু না কেন, ভার অন্তরতর একটা সভাব আছে যাহা কুবা তৃষ্ণার বিচলিত इश ना, याश लालगांग्र दिगुध इश ना--त्न विलन, द्व (पर मन गरेशारे (म मण्यूर्व नरह—जारात जिल्हा आत একটা পূর্বত্য সতা আছে য'হা অঙ্গর, অমর, বাহা শত হুঃবেও টলেনা, শত মৃত্যুতেও ধ্বংস্প্রাপ্ত হয় বা भेड कि डिटेंड वाहा व्यक्त्य। याहात नार्कका मारे-वाहा **हित (य) वन-- हित नवीन ! मान्य वितरे मर्ज्य थम अर्थ (वाय)** क्तिन (य (न विक । वर्गा ात इरें के विक रहें विक একটা প্রাকৃতিক, অপর্টী আধ্যাত্মিক। এই প্রাকৃতিক क्या नहेबाहे यथन आमदा उथ थाकि, उपनदे क्य प्रति महात्म आगता किति - ज्यनहे क्या जुका अंज दावन হইয়া উঠে, যে তাহা আকাশের প্রাতারাকে পরিবাদ कतिया मित्रा, वर्शित मित्रा (काणित ज्याविष्य क्रिया দিয়া আপনাকেই অত্যন্ত উগ্র করিয়া তোলে। তথনই वर्द्धमान व्यामात्मत्र काष्ट्र এত वाखव स्टेश ७८%, (स ভবিয়াচকে আমরা বর্তমানের ঝোঁকের মাধার স্থীকার কবিয়া বদি।

এই প্রাক্তিক জন্মই হচ্ছে মানুবের স্বার্থসাবনের বিশ্বনার্থের প্রয়োজনের দিক্। এই জন্ম মানুব ভারার প্রয়োজনের কাছে আপনাকে বিকাইরা দের—তবনই তার "চাই চাই" এর আর অন্ত নাই—যতই পাওয়া বার তভই প্রার্থনার থুব উচ্চ হইতে উচ্চতর সন্তকে চড়িয়া আনন্দের স্বকে নিভাগ বেস্থনো করিরা দের। ভবনই বে বলে, আমার ধন চাই, যাম চাই, ব্যাতি চাই। প্রতিপত্তি চাই রূপ চাই, গুণ চাই, বৈতর চাই। ভবনই

. **3. 4** 

वनः दिहि, चर्तः दिहि, वृद्धाः दिहि।
क्रिकेन मासून माजहे "दिन्दी" किमा जाहे "दिहि" ह जाह
क्रिकेन मासून माजहे "दिन्दी" किमा जाहे "दिहि" ह जाह
क्रिकेन मासून माजहे "दिन्दी" किमा जाहे "दिहि" ह निहे ति
क्रिकेन क्रिकेन क्रिकेन भूदिमा निश्चित्व क्रिक्कि आदि हि।
क्रिकेन मा हहेल सामान हलाहे ना। किस्त मासून जरक्रिकेन केन हिल सामान हलाहे ना। किस्त मासून जरक्रिकेन केन केन किन्दा जाति मासून क्रिकेन क्रिकेन केन केन क्रिकेन क्रिक

मिक्टिय वर्षन अटेक्न विठीत स्वा পরিপ্রহণ হয়। ক্ষার ইচ্ছাকে সে নিব্লি করেনা, নিয়ন্তিত করে। ক্রেক্সের সন্ত্রীর্ণ স্বতম্ভ ইচ্ছাকে সংযত করিয়া বিখের পরমা ক্রার পৃথিত পৃথিনিত করে। কেননা বিশ্ব ইচ্ছার এইছ প্রিনাম্প্রাই হচ্ছে কল্যাণের সেতু! মাজুবের এই বে ইছা ইহা বতদিন না বিখের সহিত এক্য প্রাপ্ত अहरक एक हिन्दे माश्रुरवद थाङ्गिक जीवन। छ जिन ক্রে বিশ্বপদ্বাচ্য নহে। ততদিন অন্তর্হান তৃঞ্ার জ্ঞীচিকার, প্রিণামহীন চেষ্টার আক্ষেপে, ওক্তায়, ক্রমান করে পালে মরিতে থাকে। আর বর্ণন সে ক্ষাৰ ক্ষাৰ্থক কৰিয়া প্ৰশ্ৰইচ্ছাৰ সহিত বুক্ত ক্রে তবন তাহার জীবন আর প্রাকৃতিক নহে। ক্রিকার বে নানীন। ছণুনই সে আপন অস্তরতন নহীরান্ অভারতে রভে করে। তবন তাহার আহার আর গোপন कालाएन पारकना । जनव विक्री कवित्र छाहाड चानलछेरन छेरनावित हहेगा यात्र, क्रिकेट बाराज! उनम धरे (य जारात क्या, जारा क्रमान (बारकर, न्याम द्वारकर ; छपनहे (म दिन। ্রেইররণ সাহুষের বিতীয় করা, তাহার সম্ভ কুণা-क्षा अपन्य कृषिया-बाद्य भद्रय थात्य देखात गृहिर्ड

वृक्त करत । जनम छाहात सावात स्वावृद्धित सूक्त बरहे । क्षानिइचित्र चलाब बादाबमारक नाव करिया हम प्राप्ता गाएकत कर कात धारण कतिया थाएक। छावात नाम्मी छुनेस স্বাস্থ্য-ইচ্ছার পরিণত হয়। তাই সে ভবন সামুক্রে ধর্ম ও অবসন্ন করিয়া ক্লবিম উপায়ে কুগাকে উভেঞ্জি করে না। ভোজন হথের দাদগায় ভাহার স্বার উত্তেজক বটীক। দেবন করিতে হয় না। এই যে স্বাস্থ্যের ইচ্ছা, প্রাণের ইচ্ছা—এই ইচ্ছা কুধাকে যথাসম্ভব নিমন্ত্রিত করে। তেমনি পরম প্রেমের ইচ্ছা কামকে সংযত করে । কুবার वाता (सक्त कामारवर्जनतीत थान वा वाक्र क्रूत बहेरज থাকে কাৰ সেৰুপ আমাদের মানগ—বাস্থ্য বা প্ৰেমকে ধর্ম করিখা দেয়। তথনই মাকুবের স্বাতন্ত্র উদায আন্দোলকে বিখের বন্ধ ব্যথিত করিতে থাকে। মান্তুবের অহকার অত্যত্ত হইয়া বিধাকাশে অগ্রভেদী হইয়া উঠে। মহ্মদের কাম ও লোভ এইব্রপে যথন একাস্ত প্রতাপাবিত্র হইয়া উঠে তখনই তাহার অন্তর্তম আ্যার নিদারণ শাহাকার। তখনই তার জন্ম-প্রাকৃতিক-অধ্যাত্মকে ভাষার বিকাশ শভ ক্তন্তিমভায় পরিবেট্টিভ, में गृष्धां व व्यवकृत, में यादि वाविष्टे।

এই প্রাকৃতিক জীবন হইতে উদ্ধার লাভ করিরা আধ্যাত্মিকলোকের জন্মগ্রহণ করিবার জন্ম মান্তবের কতই না কঠোর সাধনার প্রবৃত্ত হইতে হয়। পশুরা এই হংখদারুণ সাধনাকে এড়াইয়া চলিতে চার কিন্তু মানুষ নাকি বুরিয়াছে বে, প্রাকৃতিক জন্মই তাহার চরম নহে। তাহার জীবনের পরম সার্থকভাই দিভীয় জ্বো, কেননা সে বভাবত:ই দিজ তাই সে এই জ্বাত্মজীবন লাভের জন্ম বীর প্রবৃত্তিকে পীড়িত করিতে কুইড়ে হয় না।

খতত্ব ইচ্ছাকে বিশ-ইচ্ছার সহিত সংযুক্ত না করিছে তাহা কিরণে উদ্ধত স্পর্দার সহিত দ্বর্দননীয় হইরা উট্টে, সে, কথা পূর্বেই উল্লিখিত হইরাছে—বস্ততঃ তথন প্রকৃত্তি আমাদিসের অধীনতা পাশ কাট্যইয়া উঠিয়া আমাদিগকেই অধীন ভ্রের মত পরিচালিত করে। তথ্যই আত্মার স্বাধীন স্বভাব দাসত্তের নিবিড় নিগড়ে আবদ্ধ ইইরা পড়ে।

সইজন্তই প্রকৃতিকে বিশ্বপ্রবৃত্তির সঙ্গে একস্ত্রে বাঁথিয়া দিয়া ভাহাকে আত্মবশে আনাই হচ্ছে মানুষের গোড়াকার সাধনা। শান্তে আছে সর্বংপরবশং তৃঃবং স্বর্ধান্থবশং পুৰং। যতদিন আমরা বাহিরের স্থতিনিন্দা প্রশোজন এবং আমাদের এই প্রকৃতির অধীনতা শীকার করিব ততদিন আমরা পরবশীকৃত তথনই আমরা আমাদের আত্মগত শ্বভাব হইতে বিচ্যুত শ্বলিচ—কিল্প বর্ধন সমস্তকেই আত্মার বলে আনিতে পারিব, তথনই আমরা সাধীন। বস্তুতঃ ইহার শ্বাতন্ত্রাকে অত্যুগ্র করিয়া ভোলাকেই যাহারা স্থানীনতা বলিয়া থাকে, ভারাই প্রমের অন্ধ মারাজালে বিজড়িত হয়। সেটাই হচ্চে আত্মার স্বচেয়ে বড় পরাধীনতা। যে ইচ্ছা আত্মার লাগ্ম করিবে বলিয়াই স্টে হইয়াছে; সেই যদি আত্মার শ্বাপীনতা আর করে; তবে তারচেরে অব্যাননাকর পরাধীনতা আর কার্থাকে বলিব ?

বেইজনাই ইচ্ছাকে সম্পূর্ণ অবশে আনাই মাহুবের
প্রথম লক্ষ্য; ইচ্ছা বদি আত্মবলীক্ষত ও বিশ্বইচ্ছার সহিত
সমিলিত না হর, তবে কর্মকেত্রে সেই ইচ্ছার অভিন্তা
সংযমের বাঁধন মানে মা—সমস্তকে অভিক্রম করিয়া
সেংযমের বাঁধন মানে মা—সমস্তকে অভিক্রম করিয়া
সেংযমের বাঁধন মানে মা—সমস্তকে অভিক্রম করিয়া
সেংযমের বাঁধন মানে মা—সমস্তকে অভিক্রম করিয়া
বিচিত্র
বিশ্বকশ্রে আত্মপ্রকাশ করিবার পূর্বেইচ্ছাকে সংযত ও
নির্ম্লিত করিবার সাধনা করিতে হয়! তাহাই ভিজ্বল
লাভের প্রথম সোপান। ইচ্ছাকে ব্লচর্য্যের ঘারা অবশে
আনিতে পারিলে, পরে সংযমের সহিত তাহাকে
বিশ্ববৈভিত্রার অভিস্থে পরিচালিত করিলে সে আত্রা
বিশ্ববিজ্ঞাহের অস্তৃত্বত শ্রেকা অরপ না হইয়া বিশ্ব
ইচ্ছারই অস্কৃত্ব হয়। ভাষা বিশ্বের সকল অহৈত্বক
আন্দলীলারই অস্কৃত্বত হরী দাঁড়ায়। সে আত্রা

বিশ্বের সহিত মিলনে ধ্বংস না করিয়া ভাষাকে সম্পূর্ণ ভাবে প্রকাশ করে! তথনই অন্তর ও বাহির, আত্মা ও প্রকৃতি, উভয় উভয়ের সহিত গভীরতর সামঞ্জ বিশ্বছের পরিপূর্ণ প্রকাশে শীলায়িত হইয়া উঠে।

কিন্ত অসংযত স্বাভন্তা প্রকৃতিকেই উৎকট করিয়া ত্লিয়া আনন্দলেসহীন একটী ক্রত্রিম জগৎ নির্মাণ করিয়া বসে এবং ভাহারি ভোগে আপনাকে নিশেষিত করিয়া ফুঁকিয়া দিতে চাহে। তবনই অংশ সমগ্রের বিরুদ্ধে, বস্তু অবত্তের বিরুদ্ধে, দেহ আস্থার বিরুদ্ধে দারণ বিজ্ঞান্তের দামামা ধ্বনিত করিয়া আকাশ, পাতাল, কম্পারিত করিতে থাকে।

আত্মার পক্ষে ইহাই একটা অত্যন্ত অবাস্থ্যকর morbid অবস্থা। ইহার কবল থেকে পরিত্রান লাভ করিতে হইলে গোড়ার স্বাতস্তালেশহীন সংযম সাধনা প্রয়োজনীয়। দেই সংয্ম-ব্রত সাধনা-কালে মাছুর বে कीवन शांशम करत. छाइ'रक उक्क ह्या कोवन वर्ण। अहे জীবন বিশ্বমানবের সহিত বিচিত্র সম্বন্ধে আবিছ হট্যা विठित ভাবে আত্মোৎসর্জনের জীবন নতে; এই জীবন নিয়ন্ত্ৰিত স্বাভন্ত্ৰ্যের দারা বিচিত্র বিশ্বকর্মে আস্থার নিযুক্ত **উপলব্ধির জীবন নছে।** ইহা বিখ-মানব সম্ম स्टेर्ड দুরে কেবল বিশ্বপ্রকৃতির উত্মক্ত উদার ক্রোডে জীবনকে: গড়িয়া তুলিবার সময়। এই সমর মানৰ ক্রীমার্থ অবলম্বন করিয়া থাকে। প্রবৃত্তি যথন স্কুলিববৈস चारत नाइ, ज्यन विवाद कवित्त (महे माम्पठाकोवन व्यग्रय डेव्हात्रे लोगा (भारत रहेन्ना माँ। प्राप्त - हाराहर সেই কল্যাণময় শাস্তমুন্দর শ্রীটি থাকে না বাধা লোকস্থিতির মূল। তাহা উচ্ছুব্রন প্রবৃত্তির উলাম व्यान्तानान निष्कतं गर्धारे चूत् शाक् बाहेगा गर्द ! ভৰন যে প্ৰেম জন্ম ভাহা অতি পৰিল, কলুবিচ প্ৰেম ভাহা সন্মধের অনন্ত উন্নতির দিকে চলেনা—নিশ্চল অবস্থায় একই স্থানে সারাটা জীবন চক্ষল তরক দোলার भागाहेट थारक। मान्यस्त्र हेक्स यथम गणिशी<del>न</del>

ত্যাক্ষীন কইয় একটা ঘূৰ আৰত সৃষ্ট কৰে, তৰন
মানবানাৰ সমস্ত লাবক কমন্ত নবীনতা, দমন্ত সন্ত্ৰ
মানবানাৰ সমস্ত লাবক কমন্ত আবৰণে আহ্বত হয়।
সমস্ত আনক অবিকশিত অবহায় বহিনা দায়। প্ৰেমের
আইনাক্ষশই বন্ধ পুত্ৰ হইনা উঠে—কাম তাবাকে বাহিবে
আইনিকে: চ্লে-অবশেষে একদিন দারুণ ত্থপের
আইনিকে: চ্লে-অবশেষে একদিন দারুণ ত্থপের
আইনিক ভাবন নাহর, তত্বিন মানুষ সম্পূর্ণ কুপাপাত্র
আইনা দানুষ, বে ভাবার একটা অভ্যন্ত কম্ম (morbid)
স্বস্থা দানুষ, বে ভাবার একটা অভ্যন্ত কম্ম (morbid)

देखारक विश्व-देखान गरिक अन कतिनान भूर्य रंग स्वांक विश्व वन, कांशांक डो भूजन नकरणबर्ध मृज्ञान विश्व-लंगांक अनल कतिना एए उन्न एक उप्तारक है स्वांका पर्य विद्या मार्गि—कांशांति निर्मान वर्णां स्वितः। कि द्यो, कि भूजन नकरणबर्ध अन्यस्थः रेखान स्वितः। कि द्यो, कि भूजन नकरणबर्ध अन्यस्थः रेखान स्वितः कांगांति वर्षांति रहेवांत्र सक्वे नामना किंदरक द्या। स्वितः कांगांति वर्षांत्र रहेवांत्र सक्वे मुद्दुर्स दिन्न कतिन। आरेन स्वितंत्र स्वांचांत्र स्वांचांत्र कांगित करता। अहे स्वांकांत्र सांचांगांत्र गांदांत्र। अञ्चल प्रिटें भागांत्र। स्वांकांत्र सांचांगांत्र गांदांत्र। अल्लावांत्र क्षेत्रत अक्तिः

্নাসন কথাটা এই বে লোকস্যালে আপন মর্যাদা বিশ্বাহ রাথিয়া কপটভার অব্পর্গতন আপন চরিত্রকৈ আক্রা করাটাকেই সমাজের উত্তরিত পথ যাহারা বাহ্য করে ভাষারা স্মাজের দিকেই ভাকার, স্মাজের অনুষ্ঠিকী মান্ত-ধর্মের বিকাশকে ভারা উপেকাকরে। আই বাহ্যিরর খোলস্টীকে চক্ চ্কে ঝক্ থকে করিয়া জানিরা ভিত্রের কীটটীকে সোকা করিতে ভারা অনুষ্ঠিক। ব্রভঃ, প্রকাশ চরিত্র হানভার চেরেও গুপ্ত বোকের কাছে মাগন নাধ্য অনুত্র স্থানার ব্যোক্টী পাক্ষ করিয়া তলে তলে গভীর খাপের পঞ্চে আননাক্ষে নিমক্তিতই করা হয়।

বস্ততঃ বর্দ্ধের সংরক্ষণই যদি সমাজের উদ্দেশ্য হর,
তবে বালাবিবাহ কি জী কি পুরুষ সকলের পক্ষে সমান
দুৰ্নীর। যদি বল জীলোকেরা ছুর্বল—ভাহারা আপন
চরিত্র রক্ষা কবিতে পারেনা! তার উত্তরে বলি,—কেসমাজ সর্বন্ধাই তাহাদিগকে জানাইতেছে যে—ভাহারা
চুর্বেল ভাহারাভীর, খলনই ভাহাদের অভাব, সে সমাজের
কর্তৃত্ব হইতে, নিম্নতিলাভ করিবায় পূর্বে তাহারা চরিত্রা
রক্ষা করিষ্ণুভ পারিবেও লা। বস্তুতঃ মান্ত্রের যে মহিমা
জীপুরুষ মির্বিশেষে বিরাজমান ভাহাকে যারা অত্যীকার
করে, রেই সমন্ত নান্তিক ও আত্ম-জবিখাসী মৃদ্রো
মান্তবের শ্বন্থায়কে চিত্র-নির্বাদিত করিবেই।

কিন্ত তর্ক থাক্; আসল কথাই এই বে দাম্পত্তা জীবনের পবিত্রতা, শীলতা, শুচিতা বদি রক্ষা করিছে চাও, বলি একএকটা মানব দম্পতীকে বিশ্ব-ক্ল্যাণেক এক একটা ভত্ত অরপে প্রতিষ্ঠিত করিতে চাও, বদি স্থী-পুরুষ সকলের হিজমুকে বিক্সিত করিয়া আত্মার পৌরবকে অরভেদী করিয়া তুলিতে চাও, তবে অকাশ-বিবাহ তাকে শুধু বাধা দিয়াই নিরম্ভ থাকিবে না, তাকে সমূলে ধ্বংগ করিয়া একমহালরেক—আয়োজন করিবেই করিবে।

সেইজন্তেই জীবনেয় প্রভাতকালে ব্রহ্মচর্ব্যের দায়া ইচ্ছাকে আত্মবল আনিবার সাধনা করিতে হয়।

এই বন্ধচর্ব্যের সাধনা বিশ্বপ্রকৃতির উপার স্থামক কোলে সুনীল আকালতলে অলেব প্রসম্পনে বিভূবিত হইরা অপরূপ গরিমার দীপ্তি লাভ করে। এই সময় বিজ বাণক বালিকাগণ পরস্পর মিরাবিল কেব হয়ের আবদ্ধ হইরা শুরুর নিক্ট হইতে কান লাভ করিছে। থাকে। সে আন উপার্জনের বস্তু নতে উপলব্ধিক ব্যান সে আন তৈলাধার কি পারা কিয়া পারাধার কি ব্যাক 989

এই দুইনা রথা বার্ষিত্রক করে লা; দেই আন মানব লাইনের ফুর্মানিকৈ তক্তের ন্যাক উপলবি। সেই আনে । সেই আনে । ক্রেই তিরাব একই অচল খেঁটোর আবদ্ধ করিয়ারাখে না—নব নব প্রণালী নব নব নিয়ম নব নব মত আবিদ্ধৃত করিতে উৎসাহ ও সাহায্য প্রদান করা হয়। সেই জানের একদিকে শিশুর ভায় সরল বিখাস, অপরদিকে অপ্রমত যুক্তিবিচার। একদিকে স্থিতি অপবদিকে গতি। সেই জানে মামুষকে অহংকৃত করিয়া ভোলে না, ভাকে ত্ণাদ্পি স্থনীচ করিয়া দেয়; সে বিনয়ী হয়, অবন্ধৃত হয়।

अक्रिक वृद्धित बाता काम अभविष्टिक श्रनस्त्र बाता দত্যের বাধাহীন উপলব্ধির জীবন এই ত্রন্দর্য্যাশ্রমে। দংবারকেত্রে কত হংব, কত বিপদ, কত বঞ্চা, কিন্তু এই দীবনৈ সেই আ্যাত প্রতিবাতের কোন্ত ভাহার জন্ম। এখানে সে কেবল উপলব্ধি করে তাঁহাকেই যিনি সভাং. ঠাঁহাকেই যিনি শান্তম্। তখন তাহার চিত্ত এত वीर्यामानी रम्र नार्टे, य (त्र इ: १४त क्लांडक व्यक्तक्तरम् বরণ করিতে পারে, সেজ্জাই তার তথনকার প্রধান লাশ্রয়, মেই শান্তরগাম্পাদ্ আশ্রম যেখানে কোনও প্রকার সাংসারিক ক্লেশ, ক্ষতি, বিপদ্ মৃত্যু গেই বালক हत प्रतंक विविध कतिए भारत ना! उधु छाई नग्न, লোক বছল সহরে, যেখানে সাময়িক কোভ বিক্লোভ জনশংশ উন্তবৎ পাক পাইয়া ফিরিতেছে, যেখানে, पुष्ट ष्यश्कारतत कनरकानारन पाकारमत प्रशंखीत (योन ও ধরণীর পরিব্যাপ্ত শাস্তি ভঙ্গ করিয়া দিতেছে, সেধানকার উগ্র উত্তেলন। ব্রহ্মচারিদিণের কাছ হইতে যত দুরে থাকে তভই তাহাদের মঞ্চল-কেননা প্রকৃতির জীড়াভূমি সন্থে দেখিলেই, অন্তের নকল করিয়া চলিতে (य अक्की हेन्द्रात्र चाकर्रन चत्त्र, छाहारक कार्वे।हेश উद्विवात नामर्थ, जात्मत्र नाहै।

ক্ৰমশঃ

Taylet

#### मिला।

সূত্র ওরে, অতি সূত্র একগানি প্রাণ কভটুকু প্রেম ধরে ভায়, তবু তুই কি গৌরবে প্রতিদানে তার (वै(पिছिস্ সমগ্র হিয়ায়। ওরে শিশু, ওরে খোর ত্রম্ভ বালক, এত গৰ্ক কিদে হল তোর, ওই টুকু ক্ষুদ্র বুকে কি শকতি লয়ে প্রাণ মন করিলি বিভোর। পভীর দর্শনশাস্ত্র, সমস্তা জটীপ সমাধান কিলে হয় ভার, তুই আসি যদি ক্সুত্র মূখে হাসি ভরি; মধুরে ডাকিস্ একবার। नव्य विश्वन विश्व, कर्खवा नारन,-क्ष छात्र नव खक कति, हरेही राहत मास्त्र मात्रा खान जानि ७४ (छादा वत्क (हर्ण धन्नि। জগতের যত কিছু গৌন্দর্য্য গরিমা মুখে তোর বাধিরাছে বাসা, 🤲 অনম্ভ আকুল বিখ নিরাশা কাতর 🐉 ওই চোকে পাইতেছে **আশা।** তোদের হাসিতে ফুটে স্বর্গের আভাস, কণ্ঠে বাজে আখাদের গান জগতের প্রাণ তোরা তুরস্কু মধুর "বিধাতার আনন্দ কল্যাণ।" এসেছিস্ কাছে যদি আর তবে বুকে मूर्ष याँ कि চूचन माधुती, व्याद्राप्त इवड (मात्र व्यक्तिमा प्रमात्र, আয় তোরে বকে চেপে ধরি।

কর্ত্তব্য ভাগিরা গেছে ক্লভি ভাঁহে নাই,
তুই পাক্ ভাই মোর সাধ,
ওরে মোর ক্লুজ শিশু আনন্দ হলাল
আর ভোরে করি আশীর্কাদ।

**होधुरी बीह**िक्कभा (पर वर्षा।

# সাহিত্য সংবাদ। বন্ধীয়-সাহিত্য-পরিষৎ— পদক ও পুরস্কার।

বৃদ্ধীয় সাহিত্য-পরিষদেয় সপ্তবিংশ বাবিক অধিবেশনে নিয়ুলিবিত বিষয়ে উৎক্রপ্ত প্রবন্ধের জন্ত নিয়োক্ত পদক ও পুরস্কার প্রদত্ত হইবে।

984

श्रेवरकत्र विषत्र

- )। হরেন্দ্রনারায়ণ আচার্য্য চৌধুরী স্থবর্ণ পদক—বলীয় নাট্য-সাহিত্যে দিলেন্দ্রলালের স্থান।
- ২। ঠাকুরদাস দত্ত স্থ্বর্প-পদক—বলের প্রান্ত্রী ও সমদাব্য়িক কাব্য ও নাট্যদাহিত্যে কবি ঠিকুরদাস দত্তের প্রভাব।
- ব্যামকেশ মুস্তফী সুবর্ণ-পদক (ক)— বৈশ্ব-নাহিত্যে সামাজিক ইতিহাসের উপকরণ।
- ৪। ব্যোমকেশ মুস্তফী স্থবর্ণ-প্রক (খ)— ২ঃ শর্মণা ও কলিকাতার জনধান ও তংশংক্রাম্ভ প্রচলিত বন্ধ ও ভাষার স্থানিদিট অর্থ ও প্রয়োগ।
- ৫। হেমচন্দ্র স্থবর্ণ-পদক—মেঘনাদবধ স্থাব্যের রাবণ ও রত্ত্রসংহার কাব্যের র্ত্তাস্থরের তুলনার সমালোচনা।
  - ७। मिनिशन(त्राशा-शनक---व्यव्यास नामा-

- ৭। রামপোপালরে পা পদক কৰি পদর কুমার বড়াল মহাশরের 'এবা' কাব্য সমালোচনা।
- ৮। অক্ষয়কুমার বড়াল রৌপ্য-পদক (क)— বাদলার গীতি-কাব্যে কবি অক্ষয়কুমার বড়ালের স্থান।
- ৯। অক্ষয়কুমার বড়াল রেপ্য-পদক (।)— অক্ষয়কুমার বড়ালের কাব্যে নারী-চিত্র।
- ১১। আচার্য্য রামেন্দ্রহুন্দর ত্রিবেদী-স্মৃতি পুরস্কার (১০০১)—শতপথ, গোপণ, ঐ তরের ও তাণ্ড্য রান্ধণের আখ্যান ও উপাধ্যানভাগ।
- ¥২। শিশিরকুমার ঘোষ পুরস্কার (২৫১)— নরোজ্য ঠাকুরের জীবনী।

# বিশেষ দ্রফব্য—

প্রবিদ্ধ গুলিতে গবেষণা ও বিচারশক্তির পরিচয় থাকা আবশুক। তয় বিষয় পরিষদের সদস্তগণের জয়, ৪র্জ বিষয় পরিষদের সাধারণ ও ছাত্রসভ্যগণের জয়, ৫ম বিষয় য়ুলকলেজের ছাত্রগণের জয় এবং ১ম ও ১০ম বিষয় মহিলাগণের জয় নিদিষ্ট। অয়ায় বিষয়ে সর্বসাধারণে প্রবদ্ধ:লিখিতে পারেন। পুরয়ার প্রবদ্ধ তঁ১এ হৈত্র মধ্যে পরিষৎ সম্পাদকের নিকট নিয়োক্ত ঠিকানায় পাঠাইতে ছইবে। পরিষদের নির্দিষ্ট পরীক্ষকগণ কর্তৃক পুরয়ারের উপর্ক্ত বিবেচিত না হইলে কেহই কোন পদক বা পুরস্কার পাইবেন না।

বন্ধীয়-সাহিত্য পরিষৎ-মন্দির
২৪০া১ আপার সার্কুলার
রোড, কলিকাতা

শ্রীধণেজনাথ চট্টোপাধ্যায় সম্পাদক



# अभिष्

১০ম বর্ষ

পৌষ ১৩২৭

**७म मर्था।** 

# "দেবীচেধুরাণী" ও "দীভারাম"।

আনক্ষমঠ \* দেবীচৌধুরাণী ও দীতারাম এই তিনখানি প্রাধ্বে প্রত্যেকটিই এক একটা অতি সন্ধার্ণ ঐতিহাদিক ভিতির উপর রচিত হইয়াছে। আনক্ষমঠে বন্ধিমের বলীয়দী কল্পনা ঐতিহাদিক ভিতির তুর্পলিতাকে তুক্ত করিয়া কভদুর উদ্দেখীয় মন্তক উল্লীত করিয়াছে তাহা ঐ প্রাধ্বে পরিশিত্তে প্রদন্ধ ইংরাজী অংশটুকু পাঠ করিলে সকলেই বোদগমা হইতে পারে। দেবীচৌধুরাণী ও দীআরামে বন্ধিম ঐরপ কোনও প্রমাণ উদ্ভুত করেন নাই, হান্টার, ওয়েইলাও ও ইুয়াই ইত্যাদির উপর বরাত করিয়া নিছতি লাভ করিয়াছেন। ঐ গ্রন্থ করিবার আক্রত নহে বলিয়া পাঠকের কুত্বল চরিতার্থ করিবার

্ত্ৰানন্দ মঠের আপোচনা বঙ্গ ভাবে কর। ক্ষাত্রে তাবন্ধ নেবন্ধ। জন্ম ঐ হই আখ্যারিকার ঐতিহাসিক ভি**ত্তিটুকু প্রধরে** প্রদর্শিত হইতেছে।

১৮৭০ খুটালে রঙ্গপুরের কালেক্টর শ্লেজার সাহেশ,
(Mr. Glazier) ঐ জিলার যে বিবরণ প্রকাশ করেন
ভাষাতে অটাদশ শতাকীর শেষপাদে রঙ্গপুরে ভার্ত্তির
উৎপাভাষিকা উল্লেখ করিয়া তিনি বলিভেছেন, রঙ্গপুর ও
দিনাজপুর সহরের দক্ষিণ ও বর্তমান বঞ্জা কেলার
পশ্চিম এবং গঙ্গার (পল্লার) সল্লিহিত অঞ্চলটাতেই
ভাকাইতদিগের আড্ডা ছিল। ১৭৮৭ খুটাকে গেক্
বিখ্যাত দহাকে দমন করিবার জন্ত প্রোধিত হন।
তিনি ২৪ জন 'সপাহীসহ একজন দেশীর কর্মচারীকে
ভাকাত অমুসন্ধান করিতে পাঠান। এই লোকটি
জ্বানী পাঠককে ৬০ জন অনুচর সত নৌকার ব্যাহ হাছে
আক্রমণ করেন। এই লড়াইরে জ্বানী পাঠক ব্যাং জ্বানী ভারর ভিনজন ব্যাহারী নিহত হর, উল্লির শাট ক্ষ্

क्रीकार भारत ଓ विश्वातिन वन वन्नो रहा। ज्यानी লাইকের বাড়ী বাজপুরে ছিল। মজতু শা নামক অভ একজন বিখ্যাত ডাকাতের সহিত ভবানী পাঠকের যোগ ছিল। " এই লোকটা গৰার দক্ষিণ হইতে আসিয়া বৎসর স্ক্রার বৃটপাট করিত। লেফটেনাণ্ট বেনানের বিবরণী হুইতে একজন জীলোক ডাকাতের সহত্বেও কিছু খবর প্রাপ্তরা বার। ইতার নাম দেবীচৌধরাণী। ইতারও করানী পাঠকের সহিত, যে গ ছিল। দেবীচৌধুরাণী ৰৌকাতেই ণাকিত। তাধার বহু বেতনভোগী বর্ককাল किंग। (मवीराध्यानी नित्य च छाकाठी कविठहे, ভবাদী পাঠকের লুষ্টিত ত্রব্যাদির ভাগও পাইত। कियुवाचे' छेनावि रहेट बतन रत्र क्वीकाधुताची स्वड समीपाय हिन ; তবে नुखरणः छाहान सभीपाती बृह्द ক্রিনা, কেননা তাহা হইলে ধরা পড়ার ভয়ে সে মেকিতে নৌকাতে থাকিবে কেন গ এই সময়ে প্রধান व्यवास स्मीनारवता नकानहे मूर्वज्यात्मत छाला छ व्यक्तसाच त्रांविछ। ১৭৮२ थुट्टार्स देवकूर्श्वरदात सन्नान ক্তক ভাগি ভাকাত সমবেত হইরাছিল। এই লগদের প্র ভাকাত্রণ ছাড়া অত্তে জানিত মা। কালেক্টর कर्मक बहुकमान निशा अहे समाम প্রবেশের পণ সব আছি সারা রাবেন। মাঝে মাঝে ছই একটা ছোট যুদ্ধ **মইয়ালৈ**—ক্ষেক্ষাস মধ্যে কতক ডাকাত নেপাল कुरिनय निरक भगारेमा गांग्र। कठक अनाशांत गरत, अविकारण (श्रायात व्या +

নীতারাম সম্বন্ধে হাণ্টারের বশোধরের বিবরণীতে এইকপ উলিবিত হইয়াছে। সপ্তদুৰ শতান্দীর বেব ভাগে ক্ষমন্ত্রের স্থাপিত হয়। ভূষণার জমীদার সীতারাম রায় উদ্ধান্ধ স্থাপরিতা বলিরা বিধ্যাত। এক প্রবাদ সম্পারে ক্ষমন্ত্রির বাষতারে হরিহর নগরে সীতারাম রাম্বের এক ক্ষাক্ষ্যুক্ত ছিল এবং ব্রতিধান মহম্মদুরের অতি নিকটে

খ্যামনগরেও ভূগল্ডি ছিল। একদিন গল্ডিপরিদর্শন-काल छावात (वाजात श्रुत कर्फरम आहेकारेश माहा তিনি কতক্ত্তকি লোক ডাকিয়া তাহাদিপকে মাটি पुष्टिया (पाष्ट्रात भा छेठारेवात अन्त्र नियुक्त करतम। এইরপ করিতে করিতে ভুগর্ভে এক ত্রিশূল দেখা দেয়, আরও গভীর পর্ত্ত করাতে এক মন্দির ও তন্মধ্যে লক্ষী-নারায়ণ শালগ্রাম আবিষ্কৃত হইল। ইহাতে শীতারাম রায় আপনাকে, দেবাহুগৃহীত বলিয়া প্রচার পূর্বক স্বাদাক্তের (উত্তরকাটী) কারস্থপাকে সমানেত করিয়া क्षित्रभी क्यीमात्रमिशक आक्रमन कतितन, धवर এইরপে এমগ্র ভূষণা দখল করিয়া তিনি বাঙ্গালার স্থবাদারক্ষে রাজ্য দিতে অস্বীকৃত হইলেন। অপর ( এবং দ্বাত: অধিক সভামূলক ) এক প্রবাদ এই বে গীতারাম সুন্দর বনের ভূঁইয়াদিগকে রাজন্ম দিতে বাধ্য করিবার জন্ম দিল্লীর বাদশাহ কর্তৃক প্রেরিভ হন। তিনি বারজন ভূমাধিকারীকে স্বাধিকারচ্যত করিনা **এবং তার্ছাদের সমন্ত সম্পত্তি স্বরং দধল করিয়া সমাটের** আজা পালন করিলেন। তিনি বাঙ্গলার নবাবকে রাজন্ম मिटि अभीकृष्ठ दहेश। विशिधन (य, छिनि वाम्भा**द स्ट्रेट्ड** मन्निख बाज कवियात्विन युव्दार वामनाश्कर कद पिरवन । इंशाङ ज्वनात को बनात शौजाबारमत निकरक যুদ্ধত্যা করেন। কিন্তু গীতারামের অব্যতীয় মেনাং। জী নামক অসীম প্রাক্রমশালী বারের হল্তে নিহত হব 1 इंशांत भार नवाव अक तुर्द रेमक्षमा (श्रात्र क्रियान) क देमक्रमात्र अभिनाम् क्रिय हाल (सनाहाकी राष्ट्री क्र নিহত হইলে সী চারাম আমানমর্পণ করেন এবং বন্দিভাবে: मुर्निमावारम (अदिण हन। अहे शारा कांद्राभारत ( ১९०३ বা ১৭১৪ খুঠান্দে) তিনি বিষভক্ষণৰাবা আত্মহত্তা करवन। गर्भानभूतित निव्हित वह उषान्याति अन्तर नीर्चका श्टेरक नीकाझारमत नियुग अवर्धात किश्रिक

ent of the attention of the property of the shipping of

w. W. Hunter en A Statistical Ac-

গীতারাম উপ্রাসে ইয়ার নাম মুখার বিভিন্ন

শ্বাধ্যের বল ও সাহসের কথা উল্লেখ করিয়ার্থেশ।

স

প্রিকৃষ প্রের্থ বার। ভাষার মৃত্যুর পর নাটোরের বু ক্রেন্সামী ) রাজাদিগকে তাঁহার সম্পত্তি দেওয়া হয়। ক্রিয়াইমের পুত্ত প্রেম্মারায়ণ রায় দারিজ্যহৃংখে জীবন বাশন কার্য্যা মৃত্যুম্বে পতিত হন। \*

े निर्देश अपने (पु:चेरवन यानन्यर्कत कांग्र (नवी (ठोधू-স্থাপী ও দী ভারামের ঐতিহাসিক ভিভিও কত সঙ্কীর্ণ। ঐরপ শ্বীর্ণ ভিত্তির উপরে যে ''ঐতিহাসিক উপত্যাদ" প্রাণাদ নির্মাণ করা যায় না ভাগা নছে, ব্রিফা ইচ্ছ। করিয়াই সে ুপথে ধাৰ নাই। ঐতিহাসিক উপক্যাসে লেখকের দৃষ্টি বাঁকে বতীতের দিকে, এই ভিন্থানি আখ্যায়িকায় বহি-হেমর দৃষ্টি তবিস্ততের দিকে। তাই ঐতিহাসিক সকল ভব্যের সহিত সামঞ্জন্য ক্লা করিয়া চলা সম্ভব হয় নাই। **এখন প্রিজান্য হইতে পারে, যথার্থ ঐতিহাসিক** উপগ্রাস ্রেশা যুরন বন্ধিনের উদ্দেশ্য নয়, তথন বিধরুঞ্চ রুঞ্চকাস্তের উইল ইত্যাদির ক্রায় ইভিহাসের শহিত কোনও যোগ না থাৰিয়া প্লট কল্পনা করা হইল না কেন ? ইতিহাসের **স্থিত নামতঃ** যোগ রাখায় অধিক কি লাভ হইল ? আভ হইরাছে এই-স্রাাসিবিদ্রোহ ইতিহাসের একটা न्यां चर्मा। গৃহত্যাগী সন্ন্যাসীরাও বিজ্ঞাহ করিয়া-

\* W. W. Hunter প্রণীত A Statistical

ইু মার্টের ইতিহাসে গীতারামকে অবাধ্য অমিদার ও

এক্ষণ ভাকাতের অধিনায়ক বলা হইরাছে। গাতারাম
আকি ঐ প্রকল ভাকাত বারা রাজপণে ও নদীতে ভাকাতি
কর্মিতেন। এই গ্রন্থে আরও কথিত হইরাছে যে,
গীভারামের ভাকাতের দল ভ্রণার কৌজদারকে জমক্রমে
নিহত করার মূশিদক্লি বাঁ অন্ত কৌজদার নিযুক্ত করিয়া
ভ পার্বভা অন্তান্য অমিদারদিগকে ভর-প্রদর্শনে বাধ্য
ভারা গীভারামকে সপরিবাবে বন্দী করেন। গীতারাম
ভারার ভাকাত্রণ বধদতে দভিত এবং তাহার পুরুরণ

हिंग, धक्या जाना पाकाम भवानगरगत कृष्टि धर्य-वाद्य उद्धे द्य नारे। महामीया (भरतेव माद्य कि न কোনও কারণে ডাকাতি বা বিজ্ঞাহ করিত বলা বাছ मा. किंद्र विदय छाशामित कार्या अवनयन करिती यामण्डां अपन अक जामर्ग जाभन कतितान, बाहा ইতিহাসের হিসাবে অনীক প্রতিপর হইনেও কাবোর হিসাবে অগীক অর্থাৎ সম্ভাব্যতার সীমাতিকার হইল मा। आवात वाकाली (भारतता (य दक्षण वक्षान्दिक् वित्रक्षा थाकिछ छाहा नरह, छाहारमत त्कर त्क्र भीक्ष्यत्येख वित्यव अध्यत्रज्ञ अपर्यन कतित्रोहः श्रीकशादात डिलिए एकी (क्षेत्रामी-नामी मन्द्रात्रम्मी ইহার ঐতিহাসিক প্রমাণ। \* বাঙ্গালীর খেরে ভাকাতি কবিত ইহ। বাঙ্গালীর গৌরব নতে: আর সাধারণ ভাকত হইলে বা তার এত প্রতিপত্তি কেন হইবে দু খাই বৃদ্ধিম ভাহার দুমাতাকৈ একটা নুত্র বর্ণে রঞ্জি করিয়া ও তাহার অনিন্দনীয় পৌরুবকে অমুশীলনংশের উলা-হরণরূপে গ্রহণ করিয়া সংসার যাত্রায় নারীজীবনৈর একটা নতন আদর্শ স্থাপন করিলেন। এবারেও **ভারার** দৃষ্টি ভবিশ্বতের দিকে। তিনি যেন বলিতেছেন,---"(जायता ताहे गर्रन कतिरव ? ज्ञारन खरन वरन जैनर्या দিনিতে উল্লভ হইবে ? কিন্তু রাষ্ট্র বে পরিবারের সমষ্টি তাহা ভূগিও না-चानर्न ताड्डे अस्टित, चानर्न नेतिनाइ আগে পড়িয়াছ কি ? আধুনিক বালাণীর লীকভারা না वक्ष नहीं नहीं नहीं निम्नाः नहीं निक्षि १ जारा कि ভাৰাদের দোৰ না হুডাগা ? দেখ এক ৰক্ষণানা পত वत्रकलाक शतिकामना कतिया हैरतारकत निर्माहीय नर्गक বুদ্ধ করিয়াছিল। পুতরাং অমুশীলন করিলে সাইন लाक्राजीय हेजानि थन (व वनननात हहेरड नार्य मा ভাষা নহে। পাতিব্ৰতা কেব মারা দরা দাকিবো

তবু কোনও কোনও স্থালোচক বলেন এদেশে

শান্তিচরিত্রের কোনও খাভাবিক ভিন্তি নাই, উর্বা

শান্তিক উভট অবাভাবিক !

बाकानी मार्रीया विविधिम है यदिमाविछा ; वाकानात परव बद्ध छात्र क्षयान हिन। अथनहे कि मारे १ अ पाजू निया किना बढ़ा बाह ? (छामता (करनहे दीवती गिष्ट्र, क्षाबी कि गड़ा यात्र मा १ (पथ व्यामि (परी गड़ित्रा विद्वाहि—डाकाछ (पर्वी कि पुरावीत (पर्वी मध्य) अवर्ष ক্ষিয়া দিতেছি। কিন্তু সাবধান। সাধ্যসাধনে গোল 🔭 बिक्र मा। निकास कर्म, छशवात्म बाधानसर्ग। हेडानि হৰাভিল বড় বেশি জটিল। কোনও ধর্মই সমাক না क्षित्री अक्षारि अक्ष्मीननीय नय । इंश्वं वक्षा 📆 । বিব । হয়ত দে বুভান্তটা প্রচলিত ইভিহাস সমত লয় কিন্তু কাবাগমত। শীতারামের এত বড় রাজাট। ভাবের বরের মত কুৎকারে উভিয়া গেল কেন ভাহা কেই দিশ্চিত আনে না। কিন্তু ঐ ঐতিহাসিক ঘটনাটা **শ্বেদখন করিয়া** ভোমার ভাতীয় চরিত্রের একটা সক্ষাপত হোৰ আর আমার উপবেশেরও একটা সন্তাব্য ক্ষণ সমূদে তোমাদিগকে সাবধান করিয়া দিতে পারি। দেশ ভোমার বালালা দেশটায় পঞ্চপরের প্রভাব বড दिन्ति, (व) ६ ७ देवकव इहे इहें। मरशब्दन धर्म थे अक মনুবের রিপুটার প্রভাবের কাছে নিপ্রভ হইয়া গিয়াছে। ্রহাই ভবানন্দের মত অমন অক্তরিম দেশ-তক্ত বারেরও ্ৰথ্যান দেখাইতে হইয়াছে। জীবানলও টুলিতে ্টিলিভে শান্তির পুণ্যে বাচিয়া গিয়াছে। সীভারামের अक्षा ता के छेदकरेखन अवः भक्त छेदशास क्षरा অভঃগার শুনা হইরাছিল বলিয়াই মুসলমান ফৌজদারের ুৰামান্য আঘাতে ধূলিবাৎ হয় নাই ভাষা কি নিশ্চয় ক্রিকা বলা যায় ? সাজারাম বে প্রথমেই আয়বর্ণ ছিলেন মা ভাষা নিশ্চয়। অগ্নিবৰ পূৰ্বপুৰুষের তৈয়ারি রাজ্য ্ৰাৰ্ড পাইরাছিলেন, সীতারাম তাঁহার রাজা নিজ ছাতে ্রাপ্তির তুলিয়াছিলেন। এমন একটা লোক বাহিরের ্রালেভনে প্রবংশই পড়ে না। ভার গুহসুবে বাধানা शिक्षिय क्यनहे रहर शक्त ना । छाहे श्री ७ दमांत कर्तना

कर्जनता त्र निका महेबा बृद्ध वानित्म त्र बुद् गताान उध्यहे नहे रह, जी खाराव एहाता निमार्क রাজরাণীর যোগ্য শিকা মাই। রুমা বালালী কেরাক্র হৃদয়রাণী হইবার যোগ্য। ত্রীতে দেখিতে পাইবে ध्यम् द्वात विभवी छ भिका अर्था आपरमेत विभवीष : রমাতে দেখিতে পাইবে শান্তির বিপরীত ভাব অর্থাৎ খামীর আদর্শের অনুপর্জতা।" বস্ততঃ আনন্দমট ও (पर्वी (क) ध्रुवावी एक बादा कायकार परिवास সীতারামে তাহা অভাবরূপে পরিকৃট। আনন্দমঠ ও (मरीराधिशानीट अवब, मीजातात्म वाखिरतक। विमिष्ठ चानसभद्धेत উপদংহারে বলা হইয়াছে, বিদর্জন ভাসিয়া व्यक्तिकाहक महेशा (भन." ज्यां नि विश्वमहास्त्र कहे (भन তিনধাৰি উপভাগ তুলনা করিলে মনে হয়, আনন্দমঠে ও দেবীচৌধুরাণীতে প্রতিষ্ঠাই আছে, বিশর্জনের চিত্র সীতাবাহম দেওয়া চটয়াছে। সভাানন্দ যথন খাকর भाक विकास प्रांतिन, उपन जिनि क्यो । विक्राका স্থাপিত না হউক, অরাজকতা দুর হইয়াছে। ভাহার পরে বন-মধাবতী আনন্দমঠ আবার বনে পরিণত ছইয়া থাকিতে পারে, কিন্তু সমস্ত বাঙ্গালা দেশব্যাপী পুরুহৎ আনন্দমঠের ভিত্তি স্থাপিত হইয়াছে। দেবীচৌধুরাণী-তেও মনে হইতে পারে প্রফুল গৃহস্থার মোহে বুরি कके। यहाधर्म विशक्षन पिया शाम-काशान खनारमद পরালরে যে গৌরবপ্রতিমার প্রতিষ্ঠা হইয়াছিল, গুহিণী-প্নার অন্তিপ্রশক্ত ও অন্তিগ্ডীর প্রতে বুরি ভারার विमर्कत हरेन। वस्ता किंद जारा नहर, अवाराध প্রতিষ্ঠা,--গৃহধর্শের প্রতিষ্ঠা--নারীর ক্লমে রাজ্যের व्यवमात्न यथार्थ वाकापव क्षालिका। मीलावास्मे दक्षण विगर्कम-- विगर्कन-- विगर्कन ।

গুৰিছা তুলিয়াছিলেন। এমন একটা লোক বাহিরের আনন্দমঠে বৃদ্ধি বাহা গড়িতে চাহিয়াছেন ছাহা আন্ধোতনে এবংমই পড়ে না। তার গৃহস্থৰে বাধানা এদেশের পক্ষে একটা নূতন বস্তুঃ রাষ্ট্রীয় জীবনের সাজিলে কবনই হয়ত পড়ে না। তাই এ ও রমার কর্মনা একটা আদর্শ তিনি বিদেশ হইতে আমিয়া ছাহাকে করিতে হইতেছে। কর্মনিয়াণ ও কর্মবোগ বে এক নহে, ভারতীয় ত্যাগের আহর্মের গহিত বে ছাবে, বিশাইয়া

विशासम, छांदा पूर्व विषयकत गत्मद माहे, किंद्र त মিলদের ক্ষেত্রটা যেন পুজন। স্থানা বঙ্গভূমির কোনও অংশ নয়; বেন কল্পনারাজ্যের অন্তর্গত কোনও একটা ८७नास्त्र मार्ठत मायशास्त्र । তথাকার শস্তামলা শোভা, জ্যোৎসাপুলকিতা যামিনী, ফুলকুসুমিত জ্মদল আমাদের চকে পড়ে না, ভাহার নির্মাল আকাশের রিঞ্চ चाह् आबारमत गार्य नार्ग नां, यमिछ व्यवना उँदा আমাদের কল্পনানেত্রের সন্মুখে একটা প্রপ্ন রাধ্যের সৃষ্টি करत. आभारतत नव आकाख्यात डेकी शिष्ठ शतरत न्डन পুলক জাগাইয়া দেয়। ইহার কারণ যাহা ভাহা পূর্বে वना दहेबाट । अरम्प ताडे हिन ना। किंख (मर्वी-किंध्यानीए ग्राम ७ कहानात (कानत्र अमामक्षण नाहे, दक्तना अरमा कित्रकानरे शतिवात छिन। एनवी-চৌধুরাণীর আধ্যানবস্তর আশ্রয় সেই পরিবার। আনন্দ-মঠটা বিদেশীয় মালমগলায় নির্শিত হইয়া থাকিতে পারে. किस द्ववद्यक्त वाड़ीहै। निजायर प्रमीत डेलामात প্রারত। হরবলভের পরিবার যে বস্ততঃ একটি খাঁটি ৰালালী পরিবার ভাষাতে কি কাহারও সন্দেহ হইতে পারে ? হরবল্লভ নিজে খাঁট বালালী কর্তা: তাহার कर्खवारवाध वाकामी धत्रागत कांठा किछ विषश्रवृद्धिति বালালী ধরণেরই অতি পাক!। তাই প্রবধ্কে ত্যাগ করায় বা ভাহাকে বহিজ্ত করিয়া দেওয়ায় কিংবা ্ট্রপকারিশী দেবীরাশীকে সিপাহির হাতে ধরাইয়া দিবার ्रिक्टोत्र ভारात खेलत युगा रह वटि. किन्न लेत विश्वा भारम दश्र ना। दत्रवद्गरख्य गृहिनीति थीति वानानी গুৰিন্দী, তার নাকের নধ, হাতের পাধা, আর (ছিন্ন-अवका देवराहिकाव महत्त्र चानारशेव मगर ) वननायानिष क्रिक वांचानी बत्रताहे नाफ : य शर्याक निर्व्यत हांप्रशाना ्रह्मां इर्थ चित्र, जिल्ल-स्वारन अक्रमत्कत है। एन व मठ শাড়িতে থাকে সে পর্যান্ত একটা বৌ বাড়ীতেই আশ্রয় প্রা'ক বা মারের কাছে থাকিরা অবাহারে মরুক তাহাতে ्लंबीक लक् किह अवहा चारन रात्र मा। किंद नगम

রুমিলেন পুরুটি দেই বধ্র জন্ত মরিতে বসিয়াছিল ভবন সিয়ী নে বৌয়ের জনা কর্তার কাছে কেবল নগনাড়া দিয়া সম্বন্ধ নন, গলায় দড়ি দিয়া মরিতে প্রস্তত। ক্রম ঠাকুরাণীর মত ঠাকুরমা সেকালে কেন, বোধ হয় পর্রী গ্রামে জনেক সঙ্গতিসম্পন্ন ভত্রপরে একালেও আছেন, তবে রায়াটা বোধ হয় এখন তার হাতে নাই, আজপরাধ-দেবের ছাপায়ভোগরন্ধনকারাদের জাতের অক্ষম হতে গিয়াছে। নয়নতারায় মত তারা এখনও বালালায় গৃহাক শে ফুটে; এখন সপন্নীর জালা বড় একটা নাই, তবু নয়নতারার দল যে প্র্রাপেকা কম উজ্জ্বন ভাবে ফুটে তাহা নয়—

Fair as a star, when only one is shining in the sky,—

সাগর বে ও নয়ান বৌর পরস্পরের প্রতি ভাবে আর बाहाई थाकूक idealism निक्तबर नारे। नवान अवस्त স্তরে বিষয়ক্ষের দেবেজের বধু হইতে পারিত, সাসর্ত্ত অবস্থান্তরে কমলমণি হইতে পারিত। लाक्तित (काल वहेमां अ वाहेम वर्गत भरी खंख (व क्यां क **बहे** एक भारत नाहे, छाहा त्रकारन चनखर हिन माः। তার পিতৃভক্তিটি "দেকেলে" হইলেও বলিমের সম্প্রে वाकावात्र अपूर्ण दर्म नाहै। धहे दृहर ७ अधिना वानानी পরিবারটাকে একটা মনোমোহন आদর্শের আলোকে সুন্রতর করিবার জন্তই ঐতিহাসিক दमवीक्षितानीत कनस्था शोक्षवस्थातक जिल्लाकार्य भूगुत्रनित्न धुरेशा गरेशा, कार्यात-त्रक्र निश्रात्रात इतिम করা হইয়াছে। প্রফুল চরিত্রের ভিত্তি অতীত ও বর্তমান উভয়ত্ৰ ; উহার অনেকওলি ধর্ম বালালী ললনাৰ বিশ্বৰ शर्द। निकास धर्म गीठात निका; अक्रमीनन वर्षास्कर বৃদ্ধিৰ হিন্দুৰ চতুৱা এমধৰ্মেৰ শিকা বলিয়া মটো করি-एका। किस शक्तितात अकत अहे मनस्ति सामित 'বে সমধ্যসাধন করা হইয়াছে, তাহা অভীতেরও ময়, वर्षवात्मत्रक्ष मग्न, कविकालक्ष । ज्ञानस्मर्क निविवास अक्ष ক্রাইর সহিত পরিবারের ঘনির প্রশ্ন শরণ করিয়া ক্রিয়া থালালেন, "এবারে বাঁটি বালালার মাটি বালালার ক্রিয়া একটা এবন মৃতি পরিব বাহা লভীতে ও বর্তশর্মে লভ্যা না হউক, ভবিন্ততে সভ্যা হইবে।" আনন্দক্রিয়া অবিঠানী দেশমান্ত্তা মহাবিষ্ণুর ক্রোড়ে বিস্না
শ্রিষ্ণেল "শুক্"। মহাবিষ্ণু বলিলেন "বাচুম্"।
ক্রিয়া বাজালী ভোমরা বল, "সভ্যম্" এবং উহাকে গৃহে
সূত্রে সভা করিবার জ্ঞ—আন্দর্শিক ব্রভন্ততা দান

अस्थाती जानसम्बद्ध नाहे, किन्न गृहसूर्याकांका অভামগণের মধ্যে বেশ প্রবল। তাহাদের সকলেরই 🅦 📇। खर बार्यः भन कतिया जी नहेबा गृशी दहेरतम। कि वे बाबाधिकांत श्रधान कृष्टि बीठिति छ गृह-अपान किना अधार (व कार्रा हे हडेक कम । अपेठ কাৰাছণের গংকার এই বে, গুরুত্বের মোৰ পুরুব আবেশ। প্রীলোকেরই অধিক। বৃদ্ধিন শুরিতে ঐ काकाका कृष्टिनात श्रुत्वागरे (एन नारे, (कनना त्र विकासि पुक्रव नावित्रा (गोत्स्वरापंत्रहे ५६६। कतियाहि । का विवास देन करहेक मिराने बका गृहिनी हरेशा ग्रह-कर्ष जान बहेरल मा इहेरल है मनामन्त्र की राममारक नाबान करिन, बात नावित घरेनाहरक बारात गुर-ৰীৰে অলাভলি দিয়া ব্ৰত্তভাপৰাধী সামীৰ জীবনে विदाय महरायका विमी वहेदात अन मदीमामन जाकिया मुर्देश सहित इरेबा गढ़िन। कन्यानीट गुरुप्रनाकाका काश्रिक्त दर्भागत खेशांक द्वा प्रमा करिया (मध्या বিশাসে। অকুরে কিব নানা প্রতিকৃত্য অবভার মধ্যেও कुर्मा नुवाही (रम वनवर्ती कतिताह ताबा बहेबाहरू, क्रांक नामानिमीरक गुरंद कितान कठिन इंडेठ, किताहरन्छ প্রকৃষ্ট বত ব্রাদ্ধরের গৃহ শীরীন করিত। প্রকৃষের बह्न मुलाक्यापद (याह ( (माहरू वित : (कनना जानक विकासियारमाठक काराह विश्वाद्यम ) किन विन्तार्थ व्यवस्था विका जाशाय वाक्ष ग्राक्षीरव अन्तिनव

कतिबार्ड- जानात रेगांन्टक त्याक्तांत्रक निर्विष्ड क्षि-बार्ड । अक्रुबात क्था जन—

"প্রকৃত্র সাগরকে সব ব্রাইরা বলিল। তানিরা সাগর জিজাসা করিল, "এখন গৃহস্থালীতৈ কি মুন টিকিবে গুরুপার সিংহাগনে বসিয়া হীরার মুক্ট পড়িরা রাণীগিরির পর কি বাসনমাজা হর ঝাঁট দেওরা ভাল লাগিবে গুযোগশারের পর কি ব্রহ্মস্ত্রাণীর মুপ্রধা ভাল লাগিবে গুযার হকুমে মুই হাজার লোক বাটিউ, এখন হারির মা পারির মান হকুমদারি কি ভার ভাল লাগিবে গু

প্রস্কা। ভাল গাগিবে বলিয়াই আসিরাছি। এই
ধর্মই প্রাক্তাকের ধর্ম। রাজত দ্রীগোঁকের ধর্ম নত্ন।
কঠিন ধর্মত এই সংসার ধর্ম, ইলার অপেকায় কোনও
যোগই কঠিন নর। দেখ কভকগুলি নিরর্থক স্বার্থপর
অনভিজ্ঞ লোক লইয়া আনাদের নিত্য ব্যবহার করিছে
হয়। ইছাদের কাহারও কোনও কট না হয়, সকলে সুখী
হয় সেই ব্যবস্থা করিতে ইইবে। এর চেয়ে কোন্
সন্ন্যাস কঠিন ? এর চেয়ে কোন্ পুণ্য বড় পুণ্য ? আমি
এই সন্ন্যাস করিব।"

প্রীর এ শিকা হর নাই। না হওরারও কারণ লাছে,
তার মনে মনে তর, স্বামীকে প্রাণ ভরিরা ভালবাদিলে
তার প্রাণহন্ত্রী হইতে হইবে। সে 'ভালবাদার কাঁদে
পড়িতে' অনিজ্ব । মুর্থা প্রী বুবে নাই, ভার প্রাণহন্ত্রী
হইবার তরে তার সৃহিশী না হঙরা—তার কাছ হইতে
ছুটিরা দুরে বাওরাও ভালবাদাই। ভালবাদা কি কেবলই
ভোগে—ত্যাপে নয় ? উপজাপে জ্যোভিববচনের বর্ত্তালা
রক্ষিত হইরাছে কিনা জানি না। জাতা তবিনীর ক্রির,
স্বামী কি প্রীর প্রির ছিল না ? স্বামীর সহিত আকাদ
পরিচয়ের প্র্কে প্রী হে মনে মনে স্বামীকে কেবভার কত
পূলা করিত তাহা ত বছিনই বলিয়াছেন। সেই সন্দারম
প্রীতিবলনকে প্রী উল্লেক করিতে চাহিলাছিল। ক্রেন

माद्रक, विषय वृत्रि शांक्रकरक वृत्राहरण हान, भारतव মৰ্ব্যাদা রক্ষা হইয়াছে, জ্যোতিষ বাকোর অকরার্থ ক্লিয়াছে। কিন্তু খামীত পতী স্ত্ৰীর কেবল প্রিয় নতে. बिश्वज्ञ ; जी खिश्रवरमत आगव्छी दश्र नाहे वरहे. किंब আৰি অপেকাও যাহা বভ ভাৱা হনন ক্রিয়াছে--ভাব कीर्तिनाम कविशाहि, जात धर्मनात्मत कादन बरेगाहि: একটা ঘথাৰ্থ মহুৰাত্বৰালী পুক্ৰকে পক্তে পরিণত कित्राहि। (कन अभन करेंग ? देनव ७ कुर्व कि छेल्थं रे बुबि जात रिष् । . देन व शिक मूर्व डात्क अवः मी डातात्म উৎকট রূপমোহ বা কামবৃত্তিকে আএর করিয়া কার্য্য করিয়াছে। স্রাাসিনী জী স্বামীর কাছে আসিয়া বলি-তেছে "তুমি স্বামী, আর তুমি রাজা, তা ছাড়া তুমি **উপকারী, আ**মি উপকৃত। অতএব তুমি যাইতে না **पिरण चामि गाइएड পाরिব ना।" महा। भिनीत चारात** খামী কি ? রাজা কি ? খামী, রাজা ও উপকারীর #ভি কর্তব্যজ্ঞান আছে, কিন্ত স্বামী, রাজা ও উপকারীর ষ্ণার্থ উপকারে অর্থাৎ গৃহধর্মচর্চায় সম্মতি নাই। কেন मा त्व मुज्ञामिनी ! श्वामी, त्राष्ट्री ७ উপकातीत श्वीतर ষশঃ ধর্ম সকল বুগাতলৈ ষাইতেছে দেখিয়াও গে সল্লা-সের কথা ভূলে না-রাজধানী ছাড়িয়াও পলায় না। **७४न७ बी निक मन्नाम्यर्यात कथाई ভাবিতেছে. अ**शह খথার্থ সন্ত্যাস কোথায় ? সীতারামের মূপে পেমালাপ শ্বনিত্বে শুনিতে সে ভাবে "ইনি আমার পতি, আমি ইবার গৃহিণী,"। তবে সে গৃহধর্মে ফিরিয়া যায় না কেন ? তার উত্তর,—"মহিবার ধর্ম ত শিথি নাই; সন্তঃ সিনীর ধর্ম শিখাইয়াছ। যাহা জানি না, যাহা পারি मा. (महे धर्म शहर कतिया नव (भाग कांत्रव , भन्नाभिनी श्विशी बहेरन कि मनन बहेरत ?" अकृत्त कूजानि अजन আল্লপ্রভারণা নাই। সে যে ভাবানী পাঠকের নিকট नकन तकस्मत रिका आधारित गरिक नहेशाह छ।दा वानीक विवयुक्षनि छ छ द ए प्रतिक छ लियात कथ वर्षे, विकारम का मिर अमरक क्ष्मा छ छात्र हरक रहर नाहे।

বানী তাহার কাছে দেবতা। তবানী পাঠক এতটা বুবেন্দ্রী
নাই—তীর "একটা বড় ভূল হইয়াছিল, প্রস্কুর একাদুলীর দিন কোর করিয়া মাছ থাইত, এ কথাটা আরু
একটু তলাইয়া বুনিলে জাল হইত।" সে বাহা হউক্
প্রায়ুলের সৌতাগ্যক্ষে ভবানী পাঠক তাহাকে কর্মাসন্ন্যাস শিক্ষা দেন নাই—তাহা দেওয়া তাঁর স্বার্থাক্ষ্মভক্ত
ছিল না—কর্ম-যোগ শিক্ষা দিয়াছিলেন। ভাই প্রস্কুরের
আমিপ্রেম নিছাম গৃহধর্মে পরিণত হইভে পারিরাছিল।
কোনও কোনও স্মালোচক ইহাকে একটা গেরুপ্রায়ুদ্ধর স্বান করিয়াছেন। এমন একটা গুণবতী বানী কি কা
সতীন লইয়া গৃহধ্য করিতে পেল। প্রস্কুরের ক্ষমান্দ্রীন তাইয়া গুলিখিত হইয়াছে।

প্রকৃলের চরিত্রের গাঁধুনি বড় ভাগ ছিল, ভাই ভাহাকে এত বড় করা সম্ভব হইরাছে। প্রথমান্ত্রি তাহাকে বেশ দৃচ্চিতা দেখিতে পাই-ভারার কৃষ্ণি শ্বাধারণ। বাঙ্গালীর মেয়েতে কি ইছা নাই । খাছে वह कि ! कुः (वह माजून ध्यार्थ मजूक माक करका व्यवश व्यक्तिक हारे। चंत्रतानदा अध्य नित्य चालबीक সহিত, সাগরের সহিত, স্বামীর সহিত কথারার্ডায় 🕸 चाठतर्ग मर्सक्रे अङ्त्वत ममूत्रा वृद्धि ଓ छर्कावन्त স্থকটি (ইহাকেই আনরা স্থক্তির ফল বন্ধি) দেবিজে পাই। যে খণ্ডর তাহার সকল ছঃখের দিয়ান জাহার প্রতিও কোনও অবস্থায়ই ভাষার বিষেষ নাই- স্বাং ত্ৰেম দিনেই সে স্বামীকে বলিয়াছে সামার বল ছুঃখিনীর জন্য বাপের সঙ্গে ভূমি বিবাদ করিও ন্ ভাতে আমি সুধী হইব না। ,তার সাহস ও মুমোৰৰ কত অধিক, তাহা তাহার হরণবৃতাতে ও ভবারী ঠাকুরের স'হত পরিচয়ে জানিতে পারি।

নন্দা চরিত্রেরও ভিত্তি ভাগ। "শীভারান্ধ" আখ্যারিকার যাদ কোনও নারীচিত্র মনে এছ ক উত্তেজ করে ভবে সে নন্দা। নন্দাও হুর্যাযুখী এক ছাঁচেক বৃত্তি। সে প্রাণ্ণাভ করিবা প্রতিস্থার নিমুক্তিক।

भिश्चित यह (मह, कनात यह छक्ति, बागीद यह (नवा, ৰীতারাম সকলই নন্দার কাছে পাইভেছিলেন।" তব ति जिनि छाविष्ठिष्टिन, "गर्धाविषी कहे १—रेवकुर्छ नश्ची कान কিন্তু সমরে সিংহবাহিনী কই १" ভাছা লন্ধী-ছাছার যোগা ভাবনা। নন্দাকে তিনি যেমন ইচ্ছা क्ष्यनहे छक्रछारवत भनिनी উन्नठकीयरमत अधिकातिनी ক্ষিয়া লইতে পারিতেন। বস্ততঃ "সহধর্মিণীর অভাব" নীভারামের আত্মপ্রভারণাম তা। তাহার অস্তরের অস্তর্ভম আফেৰ হইতে নবপরিচিতা জীর পৌন্দর্য মোহাগ্রিশিখা शिक्षा बीरत नर्ककर्मनामिनी नर्ववर्षमध्यातिनी व्यामा বিশার <u>ক্রি</u>তেছিল। ব্রভেখরের প্রস্কুরের রূপগুণের অভি মোহদত্তেও ধর্মবোধ এতই প্রবল ছিল যে. শিভাকে ভার মৃত্যুর খেতু ভাবিয়াও, এমন কি, विश्वकातिनी अञ्चलक प्राहेशा निकात छत्पत्य जाहात्क ইপাৰেন্দাপিরি করিতে দেখিরাও তাঁহার প্রতি কোধ বা শ্লিপ্রতা অব্যে নাই। যথনই ভাষার মনে ঐ সকল ভাবের ছারামাত্রও পতিত হইরাছে তবনই সে "পিতা শ্রম্য অভৃতি শারবাকা শ্বরণ করিয়া তাহা দমন ভরিছাছে। আর গীভারাম ? গীভারাম এর মোহে बाचवार्य विमर्कन निशाह. शकु ७ भवगतानानगारी চলচ্ড ঠাকুরকে অপমানে বাধিত করিয়া নির্বাসিত के विशास, जात भव त्य काली अक्तिन जाहात बाक्सानी ক্সিকাছিল, আর একদিন ভার নিজ কুলম্গ্রাদা, ভার শর্মপন্নার মান রক্ষা করিয়াছিল, তাঁগাকে --বলিতে ह्या त्वार रा-कि व्यवसारमहे वा व्यवसार्मित कृति-शिक्षित धारेगात जातात्र नमात्र कार्या चत्रन कत्. देशिक्त मन्यात्र महातामाधितात्वत्र महिनीत अञ्जल छन, সাৰার সহধর্মিণী হইবার যোগাতা আছে কিনা। च्यादिक ववार्व हे भौजाताम मन्त्री भारत रहेनिया निःश-अधिनीतं नार्य स्थारमधी तिञ्ज करा छेड्। छ बहेता किए कि ना । भिश्ववादिभी छाबात चरतके नर्मा-विशेष कंत्रिटिष्ण। यश्यनभूति पूर्वियाम

क्लिकारतत त्यं काळगरनत क्षिम यदन कत जात क्षेत्र

নদা। মহারাজ। পরীরধারণে মৃত্যু আছেই।
সে জন্য হুঃও করিও না। তবে তুমি সক্ষযোদ্ধার নাম্বক
হইরা যুদ্ধ করিতে করিতে মরিবে, আমি তোমার অনুগামিনী হইব তাহা অদৃষ্টে খটিল না কেন!

রাজা। নন্দা! এত লোক পলাইল, তুৰি
পলাইলে নাকেন? তাহা হইলে ইহারা রক্ষা পাইত।
নন্দা। তোমার মহিনী হইয়া আমি কার সঙ্গে
পলাইব হহারাজ? তোমার প্ত্র কন্যা আমি তোমাকে
না বলিয়া কাহার হাতে দিব ? পুত্র বল, কন্যা বল,
সকলই ধর্মের জন্য; আমার ধর্ম তুমি। আমি
তোমাকে ফেলিয়া পুত্রকন্যা লইয়া কোধার বাইব ?

রাজা। কিন্তু এখন উপায় ?

নন্দা। এখন আর উপায় নাই। রাজার ঔরবে ইহাদের জন্ম। রাজকুলের সম্পদ্ বিপদ্ উভর আছে, তজ্জন্য আমার ভেমন চিম্বা নাই। পাছে ভোমার কেহ কাপুরুব বলে আমার সেই ভাবনা।"

হতভাগ্য কামমোহোদ্রাস্ত শীতারাম এমন পদ্ধীকে শেবে চিনিতে পারিয়াও শীর মোহ কাটাইভে পারে নাই।

শ্ক্রী। এই ভোষার পারে হাত দিরা র**লিভেছি** আমি আর সমাসিনা নই। আমার অ**পরাধ ক্ষমা** ক্রিবে? আমায় আবারও এহণ ক্রিবে?

শীতারাম। তোমায় ত বড় আলংএই **এহণ করিয়া-**ছিলাম; এখন ত আর এহণের শময় নাই।

ত্রী। সময় মাছে; আমার মহিবার সময় যথেষ্ট আছে।

गी। जूबिरे बामात महिनी।"

দী চারাম রাসিতেও পারিল না, একবার ক্রেইট্রাকট্র অভিযান করিয়া বলিয়াছিল ''আমার দলে নকা বাইবে,

শীভারামের চরিত্র নীতির বিক দিয়াই লামবা এ পর্যাম্ভ বিচার করিয়াছি এবং ঐ হিণাবেই তাহা এলে-খবের চরিত্র অপেক। হীন বলিয়া সিদ্ধান্ত করা হইয়াছে। भित्तत निक दहेट प्रिंचिट (श्राम विकास मार्ग गीडा-বামকে প্রথমে যেরপ অসাধারণ নৈতিক মাহায়ো নোরবামিত এবং বৈষ্যাক উন্নতির সপ্তান স্বর্গে উন্নীত করিয়া ধীরে ধীরে: কিন্তু দৃঢ় নির্দিয় ২ন্তে, তাহার নৈতিকবল অপহরণ ও ঐথর্যা বিলোপ করিয়া নরকের দিকে ঠেলিয়া লইয়া গিয়াছেন তাহা প্রাচীন রোমাণ্টিক রীতির অমুযায়ী একটু sensational একটু melodramatic হইলেও তাহাতে ত্রজেখরের চরিত্রচিত্রের তুলনায় অধিকতর বৈচিত্র্য প্রদর্শিত হইয়াছে, সন্দেহ নাই। অবশ্ব সীতারামের চরিত্রটাকে কারও একটু জটিল করিবার এবং ভার পতনের মধ্যে আরও একট মানুসধর্ম · সংযোগ করিবার যথেষ্ট অবকাশ ছিল। সীতারাম মাত্র-বের মত পতিত হয় নাই, একটা দৈত্য দানবের মত পতিত - হইগ্লছে। সীতারামের পতনে মহজ্রিতের . (यांगा struggle-- मशासादित गाम सहाधानजात ेनड़ारे-नारे। এक है। প্রাচীন প্রসাদ যেমন জীব १३(७२ ্**শেবে একদিন শাবণের ধারাপাতে হঠা**ৎ ধ্রিয়া পড়ে, সীভারামের পতন কভকটা সেইরল। শ্রীর জন্স মোহ 🏟 চরিত্রের মহত্ত জীর্ণ করিয়া দিয়াছিল, ভার পর জ্যুস্থীর বেজাপভাষ্ণার পরই ভাষা নিক্টতম কামপ্রবৃত্তির উৎকট ু**ধারাসম্পাতে ভূমি**ধাৎ হ**ই**ল। গীতারামের পূর্রজীবনে विनीरभव चार्या-विमक्तन भवत जाद भवकीयान ज्यापार्यंत किंकिकका-क्रमक दूरे विभिन्न निप्तार्छ।

শীতে আদর্শের বিপর্যায়কনিত একটা বাভ বিক "ক্ষাভাবিক লা" ছাড়া নার কিছু লক্ষ্য করিবার নাই। তাহাতে শিল্পকৌশলও বিশেষ নাই। শুন্ধার একটাই ছায়ামারে, ছায়ায় মূলের সন্ধাবলা নাই। ক্ষান্তীর বৃদ্ধি ভীক্ষলা,উপ্পন্নে প্রথমতা, ধর্মবোধের ঐকান্তিকভা কিছুই শীতে ফুটে নাই। প্রীর চরিত্রে প্রভুলের তুলনায় ক্ষান্তিক বটে, কিন্তু সেরপ ভটিলভার শিল্পত মর্যাদা ক্ষিক নহে। প্রকুলচরির শিল্পগোরণে গৌরবান্তি না হইলেও মনোহর; শীতে শিল্পও ভেষন নাই, চরিত্রের স্বাভাবিক উল্লভাকনিত মাধুগাও নাই।

প্রি সহিত প্রকৃলের হই সলে সাদৃশ্য আছে। প্রথম কর্মা উভয়েই নবযোবনে স্থানিকৰে বাক্ষা। বিত্তী হত হৈ তথাপি উভয়েই স্থানিকে দেব গার আদক ভ্রুক্ত করে জ্ঞা ভালবাসে। প্রকৃলের ভ্রিক ও ভালবাসায় কোনও বাবা আসে নাই; কিন্তু প্রী যখন বৃথিল স্থানীকে ভালবাসা ক্ষান তাহার অনিষ্ঠ হইবে, তথন হইতে সে ভালবাসা ক্ষান করিবার জন্ত সন্থাস অভ্যাস করিতে প্রবৃত্ত হইল।

জরত্তীর আদর্শ ও নিশির আদর্শ ঠিক এক মার্ছে জরত্তী কেবল সন্ন্যাসিনী, নিশি বৈঞ্চবী। নিশির কর্ণী যৌবন, প্রাণ সর্বস্থ শীরুষ্টে অপিত;

"প্রফুল ।—তিনি তোমার স্বামী 🕈

নিশি।—হাঁ কেননা যিনি সম্পূর্ণরূপে আমারে অধিকারী, তিনিই আমার আমী।

নিশি। শীরুষ্ণে স্কল মেরেরই মন উঠিতে পারে কেন না তার রূপ অনস্থ, যোগিন অনস্থ, **ঐথধা অন্ত** গুণ অনস্থ। শ

নিশি বৈষ্ণবী, তাই দে সর্বলা প্রকৃষা, তাহাঁই বাসকভা তাহার সন্নাসকে — শ্রীক্ষাপিতসর্বস্থ কীবন্দ্রিক বড় মধুমনী আভান মণ্ডিত করিরাছে। তাহার চড়ুর্ভী ও রসিকভার পরিচয় পাওয়া বাম হরবলভের সহিত্য ভাহার "এসিনীন" বিবাহ প্রভাবে। দেশী বৃশিষ্টি প্রিশি সৈত্রাণি! তোৰার মন প্রাণ কাবন যৌবন সামীয় আছিকে সমর্পণ করিয়াছ—কেবল জ্বাচুরিটুকু নয়। বৈছুকু নিজের বাবহারের জন্ম রহিয়াছে।" এই যে "জ্বাচুরিটুকু" ইয়াবারাই তাহার আমালের পূর্কপরি-ছিজা বিমলার সহিত বংশগত গালুভা ধরা পড়ে।

ক্ষিত্রতে রশিক্তা নাই, দে সন্নাদিনী, ও সন্নাদিনীর ्रविका गञ्जी कामानिशी— किंह जाशांत डेक्स छेदमारहत क्रमा नारे। (म निर्मित छात्र सुध हु: ध शकुरक मनर्भन ক্ষরে নাই; সে স্ব ৃংধে জলাঞ্জলি দিয়াছে।\* ভাহার सरसम् कार-"यथन व्यामात सूचल नाहे वृ:चल नाहे, क्षेत्र कार्याय गड्या कि ? हे लिए यद मर्क गरनत गर्यन द्वात । त्रम नारे उथन थाभात यात्र विवय भवस कि १ वानिर नेका वारात कि (म नका कतित्व १"...रे गानि। জাই সকল কথায় বুঝা যায় সন্ন্যাস করিয়াও ভাহার আত্ম-্ৰাৰ (self-consciousness) টুকু বেশ আছে। জুৰবাৰ ভাই ভাহাকে বিষম পরীক্ষায় ফেলিয়া ভাহার ঐ श्री पहेंकू जे मर्प हेकू हुन कतिशास्त्रन, मर्प हुन कतिशा ক্লাৰাৰ শ্ৰাণিমাহাত্মাকে উজ্জলতর করিবাছেন। মনে প্রভে শীভারাষের হচিবাহ রচনাকালে ঐ যথন विद्योद्यिन-"मरादाक! রাজাদিগের অপেকা কি সমাসীদিপের সরণে ভয় বেশী ?" তথন জয়রাকিছ ब्राटन मारे ? (कन न। "अयुडी व्यात महा।(भव पर्य करत #1" I

্রিকেশরের তিনপদ্রীর ভার সীহারামেরও তিনপদ্রী। জ্ঞানী পাঠকের হাতে না পড়িয়া ত্রজেশরের গৃহে জাশ্রয় শাইকে অকুল যাহা হইতে পারিত, নদ্যা ভাহাই। •

্ত্রীর মূথে একবার 'অনত সুন্দর ক্ষাপাদপল্নে ক্রিক্টির" করার কথা আতে বটে , শ্রীক্ষকে আয়দানের ক্রিডার বা ভার শিধার মূথে শুনি নাই।

ত প্রক্রের গৃহধর্মের প্রধান ওণ যে সপদীর প্রতি শিক্ষাক্তা, তাহার বীজও নকায় আছে। মুসলমান শ্রম্থাক্ত্র আক্রমণ করিতে আসিতেছে ওনিয়া রমা শ্রম্থাক্ত্রি বার মূর্জ্য গাইতেছে, তথ্য নকা যদিও

छावागी भार्रदेवत निकात जानार्न विभवात पंति।---वानीत ( वर्षार ताबाक्रम दृद्ध भावतात्वत गृहिनीत) (यात्रा निका ना शहिता त्रज्ञात्रिमीत (यात्रा निका शहिता প্রফুল যাহা হইতে পারিত শ্রী ভাষাই। भी छा बारमत हुई भन्नी, खालचात्रत अक भन्नी बुई छेन्छ। পিঠের মত। সাগর আর নয়নতারা সীভারামকে কোনও আকারে আসিয়া অনুগ্রহ করেন নাই। তাহারা যেমন ত্রজেখরের নিজ্য, রমা ভেমনি সীভারামের নিক্স। শিলের হিসাবে রমা ও ভ্রমর । এক ভ্রেণীর शृष्ठि। व्यर्गाद ज्यात (यमन तक्ष्मनात्र काप्रकृष्टि धर्म উগ্রভর করিয়া দেখান হইয়াছে, রমাভেও দেইরপ। ভ্রমরে পাই বিশ্বক্রধুর পতিপ্রেম ও অভিমান; মুমাতে পতিপ্রেমের দক্ষে পাই তাহাদের অপত্যন্তেহ ও ভীক্ষত।। लग्रत नहात्र त्या ७ तश्रवष् intensified. (४ धाष्ट्रक পুড়িয়া শিট্যা প্রকুলের ভায় দেবীপ্রতিমা গড়িয়া ভাবষাতের বঙ্গদংগারে প্রতিষ্ঠিত করিতে হইবে রমা ( ও এমর উভয়েই ) তাহাই।

রমা পভিপ্রাণা, পুত্রবৎসলা, সে যে মুসলমানকে ভর করে তাহা নিজের জাবনের জন্ম যতটা না হউক, পতিপুত্রের জাবনের জন্মই অধিক। যথন পতি দিল্লী গোলেন, তথন পুত্রেহেই সে নিজের সর্বনাশ করিল, সাভারামের সর্বনাশ করিল, যে মহম্মদপুর ছারখারে যাওয়ার জন্ম সে নিত্য ঠাকুর-দেবতার কাছে প্রার্থনা করেত সেই মহম্মপুরকে সত্যগতাই ছারখারে দিল। রমা সভাবতীক। রবীজ্ঞনাথের "কাবুলিওয়ালা" গ্রের মিনির মার মত সে "অতান্ত শক্তির স্তাবের লোক"।

একবার ভাবিল, "সতীনটা মরিপেই বাঁচি", তথ্নই আবার ভাবিল, "প্রভুষণন আমাকে অন্তঃপুরের ভার দিয়া গিয়াছেন", তথন আমাকে আপনার প্রাণ দিরাও স্তীনকে বাঁচাইতে হইবে। তার পর রমার কল্ড শুনিরা সে যে তাবে তাহার সহিত সহাকুভূতি দেখাইয়াছে ভাহা বান্তবিকই অত্যক্ত উন্নত্রদয়ের পরিচায়ক।

+ जनत हरित पश्च लाख आलाहिल दहेवार्ड

वाषांत्र अक्षे। नक अनिरंगरे मिनित मात मान वहेल, 'পূথিবীর সমস্ত মাভাল আমাদের বাড়ীটাই বিশেব লক্ষ্য ক্রিয়া ছুটিয়া আদিতেছে। এই পুথিবীটা যে সর্ব্যান্ত টোর ডাকাত মাতাল সাপ বাব ম্যালেরিয়া ভুরাপোকা चांत्ररमाना এवर भारतात चाता भूनं, এতদিন ( शूर तिनी দিন নৰে) পৃথিবীতে বাস করিয়াও সে বিভীষিকা र्जीहात मत्न इंडेट बात्र नाहे।" त्रमात कल्लनात्र (शांतात्र পরিবর্ত্তে ' অসংখ্য মুগলমানের দন্তভেণী--প্রভাগিত বিশাল শাশল বদনমগুল রাতিদিন"বিরাজ করিত। এই যে"চোর ভাকাত যাতাল সাপ বাঘ ম্যালেরিয়া ভূরাপোকা আর্সোলা পোরা" ইত্যাদির ভয় ইহা অধিকাংশ বদনারীর মজ্জাগত। বৃদ্ধির উপ্রাসে আমরা এ শ্রেণীর রমণীর সাক্ষাৎ এক রমা ভিন্ন পাই না। ব্রিম चुमारक राष्ट्र इ:रबंद्र, राष्ट्र कनरकत माना मित्रा माना कतिया गरेसाहितान । (य वान किছू वाँका रहेबा कत्य, আগুনের ভাপে ভাহাকে সোজা করা যার বটে, কিছ ষেটা বড় বেশি বাঁকা, ভাহাকে সোজা ক'রভে গেলে নেটা ভালিয়াই যায়। রমাও তাহাই সোলা হইতে গিয়া ভারিয়া গেল।

"রমা বড় ছোট মেরেটি, জলে ধোঁয়া বুই কুলের
মত বড় কোমল-প্রকৃতি" গ্রন্থকার-প্রদন্ত এই বিবরণে
তিলোত্তমা ও (বিশেষতঃ) কুলকে মনে পড়ে। কিন্তু
তিলোত্তমা বা কুল এমক "ব্যান্ ব্যান্ প্যান্ প্যান্ প্যান্ শান্"
করে মা। কুল একবার সাহদ করিয়া বরের বাহির
ইয়াছিল, রমার দে রকম সাহদ নাই; কিন্তু সে
পলারামকে রাজিযোগে গৃহে আনিবার জন্তু যেরপ
অবিমৃত্যকারিভাপ্রদর্শন করিয়াছিল ভাহা বোধ হর কুল
ভারিতে পারিত না; কেননা কুল ত মা নহে। মাতৃষ
ভৌককে সাহদ দের, তুর্জলাকে বলবুক্তা করে, বোবাকে
বাজিনী সাজার, পলুকে গিরি লক্তন করার—কেবল
ক্রির্জানিক বুলিম্ভী করিভেপারে না। ভাই রলার কপালে
ক্রির্জানিক বুলিম্ভী করিভেপারে না। ভাই রলার কপালে

উহাই ভাহার কলকলালনেরও হেতু ও উপায় হইয়াছিল রামায়ণের উত্তরকাণ্ড বাল্মীকির রচিত কি কার রচিত জানি না, কিন্তু সে কবি সভীকুলশিয়োমণি দীভায় ষিতীয়বার সভীবপরীকার যে বিবরণ দিয়াছেন, ভাহাতে বোধ হয় তিনি একজন যে-দে ক্লুদে কবি নংহন। অ্যাপরীকোত্তীর্ণা দীতা যে বিতারবার পরীকা বিতে স্বীকৃতা হইয়াছিলেন, তাহা কি নিজের কলক্ষালন ক্ষ না পুত্রহয়ের মুধ চা'হয়া? গীতার কলছিনী অপবাদ বভদিন কালিত না হইত,ততদিন রামরাজ্যের প্রজাপণের চকে লবকুশ অনভীপুত্র থাকিয়া যাইতেন। সভাসমক্ষে সভীবসম্বন্ধে শূপথ করিতে সম্বতা হইয়াছেন ই কিন্তু দতীর পক্ষে ঐ কার্য্য যে কিন্তুপ বেদনাজনক,কড ছব অপ্যানকর তাহা উত্তরকাণ্ডের কবি জানিতেন, তাই দীতাকে শপথ করাইতে করাইতে পাতালে **প্রবেশ**্ করাইয়াছেন—বসুধার ছহিভাকে বসুধার লয় করিয়া সে যাহা **হউ**ক, উত্তরকাণ্ডের কবি মাতৃহদয়ের ব্যথা বুঝিয়াও সে ব্যথাটুকু স্পষ্ট করিয়া ব্যক্ত করেন নাই। ক।লিদাস উহা বুঝিয়াছিলেন, ভাই উত্তরকাণ্ডে যেথানে দেখিতে পাই সীতা একাকিনী মহর্ষি বাল্লীকির পশ্চাৎ পশ্চাৎ সভায় আসিভেছেন, তৎস্থা রঘুনংশে দেখিতে পাই তিনি বাল্লীকির সংক্র সভায় আণিবার সময় পুত্রবয়কেও সাথে করিয়া কালিদাস বিশেষখাবে বুঝিয়া**ছিলেন** আনিয়াছেন।\* কেবল পুত্রগণের সালিধাই, সীভার ক্রায় সভীতে জাতুশ व्यथमान ७ (यहनावनक कार्या हिस्ड यह कि ए सम्ब উक्ष(अ—वाच्रामावक्षान वा বস্থিম

তম্বং পৃষ্ঠ তঃ শীতা অবগতলবাড্মুখী।
কুতাঞ্জালব পিকলা ক্ষম রামং মনোগতম্ ।
রামায়ণ উত্তর কাত ১০ সর্গ ১০ শোক।
ক্ষমংক্ষারবভ্যাদৌ পুরোধ্যামধ দীছলা।
ক্ষেত্রোদর্ভিখং ক্ষাং রামং মুনি ক্পস্থিতঃ ।
ক্ষম্বংশ ১৫ সর্ব ৭৬ লোক

বিজের সংগ্রীপুত্রাপবাদ দ্বীকর পোদেশ্রে—সর্বসমক্ষে

কাষ্য দিতে প্রবন্ধ করাইয়াছেন ভাহা স্পষ্ট বুঝা যায় মা।

ক্ষিত্র ইয়া স্পষ্টই দেখা যায় যে, তিনি কলিদাসের

ক্ষেত্রিকার মর্মাটুকু বুঝিয়াছিলেন। রমার সাক্ষ্য দিবার

ক্ষেত্রিকার বিভাগন হইতে সভার সমারোহ দেখাইয়া নন্দা

ক্ষেত্রিকারেক জিজাসা করিলেন—

্ৰারিবে ? সাহস হইতেছে !"
ভিৰম ক্রমা কি বলিতেতে গুল

শর্মা। যদি আমার স্বামীর পদে ভক্তি গাকে তবে বিশ্ব শারিক।

মিকা। আমরাকেহ সঙ্গে খাইব ? বল ত আমি বাই

রমা। তুরি কেন আমার সঙ্গে এ অসম্ভ্রের সমুজে । বিবে । কাহাকে যাইতে হইবে না; কেবল । কৈটা কাজ করিও। যথন আমার কথা কহিবার সময় । কৈবল কেহ লইয়া গিল্লা । তাহার মুখ দেখিলে আমার নিকেট দীড়ায়। তাহার মুখ দেখিলে আমার নিকেট দীড়ায়।

ইহারই নাম মাতৃত্বগোরেব। মাতৃত্ব নারীর শ্রেষ্ঠ ধর্ম,
নাতৃত্ব দারীর শ্রেষ্ঠ সৌন্দর্য, মাতৃত্ব নারীর শ্রেষ্ঠ গোরব।
ক্রিম্ম মাতৃত্বমহিমা তাহার উপভাসভালতে বড়বেলি ক্রেম্ম নাই; দেশাইলে স্মালের কল্যাণ হইত ক্রেম্ম নাই।

**এ অক্যকুমার দত তথ্য কবিরত্ব।** 

## প্রেমের তরে।

বলোনা আনায়ে কেং বৰ মান কান্তির কাহিনী, যৌবনের সধ্যাস-ভাবনের কোহিন্ব মণি; ব্যান্ত্ৰীর (প্রেমস্থরা, মিলবের কি ভৃতি বিপুল- শোভে কি বে কুলহার লোলচর্ম ক্ষিত ললাটে ?

কিফল সাজারে তবে গুল্লির তরুণের ঠাটে ?

কেফল সাজারে তবে গুল্লির তরুণের ঠাটে ?

যৌবনের অবসানে কি হইবে গৌরব জাহিরে !

চাহি নাকো যশ কভু অর্থহান খেতাবের তরে ।
প্রশংসার ধানি সোর পশে যদি প্রের্মীর কাবে,
সমুজ্জল আঁথি তু'টি স্মিত হাস্তে মৌন গর্মজরে
হয় বে উজ্জলতর,—তাই ফিরি যশের সন্ধানে !

সেধায় থুলেছি যশ পেয়েছি সে নীলিম নয়নে,
সব চেয়ে শোভে যশ সে দৃষ্টির স্থান্মির কিরণে !

জামার গৌরত বার্ত্তা শুনি' ববে ভাতে সে নর্মন,
ব্রির সে গভীর প্রেম, ব্যু মানি জীবন স্থপন !

श्रीयारभगवस्य कोधुवी।

# আয়োন্ ( Ion )

ি এই প্রশ্নে: তবে প্লাটো প্রমাণ করিতে চান খে, কাব্য এবং কাব্য গীতি একটা শিধিবার এবং শিধাবার মত শিল্প নহে; ইহা একটা দৈবী প্রেরণা। অবশুই এই প্রেরণা সম্বন্ধে গ্রীক্দের এবং প্লাটোর নিজের মৃত্য যে পুব উচ্চ ছিল, এমন মনে হয় মা; কেননা ইহা ভানের পরিপহী।

( तारकिंग् ७ चात्रम )

সো 

স্থান ব্য ; ভাগ আছ তো 

ত্রি এখন কোৰা

থেকে আমাদের এখানে এলে 

ত্তামান্ত

আগন দেশ হিফেসস্ থেকে নাকি 

আগন না, সকোটিশ 
আমি আস্কি 

স্পান প্রাক্তির প্রাক্তিশ্বর 

স্থান আমি আস্কি 

স্পান প্রাক্তিশ 

স্পান আমি আস্কি 

স্পান প্রাক্তিশ 

স্পান আমি আস্কি 

স্পান প্রাক্তিশ 

স্পান স্কিলিয়নে 

স্পান স্কিলিয়নে 

স্কিন্তির প্রাক্তিশ 

স্কিলিয়নে ব্য 
স্কিলিয়ন বিশ্ব 
সকলেয়ন বিশ্ব 
সকলে

• বাংক্রেলারের প্রথম ক'টি যে নিয়ে এদেছি,
সোকেটিন।

সোঃ—বেশ কথা; দেখো যেন পোন্—এথিনিয়ার (২)
উৎসবেও আমরা জরলাভ কর্তে পারি।
জা
ু—দেবতার ইচ্ছা হলে, তা বোধ হয় হবে।

শো:—ভোমাদের চারণদের এই বিভার অভা আমি रिकामानिगरक कडवात दिःभा करत्रिक, व्यायन। তোমাদের এই বিভার জন্ম তোমাদের দেংটাকে স্ক্রিট সুন্দর করে সাজিয়ে রাণ্তে হয়, আর সকলের চেয়ে ফুলর যারা তাদের মত তোষা-मिगरिक (मथा छ इस, आत मर्समाई वादा इस ভোমাদিগকে অক্সান্ত বহু সংক্ৰিদের সংক্ मिन्द्र इस-विरम्य क'रत कविरमत मर्या नकरलत (हार (अर्छ এवः नकरनत (हार अभी-শক্তি সম্পন্ন 'হোমরের' সঙ্গে; আর তোমা-দিগকে যে ধুব যদ্ধ ক'রে শিশ্তে হয়—শুধুইং।র ্ৰাক্যগুলি নহে, ইহার অস্ত্রনিহিত ভাবটী, এইটী ৰান্তবিকই ঈর্যার বিষয়। কেননা কবির উজি-শ্বলি ভাল করে না বুঝিলে কেউ কখনও ভাল চারণ হতে পারে না। চারণ হলেন শ্রোতাদের কাছে কবির মনের কথার ব্যাখ্যাতা। এইটা खान क'रत कतरा हरन करि कि वरनन जा ना জানিশে চলে না। এই সকল বাস্তাবকট স্বীয়া করার মত জিনিধ।

আ। :— ঠিক্ বলেছ, সোজেটিস; আমাদের কলাবিছার মধ্যে এই ভাব প্রকাশটি যে সকলের চেল্লে কঠিন কাজ, তা আমাসও মনে হয়; আমার মনে হয়, আমি হোমরের সম্বন্ধে সকলের চেম্লে ভাল করে বল তে পারি; 'ল্যাম্পদাক্দে'র মেটুছেরস্ (৩) কিংবা 'পেসদের' 'প্রেসিম্ভাটস্' (৪) কিংবা 'প্রকন' (৫) অথবা অন্য যে সব চারণ জন্ম প্রকা করেছেন, তাঁদের মধ্যে কেউ এত করে এবং এত ক্ষলর করে 'হোমরের' বাাধ্যা কর্তে পারেছেন নি, যেমনটী আমি পারি।

নেখান, ভোষার বাধ্যা আমাকৈ শোদার ভোষার কাপতি হবে না।

আ: — নিশ্চরই নর; আর হোমারকে আমি কেমন করে সাজিয়েছি, তা একবার শোনে ভোমার পরে বিঝা উচিতও বটে। আর—আমার মনে বৃদ্ধ হোমারের ভক্তদের (৬) ছারা আমি সোণার মুকুটে মণ্ডিত ই'বার যোগা।

সো:—আছা, আমি অন্ত এক সময়ে অবসর ক'কে
ভাষার আর্ত্তি ও ব্যাখ্যা শোল্ব। স্থাতি
আমার এই কথাটার উত্তর সেও:—তুমি কি
কেবল হোমর সম্বন্ধে পটু, লা, বিলিয়ন্তস্ এবং

## ( ७ ) धक्कन अभिष्ठ ठाउन, विनि स्वायस्य कानारक जनक विभारत वााचा कविरक्त ।

- (৪) প্রাগদ চারণ ।
- (1)
- (৬) মূলে (Homerides) হোমারিভিদ্ আছে। হোমারের তথাক্ষিত বংশবর (Chios) শীয়ন ঘীপের এক ক্ষিণ্ডালায়কেও এই নামে আত্ত্তিত করা হয়।

ত পূলে রাজেলাডস্ (Rhapsodos) আছে। বিহার উৎসবাদিতে হোমারের কবিতা আওড়াইতেন। বাহার আর্ডি ডাল হইত, তিনি পুষয়ত হইতেন।

আধুবিশ্বস্ (৭.) স্বধ্যেও ভোষার যোগ্যতা আছে ?

भा : —मा, रक्ष्रेन रहामात त्रश्रक्ष आभि भए ; आमात छ भाम दस्र, देशके धरवंद्वे।

হ্বাঃ-এখন কি কিছু আছে, যার সহজে হোমার এবং হিসিয়ত একই কথা বলেন গ

- चार्ट्स देव कि, बरनक विवेदम ।

ক্ষাঃ— সে সকল বিৰয়ে কোন ট্ৰুড়িম ভাল করে ব্যাখ্যা কর্তে পার—যা হোমার বলেছেন, না, যা হিসিয়ত বলেছেন ?

ক্ষা হ— বেশানে উভবে একই কথা বলেছেন, দেখানে ত উভয়কেই সমান ভাবে ব্যাখ্যা কর্তে পারি, নোকেটিস।

কুৰা ঃ— ধেৰামে উভয়ে এক কথা বণেন নি, সেৰানে কি ? যেমন, নিমিডজ্ঞান সম্বন্ধে হোমারও কিছু বলেছেন এবং হিসিয়তও।

आ १-छा'छ वर्छ है।

কৈ হ'লে? নিমিত বিভা গম্ব এই চুই জন
কবি, যে সকল বিষয়ে একই কণা বলেছেন এবং
হৈ গকল বিষয়ে ভিন্ন কথা যলেছেন, সে সকলের
ব্যাখ্যা ভূমিই কি ভাল কর্বে, না, নিমন্তক্ষীলের মধ্যে বিলেই কেহু ভাল কর্বে পূ

मा-विविद्यमणीतित याना (कर ।

শৈশি আছা, তুমি যদি একজন নিমিন্তদৰী হ'তে, তা হ'লে, যে সকল বিষয়ে হোমার এবং হিসিয়ত একই ক্ষা বলেছেন, 'সে কলি কে ব্যাব্যা কর্তে পার্তে, তথু তা ময়; যে সকল বিষয়ে উত্য়ে ভিন্ন যত, সে সকলও ব্যাব্যা কর্তে সমর্ব হ'তে দায় কি ?

--परवरे।

বো—তা হ'লে, তুমি যে কেবল হোমার সহারেই গাঁচু,
হিনিয়ত্ সহজে নও—অঞ্চাত কবিদের সহারেও
নও—সে কিরপ ? অঞ্চ সকল কবিরা যে সকল
বিবয় বলেছেন, হোমার কি তাছা হইতে ভির
বিবরে বলেছেন ? তিনি কি যুদ্ধ সহজে অনেক
কথা বলেন নাই ? এবং স্মাজে সং ও অসং
লোকদের পরক্ষার মেলামেশা সহজে এবং
আন্তরী ও শিল্পীদের মেলামেশা এবং দেবতাদের
পরক্ষার এবং মান্তবের সঙ্গে মেলামেশা—বেমনটী
উরা করে থাকেন—এবং স্বর্গের ও মরকের স্থ্
ত্রুবের কথা—এবং দেবতাদের ও মহাপ্তরুদের
(৮) উৎপত্তির কথা ? হোমার যে কবিয় রচনা
করেছেন, এ সকলই কি তার উপাদান নর ?

षा-ठिक वरगढ, मारकिए।

গো— অভ কবিরা কি বলেছেন ? ঠিক এই সকল বিষয়ই নয় কি ?

ষা—হাঁ; কিন্তু, গোকেটিস্, ঠিক হোমারের মত নর।

(मा—(क्यन ७८व ? दिश्यादात ८ हिर सम्म ?

वा-बानक निक्रहे।

সো—আর, হোমার অবশ্যই উৎকৃষ্ট।

আ-ভার কে আর কথা আছে ?

গো—আচ্ছা, হে আমার প্রিয়বদ্ধ (৯) গণিত সম্বাদ্ধে যদি কথনও আলোচনা হয়, আর, একজন বিদি সকলের চেয়ে ভাগ বল্তে পারেন, ভা হ'লে, তাকে যে কেই চিনে নিতে পারে না কি ?

मा-चीकाव कवि ।

পো—নিরুট বজ্ঞাদের বিনি চিনিবেন, তিনি কি সেই একই বাজি হবেন, না, স্বার একজন ?

(৮) मृत्य विरताम् ( Heros ) चार्छः, वांदा वरेरछः हैश्रतको hero कथाठी चानित्रारछ । देशत वर्ष चानका चामारकत भोताविक वीत्राकत चन्नत्रभ ।

(>) शृत Kephale mite-Gin me 'nea' !

(१) प्रथम कवि।

ना-पक्रे वालि।

त्।—जिमि कि चन्नः गनिज्ञ वहेरवन न! ?

चा-रायन वहे कि १

নো-তা হ'লে? যদি কখনও তাল খাদা কোন্গুলি সে
সম্বন্ধে বিচার হয়, আর কোনও একজন যদি
সকলের চেয়ে তাল বলেন, তা হ'লে, তাল যে
বলিল, তাকে কি একজন বুঝিবে, আর মন্দ যে
বলিল, তাকে বুঝিবে আর একজন—না, একই
বাজিক উভয়কেই চিনিতে পারিবে?

**আ-এত স্পট্ট বুঝা যাছে, একই ব্যক্তি উভয়কেই** বুঝিতে পারিনে।

সো-কে সে ? কি ভার নাম ?

ना-देवछ।

সো-সাধারণ ভাবে, তা হ'লে, আমরা কি একথা বলুতে
পারি না যে, যথন কোন বিষয়ে আলোচনা হয়,
এবং বছ লোকে মন্তব্য প্রকাশ করে, তখন
কে ভাল বলুছে, আরু কে মন্দ বলুছে, তাহা
সর্বলাই একই ব্যক্তি বুঝুতে পারবে ? কারণ,
স্পট্ট বুঝা যাছে, যে মন্দ বক্তাকে চিন্তে পারে
মা, সেই একই বিষয়ে ভাল বক্তাকেও সে চিন্তে
পার্বে না—নয় কি ?

चा-छा छ वरहेरे।

**লো—একই জ**ন উভঃ বিচারেই সমর্থ, নয় কি ?

. WI-BII

সো-ভাজা, তৃষি কি বল্ছ না, যে ছোমার এবং অক্সান্ত কবিরা-বাঁদের মধ্যে হিসিয়ত্ও আধিলখন্ড রহিরাছেন-একই বিবরে লিখেছেন, অথচ একই রকম যে লিখেছেন, তা নর,—হোমার লিখেছেন উৎকৃত্ত আৰু অক্তেরা নিকৃত্তী প

আ-ঠিকই তো বলেছি।

শৈ—ভা হ'লে, যদি তুমি উৎকৃষ্ট ক্লবিকে বুকিতে পার, ভবে নিকৃষ্ট কবিদিপকেও ভোমার বুলা উচিত— चढ ७: छाता (व निक्छे, बहेरूकू।

चा-त वक्ष हे ७ मत्न इस्।

লো—তা হ'লে, তাই, যদি আমরা বলি বে, আরোর হোমার এবং অকাক কবিদের সম্বন্ধেও একজন স্থাটু চারণ, তবে নিশ্চয় আমরা তুল করব না, কেন না, আয়োন নিজেই স্বীকার কর্ছেন বে, বারা সকলেই এক বিষয়ে কাব্য লিখেছেন, তাঁলের সম্বন্ধে তিনি একুজন সুযোগ্য সমালোচক; আর, কবিরা ত প্রার্থ সকলেই একই বিষয়ে কাব্য লিখে থাকেন।

আ— কিন্তু এর কারণ কি, সোক্রেটিস্; যথন কেউ

অক্ত কোন কবির কথা ভোলে, তথন ভাতে

আমার মন বসে না এবং বৈক্ষের মত বিষ্তুত্ত

ধাকি,—আরু, যেই কেন্ত হোমারের কথা অরণ

করাইয়া দেয়, অম্নি যেন আমার মুম ভেলে

যায়, মন দ্বির হয় এবং কি বল্তে হবে, স্বই

ঠিক বুঝ্তে পারি ?

সো—এটা বুঝানো কিছুই শক্ত নর, ভাই; এটা সকলের
কাছেই স্পষ্ট যে, হোমার সথদে কলাশির এবং
ভানের দিক্ হইতে তুমি কিছু বলিতে অসমর্থ।
যদি শিলে তুমি পটু হইতে, তা হইলে সকল
কবিদের সম্বন্ধেই তুমি পটু হইতে; কাব্যকলা
একটা অবণ্ড জিনিস; নম কি ?

षा-है।।

নো— অন্ত কোন বিভা যদি কেই সম্পূৰ্ণ আয়ন্ত করে পাকেন, তবে সমস্ত বিভা সম্বাহ্নই কি একটা বিচার পদ্ধতি দাড়াবে না ? কেমন বল্ছি এ কথা, কেউ আমার কথা ওন্তে চাবে কি ? আবোন ?

আ—দোহাই দেবতার, আমি ত নিশ্চরই; গোমাদের পণ্ডিতদের কথা শোনতে আমার বড়ই ভাল- বৈত্য সভাই আনাকে পণ্ডিত বলুতে পাবৃত্ত);
কিন্তু পণ্ডিত তো ভোমরা, চারণ এবং নটেরা,এবং
বীবের কাব্য তোমরা গান কর সেই কবিরা;
আমি সভা ভিন্ন আর কিছু বলি না,—সাধারণ
ক্যৈকের পকে বেমন উচিত। তার পর, যে কথা
ভোমায় এখন জিজ্ঞালা করছিলাম, দেখ দেখি,
বা আমি বলেছি সেটা কত ক্ষুদ্র এবং সামান্য
বিষয় এবং বাহা যে কোন ব্যক্তির জানা উচিত;
অর্থাৎ যখন কেই কোন বিজ্ঞার সমন্তবী আরন্ত
করে; তখন সে বিজ্ঞার (ভাল মন্দের) বিচার
একই। এই সম্বন্ধে আর একটু চিম্বা করা যাক্।
চিত্রবিস্থা একটী অবণ্ড শিল্প ?

41-11

বো—শাহ্যা, (বর্তমানে এবং শহীতে) বহু চিত্রকর শাহ্নে এবং ছিলেন, ভাল এবং মন্দ ? শা—শবশাই।

শানি পর্যায় এমন কাউকে তুমি দেখেছ কি, যে

শারাওকন্ (Aglaophon) এর পুত্র পলিউর্যুচ্স্
(Polygnotus) সম্বন্ধ বিচারপট্ট—সে কোন্

ছবিটী ভাল এঁকেছে, কোন্টী মল এঁকেছে, তা

দেখাতে পারে—অবচ অন্য চিত্রকর্বের সম্বন্ধে
কিছুই বলিতে পারে না ? এবং যথন কেই অন্য
চিত্রকর্বের চিত্রপর্থ তাকে দেখার, তথন তার

চল্ম মুদ্রিত হ'রে আসে, মানা মুরে বায় ; এবং
কি বলিবে, কিছুই ঠিক পায়না ; অবচ, যথন
প্রিট্টাইসের—কেংবা চিত্রকর্বের মধ্যে অন্য

হারার সম্বন্ধে পে নিজেকে স্থবিজ্ঞ মনে করে,
ভারার—চিত্রসম্বন্ধে তাহাকে কোন মত প্রকাশ

করিতে হয়, তথন অমনি ভারার তথা দ্বে যায়,
এবং হঠাব সে একেবারে বিজ্ঞ হ'রে উঠে ?

নো-তবে ? ভান্ধর বিভায় এমন কাউকে জান, বে মেটিয়নের পুত্র ডেইডিলস্ কিংবা পেনোনিউসের পুত্র এপাইউস্ কিংবা সেমস্বাদী পিওডোরস্ অবং অভ কোন একজন ভান্ধর সম্বন্ধে বিচারপট্ট এবং ভার কোন্ মৃতিভিলি ভাল হ'য়েছে ভাহা বুঝাতে পারে, কিন্তু অভান্য ভান্ধরদের শিল্প সম্বন্ধ একেবারে হতবৃদ্ধি—সে সকলের নামে ভাহার চক্ষু বুঁলে আসে এবং কি বল্বে, বুঁলে পায় না ?

আ—না, দেবতার নামে শপথ করে বল্ছি, এমনটা কথনও ই,জে পাই নি।

সো—বেশ; তা হ'লে আমার মনে হ'ল্ডে, বাশীতে নয়,
কিংবা বীণাতে নয়, কিংবা বীণাসঙ্গীতেও নয়,
কিংবা চারণ-গীতিতেও নয়—ক্ত্রাপি তুমি এমন
কাউকে দেশনি যে শুরুই অলিউম্পদের ও
(Olympus) দোষ গুণই বিচার করিতে পারে,
কিংবা ধেমুরস্ ও (Thamyrus) এর কিংবা
আরফিউস্ (Orpheus) ও কিংবা ইপাকার চারণ
কবি ফিমিউপ্ এর দোষ গুণ বুঝে, অথচ এফেসস্
এর চারণ আ্যোন সম্বন্ধে বিচারে একেবারে অপট্
—সে ভাল গায় কি মন্দ গায়, কিছুই ঠিক কর্তে
পারে না ?

আ—দেশ গোকেটিস তোমার এই কথার বিরুদ্ধে আমি
কিছু বল্তে পারছি না। কিন্তু আমার নিজের
ভিতরে এটা আমি স্পষ্টই বুফ্ছি থে, হোমার,
আমি সকলের চেয়ে ভাল পাই, এবং কিছুতেই
আমার আটুকার না, এবং অত্যেও সকলেই বীকার
করে যে আমি গাই ভাল; অথচ অক্ত কবিদের
বেলার আমি সোটেই পটু নই। এখন বিচার
করে পেণ, এর মানে কি ?

গ্রীক্দের প্রাণ প্রসিদ্ধ ব্যক্তি। কবি ও গারক এবং বাদক।

(मा-बाद्धा, (मब्हि, व्याद्मान ; धदः व्यामात्र कारह अत मात्न सा मत्न इत, छाई (जामात्क (प्रशाह व्यश्रत दिख्या अहे त्य श्रीमात मचल्क जान গাইবার ভোমার শক্তি, এটা একটা শিল্প নয় -धकें। निव्तात गठ विद्या नयः, या स्त्राह চाष्ट्रियूम, अर्धी अवधी देवनी मंद्रिया (अमारक প্রেরিত করে-বেমনটা দৈই পাগরে রুপ্তে यात्क देखेतिशिष्टिम् इञ्चक (Magnet's) नात्म আতহিত করেছেন, এবং যাকে বেশার ভাগ লোকেই হিরাক্লিয়ার পাথর ব'লে আকে। সেই পাণর কেবল যে লোহার আংটী গুলি আকর্ষণ করিতে পারে এমন নয়, সেগুলিতে এমনই শক্তি শ্রুবারত করিয়া দেয় যাতে ভারা পাণ্ডটীর মতন কাল করতে পারে এবং অভ আংটা আক্থি করতে পারে—যাতে কখনও কখনও পরপার इटें जिस्मान लाहा अवः आः होत अकही मीर्च শিকল ঝুলান গিয়া থাকে। দে সকলেরই ভিতরে ( আকর্ষণের ) শক্তিটী ঐ এক পাথর হইতেই সঞ্চারিত হইয়া থাকে। সেইরূপ দলীত দর্বতীও (ग्राम Mousa = Muse) निष्म (कान कान बाजिक क त्वारता चाविष्टे + कतिया थात्क, এবং তাদের হারা আবিষ্ট আরও অন্যান্য ব্যক্তি ছারা একটা শিকলি নিৰ্দাত হ'য়ে থাকে। মহকাব্যের সমস্ত সংক্রিরাই শিক্ষ-শিক্ষা হারা मः।, भन्न एक्वाविष्ठे अवः एक्ट्यन्नि ( मृत्र, Katechomenoi = Engl. possessed ) &'the भिरे मकन छान जान कावा इहना करत्र शिराहिन, भीहि कार्यात भरकविदाख (उमनहे ;-- रियमन

পেৰীর ( Kybele ) নৃত্যপরাম্প কুবেণী পুরোহিতেরা (মৃল-Korybantes) প্রকৃতিছ পেকে মুভ্য করে না--গেইজন গীতিকাব্যের ভাল কবিরাও প্রকৃতিভাবেকে সেই সকল সুন্দর গীতি त्रहमा कारतम् ना. भत्र यथम (काम मन्नी क अवर ছাকে তারা প্রবেশ করেন, তখন তারা নেশার विष्णात अवः वाविहे शाकनः, त्यमन व्याविहे ए'द्र ডিয়োনাগুৰের উপাদিকারা নদী হইতে মধু ও कक (हें (न (क) (ल, खरह युष्ट द'(स क) भारत मा. ভেম্নট গ্ৰীভিকাবদেও চিত্ৰটী ও এট প্ৰকার করে बारक:- अमन्ति उता निष्ठिताई दान बारकन। कविता (लाभ द्य धारा (मज काट्य वर्ण शारकमः যে, স্ক্রীত স্থাপ্রীর উল্লেখিবশেষ এবং উপত্যকা হইতে নৰু গাহী উৎস সমূহ হইতে মঞ্চিকার মত-এবং তাদেরই মত উজ্জীয়মান হয়ে-তারা मकी अमृद मः शह करत थागारमंत्र व्यक्त व्यानग्रम कर्तन। এवः ( এकथा इट्टांबा ) किंके वरन ু থাকেন। কারণ, কবি একটা হান্ধা এবং পক্ষা এবং পবিত্র জিনিস এবং দেবাবিষ্ট হওয়ার আর্থে এবং অপ্রকৃতিত না হইবা-এবং মন্ট্রী তার आजुहारा ना इटेल-कांचा ब्रह्मा (म क्रिएड পারে না। এ অবস্থা প্রাপ্ত না ইইলে প্রত্যেকেই मकिशीन अवर रेपववाणी आत जारात मूच पारक (नरवाम ना। विविध विषय एय नाना कथा बर्ग थाक्त-नाना खुल्य कांगा बहना करत थाक्न - ज्या (शगन (शयात ध्रमास क'रत थाक-(शक् निष्मत भाराया नय, भत्र अवही देवन निष्मत भाशात्मा, त्कवन (महे देत्हे श्राह्मात खान करन করতে পারেন, যার দিকে সঙ্গীত সরস্থী উাকে প্রেরিত করেন ;--কেউ বা ডিথারাম্ব (Dithyramb) ছুন্দে, কেউবা প্রশক্তি গীভিন্ন (Encomia) ছুন্দের কেউ বা নট গীতির ( Hyporchema ) ছুম্মে

শুনে লাছে entheous = en (in) + Theos
(god). ইবা হইতে আর একটা শব্দ হর enthousia =
en + Theos + ousia (= English, enthusiasm).
বাংলা লাৰ 'দেশাবেশ।'

**दक्**षेवा यश कारवात ছम्म, आत रुड वा भाग्रायन इत्य । (य यिकी भारतन, मिहेतीहे छ्यू छान भारतम--वाको खनिए अवरहारत अभि। (कनमा এও छात्रा निष्मत नाहार्या करतन ना, अक्ठो देवच भक्तित माहारया करतन, रयदङ्क, यवि ইংা শিল্প আনের মত হইত, তবে কোনও একটা विषय मध्य छान कावा बहुमा कविट बानितन সকল গুলি সম্বন্ধেই ওঁরা ভাল পাংডেন। এই অভই বলুছি, দেবতা ওঁদের মনটাকে বাহের করে रमम अवः अमिनाक जात हारहत नुष्म ( मृत, Hyperetes=(স্বৃক্) রূপে ব্যবস্ত ক্রেন— उधु अ निगरक नम्र, छ तिमाचक। अवः रिमववागीत व्यवकाषिग्रक्ष जिमि (जममे करत शाकन; बाटि करत, जामता, याता अंतित कथा छनि छाता, ংশন বুঝ্তে পারি বে, ধারা এত মুল্যবান্ এত স্ব क्या रामन जांत्रा अ नकम वास्त्रिता निष्यता ना-- (क्न ना अँ (पत्र **किछ अञ्च न**श्र - किइ (प्रवड) স্বয়ং এ সকলের বক্তা এবং তিনি ইহাদের ভিতর मिया आभारमत गरम कथा वर्ता थाकन। এ বিষয়ে খাল্ফিডিয়ার (Chalcideus) ট্যানিখস্ (Tynnichas) \* अक्ती अकृष्टे अभाग। हिन কর্ষন্ত আর এমন কিছুই লেখেন নি'বার দরুণ लाटक डांटक गरन बाबड-किंड त्रहे भागती (यही नक कहें (भारत थाटक द्वांच इस नकन शास्त्र বেরা পেটী—সভা সভাই সেচী, ভার নিজের ক্পার, দলীত সরস্ভীর একটা আবিদ্যার। আমার मान वर कर अकारत (मवठा न्नेहे जारे मार्गामण क बुवाल्डिन (यन वायता भत्मह ना कहि, त्य. वे नक्न कुलत करता मध्यक्र नरद अतः मध्यक्त मृद्ध, किन्तु देवर धारा (मत्र छात्मत्र-चात्र, कृतिता द्वित छ। एत वाश्वाकात जिल्ल भार किछू भरदन,

इंस्ट नषरक विराग कि हुई जाना नाई।

বাঁদের কোন একটা কর্ক কানদের প্রভাকই আবিষ্ট হরে থাকেন। এইটুকু স্পষ্ট দেখাবার জন্মেই দেবতা নিক্টতম কবিটা বারা উৎক্টতম গান্টা গাইরোছলেন। না, ভোমার কাছে সভ্যবশ্ছি বলে মনে হয় না, আমেন ?

আ—হাঁ, শপথ করে বল্ছি, আমাই কাছে সত্যই বোধ হছে। ভোমার কথাগুলি, সোজেটিস্, আমার চিত্তকে স্পর্শ করছে এবং আমার মনে হছে ভাল কবিরা একটা দৈব শক্তির সাহায্যেই দেবভাদের মনোচাব প্রকাশ ক'রে পাকেন।

গো—আর, ভোমরা চারণেরাও কি কবিদের ব্যাখ্যাত।
নশুঃ

আ—এটাও সভাই বলছ।
সো—তা হ'লে তোমরা ব্যাধ্যাতার ব্যাধ্যাতা হ'লে ?
আ—অবগুই।

গো-সভা ক'রে ব'লো-কিছুই গোপন ক'রো না-আয়োন, তোমায় একটা কথা জিজাসা কর্ছি;--য়খন তুমি বেশ ভাল করে কাব্য গান কর এবং যাতে দর্শকদের + মন অভিভূত করে তোল,-ষেমন, ওডিউহাদের কথা যখন তিনি দর্লার ধারে লাফিয়ে পড়লেন এবং তার পদ্মীর (अभाकाञ्चीता उँ। कि हित्न (कत्न अर यथन তিনি তার বাণগুলি পায়ের কাছে ছুঁড়ে ফেল্লেন -- কিংবা এখিলিস যখন হেক্টরকে ভাড়া कत्रहरू, तम विषय-किश्वा এ(धृ। साथित कन्नन কথা কিংবা হেকাবির সম্বন্ধে কিংবা প্রায়ামের कथा-धरे नकन विवास वर्ग गांछ, छर्ग कि প্রকৃতিত থাক, না, আত্মহারা হ'য়ে যাও;—আর ভোমার মন্ট্রীও কি আবিষ্ট হ'লে বাদের সহজে খ্ৰন কুমি গাও পেই দেই বন্ধ বা ব্যক্তির সন্নিৰিত

চারণদের গালের গঙ্গে নৃত্যালিও থাকিত।

ু হয়ে পড়ে মা--কখনও বা ইথাকায়, কখনও বা টুয়ে, অথবা যেমন যেমন কাব্যে থাকে ?

আ।—সোক্রেটিস্, তোমার এই কথাটী আমাব খুব মনে
লাগছে। তোমায় কিছুই গোপন না করে বলছি।
বখন আমি কোন ছঃখের কাহিনী গাই, তখন
আমার চোখ হুটী জলে ভরে আসে; আর যখন
ভয়ন্তর কিংবা পাহসিক কিছু গাই, তখন ভরে
আমার রোম গুলি শিহরিয়; উঠে এবং হৃদয় কাপিয়া
উঠে।

সো-এখন তবে ? আয়োন, যে ব্যক্তি নানাবর্ণের
পোৰাকে এবং সোণার মুকুটে মভিত হ'য়েও, বলি
এবং উৎসবের মধ্যেও—এ সকলের কিছুতেই
লক্ষিত না হ'য়েও—বিশ হাজার মিএভাবাপর
লোকের মাঝ খানে—কেউ তার কোন কিছু
কৈছে না নিলেও কিংবা কোনরূপে তার প্রতি
অভায় না কর্লেও—কেঁদে আকুল হয় কিংবা
ভয়ে বিহ্বল হয়, সেই প্রকার ব্যক্তিকে কি
আমরা প্রকৃতিস্থ বল্ব ?

আ—না, গোকেটিস্, সত্য বলিতে গেলে নিশ্চয়ই নয়।
গো—তুমি জান কি, যে, দর্শকদের মধ্যে অনেককেও
ভোমরা এই প্রকারই করে তোল ?

শা- শ্বশাই জানি। মঞ্চের উপর থেকে আমি
শর্কাই, লক্ষ্য করে দেখি, যথদ যথন যেমন আমি
বিলি, তেমনই সঙ্গে সঙ্গে কথনও বা ইহঁারা কাদছে,
কথনও বা দৃঢ় চিত দেখাছে, কথনও বা আশ্চর্য্যাবিত
হচ্ছে। আমাকে বিশেব করে এদের প্রতি দৃষ্টি
রাণ্তে হয়। কেননা, যদি আমি ইহাদিগকে
কাদাতে পারি, তবে পুরস্কার লাভ করে স্বয়ং
হাসিতে পাইব; আর যদি এদিগকে হাসাইয়:
ভূলি, ভবে পুরস্কারটী হারাইয়া নিজে কাদিব।

নো-এখন ৰুক্তে পাল্ছ, আমি যে সকল আংটার কৰা
বিলক্ষিণাম-নারা ছেলাক্লিয়ার পাধর (চুম্বক)

হ'তে পরস্পর (আকর্ষণী) শক্তি প্রহণ করে शांक,-जांमित नर्वात्मवि शास्त्र वह पर्नक ? चात्र, मशुरखी चारहीही हात्रन अवर नहे जूमि 🖟 चाव श्रथमी कवि यग्रः। चाव त्मवला देवात्मव ভিতর দিয়া মামুবের মনকে যথন বেদিকে খুসী होनिया नन, अवः अक श्रेट चार्का मिकिनी সঞ্চারিত করে দেন। আর যেখন চুম্বক পার্থরের तिनात्र, त्यमन्हे जवात्मल, नन्नीक नत्रवात्र পार्चरतन रहेट ज लालायमान अनुती यद्भण नर्छक, নৃত্য শিক্ষক,নৃত্যশিক্ষকের সংগ্রেক প্রভৃতি স্**বলকে** লইয়া চতুদিকে বিস্তৃত এক দীর্ঘ পুঝল তৈরি हम। करित्तत अक अक अन आवाद मनीएक এक এक वृधि दहेट नश्यान शास्त्र- जात भारम, এক এक मूर्ति बाता साविष्ठे द्राप्त । आत अगिष म्हा (य, मुकालित (महे श्रथम व्यक्तीप्रक अहे करिक्तित्रप्र श्रावात এक এक सन हरेए पाड भष्यान थारक-- टॅंशाप्त्र अक अक वन बाता अक একজন আবিষ্ট থাকে—কেউ বা অর্ফিউস (Orpheus) হইতে, কেউ বা মৌশারন (Mousaios) হইতে লম্মান—আর বেশীর ভাগই হোমার কর্তৃক আবিষ্ট এবং অভিভূত। इशामित्र मार्था जूमिल এकक्न, चार्यान, धवर जूमि श्मारतत जारव जाविष्ठे ; अवः यथम क्व অন্ত কোন কবির গান গায়, তখন তোমার খুষ चारा जवर कि वन त कि इहे खें क शांख ना ह चात यथन (कृष्ट देशात शात शात, ज्यन अमनि তোমার জাগরণ আংদ এবং চিত্ত ভোষার দেচে উঠে এবং কি গাইতে হবে সবই ঠিক পাও। হোমার সম্বন্ধে তুমি যা বল, ভাহা শিল্পের সাহায্যে वनना, छात्नत मादारगुष सम्र, किंब देवनी मक्टिक व्यवः (प्रवादवरणः, (यमन कृदवंशी (प्रवीत छेनामरकता (य (प्रवर्ण पांता भाविष्टे -(गृहे (प्रवर्णात मन्त्रकी

দীসক **বংগুর মত** সে সমুদের অতল তলে তলাইর। গেল*ে* 

— এই সকল যা হে'মার বল্ছেন, তা ঠিক বলছেন কিনী, বা (কোন) বিদ্যার বিচাঠ্য বলব— ধীবর বিদ্যার না ভারণ বিদ্যার ?

च्या--- এড, সোকেটিস, প্পটই বোঝা যাছে, যে--- धीनद्र विष्णा।

গো-ধর এখন, তুমিই ঘেন প্রর করছ আর আমায় किलामा कत्रध ;- "এ পোক্রেটিস. পৰ্যাস্থ, হোমাণেতে এই দকল শিলের প্রতোক্তীতে या या काना श्रासावन, जाहे जूमि (मर्थ जाम्ह; धर्मन क्षत्र, बकरात भागात्र नात क'त्त्र (मर्था अ ্রেখি, ভবিশ্ববক্তা এবং তার শিল্পের বিষয় (श्यांत्र वा वर्णाइन -(महे त्रकल विवय--(य त्रकल বিৰয় বিচার করতে ভবিশ্বৰক্তাকে যোগ্য হ'তে र्भ धादः वान्ट रम, (म छान छान द'न कि भना रंग।" (এই यमि जांत्र बिळामा कर, जा र'ला) (मन, कठ महाझ अतः व्यत्रवंशात व्यामि (छामाप्र अवाव निष्छ। (এ विषय दशमात) **षरनक वातरे** अपूर्णियारक वरनहान—स्थम গেই সকল কৰা যা, মেগাম্পাদ ( Melampus ) अत वरमपत छनिश्चव का विख्कु स्मनम् ( Theoclymenus ) পরিণয়ার্থাদিগকে শক্ষা ক'রে বল্ডেন-

"হে হতভাগাগণ! তোমাদের কি হইরাছে?
কিশার অন্ধকার যেন তোমাদের মন্তক, তোমাদের মুখ
এবং দুর্মন্ত নিয়াল চাঁকিয়া রাখিয়াছে; তোমাদের
আর্ত্তনাল চারিদিক বিদার্শ করিতেছে; গগুদেশ
আক্রজনো তাশিয়া যাইতেছে। মরকের (Erebus)
আর্জনেয় নীচে ধারমান প্রেত্যুর্তিত (গৃহের) বারদেশ
ছাইয়া ফেলিয়াছে; প্রাপ্রণত তেমনই পূর্ব; আকাশের
ক্রী লোপ পাইরাছে এবং এক অমজন্য কুরেলিকা
চারিদিকে ছটিরা চলিয়াছে।"

ইলিয়ডেও এই প্রকার অনেক পঙ্জি আছে,— মধা, প্রাচীরের নিয়ে যুদ্ধের বর্ণনায়। সেধানে তিনি বল্ছেন;—

"ধৰন তারা পরিধা পার হইতে অতাস্ত ব্রে হইয়া উঠিয়াছিল, তখন ভাষাদের নিকট একটা শাকুনিক লক্ষণ উপায়ত হইল; উর্দ্ধে উড্ডীয়মান একটা ঈগল পানী লোক গুলিকে বামলিকে সরাইয়া ভিরু রাখিয়া এবং ন্ধে করিয়া একটা ভীষণ রক্তবর্ণ নাগ ( Drakon= dragon) वहम क तिया ((भर्म) तिम ); ((भर्के नर्णति) ज्यमा औषित.- ज्यमा दीलाहें एकिन ; धवर ज्यमा যুদ্ধ হইতে বিরও হয় নাই। এবং পশ্চাংগিকে বাঁকিয়া যে তাথকে গণায় ধরিয়া বুকের নীচে করিয়া নিয়া ষ্ট্তেছিল, ভারাকে ( গেই ঈগল পাণীকে ) আখাত কারতেঞ্জিল; যন্ত্রায় অভিভূত হইয়া পাথীও তাহাকে माहीत कित्व छाछिया किन जवर त्वरे अन्छात मावथात ছুড়িয়া কোলল; আর স্বয়ং শব্দ করিতে করিতে হাওয়ার নি:খাদে উভিয়া গেল।" আমি বলব, এইওলি এবং धारे थेकारतत छेकि धानरे निमिड्झामत किया कता উচিত এবং বিচার কর। উচিত।

था- এটা তুমি ঠিক বলেছ, সোক্রেটিন্।

সো-ত্মিও, আয়োন, এ মব ঠিকই বলেছ। এখন
একবার আমার দিকে মন দেও দেখি; আমি
যেমন তোমার ক্রিড ওড়াসিয়া ইইতে এবং
ইলিয়ড হইতে বুঁজে বুঁজে বুঁজে গেই সব পঙ্জি বের
করেছি, বে গুলি নি মন্তঞ্জের, যে গুলি চিকিৎসকের, এবং যে গুলি ধীবরের বিভাবিষয়ক;
তুমিও তেমনই, হে আয়োন, যেহেতুত্মি আমার
চেয়ে হোমারের উজি সমুহে বেশী অভিজ্ঞান
আমাকে সেই সব পঙ্জিগুলি বেছে দাও দেখি
যে গুলি চারণদের সক্ষে এবং চারণবিদ্যা সমুদ্ধে
-- এবং যে গুলি অজ্ঞের চেয়ে চারণদেরই বিশেষ
করে জানবার এবং বুঝ বার কথা।

স্থা—স্থামি এই বলব, সোজেটিশ্, সমস্ত উভিভালিই এই প্রকারের।

শো—না, আয়োন, সকল গুলিকেই তুমি এরপ বলতে
পার না: কিংবা তুমি কি এমনই সব ভূলে
গোলে ? বাস্তবিক ই, এমন করে বে সব কথ: ভূলে
যায়, তার পক্ষে চারণ হওয়া উচিত নয়।

चा-कि अमन जुल (जनाम चामि १

লো-ভাষার কি মনে নাই বে চারণ বিয়াকে তুমি রথচালন বিদ্যা হ'তে পৃথক্ বলেছ ?

আ-মনে আছে।

সো-পৃথক ্বলে ভাবের জ্ঞাতন্য বিষয়ও পৃথক্-- একপা কি তুমি স্থাকার কর নাই ?

षा-- है। ।

বো-তা হ'লে তোমার কথা মতই চারণ এবং চারণ-বিদ্যা সকল বিষয়ই জানুবে না।

আ—কিন্তু, সোক্রেটিন, বোধ হয় এই রকম বিবয় ছাড়া।

সো—'এই রকম বিষয়' বল্তে তুমি বোধ হয় বুঝাছে,
আন্তান্ত বিদ্যার জ্ঞাতব্য বিষয় ছাড়া; (চারণ
বিদ্যা) যদি সকল বিষয় না জানবে তবে উহা
কি জান্বে ?

আ— আমার মনে হয়, উহা জানবে, পুরুষের কি বলা উচিত, আর জীলোকেরই বা কি বলা উচিত— কি রকম কথা জীজদাসের বলা উচিত আর কি রকম বলা উচিত স্বাধীন লোকের—কি রক্ম কথা বা শাসিতের উাধুক্ত আর কি রক্ম বা শাসকের বোগ্য।

শো-তবে কি তুমি বল্তে চাও যে, সমুদ্রে তুফানে অ'কল নৌকার চালকের কি করা উচিত, ১৮ চারণ-কবি নাবিকের চেয়ে ভাগ গান্বে ?

षा--ना, जहां नानिक इ जान जान ता

সো-কিন্তু পীড়িত বাজির চালকের কি বলা উচিত, ভা চিকিৎসকের চেগ্রেডিয়ে চার্যুক্তিই খাল জান্ত্র গ था-ना, ७। नम् ।

গো—আর, তুমি বল্ছ না, ক্রীতদাদের কি বলা উচিত, ভা, চারণ কবি ভান্বে ?

चा-रा ।

সো-জীতদাস যদি গরুর রাধাল হয়, তা হ'লে কিও গরুকে ঠাও। করবার জলে তার কি বলা উচিত-তা চারণ কবি জান্বে, কিছু রাধাল জান্বে না ?

वा-ना, छ। नग्र।

নো—আর, হতা কাটে যে স্নীলোক, পশম নিয়া কাঞ্ করা দয়দ্ধে তার কি বগা উচিত, তা ?

चा-ना, ठाउ नग्र।

সো— সৈক্তবিগকে উপদেশ দিবার সময় সেমাণভিকে
কি বল্ডে হয়, সেটা অবশ্যই চারণ কবি
কান্বে ?

আ—হাঁ, এ গুলি চারণ কবি জান্বে বই কি ?
নো—ভার অর্থ ? চারণ বিদ্যা তবে সেনাপতি বিদ্যা ?
আ—সেনাপতির কি বলা উচিত, তা আমি নিশ্চমই
জান্ব।

সো-তবে হয় ত সেনাপতির সম্বন্ধ তোমার কিছু কিছু

জানা আছে। আর, যদি তোমার অন্ধারোহণ

সম্বন্ধও জান থাকিয়া পাকে এবং দলে বাণাবাদন সম্বন্ধেও কিছু জান—তবে, ম্যোড়াকে
কথন ভাল চালানো হইল এবং কথন মন্দ, তা ও

তুমি বুক্রে। কিন্তু যদি আমি জিলাসা করি ;—

"আয়োন,তুমি কোন বিদ্যা বলে বুন্ত, ম্যোড়াকে
ভাল চালানো হ'ল কি মুন্দ চালানো হ'ল,—হে

বিদ্যার বলে তুমি ক্যানাদক, ভাইতে না, বে

হ'লে তুমি আমার কি উত্তর দিবে ?

আ — 'যে বিলার বলে অধ্চালক' — এই আমি বশ্ব।
নো— আর, যদি তুনি উত্তম বীণাবাদকদের সম্বন্ধে বিচার
করতে, ভাষ'লে এটা কি তুমি স্থানার কর্ব মা

ৰে, দে বিচার ভূমি সেই বিদারে বলে করছ, বাতে
, করে ভূমি বীণানাদক— কিন্তু যে বিভার বলে ভূমি
অখচালক, ভার গুণে নয় ?

#### ना-है।।

নো— নৈও পরিচালন সম্বন্ধে যে তুমি কিছু কিছু জান, গেটা কি যে বিদ্যার বলে তুম সেনাণতিত সম্বন্ধে জ্ঞান লাভ করেছ তার ফলে, না বাতে তুমি ভাল চারণ হ'য়েছ ভার ফলে ?

**জা—আ**মার ভ এ ছয়ের মধ্যে কোন তাফাৎ বোধ **হচ্ছে** না।

গো—বে কি ? কোন তাফাৎ নাই বল্ছ ? চারণ বিদ্যা

 আর সৈম্ভ চালন বিদ্যাকে একই মনে করছ, ন।

 ছই ?

আ—আমার কাছে ত একই বোধ হয়।
সো—তবে, বে ভাল চারণ, সে ভাল সেনাপতিও হবে ?
আ—নিশ্চরই, সোক্রেটিশু।

নো—খার, যে ভাল গৈন্য পরিচালক, সে ভাল চারণও হবে ?

শা—না, এইটা খামি বীকার করি না। নো—কিন্তু এটা ভোমার মনে হয় যে, যে ভাল চারণ, বৈ ভাল দেনাপতিও বটে ?

चा-निकार ।

নো—তুমি কি গ্রীক্দের মধ্যে সর্বভেষ্ঠ চারণ নও ? আ—এক শ' বার, সোকেটিস।

নো—তবে, মায়োন, তুমি এীক্দের বর্জভেষ্ঠ দেনাপতিও বট ?

শা- ঠিক কোনা, গোকেটিদ্, আমি তাই; এবং এ বিজ্ঞা আমি কোমার থেকে শিখেছি।

নো—দোহাই দেব গাদের, পে কেমন তবে, আয়োন ?
তুমি সেনাপতি হিসাবে এবং চারণ কবি হিসাবে
তুরকমেই গ্রীক্দের মধ্যে সর্কোৎকট হ'রেও
ভাবের,কাছে কেবল গান করে করেই বেড়াও—

কথনও দেনাপতিত্ব কর না ? অথবা, ভোমার কি মনে হয়, সোণার মুক্টে মণ্ডিত চারণ কবির প্রয়োজন গ্রাক্দের বেশী, সেনাপতির কোন প্রয়োজন নাই ?

আ—আমাদের দেশ (Ephesus) ভোমাদের দেশ

থারা শাসিত এবং সৈতের কর্তাও ভোমরাই,
কাজেই আমার দেশে পেনাপতির কোন প্রয়োজন
নাই; আর, ভোমাদের দেশ অথবা স্পাটা ত আর
আমাকে পেনাপতি মনোনীত কর্বে না, তোমরা
মনে কর, ভোমাদের নিজেদেরই যথেষ্ট সেনাপতি
রয়েছে।

সো—আছা, ভাই আয়োন, তুমি কুলিকস (Kyzikos)

— এই অপোনোডরস্ ( Apollodorus ) কে
কাম প

चा-(म चारात (क ?

त्या-यातक वित्मभी द'त्व अत्यन्नवातीता व्यानकवात সেমাপতি নির্নাচন করেছিল। আর, এণ্ডুস (Andros) বাদী ফানোডেনিদ (Phanosthenes) এবং ক্লানোনাই (Klazomenae) বাদী হেরাক্লিভিদ্ ( Heraklides ) কে চেন ? विष्मि इ'(मुख यथन अँदा ष्मचाए भादानन य उाता नवारनत सागा, ज्यन वह आयात নগর দেনাপভিত্তে এবং व्यथान काटन जैमिशक वद्रण कर्द्राह्न; नित्र যোগ্য বলে প্রতিপন্ন হ'বেও ইকেদদের चार्यानरक कथनं रानाभणि कहरत मा अरर দ্যান দেখাবে না, দে কেমন ? আর ভোমতা हेरफ्मनवामीया कि लाइम् अल्प वामाह हित्त न। ? जात है रकत्रभ क जल दकान नहत र'ए दीनल नरह ? जामन कथा कि, जान, यनि जूबि ग्लान्त्राहे वन (य. निद्ध अवर विकास वरनहे তুমি হোমারের স্বতি করতে সমর্থ, তা হ'লে তুমি



শ্বিচার কর্ছ; হোষার সম্বন্ধে তৃষি অনেক ভাল ভাল কথা জান এবং বে গুলি আমায় শোনাবে, এক্লপ প্রতিজ্ঞা করে অবশেষে তুমি আমায় কাঁকি দিলে এবং অনেক ভোমার বলবার वाकी इटेन; (कन ना,कि (य (मटे नव विश्व ৰাতে তুমি এত পটু, পূৰ্ব হ'তেই আমার শত **অহুরোধ দথেও দেওলি ত তুমি আমা**য় বলতে ठाक है ना,-- वदर, मठा मठा है श्राविष्ठेम (Proteus) धार मञ जूमि छेलात नीति शास्त्र तकाम ক্লপ পরিবর্ত্তন কর্ছ, এবং অবশেষে সেনা ভি-काल (मधा मिर्य आगात राज हाए। र'ल ; (रन, शामात मध्य পश्चित्र (य कृमि कठ भंहे, শেইটাই তুমি দেখাতে চাও না। এখন যেমন ভূমি বল্ছিলে, যদি সভা সভাই হোমার সম্বন্ধে ভোষার জ্ঞান একটা দিল্ল হয় এবং আমাকে সে শিক্স দেখাতে প্ৰতিশ্ৰত হ'য়েও যদি তুমি আমায় काँकि (प0, जा द'ल जूमि अग्राप्त कव्ह ;-- चाद, ষদি তুমি কোন শিল্প না হও, বরং—:যমন ं আমি তোমার সম্বন্ধে বলছি:-যদি কিছুই না **(करम (दामात्र कर्जुक अक्टा देवर आर्यरम** আবিষ্ট হ'রে দেই কবি সম্বন্ধে এত স্ব স্থলর গাৰা বলে পাক,—ভা হ'লে আর ভূমি কোন অক্তার করছ না। এখন বেছে নাও কোন্টা ভূমি চাও--আমাদের বারা অপরাধী সাব্যস্ত হ'তে मा (प्रवाविष्ठे नत्न कपिछ ६'८छ।

আ-ভাকাৎটা যে অনেক, সোকেটিগ; দেবাবিষ্ট মনে হওয়া থে চের বেশী ভাল।

নো— তা হ'লে, আয়োন, আমাদের কাছ থেকে ভোষার ভাগো দেই ভালটীই জুট্বে—হোমারের দীতিকার হপে ভোষাকে দেবাবিটই আমরা মনে অনুব্,ুশিল্পী নহে।

निष्ठित्मनव्य खडीवार्ग।

### অবরোধ।

(Erckmann Chatrian निषिত-

'Le Blocus' নামক আগ্যায়িকার বন্ধায়ুবাদ)

#### পঞ্চম অধ্যায় ।

পরদিন তলব সত মেয়ার শাহেবের আপিলে হাজির राउ रम । मरातत यठ मन (इं। इता व्यामात्मत चित्र ानम पिटि चात्रेख कर्त्ता अति।म (ननाब:नाह्न কাছে মুমুত খরটা তথ্যও তৈয়ার হয়নি তাই আমরা द्योप पिछम्राद त्राष्टा पिर्म वाक्रन यद्वत कार्यंत्र कार्ष्ट करणब्बत वड़ व्याणिनात्र कूठ काखत्राब्द करखंदनलाय। ছেলেদের আগেই ছুটি দেওয়া হয়েছিল তাই आयगांठी सीम পाउम्र। (गमः। अक्वात भाग करत (मर्थ व्यञ्ज् উঠানটা শুধু সহরের গোকে ভর্ত্তি, সকলেরই শালা পোৰাক-পরনে পাঞ্চামা, কোট, ফতুয়া আর মাথায় টুপি। উर्फि টুর্ফি কাহারও নাই। সকলেই ভাল মাসুবের মত যত সব টিনওয়ালা, ঝাডুলার আর সইদদের ত্রুম তামিল কর্ছেন। এরা হয়েছেন এখন তাবেদার আর তারা হয়েছে সব উপর ওয়ালা। এখন আর তারা বড় কেও কেটা নয়, সকলেই হোমড়া চোমড়া लाक-(कडे रायद मार्किन, (कडे क्यानात, (कडे द्यानिनमात, त्कडेवा श्रुवीमात्र। श्रुकवात वृत्य (मथ यष्ठ স্ব নিরীহ ভালমামুষ লোক কোথাও চারজন কে:বাও हत्रक्रम, (कापांच वा प्रमुख्य ''এकडूरें" ''এकडूरें" कर्द তালে তালে পা ফেলে চলেছে। এক একবার ক্রম राष्ट्र "टेश्रता है या "औष निकान्त एप नार्के में व्यात कर्ताता (पष्ट (पष्टाम वित्रकृष्टि व दांख्रिक बान्दिन। यात्व यात्व धन बुक् वाद नाम ক্রুর টেকে নেহাৎ ক্লুক্ত তান্ডিলের ভাবে বল হিছে

''আরে মোয়াব। বাড়টা সোজা করে থাক্ তনছিস্।'' साक्षे। वारित मा करत मांज़ार्छ भातना ? मांज़ाख ৰাইর বুন্দি হয়ে। 'ভিসিয়ার মোয়াস্! ভোল্বন্দ্ ্রাফ্রেই হাড় হাণাতে বুড়ো কোনও কাজের লায়েক নয়। অ বয়পে এমনতর জানোয়ারের মত বুদ্ধি দেখেছো ভোমরা" আরে বুড়ো কি কর্তে হবে একবার তাকিয়ে **एन्य्— ७१न छिन्— बार्ट्स (शर्मा ! এটাও পারছ না— মরন** জার কি!" বল্বো কি ফ্রিজ আমাদের জ্তা সেলাই জ্বাস ওয়ালা এম্নি করে আমাকে থুব হ কথা শুনিধে দিলে। কাপ্তান ভিয়ের যদি না পাক্ত ভাহলে হয়তো হুখা নেরেই বদেছিল আর কি ? অরে আর সব ব্যাটারাও তাদের পুরানো মুক্তির আর অরিদদারদের সঙ্গে এই बक्न रायदात चाउड करत मिल। (यन এই रायहाह **চিরকাল থাক্**বে তারা চিরকাল ধরে সার্জেন গিরি করবেন আর আমরা তাঁদের কারবার দালি করতে ৰাক্ৰো। বেটাদের পেকোমি দেখে এমন রাগ হয়েছিল एक जो श्रकात्मे जुल यानात नत्र। तम याहे (शाक् ত্বনকার মত কর্তা তো তারাই হলো।

আমরা রাগ করি আরু নাই করি তাদের তো তাতে ভারি লোকসান। আমি ছেলেদের গাথে কখনো হাত সিই না। মনে পড়ে কেবল একবার সাফেলের কান মলে কিয়াছিলাম ভাও ওই ব্যাটা, মন্বর্বের জন্তা। পাড়ার এক পাল ছেলেরা রেঁদের রাভার পারে দেওয়ালের উপর উঠে আমাদের দেখুছিল আর ইাদি ভামাসা করে ছেংচি কাটছিল। দেখি সাফেন ব্যাটাও তাদের মধ্যে বসে রয়েছে হাওছানি দিয়ে ভাকুতেই সে ভখনি লৈনে এলা। ক্র কাওয়াল হয়ে গেলে পর নিউনিসিলাল আপিসের সামনে বখন আমাদের দল ভেলে বাড়ী আওয়ার হক্ম হল ভখন ছেলেট। কাছে আস্তেই আমার জ্য়ানক রাগ হয়ে উঠ্লো আমি ভার কান হটো আজা

वाशक प्रत्य नित्र प्रमक्षि प्रित्र ठांछे। काषात्र বাপের লব্জা ঢেকে নেবে না ভার উন্টা।" সার পেয়ে ত সে থুব কাদ্তে আরম্ভ কর্লে চোধদিয়ে টশ্টশ্ করে জল পড়তে লাগ্লো। বাড়ী পর্যান্ত সমস্ত রাজা কাৰ্তে কাৰ্তে চল্লো। আমি মুধ ধানা রাভা করে व्याभ कि व्यात (हर्रिको (शहरन र्शहरन कें। एक कें। एक व्याস्ट एए व गर्ल उर्थन पत्रवात शाष्ट्राप्त तरम अन, व्याभारक किञ्जाना क्रव्य राश्राह कि ? व्याम द्वारंतर कात्रवि। (अहम वरम छेवरत छेर्छ (वनाय। छान मार्म । সাফেনকে আরও গালাগালি মন্দ কর্তে লাগ্লো। আর তাকে স্বাধার কাছে ক্ষ্মা চাইবার জন্ম পার্টিয়ে দিলে। আমি যে পুর্বি হয়ে তথন ওখনই তাকে মাফ্ কর্লাম তা আর বল্টের হবে না। রোজ রোজ এই রকম করে কুচ কাওয়াজ কর্তে যেতে হবে মনে করে ভাব্তে नाज्नाम । यनि भान होने भरमञ वाड़ी थाना आद কোথাও উঠিয়ে নিয়ে যাওয়া খেত তা হলে সব ছেড়ে ছুড়ে पिश्व रियान (थर्क मर्फ श्रुपात वावश कत्वाम। এই পাজী বেটাদের হকুম মেনে চল্তে হবে—এর চেছে আর বেশী হৃদিশা কি হতে পারে ? যারা সামাঞ কণের জন্ত ক্ষতা পেয়ে নিজেদের ওজন বুরে চল্তে জানে না গকলেরই এক এক বার সুযোগ আস্বে একথা-টাও যাদের বুদ্ধিতে আসে না দেই রক্ম ছোটলোক (विहादमत कुँ। दिनाती कता कि कम आर्थित काम! এ সম্বন্ধে বল্তে গেলে আমার কথার আর শেব হবে ना--वतः या वन्हिनाम छाई वर्त याहै। त्रिनि छत्रवान किन्न यामादक भाखना दिनात दिन वावद्वाहोध करत (त्रत्थिष्ट्रिन । व्यामि (हेनितन तम्रत्य वरन चरतन रकारन বলুক টোটাগুলো নামিয়ে রাখতে না রাখ্তেই সর্লে ই।স্তে হাস্তে আগার হাতে একথানা চিটি দিয়ে বল্লে अहेरहे अकवाक्रणाड़ (एथ। तांग अथ्वृति भाष् यादा।" व्यामि हिटियान शूरमहे (मय्ताम "(अर्काना" (परक व्यान्ताचा गरावन चवत शाहित्त्राच वं व्यामात वच वाद

**लिए**ल यह दन त्रख्या कतिरम्न हिरम्रह्म । এठकर्ण व्यामात ভাল করে নিখাস পড়তে লাগ্ল। আমি বল্লাম বাঁচা रंगन चात्र छावयात कात्रन मारे ; ठालारन नार्छात्रानरमत गांडोर व मने त्रा कति व निराह । चात्र दशा তিনেকের মধেই এদে পৌছবে, এখন আগবুর্গ আর শার ক্রকএর দিককার আর কোনও নৃতন ধবর নাই। **"कर्णरंकर्ता ध्रे नर्ल मिन्र्इ तर्ह किन्नु जाता आंत्र त**र्ख मंड़ा कड़ा कड़ाइ ना (मर्थ छ। शिश कश्रे कथा व यावा कानंत भागत (वैटि भाग। प्राथा आयार्गत विकी मिकी श्वितिश तक यहे दर्द अथन। अमन मांख आज महरक भाउता यारव ना। वल दै। मृत्य नागनाय। आमि প্রকৃতিত্ব হরেছি দেখে সর্লে আমার আরাম চেয়ারের কাছে পরে এল আরে আমার হাতে বড় বড় হুইখান हिकिट नागान अक्यान हिंडि पिरा वन्त वहा की कि अक-বার দেখে ৰলভো। আমি দেখন। মাত্রই বুকতে পারলাম व्यागात्रहे इहे (ছलেत हाट्डित लिया। मार्किन तिमर्शिक द्राष्ट्रारमन हे देखन वह जाए भितन निर्यट प्रायह जागाव मन जानत्म छत्त छेठ्न जात जामि कथा वार्छा ना करा मात रात (कर्न छश्वात्तत्र खन शान कर्छ नाग्नाम। अहे सुनःवारम्य जानत्म अठहे व्यक्ति हरत्र পড़िहिनाम रंश मूच किया कथा नात रुष्टिन ना। एक च जगरानत कि অপার মহিমা। তার জ্ঞান বুদ্ধির কি অস্ত আছে। त्याजा हुणात्म जात कारह थाजित नारे त्राम प्लोजा-্লেও তার কাছে পাতির নাই। যে তথু তারই উপর নির্ত্তর করে তাঁকেই তিনি দয়া দেখান।" िडिए मार्किन (मर्मत थून धनश्मा करत मिर्थिछ। পড়ুতে পড়তে আমার মনে হতে লাগ্ল ব্যবসায়ী लिटिकंड लेक्न अपन कांत्रणा चांत्र नाहे, এ मिटनंत्र नंतर्गहे चारिन नकरगरे छत्नाशी। अवारन नी चाहि नत-चौदिनेत अकरतिया वरमावल मा चार् हे हो स करद कृत्म। अधीमकात लाटकरमत नड़ाई कत्रव बरन श्रंड राना हत्र मा। छात्रा माखित भरेबी हम वात मण्डे निका रभरत भारक।

अर्मान यात्र त्यमन वृद्धि थाविवात मक्ति यात्र (येमन मरनत জোর আর বরচ বাঁচানর চেষ্টা সে তেমনি উন্নতি কর্তে পারে। যার যেমন যোগ্যতা গে তেমনি হয়ে থাকে কারও কোনও অস্থবিধা নাই কোনও উল্টা প্রিক্তি সকলেই আপন আপন স্থান অধিকার করে রীয়েই যদি কোনও ভক্তর বিধয়ের মিমাংসা কর্তে হয়, সকলে জুটে পাঁচ জনের সহজ বুদ্ধিতে য। ভাল বলে স্থির হয় তাহাই জায় বলে মেনে নেয় ! যথন সকলেই বাজনা ট্যাক্স দিতে হয় তবন সকলেই আপন আপন মতান্ত জানাতে পারবেনা এই বা কেমন কথা। প্রথম যে त्रय विक्रि अपिहित अ जावर भाषा अक्यांना। देशकिन আর ফ্রোসেল তার পরে স্থামাকে জানিয়েছিল বে তারা এক বছরের মধ্যে যা কিছু দঞ্য করতে পেরেছে তাহাত আর তাদের মাথায় মোট করে যুরতে হয় না। গোটা তিনেক খচ্চর কিনেছে সেই গুলোর পিঠে মাল বোঝাই पिरम निरम यात्र। निर्थिष्ट य তाता नीखहे निष्डे**हेम्** क्लात जानवानित काट्य क्रेकिन भाराएक छेन्द्र विनाठि मालत चाएठ थून्ति। ति ति नि ने ने ने ने ने ने ধুব মেলে তাই তার। দেখানে ইউরোপের তৈরী সব মাল খোগান দিয়ে তার বদলে চামড়া নেওয়ার বলোবত কর্বে। তাদের ব্যবসা পত্র বেশ ভালই চল্ছে। (मबानकात्र (लाटकदां ७ जात्मत्र (तम बाजित करत्र) ক্রোদেশ যথন বছর তিন্ট। নিয়ে গল্ভে বার হয় তথন इेश्किश (माकारन थाका आवात देशकारक वसन পালামত বাইরে বেরুতে হয় তথন তার ভাই বাড়ীতে খেকে লোকান পাট চালায়। আমরা যে কি বিপক্তে পড়েছি তা তারা জানে। আর আমাদের মত বাপ মা পেয়েছিল বলে ভগবানকে ধ্রুবাদ দেয়। তাদের ইক্ষা (य जामदा जाएत कार्ष्ट्र याहै। मुख्येष्ठ (य त्रकम रहा দাড়িয়েছে বিশেষ করে মলবর্ণ বেটার সেই ইত্রোমির কৰা মনে পড়লে ভাবি ও পাড়ে গিয়ে পোঁছাবার উপায় পাকলে আমিও নিখাস ফেলে বাঁচতাম। তা এরকৰ

अववन ल्याल मनहा वह कम आहा दम ना। छाई অখন এত হংখ কটের মধ্যেও, ফিসারের শক্তার কথা वास राप्त वासि छाटक छेटकम करत सरन सन्हे वन्छ <u>লাগমার "</u>আমার হক্কে তুই বেটা গাধা বইত নয়। মারই না হয় কতি কর্লি আমার ছেলেদের আর কি কর্বি ? বেটার ভ ভারি মূরদ বেটা মেয়ার ্রন্তাপিসের কেরাণী। আমার আর কি १ अक्रवाद मण्डे। विकि चात्रख कत्राठ भात्रण द्य। ক্রবারে মুখ্য ভিন খ্যু লাভ করে বস্বো! চাঁদ্ণীতে ভোর গোকানের পাশেই সাফেনকে বসিয়ে দেব আর ভোর দোকানে যত ধদের চুক্তে যাবে সে ভাদের देशांबा करते एएक ब्लाटन। जात्मत्र एकएए ना मिरम নে বরং কেনা দামেই জিনিস বেচ্বে আর ভুই বেটা स्या करन भूरक भवति । '(तभी दः व हरन (यमन तार्व ৰণ খাদে বেশী আনন্দেও তেমনি এদে থাকে। এই স্ব কৰা ভাবতে ভাবতে আমারও চোৰে জল আসবার উপক্ষৰ হয়েছিল। সলেও তার আহ্লাদ চেপে बाब्द भारतिक ना जात मत्नत्र शांति मूर्व कूर्त উইছিল। আমি আর ধাক্তেনা পেরে গর্লেকে বুকে मात राषिनकात यह आयात्मत आयात्मत शर्व (यह <del>কর্লাম।</del> আমরা সাফেনকে ফের আবার মৃতন করে क्या कद्रनाम। দে বল্লে **আর কখনও বজ্জাত** হৈছিলের সঙ্গে মিশবে না। তার পর পাওরা দাওয়া লেকে নিমে মাটির নীচে বে ওলামের দরুন পাতাল প্রটা ছিল সেইটা একবার তদারক করে দেখুতে শৈলাম। এত ভাল পাতাল হর সহরের ভিতর আর ক্ষায়ত ছিল না। লখায় প্রত্তিশ ফুট উচ্তে প্রায় এগার সুট আগাগোড়া সমান পাধরে গাঁথা কোথাও क्रक्रुविनि गाणात नाम शक्त नाहै। छेनात्नत शास्त्रत बुक् बहु बरहे। यह रवसन भूबारना दरन छान दन वछ दिन व्यक्तित व वाणिव नीराम अमामहै। ७ (वन व्यादा। जान हरम ST FER !

मान (नव द्वाद जारनदे मरपंत्र शिर्वकाना जरन পড়বার কথা ছিল ভাই সে খলো বাধ বার জন্ম আমি গোটা চার গুড়ি চেরা কাঠের ব্যবস্থা কর্লার্য। ভারপর भाषत (कर्ष देखवी कता व क्यांका चारह राष्ट्राम তাতে य जग बदादह (नहे जानहे जामाराद जावक निष रेक्श यक "मत्रम" करत मलत्रा हिन्द्र । दिना धात्र চারটের সময় পাতাল ঘরের সিভি বেল্পে উপল্লে উঠ তেই দেখুলাম ক্রোমার মিল্লি ভার ফুট কাট বগলে করে ठांपनीत थांत्र पिरा (देर्ड ठालाइ) जारके (प्रायह आधि ডেকে বনুলাম "ওহে মিল্লি—কর্তা" আমার পাতাল पत्रों। अववात तिर्थ यां विविन्। वांमा होंगा পড়্লে কোনও লোকসান হবেনাত। (न कृष्ठे काहि जित्र **डिक्टबड़ी स्मर्थ निष्य वन्**रन भव बिनारनव छेशव পুরা দক্ত ছ ফুট মাটি রয়েছে। বোমা টোমা বধন এধারে পড়তে আরম্ভ হবে তথন ভোষার এখর व्यामात्रत नकत्वत्रहे कात्व व्यान्ति । अत वन व्यान ভোমাকে ভাবতে হবেনা তুমি নাকে সরসের ভেল দিয়ে ঘুমোওগে বাও। আমরা নীচে থেকে, ফুট পাবের উপর উঠে बामुट्डे পবের বারের একটা দর্জা स्नार करत ধুলে গেল। আর সাগীগুলোও ঝন ঝন কুরুরে মড়তে লাগ্ল। ক্রোমার মুধতুলে আমাকে বল্লে খোরাস ওদিকে একবার তাকিরে দেব, কাষুর সিঁ ছিব; উপর কি अकि। वाकाम (वर्षाक ना ? जामता क्षरन हे रम्शान अकर् नैष्डामाम । (हस्त्र स्मिष इवादा दानिश स्मात्र निष्ठित छेगरत भूतान नरनत अकवन नार्क्स। भारत अकिंग (छन्तिएके अञाबकारे, बाएक वसूक, (शिष्टेरक টোটার বলে l कामूत जामात कनात रात विकृ विकृ करत्र छारक रहेरन नीरह मामिश्र निरंध आगृह्ह। रवहात्रा वूष्डा कान्य घटन नीति नागरन हात्रमा, इवार विश्व इयावणे। लान नम् मक्टिए (हर्म बरवरक् । न्यर चटनक बखा बखित शव (वहावा छात्र कामात माना छात्र करत कामक वकरम रन मिरमहरू छाष्ट्रिक मिरम

क्लावेंही नार्व्यत्मवह राष्ट्रि (बंदक श्रन। (यह हाज़ान পাওয়া আর অমনি বুড়ো ভিতরে চুকে ছয়ারটা বন্ধ करत करन। एत रंबरक हार्य अन्ति मन्दर वृतिवा यांकरे भक्षा त्कांत्रात वन्त अथन यनि नहत-ं यांनीत्वत्र नत्व कोत्वत्र नहांहे त्वत्व यात्र छ। दरन जानीन जांत्र तानित्राम (ननाता वर्ष्ट्र भका (भारत याद ভাদের যা খুসি ভাই করে বস্বে। সার্জেন দরজাটা ভিতর থেকে বন্ধ দেখে বন্দুকের হাতলের বা দিয়ে ভেলে ক্ষেৰ্যার চেষ্টা কর্ভে: লাগ্ল। কিন্তু ভাতে ভয়ানক শব্দ হতে লাগ্ল আশের পাশের বাড়ী থেকে লোকেরা পব বেড়িরে এল। সেই সময় রাস্তার কুকুর গুলোও এক नत्न यहा ही दकात कुछ मिल आयवा तम माछिता দাঁড়িয়ে এই গব দেখ্ছি এমন সময় বুর্গে সাম্নের গলি থেকে বেরিয়ে সার্জেনকে বেশ জোর করেই তৃকণা ্বল্ভে লাগ্ল। প্ৰথম প্ৰথমটা কথা গুলো সাজেন शाद्धावत कात्न यातक वाल छ तार शिक्त ना किन्न মিনিট থানেকের মধ্যেই সে তার বশুকে বাড়ে তুলে নিয়ে ভাছাতাছি যেন রেগে সেগে বেরিয়ে এল তার পর মুখবান আঁধার করে রাগে সর গর কর্তে কর্তে ুখাড় ওঁজে,- বুঁলো ওয়োরের মত রাভায় নেমে भक्षा । त्र चामात्मत्र काइ नित्त्रहे **हत्न** श्रिन। लाकिहात कारण जिन्हि माभावशामा काम-- त्राही (ताम ণোড়া, গোপে কতক ্ৰােৱালের ভান লিকে চামড়া কুঁচকে গিয়েছে পুতনিটা चानको डिकना बद्रावत । तम विकृ विकृ करद्र कि वन्छ वर्गाछ निम्न डिनर्हे भारता चाँका गाईनरवार्ड खानान ্রকটা ছোট হোটেলধানার ভিতর চুকে পড়্ল। पूर्व अक्षे इत जात (शहरन शहरन भाग्हिन-भारत অকাণ্ড একটা গর্ম কাপড়ের ওভার কোট, কলারটা ৰাঁড়া করে বেওয়া—টুপিটা ভুকর উপরে টানা হাত ছটো ্পাঞ্লির ভেতর সুকান-দেধ্যাস সে হাস্ছে-আমি ब्रम्भाव ७१६ न्याभावधाना कि अववाद वस (छा। कार्य

বাড়ীতে কিসের এত গোলমাল হচ্ছিল ? সে বলুলে গু थात्र कि अनत्व शीह नवत शूताम त्रशाहे अत्र निर्देश ক্রবার ফের আবার আগেকার মত গোলমাল আরক্ত करत्रह्— इंडिंगा हांत्र (म (यमनहि वन्दर्व इल्या हारे। अनव जित्नत मत्या तम नाहनात विभिन्न करत्रह अकक्रन वाकी अप्रामात्र मान्छ जात्र वरमान नकताई अत विक्रांत नामिन काताइ। किस ७ अपनि স্ব কৈফিয়ৎ দিয়ে কাটিয়ে দেয় যে ভাষ উপ্ গভর্ব সাহেবের আর কিছুই বলবার থাকে না। বল্লাম "তাত বটে কিন্তু কামুর ঘাড়ীতে হএছিল কি 📍 বুৰ্গে বল্লে কামুৱ বাড়ীতে এমন জায়গা নাই বে কাউকে সে থাক্তে দিতে পারে। ভার মতন্য ছিল বে সাজ্জেনিকে কোনও গতিকে হোটেলে পাঠিয়ে দেয় কিছ সাক্ষন মশায়ও ভেমনি—ভিনি আগে গাক্তেই টিক করে রেথেছেন যে কামুর বিছানাতেই রাজিবাদ কর্বেন। তিনি আর কণাবার্তা না করে সায়ের ওভার कांग्रेश विक्रिय व्यक्तन आमात क्य अहे कामताह नी वासाविक श्राहा वामाहि विस आयात शहस सक আমি আর এধান থেকে কোগাও নড়চিনা। তাই না তানু কামুত রেগেই অন্থির শেষে যা দাঁড়াল আ ছুৰি জ निष्म अत्मेह (प्रायंछ। সাজ्य नेष्ठे। बूर्फ़ारक मा कडक दिवात अन्य जारक टिंग्स (इंट्राइ) वाहरत मिरत वाष्ट्रिय वान वृत्र्व डांम्ट नाग्न । किन्न क्यात वन्त्न अवस अगरवरक है। नि भाग्र के वर्ष किस अर्थन भरन हम्र स अहे স্ব মহাআবাই বঁটা নদীর অপের পারে গিরে কি काक्ष्ठीहें ना करत अर्गाहन, तूर्त वड़ अनाम वज्रान জার্দানদের সেবার যে বড় সুখে যায়নি তা আমি ভালই वानि, তা याक्रा अमिरक याचात प्रतात कामव पद्याव भगत रात्र अन, जनवान कक्रन आभारत्य भूतान नामन এত শীগ্গির যেন শোধ না হয় । নমকার ভাই এখন •छ। द्रांत आमि हलाम- এই वाल (म हकवाबादात नारमें রাজা ধরে চলে গেল; ক্রমার ভার বাড়ী কিরে পেশ

आह आबि जिरह बामात नालाण परवत होते देरेंगे। ভালকরে বন্ধ করেদিশাম ভারপর উঠে বাড়ী চলে आयाम । এ हाक्य प्रमहे जित्रश्रादत कला अत मार्शहे প্রতি পড়েছিল। প্রতিদিন সন্ধার সময় পাঁচট। ত্তিবিভিত্তেই পথ, খরের তাদ সব বরফে ঢাকা পড়ে কৈছ। বাইবে আর কোনও সাড়া শব্দ পাওয়া যেত না। শৃষ্টেই আপন আপন ঘরের ভিতর উননের কাছে বসে স্থান্তা। আমি গিয়ে দেখ্লাম সলে রালাখরে अखिरनाकात बारात देखती कद्दह, উनान श्रांक नान भार छेट है। कि होत होत बादत महत (बनिया बाटक। ক্রিক। এগব বেন এখনও চোথের সামনে ভাস্ছে। গিরি ব্রীয়ার কাল জানলাটার কাছে পাধর বাধান চৌবাচ্চার कारत बाना नामन करना बुट्छ। मारकन (छ्टनिहै। दनाशांत ্রীয়া—বেরনো নলে ছুঁপড়েছে, কুঁদিতে গিয়ে ভার अपन करिं। कृत्न कार्यन करनद में करा बार्क मार्थाद 🖥 ব ধলে। এ দিক ও দিক সভে গিয়েছে আর আমি টুলের ক্রপর স্থির হয়ে বদে আছি আর পাইপ ধরাতে হবে বলে काट कट्ट धनश्च कवना इनिछ। এ यस मर कानरकत 🗯 বা--- স্বামাণের তখন ত আর কথাবার্ত। কিছু হলিছল मा। यहें। य बान्रक (इतिता वाधिक इति विक् ক্রিলেরাই বাবসা চালা: জ আর সেদিন যে ভাল রকম ৰাবার দাবার তৈরা হচ্ছে এই স্ব ভেবেই আমাদের খন ভারি খুসি ছিল। কে তখন ভেণেছিল যে দিন স্টিনেক পরে এই সহরট: শক্রনেনা এনে ঘিরে ফেলুবে आहेत हात्रवांत्र स्वरंक रक्षण भन्मनित्र राया बाम्र ड MIPC4 I

श्रीश्रक्षाम महकाद।

# বিগত औ।

আজি তব নাহি রূপ, বর্ণ তব কবিত কাঞ্চন
আজিকে হরেছে সান, তেলোহীন তোমার নয়ন।
নাহি শোভা চিকুরের, ওঠাধরে নাহিক রক্তিমা
আজিকে, নীরদ রুঢ় মধুমর তোমার ভলিমা
তবরপ কাবন্তের জীবনের হয়েছে মরণ
ত্মি তার মৃতদেহ, কাল দবি করেছে হরণ
এবে বক্ষোবাহু রুচা সমাধিতে করিয়া নিহিত
নিশিদিক রবো আগি আগুলিয়া চির অবহিত।

विकालिमान दात्र।

## (मटहिम ।

সকলেই বোধ হয় এই ছোট পাছটার সহিত পরিচিত। আমাদেয় দেশে সাধারণতঃ মুসলমানেরা বিবাহের সময় ইহার পত্র বার। হস্ত ও পদ রক্ষিত করে। কিন্ত বলদেশের কোনও কোনও শোনও শ্রেণীর হিন্দুরা ইহালার্ল করিতেও তয় পায়। তাহাদের বিখাস এই শে মাল বারীরের কোনও স্থান নেহেদি পত্র বারা রক্ষিত বাকা অনস্থার তাহাদের মৃত্যু হয় তবে পর জন্মে পে মুসলমান হইয়। জন্ম প্রহণ করিবে। এই সামান্ত রক্ষির বৈ কত গুণ বিরাজিত তাহা শুনিলে আদ্বায়াবিত হুইছে ইয়। হিন্দুগণ ইহার গুণাবলী সময়ক অবগত ছিলেম। সংক্ষৃত সাহিত্যে ইহা, "রক্তন্তে" নাবে পরিছিত। স্থিনি ভারতের তাবিল বৈদ্যাপণ ইহাকে সানা প্রকৃত্যি ভারতের তাবিল বিদ্যাপণ ইহাকে সানা প্রকৃত্য ভারতের ভারতিল বিদ্যাপণ ইহাকে সানা প্রকৃত্য ভারতের ভারতিল

ক্ষণে ব্যবহার করিয়া গোকেন। পতাও পুল্প একত্র করিয়া জল বারা দিন করিয়া দেই নির্দাদ প্রত্যহ অর্দ্ধ চামচ ছিদাবে দিনে ২ বার করিয়া বাতগ্রস্ত রোগীকে খাইতে দেওয়া হয়। কন্ধন দেশীয় বৈছাগণ পুর্দোক্ত নির্দাদ হয় ও চিনির দহিত মিশ্রিত করিয়া রোগীর রক্ত-হীনতাবস্থায় ও দন্দি গর্মি—রোগে প্রয়োগ করিয়া থাকেন।

ব্রক্ষদেশীরগণ হাত পা জালার জন্ম ঐ পত্রের মণ্ড ব্যবহার করিয়া থাকেন। স্থনামধ্যাত চিকিৎসক ডেমক সাহেব (William Dymock) স্থরচিত গ্রন্থের (Pharmacopia Indica) একস্থানে গিধিয়াছেন যে ছাত পা জালা হইতে তিনি নিজে বছকাল যাবত ভূগিতে ছিলেন। অনেক ঔষধেও যণন উপকার হইল না তথন ব্রহ্মণেশীয় জনৈক ভূত্যের বাচনিক ঐ ঔষধের বিষয় জ্ঞাত হইয়া উহা ব্যবহার করেন এবং অতি আশ্চর্য্য ফল প্রাপ্তাবে নিরাময় হইয়া উঠেন।

হিন্দু বৈশ্বগণ ইহার যথেষ্ট ব্যবহার জানিলেও

কুস্লমানগণ ইহার সহিত ষতদ্র পরিচিত হইয়াহিলেন
হিন্দুগণ তত্ত্ব পারেন নাই ! স্বয়ং মহশ্মন ইহাকে

শোষ্ঠ ছোট গাহ বলিয়া অভিহিত করিয়াছেন। মুসলমানপণ ইহাকে নিয়লিধিতরপে ব্যবহার করিয়া থাকে।

- (১) পরে দারা তাহারা, হস্ত, পদ, শাশ্র, রঞ্জিত করে। বিধারাদি উৎসবের সময়ই ইহার ব্যবহার আধিক দৃষ্ট হয়। বস্পদেশীয় অপেক্ষা উত্তর পশ্চিম প্রেদাশীয়ের। উহা অধিক পরিমাণে ব্যবহার করিয়। থাকে।
- (২)- আরব, পারসা ও গ্রীব দেশীয় মুগলমানেরা ইবা প্রধাণতঃ মাধা ধরা রোগেই ব্যবহার করিন। থাকে।
- (৩) পারের গোড়ানীর তলীয় ইহা মালিণ করিলে উহাতে ভীষণ বস্তু রোগ পর্যায় উপশ্ম হয়। বিশেষতঃ

উহা করিলে বসস্ত কিছুতেই চকু আক্রমণ করিছে পারে না।

- (৪) পত্তের জল বা কাপ কখনও কখনও মূখ ধৌজ করার জন্য কুলিরপে ব্যবহৃত হয়।
  - (৫) বৃক্ষের ছাল কামণা ও যক্ত রোগের ঔষ্বা
- (৬) বাজ দারা বাগিস তৈরারী করিয়া ভাহাতে:
  শয়ন করিলে নিদ্রা রুদ্ধি হয়। অর্থাৎ উহাতে অভি
  শীল্প সান্যন করে।
- (৭) মিশবের মুলিয়ানগ্র মেহেদির **শিক্র হারি**।

  দক্ষজনিত ফতের উৎক্ট মলম প্রস্তুত করিয়া **গাকেন।**

সামান্য একটা পাছের এত গুণ বলিয়াই বোৰহর মহলদ ইহাকে প্রেষ্ঠ বুজ নামে আখ্যাত করিয়াছেন। ওযধিরপে বাবহার ছার। বুজন কার্যাের জনা মেহেছি পাতার ব্যবহারের বিষয় পূর্বেই উল্লিখিত হইরাছে। কিন্তু মেহেদির রঞ্জন কমতা বা উহাছার। রঞ্জন প্রশাসী সম্বন্ধ এ পর্যান্ত আবুনিক বিজ্ঞান সম্মত প্রশাসীছেন কোনও পরীকা হয় নাই। তুর্ত্ত দেশীয় রাসায়নিক আবহল আজিজ ১৮৬৩ সালে প্রেণমতঃ এই প্রে ইইছের রং বাহির করিয়া নানারপ প্রীক্ষা করেন। কিন্তু জানা যায় নাই।

সম্প্রতি ঢাকা কলেজ সংশ্লিষ্ট রসায়নাগারে সেহেলি পাতার রঞ্জন উপযোগিতা ও রঞ্জন প্রণালী সম্বন্ধে বিশ্বজ্ঞ পরীক্ষা হইয়াছে, এবং তাহার ফলে নির্দ্ধানিত হইয়াছে যে প্রতি ১০০ ভাগ ওজনের পত্রের মধ্যে মাত্র ৫ ভাক্ষ রংগীন পদার্থ বর্ত্তমান আছে। এবং কিটকারি প্রমুদ্ধ রং বন্ধাকারি সহযোগে ঐ রজীন পদার্থ সাহাধ্যে পশ্মক্ষের ছাদ্ধ প্রকার বিভিন্ন বর্ণে রঞ্জন করা ধায়।

পেহেদি বারা কার্শিসে বস্ত্র রঞ্জিত করা স্থাপক চউলেও অভ্যস্ত অস্থায়ী বিধায়ে উহার পেন-ও মুল্য নাই চাকার পূর্বংশে অবস্থিত দোলাইপঞ্জ নামক স্থানে পূর্বে গেছেদি পত্র হারা কার্পাস হত্ত এং করা হুইত এবং বির্ভিত ক্রের নাম ছিল দোলাই। দোলাই ন্ধ কইতেই লোলাইগন্ধ নাষের উৎপত্তি। রছদের মুবে জনা বার যে এ বং নাকি থুব স্থায়ী ছিল। কিন্ত হর্জবানে কেহও জানে নাবে উহা কিরূপে করা হইত। জনেক অনুসন্ধানের পর এই মাত্র জানা নিয়াছে যে জারীয়া আরও নানাপ্রকার পত্তের রস সহবোগে মেহেদি জারী বস্তাদি বং কবিত। •

ৰীগতীশচন্ত্ৰ গালুলি।

व्यक्तिम् श्वापक महानत (भारति मध्यक व्यापक हैं बेनियाहिन। किस कारणत क्या धना एम नवहे ইবিয়ানিয়াছেন। আশা করি (ক) নেহেদি পাতা হুছ কি উপায়ে বং প্রস্তুত করিতে হয়, (খ) ঐ বং কি প্রণাদীতে কার্পাদ বা পদম বিভিন্ন বর্ণে ৰ করা বার এবং (গ) বর্ণের উজ্জলতা ও স্থায়ীত দ্বিশাবে বেংছদি রঞ্জন-শিল্পে ছান পাইতে পারে কিনা জ্বৈত্ত বারাভরে বিভূত আলোচনা করিয়া আমাদের क्रिक्श वित्रवार्ष कतिरवन। देवळानिक पिक श्रेरज हार्तिहमा केतिए शिल लिपक महानग्रक चात्र शाउछि কুৰা জিজাসা করিতে হয়; মেহেদি পত্রমধায় রঞ্জন পুৰুত্বপটির রাসারনিক শ্বরূপ নির্দ্ধারিত হট্যাছে किना १ (२) यनि इहेंग्रा वाक् जाहा इहेरन छेहा कान् ক্লেক্ট্র অন্তর্গত ? (৩) ১০০ ভাগ পত্রে যে ৫ ভাগ রঙ্গিন अक्षार्यंत है। तर्भ कता श्रेत्राह्य छात्रा (यम अक्रो শ্বোভাবিক মনে হয়। ধে সকল প্রাকৃতিক উপাদান প্রশ্বন কার্বোর জনা ব্রেছত হয় তাহাদের কোনওটির ब्रह्मारे क्षक्छ वसन—उभक्तन चठ व्यक्ति माजान श्रीरक्ता। क्षञ्चल भाष्य छेवात भक्षमाः (भव क्रकाः भव ব্রক্তে লা। এমভাবস্থার লেখকের কথা গ্রহণ করিতে अक्ष विया **काय कायना हहे** (उहे कानिया शहर। প্রতিতা সম্পাদক।

# আলোর আঁধার

পুত্র ভাষার স্থার জিনে
ভ্যাগ করেছে প্রাণ,
শোক প্রকাশের পত্র পেলেন
যাতা হু দশধান।

রাদা ভাষান সান্ধনা তার মন্ত্রী দানান হব, বালির বাবে ধাম্বে কেন ভাঙন বরা বুক।

মৃতের মুখে যশের রেখা
মারের প্রাণে হার,
সর্বনেশে বন্যা জলে
চন্ত্র কিরণ প্রায়।

বজ্ঞে ভাকা দেউল শিৱে
'ভক্ষ লভা'র বন, ভপ্ত ধৃ ধৃ গকা বেলায় বিরল বরিবণ্ট

পেয় না আশা দের না আলো লাগার ধরতর, অমার নিবিড় অন্ধকারে আগুণ ধরা ধর।

वीक्ष्मद्रवन महिक।

# ভারতের আর্য্যন্ত অনার্য্য। পঞ্চম প্রস্তাব,--আর্য্য কে ?

(ব্রাদাণ, ফারিয় ও বৈশ্র)

শ্মাকে বর্ণভেদের পর জাতিভেদের অল্ডফা প্রভাব জনশঃ স্থাতিষ্ঠিত ইইল। ওণ, কর্ম, স্বভার এবং জ্ঞীবেকার পরিচয় হইতে জাতির পরিচয় হইবার প্রথা কৈমশং লোপ পাইলা অত জাতির কথা দুরে ঘাকুক, বর্ণ গুরু বান্ধণও ক্রমণঃ "স্বাকর্মোপজীনী" হট্যা উটেলেন। তথাচ, কি আর্য্যাবর্ত্তে এবং কি দক্ষিণাপুপে, ত্রাক্ষণকে চিনিয়া পওয়ার কোন প্রসুবিধা রহিল না। ''আর্যা" শব্দের প্রতিশ্দ ''দ্বিজ" কালক্রমে ব্রাঝণেরই क्काधिकादः व्याभिन। স্থাজের অনেক লোকেই कृतिशा (शत्मन त्य विश्वत, উপনয়ন সংয়ার এবং বেদাধায়নের অধিকার জাধ্বা কাত্রণ এবং বৈখের ভুসারপে পৈতিক সম্পত্তি। যদিও ব্রহ্মণ বর্ণ জনশঃ অষ্টাদশ'শত উপশ্লেণীতে বিভক্ত হইয়া গেলেন, যাদও ব্ৰাহ্মণ অবহাত এবং বিশ্বম কাগ্য হইতে অতি হীন ও निमित्र कार्या नियुक्त १२ :: । ज्यांत्र, जांशांत्र कांत्रित গৌরব হিন্দু-স্মাঞ্জের সর্বাঞ সর্ববাদিস্মভাত্সারে ব্রান্ধণের এরণ অংহতুক গৌরব श्रीकृत हर्न। वाक्टविक है विश्वनी वाक्तिवालत मन विष्यायत छेरनामन कतिएक गात्रिण।

মসু মহারাজ যে বলিয়াছিলেন, 'আচার ব্যবহার এবং কার্যা দেখিয়া কোনও ব্যক্তির অথবা শ্রেণীর বর্ণ বিনিধি করা ঘাইবে,' ভাষা আর টিকেল না। প্রাচীন কাল হইতে আসত প্রবাদই বর্ণের বা জাতির পরিচায়ক ইইল। প্রসিদ্ধ বংশে জাত এবং বিভিত্ত বিণাহের ফলে উৎপন্ন ব্যক্তির আভিজাত্য সমৃদ্ধি স্বীকার করিয়া লইলেন। ধর্মান্তর পরিগ্রহ না করিলে এবং মান্য শ্রিকার এবং পদ্ধী গ্রহণ সম্বন্ধে একান্ত প্রকাশাভাবে স্মালের মর্যাদার আখাত না করিলে ব্রাহ্মণের প্রাহ্মণা ক্ষা হইবার কোন সভাবনা রহিল না। "আই।" অথব বিজ্ঞগণের ব্রাহ্মণ্য ক্ষা মর্যাদাই বহুকাল হইতে সর্ব্বোপরি গন্য হওয়ায় ব্রাহ্মণের কথাই প্রাথমে মননা করা যাইতেছে।

ভারতথণ্ডের বেখানে ইচ্চা গিয়া দেখুন, ভাঙ্গণ নিঃসং শয়ে দর্বত ''আধ্য" বালয়া গুহাত হইতেছেন। বিদেশী निकात প্রভাবে योश्यापत পুরাতন ধারণা ভাঞ্চিয়া **চ** হয় নাই. - তাঁহারা প্রত্যেক ব্রাহ্মণকে বিশুদ্ধ আর্থ্য বলিয়া স্বাকার করিতে দিখা করিবেন না। স্থার **যদি কো**ন প্রদেশের কোন আহ্মণের দেহের বর্ণ গোর, শরীর স্থগটিয় এবং উচ্চ, মন্তক দীর্ঘছান্দর, চক্ষু বিশা**ল এবং উজ্জ্বল** नाभावः न भवन जवर स्पीर्ष, (क्ष । शाम शहर ज्या বেশনের ক্রায় কোমল, চিক্রা ও লঘুখাবে তরকা तिथिए भाउषा यात्र, व्यर्गाः यान त्मर बाक्स ना मूरि কোন সুঞা প্রাক অথবা টিউটন পুরুষের স্থায় থাকে তবে তাহার "আর্যায়"—অর্থাৎ ধোল্যানা বিশুদ্ধ আর্থায় —সহত্রে কোন বুরোণীয় গুরুর এবং তাঁহার ভারতীয় শিয়ের কোনই সন্দেহ থাকিবে না। মুরোপীয় সভাত। रयक्रभ रकान मासूरधव वाहिरक्ष अन्तर्गार्धव, रवनकृषा ও প্রসাধনের পারিপাট্য এবং চালচগনের অুগক্তি দেখিয়া তাঁহার ''লেণ্টলম্যান''ব স্থিব করেন, তজ্ঞপ वाका नवीव-(भीर्ष्ट्र अवर वर्ष देवल्यव उन्न निर्देश করিয়াই মুরোপীয় পাণ্ডত মানুধের জাতিবিভাগ শ্বির कतिया थाकिन। छ। हात निकृष्टे हिताखन विरमस्य অপবা জাবিকার ব্যাপার গণনীয় নতে।

আজ খোর কনিকাশ বালয়াই যে ব্রাক্ষণ নর্থন কর্মোপজীবী হইয়াছেন টু তাংগ্ নহে। তাঁহার স্মৃতি বিহিত জীবিকা অর্থাৎ যাজন, অধ্যাপনা এবং ার্থ ব্যতিহাহ ছারা যে কেবল অধুনাই জ্বাধ বিং বিধ সম্ভাবনা নাই, তাহা সহে, পরস্তু চিরবানাই কৈ জ

সরিত্রের জীবিকা ছিল। যে সময় সামাজিক সভাত। अट्ट वादा वद्यवयात्रिनी जुनश्चिनी ছिल्मन, जबन खेळल শীবিকায় সাত্তিক আন্সণের সন্তোষ জ্মিত বটে, কিন্তু আবাসভাতা যে দিন তপোবনের বাদ পরিত্যাগ করিয়া বিবিধ বিশাস পরিপুরিত নগরনিবাদিণী হইলেন, সে किन रहेर्टि बाक्सन भवमार्थ हिखात भविवर्छ ना इछक. শন্ততঃ তাহার দহিত, অর্থ-চিম্বা আরম্ভ করিলেন। অতি व्याहीन दुरमात्रगाक छेशनियानत याळवदा अधित শাংশারিক ঐশর্যোর পরিমাণ মনে রাখিলে অথবা অতি সহজেই স্থ্য এবং চক্রবংশীয় স্মাত্রণের, সভাসদ, অমাত্য এবং পুরোহিত ব্রাহ্মণগণের ধনাগমের মাত্রা **বুরিতে পারি। একের দৃটাত্তে অত্যে এবং তাঁহার** ভুষ্টাত্তে অপরে, এইরূপে ত্রাহ্মণগণের মনে অর্থো-পার্জনের লাল্যা আগরিত হইয়া উঠিয়াছিল এবং ভাহারা যাজন ও প্রতিগ্রহের সহিত কৃষি, বাণিজ্য এবং ্রাজনেবাদি ধনার্জনের সমুদায় উপায়ই অবলঘন করিয়া ছিলেন। জনশং সাধিক শৌচ এবং সন্তোবের অমুক্ল ভক্লারভির আদর্শ অতার পংখ্যক ত্রান্ধবের মধ্যেই নিবন্ধ ্<mark>রহিল এবং অ</mark>ধিকাংশ ব্যক্তিই অভাভ সাধারণ লোকের জান্ন খোর সাংসারিক হইয়া অর্থকেই পর্মার্থ-মনে क्षिया , महेरनगा अकाना পভাদেশে ও সমাজের ু**শিরোমণি সদুশ** ধর্মাচার্যাগণের যেরূপ ঘোর সাংসারি-ক্তার পরিচয় পাওয়া যায়, আযাদের দেখেও ঠিক সেইরপই ঘটিয়াছিল।

এই রপ বৃত্তিদারগোর বর্ণনা আমানের অম্মানপ্রস্তুত নহে; প্রাচীন ও নবীর্ন দক্ষত দাহিত্য ভাতার
ছইতে ব্রাহ্মণের অর্থনাল্যার অনেক বিধ্যাত দৃষ্টার
ভাষরা দিতে পারি, কিন্তু তাহার আবগুকতা নাই।
বর্ত্তমান প্রস্তাবে মমুদংহিতাকেই আমরা প্রধান উপলীব্য
ভারিছাছি, এ ক্ষেত্রেও মমুদংহিতাকেই প্রমাণ স্বরূপে
ভিশ্বিত করিতেছি। এই সংহিতার তৃতীয় অন্যামে
মিশিত ব্যাহ্মণের এক তালিকা আছে; যথা:—

(>) क्होबादी পदन्त पूर्व, (२) क्यादी (०) वहवामक (8) চিকিৎসক (e) (नवन ( পूजाती ), (७) मारन-विक्रमी (ক্সাই)(৭) প্ৰাদীবী (দোকানদার)(৮) গ্রামভূত্য ( চৌকিদার প্রভৃতি ), ১৯) রাজার গেবক (১০) সুদবোর (১১) পশুপালক, (১২) नहेंद्रखिक, ( गान वाकना 😢 चिनम् कविमा भौतिकार्जन करत्), (১০) दिलन नहेमां व्यशालनाकाती (১৪) (वडम निशा व्यश्यनकाती (১৫) শৃব্যের গুরু (১৬) শৃব্যের শিশ্ব (১৭) জীবিকার জন্ম লোকের গৃহে অগ্নি প্রদানকারী (১৮) জীবিকার জন্ত মমুষ্য অথবা পশুকে বিব দিয়া বধকারী (১৯) সোম-विक्रशी (२•) ममूज भारत वानिकाकाशी (२) टेडनकात (२२) जान ग्रानिकाती (२०) मश्रामात्री (२९) मिष्टान व्यवता विष किश्ना भारत विद्धारण (२०) सन् भर निर्माणकांत्री (জীবিকার জন্ম) (২৬) পাশা প্রভৃতি নির্দ্ধীব বস্তর সহায়ে জ्या (थिन्ह्या व्यर्था) व्यक्तिकात्री (२१) इसिक्क (२४) গো শিক্ষক (২৯) উপ্টশিক্ষক (৩০) নক্ষত্ৰজীবী (ফলিড জ্যোতিষী ) (৩১) পক্ষীর ব্যবদায়কারী (৩২) যুদ্ধ শিক্ষক (৩৩) গৃহ-নির্মাতা (৩৪) দৃতত্বত্তিক (৩৫) বৃক্রোপণ স্বার্ড: कीचिकाक्रमकाती (७५) कूक्रत्वत जोए। (एश्रीसा অর্থোপার্জক (৩৭) শিকারী পক্ষী ছারা আবিকার্জন-কারী (৩৮) হিংলার্ড (৩৯) অধার্ষিকের বা শুদ্রের র্ত্তি এছণকারী (৪০) বহুলোকের যাজক (৪১) ভিকুক (৪২) कुषिकोनी (४०) (भग नीलक (४४) महिस नालक धरा (४८) মৃতদেহ বছন হারা অর্থোপার্জ্ক ইত্যাদি। তৃতীয় व्यशासित २०२ वर्षे ७ २७५ (झाक। व्यनावभाक (वार्ष भागिकाम मृल-::::।कावनो छक्ष, ठ कतिमा श्रेष्ठाव वाह्ना क्रविष्यं ना।

ব্রান্তংগর এইরূপ বৃত্তি সাক্ষ্যা দেখিয়া মহর্বি অতি ভূঃথ করিয়া বলিয়াছেন,—

'ব্রাহ্মণ প্রকৃতপক্ষে দশবিধ, যথা:—দেব, মৃনি, বিজ (ব্রাহ্মণ), রাজা (ক্ষেত্রিয়) বৈখ্য, শ্রা, নিষাদ, পশু, মুদ্ধ ও চঙাল ৷ সঙ্গা, লান, জণ, হোম, নিভা দেবপুজা

व्यक्ति । देवचरत्र पृक्षा "(त्व-खान्नर्ग"त नक्ना विन भाक, भाक, कन ७ मृन ७ कन कतिया वान वान करतन अदर मिका आक करतन, किनि "यूनि-बाक्तन"। यिनि निडा (तमास পार्ठ करतन, मर्स नम পরিভাগ করেন এবং, সাংখ্য-যোগ-বিচারপট্ট, তাঁছাকে "বিজ্ঞান্ত্রান্ত্রণ" বলে। সর্কসমূথে সংগ্রামে হাঁহার ছারা ধরুধর বীরপুরুষ-গণ অস্ত্রাহত ও পংশক্তিত হন, তাঁহাকে "ক্তিয় ব্রাহ্মণ" वरन । शिनि कृषिक एवं तक, (गांभाननकाती এवर वानिका ব্যবসায় করেন, ভিনি ''বৈশ্য ব্রাহ্মণ"। যিনি লাক্ষা, यातन, क्यूछ, ६४. युड, युषु এবং मान विक्रय करतन, তাঁহাকে "শুদ্র বাহ্মণ" বলে। ধিনি চোর, ওম্বর (বল-পুৰ্বাক ধনাপহারী ), স্বচক (কুপরামর্শ দাতা), দংশক (कड़ेडाबी) এवर न्याभारत नर्सनाई लालून, डांटाक "নিষাদ ত্রাহ্মণ" বলে। ত্রন্ধের (বেদ এবং পরমাত্মা) ভব কিছুই জানেন না, অথচ পৈতা গাছটির গর্ম করিয়া থাকেন, সেরপ পাপী বান্ধণকে "পশু" বলে। যে নিঃশক চিত্তে কৃপ, ভড়াগ, সরোবর ও সাধারণের উপভোগ্য উন্থানকে नष्टे करत वा वावशांत्र वस करत, সেরপ ব্রাহ্মণকে 'মেচ্ছ'' বলে। বৈদিক ও স্মার্তকর্ম-शीन, यूर्व, भवंशर्य दिङ, मकल कीरवद श्रीङ निर्भन्न এরপ ব্রাহ্মণকে "চণ্ডাল" বলিয়া থাকে। অতিসংহিতা ---98---998 (割す 1+"

\* (मर्ता मूनि विद्धा ताका रेन्छ म्र्या निनामकः।

भेष सिष्टाःशि ठाणाला विद्धा मम्विनाः युकाः ॥ ०५८ ॥

मन्नाः स्नानः कभः द्यासः (मन्या निकाभ्कन्य ।

व्यक्तिः रेन्थरमनः ठ रमन्यासः केठारक ॥ ०५८ ॥

मारक भरत करन भूरन नननारन मन। तकः।

निन्नरकाश्वरः खारक म विरक्षा मूनिक्रारक ॥ ०५५ ॥

रनम्भः भेरक निकाः मर्सम्भः भित्रकारकः।

मारथा रगान विचानकः म विरक्षा विक्ष केठारक ॥०५५ ॥

व्यक्तिकाकः वनानः मर्शारम मर्सम्भः केठारक ॥०५५ ॥

व्यक्तिकाकः वनानः मर्शारम मर्सम्भः केठारक ॥०५५ ॥

व्यक्तिकाकः वनानः मर्शारम मर्सम्भः केठारक ॥०५५ ॥

বৃত্তি, চরিত্র এবং কর্ম এরপ বোরতর নিন্দনীর হৈলেও দেকালে তিনি দর্ব্ধ বর্ণের পূজনীর বর্ণ গুরু ব্রাহ্মণ বলিয়া গণ্য হইতেন; আজও দেই আচার ঠিক দেই রূপই চলিতেছে। হাইকোর্টের প্রধান বিচারকই হউন, মহামহোপাধ্যায় নিষ্ঠাবান্ ব্রাহ্মণ পণ্ডিতই হউন অথবা দারোয়ান, মুটে, কসাই, হোটেল ওয়ালা, রুটি-ওয়ালাই হউন, ব্রাহ্মণ হইলেই তিনি "আর্ধ্য" বলিয়া পরিয়ুহীত হইতেছেন। †

বাক্ষণের পরই ক্ষতিয়ের স্মান এখনও **আমাদের**সমাজের সর্বাত্ত অধিয়াছে ; তাই বাক্ষণের পর
ক্ষতিয়ের স্থানে কিছু বলিব। অভিধানে "ক্ষত্তির"
শব্দের পর্যায়ে "ক্রত", "রাজ্য", "রাজ্ত" এবং "বাহুজ" শক্তিলি দেখিতে পাওয়া যায় \*। ইতঃ-পুর্বে, চতুর্ধ প্রস্তাবে, ক্ষতিয়ের উৎপত্তির ইতিহাস

কৃষিকর্ম রতো যক গবাং চ পরিপালক:।
বাণিজ্য ব্যবসায় চ স বিপ্রো বৈশ্য উচ্যতে ॥৩৬৯॥
লাক্ষা লবণ সন্মিশ্র-কুমুম্ঞকারসর্পিযাম্।
বিক্রেতা মধুমাংসানাং স বিপ্রঃ শুদ্র উচ্যতে ॥৩৭০॥
চৌরশ্চ তম্করশ্চৈব স্চকো দংশকন্তবা।
মৎক্রমাংসে সদা লুকো বিপ্রো নিষাদ উচ্যতে ॥ ৩৭১॥
ব্রহ্মতন্তবং ন জানাতি ব্রহ্মত্বেগ পবিতঃ।
তনৈব স চ পাদেন বিপ্রঃ পশুক্র-দাহ্নতঃ॥ ৩৭২॥
বাপী কৃপ তড়াগানামারামস্থা সরঃ স্থাচ।
নিশকং রোধকশৈচব স বিপ্রো মেছ্ছ উচ্যতে॥ ৩৭০॥
কিয়াহীনশ্চ মুর্থন্চ সর্বধ্র্ম বিব্জ্জিতঃ।
নির্দ্ময়ং স্বাভ্রুত্ব বিপ্রশ্রাধান উচ্যতে॥ ৩৭৪॥

অত্রিসংহিতা (বঙ্গবাসী)

- † আন্ধণগণের কোনরূপ মানি বা নিন্দা করা আমাদের আভিপ্রেত নহে। ত্রান্ধণ "অর্থ সন্তাতার" মন্তক্র সেই মন্তকের অবমাননা আমাদের উদ্দেশ্য নহে। পাঠকগণ একটু ধৈর্যধারণ করিষ্বা নেম্ব পর্যান্ত অপেক। করন, ইহাই প্রার্থনা।
  - 'কজং তু কজিয়ো রাজা রাজভো বাছসম্ভব: ব হেনচয়ে

ব্দিপ্র) শান্ত-সম্মত-প্রবাদ আমরা দিরাছি। দেই মতগুলি শংক্ষেপে পুনরুক্ত করিতেছি:—

- (১) 'পুরুষের বাচ্ধরকে রাজক্ত করা হইল।' পুরুষ স্কুল, ১১ শ মন্ত্র। মন্তুসংহিতা,প্রথম অধ্যায়।
- (२) 'ব্রন্ধ শ্রেরোরণ ক্ষত্তের সৃষ্টি করিলেন।' রহদারণাক উপনিষ্দ।
- (৩) 'ঝারজুব মন্থ এবং বৈবর্ণত মন্থুর ঔরসে শ্রিমের উৎপত্তি'। মহাভারত, আদিপর্বা, ৭৫ অধ্যার।
- (৪) "কশাপ ঋষির ঔরসে তাঁহার 'মুহ' নায়ী প্রমীয় গভে ভাত।" বাখায়ণ।
- (৫) ''প্রথমে'কোন বর্ণ ছিলনা, ভগবান্লোক কুলার'জন্ত ক্তিয়ের সৃষ্টি করিলেন।" বায়ু এবং ব্রহ্মাও-
- (৬) "প্রথমে সকলেই ব্রাহ্মণ ছিলেন, তন্মধ্যে বিজ্ঞান্তণ সম্পন্ন ব্রাহ্মণেরা পরে ক্রিয় হইলেন।" মহাভারত, শান্তিপর্ক।
- ( १) "গুণও কর্মের বিভাগ হইতে ভগবান্ কিনিয়) বর্ণ স্থাটি করিয়াছেন। মহাভারত, ভগবদ-
- (৮) "রাজা না থাকিলে যে হেতু পৃথিবীতে মানারপ ভয়ের প্রাত্তীব হইয়া থাকে গেই জন্ম পরমেশ্বর বাক্ষের রক্ষার জন্ম রাজাকে সৃষ্টি করিলেন ॥৩॥" মমুদংহিতা, সপ্তম মধাায়। †

ী ''অরাজকে হি লোকেংমিন্ সর্বতে। বিফ্রতে ইয়াও।

্রকার্থমন্থ স্পাস্থা রাজানমস্থাৎ প্রভুঃ ॥৩॥ মনুসংহিত। সুরুষ অধ্যায়।

প্রসান্য প্রমাণ বাক্য গুলির মূল যথাসন্তব পূর্বজ্বপেই পূর্বে উক্ত কর। হটয়াছে বলিয়া আর ধ্রবানে তুলিলাম না, ভবিবাতেও এইরূপ প্রমাণের বুল (বাবা একবার পূর্বে অধ্যাথার কর। হইয়াছে) "ক্লিয়" এবং "রাজা" একার্থবাচী হইলেও ছুইটি শব্দের ছুইটি পুণক্ নিরুক্তি আছে। "কত হইছে রক্ষা কর্তা "কে ক্লিয় এবং "প্রজাদিগের মনোরশ্বদ-কারী "কে রাজা বলিয়া থাকে ।।

পৃথিবীতে মান্থবের রক্ষক রাজা যেমন ক্ষত্রের,
অর্গাদি লোকের লোকপালগণও ক্ষত্রিয়। রহদারণ্যক
উপনিষদে লিখিত হইয়াছে যে দেবগণের মধ্যে ইন্দ্রির
বর্ষণ, সোম, রুদ্র, পজ্ঞ, যম, মৃত্যু এবং ঈশান ই হারা
ক্তির। মকু মহারাজও রাজার অষ্টির সম্বন্ধে;
বলিয়াছেনঃ—

\* ''কতাৎ কিল জায়ত ইত্যুদ্দঃ ক্ষত্ৰ শক্ষা ভুবনেষ্কচঃ ॥৫০॥ (রল্বংশ, দ্বিভীয়ণ্র ।) ''রাজা প্রকৃতিরঙ্গনাৎ" ॥১১৷ (রল্বংশ, চতুর্থংর্ম) † 'ইন্দ্রানিল্যমার্কানামগ্রেশ্চবরুণস্যাচ। চক্রবিত্তেশাগ্যানৈত্ব মাজানিক্ত্যু শাষ্ঠীঃ ॥৪॥ যথাদেষাং প্রবেজ্ঞানাং মাজাভ্যোনির্দ্রিতা নূপঃ। তথাদভিত্বভাগ সর্বস্থানি ভেজ্ঞ্যা॥৫॥ তপত্যাদিত্যবক্রেষাং চক্ষুংবি চ মনাং সি চ। ন চৈনং ভুবি শক্ষোভি ক্লিছ্পাভ্যীক্ষুক্য ।।॥

বুংদারণাক উপনিষদে উক্ত হইগাছে যে যেতেতু छक हैलापि लाकभानभा कि बिह्न, (महे अना कांतारहत **अ(१क) (अर्ड आंत्र (करहे नाहे; (गृहे अना** जाना निम्नश्राम रहेर्ड कवित्ररक छेशामना करतन, ताक्या क्षातिम् वे भवसायात यमरक शातन करतम । मञ्जाशिका नश्य ७ चहेम व्यवारा, महाजाताज्य व्यवनात्रन वनः नांखिनर्स्स, (नडा,नन इंडािल नर्सिंख) धवः वार्षे, मरमा, विकू, कांगवंड ७ मार्क(छेप्राप्ति महाभूतात्व तावात कांगा छ **ক্ষতিমের কর্ত্তরা পু**র বিস্তৃতভাবে আলোচিত হইয়াছে। রাজনীতির বিষয় শ্বৃতি এবং পুরাণাদি শান্ত্র ভিন্ন कामनकीम, अकाहार्यात अवः कि हिलात अरह वर्षित পাছে। বর্তমান প্রস্তাবে তৎসময় স্বিস্তারে বলিবার কোনও আবশ্যক হা নাই। সংক্ষেপে এই মাত্র বলিলেই মণেষ্ট হইবে যে ক্ষত্রিয়ের ধর্ম টিক ব্রাহ্মণের মতই অর্থাৎ ষ্পন, অধায়ন এবং দান; কেবল জীবিকা মাত্র পৃথক। পূর্বেই পুন: পুন: উক্ত হইয়াছে যে প্রজার রক্ষণ, পালন এবং युष्क এই ভিন্টীট ক্ষত্রিয়ের জীবিকা। কর্ত্তব্য শংক্ষেপে এই মাত্র বলা হইয়াছে, যে 'আপন আপন ধর্মে অবস্থিত সর্ব্ব বর্ণ এবং সর্ব্ব আশ্রমকে রকা করার জ্ঞাই ভগবান রাজার সৃষ্টি করিয়াছেন।" †

পুরাশন ভারতবর্ষের "আর্য্যসভাত।" বলিতে গেলে ক্ষত্রিয় নর্গের উন্নভির ইতিহাস্কেই কুঝাইয়। পাকে। স্পৃত্তির প্রথম সমাট্ কারত্র মঞ্ হইতে আক্ত করিয়া যত শ্বাকা এই ভারতবর্ষে কারীন ভাবে রাজ্য করিয়া ক্ষিয়াছেন, তাঁহাদের সকলেই 'কাত্রয়'; কেবল মৌধ্য

সেহিনিউণতি বাযুশ্চ সেংহর্কঃ সোমং স ধর্মরাট্ !
স ক্বের ! স বরুণঃ স মরেন্তঃ প্রকাবতঃ নান।
বালোহিশি নাব্যক্রেনা: মহুল্ড ইতি ভূমিপঃ।
মহুলী দেবতা হোষা নররূপেন তিষ্ঠাত ॥৮।"
† "সে স্বের্গে নিবিষ্ঠানাং সংক্রেনাম্ম পূর্কালঃ
বর্ণানা মাশ্রমাণাং চ রাজা হাইছিভির্ফিতা ॥০৫।"
মহুস্থিত লা, সহুম স্থান ।

युराज शतक्षी कन्नदरभीम मुलाविज्ञास्त जिल्लाम्बरक রাজহন্তা অসাতা কথগোলায় ত্রাক্ষণ শস্তুদের এবং তাঁহার **जिन क्रन तरमध**तक (अवस्थ, (माष्टे १ कन हाका, রাজ্বকাল ৪৫ বংগর :) পরিত্যাগ কবিতে হইবে। স্বারস্থার মতুর বংশধর মহারাজ চক্রবর্তী পুরুর নামান্তুসারে এই ভূচধাত্রী ধরণী "পুলিনী" নামে বিধানত হইয়াছেন। वाप्रज्य मञ्जूत वः भवत शासत्र नामाकुमारत है (य पृथिवीतः कबूबीभाषि यावडीय महाबीन अंतर "ভातडा"षि यावडीय यर्षेत्र" नाम कत्रव इडेमार्ड, जाना श्रवम श्रव्यादा डे जिल ছট্যাছে। হুর্যাবংশীয় সমাট দগরের নামা**নুসারে অপার**্ মহানব ''দাগর'' নামে এবং তদ্বংশীয় মহারাজ ভগীরপের নামাতুদারে পাগনাশিনী সুরতর্মিণী গলা "ভাগীরথী" নামে পরিচিত হটরাছেন। "অঙ্গ", 'বঙ্গ', "কলিখ'', "পুণু", "স্কা' ও 'ওড়ু'' প্রভৃতি প্রদেশের নাম রাজ পুত্রগণের নামালুগারেই চিহ্নিত হট্য়াছে। অধিক কি শ্বতি, পুরাণ ইভিহাস ও কাব্যাদি প্রাচীন সংস্কৃত সাহিত্য ক্ষত্রিয় করপতিগণেক कीर्छि कारिनी घाडाই পরিপূর্ণ রহিয়াছে।

বেদের ভাষাকার সুপ্রসিদ্ধ সায়নাচার্গ্য "করে" শব্দের ভাষাকার সুপ্রসিদ্ধ সায়নাচার্গ্য "করে" শব্দের অর্থ "বল" করিনাছেন এবং ক্ষত্রিষ জাতি শৌর্ষার্থ্যর জন্মই সংসারে এত বিখ্যাত হইয়ছিলেন, ভাষা সভ্য বটে; তথাপি শুদ্ধ বাহবলের দারাই কোন জাতি জগতে সভাতার কৃষ্টি করিতে পারেনা। জ্ঞান-বিশ্বা-বিরহিত বাহুবল সভাসমাজে "পাশ্ববল" নামেই পরিচিত্ত হইতেছে। প্রাচীন ভারতের যে বর্ণ সভাতা হ্যালোকের প্রথম রশ্মিপাতে জগতের জ্ঞানাক্ষকার দূর করিয়ার্থ্য স্বান্তর ধরিয়া এই জ্মুভ্রমণা আর্থ্যসভাতার বিশ্বতি সাধন করেয়াছিলেন, জ্ঞান বিজ্ঞানেও সেই বর্ণ জভি শ্রেক্ত্রন অধিকার করিয়াছিলেন। জ্বপতের স্বর্গপ্রাচীন

है बाह्युवान, अवाहित विक्युवान, ध्व अर्थ अवाह, बदमायुवान अवाहित विक्र ७।१४७

শাহিত্য ক্ষেত্ৰও এই সাক্য দিতেছে। সেই অভি शुवाकन बृद्ध शृथु, विश्वामिक बिरवाबात, गृद्यमा, नण्डः, আটি বিশ্ পার্ব, শিনি, পুরুক্ৎস, মান্ধাতা, অম্বরীয়, . क्वनां के जनकरा, आक्रमीए, अन उ, निन, श्रवन्य, कश अ মুদাদ প্রমুখ নরপতি বেদের ময়দ্রষ্টু খবিরূপে পূজিত ভইন্নভিলেন •। শুপনিষ্দিক যুগেও দেখিতে পাওৱা वाब (व भाषाग्रिम हिल, देशरवामानि अटर्फन, कानिवास अमाजनक रेरापह बनक, रेक्टल श्रदाहर এनः अध्रप्ति কৈকেয়া প্রমুখ রাজর্ধিগণ ত্রন্ধজ্ঞানের উপদেষ্টারূপে অমৰ পাতি লাভ কবিয়াছিলেন। ছান্দোগা বহদাব্ৰাক अवर (कोबी ठकी উপনিষদ পাঠ করিলে স্পষ্টই উপলব্ধি क्षे (य (नरमत रहिना व्यथना कानका छ এই नकन ताक **প্রাসিগণের হারাই প্**রিবীতে প্রচারিত হুইয়াভিল এবং **এমদভগ্রদ্গীতাও দেই** কাহিনীই স্পষ্টশ্বরে বলিযা-ছেন 🚁। কাশিরাজ ধর্ষস্তরিকে অষ্টাঙ্গ আয়ুর্ন্দের সাহিত্য স্বীকার প্রতিষ্ঠাতা বলিয়া পৌরাণিক ক্রিরাছেন শ এবং তাঁহার শিবা রাজ্যি বিশ্বামিত্রের পুত্র পুশ্রতের প্রণীত শলাভগ্ধ প্রধান সংহিতা আজও ¥বিক্তমান থাকিয়া দেই পেরাণিক ঐতিহাকে সভা খলিয়া প্রমাণিত করিতেতে। ক্ষতিয় বংশাবতংশ वितामहस्य এवः क्रीक्कहस्य बाष्ट्र (मर्भव नर्नक छगवास्तव विकाद विका पृक्षिक वरेटहरून।

• वाशुभूतान, ४३ व्यक्तात ।

ণ পাল্যায়নিচিত্র (কোবীতকী), দৈবোদানি প্রতদ্ধন (কোবীতকী) কাশিরাক অন্তাতশক্র (কোবীতকী ও বুর্লারণ্যক) বৈদেহ জনক (বৃহদারণাক) জৈবলি-ক্রবাহন (ছান্দোগ্য ও বৃহদারণ্যক) অখণতি কৈকেয়

🚅 ই শীমদভগৰদ পীতা— চতুৰ্ব অধ্যায় প্ৰথম হইতে কুটীয় লোক।

न स्कित्रान।

त्रपूर्वायं रश्मः क्षितामञ्जन अतः यहकुमिरताम्व জীকৃষ্ণচল 'লাগর্দ্ধ হিমাচল' ভারত বতে জীভগবানের व्यवजात विश्वा (पर्य (पर्य गृदक गृदक शृक्षिक व्हेरकरहन এবং কুরুবংশ ভূষণ ভীগ্নদেব শ্বকীয় শৌর্যাবীর্য্য এবং জানের মহায্যো আজিও আত্রাহ্মণ সকল হিন্দুজাতির পিতৃ-পুরুষ ক্ষমপ প্রভাহ তর্পণ বারি দ্বারা অভিনন্দিত হইতেছেন। উপনিবর্জ রাজধিগণ সকলেই ত্রশ্বজানে ব্ৰন্মৰিগণেরও শিক্ষক হইয়াছিলেন এবং পৌরাণিক माहिएका देवरमह क्रमक खक्तकारनव चामर्न क्रकरमरवर्ष শুকু বলিয়া বিখাত হইয়াছিলেন। ঋগ্বেদের মন্ত্রস্থাবিদ্ধ গ্রাম প্রাচীন ভারতে যে কত অধিক ছিল, তাহার ধারণা করাও এখন আমাদের পক্ষে कठिन श्रेक्षारकः, त्यरश्जू "(तम" ७ "अवि" चामारम् निक्रे आवशेन "मक" मात्व পরিণত इहेम्राइ এবং इत्राणीम পण्डिमान नाषात करन त्राम्यान এবং মাহাম্য শিকিত সমালে একরপ "অচল মুদ্রা"র অনাদৃত হইয়াছে৷ তাই আমরা বুঝিতে পরিনা যে কোন ক্ষতিয় রাজাকে বৈদিক মল্লের ঋষি বলিয়া পরিচয় দিয়া শাস্ত্র তাঁহাদের প্রতি কিরুপ व्यमाधावण अका अवः मधान अवर्नन कवित्राह्म। य गाम्रजी (माविजी गाम्रजी) भक्रतक मर्स्सराहत कमनी অরাপণী বলিয়া পৃজাকরা হইয়া থাকে, ক্সাকুজপতি यहारीत दर्काणक विश्रामित दनहें महामदश्चत श्रव । विक्रिक প্রচারকরপে প্রাচীন ভারতের ক্ষত্রিয় রাজগণ সভাই ধরাতলে ধর্ণোর রক্ষক ছিলেন্। ক্ষত্তিয় রাম্ববিপণের कून रहेए अत्नकश्वनि विचात्र विकास वस्तात छेडर रख्यात हे थिशान सहा भूतान खनिए भाष्या यात्र।

আবার, আমাদের এই দেশে প্রাচীন অথবা নৃত্ন বুগে, লৈন, বৌদ্ধ, এবং শিক্ধ প্রভৃতি বে সকল জান বোগ প্রধান অতি প্রবল অবৈদিক মতের অভ্যুদর ইইয়াছে, সেই সেই ধর্মের মেতা এবং প্রচারকঙ ক্ষারেই ছিলেন। স্তার্গে সায়ন্ত্র মন্থ বংশীয় বাবতাবেই জৈনপর্যের প্রথম আবিষ্কর্ত্তী। এবং তিনিই ক্ষাদিনাপ নামে জৈন জনসমাজে পরিচিত। জৈন ধর্মের চতুর্বিংশতি ভীর্বজ্বের মধ্যে শেব তিন জন অর্থাৎ নেমিনাপ, পার্থনাপ এবং মহাবীর স্বামী,—এবং বৌদ্ধর্মের শেষ বৃদ্ধ গৌতম, 'শিক্ষসংঘের আদিগুরু বাবা নানক, ধর্মের জন্ম স্বেছায় ও, সানন্দে আত্মবলি দাতা ক্ষাম মহাতেজ্পী তেস বাহাত্র শিক্ষাণ্যের ভিতর দীর্যাবহ্বির উৎপাদক লমান্ত্র চিরত গুরু গোবিন্দ সিংহ, ইইবা সকলেই ক্ষাম্য চিরত গুরু গোবিন্দ সিংহ,

শৌর্যোবীর্য্যে যাঁহারা পুগিবীতে অক্সের, চারিত্রের গান্তীর্য্যে ও মাধুর্য্যে বাঁহারা সুসভ্য মানবের আদর্শ, ধর্মে ধাঁহারা কোটি কোটি মানবের গুরু, রাজনীতির প্রকুত পরিচালনেও তাঁহারা অপ্রতিহন্দিতা লাভ করিবেন, ভাহাতে আর বিশ্বয়ের বিষয় কি আছে ? वर्षिञ "त्राय प्रारमात" व्यथवा कवि कालिमान वर्षिज "রপুবংশ" কাব্যে হ্যাবংশীয় রাজগণের যে বিস্তুত বর্ণনা স্মাছে, ভাহা পাঠ করিলে প্রকৃতই বিশ্বিত হইতে হয়। মকুদংহিতা প্রভৃতি শাস্ত্রে "বাজধর্ম্মের" যে উপদেশ আছে, তাহা ধিনি পাঠ করিয়াছেন, তিনিই মুগ্ন ष्टेबार्छन। ७८व, चामारनंत्र चमुद्देरनारं रम्दमंत প্রাচীন ইতিবৃত্ত অনুসন্ধান এবং শিক্ষা দেওয়ার ভার বিদেশী পণ্ডিতের হক্ষে ক্রন্ত হওয়ায় আমাদের সমাজের শিক্ষিত সজ্জনেরাও দেশের সময়ে প্রকৃত ধারণা করিতে পারেন নাই। মুরোপীর পণ্ডিতগণের বিজাও বৃদ্ধির পরিমাণ, উ। शास्त्र हति (खत रेश्या ७ देश्या, अञ्चलका (नत নিষ্ঠা এবং কর্মো অফুরাগ ও অধানগার প্রার্ভই चनाशातन ; किस छै। हाता. "चस्र ः है। शामत व्यत्स्करे, --- আমাদের দেশের ও প্রাচীন সভাতার প্রতি শকা **छक्ति मृत्मात महरून । এবং আমাদের উপর উার্ছের** नमर्यक्तां उक्त श्रवन नरह! य कार्राह उक्ति, बुद्राणीय शिक्ष्टशत्वत्र मत्न व्यामात्वत्र नवस्य धक्ता

निठाखं शैम शातवा वन्नभूत रहेशा विशाह । अहे अख, चार्यात्मत श्रीष्ठ चार्छानिक नत्न नमत्त्रमनाद चर्छात्य. তাঁহাদের অকুসন্ধানের নিষ্ঠা এবং অধাবদায় ভাঁহাদিপকে निभाग के महेबा यात्र अवः काम लागापन निश्चित्र ঐতিহাসিক চিত্র নিভাত্তই বিশ্রী ও বিকট হইয়া যায়। তাঁচারা আমাদের সভাতার প্রাচীনত্ব, বৈদিক ধর্ম অথবা দর্শনের সারবন্ধ, প্রাচীন ভারত বাধীর জ্ঞানের গান্ধীর।. अवर अ (मर्गत रम कारणत भिन्न-विष्टान-कमा-रकोमरणद (मोम्पर्ग) व्यवता (मर्केंद्र, वर्षा ९ तकन निवस्त्रहे मामह ७ অবিশ্বাস লইয়া গণেষণা আরম্ভ করেন। তাই, আমাদের ঋৰি মুনিদিগের বর্ণাকে তাঁহারা অভিরঞ্জিত, কাল্পনিক এমন কি মিগা বলিতেও কিছুমাত্র পশ্চাৎপদ হন মা, অথবা মনে একট্ও সংগাচ অমুভব করেন না। তাই তাঁহারা ধরিয়া লইয়াছেন যে রামায়ণের বর্ণিত অংখাধ্যা. किश्विक्षा এবং अकात मठाठा (मोन्सर्या अवः ममुक्कित वर्गमा অববা মহাভারতের হন্তিনা ও ইন্দ্রপ্রস্থের ঐবর্যা সকলই কল্পিত কাব্য কথা মাত্র। অধিক কি মহাসাগরের স্থুপ বহু বিকৃত সাহিত্যের ভিতর তাঁহারা ইতিহানের উপাদান আদে व्रें किया পान नारे। देश जांदात्वर कुर्जाना, व्यामारमञ्ज कुर्जाना ।

রাম এবং যুদিটিরের রাজতের বর্ণনাকে আমর।
কাল্লনিক অথবা নিধ্যা বলিয়া উড়াইয়া দিতে কথনই
পারিব না। ''ঋগ্য়: সভ্যবাদিন:''—ঋবিরা অসভ্য

<sup>&</sup>quot;That Europeans should believe, as a matter of course, in the vast superiority of Europeans, not only now, but always; is psychologically interesting."

P. 43, Dr. Rhys. Bavis "Buddhist India."
অধাচ ডান্ডোর রিস ডেভিসের নিজের মনন্তব এই
বিশেষত্বের প্রভাবে যে নিভাস্ক প্রভাবান্তিত ভাষা
আমাদের "বৌদ্ধর্মা" শীর্ষক (প্রথম প্রস্থাব) প্রবন্ধে
দেশাইবার চেতা করিয়াছি।

বিশেষকর নতে পূর্বিন না। আর বাঁহরে রামারণ মহাতারতের বর্ণনাকে কাবা-কথা বলিয়া উপেকা করিছে সাহস করিবেন,—সামবেদীয়া। "হান্দোগা উপনিবদের" বাণ কৈ তাঁহারা কি বলিয়া উপেকা করিবেন ? "বেদ-বাকা"ও কি নুহন শিক্তিত থাবিঅংশধরপণের নিকট উপেকিত হইবে ? কে আনে ? আমাদের নবাশিক্ষার মনকে এরপ এক অন্ত ব্যাধিতে বারিয়াছে যে আমরা বেদব্যাস অথবা নাল্মীকি ধ্বির কথা বিনা বিচারে, অসংলাচে, তৃচ্চ করিয়া উড়াইয়া দিতে পারি;—অথহ মুরোপের যে কোন অধ্যাপকের কথাকে মাধা পাতিয়া মানিয়া লই! এ রোগ কি প্রক্রতই বিশ্বরকর নহে ? আমাদের শাস্ত্র বলিয়াছেন, "বিনা প্রথাকে কাহারও কথা লইবে না।"

তবে, আপ্তবাক্য আমাদের মতে প্রমাণ। বৈদিকী ক্রতি সেই আপ্তবাক্য। সেই আপ্তবাক্য ছান্দোগ্যক্তি প্রকাশ করিয়াছেন যে অতি প্রাচীন কালে কেকয় দেশে এক ব্রহ্ম রাজবি রাজব করিছেন। তিনি সেই প্রিশ্ব অবপতি কৈকেয়। তাঁহার বাজব কালে কেকয় দেশের অবস্থা কিরুপ ছিল, তাহার পরিচা িনি নিভেই দিয়াছেন। তিনি প্রশন্ন চিত্তে বলিতেছেন,—

শ্বামার রাজ্যে, পরন্তব্যাপহারী নাই, সংক্রােগ্য অর্থব্যর করিতে পরাঅ্থ কেছ নাই, মন্তপার্যা কেছ নাই, প্রত্যহ করিছে করে না, বেদজ্ঞ নহে, এমন ব্যক্তি কেছই সাই; ব্যভিচার করিতে পারে এরূপ পুরুষ কেহ নাই, — ব্যভিচারিণী নার্যা কোথা হইতে আদিবে লৈ ৫। ১১শ বঙ্গ, ৬৮প্রাঠক। \*

আদিকবি বাঝাকি, স্থানংশীয় মহারাজ দশরবের ক্ষাণাদন গৈছকে ধাঁহা বলিয় হেন, তাহা যেন এই ক্ষানিবাদীর অসুবাদ। আমাদের অব্জ প্রাণের ইচ্ছা বৈ হিন্দু হউন অপবা নাই হউন, প্রত্যেক ভারতবাদী বাজ্ঞীকির রামায়ণ এবং বেদব্যাদের মহাভারত সমপ্র পাঠ করুন। আমরা নিঃশক্ষচিতে বলিতে পারি, বিনি এই মহাগ্রন্থ ছইগানি পড়িবেন, তিনিই পরম উপক্রত এবং পরিভূপ্ত হইবেন। এখানে স্থানাভাবে, রাজ্ঞা দশরধের রাজ্যের অবস্থার বর্ণনার ভূই চারিটি ক্থা মাত্র আমরা বলিতেভিঃ—

"দেই রাজ্যে কেছ অগ্নিছোত্র-পরালুখ, ষজ্ঞবিরজ, ''ছোটলোক, তত্ত্বর, অসন্ত্য কিংবা সান্ধ্যাত্র ছিলনা! কামী, কপা, নিষ্ঠুর, মূর্য অথবা নান্তিক (বেদ-নিন্দক) কোন পুরুষ অযোধাায় দৃষ্ট ইইবার উপায় ছিলনা। সমুদায় নরনারীই সুসংযত, ধর্মনীল ছিলেন এবং চারত্রেও আচরবের প্রভাবে সকলেই নিম্মাল ম্বার্থ কুলের মত সন্তর্জ ছিলেন।" রামায়ণ, আদিকাও, গঠসর্গ †।

অধণতি কৈকের রাজার মত করজন রাজা এই কালে বুকে হাড দিয়া বলিতে পারেন যে তাঁহার রাজ্যে চোর, মুর্থ, রূপণ, মাভাল, কুচরিত্র অথবা অধার্মিক লোক কেহই নাই ?

আগবা যতদ্র দেখিলাম, তাহাতে আমাদের প্রাচীন
সমগ্র শাস্ত্রগৃষ্ট ক্ষত্রিয় বর্ণের জ্বনা, কর্মা, চরিত্রা,
জীবিকা এবং মাহাত্ম্যের বর্ণনায় পরিপ্রিত;—স্কুতরাং
ক্ষত্রিয়ের আর্গান্ত সম্বন্ধে কাহারও কোন সন্দেহ ছিলনা।
বর্ত্তমান কালে ক্ষত্রিয় জাতির অবস্থাও নিবাসস্থানের
সম্বন্ধে আমরা পরে আলোচনা করিব। তবে,
এখানে এই মাত্র বলিয়া রাখিতে চাই যে
পৌরাণিক সাহিত্যে এবং ভাহার পরে "নিব্দ্ধার্ণ

† "নালাহিতাগ্রিনীযজা ন জুলো বা ন ওছরঃ।
ক নিচলগাদযোধ্যায়াং ন চারছো ন সংকরঃ ॥
কামী বা ন কদর্গো বা নৃশংসঃ পুরুষঃ কচিং।
জটুং শকামযোধ্যায়াং নাবিধান ন চ নাজিকঃ ॥
সর্বে নরাশ্চ নার্যশ্চ ধ্রাশীলাঃ স্থান্যভাঃ।
সুলি হাঃ শীল্রুভাভ্যাং মহর্যয় ইবামলাঃ॥"
রামারণ, আধিকাও, বঁঠান্য

<sup>ি ।</sup> বিষে ভেলে। অনপদে ন কদর্যে। ন ম্লাপঃ। নিমাহিত। এনাবিদান্ত্র বৈর্গী কুডঃ ॥৫॥ ১৬ ব । বিশ্বতা এলাইক।

প্রশ্বনীতে কলিযুগে ক্রিয় এবং বৈশ্য বর্ণের অভাব বোষণা করা হইয়াতে এবং এ স্থকে আমাদের বালালী ক্রার্ড অনামধন্ত (ক্রার্ড ভট্টাচার্য্য) রঘুনন্দন ভট্টাচার্য্যই বোধ হয় সকলের অগ্রে গমন করিয়াছেন। তিনি স্বান্তি বিশেষের দোহাই।দিয়া বলিয়াছেন,—

"কলিমুগে মাত্র ছুইটি জ।তি আছে, যথা ত্রাহ্মণ আর শুদ্র।" •

এই স্থলে লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে "গৃইটি জাতি"র কথা বলা হইয়াছে, "বর্ণ" বলা হয় নাই। কলিতে "ক্তিয়" বর্ণের লোকের গৃই একটি উপাখ্যান কোন কোন পুরাণে আছে বটে কিন্তু বৈশুবর্ণের অন্তর্ধানের কোন কথা কোথাও পাওয়া বায় না। বাহা হউক, এ সম্বন্ধে আমরা প্রতন্ত্র ভাবে পরে আলোচনা করিব।

আর্য্য শ্রেণীর গণনায় ক্ষতিয়ের পরই..বৈশ্যের স্থান विम्मास्य निर्मिष्ठे बहेशार्छ। देवना । विक युज्जार ভাষারও ধর্ম ত্রাহ্মণ ও ক্ষতিয়ের সঙ্গে স্মান, অর্থাৎ व्यश्यम, यवन এवः मानः एत देवत्यात कीविका व्यवनाई श्यक,-- वर्षां कृषि, शक्षतालन, वानिका এवः चून श्रश्। श्राष्ट्रीय कारत इहे हाति बन देवमा-कूरलाख्य वाकित बाकाय नाएलत जयर देविषक यस पर्नातत कथा मारळ थाकिरमञ देवरमात भटक धटमाभटमभटकत भागा छत्र व्यथना (कान मध्यनाम ध्यवर्त्ततत वर्ष अवहा নিদর্শন দেখিতে পাওয়া যায় না। দেশের ধনাগমের ষাবভীয় উপায় বৈশ্যবর্ণের হন্তে একান্ত অর্পিত থাকায় তাঁছাদের পক্ষে অপরা অথবা পরা বিজ্ঞালাভের সেরপ স্থবিধা ছিল না এবং ডজ্জন্তই সাহিত্যের উপর তাঁহাদের বত একটা প্রভাব পড়ে নাই। তবে বাণিকাবাপদেশে (माम এবং বিদেশে গভাগাত নিবন্ধন বৈশ্য বর্ণের ছারা আর্থা সভাতার প্রচার প্রিণীর প্রায় সর্বতি হইয়াছিল এবং उांशानिरभव बाता विरम्भी महाई भराव महिल विरम्भीय সভ্যতামুমোদিত বেশ ভূষা বিলাসাদির ও এ দেশে

প্রচলন হইবার স্থবিধা ঘটিয়াছিল। ধার্ম্মিক এবং ধর্মী বৈশাগণের ঘারা জনপদ এবং নগর সমুহের বিবিধ সমৃত্তি এবং ক্রিপ, তড়াগ, আরাম, পাছ নিবাস ও আত্র-নিবাসাদি (Hospital) জনহিতকর নানা কার্য্য অফ্রন্তিত হইত। বৈশুগণ বৈদিক কার্যা কর্মাদির অস্ক্রানে এবং ব্রাহ্মণগণের যজ্ঞাদিতে প্রচুর ধন ব্যয় করিতেন। প্রকৃত পক্ষে ধনের ঘারা তৎকালের সভ্যতা, ধর্ম্ম এবং লোকাচারের অনুমোদিত যে সকল সংকর্মা করা লোকের পক্ষে সম্ভব ছিল, কমলার প্রসাদভালন শ্রেষ্টিগণ তাহার সকলগুলিই করিতেন। তাই ব্যহ্মণের বিশ্বা, ক্রিরের প্রতাপ এবং বৈশ্বের ধনসম্পত্তি ব্রিরের এই তিন শক্তির সহায়তায় অগতের অত্যাশর্মী আর্য্য সভ্যতার এরপ পৃথিবীব্যাপিনী প্রতিষ্ঠা হইয়াছিল।

মতুশংহিতার মত প্রাচীন গ্রন্থেও সে কালের একিং वर्षत लाक पिरात राजन नाना ध्वकात हीन की विकास পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া যায়, ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্য বর্ণের ব্যক্তিগণের তাদৃশ অনাচারের কোনও প্রমাণ পাওয়া যায়।না। আজও এই ভারত খণ্ডের সর্বত্তই বর্ণ ওয়া ব্রাহ্মণ অভ্যুক্ত হইতে হীনাদপি হীন রুপ্তি অবলঘন করিয়া জীবন ধারণ করিতেছেন কিন্তু থাঁহারা ক্ষত্রির অথবা বৈশ্র विनया भावत्र वियाद्यम, छाहादम्य मद्या अक्षति छ अनिक्र জ্ব বিকা অবলম্বনকারীর সংখ্যা অধিক দেশা যায়ন।। অধ্চ, কালের বিভয়না বশ্তঃ পাতিতাজনক বাবসায় অব্লখন করিয়া এবং বেদ অগবা প্রস্তুক্ষের সম্বন্ধে বিন্দুমান্ত জ্ঞান ना दाविशां जारून गमर्ल "वर्ष छक" विषशा मर्वाख সমান আদায় করিতেছেন আর জাতীয় জীবিকা এবং শাস্ত্রামুনোদিত সদাচার অব্যাহত রাখিরাও ক্ষতির বৈশ্র निक निक तर्पत छे भयुक दान ७ मान भादे ए हिन ना वदः व्यत्नक श्रुता "नृज" विनेषार गृशे छ- अवः व्यवसानिछ হইতেছেন। কেহ কেহ রণিকছা করিয়া বলেন হে ভূণাক্ষিত শান্তীয় শোকে যেরপ অহল্যা দ্রৌপদী প্রভূতি সভীর ভালিকায় গণিত ছইয়াছেন কিন্তু সীতা ও সাবিত্রী

<sup>्</sup>षुरम भवत्त्र रव बाकी जार्बनः मूख **এ**रह।"

ভারতে স্থান পান নাই,—ইহাও ভজ্রপ কোন "নির্বিবেক বিশাভার" কার্য। এরপ আক্ষেপ করিয়া ছাড়িয়া দিলে আমাদের চলিবে না,—মুতরাং আমরা অতঃপর ক্রিয় ও বৈক্তের বর্তমান অবস্থা ও অবস্থান সম্বন্ধে বিবেচনা করিব। আনা করি, অমুসন্ধান ভাল করিয়া করিতে পারিলে "আর্যাকে ?" এই প্রশ্নের স্তুত্তর মিলিবে।

ক্ৰমশঃ

ञीवधिनहस्य छात्रठो ज्रुप।

## বিবাহ ও দীর্ঘ জীবন।

বিবাহের দোব গুণ সম্বন্ধে পরীক্ষা করিয়া বৈজ্ঞানিকগ্রপ্থ দেখাইতেছেন যে উপস্কুল অর বরুসে বিবাহ থারা
ব্যক্তিগত, সমাজিক ও জাতীয় উপকার সাধিত হয়।
বিদি আমরা দীর্ঘ জীবন লাভ করিতে বা নানা প্রকার
রোগের হাত হইতে অব্যাহতি পাইতে চাই অথবা
উন্মন্তের সংখ্যা হাস, আত্মহত্যা ও পাপামুষ্ঠানের প্রস্তুত্তি করিতে চাই তবে কি স্ত্রী কি পুরুব উভয়ের মধ্যেই
অবিষাহিতের সংখ্যা যথা সম্ভব ক্যাইবার উপায় উদ্ভাবন
করিতে হইবে। ইহা খারা এমন কথা বলা হইতেছে না
বে উথাহ মানবের অধিকাংশ হংশ বিপত্তির অব্যর্থ
প্রতিবেশক বা একমাত্র মহৌবধি কিন্তু এটুকু নিঃসন্দেহে
বলা ঘাইতে পারে যে শারীরিক এবং মাননিক স্বাস্থ্য
অটুট রাশিবার কি দীর্ঘজীবন লাভ করিবার পক্ষে
কৌমার্য্যের অপেকা উষাহবন্ধন অধিকতর অনুক্রন।

বিবাহিত ব্যক্তি চির্কুমার অপেন্দ। দীর্ঘনীবি হয়েন।

ক্ষুটল্যাণ্ডের একলক লোকের মৃত্যু তালিকা পর্য্যালোচনায়

ক্ষুটল্যাণ্ডের একলক লোকের মৃত্যু তালিকা পর্য্যালোচনায়

ক্ষুট্রাইভ এবং ১৩৬৯ জন অবিবাহিত। ৬৫ বংশুরের

ক্ষুট্রাইভিনির মধ্যে মৃত্যুর হার বেশী হইবে বলিয়া

ক্ষানালের মনে হয় কিন্তু পরিণ্ড ব্যক্তিগণের যথ্যে

ক্রিইছমান্ত্রিক অপেকা বিবাহিত ব্যক্তিগণের বাঁচিবার

সম্ভাবনা অধিক। ৬৫--৭০ বংশর বয়সের মধ্যে অবিবাহিত ১০১৪০ জন এবং বিবাহিত ৮০৫৫ জনের মৃত্যু হইয়াছে। ৮০--৮৫ বয়স্ক মৃতদিগের মধ্যে অবিবাহিতের অপেশা বিবাহিতের সংখ্যা ২০০০ কম।

যদিও প্রদ্বকালে বিবাহিত দীলোকদিগের জীবনের আশক। আছে, তথাপি চিরকুমারীদিগের অপেকা পরিণীতা দীর্ঘায় হয়েন। ফ্রান্স দেশে অকুসন্ধানে দেশা গিয়াছে যে পঞ্চাশের উর্কাশে কুমারীদিগের মধ্যে বিবাহিতের, অপেকা মৃত্যুর হার অনেক অধিক।

বারটালন (Bertillon) সাবেব যিনি এই সকল
তত্বাস্থসন্ধানে অনেক কট সীকার করিয়াছেন তিনি
প্রমাণিত করিয়াছেন যে ১০০০ জন সোকের মধ্যে ৩৫—
৪০ বৎসর বয়সে মৃত্যুর সংখ্যা চিরকুমার, বিপত্নীক এবং
বিবাহিজের মধ্যে যথা ক্রমে ১৩, ১৭ এবং ৭।

পরিণয় যে রোগ প্রতিরোধ করিতে অধিকতর সক্ষম তাহা অক্সামন দারা নিঃসন্দেহ ভাবে প্রমাণিত হইয়াছে। ট্রানবার্গ নগরে meningitis রোগের প্রাত্তির প্রতির সময়ে বিবাহিত ব্যক্তির অপেকাক্সত অব্যাহতির একটী প্রশিধান যোগ্য কৃষ্টাস্ক; তব্দন ১০ জন মৃত্রের মধ্যে পরিনীত স্থামী জীদিগের মৃত্যু সংখ্যা মাত্র ১৯ ইইয়াছিল।

ক্তিপর খ্যাতনাম। বিজ্ঞ চিকিৎসক্রণ বলিরা আসিতেছেন যে উদাহ কতকগুলি বিশেষ রোগ হইতে ব্রী জাতিকে রক্ষা করে। স্নায়বিক এবং মানসিক স্ত্রী জাতিকে রক্ষা করে। সায়বিক এবং মানসিক স্ত্রী ও পুরুষ উভয়ের মধ্যে বিবাহিতের অপেক্ষা কৌমার্য্য ব্রষ্টাবলমীদিগকে অধিকতর পরিমাণে কটু দিয়া থাকে। ৭৬৪ জন উন্নাদ পুরুষের ৪৯২ জন চিরকুমার, ৫০ জন বিপত্নীক এবং ২০১ জন পরিশীত। ব্রী জাতীর মধ্যে কুমারী উন্মাদের সংখ্যা বিবাহিতার তিন গুণ।

আত্মহত্যাকারীনিগের সংখ্যা পর্যালোচনা করিয়া

De Beromont গাহেব দেখিতে পান যে অবিবাহিতের

সংখ্যা বিবাহিতের দিওগ। ত্রী পুরুষ উভয় শ্রেণীর
বিশেষতঃ ত্রী লাতির মধ্যে যাহারা ভগ্ন স্বাস্থ্য বা চিরক্ষ

বলিয়া বিবেচিত হইতেন তাহারা প্রায়ই বিবাহের পর পূর্ণ স্বাস্থা: প্রনঃ প্রাপ্ত হইয়াছেন। পাপাস্থানের প্রবৃত্তির উপর বিবাহের প্রভাব পর্যালোচনা করিয়া দেখা গিয়াছে যে অভিযুক্ত ব্যক্তিদিগের শতকরা ৬০ জন অবিবাহিত।

বিবাহের উপযুক্ত বর্ষ ২৫ অপেকা কম হওরা উচিত; ইহাই বৈজ্ঞানিকগণের মত কিন্তু উহা নিরূপিত হয় নাই। ... এতৎ সম্পর্কে কেহ অনুগ্রহ করিয়া বিধিবে বাধিত হইব।

## মিলন

তোমার সনে আমার মিলন
চিরদিন এ হৃদয় মাঝে।
তোমার ক্রে হৃদয় ভরা
তোমার গান্ প্রাণে বাজে।
নিভ্যি সকাল সন্ধ্যা বেলা,
তোমার সনে আমার বেলা,
নিবিল শোভা গন্ধ গানে
তুমি আমার কাছে কাছে।
স্নেহের চোবে চেয়ে থাক,
পরশ দিয়ে দাড়িয়ে রাথ।
নীল আকাশে নয়ন তোমার
হাওয়ায় তোনার পরশ রাজে।
তোমার সনে আমার মিলন
চিরদিন এ হৃদয় মাঝে।

ত্তিমার সনে আমার মিলন
চিরদিন এ হৃদয় মাঝে।

## রাজা হরিনাথের চন্দন।

ধূলনা ধেলার অন্তর্গত সুলতানপুর ঘড়রিয়ার ছৃতপুর্ব জমিদার বৈদ্য রায় চৌধুরী বংশের প্রতিষ্ঠাতা দানকী বল্লভ নিখান বলের শেব বার মহারাজ প্রতাপা-দিত্যের দ্রবারে কার্যা করিয়া পুরস্কার অরপ স্থলতানপুর ঘড়রিয়া ও বেলফুলিয়া নামক প্রগণাহয়ের জমিদারী বহু লাভ করিয়াছিলেন। কিছু ১৬০৬ খুঠাকে মানসিংবের সহিত সংঘর্ষে প্রতাপাদিত্যের পতন হইলে যথন সমগ্র যশোহর রাজ্য মোগল বাদশাহের করতল গত হইল, তথন দক্ষে জানকীবল্লভও বিভচ্চত হইলেন। পরে এই জানকী বল্লভের পৌল্ল হরিনাথ দিল্লীর তদানীস্তন সমাট জাহালীর শাহের নিকট দরবার করিয়া তাঁহারে নিকট হইতে 'রাজা' উপাধিদহ পরগণাছয়ের উপর এক ফরমান লাভ করিয়া আবার জমিদারী দ্পল করিয়া বিদ্যালন।

রাজা হরিনাথ বৈছা কুলীন সম্প্রণায়ের অক্সতম শাখা বিষ্ণুনাশ বংশোন্তব ছিলেন; কিন্তু রাজার বৃদ্ধ প্রাপিতান্ত্র নিমদাশ 'দেব' আখ্যাধারা নিম শ্রেণীস্থ বৈছা বংশের সহিত বৈবাহিক সম্বদ্ধ স্থাপন করিয়াছিলেন বলিয়া, অক্সাক্ত কুলীনবর্গ বিষ্ণুদাশ বংশকে যেন একটু হেয় চক্ষেই দেখিতেন।

এখনকার দিনে জমিদার ও ধনি সম্প্রদায় যেমন বছ व्यर्थ वारम 'ताका' ७ 'ताम वाशकृत' উপावि अन्त क्रिड পারিলেই প্রমার্থ লাভ হইল মনে করিয়া কুতার্থ হয়েন. তখনকার দিনে এমন ছিল না। তখন থোকে অর্থ অপেকা চরিত্র ও আত্ম স্থান এবং 'রাজছার' অপেকা 'कुल ছত্রকে'ই সমধিক মূলাবান ও স্থান अनक মরে ' করিতেন। তাই জ্যিলারী হাতে পাইয়া রাজা হরিনাপ भवं अथरम भम् देवज भक्तानारम् मार्था भी वंशान व्यक्तिक করিবার অভিপ্রায়ে 'চন্দন' নামক সামাজিক ও মালগিক -অমুষ্ঠানের উল্লোগ করিলেন। এই অমুষ্ঠান উপণক্ষে कुनोन अकुनीन भगन्त देवच मन्त्रानरक निमन्न कविद्व रह । निभक्षिक वास्त्रिया समारतक इंडरन सिमिष्ठे पियरम् अक সভার অবিবেশন হয়। এই সভার সক্ষধান স্থানে স্মাজপতি এবং ভাঁহার উভয় পার্ষে সমস্ত বৈছ্যাণ নিজ निक कून शीवर अञ्चलति यथा कारन आमन शतिकार করেন। পরে কর্মকতা সভায় জাগমর করিয়া তাঁহার ्निक्तिं आगत्न छे भारत के तिल ध्रेशन क्रुगोर्शा नर्स क्षयं कर्ष कर्छ। वनार्षे हमन पाता जिनक क्षेतान

করিয়া ক্রমে সমাধ্বপতি ও উপুস্থিত বৈত সন্ধানগণের লগাটে তিলক প্রদান পূর্বক, কার্য্য শেব করেন। এ উপলক্ষে আহুত ব্যক্তিবর্গ বংশ মর্য্যাদান্ত্রসারে কর্মকর্তার নিকটি বিদার পাইয়া থাকেন। এই অনুষ্ঠান স্থানপর করিতে পারিলেই কর্মকর্তা সম্প্রদায়ের মধ্যে সর্পপ্রধান বিদায় গ্রনীয় হন।

ुद्राणांत्र चाट्यांत्न नमश्च देवना-मध्धनांत्र मृतपत शारम সমবেত হইলেন : কিন্তু বাজা হরিনাথকে চলন অনুষ্ঠানের बाबा रेक्स भव्यकांत्र मर्रा भीर छान व्यक्तित कतिवात শারোজনে ব্যাপৃত দেখিয়া কুলীনবর্গের সকলেরই গাত্র দাহ উপস্থিত হইল—তবে হরিনাথ তখন প্রবল পরাক্রান্ত অবিদার। কে তাঁহার বিরুদ্ধাচরণ করিতে গাহদী হইবেন? কিন্তু রাজার স্কল্ডা ভগবানেরও বৃথি অভিপ্রেত ভিল'লা। ভাই ধশোহর বেন্দা নিবাগী কার দাস বংশীয় द्वामकाच चठक विभावन मामक कटेनक यूनक कुनाठाया नमश कुनीन अल्लामारात मान तकात निमिन्न तावात শ্বমুর্কানে বিদ্ব উৎপাদন করিতে কুত্রবঙ্কল হইলেন। आमकांस निर्धीक, पूक्ति ७ व्यष्टितानी हित्तन । तालदिनी ক্লীন বর্গ তাঁহার কুতকার্য্যতার উপর নির্ভর করিয়া সময়ের অপেকা করিতে লাগিলেন। নির্দিষ্ট দিনে রাজ বাটার প্রশন্ত প্রাঙ্গনে এক মহতী দভার অধিবেশন ছইল। সমগ্রবিদা স্থান সূহ স্মাঞ্পতি এবং স্বাং ক্রমা কর্ত্তা রাজা হরিনাধ স্বস্থ আসনে উপবেশন করিলে क्नोहारी दामकात्र निम्निषिठ सारक क्षिरणन :---

> সভা বিরিঞ্চে ম্যুহদনসা, সেয়ং তৃতীয়া শনি শেখরসা। শতদা তুর্গাতব পঞ্মীয়ং, ব্দীন গোঞ্চী নরবাশ আভে॥

স্তা বৰ্ণন ংশৰ করিয়া রামকান্ত আসম পরিএই করিলে রাজা জিঞানা করিলেম—'গভায় সমস্ত বৈদ্য শুক্ষান উপস্থিত ছইয়াছেন কিনা' ? রাজার প্রশ্ন তানিয়া সকলেই মূব চাওয়া চাওয়ি করিতে লাগিলেন—সকলের বাগ্রা দৃষ্টি রামকান্তের উপর নিপতিত হইল। সকলেই কল্প নিখাগে উভরের প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন নিভীক বুবক রামকান্ত সভেলে সভাস্থলে দণ্ডায়বান হইয়া দৃষ্ক তেওঁ উভর দিলেন ঃ—

'স্মাগ্তা ন দেবা নরদেব সংস্ঞি'

রামকান্তের উত্তর দার্থবোধক। সরল ক্ষর্থে ''বে নরদেব। আপনার সভায় দেবতারা ব্যতীত আর সকলেই উপস্থিত হইয়াছেন।" আর ব্যঙ্গ অর্থে—'হে নরদেব আপনার সভায় আপনার পিতামহের মাতৃল বংশীয় দেব উপাধিশারী বৈদ্যগণ ব্যতীত আর সকলেই উপস্থিত ইইয়াছেন।

পূর্বেই বলিয়াছি চন্দন কার্য্যে সকলতা লোভ করির রাজা ব্রুরিনাথ বৈদ্য স্থাজের শীর্ষন্থান অধিকার করেন কোন ব্রুলীনেরই এ শাদক্ষা ছিল না; স্থভরাং রামকান্তেঃ উত্তর ব্যুলার্থে গ্রহণ করিয়া হরিনাথের কুল বজ্ঞ বিনই করিবার অভিপ্রায়ে সকলেই করতালি দিয়া উচ্চ হাণ করিয়া উঠিলেন। সেই করতালি ও হাণ্য ক্রমে কারণানভিজ্ঞ জন প্রের্ম মণ্যো বিস্তৃতে লাভ করিয়া সভিন্তৃতে ভারণ কোলাহল উথিত হওয়ায় সভা ভক্ত হইয়া গেল।

রাজাপ রাজ শুভাম্ধ্যায়িগণ দে বিশ্বালতা নিবারণ করে বিশ্বর চেষ্টা পাইরাছিলেন—কিন্তু রুপা দে চেষ্টা কেলোহল মত্ত জনজ্যতে বাধ ভাগা জল জ্যোতের ভাগ সবেগে সভাস্থল হইতে বহির্গত হইনা রাজার সে চেষ্ট সামান্ত তুল পণ্ডের ভার ভাগাইয়া লইয়া চলিয়া পেল কুলীন বর্গের অভিপ্রায় সিদ্ধ হইল। রাজা হারমাথ বর্গান বর্গের অভিপ্রায় সিদ্ধ হইল। রাজা হারমাথ বর্গান বর্গের অভিপ্রায় সিদ্ধ হইল। রাজা হারমাথ বর্গান বর্গান করিয়াছিলেন, কুল্মক্ত সম্পন্ন করিয়া তিনি শ সমাজের শীর্ষ্থনে অধিকার করিবেন—কিন্তু ভুগবান বাদী; তাঁহার সে আশা প্রিতে প্রিভেও প্রিল্ না—ইহানেই বলে অনুষ্ট।

विविविक्षात (त्रमा





# अभिष्

১০ বর্ষ

মাঘ ১৩২৭

30म मर्था

### (पर्।

শাদিতে জীবের দেহ অতি ক্ষুদ্র একটা মাত্র কোর ছিল, এখনও বহু দংখ্যক এক-কোর জীব † আছে।
এক-কোর জীব কাল ক্রমে বহু-কোর জীবে গ বিবর্তিত
হইল; এবং নানা পরিবর্তনের মধ্য দিরা এক সময়ে
অতান্ত বহুদাকার প্রাপ্ত হইয়াছিল। আবার জীব
দেহ ক্ষুদ্র হইতেছে এবং ক্ষর প্রাপ্ত হইতে হইতে ধ্বংশের
দিকে চলিরাছে। এই ভাবে ক্ষুদ্র বহুৎ, ক্ষুদ্র বহুৎ
হইতে হইতে জীব দেহের পরিণাম কিরূপ হওয়া
সন্তব তাহাই কিঞ্চিং বুবিবার চেটা করিব।

প্রথমতঃ এই পৃথিবীতে জীব ছিলনা। ইহার অভ্যাত ভাপ, বায়ু মগুলের অভ্যথিক অলারায়, জলের অভিনিক্ত চুণের ভাগ ক্রমে কমিয়া গেলে সময়ের অব্ভালুরূপ ভিন্ন ভিন্ন জীব-দেহ জাত হইয়াছে। না ক্রিলে শানব ধাকিতেই পারিত না। প্রাচীনকাল হইতে বর্ত্তমান সময় পর্যান্ত ধরাপৃষ্ঠে বে সকল তার ক্রমে গঠিত হইয়া বর্ত্তমান ধরা রচনা করি-প্লাছে। তাহাদিগকে সচরাচর তিন্টী ভাবে বিভ্রম্ভা করা যায়। জীব চিহ্ন বিরহিত তার ধরাপৃঠ মুইকে ৬০।৭০ হাজার ফিট নীচে। তাহার উপর হইকে বর্ত্তমান ধরাপৃষ্ঠ পর্যান্ত তারওলিকে আদি জৈবিক † মুর্যা লৈবিক ৩ ও নব জৈবিক ‡ নাম দেওয়া যাইতে পারে।

আদি লৈবিক তার সকলও পরীকা করা যায়।
তুকলাদি কারণবশতঃ এবং পৃথিবীর তাপ কর দ্দিত
স্বোচন হেতু, ধরাপৃষ্ঠের কোন তান ভালিয়া নীটে
ধরাগর্ভে প্রেশ করিতেছে। এবং ধরাগর্ভের কোন
তান উর্দ্ধে উঠিতেছে। ইহাতেই ধরাপর্ভের কভিপর
ভার আমরা ধরাপৃষ্ঠে বসিয়াই পরীকা করিতে পারি।
গভীর খনি ও কুপাদি খনন উপলক্ষেও আমরা ভ্রতি

Unicellular.

Multicellular.

<sup>+</sup> Palæzoic.

<sup>·</sup> Mesozoic.

<sup>2</sup> Cainzoic.

निप्राट्ड दर चिन्द निरम् ग्रहनेकः शाह इयुवारेशकः नीरह ब्यानार्क जीवावरणय । जनवा कान क्षेत्र कीव हिट्ट नहिं। णादात छाई जायह मानाविश जीवावरमय ७ बीव চিত্র • পাওয়া যায়। কিন্তু খত প্রাচীন যুগে আমা-षिर्वित नितिष्ठि कीर्यत प्रशायत्व किया हिट्ट श्रायमः প্রতিরা যার না। অল যাহা পাওয়া যায় ভাতার পঠন ক্ষী ঠিক বর্ত্তমান কালের ভার নহে। ক্রমে যুত্ই মন্ত্রাগর্জ হইতে উপরের তার পরীক্ষা করা যায়, ততই বিশ্বাদ শ্ৰেণীর জীব দেব পাওয়া যায়। কিন্তু ভাচা-क्रिरमञ्ज गठेन-व्यगांची अवर चाग्रजन वर्त्तमान बृत्भव খাম নহে। তত্ত্বি আরও নিকটবর্তী ভরে বর্তমান লময়ের পরিচিত জীবদেহ পাওয়া যায়। কিন্তু অত্যৱ কালের শ পূর্বে মানব দেহের কোন চিহু পাওয়া যায় না। প্রাথমিক জীব এক-কোষ ছিল। ইহারা ক্রমে প্রতিক হইয়া বংশ বৃদ্ধি করিত। একটা কোব ফাটিয়া কুইটা, ছুইটার প্রত্যেক্টা ফাটিয়া ছুই-দুইটা, এইরূপে कांग्रिया कांग्रिया व्यन्तर्था कीत (पर गठिल रहेल। এहे সক্ষ এক-কোৰ জীব এত ক্ষুদ্ৰ যে ইহাদিগকে প্ৰবল अक्टबीकरनंद्र माहाया नाठील (प्रचा यात्र ना। हेशता ক্ষিশে ঘণ্টাতে একটা হইতে গড়ে এক কোটা লাভ হয়। होंच हाल भाष्यविश्वात्र की है, यक्षा (वार्वाद की है

ইত্যাদির উল্লেখ করা বাইতে পারে। এক-কোৰ
জীবের দেহ অভিশয় ক্ষুত্র, ভাহাতে কোন রূপ অল
প্রভাহ নাই। কেবল একটা ক্ষুত্র আবরণের মরেয় ক্ষুত্র
এক বিন্দু তরল গ্লেমাবৎ পদার্থ মাত্র। কালক্রমে জীববিবর্জনের নিরমালুসারে স্বিদ্দা বহু কোব একত্র যুক্ত ও
পরিবর্জিত হইতে হইতে বহু-কোব জীবের দেহ রচিত
হইল; এবং ভাহাতে ক্রমে অল প্রভালের বাহুল্য
হইয়া উঠিল। দেহের মধ্যে এবং বাহিরে, উভয় দিকেই
বিবিধ অল প্রভালের বাহুল্য হইল। দেহও ক্রমেই
অতি বৃহদাকার ধারণ করিল।

सार्वे विवाद, ध्वा गार्ड्य खिन शाकां कि नीट इहेट यां इंडाबात किं गीट वर्ग स्थ (य नकन মেরুদগুহীন জীবের দেহাবদের পাওয়া যায় ভাহারা বিবিধ শ্ৰেণীর টাইলোবাইট্(১), শমুক, মোলাসা, জাষ্টে-সিয়ান্ এবং বহু শ্রেণীর কীট। এইসকল নিম্ন প্রদেশে (सक्त ए गुरू की वात र भाषत्र। यात्र ना। "जिम राजात्र ফিটের" উপর হইতে প্রধমে মেরুদ্ভযুক্ত জীবদেহ পাওয়া যায়। এই শ্রেণীর প্রথম জীব মৎস্য। এ যুগে সামৃত্রিক এবং ভৌম বৃশ্চিক দেহও পাওয়া যায়। কিন্তু তাহারা বর্ত্তমান মৎস্য ও বৃশ্চিক শ্রেণীভুক্ত হইলেও ঠিক ইহাদি-रगत मञ न(द । ভাহ। पिराय मर्सा चाकि दृश्य कांग्र कठिन विद्यावत्रवर्षे मदभा व्यत्नक हित्र; दुनिहक्ख অত্যন্ত ব্রং ছিল। পনের হাজার ফিট নীচে হইতে र्वेष्टिंग शकात किंहे नीत्तत खत्र का बाबादिक खत्र येग! दम्। এই खरत अवर देशत किছू खेर्फ चारा दृद्धाकांब উভচর भीरामद পাওয়া यात्र। উহাদিগের অনেকের त्मर चाँठ कठिन चावता चाकामिछ हिन ; **উहामित्त्र** व मछरक ও नामिकात्र मृत्रवर अञ्च हिन ; मूर्थ हरेएड

<sup>+</sup> Fossil.

<sup>\*</sup> Impressions.

<sup>(&</sup>gt;) শ্রীবৃক্ত জে, এন, ঘোৰ মহাশয় এই শক্ষের বৃদ্ধ-মুন্দ করিয়াছেন, ''অিপ্ডিড দেহ"।\_

বাহিরের দিকে রহৎ দণ্ড দেখা যাইত। উহারা উভচর ইইলেও বর্ত্তমান ভেকাদি উভচর হইতে অত্যন্ত বিভিন্ন আকারের। বর্ত্তমান গণ্ডার ও মহিষের ফ্রায় ঐ সকল উভচর জীবের দেহায়তন ছিল। অনেতের দেহ উহা-দিগের অপেকাও রহৎ ও ভয়কর ছিল।

ইবার উর্দ্ধ গুর পাঁচ হাজার হইতে দশ হাজার ফিট
নীচে। এ স্তরে অতি রহদাকার সরীস্থপ সকলের দেহাবশেষ পাওয়াযায়। বর্তমান সরীস্থপ (সর্পাদির)দেহ হইতে
উহাদিপের দেহ গঠন অতিশয় বিভিন্ন। উহারা এক
একটা, বর্তমান মুগের হস্তী অপবা উষ্টের মত রহৎ ছিল।
বিশ্যাত ভাইনোসর, ষ্টেগোসরাস, পেরিয়েসরাস প্রভৃতি
অতিশয় তীষণ বর্তমান প্রতিগাসরাস, তেরিয়েসরাস প্রভৃতি
অতিশয় তীষণ সরীস্থ এই মুগের। উহারা চত্তপদ,
বর্তমান গো-সাপদিগের আয়। উহাদিগের দেহ নানাবিধ কঠিন বর্ত্মবৎ আবরণমুক্ত ছিল, পৃষ্ঠে, মস্তকে ও
নাসিকার উপরে নানাপ্রকার অস্ত ছিল।

**এहे मकन छात्रत्र छेएक शक्की (अभीत की**नानाभग প্রথম পাওয়া যায়। কিন্তু সে সকল পক্ষীও বর্ত্তমান नगरात्र काम नरह। छाहाता तुह९-काम এवः पखिविषिष्ठे ছিল। দম্ভ চুই ঠোটের অস্থিতেই সংলগ্ন ছিল। এই ছারের উপরে ধরাপুঠের প্রায় তিন হাজার ফুট নীচে অখ, হন্তা ইত্যাদি তত্তপায়ী জীবের আবির্ভাব দেখা यात्र । किञ्च (म काल्य अस वर्डमान ममरम् अत्यंत छ। य নছে: হন্তীও এখনকার মত নছে। বিখ্যাত ম্যান্টোডন সে কালের হন্তী এবং বিখ্যাত ফেনাকোডাস্ প্রভৃতি সে কালের অথ। ঐ অধের পায়ে পাঁচটা অমূলি ছিল। शहितारथातिव्रम् नामक रम कारमद्र अक्षकांत्र व्यव्दत ্সশ্বধের পায়ে চারিটী এবং পশ্চাতের পায়ে ভিনটী অকুনি ছিল। উভয়েরই অকুলিতে খণ্ডাস্থিও ছিল। নে কালের হতীর হ'ড় কাহারও ছোট ছিল; কাহারও ছই পাটী (हामान बहेरजहे उद्दर पत्र वाहित हरेछ। काहात्रख्वा উপরেয় ও নীচের ওর্ডবর অভিশয় বর্ত্রিত হইয়া সমূধ विटक जानिक, कमना (मान नीरहत होतान स्टेटक दर्द

দত্ত বাহির হইত। নীচের ওর্গ (অর্থাৎ অধর) সম্পুচিক্টির হইরা, নীচের দত্ত পুর হইরা এবং নাদিকাগ্র ক্রমে বর্দ্ধিত হইরা বর্তমান আকার প্রাপ্ত হইগাছে। এক হালার দেড় হাজার মুট নীচেও তিন অন্ধূলিযুক্ত অথের পদ পাওয়া গিয়াছে। এই স্তরের উর্দ্ধ হইতেই রহৎ কার জীব প্রায় নিঃশেব হইরা পিয়াছে। প্রিওসিন্ স্তর পর্যায় বৃহৎকার জীবদেহের হিছ্ পাওয়া যায়। তাহার উর্দ্ধেই প্নরায় ধর্মকার জীবের আবির্ভাব হইল। বর্তমান আকারের ধর্মদেহীগণের হিছ্ ধরাপৃষ্ঠ হইতে চারিশত পাঁচশত মুট নীচে পর্যান্ত পাওয়া যায়। ইহারা অনেকেই পরিচিত জীব।

মানবদেহ নবকৈবিক যুগের শেখভাগে পোষ্ট होतियाति खरत अथम भाष्ट्रा व्हा क्खिए मामव-দেহও ঠিক বর্তমান মানবের ক্রায় নহে। বানর ও মর-গণের মন্তক তুলনা করিলে দেখা যায় যে নাসিকা-মলের উপর হইতে যন্তকের পিছনের চিপি পর্যান্ত করোচীভাগ বানরের ক্ষুদ্র, অহুচ্চ ও প্রায় চ্যাপ্টা; কিন্তু নরগণের मखरकत थे जाग चाराकाइड चानक नछ, छेक्ठ धनः প্রায় গোলাকার। এত্রভয়ের পার্থকা অভ্যস্ত অধিক। কিছু মধ্যবর্তী অবস্থাপর কয়েকটা মন্তক অলকাল হইল ভুগর্ভের নানা স্থানে পাওয়া গিয়াছে। যবদীপে, নিয়ান-**डार्थात्म এवः आत्र अक्टा कार्य के मार्या की गरावर्जी गर्मत** মাথার পুলি পাওয়া গিয়াছে। সে সকলের উপরি উক্ত করোটীভাগ বানরের জায়ও নহে, মাফুষের জায়ও নহে; मार्यमावि। युज्ताः (म मकन मलक रा भौरदत हिन. ভাছাদিগকে বানরও বলা যায় না, খানবও বলা যায় না। তাহারা বাদর অপেকা উরত, কিন্তু নর অপেকা অবনত। উহাদিগকে (১) জনৈক বৈজ্ঞানিক অর্ধ নর অর্ধ বানর যাহা হউক, উহারা বর্ত্তমান নরগণের বলিয়াছেন। श्रुक्विष्ठी ।

<sup>(</sup>I) Pithecanthropus erectus Protoman

14 206 9 অতি প্রাচীনকাল হইতে বর্তমান সময় পর্যান্ত নানা-ৰিধ লক্ষ্য একটা সংক্ষিপ্ত অসম্পূৰ্ণ ইতিহাসের আভাস निर्माय। श्रामा रशन रा अक नगर এই रवाकरन कान **हीत दिल्ला ;** পরে এক কোষ জীব লাত হয়। ইহারা অটে।লোর। † শ্রেণীয় অতিশয় ক্ষুদ্র জীব। তৎপরে ক্রমে भौराम् वह- काय युक्त दहेशा गठिल दहेरल नानिन; प्रवद्गाः (पदाप्रवन ও क्रांस वाजीत नागिन। कीर, प्रज्ञण, अधूक, जारहेनिया, मर्ज উভচর, সরিম্প, পক্ষী, खमानात्री (अगी, व्यवस्थि नद्र (अगी-साठामूर्णि अह Pititय कोव (नह विवर्ष \* वान कारम कारम भविवर्षिक इहेबी वर्षमान व्यवहा आख इहेबाहर । कीव त्मर कूछ ছুৰ, ৰাড়িতে ৰাড়িতে প্লিত্দিন যুগে (ভারে) অত্যন্ত वृद्धाकात रहेबा (गम। अ खरतरे त्रवित्र (भव भीमा। **डर शत इटेर** डरे नर्सर भगीत की वरनर किमा या टेर डर ; खेवर मूजम मूजन कोव यात्रा कांज इटेरजह जातात्रा अ অপেকারত অনেক কুদাবরব হইতেছে। कडकारम विवर्षित दहेश एक छक भागीए छन्न बहैमार्ड अवः बहैरङह् ; उशानि महे आहीनकारनत वह कूज भीव अर्थन ७ श्रीय छमाकार्वाहे वर्खभान ক্ষরিয়ান্তে। স্পার, সেই বৃহৎকায় ট্রাইলোবাইট, বৃশ্চিক

† Pro tozoa — व्यापि এই শব্দের বঞ্চারুবাদ করিয়াভি, প্রথমক।

মৎস্য, উভচর, সরিহপ্রগণ এখন কোগায় ? তাহারা বস্ব

শ্রেণীর অত্পাতে যেমন প্রকাণ্ড তেমনই ভাহাদিগের

\* জীব নলিতে উদ্ভিদ ও বুঝা শায়। কিন্তু তাহাদিশের কথা এ প্রবন্ধ উলেথ করিলাম না। এই মাত্র
বলিলে অপ্রাণন্ধিক হইবে না যে প্রথমজ শ্রেণী হইতে
কতকদ্র উল্লভ হওয়ার পর এমন এক সময় আসিয়াছিল লৈ তথ্নকার জীবুদেহ দেখিয়াহঠাৎ বলা যায় না, উহারা
উদ্ভিদ কি জন্ত। তৎপর হইতে তুই শাখা বিভক্ত হইয়া
এক শাখায় উদ্ভিদ এবং অপর শাখায় জন্ত্রগণ কাল
সহকাল আপন আপন পথে বিব্রিত হইতেছে।

म्बर ७ नानाविश कठिन बावत्राय अवर जीक बुद्धाहिए प्रक्रिक हिन। मत्न हत्र थिन, दिन विक्रम धनः অস্ত্রবল বিধাতার ধরায় যদি জয়যুক্ত হইবার বিধান ধাকিত তবে ইহারা কথনই চির তরে বিনষ্ট হইত না জীবন সংগ্রাম যদি সংগ্রামই হইত তবে ইহারা সে শংগ্রামে নিশ্চয়ই জয়ী হইত। কিন্তু তাহা হয় নাই। ভাছার। কালক্রমে বিল্পু হইয়া গিয়াছে। बल তिমি, इत्य दखी, उठ शकी देजानि इदे ठाविती রহৎকার জীবকে প্রতিনিধি রাখিরা ভাগারা নিঃশেব হইয়াছে। আজিকার দিনেও দেহের বল व्यक्तवारे यनि विधाकात क्रगांक क्यो रहेवात विधान পাঁকিত। তাহা হইলে সিংহ ব্যাঘ্র মরণোর্থ হইত না; প্রায় নিরম্র তুর্বল পিপীলিকা হংস ইত্যাদি জীব ধৱাতল ছাইয়া ফেলিত না; অসহায় অঃকিত দেহ যানবও জীবরাজার প্রভু হইত না। এখানে মনের ব্দন্ধ ধর্ম-ধৃত মনের ব্যায়। অন্য সমস্তই মূহর্তমাত্র † মন্তক উত্তোলন করিয়া পরক্ষণেই বিলুপ্ত হইয়া যায় এবং যাইবে ও।

যাহা হউক এ চিন্তা এ স্থলে সর্বাণা প্রাসঙ্গিক হইবে
না। আমরা বলিয়াছি, প্লিতিসিন্যুগে জীবনেহ বৃদ্ধির শেষ
সীমা প্রাপ্ত হইয়া তৎপর ছইতে ক্রমশং ধর্ব হইতেছে।
এই প্রখতা উত্তরোক্তর বাড়িতে বাড়িতে পরিণাম ফল কি
হইতে পারে ? এই প্রশ্ন অত্যন্ত চ্ক্রহ হইলেও এক কথা
অতি পরিধার—তাহা এই দে, যে বিবর্তন-বিধানাল্লসারেও
জীব প্রথমজ প্রেণী হইতে ক্রমে কালসহকারে মর
প্রেণীতে উপনীত হইয়াছে, সেবিধান্ত্র্যুগ্রুগ কর্ম্ম করিয়া
আজি অক্সাৎ ক্র্মন্তীন হইবার কোনই কারণ নাই। মর

<sup>†</sup> Ostrich "কৃইচারিশত অথবা হাজার বৎসরকে এই হিসাবে মুহুর্ত্ত বলার অভ্যক্তি হইতে পারেনা।"

<sup>\*</sup> Law of Evolation.

939

(मर

শ্রেণীতে আদিয়াই বিবর্তন বিধি নিরুম হইবে কেন ?
ইহা অবিশ্বাস্থ কথা। দেই প্রাকৃতিক বিধান নিশ্চয়ই
আজিও পূর্ববং ক্রিয়া করিতেছে। বস্তুতঃ ইহা কোন
অসুমান নহে, প্রত্যক্ষ দেখাও যাইতেছে। মরদেহ ও
বিবর্তন বিধিবলে আমাদিগের চক্ষুর সমক্ষেই পরিক্রিত
হইতেছে। কিন্তু সে পরিবর্তনের গতি কোন্ দিকে
চলিয়াছে?

এই প্রশ্ন বিবেচনা করিবার পূর্বে একটা কথা সর্গ রাধা আবশ্রক। ক্রমোন্নতি বাদ নিরবছিন্ন উন্নতির ইতিহাস নহে। আজি উন্নতি, কালি অবনতি, আজি উঠা, কালি পড়া; এইভাবে উঠিতে নামিতে উঠিতে নামিতে অবশেষে উঠাই থাকিয়া যায়। জীব এই ভাবেই বিবর্তন পথে অগ্রস্ত্র হইয়াছে। দার্নিলিং হিমালয়ান্ রেল পথে দিলিগুড়ি হইতে দার্লিলিং যাইবার সমর ঐ পথ বেমন একবার উঠে আবার নামে; রেলগাড়ীও যেমন একবার উঠে আবার নামে; কিস্তু শেষে সাত হাজার ফুট উপরে উঠাই পরিপামে সত্য হয়; সেইরপ জীবদেহ ও উন্নতি অবনতির পথে উঠা নামা করিতে করিতে পরিণামে কোথায় যাইয়া উপস্থিত ছইবে ? এ প্রশ্ন কুক্রহ কিন্তু অবন্ধ্য নহে।

আর একটা কথাও এস্থলে বলিয়া রাখা আবিশ্রক
ছইতেছে। আমি বার্ষার উন্নতি অবনতি কথা তুইটা
বাবহার করিতেছি; কিন্তু ইহাদিগের অর্থ কি ? জীব
বিবর্তনের দিক হইতে উন্নতি অর্থে দেহের অঙ্গপ্রচ্যাদাদির বাহুলা এবং ঐ সকলের ক্রিয়ার জটিলতা
বুঝায়। প্রটোজোয়ার দেহে অঙ্গ বাহুলা ও নাই,
দৈহিক ক্রিয়ার জটিলতাও নাই; স্মৃতরাং উহাদিগকে
অনুনত বলি। আর, স্কন্যপারীর দেহে অঙ্গ প্রভারত্ত্তির বিদ্যাক করিয়াও জটিল; স্মৃতরাং উহাদিগকে
উন্নত বলি। উপরে এই অর্থেই ঐ চুই শব্দ ব্যবহার
করিয়াছি। মানসিক অবস্থার বিকাশ দেহ যন্ত্রত্ব নায় ও॰
মৃত্তিক্রে উপর প্রধানতঃ নির্ভর করে।

अहे कथा अवन ताथिया (मिनिक हरेरव य सिर्मा মুডনের রুদ্ধির ও ধর্কভার সহিত, মনের 🕇 অবস্থা কিরুপ্ ছইতেছে। মন ও বৃদ্ধি প্রকৃতপক্ষে যাহাই হউক মাজিছ भणार्थके त्य छेशां मिराव कियात श्रामान्यत, त्य विवस्यः কোন সন্দেহ হইতে পারে না। স্বায়ু মণ্ডল এবং তাছার উচ্চতম বিকাশ মন্তিছ, ইহারাই মন ও বুদ্ধির অবশ্বন ষদ্ধ (organ) যদি তাহাই হইল, তবে গেৰিতে হইবে যে দেহায়তনের ভ্রাস র্জির সহিত মঞ্চিজের কিরুপ অমুপাতে পরিবর্তন হইতেছে। তাহা হইলেই মনের অবস্থা বুঝা যাইবে। কীটপতঙ্গ হইতে আরম্ভ করিয়া উচ্চ-रम्नी द वानत अगास्त (य गूर्ण (यक्तअ बात्र करत कोवरे कार्यः हरेग्रा थाकूक, भर्त भगदेश है दन्या निम्नाट्ड दय जाशामित्यक (पर क्यून वहेरन मिछक्छ क्यून हे दिल; (पर चि वहरू থাকিলেও মন্তিক ক্ষুত্ৰ ছিল \* উহার বহিয়াবরণৰ ক্ষুদ্রই ছিল। সে কালের ভাইনোসর, ঔেগোসরাস, কেনা কোভাস্ ম্যাষ্টোডন, এবং একালের তিমি অষ্ট্রীট উট্ট গণ্ডার হন্তী—অতি বড় প্রকাণ্ড দেহা হইলেও ইহাদিগের মন্তিদ পদার্থ কত অল্প: মাধার খুলির উপরিভাগও দেহের অহপাতে কভ ক্ষুদ্র! যে স্কুল (अकृष्ध शीन भीव (मकारण हिल अथवा अकारण अ আছে। তাহাদিগের অনেকের সায়ুমণ্ডল এবং মক্তিই নাই অথবা অতি কুদ্ৰ ও অহুনত । অতি নিয়শ্ৰেণীয়

<sup>†</sup> আমাদিগের শাস্ত্র মন একটা ইন্সিয় মাত্র,
আমি সে অর্থে এ শক ব্যবহার করিতেছি না; ইংরাজি
mind শক্তর প্রাচীন স্থার্থে ব্যবহার করিতেছি।
প্রকৃত প্রভাবে এই শক বারা আমি জীবাত্মাকে লক্ষ্যু
করিতেছি। যে সকল হলে মন শক্ষ থাকিবে, তথায়
অন্যন্ত্রপ বুঝা না তাহলে দেহাতিরিক্ত আত্মা পদার্থকে
বুঝিতে হইবে।

<sup>·</sup> Chimpanhe, orang Otung'

<sup>†</sup> अर्थाद गर्रन अष्टिम गर्द, क्रिया अ अप्रिम नरह

इर्ड बर्डिंगराये कारायं यश्चिक नारे, कारायं व्यात्र नारे। अस्तित्यात्रा, हिल्लिकिति । त्यनीत कीव मर्भा बल्कि व्यथा बाह्यक्षण व्यत्तिकत् माहे। द्खीत मेरिक मिलाशि व्यथना अनार अठार मिरागन जुनना कानरण द्विष्या यात्र (य এই উচ্চ শ্रেণীর ক্ষুত্র দেহী বানরদিগেরই মাজিক দেহের অমুপাতে অধিক এবং তাহার আবরণাস্থিও ক্রমনার বড়। প্লিওসিন যুগের শেষ ভাগ পর্যান্তও ম্বিক বৃক্ত শর্মপ্রকার জীবেরই দেহের তুলনার মন্তিক अधि जब हिन। किन्न देशनिन्तन कारन धर्याए পৈটে টাবিয়ারি বুগে মানবের আনির্ভাব সময়ে এবং किक पूर्व (मर्थ) यात्र (ग (मर्ट्ड क्कू प्रच गर्छ। সভিক ও তদাবরণান্তি অতাক বুধি প্রাপ্ত হইরাছে। প্রকৃত পক্ষে প্রাচীন ম্যাষ্টোডন্ অপেকা বর্তমান হস্তীর মন্ত্ৰিক অধিক; প্ৰাচীন ফেনা কোডাস্ অপেকা বৰ্ত্তমান শধের মণ্ডিক অধিক; প্রাচীন ডাইনোগর অপেকা বুর্ত্তিমান পো দর্শের এমন ি ভেকের ও সন্তিক অধিক। জাঁহারও বা প্রকৃত প্রস্তাবেই অধিক, কাহার ও দেহের अक्ट्रशाट व्यक्ति। व्यक्षालक (त माश्टकक्रीत (मधावैशा-ত্মেন যে প্রকৃত পক্ষে পূর্ব পূর্ব যুগ হইতে প্রিওদিন যুগের পর শন্তগণের দেহও যেখন আয়তনে কমিতে লাগিল, मिकिक श्रेमार्थक एकमनहे वाफिएक गानिन, वादर करिनकत्र ছইয়া উঠিব। মানবের আবির্ভাবের কিয়ৎ পূর্ব হইতেই मुकी (अगीरक जनः खंगानाग्री गनगरमा जरे व्यवद्वा बिश्नव ভाবে উৎপন रहेग। छादात कल छेरापिरभन বিশ্বনীয়তা † বাডিয়া গেল, এবং মানব উহাদিগকে দুইপালিত অবস্থায় আনিতে সমর্গ ইইল। নচেৎ शिविष्ट ना। छारेतानद्रक मानव कथनरे निका पिछ নাবে না, কিছ সে বর্তমান সর্পকেও শিক্ষা দিতেছে। विभावत निमित्तरे त्वन किंदू शूर्व इंग्रेट अङ्गित अञ्च दिएकिन।

শে বাহাই হউক, দেহের ধর্মতার সহিত মন্তিছ
পদার্থের বৃদ্ধি ও উরতি প্রাচীন মূল হইতেই লক্ষিত
হইতেছে। → নর বানর শ্রেণীতে এই অবস্থা বেরূপ
পরিকৃট হইরাছে, এমন আর কোন শ্রেণীতেই নহে।
এই অবস্থাকে বিণরীত অনুপাত বলা যাইতে পারে।
দেহ বড়, মন্তিক ছোট; দেহ ছোট, মন্তিছ বড়; ইহাকেই
বিপরীত অনুপাত বলা যায়।

এক্ষণে শ্বরণ করিতে হইবে যে মজিকই মনের যন্ত্র।
প্রত্রাং মন্তিকের অনুপাত প্রকৃত পক্ষে মনের অনুপাত।
বেস অনুপাতকে এ ভাবে ও প্রকাশ করা যার বে, দেহ
বড়, মন অনুনত; দেহ ছোট, মন উন্নত। কারণ মন্তিক
বড় এবং জটিল হওয়াকেই উন্নতি বলে। জীবাত্মা এই
যন্ত্র সাহায়েই আন্বিকিশশ করেন। যেমন বাস্ত্র যন্ত্রের
অপক্ষরতা হেতু উংক্র সঙ্গীতজ্ঞও স্বীর ভাগনা দেখাইতে
পারেন না; ভেমনই মন্তিক যন্ত্রের অনুনত অবস্থার
আন্থাও সমাক ভাবে আন্ধ-প্রকাশ করিতে সমর্ব
হন না। ইতর জীবে আত্মার বিকাশ কম, উন্নত জীবে
বিকাশ অধিক। এই নিমিত্রই বলা হইয়া থাকে যে
আধার ভেদে আ্যার বিকাশ বিভিন্ন প্রকার।

দেহের ধর্মভার সহিত যধন ল্লিওসিন্ যুগের পর
হইতেই মন্তিক্ষের বৃদ্ধি লক্ষিত হইতেছে, তথন বলিতে
হয় যে বিশ্বনি বশতঃ দেহের সহিত মনের অফুপাতঃ
বিপরীত হইয়াছে। এইরপ হইতে হইতে এমন এক
সময় আসিবে, (বোধ হয় এখনই আসিয়াছে) যধন
মনের উল্লিড † দেহের শক্তিকে অভিক্রম করিবে। এখনই
মন্ধ যাহা আকাজ্ঞা করে অথবা প্রভিপন্ন করিতে সম্ব

প্রাচীনতম কীটাছদিপের কথা পৃথক। কারণ

প্রিদিগের মন্তিক নাই। + অর্থাৎ আত্মার বিকাশ শক্তি।

ি বু এছলে মন শক সংকল বিকলায়ক ইলির আর্থে ব্যবস্থত ছইল। পরিভাষার অভাব বশতঃ এই সকল হরবহা উপ্তিত হয়।

+ Educability.

ৰয়, দেহ ভাৰার সহায়তা করিতে একবারই অসমর্থ। मन हवा गांदिक अथवा निज्ञातिक शहेशा नाना ज्था জাত হইতে বাসনা করে; বৃদ্ধি যদিও বা ভাহার উপায় উद्धारन कतिनः; किन्छ (मह क्षेत्रकन लाकि याहे छहे ধংশ প্রাপ্ত হয়। যোগ অভ্যাস ছারা আত্মার বিকাশ **मक्डि** वाष्ट्राहेटच श्रात व्यातरकत (१२ महे श्हेत्रा यात्र । ध कथा (वांदरत मठारे वन। याहेर्ड भाव (य वर्षमान ুলময়েই দেৰের শক্তি ছাড়াইয়া মনের শক্তি অগ্রসর হইয়াছে। খন এবং বৃদ্ধিকে একতা করিয়া আখা শব্দ वारदांत कतिता धक्या महाहे वना यात्र (य (मृद्ध मेकि অতিক্রম করিয়া আত্মার শক্তি বর্তমান কালেট ঈবং অএসর হইতেছে। ভবিষ্ঠে দেহ আরও ক্ষুদ্রতা প্রাপ্ত হইলে অথবা দেহ প্রায় লোপ হইলে, বিপরীত অমুপা তের নিয়মানুসারে, মন + অতিমাত্র বিকাশ লাভ-করিবে।

কিন্তু মানব দেহ কি আরও ক্ষুদ্রভার দিকে যাই-তেছে উহাকি লোপের পথে অগ্রসর ? যদি এই ( সুল ) দেহ ( বিবর্তনের নিয়মারুগারে ) লুপ্ত হয়, তবে নিসন্দেহে বলা যায় যে তখন আত্মার শক্তি অভায় व्यक्ति माजाय विनाम श्राश इटेरव। भूर्व्स विनशाहि, ক্রম-বিবর্ত্তন মানবে আসিয়া হঠাৎ বন্ধ হইবার কোন कारण नाइ ! विवर्छन विधि मान्दि अवशह कियानीन। এই বিধি বশেই মানব-দেহ ( অপর জীবের তুলনায়) स्वरम्बत्र भाष हिलाइंग्लि, देश कथकिए अमान कता यात्र। विवर्खानत अविधि श्रदान विधि अहे (य, (य अब क्षीवन ব্যাপাবের অসুপ্যোগী হয় তাহা ক্রমে পরিভ্যক্ত হয়; এবং যে অঞ্চ অনাবশ্যক হইয়া পড়ে ডাছাও ক্রমে পরি- . ভাল্ত হয়। আর একটী গুরুতর বিধান এই যে, যে অংশর ্ঞকণে এই প্রয়ের উত্তর সংক্ষেপে দিবার চেষ্টা করিব। আরতন, গঠন, দংস্থান এবং ক্রিয়া অন্থায়ী হইয়া উঠিয়াছে बारः भौग भग नाना एक एक नाना तल भ त्रवर्षान व वशीन ষ্টতেছে, দে অঙ্গ পরিত্যক্ত হইবার দিকে অনেক দূর .

অপ্রসর হইয়াছে। দৃষ্টাত হলে ইতর জীবের লেল এবং মানব হন্তের বৃদ্ধান্তুর্তের উল্লেখ করা যাইতে পারে!

সর্ব্বোচ্চ শ্রেণীর বানর ( ওরাং ওটাং অথবা সিপাঞ্জি ) ষ্থন চতুম্পদ অৰম্ভায় গভায়াত করা ত্যাগ করিল, তথ্ন বিবর্তনের বিধান অনুগারেই তাহার লেজ লুপ্ত অথবা প্রায় লুপ্ত হইয়া গেল। সানব শ্রেণীতে শিশু ব্যতীত অত্যে চতুম্পদভাবে গভায়াত করে না। মানবেরও পৃষ্ঠ-বংশের লেঞ্চের ভাগ গিয়াছে অথবা প্রায় গিয়াছে। এ नकन कीरवत (मरश्त वाश्तित (नकाश्म र अवीद অম্বিণ ওওলি ) সম্পূর্ণ বিনষ্ট হইয়াছে।.....মানব হভের वृक्षाञ्चरकेत भर्वत्रःथा। अन्न अञ्चलित भर्वत्रःथा। अर्भका একটা কমিয়া গিয়াছে। অন্ত অস্থুলির ধণ্ডান্থি সংখ্যায় जिनवानि, वृक्षाकृतित इरेथानि गाता। वृक्षाकृष्ठं त्रवा সময়ে বিধণ্ডিত হইতেছে, অথবা সরু এবং চুর্বল হই-তেছে। কথন কথন উহার পার্যে আর একটা ছোট "বৃদ্ধ" উৎপন্ন হইতেছে। স্তরাং পূর্বোলিখিত নিয়মানু-मात्त हेरा मारम कशिया वना यात्र (य तुक्षाकृष्ठ चात्र व्यक्षिक काल थाकित ना। जाः ওয়েডাসেম দেখাইয়া-(छन य পाয়ের অবস্থা আরও শক্ষ**টাপন্ন এই**য়াছে ; বোধ হয় অনতিবিলম্বে পায়ের মধ্যম অঙ্গুলি ব্যতীত আঞ্ मकमध्यनिर लाभ भारेत ; भारत्र कनिर्श्वान अधनहे প্রায় নিচ্ছিয়। যাহা হউক, উপরের বর্ণিত হুইটা বিক-र्खन विधित्र पृष्टे। अयज्ञान लाह्यत ७ तृक्षाकृतिज जिल्ला कविनाम।

কিন্ত ইহাতে আর একটা উদ্দেশত সিদ্ধ হইল। यानव (पर लाभ गरेवांत्र पित्र यारेएफ कि ना, व প্রামের উত্তরও বংকিঞিং পাওয়া গেল। যাহা হউক. ইতর জন্তর তুলনায় মানবের দেহ ক্ষয়ের দিকে ঘাইভেছে कि ना ? व्यथमण्डः উछमात्मत कथा वित्तरुमा कति। नकरन हैं कारनन मानराव हक्कूत गर्रन धवर छ। जात कित्रा ইতর মন্ত্রপত্লনার বিভাস্তই হীন। মঞ্চিকার চকুতেও

বছনংখ্যক অফিমুক্র " আছে, কিন্তু মানবের মাত্র একটা।
আবের চক্ষুক গুলুর দৃষ্টি করিতে পারে! কিন্তু মাফুব
ভাহার দখমাংশও পারে না। আমার বরসের মধ্যেই
এই ইচ্ছির ধ্বংশের পথে অনেক দূর গিয়াছে। এখন
আমালিগের বালকগণের ৬।৭ বৎসর বরসেই অনেকের
জিস্বা না দিলে চলে না। এইরপ পৃথিবীর প্রায় সর্বত্ত হোধা ঘাইভেছে। ইতর ভন্তগণের প্রায় সকলের চক্ষু
আপেকাই মানবচক্ষু ক্রিয়াহীন হইয়াছে এবং ক্রমে আরও
হুইভেছে।

কর্প ত মানবের নাই বলিলেই হয়। ইতর অন্তপায়ীসাবের কর্পতা রহৎ এবং এদিক ওদিক পুরিতে পারে;
মানবের কর্পতা কুজ এবং পুরিবার শক্তি প্রায় সকলেরই
নাই। আমি তুইজন মাত্র ব্যক্তিকে দেখিয়াছি বাঁহারা
কর্ণপত্র উদ্ধান্ত: নামাইতে উঠাইতে পারিতেন; একজন
সামার বন্ধ, এখনও জীবিত আছেন। মৃগ, অখ প্রভৃতি
অন্তপায়ী এবং কভিপর পক্ষী ব্হদ্রের শব্দ শুনিতে পার;
সানব তাহা পার না।

নাসিকার শক্তিইবা মানবের কি আছে ? এণ্ডি
endi) রেশমের প্রজাপতি (১) ঐ শ্রেণীর প্রীলাতীরকিবের ধেহণদ্ধ দেশান্তর হইতে প্রাপ্ত হয়। রাজ্যাহিতে
কিন্তি আমি রাজ্যাহী থাকা কালে একদিন একটী প্রীভাতীর পোকাকে বাহিরে একটা খাচার মধ্যে সমস্ত
দ্বাজি রাখিয়া পরদিন প্রাতে খাচার উপর পুংজাতীর
কিন্তী প্রজাপতিকে বিদিয়া থাকিতে দেখিয়াছি! এইটা
কোণা হইতে আদিল কিছুই, বুখিতে না পারিয়া হতবৃদ্ধি
হইয়াছিলাম। বোধহয় ইহাদিগের আশশক্তি অতাত্ত

প্রবল। কুকুরের এবং পিপীলিকার আণশক্তির আধিকা সর্বাধন-বিদিত। এ সকলের তুলনার মান্তবের স্থাণশক্তি

মানব-মুখের চোয়াল ছইটার অস্থি ছোট হইয়া দেহে দিকে সরিয়া আসিয়াছে। অস্ব, হরিণ ইত্যাদির ঐ ছই অস্থি সমুখদিকে অনেক দ্র বার্ক্ত। মৎস্য হইতে শারম্ভ করিয়া সিংহ, ব্যাস্ত এবং কোন কোন বানরের চোয়ালে যে শক্তি আছে, মাহুবের তাহা নাই।

দত্তের সংখ্যা এবং আরুতি মাসুষের কম এবং ছোট। ইতর জাবগণের অনেকের দন্ত সংখ্যাতেও অধিক, আরুতিতেও বড়। মাসুষের উপর পাটি দন্তের পশ্চাতে ভালুর কঠিন অংশে যে সক্ষ ঈষর্চ্চ আইলের মত লাইন্ দেখা যায় উহারা লুপ্ত দন্ত পংক্তের শেষ চিহু স্বরূপ আজিও বিদ্যান আছে।

উত্তমাদের এই দশা। ইহাতে কেবল দেখা যার মন্তিফের আবরণাস্থি অতি মাত্র বৃদ্ধিত, এবং মন্তিয়ও আবক হইয়াছে। এতব্যতীত আর স্কলেই ক্ষয় পাইতেছে।

এক্ষণে বক্ষের এবং উদরের কথা বিবেচনা করিতে প্রথমেই দেখিতেছি, মানবের গঞ্জরান্থির সংখ্যা ইজর জন্যপায়ী গণের অপেকা কমিয়া গিয়াছে। অস্তি জ্ব বিদান বিবেচনা করেন যে, যে মান্থি এক্ষণে মানবের প্রথম পঞ্জর তাহার উর্ব্ধে বর্ত্তমান গলদেশে আরও পঞ্জর ছিল; তখন গলা ছোট ছিল। প্রথম্ভলি মেরদণ্ড হইতে আদিয়া বক্ষান্থির দৈহিত সংলগ্ধ হওয়াই নিরম। কিন্তু মানবের নীচের ভূইটী পঞ্জর বিশেষতঃ সর্ব্ধ নিয়্দী এত ছোট ইয়াছে যে আর বক্ষান্থির সংহিত সংলগ্ধ হর না। বক্ষান্থিও পক্ষী শ্রেণীতে একটি গোটা অন্থি। কিন্তু মানবের উহা ব্যক্তিত হইয়া গিয়াছে।

<sup>+</sup> Lens.

<sup>(</sup>১) ইহারা কটি শ্রেণী; ভাষাতেই লোকে এণ্ডির পোকা বলে। কিন্তু উহাদিগের যথন পাথা হয় গৈ শিবস্থায় প্রশাসতি বলা যার।

t Sternum.

ক্রত্বাদ গুরুপারীগণের খাদ্যন্ত পৃষ্ঠ বংশের দহিত 
সংলগ্ন হইলেও পঞ্চবান্থির উপর স্বীয় ভার রক্ষা করে।
কিন্তু মান্থ্য উঠিয়া দাঁড়াইয়াছে। স্বতরাং তাহার খাদ্যন্ত্র
শীঠের দিকে কিঞ্চিৎ হেলিয়া গিরাছে এবং দেই হেতু
পঞ্চরান্থির উপর সম্পূর্ণরূপে ভার রক্ষা করিভেছে না।
এই হেতু এবং খাদ্যন্ত্র পশ্চাৎদিকে দ্বিয়া যাওয়ার উহা
যে পেশীবারা পৃষ্ঠবংশের দহিত সংযুক্ত তাহার উপর
অপেকাকৃত অধিক টান পড়িভেছে। ইহাতে ঐ
সংযোগপেশীর অপেকাকৃত অধিক বলক্ষয় হইতেছে।
স্বত্রাং কালক্রমে এই সংযোগ তুর্বল ও অবসন্ত হওয়া
সম্ভব। উপরক্ত ইতর ভারপায়াগণের খাদ্যন্ত্র মন্তর্কের
নিকটবর্তী ছিল; মানবের ঐ বন্ধ তদপেক্ষা কিঞ্চিৎ দূরে
সরিয়া গিরাছে।

মানবের হংপিওও ইতর স্তম্পায়ীদিগের ঐ যন্ত্র অপেকা মন্তক হইতে কিঞিৎ দুরে সরিয়াছে। হংপিও কৃতিপর রহৎ শিরা অবলম্বনে আবরণ পর্দার সংধ্য মকঃ গহবরে ঝুলিতেছে। সুতরাং ঐ শিরাগুলির কার্যাধিকা বশতঃ কাল ক্রমে হুৎপিওের আরও স্থানচ্যুতি অসম্ভব নহে।

শাসমন্ত্র এবং হৃৎপিণ্ড—উভয় যন্ত্রেরই স্থানচ্যতি হেতু মানব দেহে উহারা কভিপয় অভিনব পীড়ার অধীন হইয়াছে।

স্থাতরাং স্থানচ্চত হওয়ায়, ঝুলিতে থাকায়, গংযোগপেশী অপেকাকত ক্ষীণ ও তুর্বল হইবার সন্তাননা থাকায়
নবাসত পীড়ার অধীন হওয়ায়, জ্বপিণ্ডের ও খাস্যস্তের
অবস্থা শোচনীয় হইতেছে, ইছা বলা যাইতে পারে।

মানবের পাকস্থলীও ছর্দশাগ্রন্ত। গবাদি জন্তর
চারি কামরায় বিভক্ত পাকস্থলীতে অনেক কর্ম হয়।
উট্টের পাকস্থলী সকলেরই আশ্চর্যোর বিষয়। কিন্তু
সামবের পাকস্থলীর একটা মাত্র কামরা। ভাষাও স্থানে
স্থানে সৃত্তিভি(১) চইয়া পুরুত্তর এবং একাধিক ভাগে

বিভক্ত হইবার পথে দাঁড়াইয়াছে। উহার পরিপাক শক্তিনরশ্রেণীতে অত্যস্ত কমিয়া গিয়াছে।

আন্ত্র (২) ছুইটী ইতর গুরুপারীদিণের অপেকা দৈর্ঘোটি অনেক পরিমাণে ছোট ছইয়াছে। এতবাহী আর একটী অন্ধ-অন্ত্র ভূটিয়াছে, তাহা ক্ষুত্র এবং এক দিকে বন্ধ। এটা ভাগ কর্ম কিছু করে বলিয়া জানা বায় না। কিন্তু মন্দ কর্ম বাহা করে হাহ। প্রাণ-নাশক। এপেণ্ডি সাইটেস্পীড়া এই যথেই হয়।

इस ७ भएन व व्यवस्था विरवहना कविरम अथरमे मान भए**, वानत अवस्थात (मेरे मीर्थवाड, यानस्थत अ**ग्छ संक्षित হস্ত ছোট হইয়াছে। এই অন সেরণ বিবিধ পরিবর্ত্তরী व्यशीन इरेबार्ड, जाशाट रेशांत काबीर्ड अस्मर छेपाँडिक হইবার কারণ হইয়াছে। কাহারও অগ্রহত কাহার। বাহ, ছোট অথবা বড় হইছেছে; কাহারত এতছুভ্রেই তিনখানি অস্থিই কাণ ও চুকাল হইতেছে। তা'রপ্র विरम्भ खक्त इत कथा धहे (य, इन्ड कार्य मी हार्ज किर् নামিতেছে (৪)। উপরে বলিয়াছি, গলদেশে আরা भक्षत्र हिन । अवण, উरा गनामान किश्रमः (विद्या ছিল। তথন হন্ত ( যাহা পঞ্জা হিন্ত লির উর্দ্ধভাপ হইতে বাহির হওয়াই নিয়ম ভাহা ) বর্তমান বাত্রবের অথবা স্বমের কিছু উপর হইতে বাহির হইত। একণে কিছু নিম হইতে হত্ত বাহির হইতেছে। কালে আরও নিম্ন-'গামী হইবার স্থাবনঃ আছে। উक अवश भगमाष्ट्रिक অবস্থা ইহার বিপরীত। ডাঃ ওয়েডাদে ম দেখাইয়াছেন

- (2) Intestine.
- (3) Appendix.
- (4) Whereas the shifting of the fore limbs takes place from before backwards, that undergone by the hind limb is from behind forwards, i. e, towards the head.

Vide "Weidersheim's structure of Man" paper 94-95.

<sup>(1)</sup> Constriction.

আৰু এবং পদ্বতি (সংক্ষণে পদ বলিব) একণে বলিছা উপরে উঠিতেছে। স্তরং হল্পের নিম্নির উঠিতেছে। স্তরং হল্পের নিম্নির এবং পাদের উর্দ্রগতির সহিত পঞ্জরের সংখ্যা হাস একলা বিবেচনা করিলে মানবদেহ(১) কোন্ পথে একছে ভাহা বৃঝিতে বাকী থাকে না। চক্ষু গেল, বলি এবং খাস্যস্ত্রের অবস্থা শক্ষাপার; পাকস্থলীর ক্রিক্রের, বিশেষতঃ অন্ধান্ত্রের অবস্থা বিপদক্ষনক; শাস্ত্রের অবস্থা বিপদক্ষনক; ক্রিক্রেরের, বিশেষতঃ অন্ধান্ত্রের অবস্থা বিপদক্ষনক; ক্রিক্রেরের, বিশেষতঃ অন্ধান্তর অবস্থা বিপদক্ষনক; ক্রিক্রেরের, বিশেষতঃ অন্ধান্তর অবস্থা বিপদক্ষনক; ক্রিক্রেরের, বিশেষতঃ অন্ধান্তর অবস্থা বিপদক্ষনক; ক্রিক্রেরের ক্রিক্রের হলে চিপিনা মারিবার উপক্রম ক্রিক্রের; অন্ধান্তরি (৩) যা-দেশাপার;—এ অবস্থার ক্রিক্রেরের অন্তির সম্বন্ধে সন্দিহান হই, তবে অসম্বত্র পারে না। এই অস্থি মজ্জা পেশীর বন্ধবৃত্রল মানব ক্রিক্রের আর দীর্ঘক্রেল থাকে না। ইহার আনুদ্ধাল

শ্রেষ্ট পৃথিবীতে এককালে জীব ছিল না। পরে অতি

শ্রেষ্ট পুল্ল কৌবের আবির্ভাব হইল। তাহারা ক্রমো
শ্রেষ্ট বছ-কোবজীব জাত হইল। ইহাদিপের দেহ

শ্রেষ্ট বছ-কোবজীব জাত হইল। ইহাদিপের দেহ

শ্রেষ্ট বছ-কোবজীব জাত হইল। পরে ক্ষুত্ত হইতে

শ্রেষ্ট কিন্তু এই কি শ্রেষ্ট অভিনয় না, তাহা

শ্রেষ্ট পারে না। বিবর্তন বিধি মানব পর্যন্ত পোঁছা
শ্রেষ্ট পারে না। বিবর্তন বিধি মানব পর্যন্ত হইতে

শ্রেষ্ট পারে কালে অথবা কাল্য প্রশালি অন্ত প্রকার হওয়া

শ্রেষ্ট কালে ক্রাং ক্রেছ ইহার ক্রিয়া সম্পূর্ণ নির্ব্ত হইতে

শ্রেষ্ট কালে ক্রেছ হইলার ক্রেয়া তিরও শেব সামা গণ্য

শ্রেষ্ট পারে না। মানব অপেকা উর্গ্রন্ত প্রীব হইবেই,

শ্রেষ্ট স্কর্তঃ হইলাভেও।

ি শুলু পেৰের কথাই বলিভেছি। ক্রিড বৃদ্ধ - Trunk. বিশ্বসামিক ক্ৰিচাফুলি প্ৰায় লুপ্তাই হইয়াছে।

य नकन भीर आठीन कान बहुत्छ अ शहास विश्व হইয়াছে, ভাষারা সকলে উর্ভ হর নাই। বংশু উভচর बहेबार्छ, উচ্চরেরা স্রীকৃপ बहेबार्छ, স্রীকৃপ স্ঞা रहेशार्छ। किञ्च नकन मर्च डेल्ड रत्न मार्ड, नकन উভচরও সরীমূপ হয় নাই, সকল সরীমূপও পদী শ্রেণীতে উन्नज दम नाहे। मिल्लाकी, अग्नार अहार अवन्य जा**रह**। मानवकाण बहेशाह विलग्नाहे छेशाता विनश्चे द्रश्माहे । अबू-মত এবং উমত জীব একরা বাদ করিতেছে। জলে, স্থান বা वाधुमछल यादात (य शाम छेनरवाती तम तमहे शाराहे वात কছিতেছে। বিবর্তন বিধান মতে অন্যত্ত বাদ করিয়া জীমিত গাকিতে পারেই না। যদি ইতর জীব অপ্রেকা উল্লাচ মানব উহাদিগের সহিত একত্র এক সময়ে বাস কল্প সম্ভব হইয়াছে, তবে মানব অপেকা উন্নত জীব মামবের সহিত বাস করা কথনই অসম্ভব হুইচে পারে না। সম্ভবতঃ তাহারা (বিবর্ত্তন বিধান সভেই) মানব অপেকা আয়ও উল্লভ হইয়া মানব গণের সহিত একএ এক সময়েই বাগ করিভেছে। यहि এই সিদ্ধার্থই সমত হইল তবে বেস্তান ( অথবা যে লোক ) তাহাদিপের উপযোগী সেই স্থানেই ভাষারা বাস করিতেছে ইহা অপ্নির করিতে হয়।

কিন্ত কীনৃশ স্থান তাহাদিগের উপবোগী ? যতমুর
বুকিলান তাহাতে মানবের সুল দেহ স্থানী হইবে না;
বিবিধ অন্ন প্রত্যুদ্ধ বেরূপ কীল, হর্মণ, স্থানচ্তি, তল
এবং নানারূপ পরিবভনের অবীন হইঝাছে ও হইতেছে,
তাহাতে এই দেহ স্থানী হইবার সন্তাবনা বিরল; বোধ
হয়, নইই। ভাষা হইলে সুলদেহ বুকি এইবানেই
শেষ হয়। বেমন প্রিওসিন্মুগ জন্ত দেহের বৃত্তিই চরম
সীমা হইয়াছিল, ভেমনই সন্তবতঃ এই পোই-ইানিয়ারি
মুগই বর্জমান মানব দেহের শেষ সামা হইতে পারে।
মানব অপেকা উন্নত জীব মধন এ সুন্থের সুল্লেই জারে।
হওয়া গন্তব ইইতেছে, তথ্ন ভাষালিবের ব্রেক্ত ক্রিয়ার
হওয়া গন্তব ইইতেছে, তথ্ন ভাষালিবের ব্রেক্ত ক্রিয়ার
হওয়া গন্তব ইইতেছে, তথ্ন ভাষালিবের ব্রেক্ত ক্রিয়ার

कुनदेशक विमेड कहरण, जीवाचा रुख-दमक जाला कतिया উপর্ক্ত পোকৈ অন্ত আকারে অবস্থিতি করিবেন— **এইরণ সিদ্ধান্তই স্মীচান হইতেছে। মানবের গরে**, আরিও বিবর্তুন হইবে-ই; হওয়াছেও বা; স্ভবতঃ ইইবাছে ই। সে বিবর্তন সুলদেহে নহে। সেই উনতি আমাদিপের পূর্ব পরিচিত উরতি নছে। এ ক্রের ্**উন্নতি অর্থে অস** বাছ্যা এবং ক্রিয়ার জটিলতা বুঝাইবে मा। এ क्लाल कुलानर नार्ड, कम श्रान्त रहेता विश्वार । আর, সেই ক্ষরের স্থিত "বিপরীত অন্তপাতে" মনের किया दक्षि পাইয়াছে। পুরেষ যাহ! ভারতে বুঝা যাইতেছে যে, দেহ-ক্ষের বিপ**ী**ত অমুপাতে আত্মার শক্তি অত্যন্ত বর্দ্ধিত হইয়াছে। এই স্থাল দেহ সদৃশ অতি মাত্র শক্তিশালী জীবালাও উপযুক্ত **আধার হইতেই পারেনা। বলিয়াছি, এখন্ট বেহের** উপ্রোগীতা ছাড়াইয়া জীবাত্মা অনেক দুর অগ্রসর হইরাছে। এ দেহ পশ্চাৎ পড়িয়া রহিল; জীবা্মা এ ি**দেহের থবংশের** সহিত অন্ত উপযুক্ত আধার এহণ করিলেন। এইরপ বিবেচনা সঙ্গত প্রতিপন্ন হইয়া আনিতেছে। প্রটোলোয়া হইতে ওরাং ওটাং পর্যান্ত বহু अख्य (पृष्ट विन्दे इंडेन. चावात वहविध (पृष्ट छै८ पन इंडेन। ইহা দেহের শক্তি নহে। ইহা পারিপার্শ্বিক অবভার **पंक्ति नरह।** कीत-विवर्त्तन नका-युक्त । भानवर्त्तह अतः পাকৃতিক বেষ্টনী ইহাই বুঝাইতেছে। আদি হইতে যে পাৰা এক দেহ ভাগিতেছে অভ দেহ গডিতেছে. সেই আত্মাই অবশেষে তুল-দেহ ভাঙ্গিয়া মানবের একাংশকে উন্নত (এ স্থলে হক্ত দেখী) জীবে বিবর্তিত क्रिटिंग्डा केन्न (महीनन (मन, यक बाहाई इडेन, विश्वामित्रात्र (य नाम हे दिखा याछक, मानवात्राका उन्हा, श्रन-राश्च-होन, राश्वराष्ट्री कीव यथार्याणा लाटक विवर्धिक इदेश विकासान चारहन अवश तिहे तिरहत्र छेशयुळ जीवन ক্রিনির্বাহ করিভেছেন, একবা সহকে অস্বীকার क्या शक्ष मा। यनि हेरा मछा रहे, তবে छाहादा छून

দেহের সীমানক শক্তি হঠতে মুক্ত হটর। হবিংশন করি কালেক কিছে কালেক করি কালেক করে কালেক করি কালেক করি কালেক করে কালেক ক

এ স্থলে প্রশ্ন হইতে পারে থে, (মানব) বেছ কর্ব প্রাপ্ত ইইতেছে এবং বিবর্তন ক্রিয়া মানবে শানিয়াই নিরত ইইবার কারন নাই, এসকল কথা খীকার করিবেজ মানব অপেঞ্চা উন্নত বিবর্তন যে স্ক্রাবস্থা তাহার করিবেজ মানব অপেঞ্চা উন্নত বিবর্তন যে স্ক্রাবস্থা তাহার করিবেজ করিয়াছেন, এবং ডাই প্রানাদি শান্তে লিপিবদ্ধ করিয়াছেন, এবং ডাই প্রানাদি শান্তে লিপিবদ্ধ করিয়াছেন। ছিত্তীয়াল মানব অপেঞ্চা উন্নত বিবর্তন স্থল দেহে ইইলে তালা মূলকের অথলাকে ধানার প্রমানাভাব, স্বতরাং প্রবৃত্ত ভ্রের আলোচনায় ক্রে দেহ থীকার করিতে মান্ত ভ্রের স্বানাহিক বিবর্তনকে জন্মত্র ও বীক্ষাক স্ক্রত হইতে পারেনা।

শতান্ত নিরশ্রেণীর কভিপর শীব দেছ বাতীক্তা

<sup>†</sup> Spermatozoon.

বংশকি ও আভিছ : জনার মধ্যে নিলিত হর, তথন

ক্রিটাই লেজ প্রিয়া বার; ক্রতরাং উত্য গোলকের
লিলাই মিলিত হইরা একটি ক্ষ্ম ডিছবং বৃজ্ঞ-কোষ প্র
ক্রিটাই হয় । এই বৃজ্ঞ কোষটি বরার মধ্যে বাড়িতে
ক্রিটাই নিষ্ থান পরে ভূমিই হয়; এবং জীবিতকাল
ক্রিটাই নানাবিধ কর্ম করিরা অবশেষে মৃত্যুম্থে পভিত
ক্রিটাই নিষ্ একজন ব্যক্তি। ইহার দেহ গঠন পিতৃ মাতৃ
ক্রিটাই লাই একজন ব্যক্তি। ইহার মনও তাহাদিগের ভার
ক্রিটাই লাই একজন ব্যক্তি। ইহার মনও তাহাদিগের ভার
ক্রিটাই লাকে । পিরার্সন্ দেখাইরাছেন যে দেহ ও মন
ক্রিটাইনিই একজন ব্যক্তি হয়।

ত্র প্রকাশের ব্রিতে হইবে যে সাতার ন্যার, মাতামহের বিষয়ে অথবা প্রমাতা মহের ন্যায় ; কিছা পিতার ত্রায় বিচামহের ন্যায় অথবা প্রপিতামহের কিছা অন্য কোন ব্যক্তি কেন হয় ? মোটের কার্যক্ষের ন্যায় জাতকের আকৃতি কেন হয় ? মোটের কার্যক্ষের ন্যায় জাতকের ন্যায় হইতে পারে, অথবা কার্যক্ষের কর্ম নাসিকা প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ অক্ষণ্ড হইতে পারে। এরপ হয় কেন ?

পুংকটি এবং ত্রীডিন্থের প্রত্যেক অংশই বংশাস্ক্রমের বিশাসক মহে। ইহালিপের প্রত্যেকের মধ্যেই এক কটী ক্ষত্র বিল্বং স্থান আছে; ঐ স্থান অন্য স্থান বিল্বং স্থান আছে; ঐ স্থান অন্য স্থান বিল্বং প্রাক্তি কেন্দ্রে বিল্বং উহা কেন্দ্র স্থানে স্থিত নহে, উহার নাম মাত্র ক্ষেত্রিক্ রাধিলাম। এ বিবরে প্রংকটি ও ত্রাডিন্থের ক্ষিত্রিক্ রাধিলাম। এ বিবরে প্রংকটি ও ত্রাডিন্থের ক্ষিত্রিক্ প্রকার। এই হেন্তু আমি অভঃপর মাহা

পুৰেটির আকৃতি বেলাচির ভার, তাহা বলিয়াছি। বিশ্ব মাধার খোলাকার অংশ মধ্যে পিছিল (প্রায়) তরণ জীববন্ত । আছে। তাহারই এক হানে কৈ আ বিশু আছে। এই কেন্তা বিশু মধ্যে বিভিন্ন জীবের বিভিন্ন সংখ্যক কক্ষ আঁহিস্-বং ভন্ত । আছে। সেই তন্তগুলি, কভিপন্ন বিশু বিশু জীব বন্ধর দানা ‡ একতা সজ্জিত হইয়া গঠিত হয়। বিশুগুলি বংশাছ-ক্রমিক লক্ষণ সকলের বাহক। ইহারাই পিতা মাতার এবং পিতৃ মাতৃ কুলের পূর্ব পুরুষগণের দৈহিক ও মান্সিক লক্ষণ অপভ্যের দেহে উৎপন্ন করে।

একণে বিবেচনা করিতে হইবে যে ইহারা কত ছুল। পুংকটি অতি কুদ্র এক-কোষ জীব। তাহার মধাই কেন্দ্র বিন্দু আরও কত কুদু; তমাধায় খাইস্-গুলির দানা আরও কত কুদ্র!!! অমুবীকণ সাহায্যে किन गडि (मधा यात्र। এই मानाश्वनित ग्रंदा वःनाञ्चकत्मत्र गक्न मकन अष्ट्रत आहि; अनेका त्राह পিতার নাসিকার জায় জাতকের নাসিকা হইল; যাতার পদের ন্যায় পদ হইল; পিতামহের চক্ষুর ভায় চক্ষু এবং মাতামহের কটি দেশের ক্যায় কটি হইল। 🔊 ক্ষুদ্রাদ্পি ক্ষুদ্র দানার মধ্যে এতগুলি ব্যক্তির ভিন্ন ভিন্ন चारकत छेलानान [ श्वानाভारत मिनिया ना निया] शृथक बाठरकत कर्व शास्त श्रकाणिक दम्र मा ; माठात शहर জাতকের কটিতে প্রকাশিত হয় না। বেরূপ ভাবে चार्यात्मत्र (म अन ज्नावशात्र (य एवं हात्न यवाक्तरम् উৎপন্ন হয় ভাষা একপ্রকার মোটামোটি জানা আছে।

<sup>1</sup> Oyum.

T Zvuote.

Piccieus.

<sup>·</sup> Proto plasm.

t Chromosome. भानत्वत > कि छक्

<sup>‡</sup> Id.

(FIE

क्रांबरिक इमिक्रांकि रहेरक खात्र + (तथा यात्र ना। অভরা বহু পূর্বপুরুষের বিভিন্ন অকের উপাদান স্কল শহাত হন্ধাবস্থা প্রাপ্ত না হইলে কি প্রকারে পুণক ভাবে थै क्यां जिक्का भारति मानात माना भारतः ; अवः यथा त्रमरत्र यथा श्वास्त विक्रस्त हरेत्र। काल्यकत्र দৈহে পূর্ব পুরুষগণের বিভিন্ন লক্ষণ প্রায় তুলা আরুতিতে উৎপন্ন করিতে পারে ? ঈদৃশ চিম্বাকে এই পৰে আরও প্রসারিত করিলে প্রতীয়মান হইবে খে পূর্বে পুরুষগণের বিভিন্ন অন্স প্রতাস বাহা প্রায় তুল্য আকৃতিতে ভাতকে সংক্রমিত হয় তাহা অবশুই হক্ষভাবে ব্যতীত সুলাকারে হইতেই পারেনা। পিতার স্থুল নাসিকা, মাতার ঞ্লপদ কৰ্মই সুল আকারে জাতকে নীত হয় নাই। তাহা-षिरात्र मानिकात वर्षता भएतत (कान छेभानाम दाता বাতক গঠিত হয় নাই। সে গঠিত হইয়াছে শুক্র শোণিত মারা; এতত্বভয় পিতৃমাত দেহের স্থান বিশেষ হইতে জাত হয়; তাঁহাদিগের নাগিক। অথবা পদ হইতে নহে। ্মুভরাং তাঁহাদিগের এবং আরও উর্দ্ধতন পুরুষগণের আক্রতি (মোটের উপর অথবা আংশিক রূপে) জাতকে সংক্রিমত হইতে ক্লাবস্থায় ভিন্ন অন্যাবস্থায় হইতে পারেনা। পুল বস্ত যত ক্সুই হউক, বহু পুরুষের অকের উপাদান স্থল অবস্থায় কুড়াতি কুড় দানার মধ্যে কোন মতেই স্ব স্থানে পুৰক ভাবে ৰাকিতে পারে না। এইরপে আমরা ফ্রুদেহ অমুমান করিতে বাধ্য। বংশামুক্তম শারের এবং ক্রণতত্ত্বে করেকটি কথা विषिश्व अधि मरस्थाल वना रहेन, उथालि এकवा मुख्यकः প্রতীয়মান হইয়াছে যে ঐ উভয় তত্ত্বে জ্ঞাত বিবয় সকল সুমাকরণে ভ্রমসম করিতে হল দেহ বীকার করা चावनाक रहेश शर्छ। व्यवणः रुख (प्रदर्क बहे अन्तर्भ

কাল চলার্মত একটি অনুমান বলিয়া অলীকার করিছে কোন আপত্তি হইতে পারে না। বিশেষতঃ ঘণন প্রক্রবগণের মানগিক অবস্থার বংশসুক্রম চিন্তা করিছে যার তথন প্রদেহের অন্তিও অলীকার করা, কেবল রাজি কাল চলা অনুমান নহে,তদপেক্ষা বলবৎ স্বীকার্য্য ‡ মধ্যে গল্প হইবার যোগ্য হয়। অন্ততঃ একথা নিশ্চমই মধ্যা যাইতে পারে যে, ক্লেদেহের অন্তিও ইউরোপীয় বিজ্ঞান লাগ্রে পূর্ব্বে যতন্ত্র অসন্তব্য বলিয়া বোধ হইত, একংশে ততদুর বোধ হইতে পারে না।

একথা সত্য হইলে, মানব দেহের অল প্রত্যালির
ক্ষয় সম্বন্ধ আলোচনা কালে আমরা যে মূল দেহের
নাশ ও স্থালেহের উৎপত্তি হইয়া আরও উরত' বিষ্ট্রন
হইবে অথবা হইয়াছে বলিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছিলাম ভাষা
আবোক্তিক কিছা অসন্তব বলা যায় না। ক্রম-বিষ্ট্রব
যথন মানবেই শেষ হইবার কিছু মাত্র কারণ নাই, এবং
মানবের মূল দেহ যথন ক্রমশঃ ক্ষয় পাইবার প্রে অ্রান্থ
ইয়াছে, তথন মানবের পরবর্তী বিষ্ঠনে স্থা দেহী

অতি প্রাচীনকাল হইডেই এতদেশীয় দর্শন পাছ মুল, হল্ম ও কারণ, এই তিবিধ দেহ স্বীকার করিছা। আসিতেছে। সুলদেহ প্রত্যক্ষ সিদ্ধ; হল্ম দেহওঁ সম্প্রক অনুমান ঘারা প্রতিপন্ন হয়। কিন্তু কারণ দেহ কি ? এ প্রশার উত্তরে এই মাত্র বলা যাইতে পারে বে ক্রণ ভল্ম ইহার উত্তর দেওয়া তৃঃসাধ্য বিবেচনা করিলেও সম্পূর্ণ রাণে অসাধ্য বিবেচনা করেনা।

শ্রীশশধর সাম

<sup>■</sup> Monstrositees ব্যতীত ৷

<sup>·</sup> Working hypothesis

<sup>‡</sup> Theory.

# ৰাষ্ঠ্য সমাজ বন্ধনের করেকটি শুর।

শানি বর্ত্তমান প্রবাদ্ধ যে বিষয় আপোচনা করিতে বিষয়িত, সে সম্বন্ধে আমার অনুসদ্ধান এখনও এত জী দুর অগ্রসর হয় নাই, যাহাতে সাহদ করিয়া কোনও উপ্রাক্তি করি। আমার অনুসদ্ধান চেন্তায় আপাততঃ আমার যাহা মনে হইয়াছে তাহারই কয়েকটি করা এই প্রান্ধ বিলিবদ্ধ করিতেছি। ভরসা করি অভিজ্ঞ ক্রিক্তির আলোচনা দারা এ বিষয়ে আমার শেব সিদ্ধান্ত স্থ্যুব্দি স্থায়তা পাইব।

বাৰী হার পাস্তের ইতিহাস আলোচনা করিয়া Sir stensy Maine যে সিদারে উপস্থিত হইরাছেন তারা প্রিকিট্ড। তাহার সংক্ষিপ্ত প্রকল্টের বারা আমার বা বিষয়টি উপস্থিত করিব। তাঁহার মতে সমাজের কাপ্রবিষয়ি উপস্থিত করিব। তাঁহার মতে সমাজের কাপ্রবিষয়ি। যথন রাই গঠিত হয় নাই তথন পরিবারই জিলানিস, mund) সমাজ বন্ধনের শেশ কথা। দেই কিনারে পিতার অব্যাহত অধিকার ছিল এবং সেই মিনারে পিতার অব্যাহত অধিকার ছিল এবং সেই মিনারে ক্রিট্রা ক্লা লাবিপত। তাঁহার ছিল। তার পর ক্রিবার বাজ্যা ক্ল (clan, gens, hans) গজ্যা উঠে, ক্রীজিয়া গোত্র (Tribe) হয়, Tribe হইতে state বা

ক্ষাৰ অবস্থায় গৃংপতির অধিকার যেমন অব্যাহত কো, যিতীয় অবস্থায় কুলপতির গৃহপতির উপর তেমান অসম অধিকার ছিল। তেমনি গোত্রপতি ও রাষ্ট্রপাঙর অবিকাম গৃহপতির অধিকারের ছায়াবলখনে গঠিত বিষাছিল।

ৰাঙ্কের স্টে হইতে আইনের উৎপতি। কিন্তু নির্মাণ ব্যবহার (litigation)আদি ব্যবহার রাজার নি সিপ্রান্ত্রিক, সুন্ধ কোনও আইন কাজন ছিল না, কালি নাজার প্রসালেশমূলক নিপাতি(Themis,doom) কিন্তু শালেশ্য ভার বিনা বিচারে সীকৃত হইত। তার পর এই সমুদর Themis হইতে ক্রে আচার ধর্মের customary law সৃষ্টি হয় এবং তাহাই ক্রে বিধিবদ হইয়া সংহিতা code এর আকার ধারণ করে।

Maine এর এই অভিমত লইয়া অনেক বাস বিভঙা পাশ্চাতা জগতে হইরাছে এবং এ সম্বন্ধে নানারপ সাধুনিক মত প্রস্তাবিত হইরাছে যাহা Maine এর অনেকগুলি কথাই শ্রীকার করে। সে সকল বিস্তারিছ ভাবে মালোচনা করা আমার অভিপ্রায় নয়। ভারতীয় আর্যাগণের প্রাচীন ইতিহাস আলোচনা করিলে এই মতবালে করেকটি গুরুতর আপত্তির হেতু দেখাবায় তাহাই আমি এ প্রবন্ধে দেখাংতে চেটা করিব।

রাষ্ট্রের পূর্বের ব্যবহার ছিল কিনা পে বিষয়ে সিদ্ধান্ত একটা কথার মার পেচের উপর নির্ভর করে। যাদ ব্যবহার অর্থেধর,

স্থত্যাচার ব্যাপেতেন মার্নেনাধর্বিতঃ প**রৈঃ।** আবেদয়তি চেন্ডাজ্জি ব্যবহারপদং হি ত**ং।** 

তবে শ্বালা না থাকিলে অবশু বাবহারই হইতে পারে না;
আইনও হইতে পারে না। বেছাম, অন্তন প্রমুধ
বাবহার গতবেতার মতেও রাজা যে বিধান ক্ষরিবেন
তাই আইন। এ কথা বলিলে কাজে কাজেই বলিতে
হয় যে রাট্র গঠনের পূর্বে আইন থাকিতেই পারে না।
কিন্তু আইন বা law বলিতে যদি আমরা বুঝি সেই স্ব
স্থান্ত নির্মি, যার হারা স্মান্তভুক্ত ব্যক্তিদের
অধিকারের ক্ষেত্র নির্মীত হয় এবং যাহা লোকে কর্তব্য
বোধে অমুসরণ করে, তবে একথা না বলিয়া উপায় নাই
যে সে law বা আইন রাষ্ট্র গঠনের পূর্বে হইতেই স্থাতে
বর্তমান ছিল। রাজার বিচার ও সিদ্ধান্ত (Themis)
হইতে আইনের উৎপত্তি হওয়া দ্রে থাকুক, আইন
বা ধর্মবাবস্থা রাজা হাটির পূর্বে হইতেই প্রচলিত
ছিল।

আমাদের প্রাচীন ব্যবহার পাল্লে বে ব্যবহারের করা আছে তাহা রাজার অপেকা করে পদেহ নাই। কিছ নাজা হাড়াও যে জন্ম বিচারক ছিল ভাষার নিশ্চর প্রমাণ জাছে। কুল, শ্রেণী, পূগ, পণ, ব্রাত, প্রভৃতি নানা নাম দিয়া কুল ও নানা এক ব্যবসায়ী বা একধর্মী বা এক দেশবাসী বাজ্জির সমবায় (guild) যে ব্যবহাবের নিরূপক এ কথা বহু স্থানে আছে। ভাষা ছাড়া পশ্যিদ্ বে ধর্মনির্দ্দেশক— যং সা জতে স ধর্মঃ স্যাৎ— এ কথাও ক্ষান্ত ভাবে নির্দ্দেশ করা হইয়াছে। রাজাও প্রাচীনতম ব্যবহার শাস্ত্রেও ধর্ম নিরূপণে স্বাধীন বা স্বেছ্যাচারী বলিয়া কল্লিত হন নাই। প্রভৃত্ত ভিনি পরিষদ্ বা সভাস্ত বিদ্যা ব্যোরন্ধগণের, স্থান বিশেষে ক্রমি-বণিকক্ষীদ কারুগণের নির্দেশ অনুসারে ধর্ম নিরূপণ করিবেন ভাষা বার বার নানা ভাবে নির্দিষ্ট ইইয়াছে, ভাষা আমি প্রবন্ধান্ত দেখাইয়াছি।

ধর্মশাম্বের এই দকল বিধান আলোচনা করিলে এই সিদ্ধার সমীচিন বলিয়া বোধহয় যে সমাজের আদিম ভরে বিচার কার্যা এবং ধর্ম নিরুপণ রাজা করিতেন না। শাস্ত্রীয় ধর্ম নিরুপণের কর্তা ছিলেন পরিবদ অর্থাৎ কুলের মাক পণ্ডিত গোষ্ঠী। পরবর্তী কালে স্মৃতি শাস্ত্রে পরিষদের অর্থ অক্তরূপ হইলেও প্রেস্মতঃ পরিষদ্ বলিতে কি বুঝাইত বুহদারণ্যকের "পাঞ্চালানাং পরিষদ মাজ-পাম" এই বাকো আমরা ভাহার ইন্সিত পাই।' প্রত্যেক কুল খতন্ত্র অংশ্র পরিষদ দারা অধিষ্ঠিত ছিল। এই **পরিষদ সেই কুলের মাুল পণ্ডিত গোষ্ঠীর নাম।** পণ্ডিত-গণ নানা শান্তের আলোচনায় জীবন অভিবাহিত कतिराज्य । त्यांगा भरमार यता छै। राहा है १ वाँ र। यहा ্দিত্ম এবং সকলে অবনত মন্তকে গে ব্যবস্থা এইণ ঁ**করিত। তাহাডাড়াকৌ**লিক ধর্ম বা শ্রেণীগত ধর্ম ्विष्ट्य कृत्यत ध्वरः (अभीत व्यक्षिष्ठीकृत्रम धर्म नावश्रा कविरुजन। दाक्ष्मक्ति नावशांत्र निर्गर कार्या दलार्थन ক্ষরিবার প্রেট সমাজের এইরেণ নিয়ম ছিল। রাজা ুৰ্থন বিচার কার্য্য হাতে কট্রেন তথ্য সেই ব্যবস্থাই ভিলিল, তবে এই প্ৰ বিচার রাজ্বর সভায় ব্যিয়া ২ইতে∙ आधिक एरेग ।

শংঘদে রাজা একটি সুপ্রতিষ্ঠিত ব্যাণার। বাজা রাজাও দেবতার রাজা সম্বন্ধ আমরা সংখদে ভূরি ভূরি বাকা পাই। তাহা হইতে দেবিতে পাই যে রাজা জাতির সামরিক নায়ক, হাজা সমাজের প্রধান, রাজা প্রদায়ও দেবতুল্য, তিনি শক্তিমান ও ধার্মিমান, তিনি প্রজাদিগের হিতার্বে নানা অনুষ্ঠান করেন, প্রজাদিগারে করেন। কিন্তু ধার্মেরের কোলাই স্থানে এমন উল্লেখ পাই না যে রাজা ধর্ম ব্যবস্থাক বা ব্যবহার জলন্তির কথা দেবিতে পাই, কিন্তু ধার্মেদে কোলার ব্যবহার জলন্তির পাই না।

কেবৰ মাত্ৰ এই কথা হইতেই এ বিশ্বাৰ করা मभी किन दश ना (य आरश्व (य भभरत तकिन दर्श हिन क সময়ে রাজা বাবহার দর্শন করিতেন না। ব্যবহারের প্রচৌন ইতিহাস আলোচনা করিয়া चामता (नविट श हे त्य व्यक्ति आहीन स्थानारक वास्त्री দর্শনে রাজার স্থান কওটা গৌণ এবং প্রস্তুত ক্ষান্ত্রী किकर्ण পরিষদাদি নানা অরাষ্ট্র (non-political) मुखा ७ "विन्राथित" दाख बुख, ख्येन देश देहर् क अक्रमान करा गारेए भारत (य आर्थ) बाह्री বিচার কার্যা করিতেন না এবং ধর্য বা ব্যবহারে তিরিছার কোনও হাত ছিল না, সে কাৰ্য্য ছিল পরিষং এই শ্রেণী জাতিগণাদির হাতে : তথন এই ব্যাপারটিকে অকুমানের পোষক বলিয়া ধরিলে যুক্তির কোন্ত আন ভুল হয় না। এই প্রমাণের সঙ্গে মিলাইয়া বিশি कार् हे এ कथा वना यास त्य, त्य मगरम अत्यतिक স্মূহ রচিত হইয়াহিল তথ্য প্রধান্ধ বালার বালী ব্যবহারে কোনও হাত ছিল না। কিন্তু স্প্রিয়ের কোনও কোনও প্রক বচনার সময় রাজার বার্ অধিকার প্রতিঠিত হইয়া সিয়াছে"৷ ব্রাথাণাদি সার এই অনিকারের পরিচয় পাওয়া যায়।

কিন্ত গণেকে যে সমাতের পরিচর আমিরা প্রি ভাষা Maine এর বর্ণিও প্রায়ানহারিক আ বার ক মেটেই মিলে না! সে সময়ে ধর্মশাস্ত ছিল কিন্ত দর্ম ছিল, "লং" ছিল। সেই "ঋত" সমাজ ব্যক্তিগণের পরস্পারের সহস্কের নিয়ামক ব্যক্তি কী ছিল। ভাহা ছাড়া কুল ধর্ম কেন্টোলক বিদ্যার করি নির্দ্তি হইত ভাহাবেও পরিচয় পাঙ্গা যায়। এক এশীর পোক যে ধর্ম আ শাস্তের চাচির ক্রিক্টিক করিতেন এবং তাঁহারা বে রাজা রাজ্যারও
ক্রিক্ট বিংক্লর বিষয় ছিলেন, তাহারত প্রমাণের অভাব
ক্রিটা এই সম্মের অংগদের নানা বাক্য একতা করিরা
ক্রিক্টা ছিল। সমাল ধর্মের ম্বারা নিয়ন্তিত ছিল। সে
ক্রিক্টা ছিল। সমাল ধর্মের ম্বারা নিয়ন্তিত ছিল। সে
ক্রিক্টা প্রজা নির্বিশেষে সকলেই মানিতেন। ধর্মের
ক্রিক্টা ব্যবস্থাপক ছিলেন অবিগণ—বাঁহারা জীবন
ক্রিক্টা ব্যবস্থাপক ছিলেন অবিগণ—বাঁহারা জীবন
ক্রিক্টা নির্বেদন করিয়াছিলেন। রাজা ছিলেন
ক্রিক্টা স্মান্তের প্রধান পুরুষ, প্রজার রক্ষা কর্ডা, কিন্তু
ক্রিক্টা স্মান্তের প্রধান পুরুষ, প্রজার রক্ষা কর্ডা, কিন্তু

প্রেই শবস্থার যে আইন বা ধর্ম স্মাজে প্রচলিত ছিল, বিলাৱে এত ধর্ম হইতে তাহার কোনও প্রকৃতিগত হৈছে ছিল না তাহা বলাই বাহলা। প্রভেদের মধ্যে যে থেকা নিরপণ করিতেন বিশ্ব না কালের বিদ্ধ, সেখানে ধর্মণারের বুগে রালা নিরপণ করিতেন। ইহাতে রাজ শক্তির প্রভাবস্ক্র হিরপণ বিশ্ব কিনীত হইত তাহা সনাতন, প্রাচীন ধর্মও বিশ্ব করিব প্রভাৱিত এবং ভাহার প্রমাণ সেই পরিষদ ও

্রিপ্রার ব্যবহার দর্শনের পূর্ব হইতেই যথন ধর্ম বিজ্ঞা সুপ্রতিষ্ঠিত এবং রাজ। যথন সেই ধর্ম মানিরা বিষয়ে বাবহা অভিজ্ঞগণের অভিমত অনুসারে নির্ণয় বার্ম্বর্ক্তথ্য ধর্ম বা আইন যে রাজার (Themis) হইতে বিজ্ঞানত বিচার সহ ব্যাধা বীকার করা যায় না।

হয় পার্য্য সমাজের প্রাচীন ইতিহাস আলোচনা ক্রিন্ত্রা হয় তো ইহা অপেকাও একটা প্রাচীন ক্রিন্ত্রিক হইতে পারি। ঋথেদে সর্পত্র ক্রিন্ত্রেকাকে প্রতিষ্ঠিত দেখিতে পাই। ভাষারও ক্রিন্ত্রেকাতির সমাজ গঠন কি প্রকার ছিল ভাষার ক্রিন্ত্রেকাতির সমাজ গঠন কি প্রকার ছিল ভাষার ক্রেন্ত্রেকাতির সমাজ গঠন কি প্রকার ছিল ভাষার ক্রেন্ত্রেকাতির পারিল প্রকার করিয়া ক্রিন্ত্রেকাতির আমরা দেই অভীত বুগের ক্রিন্ত্রিকা করিছে পারি। এই ক্যাসাইট জাতি ক্রিন্ত্রিকাতির একটি শাখা ভাষ্য এখন প্রায় স্ক্রিন ক্রিন্ত্রিকাতির এক সংভ্রেকাকির Kassite প্রের

मेर्सा ताला हिन ना। छाशास्त्र (नडा हिन कडकर्छनि অরণাবাদী ব্যক্তি যাহারা নক্ষত্তের গতি বিধি পর্যাকেক্স করিত ও গংগার ত্যাগী ছিল। Berosius এর বর্ণনার मत्त्र श्रीहीन चार्या भगादकत हिता चामि त्वत ७ धर्म मात হইতে গঠন করিতে চেটা করিয়াছি ভাহা সম্প্রিপে मिनिया यात्र। (करन श्राष्ट्रापत माथा (वापत चार्याभरनत बाबा दिन, (वर्तानियन वर्षित दीनवानी कानाइदेश्य ताका हिन ना, श्रवि পোछीरे তাহাদের সর্বকার্য্যের নারক **हिन। जामात माम इस एम जार्ग्यान्त्र जानिक** थाधाहिक मगान वानहा नर्सखरे **धरे अना**त हिन ! পরে कान क्रांस व्यवश গতিকে যোদ জাতি সম্প্র জাতি **इहै** एक अन्य इहेग्रा क्रांस देनवन कि इहे एवं भूषक् छाद একটা স্বাঞ্চল পড়িয়া উঠিদ এবং তাহা দ্যালে প্রধান হইয়া উঠিল। ইহা হইতেই রাষ্ট্রীয় স্মাজের অভালয়। हेश भर्षावर्ती जाठिशावत मुहारस्त अञ्चलतावत कन इअप्रोहे चा जाविक। अञ्चलत्वा (य श्राहीन ও अर्जाहीन সকল সমাজেই সমাজের রাদ্ধ ও পরিণতি এবং সামাজিক अबूष्ठान रहित बक्टा अशाम मिलत काम करते। नुकर् বিলাণ ভাহ। প্রমাণ করিয়াছেন, এবং ব্যবহা<del>রের কেরে</del> Tarde, Post প্রভৃতি ভাহার প্রয়োগ দেখাইয়া-एक्न। वर्षमान (कराजि एवं असूकत्वे दाद्वीव नमा<del>व</del> গঠনের মূল এ কথা অহুমান করা অসমত হইবে না। কারণ, বহু পুর্বকাল হইতেই লেমিটক ও দ্রাবিভ জাতির মধ্যে রাষ্ট্রার সমাজ প্রতিষ্ঠিত ছিল এবং এই সমুদ্র का ७३ भारत है आणीन वार्या गमास्वत नर्वा अथम श्रीत हम ও সংঘৰ হয়।

ভাষার এ অনুমান যদি সঙ্গত হয় তবে অন্তঃ ভারতীয় থার্যা জাতির প্রাচীন ইতিহাসে প্রাপ্তানীয় সমাজের চিত্রের সমঙ্গ Maine এর বর্ণিত প্রাথায়ীয় সমাজের চিত্রের সঙ্গে মোটেই মিলে না। এখানে যাহাদের আবিপত্তা দেখিতে পাই ভাহারা কুল জোত্ত নহেন তাহারা আহি। লাগীনক শক্তি বা গৃহপতির অবিকার উহোদের অবিকারের মূল নহে। তাহারা অতি প্রাকৃত জামের অবিকারী বালয়া পূজনীয় ছিলেন এবং অতি প্রাকৃত্তর প্রতি প্রাচীন মানবের যে স্বাভাবিক প্রদ্ধা ও ভঙ্গ ভাহাই তাহাদের এবং তাহাদের প্রবৃত্তিত ও স্বৃত বিধি ব্যবস্থার প্রভাবের মূল।

वीनदानक्य (गन चर्च ।

# ক্রিটোন (Crito)

িএই প্রশোজরে প্লাটো দেখাইতে চান যে, সোজেটিস্ যে তথু দার্শনিক ছিলেন, তা নয়; রাষ্ট্রের বিহিত আইন কান্নও তিনি যথায়ীতি মানিয়া চলিতেন। তা ছইতেই, প্লাটো বলিতে চান, যে কোনও বিহিত আইন পরিবর্ত্তিত কিংবা রহিত না হওয়া পর্যান্ত রাষ্ট্রের সকলেরই ভাহা মাঞ্চ করা উচিত; আইনটী মন্দ বলিয়া যে কেহ যদি তাহা অমাঞ্চ করিতে অধিকারী হয়, তবে রাষ্ট্র রক্ষা হয় মা।

স্থান—কারাগৃহ, সময় সোজোটিলের বিবপানের মিকিট দিন, ভোর বেলা।

্ পেকেটিস্ ও জিটোন)

নোকেটিস্—এত সকালে কেন এসেছ, ক্রিটোন ? এখনও ত ভোর হয় নাই, নয় কি ?

किछान-छ। छिक्हे।

গো-এখন ঠিক সময় কত ?

बि-बर्डे छात्र राष्ट्र।

শো—আমি ভাব্ছি কি, এই জেলখানার দারোয়ান তোমায় ছেড়ে দিতে চাইলে কি ক'রে।

জি— স্থামি কিনা স্থানেকবার এথানে এসেছি, তাইতে স্থাপে থেকেই স্থামার সঙ্গে জানা ছিল, সোজেটিস্; স্থার, স্থামার স্থারা শে কিছু উপকৃতও হ'রেছে।

(मा- अहे भाज व'तन, ना, व्यत्नक्षन व'त्यरह ।

कि-किड्क वर्षाह वह कि।

সো—তা হ'লে তথনই আমাকে জাগালে না কেন, কিন্তু চুপটী করে বসে রইলে গু

कि-मा, त्यारकिष्म, दिवलात त्यांवाह, वाणि व'तर्ग अवन णात क्यांग बाक्रल अवर इःच भारेटल वाहे- ভাষ না। কিন্তু ত্মি কেমন আনন্দে খুমাই ভোষী তাই দেখে দেখে আমি কেবলই আশ্চর্যা ইট্রে যাছি। আর, ইচ্ছা করেই আমি ভোমার আগাই নি, যাতে ত্মি এমনি স্থে সময়টা কাটাতে পারা এর পূর্বে সমস্ত জীবন ভরে অনেকবার ভোষাকে স্থভাবতঃই খোসমেজালী আমি মনে করেছি, কিন্তু এখনকার উপস্থিত অবস্থায় বিশেষ করে ভাই মনে হ'চ্ছে,—এমনই সহজ এবং ধীর ভাবে তুমি এই চর্দ্দা বহন কর ছ।

সো—কিন্তু, ক্রিটোন, যদি এরই মধ্যেই মরতে হয়, আ হ'লেও এ বয়সে আর ছঃধ করা সাজে না।

জি—কিন্তু, সোকেটিস্ এমনই বয়সে এমনি অবস্থিত আরও ত লোক পড়ে, কিন্তু বয়স ত তা'দিগুলে কোনও জমেই উপস্থিত হুর্দশায় হৃঃথ কর্তে বায়শ করে না।

সো—ভাত বটেই; কিন্তু এত ভোরে তুমি এসেছ কেন ।

ক্রি—হুংধের সংবাদ নিয়ে, সোক্রেটিদ; — আমার বেমার

মনে হচ্ছে, ভোমার পক্ষে নয়, কিন্তু আমার এবং

তোমার বন্ধনের সকলের পক্ষে নিদারুণ এবং প্রী

হুংধের সংবাদ—এবং এদের সকলের মধ্যে আমার

আমার পক্ষে বিশেষ হুংসহ (সংবাদ)।

সো—কি সে ? না, ডিলগ্ (IDelos) থেকে সে জাবাছটা এপেছে, যেটা এলে পরে আমাকে সরতে হ'বে !

ক্রি— এসে এখনও পৌছেনি বটে, কিন্তু বোৰ হয় আৰুই

এসে পৌছবে; — সোনিয়স্ অন্তরীপে যারা আহাজ
হৈছে এসেছে, তাদের নিকট হইতে একপই
ভন্ছি—এদের কথায় স্পষ্টই বোধ হজে, বে (জাহাজ) আজই আস্বে; তাহ'লে, গোজেটিক এ তো নিশ্চিত বে, কালই তোমাকে তোমাই জীবন শেষ কর্তে হ'বে!

গো—কিন্তু, জিটোন, এ তো গোভাগ্যা এতেই বহি দেবতাদের প্রীতি হ'লে থাকে, ওবে, তেম্বান ्रहेक । अङ्ग्ल भएक किन्न कामात्र मान हत्र, काराकी कार्क कामाह ना।

ক্রি-ক্রিল তা বুরলে ?

বৈশা— দেব লাম যেন, সাদ। পোষাক পরিধানে, সুন্দরী

এবং চারুদর্শনা একটা ক্রীলোক আমার নিকটে

এবে আমার ডাক্লে এবং বল্লে,—"সোকেটিগ,
ভূতীয় দিনে ভূমি ফি প্রার (১) উর্বর ক্ষেত্রে
আদিবে।"

ক্রি-কি অভ্ত স্থা, সোক্রেটিন্।

হৈয়— অর্থনী কিন্তু স্পষ্ট— আমার কাছে ত অন্ততঃ তাই মনে হয়, ক্রিটোন্।

বিংটোন — অবখাই থুন, — থেমন মনে হ'ক্তে। কিন্তু, ভাই সোক্রেটিস, এখনও একটী মার আমার কণ: শোন এবং বেঁচে যাও! যদি তুমি মর, তবে আমার যে কেবল এক নিকেই তুর্ভাগ্য,এমন নতে;—

(১) কি বরা—Phthia—Thessalyর অন্তর্গত একটা ছান Achilles (এখিলিস্) এর জন্মভূমি। অপ্রের ক্রিটিটিটি আংশিক পরিবর্তিত হইলা হোলার হইতে বিশি হোনাক্ষেত্রশিলের গৃহে প্রভাবর্তনের কথা হিছেই। শোক্রেটপের কাছে মৃত্যুও অলেশ প্রভাব্

পরন্ধ, এখন একটা বন্ধু—ৰার মত জার একটা জাবি জার কথনও পাইব না—তেমনটাকে বেমন হারাইব, তেমনই, বাইরের লোকবের — বারা তোমাকে এবং জাবাকে তাল করে চিনে না, তালের—প্রতীতি হইবে যে, যেন্থুলে, যদি আমি পর্মা ধরচ করতে বাইতাম তাহ'লে তোমাকে রক্ষা করতে পারতাম,— সে স্থলে, জানার সে প্রবৃতিই বইল না! লোকে মনে কর্বে, আমি টাকাকে বন্ধুর চেরে বড় মনে করি—এর চেয়ে অধিক লজ্ঞাজনক আর কি হ'তে পারে? বাইরের লোকে তো জার এটা বিখাস করকে না, যে, আমরা চাইলেও তুমি নিজেই এখান হইতে পালাতে ইচ্ছা কর নি!

সো—কিন্তু, প্রির ক্রিটোন্, বাইরের লোকের (২) এই
বারণায় আমাদের কি আগে যায় ? শিষ্ট এবং
স্থিবেচক ব্যক্তিরা—বাদের কথা বরং প্রণিধানের
যোগ্য, ভারা—ব্যে নিবেন যে, এই সব ব্যাপার
স্মেন্টী হওরা উচিত, তেমনই ঘটেছে।

জি— কিন্তু, দেখ্তে পাত্ত ত, সোজেটিস্ নর্কসাধারণের
মতটাও গ্রাথ্য করতে হয়—বর্ত্তমানে যা **ঘটেছে**তা হ'তে স্পঠই বুঝা যাছে যে, দর্বদাধারন ্যে
ওধু জ্মতম অনিষ্ট ঘটাতে পারে তা নয়,—যদি কেহ তাদের বিরাগ্রাজন হয়, তবে, তারা ভার স্বচেয়ে বড় অনিষ্টও করতে পারে (৩)।

- (२) সূলে আছে—Hoi polloi = the many, the multitude, বাংলার 'বাইবের লোক', 'বালে লোক', 'সাধারণ লোক' ইত্যাদি।
- (৩) এইপানে সর্বাধারণের বিচারে সো<del>লেটাসের</del> মৃত্যুদণ্ডাজার প্রতি কটাক করা হইছেছে।

त्या भाषात्र हेम्बा दश, किटिंगन, मूळा मूळाहे माधातून েলাকেরা≼বারতম অনিষ্ঠ যদি করতে পারত।— কেননা, তা হ'লে তারা সব চেয়ে ভাল কাজও - করতে সমর্থ হ'ত---এবং সেটা অবশ্যই থুব ভাল হইত ! কিন্তু বর্ত্তথানে তারা ছটার একটাও করতে শমর্থ নয়; (কাহাকেও) তারা প্রাক্ত করতেও পারে না-অবিবেচকও করতে পারে না ; যা তারা করে, (मठा देनवाद इ'रम याम ।

ক্রি-নে বব বিষয় তেমনি হ'তে দাও। উপস্থিত কথা, **শোক্রেটিস্, আ**মায় তুমি বল দেখি--তুমি কি আমার এবং তোমার অভাত বন্ধার কথাই ভারচ না-নয় কি ?--দে, যদি তুমি এখান হইতে বাহির হইয়া যাও, তবে তোমাকে এখান থেকে চুরি করেছি ব'লে চরদের (৪) সঙ্গে আমাদের গোলযোগ ঘটুৰে, এবং আমাদিগকে বাধ্য হ'লে চাই কি সমন্ত ধনসম্পত্তি, অন্ততঃ প্রচুর টাকা কড়ি হারাতে হ'বে--অথবা এদের হাতে এর চেয়েও বড ক্ষতি সইতে হ'বে ? যদি এমনি কিছু ভূমি ভয় করে থাক, তবে দে বিষয় নিশ্চিত্ত থাক। কারণ, ভোমাতে রক্ষা করতে গিয়ে এতটুকু বিপদ্ কিংবা দরকার হ'লে ইহার চেয়েও বড় বিণদ্— चामामिर्गत कान करम चीकात करत त्र अगरे উচিত্ত। সূত্রাং আমার কথা শোন, অন্তথা कर्ता मा ।

বো-এটাও ভন্ন করছি বটে, ক্রিটোন, কিন্তু আরও व्यानक विषय ।

कि-त नव छत्र आंत्र करता ना। त्म हे। काही धूव विभी নর বার জ্যে তোমাকে রক্ষা করতে এবং এখান

(৪) মূলে Sycophantes আছে যা হইতে পুলুঞ চেটা করত, এবং তোমাকে হত্যা করতে ইচ্ছা हररत्रको sycophant कथानि जानित्राह् । देशात्रा मानकरें। ७४ प्रशिरमंत्र कान कतिछ।

হ'তে নিয়ে যেতে কেহ কেহ ইচ্ছুক হ'য়েছে দেখতে পাছে না গুপ্ত চরেরা কত সন্তা ?-ভালেছ অত্যে আর কিছু বেশী টাকার দরকার হ'বে না আমার সমস্ত সম্পত্তি ভোমার—এবং আমার মনে दय, देश हे म (शहे। जात, ज्यामात छातना (कर्ष যদি তুমি আমার টাকা পরচ করে ফেলভে না দাও, তা হইলেও এখানে (ডোমার) আরপ্ত এই প্রকার বিদেশী বন্ধু (তোমার জন্তে) ধরচ করতে প্রস্তুত হ'য়ে রয়েছে। একজন-থিবিদ বাদী গিনিরাস ( Simmias )—তো এই উদ্ধেশ্ব উপযুক্ত টাকা নিয়ে প্রস্তুত হ'য়ে এসেছে। কেবিস্ (Kebes) ও প্রস্ত হ'য়ে আছে এবং - আরও অনেকে। কাজেই, আমি তোমায় বল্ছি, সে সক কিছু ভয় করে নিজেকে একা করতে ইতন্তর: ক'রো না; কিংবা, বেমন তুমি আদালতে বলে-ছিলে, তেমন বলা তোমার পক্ষে হন্ধর হ'য়ে উঠক, 'বে, এখানে হ'তে পালিয়ে গেলে কি যে তুলি করবে তা কিছুই ঠিক পাবে না। **কারণ, অন্তর্ত**ি च्यानक काम्रागाइटे (यशास्त्रेट पूमि यां का दिक्से ভাল বাসবেই। **যদি**ী তোমায় থেশালীতে ( Thessaly ) যেতে চাও, তথে দেখানেও আমার বন্ধরা আছেন, ধারা তোমাকে মাথায় করে নিবেন (৫) এবং তোমাকে নিরাপদে বাখবেন-হাতে করে, থেদালীর কোন লোক হইতে ভোমার কোন কট হ'বে না।

আর এক কথা, গোক্রেটিদ, তুমি যা করতে বাজ —বে স্থলে তোমার বেঁচে যাওয়া উচিত ছিল, বেখাৰে যে তুমি নিজেকে বিনাশ করছ, সেটা আমার কাছে সঙ্গত মনে হচ্ছে না। এবং তোমার শক্তরা হয়ত যার

(৫) মূলে আছে ( Peri polloy pocesontai ) : चार्मकृष्टी मासूछ, 'वह मकुर्छ'त चरुक्ष ।

करत्या (हडे। करत्रिक, जूबि निर्वत नक्षक रावेही প্রাক্ত পরি ভারই লক্তে বরা করছ। আর, আমার মনে বচ্ছে, এই শক্রদের হাতেই তুমি ভোষার निरमक (इलिनिश्व किया थाम्ह-याम्बर नामन ক্ষিন করা এবং শিক্ষা দেওয়া ভোষার কর্ত্তব্য ছিল, ইন্দ্রিশকে ফেলে যাচ্ছ-জার তোমার কার্কের মধ্যে (৬), ক্ষম ভাবের অনুষ্টে থাকে তেমনই ভারা করবে। পিতৃমাতৃবিয়োগে পিতৃমাতৃহীন বালকদের যা करके बारक, मञ्जवण:, अरमन्छ छ। हे बहेरन। इस हिलान ক্ষর (বৃত্তর) উচিত নয় নতুবা লালন পালন করা এবং 📆 🕶 বেওয়ার সমুদয় কট্ট বহন করা উচিত। আমি বেংছি ছুমি সব চেয়ে সহজ পণ্টী অবলম্বন কর্ছ। নার। ভীবন ভরে যে ব্যক্তিকে ধর্মের চিন্তা করতেই स्मारक रमचरमा, अमन वास्त्रित शक्त न९ अवर नाहनी ক্রমান বে পথ মনোনীত করত সেইরপই করা উচিত ছিল। আর আমি তোমার জন্তে এবং আমাদের-জোৰার বন্ধদের অত্যে লজা বোধ কচিছ: এই যে ছোমাকে নিয়ে ব্যাপারটা ঘট্ল, সেটা আমাদের একটু क्रांस्त्रत चंडाव (बरकरे चरिह्ह, अमनरे कि त्रवाद ना १ ক্ষার সাদালতের দেই মোকদমাটা, যেমন ভাবে সেটাতে ছুৰি প্ৰভিবাদী হ'য়েছিলে. আর মোকদমার এই বাদ कियमिष्ठी (१) य ভাবে द'राहिन, তেমন্টা না इওয়ाই মতিছ ছিল; — আর সকলের উপরে লজাবনক এই যে ক্রাপ্রার, লোকে মনে করবে, তারা আমাদেরই তুর্মলতা क्षा कार्यक्ष कात करण चरिहि वागता गरत में। प्रार्वि बार्का परिरष्ट् ;--कांत्रम, स्वामता ट्लामाटक तका कति नि क्रिक मिरकरक तका कदनि ; अवह, यनि अमारनद किइ वास बना बारक, उरव कवाब बाबारमव शक्त मध्य कवर

नका। दार्थि (भारकित्, रामात्र भाषा वर व्यापारमत পক্ষে একসঙ্গে অনিষ্টজনক এবং नक्काम्भन এই সকল ব্যাপার (यन ना चरि । किन्न (छर्त (तथ, अथवा छात्रवात नमन चात्र नाहे—वतर हेजियाबाहे जाता हास बाजम के जिल्;-এক याज कर्षना तरम्हः, এই जाजरकत तार्जित मरशहे या किছु कर्त्रवाद करत रक्ष्माल हरत। यमि व्यामना रक्ष्मी করি, তবে অসম্ভব হয়ে পড়বে এবং আরু কখনও সম্ভব হবে না। কিন্তু গোক্রেটিস সব রক্ষেই আমার কথাটী শোন, কিছুতেই অর্থা করে। না।

সো—ভাই ক্রিটোন, তোমার এই উৎসাহ প্রশংসনীয় (b) वर्ष, अवनारे यनि এक है नाधुकात मन्न वर्षमान शांक ; जा यमि ना दश्र, जत्य अहे छे पाद यहहे बार्ग इहेर्त, एउहे अनिष्ठेलनक इहेर्त। अधन আমাদের দেখতে হবে,ভূমি যা করতে বলছ তা করা উচিত কি না; কেন না, শুধু এখন নয়, বরাবর্ই चामि अमनह शत्रावत लाक, य विषक्ति करत र बुक्ति मर्त्साकृष्ठे अछीत्रमान दत्र, मित्र जित्र जात्र कान वश्च कथा आमि छनि न।। वर्खमात आमाद **এই मना छिनश्चित्र द'राइ रागहे, य नमछ** মীমাংগায় আমি পূর্বে উপস্থিত হয়েছিলাম, সেওলি এখন ফেলে দিতে পারি না: বরং সে গুলি এখনও व्यामात काष्ट्र व्यारावहें मछ वनवर धवर य नव (নীতি) পূর্বে অমুদরণ করে এদেছি, এখনও দেওলি অমুপরণ করি এবং মাক্ত করি। বর্তমানে देशामक (हार डिक्ड इंक क्रिक्स यनि आमता ना शाह তবে, নি-চয় জানিও, আমি তোমার দকে এক মত रहेव ना- नर्सनाधात्रावत मास्ति वर्षमात्म या मास्ति দিয়েছে তার চেয়ে খোরতর শান্তি দিলেও না-(कन्याना, मृज्रा, मम्लेखि वारक्यांश (अत्र क्वित्र) শিশুদের মত জুজুর ভয় দেখাইলেও না।

<sup>77,</sup> To son meros = for your part.

<sup>्</sup>रेक् वृद्ध आटक (Agon)=यह वृद्ध ।

<sup>(</sup> ৮ ) मृत, Polloy axia = worthy of much.

े थपन थरे नकन टास्त्र-भवरहरत्र छानत्रभ विहास আমরা কি প্রকাঠর করতে পরি ? তুমি লোক্মত नचरक या परनिष्ठितन रिन दमहे कथाहै आमता आर्भ यति, ( छा हरेला ) अहा कि ठिक वना दम्र नाहे, (य, লোকমতের কতকগুলিতে সায় দেওয়া উচিত আর কতকণ্ডলিতে নয় ? আর এটা কি ভধু আমার মৃত্যু मखाळात चाराहे ठिक तमा हरवित, এখন जनगरे पठि। म्लेड देश पाढ़ाराह (व, त्म ७५ कीका कबात कथा चना रायकिन- ७४ (कालकुनात्ना, नित्तरे वात्क कथा ? ক্রিটোন, এই কথাটাই আমি ভোষার সঙ্গে একযোগে বিচার করতে চাই, বে, আমি বর্তমান অবস্থা প্রাপ্ত হয়েছি বলে নেই (পূর্বেকার) সিদ্ধান্ত আমার কাছে ্ষ্মপ্রবা হয়ে গেছে না পূর্ববংই রয়েছে--আর, সেই দিয়ান্তটা আমার ছেডে দেওয়া উচিত, না অকুসরণ করা কর্ত্তব্য। আমি যতটুকু বুঝেছি, ( আমাদের ) দিছাত হ'য়েছিল-এবং বারা নিজেদিগকে এ বিষয়ে কিছু বলতে সমর্থ বলে मत्न करतन डांबा अहै। श्रीकांत्र करतन-(य,- या नांकि এখন আমি বলছিলুম,—লোকে যে গব মত (১) প্রকাশ करत बांक, त्रहे नव भराउत भरता का का धीन व्यवधे বিশেষ করে মাত্র করা উচিত, আর কতকওলি নয়। एवका नाकी करत वन मिथि किरिन, अहा नका वना इत्ह वर्ग टायात मन इस्र कि ना १ यास्यी मखावनात যতটুকু দেখা যায়, (ভাতে) তোমার কাল মরবার মত াণ্ডিক নয়—আর, ভোষার বর্তমান অবস্থায় ভোষার বৃদ্ধিত্রংশ ঘট্বারও কোন কারণ নাই। সুতরাং বিচার করে দেখ দেখি; এটা কি ভোমার কাছে সভাবলে প্রতীয়মান হয় না যে, মামুবের সকল মতই গ্রাহ্য করা উচিত নয়—কতকওলির সমান করা উচিত, আর

(৯) মৃল=doxa, প্ল্যাটোর একটা অতি প্রসিদ্ধ শব্দ; অর্থ-নাধারণ, প্রচলিত মৃত, বিশিষ্ট এবং দার্শ-মিকদের মডের বিপরীত।

কড়কশুলির নর ? আর সকলের মতও গ্রাহ্য করা উচিত নর,—কারও কারও মত গ্রাহ্য করা উচিত, আর, কারও কারও নয় ? কি বল্ছ ? এটা কি সুষ্ঠু উক্ত হয় নাই।

कि-यूर्वे छ वर्षे।

সো—এটাও কি ঠিক নয়, যে, যে গুলি ভাল, সে খুলিই এইণ করা উচিত, মন্দগুলি ময় ?

ক্রি-ইা।

পো—ভাল মত অর্থ লিষ্টদের মত, আর মন্দ আর্থ অলিষ্টদের মত, নয় কি ?

জ্ঞি-নয় ত কি ?

সো—আছে, এখন এসো দেশি; আমরা এ স্ব কিবলছি ? ব্যায়াম শিখছে যে ব্যক্তি, ব্যায়াম শিখছে যে ব্যক্তি, ব্যায়াম শিখতে গিয়ে সে কি প্রভোক লোকেরই প্রশংসা এবং মিন্দা এবং মতের দিকে লক্ষা রাখ্বে—মা ভুধু, এক জনের, যে ভাষার চিকিৎসক কিংবা ব্যায়ামশিক্ষক, ভার (মতের দিকে লক্ষা রাণ্বে) ?

कि-एष् वक्कानता

গো—( তার পকে) সেই একজনের নিন্দার ভয় করা উচিত এবং প্রশংসার আদর করা উচিত এবং কর স্কলের নয়—ময় কি চ

ক্রি--তা ত বটেই।

সো—তাকে অবশ্রই বরং দেই প্রকারেই চল্তে হবে;

এবং ব্যায়াম করতে হবে, এবং খেতে হ'বে এবং
পান করতে হ'বে, বেমনটিংতার শিক্ষক এবং বিজ্ঞা সেই এক ব্যক্তির নিকট ভাল মনে হয়—অবশ্রই

অক্স সমন্তের মত অসুসারে নয় ?

कि- এত वर्षे ।

নো—আছো। দেই এক জনকে বিধাস না করে, ভার

• মত এবং প্রশংসা অগ্রাহ্য করে, কিছুই জানে না
বে সর্কাদার্য্য ভাদের কথা মাধার করে নের কে

14 2029

্ৰাক্তি, কোন অনিষ্ঠ ফল কি গে ভোগ কর্বে না ? ক্লি-জন্মৰে দা ভো কি ?

হ্লা⊹িছ শে খনিই, কতদূর ভার বিস্তৃতি এবং দেই শবিশাদীর কোন্বস্তুতে গেটা প্রকাশ পাবে ?

ক্রি-শাইই বুঝা যাচ্ছে, তার দেহেতে? এইটাই তার নই হবে।

বিশ বলেছ। আছো, ক্রিটোন, অক্সান্ত বিষয়ও

কি ঠিক এমনই নয় ?—সমস্ত গুলির নাম আমরা
করতে চাইনা—যথা, ন্যান্য ও অক্সান্য, জবন্য ও
কুমার, এবং ভাল ও মল, প্রভৃতি—যে সব নিয়া
এতকণ আমাদের তর্ক চল্ছে—এসব বিষয়ে কি
সর্ক্র্যাধারণের মতটাই আমাদের অকুসরণ করা
উচিত এবং ভর করা উচিত, না, ব্যক্তিবিংশ্যের
ফুলি বিজ্ঞ কেহ থাকেন, (তেমন ব্যক্তি বিশেষের),
বাঁকে, অন্য সবকে বাদ দিয়া আমাদের লজ্জা এবং
ভর করা উচিত ? এবং বাঁকে যদি আমরা
ক্রেপ্রশংনা করি, তবে সেই জিনিগ্রী-ই আমরা
ক্রেপ্রশংনা তাল হয় এবং অন্যায়ের অকুসরণে লোপ
পার ?—না, সেটা কিছু নয় ?

🎟 — ভাইত ভাব ছি, গোকেটস্।

ক্ষা আছা, এখন দেখ দেখি; যে জিনিবটী সাস্থাকর
আবস্থার উৎকৃত্তি চর থাকে, অসুস্থ হলে নই হ'য়ে যার;
—বিদ্ধি বিজ্ঞের যতে আছা স্থাপন না করে সেই
জিনিবটী আমরা নই করে ফেলি, তবে, দেই
জিনিবটী নই হ'রে পেলেও—আমাদের জীবন ধারণ
কি স্কেন্দ্র হইবে ্ সেই জিনিবটী অবশ্রুই দেহ প্

**8**-\$11

क्षिक्त मान्य अन्य विकास अन्ति एक मिर्ड को दमदात्तव है। विकास एक भरक वृत्र स्टबंब नड़ कि है। कि - विकास मा ।

লো—কিন্তু সেই জিনিষ্টা নই ধ্বেণ্ড জীবন আমানের
প্রথের হইবে, যেটা অন্যায় হইতে নই কর এক
ভায় হারা পুট লাভ করে, কেমন গু আর মার সম্বরে
ন্যায় এবং অভায়ের বিচার—সেটা আমানের যাই
হউক না কেন—সেটাকে আমরা দেহ হইতে নিরুট
বনে করি, কেমন ?

जिन—नि\*5श्र ना।

গো—ভবে, অধিক সন্মানের যোগ্য ?

ক্রি-এক শ' বার।

গো—তা হ'লে, ভাই, সর্বাণারণে কি বলে, সেটা
ক্থনও আমাদের তেমন বিবেচ্য নছে—কিন্তু সেই
ক্রুক্তন, যিনি প্রায় এবং অভারের বিচারে পটু,
ইতনি:কি বলেন, সত্য কি বলে—( তাই আমাদের
ক্রিবেচ্য)। স্ত্রাং ভায় এবং স্থলর এবং সং এবং
ক্রিপেরীত বিষয়ে সর্বাণারণের মত আমাদের
ক্রুণাবন করা কর্ত্ব্য—এই যে তুমি বল্ত্,—সেটা
শেষ্ডাতেই ঠিক বল্তু না।

কিন্তু, অবগ্রন্থ, কেউ হয় ত বল্বেন, সর্ক্রাধারণ যে আমাদের প্রাণ দণ্ড দিতে সমর্থ প

ক্রি—এত স্পষ্টই ; বসবেই ত, সোক্রেটিস্।

নো—সত্য বল্ছ। কিন্তু, হে আমার আশ্চর্যা বন্ধু,
আমরা যে সিদ্ধান্ত করেছি সেটা যে এখনও আমার
কাছে পূর্বেরই মত বলবং দেখাছে। আর সেইটাই
ভাল করে বিচার করে দেখা দেখি যে, এটা
আমাদের এখনও ঠিক আছে কিনা বে, তথু বেঁচে
থাকাটাকে স্বচেরে বড় মনে করতে হবে না কিন্তু
ভাল করে বেঁচে থাকাটাকে।

कि-हैं।, बेठें। ठिक बाह्य।

নো—সং জীবন যাপন করা, সার সুস্তর রূপে এবং ভার পথে জীবন স্থাপন করা একই—এটাও সাহায় স্থাকার করি কি নাঃ

ক্রি--স্বীকার করি।

লো-তাহ'লে, সামরা বা বা বীকার করেছি, তার स्थित अहै हैं दिन एक हरन, दब, अधिनी स्त्रता नामारक ्रिंख ना⇒िंपाल चामात शक्क अथान रहेरड প্লাইয়া ঘাইতে চেঙা করা উচিত, কি, উচিত मन : यनि फेठिल श्रीलिश्व इस, लटन (ठक्षे) कदन, आत यक्षि छ। ना इब्र, छत्व (इत् ए क्रिय। ज्यात त्य न् विहारी विवस्त्र कथा जूबि दन्ह,-- होका পর্মার ধরচ সম্বন্ধে, লোক মত সম্বন্ধে এবং ছেলে शिलात नामन भागन मध्य - (मध्यमि, किरोन, भछा वरन मत्न दश ना ;—(मधन, सात्रा नराकरे थारक जवर-यनि লোককে নিহত শক্তি থাকত তবে—তেমনি সহল ভাবেই লোককে পুনজীবিত করত-অবচ একটাতেও बुद्धिक शक्तिक्य फिल्ड ना—त्मश्रील, त्मरे माधावन লোকদের মত। যাএ পর্যান্ত প্রমাণিত হ'য়েছে ভাতে, আমাদের পকে, এই বাত আমরা যা বল্ছিলাম তা ছাড়া আর কিছুই দেধবার প্রয়োজন নাই-( অর্থাৎ, আমাদের দেশতে हत्त) (य,--এथान इहेट्ड गाता आमारक वाहित करत्र निरम्न यारव जात्मत्र वावज हाका वस्त्रा धक्र करत अवः जानिगरक धनानाम मिर्दे अवः নিজেরা এখান হইতে বাহির হ'য়ে গিয়ে কিংবা चारा यादा ( वामादक ) वादित करत नित्व भारत ভার সুবিধা করে দিয়ে—আমরা ভাল কাজ করব, না, সভা সভাই এগৰ করলে আমাদের অভায় कत्र इत् । यनि श्रीक्रभन्न इत्र त्य अन्त कद्रत অভায় করা হবে, তবে এখানে চুপ করে বগে थाकरन यपि मतरु७ इब्र-किश्वा अग्राप्त कराज পরিবর্দ্ধে যদি অস্ত্র কোন কইও ভোগ করতে হয়, —তবুও দেটা পণনার মধ্যে আসা উচিত্ত নয়। 🚁 कथांठा छ ठिकडे वन्छ, সোক্রেটিস্, তবে, দেখ 🦠 আ্যারা করব কি ?

শো—ৰে আমার স্থবন্ধ, চল সেটা আমর। এক বৈছিল
বিচার করে দেখি; আর, আমি বা বলব, বাল্
ভার বিরুদ্ধে ভোমার কিছু বল্বার থাকে ত বলিও,
ভোমার কথা মেনে নিব; যদি বিরুদ্ধে কিছু বল্বার
না থাকে, তবে, হে ভাগাবান, বার বার ঐ একই।
কথা আমার কাছে আওড়ান ছেড়ে দেও, বে,
এথিনীয়েরা আমার থেতে দিতে না চাইলেও
আমাকে এখান থেকে পালিয়ে যেতেই হবে।
এইটী,করতে যাতে তুমি আমার মতি লওয়াতে
পার, ভার জত্যে আমি থুব চেষ্টা করব, কিছ
প্রবৃতিটি না হইলে কাছটী করতে পারব লা।

এখন আমাদের বিস্থা বিষয়ে গোড়ার দিকে একবার দৃষ্টিপাত কর দেখি;—ঠিক বলা হচ্ছে কিনা ভাই দেখিও—এবং যা দিজাগিত হবে তাতে যত ভাল করে পার উত্তর দিতে চেষ্টা করিও।
ক্রি—আছা করব।

সো—আসরা কি স্বীকার করি মে, ইচ্ছা পূর্মক কোন প্রকারেই আমাদের অভায় করা উচিত নয়-না এই বলব যে, কোন কোন স্থলে অক্সায় করা উচিত, আর কোন কোন স্থল করা উচিত নয় ? অথবা যা, পূর্বে বছবার আমরা স্বীকার করেছি এবং এই মাত্রে যা বলেছি, তাই বলব যে, অভান্ন করাটা (कान श्रकारवरे मुद्ध नम्र, युग्दब्ध नम् ? अथवा, এতদিন ধরে আমরা যা কিছু স্বীকার করে এসেছি त्म भव अहे कराक जिल्लात सर्वा**हे एक निर्दार** কি গু এবং, হে জিটোন, এত কাল এই বুদ্ধ আমত্র যে পরস্পরের সঙ্গে এত তীব্র আলোচনা কর্লান তাতে কি আমরা নিজেরাই বুঝতেও পারি নাই বে व्यागता निरुद्धतत्र (हार्य भारहे हे पृथक नहे ? किरव তখন আখাদের কাছে या तना र'राहर, तन नामकर তেমনই আছে—সর্বসাধারণে তা বনুক আরু নাই বলুক ; এবং উপস্থিত হৃঃধের চেয়ে অধিকই ইউছ কিংবা অল্পই হউক—যাই ভুগতে হউক না কেন, অভায় যে করে, অভায় করাটা ভার পকে অনিট-জনক এবং নিশ্দনীয়। এ আমরা স্বীকার করি। कि, ना?

कि-श्रीकात कति।

্গো—কোন:প্রকারেই অভার করা উচিত নয় । ক্লি—কোন প্রকারেই নয়।

ক্রি-কোন প্রকারেই ধবন অভার করা উচিত নয়,

তিত্ত ভবন, সাধারণ লোকে বা মনে করে তা নয়—

আমাদের প্রতি কেহ অভার আচরণ করলেও

উন্টাইয়া অভায় করা আমাদের উচিত নয় ?

ক্ষি—সনে ত হয় না। জ্যান-তবে কি, ক্রিটোন, কাহারও মনিষ্ট করা আমাদের উতিত, না, উচিত নয় १

कि-किइएडरे नयु, त्मारकारिम ।

লোঁ—তা হলে কি ? অতে যদি আমাদের অনিষ্ট করে,
তবে তার বদলে তার অনিষ্ট করা—সাধারণ লোকে
বা বলে থাকে—সেটাকি ফ্রায়সঙ্গত, না ফ্রায়সঙ্গত
নয় ?

্জি<del>— কিছুতেই</del> নয়।

ব্যা— লোকের অনিষ্ট করা অবৈধ আচরণ হইতে কোন-ক্লেই পুণক্ নয়।

क्नि-किंक रश्यह ।

তিত নয়, তাহার অনিষ্ট করাও উচিত নয়—
ভাহার হাতে আমাদের নিজের যে কোন অনিষ্ট
অটলেও না। ভেবে দেখ, ক্রিটোন,এ সমস্ত স্বীকার
করতে সিয়ে তুমি তোমার সৃহীত মতের নিয়জে
কর বাকের নিয়টই এ সকল সত্য বলে প্রতীয়মান
কর এবং হবে। যারা এই সিদ্ধান্ত গ্রহণ করেছে
এবং বারা করে নাই, এ উভয়ের মধ্যে একমত্য
নাই, বয়ং ভারা পরস্পারের মতটা মধন জানবে
ভবন একপক নিশ্চয়ই আর এক পক্ষকে রণার চক্ষে

পটা তুমি সীকার কর কিনা এবং সামার এই মূল 
দিছাত হতে সামরা আমাদের বিচার সারত 
করব কি না—বে, স্থামাদের কথনও স্থার করা 
উচিত নয়, সভের স্বস্থারের বদলেও নয়—এবং 
সভের হাতে স্থামাদের স্থানির বটুলেও প্রতিহিংগাস্বরূপ তাহার স্থানিই করা উচিত নয়। না, এই 
মূল কথা তুমি স্পন্থীকার কর এবং এতে তুমি এক 
মত নও ? স্থামার কাছে কিন্তু চিরকালই এবং 
এখনও ইহা স্তাবলে প্রতীয়মান হয়; তুমি যদি 
সভিথা মনে করে থাক, তবে ধল এবং ( স্থামাকে ) 
শিবাও। স্থার যদি তুমি ( এখনও ) প্রের 
কিন্তুতিই ছির থেকে থাক, তবে এর পরের কথাটা 
শোন।

ক্রি—আমি স্থিরই আছি এবং তোমার মতও আমার সঙ্গে মিল্ছে; এখন বলে যাও।

সো—তার পরের কথাটা বল্ছি—সেটা বরং একটা প্রশ্নের আকারেই বলছি। একজন বা ন্যাব্য বলে স্বীকার করে, সেটা কি তার কালে দেখান উচিত, না, কাঁকি দেওয়া উচিত ?

कि-काष्म (मधान উচিত।

ক্রি—তুমি বা জিজাসা করছ, সোক্রেটিস্, তার উত্তর আমার কিছু বলবার নাই;—কেন না, আমি জানি না

हर्ति । भारति धार्म वा वा का करत (छत्य ( ) ) मून (Polis) तम वा ताहु धार नगर। विकास करते । अविद्यालया प्रमाणीय करते ।

त्या-छर्व विवय्रेटीएक अहे छार्व (भव । व्यामि (यन अथान কে পণাইয়া যাহিছ — অথবা এর তুমি যাই নাম (१४७ ना : कन—चात छथन यि ता छित चाहेन छिन ध्वर द्राष्ट्र ( >> ) कान्ए लार् व्यामात्र अत्र किछामा करत-"यामायः वन छ, त्माद्कितिन्, ट्यामात मरन कि कत्रवात भठनव तरप्रष्ट ? जूमि नान, या पूर्वि कत्र उ वाळ जार आयो। एत वर्गाः অটিন সকলের—এবং ভোমার একা ধারা মতটুকু সম্ভব, (ততটুকু) সমস্ত রাষ্ট্রের,ধ্বংস ঘটুবে— এ ছাড়া আর কি ? অপবা ভোমার কি মনে হয়, যে রাষ্ট্রে অ।ইনের স্থিরীকৃত সিদ্ধান্তগুলির কোন क्रमञा गार्डे, वदः वाख्यिमक (१३) कार्या त्यधीन मिलिकीन अवर विनष्ठे राष्ट्र यात्र, त्म तार्थे विश्वक ना राम्र हित्क थाक्र भारत ?" कि होन, এই কথার এবং ইত্যাকার কথার উত্তরে আমরা কি বলব ? আইনের মীমাংসিত গিদ্ধান্ত গুলির শক্তিমন্ত। যে প্রতিষ্ঠিত করতে চায়, আইনটা ভগ্ন হবার পথে গেলে তার পকে তার অনেক বলবার व्याद्रक् — निर्मरण्डः (य सूर्वका (১৩) जात्र। स्म সুক্রপের উত্তরে কি আমরা বশব—"রাষ্ট্র আমাদের প্রতি শ্বিচার করেছে—এবং বিচারে ঠিক্ষত া স্বায় দেয় নি ?'' এই,—না, কি বশুর ?

कि—श्राम्य नार्य — जरे छ दलन, भारकिति।

श्री — व्याद व्यारेन खाल यान नरल, "त्नारकिति, व्याभारन द्र

ग.रेड इंटामांद कि उठे। उक्तांत रूप नि रस, इन्हें

विठास करते या या तास निरन, स्म मकलरे द्राम

त्यरन निर्त ?"—जा द'रम ? जारमत अक्या **उरम** यकि वामि विकास श्राकाण कति, जा र'तन-इस छ ভারা আবার বশ্বে গোকেটিস, যা বল্ভি ভাতে বিষ্মিত হয়ে৷ না, কিন্তু উত্তর দাও ; কেন না, প্রশ্ন করে এবং উত্তর দিয়ে আনন্দ পেতে ভূমি ष्य गुष्ठ। यन (निष, कि चिछिर्यात पिष्ट्रिक करत ष्ट्रीय आयोगितक अवर बाह्रेटक दिन्हे कंबरे डिएक द'रब्रह ? भागता कि अशरम (डामांक अम रहरे নি? আমাদিগের আশ্রেই কি তোমার পিছা ভোমার মাতাকে গ্রহণ করেন নি এবং ভোমার क्य (पन नि ? आयारपत ( आहेन नकरणत ) यर्था (यश्री विवाहितियाक (म श्रीमांड कार्न (मान দেখ্তে পাছ কি, যাতে সেগুলি ভাল নয় **अक्रल वना करन ?'' आमारक अवनाहे वन्र** হবে, "ना, কোন দোষ দেখ্তে পাই না।" "তংশ कर्मात পরে শিশুর লালনপালন এবং শিক্ষার निशामक (य नकन निधि—याटि पूमि निष्ठि धनः শিক্ষিত राष्ट्र,—। ए छनित (तनाम ? कीमारमद মধ্যে যারা ভোমার পিতাকে, তোমাকে প্রীরে এবং ব্যায়াগ ক্রীড়ায় (১৪) শিক্ষিত কর্তে পত্তা করেছিল, ভারা কি ভাল করে নাই ?" আৰি व्यवशहे तनव, "ভानहे"। "(वण ; यपन पूर्व আমাদের হাতেই জন্ম নিয়েছ, লালিত ইয়েছ এবং ৰিক্ষিত হয়েছ, তথন প্ৰাথমত: ভো**মাকে বল্**ছে হবে, ভূমি নিজে এবং ভোষার পূর্বপুরু বৈশ্ব व्यामारमध्ये व्यादाङ जवः मानं वर्षे कि ना १ अ समि তাই হয়, তাহলেও আঘাতা জিনিণ্টী আমাদের (तकाश अवर (धामात (तकाश अक्ट ममान भरम কর্চু এবং আমরা তোমার প্রতি বা ক্রডে চাই, ভোগার পক্ষেত্ত তা উন্টাইয়া করা নক্ষ

<sup>(</sup>১১) মুগ-To koinon tes poleos = commune of the state (or city) = commonwealth. Jowett বিশ্বাহেন, Government.

<sup>(</sup>१६) मृत-idiotes - private individuals.

<sup>(</sup>১৩) মুল-Rhetor = orator, সা বাগা।

<sup>(&</sup>gt;8) mousike kai gymnastike Music as gymnastike

নৰে করছ ? ভোষার পিভার প্রতি কিংবা—বদি ভোষার কোন প্রভু থাকেন, তবে তাঁর প্রতি— একুই প্রকার প্রভ্যাচরণ করা সক্ত নয়—বেমন, ভীবের হাতে তুমি বা ভোগ কর, উন্টাইরা আবার তাই তুমি করতে পার না-মন্দ ক্লা ওনলে উ-টাইয়া আবার মন্দ কথা বল্তে পার না--প্রস্ত হয়ে টুট্টাইয়া আবারট প্রহার করতে পার না— अहे क्षकांत्र क्रकांक विवस्त्र । (मर्भन विकास अवः (मापत चाइनक्षात (त्नात कि छत्-यिष्टे আৰৱা তোষাকে নিহত করা গলত মনে করি-ভবে, ছুমিও কি পরিবর্তে তোমার যথাদাব্য नायाषिगरक-- (ভाষার দেশ এবং দেশের আইন नकनाक विनाम कतराठ छेच्छ श्रद-- এवर श्रयंत ৰুবাৰ্থ উপাসক হয়েও এসৰ কাজ করে স্থায়্য কাজ কুরছ ৰলে ভাণ করবে ? অথবা তুমি কি এমনই ্পঞ্জিত যে ভূলে যাচ্ছ, যে দেশ, মাভার চেয়ে, এবং निषात (हरत अवः अन्नान ममल भूसंभूक्रवरमत ह्मा अदिक शृबा, अदिक छेळ এবং अदिक ्नविख, अवर मिरणामित हरू अवर वृद्धिमान् সাম্বাদের চকে অধিকতর মাত্ত ;—এবং পিতার क्षित्र अधिक रम्पांक रमवा कराज्यम, अवः कुक ইংৰ ভাষার নিকট নত হইতোহয় এবং ভাহাকে শার করতে হয়, এবং হয় তাহার ইচ্ছা নিজের অন্তুক্ত করে নেওয়া উচিত, না হয়, দে যাহা ্রিশাদেশ করে তাহা পালন করা উচিত;—এবং প্রস্তুত হয়ে কিংবা কারারত হরে শান্তি ভোগ क्रवर्ड यमि (म बार्मिक तत्र, जरत जाहाश दिना ৰাকাবামে ভোগ করা উচিত ;—এবং যদি সে বুছে কিংবা নিহত ইইতে প্রেরণ করে, তবে छाइडि कर्डमा, - धरा देशाहे शर्च ;- हात याना, बार्ड वाख्वा-विश्वा शांत शिक्षिकात्र करा छेल्डि क् ;-- वतर, वृश्वर ब्रंडक् वर्ग विवादान्त्वरे

হউক কিংবা অশুল সর্ব্লেই রাষ্ট্র এবং দেশ বাহা আদেশ করে তাহা পালন করা উচিত, অঞ্কুবা বাহা অভাবতঃ ক্রাব্য তাহা তাহাকে বুঝাইরা দেওরা উচিত; বিনি পূজা তাহার প্রতি বল প্রায়োগ ক্থনও উচিত নহে—মাভার প্রতিও নহে, পিতার প্রতিও নহে, এবং এ উভয়ের চেয়ে দেশের প্রতি

ক্রিটোন, এ সকল কথার উত্তরে আমি কি বলব ? আইন্ডলি বা বল্ছে তা কি সত্য, না সত্য নহে ? ক্রি—স্তাই-ত মনে হয়।

(मा-बाहेन छनि इम् - छ बादात दन्द, "बादछ एटर দেশ, সোক্রেটিস্, আমরা যে বলছি যে, তুমি अकर्त या कत्राल लेखन स्टाइस्ट (महा स्वामादान ্প্রতি স্থবিচার করা ২চ্ছে না, তা সভ্য বলছি কি না। আমরা ভোমাকে জন্ম দিয়ে, লালিত করে, শিকিত করে এবং আমরা বা কিছু ভাল দান করতে সমর্থ সে সমন্তের অংশ তোমাকে এবং রাষ্ট্রের অভাত সমস্ত ব্যক্তিকে (১৫) দান করে, পরেও বোবণা করে থাকি যে,—যখন বেছ রাষ্ট্রের ব্যাপারসমূহ এবং আমাদিগকে আইন সকলকে वृत्याह अवः (मांचह, उथन यमि काशाय निक्षे আমরা স্থবের কারণ না হই, তবে এপেন্সবাসীদের ষে কেহ ভাষার আপন ধন সম্পত্তি লইয়া ষ্ণায় हेम्हा विदर्शक द्देश याहेरक भारत-अवश अक्र भू ইছে৷ করিলে সে তাহার অধিকার অনুসারেই কার্ कत्ता अवः यमि ভোমাদের কেছ वेहिरवर्त উপনিবেশে চলে থেতে চায়—কিংবা আমরা আইন ज्ञक अवर बाह्ने छाहात मत्नामक नर्ने वरन, वि অক্ততাপি গিয়ে বাসন্থাপন করতে চার,— छत्त, (यथान छाहात यन यात्र त्यथान, छाहात निकच किनिन शक्त निरम, हरन व्यक्त व्यक्तिमारमञ्ज्य

<sup>(:</sup>e) সুপ Polites=citizen.

छाशास्य निरम् करत ना-अवः चामारमत्र (कह ভাষার পবের কণ্টক হয় না। কিন্তু আমরা কি প্রকারে ैर्विष्ठार्थ। विषय्र विष्ठात करत्र शांकि अवश्कि श्रकारत অভবিধ উপায়ে রাষ্ট্র পর্যাবেক্ষণ করে থাকি, তা रमर्थं एजांबारम्य बरशा (य व्याबारम्य मरम (थरक बाग्न, (म-विधा व्यायता दनदहे (ब, (म-कार्याणः আমাদের সঙ্গে চুক্তিতে বদ্ধ হয় যে, যা আমরা चारमण कर्त्रव छ। (म कर्त्राव ; अवश (व छ। मा कर्त्र, ভাকে বলব, সে ভিন প্রকারে অভার আচরণ करत ;--कात्रण, जन्मणाणा चामारित तम वनाजा शौकात करत ना, भागनकर्छ। এरः भिकाषाण আমাদের প্রতিও তদ্রপ ব্যবহার করে এবং मर्स्वाभित्र व्यामारमञ्ज्ञारमन भागन कर्ल्ड व्यामारमञ् गए प्रक्रिक चार्क रायुष, ठारा करत ना अवः व्यामता विक व्यवक्र कि क्रू करत शक्ति ( जरव मिछा ) व्यामाणिशतक वृक्षारेग्रां (नग्र ना ; - व्यथे व्यामता ৰা করতে আদেশ করে থাকি তা স্পষ্ট বুকাইয়া (पहे, क्रमणात् निर्फान कति ना ;-- अवर ( यानि আমরা) ছুইটার একটা করতে বলি—হন্ন আমাদের यक পরিবর্ত্তন করাতে, না হয় আমাদের আদেশ পালন করভে—(ভগাপি) ভার একটাও সে करत ना। चात जूमि या यत्न करत्रह, त्मारकिरिन्, ভা ৰদি কর, তা হ'লে, বলে রাধছি, ভূমিও এথেন-यात्री एव मर्था भकरनत रहाय कम नम्, वतः मक लाब (हर्ष (वणी-वहे नकन अखिरवारन चिंद्यां इरव।" चामि यनि वा वनि, 'किरनव আৰু ?' ভা হলে হয় ত তারা সত্য সভাই আমাধ **बहे वरण रहरण एउरव रय, व्याधिके अरथ**क्यवांगीरएउ मास्। मकानत (ठाव (वनी अहे अकत्रात्रनामा श्रीकात करत अशिह। इत छ छात्रा वनर्त, "নোক্রেটিস্, এসব বিবরে আমাদের প্রকৃত্ত 🗯 (১৭) গ্রীসের প্রসিদ্ধ আতীর খেলা সকল। क्षत्राच बरवरक (व, जानवा अवर वाहे कामाव

यरनात्रथम करत्र अरमहि ; जात्र, जूशि छ अहे मश्रक्त (>) जब नकन अल्लानीत्मत (हात शाती-ভাবে বাদ করতে म।---यणि দেটা বিশেষভাৱে তোমার কৃচিজনক না হত-এবং (খলা ( >٩ ) দেধবার জন্মেও কথনও তুমি বাছিয়ে বাঙ नि—(करन धकरांत्र (शकरक (১৮) बांख्या হাড়া--এবং অত কুত্রাপিও কবনও বাওনি, অবশ্রই कोषा व पूर्वार्थ तथित न। द'रान-अवर बाहर व কোথাও কখনও গিয়ে তুমি থাকনি -- এবং খান্য नगरतत अवः अनाक आहेरनत विवद सामबाद षायता अवर षायालत अहे नगतिहै, दलाबांबः পকে যথেষ্ট হয়েছি। এতই অধিক ভূষি আমা-क्रिशिक जानर्वरम् ध्वरः जायास्त्र महन (नानविक क्राप ) बान कताल अमनरे चन्नीकातातक रामक (प বিশেৰ করে এই নগরৈই তোমার ছেলেদের তুমি জন্ম দিয়েছ—এই নগরটা এতই ভোষার काष्ट्र थित्र। अविकल्क, अरे भाकक्षमात विहास्त्र नमन्न, यनि जूमि देव्हा कत्राज जरव निर्सानन प्रक চেমে নেওয়া তোমার পক্ষে সম্ভব ছিল-এবং বা এখন ভূমি রাষ্ট্রের অনভিপ্রারে করতে চাল. ভাই তথন (রাষ্ট্রের) অভিপ্রায় মতে করতে পারতে। তথন তুমি দম্ভ দেশালে যেন, ভোষাকে यत्राष्ठ हर्ता जूमि आशहे कत ना,-- बदः कृमिहे यानिहान-निकातिता वनान मृत्राहे कृषि পছৰ কর। এখন তুমি নে স্কল উক্তিতে লক্ষিত্ত हफ् ना-धनः विनाम कर्ता छक्त रात्र आहे चामारमञ् क्षणि क्ष का (मर्थाक ना ;--र्वः स

<sup>(</sup>३६) = दाहै।

e of Corinth (दर्शाविष (दर्शक)।

প্ৰণ শৃণ্ধ এবং অধীকার দারা আমাদের সংস্থাকার বাস্তব্য করতে অভ্যন্ত ছিলে, পেই সকল আভিক্রম করে পলাইয়া ঘাইতে উত্তত হয়ে,—একটা অসম্যা, ক্রীতদাস হয়ত যা করত তাই ত্মি এখন করতে যাহে।

শ্বৰম ভাবৎ আমাদের এই কথার জবাব দেও দেখি
— আমরা বে বলছি যে তুমি কার্যাতঃ, শুধু কথায় নয়—
আমাদের (মভ) অমুদারে (নাগরিক) জীবন যাপন করতে
শ্বালী হ'য়েছিলে— সেটা সত্য বলছি কি না ?" এর উত্তরে
জিটোন, আমরা কি বলব ? সায় দেওয়া ছাড়া আর কি ?

কিন্দোন, আমরা কি বলব ? সায় দেওয়া ছাড়া আর কি ?

নো—আৰার কি তারা বলবে না—''আমাদের সঙ্গে ক্বত ় বে শুপর এবং যে অজীকার তুমি অভিক্রম করছ— (সে সকল) তুমি বাধ্য হয়ে কর নি, প্রভারিত हारा भा-किश्वा अठि अज नमारात मारा श्वामर्भ শেৰ করতে বাধ্য হ'য়েও না-পরত্ব সভর বৎসর कुरछं (मर्व छत्न; यात्र मरशा,--यनिष्टे आमता ভোষার পদন্দ মত না হমে ছিলাম কিংবা যদিই বে সকল অজীকার তোষার নিকট ভারসঙ্গত প্রজীয়মান না হ'য়েছিল—ভা হ'লে, ভোষার পক্ষে শশুর চলে যাওয়া সম্ভব ছিল। তুমি কিন্ত (निक्छारेयन् ( >> ) किश्वा क्रिष्टे (मन-वामिश्राक नर्समारे पूर्व चुनातिङ वरन এग्रह—( छा मिश-(क्छ) भनम कर नि-अवना धीक् तावा नगृहदत কিংৰা বৰ্ণর (২০) রাষ্ট্র সমূহের অক্স কোনটাও मा-शत्र वंश किश्वा अस किश्वा अस धकात প্রায়ের চেয়েও এ সহর থেকে তুমি কম বাইরে निवाह ; लाहेरे अमानित राष्ट्र, वाक नकन এথেলবানীদের চেয়ে বিশিষ্টরূপে ভোমার নিকট এই রাষ্ট্র এবং রাষ্ট্রের আইন আমরা ক্লত প্রির ছিণাম! আইন ছাড়া রাষ্ট্র কার নিকট লোভনীর হবে ? আর এখন তোমার অজীকার রক্ষী করছ না ? আমাদের কথা বদি শোন, সোক্রেটিস্, এ নগর থেকে পলাইয়া গিয়া আর ছাভান্দাদ হইও না।

একবার ভাব দেখি, এই সকল অঙ্গীকার ভঙ্গ করে **এবং পাপাচরণ করে এ সকলের ফলে-ভোমার** নিজের এবং ভোষার বন্ধুদের কি উপকার তুমি কর্বে। তোমার এই বন্ধুরা যে নির্বাসিত এবং রাষ্ট্র হতে বঞ্চিত হয়ে কিংবা সম্পত্তি হারাইয়া বিপন্ন হ'তে পারে,—বেটা একরণ নিশ্চিত; আর তুমি নিজে—প্রথমতঃ যদি তুমি নিকটছ কোন নগৱে যাও –থিবিসে কিংবা মিগারাতে— वादः वाहे कृष्टिति महत्रहे । जुलाभिक- ७६व मिथारेन, লোকেটিস, তুমি ভালের রাষ্ট্রের শক্তভাবে যাইবে-এবং যারা পেই সব রাষ্ট্রের জন্ম চিস্তা করে ভারা ভোমাকে, चाहेन उनकाती मान कतिया, मानारहत हाक रमधान-धवर विठावकरमञ्ज्ञ भरन जूबि धहे मछछ। वहसून करत मिट्न, यांटल लोबा मान कबार (य लाबा माकक्यांव क्रिक बाग्रहे निवार्ष्ट। चाहेन य छाड्छ भाव-वि न्द्र अञ्चान कता यात्र (य, त्र यूवक अवर निर्द्शाद লোকদিগকেও বিধবত করতে পারে। তবে কি তুৰি সুশাসিত নগর এবং মামুবের মধ্যে সুশিক্ষিত ব্যক্তিদিগ হইতে দুরে পলাইবে ? আর ভাই করে বেঁচে থাকা কি ভোমার পক্ষে শোভন হবে ? অথবা তুমি কি हेद्याम्य निकारि वे शक्रिय धनः निर्मा ब्लाइ मण अस्मत नाम कथावाछ। वनाव-किन्न कि कथा चन्त्र, रिमाज-हिन १ अहे बारन या वनाज-एव, धर्म अवः अमि, बाहान ध्यर चाहेन, मानूरवत निक्छ नकरनत एउस रचनी चानवनीत-( ७। हे कि ) ? चात्र, जूबि कि मरम कत्र मा, ु 📞 त्रांत्कितितत्र वह त्राभावते। अवश्र विवरित हे नास

किन क्या छिति छ। अवना द्यां छूमि अहे यन नाम्मा

<sup>(</sup>১৯) স্পার্টার সার এক নাম।

Barbarike - barbari

**एटए रननानीए** जिल्लास्त्र वन्नापत कार्ल योहत्तं; **रमपारन किन्छ गर्थले विम्छाना अवश इनी** जि ब्रहिगार्छ। এবং ক্রমত লোকে ওনে আমোদ করবে, কেমন **খাক্তাপ্ৰদন্ধপে তুমি জেল ধানা হতে পলাইয়া গেছ—হয়ত किंग हवार्यम संदर्ग- १**वड कावारम्य कामछात (भावाक किश्वा भनाजरकत्रा व्यक्त (य भव इस (तम भरत शास्क्र, ভারই একটা—ধরে, ভোমার নিজের আরুণত গোপন • **করে। রন্ধ লোক--**স্থাভাবিক নিয়ম অমুসারে, জীবনের আর অ্র সময় অবশিষ্ট রয়েছে—( এই অবস্থায়ও ) তুল বীটবার অত্যে উৎকট লাল্যা করতে সাহস করেছ—এবং व्यवीय निशास मकता मञ्जास करत्य -- अभन कि तक साहे, रि अहे कथा वन्ति ? कोशात्र अस्त यपि आपात ना कत्र, जाह'(न इग्नज नारे; किस्न जा यभि नी इग्न, जर्व, সোকেটিস্, নিজের সম্বধে অনেক অপ্রিয় কথা ভন্বে। र्दौर थाक्र वरहे, कि इ नकरनत अक्रां रहा अतः সকলের দাধ্য করে; থেদালীতে আচ্চা রকম ধানা ধিনা করা ছাড়। আরু করবে কি--কেননাপেগালীতে ত তুমি ভোগের অঞ্ট গমন করবে ? আয় এবং অভাতা ধংশর मचरक (महे भक्त उपापनावनीत जात चामारनत कि ब्द्व ?

তা নয়, সোকেটিস্, আমরা যারা তোমাকে পালন করেছি, আমাদের কথা শোন—ছেলেদিগকে বড় মনে করো না, বেঁচে থাকাটাকেও নয়, কিংবা,আর কিছুকেই বংশার চেয়ে বড় মনে করো না;—তা হ'লে পরতা গিড়ে

(नर्गात यां वा अपू जातन कारक--जनात या या करवे দে সকলের ভাষাত। প্রতিপর করতে পার্বে। আঞ্ এ ( ক্রিটোন যা বল্ছে তা ) যদি কর, তা বলে সেইটি এখানে অধিক ভাল, তাঘাতর, পবিত্রভর হবেঞা তোমার পক্ষেত্তনা কিংবা তোমার কোন আত্মীরেট भक्ति ना- এখানেও ना किश्ता अबूब अबन कतिरम् না। এখন যদি তুমি পরতা গমন কর, ভবে,—আমর্থ আইন সকলের ঘারা নয়-মানুষের ঘারা জভ্যাচরিত হ'য়ে গমন করবে; আর যদি এমনই জুগুলির ভাবে-व्यविहाद्वत वल्ल व्यविहात करत अवः व्यक्तिके नम्दन অনিষ্ট করে—আমানের সৃষ্টিত জোগার সমস্ভ চুক্তি এবং व्यक्षीकात विकास करत- वरः यात्रत व्यनिष्ठे नेकरनद চেয়ে কম করা উচিত, তাদেরই অনিষ্ট করে—ভোমার নিজের, তোমার বঙ্গুদের, তোমার দেশের এবং **আমাজের** ( व्यनिष्ठ करत )-यपि जूमि श्रम श्रम या । , जरन, यक दिन বেঁচে পাক্ষে, আমর: ভোমার উপর জুর হয়ে পাক্ষো (अवीर्मेश व्यामारास्त छ। हेरभ्रता अवरमार्ट्स्क আইনেরা, তুমি যথাসাধা আমাদিগকে বিনাশ করতে চেষ্টা করেছ জেনে, ভোমাকে আদরের পহিত এছৰ করবে না। সুতরাং ক্রিটোন যা বগছে তা করতে মেন ভোমাকে মত লওয়াতে না পারে-কিন্ত আমরা বেন (তোমার মত লওয়াতে ) পারি "

প্রিয় বন্ধ কিটোন, গতা জেনো, কুবেলী ( ২২)
দেবীর উপাসকেরা বেমন বাশীর স্বর শুনে, আহিছ
বেন তেমনই এই সব কথা শুন্ছি—এবং এই নিঃস্থানই
বেন আমার ভিতরে শুলিত হচ্ছে এবং আমাকে আর
কিছু শুন্তে অসমর্থ করে তুল্ছে। আর জেনো, বা
এখন আমার প্রতীতি হচ্ছে তার বিরুদ্ধে যদি সকরে
কর, এর চেয়ে বড় কিছু দেখাতে পার, ভবে বলে
যাও।

ক্রি—কিন্তু, পোক্রেটিগ্, আমার যে কিছু বলবার নাই। গো—যাক্ তবে, ক্রিটোন্; আমরা তবে এইরূপই কয়ব, কেননা, ভগবান্ এই পথেই প্রেরণ করছেন।

बिख्यमहस्य एड्डाहार्गा।

### অবরোধ।

( Brokmann Chatrian শিখিত— Le Blocus নামক আখ্যায়িকার বলাস্থান)

#### ষষ্ঠ অধ্যায়।

্ৰেশ জিল এবার তোমাকে আর একটা ঘটনার কথা
বিদ্বো। এই পেকে আমার অনেক বারই মনে হয়েছে
কৈ লগুবান্ আমাদের খুটি নাটি বাাপার নিয়ে নাড়া
কিটা দেন আমাদের ভালর জড়ই বল্তে হবে। প্রথম
কিন্তুল কৈবে বড় ভর হত বটে ভগবানকে ভেকে
কিন্তুলেই দ্বাল ঠাকুর আমাদের রক্ষা কর বলে চ্বীৎকার
হারে কিন্তু পরে দৈখে সবই ভালর ভালর কেটে গেল।

ছুৰি ভ জানই মেয়ার আপিদের কেরাণী ফ্রিমার জাষার বিংশা কর্তো। ক্রিমারের চেহারার বর্ণনাটা জোষার কাছে করা হয় নি —বেঁটে হাড্ডি সার বুড়ো জারের বং হল্দেপানা বাধার লাল পরচ্লো কান চুটো জেইন রাল তোবড়ানি। কিশে বে আমার ক্তি কর্বে জেটা বঁলে বেড়াত।

বিশ্তে কি, মন মত অ্যোগ পেতেও ভার বড় দেরী

ক্রিন, এছিকে সহর খেরাও করবার দিন বত ঘ্নিয়ে

আন্তে লাগ্ল, লোকেরাও বিক্রী কিন্ত্রী করে ফেল্বে

ক্রেড ভঙ্গ বান্ত হরে পড়ভে লাগ্লো। আমি বেদিন

ইক্রিন থেকে সুধ্বর পেলাম আমার মনে আছে ভার

ক্রেডিন বুছল্পতিবার— হাটবার। আল্সাস্ ফোরেল

ক্রেডিন বুছল্পতিবার— হাটবার। আল্সাস্ ফোরেল

ক্রেডিনা বাধন, পনির ডিম আর হাঁদ মুব্লী এনেছিল

ক্রেডিনা বাংলার ভর্তি হরে গিয়েছিল আরে মোটেই

ক্রিডিনা বাংলার হাতির কোনও বন জললে চুকিরে

ক্রেডিনা বাংলার ব্যাক্রিক পার বে সে সম্ম

ক্রেডিনা বাংলার ব্যাক্রিক পার বে সে সম্ম

ক্রেডিনা বাংলার ব্যাক্রিক পার বে সে সম্ম

ক্রেডিনা বাংলার ম্বর্ণার বিভাগ বাংলাক

টাকা ওধু ওধু: বারা গিরেছিল। এই বে সক্র লোকে কভ ওক গাছের গোড়ার বছর বছর টাকা কভি পার, সে সব কেবল কব লার্মানদের ভয়েই তথন গেরভরা পুঁতে রেখেছিল। ভেবেছিল আমরা ভাদের দেশে গিরে বেমন করেছিলাম এরাও আমাদের দেশে এসে ভেমনি লুট ভরাক আরম্ভ কর বে। পুঁতে রেখেছিল বারা ভারা হয়তো মরে গিয়েছে না হয় ঠিক লায়গাটা খুঁতে বার কর্তে পারেনি। এই সব কারণে কভ ধন দৌলত বে মাটির নীচে রয়ে গেছে ভার ঠিক নাই।

তা ৰাক সেদিন-তারিখটা আমার মনে আছে ১১ই **डित्मबद्ग**क विष्युष दक्य शिकारे ना शर्ड हिन । यत्न হিছিল হাড় গুলোর মজ্জার ভিতরে ভিতরে শীত চুক্ছে। আমি কাঁপতে কাঁপতে খুব সকালেই উঠেছিলাম। शास्त्र (वर्ष करत वाजाम निष्य चौठा भन्यात अकता बाठे कुर्छ। माथाव छेन् विভात्तव ठामजात এक है। बाख পর্যান্ত ঢাক। টুপি। ছোট বড় ছুই চক্বালারে লোক श्ववात आय काग्रण हिल ना नकतार महलाय नित्य देंका হাকি কর্ছিল লোকানটা কোনও রক্ষে খুলে বছ কাটাটা টাঙ্গাতে যা একটু সময় লেগেছিল ভার পর থালি খদেরের ভিড়। যত স্ব চাবার দল এশে ভ্রার चित्र में छान, (कडेवा हाम्र (भारतक काँहै। (कडेवा हान काँठा लाहा। (कछ कि चारात एवि मर पुरान लाहा मान कात अर्गाष्ट्र-यश्मव यक्ति (कानश्चतकाम रम श्वामा विक्री करत (बाल भारत । नकामहे (हेत (भारतिम (व, यि भक्त वा अपन भक्त जा दर्श अपन **आंद्र (कर्डे** স্হরে চুক্তে পারবে না, সেই অতা স্কলেই কেনা বেচা করবার জন্ম এত ভিড় করে এগেছিল।

আমি লোকান খুলে বাল ওজন কর্ছে লেগে পেলাব। বাহিরে সব রোঁদ দিতে বেরিয়েছে সেধান থেকেই তাছের ইাক ডাক শোনা যাছিল। ঘাঁটি ঘাঁটিতে সব প্রারণ পাহারার ব্যবহা হয়েছে। পড়ের উপর ভোলা সাঁকো বীভিষত ধেরামত করা হয়েছে। বাহিহের ভেঁকে

দরওয়াকার রীতিষত সব কোহা বসান হরেছে। তথন পর্বাস্থ সহর থেকে যাতারাত বন্ধ হর নাই বটে কিন্তু সকলেরই প্রার সাস্থির অবস্থা। মেরাস সার ক্রক আর জাসবূর্ব থেকে শেবাশেবি থবর পাওয়া গিয়েছে যে, শক্র সেসার। রঁটা ( Rhin ) নদীর আর পারে ও এসে পৌছেছে।

(पर जामांत जातकवांत्र गतन हरम्हा, त्य ज्यवान **অগতের ছোটবাট** ঘটনাগুনোর উপরও একটু আবটু लक्त बार्यम, चात चामारतत मकरत्रत क्यारे चामारत्त्र শীবনের পতি ইচ্ছামত ঘুরিয়ে ফিরিয়ে দেন। প্রথম व्यथम এতে वख्टे माना नारन, मत्म हम् कि छम्रकत এ **गरीका—धा**रात चारवर्ग चानिहे वन्छ इह—''ह শল্মামর, হে জগতের নাথ, একবার মূথ তুলে চাও!" किछ विशम छे ९ दि (शर्म एम्स) यात्र या इरम्रहिन छ। ভাল'র কভেই; তুমি ভো জান্তে মেয়ার ভাপিদের হেড কেরাণী ফ্রিসারের আমার উপর অনেক দিন থেকেই রাগ ছিল। তোমার মনে আছে বোধ হয় তাকে -- (तरहे भड़ा तूरड़ा-- "उक्ता वश्र"-- ह्या कान-তোৰ্বা গাল-ভকিয়ে রংটাও যেন হলুদে মেরে গিলেছিল। এই ত চেহারা তার উপর মাধায় আবার লাল পর্চুলো পড়া হতো। পাজীটা কিলে আমার স্মনিষ্ট হবে কেবল তাই থুলে বেড়াত। তা ভাগ্যক্রমে ভার বেশ স্থবিধাও একটা জুটে গেল।

ষ গই সহর অবরোধের দিন ঘনিয়ে আস্তে লাগ্ল ভতই লোকে আপন আপন জিনিস বেচার জন্মে ব্যস্ত হয়ে বেড়াতে লাগ্লো। যে দিন আমি মার্কিণ থেকে ছেলে ছুটির স্থবর পেলাম তারই ঠিক পরের দিন সে দিন মুহল্পতিবার—হাটবার—এত সব আলসেস্ লোরেনের লোক প্রকাণ্ড ২ ঝুড়ি চালাড়ি বোঝাই করে আণ্ডা, মাধন, পলির, হাঁস, মুরগী সব এনে কেল্লে যে হাটের ভিতর লোকে ঘুরে ফিরে বেড়াবে, এমন জায়গা টুক্রি

नकरनदे यदनव किছू नभन दिख (बानाफ क मार्कित मीर्क शालाम परत कि कार्कत स्तम वाशारक কোনও গাছের ভলাম পুঁতে রাবে। সে সময় কর্ম লোকের যে কত লুকোন টাকা কড়ি গিয়েছে ভা আছ वन्वात नत्र এই भव है कि इं लागावान लाटक अब मिन কেউ বা 'ওক' গাছটার ভবায়, কেউ বা বীচ গাছেৰ তলায় এম্নি করেই বছরের পর বছর পেয়ে আসুছে। कर्या । चात्र क्रियान खानात ज्या है (य नाटक अहे नक গুপ্ত ধন রেখে দিয়েছিল তা অবিত্তি আর তোমার বুরিছে বলতে হবে না। সকলেই জান্তো আপদ ওলো এপেই লুট পাট আরম্ভ কর বে। আমরা বেমন তালের বেশে গিয়ে করেছিলাম ভারাও ভেমনি ভার শোধ না ভুলে ছাড বে না। किन्न कृकिय त्राय ता कि सत, है।की কড়ি পুঁতে ফেলে কতক লোক গেল মরে—কভ্রম व्यावात कावाम त्य कि त्रत्यहिन छ। निस्वतारे बु एक বার কর্তে পার লে ন।। এখনি করে লুকান খন মার্কিই म(शृहे (बेरक (शन। याक (म कथा।

ভার পর সে দিন সেই ১১ই ভিসেম্বের ভারিকে এত ঠাণা পড়লো সে আর বল্বার নর মনে হতে সাল্ফ্রা বেন হাড়ের ভেতর মজ্জায় মজ্জায় হিম চুক্ছে আমি কে। পুব সকাল সকাল উঠে কাপ্তে কাপ্তে একটা পশ্মী কামিজ গায়ে দিয়ে মাধায় একটা খাড় পগাল চাক। ভৌদড়ের চামড়ার টুপি এঁটে বাইরে বেড়িরে এলাম।

দেখি বড় বাজার ছোট বাজার ছ্য়েতেই লোক জমেছে যেন পিপঁড়ের পাল—খদের দোকান্দার বক গিস্ গিস্ কর্ছে—গকলেই জিনিস পত্তের দর—খড়ার নিয়ে খুব ক্যাক্ষি হাঁক ডাক লাগিয়ে দিয়েছে। কোন রক্মে আমার দোকানটা খুলে দাঁড়ি পালা বার কর্তে কাঁটা টাঙ্গাতে যা বিক্ষ, আর অন্নি ছ্য়োরের গোড়ার ভিড় করে যে সব চাবা ভ্রাক্ল দাঁড়িয়েছিল ভারা এনে মহা হালাম বাধিয়ে দিলে; কেউ চার পেরেক কাঁটা, কেউ চার কাঁচ। লোহা আর ইপ্পাত আবার কেউ গা ক্ষাট্টী বেশকে বঙঃ পুরাবো লোহা সক্ষুত্ এনেছে সেই অধ্যাই বেচ্ছার: আলায় আগে ভাগে সাধ্যে ধরে ক্ষিক্ষে।

সকলেই টের পেয়েছিল—যে শক্ররা একবার এবে বাছুলেঃআর সহবে চুক্তে পারবে না সেই জভেই আজ আভ ভিড় কেউ বা এসেছে বেচ্তে কেউ বা এসেছে কিমতে।

লাবি তো বা হোক্ লোকান ধুলে বাল ওজন ক্ষ করে বিলাম। বাইরে পেপাইরা সব রোদ দিয়ে বাচ্ছে ইপানা বাজিল। এর মধ্যেই আজ্ঞার আজ্ঞার সেপাইদের কাটিতে ঘাটিতে সব জবল জবল লোক মোজায়েন করা হৈছে ছিল—সহরের জোনা সাঁ কোটারও তবন অবস্থা ভাল—আর বাইরের দিক্কার সহরে ঢোকার যে গেট লাব ছিল সে গুলোও গোহা দিয়ে সবে নুতন করে ইমানক করা হরেছে। এ পর্যন্ত সহর গুছু খেরাও ইয়া নি বটে কিছু ঠিক যেন ভালে বসা পাণীর উজু উজু আবস্থা কেবল পাণা মেলতে পেলতে বা দেরী। মেরেজ, লাই ক্রু সার ট্রাপ্রুর্গ পেকে বে শেব থবর এসেছিল আব্রেক্ত জানা গিরেছিল যে বিপক্ষ দলের কোজেরা রাইন

আমার কিন্তু তথন মাণায় কেবল নেই বাতীর কথাটাই ঘুর্ছে—বেচছি, ওজন কল্পি টাকা গুণে তুল্ছি থাট কিন্তু এ চিত্তেটা এক মুহুর্তের লগুও আমায় ছেড়ে কান্ত নি কেউ যেন ঠিক—কপাল কুড়ে—আমার ছই ক্ষুক্তর মার্থানে—জোর করে চুকিয়ে রেপেছিল। ঘন্টা প্রামেক তো এখনি ভাবেই কেটে গেল হঠাৎ চেয়ে দেখি নি ক্ষুক্ত আমার দরজার স্কুন্থে চাষাদের ভিড়ের পেছনে ক্ষুক্ত ভোট থিলানটার নীচেই দাভিয়ে আছে।

কৈ দেখেই বল্লে "যোৱাস একবার উঠে এস ভো একটা কেন ভা বুনতে পারছি কিন্তু যা ঠেকাবার **উপায় সাই** কিন্তু আছে।" আমি তথনই বা'র হয়ে এলাম, বুর্নে তা মাথা পেতে নিভেই হবে। আনতো ক্রিসাইসর ক্রিক্তি শতিল আমাণের এই গলিটার ভিতর মাই।" ভোমাণের উপর শেনেক দিন বেকেই আক্রেশ নে ভিনি স্থিতি মুখ দেখে আমি ভো অবিক্তি, এদিকে পেছনে কৌজনারীয় হেড কেয়ালী কৌৰেয় কোকেয়ে সার

পদ্দেরর। ব্যক্ত হয়ে টেচাতে লাগ্লো "খোপ্তাত তাড়াতাড়ি সেরে নাও বাবু আমাদের আর পেরী কর্বার যোনেই" তখন কিন্তু কিছুই যেন আর আমাদের কালে চুক্ছিণ না।

গলির ভিতর বেতেই বুর্গে আমায় বল্লে "দেব আমি এই মেয়ার আপিস থেকে আস্ছি সেধানে তালা সহরের লোকের কার কি ভাব তাই নিয়ে নেয়ার সাহেবের কাছে রিপোর্ট কছে হঠাৎ আনার কালে গেলো যে সেপাইদের জমাদার সার্জেন টুব্যারের বাসা ভোমার বাড়াতেই ঠিক করে দিয়েছে।"

ভবে আমি তো একবারে বণে পড়লাম বল্লাম না, যাহয় ছোক্ এতে আমি কব্ধন ও রাজী হবো না— পনর দিন ধরে ছ, ছ জন লোককে জায়গা দিয়ে এলাম এবার ও কের আমারই পালা!"

বুর্নে বল্লে ঠাণ্ডা হ। অভো টেচা চেচি করো না এতে লাভ তো হবেই না মাঝবেকে আর ও হালাম বেধে बार्य। व्यामि ज्ञारणत माथाध्र क्यलहे यम्राष्ट्र লাগ্লাম 'সে হতচ্ছাড়া দাৰ্জেনটাকে আমি কোন মতেই বাড়ী চুক্তে দিভিনা—দেটাত আমার ছচক্ষের বিষ আমি ঠাণ্ডা মাতুৰ কারুর.কোন ও ক্ষতি লোকদান করি ना-विना देक्कान ठेलि छाउ वाठान नित्र पारवा-छा কিনা আখার উপরই যতো উপত্র জুরুম।" আমি তো अमृति करत वालन लिएक हिंहिए याष्ट्रि-सिर्व किना সর্লে টুক্রিটি হাতে করে সেই পণ দিয়েই বাজার করতে: व्यातारहः व्यागारमञ्ज इक्ष्मारक त्रवारन एएए किस्लामा कर्ता "वरप्रदेश कि ? अथारन माजिए । कम ?" वर्ती वल्ल "(भाग भाग विवि अन कथा वर्ण किन्दु जामान আসীর মত অবুঝ হ'লে চল্বেনা মোয়াল যে চটেছে কেন তা বুনতে পারছি কিন্ত যা ঠেকাবার উপায় সাই তা মাথা পেতে নিভেই হবে। জানতো জিনাইরর ফৌজনারীর হেড কেরাণী ফৌলের লোকের সার

बाफ़ीएक कांत्र वानाई बरव रनहे निष्ठि रदेश किंक करत (एप्रा त्य (डामाएएव प्रशास मार्क्कन क्याउदक জায়গা দিতে হবে এই বলে ত্কুমনামা বার করে **पिरम्राह्म। आर्व्छन्छ। छ।**ति वनतानी आत श्रीमात छ। चाबि स्थान निष्कि किंद्ध चात्र शांह करनत ये छात्र । তো একটা বাক্বার স্থান চাই। আমি তোমাদের হয়ে ্বলৈতে কিছু কম্ করিণি কিন্তু আমার সব কথায় জনাবেই 'ফ্রিনার বল্ভে লাগ্লো "মোয়াস পরসাওয়ালা লোক, को क निष्ठ र'रव वरन एक स्नामत (म लागिर मिर्ग्रह ध्वत करण जात अकट्टे (जाना हारे (जा।" स्यात मार्ट्य, भण्डित मारहर रम्य ७६ लाक मकरनहे वन्त है। ध श्रादा कथा वर्ष कार्क्स दांस अब छेनव कि बाब कथा টেকে। আমি বন্ধু বলেই বল্ছি এতে তুমি ষতই আপত্তি করবে সার্জেনটাও ততই তোমার অপমান কর্তে পাক্বে আর তোমার ফ্রিনার শক্রও ততই হাঁনবে, এর আর তুমি কোনও প্রতিকার কর্তে পার্বে না, তাই ্বল্ডি ঠাও। হয়ে বৃদ্ধিশানের মত কাজ করে।।

ফ্রিদারই এ যন্ত্রনার গোড়া শুনে আমার রাগ আরও
বৈড়ে উঠ্লো। আমি চেঁচাটেচি কর্বো দেখে সর্গে
আমার হাত চেপে ধরে বল্লে 'গামো আমাকে বল্তে
লাও—বুর্গে ম'শয় বড় ওয়াজীব কথাই বলেছেন—তিনি
আপে থেকে জামিয়ে দিয়ে বড় উপকারই করেছেন।
ফ্রদারের আমাদের উপর রাগ আছে সেত জানা কথা
া দে যা করেছে তা তার খাতে জমা রইলো এর হিসেব
নকেশ পরে হবে। তা হ'লে সার্জেন্টি আস্ছেন
ক্রমা।

वृत्तिं वनात- इभूत (ननाम ।

আমার দ্বী বল্লে বেশ তো তাই হবে—এখন বাসা আগুণ বাভি সবই আমাদের জোগাতে হবে এতে তো আর আমাদের ওজর আগতি চল্বেনা—কিন্তু এর শোধ, উঠ্বে ফ্রিসারের কাছ থেকে, পাই প্রসা বাদ্ধ আবেলা। আমি শর্মের দিকে চেয়ে দেখলাম তার মুধ

খানা যেন পাঙাশপানা হ'লে পিলেছে—বুকে দেবলাৰ সে যা বলছে একবারে খাঁটি তাই আর কথা না ক'লে ভন্তে লাগ্লাম। সলে বল্লে "শোণ, আছ মিছামিছি গোলমাল করোনা, একটু ঠাতা হলে বৈবা ধরে থাক যা কিছু করতে হয় আযিই কর বো এখন।"

वूर्त वन्त "(पथ यामि अहे कथा वन्तात प्राप्त दे এদেছিল।ম, ফ্রিশারের এ কালটা হরেছে অভি ইভরের মত-দেপবো এর পর যদি সাজেনটাকে ভোষাদের चाफ (थरक मतिरत त्नवात स्विधा भारे-बार अपन चामारक चावात निर्वत नाहित्व निरम चम्रे देरे मार्न वाकारतत मिरक (यर उदे वृर्धि आयात राज पर्व विमात्र निन । अमिटक अम्दारतित मन् अञ्च (कार्यभाषा) ডাক হাঁক আরম্ভ করেছিল যে আমাকেও অগভা किरत शिरत मां जि शाला वर्ष हरना। आवात रम ताले चात्र পড्लाना। (न निन कम करत थात्र २०० केंद्रि লোহাই বিক্রী করেছিলাম, কিন্তু সার্জ্জেনটার ভয়ে আর ফ্রিনার বেটার উপর রাগ আর খেগ্রার দরুণ আশার किइहे जान नाग हिन मा। (म निन यनि अत प्रमुख्य বিক্রী হ'তে। তা হ'লেও মনে সুধ পেতাম না। আৰু মনে মনেই বলতে লাগ্লাম "বেটা দক্তি আমার ছব भाष्ठि ग्र नष्टे कत्रत्न- ध महत्त्र आमात्र आद निर्वकार्ड बाभ कता हमाय ना।"

ছপুর বেলায় হাট শেষ হতেই—লোকেরা বধন
"করানী" দরওয়ালা দিয়ে পিল্পিল্ করে বোরয়ে
যাচ্ছিল—আমি তখন আমার দোকান পাট বন্ধ করে
বাড়ীর দিকে রওনা হ'লাম—যেতে যেতে ভাবতে
লাগ্লাম 'নিজের বাড়ীতে আমার আর আপন ব'লে
কোন অধিকারই রইল না—জর্মাণ—,হিম্পানীদের মতো
চোধ রাভিয়ে সেও আমাদের ভুচ্ছ তাভিলা কর্তে
থাক্বে। মনে হতে লাগ্লো যা কিছু বল ভরশা ছিল
সব খেন উলাড় হয়ে গিয়েছে। এই সব ছ্ভাবনার
মধ্যে সিঁড়ি দিয়ে উঠতেই আমার নাকে নানা বক্ষ

ভাগ খন বারার খোস্বাই আস্তে লাগ্লো—আমি স্থান্থ লোভা করে ভোৱে নিংখান নিতেই বুরতে পার্লাম दि मास्त्र राधन चार मांरम्य काराय भाक दछ। दिक रिक्न स्नामारकत भन्नरति किरानत् में स्नामा वायका। यह इतांत्र पुरनहि—अम्नि नरम अरम माजान वरत्न-याथ ভাষার নিকের খরে পিয়ে—দাভি কামিয়ে একটা ক্ষুসা কামিক গায়ে দিয়ে এসগে। চেয়ে দেখি যে ৰ্মিবায়ে "সাবাথ" পরব পান্তে হয় বলে আমরা বেষ্ণ একটু ছিষ্ছাম্-চোল্ড রকম পোষাক করে থাকি বৈদিন নে ঠিক তেম্নি ধারাই সাজগোল করেছে। পরে ে সবুল খাগরা, কাণে কাণবালা ( এয়ারিং ), গলায় দাৰ বেশমী কুমাল বাধা। আমি একটু চেঁচিয়েই विद्याम "दुन कि शराह कि (य नाष्ट्रि कामार्ट शरा ?" শাদার স্ত্রী আর তর্কাভর্কি না করে তথু বল্লে যাও যাও শাৰ শ্ৰহ নাই, এই বেলা ভাড়াভাড়ি সেৱে নাও গে।" এই মেরেলোকটির এত বৃদ্ধি —এতবার সে আমাকে शामाय, विशव (बरक नैकिस्यरह स्य आमि आद कथांछ ৰা করে শোবার ধরে দাভ়ি কামাতে আর জামাটা व्यूनाटि हरन र्भनाम ।

বৰন কামিলটা গায়ে দিচ্চি—তথন কাণে গেল—
শানার ছোট ছেলে সাফেল বলচে ''মা ঐ দেখ আস্ছে
লৈই-ই বটে" তার পর সিঁড়িতে ওঠার শব্দ ভন্তে
পোলাম সহে সঙ্গে পুব কর্কণ স্বরে একটা হাঁক এল ''এই
কে বেড়ীতে আছ তোমরা ?" এম্নি অভদ্র কথা
বিলার ভলী যে ভন্তেই সর্বা শরীর রাগে অলে ওঠে।
শামি ভনেই ব্যলাম ইনিই সেই সার্জেন কর্তা। তার
পিছ ভন্তে পেলাম সার্ফেল খুব শাওখুরি করে বলছে
ভাই যে আমাদের সার্জেন সাহেব এসে পড়েছেন"
হিন্দা তার আনন্দ আর ধ্রেনা।

তার পর আমার ত্রী থুব মিটি কথায় ভদ্রভাবে বলতে আর্ফো "এর মধোই এগে পড়েছেন—বেগতো—আফুল" আফ্রেন মুণার আস্তে আজা হোক। আপনার একেই

আমরা সব হাজির রয়েছি। আজ বে একজন সাংক্রিম এ গরাবদের বাড়ী অভিথ হবেন এ খবর আমরা পেরে ছিলান। এর আগে আমাদের এখানে সেপাই শালীরাই ছিল; বড় দরের কেউ আসেননি ভাই তখন সাংজ্ঞান একজন আস্বেন শুনে বড়ই আনন্দ হ'ল। আনুন একবার কট্ট করে বাড়ীর ভিতর আনুন।"

শে এম্নি থোদ মেজাজে কথা গুলো বল্লে যে গুনে আমারই তাক্ লেগে গেল। আমি আপন মনেই বল্তে লাগলাম "দলে—কি, কৌশল কি বৃদ্ধি তোদার এতক্ষণে ভোমার চাল বৃবতে পেরেছি এই লক্ষীছাড়াটাকে মিটি ক্থার নরম কর্বে এই তোমার ভিতরকার মংলব —ক্ষোয়ান। তোর বড় ভাগ্যি যে তোর কপালে এমন বৃদ্ধিয়তী প্রী পড়েছিল।

শামি আপন মনেই হাঁস্তে হাঁস্তে—ভাড়াভাড়ি পোষাক পড়তে লাগলাম—ভন্লাম সাঙ্জেন জালোয়ারটা বলছে "আছা আছো হয়েছে—আর মিষ্ট কথায় দরকার নাই ভধু মিষ্টি কথায় ভুলছিনে। বাপু! সার্জেন ক্রব্যা-রকে কাঁচা ছেলে পাওনি এখন আমার শোবার শর্মা বিছানা টিছানা কোথায় কি রয়েছে দেখিয়ে দাও।

সলে বল্লে "তা আর বলতে—আসুন একুণি স্ব দেখিরে দিছি—এই যে আসুন এই দিকে—এই দেখুন আপনার ঘর আমাদের বাড়ীর এইটিই সব চেরে ভাল কুঠারী তারপর তারা অন্ধরের পথ দিয়ে চললো— ভনলাম সলে আমাদের ভাল ঘরটার দরজা খুলছে— কালস্ বুর্গ থেকে ঝি, জামাই এলে আমরা তাদের এই ঘরটাতেই থাকতে দিতাম। আমি আতে আতে ঘরের কাছে আস্তেই দেখলাম যে সার্জ্জেনচন্দ্র বিছানার উপর সোটা করেক ঘুঁলি মেরে পর্য করে নিজেন যে গলি টাদিওলা বেল নরম কিনা—আর সলে আর সক্ষেন পেছনে দাঁড়িরে মুখ টিপে হাঁস্ছে। বিছানা পরীকা হয়ে গেলেই জ্বারে ভুক কুঁচকে ঘরের স্ব কোলকালার ওলো দেখা আরভ কর্লে। দে যে চেছারা বিক্রা ভেষ্ম বোধ হয় তুমি কৰনও দেবনি—আৰ পাকা दम्रान खरना (बाह २ हरत्र तरहरह-बाज़ा नाकहा राज़नीत म् (देरक मूर्यत छेनत अरन त्र कि नरण्ड - दरही दनरम পাৰা--বৰি পড়ে মূৰের যে ক'ত জায়গা কুঁচকে গিয়েছে (ब वनवात्र नम्।

শার্ক্তন বাহাছর বন্দুকের কুদোটা মেঝের উপর দিয়ে টান্তে টান্তে এধার ওধার ফিরছিলেন আর আপন মনে বিড় ২ করে বকতে ২ নেহাৎ বদমেজাজী ्रञ्चार प्रिचित्त बहा कि छहा कि लिख्छ न कत्रहिएनन। কথাগুলোর নমুনা তোমাকে একটু গুনিয়ে দিই— "ख्यात खें। किंगा ?"

चारक ७ (७ यूव (बाराज कन वारक चानि यूव इन्ड दारिक राम दाना दाना हाराहा

"এ চেয়ার গুলো—এ গুলো মজবুততো কেমন हिक्रव (मिथि" वर्ताहे अक अक्षान (ह्यात छेटिया भएकत উপর ধন্ধন্করে পায়া শুদ্ধ ঠুকতে আরম্ভ কর্লে।

ভার যে খুঁত বার করাই মংলব তা আমাদের আর ৰুকতে বাকী ছিল না।

ছয়ারের দিক ফিরতেই আমাকে দেখে একবার ভ্যাড়চা ভাবে তাকিয়ে জিজাসা কল্লে 'তুমিই কি বাড়ীর কৰ্ত্তা নাকি ?"

"है।, नार्ड्डन,"

"呵呵"

ভার পর পিঠের ঝোলাটা টেবিলের উপর ফেলে বন্দুকটা খরের কোণে ঠেপিয়ে রেখে বল্লে 'ব্যাচ্ছা, এই ৰধেষ্ট এখন তোমরা বেতে পার।"

এর মধ্যে সাফেল গিয়ে রালা বর খুলতেই কাবাবের ্**ৰুস্**ৰুতে খরটাভরে গেল। সলেবিশ হাঁসি মূখে, মিটি ক্ৰায় বদ্দে "গাৰ্জেন মশায়, মাপ করবেন, কিন্তু আৰু সামার একটা কথা আপনাকে রাবতেই হবে।"

अश्वास आवाद किছ वनवाद आहि गांकि ?"

"हैं। चारक देव-की। चाननात यथन अहे बारमह "ডেরা" ঠিক হয়েছে আপনি তথন বলতে পেলে এক রকম বাড়ীর লোকই হলেন তা মধ্যাছের আহারটা व्यक्षकः व्यावत्वत्र यञ अक्षि तात्र व्यामारमत्र मरन्दे কর্ত্তে হবে।

কর্ত্তা অম্নি রাল্লা বর পানে নাকটা কিরিয়ে বলবেষ "ও:, এই বৃঝি—এ যে হ'লো আলাদা কণা"। ভার পর তাঁর ভাব দেখে বোধ হতে লাগলো বেন আমাদের উপর এ মেহেরবাণীটা করে হবে কিনা তাই একবার বুবো সম্বাে দেখছেন—আমরা তাে চুপ করে—ভিনি কি জবাব দেন তারই অপেকায় দাঁড়িয়ে রইলাম। বাছাছ্ত্র একটুক্লণ দম ধ'রে থেকে ছই একবার মাক স্থানীয়ে জোরে ২ নিখেন টেনে কার্ডুদের পেটটা বিছানার উপস্থ फाल वलातन "बाह्या छारे नरे-हाला तिया बाक, গিয়ে'। আমার মনে হ'তে লাগলো 'ব্যাটা ছোট লোক ওর জল্মে এবার এত যত্র আর্ত্তি! আজ যদি ব্যাটাকে ভধু কাঁচা মেটে আলু ৰাওয়াতে পাৰ্তাম তবে আমার গাল্পের ঝাল মিট্তো।" সলে কিন্তু আপেকার বভই (यम थूमी ভাবেই রয়েছে দেখলাম। সে সার্জেনের কথা ভনে ধুব থাতিরদারী করেই বলতে লাগলোঁ "তাহলে একবার অনুগ্রহ করে গা তুলে এই বিক বিয়ে ব্দাসুন"।

थावात चरतत ভिতत हृत्क मिचि-जारामिन रात्राह यिन अग्नः तालपुरु तत्र अश्च-चत्रिं विचि नांग्रेत्नाहे দিয়ে খাদা করে সাজিয়ে গুজিয়ে টেবিল পাতা হয়েছে ধ্বধ্বে চাদর পাতা—ভার উপর চীনা মাটির মেট श्वतात भारत र क्रभात हूर्ति काछ। मार्क मार्कनरक টেখিলের আগার দিকে—আমি যে আরাম চেমার খানায় বসতাম সেই ধানাভেই বসিয়ে দিলে। ভাকে যে বাড়ীর কর্তার মত সন্মান দেখান হচ্ছে—ভার ক্সে নার্জেন একবার বাড় উচু করে চেয়ে বললে ''কেন • কোনও রকম ইতন্তত: না করে এবার ভাব দেখালে त्यन अम्मि श्रांशे निष्णि इ'रम्न श्रांतक। जात्रश्र व श्रं श्रंति

विश्वादक शांत भिरत अरगुष्ठाकम बूगरकर है।हेका ममीत প্রশাস্ত্র কারিদিক ছড়িয়ে পড়ল। সে দিন যে কি রারা বারা ব্যোছিল, ফি.জ, ভাও ভোমাকে ওনিয়ে দিকি। জন্দে পরে বলতে কি—ভোমারও বিধান যাবে যে এর হৈছেও তাল রকম শাওয়া দাওয়া তোমার আমার অদৃত্তে मध्य कृतिनात नह।

ভার পর খাওয়া দাওয়া তো আরম্ভ হ'লো। श्रीकारमञ्ज स्टामिन (अपिन--)नः - त्रावहारगत कावात. । বেশ বড় রক্ষ একটা "পাইক" মাছের ভরকারি, क्षर कि निरंत्र भारत निरंद्र अके। हेक बात अ हाड़ा वड़ হৈছৰ ভোজ নেমন্তন্ত্ৰ বাবা হয়ে থাকে স্বই জোগাড় क्ति। अनव नत्न त्र निर्व दार्छ— (मर्थ छान भइन 🗱 রারা। রাধুনী মাগী তো উপলক বলেই হয়। माक र कड छेरकडे हात्रहित छ। चात वनवात नग्र। 🏟 ছাড়া পুরো চারটি বোডল ত্রাণ্ডি—শীতকাল বলে देशांचन कही। साराप (वैर्थ भ्रम करत्र अत्मिक्न-चात्र ক্ষু বাক্ত মিটার ত চিন্ট।

ভাষিত্ৰ ভূমি বল্লে বিশ্বাস যাবে না যে থাবার हैम्स त रुख्याड़। মুখের, ভাব দেখে কোনও জিনিবটা বৈ ভার ভাল লাগ্ছে, তা বুঝবার, লোট হিলনা। बन्दा, कि वावा, इहि षष्टा वरत वरत स्थरन छ। रवहात জাৰুৰাৰ ও বৃদ্ধিনে এল যে বলি যে ''মাছটা বেশ মিষ্টি" "কাৰাবটা রালা হয়েছে ভাল"—"কি এ ব্রাণিটা বেশ DE ALSE I"

মে বেচারা নেমস্তর করেছে তার মনস্তুষ্টির অন্তে-कि द लाक है। कहे करत बहुला दि रहिए लाक धूनी ক্ষার অভে –লোকে এম্নি ধারা ছ একটা কথা বলে প্রাক্তে 📍 ভাবে হাভাতে'র মূব দিয়ে যদি একটি कारक द्वतिरम् थाक्त। द्वि। अमृति छाव द्विशाल द्व ক্ষিত্র থাওর হেন ভার মিভিছে তুটে থাকে। আমার क्षित्र पात्र उठ्हे (न क्ष्ट्रे हरत मूथ छात्रि करत छूक

कुँठ्रक जामारमन रहनमा कर्छ बारक रान जामना छारक काम गिर्फ विव विव बाहेरत एनव वर्णहे समयबा करत्रिक्ति ।

चामात राग এ चात नहा दक्ति भा चामि निलास (ववक राम-कातक वात नान व मितक हारेनाम-(तथनाम जात मूर्य हानि (नर्भहे चाहि। এটুকু ওটুকু ভাল লিনিব সাজ্জনির বালায় তুলেদিছে -তখনও তার গেলাস খালি হলেই মদ টেলে লিছে! ধক্তি যেয়ে যান্ধের বৃদ্ধি! আমার ছু তিন বার মনে हरना क्रिंচिश्त विन-"नान कि चुम्पत ताबाह (बैराइ আৰ কাবাবের ভেতরের পুরগুলোও কি বেতে এত श्रुशाम द्राह्म।" किन्तु भाष्क्र निष्ठे। এর मध्य देशेष বাঁকা ৰুষ্টিতে আমার পানে চেয়ে দেখুলে। বুঝনাম সেও আমার মনের কথা জান্তে পেরেছে। চথের ভাব দেখে ৰনে হ'লো যেন সে বলতে চায় ''কি হে মৎলব---ধানা কি? এত মাতব্রর হ'লে কোথা থেকে? আমাকে আদৰ কামদা শিৰোতে চাও ৷ কোন্টা ভাল কোন্টা মন্দ তাকি আমি ভোমার চেয়ে কম বুঝি। 🐾

আমি আর এরপর কোন কথা কটলাম না। আরু কথা নাকয়ে একধার থেকে যত খেরে যেতে লাগলো আমার ততই মনে হতে লাগলো এ বেটাকে একেবারে ভাষার্যে পাঠাতে পারতাম তবে এ গায়ের वान मिहेटा।' जा मान याहे दशक मान द प्राप्त मिष वार वाहित वाहित थुनी छावह दिवाल नांशनाय।

थे। ७ या मा ७ या १ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष नांगाना यांक व बानाव शानाय (छ। हरक (भन-व्यव) नवह जनवात्नत मिक जात अकड़ मना बाकरनह सद् পৰে আৰু বড় ঠকানটাই **ঠকেছে—কিন্তু ভার আ**ৰু অপরাধ কি ? সে তো এসব ভাল ভেবেই করেছিল ভা ি ছাছে ৰছাই ৰোগাযোৰ কৰে বতই তাকে মিটি কথার, -কোধা থেকে এমন একটা পশু এগে কুট্ৰে ভা কে **क**ारन : ?''

শাবার বাসন সরিয়ে নিতেই—আৰি "কফি"
আন্তে বলে ভাণার বর পেকে কয়েক বোতল প্রাণ
"রম্" আর চেরী কলের সরাব আন্তে গেলাম। আমি
ফিরতেই সার্জন বিজ্ঞাসা কয়লে বোতলে কি ?" আমি
বুরাম "রম" আর কালা ভঙ্গলের চেরীর সরাব—যার
"কির্সেন ওয়াসার" বলে এত নাম ডাক। তারি সরেস
জিনিস এ—বছ দিনের প্রাণো। সে চোধ মিট মিট
করে বলে উঠলো "বয়েই হলো অম্নি কালা জয়লের
চেরী সরাব,—মুখের কথা আর কি! বাপু সাজ্জেন
ক্রবার বড় সহকে ঠকেনা, কই দেখি কেমন তোমার
খাটি জিনিস ?"

ভার পর কফি থেতে খেতেই হবারে ছ গ্লাস সাবাড় করে বলতে লাগলো "মালটা আসল কিনা একবার ভাল করে পরথ করা চাই ভো।"

নলে তাকে আর একয়াস ঢেলে দিতে যাজিল কিছ সে থাবার টেবিল পেকে উঠেপড়ে বললে 'না পুব ইয়েছ—আর কাজ নেই। আল আবার ডবল ডবল জোক মোভায়েণ হয়েছে—আমাকে ফরাসী দরওয়াজায় পাহারা দিতে হবে। তা আলকে থাওয়াটা বড় মল হয় নি। এমনি যদি মাঝে মিশেলে চলে তা'হলে আমাদের বন্বে বড় মল নয়।"

কথাগুলো বল্লে বটে—কিন্তু মুখে কোণাও হাঁদির
চিহ্নও ছিল না—মনে হতে লাগলো বৃঝি আমাদের
ঠাটা বিক্রপ করেই বল্ছে। এর উত্তরে সলে বল্লে
"আমাদের ষতটুকু ক্ষমতা তার একটুও কস্থর হবেনা।"
ভার কথা শেষ হতে না হতেই কুবার তার ঘরে গিয়ে
বাইরে বেরুবার ওভার কোটটা হাতে করে নিয়ে এল।
ভার পর গিঁড়ি দিয়ে নাম্তে নাম্তে বল্তে লাগ্লো—
"আছো আছা দেখা যাবে এখন।"

আমি এতকণ কোন কথাই বলিনি—সে মিচে নেমে বৈতেই গলা ছেড়ে বলে উঠুপাম "সলে এমন • • মাজার তো আমি কথনও দেখিনি—এর সলে আমাদের

ক্ষমও বনাবনি হবেনা—দেখছি শেব পর্যান্ত এ বেটাই জন্যে সব গুদ্ধ বাড়ী ছেড়েই পালাতে হবে। সংল হেঁসে বললে "না গোনা—দেখে, এখন এর পর বেশ বনে মাবে। তুমি যা বুঝেছ আমার দেখেতো ভার" উপ্টোই মনে হয়।"

আমি বলাম "তোমার মূথে কুল চন্দন পরুত্ত, ভগবান বেন তাই করেন কিন্তু আশার তেমন ভরদা হচ্ছেনা"। দে হাঁদি মূথে টেবিলের চালরখান উঠাতে লাললো। আমি মুখে যাই বলি—তার কথা ভনে সভিঃ সভিছে যেন একটু আশা হ'তে লাগ্লো—ধরে যেন প্রাণ কিন্তু এল। তার যে কত বৃদ্ধি কত কৌশন সবই তো আমার জানা আর এই ব্যাপারে তার স্থিবেচনারও প্রিচ্ছ পাওয়া গেল।

শ্রীগুরুদাস সরকার।

#### क्ष वल।

লবাই পড়ে সমর জ্বরে

হস্ নাহিক হায়,

মুর্ধ মা মরণ কালে

জল চাহিছে কার ?

জ্বরের ঘোরে জ্বনাড় পড়ে
পুত্র পালোয়ান,
মাতার স্বরে চমকে উঠে
ক্ষণিক লভি জ্ঞান।
শক্তি বিহীন উঠতে নারে

চক্ষে ঝরে জ্লা,
হাররে বিধি এমন করে
কর্মলি হীন স্ক্লা,
'গাত গেড়েতে জ্লা সেচেছি

कन्त्री (शरक जन गणारक শক্তি নাহি স্বামী। हात्रदे मुद्धा माथात्र करत वन वर्ष्टा हिर्म. আয়ার যাতা যায়রে আজি काङानिमीत्र (वर्ष. करत्रिंहाग वज़ारे तथा শক্তি কাহার নিয়ে चांकरक रम जारे कानिए पिरन तार्थ चाजून मिरा । शृष्टे चामि इहे चामि কারা শুধু পার, अयन कठिन निका (य (एव দয়াল বলি ভায় গ

बीक्ष्मत्रक्षन महिक।

## যুগ সমস্যা

্রিক্রমান যুগে মানব মাত্রেরই জীবনের পথ স্মস্তা বুৰিইয়া উঠিয়াছে। কে কোন্ পথে চলিবে জাতীর সতি কোন মুখী হইবে, দেশের অবস্থা তাই সর্বতোমুখী ক্র∎েছাপাইরা উঠিয়াছে। বর্ত্তমান মুগ আমাদিগকে ন্ত্রাছুপতিকের গণ্ডি ভালিয়া চুড়িয়া নব প্রবর্তনের শ্রীম প্রাবর্তের নিরবচ্ছির স্রোত মূপে টানিয়া ক্রিছাছে। এ গতি স্রোতকে মগলও অমঙ্গলের স্ক্র ক্ষিতিতে বিচার করিয়া লাতীর জীবনের গতি পধ মির্মণ করিতে হইবে।

आमिरिक प्राप्त शूक्य जारमक शक्ति भरवत बादव किहारेडा जनीम ठर्क ७ जनस भरवर्गा क्छित्रा निराहि। মিলৈ ভারারা নিজ নিজ কর্ত্তব্যাকর্তব্যের পুথারপুথ

গবেষণায় ব্যতিব্যস্ত। কিন্তু বাকী বহিয়াতে নারী, ভা'ৱা णारमत हित्रनिर्फिष्ठे वांथा शर्थ**रे ह**हिन्ना हिन्नारस् প্রবাহিতা তটিনীর অচঞ্চল বক্ষতিতা ক্ষুদ্র ভেলার স্কার সে গতি স্থির, ধীর ও মন্থর !

व्याक त्रहे नात्री कीवत्नत वर्खमान पूर्व नमश्रात পর্যালোচনাই এই ক্ষুদ্র প্রবন্ধের অভিপ্রায়।

নারী ও নর একই পৃথিবীতে একই উপাদানের ভিতর স্ট হইলেও, জীবনের গতি ও উদ্দেশ্য উভয়ের যাঝে ৰাবধান সৃষ্টি ক্রিয়া দাডাইয়াছে।

তাই আজ জাতীর গতি পথ নির্দেশ করিলে মর ও নারী উভয়ের গতি পথ নির্দিষ্ট হয়না। কারণ মানব विशाद उछात এक इटेलि वाखन सीनानत देवनमा উভয় (ক ভিন্ন পথগামী করিয়াছে। যুগের ঐক্য তামের কর্ম প্রশালীর মাঝে বিভিন্ন ধর্মে প্রকাশ পাইয়াছে।

আ্যাদের বঙ্গদেশের নারী স্থাক জাতীয় জীবনের ঘূর্ণাবর্ত্তের মাঝে বেশ এক সন্ধটপূর্ণ অবস্থায় উপনীত হইয়াছে। তাদের জনাগত অভ্যাদ অহুভৃতি বাহিরের সংঘর্ষে মুগপৎ ভীত ও শক্তিত হইয়া উঠিতেছে। চিবু নির্ভরতায় অত্যন্ত বন্ধনারী আশ্রম অভাবে পতনোশুখী হইয়া পরিতেছে।

व्याभारमञ्ज (मर्ग अश्वतक वज्जवम्म, कृषि, छाछ প্রভৃতি কার্য্য তত্টা ছিলনা সভ্য কিন্তু একারবন্ত্রী পরিবার প্রথা বহুদিবদ হইতে চলিয়া আদিতেছে। কিন্তু বর্ত্তমান মূগে তা লুপ্ত হইয়া আসিয়াছে। এবং অনতি তবিষাৎ যুগে তাহা মোটেই থাকিবে किনা সে विवाय वित्यव मान्य चारक ।

পূর্বে একমাত্র উপার্জনক্ষম পুত্র তার নিজ পদী, পুত্র, কল্পা নিয়া সংসার পাতাইয়া বসিতে পারিত না। নিক পদ্মী পুত্র কলার সহিত তাহাকে পিতা, মাতা, আছা ভ্য়ী, আখ্রিত আখ্রিতা প্রভৃতি বছকন প্রতিশাসক क्षा मार्कर निव (अरत्र नक्षान कृष्णिहार । उठिएक , बहेरक वरेक। अवर दन विरम्दन वाकित्रा, कहेनाक चीवन यानन कतिया छथमकाद नमारमञ्जलिक विश्वप्र प्रशासन

ক্রিয়া দেবতা ধবি প্রভৃতি কোনরপ বিশেষণ প্রাপ্ত হাইত না। তাহারা ইহাকে নিজেদের যথা নির্দিষ্ট কর্মবাও করনীয় বলিয়াই মনে করিত।

কিছ ধেশের বর্তমান অবস্থায় সুযোগ্য পুত্র তার
বিধবা ভগ্নী বা উপায়ান্তরহীনা ভাতৃবধুর গ্রাসাচ্ছাদন
করিতে পারিলেই নররূপে দেবতা আখ্যা প্রাপ্ত হয়।
এবং ইহা ভাহারা নিজেদের কর্তব্যের অভিরিক্ত কোন
স্থুমহৎ কার্য্য করিতেছে বলিয়াই মনে করিয়া থাকে।

ভবশু আধ্নিক আর্থিক অবস্থা ক্রমেই শোচনীয় ছইতে লোচনীয়তর হইয়া তুর্বেগ মানবের ভারাক্রাম্ব ছবে—তার অসীম চিন্তার বোঝা চাপাইয়া দিয়াছে। এবং ইহাও অতি সভ্য যে পূর্বে যত পরিমাণ অর্থ দারা বহুলোক প্রতিপালিত হইতে পারিত বর্তমানে ভাহাদারা নিজ্পত্মী পূত্র প্রতিপালনও কন্ত সাধ্য হইয়া উঠিয়াছে।

ভাই বলি পুর্ব্বে দেশীয় নারী সমাজ সামীর মৃত্যুর পর, দেবর, প্রাতা, খণ্ডর প্রস্তৃতির গৃংহ আদরিনী গৃহ শন্মী রূপেই আশ্রম প্রাপ্ত হইত। এবং বর্ত্তমানেও আনেকে এরপ থাকিতে পারে। কিন্তু বর্ত্তমান সংগ্রাম— পূর্ণ জীবন যাত্রার মাপে গ্রাই যথন নিজের ভারেই ভারাক্রান্ত কে তথন উড়ো বোঝা ঘাড়ে করিয়া কুল্ল আরের মাঝে ভাগিদার সৃষ্টি করিয়া তুলিবে।

অবশ্র বছজন প্রতিপালক, আত্মীয় রক্ষক, স্বজন পোষক লোক মোটেই যে নাই তাহা নহে। আছে; কিন্তু জনসংখ্যার আধিকোর সহিত তুলনা করিলে একরপ নাই বলিলেই চলে।

ভাই আজ নারী সমাজের অবস্থা শোচনীয় হইয়া
পরিয়াছে। সমাজ তাহাকে নির্ভরশীলতায় অভাস্থ
করিয়া তুলিয়াছে দত্য কিন্তু তার আশ্রয় স্থান ক্রমেই
সংক্রিক হইয়া পরিতেছে। তাহাদের জীবন্যাত্রার
সংক্রিক ব্যক্তাপূর্ণ হইয়া উঠিয়াছে। তাই আজ নারীর •
জীবন বাজার গতী ভালিয়া ফেলিয়া পুরাতনের অনিষ্টকর

নিয়মগুলি পরিবহ্ণ ন এবং নৃত্নের মক্ষপূর্ণ নিয়মহে নিহ্ন আথার সহিত সংযোগ ক্ষত্রে এবিত করিয়া লইজে হইবে। নারী তার সূহের সৌকর্য্য বজার রাখিরা বাহির ও নিক্স অভিব্যক্তিতে পূর্ণ করিয়া তুলিবে। তাদের সেহ প্রীতির লীলাক্ষেত্র হাদয়গুলি বড় বাছির এক করিয়া তুলিয়া বাহিরকে ও সেই অঙ্কণ বর্ণ জ্যোতিতে অংলোকিত করিয়া তুলিবে। তাতেই তার ক্যা ক্ষেত্রের প্রসারতা বদ্ধিত হইয়া জীবনকে পূর্ণভার সার্থকভার মণ্ডিত করিয়া তুলিবে।

যে কোন সংবাদ পত্রই দেশের আভ্যন্তরিক অবস্থার শোচনীয়তা সম্বন্ধে প্রত্যথা প্রমাণ দিবে, এবং চাকরী জাবি বাঙ্গালী সমস্ত জীবন আফিবের চলস্ক চাকরে নিপ্লেরণে অতিবাহিত করিয়া যথন সেই চির নির্দিষ্ট পথে যাত্রা করে, তথন বজন মৃত্যুর তাত্র বেদনার চেয়েও তাত্রস্তর বেদনা তার পত্নীকে আকুল করিয়া তুলিবে। তা তার নিজ পরিণাম চিন্তা, আশ্রয় চিন্তা। কারণ চাকরী করিয়া স্থামী এমন কিছু সঞ্জিত পূজি স্বাধিয়া যান না যাহাতে পত্নীর সকল অভাব পূর্ণ হইতে পারে।

কিন্তু আমাদের দেশ ধারণা করিয়া বসিরা জাছে
নারীর পরনির্ভরতাও পরমুখাপেক্ষিতাই তাদের দাশভা
স্থ গৌভাগ্যের অটল ভিত্তি। অনেকাংশে এটা সতা
হইলেও সর্কাংশে নহে। কারণ পুরুষের নিজ সমস্তা
আজ বুঝাইয়া দিতেছে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র জাতিকে উপেক্ষিত্র
রাখিলে চলিবে না। ক্ষুদ্র বৃহৎ সব শক্তিকে প্রেমের
কঠিন নিগরে গ্রথিত করিয়া এক বৃহৎ কর্ম শক্তিকে
উদ্ধুদ্দ করিতে হইবে, যাহা বিপুল বিশ্বকে তার ইলিতে
চালাইয়া নিবার সামর্থ্য রাখে।

আমাদের দেশের কাব্য নাট্যের অর্থ্রেক পৃষ্টি নারীর এই নির্ভরতা ও অযোগ্যতা নিরা। তাই তারা নারীকে গঞ্চারিনী প্রবিনীনভেব প্রভৃতি, অল্যার সংযোগে এক সুমোহন কোমল ভাবের স্টি করিয়া মানব চিত্রেক আরুষ্ট করিয়া থাকে। নারীকে এখন আর হাওঁরিয় ক্ষিন, নেশার খতন, কৈ ক্ষম গন্ধ রাশির মতন তাসিরা বিশার সময় নাই। তাই বলি কাব্য ক্ষপতের সহিত বাজৰ রাজ্যের তুলনা করিলে এটা স্পষ্টই প্রতীত হয় যে বারের বাহাইকুটতর হইরা মানব চিত্তের তাবপ্রবনতা ক্ষিত্রী তোলে বাভবে তাহাই নানা বাত প্রতিবাতের ক্ষিত্র সংবর্ধের মাবে চিত্তের যাধ্র্য বিন্ত করিয়া হলয়

ছিত্তে নিরুষ্ট কাঠিতে পরিপূর্ণ করিয়া কেলে।

শুক্তব কর্দা ক্লেরের প্রসারতার জন্ম নিজকে নানা জাতির সহিত তুলনা করিয়া ভারের বিজিতে কোবার তাহার দৈক তাহা সারিতে চাবিতে কোবার তাহার দৈক তাহা সারিতে চাবিতে লাসিয়া সিরাছে। এবং বর্জমানের সহিত নিজ জীবনাদর্শকে গড়িয়া পিটিয়া তুলিতেছে। কিন্তু জারী ভার জাবেইনের নাঝে বেশী পরিবর্জনের শ্রোত বহার নাই। কারণ ভাহাতে শক্তির প্রয়োজন, এবং গোনে যে ভাহাদের অভ্যন্ত জড়তা ভাজিতে হইলে শুকুবের সবল হল্তের অক্লান্ত সাহায্যের দরকার। নিজকে অপরের সাহায্য ব্যতিরেকে প্রকাশতার পক্ষের্জন বলিয়াই ভাবিয়া থাকে। কিন্তু সে সাহায্যের জালা এবনা বহুদ্বের পরিয়া রহিয়াছে।

শুপ্রসিদ্ধ সহবের ত্ একটি স্থল বোডিং এ ৭।৮ শত লেরে শিক্ষা পাইলেই দেশের স্ত্রী শিক্ষা ও আয়নির্ভতা লালার হয় কি ? তাছারা তারা ভত্ততাবে সম্ভ্রম বজায় ইামিরা নিজ পায়ে দাড়াইয়া চলিতে পারে এরপ শিক্ষা এবং কর্মকেন্তের এদেশে একার অভাব। তাই সচল লালের বর্মপ নারী হৃতিক দক্ষ আয়ীয় স্বজনের স্কর্মের বোকা রূপে প্রিরণত হইয়া পরিয়াছে। এবং তাই মড়ে মড়ে বিশ্বার এক বেলার আতপার সংস্থান এবং কুমারীর শিক্তমাজ্বন পরিজ্ঞপাহ এক অনন্ত ভৃংধের আকর

ইহা সভা বে দেশ তিন প্রকার অধিবাসীতে পূর্ব আছিছে। বেধা—ধনী, নধ্যবিভ, দরিজ। তা কর্ম্মের জিলানাকতা বধন বধেষ্টই বহিয়াছে তথন দরিজের मर्था है रानी वृक्ति वहरत । किश्वन मदाविक, वादाक त्रार्थित कर्कत कीविक। निर्कद किहार दहा नर्वत्य क कम मर्था धनी ।

মানবের নিত্য ব্যবহার্যা বস্ত্র, আহার্য্য, আশ্রন্ধ সবই
বাস্তব রাজ্যে দেই অনর্থের মূল অর্থের কুপান্নই জুটিয়া
থাকে। তাই কাব্য নাটকে তার আধিপত্য বতই ক্ম
থাক, কিন্তু বাস্তব জগত তাহাকে নিজ সহস্ত বেইনে
সংম্পুত করিয়া রাথিয়াছে। মানবকে জীবন যাপন
করিতে হইলে যেরপখাস প্রখাসের ক্রিয়াকে নিম্মিত
রাথিতে হয় তক্রপ অর্জনের চেষ্টাকেও সচেষ্ট রাথিতে হয়।

কিন্তু মধ্যবিত ভদ্র খড়ের স্ত্রী সম্বন্ধে বাহারা স্থামীর
মৃত্যুক্ত সহিতই অপোগত সন্তানাদি সহ দেবর, ভাস্থর
প্রভৃতি যে কোন সম্পর্কিত আত্মীয়ের আত্রয়ে গ্রন্থই
ক্লপে উপনীত হইয়া ফুর্লহ ও কট্টকর জীবন ভারবহন
করিতে থাকে তালের ভবিবৎও একবার উভ্তমশীল
পুরুষ জাতির চিন্তনীয় বিষয় নহে কি ?

পুরুষ ও নারীর কর্ম ক্ষেত্রের প্রসারতা বাড়াইতে হইবে। তাদের প্রকৃতির বিভিন্নতার সহিত কর্ম শক্তিকেও বিধিমত প্রসারিত করিয়া তুলিতে হইবে। নারীকে বন্ধ বারির দ্বিত পদ্বিলতা হইতে উন্ধার করিয়া মধানদীর অনস্ত আত মানে মিশাইয়া দিতে হইবে। জ্যোত জলে মিশিয়া কুদংকারের গণ্ডি অতিক্রম করিয়াই দে অবিমিশ্র ভবতা প্রাপ্ত হইবে। অস্তরের দৈঞ্জ, কার্য্যের অসাম্প্রতা ত্রিভূত করিয়া পুরুষের প্রত্যেক কার্য্যে প্রত্যেক বিপদে নিজকে সহকারিণী করিয়া তুলিবে, যে ক্ষুদ্র গুলের ক্ষর গণ্ডির বাহিরে যাইবার অবকাশ পার্য নাই, দেই ক্ষুদ্রই আল পূর্ব হইয়া তাহাকে বিরাট বিশ্বের কর্ম্ম প্রবাহের দহিত পার্রিত করিয়া তুলিবে। বিরাট বিশ্বই তথন তাহার নিকট বিরাট গৃহ ও কর্মক্ষেত্ররূপে প্রতীয়মান হইবে।

বন্ধদেশ রাজনৈতিক কেত্র, সমাল সংখ্যার, সাহিত্য পুটি, শিল্প বাণিজ্যের প্রসার প্রভৃতি নামা প্রথে উন্নতি হৈষ্টার নহিত বদি দেশীর স্ত্রী জাতির উরতি ও নগবের প্রতি উদাশীন থাকেন তবে তাদের প্রচেষ্টা গৌন জনিন্দিতের পশ্চাতে মোহময় স্বপ্নের অলীক বিহ্বনতায় শরিণত হইবে। কারণ তাহারা নিজ কর্ম সহায়দের উপেন্দিত রাধিয়া নিজেদের হর্মণ করিয়া ফেলিবে।

বিশ্ব মানব স্পরস্পরের সাহচর্য্যের জোরেই নিজেদের বেছি আসন দাবী করিতে শিবিয়াছে। এমন কি প্রাণি ক্ষণত ও পার্বির কগত, বিশ্বের প্রতি অপু পরমাণু নিজেদের কি এক নাড়ীর যোগের অচ্ছেন্ত বন্ধনে বাধিয়া রাখিয়াছে। তাই আল লীবনের প্রতি কার্য্যে মারীকে নিজের সহিত জড়াইয়া লইতে হইবে। নারীকে সর্বা বিষয়ের যোগ্যতায় পূর্ণ করিরা তুলিয়া নিজেদের চ্ব্রন্থতা ঢাকিয়া ফেলিতে হইবে। বিধাতার স্ট লীবকে উপেক্ষিত রাখিলে চলিবে না। তাদের জীবন যাত্রার গতি ও পথ নির্দেশ করিয়া হাতে ধরিয়া হাটাইরা নিতে হইবে। কারণ অনভান্ততায় তারা নিজের পায়ে দাঁড়াইতে তুলিয়া গিয়াছে।

वीनीशावक्यावी (परी।

# উন্মনার প্রতি

(3)

ওলে। সুন্দরী যুবতী !

প্রাসাদের 'পরে বসি' কার তরে
নিশ্বিছ নিজ নিরতি!
অসকে কুন্তম পেল যে ভকারে,
অব্যের হাসি পেল যে মিলারে,
পূলে টাদ ওঠে, সভে তারা কোটে,
অধ্যের বাবা ভ্বারে ক্লরে

भूमकिए क्य द्रवनी !

( २ )

अरमा ठम्लक वत्रना !

মৌবন-জালা পুৰিলে এমনি

অন্তরে জলে কামনা!
চঞ্চল চোক্ চাহে চারিধার,
থোঁজে জ্ঞানারে স্বার মাঝার,
ছুক ছুক হিয়া, পরাণ-পাপিয়া

কাদে গো।
সদা প্রাণ মন রহে উচ্চাটন,
ভাখি জলে দিঠি বাধে গো!

(0)

७वा कि वृक्षित मानिनी !

क्रकारत्र शित्रां छ क्षत्र अस्तत्र,

পোহায়েছে স্থ-বামিনী !
আঁথি চুল্-চুল্, আলু থালু কেশ,
নিশা-জাগয়ণ-আলস-আবেশ,—
ওয়া চলে বায়, ফিরে না তাকায়

নৃতনে! প্রশক্ষের মধু সুরায়ে গিয়াছে, বরণ করিছে মগণে!

(8)

ওলো চঞ্লা চতুরা !

অঞ্চল তব উড়িছে হাওয়ার,
প্রন-পরশ-বিধুরা!

কৃষ্টিরা চিন্ত কৃটিছে আঁচুল,
প্রতি নিমেবেতে পরাণ পাগল,—
সম্বর' দ্বা বেদনার ভরা
হিয়ারে!

হুলনে হুণানে প্রাণে প্রাণ হাঁনে, কি জানি কে চার কাহারে;

विवडील श्रेमा ए छोडावी

## শ্ৰেন্থ সমালোচনী-

A short History and Ethnology of the Cultivating Pods.) और्छ भारत्यनाप ক্ষ্মা প্রাত। সম্ভবতঃ আদম-তুমারী কর্তৃপক্ষণণের দৃষ্টি ক্ষিক্রবের জন্ম ইংরেজী ভাষায় লিবিত। গ্রন্থকারের উদ্দেশ্য এই নে আগামী আদমসুমারীতে পদ ভাতিকে depressed class ভুক্ত না করিয়া ব্রাত্যক্ষতিয় লেখা হউক। वाह करत ना छ तहन अवश (मनीय ७ विक्रिमीय वार्षक शर्वत মত উদ্বত করিয়া প্রতিপন্ন করিয়াছেন যে 'পদ' অনার্য্য শা হীৰ জাতি নহে ইহারা কবিজীবী এবং ব্রাতাক্ষতির। ৰাদ আতি সংখ্যায় নিতান্ত কম নহে। **हेश** मिश दक ক্ষিত্র শ্রেণীতে রাধা সমাজের পক্ষে হিতকর নয়। **ক্রিডাভোর গৌরব মামুব মাত্রেরই স্বাভাবিক ধর্ম—** ক্রিট লেখকের উদেখের সহিত আমাদের সহামুভ্তি সাছে। কিন্তু যিনি অতীত লুপ্ত ইতিহাদের কীণহত্র লাবিছার করিয়ানিলকে উল্লুত লাতি বলিয়া প্রতিপর ভরিতে প্রয়াস পাইয়াছেন এবং ব্রাহ্মণাদি উচ্চবর্ণ ব্রীকালিগকে অনুরত মনে করায় এত কোত এবং ঘুণা অক্তের করেন তাঁহার পকে তাঁহার চেয়ে অপেকারত ক্রীর আতির প্রতি এরপ ঘুণার ভাব পোষণ করা শ্রেষ্ট্রভার পরিচায়ক। লেখক এই কুদ্র পুত্তিক। জানিতে জাতি বিষেবের এবং ভিন্ন মতাবলগীগণের বিশ্বতে যেরপ ভীত্র বিব উদ্গীরণ করিয়াছেন এবং ক্রান্ত্রামার সম্বাদ্ধে সেরণ অসংযত ভাষা প্রামার ক্রিব্রাছের ভারতে তারার কুদ্র সংকীর্ণহাই প্রকাশ विश्वपद्धा वित्ववतः छिनि উপসংহারে অধিখাতেন ভাৰাতে পদ জাতি ক্তিয় হইয়াও এতকাল ৰ প্ৰতিত ও অদীপুত ব্লিয়া পণ্য হইয়া আগিয়াছে का अब है। बाराव मूर्स मुख्यमा है खारानकः नार्यो । निवक्त कृति रमस्ती भाषक कविया धकरे थीत श्वित छ। र का बहुन वानर वृद्धि छार्कत वानछ। तना केतिया निक अिल्पाण विषय अवार्ष यम मिर्फ्य जाहा हहेर्य हैदाव मृन्य जारता (वनी हहेल।

#### (१)বিক্তমাদিতা।

अक बानि छेलिशांत्रिक छेलकात । द्वीयान छरवन्तर মজুম্লার প্রণীত। ৫২০ প্রচায় সম্পূর্ব। ছাপা বাই এং ভাল। লেখক এই জেলার অন্তঃগত আহুনিয়া গ্রাম निवानी अदर अकलन छेप्ताही नाहिजासूतानी वृत्र। चागारवर भूक राज शकु नाविजा ठका विन विन रवद्वभी কমিলা যাইতেছে ভাহাতে কোন নবীন লেখককে माक्तिएकरत चरठोर्व हरेए एपिएन माम चामार मध्ये इत । ভবেশ বাবুর অমচিতা নাই, অবসরেরও अर्जीय नाहे। जिनि यपि देशी महकारत मश्यक छार्य সাহিত্যের সাধনা করেন এবং সাহিত্যের প্রক্রত সৌন্ধর্যা নিজে হান্যপ্র করিয়া তাহা ভাবার ফুটাইতে বন্ধ করেন তাহা হইলে কালে তিনি ঔপঞাসিকের পদ লাভ করিতে পারিবেন সম্থেহ নাই। বিক্রমালিতো তিনি সুদূর অঠীত কালের একধানি ঐতিহাসিক চিত্র আঁকিতে চেষ্টা করিয়াছেন। কিন্তু বোধ হয় তাঁহার প্রথম চেষ্টা বলিয়াই তিনি ইহাতে আধুনিক ও সভীতের সামল্লগা রকা করিতে পারেন নাই। নামে অভীত **२३ तिथ अहे छेलकारित हतिल खनि वाश्मिक,** ত্তিপন্যাসিক পাপ এবং পুণ্য জুই রক্ম চরিজের হা কবিয়াই তাঁহার যাহা সৃষ্টি উদ্দেশ্য ভাহা সাধন কবিয়া बारकम । भारभव हिराजव नध वी छ ९ मछा मा (मचा देशा) धवः चक्रित नीमा नहवन ना कतियां अ भारत करवां छ। केत्यां हिंठ कतिया भूरगुत महिममंत्र हिंख लाक हरक ফুটাইয়া তুলিতে পারেন। ভরদা করি লেখক এ বিবরে ভবিশ্বতে একটু यत्रवान वहेरवन। এই উপভাগের हित्य वागःथा। धार्रेका वृह्मात्र्यम हित्य वहन धार् मून एक ब्रका कविया हना चि कठिन। मेदीन लिपेश्यर পকে তাহা আরো কটিন এবং তজ্ঞত উপভাগ বারিতে रकाम अक्रो क्रिकेट विराय शक्तिक एक माके र केक्सिक

্রাণ্য । চুণিখালের চরিত্রও মন্দ হয় নাই।

ভাষা সম্বন্ধে লেখক ভূমিকায় লিথিরাছেন যে তিনি
সাহিত্য সমাট বিষমচন্তের অনুসরণ করিয়াছেন।
ছানে স্থানে ভাষার কথা সত্য কিন্তু স্থানে ২ ভাষার ভাষা
বিষমচন্তেকেও অভিক্রম করিয়া গিয়াছে। যেমন—
"সহসা ব্রন্ধাতে মন্তিক বিদীর্ণ ইইলেও তিনি এভদুর
ক্ষেত্তিত ও বিমর্থিত হইভেন না। বালকের স্ক্রুমার
কান্তি ক্স্কেনির্মাল মুখনী ভখনই যেন বিযাদকালিমায়
আক্রে ইইল; কোভে ভৃংধে তাঁহার তেজপুর্ব অবচ
সম্মলতাব্যপ্তক নয়নবন্ধ বিভালগর্ভ জলদপণ্ডের ভায়
শোভা ধারণ করিল; বিস্তন্ত্র-বিকৃর্ণিত প্রবন্ধর পলক
বিরহিত হইয়া স্থির ভাবে রহিল; নৈরাভা-লেখ-প্রকৃত্তক
অক্ষিতিনী অন্ধিচন্দ্র প্রস্কললাট স্বেদ্বিক্ শোভিত হইয়া
নিহারসিন্তন্ব প্রাভাতিক প্রমুক্ল চ্চটা ধারণ করিল;
বিজ্ঞাব্য তিন্তোহেগবশত পাপুর্ব্ব ধারণ করিল।"

লেখকের ভাষা একদিকে যেমন অপ্রচলিত হুরং শকালভাৱে নিপীড়িত ও ছর্কোধ্য আবার স্থানে স্থানে ভেম্নি ইতর গ্রামা ভাষা প্রয়োগে শ্রুতিকটোর हरेबाहि। (तथक नवीन धवः धरे डांशांत श्रेशन উরুষ। তজ্জা তিনি ভূমিকায় যেরপ বিনীত ভাবে ক্রম শ্রীকার করিয়াছেন তাহাতে তীব্র সমালোচনা कविशा डाँहात डेखम नहें कता व्यामारमत डेल्म नम्। ভাবে তিনি আমাদিগকে আশা দিয়াছেন যে শীঘুই केंश्वात देविक चात्र। २१२ थानि अब अकानिक कांत्ररात । ভাষার উপর তাহার অধিকার আছে। ভবিয়তে যদি ভিনি চারিদিকে শামগ্রস্ত করিয়া "শতি" পরিত্যাগ केर्तिका माबाभावि छावा वावहात करतन अवः जिला भन ্রুলিতে 'দিতেম' 'কর্তেম' 'হচ্ছে', 'কর্চ্ছে', প্রভৃতি े आर्पिक पक वावदात ना करतन छादा दहेरल छ। दात क्षेत्रभूत इहेर्स अरः जिमि गारिज्याकत मर्या छान • आंड क्रिटिंड शाहित्यम मत्पर नारे। "如何节中"

সাহিত্য-সংবাদ (১)

রাজগঞ্জ লাইত্রেরী।

রাজগঞ্জ লাইবেরীর দিতীয় বার্ধিক ক্ষমিবেশনে নিয়লিধিত নিয়য়ে উৎকৃত্ত প্রবন্ধের ক্ষম্ম নিয়েকি পদক প্রদত্ত হইবে।

- ১। গিরিশ চন্দ্র বোব পদক। বিষয়—হাস্যরসে বিজেন্দ্রণাল ও অমৃতলাল।
- ২। রামেক্স স্থানর তিবেদী পদক।
  বিষয়—শরংচজ চট্টোপাধ্যায়ের 'বিরাশবৌ'
  এর চরিত্র সমালোচনা"।
- ৩। স্থার গুরুদাদ বন্দ্যোপাধ্যায় পদক। বিষয়—পল্লী গ্রামের অবন্তির কারণ ও উন্নতির উপায়।

(কেবল ম্যাট্রিকিউলেগন্ ছাত্রদিগের কঞ্চ)
আগানী ২৯শে ফান্তনের নধ্যে নিম্নলিবিত
ঠিকানায় প্রবন্ধ পাঠাইতে হইবে।

শ্রীবগলাপ্রদর মলিক, শ্রীচারচন্ত্র পার। গম্পাদক, রাজগন্ধ লাইনেরী, শাবরাইল, পোর, হংগুরা।

# वीनाशानि (डोशा शनक। (२)

আগামী ০১শে চৈত্র পাবনা কিশোরীমোহন ই জেনিদ্ব লাইরেরীর সপ্তথ বার্ষিক অধিবেশন উপলক্ষে লাইরেরীর অক্ততম গুলাহারার প্রীযুক্ত সন্ত্রীবচন্দ্র লাইটো বি এই মহাশর বন্ধ ভাষার প্রেষ্ঠ প্রবন্ধ কোককে চুইটা প্রক্র পুরস্কার দিবেন। প্রবাধের বিষয়:—(ক) লাইরেরী ও ভাষার উপকারীতা, (খ) স্ত্রাশিক্ষা ও ভাষার প্রয়োজনীক-ভা। এই চুইটা প্রবন্ধ ১৫ই চৈত্রের মধ্যে লাইরেরীর সেক্রেটারী প্রিযুক্ত লাহ্নবীচরণ ভৌষিক বি-এল মহাশরের মানে পাঠাইবেন ইভি।



🍕 বঙ্গীর সাহিত্য-পরিষদে" পঠিত )।

পৃষ্ণার মন্দিরে ভারতীর
ক্রীপের অদীপ ধারা জেলেছিলা আনন্দে গভীর,
ক্রীবৃত্ত উদাও হারে নিতি নিতি রচি' নব গান
চরণ গরোজে মার আঅহারা করিলেন দান,
তারা আজি একে একে হার,
পৃত্ত ক্রির সারা বহুবার
ক্রোব পেলাক লোকে নীরবে বিদার!

स्त्र (दन चाकि मत्न दय,
क्यानिक सरीन मध् "काउ" (दम शादिक चक्य !
क्रिंड शिर्ट तीना-छडी, श्रिम शिर्ट लिछ संदात,
क्यांकृत छड़क-छश्न करज्ञानिनी नादि तरह चांद्र।
वनस्त्र चरनान नादि
चावि' वहि एन पिक् पादी,
क्यांकृत हम्म शिक् हार्ग शिक् वादि!

শেষকাৰ চিন্ন-উপাদক,
শৈকাৰে " চিন্ন-উপাদক,
শৈলাক ওচ্ছেন" কবি, কল কঠ "অপূৰ্বা" গায়ক,
কৈনিকেন কুআটি জালে আবিরয়া মাথের আমন,
কলে শেল ! সভ্য একি ? অঞ্চ বেগো মানে না বন্ধন !
এই মত সরল উপার,
এই মত আনের ভাঙার,
বৌদ্ধান্তির ভক্ত হেন, কত মুগে মিলিবেগো আর !

অননীর বেশী বেগো নাই।
বিশিষ্টে সোভিছপুর অনকার থেরে চারি ঠাই।
বুছা। বে কি লগতের চিরতন রহন্য নিগৃত।
ক্রিক্টেবর বোর্নান্তে করে বুবি তর্পন অঞ্চর।
বুধি করি আঁকাল বাতান
বিজে বাকে বর্পো নীর্যবান,
ক্রিক্টা নামুদ্ধ বাবৈ নক্তর্ম গাছ কি বিকাশ ।

কে কহিবে—কে জানে সন্ধান—
ক্ষা যবনিকাধানি বিশ পটে নিত্য বিদ্যমান।
মানবের কুল শক্তি ফিরে আলে মানি' পরাজর,
শান্তিহারা কেঁদে মরে প্রিয়হারা ব্যবিত হাদর।

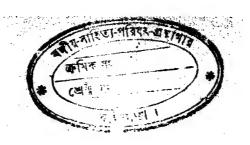
কুর কাল হাসে অট্টহাসি, সিন্ধু ভীরে বাবে রুক্ত বাদী সকল বন্ধন টুটি' ছুটে শীব পুর্ণাবর্তে ভাসি'‡

হে কবি ৷ হে স্থানগভম ৷
কোণা বাও ? ফিরে চাও ৷ তুমি কভু নহন্ত নিশ্বন ৷
তোমার অভাবে আজি কাব্যলন্ধী বিধবার মত
জীহীনা, নিরাভ্রণা, প্রাণোমালী সরস্তা গত ৷
বস্মাতা বজাহতা প্রায়
সংজ্ঞাহারা সৃতিতা ধ্লায়
কে সাজিবে ? লীগু চিতা মৃত্যুহ্ঃ গ্রাসিবারে চার ৷

কে নিভাবে এ মহা অনল ?—
কোণা শান্তি ? অবিরাম বঞা যদি মণে ভূমগুল
কোণা হর্ষ ? ক্ষণে ক্ষণে নামে যদি অক্ষর প্লাবন।
অসহ এ জননীর নিদারুণ মরম-বেদন।
অমললে বিরাজে মলল
মানিবারে বুকে নাহি বল—
কার অভিশাপে হায়, তাপ-দত্ত কুরু শতদক।

বানী-কুলে জ্লে হতাশন—
কোন মহাক্তদেব করে এফি হোম উদ্বাপন।
শোকার্ড সোদরবুন্দ। এস আজি অগিহোত্রী হোরা
ভা'রি সনে দিব যোগ শোকানল লয়ে প্রাণ জোড়া
নিত্য নিত্য পঞ্জ হবিঃ দিরা
এ প্রনল রাখিব আলিয়া
বিদি করু পুণ্য-চক্র মৃত-চিত্ত ভূলে সঞ্জীবিশ্বা।





১০ম বর্ষ

ফান্তান ১৩১৭

35ल मेर्श

## गृंदश गृह।

বৈদিক যুগে গৃহ কি প্রকারের ছিল ভাগার স্থাক্ পরিচয় আমরা পাই গুচা হলে। বেদে গুহ বিষয়ক **শ্তক ওলি মন্ত্র আছে, তাহা হইতে আমনা গৃহ সভ্**ঞে কভকটা মোটামূটি ধারণা করিতে পারি; কিন্তু সেই **শন্তপ্রতির প্রক্রত তা**ৎপর্য্য সুহ্য---স্থল্লে ভা**হাদে**র প্রয়োগ **দেখিরা গ্রহণ** করিতে হয়।

ু বৈদের স্কলন ইইয়াছিল মজালিতে ভাষাদিপের **খ্যুৰহারের প্রতি দৃষ্টি** রাশিয়া ৷ খ্যেম কি মজুবেনদ কি শামবেদ কি অথর্জবেদ প্রথমে কি অবস্থায় ৮চিত **ছইয়াছিল ভাহা আম**রা বলিতে পারি না। বগন र्देशाम्ब भन्नन स्म ७थन এछनि ममच्हे सङ्काल প্রযুক্ত মন্ত্র স্বরূপে অপৌরুধেয় বলিলা প্রচলিত ছিল। देशार्षत मधनन कर्जा, यरळत अराजन अल्गारत • आविकात कता यात्र। सर्वरवत क्रमें मधन रव अहेकी প্রথমতঃ এই মন্ত্রগুদির চারিভাগ এবং প্রত্যেক ভাগের

বিশেষ খণ্ডের বা যুক্তের ভিতর যে সকল মন্ত্র সন্ধিতি देश्यार्थ (मध्नि मकन खुराई भन्नात मस्यक्ष नरह क्रि গেগুলি যে বাভবিক সেই ক্রম **অনুসারেই** ক্রি হইলছিল ভাষাজোল করিয়া বলা চলে না। পরিবর্তী कारण आनात बहेजरण मञ्चर्शनत विशित में अप्रकृतिक প্রয়োগের ক্রম অনুসারে পুনঃ সঙ্গ কিত হইয়াছিল বি भागत्रकीश भक्ष जाञ्चल । श्राक्, यक्, माग ७ वर्ष कि এইরপ প্রাঞ্চন সাধনের উদ্দেশ্তেই পূর্বকালে স্ক্রি হইয়াছিল।

এই काরণে প্রায়ই দেখিতে পাই যে একই যুক্ত ভিতর যে কতকগুলি থক একতা এথিত হুইয়াছে, জুৱাক অনেক সময় ভাহাদের পরস্পরের সমন্ত্রিভে জারা যাধ না। কিন্তু ভাগণে বা শ্রেত বা মুহা ইটে শেই मकरनत यरळ व्यायां प्रविश्वह जाराति नवकर्ष উদেখে गळत প্রয়োজনের দিকে সক্ষ্য রাশিয়া সঙ্গিত কুরো বিশিষ্ট থতে বিশ্বক্ত করেন। কোনও একটি ছইয়ছিল তাহা পণ্ডিতেরা শব্দ্য করিয়াছেন কিছ

श्रीरांभन र्या क्षेत्र के व क्षा श्राह्म । वृद्दी व वक्ष स्परमञ्जूषा विकास करा वाहरण স্ত্রীরে,। এই স্থক গৃহে। কিরপ ভাবে ব্যবহৃত হইয়াছে कार ए विदा देशद अर्थायन जवः नवसर्ज व्याविकात निर्फ रंगा प्रनम् मखला प्रक एक ज कथात जकि হাই বিবারে প্রকা ভ্র ছানে ভিন্ন ভিন্ন প্রয়োজনে बार्वक्र देश। अपर धरे चार्क (महे ममूपन मञ्चलन नेत्र भेद्र यथा जन्म असन ভारत निशिवक दिशाहि अ ভারাদের পরস্পর সম্মন্ধ নির্পয় বা কোন্মত্ত কি প্রাক্তন কাহাকে লক্ষ্য করিয়া বলা হইয়াছে তাহা क् मञ्ज व्यवन्त्रन कतिज्ञा वन। व्यवख्ता व्यवहार व्यवसीय বাৰা নিচয়ের গুছো সেই ঋক্গুলির প্রয়োগ দেখিলে कारा लाई (सार्गमा रहा।

এই অন্ত বেদের বাক্যের প্রকৃত তাৎপর্য্য গ্রহণ ৰিছিত হইলে ভ্ৰান্ধণ ভাষার ব্যাখ্যা ও শ্রেভি বা গৃহ্য ত্ত্ব-ভাহার প্রয়োগ দেখিতে হইবে। সকল সময় ব্রক্ত ব্রাক্সণের ব্যাখ্যা বা কল্পত্তের প্রয়োগ অভান্ত প্রাপ্তার করা যায় না। এমন অনেক স্থান আছে বানে কান্ত বিশিষ্ট মন্ত্রের আদিম প্রকৃত অর্থ ত ব্রীরাশিশ ব। কলস্ত্র তাহার একটা কালনিক হৈতে বাক্ষায়াত) ব্যাখ্যা বা প্রয়োগ করিয়াছেন নিঃসংশ্যে ঋকের আদি তাৎপর্যা বলিয়া ধরা যায় ্ দৃষ্টাত অনুৰ্প অংথদের দশন মণ্ডলের ৮৫ সংক্তে ্লাৰিতা"দি থকের উল্লেখ করা যায়। এই ক্ষাৰ পূৰ্বিপূৰ্য্য ও প্ৰয়োগ সম্বন্ধে বিভিন্ন গৃহাসত্ত্ৰে कि कि के अकारत्व वााणा ७ शरतां प्रवा यात्र। मिन् कार्य हाइ अकत्रन वार्या पित्रां हन। वार्याः ৰোগে ৰহুছে এই মতভেদ হইতেই বুঝা বার বে কাৰে এই খনে প্ৰকৃত ভাৎপৰ্য কোকে বিশ্ব হ ভাষ্টি কৰণ ভাষ্ট্ৰৰ ব্যাখ্যাৰ পাত্ৰৰ atellest ...

भवस (वरमत प्रेडि प्रक + गृह विवयक है। हात्री अहें (अगीत। धरे ब्रेक युक्त ध्वा रेशाव पूना देशियों म गः विका ७ वाक्यानशी मः विकाद मुख्य अवर मास्त्रमीय মন্ত্র বান্ধণের মন্ত্র, বিভিন্ন শাখার গৃহাক্ত্রে গৃহ নির্দ্ধাণ ও গৃহভঞ্জন ঘটিত ধর্মামুষ্ঠানে ব্যবজ্ঞ হইয়াছে। সেই আছেই আছেরপ। ইহাতে যে সকল মন্ত্র নিবদ্ধ আছে 🔏 সমুক্র নল্লের সমষ্টি এই ছইটা স্থকা; ইহার আতে∫কটি মন্ত্র এক একটি বিশিষ্ট প্রক্রিয়ার সহিত উচ্চারণ করিছে হয়। সেই সমুদ্য অনুষ্ঠান ও প্রক্রিয়া গৃহান্তরে নানা স্থানে বৰ্ণিত আছে। † তাহার হারাই এই স্থান্তের সম্যক ব্যাশ্যা গন্তব। গৃহ সমন্দ্রে গৃহের আরও ব্লিক্ট পরিচয় व्याकता शाहे विश्वदर्शन वर्गनाम् । शृत्वत नामा सान इट्रेंड विनश्तन कतिए हहे 3, छाहात वर्गाय आमना গুরের বিভিন্ন অংশের পরিচয় ও সে গুলির অবস্থান সময়ের কতকটা ধারণা করিতে পারি।

> 'ঝারেলে ''হর্মা়" শব্দের উল্লেখ আছে। তা**হা ছড়ি**। অশ্বর্ণিগের অয়সী পুরীর উল্লেখ আছে। ইকা हहेरेंड व कथा अञ्चल्यान कता यात्र ना त्य त्नकारन पाष्ट्र वा ইট বা পাৰরের নির্মিত গৃহাদি **ছিল। মেগান্তিনী**ক তাঁহার ভারত বুতান্তে এ প্রকার কোন ও গৃহের উলেব করেন নাই তবে কার্চ নিশ্মিত আসাদের উল্লেখ করিয়াছেন। বেদের সময় যে তাহাও ছিল किना गरमह। यक्तिम ७ यमस्तिम धवः भागतमीम यह ব্রাক্ষণের মন্ত্রাদি দেখিয়া যে ধারনা হয় ভাহাতে পাইই नुदा। यात्र (य (यरवित कार्य शृंद क्षेत्रान्ड: वार्यत्र देख्याकी: এবং ४५ मिश्रा ছाওয়ा হই ।

> অথর্কবেদের ৩.১২ মন্ত্র গৃহ নির্দ্ধাণ কালে ও মাও মৃত্র, বর ভালিবার সময় বাগহত হইত। গৃহাকতে বেই প্রক্রিয়ার যে বর্ণনা পাওয়া বার ভাহা হইতে দেখা বার

७, १२ ७ ३, ७।

<sup>†</sup> यथा गारवाश्चन, ७, २ । व्यापनाश्चन २,१ अकृष्टि भारत्यत ०, १ अक्छि। (शास्त्रिम १, १। शामित १...) क्षकृष्टि । दिवगुरक्षे ३, ३१-१४ । मानवष्-३१ ।

्रत व्यवस्त वर्ष पूँ जिल्ला पूँ हि (शार्क इंडिंग) हा जि हि दिवास्त्र पूँ हित माम व्यवस्तित्य छ श्रीयः । मास्त्र पूँ हि-कि नित्र माम व्यक्तियः । 'सेता'त माम दश्म, मञ्जतकः हे इश वीहमात दरेक ।

यदात अविधि यश्यात नाम 'शक्त'। हेरात वर्ष वहेशा त्रिक्त न्या महाराज्य (प्रथा यात्र । Zimmer \* িপ্ত অৰ্থ ব্ৰিয়াছেন মাঝের খুঁটা গুলি। Whitney ও Lauman जांदारमत अञ्चलारम शक व्यर्थ निश्विष्ठाहिन sides । অর্থনে বোধ হয় বেড়া। অর্থনে বেদের নাগ্রু अध्याद्धिक प्रतिकार प "बाना" वा गृहदत उदाय आहि। এयान अक अर्थ हाना बुबिरनर ताव रत्र छिक रहेरत। आहे बुछि वा ্**দর্শ পুটি মরের মধ্যে প্রভেদের কোনও সার্থকতা নাই।** शकाखरत अरे चत्रधानाक यहेतान चहेतान ना া**দশকোণ (** Whitey র মতে তাহাই সদর্থ) ব্লিয়া **অমুখান করা যায় না। কেন না তাহা হইলে চারিটি** ি কৈমণের খুটির যে প্রাধান্ত এই মল্লে দেখিতে পাই ভাষার কোনও তাৎপর্য্য থাকে না। অথচ চারিটি কোপের খুটিই যে প্রধান তাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ कर्ष । এই চারিটি প্রধান খুটির প্রতিলক্ষা রাখিয়াই ৰুক্ত চতুপদ হন্তীর সহিত তুলনা করা হইয়াছে। क्षा । ३१) किस शक्ष अर्थ हाना श्रीत्रा नहेल वागा (माष्ट्रा-मुन्ध द्य এवर পर्यक्त मरबा अञ्चलात गृह्द्य শ্রেণী বিভাগের একটা সার্বকতা হয়। দোচালা, চেচিলা, ছয়চালা ও আটচালা ঘর এখনও সুপরিচিত। मन्हाना घत रखताख अमन किছू व्यान्तर्ग नरह।

এই গৃহ বা 'শালা' কেবল মাত্র একথানি খড়ের খর ৷ অথচ এই খরকে লক্ষ্য করিয়াই গৃহকে, ''হবিধান," '' অয়িশালা" ও '' পদ্মীনাং সদনং'' বলা হইয়াছে (মান্ত্ৰ) আবার পরে এই গৃহকে লক্ষ্য করিয়াই আশ্রয় করিয়া সে কালের বরণ নির্বয় করিতে ছইনে কালেই বলিতে হয় যে এই এক বরেই মান্ত্রম ও গরু এক সলে বাস করিত এবং এখানেই গৃহ্যায়ি প্রজ্ঞালিত হইউ, রক্ষনাদিও হইউ। অথর্ক বেদের গুগে যে তাহা,একেবারেই অসম্ভব তাহা আমি বলিতে চাই না। কিই গৃহ্য শুরেই অসম্ভব তাহা আমি বলিতে চাই না। কিই গৃহ্য শুরেই অসম্ভব তাহা আমি বলিতে চাই না। কিই গৃহ্য শুরেই অসম্ভব কর্না পাই তাহাতে এ সিদ্ধান্ত পুরু সকী চিন্
বলিয়া মনে হয় না। এ কথা মনে করা একেবারেই
অসম্ভব নর যে গদিও প্রবর্তী মল্লে কেবলমাত্র একটি
বরের প্রতিষ্ঠা বা ভর্জনের ব্যবস্থা করা হইলাছে, প্রক্রী
মল্লগুলিতে গৃহ বা শালা অর্থে এইরপ তাবে প্রতিষ্ঠিত ক্তক গুলি ঘরের সমন্তি বোধিত হইয়াছে। অবতঃবৌধার্ম গৃহ্যের বলিহরণ প্রকরণে গৃহের যে পরিচয় পাই তাহাতে এই সিদ্ধান্ত সমীচিন বলিয়া মনে হয়।
ঘরের চাল বড়ের ঘারা ছাওয়া হইত। অধর্মবেরের

यांचा नना वहेबारक जांचारज नुवा साके दे नक याद्वपन

**এই परत शाक्त (२) अ२)। (क्यामान कहे पूर्व** 

খবের চাল থড়ের ঘারা ছাওয়া হইত। অথববিদের
১,১২০০ দরে গৃহের অধিঠাতী দেবতাকে "ত্রা
বদানা যুমনা অদি অম্" বলা হইয়াছে। এইরপ মার্ক্র
মারে গৃহকে ত্ণারত ও "পলদা" পরিহিত বলা হইয়াছে।
পলদা অর্থে ঘানের আটি ব্রায়া তৃণ ও পলদা এই নার
বলিয়া উক্ত হইয়াছে; ইহা হইতে ব্রা যায় যে এখারে
পলদা' আছোদন বিষয়ে প্রযুক্ত হয় নাই,আবেইনের আর্থে
হইবে যে ঘরের বেড়াও খড়ের ঘারা দেওয়া হইজা
হরবে যে ঘরের বেড়াও খড়ের ঘারা দেওয়া হইজা
বন্ধনের জন্মও খড়ের দড়ি ব্রুব্বত হইত তাহা মালাই
মারে প্রাণাহ বলিয়া উলিবিত হইয়াছে।

গৃহ সম্পর্কে এ স্থলে সম্পূর্ণ প্রাসন্ধিক করা বাইছে করিছে। সক্ষে
গৃহবাসীকে ঘুন পাড়াইবার উজেশে এই নত্ত্ত (বংশা

•গাংহা৮) ইহাতে 'প্রোষ্টেশরা, বহোশরা নারীর্বা
ভর্মনিবরী" ভাহাদিগের উল্লেখ আছে। ইহাতে বেশা

<sup>•</sup> Altindischen Leben h. 152

বীয় বে কেবছ ধরে বিছানায় ( তর ) নয় ''পোটে'' ্লিভার । ক্রিং শহিরেও নারীরাও শগ্রন করিতেন। পুরাস্থাক পুষর ভূমি নির্বাচন হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রান্ত্র প্রক্রি প্রতিষ্ঠা,পর্যত সমূদ্য প্রক্রিয়াই ক্রিটারিত ভাবে বর্ণনা করা আছে। ভূমি নির্কাচন সহয়ে প্রকার বাবস্থা আছে, তাহার মধ্যে কতকগুলি বড় ক্রিক্টি । জাভিডেদ অফুদারে ভিন্ন ভিন্ন প্রকার ভূমি द्वाका पनिवा मिलिहे ब्याह्य। जान्तरात करू भागा भाषि, ক্রিরের লাল মাটি ও বৈশ্রের কালো মাটি প্রশস্ত। (১) क्रिश्नाश्चम (२।৮) ভূমি निर्काहन विवरत हुईটि वावश সিরার্থন ভাষাও কৌতুবাহ। এক হাঁটু পরিমাণ গর্ত ্রিয়া ভাষা দেই গর্ত্তের মাটি দিয়াই ভরিয়া দিতে **ইবে। বদি মাটিতে গর্ভ ভ**রিরা উচু হইয়া উঠে তবে 👣 উৎকৃষ্ট : ৰদি গৰ্ত ভৱিয়া ভূমিব সহিত সমতল হয় রাম তবে ভূমি মধান। আর যদি গওটি দুপূর্ণ প্রিয়া যার তবে ভূমি বাসের অবোগ্য। দিতীয় বিষ্ণার, বৈশ্বপ গর্ভ করিয়া, হর্যাভের পর ঐ গর্ভ জলে ্তিপুৰ করিয়া ভরিয়া দিতে হইবে। পরের দিন হাৰে মাৰ গতে জল থাকে তবে ভূমি উৎকৃষ্ট বলিয়া ৰিৰে যদি কল না থাকিলেও, মাটি ভিভিয়া থাকে ক্ষাৰ দ্বৰাম। স্থার যদি ইহা একেবারে ভকাইয়া विश्व बीटक छट्द (म ভृषि वारमत व्यवागा। এই इहेडि বিশার মধ্যে কোনও বৈজ্ঞানিক তথা নিহিত আছে ক্রিনাৰ বিদ্গণ নির্ণয় করিবেন। আপাত দৃষ্টিতে क इन्हें बहेरक देवाहे मत्न दश य श्रविगत्नत गरक ক্ষেত্র ভব্নো এবং porous পমি গৃহনিশাণের উপযুক্ত নির কিৰে আটাৰ মাটির লমিই প্রশস্ত। এ ব্যবস্থা

পঞ্জাৰ বা উত্তৰ্গীকিনে ক্ৰাবস্থা হইতে পাৰে কিন্তু কৰা বছৰ সৱস বদলেলে বোধ হয় ইহার উন্টা ব্যবস্থাই সকত বলিয়া বিবেচিত হইবে।

যে থানে মর তুলিতে হইবে সে স্থান উত্তর পশ্চিম
হইতে দলিপ পূর্ব দিকে ঢালু হওয়া দরকার। (১)
পারস্কর ভিন্ন ভিন্ন মতের জন্ত ভিন্ন বাবস্থা করিয়াছেন। তাঁথার মতে গৃহের জন্ত নির্বাচিত ভূমি এমন
হওয়া দরকার যে চারিদিক হইতে জল আন্সিয়া মধ্য
দেশে জনিয়া বাহির হইয়া যায়। যে ক্রিয়া আল বাহির হইয়া যায় সেখানে ভাগার আর ভূমির স্করাত্রেল বৈঠকখান। করা বিধি। (২)

স্থানির উপর কি উদ্ভিদ জনো তাহাও নিরীক্ষণ করা আক্ষাক। গোভিল ও খাদির গৃহামতে ভূমি সমতল ও জুনারত হওয়া আবশ্রক। পারদর মতে কুল ও বিরশ্তন প্রশস্ত। গোভিল ও খাদির মতে ভিন্ন ভিন্ন ত্বে ভিন্ন ভিন্ন ত্বে একারে ভিন্ন ভ্রে ভ্রে ভ্রে হয়। তে এই প্রকারে কি কি ওবদি বা রক্ষ ভূমির উপর থাকা ভাল বা মাল ব্রে বিষয়ে নানার্ল্প ব্রস্থা আছে।

ঘরের দার কোন্ দিকে থাকিবে সে বিষয়েও এইরপ নাবস্থাপাই। উত্তর দারী দার হইলে পুত্র ছার কিপে দার হইলে পুত্র দার হইলে সর্ক কামনা সিদ্ধ হয়। (﴿) প্রতিষ্ঠি দার কা 'ক্র্ছার' বাগুহের সন্মুধ দারের সৌহান্ত্রী

<sup>(&</sup>gt;) যত্রোদকষ্ প্রত্যন্তনী চিম্ প্রবর্ততে। **পাদির** ৪।২।৭। গোভি**ল মতে** পশ্চিম হইতে পূর্ব বা উত্তর হইতে দক্ষিণ দিকে। ৪:৭:৩।

<sup>(-)</sup> शावकत शृंद्य, २।१।१->•

<sup>(</sup>০) গর্ত্তপত্মিক বন্ধবিষ্টিত্র , ব্রহত্বৈর্থাণার মৃত্তুবিহ পাশবাম । বাদির হাহাস-১১ ; পোদিল ভাগাস-১১

্ত্র স্থানিক শর, এবং দার এক ত্রিভার। উচিত নর বাহাতে বাহির হইতে ভিতরের স্ব দেখা যায়।

গৃহ প্রতিষ্ঠার যজের ব্যবস্থা বিভিন্ন গৃহেয় ভিন্ন ভিন্ন প্রকার আহে। প্রত্যেক খুঁটির গর্ব্তে ঘি ও অক্যান্ত মন্ত্রপৃত্ত বন্ধ ঢালিয়া শসী কাষ্ঠ তাহাতে প্রতিষ্ঠিত করিতে হয়। তাহার পর খুঁটিগুলির উপর বংশ ঘোজনায় মন্ত্র উচ্চারণ করিতে হয়। এই প্রকার প্রত্যেক প্রক্রিয়ার সঙ্গে কৃতক গুলি অফুষ্ঠান আছে। আমার বর্ত্তমান প্রক্রের ক্রিলাচ্য বিষয়ে দেগুলির বিস্তারিত উল্লেখ নিশ্বক্রের ।

পারকর গৃহে। একটা সভন্ত সভাগৃহ ও ভাভারের উল্লেখ আছে। সভাগৃহ বোধ হয় বৈঠকখানার অর্থে প্রস্কুত হইরাছে। ইহা প্রায়ই দ্যুত ক্রীড়ার জন্ম শাব্রত হইত বলিরা পারকর ব্যবস্থা দিয়াছেন। কোন স্থানে এই গৃহ স্থাপিত করিলে ইহাতে দ্যুত ক্রীড়া হইবে না। ভাভারে ধন ধানা থাকিত, ইহাই সন্তবতঃ বৌধায়ন গৃহেয় ধনধান্যাবকাশ বলিয়া উল্লেখিত হইয়াছে। উল্পেল মুঘলের এক স্বভন্ত গৃহের উল্লেখ বৌধায়নে আছে। গক্তর ঘরও বোধায়ন স্বভন্ত ভাবে উল্লেখ

বোধায়ন বলিহরণ প্রকরণে একটি কথা বলিয়াছেন
ভাষা বিশেষ ভাবে প্রণিধান যোগ্য। বলিহরণে নিজ
গ্রেছা গমস্ত অংশ পরিক্রমণ করিয়া "উপনিক্রমা ক্রেছারজাশে" বলিহরণের ব্যবস্থা আছে। ইহাতে
দুরা যায় যে গৃহস্তের পরিবারের মধ্যে সহোদরের স্থান
ছিল না। বিবাহের পর গৃহস্ত অসক্র গৃহ প্রতিষ্ঠা
করিতেন, পিতা বা সহোদরের সহিত এক গৃহে
ধাকিতেন মা। ইহা ভাক্ষণ ও গৃহ্যের নানা বিবরণ

(g) প্রাগ্রারম্প্রম যশক্ষম বেদকারম্প্রাস্ পুশ্রাক, দক্ষিণ ছারে সর্কে কামাঃ। পাদির এ২০১৬ । ক্ষা ব্যাভিদ, এবং১৬১৭

হাতে কাই প্রতীর্মান হয়। বিবাহে যামী ও বা ক্রি আরি প্রজালত করিতেন তাহা লইয়া তাহারা ক্রি প্রতিষ্ঠিত করিতেন। এই অন্নি গৃহের পাত্রের প্রতিষ্ঠিত করিতেন। এই অন্নি গাকিত না। স্বৰ্থা অর্থাচীন কালের যৌগ পরিবার গৃহোর বুগে ছিল না বলিয়া মনে হয়। জ্যেতের গৃহে হাইতে যে আপনাই বাড়ী হইতে বাহির হইয়া যাইতে হয় তাহার এই স্থাই প্রেমানিত করিতেছে। আবার, আপত্তর্থ প্রত্যাহরে বিবাহ প্রকরণের মধ্যেই গৃহনিশ্যাণের ব্যবস্থা নিমিন্ত আছে; ইহা হইতেও মনে হয় যে গৃহস্থ বিবাহ করিয়াই গৃহ প্রতিষ্ঠা করিত।

# বস্তি বনাম পিচকারী।

অনেকের ধারণা পিচকারী ভুস্ প্রভৃতি যা সার্ वाश कतान वा यनवर्षक खेवशानि धारानि हम्बन शाक्ताका हिकिदमकगरात बाताई वारिकृत दहेतीहरू শেই জন্ম কবিরাজ মহাশ্যদের বাড়ীতে পি**চকরে দি** ডুদের সত্তা দেখিতে পাইলে কোন কোন দিয়ে ব্যক্তিও বিশায় প্রকাশ করিয়া থাকেন। বাভবিশ বিশ আঞ্কাল যেরপ অধিকাংশ কবিরী জরকের বিজ্ঞ প্ৰের সাহায্যে কেবল ঔষধ বিক্রয়ই প্রধান বার্গ্র दहेबाहि, ভारारे जारायत शृंद ग्राम्यामि दिल्ल **চমংকৃত না बहेरांत्र (कान कांत्रण माहे। विश्व असे** नमग्र हिन (य नमात्र এই পিচকারী पाताई हिकिश्ना चार्किक कार्या नमाहिल इहेर्ड अवर श्राहानन वर्ष बाक्स ব্যাধিতে ইহা ব্যবহার করিতেন এখন অভ্যু भा=हां हा कि कि देश का का का का का कि कि कि कि का कि का कि कि का कि कि का ক্রিতে জারম্ভ করেন নাই। মুর্ভাগোর বিবর জার্মনা कविद्राक ब्रह्ममुग्रगथ । विषय भारताहरा केता नारक (वार क्रांत्र मा। तिह ककहे श्रम अकरांद कि

গতে "বৰি অৰ্থাৎ গিচকারী, তুদ্" লিখিয়া তথামাকে ভাষার কৈফিয়াও গিতে হইয়াছিল। যাক্, প্রাচ্যণণ বণ্ডি-ভাষা চিকিৎসাম কতদ্ব উন্নত ছিলেন ভাষার একটু ভাষোচনা করিব।

ক্ষান্তাগণ অবোধার দিয়া ঊষধ প্রবোগকে বস্তি 
ক্ষান্তাগণ অবোধার দিয়া ঊষধ প্রবোগকে বস্তি 
ক্ষান্তান। বন্ধি অবে মৃত্যুগী ( Bladder ) বুঝায়। 
বিষ্কারণা অভিধানে "মৃত্যাশর পুটো বস্তিঃ" 
ক্ষান্তাহিন লৈ অবং প্রবেদশ দিয়া শরীরে ঊষধ প্রয়োগ 
করা বার 
ক্ষান্তাম বিনাম স্থের সাহায্যে প্ররোগ করা হার 
ক্ষান্তি ক্ষান্তাম করা হারা প্রস্তুত করা হইত এলস্ত 
ক্ষান্তি ক্ষান্তাম বলা হয়। এবং ঐ প্রকার মন্ত্র 
ক্ষান্তাম বিশ্বাহিন হল বিভাগিয়তে যথা তথা 
ক্ষান্তাম বিশ্বাহিন "কার চিকিৎসায় ( Physic ) এই 
ক্ষান্তাই চিকিৎসার অর্জিক কার্য্য সম্পন্ন হইত।

শ্বিকাব্যধন্চিকিৎসার্কং শল্য তন্ত্রে প্রকিটিত:।

শ্বেদ্য প্রাণিহিতাে বস্তি: সমাক্ কায় চিকিৎসিতে ॥"

শ্বিকাল কবিরাজ মহাশ্রগণের কার চিকিৎসাই

শ্বেদ্য কিন্তু ভূডিপ্যের বিষয় যে বস্তি ভারা কায়

শ্বিকার অর্ক্ষেক কার্য্য সম্পন্ন হয় তৎসহক্ষে জ্ঞান

শ্বেদ্যার অর্ক্ষেক কার্য্য সম্পন্ন চেষ্টা একপক্ষহীন

শ্বিকার তিইবার চেষ্টার জার নিক্ষল হইরা থাকে।

শ্বিকারের শ্রেষ্ঠ সম্বাদ এখনে স্থাত যাহা শিরাছেন তাহার ভাবাসুবাদ এখনে উদ্ধৃত করিয়া ভোরাইব। বস্তি চিকিৎসায় অনেক কার্য্য সম্পন্ন শ্বিষ্টা প্রাক্তি শ্বিচার্যাপন কর্মের মধ্যে বস্তিকর্ম শ্রেষ্ঠ শ্বিষ্টা শ্বিচার্যাপন বলিয়াছেন। যেহেত্ বস্তি লাল্ডি ভাব্য সাধিত হয় এবং নানাবিধ জব্যের সংবাদ্ধ শ্বিষ্টা বাবা দোব সমূহের সংশোহর, সংশ্যন, ব্

ষ্ঠিন (তে চ পিতে চ ককে রক্তে চ শ্ম্যতে।
সংগর্গে সন্নিপাতে চ বাস্তরের হিতঃ সদা।

অর্গাং বাতিক, গৈড়িক, লৈখিক, বজৰ, ছলৰ, বলৰ, সাগ্নিপাতিক এক কণায় সক্ষপ্ৰকার ব্যাধিতেই বস্তি হিজ-কর হইয়া থাকে। স্থতরাং প্রাচীনকালে বস্তিজিয়া চিকিৎসার প্রধান সহায় ছিল সে বিষয় সন্দেহ নাই।

গাচাগণ বাত্ত ক্রয়াকে প্রধানতঃ তিন তাগে বিভক্ত করেন। অনুবাসনবান্ত, নির্মাণ তি ও উভয়বন্তি। মুত ভৈলাদি মেহ দ্রব্য প্রধান ক্রবা ধারা যে বন্তি দেওয়া হয় তাহাকে অনুবাসন বন্তি কহে। মেহশুল ক্রব্যের কাগাদিঘারা যে বন্তি দেওয়া হয় তাহাকে নিরহ ও মৃত্রে প্রশ্ দিয়া যে বন্তি দেওয়া হয় তাহাকে উত্তর বন্তি বলা হয়। ইহার অনুবাসন ও নিরহবন্তি বাতল বা বাত প্রধান ব্যাধিতে শরীর সংশোধন লগ্ন ও বলাধানাদি লগ্ন প্রবৃত্ত হয় এবং উত্তরবন্তি মৃত্রাশয় ও গভালয়গত ব্যাধিতে বাবহৃত হয়। প্রাচীনকাশে অবস্থাবান ব্যক্তি থাকার ভীবনীশক্তির বর্ষান ও দীর্ষকাল জীবির্ড থাকার আক্রামার 'রসায়ন' উদধ ব্যবহার করিকেন। একং

ভাহারা কেহ কেহ আশতীত কাল জীবিত थांकिएकम-- अरे ध्वकात यानक अरहरे मिलिए । ৰাক্ষা যদিও আজকালকার ক্ষীনজীবীর যুগে স্ভেলি কবিকল্পনা বিজ্ঞিত বলিয়া প্রকিপ্ত হইতেছে তণাপি चाइँट्स्ट्रिय अ अश्म (य अक्नाद्र कन्नमा छोटा बात्रमा कर्त्रा यांत्र मा। यांक् धविषय नातास्त्रत व्यात्नाहमा कता ্**যাইবে। সেই** রসায়ন ঔষণ ব্যবহার করিতে হউলে পিঞ্ কর্ম থারা, শরীর সংশোধন করিয়া মওয়া কর্তব্য। भाक्तकात राजम :---

> **নাবিভদ্দ** শরীরদা যুক্তো রাদায়নো নিধিঃ। ম ভাতি বাসসি মিষ্টে রঙ্গ যোগ ইবার্পিত॥

যেমন মলিন বল্লে রং লাগাইলে ভাহা কদাচ विकिष्ठ दश ना. मिट्काल मंत्रीत मश्चिक ना दहेला तमातन खेरप आराग युक्ति युक्त नरह। (महे बन्न आही नकारवत अकि ध्येषाम त्रभावन खेषप अथन शांकि वाङ्गात मृष्टि মুড়কীর ভার বিজীত হইলেও তাহামারা তেমন ফল পঞ্চৰ্ম কৰিতে কেহই প্রাপ্ত হইতে পারেন না। हरेल निक्रह ७ अञ्चर्तामन दिछ विश्वम आवशक, মুত্রাং ব্যাধি ব্যতীতও সাধারণ স্বাস্থ্যের উন্নতির জন্তও বস্তি ক্রিয়ার প্রয়োজন আছে।

গুলার দিয়া উষ্ধ প্রয়োগের জন্ম বেমন এখন পিচকারী ভুস্, এণিমা প্রান্তৃতি বড়ের প্রচণন ছইয়াছে সেইরপ প্রাচীনকাশেও ঐ কার্ণ্যের জন্ম বন্ধি নামক বন্ধ প্রধান ভাবে ব্যবস্ত হইত। এই যারের সাকার কি প্রকার ও কি প্রকারে প্রস্তুত হইত তাহার উল্লেখ করিয়া এই প্রবন্ধের উপসংহার করিব। বস্তি মন্ত্রের ছইট আংশ আছে এক অংশের নাম নেত্র ( Tube ) অপর আংশ বৃত্তি ( Bladder )। রোগীর বয়স ভেদে এই নের ও ব্যক্ত ছোট ২ড় নানা প্রকারের হইরা থাকে। ১ শ্বসর হইতে ৮ বৎসর পর্যান্ত নেত্র দীর্ঘে ৬ অঙ্গুলি এবং मार्चाम अवकारमंत्र (Quill) ( नायात त्य अश्म निमा निमा विका कतिरण त्यह किस किस किस किस

नाराजनकः कलम दश्) नात कूल इहेरत कावात हिल এত ने इहेरन (व नाहां ते मधानिया अकरे। मून कने শাইতে পারে। ৮বংসর হইতে '৬বংসর পর্যন্ত রোগীর বয়স হঠলে নলটি ৮আকুল দীর্ঘ হঠবে ও মূলে অমাসিকার ন্যায় ও প্রবেশ দার বাজগঞ্জীর পাখার অগ্রভাগের ক্লান্ত মোটা হইবেও ছিলু মাৰকলাই প্ৰমাণ হইবে। আছু ষোড়শ বৰ্ষ হইতে পঁচিশ বৰ্ষপৰ্যান্ত ১০ আকুল দীৰ্ষ- মুক্তে মধানাসুলির\* জায় ও অগ্রভাগ ময়ুরের পাখার অঞ্জাপের ক্তায় নোটা ও ছিদ্ৰ মটৰ কলাই প্ৰমাণ হইবে। शिविष्यतर्भत छ। र्ष वात आकृत मीर्च नण गृता तुकाकृतिक জার ও অগ্রভাগ শকুনের পাধার অগ্রভাগের জায় ও ছিন্ত দিল্প মট্র কলাই প্রমাণ চইবে।

এই নেতাবা নল গোনা রূপা তামা লৌহ **পিছল** হস্তি দন্ত মহিণাদির শুল কাচ বা কার্ছদার আরা তৈরাছ করিতে হয়। ফলকণা যাহা বারা তৈয়ার করিলে খুব শক্ত ও পালিশ হয় এমন দ্রব্য দিয়া তৈয়ার কর্ কর্ত্তব্য। আকার গোপুছের ভার মূলে মোটা হইরী ক্রম্প: স্রু হইয়া যাইবে। মু**থের নিকট গোল** (Ball pointed ) হওয়া কর্তব্য নতুবা খহা খারালিড়ে আপাত লাগার সভাবনা। ইহার মূলের ছিকে ইটি ফ্রিকা (Notch) থাকিলে ধাছাতে এই নুমেন नाम विक्ति दक्षम कहिला थुनिया ना यात्र। अञ्चलाम अ উক্ত ৪ প্রকার নেত্রের মধাক্রমে সা অসুলি ২ আকুল ২॥ আলুন ও ৩ আঙ্লের পরও ঐরপ একটি কৰিছ शाकित्य। এই कर्निका शर्याखरे खश शांत धराम कदाउँएक इस्।

নিমের বন্তি অংশ সাধারণতঃ পূর্ণ বয়ত্ব পর্ক কৰিছ শুকর ছাগল ও ভেড়ার মৃত্য স্থা ( Bladder ) সাম প্রস্ত হইয়া গাকে। তাহা হুপ্রাপা হইলে ইন্দ্রটন বা चि (माहे। वस्तिमा ( याश चाता चन भएक ना ). विक মুংল কনিষ্ঠাঙ্গীর ন্যায় ও অপপ্রভাগে কর প্কার • নির্মাণ করিয়া দেওয়া বাইতে পারে। মৃত্যাশ্র বা হর্ত পরিগাজিত" (Tan) করিয়া গইতে হয়। এই বজির শাক্ষায় আজকালকার Insufflatons নামক যয়ের সংক্রেটা অসুক্রণ।

ক্ষিত্র বভিত্র নল একটু বিশিষ্ট প্রকারের হইবে।
নার্য্রণতঃ উরা ১৪ আল্ল দীর্য এবং মালতী কুলের
ক্রীটার ভার, অগ্রভাগের পরিধি ও ছিল্ল সর্বপ পরিমাণ
ক্রীটোর ভার, অগ্রভাগের পরিধি ও ছিল্ল সর্বপ পরিমাণ
ক্রীকো। ক্রীলোকের জন্ত দশ আস্ল দীর্য ও ছিল্ল মুগ
ক্রমান বঙার করিবা। তাহার বভিত্র জন্ত ছাগল
নাক্রিয়ার বভিত্র যথেই।

िद्धांगीरक राख अस्यारंगत भूर्त्व स्य स्य किनिस्यत अर्दार कार कद देउनानि यादा आवश्य छाटा मःश्वर 🐞 বিরা সমস্ত একটি পুথক পাত্রে উভযরপে মিশ্রিত 🕊 বিদ্বা ভাহা দারা বভিপুট পূর্ব করিবে পরে নেত্রটি পুর্বের মুখে লাগাইয়া বভির মুখ গছচিত করিয়া নেতের প্রতির কর্ণিকাছরের সহ উত্তমরূপে সূত্র ছারা বন্ধন ক্রিবে। ঘাহাতে বন্তির কাথাদি নলের মুখ দিয়া बाबीक जना बाद निया वाहित श्रेया ना याहेरा भारत। ক্রি প্রয়োগের অব্যবহিত পূবে রোগীকে মেহাভাক্ত क्रिका डिडमकार अप मित्रा गरेर्त। छात्रभन्न राजीन বিশ্ব মুবের বেগ থাকিলে তাহা পরিত্যাগ করিয়া লইতে শুলিবে। পুপ্রব্যেই বাস্ত দেওয়ার উপায়ুক্ত গ্রম তবে 🐂 🔊 🛊 🛊 🐧 (बन्न जन) (य कान भन्दत्र निख्य (निख्या महिट्ड शासा (तानी क जनां परतत व दान थून শ্রেরা লাগেনা পেথানে দক্ষিণ পা সভূচিত করিয়া বাম शास्त्रक्षेत्रक कतिया वाम शारण विद्यानाथ महाने कताहरव । विश्वादेशकान वानिम मिरव ना जवर मगाति। अयन छारव লাভিতে হইবে ৰাহাতে ধোগীর পাছাটা শরীরের উপরের 💘 💐 💐 🗷 🎍 के हैं 🕏 छेळ बादक। जात्रभन्न विकिद्यक कार्कि जान बाटक करिया यक्ति विख्य मध्या खेमरपत महन कि बार पारक खटन छारा अकरे हान पित्रा वाहित अविक विद्या द्वानीय खदा तित्य छ रखित नत्नत । প্রাকৃতিক্রিক সাধাইয়া বীরে ধীরে নলের নিকি প্রিমাণ

(वांगीत क्या (मर्म व्यायम क्याया पिर्व । जातनेत व्य काल मित्रा विलिधि हाशित्रा मिरणहे खेवशामि द्वानीत खेमरद व्यविष्ठे बहेर्द । जात्रभन्न नगिष्ठे वाहित कतिम् नहेर्द । दानी किइकन श्वित ভাবে थाकिया **উঠি**या বাছে গেলেই দোবের সহিত বন্ধির ঔষধ বাহির হইয়া রোগীকে অস্থ ক্রিবে। ভিন্ন ভিন্ন জিনিবের সংযোগে ভিন্ন ভিন্ন ব্যাধিতে আয়ুর্বেদে সহস্র সহস্র প্রকার বস্তি প্রয়োগের ঔবধ: निन्दिन इहेब्राइ। शान्दान्तान वनकात्रक खेरासत बन्ध লবণ জলের (Saline doache) ব্যবহার করিয়াই তাহা छ। हारापत अशूर्व आविकात विवास (भीतव कतिका থাকেন। প্রাচাগণ এরপ বলকারক বভি বছ ব্যবহার করিছেন এবং তাঁহাদের প্রায় বস্তির ঔবধেই বিশিষ্ট প্রকারে লবণের ব্যবহার আছে। তাহারা যত প্রকারে যত ব্যারামে বস্তির ব্যবহার করিতেন পাশ্চাত্যগণ তাহার অত্যন্ন অংশ মাত্র তাহাদের বিজ্ঞানের অন্তর্ভুক্ত 🖯 করার পিচকারীটা তাহাদের সম্পত্তি এরপ সাধারণের ধারনা হইয়াছে। আর কবিরাজ মহাশয়গণ তাঁহাদের এই अপूर्ल विषय शाताहेया किनिया हिन। देश अप्रिका আকেপের বিষয় আর কি আছে?

প্রীধোতিষচন্দ্র গরস্বতী।

# মধু-স্মৃতি।

"মধু-স্বৃতি" বড় মধুময়!
বাণী জননীর ঘরে নিশিদিন মধুক্ষরে
জুড়াইয়ে তৃষিত হৃদয়!
"মধুক্ষাত" বড় মধুময়!

''মধু-স্বৃতি" বড় আলাময়! কি কলন্ধ বালালীর গুঁথো ভার স্থ্যভীর শত খুগে ঘুচিবার নর! 'শমধু-স্বৃতি" বড় অব্লাময়! 9

কোন্ স্থরে গাব আমি গান ?

মাধবীর শোভা মাঝে ববদার ধারা রাজে

জ্যোত্নার অমা মৃর্তিমান !

কোন্ স্থরে গাব আমি গান !

8

বাজ্বীণা মধুরে করুণ!

আংলো-ছায়া অঞ্-হাসি এক সংথে পাশাপাশি
থেকে ঢাকা ভরুণ অরুণ!

বাজ্ৰীণা মধুরে করুণ!

ŧ

কোথা আজি তুমি কবিবর !

এক করে ধর বানী ফুটে ব্রজ-ফুলরানি

অক্টে কলু ধ্বনে খোরতর

"মেখনাদে" মুগ্ধ চরাচর !

Ġ

হে ''অমিজ অক্ষর''-জনক !
বঙ্গকাব্য উপবনে সাজাইলে গ্যতনে
কি অপূর্ম 'স্নেট' গুবক !
হে ''অমিত্র-অক্ষর'' জনক !

9

ভারতীর বরপুত্র তুমি ! মধ্যাহ্ছ-ভপন সম হাতি তব অনুপ্ম কীর্ত্তি হব ব্যাপ্ত আর্থাভূমি ! ভারঠীর বরপুত্র তুমি !

তবু যে গো পারি না ভূলিতে
আত্মীয়-স্কন-হারা তেয়াগিলে দেহ-কারা
তীত্র বাধা লয়ে সারা চিতে!
ক্ষেমনে ভা' পারিব ভূলিতে ?

সে কি হার, কভু ভূলিবার?
বিদেশী বিধুমী মাঝ ভোমার নমাধি জাজ
কুণা পাছে ডাকি বালালার!
সে কি হার, কভু ভূলিবার!—

ه د

ৰন্দি কোষা শীনগু**ংলন ৷** আপনি গৱল পিয়ে পে**লে স্থঃ বিভরিয়ে** শ্বতি তব চিৱ-অভু**লন** ৷

की श्रीरवसक्यात मण L

## विज। \*

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

যেখানে ভোগলালনা পূর্ণ বিলানের বিক্লভ আন্তর্ন ধর্মের সরল আদর্শটীকে বিচলিত করে না, যেখানে আন্ত

বারোজন সাধনের অপরিণারদর্শী ব্যাকুলতা স্বাভাবিক বৈশ্যকে চঞ্চলিত করে না, যেধানে সানব আকাজ্ঞার উলক রীভংশতা চিত্তে বিকৃতির ছাণ মারিবার স্থায়াগ পার না শেধানে সেই নিবিড় জনসংখের আত্যন্তিক উলাঠেনি হইতে বহুদ্বে একটা বেড়া দেওরা স্থানে এই ব্রহ্মধর্যা আলম প্রতিষ্ঠিত।

চারা গাছটীকে খের দিয়া আচ্ছোদনের ভিতর না কাথিকে বাহিরের হিংজ পশুর আক্রমনের আশকা শুর্মদাই ঘটরা থাকে। গেই জক্তই তাহাকে একটা বৈড়ার ভিতরে রাখা দরকার। অবশেবে একটা দৃঢ়মূল ক্রম্মে পরিণত হইলে যেন আর কিছুরই ভয় থাকে না। ভৈষ্কি বাল্য গৌকুমার্থকে অক্সম রাধিবার জক্তই একটা বেডার আবিশ্রক হয়।

এই ব্রহ্মচর্য্য আপ্রমের পাদদেশ প্রকালিত করিয়া পর্মত নির্মারিনীর অমল জলধারা প্রবাহিত হইয়া চলিয়াছে— তাহার চতুপার্মে খামল অর্জানী পরি-শোভিত।— সেধানে সেই রহৎ বৃক্ষজায়াতলে, মন্দ মন্দ শুমীর হিয়োগিত তপোবনে ক্ষেক্টা কুটারে সেই শ্রীক্ষ-বালিকংদের ব্রহ্মচর্যা আপ্রমা!

সেধানে তাদের জীবন বিশ্বপ্রকৃতির সহিত অবাধ আশীরতার গড়িয়া উঠিতে থাকে। সেই মিলন বিশুদ্ধ এ গর্ম পবিত্র—কেননা দে মিলনে—ইচ্ছালজ্জির একাস্ত উর্থতা নাই— কাজেই বৃক্ষনতা পূল্পপল্লবাদির সহিত আপেন অন্তর্গতম প্রাণের নিগৃত্ব মিলনে বিকৃতির আশক্ষা আতি অল্লা-প্রকৃতির ক্ষেত্রে সহজেই সেই সামগ্রসাটুকু প্রিকৃত্রিকত হইতে পারে—বাংবা বিশ্বমানবের ক্ষেত্রে সহজ্ব লাধ্য নতে—এবং বাহার অভাবে প্রাণ এবং প্রেমের

্রেই জনবিরণ ব্রহ্মচর্থা-আগ্রমে বিজ্গণ প্রভাবের প্রাক্তি আলোক সন্ধারি নিবিত অন্ধকারকে একান্ত বিনত্ত ন্ত্রাহ্য শ্রহণ করিতে বাকে। দিবদ ভাহাতিবের সরসং প্রান শক্তিভাগিকে বাহিরের বিব্যাধির দিকে আহরণ করে, রাজিভাষার বিরাম-পূর্ণ দীরব-নিবিভ ধ্যায়মান লাভি বিভার করিয়া অল্পার অঞ্চল দারা ভাষাদিগতে আরুত করিয়া ভাষাদের শক্তিগুলিকে সংহরণ করিয়া আনে! প্রভাতে ভাষারা ভাষাদের পিভ্পতিম শুরু দেবের সমভিন্যায়ারে বিশ্বপ্রকৃতির নামা বৈচিত্রাের মর্মানিহিত একের সহিত স্মিলনে, কাননে, বট-ভর্মুদে, ভরিকনীতীরে শিক্ষা প্রাপ্ত হয়;—নিশীপে কল্যানম্মী মাতৃদেবীর সম্বেহ আপ্রয়ে আদিয়া পৌরাণিকী কথা প্রমণ করিতে করিতে শান্তিপূর্ণ নীরব-নিক্রায় নিম্ম হয়। দিবাভাগে ফ্রাকিরণের জ্যোভিত্ময় অভ্লিনিচয় ভাষাদিসকে বাহিরের দিকে সানন্দ আহ্বান প্রেরণ করে, তথন ভাষারা আলোকপচিত আকাশের তলে ক্ষুম্র কর্ম্মের বৈচিত্র্যে আত্মার প্রকাশে নিমৃক্ত পাকে, সায়াছে ভারা আপ্রার সেই মৌন নীরব নিভ্ত ব্যাপ্ত প্রশান্তি।

ষড় পত্ তাদের কাছে, পূপে পরবে, কুঞ্জে কুঞ্জে মধুকর গুঞ্জনের সঙ্গে সঙ্গে রঙ্ বেরঙের নিমন্ত্রণ-পত্রচী প্রেরণ করিতে থাকে, বসস্তের কোফিল সংহাদরের মত আনন্দ কলকাকলা সঙ্গাতে তাদের হৃদরের ভন্ত্রীগুলিতে সুললিত বন্ধার নিনাদিত করিতে থাকে। চিত্রিত সুরভি কুসুমরাজি অপর্যাপ্ত প্রাচুর্য্যে তাহাদের চক্ষু ঘূটী উদ্যাটিত করিয়া দেয়—ধরণীর আমল পল্লবভার গুলারাশের বিশ্বন করিয়া দেয়—ধরণীর আমল পল্লবভার গুলারাশের বিশ্বন করিয়া দেয়।—

বর্ধার সজলমেখমেত্র সৌম্যুগন্তীর মৃত্তে খোর
বনঘটার নিম কলমিখোষে উন্মন্ত গহরের বিরামহীন
আকরে এমন একটা লাস্ত মকলময় পভীরভা ভালাদের
ফলরে ঘনাইয়। ওঠে যে ভালারা ভালার কুল পায় মা।—
ভালের বিন্দিত বিমুদ্ধ হলদের উপর এম্নি করিয়াই
একটি পূর্ণনিবিত্ত কল্যাপ্তম প্রিবেউন আসয় আনক্ষে
আচ্ছাদিত করিয়া ক্ষেত্র ভালারা কেবিতে পায়—ধর্মীর
সমন্ত ভ্রণতাপ পরিপূর্ণ করিয়া গারা আীরের, সমন্ত

ৰাহাকার বিদ্রিত করিয়া, প্রসন্ন আখাসে নববর্ষার শবিরামবর্শী জলধারার বার্ ঝর্ প্রপাত।

প্ৰক্ৰপ বিশ্ব পৃথিবীর সৃথিত জ্বন্ধের বাধ হীন বিভারে ভাছাদের চিত্তের ধারা প্রাণে, প্রেমে, স্বাস্থ্যে স্মৃত ধারার উৎসারিত হইতে পাকে—ভাছাদের সদয় স্ক্রিমাহমুক্ত শান্ত-সংস্তৃত আনন্দে সকলকেই আপনার স্ক্রেডম প্রকোঠে অন্তর্জ বন্ধুর মত আমন্ত্রণ করিয়া প্রিত্তে হয়!

এম্নি ভাবে গুরুগৃহে যখন বুদ্ধিবৃত্তি ও হৃদ্তির
সমাক্ বিকাশ সাধিত হইতে গাকে, সংযমের দার। গরুতি
ভাষাবশীকৃত হইতে গাকে, ত্রন্ধাচর্যা আশ্রম সেই বিজ্ঞার
প্রথিমিক সাধনা। বিশ্ব প্রকৃতির সহিত আ্রার পূর্ব
মিশনই হচ্ছে এই ত্রন্ধাচর্যা আশ্রমের চরম সাধনা। এই
সাধনায় যখন মাকুর সিদ্ধ হয়, তখন সে আর একটি বৃহৎ
মিশন চায়— সেটা বিশ্ব প্রকৃতির ক্লেনে সম্ভব নহে, বিশ্বনাবের ক্লেত্রেই সম্ভব! এই মিশন লাভেরই উত্যোগ
পর্ব্ব ক্রেকর্ট্যাশ্রমে।

বিশ্বপ্রকৃতির গহিত মিল্সাণনে কোনও বাধা বিশ্ব
নাই, কোন ছংখম্ত্য বিরোধের উপদ্রব নাই—তাহা
অপেকার্কত সহজ সাধ্য—কিন্তু বিশ্বমানবের কেত্রে
আত্মবিকাশের বাধা পদে পদে। অস্তরে নানাভিমুখী
প্রস্তুতি নিচয়ের বাধা, বাহিরের নানা ছংখ ঝঞার বাধা।
কিন্তু মানুষ জ্ঞানের হারা, ব্রন্দর্যের হারা, ও সংযযসাধনার হারা এমনি একটি বল লাভ করে, যে সে
অনামানে অক্লেশে এই সকল বাধার উপরে জয়ী হইয়া
আপন মহত্তকে প্রকৃতিত করিতে পারে।

হয়। এই সময় বিশ্ব নরনারী দিগের সহিত বিচিত্র সম্বন্ধে মাকুষ বিজ্ঞ তিত্ত ইয়া এই সর্ব্ধ বিচিত্রতার মধ্যে সেই একেরই উপাসনা করে— যিনি শিবন্। এই কর্মের ক্লেত্রেই মাকুষের মৃক্তির যথার্থ বিকাশ। মাকুষের মহয়র ও বিজ্ঞ এই ক্লেত্রেই যথার্থ জন্ম লাভ্, করে, ব্রহ্মচর্য্যাশ্রমে তাহার জন অবস্থা! নবীন পরিপূর্ণ যৌবন, নব বিকশিত শক্তি নিচয়, ও অপরিমিত বীর্য্য লইয়া সে তথ্য বিশ্বমান্য সমাজের সেবায় আল্পভ্যাবে ব্রহী হয়!

সংঘদের সহিত স্বাত্যা পরিচালিত করিলে বিশের
সকল কলানকর্মাচরণ স্বাভাবিক হইয়া উঠে। প্রবৃত্তি
যথন আত্মবশে আদিয়াছে, তখন তাহাকে সংযততারে
যথায় ক্ষেত্রে প্রয়োগ করাও চ্নাহ নহে! অহভারকৈ
একটা সভাসীমার ভিতরে রাখিয়া প্রয়োগ করিলে,
তাহাতে বিশের সহিত মিলকে বাধা না দিয়া বর্জা
অধিকতর প্রকাশ করে—কাজেই ভাহাতে প্রেমের
বিকাশকে আরো অভ্যক্তল করিয়া ভোলে।

এই ভাবেই যখন মানব সমাজে আকর্ষণ, বিকর্ষণ, স্বাধীনতা ও সংবরণ, কেন্দ্রামুগ ও কেন্দ্রাভিগ শক্তি সমূহ সমকালে সমভাবে পরিচালিত হয়, তখনি ভাই। সভ্যে কল্যানে, প্রেমে, পরিপূর্ণ হইয়া উঠে। তখনি বিশেবত্ব বিশ্বকে অভিক্রম করিতে রথা প্রয়াস পায় না এবং প্রত্যেকেরই আপন আপন বিভিন্ন ব্যক্তিত্ব পরক্ষার বিরোধী হইয়া গভীর ধ্বংসের অভিমূবে যাত্রা করে না। ক্রুদ্র অহঙ্কার অসংযত কোলাহলে দিগদিগস্ত মুখ্রিত করে না এবং প্রবৃত্তির লুক আক্ষালন প্রেমের চক্ষে শেলা হানে না। ব্যক্তিত্বাভন্তা ও বিশ্বমঙ্গলের অপ্রস্কাপ সামঞ্জন্ত অপূর্বে গরিমায় উভাগিত হইয়া উঠে।

এই বিখনকলের ক্ষেত্রেই মানব সমাজের ক্ষেত্রেই,
সংঘমের ববার্থ পরিচয়। ব্রহ্মচর্য্যাশ্রমে যাহা জভ্যাস
মাত্র—গার্হস্থাশ্রমে তাহাই সার্থকভা লাভ করে।
শ্বার্থভাগ করিতে যে না জানে, ত্র্থকে ভ্যাপ করিতে
বে না জানে—ভাধারি

#### क्ष्रं क्षिम योगरमञ्जू क्ष्रं क्षाप-शाहरणत ज्ञानि अन्नरभव ज्ञाम

নিশিদিন ক্লম্ভ খরে ক্ষুত্রশিখা ভিমিত দীপের ধুমানিত কালি

নৈ অৰ্ই আপন খাতদ্ধাকে নানা ভোগে অত্যন্ধত করিয়া জুলিতে প্রদাস পায়, এবং একদিন নিদারণ মৃত্যুর বাহাকারে ভাষার পর্যবসান।

এই বিশ্বকল্যানের কেতে যে যত বড় ত্যাগী তাহার
গরিমা, ভাহার বহিমা, তত উদার, তত গভীর, তত
বিরাট্ । ভারের জন্ত, সত্যের জন্ত, লোককল্যাণের
জন্ত মান্ত্র তথন আনন্দে হংথকে, মৃত্যুকে, ক্ষতিকে
বিরাশকে কর্মা লয়—বিপদ্ধে মাধার মুক্ট করিয়া লয়,
বিরোধকে কর্মহার স্বরূপে গ্রহণ করে—। হংগই
ভাহার মন্ত্রুত্বের গভীরভা পরিপূর্ণ করিয়া তোলে।
সংলাহে হংগধন্দার অন্ত নাই; অতএব ইহাকে
পরিত্যাগ করাই শ্রের, এরপ এক দল আরাম্প্রিয়
হৈরগৌ দেবিতে পাওয়া যায়।

কিন্ত হৃংখের দাবদাধের ভিতর দিয়া না গেলে 
শ্রম আরাম পরম আনন্দকে ত কিছুতেই পাওরা যায়
না। মাত্রম ভাহার অন্তর্গতম অমৃতকে পরিপূর্ণ
বিক্ষিত করিবার নিমিডই হৃংথকে, মৃত্যুকে, বিপদ্কে,
শ্রেক্তার আপন অন্তরের অন্তঃস্থলে বরণ করিয়া লইয়াছে।
মাসুবের মনুষ্যুত্তর পরম বিকাশ গেই হৃংধর্ত্বন
ক্রমারনিশিত প্রায় আপন বিজয় যাত্রা প্রশন্ত করিয়া
চলিয়াছে। মাসুবের পরম প্রেমের পরিচয়ই গেই বোর
ক্রমার প্রশন্তর ভীমগ্রিকত বহ্নি-উদ্যারে।

ভূষার দিক হইতে বে আহ্বান নাম্বের সম্পাস মার্কার্ড বিভার করিয়া দেয়, ভাবা ত তথু মঞ্চ নিক্ষের জুলাঞ্চন মধ্র বংশীকানি নাই; ভাবা ক্রাের প্রান্থ শিল্পকৈর ভূবন বিক লাভ ভূবা বাজনা। মাত্র ভাবাকেণ প্রভাষান করে নাই, ভাবাকে নাম্বে আনক্ষে ব্যুগ করিয়া সইয়াছে, তাতেই ভো তার বিজ্ঞাবের বিকাশ !

বৈদিন সে দেই লাহ্লান গুনিহাছে—দেদিন সে তার
সমস্ত হব সমস্ত আরাম বিসর্জন দিরা সমস্ত বৈতব
সম্পদ পায়ে ঠেলিয়া বাহির হইয়া পড়িয়াছে, ছির কহা
পরিয়া যুগযুগাস্তের সেই চির হুংধের সেই চির মঙ্গলের
সাধনার পরম পয়য়য় । সে দিন তাহার প্রিয়তম সক্ষন
বক্সদের চক্ষ্ম দর দর অঞ্চধারায় অভিবিক্ত হইয়াছে—
ভাহার প্রাণের পরম স্লেহের প্রেমের আদরের ধনেরা
হাহা ধ্বনিতে দিক্ দিগন্ত ধ্বনিত করিয়াছে, সেদিন ভাহা
শুনিয়াঞ্জ শোনে নাই—নিধিলের অঞ্চলে ভাহার
হুংক্রাটী ধৌত পরিপ্লুত করিয়া, ভার পরম ছুংব্রের
দেবভার চরণে ভাহা অর্য্য উপহারস্কণে সমর্পণ করিয়াছে।

শেদিন দিগ্ হইতে দিগন্ত পর্যন্ত তাহার নিন্দাবার্
ধ্বনিত হইয়া গগণের প্রতি রন্ধ্যু মুখরিত করিয়াছে—
ক্বিয়াসীর অউহাস্ত তাহার বক্ষে শেল হানিয়াছে,
বাহিছের অগণ্য বাধা তাহার অবে বজ্ঞবাণ নিন্দিপ্ত
করিয়াছে—খর কণ্টক-গহণ পথে তার চরণ গাঢ় রক্তে
অমুর্ভিত হইয়াছে। চৌদিকে শত মৃত্যুর দামামা
গর্জন অনিত হইয়া উঠিয়াছে, শত বিপদের বহিলালা
প্রদীপ্ত হইয়া উঠিয়াছে, সংবারের রক্ত নিনিক্ত গগণ

সে দিন সে পেই পরম হংবের ভিতরে পরম আনক্ষে
বাঁপাইয়া পড়িরাছে—সেই মৃত্যুর প্রদানবাধির
উন্নত তরসপোলার সে ছলিরাছে—সে নাচিরাছে—
সে বেলিরাছে—যথন হিংঅদৃপ্ত কুটিল বীচিলবরী
ভাহাকে অতলে রসাভলে ভলাইবার উভোগ করিয়াছে
ভখন সে সহাস্ত মুধে, জনত আশাবিত একাছ
নিজীক ক্ষায়ে, সেই ক্ষান্তের অভয় চরণ অভাইয়া
ধরিয়াছে।—ভবেই ত "সকল ছম্ব-বিরোধ-নামে লাঞ্জত
বে ভালো" ভাহাকে লাভ করিতে পারিরাছে।

करे रव इःथ, कृष्टे रव विश्वष्याण, असे रव कृष्ट्यत कारमाजन, असे रकारणत जिल्हात रव वीदीयास् कामरम প্রেম করে নাই, করিতে পারে দাই—গে কর্ণনো সেই পরম প্রাণের অমৃত রস আখাদ্ করিতে পারে নাই— যে অমৃত মৃত্যুর পরপারে অবস্থিত—মৃত্যুকে অভিক্রম মা করিলে যাহাকে পাওয়াই যায় না।

মান্থবের জীবনে— সংসার ক্ষেত্রে তাই এই হৃঃধের
প্রায়েজন হয়—এই ঘন্দের প্রায়েজন হয়—এই জীবন ও
মৃত্যুর ছম্ব-স্থ ও হৃঃধের হম্ব,—কণ্যান ও পাপের
হম্ব-এই ঘন্দ মন্থনের ভীমমূহর্ত্তে মান্থন তাঁহাকেই
পরিপ্র্নিপে উপলাক করে, "ধিনি শিবং।" তাঁহার
কৈরেয়া দেয়। অবশেষে যথন হম্বের সমাধান কাল
উপন্থিত হয়—মথন মৃত্যুর তোরণন্ধার উদ্যাটিত করিয়া
জমৃতলোকে মান্থন উপনীত হয়—তখন সেই ক্রেই
দক্ষিণ বদনে তাহাকে রক্ষা করেন। তখন আবার সেই
প্রেম, সেই আনন্দ, সেই প্রাণ। আদিতেও সেই
প্রাণ অস্তেও সেই প্রাণ—মাঝ্রানেই যত হন্দ্র যত দিব।
সেই বিধা পার হইয়া যথন পুনরায় অমৃতভবনে মান্থন্ন
উপনাত হয়, তাহা হইতে জার তার খলন নাই—তখনই
ভার মন্থ্যুত্বের বিজ্ঞান্তর বিকাশ, পরম সার্থকতা!

মাস্ব তাহার গৃহস্থাবনে যে মহৎ তৃংধের অধিকারী হইয়া থাকে তাহাই তাহার চরম নয়—চরমই হচ্চে ভুমার পুপ্রসর আনন্দ মৃর্ত্তি।—হৃংধের প্রথর মরুভূমি পার হইয়া মান্ত্ব পরমানন্দ পারাবারে অবগাহম করিয়া শান্ত হইয়াছে, শীতল হইয়াছে। এই ভাবে পার্হ্যজীবনে ছিল বিচিত্র কর্ম্মে বিচিত্র সহস্কের ভিতর দিয়া ভূমাকে অমুভব করে; এবং হৃংধের ভিতর দিয়া ভাহার গভীরভা লাভ করে; অবশেবে হৃংধের বে দিন অক্সান হয়; সে দিন সে একটি পরিপূর্ণ আনন্দে ক্রিলিভ হইয়া বক্ত হয়।—

ভৰন মাসুৰ ভার জীবনের প্রাপ্তভাগে তৃতীয় প্রিণাম। এই বাভাবিক বিকাশ যখন আয়াদের দৃষ্টির
আপ্রেম্মে, একে একে সকল কর্ম উনুমাচিত করিয়া দেয়— । বহিছু ত বাকে, ভবনি জীবনাত কাল আমাদের এই
আয়ার সম্বন্ধ সকল একে একে ছিন্ন করিয়া মানব শোচনীর বলিয়া বোশ হয় ।

স্মাত হইতে একটু আল্গা ভাবে জীবন ধাপন ক বিতে । থাকে। কর্মজীবন শেব হইগাছে—এখন একটি । শান্তিপ্লুত অন্ধকারপূর্ব নীরক পরিদ্যান্তির জয় প্রতিকা।

কর্ম সংসারের সমস্ত ছু:খসংক্ষোভ ক্ষমক্তির ভিতরে সে তাঁহারি পূজা করিয়াছে যিনি শিবং। এক্ষণে সমস্ত ছফ্টের অবসানে সে তাঁহারি দক্ষিণ বদদ নিরীক্ষণ করিতেছে, যিনি অগৈতম্। সে ক্ষমৈতম্ একাকারও নহে; সমস্ত বিরোধ ও বিজ্ঞেল্পরিপূর্ণ-করা অধৈতম্।—একণেই সে পরমানন্দকে লাভ করিল, পরিপূর্ণ আনক্ষে নিময় হইল।

মাক্ষের এই শেষ জীবনে আবার সে লোকালর ছাড়িয়া বিশ্বপ্রকৃতির উদার বিস্থারে বিশক্ষোড়া হাঁডিরা বুক ভরিয়া গ্রহণ করিতে থাকে, সমস্ত কাজকর্মের ভার পুজের উপর দিয়া এখন একাস্ত নিশ্চিম্ব চিতে বাহিছা হইয়া পড়িবার দিন আসিয়াছে।

সংসার হইতে এই স্বাতাবিক বিদায় গ্রহণেও সংনক্ষে
দৈল ও কুঠা বোৰ করেন, কর্মের একটা স্বাভাবিক
অন্তিমতা আছে, এটা তাঁহারা স্বীকার করিতে ধ্রা
পান না। তাই দেখা যায়, বৃদ্ধ হইরা পলিত কেনে,
খলিত দত্তে, নিভেন্ধ ইন্দ্রিয়ালভিতে যৌবনের ভালি
স্কারের নিমিত্ত নানারূপ ক্রিম উপায় অবস্থান
করেন। বস্ততঃ কর্মের বেগার খাটাই যাদের অত্যাস
ও যাদের চরম লক্ষ্য তারা ইহার কোনওখানে শেল
দেখিতে পাইলেই হাহাকারে দিক্ মুখরিত করে।

ফুলের পরিণতি ফলে। ভেষ্নি জীবনেরও এক পর্কের পরিণতি অপর পর্কে। নৈজে পর্কে শর্কে। বৈজে পর্কে শর্কে জীবন বেমন রেজচর্যা জীবনেরি জেনিক পরিপ্রিক তেম্বি কর্মচেষ্টা পারপুত্র অভিন জীবনও পার্হিয়া জীবনেরি পরিণাম। এই বাভাবিক বিকাশ যখন আমাদের মুটিঃ বহিছুত বাকে, ভবনি জীবনাত্ত কাল আমাদের এম শোচলীর বনিয়া বোধ হয়।

শার এক কথা কথা করিছে করিতে কর্মস্ত্রে বধন
দানাপ্রকার ভটিণ গ্রন্থি পড়িতে থাকে,তথন জোড়াতাড়া
দিয়া তাহাকে সারিয়া লইতেও বিশ্রামের অবকাশ
প্রয়োজন ! অন্তিম জীবন ও মৃত্যুই সেই কর্মহীন উদার
শাক্ষাপ ! ইহারো পরিণতি নব জীবনে । মামুৰ তাহার
শীক্ষাম্বলালে ও তাহার মৃত্যুর অন্তে সেই নবজাবনের
শক্ষ প্রস্তুত্ব । স্ত্রাং ইহা যে জীবনের বিক্তরে একটি
বিজ্যের, এ কথা মনে শানাই মৃত্তা।

মান্তবের এই জীবন সন্ধান্তপ্রখাম মরণের গাচনিশীপ রাজির অভিনুধে বধন কওনা হইতেছে, তথন মানুষ বড় জানন্দে সমস্ত মনের সহস্ধ হইতে দূরে ভূমার সঙ্গে কান্টি নিলিত হয়। পতিব্রতা পত্নী যেমন সারাদিন পতিগুছের সমস্ত কর্ম একে একে সমাপন করিয়া গৃহ বিজ্ঞানের সেবাদি শেব করিয়া অবশেষে দিনান্তে সন্ধার মান্টিলাকে একান্তে স্থামীর সহিত কল্যানময় মিলনের ক্রান্টেলাকে একান্তে স্থামীর সহিত কল্যানময় মিলনের ক্রান্টেলাকে একান্তে স্থামীর সহিত কল্যানময় মিলনের ক্রান্টেলাকে একান্তে স্থামীর সহিত কল্যানময় মিলনের ক্রান্টিকাক, তেম্নি গৃহস্থও একে একে বিচিত্র সংসার ক্রান্ত্র মধ্যে বিচিত্র কর্ম্মে তালার প্রাণপ্রিয় ভগবানেরই শুলা পরিস্থাপ্ত করিয়া জীবনের সন্ধ্যাবাদরে, সমস্ত ক্রান্টিকার বিস্ক্রন দিয়া, স্থানসিগ্রদেকে শুল পবিত্র বসনে ভূমিত হইয়া একান্ত উন্মুধ স্থামন্টা ভগবানের চরণারবিন্দ প্রাক্তে বর্মাণ করেন।

এই সমরেই ভূসার নিগৃচ উপলব্ধি। বাধাহীন

স্থাবধানহীন পরিপূর্ণ উপলব্ধি। দেখিতে দেখিতে সন্ধ্যার

স্থাবধানহীন পরিপূর্ণ উপলব্ধি। দেখিতে দেখিতে সন্ধ্যার

স্থাবধান কাল্যাব্ধি আন্দে, আলোকের শেষ
ইনিইড্ডর স্থানিয়া নির্মাণ বিভ্তার মধ্যে অক্তরার
ইনিইড্ডর স্থানিয়া সমাজের হয়—আলোকের তর্তর
ইরিইড্ডর স্থানিয়ার দিগস্থব্যাপী বিপুলগভীর মৌন
ক্রিইড্ডা স্থানাবারে চির-পিরাম পাত করে।

्रिक्ट विन राष्ट्र मात्रीय जागीरमत পूर्व निवासत विन-विवासक महिल्ल विकासक विन-शिष्ट विन रहा जीवरमत् । जानमाय नाम जीवरमुंत পूर्वज्य विकास । राष्ट्र विनके छ

অপীয মৃত্যুর পবিত্ত সঙ্গমতীর্থনীরে দেই প্রাণ পাত্রটী কল্যানে, প্রেমে, স্থানিবিড় রসে ভরিয়া উঠে। সেই অন্তিম বিবাহ-বাসরে—জীব,ভগবানের নিশ্ব করতল্ভারায় চিরনির্বাণ লাভ করে—আনলে হ্রবর পরিপ্লাবী আনলে —বিশ্ব নিধিল পরিপূর্ণ করা গভীরতর আনলে। সেই দিনই ভাহার জীবনের চরম শান্তি, চরম প্রেম, চরম আরাম! সেই দিনই ভাহার প্রিয়ত্মের সহিত পূর্ণ মিলনে বিরহের একান্ত সমাপ্তি।

এই যে মাহ্বের দিজত পর্কে পর্কে প্রকাশিত হইতে চলিভেছে—এই পরিণতি প্রবাহ এক জীবনের কি?
—ইহা ধুগ্যুগাস্তের, জন্মজনাস্তরের, ইহা জনাদি ও জনস্ত ুইহার আরম্ভ নাই শেব নাই—নিত্যকাল হইবে, নিত্যকাল এই লীলা চলিবে এই অগীম অসীমের লীলা এই একের চিরবিচিত্র লীলা।

মাশার পামপেয়ালি কম্পনে অবিভাষোগে আত্মা অপ্ন দেখিছেছেন -এই বিচিত্র বিশ্বমানবের জন্মসূত্য উপাদ পতন—একপা দেই অবস্থায়ই মানুষ বলিতে পারে যথন তার অস্তরে বিজ্ঞানের অস্থ্যেরণা জাগে নাই—যথন দে জগৎকে মানুষকে রক্তমের বিক্ষোত বলিয়া মনকে ভূপাইয়া রাথে ও জগদীখরকে চিলাভাস বলিয়া দ্রে বর্জন করে।

কিন্তু আমরা বলিতেতি, সে কথা আমরা মানিব না।
বন্ধত: তর্কের দারা মদি বিশ্বপৃত্যকে উদ্ধার করা মাইত
তবে নান্তিকের মত এত বড় সত্যদর্শী পৃথিবীতে নাই
বলিলেও অত্যক্তি হইত না। সরল বিশ্বাসী বে, সে
তার হৃদয়ের গভীর কলভাষার অর্থ ব্রিয়াছে সে
ব্রিয়াছে—সেই অনাদি অনস্ত ওঁকার সেই ব্রহ্মশ্র
নিনাদিত হইতেছে—চিরদিন বিশ্বের প্রতি অস্ত্রতে
পরমাসতে। বিশ্বের দিক্তর কোথাও আর গোপন নাই,
এই মায়িক জগৎ যাহাকে বলিতেছে, এই মায়িক মাসুষ্
যাকে বলিতেছ—গেই মায়ারই ভিতর হইতে সেই অনস্ব
স্বর উদ্বাস্ত্র অস্বরতলে প্রতিশ্বনিত হইছেছে—বেই

ने जनजनन श्रीत अंकातः। ८० हे "शीमात मरशा अशीरमत" चीनास्त्रमि।

नगर नौगारक अवशत अवश अनीय आनमध्यान শ্মিলিত করিয়া যিনি এই ভুড়বিংখঃ কগতের ত্রিভন্ত্রী বাজাইতেছেন। হে তার্কিক। হে প্রম বৃদ্ধিমান জানী ? তুমি তাঁর সেই বিশ্বভ্রনবিশ্বত মহাদ্দীতের অনুসরণ কি বুঝিবে? বিশ্বপ্রকৃতির শত আবর্ত্তনে ও বিশ্বানবের विवित्त - अन्यायत्मवद्यतः मश्मात क्वीषाय (य व्यनानि व्यनश्व শলীতের মৃর্ক্তনা কলারিত হইয়া উঠিতেছে তাহা দেই পর্মা-নন্দেরই পূর্ণভার পরিমাপ। প্রতি জীবনে নেই আনন্দ-সঙ্গীতের একটি একটি করিয়া তান লীগায়িত হইরা মৃত্যুর পূর্ণ সমে আসিয়া শেষ হইতেছে। অনন্ত অন্ম মরণের তালে তালে এই বিরাট প্রাণের জয়গান গীত হইতেছে-এ গানের মৃশ উৎদ দেই অসীমে। ति श्वे भाषा इटेटिंट यह नकाहिक इटेटिंटि - कीरन. পশুতে, পকিতে, বৃকে, বনপতিতে, জলে, স্থলে, নিখিল हड़ाहरत, व्याचात निहित्व हर्रक, कारन, नाम रमहे अतह সমুৎসারিত হইয়া ফিরিয়া যাইতেছে, দেই উৎসমুখে এমনি করিয়াই সেই পরমপ্রাণ বিশ্ববৈচিত্রের মধ্যে আপনারে ঢালিয়া দিয়া আপনাকেই বারম্বার ফিরিয়া कितिया পाইভেছেন — निडा नव नव आकारत — পরিপূর্ণ-তর রূপে ।

সেই উৎগর্জন ও গ্রহণের ভালে তালে নিখবারা।
চলিতেছে—নিভাকাল হইতে নিভাকাল ব্যাপ্ত করিয়া।
এই যাত্রা কোন কালেও শেষ হইবে না। কোন
কালেই দেই অনস্ত ব্রহ্ম কোন সমাপ্তির দিংহ ছারে
আদিয়া বলিতে পারিবেন না যে আর আমি প্রকাশিত
হইব না—আমার যাত্রা সাঙ্গ হইল এবং শেষ পর্যাত্ত
আবিধাসীর মুখ বন্ধ করিয়া, ভার্কিকের ভর্ক প্রতিহত
করিয়া, মৃত্রে অজ্ঞানজাত উদ্ধৃত আক্ষালন ভার করিয়া
মানৰ ও প্রকৃতির দেহ মনের মোহনবীনার ভারে ভারে
ব্যেই পুশ্লিত স্কীত খনিত হইবে। বিজ্ঞাপ প্রাণ্ঠে

প্রদারিত করিয়৷ বিমৃক্ত করিয়৷ শুনিবেম, সেই ধ্রনি পর্বাত কলারে, শিখারের রাজে বাজে শুনিবেম, মহালমুছের প্রশাস্তীর কলে মান্তে পেই ধ্বনি শুনিবেম বিবামান্ত্রের প্রনাজ্যালয়বল্পর অনস্ত যাত্রাপন্তায় নিম্নত ব্যর্থারিত গেই ধ্বনি ৷ সেই লিগন্ত শ্যাপ্র—

चानम निःयन छै ७९ ४९ छै।



ষষ্ঠ প্রস্তাব—ক্ষত্রিয়বর্ণের কথ।। (অন্তিয় ও পরিচর)

ক্ষত্রিয়-বর্ণ যে ভারতে চিরকাল "পার্যা" বলিয়া পরিচিত এবং গৃহীত হইরাছে, তৎসম্বন্ধে কোন সন্দেরই নাই; কিন্তু বর্তমান কালের বহু ব্রাহ্মণ পণ্ডিতই বলিয়া থাকেন যে কলিযুগে কোথাও ক্ষত্রিয়বর্ণের অভিত্যু নাই। দেদিন একজন দেশ বিখ্যাত প্রবীণ ও ভূরোদনী পণ্ডিত মহাশয়ও শেষককে এ কর্বাই বলিতেছিলেন। সময়াভাবে আমরা সেই পৃজ্যপাদ পণ্ডিত মহাশয়কে আমাদের মন্তব্যু জনাইতে পারি নাই; এজণে যতদ্র সম্ভব সংক্ষেপে সেই ক্রাই বলিতেছি।

আতি ভটাচার্যা মহাশর মে শ্বৃতির (বম সংহিতা)
উল্লেখ করিয়া "মুগে জবতো বেজাতী ব্রাহ্মণ: শুল এ বচ"
শ্লোকার্ম উদ্ধার করিয়াছেন, মুক্তিত শ্বৃতি শালের
পুত্তকে ঐ বাক্য পাওয়া বার নাই। পাওয়া যাইলেও
উহার উপর নির্ভির করা যাইতে পারিভ কিনা সন্দেহ।
"মক্সংহিতা বেদের নিতান্ত অনুসত শ্বৃতি বিদিন্নই
ভাষার এত সন্মান। শ্বৃতিশালে স্পাইই বলা বইরাছে

বৈ শশুর মতের বিপরীত অর্থ-প্রকাশিকা শ্বতির প্রশংগা নাই । বেদের বিরুদ্ধ মত প্রচার যে শ্বতির লক্ষ্য, মন্ত্র মহারাজ সেই শ্বতিকে "নিফল এবং মৃত্যুর পর শ্রেকারে লইরা যাইবার হেড্" বলিয়া পাঠককে শ্রেমান করিয়াছেন । এরপ অবস্থার বর্ণাশ্রম ধর্মের বিক্রম কোন বিধানকে কোন এক শ্বতির লোহাই দিরা শ্রমাকে উপস্থিত করিলেই চলিতে পারে না।

অর্থমতঃ, যদি কলিযুগে ব্রাহ্মণ এবং শুদ্র ভিন্ন का दकान वर्ग ( कांकि नरह) आयारमत रमरण ना बारक, फारा रहेरल की शिवस महातास्वत मरछ हेरारक ৰাণাবৰ্ত্ত" না বলিয়া "মেছে দেশ" বলিতে হয়। "कांकूर्वना" व्यर्वाय वाक्षन, कवित्र, देवश ७ मूझ अहे ठातिष्ठि वर्ग (काम (परन ना शंकिरन (म (प्रगटक "(मक्ट (प्रग ह ৰ্লিতে হয়। আর মহু মহারাজার মতে 'চাত্বব্য' এবং চতুরাশ্রমকে যথাবিধি রকা করা ক্রিয়েরই কার্বা, শুভরাং কোন দেশ হইতে ক্ষত্রির বর্ণের একাস্ত ৰভাব ৰইলে, তথার হিন্দুদিগের প্রোত অথবা আও ৰূপ্তই বুকা হইতে পাৱে না। বিভীয়তঃ, যদি দেশে कार्यत्र अवर देवल ना बादक अवर नकरन हे गृख दश, छाहा হুটলে ব্রাহ্মণগণের ও নিত্য পূজ সংসর্গ, শুজের যাজন, ্শুৱের নিকট প্রতিগ্রহ প্রভৃতি নিতান্ত নিন্দনীয় অগবা ুলাভিত্তা জনক কার্য্য করিতে হয়। এরপ অবস্থায় ব্রান্দ্রের "ব্রাহ্মণ্য" বুকিত হওরতি আদে সম্ভব নহে।

"বেদার্থোপনিবন্ধরাৎ প্রাধায়ং হি মনোস্বতম্।
 নহর্ব বিপরীতা বা সাস্বৃতি ন প্রশক্ততে।"

† ''বিরুদ্ধা চ বিগীতা চ দৃষ্টার্থ। দৃষ্ট কারণে। স্বতির্ন শ্রতিমূলা স্থাদ্ বা চৈব,-গন্তব শ্রতিঃ॥ দিতীয়াধ্যায়ে, মেধাতিবিধুত।

খা বেদ ৰাব্যাঃ শ্বতবো যাশ্চ কাশ্চ কুতৃষ্টয়ঃ। প্ৰয়ন্ত্ৰা-নিক্ষলাঃ প্ৰেত্য তনোনিষ্ঠা বি তোঃ শ্বতাঃ ১৯৫৪ যাদ্য অধ্যায়।

যাহা হউক, কলিযুগে, ক্ষত্রিয়বর্ণের ভারত ভূমি হইতে লুগু হওরার চ্ইটি হেভূই প্রায় ত্রাক্ষণ পণ্ডিতগণের মুখে ওনিতে পাওরা যার। ইহার মধ্যে প্রথম এবং প্রধান হেভূ পরগুরাম কর্তৃক এক বিংশভিষার পৃথিবীকে "নিঃক্ষত্রিয়া" করা এবং বিতীয় হেভূ মগধরাক মহাপদ্দনন্দ কর্তৃক নিখিল ক্ষত্রিয় জাতির ধ্বংস সাধন। আমরা ক্রমশং চুইটি আপভিরেই উত্তর দিতেছি:—

পশ্বতামের অবতার সম্বন্ধে পুরাণাদির্গ্রেই নান্ধালিক উপাধ্যান প্রচলিত আছে। তিনি ভ্রু পোত্রীয় লচীক মুনির পৌত্র এবং জনদায় লবির পুত্র কিন্তু উল্লেই ক্লিত্রের রাজ করা। তাহায় পিতামহী পতাবতী বিধ্যাত কল্পাকুল পতি গাধিয়াজের কলা এবং অনামধন্ত বিধামিত্রের ভগিনী আর উল্লেই জননী রেণুকা ইক্লাকুবংশীর রেণু রাজার কলা। মহাভারত এবং কতকগুলি পুরাণে পরশুরামের ধারা প্রিবী ''নিঃক্লিত্রেয়া" করার উপাধ্যান দেখিতে পাওয়া যায়। মহাভারতের উপাধ্যান অপেক্লাকুজ বিস্তৃত্ব বিলয়া এখানে ঐটিই তুলিয়া দিলাম।

"একদা জনদ্ধির পুত্রগণ পূর্ববং আশ্রম হইতে
নিজ্ঞান্ত হইলেন, এই অবসরে অন্পণতী মহাবীর
কার্ত্রবীর্যা তথায় উপস্থিত হইলেন। অধিপত্নী তাঁহাকে
সমৃতিত সংকার করিলেও সেই যুদ্ধ মদমত কার্ত্রবীর্যা
তংকত সংকারে অনাদর প্রদর্শন পূর্বক আশ্রম হইতে
হোমধেত্বর বংসকে বলপূর্বক আশ্রমণ ও অপহরণ
করিয়া তর্জন গর্জন করত আশ্রমের রহৎ রহৎ পাদপ
সকল চূর্ণ করিয়া ফেলিলেন। অনন্তর রাম প্রত্যাগমন
করিলে মহর্ষি এই রভান্ত তাঁহার কর্ণপোচর করিলেন।
রাম পিত্রমুখে এই কথা শ্রবণ ও বেন্তকে দরদ্বিত থারে
অনবরত রোদন করিতে অবলোকন করিয়া জোধভরে
অধীর হইয়া উঠিলেন, এবং তৎক্রণাৎ করেল্ব্রণ অন্তুন্নর
প্রতি ধার্মান ইইলেন। পরে ক্রির প্রান্ন গ্রহণ
পূর্বক রণশ্বক ক্রিয়ে একাশ করিয়া বানিত ভলান্ত যারা

ক বিনিধ্যের সহল সংখ্যক অর্গলতুলা ভূকবল ছেদন করিলে নৈ তৎকলাৎ অভিভূত ও পঞ্চত প্রাপ্ত হইল।" মধাতারত, বর্ণশর্ম, তীর্থাতাপর্যাধ্যায় ৮ কানীপ্রগন্ন সিংবের অধ্বাদ।

"এই ব্যাপারের পর কার্ত্রবীর্যার্জ্জ্নের প্রগণ
একদিন আশ্রমে আসিয়া রামের অমুপস্থিতি কালে
তাঁহার পিতা অমদন্ধিকে নিহত করিয়া গেলেন। রাম
যথাসময়ে আশ্রমে ফিরিয়া আসিয়া পিতার মৃতদেহ
নিরীক্ষণ এবং সকল বিষয় শ্রবণ করিয়া পরিশেবে পিতার
প্রেতকার্য্য সম্পন্ন করিলেন। তিনি পিতৃবধের প্রতিশোধ
লইবার জন্ম কত্রিয়কুল নির্মূল করিবার নিমিত প্রতিজ্ঞা
করিয়া অস্ত্রশন্ত্র গ্রহণ পূর্বক বাহির হইলেন এবং প্রথমেই
কার্ত্রবীর্য্যের পুত্রদিগের প্রাণ সংহার করিলেন। তাহার
পরে তিনি তাহাদের অমুগত ক্ষত্রিয়দিগকে বিনাশ
করিতে লাগিলেন। ভ্তকুলতিলক রাম এইরপে
ক্রমশঃ পৃথবীকে একবিংশতিবার নিঃক্ষত্রিয়া করিয়া
সমস্ত্র পঞ্চক তীর্বে ক্ষিরময় প্রহ্রদ প্রস্তুত করতঃ তথায়
পিতৃলোকের ভর্পণ করিলেন।" \*

এই ত পৃথিবীকে একবিংশতিবার নিঃক্ষত্রিয়া করার ব্যাপার! ইহা হইতে স্পষ্ট দেখা যাইতেছে যে পরশুরাম তীহার পিতৃহত্যাকারী কার্ত্তবীর্য্য-তনয়-গণকেই বধ

শ্কালিপ্রসর শিংহ মহাশ্যের অফ্রাদ থুব

 শাসিদ স্তরাং মৃণ তুলিবার আবশ্রকতা নাই। কেবল

পরভরাম যে অজ্নতনয়গণকে এবং তাহাদের অফুগত

ক্ষাত্রেরদিগকে বিনাশ করিয়াছিলেন তৎসম্বন্ধে লোক

চুইটী উদ্ধার করিতেছি—

"সংক্রোহতিবলং সংখ্যে শস্ত্রমাদায় বীর্যাবান্। আম্বান্ কার্স্তবীর্যাস্য স্থতানে কোহস্তকোপমঃ ॥৭॥ তেবাং চান্ত্রপতা যে চ ক্রিয়াং ক্রিয়র্বত। আন্যে স্বান বামৃদ্যামঃ প্রাহরতাং বরঃ ॥৮॥" বন্ধর ১১৭ অধ্যায়'। করিরাছিলেন এবং দক্ষিণাপর্থেব অন্ত হুই চারিজন করির বাঁহারা হৈহরদিসকে সাহার্য প্রদান করিছে আসিরাছিলেন সন্তব্তঃ তাঁহাদিগকেও বিনাল করিছে। ছিলেন । এতদ্ভিন্ন পরত্রাম বে বহাভারতের অন্তার্জ মহাবল পরাক্রান্ত রাজচক্রবর্তিগণের সহিত বুরার্থে গ্রহণ করিরাছিলেন, তাহা দেখা যার না।

महाताला कार्डवीया यहत्रश्यत एक शत्रम द्रशालन वेषे ছিলেন। যথাতির জোষ্ঠপুত্র যহর জোষ্ঠপুত্র সহলাজৎ হইডে হৈছন্ন বংশের ধারা প্রবর্ত্তিত হইরাছিল এবং ষ্চুর অক্সভন পূর্ত্ত ক্রোষ্টা অথবা ক্রোষ্ট্র ইইতে বৃষ্ণি, সন্থিত, ভোজ, অন্ধৰ, কুকুর ইত্যাদি বহুতর শাধা প্রশাথা নির্গত হইয়াছিল। বার্ বিষ্ণু, ভাগবত এবং মৎশু পুৱাণ ও হরিবংশের বংশ ভালিকা আমরা উত্তমরূশৈ মিলাইয়া পাঠ করিয়া দে বিয়াছি; ভাষাতে দেখা গিয়াছে যে পরশুরামের হল্তে কার্ত্তবীর্য্যের সমস্ত পুরুষ্ট বিনাশ প্রাপ্ত হন নাই; তাঁহার পুত্রগণের মধ্যে অয়ধ্যক্ত, শুরসেন, ব্যভ, মধু ও উজিত (মতাক্তরে অভানামও পাওয়া याम ) এই भक्षवीदात वश्म क्रका भाग अवर अवस्यक हरेट छई বিখ্যাত ভাৰজভ্য এবং হৈহয় ক্ষত্ৰিয়দিগের অগণ্য শাৰা প্রশাখা প্রসারিত হট্যা পড়ে। পরত্ব ক্রোষ্ট্র বংশ হইছে যে অগণ্য শাথা প্রশাথা বাহির হইয়া প্রায় সমগ্র ভারতকে আচ্চাদিত করিয়াছিল, তাহা, যত্বংশের বংশ বিবরণ একট্র মিলাইয়া দেখিলে সকলেই বুঝিতে পারিবেন। এখনও এই ভারতবর্ষে কার্ত্তবার্য্য অথবা হৈহয় বংশীয় ক্ষত্রিয়েরা (কলচুরি চেদি এবং অন্যান্য নামে) আপন আপন প্রভাব বক্ষা করিতেছেন, যাদব ক্ষত্রিয়গণের ত কথাই নাই •।

ভার্গব পরশুরাম ক্ষত্রিয় বিনাশার্থ বে কোন্ও দিন আর্য্যাবর্ত্তের ত্র্য্য অথবা চক্রবংশীয় সম্রাট্গণের রাজধানীজে পদার্পণ করিয়াছিলেন, তৎসহদ্ধে রামায়ণ ও মহাভারতে

বায়পুরাণ ১৪ অধ্যায়, বিয়ৄপুর ৪৩ অংশ, তাগবত
 নবময়য়; ২৩ অধ্যায়, মংশুপুরাণ ৪০ অধ্যায় ও হয়িবংশ,
 হয়িবংশ পর্বা। Tods Rajsthan Vol 1.

কোন নিদর্শনই পাওয়া বার না। অবলা বিরুপ্রাণে

(এবং অন্যান্য কোন কোন প্রাণে ও বটে ) পরশুরামের

অবোধ্যার আগমনের এবং তাঁহার ভরে তৎকালীন সমাটের

অবাধ্যার আগমনের এবং তাঁহার ভরে তৎকালীন সমাটের

অবাধ্যার আগমনের এবং তাঁহার ভরে তৎকালীন সমাটের

অবাধ্যার পালারন গর লিবিত আছে বটে, কিন্তু আমরা

উহাকে সভ্য বলিয়া গ্রহণ করিতে প্রস্তুত নাহি।

রামারণে এই বীর চরিভ রাজার নামটি পর্যান্ত নাই।

ক্রীবংশের ইতিহাসের কোন কথা বাঙ্গীকির রামায়ণে না

আকিলে, তাহা গ্রহণ করা উচিত নহে বলিয়াই আমরা মনে

করি।

পঞ্জামের দারা একবিংশতিবার পৃথিবীকে "নি:ক্ষত্রিয়া" করার উপাধ্যান আদৌ আমরা বিশ্বাস করিতে প্রাপ্তত নিছ। প্রথমেই এই কথা লক্ষ্যকরা উচিত যে "নি:ক্তিরা" **मास्त्र "**नঙ्" चन्नार्थरे टायुक रहेग्राष्ट्र, य रहेजु পুথিনীকে একবার "নি:ক্তিয়া" করিলে বিভীয় বার আর "নি:ক্তিরা" করা অসম্ভব। তাই, আমরা অরার্থে "নঙ্ধ" এর প্রয়োগ স্বীকার করিয়া লইতেছি। পৌরাণিক **উপাধ্যানে বিধিত আছে যে ভগবাবেন অবতার অন্ত:**সত্থা व्यक्तिय-नाद्रीनिश्रक् वर्ध क्रियाहितन, कार्क्र अक्रि अ ক্ষাত্র পুরুষ (শিশু পর্যায়) অবশিষ্ট ছিল না: পরে প্রভিপুত্র হীনা বিধবা ক্ষত্রিরাগণ "নিয়োগ" ধর্মাতুসারে ব্রাহ্মণগণ হইতে পুত্রোৎপাদন করিতে থাকায় পৃথিবী भूतः भूतः क्रिया भूर्व शहेशा डिर्फ वरः जाहे जनवान श्रुतः भूतः छाशांनिशतक विनाम कतिया এकविश्मि छिवातित .প্রতিক্রা পূর্ণ করিয়াছিলেন। একবিংশতিবারের পর বে সকল অবীরা ক্ষতিয়া ছিলেন, তাঁহাদিগের গর্ডে আক্ষণপ নিয়োগ ধর্মাত্সারে যে সক্ল পুত্রের উৎপাদন করিয়াছিলেন, তাহারাই ক্রমশঃ পৃথিবী পূর্ণকরিয়াছিল। •ু

পৌরাণিক এই উপাথ্যানের সত্যতা অনুসন্ধান
করিতে হইলে কতকগুলি বিষয় বিবেচনা করিতে হুইবে;
তন্মধ্যে—

(১) পরস্তরামের বংশ বিবরণ এইরূপ ঃ— ব্রহ্মার পুত্র ভৃগু + পৌলোমী

हारन + कुरु छ।

ত্বি

ভাল কি + সভ্যবতী গোধিবাজার কলা ও

বিশ্বামিজের ভগিনী

ভামদিরি + রেণ্কা (ইক্ষুকুবংশীর রেণ্রাজার

কলা ।

রাম (পারশুরাম )

স্থতরাং রাম (পরশুরান) রাজবিঁ বিশানিত্রের ভাগি-নেয়। এই বিশানিত বুধের পুত্র পুরুরবার পঞ্চম পুত্র বিজয় (মতান্তরে অমাবন্ধ) হইতে একদশ পুরুব অধন্তন †

- (২) কার্ত্ববীর্যা ( অর্জুন ) পরশুরামের শক্র এবং ইনি পরশুরামের হস্তে নিহত হুইয়াছিলেন। এই কার্ত্ববীর্যা পুকরবার জ্যেষ্টপুত্র আয়ু হুইতে প্রকাশ পুরুষ অধস্তন। এই কার্ত্ববীর্যা সভাযুগের রাজা ‡।
- (৩) বেতা যুগের শেষ ভাগে হরধমুর্ভঙ্গ বাাপার শইয়া শ্রীরামচন্দ্রের সহিত পরশুরামের কলহ এবং রামচন্দ্রের দ্বারা পরশুরামের তেন্দ্রেরণ। শ্ব

- महाভाরত, আদিপর্বা, সম্ভবপর্বাধ্যার।
- † মৎদাপুরাণ, ১৯৪ অধ্যায়।
- ‡ वाशुभुतान २১ व्यक्षात्र, यत्माभूतान २८ व्यक्षात्र, विकृभूवान, ८० व्याम्, इतिवास, इतिवासनर्व प
  - न त्रामात्रन, व्यानिकाछ।

<sup>† &</sup>quot;অপাকস্য মৃশকো নাম পুত্র হডবং ॥৭০॥
বোহসো নি:ফত্রে স্বাতনেহলিন ক্রিয়নানে স্ত্রীভিবিস্কৃতিঃ
পরিবার্য বিক্তিঃ তত্ত্বং নাবীকবচ মৃদাহরতি ॥৭৪॥ "বিষ্ণুগ
৪র্থ অংশ ৪র্থ অস্যায়। শ্রীমন্ভাগরত। ১ম স্কর, ১ম
অব্যায়। রামায়নে বংশ পরিচত্ত্বে এই "অপাক" এবং "মৃশক্ব"।
জ্বোর নামও বাই, তাঁহাদের ক্রেয়ের উপক্থাও নাই।

- (৪) (ক) স্থাপরযুগের শেষ ভাগে কুরুবংশাবভংস ভীত্র দেবের সহিত পরশুরামের যুদ্ধ এবং তাহাতে কেহই জয়লাভে সমর্থ হন নাই; •
- (থ) পরুশুরাম অঙ্গরাজ কর্ণকে প্রথম যৌবনে অস্ত্র শিকা দিয়াছিলেন। ।

এই কয়টি পৌরাণিক বিষয় একত্র করিয়া তুলনা করিলে দেখিতে পাওয়া যার ষে,

(১) যে পরগুরাম শত্যযুগে মহিন্নতী পুরাধিপতি হৈতয় রাজ ক্ষতবীর্যা নন্দনকে বধ করিয়াছিলেন, (২) তিনিই তেতা মুগের পান্তিম সময়ে রযুকুল চুড়ামণি শ্রীরামচল্রের নিকট হতলপ হন এবং (৩) তিনিই ঘাপরের শেষ কুরুকুল কমল জীন্মনেবের সহিত যুদ্ধ করেন। ঘাপর যুগের বংসর সংখ্যা লোকিক্ হিসাবে ৮,৬৪,০০০ আটলক চৌষট্ট হাজার বংসর এবং তেতার পরিমাণ ১২,৯৬,০০০ বারলক ছিয়ানব্যই হাজার বংসর এবং তেতার পরিমাণ ১২,৯৬,০০০ বারলক ছিয়ানব্যই হাজার বংসর ইন যদি কার্ত্ববীর্যাের সহিত পরগুরামের যুদ্ধ সত্যযুগের শেব দিবলেও হইয়া থাকে, তাহাহইলে মহাভারতের যুদ্ধের সময় তাঁহার বরস অক্ষত: ২১,৬০,০০০ একবিংশলক এবং ষ্টি সহস্র বংসরেরও উপর কুড়ি পাঁটিশ বংসর অধিক হইয়াছিল বলিতে হয়। কোনও পৌরাণিক পঞ্চিতই কোন মন্থ্রের পরসায়ু এরপ দীর্ঘ হইতে পারে বলিতে পারিবেননা; এবং এই জন্মই কোন কোন পুরাণে পরগুরামকে অমর বা চিরজীবী বলা হইয়াছে।

এই ত গেল পরভারমের পরমায়র হিদাব;—এরপ লোকের সম্বন্ধে কোন কথাকে ঐতিহাদিক তথা বলিয়া বিখাদ করা সম্ভব বলিয়া মনে হয় না। তাঁহার বারা পৃথিবী "নিঃক্লব্রিয়" করার প্রবাদ যে মূলতঃ কার্যনিক, তাহা নিয়-লিখিত বুরাত হইতেও উপলব্ধি হইরা থাকে;—

- \* यहाचात्रज, উদ্যোগ পর্বা, অমোপাখ্যান পর্বাধ্যার।
- 🕇 'বহাভারত, শান্তিপর্ম।
- ‡ মনুসংহিতা। ১ৰ অধ্যাৰ, ৬৯---৭১ স্নোক। বিষ্ণু, মংস্যু, বাৰু এবং ভাগৰত পুৱাণ।

- (২) রামারণ এবং মহাভারতের অথবা কোন পুরাণের বংশাহ্র রিভ বর্ণনা কালে স্থ্য এবং চক্রবংশীর রুখ, ষ্ডু, ভুলু, পঞ্চাল, বিরাট, কুন্তি, ভোজ, মৎসা, মগধ, অল, বল, পুঞ ইত্যাদি কোনও শাখার কোন বিশেষ ক্ষত্তিয়রাজ পরভারামের হল্ডে বিনাশ প্রাপ্ত হইয়াছেন বলিয়া লিখিত হয় নাই, অন্ততঃ আমাদের দৃষ্টিতে পড়ে নাই। মহাভারতের শান্তিপর্বে, অবশ্র পরভরামের ভায়ে পলায়িত এবং লুকাইত কতকভানি রাজার নাম দেখিতে পাওয়া যায় বটে, কিন্তু যে দেশে মহা-ভারত সংগ্রামে হতাহত এবং পলায়িত বীরপুরুষগণেরট সংখ্যা ১৬৬,০০,৪৪,১৬৫ ( একশত ছয়বটি কোটী, চুয়ালিশ হাজার এবং একশত প্রশ্তি ) গ বলিয়া কথিত হইরাছে, সে দেশ বে ক্পনও কাহারও দারা বীর শুন্ত হইরাছিল, তাহা আলৌ মনে হয় না। এই গণনার সহিত আদিপর্বের বিতীয় व्यशास्त्रत्र "अस्कोहिनौत्र" हिनाव मिनिस्व ना ; त्न कर् কৌতৃহলী পাঠক মহাশয়কে আমরা উন্মোগপর্বের ১৫৫ অধ্যায় এবং ভীমপর্বের ২১ অধ্যায় মিলাইয়া পাঠ করিবার জন্ম অনুরোধ করিতেছি। এতৎ প্রসঙ্গ বিবেচনার মমর পাঠক মহাশয় কুপা করিয়া মনে রাখিবেন বে মহাভারতীয় যুদ্ধের সময় "ভারতবর্ষ" দেশ অনেক বৃহৎ ছিল। আমাদের প্রথম প্রস্তাবে "ভারতবর্ষের" যে আরতনের কথা विवाहि, छोहा मत्न दाशिलाहे अक्रम मःभाषित्क वित्नय-রূপে বিশ্বিত হওয়ার কথা থাকিবে না।
- (৩) যাহা হউক, পরশুরামের নিধিল ক্ষতির **ভেডার** কথার সে কালের ভীশ্বদেবেরও প্রত্যর হর নাই। অস্বোপাধান
- শ মহাভারতের যুদ্ধে উভয়পক্ষে কত বীর হত এবং পলায়িত হট্নাছিল, ধৃতরাষ্ট্রের এই প্রশ্নের উত্তরে যুধিন্তির বলিয়াছিলেন,—

''দশাব্তানামব্তং সহস্রানি চ বিংশজিঃ। কোটা: বৃষ্টিশচ ষট্টেব হ্যান্মিন রাজন সুধে হতাঃ ॥>॥ অলক্ষিতানাং বীরাণাং সহস্রাণি চতুদিশ 1

° খণচান্যানি রাজেন্ত শতং বৃষ্টিশ্চ পঞ্চ ম) • ম মহাভারত, । ন্ত্রী পর্মা, ২৬ অধ্যার। প্রাধানে জীয়দেবের ষ্টিত প্রশুরামের যে যুদ্ধের বর্ণনা আছে, নেই বুদ্ধের প্রাক্তালে ভীয়দেব প্রশুরামকে বেশ হুই চারিটা শুট্টবর্থা শুনাইরাছিলেন বলিরা লিখিত আছে। এই সময়ে জীয়া শেটভারার বলিরাছিলেন যে পূর্বে পরশুরাম কোন প্রাকৃত শুদ্ধিরবীরের সম্বুখীন হন নাই, তাই তাঁহার দর্প শুক্তিয়াছে, এই বারে তাঁহার সেই দর্প চুর্ণ হইরা যাইবে এবং শ্রিনি সুমন সুদ্ধেন রুমন করিবেন।

(৪) ভারতের শাক্ত সম্পেণারের মতে অষ্টাদশ মহাপুরাণের সাত্তর্গ্রেক "ভাগবত পুরাণ" বলিতে "দেবী ভাগবত পুরাণ" বলিকে "দেবী ভাগবত পুরাণ" কার্মক প্রছেকেই ব্রাইরা থাকে এবং তাঁহারা "বিষ্ণু ভাগবত"কে ক্লিক্লি পুরাণ ( এবং দাদশ শতান্দীর দক্ষিণাপথের সচিবপ্রেষ্ঠ ক্লেক্লাক্লি পণ্ডিতের আশ্রিত বৈয়াকরণ বোপদেবের রচিত ) ইন্দিরা নিম্মা করিরা থাকেন এবং বৈক্লবেরা আবার ঠিক ইন্নার নিম্মা করিরা থাকেন এবং বৈক্লবেরা আবার ঠিক ইন্নার বিশ্বীত উক্তি করিয়া থাকেন। এই তুইখানি ভাগবতে" লইয়া উভয় সম্পাধ্যরের মধ্যে খুব সাম্প্রানারিক বিরাদ চলিয়াছে এবং সেই বিবাদ অবলঘনে অনেকগুলি পালাগালির গ্রাম্ব রচিত হইয়াছে। এই "দেবী ভাগবতে" প্রামান্দাম কর্তৃক কার্ত্ববিগা অর্জুনের বিনাশ কিংবা পৃথিবীকে ক্লিক্লেক্সিয়া করার কোন প্রসঙ্গ নাই পরস্ক উহাতে হৈহর ব্যাক্লিংশের সহিত্ব ভাগব বিপ্রবর্গের বিবাদের এক সম্পূর্ণ উপখ্যানের বর্ণনা আছে।

এই প্রাণ বলিতেছেন, "পুরাকালে হৈহয় বংশে সরাগরা
পৃথিবীর একছের এক সমাট জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। তিনি
ভগবান শ্রীহরির অবতার, দভাত্রেরের শিষা,সর্বকার্য্যে সিদ্ধ,
স্বার্থবিদ মহাবন পরাক্রমশালী ছিলেন। তাঁহার নাম কার্ত্তবীর্য্য
ভার্কুন এবং তাঁহার সহক্র বার ছিল। ভৃগুবংশীর ব্রাহ্মণেরা
ভার্কির প্রাহিত ছিলেন। সমাট্ কার্ত্তবীর্যা অসংখ্য বজ্ঞ
দশ্দানন করতঃ পুরোহিত ভার্গবিদিগকে অকাতরে এবং
ভার্কির অবদান করিতেন এবং তরিনিত পুরোহিতগণ
ভত্ননীয়ে মনম্পানের অধীব্র হইরা উরিলেন। তাঁহাদের
হর্মনী হিরণ্যের বার্কা শহনুবে ঘোষিত হইতে লাগিল।
পৃথিবীতে ভব্নালে ভার্মবিদ্নিরের স্কার বিভ্নাণী আর ক্রেইই

"অবশেষে মহাবাল চক্ৰবৰ্তী কাৰ্ডৰীৰ্যা স্বৰ্গাহোহণ ক বিলে#পর সম্ভত হৈহয়গণ ক্ৰেম্ণঃ তীহার रः भ নির্ধন হইরা পড়িলেন। নিভান্ত কট্টে পঞ্জিরা ভাঁছারা তাঁহাছের কুলপুরোহিত ভার্গবদিগের ছার্ম্ব ইইলেন এবং পাদবৃদ্ধি ( সিকি অর্থাৎ শতকরা ২৫ টাকা স্থান) স্থীকার করিয়া নিতান্ত বিনর সহকারে কিঞ্জিৎ ধন প্রার্থনা কবিলেন। ভার্গবর্গণ কিন্তু রাজপুত্রগণের বিপদে কিঞ্চিন্মাঞ্ড विष्ठालिक इहेरलब ना, छाहांद्रा भूनः भूनः "धन नाहे" "ধন নাই" বলিয়া রাজপুত্রদিগকে ফিরাইয়া দিলেন এবং কেই নিজ ধন ভূমিগর্ভে প্রোথিত ক্রিতে লাগিলেন, কেই বা অন্যের নিকট রাথিয়া দিলেন, এবং কেই বা স্থানা**ন্ত**রে রাখিয়া আসিলেন। এইরপে লোভী ব্রা**ন্থাণ্যণ** ধনসম্পত্তি নিবাপদ স্থানে বাথিয়া দিয়া নিজের আবাসবাদী পরিত্যাগ করতঃ গিরি গুহাদি হুর্গম স্থানে আত্রম বইবেন তথাচ বিপন্ন যলমানগৃহকে একটি কপদ্দক দিয়াও সাহায়ঃ कदिश्वन मा।

ত্ব কার্যার ফলে হৈহর রাজকুমারগণ অতিমাঞ্জ্ব হইরা পুরহিতগণের আশ্রমে আসিরা উপস্থিত
হইলেন এবং শৃন্তগৃহ সকল দেখিয়া গৃহের নানাস্থানে
থনন করিতে লাগিলেন এবং কচিৎ কোনস্থানে ভূগর্জ
নিহিত বিত্তরাশি প্রাপ্ত হইতে লাগিলেন। তাহারা
এইরূপে গৃহ হইতে গৃহাস্করে গমন পুর্বাক অর্থাস্থাকান
করিতে লাগিলেন এমন কি ভার্গবিদিনের প্রতিবেশী
আকাণগণের গৃহও বাদ পড়িল না,—ফলে আকাণ্যিগের
উপর অবথ্য অত্যান্যার হইতে লাগিল। অঞ্জিম্বাক্র
অল্পান্তর স্থাক্তিত, স্বত্রাং তাহারা নিজ নিজ ইক্রাক্র্যাকে
অল্পান্তর স্থাক্তিত, স্বত্রাং তাহারা নিজ নিজ ইক্রাক্র্যাকে
অল্পান্তর স্থাক্তিত, স্বত্রাং তাহারা নিজ নিজ ইক্রাক্র্যাকে
আকাণিদিগের গর্ভচেন করিয়াও শিক্ত হত্যা করিছে

<sup>\*</sup> এখানে পরশুরামের হত্তে কার্ক্রীরী কর্মেনের-বিনাশের কোন উল্লেখ নাই, তাহা পশাং ক্ষিকার বিষয়। সংশহ নাই।

কাণিণের ; এক কথার, ত্রাক্ষণদিগের ভূজণার একশেষ ইইতে কাণিল। ত্রাক্ষণেরা প্রাণভবে নানাদিকে পলারন ক্ষরিতে কাগিলের, ত্রাক্ষণীরা হালাকার রবে গগন বিদীর্ণ করিতে কাগিলেন। "দেবী ভাগবত, বছরুর; বোড়শ

এই দেবী ভাগৰত পুরাণে ভৃত্তবংশীর ব্রাহ্মণগণকে "চৌরসন্শ, বকর্তি, প্রতারক, দভেনিপূণ" ইত্যাকার লকে বর্ণনা করা হইয়াছে। অবশেষে পুরাণকার বলিতেছেন, "ভৃত্তবংশজ-ব্রাহ্মণগণ লোভ রূপ পাণেই উৎসর গেল, হৈছয়গণ কেবল নিমিত্তের ভাগী হইয়াছিলেন মাত্র।" (এই উপাধ্যান অভ্যন্ত বিশ্বত বলিয়া সুল সোকাবলী উলার করিলাম না)।

প্রত্যেক গ্রাহ্মণ-পণ্ডিভগণ वामार्गर ব্যাসদেবের রচিত বলিয়া স্বীকার श्रेडोन्ट् প্রকৃত্ই কর্তৃক কু বিস্না र्थाटकन 1 উাহারা অতঃপর উপাখ্যান কিরাপ देश्स्य वः म করার शर्रःग তাহা জানিবার নিমিত কৌত্তল विद्युष्टमा करत्रन, 电 🖼 । খাহা হউক, পরগুরাম যে একাকী কুঠার হস্তে সে কালের বিশাল ভারতবর্ধের প্রদেশে প্রদেশে পদব্রজে পরিভ্রমণ করিয়া প্রত্যেক ক্ষত্রির বীরপুরুষের ( শিশু ধ্যান পর্যাস্ত ) শিরশ্ছেদন করিয়াছিলেন,—এবং তাঁহার কুঠারের নিমে যাবতীয় ক্ষত্রিয় রাজা তাঁহাদের পুত্র, অমাত্য, ও প্রজাবর্গের সহিত স্বেচ্ছায় মাথা দিয়াভিলেন ইহা কোনমভেই কাটিবার জক্ত পাতিয়া বিশাস শোগ্য নহে। তাহার পর, স্বেচ্ছার শিরঃসমর্পণ क्तिल्थ, अक्षम लाटक क्ठांटबर बाबा टकांने टकांने ব্যক্তির বাঞা কাটিতে পারেন, তাহাও সম্ভব নহে। ব্লিয়া পরিচিত্ত देशक केशरब क्रश्रावक অবভার কোনও ব্ৰহ্ম ক্লাঞ্চণ বে বিনা লোবে এরপ অগণ্য মানবের আৰু দৃষ্ট করিবেন, তাহা মনেও আনিতে পারা বাব না।

আরও একটি বিশেষ কথা বিষ্কেনা করিতে হইবে। জেজারুগের পূর্বেই বলি প্রশুরাম পৃথিবীকে কলিবহীক, ক্সিডেন, তালা হইলে তেতারুগের ধর্মণাত্র গৌতম স্থতি,

বাগরবুগের ধর্মণান্ত শব্দ ও লিখিত মুনির স্কৃতি এবং কলি

যুগের ধর্মণান্ত পরাশর • স্কৃতিতে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির, বৈশ্ব এবং

শুদ্র এই চারি বর্ণের ভেদ বর্ণনা, এবং ভাহাদের প্রভ্যেকের

ক্ষান্ত বিহিত ধর্মের ও আচারের ব্যবস্থা কথনও লিপিবছ হইভ

মা, পরস্ত স্পাই ভাষার লিখিত হইত যে পরস্তরাম কর্তৃক
ভারতবর্ষের নিথিল ক্ষত্রির বর্ণের ধর্মণান্ত পরাশর আরু ভাহাদের
অভিত্ব মাত্র নাই। কলিবুগের ধর্মণান্ত পরাশর আরু ভাহাদের
অভিত্ব মাত্র নাই। কলিবুগের ধর্মণান্ত পরাশর আরু ভাহাদের
করির বর্ণের লোপাপভির সংবাদ যখন আলো দৃষ্ট হয় না,—
বরং ক্ষত্রিয় বর্ণের কর্ত্ববাদির কথা অলস্ত অগ্রিয় অক্ষরে যদিত্র
দেখিতে পাওয়া গারা । তপন আমরা স্মার্ত্ত ভট্টাচার্য মহাশয়ের

মৃত "বুগে জ্বভে" ইত্যাদি লোকাংলের প্রান্ধাণ্য স্বীকার
করিতে পারি না।

আর, মজ্জমানজনের তৃণ খণ্ডকে আপ্রয় করার । তারী
বাঁহারা মন্ত্র মহারাজের দশম অব্যাদের "লনকৈওঁ ক্রিক্ট লোপাং" ইত্যাদি প্লোকের উল্লেখ করিরা সমগ্র ভারত হইতে
ক্রেরে বর্ণের একান্ত অভাব খোনগা করিতে চাহেক্ট; উাহাদিগকে আমরা ঐ প্লোক ছইটী পুনশ্চ ভাল করিয়া পারী
করিতে অন্প্রোধ করি । এই প্লোকে 'ইমা ক্রের—আভরংশ বলিয়া সেই জাতি গুলির তালিকা দেওবা হইরাছে , ভারাক্রের সম্বন্ধে পরে আমাদের বক্তব্য বিভ্ত ভাবে বলিতে হইবে।

এ পর্যান্ত যতদ্র দেখা গেল, তাহাতে পরভরামের শৃথিবী
নিঃক্ষত্রিয়া করার উপাথানিটার কোন ঐতিহাসিক ফুল

- "ক্তেত্ মানবো ধর্দ্দরেতারাং গৌতমঃ স্বতঃ ।
   বাপরে শব্দ লিখিতো কলো পারাশর স্বতঃ ।
   বাথম অধ্যার, শরাশর স্বৃষ্টি।
- † "বাবিমৌ পুরুষো লোকে স্থায়ণ্ডল ভেনকো।
  পরিবাড় যোগকৃক্ত রপে চাভিমুখে ২৩ঃ ৪০৭।
  বত্র যত্র হতঃপুরঃ শক্তভিঃ পরিবেটিডা।
  ক্ষায়ান লভডে লোকান্ যদি ক্লীবং ন ভানতে ৫০৮॥
  ক্লিডেন লভডে লক্ষাং মুডেনাপি স্বরাদনাঃ।
  ক্লপ বিধ্বংসিকেহ্মুমিন্ কা চিন্তা বরণে রপে ? ॥৩৯॥
  ইডালি প্রাশ্ব সংহিতা, ততীর অধ্যায়।

খুলির। পাওরা গেল মা; এইবার মহাপদ্মনন্দের কথা। বিষ্ণুপ্রাণের চতুর্থ মংশের ২৪ অগারে লিখিত আছে,—

"বহানদীর পর শ্রাগর্জোম্ভব অভিলুক, অভিবন, মহাপদ্ম নামা নদ্দ অপর পরশুরামের মত অধিল ক্ষত্রিয়াম্ভকার হটবেন। তাঁহার পরে শুদ্দ নুপতিগণ হইবেন।" † শ্রীমন্তাগ্রতেও, বাদশ ক্ষের প্রথম অধ্যামে লিখিড ইইয়াছে,

শবহানন্দি পুত্র শৃতীগভোত্তব, বলবান্, মহাপদ্ম নামা মন্দ্র, ক্ষত্তে বিনাশকারী হইবেন। তাঁহার পরে, নৃপতিগণ শুক্ত প্রায় এবং অধার্থিক হইবেন।" †

ৰাষু পুরাণ এবং মংস্থপুগণেও ঠিক এই ভাবেরই স্লোক দেখিতে পাওয়া যায় ‡

পুরাণগুলির ঐতিহাসিক তাগে ভবিষ্য রাজবংশ বর্ণন ইনকে এই বর্ণনা দেখিতে পাওয়া যায়। প্রাণের এই অংশ চারতের প্রাচীন ইতিহাস সঙ্কলন করিবার অতি আবিশ্রক ও বুলাবান উপাদান; কিন্তু ছঃখের বিষয় এই যে আমাদের কেনের কোন পণ্ডিত মহাশরই এই অংশের সম্বন্ধে বিস্তৃত চাবে অস্থ্যপান অথবা আলোচনা পরেন নাই। মহারাষ্ট্র কেনের মহামনস্বী পণ্ডিত মহামহোপাধ্যায় সার রামক্রফা চাতার্লক মহাশর ভাঁহার "দক্ষিণাপ্রের ইতিহাস"

া শম্বান বিনন্ততঃ শুদ্রাগর্ভোত্ত বাহতি পুরোহতি ইলো মহাপদ্ম নামা নকঃ প্রশুরান্ট্রাপরোহ্থিল ক্ষত্রাস্তকারী ভবিষ্যতি ॥২০॥ ততঃ প্রভৃতি শুদ্রা ভূপালা ভবিষ্যতি ॥২১॥" বিশুপুরাশ ৪ব মংল ২৪ অধ্যায়।

\* ''মহান নিক্ত ভারা ব্যালন্ত শুক্তী গর্ডোন্তবো বলী ॥৮॥

রহাপন্ত পতিং কন্টিরন্তং ক্ষত্র বিনাশক্ত ।

উত্তো হণা ভবিষাত্তি শুক্ত প্রায়ান্তধার্মিকাঃ ॥৯॥

শোসিবাতি মহাপল্লে। বিতীয়ইব ভার্মবঃ ॥১০॥'' বাদশ

হন্ধ, প্রথম অধ্যায় ।

শাস্থারাণ, ৯৯তম অধ্যায়, মৎস্যা প্রাণ, ২৭২ তম

অধ্যায়।

( History of Dekkan) নামক স্থাপিত প্রছে এই
পৌরাণিক উপাদান কিছু কিছু ব্যবহার করিয়াছেম
কিছু তাহার পর আর কাহাকেও ইহার মুন্যের অমুরূপ
উপবোগ করিতে দেখি নাই! সম্প্রতি কলিকাতা
বিশ্ববিত্যাপরের অধ্যাপক মহামহোপাধ্যার ভাভারকরের
ফ্যোগ্য পুত্র ভাকার শ্রীযুক্ত দেবদক্ত রামক্রক্ষ ভাভারকর
মহাশর মৌর্য্য বংশের (অথবা মৌর্য্য সমরের) এক ক্রের্
ইতিহাস ইংরেজি ভাষার প্রকাশিত করিয়াছেন কিছ
তাহার এই পুস্তকে পৌরাণিক উপাদানের ব্থাষ্থ প্রয়োগ
হইয়াছে বলিয়া মনে হয় না।

যাহা হউক, মহাপুরাণের মধ্যে গণনীয় সমুদায় গ্রন্থেই রহিয়াছে যে শেষনাগবংশীর শেষ পর শুদাগর্ডোত্তব মহাবল-পরাক্রান্ত এই মহানদীর মহাপদ্মনন্দী একছত্ত সমাট চ্ইয়া দিভীয় পরভরামের মত অথিল ক্ষত্রিয় কুল বিনাশ করিবেন এবং তাঁছার পরের নুপতিগণ শুদ্ৰ ( অথবা শুদ্ৰ প্ৰায় এবং অধার্মিক ) হইবেন। এই বর্ণনার পরেই পুরাণে চাণকাকর্ত্ত নম্ব-বংশধ্বংসও মৌর্যা চন্দ্রগুপ্তের রাজ্যাভিষেকের প্রস্তাব দেখিতে পাওয়া যার। ইভিহাদের সময় লইয়া বিবেচনা করিলে দেখিতে পাওয়া যায় যে মগধের শেষনাগবংশীয় ( অথবা শিশুনাগ, শিশুনাভ, শিশুনাক,—পাঠান্তর ) ষ্ঠরাজা অজাতশক্রর সময়ে কপিলবাস্ত নগরে শাকাবংশে গোতম-বুদ্ধের আবিভাব হয় এবং তাঁহার জীবদশায়ই বৌদ্ধার্ম বিশেষ ভাবে আর্যাাবর্ত্তর প্রাচাভূ ভাগে বিস্তৃত হইয়া পড়ে। গৌতমবুদ্ধের অল্লকাল পূর্বে জৈনধর্ম্মের জীবনদাতা শেষ তীর্থক্তর মহাবীরস্থানীরও অভাদয় এবং: ভাঁছার বারা মগধ ও তাহার সরিহিত জনেশে জৈনধর্মের প্রসার ও প্রতিপত্তি ঘটিয়াছিল। ঐ সময়ে প্রাচ্যভারতে মগধ, কোশন ও প্রাবন্ধী প্রভৃতি প্রাদেশে যে সকল রাজবংশ' শক্তিশালী হইয়া উঠিতেছিলেন, তাঁহারা কেই বা জৈনধর্মের ুএবং কেহ বা বৌদ্ধপের পৃষ্ঠপোষক হটভে ছিলেন। यहानग्रानकी उ वहें जन देशन व्यवन त्वीद ( व्यवीद

মাবৈদিক বা নান্তিক ) ধর্মের পৃষ্ঠপোষক স্বরূপে পৌরাণিক ধ্রমের রক্ষক কোন কোন করিররাঞ্জাকে পরাস্ত অথবা নিছত করিয়া থাকিবেন। বৌদ্ধ-ইতিহাসে মৌর্যাবংশীর আশোকবর্দ্ধন সমাটের এবং কৈন-ইতিহাসে চন্দ্রপ্তপ্ত মৌর্যা ও তাঁহার বংশধর সমাট সম্প্রীতির আদান পরম্পরার কথা পূব উচ্চ প্রশংসার সহিত কীর্ত্তিত হট্যাছে। আমাদের মনে হয় যে, মগধ সামাজ্যে বৌদ্ধ এবং কিন্দর্মরাজধর্মারপে গৃহীত হওয়ায় পূরাণ শালে এইরূপে ক্ষত্রিবংশ বিনাশের কথা কথিত হইয়াছে এবং এই জয়ই লিখিত হইয়াছে আক্ষণের নিকট অবৈদিক জৈন অথবা বৌদ্ধ স্বর্ধাবন্দ্রী রাজা শুজ অথবা শুজপ্রায় ক্ষার্থিক রূপেই বর্ণিত হইয়াছেন। এই কারণেই মৌর্যা চক্রগুপ্তকে "মুজারাক্ষ্য" নাটকে পূনঃ পূনঃ "ব্যন্ত" বলা হইয়াছে।" "ব্যন্ত" শব্দের অর্থ বৈদিক ধর্মের অবহেলাকারক।

পৌরাণিক ইতিহাসে, প্রাসিদ্ধ অন্ধ্রবংশের পর, অনেকগুলি রাজবংশের নাম ও বিবরণ দেখিতে পাওয়া যার। এই সকল রাজবংশের বিবরণ অত্যন্ত কৌতৃহল-জনক হইলেও বর্তমান প্রবন্ধে উহাদের আলোচনার উপার নাই। আমাদের ইচ্চা আছে যে প্রবন্ধান্তরে ইহাদের প্রসাস প্রতিভার পাঠকমহাশন্ত্র দিকের নিকটে নিবেদন করিব। সম্প্রতি এই মাত্রে বলিতে চাই যে মগদের মহাপত্মনন্দী কর্তৃক নিথিল ক্ষত্রিয় নাশের কথা দেশের কোন প্রাস্থির রাজবংশের ইতিহাস অথবা বংশাবলীতে দেখিতে পাওয়া যায় না। পরস্ত্র সর্ব্ধজন-প্রমান্ত বায়ু এবং মৎসাপুরাণে দৈখিতে পাওয়া যায় যে মগদের শেষনাগ অথবা শিশুগণ বংশীয় রাজগণের রাজাকাণে

এই দেশের ভিন্ন ভিন্ন স্থানে, একই সমনে ইক্ষ্যুক্ত বংশীর চতুর্বিংশ, পাঞ্চাল বংশীর পঞ্চবিংশত, কাজক বংশীর চতুর্বিংশ, হৈহর বংশীর চতুর্বিংশ, কলিক বংশীর লাত্রিংশং. শকবংশীর পঞ্চবিংশ, কুরুবংশীর, ষট্ ত্রিংশ, মৈথিলবংশীর অষ্টাবিংশতি, শুরদেনবংশীর ত্রেরাবিংশ, এবং বাভিহোত্রবংশীর বিংশতি শাধার (অথবা জন) কৃত্রির রাক্সবংশ রাজত্ব করিতেছিলেন ।। এহল্ভিন্ন কৃত্রিরার্ধিনার অর্গা ক্রত্রির বিদামান ছিলেন। বের্বিরার্ধিনার অন্যান্ধির অভ্যাদরের পূর্বে নাগবংশের অবাজর শাধা-প্রস্তুত্র এক মহাপদ্মনন্দ লারা আর্যাবির্ধের এতগুলি কৃত্রির বংশের নিংশের বংশ হইয়া থাকিলে মৌর্যাবংশের সমন্বে সম্পূর্ণ ভারত বর্বের ক্রত্রের রাক্সবংশের নাম গন্ধান্ধ থাকিত না। অথচ, ঐ সকল প্রাণেই মৌর্যাবংশের পরে বহুত্র অধান্মিক ( ব্রাহ্মণ্দিগের মতে ) ক্রির

"শৈশুনাগা ভবিষ্যন্তি রাজান: ক্ষত্রবান্ধবাঃ।

একৈ: সার্দ্ধং ভবিষ্যন্তি তাবংকালং নৃপাঃ পার

একে: নার্দ্ধং ভবিষ্যন্তি তাবংকালং নৃপাঃ পার

একে:

ব্রক্ষাককাশত বিংশৎ পাঞ্চালঃ পঞ্চবিংশতিঃ।
কালকান্ত চতুর্বিংশ চেতুর্বিংশন্ত হৈছয়ঃ ॥৩২৩॥
দ্বাবিংশন্বৈ কলিকান্ত পঞ্চবিংশ দ্বাধাংশতি মৈথিলাঃ ॥৩২৪॥
শ্ব সেনা স্থানাবিংশন্বী ডিহোত্রাশ্চ বিংশতিঃ।
ভূল্যকালং ভবিশ্বাহি সর্বা এব মহীক্ষিতঃ ॥৩২৫॥
বায়ু পুরাণ, ১৯তম অধ্যার। মহত্যবাশ
২৭২তম অধ্যার, ১৩—১৬ শ সোক

এই শ্লোকে প্রস্তিতঃ "হৈছ্ম" বংশের উল্লেখ পাঠব
মহাশয়গণ রূপা করিয়া লক্ষ্য করিবেন। "কালক" ও
"লক" বংশীর ক্ষত্রিয়গণের সম্বন্ধ পরে শিখিত হইবে
"বীতিহোত্র" বংশ হৈছয় বংশেক্তই শাখা। অর্জুনে
পুরপ্যতের নাম বীতিহোত্ত। ( বিক্ পুরাণ, ভাগবত
হরিবংশ, বায়ু পুরাণ ও নংসা পুরাণ।

 <sup>&</sup>quot;বুষো ছি ভগবান্ ধর্ম অক্ত যঃ কুকতে হালন্।
 ব্যলং তং বিহুদেবা অক্সাদ্ ধর্ম: ন লোপয়ে ॥১৬॥"
 মফুলংহিডা, অষ্টম অধ্যায় ।
 "প্রতিভা"র নবম বর্ষের ৬৳ সংখ্যায় প্রকাশিত
 "মোর্যবংশ" প্রস্তাব এইবা।

कासम ३०२१ কংশের রাজার নাম ও গোত সম্পূর্ণরূপে বর্ণিত চইতে 'दिया चांत्र । अहे नमस्त्र उठ शहर अश्वराणीय महाबाजा-বিলাক সমূদ্র ভাষের দিগ্রিকার বর্ণনাত্মিকা প্রায়াগভন্ত-**লিপিতে বছ ক্**তিয় হাজার নাম দেখিতে পাওয়া যায়। কর্মের জেম্ম টড সাহেবের সঙ্গাত রাজস্থানের ইতি-্**ষাট্যের প্রথম** ভাগে ছত্তিশ রাজকুলের পরিচয় পাঠ **ক্ষরিলে, ভারতে** কোন কাণেই যে ক্ষত্রিয় রাজার একান্ত ब्रिक्ट रहेशिक्ति जास (कहरे विश्वात क्रिएज भावित्वम ना। আৰু পুদাঃ পুনঃ ধর্ম বিপ্লবের জন্য ক্ষত্তিয় রাজকুলের बर्सी बर्स्सक्हे रव क्रमनः देवनिक्धर्य ও बाहात रहेरड कृष्य रहेना পড़िতেছिलान ७९मश्स (कानरे मत्मर नारे। ি ঐতিহাসিক বুগের গুপ্তবংশের রাজগণের পতনের পরে क्रियानरेष "देवन" (देवन मरह) वरनीय क्राजिय और्श्वक्रम **्रिंगाश्रंत** हानूकावःभीत्र विजीत श्रुत्रदक्षतीत्र अज्ञास्त ষ্টিরাছিল। অজ্যের নগরের যাত্বরের রক্ষক পভিত রায় পৌরীষ্টাদ হীরাটাদ ওঝা বাহাত্ত্রের হিন্দি ভাষার রচিত **"চালুক্য বংশের ই**তিহাদ" পাঠ করিলে চালুক্য ক্ষত্রির এবং তাঁহাদের সমসাময়িক ক্ষত্রিয় রাজগণের অনেক কথা জানিতে পারা যায়। কাশ্মীর রাজ্যের ঐতিহাসিক কাব্য "রাজ এরজিনী" পাঠ করিলেও হর্ষবর্জনের ও তাঁহার পরবর্ত্তী সময়ের অনেকগুলি ক্ষত্রিয় রাজবংশের পরিচর জানিতে পার। ধার। তাহার পরেই রাজস্বানের

অনেক তথা স্বৰণত হইতে পারিবেন।
ফ্রন্ড: সত্য অথবা ত্রেভায্পের পরগুরামের বারা পৃথিবী
ব্রেদ্রপ কথনই ক্রির শুক্ত হন নাই, সেইরপ ক্লিযুগের

শ্বেওরার এবং মারবাড় প্রভৃতি রাজাসভ্যের অভ্যাণর ও

ঙীহাদের সহিত নৃতনাগত মুগলমান শক্তির সংঘর্ষ হইয়াছিল।

मिलीय शानवःम, व्याक्रास्त्रत्रत्र क्रांचानवःम व्यवः करनोत्कत्र

ক্লাঠোরবংলের ইতিহাসক্ষরণ চাঁদ বরদাইর "পৃণীরাজ রসনা"

মামক বীব্ৰসাত্মক মহাকাব্য এই সকল রাজ শক্তির

কীৰ্দ্ধিকথার পরিপুরিত। কৌতৃহনী পাঠকবর্গ অন্তভঃ এই

একথানি কাবা পাঠ করিলেও নৃতনযুগের ক্রতিয়দিগের সহদ্ধে

ষধাপথানক কর্তৃকও কোন দিন ভারতের নিধিল ক্ষির বংশের ধ্বংস হর নাই। সূর্ব্য এবং চক্রবংশীর নৃপতিগণের ধারা স্টির প্রথম ধইতে অদ্যাপি বিদ্যমান্ আছে এবং মতদিন এই বৈব্যুত মর্ভর থাকিবে, ততদিনই ঐ পবিক্রবংশধারা বিদ্যমান্ থাকিবে। কলিযুগেও বে সকল রাজবংশ বিদ্যমান্ আছেন, তাঁহাদের এক তালিকা বায়ু প্রাণে এইরূপ পাওয়া যার, যধা—

"এল এবং ঐক্ষাকৰ বংশে ( চন্দ্র এবং স্থাবংশীর ) বে

দকল বিবাতে রাজা জন্মগ্রহণ করিয়াছেন, তাহাদের মধ্যে
অভিষিক্ত নৃপগণের একশত কুল, ভোজরাজগণের তদপেক্ষা
বিশ্বণ, এইরূপে তাঁহাদের তিনশত কুল প্রতিষ্টিত
ইরাছিল। তাঁহাদের সমান আরও প্রতিবিদ্ধা বংশের
একশত, নাগবংশের একশত, হয় ( বা হৈহয়) বংশের
একশত, ধৃতরাষ্টদিগের একশত, জন্মেজয় বংশের অশীতি,
ব্রহ্মদত্ত বংশের একশত, বীরি এবং শীরিগণের একশত,
পৌলগণের একশত, খেত, কাশ ও কুশাদির প্রত্যেক্তর এবং
শশবিদ্দৃগণের একষত্ম কুল উৎপক্ষ হইয়াছে। ইহারা
সকলেই লক্ষ লক্ষ অখনেধ যক্ত করিয়াছেন। এইরূপে,
এই বৈবস্থত মধস্তরে শত সহস্র রাজর্বি উৎপক্ষ হইয়াছেন।"

"ঐলবংশত যে থ্যাভান্তলৈ বৈক্ষ্যকরা নৃপাঃ।
তথা মেকশতং পূর্ণং কুলানা মন্তি যেকিশাম্ ॥৪৫১॥
তাবদেব তু ভোজানাং বিস্তারো দিশুলং শতঃ।
ভক্তে ত্রিশতং ক্রন্তং চতুর্ধা তদ্ যথাদিশাম্ ॥৪৫২॥
তথ্যতীতাং সমানা যে ক্রবত স্তারি বোধিত।
শতং বৈ প্রতিবিদ্ধ্যানাং শতং নাগাং শতং হয়াঃ॥৪৫০
থার্ত্তরাষ্টাশ্চৈকশত নশীতি জনমেজয়াঃ।
শতক্ষ ক্রমদন্তানাং শীরিনাং বীরিশাং শতম্।৪৫৪॥
ভক্তং শতস্ত পৌলানাং খেতকাশ কুশাদয়ঃ।
ভক্তোহবরে সহস্রং বৈ যে হতীতা শশবিক্ষরঃ॥
ইত্যাদি।

বাঁহুপুরাণ ৯৯ ভম অধ্যায়। (বলবাসী)

"ব্ধাষ্ট তথা উভ্ভ"।

এখনও, এই আধুনিক সংকুচিত-কার ভারতবর্ষেও स्रावःभ, हक्षवःभ, क्रजवःभ, व्याधकृत ववः नागकृत्वव শত শত ক্ষত্রির রাজা রাজত্ব করিতেছেন। বাঁহার কৌতুহল क्षा তিনিই ইহার পরিচয় লইতে পারেন। বুভিবৈৰণা শ্বনিত যতদুর জ্ববস্থা হইয়াছে, ক্ষত্রিয় বর্ণের কোন শাখারই ততদুর তুরবস্থা হয় নাই। ক্ষত্রিয় বর্ণের যে মৌশিক বৃত্তি প্রজাপালন এবং মুক্ত, তাহা তাঁহারা পরিত্যাগ कर्त्वन नाहै। বেদবিভিত অগ্নিহোত্র এবং যোড়শ্বিধ শংখার পরিত্যাগ করিয়াও, এবং যাজন, অধ্যাপন এবং জ্রতিগ্রহ পরিত্যাগ করিয়া ক্ষত্রিয়, বৈশ্র এবং শুদ্রের অবশ্বন-যোগ্য সমুদর জীবিকা আশ্রয় করিয়াও যদি ত্রান্মণের ত্রান্মণত্ত অব্যাহত থাকে, ভাহাহইলে ক্ষত্রিয়ের ক্ষত্রত্ব আঞ্চ বিশ্ব-बाज ७ व्यान इस नाहे विलिए इहेरत। देवन, रोक जर অন্যান্ত ধর্মের প্রভাবে যদিও অনেক ক্ষতিয় বংশে বৈদিক আচারের ন্যুনতা প্রবেশ করিয়াছে; তথাপি, তাঁহাদিগকে "ক্ষজিয়" বলিয়া চিনিয়া লইতে কাহারও কোন অসুবিধা হয় লা। এখনও ভারতের নানাডানে নানা নামে ও নানা পরিচয়ে অসংখ্য ক্তিয় বংশ বিভয়ান থাকিয়া আমাদের অতি প্রাচীনকালে, বর্ণাশ্রমধর্ম অব্যাহত রাখিতেছেন। অবশ্রই কতকভালি ক্তিয় বংশ নানা কারণে হীন্ত্রে অবন্মিত হইয়াছিলেন, মনুসং'হতা, রামারণ, মহাভারত এবং পুরাণ শাস্ত্রে তাঁহাদের পরিচয় প্রাপ্ত হওল যায়। বাবে আমরা সেই স্কৃত্য ক্তিয়বংশের সম্বন্ধে পরিচয় এবে - अविश्व

ন্দ্ৰপ:

श्चिम थिनाएस जादको जूबन ।

## গান।

( শুর্গীর রার বাহাত্ত্র কালীপ্রসর খোব বিদ্যাদাগর, ক্রি-শাই-ই, মহোদ্ধের রচনা। তলীর পোত্র ত্রীবৃক্ত জীপতি-প্রদার খোব বহাশরের নিক্ট প্রাপ্ত )। প্রাণ চার বারে প্রাণের মাঝারে প্রাণের সে পুতুলে কোথা গেলে পাই কু প্রাণের পরিচর হয় কি না হয়— তবু তাঁরে হার পলকে হারাই।

শত চন্দ্র হ'তে সে ধন প্রনার,
শত পূর্য হ'তে তেলে ধরতার,
মধুর শীতল কু কুম-কোমল,
সে বিনে তাঁহার জুলনা নাই ১

হক্ষ হ'তে হক্ষ তাঁরে মনে লর,

ফুলের ভরও যেন সম কিনা সর,—

ফিরে দেখি একি বিরাট বিশ্বময়

সে ধন বিষে কই খুঁ জিয়া বেড়াই।

করু ভাবি বৃঝি সে ধন আমার, অমৃতের দিল্প অতল অপার, আবার ভাবি ধার দে দিল্প কোণার বিন্দুর পিপাস্থ কেন মরে যাই!

জানি না তাঁহারে তবু সে আমার,
তাঁর বিনে এই জগত আঁধার,
নিরাশায় নিত্য আশার সঞ্চার—
প্রাণের একি ভাব ভাবি আমি ভাই।

কেহ বলে 'ভিক্তি'' তাঁরে পাবার পথ, কেহ বলে পথ প্রেমের পুলারও; পথহারা হয়ে আমি নানা পথে ভ্রমি— পাই কিনা পাই প্রাণের তাঁরে চাই।

প্রকালী প্রসন্থ বিদ্যাসাগর।



## প্রস্থ-সমাকোচনা।

)। 'ক্লাক্সিকাক্স', ২। 'ব্যক্ত-ব্যন্তর',

া 'বাতিব্যাক্স পিথ' ?—ব্যক্তর্গাপ্রণেতা প্রীবৃক্ত
ক্রমেশচক্স চক্রবর্ত্তী প্রশীত তিনথানি কৃত্র পৃত্তিকা।
ইয়াতে সাধারণের অনেক জাতব্য বিষয় আছে—কিন্ত
এত সংক্রেপে যে পাডঞ্জলের ক্রেরে মত বলিলেও অত্যক্তি
হর না া বিষয়গুলি ভাল, সময়োপযোগী এবং তাহার
ভিত্তর চিন্তা করিবার বিষয় আছে। 'বাচিবার
প্রশো ভিনি শিক্ষাপ্রণালী সম্বন্ধে যে সকল মত প্রচার
ভরিয়াছেল তাহার কতক কতক মত বিচার সাপেক্ষ—এবং
ভাহার সহিত্ত আমরা একমত হইতে না পারিলেও
পেশক যে দেশের জন্ম দশের জন্ম চিন্তা করেন তাহা
রেশ বৃশা যার, এবং তজ্জনা তিনি আমাদের ধন্মবালাই।

 প্রাক্ষতন্ত্র—শ্রীযুক্ত রাজা শশীশেথরেশর রায় প্রশীত। প্রাদ্ধতক পড়িয়া আময়া প্রীতিলাভ করিয়াছি। ভিনি প্রাচ্য এবং প্রতীচ্য নানা দেশের প্রাচীন ইতিহাস হটতে দেখাইরাছেন বে পিতৃপুরুষের প্রতি সন্মান প্রদর্শন---্ৰভাছাৰের উদ্দেশ্তে শ্রদ্ধার সহিত কিছু দান করা এবং ভীহাদের স্থতি শ্রদার সহিত স্বত্নে রকা করার রীতি व्यानक मना बाजीय मधारे প্রচলিত ছিল ও আছে। আমাদের হিন্দুর প্রান্ধের প্রকৃত তাৎপর্য্য কি; কোন্ ं समन हेश ममादन क्षातन हरेन, चाँठ क्षातीन देविक कान হইতে ভাৰার আলোচনা করিয়াছেন। এই সব তব সম্ভৱ্মে যন্ত আলোচনা হয় তাহাই ভাল এবং এ সম্বব্ধে আলোচনার ষথেষ্ট বিষয়ও আছে। আমর। বলি কেবল অন্ধ বিশ্বাস ও পরম্পক্লাগত সংস্থাবের দোহাই না দিরা ৰিচাৰ পূৰ্বক শাস্ত্ৰ মত গ্ৰহণ করিতে অভ্যান করি তাহা क्रेटिन (मृत्यंत्र ७ म्यांत्यंत्र शत्यः कन्तान वहे व्यक्नान ছইবে মা। রাজা শশীশেখরেরর হিন্দু সমাজ এবং বাঙ্গলা ু নাৰিতো শুণরিচিত্র। এই বান্ধকোর কড়াগ্রন্থ দেহে ভাষার মন বে এখনও কেমন সজীব ও উৎসাহপূর্ণ তার্ছা এই পুঞ্জিশাধানি পাঠ করিলেই বুঝিতে পার। বার।

# ঋষিদমাজে তত্ত্বচিন্তা।

865

আহি আৰু ধক্ সংহিতার ব্গের খাব সমাজের তব চিন্তা সম্বাদ্ধ আপনাদিগকে কিছু শুনাইতে ইচ্ছা করি।

বেদ নিতা এবং অপৌক্রবের। ইহা ভগবানের উল্লে। অবি মন্ত্রের বেদমন্ত্রের রচয়িত। নহেন—মন্ত্রন্তরী আমরা হিন্দু ইহা মানিরা থান্দি।

ঋঘেদ পৃথিবীর প্রাচীনতম সাহিত্য দর্শন ও কৰিছের উৎস, আর্যাক্সতির গৌরবের সামগ্রী। বদিও আমাদের দেশ হইতে বেদের আলোচনা একেবারে বিলুপ্ত হইয়াছে, তিথাপি ইহার মাছাত্ম আমাদের অন্তিমজ্জার এমন ভাবে বিজডিত যে বেদের নাম শুনিলেই আমাদের দেশের আৰালপ্তকবনিতা সকলেরই মনে ভয় ভক্তি সম্বাত কেমন এক অপূর্ব ভাবের উদয় হয়। জানিনা বিধাতার কোন অভিশাপে আমাদের এই প্রাচীন ধর্ম দর্শন পুরাতত্ত্বের অক্ষয় থনি বেদের অধ্যয়ন ও हार्का बारतकानित बाबारमय राम वर्डेटल देविया विवादका কিত পাশ্চাতা সভা সমাজে ইহার যথেষ্ট সমানর ও আলোচনা इहेग्राटह । हेश्द्रकी, ट्राक्, नागिन, क्यान, क्रमिश्रान श्रम् वल हेत्याद्वाभीय ভाষाতে अत्यानत अयुनीनन हहेबाह्य। পাশ্চাত্য পণ্ডিতগুণ যেরূপ অক্লান্ত পরিশ্রম ও অধ্যবসারের সহিত এই সম্বন্ধে যে কত আলোচনা করিয়াছেন 🖝 ক্রিভেছেন তাহা মনে ক্রিলে আশ্র্যা হইতে হয়। আৰু বৈ আমরা বেদ সম্বন্ধে কিঞিৎ আলোচনা করিতে অপ্রসর हरेए हि जारात क्रज बामना जारात्रत निक्टर बनी. কিন্তু পাশ্চাত্য পণ্ডিভগণ যে ভিত্তি ভূমির উপর দাঁড়াইয়াছেন তাহা বতন্ত্র। উহোরা হিন্দু ভাবে অমুপ্রাণিত না হইয়। আমানের পরম্পরাগত শ্রুতির মাহাত্ম্যে ও ভাহার ভাবের ভিতর দিয়া দেখিতে ও বৃঝিতে না পারিরা নানারপ এম প্রমাদে পতিত হইয়াছেন। তাঁহাদের প্রদন্ত শিক্ষার শিক্ষিত হইরা আমরা বা ছেলেবেলা হইতে শুনিয়া আলিভেছি বে त्वम क्वरकत गान-वक् मरहिला कृषिकोवी वार्यामरवद প্রকৃতির জড়শক্তির প্রতি তীতিবিশ্বরপ্রকৃত্বর প্রাম।

আচীন ধর্মামত তাচ্ছিল্য করিয়া পাশ্চাত্য পভিতগণের অন্ধ অফুসরণ ও অফুকরণ করাই আমাদের দেখের পাশ্চাত্য শিক্ষাভিমানীগণ এতদিন গৌরব অমুভব কবিতেন। তাই ছমেশচন্দ্র মতের মত ধীশক্তিস্ম্পর বাক্তিও ঐ ভ্রান্তির यमवेखी इहेम्री सर्यम् क छाउँ नेका विका वासा ফিরিয়াছেন। আজকাল আমাদের জাতীয় ভাবের বিকাশ ও बाडीय डेकीशनात मर्ल २ त्वारकत यन व्यावात त्वरनत विरक कित्रबाहरू, त्मरण याधीन विश्वात यूश व्याचात विश्वत व्यावस्थ इटेब्राइड । छाटे व्याध हम ज भश्यक किस्टि ब्यालाइना আপনাদের নিকট অপ্রীতিকর কিয়া অসমায়োচিত বোধ ছইবে না। সাধারণত: পাশ্চাত্য পশ্চিতগণের এই সিদ্ধান্ত যে অধ্যেদের সংক্তিতা অর্থাং মমভাগ যথা রচিত তথন প্রবি সমাজে দার্শনিক ও আধ্যাত্মিক ভাব পরিকৃট হয় নাই। তথন আর্যা জাতির শৈশবকাল। তাঁহারা জগতের যাবতীয় বস্তুকেই শিশুর মত সচেতন জ্ঞান করিতেন। প্রকৃতির যে সকল বিশ্বরুক্তর কার্য্য দেখিতেন ভাহাতেই এক একজন সচেতন ইচ্চাবিশিষ্ট অধিষ্ঠাতা কল্পনা করিতেন। এক বিশ্বনিয়ন্তার ধারণ। তাঁহাদের ছিল না। পরে তাঁহারা এক পরমেখরের জ্ঞানবাভ করিয়াছেন। পাশ্চাতা পণ্ডিতগণ evolution ক্ৰম বিবৰ্ত্তন বালী-ভাঁহাৱা evolution theory ব সংখ অসামপ্রসা। কোন মত তাহণ করিতে পারে না। বেদ যে নিতা সনাতন সৃষ্টির সঙ্গে সঙ্গেই যে এই জ্ঞান সমষ্টি বিক্শিত क्टेब्रास्क, ध थात्रण डाहारमत्र शत्क मखनशत नग्र। श्रुडतार क्रम পরিণতি ভিন্ন অতি প্রাচীনকালেই যে আর্থ্য পরিগণ এই শ্রেষ্ঠ জ্ঞানের অধিকারী হইবে না এ ধারণা তাঁহাদের পক্ষে कठिन, देशहे डांशामत जम अभारतत व्यानकरें। कातन ।

্ৰক সংহিতার সকলগুলি হক্তই এক সমরের নর। হরত ৰ্হুণতাৰী বাপিয়া ভিন্ন ভিন্ন ঋষি কৰ্তৃক যে সকল আধ্যাত্মিক পত্য দৃষ্ট ক্ইয়াছে তাহাই ঋথেদ সংহিতার गःशृरोख रहेबाह् । प्रकृत अविहे दि गमान **खेब**ल हित्तन बहैटक शारत । अथवा त्वर नकरनत बक्र नरह । छाई

हेहाएल नकन खरवंद धर्म किखाँहै चाह्य-गृशी बनून, कानी বলুন, বাহার মনোবৃত্তি বেরূপ ভাহার অত্রূপ লার্শনিকভত্তই देशारं त्रविवारक। यह त्यानीत कीय गरेवारे मश्ताव সকাম ও নিকাম, একশ্রেণীর লোক কামনার ছারা পরিচালিত হুইরা কিলে সংসারে য়ল ও প্রাধান্ত লাভ করিবে, কিলে ভোগাবল্প প্রাপ্ত ভটবে ইতাই ভাতাদের প্রধান শক্ষ্য। বিভীয় (अगीव लाक निवृद्धिमार्खित व्यवनश्री। किरन कामनामृद्धः হট্যা আত্মজান লাভ করিবে, সংসারবন্ধন হটতে মুক্ত হইবে ইচাই ডাচাদের লক্ষ্য। বেদে দকল শ্রেণীর লোকশিক্ষার উপদেশই রহিয়াছে। আমি বেদের পরবর্ত্তী বে अवसारक कान काक वा दिवास छेशनियामत यूग वास कारात कथी! বলিভেছি না। তথন আগ্য ঋষিরা আধ্যাত্মিক উন্নতির উচ্চতম শিখরে উপনীত হইয়াছেন। সে চিন্তা করনা সে ধারণাও আমাদের পক্ষে সম্ভবে না। এ বুগের কথা পাশ্চাত্তা পণ্ডিতগণত একবাকো স্বীকার করেন। পণ্ডিত Max muller এই युराव कथा वर्गना कब्रिए शिवा अक्षारन বলিরাছেন যে ঋষিরা তথন এত উচ্চে উষ্টিরাছিলেন where their lungs alone could bear for nitiates. পাশ্চাত্য পভিতগণের মত এই বে ঋক সংহিতার হুপ व्यर्थार व्यापिम देविषक युग विलाल शहा बुक्ति तम मुम्ब যাগ্যজ্ঞের ৰাজ্লা ছিল, তথ্য ঋৰি স্মাজে নিকাৰ জ্ঞানেই অভুর উলাত হয় নাই। কাজেই বলা বাছলা আমারের দেশের আধুনিক শিক্ষিত মণ্ডণীও এই ৰাজ মতই পোৰৰ করিয়া আসিতেছেন। কিন্ত আপনারা দেখিতে পাইবেন বে বেদের সংহিতা বা মন্ত্র ভাগ যথন ব্রচিত হয়—আৰি विशास लोकिक वार्थ बिठिडे बनिनाम-खबन स्रेटिडे ৰ্ষি সমাজে দাৰ্শনিক ও আধ্যাত্মিক ভাৰ কিছৰ পরিশ্বট।

উপনিবদে ব্ৰহ্ম জানের স্বিভার আলোচনা হইয়াছে। তথাপি বেদান্ত উপনিষ্দে বে - সকল ভাব পরিস্ট ৱা সকলের আধ্যাবিক দৃষ্টিই যে সমান ছিল, ভাষা নাও । দেখিতে পাই তাহার মূল বীক বকু সংহিতারই নিহিত। উপনিষ্দে এমন কোন নুডন idea আছে ব্লিপ্ত

আঁনি না, বাহা বেলে নাই। দার্শনিক তথের যাহা স্ব জীহার সকলই ঝকু সংহিতার আছে বিকিপ্ত ভাবে কিছ অতি ক্ষমত কবিহপুর্ণ ভাব ও ভাবার ।।

ৰ সংহিতা কেবল প্রাচীনত্ব ও ধর্মতত্ত্বের হিসাবেই ৰে অমূল্য সামগ্ৰী তাহা নয়। যিনি কবি তিনি দেখিতে পাঁটবেন যে কবিজের হিসাবেও ইহা জগতের সাহিতো अंकुणनीय। ঋষিরা প্রকৃত কবি puls seers ছিলেন। **ভাঁহাদের দর্শনশক্তিই** বা কি অন্তত আশ্চর্যা ছিল। স্থাতি বিপ্রহরাকে অখিন খরের ক্ষাণ ক্যোতির উন্মেষ स्टेंड ज्या शर्तात जेनत, बालि जवः चल-चरत्र श्रातात लिये बहुकारत्व म्यानम পর্যায় এট সৌরনাটকের ্কিভিনয়ের প্রত্যেক অন্ধ বা পরিবর্ত্তন আগ্য ঋষিগণ কিমাপ সরণ শিশুটীর মত তাহার বহিঃ প্রকৃতি বিচিত্রবর্ণে দেখিতেন এবং জ্ঞান - নেত্রে বহিঃ প্রকৃতির ৰি ডিড সহিত অন্ত:প্রস্কৃতির সংযোগ দেশ্ল করিরা পুলকে বিশামে অভিভৃত হট্যা জ্বায়ের ভাবগুলি কি সরণ ক্ৰিপুৰ্ণ ভাষাৰ প্ৰকাশ ক্ৰিয়াছেন—যাহায়া প্ৰকৃত জ্ঞানী ভ কাৰ্যসমের রসিক ভাহারাই সে ভাব ও বর্ণনা সমাক ইপান্ধি করিতে সক্ষম। আমার মত অজ্ঞান নির্দ লোকের পক্ষে সে ভাবের অনুভতি ভাষায় প্রকাশ 🐲 অসম্ভব। যে বিশ্বর কবিহাদরের অনুসন্ধিৎসা বা क्ष पृष्टित स्माक छांडारम्ब खन्य रम्डे विश्वसमय हिन। কিছ এ বিশ্বর কি শিশু-জদরের অজতাপ্রত্ত বিশ্বর প ইছা কি শিশুর মত নিজ্জীব পদার্থকৈ সচেতন বলিয়া এই বে নিতাপদ্বিত্তনশীল বহিঃ প্রস্তৃতি প্রতি সৃহতে ভিন্ন ভার আকার ধারণ করিয়া নব নব রাপে বিকাশ শাইতেছে, তাছা দেখিয়া ঋষিণণ বিশাৰ বিহৰণ চিত্তে বে সকল প্রশ্ন করিতেছেন, আবার নিজেরাই তাহার উত্তর
দিতেছেন—একটু অনুবারণ করিলে তাহা হইতেই বৃধিতে
পারিবেন যে ইহা কোন জড় শব্দির উপাসনা নয়।
ইহা সেই একমাত্র চিৎশক্তি ঘাহা—'অণারনীরান্
মহতো মহীরান"—যাহা ভিন্ন ভিন্ন আকার ধারণ করিয়া বিশ্বমণ্ডলে কত অসংখ্য লীলা খেলা দেখাইভেছে তাহারই
ব্রিকাভা উপ্যক্তিছাত বন্দনাগীতি।

আমি কে ? এ বিশ্ব কি ? কোণা হইতে আসিন-কোণার লয় হইবে ? এ বিশ্ব কি কেবলি অসহদ্ধ ঘটনাবলী পূর্ণ ? এই বে আমরা যাহাদিগকৈ পূজা করি তব করি তাহারা কোণা হইতে উৎপর হইল তাহাদের পিতা কে ? এই যে অগ্নি দাহ করিছেছে, ইহার দাহিকাশন্দি কোণা হইতে আসিল ? এই যে চক্র হুয়া ইহারা কাহার নির্মে চলিতেছে ? কাহার আদেশে আমাদিগকে কিরণ দিতেছে ? তাহারা যে শক্তি বলে কাজ করিতেছে—সে শক্তি কোণা হইতে আসিল ? এই সকল প্রশ্নের উত্তর আমরা অবিদের মুথেই ভানতে পাই।

এই যে অন্ধকারপূর্ণ অন্তরীক্ষ পথে দেব ও মান্ত্রকে সচেতন করিয়া দেব সাবিতা হিরপান রথে আরোহণ করিয়া বিশ্ব অ্বন দিনের পর দিন পরিত্রমণ করিতে ছেন—কে সেই বিশ্ববাপী পথের বিষয় বর্ণনা করিতে পারে, কেই বা সেই ধোটককে দেখিবাছে অথবা বুঝিয়াছে গু

এই বে ক্র্যা ইনি কোন্ বলে উর্দ্ধ স্থা স্থান করেন ?
কে জানে বে জনোকের স্তম্ভ স্থার স্থানকৈ ধারণ করেন ?
এই স্থা কে ?—স্থা জামগুল ও পৃথিবী উৎপাদন করিয়াছেন—ইনি সর্বাজীবের হিতকারী অনস্ত ব্লাপ্তের পরিয়াপত। আমরা ইহাকে স্তব করি। (১মঃ ১৬০)

এই যে বায় কথন ২ মৃত প্রভাবে লভা পথ্র মন্ত্র থ সকাণিত করিতে করিতে তাঁহার সুথকর ও স্থাতিল প্রাবাহে আমাধিগকে বীজন করিতেছেন, কথনত বা রথের শ্রার বেগে ব্যানিনাধে মহদাকার মহীক্ত ভর্গ, কেথিয়াও বা সমূদে উন্ধৃতিক করিতে করিতে ক্ষিত্র প্রার্থ প্রাক্তিকি

মৃক্তিকোপনিবদে রামচন্দ্র বেদান্ত কোথার প্রতিষ্ঠিত ?

 মুই প্রান্তের উত্তরে বলিতেছেন—"ভিলের ইতলবৎ বেদেবিদান্তঃ ই প্রতিষ্ঠিতঃ"—ভিলের অভ্যন্তরে বেমন তৈল

বিস্থান বাকে ভেমনি এই বেদের অভ্যন্তরেই বেদান্ত

ক্রিতিষ্ঠিক আন্তে

পর্ব্যন্ত নিজ বেগে কম্পথান করিতে করিতে আগিয়া পৃথিবীর ধূলি বিকীরণ পূর্বকে চতুর্দিক রক্তবর্ণ করিয়া আকাশ পথে বিশ্বভুবনের রাজার জায় চলিয়া যাইতেছেন--ইনি কে 

কাথায় জন্মিয়াছেন কোথা হউত্তে আসিয়াছেন ? ইনি কলের বন্ধু, জলের অগ্রে উংপর ছলেন। ইনি সভাস্বভাব। এই বাযুদেব দেবভাদিগের আত্মা অরপ, ভুবনের সন্তান স্বরূপ, বিশ্বরূপতের প্রাণ খলা ইচ্ছা বিহার করেন। ইহার শক্ষ অনেক প্রকার খনা যায়, ইহার রূপ প্রত্যক্ষ হয় না।

এই যে জগদ্যাপার নাহা পলে ২ আমাদের দৃষ্টিপথে নিত্য অফুষ্ঠিত হইতেছে ইহা কোন অসম্বন্ধ কার্যা নয়-স্মানাদের পিতা সেই যে ঋষি যিনি বিশ্বভূবনে বসিয়া হোম করিতেছেন, এই বিশ্বজগত তাঁহারট যজ্ঞে রত, বরুণ ও শ্ব্যা তাঁহারই নিয়মে চলিতেছে, নদী সমূহ তাঁহারই নিয়ম বহিয়া যাইতেছে।

শার্শনিক তাত্ত্বের মূল যে প্রশ্ন তাহা ইহার ভিতরেই बहिशाका अहे मकन अब (य डांशानब कानाव मानक-মুলক নয়, পবিগণ প্রশোভিরছলে দর্শনের এই মূলতত্ত্তলি উপাসনায় অন্ত:পত করিয়া জ্ঞান সমাজে প্রচার করিয়াছেন ভাৰা ইহা হইতেই বুঝা যায় যে, যে ঋষির মুখে এইরূপ কোন কোন দলেহাত্মক প্রশ্ন শুনিতে পাই তাঁহাদেরই মুথে ঐ প্রশ্নের পূর্বেট এই তেজে। পূর্ণ সগর্বা উক্তি শুনিয়াছি—

"মুপর্ণম বিপ্রাঃ কবয়ো বাচোভি

রেকম্ দন্তম বহুধা করয়ন্তি।" পক্ষী (পরমাঝা) একই। বৃদ্ধিমান্ কবিগণ উাহাকে क्झना शृक्षक नाना क्षकात वर्गना करवन।

ঝবিগণ অন্ধবিশ্বাদী ছিলেন না। উহোরা বিচার না ক্রিয়া কোন মতকেই অত্রাস্ত বণিয়া গ্রহণ করিতেন না। · ব্রহ্মতত্ত্ব সহয়ে উপনিষদে যে হক্ষ বিচার ও আলোচনা দেখা ৰাশ ভাষার আরম্ভ ঋক্ষ্ব সংহিতার ই। ঋষিরা যে সকল ্**কেলার উপাসনা করিতেছেন জাঁ**হারা কে, জাঁহাদের প্রাকৃত ' °ইন্স নামে কেহ নাই। কে উহাকে দেখিরাছে ? কাহাকে विश्वक्रभ क्षि हेरा कहेता अवि मसात्य वानास्रवान हहेता व्यवस्थात

সকল প্রশ্ন এবং সংশ্বের সমাধান করিয়াই ভাঁহারা জন্মতান উপনীত হুইয়াছেন। সভাতার বিকাশের সঙ্গে সঞ্চেই মানব' সমাজে ধর্ম এইয়া নানারপ আনোলন ও আলোচনা চৰিয়া আদিতেছে। অতি প্রাচীন বৈদিক কালেও ইহা দইয়া ৰবি সমাজে কিরূপ আন্দোলন চলিগাছে তাহার ২০১টা নমুনা আপনাদের নিকট উপস্থিত করিতেছি।

কো দদর্শ প্রথমং জারনার মতব্তুং যদনতা বিভর্তি ! 👙 🐇 ভূম্যা অসুর মুগাত্ম ক স্থিৎকো বিশ্বাং সমুপগাং 🏾 अहे (मड्ड ॥ ১-১৯৪-৪।

প্রথম জারমানকে কে দেথিয়াছে 📍 অন্থিয়ীন কে কে অন্তিযুক্ত করিতে দেখিয়াছে ? পৃথিনীর প্রাণ বায়ু ও এক্সনর আত্মা কোথায় ছিল ১ পঞ্চিতগণের নিকট এই কথা কে: প্রথম জিজাসা করিয়াছিল ?

> অচি কিহাফি কিতৃষ্ণিচপত্ৰ कवीन शुक्कामि विचारम न विचान्। বি যন্ত কৃত্ত ষড়িমা রজাংশুভশু রূপে কি মপি স্মি দেকং॥ ১-১৬৪-৬

আমি জানহীন, আমি কিছু জানি না—জ্ঞানিপণের নিষ্ট জানিবার ইজার জিজাসা করি যিনি এই ছরগোক ওঞ্ন করিয়াছেন তিনি কি এক অজরূপে বাস করেন ?

এক ঋৰি বলিতেছেন—"অজ্ঞাদাতাৰ্থেক. মর্পিতং যাত্মন বিশ্বানি ভূবনাণি তত্ত্বঃ।"--এই অজ পুরুষের নাভি দেশেই এই সমস্ত বিশ্বভূবন অবস্থান করিয়াছিল।

ইস্র কে ? এক ঋষি সন্দেহ করিয়া বলিভেছেন---প্রস্থামং ভরত বাজায়ত্ত

> ইন্দ্রার স্তাং যদি স্তামস্তি। নেশ্ৰো অস্তাতি নেম উত্ব আহ

क छे: म मर्न कम छिष्टे वा म ।

হে যুদ্ধাভিলাবি ! ইল আছেন ইহা বলি সভা হব, ভবে ভোমরা ইন্দের উদ্দেশ্তে সত্য উচ্চারণ কর। অম পরি বর্মেন, ত্তব করিব ? আর এক খবি উত্তব দিতেছেন এ ইঞ্জাকে

খন্ ইক্ত অভিভূরণ অন্স্থাংন্ আরোচয়ঃ। বিশ্বকর্মা বিশ্ব দেবে। মহান্ আদা॥

ভূমিই ইজেরপে (অন্তরগণকে) পরাভূত করিয়াছিলে, ভূমিই পর্বাকে রশিবুক্ত করিয়াছিলে, তুমিই বিশ্বকর্মা, ভূমি ইছান্ বিশ্বদেব। বেমন ইস্তের সম্বাধ্যে তদ্ধেপ পূর্যা আয়ি অভূতি মনেক দেবতা সম্বাধ্যেই এইরাপ প্রান্ত উত্তর দেখিতে পাই।

এই সকল প্রশ্নের গৃত্ভাব এবং সকল সংশরের সমাধান বৈ এই প্রথমের ভিতরেই রহিয়াছে তাহার উৎক্রপ্ত দৃষ্টান্ত দশম করেলের কাং' ক্ষা ইহাতে যে বিরাট হিরণ্যগর্ভের বর্ণনা করা হইরাছে—তাহা একবার পড়িলেই দেখিতে পাইবেন যে বেশের করির সর্কালজ্ঞান্ সর্কানম্বাধা একেখরের জ্ঞান করিলে পরিকৃত এবং তিনি পরোক্ষ হইয়াও তাঁহাদের চক্ষে কির্মণ প্রিকৃত এবং তিনি পরোক্ষ হইয়াও তাঁহাদের চক্ষে কির্মণ প্রত্যক্ষের আরু আভাত!

সায়নাচার্ণ্যের উপোদ্খাত প্রকরণে যে এই দকণ সন্দেহ-শুক্তক মন্ত্র—

"ন সন্দেহ বোধনার প্রবৃত্তঃ। কিন্তর্হি জগৎকারণতা
পরবন্ধ নোৎতি গভীরকং নিশ্চেছ্মের প্রবৃত্তঃ।"—
এই সকল মন্ত্র সন্দেহ বোপের অক্ত প্রবৃত্ত হয় নাই। দেই
অগৎকারণ পরম বন্তর অভিশন্ন গান্তীর্যা নিশ্চয় করিবার
ভাতই এইরাপ মন্ত্র প্রবৃত্ত হইরাছে।

বংগা নির্ণদ্ধ করা তুরুছ ব্যাপার। এক ঝাষ বলিতেছেন বে, দেবতার। অসংখা হইলেও প্রজাপতি মুমু যিনি আমাদের উপাসনার প্রণালীর ব্যবস্থা করিরাছেন তিনি বলিয়াছেন বে দেবতাগণের মূলে "একানশ"। এই একানশ দেবতা আবার পৃথিবীতেও আছেন, অন্তঃরীক্ষেও আছেন, প্রপেত্র আছেন। এই হিসাবে দেবতার সংখ্যা তেতিশ। বিক সংহিতার প্রথম মন্তনের একটা মাত্র দীর্ঘতমা ক্ষি

"বে দেবাজো দিবি একাদশস্থ পৃথিবাধি একাদশস্থ। ১৫ অন্সু ক্ষিতো দৰিষ্টদকানেশস্থ তে দেবালো বঞ্চ দিনং ক্ষণন্ম। 2-202-22

আবার আর একস্থলে বিশানিত্র শবি দেবতার সংখ্যার উল্লেখ করিয়া বলিতেছেন—

> ''ত্ৰীনি শঙা ত্ৰী সহস্ৰাণি অগ্নিং ত্ৰিংশচ্চ দেখা নৰ চা সপৰ্যানু"—( ৩-৯-৯ )

০০০৯ জন দেবতা অগ্নির পরিচর্গা করিয়াছিলেন।
ক্রমে পরবর্তী কালে এই দেবতার সংখা ৩০ কোটাতে

দাড়াইনাছে। বিরাট পুরুষ হিরণাগর্জ হইতে মৃদ্ধিকার
ধুলিকণা আত্রন্ধার্মজ্ঞ পর্যন্ত যাহা কিছু ভোতমশীল
দিংগুলালী তাহাই যাহাদের নিকট দেবভাবে স্কুত হইরাছে
তাহাদের সংখ্যা ৩০ কোটা ইইলেই বা আশ্চর্যা হইবার
কি আছে ?

কিন্তু এই দেবতাগণের বিশেষত্ব এই যে কে**ছই বড়** নহেন, কেহই ছোট নহেন, সকলেই সমান, সকলেই অতীব মহান্।

> ''ন হি বো অন্তি অর্তকে। দেবাদো ন কুমারকঃ। বিখে দতে: মহাস্ত ইৎ॥''

দেবতাদের মধ্যে বড় ছোট নাই—-ভাঁহারা সকলেই সমাত্রক, সকলেই "সতো মহাত্ত" সকল প্রকার সং পদার্থের মধ্যে শ্রেষ্ঠ।

কথেদে যে সকল দেবতার উল্লেখ আছে তাহাদের
মধ্যে অগ্নি, ইন্দ্র বায়ু, স্থা ই হাদের উদ্দেশ্তেই বোধ হয়
অধিকাংশ কোত্র। ঋক্ সংহিতার প্রথমেই অগ্নির শুব।
অগ্নিই যক্তা কার্যে আদি দেবতা—

অধি নীবে পুরোহিতং যজ্ঞ ভ দেব মৃত্তিজম্। হোতারম্রত্ব ধাতমম্।---

এইটাই থক সংহিতার প্রথম প্লোক। নিক্ষকার
বলিয়াছেন, 'অলি পৃথিবী স্থানঃ"—অলির প্রকাশ
ভৌতিক প্রার্থকৈ অবলম্বন করিয়া, বজের সমর
আমরা এই ভৌতিক অলিকেই দেখিতে পাই। অলির
উদ্বেশ্যে বে সকল তার দেখিতে পাই-ভারতে ইনি করি,
প্রকাশক, অমর, নদীসনের নেতা ক্ষর্মী, অভ্যান্ত্রীক পৃথিবী

· प्रारमिक प्रवास श्रीकान वादा मीरामान, हेगा । भित्रहरू ৰহান কেন্তু স্বরূপ দীপ্রিমান, ইনি উঘার মধ্যে প্রবৃদ্ধ, ইনি অপ্রকাশমান অন্তকার নিম্প্র প্রকাপণকে **(छञ्जावांन करत्रन, हेनि विश्वायुः, ( मर्कावााली )** महान অনিমানঃ বিস্পৃতিঃ (সকল প্রাণীর পোষণকর্ত্তা) ইনি আতবেদ:--জাতবিষয় সকল অবগত আবার ই'নই 'জন্মন্ জন্ম নিহিতো জাতাবদঃ' জাত মাত্রই সর্বাভূতে জঠরানলরূপে শ্ববিত। এক ধবি কিজাসা করিতেচেন-এই অগ্নিকে ংৰ জাহার পূজা করিব ? আর এক ঋষি বলিতেছেন--অগ্নিকে জিজাসা কর তিনিই জানেন, তাঁহার তৈত্ত আছে, **मामन कमजा उाँशांदरे चारह, देवेरछ उाँशांछरे चारह,** প্রথম মণ্ডলের একটা মল্লে দেখিতে পাই অগ্নিকে পৃথিবীর নাভি: (রক্ক) পৃথিবীর অধিপতি এবং জ্যোতিরূপ বলা ছইরাছে। অধির উদ্দেশ্রের শুবগুলি একটু প্রাণিধান ক্ষবিলেট দেখিতে পাইবেন—ঋষিৱা এই অগ্নির ভিতরই দর্বন দেবভার অধিষ্ঠান দর্শন করিয়াছেন এবং উপলব্ধি করিয়াছেন যে এক একটা শক্তিই কার্যা ভেদে ভিন্ন ভিন্ন দেবভারণে অভিহিত হইয়াছেন। আগা ধ্বিগণ যদিও ভিন্ন ভিন্ন করিয়া উপাসনা করিয়াছেন নাম উল্লেখ দেবভার কিছু তাহা যে প্রক্তত প্রস্তাবে এক ঈশরেরই উপাসনা ভাছাদের উচ্চারিত শুব হইতেই স্পষ্ট প্রকাশ পার। তাঁহারা এই দিদ্ধান্ত আমাদের যুক্তি তর্কের অপেকায় রাখেন নাই। এট অগ্নির দৰ্মেট দেখন---অধির মানারূপ শক্তি ও কাগ্য দেখিয়া প্রকৃতির সৃষ্টি পরম্পরার ভিতরে এক ঐশী শক্তিই যে নানা ভাবে কার্য্য করিতেছ তাহা ঋষি কেমন স্থন্দর ভাবে বাক্ত করিলাছেন। এই প্কটা ঋক সংহিতার তৃতীয় মণ্ডলে— ইছাতে ২২টা বক—ইহার প্রত্যেক ঝকেরই শেষ ভাগে ঋষি পুনঃ পুনঃ ইছাই বোষণা করিতেছেন—"মহদ্দেবামা মহারত্যেকম্"— দেবগণের কার্য্য সমূহ ভিন্ন নহে---তাঁহাদের মহৎ বল বা क्षेत्रक तक । --

অধি যজের হোত ও সমাট। তিনি আকাশে প্রারণে

বিচরণ করেন, তিনি সকলের মৃগভূত—হইরা ভ্যিতে বার্
করেন। তিনি ষক্ত বেণীতে শরন করেন, বনমধ্যে অরাশ্
সকলের মধ্যে বিভাগিত হন, তিনি ঔষণী সকলের মধ্যে
বাপ্তে বহিরাছেন, তিনি মহান, তিনি পুর্যার সহিত্ত
দ্যাবাপৃথিবীর মধ্যে বিচরণ করেন, তিনি নানাবিধ রূপ
বারণ করিয়।—আমাদিগকে দর্শন করেন, ইনি বিষ্ণু, অক্ষয়
তেজ ধারণ করিয়া পরম স্থান রক্ষা করেন, ইনি বিষ্ণু, অক্ষয়
তেজ ধারণ করিয়া পরম স্থান রক্ষা করেন, ইনি সম্ভ ভূতজাতকে জানেন, দিবা ও রাত্রি নানাবিধ রূপ ধারণ করেন।
ভূরবর্গা ও ক্ষরবর্গা যে ভগিনী বয় যাহার এক্ষন দীর্তিশালী ও অক্সকন কৃষ্ণবর্গ তাহা ইনি উত্তাপরূপে ওবনি
সকল উৎপন্ন করেন, স্গারূপে পশ্চিম দিকে শ্রম করেন
এবং পূর্ব্ব দিকে উদিত হন, ইনিই অভিষ্টবর্গী, ইম্লেয়পে,
কোন কোন দিকে মেলের ঘর্ষর শক্ষ করেন আ্রায়্ন অভ্ন

এই সকল দেখিয়া আর এ সন্দেহ থাকিতে পারেনা বে খবিদের মনে এই অনুভূতি উদয় হইয়াছে যে দেবতাগণের কার্য্যাবলী—প্রাকৃতির নিয়ন্তা "একমেবাদিতীরম্"। আর তিনি এক হইয়াও যে বহু দেবতার নাম ধারণ করেন তাহা অতি পরিস্থার ভাবে ইহার পরের স্কেই উল্ইয়াছে—

কেনঃ পিতা জানিতাযে। বিধাতা ধামানি কেদ ভ্বনানি বিশা। যো দেবানাং নামধা এক এব তং সংপ্রশ্নং ভ্বনা যন্তানা। ॥

যিনি আমাদের জন্মদাতা পিতা, যিনি বিধাতা। বিনি বিশ ভ্ৰনের সমৃদ্ধ ধাম অবগত, বিনি এক হইয়াও সকল দেবতাদিগের নাম ধারণ করেন—অন্ত তাবত ভ্ৰনের নোক তাহার বিষয় জিজ্ঞাসা করে।

এই অগ্নিই উপনিষ্ণের ঋষিগণ কর্ত্ত আশেষ প্রকারে
ন্তত হইগাছেন। মৃগতঃ উপনিষ্ণের এই ভাব এবং বৈদিক
, অধ্বির ভাবে কোন পার্থকা নাই। উপনিষ্ণের ক্ষমি বজাদি
কর্মকে অব্জা করেন নাই। জাল-বিব্রজ্ঞিত বজ

ক্ষান্তানকেই নিকা করিরাছেন বেমন—অরিতে আহতি বিত হইগে অরির প্রকৃত স্বরূপ অবগত হইয়া তাহাতে কেবতার উদ্দেশ্তে আছতি প্রদান করিতে বলিয়াছেন।
ইহারারা ভৌতিক জানে অরিতে আছতি দেওয়াই জান

শবিরা বে অধির উপাদনা করিতেন ভাহার প্রকৃত তথ শঠ উপনিষদে নাচিকেতার উপাধ্যানে বিশদরপে বিবৃত্ত হুইরাছে। নচিকেতা যমকে বলিতেছেন যে আপনি স্বর্গ আর্থির কারণ এই অধি বিষয়ক তত্ত্ব অবগত আছেন, শাপনি আমার নিকট এই অধির কথা বলুন যাতা সঞ্চরন শরিষা বর্গকামী যজমানগণ স্বর্গলোক প্রাপ্তিপুর্বক দেবত্ব প্রাপ্ত হুইতে পারেন। তথন যম নচিকেতার প্রতি প্রদর্ম ইয়া ভাইাকে অধির তত্ত্ব বিজ্ঞান বলিলেন—

প্রতে ব্রব নি তর্মে নিবোধ
পর্যানমিরচিকেতঃ প্রজানন্।
স্থানস্ত লোকাপ্তি মণো প্রতিষ্ঠাং
বিদ্ধি স্থানতরিহিতঃ গুহায়াম দ

হৈ নচিকেতঃ, তুমি যে স্বর্গাধন অগ্নির কথা জিজ্ঞাগা করিব তাহা আমি অবগত আছি ; তুমি একাগ্রমন হইয়া অবধান কর। এই অগ্ন স্বর্গ গোক ফল প্রাপ্তির কারণ, ইনিই বিরাট রূপে জগতের আশ্রম্বরূপ এই অগ্নির প্রকৃত স্বরূপ অবগত হও—ইনি বিদ্যান ব্যক্তির বৃদ্ধিরূপ ভাষতে নিহিত আছেন। ঝােখণে অগ্নির উদ্দেশ্যে বৃদ্ধক তেগ্রি আছে তাহার চুম্বক কঠোপনিমদের ভিটি প্রেটিক দেখিতে গাই—

"পদ্মণ্যোর্ণি হিতো জাতবেদা গর্জ ইব স্কৃত্তো গর্জি নীভি:। দিবে দিব ঈভো জাগুর্বান্ত— ইবিশ্বন্ধি নহুংমাভির্বান্ত:। এত ধৈতৎ ॥

গাঁওলী বেমন অরপানাদি বারা গর্ভকে পোষণ করে সৈইরপ ঝাত্নগণ বে অগ্নিকে অরণিতে স্থাপিত করেন অর্থণ বিজ্ঞাপত ইন্দ্রিকেন্ডন বে অগ্নিকে অধ্যাত্মরূপে ছদরে স্কৃত্ত

করেন এবং জাগরণশীল প্রতাসন্ত মন্তবাগণ প্রতিদিন বে অগ্নিকে তাব করেন এত হৈতৎ এই অগ্নিই প্রাক্ত ব্রহ্মপদার্থ।

ঝাষরা যে কেবল এক সর্কানিরস্কা পরমেশ্বরের উপলব্ধি করিয়াছিলেন ভাষা নয়। ভাঁছারা ঐ প্রাচীনভম বৃপেই এই সভ্যে উপনীত হইয়াছিলেন যে এই বিশ্ববদ্ধাশ্বের যাবতীয় ব্যাপারই এক অচল অটল নিয়মের ধারা পরিচালিভ। বিজ্ঞানের এই মৃণভত্ব ভাঁছারা অবগত ছিলেন। ধক সংহিতার প্রথম মণ্ডলেই বিজ্ঞানের বিশ্বামিত্রের পুত্র দেবরাভ ঝিষ বন্ধণের স্তবে বলিভেছেন—

উরং হিরাজা বরুণশ্চকার
হুর্যায় পদ্ধা মরে তবাউ।
অপদে পাদা প্রতিধাতব্যক—
ক্রতাপবক্তা হৃদয়াবিধশ্চিৎ ॥ >-২৪-৮
অমীয় ঋক্ষা নিহিতাস উচ্চা—
নক্তং দদৃশ্রে কুহচিদিবেয়ুই।
অদ্বানি বরুণশু ব্রতানি
বিচারুশচক্রে মা নক্তমেতি ॥ >-২৪,>•,

রাজা বরণ হর্ষ্যের নিয়নিত গতিবিধির জক্ত পথ বিস্তীর্ণ করিয়। বিয়াছেন, তাঁহার পদবিক্ষেপের জক্ত পদরহিত অস্করাক্ষেপথ করিয়া বিয়াছেন। ঐ যে নক্ষত্র যাহা উচ্চে হাপিত রহিয়াছে বিবাভাবে কোথায় চলিয়া যায় আবার রাত্রিকালে কৃষ্টিপথে আবিভূতি হয় ? এই যে চক্র বিবাভাবে অকৃত্ত থাকিয়া রাত্রিকালে দাপামান হয় ইহাও তাঁহারই আজায়। ইহারা য্লুছ্লাক্রমে উদিত বা অনৃত্ত হয় না। রাজা বরুণের ব্রত বা নিয়ম অদক্ষ অচল অটল। তাই ঝিষ বলিতেছেন এই বিশ্বস্ত্রাও এক অচল অটল। তাই ঝিষ বলিতেছেন এই বিশ্বস্ত্রাও এক অচল অটল। নিয়মক আছেন। এই হতের ঝিষ তাঁহাকেই বরুণ ভাবে তার করিতেছেন— থাই বিশামিত্র

ন তা মিনংতি মারিনো-ন ধীরা ব্রতা দেবানাং প্রথমা গ্রবানি। ন রোদসীৎ অফ্রহা বেছাভিন পর্বত। নিনমে তদ্বিং সঃ॥

আই যে ব্রভ বা নিরম ইহা স্থান্তর প্রথম হইতেই প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে ইহা অচল অটল, ইহার বিপরীতাচরণ অপতাব। স্থচতুর মারাবীই হউন, পণ্ডিতই হউন কেহই সে সকল ব্রতের হিংসা বা বিনাশ করিতে পারে না। ভাষাপৃথিবীর মধ্যে এমন কেহই নাই যে বিভাগ্নার ভাষার অভ আচরণ করিতে পারে। এই সকল অচল অটল নিরম "পর্বভাইব" "ন নিন্মে" পর্বভের ন্যার অবনত হইবার নর।

শক্তিরস্তার এই অচল অটল নির্মই কোপারও 'ব্রত' কোপার বা 'ঝত' কোথারও বা সত্য বলিয়া খোষিত ইইয়াছে। ইহাই আসাদের লোকিক ভাষার দর্ম— যাহারারা গ্রহ নক্ষপ্রাধি ও লোক সমূহ ধৃত রহিয়াছে। প্রথম মণ্ডলের একটি হক্তে বিষ্ণুর উদ্যোজ্য যে বলা ইইয়াছে 'অতো ধর্ম্মানি ধারণ, বিষ্ণু জিপাদ এবং ধর্মা সকলকে ধারণ করেন এখানে এই ধর্মা ঐ ঝত বা মত অর্থেই ব্যবহার ইইয়াছে— সেই সকল নির্ম বা laws যাহারারা বিশ্ব ব্যাপার নির্ণয় ইইডেছে। এই সত্য কি গ কোন ঝিষ প্রশ্ন করিভেছেন—

"কে সত্য কে জানে ? কে উহা বলে ? কোন পথ গেবতালিগের নিকট শইয়া ষায় ? দেবগণের অধঃ খান : আর্থাৎ ছালোক হিত নক্ষতাদি যাহা দৃষ্টিগোচর হয় তাহা উৎকৃষ্ট ছজের ব্রতে অবস্থিতি করে।

অধির মুখেই—ইহার উত্তর শুনিতে গাই।

শিত্যেনোন্ত ভিতা ভূমি: হর্ষ্যে নোওভিতা ছো:। ব্যতেনাদি ভ্যান্তিষ্ঠন্তি দিবি সোমো অধিপ্রিত:॥ ১০,৮৫,১

পৃথিবী সভাষারাই আকাশের মধ্যে উত্তত্তিত রহিয়াছে, পূর্ব্য ছালোককে উত্তত্তিত করিয়া রীথিরাছে, আদিতাগণ এটাকে আশ্রম ক্ষিয়া উর্দ্বলে হার্মী রহিয়াছে, সোমও

কাতের আশ্রেরই ধৃত রহিরাছে। পৃথিবী এবং **প্র**্ কাহার উপর ভর দিরা রহিরাছে। অধি বলিতেছেন পৃথিবী সভ্যের উপর, স্বা অভের উপর। উভরেই দেই নিয়মের প্রভাবেই নিজ ২ স্থান অধিকার করিবা রহিয়াতে। এই সভ্যের উদ্দেশ্যেই ঝবি বলিতেছেন—

"এট বে সভা আকাশ এবং দিবা বাঁহাকে **অবস্থন** করিয়া বর্তমান রহিয়াছে, বিশ্বভূবন এবং প্রাণিবর্গ বাহার আল্রিড, যাঁহার প্রভাবে প্রতিদিন জল প্রবাহিত হইডেছে व्यवः वर्षात्मव छेन्त्र इहेट७ हिन, त्राहे मेछा द्यन जामानित्रहरू मकल विषय बन्धा करान । তाই श्रीय **श्रार्थना कविराज्यक** "থতভান: পথা নয় অতি বিশ্বানি দরিতা" আমাদিগকে পাপের পথ হইতে সভ্যের পথে লইয়া যাও। এই 🖜 এবং সত্য-এই অচল अটल निश्न देश त्यापा दहेता উদ্ৰব হটল ? সিম্বাপ খাষ ব'লতেছেল—"wee সভাঞাতী দ্বাও পভোধ্য জারত"—ইহা দ্বারের তপঃ इटेटिट लाक्ज् ड हरेगाहि। (वर्ष **नेगरतत खानाला**क তাঁহার সর্বজ্ঞতার জ্যোতিকে 'তপস্' বলা হইয়াছে 🗈 "যুখ্য জ্ঞানময়ং তপঃ" এই শ্রুতিবাকা অনুসরণ করিছা শঙ্করাচার্য্য--'তপদ্' শন্দের অর্থ জ্ঞান করিরাছেন ষ্থন কোন সন্দেহাত্ম জিজ্ঞাসা করিতেছেন ইশ্বর কোণার্ ঋষি বলিতেছেন—ভিনি ঐ ঋতে। যে নিয়ম আৰী এই সৃষ্টি চলিতেছে তিনি এই নিগমের ভিতরেই প্রকাশ क्रियार्डन-- এই जनारे त्राम जैसेन्द्रक साठ धावर 'साडमदे বলা হট্যাছে এবং ঈথরের এক নাম ঋতবদেন-ভিনিই খাত, তিনি খাতসং এবং যাহা খাত তাহাই তাঁহার বাম খা confo: । इंशरे शत्रवर्धी कारन डेशनियरम "बड़र সভাং পরং একা", "সভাং জ্ঞানমনতং একা" ইত্যাদি ভাবে উপনিষদও इडेबार्ड । এই ক বিতেচেন--

> "সত্যেন বায়ু রাবাতি, সত্যেনাদিত্যো রোচতে দিবি, সত্যং বাচঃ প্রতিষ্ঠা, সত্যে সর্বং প্রতিষ্ঠিতং, তক্ষাৎ সত্যং পরমং বদস্কি।"

> > (ক্রেমণঃ)

वीनदश्यनात्रायन क्षेत्र्योः

## "जामा भट्य।

কটক বনে কেন লো হাস্বরি একি দেখি ভব বেশ। কার ভারে ভব জাঁথি ঝরিভেছে আনু থানু কেন কেশ ?

বমুনা শুনাবে কলোন গীতি
পূস্প বিছান পথে;
ভামিবে সদাই আই অ্যাসিনী
রম্ম থচিত রখে।

তব হ্রধা হাসি যথনি ফুটীবে,
কোকিল উঠিবে গাহি,
সহসা হ্ররের সরস-আসারে
দল দিশি অবগাহি।

ক্ষমণী তথন সরোবে কহিল কবি, এ কি' কুবচন ? তুমি কি বুঝিবে হাদয় বেদনা রুমণীর পোড়ো মন ?

যার তরে আমি কণ্টক বনে
নাহি যদি পাই তার,
তাজিব জীবন সে বিনে বাঁচিয়া
কি ফল বলনা হার ?

এপ্রাণকিশোর সান্যাল।

# মারকনী ও তারহীন টেলিগ্রাফি।

একদা শীতকালে নিউফাউগুলেণ্ডের সমুস্তভীরে তিনটি यूतकरक এक विभाग पूड़ी উड़ाहेटल मिथिया छथात्र स्य লোকটা সমুদ্রগামী জাহাজকে সঙ্কেত করিবার জঞ্চ পাহারার নিযুক্ত ছিল সে যুবকদিগকে বালকোচিত ক্রীড়ায় তম্মর দেখিয়া অবাক হইয়া দাঁড়াইয়াছিল। ভাগদের বুড়ীথানা বাঁশের শ্লা এবং রেশমী কাপড়ে প্রস্তুত ৯ ফুট লম্বা একটা বিশাল আয়তন এবং উহার সঙ্গে তার সংলগ্ধ, খুড়ীটা উপরে উঠিয়া তার ছিড়িয়া সমুদ্রের দিকে চলিয়া গেল, তৎপর উহারা একটা বেলুন উঠাইয়া দিল, সেটাও ঘুড়ীর মত তার ছিড়িয়া সমুদ্রের কুয়াদার নধ্যে অন্তর্হিত হইল, যুবকরণ ইহাতে বিরত হইবার নহে, তৎপর দিবস তাহারা অম্ব একটা বিশাল ঘুড়ী ৪০০ ফুট উর্চ্চে উড়াইয়া দিয়া উহার সংলগ্ন ভারতী ঐ পাঙারাওয়ালার ঘরের একটা লোভার থামের সঙ্গে বাধিষা ঐ তারের সঙ্গে গৃহাভান্তরে স্থাপিত একটা অন্তদ যন্ত্রের সহিত যোগ কার্য়া দিল, ঐ যন্ত্রনীর সঙ্গে একটা টেলিফে । শুনিবার কল সংলগ্ন ছিল। ১৯০১ সনের ১২ই ্ডিসেম্বর এই ঘটনা হয়, যথন বেলা ১১ইটা তথন উহাদের भारता এकी जनमान गुरक के छिलिएकोत्र कली कारनत कारह ধরিল, বহু সময় যুবকত্রয় নিধ্বাক হইয়া খুড়ীর দিকে ভাকাইয়া রহিল, তৎপর মার্কনী (Marconi) বলিল কেম্প ( Kemp ) তুনি একবার চেষ্টা করিয়া দেখ, নার্কনীর আদেশ মত কেম্প যন্ত্রটা কাণে লইয়া অপেকা করিতে লাগিল, যথন একটা বাজিয়া ১০ মিনিট, তথন সে তিনটী बहु बहु मन खिनाड भारेन। २००० मारेन मृत्व कर् अशाल একজন সহকারী ঐ শব (Cornwall) মার্কনীর ক্রিতেছিল, দেখানে সে একটা টেলিগ্রাফের কল টিপামার প্রবুল বৈত্যতিক প্রবাহ আকাশে ছড়াইয়া পড়িডেছিল, তাহার কলে পুরুরে একটা চিল ছুড়িলে (यज्ञाश क्रम

**চতুর্দিকে ছড়াইতে পাকে** সেরপ বায়ুমগুলে বৈত্যতিক তরক চতুদিকে ছড়াইতে লাগিল, সে সময়েও মার্কনীর বিশ্বাস ছিল ভাগার এই ভারহীন সঙ্কেত প্রেরণায় কোন জড় বন্ধর आशासन नाहे, हेहा कान वस विस्मय बाता वैक्षा शार्थ हरेबात नरह, कात्रण हेहा हेथारवत (Ether) मधा निश পরিচালিত হইয়া থাকে, বস্ততঃ পক্ষে তাহা নহে, পুণিবীর ৩৫ মাইল উর্দ্ধে এক ঘনীভূত বায়ুর শুরু বর্তুমান আছে. উহা বারাই এই বৈত্যতিক প্রবাহ পরিচালিত হট্যা থাকে. এই প্রবাহ সেকেন্ডে ১ লক্ষ্য ৮০ হাছার মাইল বেগে চলিয়া পাকে। সাধারণ টেলিগ্রাফে বৈত্যতিক প্রবাহ 🏣 সেকেও ম্বামী হয় এবং উহার ছারা অপর দিকের কলে সারা দিয়া থাকে কিন্তু ভারহীন টেলিগ্রাফে প্রবাহ শতা স্তর্ভতত সেকেও হামী হয়, কালেই উহার অনুভৃতির জন্ম বিশেষ একটা কলের প্রয়েজন। মার্কনী ইহা বিদিত ভিলেন এবং সেই জন্মই তিনি ঐ সংক্ষত গৃহে পুড়ী হারা পরীফা ক্রিবার সময়ে মহুষোর অমুভাতির অতীত শব্দ ধরিবার জন্ম बे बहु । কলটা ছাপন করিয়াছিলেন। সে দিবস মার্কনী रमज्ञ न वह नमग्र टिलिएक । अवन यश्च कर्ल भारत करिया অপেকা করিতেছিলেন দেরপ তাহার সহক্ষীও দীর্ঘকাল কর্ণোমাল হটতে বৈজাতিক প্রবাহ চালনা করিতেছিলেন। দে সময়ে মার্কনী জানিতেন না যে তিনি প্রবল স্থাকিরণের সহিত সংগ্রাম করিতেছিলেন I

তাঁহার সামাত যন্ত্র যে নৈত্যতিক প্রবাহ বায়ুমগুলে

কেরণা করিতেছিল উহা সমুজ পার হইবে কি প্রবল পূর্যা
কিরণে বারুমগুল এরপ তড়িং ভাষাপর হইয়াছিল যে উহা
ভাষাতেই বিশীন হইতেছিল। সে জন্তুই নিউ ফাউগুলেণ্ডে
কি শব্ম পৌছিতে এত সমন্ত্র লাগিয়াছিল।

এই তারহীন টেলিগ্রাফিতে মার্কনীরও প্রথমতঃ তুল ধারণা ছিল। তাঁহার বিখাদ ছিল যে ইথার (Ether) ঘারাই এই ডড়িৎ প্রবাহ চালিত হইরা থাকে। কিন্তু মতঃপর ১৯০২ লনে প্রথম ব্যক্তে পারিলেন যে প্রকৃত্ততপক্ষে জিনি পৃথিবী কিলা বাধু মঙলকেই ভড়িৎ প্রবাহের তার্রপে ব্যবহার করিতেছেন। ছর বংসরের অনমা চেটার ফলে আটলান্টিক হাসাগরের উপরস্থ বাষু মণ্ডল ছারা তিনি ক্লাক্সরূপে শক্ত প্রেরণার সক্ষম হইরা ছিলেন। বে হান হইতে সংবাদ পাঠান হয় এবং যে স্থানে উহা গ্রহণ করা হয় উত্তর স্থানেরই যন্ত্রাদির বহু পরিবর্তন ও পরিবর্জন করিয়া ১৯০৭ সন্দে তারহীন টেলীগ্রাফি সর্ব্যাধারণের কার্যা করিতে সক্ষম হয়।

भार्कनी यथन এই পরীক্ষায় ব্যাপুত ছিলেন তথন তিনি व्यथाशक तिशित ( Righi ) क्यीतन वनना विश्वविद्याणाय অধ্যয়ন করিতেন, তথন তাঁহার বয়স মাত্র ২০ বংসয় । অধ্যাপক হেন্রিক হার্জ ( Heinrich Hertz ) ৩০ বংসক বয়সে বৈত্যতিক তরঙ্গের অভিত বাহির করেন। অধ্যাপক রিগি এই তরঙ্গ সম্বন্ধে গবেষণা করিতেছিলেন। ইতিপু**র্মেও** লোকে বৈছাতিক তরঙ্গের অভিত্ব পরিজ্ঞান্ত ছিল। ইন্দেরাডে (Faraday), সেকাওয়েল (Clerk-Maxwell) প্রভাৱে পণ্ডিভগণ এই সম্বন্ধে আলোচনা করিয়া আলোক, উদ্ধাপ ৰ टोबिकिक विद्यारखत्र हेरारे एग भूल कात्रण, छारा व्यवधात्रण, করেন। এ যাবৎ এই তরঙ্গের অন্তিত্ব লোকে কেবল অমুমান করিত কিন্তু ১৮৭৯ সনে ইহা ধরিবার উপায় বাছিল: অধ্যাপক হাগদ ( D. E. Heighes ) বিক্রি **টে निर्धांत कथा विनवांत्र ध्वःम वाहित करत्रन छिनिके** বৈতাতিক তরক উপলব্ধি করিবার যন্ত্র বাহির করেন। ভিনিঃ এक ही यद्य विकाल क्वा कतिया छै। देशादा (Ether) চালন। করিতেন। এই বৈজাতিক ভরক্তে ইট, পাথক গৃহ কিছুভেই বাঁগা দিতে পারিত না, কারণ ইহা বাহু কিছা মুক্তিকার মধ্যদিয়া পরিচালিত হইত না।

ইপারের ভিতর দিয়া কোটা কোটা মাইল দ্ব হইতে
নক্ষরণোক হইতে আলো আসিতেছে। আলোক ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
বৈত্যতিক তঃক মার্ম এবং আমাদের চকু এই তরক্ষের অংশ
মাত্র প্রহণ করিয়া আলো উপক্ষি করে। আমাদের কর্ম
মাত্র বায়ুর জড় ভরক্ষ উপল'ন্ধ করিতে সক্ষম। বায়ু মণ্ডলের
'বিহিদ্দেশে কোনরূপ শব্দ উত্ত হইলে ভাছা আমরা ভানিছে
সক্ষম হই সা। চকু আমাদের ক্ষুদ্ধ বৈহ্যত্তিক তঃক্ষ

উপ্লব্ধি করিছে পারে। এই তরক আরও কুন্ত হইলে ইক্ষা ধরিতে বজের প্রবোজন। অধ্যাপক হাগস্ এই যন্ত আবিষ্ণার করিয়াছেন এবং ইহার নাম মাইক্রোফোন (Microphone)। ইহা ঘারা করেক ইঞ্চি মাত্র কথা ভরক উপলব্ধি করা বার।

মার্কনী ১৮৯৪ সনে, হার্জ (Hertz) ত্রেন্দী
(Branly) এবং রিগির (Righi) অভিজ্ঞতার উপরে নির্ভর
করিরা বিনা তারে সংবাদ পাঠাইতে চেন্টা করেন, মার্কনীর
পিতা ইটালিয়াম এবং মাতা আইরিশ। ই হাতে আইরিশ্
কর্ম পাঞ্চান্তেই ইংরাজগণ মার্কনীকে নিয়া গৌরব করিয়া
কাকেন, যথন মার্কনী বাড়ীতে ইহার পরীক্ষা করিতেছিলেন
ভ্রথন অপর কেহ কেহও বৈত্যতিক তরঙ্গের পরীক্ষা
করিতেছিলেন। যদিও ইংরাজগণ তাহার নাম প্রকাশ করিতে
ক্রিতেছিলেন। যদিও ইংরাজগণ তাহার নাম প্রকাশ করিতে
ক্রিতেছিলেন বালয়া আনরা গৌরব করিতে পারি।

১৮৯৫ সনে এড্মিরেল জেকসন্ (Jackson) ও

এক জাহাজ হইতে অন্য জাহাজে বিনা তারে সংবাদ
লাঠাইতে সক্ষম হইয়াছিলেন। ইহা নৌ বিভাগ গোপন
ক্লাথাতেই মার্কনীর ক্লয়নালা লাভ হয়।

সাধারণ টেলিপ্রাফিতে তড়িৎ প্রবাহ মৃত্তিকার ভিতর

ক্রিয়া এক টেশন হইতে অপর টেশনে চালিত হয় এবং

ক্রারের জিতর দিরা উহা পুনরার প্রেরিত টেশনে ফিরিয়া

ক্রানের। পুর্বে বিপরীত ধারণা ছিল। মার্কনী অজ্ঞাতদারে

ক্রেই তত্ত্ব আবিভার করেন। তিনিও তাঁহার তারের

ক্রেই মাণা মৃত্তিকার প্রোথিত করিয়া অপর মাণা এক উচ্চ

ক্রেই বায়ু মন্ডলে অথবা ইণারে তড়িৎ প্রবাহ নিক্ষেপ করিয়া

ক্রের বায়ু মন্ডলে অথবা ইণারে তড়িৎ প্রবাহ নিক্ষেপ করিয়া

ক্রের সংরাদ প্রেরণা করিতে পারিতেন, তাহা হইতে

চাঠি গুণ অধিক দুরে সংবাদ পাঠাইতে সক্ষম হইলেন।

আমানের পৃথিবীর এং মাইল উর্ব্ধে যে খনীতৃত্ত বাহুরেরের কথা উল্লেখ করিয়াছি ভাগার বাধা অভিক্রম। অনুষ্ঠার জনা মার্কনী প্রবল বৈহাতিক ভবল উৎপন্ন করেন। উহা কথন কথন পাচ মাইল প্রাশক্ত হইরা থাকে কৈছ আলোকের বৈচ্ছাতিক ভরণ হুল্টিডর ইঞ্চি হইলেই আমরা চক্ষে অফুডব করিয়া থাকি।

ভারহীন টেলিগ্রাফির এই বিশাল ভরত থার। বৈহাতিক প্রবাহ একবার ৩৫ মাইল উর্দ্ধর বায়ু তরের উর্দ্ধে উঠাইন। নিতে পারিলে এই ক্ষবিধা হর যে ঐ খনীভূত বায়ুত্তর একরূপ ইন্প্রেটারের (Insulater) কার্য্য করে, তথ্য প্রবাহ সনায়ানে চলিতে পারে।

বর্তনানে নার্কনীর টেনিফান্কেন্ (Telefunken), পোলদেন্ (Paulsen), ফেনেন্ডেন্ (Pessenden) প্রভৃতি কতিপর প্রতিযোগী উপস্থিত হইরাছেন। সকলেই তারহীন টেলিগ্রাফির অনেক উপ্পতি সাধন করিয়াছেন কিন্তু সকলের কার্যোই নিজেলের কিছু বিশেষত্ব আছে। এই টেলিগ্রাফির বারা সম্ভগামী জাহাজের যে কত উপকার সাধন কইরাছে তাহা বলা বাহলা। বর্তনানে আলোক গৃছে রাত্রিচর জাহাজে আলোক সঙ্কেত করিবার প্রয়োজন নাই, এই ভারহীন টেলিগ্রাফির বারাই ঐ কার্য্য সম্পন্ন হইরা থাকে।

মার্কনী কোম্পানী বৃটিশ রাজ্যে লগুন, ইঞ্জিন্ট, এডেন, ভারতবর্ধ (বাজেলার), দক্ষিণ আফ্রিকা এবং শিক্ষাপুরে তারহীন টেলিগ্রাফির টেশন স্থাপন করিয়াছে ইয়া ক্রেক্টে বিজ্ঞুত হইবে। গ্রন্থেটি ইইতে ইয়ার প্রজ্ঞাক টেশনের ক্রিত ক্রেম্পানি ৯০০০০ টাকা করিয়া পাইবে। বর্ত্তমানের ইয়ার ব্যন্তে মিনিটে ১০০ হইতে ২০০ শক্ষ প্রেরণ করিছে পারে।

যুদ্ধ বিগ্রহের সময় শক্ত পঞ্চ কথন ২ সমুজের মধ্যক্ত "কেবন" (Cables) কাটিয়া সংবাদ চলাচল হন্ধ করিছে পারে কিন্তু বর্ত্তমানে তারহীন টেলিপ্রাফে আর সে কর থাকিবে না। এখন এরূপ উপায় উদ্ভাবিত হুইরাছে যে নিকটে ২টা স্টেশন থাকিলেও এক স্থানেম কার্যা দারা অক্ত স্থানের কার্যাক্ত কোনরূপ ব্যাঘাত হুইরে না। যে ছুইটা টেশনের সহিত যোগাশোপ রাখিতে হুইরে সে ছুইটা

ব্যারের কল এক লবে বাধা থাকে। উভয় ব্যারের তড়িং প্রবাহের চেউ বা কম্পন ঠিক একরপ, কাজেই একে অস্তের সহিত্ত কার্যা করিতে পারে। এই তর্ম বিশেষ-ভাবে সামবিষ্ট থাকে, তাহা দ্বুরাও অপর ব্যারের বাাবাত হয় না, কেবল নির্দিষ্ট বস্তুই কার্যা করিতে পারে, পূর্বের বাাপক ভাবের তর্ম বাবহৃত হইত, তাহা সমুদ্রগামী আহাজে বিপদের সময়ে কার্যাকরী হয়, কারণ বিপদ জ্ঞাপন করিবা মাত্র যে কোন স্থাহাজ উহা ধরিতে পারে এবং সম্বর উপস্থিত হইয়া সাহায়্য করিতে পারে। কোন ২ আহাজে এই ব্যারের উপরে এরপ একটী ঢাকনী থাকে যে উহার কিঞ্চিৎ পরিবর্তন করিয়। তড়িৎ তর্মের পরিবর্তন করিয়। তড়িৎ তর্মের পরিবর্তন করিয়।

শীহরিচরণ শুপ্ত।

## হরি শঙ্কর।

আলে আমি যে হরিশঙ্করের কাহিনী বইয়া পাঠকদের সমক্ষে উপস্থিত হইতেছি ইহা স্বগীয় হরিনাথ দে বা গৌরী मस्यदानव शाव कान छ वा कि वित्मत्यव काहिंगी नरह व्यथवा 'গৌরীশঙ্করের' স্থায় কোনও পর্বত শুঙ্গের বৃত্তান্তও নহে। ইহা পূৰ্ববন্ধতিত ঢাকা জিলার কতিপয় অঞ্চলে প্ৰচলিত শেৰতাবিশেষের পূজা ও তাহার ব্রভকণা। আইভাগ ছবি এবং অপরাদ্ধ শহর। মৃত্তি গঠনকালেও এই **रमबळाटक मकिन्डा**र्ग इत्रित धवर वामङार्ग इरत्र वाकारत প্রায় করা হয়। অর্কে অস খামল ও অর্কেক ভতা! দেখিয়া মনে হর যেন খেতাক ও ক্রফাকে আন্তরিক আলিকনে • শংৰদ্ধ। এই সৃষ্টি কোথাও "হরিহর" নামে পরিচিত কিনা ভাহা আমর। বলিতে পারিব না। ভণিতাটীকে স্থণীর্ঘ না ক্রিনা এই মুহুর্তেই ইতক্ণা আরম্ভ ক্রিতেছি। হরিশকরের ভক্ত পাঠকরণ প্রত্যেকে এক একটা পুপা হাতে বইয়া অমত: এক একটা পুলের পাণ্ডি বইরা অবহিত জিতে বতকথা \*\* अवग कक्ता । यह कथा अवन कक्रिक

'নির্ধইনার ধন হয়, অপুনার পুত্র হয়, অ'বায়ন্তের বিয়া হয়,কাতীলালে হাতী হয়, যোড়ালালে বোড়া হয়,সাত পুত্র হর্ষ, শ্রেষ্ঠ্য অপার হয়, আগে দীঘি পাছে পুত্রনী হয়,হারাণ ধন বয় লয়, মরির মরা জিবে,যে যেই কামনা করে সেই কামনাই সিদ্ধি হয়।"

ব্রতের কথা প্রবণ মাত্রেই যখন এত জাশীর্কাদ, ঐ কাহিনী
ছাপার অক্ষরে পাঠ করিলে বোধ হয় ওদপেকা অধিকতর
ফল লাভ হইবে। ব্রতের ডিখি, বার, নক্ষত্র, ঝতু, মাদ
প্রভৃতি ব্রতক্থার ভিতরেই উল্লেখিত হইবে, অভ্যাব এই
হানে আর স্বতন্ত্র বিবরণ প্রদত্ত হইল না। ভাষার পত্নিবর্তনা
না করিয়া মহিলাদের মূপে ব্রতক্থা যেমনটা শুনা বায় ঠিক
তেমনটি উদ্ধৃত করা হইতেছে।

### ত্রত-কথারভ।

এক ব্রাহ্মণ। দিন আনে দিন থার, নিতাভিকা তর্ত্ত্বার্থা। একদিন ব্রাহ্মণ বরেন 'বার্যান আজ অনেকদ্র তিকা করতে যামু।' ব্রাহ্মণ নেলা করলেন। যাইতে বাইতে, মাইতে বাইতে, মাইতে বাইতে এক অরাণ (১) জললে লিয়া উপস্থিতিও দেখেন, দেব-কজারা ধূপ, দীপে, গীতে, নাটে, জয় জোকারে বর্ত্ত (২) আরম্ভনা করছেন। ব্রাহ্মণ জিজ্ঞাণা করেন "মার্গ্রো ভোমরা কার বর্ত্ত করছে? এই বর্ত্ত করে কি হুধ ?" দেখেকজারা বল্ল "আমরা হরিশক্ষরের বর্ত্ত কর তাহি, এই বর্ত্ত্তি কর্লে ধইনার ধন হয়, অপুল্রার পুত্র হুর, অবিয়য়তের বিদ্যাহর, হাতীশালে হাতী হয়, ঘোড়াশালে ঘোড়া হয়, মাতপুত্র হয়, টার্য্যা অপার হয়, হারাণ ধন ঘর লয়, মরির মরা জিয়ে; যে যেই-কামনা করে সেই কামনাই সিন্ধি হয়।" ব্রাহ্মণ জিজ্ঞানা করেন "আমরে নি এই বর্ত্ত শিণাইতে পার ?"

"না, দেবকুলের বর্ত্ত সন্থয়। কুলে কর্ত্তে পারবি না, তিন ছিয়া বিয়া (৩) করবি, কাম নাই।" "না ছিয়া বিয়া কর্তাম না, পারমু।"

"কাৰ্ত্তিক দইন্তা অমাবস্তার প্রতিপদেরে প্রতিংহান্

- (>) अत्राग⇒निविष्। (२), वर्च-बर्फ।
- (७) हिना निना = निकिस्मिक्

ক্ষা ৰাটি ভিজাইরা ছুই বোল বলিশট। গোটা পাকাইবি।
ক্রিনাস ভাইরা বর্দ্ধের কণা কটবি। অপ্রাণ মাইসা অমাবস্যাস
ক্রিভিসদেরে ছুইযোল বলিশ গ'ছ চুর্ফা ভূলবি। ছুইযোল
ক্রিশ কাঠা ধান বানিয়া ছুইযোল বলিশটা নৈবিভি করবি,
পিঠা করবি, পরমার করবি। ছাতে মোহন লড়ি, কাণে
ক্ষমন কড়ি, অর্দ্ধেক পান হার অর্দ্ধেক ধান শলর মৃথি
আইনা ধুপে দীপে, গীতে নাটে, অরে জোকারে পুলা
ক্রিবি।"

্ আর আর দিন ব্রহ্মণ পাদ আগদের চাইল; আঞ্চ আধিছালা চাইল লইয়া বাড়ী ফিবিলেন।

বার, আছে, আনে, নেয়, থায়। তাঁরপর কারিক লাইদা অমাবভার প্রতিপদের দিন আহ্নণ বলেন "বাম্নি বা, ছান্ কইরা লার; হরিশঙ্করের গোটা পাকাইয়া পো।"(১) বাম্নী গিয়া ছান কইরা আইলেন, গোটা পাকাইয়া নাখ্লেন। একমাস দুইরা বর্ত্তের কথা কইলেন। অগ্রাণ নাইসা অমাবভার প্রতিপদেরে হুইষোল বিলেশ গাছি দ্বাং ভুলুলেন, তুইবোল বলিশ কাঠা ধান ভান্লেন, পিঠা ক্রলেন, পরমার করলেন। খাটে ঘটে কলার ম্গাস ললকই টুইইএ, হাতে মোহন লভি, কাপে মদন কভ আর্দ্ধিক বান হরি অর্ক্রেক থান শঙ্কর—"হরিশঙ্কর ঠাকুর" আনলেন। বুণে দীপে, গীতে নাটে, জ্বে জোকারে পূলা সমাপন করলেন। ঠাকুর তুই হইয়া বর নিয়া গেলেন। ব্রহ্মণের দীঘি, পাছে পুর্কণি হইল, হাতীশালে হাতা হইল, থেছাশালে ঘোড়া হইল, স্বতপুত্র হইল, ঐথগ্য অপার মুইল।

ৰাম্নীর এক গোয়ালনী সই ছিল। গোয়ালনী বলে শিক্ষ গোসই আমারে-নি এই বর্তু শিখাইতে পার •ৃ"

(১) হরিশস্থরের উদ্দেশে বজিশটা মাটির গোটা পাকাইরা ধান দুর্বা, পুশা ও সিন্দুর প্রভৃতি দিয়া পবিত ছানে রক্ষা করা হয়। চাক্র মাসের স্বানা অনুসারে বোধ-ছব হইকোনতে বজিশটা গোটা পাক্টবার নিয়ম।

"যতই দেখ্বি কণাৰাগ ওতই যাবি গোয়ালের মাণ্, দই বেচ্বি ছণ বেচ্বি, তুই-নিল এই বর্তের কণা কইছত পান্তি গ"

"লা পারমু, আমারে এই বর্ত লওয়াতে হ'বে।"

"পারতি না, তিন ছিয়াবিরা করবি। হলা হলা ঝরার ভাত চলা চলা পুঠি মাছ ঝিয়েরে দিকি পুতেরে দিবি আপনিও একটু মুপে দিবি বর্তের কণা মনে পাহর্য \*(১) ভূই নিলাে এই বর্ত্ত করতে পারবি ?"

"না; পারমু, আমারে এই বর্ত লওয়াইতে হবে।" বামনী গোলালনীরে বর্ত লওয়াইলেন। গুই স্ইয়ে মিলা। ছরিশঙ্কর বর্ত্ত করলেন। যায় দিন। পরের বছর তই সইতে মিলিয়া গোটা পাকাইলেন। তুই সইয়ে বর্তের কথা কন। একদিন বামনী হলা হলা ঝরার ভাত, চলা চলা পৃঠি মাছ, বিয়োর দিলেন, পুতেরে দিলেন, আপ্নিও একটু मृत्य मिलान, बार्खित कथा मान शाहताना । शाहा-ল্মী বলে দট গো দই, আইদ আমরা করের কথা কই। বামনী বলেন 'হলা হলা ঝরার ভাত চলা চলা পুঠি মাছ, ঝিয়েবে দিছি পুতেরে দিছি আপনিও একটু মুগে দিছি বর্ত্তের কথা মনে পাহরছি। তোমার কণা ভূমি কও আমার কথা আমি আর একদিন কমু।' গোরালনী ष्पाक्ष এक गारे वर्तित्र कथा कहेन। আই্দা জিপ্তেদ্ করে "দই গো দই, আইদ বর্তের কথা कहे।" बामनो वर्णन "शिष्टेक द्रांध्ष्ठि, शतमास धाँध्ष्ठि, বিয়েরে দিছি পুতেরে দিছি, আপনিও একটু মুখে দিছি বর্ত্তের কপা মনে পাহরছি। তা ভোমার কথা ভূমি কও আমার কথা আমি আর একদিন কমু।" আর একদিন

<sup>(</sup>১) সম্পূর্ণ একমাস কাল; ব্রতের কথা বলিবার পূর্বে জলগ্রহণ করিবার নিম্নম নাই। যদি কোন দিন ভূল বশতঃ ইহার বাতিক্রম হয় তবে পর দিবস ছইবার করিয়া ব্রস্ত কথা বলা ছইয়া থাকে; অথবা গ্রামে অপর কেহও ব্রতী থাকিলে তিনি ছইবারে ব্রস্ত কথার মার্জি করিবেন।

शीक्षणमी बाहिमा जिल्हाम करत 'महे भा महे' बाहिम वर्रित क्था कहे। वाम्नी वरण "कोत्रा कोत्रा छ। कत्रि विद्यादा দিছি পুতেরে দিছি, আপনিও একটু মুখে দিছি বর্তের কথা মনে পাহরছি (১) তা ভোনার কথা তুমি কও আমার कथा व्यक्ति व्यक्ति करेगू। (शायागर्नो यहन "তবে সই তোমার গোটা তুমি রাথ আনার গোটা আমারে দাও।" বামণীরে অলম্বাতে পাইল, বাঘণী পাছ হুয়ার দিয়া গোটা বাইর করা দিল। অগ্রাণ মাইস্তা অমাবইস্তার পতিপদের দিন নিশাকালে (২) हित्रिणकत्र ठीकुत्र व्याहेलन । व्याहेना। (मर्थन, पुगारेश व्याष्ट्रन।' श्रायाननी वृत्न, भौत्न, शौत्र नात्वे করে জোকারে, পূজা আরম্ভ করছে। ঠাকুর গোয়াগনীর ৰাড়ীতে পুন্ধা থাইয়া তুষ্ট হইয়া বর দিয়া গেলেন। গোদালনীর হাতী শালে হাতী হইল, ঘোড়া শালে ঘোড়া इहेन हेलामि।

বাম্ণীর হাতীলালে হাতী ঢলে, ঘোড়াশালে ঘোড়া চলে, সাতপুত্র মরে, বম্নী কাঁদে কাটে। গোয়ালনী আইসা জিজেস করে 'সই তুমি দেখি কাঁদ কাট. আমারও কাঁদ্তাম কাট্ডাম মনে লয়। (৩)

"আমি কাঁদি মনের ছাথে, তুনি কাঁদৰে কোন্
ছাথে ? রাজার হাতীটা মইরা রইছে তারে ধইরা কাঁদ।"
গোয়ালনী সিমা রাজার মরার হাতীটা ধর্ণ। হরিশছর
ঠাকুর ভাবেন 'কি আনার পূজার কণ রুগা যাবে,

গোয়াগনীর চক্ষের জল মকে (১) পড়বে !' (তা ক্থন ও হবেনা) এক কুঁট তুই কুঁট তিন কুঁচ দিতেই রাজার ছাতীট। জিয়া উঠ্ব। (২)

আর এক দিন সাইসা গোলানী বলে ''সই গো সই

তুমি কাদ কাট, আনারও কাদ্যান কাট্ডাম্মনে প্র'।

'আমি কাদি সনের ত্থের তুমি কাদরে কোন্
ত্থে, রাজার ছেল্টো নরে আছে তারে ধইরা গা কাদ।'

এক কুই তুই কুই তিন কুই দিতেই রাজার ছেলে
জিলা উঠল। গোলানার চন্দের জল আর মঞ্চে
পড়েনা। এদিকে বাম্নীর যত সম্পদ ছিল সব গেল।
বানন বলেন বাম্নী ''আনার আলে বা সম্পদ দিল কে,
পাছে বা সম্পদ নিল কে গু যে আনারে আলে বাজাইরা
পাছে ক্যাইছে তাঁর উদ্দেশ্যে যামু। গোলালনী আইসা

(১) "আমার আগে বাড়াইয়া পাছে কমাইছে ভার উদ্দেশে যাই।"

"তবে তাঁরে আমার (ও) সংবাদ কইর ।" "ভোমার সংবাদ কি কমু?"

বলে "দইয়া ঠাকুর কৈ যাও ?"

"আমার যে কাদতাম্ কাট্তাম মনে লয় সেই সংবাদ কইয়।"

বুড়া বামন গাঁচিত ভর (৩) কইরা উঠ্লেন। কত পুর যান, গাঁলা দেখেন একটা লোক মতল মাথার কইরা থাড়ইরা রহিছে (৪) জিঙেস্ করে "ঠাকুর তুমি কই যাও ?"

(২) "আনার আগে বাড়াইয়া" ইভালি।

"আমি (কেন) যে মণ্ডল মাণায় কইরা **থাড়ইরা হছিছি** । মড়তে পারি না চলকে পারে না এই সংবাদ কইয়।"

- (১) মঞ্চে ন মার্লা, অর্থাৎ ভূমিতে । হরিশ**ছরের** অশীর্বাদে বিত্র কারিনীদের শোকাশ্রু পাত হয় না। **অভএই** নাকের উপইন্ত যে রাজার মরা হাতী তাহাও বাচিয়া **উঠিল।**
- (২) কাঁদিবার নিমিত্ত হাগো, মাগো, **আহা, উত্,** করিবা মাত্রই হাভীটা বাঁচিগ্রা উঠিল।
- (৩) লড়ি = গাঠি, য**ি। লড়িং = য**ি**ডে। ভশ্ন** কইরা = আশ্রম কারেল।
- (৪) সভাগ = গোলাকার বৃহৎ আসন বিশেষ। উহা মাথার উপড়ে নিয়া খাড়াইয়া রহিছে অথাং দাঁড়াইয়া আছে।

<sup>(</sup>১) পাহরছি = পাদরিছি = বিশ্বত হইয়াছি।

<sup>্ (</sup>২) কোন কোন স্থানে দিবাভাগে, কোথাও বা কাত্রিতে পূজা হয়।

<sup>(</sup>৩) গোষাগনীর স্বাদ্পেদ ১৪য়ার পর স্থান দীমা নাই। নিরবচ্ছির স্থান মধ্যে তার একদিন কাদিতে ইচ্ছা হইয়াছে; কিন্তু ক্রন্দনের কোনও উপঠন্ত নাই। অতএব ক্রন্দা বলিতেছেনু রাজার মধা হাতীটা... ধরিষা পরের হৃথে প্রাথী হইরা কাদিতে পার।

আর কড দুর বান্, একটা কবনী গাইরে (০) জিজেস কলে "ঠাকুর তুমি কৈ বঃও ?"

🧓 (৩) "শালে ৰাড়াইয়া ইত্যাদি।"

"আমার ছুণ যে দেবতার থারনা, মহুয়ে খারনা এই সংবাদ ক্ষর।"

আর কড দ্র যান্, একটা অদ্ধাপুদ্র্ণী ( ৪ ) ভিজ্ঞাস। করে ;"

"আমরে জল বে মানুবে থার না গকতে থার না এই সংবাদ কইর।" আর কত দূর বান্ একটা অমর্ত্ত ফলের গাছ (১) জিজেস্ করে 'ঠাকুর তুমি কৈ বাও ?" ''আগে বাড়া-ইয়া ইত্যাদি''

- (.e) "আমার ফল বে কাউয়ায় থায়ন। কুলীতে আয়না এই সংবাদ কইয়।" আর কত দ্র যান্ইক্রের লিভেম্ করে "······"
- (৬) "মামগ্লা এত বড় সোন হইয়াছি (২)
  স্মামাদের কেন বিয়া হয়না, এই সংবাদ কইয়।"
- (৭) আর কত দ্র যান্, শিয়ালটা উর্দ্যুথ হইরা আছে, (শে) তাঁকে জিজেন করে———

শ্বাদি দে উর্মুখী হইয়া আছি, ঘাদ থাইতে পারিনা নীচের দিকে চাইতে পারিনা, এই সংবাদ কইয়' আর কত দুৱ বান্—

(৮) (तत भूवा शनाध नहेंचा (०) थाज़ारेदा बरेएह,

- (৩) ক্বলী পাই প্রচুর চুগ্ধবতী গাছী।
- ( 8 ) (य श्रूर्तत्र मन व्यवावशर्या।
- (১) অমর্ত ফল = অমৃত ফল অর্থাৎ সামগাছ।
- ্ (২) সোন হইছি=সেয়ানা ইইয়াছি, যুবতী ক্ষুয়াছি।
- (৩) দের পুরা=ওখন করিবার ভাও বিশেষ'। বেভের বা বাল্লের নিশ্মিত।

বিজেস্ করে "আমরা বে সের পুরা গলার লইছা থাড়াইরা রইছি, নামাতে পারিনা, তুলতে পারিনা, এই সংবাদ কইর।

- ( ৯) আর কতদ্র যান্, পীড়ি মার্গে বাইজা রইছে (১) জিজেস করে ——— ''আমার যে পীড়ি মার্গে বাইজা রইছে; খসেও না, ভাকেও না এই সংবাদ কইর।"
- (১০) আর কতদ্র যান্, চালের কোণা ধইরা পাড়াইয়া রইরাছে (সে) জিজ্ঞেদ্ করে——"আমি ধে চালের কোণা ধইরা থাড়াইয়া রইছি, নড়তে পারি না, হাট্ডে পারি না এই সংবাদ কইয়।"
- ( >> ) ছনের বোঝা মাথার লইয়া রইছে "...... ....." "আমি যে ছনের বোঝা মাথার লইয়া রইছি, নামাইতে পারিনা, সরাইতে পারিনা, এই সংবাদ কইয়।"
- ( > २ ) कना, भूना, खनफरे, उँछरे नहेशा बहेना बरेट ——"सामन्ना एवं कना भूना खनफरे उँछरे नहेन्ना बरेना बरेटि, विकी किनि रशना, धरे मःवान करेन्न।"
- (১৩) চ্ণের টোপা ঠোটে লইয়া বইসা রইছে—— "আমি যে চ্ণের টোপা ঠোটে লইয়া বইসা আছি, খসেও না, পরেও না, এই সংবাদ কইয়।"
- (১৪) কুমিরটা জলে-টানে পইড়া রইছে (২)———
  "আমি যে আহার করতে পারিনা, আধার করতে পারিমা
  এই সংবাদ কইয়।"

(আগামী সংখ্যার সমাপ্য )

শ্রীস্থরেন্দ্রমোহন কাব্য-পুরাণভীর্থ।

- (১) পীড়ি = গৈঠা, বিস্বার নিমিত্ত কাঠাসন; গুহালেশে সংবদ্ধ হট্যা আছে। মাংসের সঙ্গে জোড়া লাগিয়া আছে। "স্বাধামার মণি রঙ্গের স্থায় আক্রম সংগগ্ধ নিছে।"
  - (२) वार्षक करन, वार्षक छात्रात्र शक्ति वारह ।

# পতিনির্বাচনে নারীর রুচি।

সকল দেশেই যে জীলোকগণ সকল পুরুষের সভিত মুজাবতঃ প্রেমে মন্ত হর, তাগ নহে। প্রতি দেশে কোন একটী বিশেষ শুণের পক্ষপাতী হইয়া পুরুষের প্রতি নারী-জাতি অমুরাগ প্রদর্শন করে। বিভিন্ন দেশের জীলোকের পতিনির্বাচন সম্বন্ধে কি অভিক্রচি তাগার কিছু ধারনা নিমে দেওরা গেল।

করাসী বিলাসিনীগণ বীর ও রসিক স্বামী কামনা করেন। ওবন্দার কামিনীগণ, যে স্বামী নিরপ্তিছর স্থা ও স্বাক্তন্দে রাখিতে পারেন, সেরপ পতিতে রত।

জর্মাণ রমনীগণ দ্বির-প্রণয়ী ও চিরবিশ্বাদী পতিতে রত।

শ্লেন নারীরা বৈর নির্গাভিনকারী স্বামী বড় ভালবাদেন। ইটালীয় রূপদীগণ কবিত্ব ও কল্পনা পূর্ণ ভর্ত্তা গাভে বছুবভী।

ক্ষিয়ার সীমস্থিনীগণ, যে ব্যক্তি ইউরোপের পশ্চিম বিভাগের জাতিদিগকে অসভ্য ও জুর্ভাগা বলিষ। ঘুণা করেন, ভাষাকে ভাষাদের প্রণয়াকাজ্জীর উপযোগী মনে করেন।

দিনেমার পলনাগণ স্বামী যদি তাহার শ্বশুরের দেশকে শুলিবীর মধ্যে সক্ষশ্রেষ্ঠ ও সর্ব্ধ মুখাধার বলেন, তবে সেই শ্বামীকে তাঁহারা খুব পছন্দ করেন।

ইংরাজি ললমাগণ ধনবান স্বামী চাহেন।
.আমেরিকার রমণীগণ বিজ্ঞানবিদ্ ব্যক্তিকে স্বামী রূপে গ্রহণ করিতে বিশেষ আগ্রহ প্রকাশ করেন।

নিজো নারীগণ বনবাসী স্বামী চান।
স্বাফ্রিকার রমণীগণ নৃত্যগীতে পারদর্শী স্বামীতে রত।
নিউবিয়ার রমণীগণ যে স্বামী নানারূপ রং হারা বেশ শাক্তিরেন, এমন লোককে পতি করিতে চান। চীন নাবীগণ চিত্র অন্ধন করা বিস্তায় অভিজ্ঞ ভর্তায় ভাকা । ভাপান রমণীগণ বীর ও বাণিস্থ্য-প্রিয়-পতি চান। ভিব্ব ত শক্ষীরা সংস্কৃতভাষাবিদ ধার্ম্মিক স্বামী নাভে দৃত্চিন্তা।

ব্ৰহ্মদেশীয় ললনাগণ শিল্পবি**ছা**য় বিশা**রদ ভর্ছা** ভালবাসেন।

কাশ্মিরী যুবতীগণ অংসভ্য আমীর সেবা পরারণা। মারবারী রূপগীরা ধর্মারত **ঈশ্বর ভক্ত পতি গ্রহণে ব্যস্ত।** পশ্চিমা রুমণীগণ বশ্বান পতি চান।

বোষাইয়ের রমণীগণ ব্যবসায়ে **দক্ষ পতি লাভে** ফুতসঙ্কর।

মাজ্রাজ স্করীগণ ইংরাজি ভাষাবিজ্ঞ স্থামীর প্রির।
উৎকল কানিনীগণ মূর্থ অথচ ক্রষিকার্য্যে পারদলী প্রভি
চান।

বাজালীস হীগণ সর্বাজে সোনার গছন। দিতে পারেন, এমন অংমী পছন্দ করেন।

আসামী সীমন্তিনীগণ স্বদেশ-ভক্ত স্থামী প্রির।
আরব কামিনীগণ পর্বেতবাদী স্থামী লাভে বন্ধবতী।
গারো রমণীগণ প্রতিহিংসা পরায়ণ পতিতে রত।
ধাসিয়া ও জয়ন্তী নারীগণ মবন বিধেষভাবাপর পভিচান।

কোৰ ও ভীগ বলনাগণ শহ্ৰু দলনে সক্ষম স্থা**নী সক** চান।

রাজপুত বীরাঙ্গনা ধীর ও অটলপ্রতি**জ স্থামী ভক্ত।** জাট সুন্দরীগণ সমরদক্ষ পতি চান।

(মেদিনীপুর হিতৈষী)

वीत्रवृतसन गाम।

# আমি ও তুমি।

বড় নগন্ধ বড় দহর তোমার খনত বাস। বড় রাস্তার গাড়ী ঘোড়ার চলছ বার মাস।

ক্ষের জলে সানটা চলে
আইস, লেম্বনেড্পান।
বালাম চলে আর বুটের ডাল
উদরে কাও স্থান।

শ্বক প্রথ প্রথ বৃদ্ধি ক্ষা বাহুবার কৃতি ।

থল গোলা, কাচা গোলা

বাদ্দা-ভোগ আর ক্ষা ।

শাইশা ভোষার পাত শ টাক।
ক্ষনা তুমি লোক।
ভাব ছি মনে দিনে দিনে
আরো বৃদ্ধি হোক।

আমি একটি অতি কুন্ত দীন, দরিত্র অতি! বিশে কি . তিরিশে নোর এ জীবনের গতি।

আমি সহর ছাড়া; পল্লী-পাড়া—
ক্যামার বাড়ী ঘড়;
ক্যাম্য পথে চলা ফিরা,
কর ছি নিরস্তর :

পথের ধারে থোলা মাঠে

সবুজ ধানের হাসি!

বৈশাথ মাসে বকুল হাসে—

টগর রাশি রাশি,

ধরের ঘড়ে বসত করি
উপড়ে লাউ লতা—

হল্দে ফুল তার ফুটে হাসে
ফুড়ায় মনের ব্যাথা।

আই জনর আমার কঞ্চ তাতেই উদর ভরে, বিশের জনে অবগাহন ভূষা বারণ করে।

ক্ল থাইবার ইন্দু গুড়

মূরি, মূড়কী, চিরা,
ভাতেই তুই কান্তি পুই—
নাইক মনের পীড়া।

প্রকৃতির সে ভাষণ ক্রোড়ে পল্লী মারের বৃকে, হাসি থেলি নাচি, গাই; নিত্যি মমের ক্রথে।

विवनशेनहस्य बाद चर ।

# আয়ুরেদ স্মস্যা।

এক শ্রেণীর লোক আছেন, যাহাবা যে কোন সানে ছ-একটা অমুন্থার বিসর্গ যুক্ত নাকা দেখেন, তাহাই অল্পন্থ বেদ বাকাবং বিখাস করেন, এবং যদি কেছ যুক্তিযুক্ত ভাবে ও তাহার আলোচনা করিছে প্রবৃত্ত হয়, তবে এই রক্ষণশীল সম্প্রদার চীংকার কবিছে থাকেন যে:—কলিকাল মাহায়োই আন্ধ্র সকলেই এহাদুশ অপৌন্ধায়য় শাসের সমালোচনা করিছে সাহসী হইছেছে। আর এক শ্রেণীর লোক আছেন যাহারা সংস্কৃত ভাষায় নিবন্ধ বাকা মার্কেই স্থানিব (Rubbish) বলিয়া মনে করেন, কেছ কেছ বা অনুগ্রহ করিয়া প্রাচাবিল্যা মান্তেই প্রাত্ত ভাষায় বিষয় মনে করেন এবং তাহান্বারা আর বর্ত্তনান বৈষয় মনে করেন এবং তাহান্বারা আর বর্ত্তনান বৈষয় মনে করেন। আক্রকাল এই উত্তর ক্রেনা প্রচিন্ন করিয়া পাকেন। আক্রকাল এই উত্তর ক্রেনার চর্ত্রশপন্থীর সংখ্যাই অধিক হইরা পভিরাত্তে।

আৰু আমরা যে বিষর আলোচনা করিতে প্রস্তু হুইভেছি তাহাতে উক্ত উভর দলই বিরূপ হুইবেন।

একদল ইভিম্পাই সূর ধনিরাছেন। অত্মন্ত্রি মানব

বারা অপৌক্রবের আয়ুর্কেদের উন্নতির চেলা হুইভেছে

উনিয়া তাহার তেলে বেগুনে জলিয়া উরিরাছেন। ইহাদের

অস্ফালন মৌধিক মাত্র স্থতরাং তাহারারা কার্যার ক্ষতির
সম্ভাবনা অতি অর। কিন্তু অপর সম্প্রদায় মুখে কিছু
না বলিলেও কার্যাই প্রবল বাধা জনাইতেছেন। যদি
কেই আর্রেকিদের উন্নতি কল্পে শারীবিক, বাচিক বা
আর্থিক সাহায্য করিতে অগ্রসর হন, তবে এই মাহাত্রাগণ
মারা, চেষ্টার ঐ সাহায্য যাহাতে সরকারী প্রতীয় বিভালরে
দেওয়া হয় তাহার জক্ত প্রাণপণ চেষ্টা করিয়া থাকেন। এ
আবস্থার আমাদের সাফলা অনুর পরাহত জানিয়াও
"উৎপংখ্যতে হন্তি মম কোহপি সমান ধর্মা।" এই মহালন বাকা
আম্পারণ করিয়া কিঞ্চিৎ আলোচনা করিতে প্রস্তু হুইলাম।

রক্ষণশীল সম্প্রদায়ের মত "আরুর্বেদ অপৌরুষের স্থারাং আছারিধ পূর্বধের অনালোচা"। উছোদের চিন্তাশীলভার আছারই এই প্রকারে 'বেড়ালের পিঠা ভেজা' দেখিয়া বৃষ্টির অনুমান করিতে শিখাইয়াছে। আয়ুর্বেদ অপৌরুষের সে বিষয়ে সন্দেহ নাই কিন্তু বর্তমান প্রচলিত গ্রন্থ করখানি যাছা বহু বিপ্লবের মধ্য দিয়া যাওয়ার, নানা উহাপোহে এখন এক রকম "খোল নল্ডে বদলান সাবেক হুকার" ভার মুলা প্রাপ্ত হুইয়াছে ভাহাকে ও কি অপৌরুষের বলিতে হইবে ? যাহা আয়ুর্কেদ, তাহা সভা, তাহা শাখত, তাহা আপৌরংবয়। স্বীকার কবি সভাকে কেহ সৃষ্টি করিছে পারেনা তবে মানব তাহার আবিষারক মাত্র। বিহাতের দ আনামুদী শক্তি সভা, অপৌরুষের ও শাখত; কিন্তু সেই শক্তি মানবের কার্যো বাবহার করার প্রথা মানবের আবিষার। বিভ্রের ক্রিমবাভিত্ব শক্তিই আয়ুর্কেদ, তাহা অপৌরুষের, কিন্তু বাবহার ঘারা ঐ শক্তির উন্তাবন মানবেরই কুভিত্ব। এইরূপ আলোচনার ঘারা ঐ শক্তির আয়ুর্কেদে সন্ধিবিষ্ট ইইয়াছে। ইহা বাভাত ও বহু বিষয় আলোচনার আছে ভাহা আমারা ক্রমশঃ দেখাইভেছি।

প্রতীচা অর্থাং দিতীয় মতাবলম্বীদের প্রতি আমাদের: वक्तवा (वनी किছू नाहे। यनि डीहाबा आश्रुट्सन आलाइनाः করিয়া ভাষাকে 'রাবিশ' বলিভেন ভবে তঃথ ছিল ন।। কিন্তু তাঁহারা অধিকাংশেই আয়ুর্বেদ দুরান্তাং ভাহার রচনার ভাষার সঙ্গেই পরিচিত নহেন। তবে এইটকও মাত্র বলিভে চাই বে, ভগবান এতথানি নির্কোধ ছিলেন না যে, ডিনি ভারতবর্ষে মনুষা সৃষ্টি করিয়া তাখাদের শুরীর যাতার প্রধান উপকরণ ঔষণ সাত সমুদ্র পার উৎপদ্ধ করিতে ইছো कदियाहितान । त्व छुटेर्कववत्म आमब्रा मुख्य इनेवान দেশান্তর জাত বত্তে লজ্জা নিধারণ করি, সাংসারিক খুটি নাটি জিনিষ্ট্রক, এমন কি আহারের প্রধান উপকরণ লবণ-টকু প্রাম্ব যে তুর্ভাগাভার আমাদের পরের মুখের দিকে চাংহয়৷ সংগ্রহ করিতে হয়, সেই প্রতিকৃশ দৈব, সেই হত ভাগাতাই, চিকিৎসাতেও আমাদিগকে পরস্থাপেকী করিয়াছে। আমার ঘরের কোনার সর্বদোষ্থ্র, উপস্তব-বিহীন, বিয়েচক হ্রীতকী আদি থাকিতেও আমরা 'কালেনেল' খাইয়া মুখ আসা প্রকৃতি আশেধিত পার্য ভক্ষণের অশেষ দোষে শ্বার জর্জারিত করিতে কৃত্তিত হই না।

আযুর্বেদের আলোচনা করিন্তে হইলে বর্ত্তমান প্রচনিত্ত আযুর্বেদীয় গ্রন্থ সন্থের সাহায়ে চিকিৎসার আমাদের কি কি বিষয়ের অস্থ্যি হইতেছে এবং কোন্ কোন্ বিষয় কি ভাবে আলোচনা করা আবশুক প্রথমে তাহাই দেখা যাউক। আপ্রকাল "চরক সংহিতা," "প্রশ্রুত সংহিতা" ও তাহাকে উপজীবা করিয়া আত্ম ছচারখানা সংহিতা গ্রন্থ দেখিতে পাওয়া যাইতেছে। প্রাচীন মহর্ষিগণ আলোচনার স্থবিধার করু আযুর্বেদকে আট ভাগে বিভক্ত করেন। শ্লাত্ত্র (Surgery) শালাকাত্তর (Treatise on the disease of eye, nose, moath throat &c) কাম চিকিৎসা

( Physic ) ভুতবিখা ( a treatment of Insanity, ্ Hysteria &c ) কৌমারভূত্য ( Midwifery) ংজগণতত্ত্ব ( Toxicology ) রুপায়ন তত্ত্ব ( Treatise to prolong longivity) বাজীকরণ ভন্ত (Prolonging the power of generating human being ) I অতি প্রাচীনকালে এক এক সম্প্রদায়ে এক এক বিষয় অধাপিত চইত। এবং সেই সম্প্রদায়ের লোকে সীয় অধীত ীৰিশায় লইয়াই ভীঘন অভিবাহিত করিতেন। পূর্বে পূর্বে ব্যক্তির আলোচিত অসমাপ্ত বিষয়গুলি পর পর সম্পাদায়ের অক্সাক্ত পঞ্জিতের দ্বারা আলোচিত হওয়ার, ক্রমণঃ সেই সেই সম্প্রদায়ে ভেবিধাক জ্ঞান ক্রমশ: বর্দ্ধিত হটত এবং জলতের হিভার্থ ভাহাদের আবিষ্ণার বিষয়পুলি ক্রিয়া যাইতেন। এই প্রকারে তংকালে ভত্তং স্প্রাণয়ের মে পৃথক পুথক গ্রন্থ প্রচলিত ছিল, ভাগার নিদর্শন এখনও আমরা পাটরা থাকি। এখনও আমরা ধনস্করি প্রস্কৃতির শনাতম্বে, নিনি, করাল ভটু, শৌনক প্রভিত্তির শালাকাতন্ত্রে, পার্বতক, জীবক, বঙ্গক প্রভৃতির কৌমার জিলা **অগ্নির্বাদ ক্রিক্**কর্ণ প্রভৃতির কার্যচিকিৎসার, কলাপ প্রভৃতির প্রা**র্গতার বিহু** পাকা ভূনিতে পাই। ক্রোম बर्गिक्षीक लिंहे ग्रेन श्रम् यथेन व्यनारमाहिक इश्राय मेर्ड बहेशा बाह्यात छेशक्य हत्. তথন কোন কার চিকিৎসা প্রধান চরকসং হিতা ক্ষিক্রত সংহিতা সংকলন করেন। তাহার মধোে চরক বিংটিভার কার চিকিৎদা বাতীত রদায়ন ও বাজীকরণ উদ্ধ্র সম্বাদ্ধে অনেকটা বলা হইয়াছে। সুশ্রুতসংখিতার ক্ষমবিষ্টার পদল বিভাগেরই উল্লেখ আছে। এখন এক विकेश दिखा ्त शहरा है কাচীন চিকিৎসা প্রণানীর ক্রিক্তিক কিছু কিছু ছারা জনমন্ত্রন করা ব্যয়। ক্রিয়ানে মুক্তিত যে সব প্রাপ্ত পাওয়া যাইতেছে ভারাও শ্রম্ভ বিশ্লব মণ্য দিয়া অান্ত, তাহাদেরও কিছু কিছু ভিভালতে হট্যাছে। আবার দীর্ঘকাল বাবহার না लाकात. जाहा विभिद्रकोननी পণ্ডিত্বর্গের উপনিবন্ধ স্থান্তলিও অনেক স্থানে তর্মোদ্য বা অৰোদ্য হটরা পড়িরাছে। প্রতরাং এই সব গ্রন্থের সাহায়ে। अमिश्तित अधित्रिक पार्ताहर्मा कतिएक इटेल कडे श्रीत প্রাহ্মবিধা চইতেছে। (১) ব্যাধিনাম নির্শীয়ে (২) শারীর শন্ত্রপরিচারে (-৩ ) ভেষম্ব নিরাপণে (৪) ঔবধ গ্রন্থত অণালীতে (৫) বিশিষ্ট ওবন সমূহে (৬) মন্ত্ৰ শস্তাদি क्षेत्रिक्त अ अर्थार्श अञ्चित्रिशरे आम्ब्रा अकर्ण आलाहन

করিব। ১। কেছ কেছ বলিতে পারেন বে চিক্ৎসা বিজ্ঞানে রোগ নির্ণয়েই অন্ত্রিধা রহিয়ছে সে বিজ্ঞানের সাহায়ে কি প্রকারে চিকিৎসা হইতে পারে। এ সম্বন্ধে আমানের উত্তর এই যে আয়ুর্বেদের চিকিৎসা প্রশানী এলোপ্যাথদের চিকিৎসা প্রশানী ইটতে বিভিন্ন প্রকারের। এলোপ্যাথদের চিকিৎসা প্রশানী ইটতে বিভিন্ন প্রকারের। এলোপ্যাথগণ ব্যাধিনির্ণয়ে অসমর্থ ইইলে কোন প্রকারের। এলোপ্যাথগণ ব্যাধিনির্ণয়ে অসমর্থ ইইলে কোন প্রকারের। করিতে সমর্থ হননা কিন্তু আয়ুর্বেদে ব্যাধির নাম নিদ্দেশ প্রধান প্রয়োজন নছে এবং ব্যাধির নাম করণ না ইটলেও চিকিৎসার কোন বাধা হয় না। এই ক্রক্তই পৃথিবীতে এ তক যত প্রকার ব্যাধির সম্ভা আবিহ্ন হ ইইয়াছে বা ভবিষাতে আনিষ্কৃত ইইবে সকলেরই চিকিৎসা করিতে আয়ুর্বেদ সমর্থ। চরক বলেন :—

"বিকার নামা কুশলো ন কিন্তীয়াৎ কগঞ্চন।
ল হি দর্মে বিকারাণা নামতো ইন্তি জ্বা স্থিতি:।
ল এব কুপিতো দোষ: সমুখান বিশেষত:।
ভানাস্তর গভশচাপি বিকারান্ কুম্পতে বহুন্।
ভত্মাধিকার প্রকৃতী রধিষ্ঠা না স্তরানিচ।

শমুখান বিশেষাংশ্চ বৃদ্ধা কর্ম্ম সমাচরেৎ । চং সৃং ১৮ অংশ অর্থাৎ ব্যাধির নাম নির্দেশে অসমর্থ ব্যক্তির লাভ্যক্ত হটবার কোন কারণ নাই যেহেত সর্ব্ব প্রকার ব্যাধিরট বে একটা নাম পর্লিতে ২ইবে তাহা ঠিক নছে। দেষ, প্রকোপের কারণভেদে, ভিন্ন ভিন্ন স্থানে প্রভিষ্কিত হইয়া নান: পকার ব্যাধির কৃষ্টি করিয়া পাকে। অতএব ন্যাধির প্রাকৃতি, দোষের আক্রেমণের স্থান ভেদ, ও দোষের कांत्रगामिट्डम, বিবেচনা করিয়া-চিকিৎসা করিতে হটবে। এই হিসাব আয়ুর্কেদ আনেকটা হোমিও-প্যাথিক চি'কৎসার অভুরূপ। ভাহারা একই ব্যাধিতে নোগভেনে শীত, উষ্ণ মিশ্ব কৃষ্ণ প্রভৃতি বিপরীত ক্রিয়া कत्रिया थाएकम । হ্যত্রাং সামান্ত চিকিৎসায় বিশেষ অন্তবিধা না হইলেও চিকিৎসা বৈশিষ্টো ৰাাধির প্রাকৃতি জ্ঞান বিশেষ আবশ্বক। ব্যাধিটা আমাশ্ব গভ কি উরোগত ভাষা নির্ণয় করিতে না পারিলে অনেক সমন্ত্র চিকিৎসা বিভাট ঘটিতে পারে। কারণ আমাশ্র গভ বাাণির প্রথম শঙ্বনই ব্যবস্থা কিন্তু উরোগত ব্যাধির क इंटिंग विश्व अभिष्ठ इंदेश थाएक। आमता साधि निर्माश সংশ্রের বিষয়ীভূত কতগুলি বিষয়ের উল্লেখ করিব।

> (ক্রমণঃ) শ্রীভোতিষ চক্র সর্বাচী।





# अभिष्ठा

১০ বর্ষ

চৈত্ৰ, ১৩২৭

५२ण मरथा

## মনদা-দেবীর ইতিরত।

আন্তিকক্স মুনের্মাতা ভগিনী বাহুকেন্তথা। জনংকারুমুনেঃ পত্নী মনদা-দেবী নমোহন্ততে ॥

মনসা দেবীর পূর্ব পরিচয় উপরে উদ্ভ দেবীর সর্বজন—
বিদিত প্রণামমন্ত্রেই আছে। তিনি অস্তিক মুনির মাতা,

ক্ষরংকার মুনির পত্নী এবং বাস্থকীর ভগিনী। ইহার অপেকা
বিশদ পরিচয় আর কি আশা করা যাইতে পারে ? কিন্তু
মহাভারত পুলিরা বখন দেখা যায় যে, জরুৎকারু মুনির পত্নী,
বাস্থকীর ভগিনী এবং আস্তিকের মাতার নাম জরৎকারু,
'মনসা' নামের ''নামগন্ধ" ও মহাভারতে নাই, তখনি অমুসন্ধিংকুর মনে বিষম খটুকা লাগিয়া যায় ! মনসা ও জরৎকারু
কি করিয়া এক হইয়া গেল তাহার অমুসন্ধান করিতে করিতে
আময়া অনেক বিচিত্র তথ্যের সন্ধান পাইয়াছি; কিন্তু এই
পরে পাঠকগণকে লইয়া রওনা ইবার পূর্বে মহাভারতের
আবিক মুনির কাহিনীটা একবার আওড়াইয়া শওয়া

মংগ্রারত থুলিয়াই দেখা যায়, এক একোমেলো বাপোর।

এক আজিকের কাহিনীই আদিপর্কে ভিনবার ইপিছ

হইরাছে । প্রথমে ১৩শ হইতে ১৬শ অধ্যারে । ছইআর

দফা ৩৮শ হইতে ৪০শ অধ্যারে এবং শেষ ৪৬শ হইতে ৪৮শ

অধ্যায়ে । এত কাছাকাছি একই পর্বে একই কাহিনী

ভিনবার থাকাটা সকলের নিকটই একটু বিচিত্র বোধ হইরে ।

যাহা হউক, মহাভারতের পাঠনির্গর বা গঠনপর্যায় বর্তমানে

আমাদের আলোচ্য নহে । আত্তিক কহিনীর স্থ শ্রাট

অকুসরণ করা যাক্।

প্ররাপতি কপ্রপের তৃই স্ত্রী, কক্র ও বিনতা। কক্র হুইতে সর্পাণ উৎপন্ন হয়। বিনতা অরুণ ও গরুড়ের জন্মদান করেন। পুত্রদের অবাধ্যতায় কুদ্ধ হুইয়া কক্র ভাহাদিগক্রে এই বলিয়া অভিশপ্ত করেন যে, তাঁহারা মহারাজ ক্রমেজরের সর্প-যজ্ঞে ধ্বংস প্রাপ্ত হুইবে। মাতার নিকট এই অভিশাপ লাভ করিয়া সর্পাণ মন্ত্রণা করিতে বসিল। ইলাপত্র নামক এক নাগপ্রধান বলিলেন যে, তিনি দৈবক্রমে অবগত্ত হুইয়াছেন যে, ভয়েজয়ের সর্প্রজেণ আতিক নামক এক মুলি আবিভৃতি হুইরা সর্পাণকে স্ক্রনাশ হুইডেরক্ষা কার্যনে চাহাদের যে লরংকার নামী এক ভর্নিনী আছে, আন্তিক ক্ষুনি এই লরংকারর গর্ভে জন্মগ্রহণ করিবেন। এই জরং-কারককে লরংকার নামক একঃ মুনিই থিবাহ করিবেন। মাগরাল বান্দ্রকীকে ইলাপত্ত অন্থরোধ করিলেন যে, জরংকারু বুনির আগমন অপেকা করিয়া যেন এই ভগিনীকে স্বত্তে প্রিরক্ষণ করা হয়।

ব্দর্থকারু মুনি এক ভব্যুরে ব্রহ্মণ গোরের অন্তর্গত ছিলেন। ইহারা 'বেখানে স্থা। সেখানেই আবাস' এই **ন্দ্রীতি অবশ্বন করিরা তীর্ণে তীর্থে ঘুরিয়া বেড়াইত।** বিবাহ 😘 वरभव्रका बाह्मना भर्म शास्त्रक गृश्स्त्रहे व्यवश्र कर्त्वता । अब्रद्भाक मूनि किन्नु अमिरक काम मिनडे मरनारयांश रमन नारे। **জীহার নিরপভাতা তেতু পূর্বপ্**রুষগণ স্বর্গন্নত হইতেছেন। 🌉 কমিন এবস্থাকার এক দুখা দেখিয়া তিনি বিবাহ ও बर्भत्रकात क्या उरुक् इहेरलम । কিন্ত বেছায় কডা মেলালের ভবসুরে মুনি কিনা, তিনি ঠিক করিলেন যে, সহধর্মিণী সমনামী ন। হইলে তিনি বিবাহ করিবেন না। चिद् ममनामीरे नरह, खोठि व्यावात अमन २९वा ठारे (य. कथाव या कार्या कथन ७ रान डाँहात कि हुमाल अनरशाय छेरशानन **না করে। করিবা মা**ত্র তাহাকে তিনি পরিত্যাগ ক'রবেন। निर्मित्रीं। हित्र खत्रनार नायात्र क्रजा अ किस्ति मात्री वाकित्वन ना. **ক্তার পিতৃকুদ দে** ভার গ্রহণ করিতে বাধ্য থাকবেন। **একেবারে কু'লয়া মে**লের নৈকুত্ব কুলান সন্থান আর কি ।

ভার হইত। কিন্তু বাজুলীতো নালুকার রাজার মেলা ভার হইত। কিন্তু বাজুলীতো নালুকার রাজারে তাঁহার ভারিবালী অরৎকারকে ধারলা তৈরলা হটলাই ছিলেন। বাজুলীর চরগল নিয়া ভাঁহাকে জরৎকার সুনির আনির্ভান এবং বিবাহমান্তা নিমন অব্যাহ করাইবালার ভিনি ভালিনী লইবা ভারিবার হইলেন এবং মুনিকে সম্প্রেনা করিতে উন্নত হটলেন। ভারৎকার মধ্যন জানিতে পাত্রিবান ধ্যে, কন্তা ভাহার সনামী এবং কন্তাপক ওলোর ব্যান্ত স্তেই স্বীক্ষত অভ্যান, তথন অবং কন্তাপক ওলোর ব্যান্ত স্তেইই স্বীক্ষত অভ্যান, তথন

किङ्क्षित बानरम उ निक्रशक्तराई कार्षित। एउरकाक

প্রাণপণে পতির সেবা শুঞ্জবা করেন, মুনিও রাজভোগ থাক দান খুমান। ক্রমে জরংকার গর্ভবতী হইলেন। এমন সময় একদিন এক বিপত্তি সংখ্টিত হইল। সন্ধা বহিয়া যায় এবং উপাসনা ও সন্ধা। বন্দনার সময় অভিক্রান্ত হইর। যায় দেখিয়া নাগভাগনী স্বামীকে খুম হইতে ডাকিয়া উঠাইলেন। কি, এতবড় স্বাম্পন্ধা! সহধ্যিণী হইয়া পতিদেবভার নিজায় ব্যাখাত! মুনিভো রাগিয়া আগুন। তথনই তিনি পত্নীকে পরিভাগ করিয়া বনে চলিলেন। নাগভাগনীর কাত্রর ক্রমনে তাঁহার পাষাণ হলম গলিল না। গর্ভে সন্ধান আছে কি না, এই প্রশ্নের উত্তরে তিনি সংক্রমেণ মাত্র বলিলেন 'অন্তি'। তাই সন্ধানের নাম হইল 'আন্তিক'। মুনি বনে চলিয়া গোলেন। জরংকার্কর স্বথের হাট ভালিয়া গোল। তাঁহার সন্তান আন্তিক মুনি জন্মেজ্বের সপ্রক্রের নাগগণের প্রাণ ভিক্ষা করিয়া নাগগণকে আমুল ধ্বংস হইতে রক্ষা করিলেন।

এই তো নেল আন্তিক মুনির কাহিনী। নাগগণ যে সাপ
নহে, মহাশ্র জাতিরই এক শাপা, ইহা বোপ হয় বিশেষ করিয়া
না বলিজেও চলে। মহাভারতথানা পড়িলে বুঝা যার যে,
এই জাতি ক্ষমতা ও সম্পাদে বড় নগণ্য ছিল না। ভারতে
আ্যা উলানবেশ স্থাপনকালে পদে পদে আর্যাপণের এই
নাগজাতির সহিত হজার উপস্থিত হর্যাছিল। জন্মেরস্কের
স্থা যতের সরল ব্যাগা এই দে, মহারাজ জন্মেরস্কেরস্কার করে। ব্যাগালকে একেলারে নির্মাণ করিবার জন্ম
একটা বিশেষ রক্ষম চেন্নী হর্যাছিল। কলে উত্তরাপথের
আবিকার আন্যাগলকে ছাড়িয়া দিয়া নাগগণ ভারতবর্ষের
প্রভান্ত লাকেল সমূহে ঘট্যা আন্তার প্রহণ করে। আসামের
নাগলকাত, মলিপুর রাজ্য, গলার মুখের উপদ্বীপ বমৃহ, কান্মীর,
দাজিলাতো লগগণের প্রধান আশার স্থান হুট্যা উঠে।

নাগ জাতিকে যে থাবাগণ ছচ্চক দেখিতে পারিতেন না, মহাভাবতের পছ্ছানে তাথার পরিচয় আছে। নাগবংশের ভেষ্ঠ মহাল্লাগণ পর্যাস্থ্ আর্গাগণের নিকট বলোচ্ছে সম্মান প্রাপ্ত হুইতেন না। ঐতরেয় প্রাক্ষণের ষ্ঠ প্রিক্ষার ২৬শ শ্ব অর্থা ভাগে ইহার একটি উদাহরণ আছে। কক্ষর প্র অর্থা নামে এক দর্শপ্র ছিলেন। তিনি বৈশিক্ষ যজের একটি অসম্পূর্ণ অঙ্গের জ্বটী সংশোধন করিয়াছিলেন। তিনি বৈশিক্ষ যজের একটি অসম্পূর্ণ অঙ্গের জ্বটী সংশোধন করিয়াছিলেন। তিনি যে পথে যাতারাত করিতেন, মে পথ 'অর্থা দোপদপ্রী' নামে বিখ্যাত ইইয়াছিলে। কিন্তু এত খ্যাতি সত্ত্বেও চোধ না বাঁধিয়া ভাগাকে যজে হানে নেওয়া হটত না। পাছে উহার বিষদৃষ্টিতে আগ্রিদের পবিত্র সোম নাই ইইয়া যায়! এই স্থানে উল্লেখ করা ক্ষণাস্থিক নতে যে, মহাভারতেও অর্থানে এক নাগের উর্থেখ পাওয়া যায়। তিনি মপ্রের অধিবাদী ছিলেন। মারও একটি বিষয় এথানে লক্ষের যোগ্য এই যে, অতিপ্রাচন উত্রেখ সাজ্যা হায়। কিন মপ্রের অধিবাদী ছিলেন। মারও একটি বিষয় এথানে লক্ষের যোগ্য এই যে, অতিপ্রাচন উত্রেখ সাজ্য হায়েণেও অক্ষুদ্ধে কজ্যর পূর্ব বলিয়া গারিছিত করান হইয়াছোঁ। মহাভারতের কজ্যে ইইন্ডে নাণ গের জ্যা কাহিনীর মৃণ্য যে কত প্রাচীন, ইহা ভাহারই লাক্ষ্য প্রধান করে।

অথন মূল বিষয়ের ভাতুসরল করা ঘাউক। মহাভারতের আছিক-কাহিনীতে জরৎকারর দেবীদের কোন উল্লেখই নাই। তিনি যে নগেগণের দেবী, নাগনাতা, দর্পরাজী, মহাজ্ঞানশালিনী বা বিষহরী, এমন কোন কথাই উহাতে নাই। তাঁহার মনসা নাম যে মহাভারতে নাই, পুর্বেই ভাহার উল্লেখ করিয়াছি। নাগমাতা বালতে মহাভারতে সর্বনাই কজেকে বুঝাইয়াছে \*। প্রাহ্মণ সমূহে সপ্রাজী শক্ষাটি আছে (ঐতরেয় এবাহা৪ ৪, শতপথ ১ ৪ ২৯) ঝায়েনর মন্দা মগুলের ১৮৯ সংখ্যক অকের মন্ত্রান্ত্রীর নাম সর্পরাজী। সায়ন বলেন এই সর্পরাজী পুলিবী। তিনিই সর্পণ বা গমনের রাজী। তিনি এক দেবীরূপ ধারণ করিয়া ক্রেন্সা ত্রান্ত্রীনা ভালিন আর একটি টীকাকার মহীবর আর ও একটু আগাইয়া ছিলেন। আর একটি টীকাকার মহীবর আর ও একটু আগাইয়া

এখন শক্তরজ্ম খুলিয়া দেখুন, অভিধানকার জ্ঞাধর মনস্থ শব্দের প্রণায়ে প্রথমেই দিয়াছেন কজের নাম!

এই সকল প্রমাণ হইতে সর্পদের দেবী, সর্পমাতা **বা**দর্শনিক্তী শব্দগুলি দারা প্রথম যে কলে কে বুঝাইড, জরংকারককে নহে, ইহা পরিশার বুঝা যাইতেছে। সর্পদেবীর
মনসা নাম এবং নাগভাগনী জরংকার সহিত তাহার
অভিরয় সংভাপন প্রবর্তী কালের ঘটনা।

भगगा (मदी:क लाग्या श्रुद्धानकात्रशम भश विशास शास्त्रियान ছিলেন। প্রথম সম্প্রা, নামটি কোণা হুইতে আদিল, ভাহার কিছুই ঠিক নাই। প্রাচীন সাহিত্যে এই নাম নাই পুলেই বালগ্ৰাছ। পাণিনিতে এই নাম নাই। অমহকোমে প্রাক্ত নাই! মধ্য ধুনের কোন ও পুরাণকারগণের সময়ে নানটি এবং সমুবতঃ পুলা পদ্ধতি প্রোত্তিত হইয়া গিয়াছে অর্থাৎ মনদা দেবী জোর করিয়া আগা স্থাজে চুকিরা পড়িরাছেন এবং নিতাপারচিত হইয়া পড়িয়ছেন ৷ তথ্য 'ইষ্টং পিন্টি ইভি ইষ্ট্রপিটং', ইত্যাকার প্রণাণীতে তাঁহাৰে ম্ব্যাথ্যা পুরাণ শান্তানিতে সম্মানে গ্রহণ করিয়া ফেলা ভিট্ন গতান্তর ছিল না। তাই তাঁহারা ব্যাথ্যা করিলেম,মনমা নাম व्यक्त नगारम निक्ष "धनमा ऋष्टे। त्वती क्यारभन देखि ननमा দেবী:''। অলুক সমাসে ভৃত্যারাম্ভ পদের লোপ হইল মা ভাই শক্ষাটি হইল মমসাদেবী। এই অর্থের বিশন্ধ ব্যাধ্য পাই প্রথম ব্রহ্মবৈবর্ত পুরাণে। করিয়াছেন-

কল্পা সা চ ভগৰতী কল্পপন্ত চ মানসী।
তেনেয়ং মনসাদেবী মনসা ধাচ দীবাজি।
মনসা ধাায়তে যা বা প্রমাত্মানমীশ্রী।
তেন সা মনসা দেবী ধাৈগেন তেম দীবাজি।

লক্ষ্য করিয়া দেখিবেন, এই চারিছত্তে মনসা নামের জিন্দ রক্ম ব্যাখ্যা রহিয়াছে। (১) কপ্তপের মন দারা ক্ষে, ভাই তিনি মনসা। (২) মন দারা তিনি দীপ্তি পান, ভাই ভিন্দি মনসা। (৩) মনদারা তিনি পরবান্ধার ধ্যার করেব, তাই তিনি মনসা।

এক উপাথানে নাগমাতার নাম স্বরদা, কিন্তু তাহার

 এই আন্তিক কাহিনীর নাগমাতার সহিত কোন সম্পর্কই নাই ॥

 পঞ্চিত শ্রীযুক্ত বিধুশেষর শান্ত্রী অন্দিত এবং বন্ধীয় দাহিত্য

 প্রিরহং প্রকাশিত শতপথ ব্রাহ্মণ, বিতীয় বস্তু। পৃষ্ঠা ২৮-২৯।

শেশ ছইটা অর্থে পুঁত ধরিবার কিছুই নাই, কারণ অর্থ ছইটা ইংরাজীতে বাকে বলে Colourless । কিছু মনসা কণাপের মানস শৃষ্টি এই অর্থে গোলমাল রহিয়তে বলিরা মনে হইজেছে । মানসস্টিতে যতদ্র জানি, মাতার আবশাকতা বাকে না । কিছু মহাভারতে দেখা বার বে, সমস্ত নাগগণই কজ হইতে প্রস্ত হইরাছিল । নাগ ভগিনী মনসাও কজগর্ভপ্রাতা, অঞ্জবিধ কোন স্কুস্পষ্ট উব্জির অভাবে তাহাই ধরিয়া নিতে হইবে । কাজেই মনসা কণ্যপের আমানী, এই অর্থ খুব সুসক্ত হইরাছে বলিরা মনে হয় না । কাজেই দেখা বাইতেছে বে, প্রথম সমস্তার সমাধান আমানকাক্তিনির্গরে অনেক গলদ রহিয়া গিরাছে ।

ভাহার পরে দেবীর ব্যক্তিও নির্ণর। ব্রাহ্মণ্য দেবসমাঞ্চ ব্রহ্মা বিষ্ণু মহেশ্বর শাসিত। ব্রাহ্মণ্য ধর্মের প্রায় সকল দেব শেবীকেই এই তিন শেবতার একজন না এক জনের কোঠার কেলিয়া দেওয়া যার। স্বন্সা দেবী কোন কোঠার পড়িবেন, ভাহার সমাধান কারতে প্রাণকারগণ বেল বিপদে পড়িয়া ছিলেন ভাহার প্রমাণ যথেষ্ট সংগ্রহ করা ধ্যর। ব্রহ্মবৈবর্ত্ত প্রাণের উপাধ্যান, দেশ প্রচলিত মনসার ভাসান এবং মনসার প্রান ভাগ আলোচনা করিলেই প্রাণকারগণের বিভিন্ন করিলেই স্বাণকারগণের বিভিন্ন

মনসা দেখীর প্রচলিত ধ্যানটি এই :—

উ দেবীম্বামহীনাং শশধরবদনাং চারুকান্তিং বদালাং
হংসাক্রচাম্দারাম্ক শিতবসনাং সর্বাদাং সর্বাহিব ।

স্কোজাং মভিতালীং কমকমণিগণৈর্নাগরত্বৈরনেকৈ
বিশেষহং সাষ্টনাগাম্কক্টব্গলাং ঘোগিনীং কামরূপাম্ ॥

এই খ্যানে প্রধান সন্দোর্ব ঘোগ্য বিষয় এই বে, দেবীকে

কংসাক্রচা বলিরা বর্বনা করা হইরাছে । হিলুমাত্রেই জানেন
বে,হংস ব্রহ্মা ও ব্রহ্মাণী বা সরস্বাচীর বাহন । হংসার্ক্ষা দেবী
বিল্লেই বুঝিতে হইবে বে,এই বেবী ব্রহ্মাণীর কোন না কোন
আভারত্বের । কাকেই এই খ্যানে দেবী ব্রহ্মাণী বা ব্রহ্মাণী
করা বলিরা পরিক্রিতা । এই ক্রনা তথ্ এই খ্যানেই

নহে, ব্ৰন্ধবৈৰ্তপুৰাণে **প্ৰাকৃত লগতে ধৰত বিকৃত লগতে বে** উল্লিখিত আছে :---

> স্কাভয় প্ৰদাং দেবীং ভ**ক্তাষ্ট্ৰাহকাত**গ্ৰাং। স্ক্ৰবিদ্যাপ্ৰদাং শাঝাং স্ক্ৰবিষ্টাৰিশাৱদাং॥

এই দক্ষিভাপ্ৰদা এবং দক্ষিভাবিশারদা বিশেষণ ছুইটি বিশেষ করিয়া সরস্থতী দেবীকেই কি শার্থ কয়াইয়া দের না ? মনসার অবিকল সরস্থতী দেবীর মত মৃত্তিও আবিষ্কৃত হইয়াছে, ভাচা পরে বর্ণিত চইবে।

নেবাকে শিবের কোঠার ফেলিবার উন্থমই সকলের অপেক্ষা বেশী হইরাছিল। মনসার ভাসানেও সর্ব্বিত্ত দেবী শিব-ছহিতা বলিয়া পরিচিতা। ধরস্তবিকৃত উক্ত তবেই আছে।

> নথঃ কল্যপক্সারৈ বরদারে নথো নথঃ। নথঃ শক্ষরকলারৈ শক্ষরারে নযো নথঃ।

কশ্যপকভা বলিয়া পর মৃত্র্জেই দেবীকে শহরকভা বলা হইয়াছে: মনসার ভাসানে কশ্যপের নামগন্ধও নাই,ভাহাতে দেবী শহরকভা বলিয়াই পরিচিতা। ব্রহ্মবৈবর্জের প্রকৃতি বডের ৪৩শ অধ্যারে আছে।

শিবশিয়া চ সা দেবী তেন শৈবীতি কীর্তিতা।
এই থানেই মনগার দাদশ নাম আছে। যথা—জরংকারু
জগদেগারী, মনসা, শিদ্ধযোগিনী, বৈক্ষৰী, নাগভাষিনী,
শৈবী, নাগেশ্বরী, জরংকারুপ্রিয়া, আন্তিক্মাতা, বিষহ্রী,
মহাজ্ঞানযুতা, বিশ্বপৃঞ্জিতা।

শক্ষ্য করিয়া দেখিবেন, পুরাণকার কশ্যপ হইতে মনসায় উৎপত্তির কাহিনীও ফেলিতে পারেন নাই, কিন্তু মনসাকে শৈবী বলিয়া পরিচিত করিবার ঝোঁকটাও তাঁহার কত বেশী। শক্ষর কন্য। বলিয়াই আবার ব্যাখ্যা করিতেছেন, শক্ষরশিক্ষা, তাই শক্ষর কন্যা বলার কোন দোষ নাই।

মনসার ভাসান গুলি খাঁটি বাঙ্গালা দেশের সম্পত্তি
মনসাপুলাও যেমন, ভাসান গুলিও তেমনি, বাঙ্গালা দেশেই
গড়িয়া উঠিয়াছিল বলিয়া বোধ হয়। ভাসানকারগণ আর
দোমন লোআশা রাথেন নাই। তাঁহারা কশাপের নামগুলন
নাই। তাঁহারা পরিকার লিথিয়াছেন, শ্বরবীর্য এক্সিন

শক্ষপত্তি তাক হইরাছিল। তাহা পদ্মানক তেদ করিয়া লাগনোকে বাইরা উপস্থিত হইল। নাগরাক বাসুকী তাহা দেখিয়া কারিগর লাগাইয়া তাহা হইতে এক অপরপ দেবামৃত্তি গড়িয়া তুলিকেন এবং তাঁহাকে ভ্যাসমান যত্নে প্রতিপালন করিতে লাগিলেন। ইহার পরে মহাভারতের কাহিনীর লহিত অনেকটা মিল আছে। পদ্মবনে জন্ম বলিয়া দেবীর নাম হইল পদ্মা এবং মনসার ভাসানের নাম তাই পদ্মা পুরাণ। শক্ষা করিবেন যে, এমন কি ব্রক্ষবৈবর্তের হাদশ নামের মধ্যেও কেবীর ভাসান প্রচলিত পদ্মা নামটি নাই।

ুমনসাকে ব্রহ্মাণ্ডিও শৈবী করিবার চেন্তার পরিচয় আমরা দেখিশাম। তাঁহাকে বৈষ্ণবী বলিয়। পরিচিত করিবার চেন্তাও হইয়াছিল। উপরে উদ্ধৃত মনসার বাদশ নামের মধ্যে বৈষ্ণবী নামটিও আছে। তিনি বৈষ্ণবী হইলেন কেন ? ব্রহ্মবৈবর্ত্ত প্রাণে তাহারও ব্যাথ্যা দেওয়। আছে। তিনি কগুপের মানস কল্পা বটেন, কিন্তু শিবের শিল্পা। শিবের নিকট হইতে মহাজ্ঞান (সর্পরাজীর ব্রহ্মজ্ঞান লাভের কথা শ্বরণ করুন) শান্ত করিয়া ক্রফের আরাধনা করিছে শিব কর্তৃক আদিষ্ট হইয়াছিলেন। তিনি পৃদ্ধরে গিয়া ক্রফের আরাধনা করিয়া ক্রফের অমুগ্রহ লাভ করেন এবং কৃষ্ণকর্তৃক পৃঞ্জিতা হন। তাই তিনি বৈষ্ণবী।

ভাগানের উপাধান্টী আপনারা সকলেই বোধ হয় অবগত আছেন। শৈব চক্রসগুণাগরের নিকট হইতে পূজা আদার ভারতে দেবীর দারণ চেষ্টা করিতে হইরাছিল। এত চেষ্টা কেন ? না, চক্রসগুলাগর দেবীকে পূজা না কারণে দেবীর পূজা পৃথিবীতে প্রচারিত হয় না তাই। চক্রের স্ত্রী সনকা কিন্তু পাড়া প্রতিবেশীদিগের নিকট হইতে পূর্বেই মনসা পূজা শিথিরা আসিয়াছিল। কিন্তু চক্র মনসার ঘট কেলিরা দিতেন, সর্বাদা এমন তীমদর্শন হিস্তালের লাঠি লইরা স্বারতেন বে, তাহার ধার দিয়া যাইতেও মনসার ভরসা হইত না।

এখন পাঠকগণের নিকট ক্রেকটি 'ইযু' ধার্য্য করা ৢ বাইডেছে।

- >। বহাভারতে দেখা বায়, আর্যাতাড়িত নাগণণ প্রসার ব্ৰেথ জলামর বন্ধীপ সমূহে এবং নাপপর্বত, মণিপুর ইভ্যাভি-প্রতান্ত প্রদেশে আসিয়া আশ্রুষ লইয়াছিলেন।
- ২। সর্প নাগজাতির totem। মণিপুররাজ অভিনেশিই
  পূর্বে এখনও পাথজব নামক পূর্বপুরুষের প্রতিনিধিরূপে পূজিত
  নাগরাজের মন্দিরে যাইয়া তাহাকে সম্মান প্রদর্শন করিরা
  ভাকেন।\*
- ৩। মনসংপুজা বাজালা দেশের নিজস্ব পুরা। মনসা-ভাসান সাহিত্যও বাজালা দেশের নিজস্ব।
- ৪। ভাসানের গল্লটি হইতে দেখা ধার, মনসা প্রথমে বাঙ্গালার আর্য্যসমাজে পূজা পাইতেন না। ইতর জনসমূহ এবং স্থানোকগণ প্রথমে তাহার পূঞার পক্ষপাতী হব, এবং অনেক চেষ্টার পরে মনসা আর্য্য দেবসমাজে স্থান লাভ করেন।
- ৫। প্রাচীন সংস্কৃত সাহিত্যে মনসার উল্লেখ নাই।
  মধাষুগের সাহিত্যে আছে, তাহাদের মধ্যে ব্রন্ধবৈবর্ত্ত পুরাপেই
  বিশ্বরূপে আছে। কিন্তু মনসার ব্যুৎপত্তি ও বাজিত নির্বর্তে
  নানা অসম্ভতি বিগুমান।

এই সকল, ট্যু হইতে স্পন্নত সিদ্ধান্ত বোধ হয় এই
বে, গলাপ্রবাহান্তরে উপনিবিষ্ট নাগ জাতির এক উপাক্তা
দেবী ছিলেন, খুব সন্তবতঃ তাঁহার নাম ছিল মনসা।
বঙ্গদেশে যখন আর্যাগণের বিফার ঘটিল, তখন এই নাগদেবী
ক্রমণঃ আর্যা সমাজে প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে লাগিলেন।
অবশেষে তিনি যখন এতটা প্রতিষ্ঠিত হইয়া গেলেন বে,
তাঁহাকে আর গ্রাহ্ম না করিলে চলে না, তখন শান্তকারগণ
তাঁহার নামের ব্যাকরণসম্মত এবং প্রাণসম্মত ব্যাখ্যা বাহির
করিলেন। প্রথমে নাগমাতা কক্রর সহিত তাঁহার অভিরম্ব
প্রতিপাদিত হইয়াছিল। কিন্তু পরিশেষে তিনি নাগতিসিনী
জরৎকার্যর সহিত অভির বলিয়া প্রতিপাদিত হন। কিন্তু
ক্রোড়াতাড়ার চিক্ত্রলি এখনও স্থাত্ত হয় নাই। তিনি কথনও

<sup>•</sup> Vide—"The Naga Tribes of Manipur" and "The Meitheis" by Hodgson.

बाबाने, क्यान देवस्वो, क्यान वा देनते वालया शतिहरू অক্টতের। অন্যশঃ শেষপ্রিচয়টাই প্রবল হইয়া উঠে। বেদ **হরসত্রান্মণেক্ত দর্পরাজীর মত** তিনি ত্রন্মজ্ঞান সা মহাজ্ঞানশালিনী ৰলিকাণ বোৰিত হল। তিনি কেন যে ত্ৰহ্মাণী বা সরস্বতীর শহিত অভিন্ন প্রতিপাদিত হুইয়াছিলেন অথব্য বেদে তাহারও अक्षि एक व किशा शाहेशाछ ।

অথম বেদে (> -- ৪-- ১৪) একটি কিবাতবালার উল্লেখ ৰেখিতে পাট। এই কিবাতবালা বিষ্ণুৱী। অৰ্থাৎ ইনি লপুরুষের প্রতিষেধক ঔষণ জানেন। সুখর্ণ খুস্তা দারা ইনি পর্বভের সাহদেশ হইতে এই ঔষপ থুঁড়িয়া বাহির করেন। **অথর্ম বেলে ১০—৪—২৪** তে এই বালিকাকেই বোধ ্**ৰইডেছে ভাউডী বা স্বতাচী** বলা হইয়াছে। স্বভাচী সরস্বতীর **আরি এক নাম। প্রাণকার**গণ বোধ হয় মন্দার শাস্ত্রীয় ন্যাথা পুঁলিবার সময় এই বিষ্ণুরী কিরাত বালিকার সন্ধান পাইয়া ইহাকে বিষহরী মনদার সহিত্ত অভিয় কলনা করিয়া-্ভিলেন। কিয়াত বালিকা ও মতাচী এক। তেটো সরম্বতী। कार मनगढ मध्यको।

মনসাপুলা এখনও প্রভোক হিন্দু পরিবারে অফুটিত **ছইয়া থাকে। বহু ক**বি মনসার গান রচনা করিয়াছিলেন। **ৈটি ছন্যাদের ৪০ বছর আ**গ্রেকার লোক। ভারার সময়েও **এনলা পুঞার বিশেষ ধুমধাম ছিল। যথা, চৈতন্য ভাগবতকারের** শেই পরিচিত উক্তি.—

> মঙ্গল চণ্ডীর গীতে করে জাগরণ। দক্ত করি 'ব্ধহ্রা পুত্রে কোনজন।

ভাগান গানের তুইজন ক'বই এই অঞ্চলে বিশেষ প্রসিদ। ্ৰিয়ন্ত্ৰলালংহের নারায়ণ দেব \* এবং ব্রিশাল কুল্লনী গৈলার বিশ্বর গুপ্ত। বিভয় গুপ্তের পুথির প্রারম্ভে ডিনি করেকটি

• চাৰা সাহিত্য পরিষদের সভা শ্রীযুক্ত উপেক্ত চক্ত গুৰু ৰি এ, বি টি মহোদ্য নারায়ণ দেবের পুথির চারি পাঁচখানি হুছালাল মিলাইয়া একটি আদর্শ পুথি তৈয়ার করিয়া ঢাকা পঞ্জিতে উপহার দিয়া গ্রিয়াছেন॥ নারায়ণ দেবের পুথি মুহুমুসিংহ ১ইজেও ছাপা হইয়াছিল, তাহা আমার নিকট., ভাসানের একথানা আদর্শ পুথি প্রকাশিত করেন, তবে বেশু नाहि ।

क्था निशि वद्य क्तिया वाधिया निवाहत, मनमा शुकात ইতিহাসের পঞ্চে কথা কয়টি অতি প্রয়োজনীর। কথা কয়টি वहें :--

> মুর্থে র'চল গীত না জানে মাহাত্মা। প্রথমে রচিল গীত কাণা হরিদত্তে। ছবিদভের যত গাঁত লুপ্ত হইল কালে। যোড়। গাঁথ। নাহি কিছু ভাবে মোরে ছলে ॥ কথার সহাত নাই নাহিক **প্রস্তর**। এক গাইতে আর গায় নাহি মিত্রাকর ম গীতে মতি না দেৱ কেছ মিছা লাফকাল। দেখিয়া গুলিয়া মোর উপঙ্গে বেতাল ॥

এই পদগুলি হটতে দেখা যায় যে মনসা গানের আছি রচয়িতা কাণা হরিদত্ত। তিনি মূর্থ বলিয়া অভিহিত হইয়াছেন, বোধ হর বিশেষ লেখা পড়া জানিতেন না। বিজয় গুপ্ত প্রান্ধের : ৫শ শতকের লোক। বিজয় গুপ্তের ভাষানের মুদ্রিত পুগতে ধরিদত্তের সঙ্গীতভাঙ্গা একটি সঙ্গীত স্থান পাইয়াছে, যদিও বিজয়গুণোর সময়ে ছরিদভের গীত লুপ্ত প্রায় হইরাছে, সবুও বেজর গুপ্তের পুথিতে হরিদভের একটি পদ शाह्यारक मान ६३ त्य, लात्क ज्यन ७ रहिम ख्व इरे अकि পদ মনে ক'ব্রা বলিতে পারিত। একাডাজন জীযুক্ত রার সাহেব দীনেশ চক্র সেন মহাশগ্ন তাই অনুমান করেন যে হরিদত্ত বিজয় গণ্ডের ২৫০।৩০০ বংগর পুর্বেকার লোক হইবেন। ইছা সুগঙ্গত অনুমান। ভাগানের আদি কবি হরিদত্ত বোগ হয় খুপ্তাব্দের একাদশ দ্বাদশ শতকেই প্রথম ভাসান গান রচনা করিয়াছিলেন। 'মুর্থ' হরিদত্তের গানের জনপ্রিয়ভার পুর পণ্ডিত ব্যক্তিগণ তাহার পদান্তুসরণ করিতে দ্বিধা বোধ करत्रन नाहे।

कान नरवानिक भूका भद्रकि, स्वीत माराश्रायहरू भन ইত্যাদি দেশের মধ্যে প্রতিষ্ঠিত হইলেই পরে গীতরচয়িতাগণ

মুত্রিত গুম্ব এবং উপেক্স বাবু কর্ত্তক প্রস্তুত আন্দর্শ পুরি. এই ছুই পুথি মিলাইয়া ঢাকা পরিষদ যদি নারায়ণ দেবের

আরম্ভ করেন। কাজেই দেবীর পূজার প্রথম প্রচারে এবং তাঁহার মাহাত্ম বিস্তারের জন্ত সীতের পালা রচনি। করিতে তাঁহার মাহাত্ম বিস্তারের জন্ত সীতের পালা রচনিতাগণের আবির্চাবের মধ্যে ১৫০।২০০ বৎসরের ব্যবহান গাক। সম্ভবপর। এই হিসাবে পৃষ্টের নবম দশম শতাকো মনসা দেবীর পূজা বাজনার প্রথম প্রচারিত হইরাছিল বলিয়া ধরিতে হইবে। অবশ্য এগুলি সমস্ভই অনুমানের হিসাব, কমন্ত হইতে পারে, বেশীও হইতে পারে। তবে তুইটি প্রমাণে এই অনুমান সত্যের কাছাকাছি পৌছিয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছে।

মনসামপ্রতের গল্লটি সব কবির পালারই এক!
শিবভক্ত সওলাগররাক চক্র 'চ্যাঙ্মুড়ী' কানী পদ্মাবতীর পূজা
করিবেন না, মনসা দেবীও তাঁহাকে পূজা না করাইয়! ছাড়িবেন না, কারণ চক্র পূজা না করিবে তাঁহার পূজা দেশময়
প্রচারিত হয় না। প্রভিবেশীদের নিকট শিথিয়া চক্রের স্ত্রী
সনকা মনসা দেবীর ঘট স্থাপন কারয়া পূজা আরম্ভ করিয়াছে,
কিন্তু চক্রকে নোয়াইতে দেবীর অনেক্থানি ষড়য়য়্ম করিতে
হইয়াছিল। অবশেষে পুত্রবধু বেত্লার অন্নয়ে চক্র অনিক্রায়
ৰাম হাতে মনসা দেবীর পূজা করিলেন।

এই চন্দ্র কে? ইন সওদাগর এবং রাজা। বিক্রমপুর
চন্দ্রবংশের কথা মনে পড়ে না কি ? বাখরগঞ্জ মঞ্চলকে পুরে
চন্দ্রবীপ বলিত, এখনও বলে। বিক্রমপুর রাজ শ্রীচন্দ্র দেবের
রামপাল ভাষ্রশাসন হইতে জানিতে পারি, শ্রীচন্দ্রর পুরুপুরুষগণ চন্দ্রবীপেই প্রথম প্রতিটা লাভ করেন। শ্রীচন্দ্রর প্রপ্রাক্ত সমর মোটামুটি ১৭৫—১০০৩খুটাক বলিয়া প্রায় সাঠিকরণে
নির্দ্দেশ করা যায়। বিজয় গুপ্ত প্রাচীন চন্দ্রবীপের মন্তর্গত ভূভাগে বলিবাহ কবিতা লিখিয়াছেন, ভাষার আশোপাশেই চালাইর বিল, উজানী ইত্যাদি বন্ধনান আছে। উজানাতে এখনও এক জামধার বংশ আছে, ভাষাদিগকে বহু প্রাচীন কাল হইতেই লোকে উজানার রাজা বলে। উজানা হইতে ক্ছিদিন ইইল এক আত স্কোর্ক্রমূর্তিও একখনা মারেচার্শি

**এই मक्ल** मिश्री এই মনে হয় मा कि या, ভাসানের চক্র

সভাগরের গরে বদি কিছু সভা থাকে তবে বুব সন্তবতঃ এই
চক্র পূর্ববেল যে চক্র উপাধীধারী রংশ রাজন্ব করিয়া গিরাছে,
সেই বংশেরই কেই হইবেন। হইছে পারে, যে এচিক্রের
ভিনথানা ভাম শাসন আরু পর্যন্ত আবৈদ্ধত হইয়াছে, ভিনিই
ভাসানের চক্র সভাগর। ভিনিই হয়ত মনসা পূজার প্রচাকে
প্রবল বাধা দিয়াছিলেন। অবশেষে তাঁহার প্রহণের সঙ্গে সঙ্গে
মনসা পূজা সারা দেশমর শাস্ত্র সঙ্গত ভাবে গৃহীত হইয়া বার।
ভাসানের চক্র সভাগর শিবভক্ত বালয়া পরিচিত আরু এচকে
দেব বিখ্যাত বৌদ্ধ ছিলেন। কিন্তু দেওলি বাড়ী হইছে প্রম
বৌদ্ধ মহারাজ দেবগরগের মহিবী প্রম বুজাপাসিক। মহারাণী
প্রভাগতীপ্রিত সক্ষাণী মৃত্তির স্থাবিদ্ধার হইতে স্থমাণ হইরা
গিয়াছে যে, এই যুগে বৃদ্ধে আর শিবে বন্ধ প্রভেদ ছিল না।

>-->> भ शृष्टे। त्मरे ए मनमा शृक्षा विटमं क त्रिया वरक প্রতিষ্ঠা লাভ করে তাহার আর একটি প্রমাণ পাছে। দেশ-ময় যত প্রাচীন মনদামূর্ত্তি পাওয়া গিয়াছে, ভাহাদের কোনটি পাধরে কোনটি বা অপ্তধাতুর। উহাদের কোনটিই > শতাক্ষী व्यालका भूत्रामा विषया ताथ स्य ना । त्रप्रामभूत्व विष्क প্রেশনাথ মহলানাবশ মহাশ্রের কোটাস্বর থননের কথা হরত আপনাদের অনেকেরই মনে পাকিতে পারে। ধনিত পুরুষ্ট রঘুরামপুরের বিখ্যাত হরিশ্চক্রের দীবি হইতে সামার পুরী দক্ষিণ পশ্চিম কোণে অবভিত্ত। ঐ পুকুর হইতে মনসা পুৰারি ঘট, মাটির ঘণ্টা ইত্যাদি এবং ঐ সঙ্গেই কতক বৌদ্ধ কতক ব্ৰাহ্মণা মু ও বাহির হয়। তাহাদের হানক গুলিই এখন ঢাক মিউজিয়নে আছে। ঐ নঙ্গে ভিম্বাক্কৃতি, চেপ্টা, পেড়ো মাটির তুইখানা ফলক পাওখা গিয়াছিল। তা**হাদের উপরে খানা**-সনস্থ বুল্লমূভি উৎকীৰ্ণ, মৃভিন্ন নীচে ১০-->১ শ**ভানীর বলা**-কৰে "যে দ্বা কেতু গভৰা" ইতাটি **স্থপরিচিত বৌদ মন্ত** উৎকীর্ব। ঠিক যেমন আজকাল ধামগাই**এর মাধবের ছোট** ুছোট মূর্ত্তি কুমাররা ধামরাই এর রণের সময় বি**ক্রী করে. এগুলিও** জ কেমলি। এই বুদ ফণক গুলির বয়স**ও যাহা, মনসা প্রার** উপকরণ ঐ পুছরিণী হটতে যাহা বাহির হইয়াছিল, আহাদের ব্যুদ কম বেশী ভাষাই হইবে।

কিছু দিন পূর্ব্ধে বরেন্দ্র-মন্ত্রসদান-সমিতি বিগাত শহুম সহরের পূক্রিণীটর একাংশ পুঁড়িরাছিলেন। এই দীবির জীরেই বিজয় সেন প্রতিষ্টিত বিগাত প্রভাৱেশ্বর দিবের মন্দির ছিল এবং ইছার পারে ইভন্ততঃ বিক্ষিপ্ত ভয়াবশেবের মধ্যেই বিজয় সেনের অপরিচিত দেওপাড়া প্রশন্তি পাওরা সিয়াছিল। আই পুকুর পুঁড়িরা অক্তাক্ত বহু দেবদেবীর মৃত্তির মধ্যে সমিতি জরেক্থানা মনসার মৃত্তি এবং ইনসার ঘটও পাইয়াছেন। এই ক্লির ও দীবি প্রতিষ্ঠার সন ভারিথ ঠিক নাই কিছু নিশ্চরই

রখুরামপুর ও পছ্ম সহর হইতে প্রাপ্ত মনসাপুরার
উপক্ষরগঞ্জী যথন ১০-১১ শতাকীর, মৃর্ত্তি যাহা পাওরা
পিরাছে তাহাও হথন ঐ সমরেরই, মনসার ভাসানের নারক
উপ্ত বে ঐতিহাসিক ঐতিন্দের সহিত অভিন্ন বলিয়া অমুমান
করি, তিনিও বথন ১০ম শতাকীরই লোক তথন ইহাই কি
সির্ভাত্ত হয় না বে মনসা পুরার প্রথম প্রচার পৃত্তীক্ষের
ইম-১০ম শতকেই হইয়াছিল ?

মনসা দেবীর যে সকল প্রাচীন প্রস্তরের মৃর্ভি বরেক্তে ও
ক্রিন্দ পাওরা গিরাছে তাহা সাধারণতঃ এইরপ। দেবী ডান
শা বুলাইরা এবং বা পা শুটাইরা পরাসনে উপবিষ্ঠা। মাধার
ক্রিন্দের স্থা নাগছত্ত্ব। দক্ষিণ হাতে বর, কাম্যফল; বাম হাতে
ক্রিন্দিনে একটি অন্থিসার দাড়াওরালা মৃর্ভি,বামে একটি মৃকুটান্থিত
ক্রিন্দ মৃত্তি। দক্ষিণেরটি বোধ হয় অরৎকাঞ্চ। তপসা অরৎক্রেন্দের শারীরং ইতি অরৎকাঞ্চঃ, তপভান্বারা থিনি
ক্রিন্দ্র শারীরংক জড়াগ্রস্ত করিয়াছিলেন, তিনিই অরৎকাঞ্চ।
ক্রেন্দ্র ক্রিন্দ্র কোন উল্লেখ নাই। কোন কোন মৃর্ভিতে একটি
ক্রেন্দ্র কার্যকার্য্য মণ্ডিত কলসী মৃর্ভির নীচে দেখা যায়।
ক্রিন্সা পূজার ঘটের প্রাধান্ত প্রাচীনকাল হইতেই আছে।
ক্রিন্ন কোন মৃর্ভিতে দ্রেনীর পিছনে মনসা পূজার অপরিহার্য্য

রাজগাণী বিউলিগ্নযে একিড কোন কোন মনগা সৃক্তিতে

দেবীর মাধার উপরে মাত্র পাঁচটি নাগের ছাত্র দেবা বাই। বিশ্বী
দেবীর বর্ণনার অনেক বারগারই দেবা বাই যে ভিনি "গাঁইনাগা"। পঞ্চনাগছত্র মৃত্তি গুলিতে দেবা বাইবে, একটি নাগি
সোজা হইরা কণা ভুলিরা দেবীর দক্ষিণ পার্যে দাঁড়াইরা আছে।
আর একটি বাম বাহুতে জড়াইরা আছে। আর একটিকে
দেবী বাম হাতে ধরিরা আছেন। নাগছত্ত্রের পাঁচটি এবং এই
ভিনটিকে লইরা বোধ হর আট সংখ্যা পুরার্থ ইইরাছে।

এ পর্যান্ত খনসার চারিটি ধ্যান আমি বাহির করিতে भाक्तिमाहि। भूकित्न इत्रज बात्र भावमा गाहेता। अ দেবীমন্বামহীনাং ইত্যাদি বেই খানে আএকাল মনসার প্রা **इत्र जाहा शुर्लारे जुलिया नियाहि। अर्वे धानिय व्यथान कथा** क्हेंि, दावी मार्डेनाशा हरेदान व्यवः इंशाजिला हरेदान । इंशा-রুঢ়া মনসা সূর্ত্তি এ পর্যান্ত বাহিত্র হইয়াছে বলিয়া অবগত নহি। কিন্ত অবিকল সরস্বতী মূর্ত্তির মত একথানা মনসা মূর্ত্তি কলিকাতা বাহুবরে আছে। ব্লক সাহেবের Catalogue এর ৯৫ প্রায় ৩৯৫০ নম্বর রূপে এই মূর্ত্তি বর্ণিত। দেবী ধ্যানাসনে বলা,—'বোগিণী' বিশেষণের সার্থকতা এইখানে। মাথার উপর সপ্ত নাগছত। বাম হাতে পুস্তক ও অমৃত্যট। দক্ষিণ হাতে অক্ষালা ও বর। দকিণে একটি লিক্ষুর্তি, বামে একটি গণেলের মূর্ত্তি। নীচে মনসার ঘট, তাহা হইতে হুইটি मान वाहित हहेशा हुई मित्क शहेराजहा वड, कंकमानी পুত্তক ও অমৃত্বট সরস্বতীর সর্বাসনবিদিত উপাধি-লিক। মাথার উপরের নাগচ্চত্র এবং নীচে ঘটের মধ্যের নাগ ছইটি না থাকিলে এই মূর্ত্তিকে ধ্যানস্থা সরস্বতী বলিয়া ব্যাখ্যা করিতে হইত। পূর্বে মনসা ও সরস্বতীর একীকরণপ্রসাস সম্বন্ধে যাহা বলিয়াছি, এই মৃতিতে ভাষা অনুচ্রপে সমর্থিত হইতেছে।

শ্রীষু জ নগেজনাথ বস্থ প্রাচাবিত্যা মহার্থব মহালয়, দেবীমত্বামহীনাং" এই ধ্যানটি উছার Archaeological Survey
Report of Mayurbhanj নামক প্রস্থে উছ্ত করিয়া
লিখিয়াছেন যে এই ধ্যানটি Found in a Tantra"! কোন
ভৱে Found ভাহার, উল্লেখ করেন নাই। আদি কিন্তু এই
ধ্যানটি প্রাহিতের মুখ ১ইতে শুনিয়া লিখিয়া লইয়াছি,

ভিনিও বোধ হয় আসলে তাহাই করিয়াছেন, তাই কোন্ ভয়ে ধ্যানটি আছে তাহার উল্লেখ করা সম্ভবপর হণ নাই।

এই ধ্যানটির রচনা বিশেষ স্থাবিধার নহে। রখ্নদানের তিথিতত্ত্বের কাশীরাম বাচপ্পতি কৃত টীকার পঞ্চনী কুত্যের মধ্যে মনসা পূজার বিশ্বত বিধান আছে। এই টীকার নিয়ক্ত ধ্যান শ্বত হইরাছে কিন্তু কোণা হইতে ধ্যানটি সংগৃহীত ভাষার কোন উল্লেখ নাই:—

হেমান্তোজনিতাং লস্থিধরালকারসংশোভিতাং শেরাভাং পরিতোমহোরপ্রগণৈঃ সংসেবামানাং সদা। দেবীমান্তিক্মাতরং শিশুস্তাং আপীনতৃক্তনীং হতান্তোক্ষ্পোন নাগ্রুগণং সংবিভ্রতীমাশ্ররে ॥

এই ধানের রচনাটি দেবীমন্বামহীনাং ইত্যাদি অপেক্ষা শেষ্ঠতর বলিয়া মনে হয়। এই ধানে দেখা যার দেবীর যেন চারিটি হাত। ত্ই হাতে শিশু ধরিয়া থাকিবেন এবং ত্ই হাতে ত্রুইটি নাগ থাকিবে। তিনি নাগালকার ভূষিতা হইবেন এবং চতুর্দ্ধিকে মহানাগগণ তাঁহার সেবা করিবে। কিন্তু এই ধ্যানের সন্দে মিল আছে এরপ মৃত্তি যত পাওয়া গিয়ছে, ভাহালের সবস্থালিতেই দেবীর ত্রই হাত। কোনটায় দেবী ত্রই হাতে শিশুই ধরিয়া আছেন। যথা নগেক্র বাবুর Archae-ological Survey of Mayurbhanj এ X'lix পৃষ্ঠায় এবং ভাহার অব্যবহিত পূর্বের উদাহত মূর্ত্তি গুলি। পিছনে কিন্তু ব্যব্দের শাখা এবং নানা স্থানে সাপ দেখিয়াই চিনা ঘায় যে এ মৃত্তি গুলি মনসা দেবীর। নগেক্র বাবু এই মৃত্তি গুলিকে গোডমী ও শাক্যসিংহ বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

আর এক শ্রেণীর মৃত্তির হাতে শুধু সাপই আছে।
বঙা নগেকা বাবুর পুস্তকেরই xxxviii পৃষ্ঠার বিপরীত
কিকের মৃতিদরের ১৫ নম্বরেগটি। দেবীর বাম হাতের সর্পক্ষিন্তটির উপরের মধ্যেক মানবাক্ষতি। এইরূপ বাম হাতে
মানবাক্ষতি সর্পশিশুকুক মনসা মৃত্তি রাজসাহী ।মউংজ্যুমেও
একটি আছে উহা মিউ।জন্মনের  $\frac{H}{118}$  নম্বর, মৃত্তি।

কলিকাভা ফাছ্বরেও একটি আছে। নৰ্ব, ৩৯৫১, **রুক্** দাহেৰের ক্যাটালগ, ৯৫ পৃষ্ঠা।

এই মৃত্তিগুলির বিশেষত্ব এই বে এইগুলি দেখিবাৰ । বৌলনের শিশু-কোলে হারিতী, ( বাহা আমরা প্রবচনী করিয়া এইগাছি ) দেবীর কথা মনে পড়ে। হারিতীকেবীর সহিত মনসা দেবীর কিছু যেন সম্পর্ক আছে বলিয়া বোষ হইতেছে।

ত্রক্ষাবৈবর্তের প্রকৃতি থণ্ডের ৪২শ অধ্যারে এবং ব্রীয়ক্ষ জন্ম গণ্ডের ৪৩শ অদ্যান্তে মনসা দেবীর আরও হুইট থাকি, দেখিতে পাওয়া যায়। প্রকৃতি থণ্ডের ধ্যানটিতে ভবা বিশেষ কিছুই নাই। প্রীকৃষ্ণ জন্মথ:ওর ধ্যানটিতে আছে বে দেবী মহোরগবাহনা এবং তিনি সর্ক্ষিতাবিশারণা

এন নিনীকার ভাগালী চ

## ঋষি সমাজে তত্ত্ব চিন্তা।

(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

তৃতি তা :- এই যে সৃষ্টি প্রবেশকা যাবা সভাতীক আদিম যুগ হইতে জ্ঞানের উন্মেষের সঙ্গে সক্ষে মাছুষের মধ্যে কত বিশ্বয় উৎপাদন করিতেছে ইচা লইয়া প্রাচীন ঝাল সম্মান্ত জেও কত আন্দোলন চলিয়াছে। এই সৃষ্টিভন্থ সম্মান্ত সংহিতায় যাহা পাই তার চেয়ে বেশী আজ পর্যান্ত কোন দেশের কোন দার্শনিকই বালতে পারেন নাই। একালে সৌপনতীয়ার প্রভৃতি জগতকে যে একটা Will, একটা Idea বালিভেছন তাহা আমাদের প্রাচীন ক্ষিটিদের কথারই প্রভিন্ধনি মাজ। বিশ্ববর্গার উদ্দেশ্যে যে সকল তথ আছে তাহাতে ভাহাকে এই বিশ্বের স্কৃতিক জালে বর্ণনা করা হইয়াছে। এক সৃষ্ট্র-

ঢাকা কলেজের সংস্কৃতের অধীপেক্ শীযুক্ত দীনেশচন্দ্র মন্দ্রাহ্বাদ। ঢাকা সাহিত্য
 শুরার্থ্য মহাশয় অনুত্রহ করিয়া এই ধানটে খালরা দিরাছেন। , মাসিক অধিবেশনে পঠিত।

চাক) নিউজিয়নের মৃতি সমুহের বর্ণনা মৃশক স্থাব্দর
ভালিকার (আবৈল্লের প্রকাশিতবা) মনদা অধ্যাবের মুখবলের
মধ্যাক্রাল। ঢাকা সাহিত্য পরিষদের ১৩২৭ সনের ১০ন
য়াসিক অধিবেশনে পঠিত।

#### ेटेटज २०२१

এক স্টেকর্ডার করন। অনেক স্থানেই দেখিতে পাই। কিছ
এইবানেই তাঁহাদের তত্মচিত্মা শেষ হয় নাই। তাঁহারা এক
ক্রিকে বেমন তাঁকে বৃহৎ হইতেও বৃহত্তর এবং মহতোমহীয়ান
মহৎ হইতেও মহত্তর, অন্ত দিকে তেমনি তাঁহাকে স্থা হইতেও
স্থাত ব্রুপে উপলব্ধি করিয়াছেন। তাঁহাদের মধ্যে জিজ্ঞাসা হইল

"কিম্মিং বনম্ কউদ বৃক্ষাদ যতে। ভাষাপৃথিবী নিষ্ঠতকু:।"

্ৰেই বনই বা কি সে বৃক্ষই বা কি যাহা হইতে এই ছাবা-পুথিৰী গঠিত হইয়াছে ?

"किमचिनानीनधिकांतः आत्रख्यः क्छम्याचित्र कथा-मीर । वर्षा कुनिर बनत्रन् वित्रकर्षाण्डिकां म् केर्त्तानमहिना वित्रज्यः॥"

ইহার অধিষ্ঠান কোথার ইহার আরম্ভই বা কিরূপে এবং কোথার ছিল যাহা হইতে বিশ্বকর্মা পৃথিবী এবং আকাশ নির্মাণ করিলেন ?

বিশ্বতশক্ষত বিশ্বতো মুধো বিশ্বতো বাছক্ষত বিশ্বতশ্পাৎ। সমবাহত্যাং ধমতি সম্পত্তৈস্কাবা ভূমি জনগ্ন দেবা একা:॥

বিশ্বতশ্বকু বিশ্বতোমুধ বিশ্বতোবাল্ক বিশ্বতশ্পাৎ (সর্শ্বব্যাপী শ্বন্থাপুরুষ) নিজের বাল্কবারা এই ভাবাপৃথিবী সংগঠিত করিলেন।

কিন্ত কে জানে কোথা হইতে এই বিচিত্র সৃষ্টি, কেইবা

বিশিবে কোখা হইতে ইহার উৎপত্তি। দেবতারা হয়ত বলিতে
গারিবেন, কিন্তু তাঁহারাই বা কি করিয়া বলিবেন 'দেবাঅস্ত
বিস্ক্রীনেন'—তাঁহারাও তো সৃষ্টির পর উৎপর হইয়াছেন।
তথন ববি কঠোর তপঃ প্রভাবে দেহাত্মধাসবর্জিত এমন এক
অবস্থার উপনীত হইলেন যথন দেহের জ্ঞান একেবারে চলিয়া
বার—এমন কি মন পণ্যস্ত স্ক্রাৎস্ক্রতর হইয়া ক্রমে লীন
হইয়া বার— তথন তাঁহারা নিজ স্ক্র নির্মাণ হাদয়ে মম ও বৃদ্ধির
অতীত এই সন্তা দর্শন করিলেন—এবং তাঁহাদের অস্তঃকরণ
ইইতে যে মন্ত্রগুলি নিঃস্ত হইল তাহাই অক্সংহিতার দশম
অওলে নাসদাসীয় স্ক্র বলিয়া পরিচিত। এমন ফ্রন্মর গান্তীগা
পূর্ণ কবিতা জগতের অন্ত কোন সাহিত্যে আছে কিনা জানি
না। অব্যক্ত অবস্থার সেই একমাত্র সং বিনি তিনি আত্মহ

নিরাকার নিরঞ্জনরূপে অবস্থান করেন, তাঁহাতে প্রথম কানের আবির্জাব হইয়া তিনি বিকাশ প্রাপ্ত হইলেন। আপানার্মা হয়ত অনেকেই এই স্থক পড়িয়াছেন তথাপি এবানে উহার করেকটা প্লোক উদ্ভূত করিবার ইচ্ছা সম্বর্গ করিতে পারিলাম না।

না সদাসীৎ নো সদাসীৎ তদানীং নাসীৎ রজো ন ব্যোমাপরোবং।
কিম্ আবরীবঃ কুহকত শর্মান্তঃ কিমাসীদ গহনং গভীরদ্ধ
ন মৃত্যুরাসীদ মৃতং ন তর্হি ন রাজ্যাঃ অহুং আসীৎ প্রকেতঃ।
আনীদবাতং স্বধরা তদেকম্ তন্মাধ্যক্তর পরাঃ কিঞ্নাস ॥
তমঃ আসীৎ তমসাগৃঢ়মগ্রে প্রকেতম্ সলীলং সর্কামা ইদষ্।
তুক্তে নাভ্যপহিতং যদাসীৎ তাপসন্তদ্ মহিনা আরুতৈকম্।
কামস্তদ্রে সমবর্ত্তদাধি মনসোরেতঃ প্রথমং যদাসীৎ।
সত্যে বৃদ্ধম্ বৃদ্ধিত নির্বিক্রম্ হাদি প্রতীশ্ব ক্রমেমনীবা।

এই হৃক্তে দেখিতেছেন বে খবিরা এই জ্ঞানে উপনীত হইরাছিলেন বে অগ্রে কাম হৃষ্টিকর্তার মন হইতে বীলক্ষণে উৎপন্ন হইল। বিশ্বকাৎ এই কামনা হইতে উৎপন্ন হইল। বিশ্বকাৎ এই কামনা হইতে উৎপন্ন হইল। পরম পুরুষের কামেই স্থান্টি বিক্সিত হইল। এই কামনা বা কাম desire বা মায়াই স্থান্টিকর্তার মন। উপনিষদ্ধ এই সভাই ঘোষণা করিতেছেন——'যদিদং কিঞ্চ জ্ঞান্সমন্ধং প্রাণ এজতি নি:স্তম্' এই কামনা বা কাম কি উপনিষদকার ভাহা ব্যাইরাছেন—'তংগ্রুক্ত বছস্যাম প্রানার্ক্য'— (ছালোগ্যা)। ইহারও পূর্বে শতপথ আহ্মানে বেদের উপরোজ্ঞ স্ক্রের ব্যাখ্যার দেখিতে পাই—'তেদিনম্ মনঃ স্থইম্ জ্মাবির্ক্রম্বাদ্ধি নিরুক্তত্বসম্ মূর্ত্তরম্'—তথন ঐ মনন জ্মাপনাকে বছ ভাবে ও মূর্তিতে দেখিতে ইচ্ছা করিলেন।

ঝাংঘাদের এই স্টেডিজ ষতই আলোচনা করিবেন শুভই
বিমুগ্ন হইবেন। যথন সম্দর অব্যক্ত অবস্থার ছিল তথন
প্রাণের কোন রূপ বিকাশ ছিল না বটে কিন্তু তথনও প্রাণের
অভিন্ত ছিল। তথন সম্দর জগদ্রজ্ঞাও এই একমাত্র সং বা
ব্রহ্মসন্তার পর্যাবসিত ছিল। তথন এই সং আপনি আপনার
মুগ্ন, তার, নিম্পান স্থায়ভাবে অবস্থিত—তথন তিনি নির্দ্ধেণ
নিজ্ঞির, দেশ ও কালের অভীত—'সং'ও নয়—'অসং'ও নয়

भानीम् अवाक्रम्-- शिक्शैन आदि म्लिनिक इहेरान । हेहाहे পরতক্ষের প্রথম নিংখাস বা শ্পন্দন। এখন পাশ্চত্যি বিজ্ঞানও এই পর্যাস্ত সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছে যে সমুদয় জগৎ কেবল **শ্বশারুক্তর কম্পানের সম**ষ্টি মাত্র। हेहारक हेथाबरे वनून वा subtle vibrationই বৰুন। এই স্পন্দনই দেই দংএর আপনার আপনি কামযুক্ত অবস্থা যাহা ব্যক্ত অবস্থায় নানাবিধ শক্তির আকার ধারণ করিয়া এই পরিদুর্ভামান জগতরূপে এই অমৃত প্রপঞ্জপে বহির্গত হইয়া কল্লান্তে আবার অব্যক্ত অবস্থায় সেই একমাত্র প্রাণ সভায়ই লীন হয়। মুগুকোপনিষং **উর্বনাভিন্ন উপমাধারা** এই ভাবটী অতি স্থব্দরভাবে বুঝাইয়াছেন —''যথোৰ্বনাভি: স্বতে গৃহতে চ''-যেমন উৰ্ণনাভি (মাকড়মা) কারণাম্ভর অপেকা না করিয়া নিজের শরীর হইতে তত্তসমূহ খছিছেলে প্রদারিত করে আবার তাহা নিজ শরীরে প্রতিসংস্ত করে তেমনি অন্সকাল ধরিয়া ইনি কথন বাক্ত কথন অব্যক্ত खाव दे। दुन कतिया भीना कतिराज्यक्त । हेशहे अविरामत প্ৰতিৰ-ইংরেজী creation বলিলে এভাব ট্ৰিছুই প্ৰকাশ ছর না। আমাদের সৃষ্টি "বিসর্জ্জনেন"—এক ব্রহ্মসন্তাই কথন শ্বশ্ববেশ্বার লীন থাকেন আবার কথন জগত প্রপঞ্চরণে নির্গত ছইনা বিভাগিত হন। কিছুই শুক্ত হইতে স্বাষ্ট হয় নাই। বেদের विविद्याल कानिराजन यह करत करत थारेल करें वा वारक। **बहै (व रुष्टि हेश शृर्वकाल प्यान हहेबाहिन ।** সত্যঞ্চাভীদ্ধান্তপ্ৰসোহধ্য জায়ত .....ততো বাত্ৰি জায়ত ..... - হ্র্যাচক্রমনৌ ধাতা যথাপূর্ব্বমকরয়ম্''— এখনও সিন্ধুদীপ ঋবির .এই অক্তম ব্রাহ্মণকে ত্রিসন্ধ্যায় উচ্চারণ করিতে হয়।

আর বেদান্তের যে চরমতত্ব "সোহহং"—কামিই সেই
আমা বা আয়া তাহারও মূল এই অকসংহিতায়ই পাইবেন।
আমার যতদ্র মনে হয় হইটী সক্তে এই ভাব অতি পরিক্ট
ইইয়াছে। একটী দশম মওলে, অভ্নুর ঝবির কতা বাক্ দেবী
এই মন্ত্রের জন্তা। এই সক্তেটী দেবাস্ক্ত বলিয়া প্রসিদ্ধ, শরতকালীন দ্র্গাপুজায় আমাদের দেশে ত্বে চতীপাঠ হয় তাহাতে,
এই দেবীস্কার্ গ্রেহে গ্রেড গ্রিড হইয়া থাকে। চতীপাঠের পূর্বের্

এই দেবীস্ক্ত না পাঠ করিলে চণ্ডীপাঠ নিক্ষণ হয়। এই মন্ত্রগুলিতে আত্মজ্ঞানের পূর্ণ বিকাশ দেখিতে পাইবেন্। আপনারা এই ঋষিকস্থার সতেজ উক্তি একটু শুমুন—

আহং ক্ষত্রেভির্বস্থ ভিশ্বরাম্যহমাণিতোকত বিশ্বদেবৈঃ।
আহং মিত্রাবক্ষণোভা বিভর্মাহমিক্সামি মহমবিণোভা ॥

অহং কূদায় দমুরাতনোমি
ব্রহ্মবিধে ধরবেহন্তবা উ।
অহং জনায় সমদং কুণোমাহং
ভাবাপৃথিবী আবিবেশহ ॥
অহং স্থবে পিতর্মস্যমূর্কন্
মম যোনিরপ্ত অন্তঃ সমুদ্রে।
ততো বিভিঠে ভ্বনামু বিশ্বা,
উভামু ভাং বর্মনোপ স্পুশামি ॥
অহমেব বাত ইব প্রবামা।
রভমানা ভ্বনানি বিশ্বা।
পরোরিবা পর এনা পৃথিবা।
এভাবতী মহিমা সম্বভুব ॥

আমি কন্তগণের ও বহুগণের সহিত বিচরণ করি, আমি
আদিতাগণের ও বিখদেবগণের সহিত বিচরণ করি।
মিত্র ও বরুণকে আমিই ধারণ করিরা রহিরাছি, আমিই
ইক্স আমি অগ্নি অগিনীবন্ধও আমি। আমি ব্রহ্মবেরীর্
বিনাশের জন্ত কন্তের ধন্থ বিস্তার করি, আমি লোকহিতের
জন্ত সংগ্রাম করি, আমি দ্যাবাপৃথিবীতে অনুপ্রবিষ্ট আছি ।
আমি উর্নদেশে পিতা ছৌকে প্রস্ব করিরাছি, সমুদ্রের
জনরাশীর মধ্যে আমার গর্ভ রহিয়াছে, আমি বিশ্বত্বনে
অনুপ্রবিষ্ট, আমি নিজ দেহ ঘারা হালোককেও
ক্রেরা আমি বায়ুর মত সর্বত প্রবাহিত হইতেছি, ছালোকের
পরে পৃথিবীর পরে যাহা কিছু সর্ববিষ্ট আমি নিজ মহিমা ঘারা
সন্ত্ত হই।

কালীন দুর্নাপূজায় আমাদের দেশে য়ে চণ্ডীপাঠ হয় তাহাতে, এমন তেজের ভাষা, এমন স্পষ্ট অবৈভবাদ আর কোথার এই দেবীত্তক গৃহে পঠিত হইনা থাকে। চণ্ডীপাঠের পূর্ব্বে শুনিমাছেন ? এই ত্তেজের ভিতর আর একটী গৃঢ় ভাব अस्तिहर । शृद्धि विनद्गोह द्य अहे यञ्च शतित्र (पवठा वोक्। এই বাক্ট ব্ৰঙ্গের প্ৰথম প্ৰকাশ তাই এই স্কে বাককে অভ্য থবির কন্তারপে কলনা করা হইরাছে। কালে আমরা যে শব্দ ত্রন্ধ এই তত্ত্বে আলোচনা দেখিতে পাই ৰাহা ভ্ৰম্পান্তে আরো ফুটভর হইগাছে ''আদীৎ শদ শুভঃ ব্রন্ধ শব্দেই ব্রন্ধের প্রথম প্রকাশ এবং ডল্পে যে বাক দেবভার কত সকন সূর্ত্তি ক'ল্পত হইয়াছে তাহারও মুগ এইথানে।

আর একই আত্মা যে দর্বভূতে বিরাজমান এই আত্ম-ভব জ্ঞান আমরা চতুর্থ মণ্ডলে বামদেব ধ্যির একটা হক্তে আতি ম্পাষ্ট ভাবে দেখিতে পাই। ইহা হংগবতী থক বিশিষা প্রাসিদ্ধ। এই মন্ত্রের দেবতা হর্যা। খাথেনী সন্ধ্যার স্ধ্যান্তের সূর্যার্থের জন্ত এই মন্ত্র ধ্যান করিতে হয়---

"হংসং শুচিদৎ বস্তবন্তবীক্ষদৎ হোতাবেদিসং ্বাভিথিছ রোনসং নুসং বরসং ঋতসং ব্যোমসং অভা গোলা খাতকা আজলা খাতং বুহং"

হংদঃ-পর্যাত্মা বা ত্রদা আদিতা ইনি 'গুচিদং' নির্দাল-आकाम मछरन व्यवसान करतन, होने 'वस्त्र' अर्थाए नर्स्तनकाती बाइ चक्रण, टेनि 'चख्रीक्मर' चन्नतीक मकाती टेनिटे'(टाजा' श्यावात्र हैनिहे विभिन्न हामनिल्लाहक खित्रकल, होन জাঙিখিবৎ সর্বদ। পুরুনীয়,ইনি'ত্রোণসং' গৃহায়িরপে পাকাদি বাধন করিতেছেন আবার 'নুস্ৎ' চৈত্রক্রপে মাতুষ মাতেই আৰ্ম্বিভি ক্রিতেছেন ইনি 'বরস্থ' বরণীয় সূর্যা মগুলে বাস ক্ষরিভেছেন 'ৰভসং' ৰভে, (সভ্য, বাব্ৰহ্ম বা যজে) আৰুম্বিতি করিতেছেন, 'ব্যোমসং' আকাশে অবস্থিতি अक्रिफ्ट्न, हिन 'मुला' सनमस्या विद्यानचि व। वाज्वाचिक्रान हर्भा बहेबा अवदान करतन, हेनि 'बाठला' प्रस्तित मुख्यात निवृत्रभान करवन, देनि वास्त्रिका छेन्द्राहन ब्रेट व्यक्तिकात्रात ममूनिक इन, हेनि-'बाक', मकामदाधिकान अपन पत्रभ । देनि 'तृहद' मर्सवाभि वाहात मद आमता মুক্তর উপদৃদ্ধি করিতেছি ।

লাভিগৰ কৰিবাৰ জন্ত কঠোপণিবৰে এই নম্ভটীই উভূত

श्रेतारक्। उत्रुप्त 'स्रानः भाष्ट्र' जामिसे स्मरे स्राम वा उन वह बन्न शहर कतियाहम। वदः स्वार्माधानत मह वह হংসবতী মন্ত্র প্রয়োগ করিয়া থাকেন। ইহারারা মন্ত অমুতে পরিণত হয়। ইহার তাৎপর্যা আর কিছুই নয়, এই একামতা লাভ জুমিলে তান্ত্ৰিকও বেদের ঋষির মৃত উচ্চশ্বরে বলিতে পারেন--

"ৰূপান দোন মনুতা অভূন"

"অগন্ম জ্যোতি রবিদাম দেবান্॥

আমি সোমপান করিয়া অমর হইরাছি। আমি জ্যোতি नाछ क्रिशाहि ও দেবগণকে खानिशाहि। এই क्ष्यूक्षी স্তুত একট্ট অভিনিবেশ সহকারে পাঠ করিলে মনে এ সলেহ পাকিতে পারে না যে ঋথেদ সংহিতার **ভিতরেই খোর** व्यदिक्रवात्मत्र व्यवकात्रणा त्रविवाद्यः मान इत्र धारे त्रवर्षा বহুল ঋংখদগ্রম্ব থেন একটা বিব্লাট অবৈতবাদ। বেদায়ের (य. मर्काः थांचनः अन्न এहे विमाखवान सक् मः हिडाब्रहे भनिष्ड অবস্থায় দেখিতে পাই। কিন্তু বেদের ঋষিরা অবৈতবাদী हिल्न ना-बामिर এक्माज कीव व्यामिर उम्म, गांधना वरन ८ अमुखान मृतकत्रक: व्याभिष्टे ब्रिक्त हरेशा याहेव-व्यामात्र मरन हम् उंशिएक मत्तर गिक रमक्र हिन मा। वावशक्रिक कोवरन তাঁহারা বৈতভাবাবলয়ী ছিলেন। সাধক রামপ্রসাদের কথান ठाहात्रा-"ांहिन इ'एड हान ना, हिनि शायन, धरे डाएमस সাধ ." একটা মল্লে ক্ষির মনের এই ভাব অভি ফুল্মর পরেক্ট দেখিতে পাই। পবি অধির উদ্দেশ্যে বলিভেছেন---"আমি তোমার উপাসক, আমি তোমার মৃত্তিকে পূলা করি; মহৎ প্রভুর গৃহে বেরপ দেবক থাকে, আমি ভোমার গৃহে त्महेक भ त्मवक शांकिय।" हेहाई समित्र कामना । **এই পू**छा পুজক, দেব্য দেবক, বা উপাশু-উপাদক সহন্ধ বৈদিক ঋষি मन क्रिएंड हान गां।

ঋথেদের পুরুষ হক্তের মন্ত্রগুলির সহিত হিন্দুমাত্রই পরিচিত। ইচার কড়কজুলি মন্ত্র প্রান্ধ্রাদি ক্রিয়ার পড়িতে হয়। ইহার এমট আছা দে সর্বভূতে নানা ভাবে বিরাজমান ভাহা ুপ্রথম মন্ত্রী 'সহস্রশীর্বাপুরুষঃ' ইভ্যাদি শালগ্রামশিলার স্থানের সময় নিত্য পঠিত হইয়া থাকে। এই বিবাট পুৰুষের ক্রমা

মনৈ করিলেই ধাবিগণ বে তত্ব চিন্তার কত উচ্চ শিধরে উপনীত হইয়াছিলেন তাহা সহজেই বুঝিতে পারা যায়। এই ৰে পুৰুষ তাহার সহত্র শীর্ষ, সহত্র চকু, সহত্র পদ, ভিনি 'বিশ্বভূষে ব্যাপিয়া আছেন এবং ভাহার উপরেও আরো দশ - আসুল ব্যাপিয়া আছেন। যাহা কিছু আছে, ছিল বা ২ইবে ভাষা দক্ষই এই পুরুষ। এই যে বিশ্বভূবন এ তাঁহারি महिमा। অথচ এ সমস্ত মিলিয়া তাঁহার এক পদ মাতা। ভীহার আর ভিন পদ এ সমস্তকে অভিক্রম করিবা উর্দ্ধে অবস্থিত। আর এই পুরুষ-যজ্ঞের বিষয় একবার চিস্তা করুন। তিমি বিরাটরাপে জন্মগ্রহণ করিরা আত্মপ্রকাশ করিয়া **আপনাকে আহ**তি দিয়াই যতা করিলেন, নিজকে বজীয় পশুতে পরিণত করিয়া নিজের দেহ খণ্ড খণ্ড করিয়া এ বিশ্বদাত নির্মাণ করিলেন। তাঁহার নাভি হটতে অন্তরীক. मखक हहेरा प्रात्मक, भम शहेरा ज्ञि, दर्ग शहेरा मिक-नकन, मन हहेर उ हम, हकू हहेर उर्गा, मूथ हहेर उरे अधि, আণু হইতে বায়ু, ভিন্ন ভিন্ন অঞ্চ প্রভাঞ্চ হইতে এক্ষণাদি वर् बरः बादगा बरः शामा शक्तमा छेरमा रहेन-वरे विश्वशृष्टि विद्वारे श्रकरात्र महायक यादा कल्ल कला व्यनामि অনম্বৰাণ হইতে নিভা অমুষ্ঠিত হইতেছে। এই পুৰুব ছইভেই বে সমস্তের উৎপত্তি তাহা মণ্ডুক এবং কঠ উপনিধনেও विकुछ एमिएल भारे बदः बारे कुरे जैनियान भूकारवत रमक्रम वर्गना चारक छाहा পड़ित्य मत्न इत्र त्यन बत्यत्यत तारे विद्राष्ठ মছান পুরুষের বর্ণনাই পড়িতেছি। এই পুরুষের সম্বন্ধেই খেত উপনিষদ বলিয়াছেন, "যন্ত্ৰাৎ পরং নাপরং কিঞ্চনান্তি"— बाहात शत ब्यात किछूहे नारे। "त्वनाश्यकः शूक्वः महाद्वः আদিত্যবর্ণ তমসঃ পরস্তাৎ তমেব বিদিছাহমূতছমেতি নাক্তঃ পছ। বিশ্বত্যেরনার"—সামি অবিদ্যার অতীত পরমন্যোতির্ময় সেই পুরুষকে জানিতে পারিয়াছি তাঁহাকে জানিলে অমৃতত্ব লাভ হয় আৰু বিতীয় কোন পহা নাই।

শ্বির চোথে কিছুই কুড় নয়, তিনি জগতের যাবতীয়

চিত্তে তাহাই দেবতাজ্ঞানে পূজা করিতেন। কিন্তু ভাহা ঋষ্ট্রের পূজা নয়--- ঝবিরা পূজা করিতেন কাহাকে 📍 ভাহার ভিতরের প্রাণশক্তিক---

"(या प्रत्वाहरको याहण्यु त्या विभः खूबनमावित्वण । যো ওবধীযু যো বনস্পতিষু তলৈ দেবায় তে নমঃ॥ নতুবা এই বিরাটপুরুষ বাঁহাদের কেবল কল্পনার অহুভূতিতে মন প্রাণের জাগ্রভভাব, এই বিশ্বপ্রগত ঘাঁহাদের দৃষ্টিভে একটা বিশ্ববাপী প্রাণ ও চৈত্তময় জ্যোতিরূপে প্রতিভাত ভারাদের নিকট আবার জড় কি ?

যাহা হইতে এই বছ বিশব্দাও উৎপন্ন বে 'একম্ সং! বছরপে প্রকাশিত ; সেই একত্বের সন্ধান করিতে গিয়া—সেই আদি কারণের তত্ত্ব অলেষণ করিতে গিয়া ঋষিরা কি প্রকৃষ্টি ছইতে—বহিৰ্জগত হইতে এই তত্ত্বের সন্ধান পা**ইমাছিলেন**— যাহা পাশ্চাত্য প্ৰিতগণের ভাষায়—From Nature to nature's God" ? এই एक उच्च कि है खिरवन माहारवा বহির্জগত হইতে লাভ করা যায় ? সে যে অনন্তকাল সাপেক ! সৃষ্টি তত্ত্বে আলোচনা করিবার সমন্ত্র নাসদাসীয় সুক্তে দেখিতে পাই যে 'সং' এর উপর প্রথমে যে কামের আবিতার হইয়া উৎপত্তির কারণ নির্গত হইল অসৎ হইতে সংএই चाविखीव हरेन विविश्व छारा दृष्टि बाजा चालन चालन विवेद পর্যালোচন। পুর্বক নিরূপণ করিলেন, আবার বিশ্বকশার উদ্দেশ্যে এই স্পৃষ্টিভত্ত সৰ্বন্ধে যে প্ৰশ্ন-সেই বনই বা कि, मिहे বুক্ট ব। কি বাহা হইতে এই স্থাবা পৃথিবী নিশ্বিত হই ৰাছে 🔭 তাহার উভরেও ঝাষ বলিভেছেন—"হে মনীষিগণ, ভোষরা একবার আপন আপন মনে জিজ্ঞাসা করিয়া দেখ ডিনি কিসের উপর দাড়াইয়া এ বিশ্বক্ষাও ধারণ করেন। ধর্মই কোন গভীর তব্ব সম্বন্ধে প্রশ্ন হয় খবি বলেন—'ভোষরা আপন क्तम व्यवस्य क्ते'। हेरात जार भर्ग कि ? श्रीवरम्ब अ काम অন্মিয়াছিল যে বহিৰ্জগতে যাহা কিছু আছে ভাৰা ভোমাৰ অন্তঃর্জগতেই রহিয়াছে, নিঞ্জের হাম্বর অম্বেষণ কর সেইখানেই ( অবাই বৃহৎভাবে দেখিতেন কেননা সমস্তই একব্ৰহ্মস্থাব্ৰ স্কল বিজ্ঞানের বীজ নিহিত রহিয়াছে যাহা জানিলে সকলই প্রকাশ, ভাই বহির্জগতে বাহা কিছু স্থলর বিশায় এবং বিহবল- তোমার বিজ্ঞাত হইবে। ইহাই উপনিষ্ণের ভাষার "আত্মানং

এতবৈতৎ ॥

े टेडब ५०२१

বিদি"। প্রণ কারণের যে মৃশকারণ পুরুষ তাহা তোমার
করেই অধিষ্ঠিত বৃদ্ধি তাহা উপলব্ধি কর। বেদের
এই তব্ধই আমার মনে হয় উপনিষদের "অস্ট্মাত্রো পুরুষঃ"
ইত্যালি লোকের তাৎপর্বা। কঠোপনিষদ পুরুষের অরপ

অষ্ট্রমান্তঃ পুরুষ: মধ্যমাত্মনি তিঠাতি। ইমানোভূত ভব্যস্ত ন ততো বিজ্ঞগতে।

মুখকোনিষদ বলিতেছেন—"যিনি দৰ্বজ্ঞ সৰ্ববিৎ বাঁহার
মহিলা বিশ্বজ্ঞাঞ্জনে প্রকাশিত দেই পুরুষ হাদয় পুথরীকে
প্রতিষ্ঠিত। সেই পুরুষ মনোবৃত্তি হার৷ বিভাবিত হন
ভাই তাঁকে মনোময় বলে। ব্রন্ধোপনিষদও ব্রন্ধ বা পুরুষ
শৈষ্যায় প্রকাশিত হন তাহার উত্তরে বলিতেছেন—

''দ্বস্তাকাশে তৰিজ্ঞানং হৃত্তাকাশং ভশ্মিরিদঞ্চ বিচরতি ধশ্মিরিদং সর্বমোতপ্রোতম্।''

ব্ৰহ্ম জ্যাকাশে প্ৰকাশিত হন। হান্যদেশে বিচরণ কাৰেন ইহাতে সমস্ত দৃশ্যপদাৰ্থ ওডপ্ৰোত ভাবে রহিয়াছে। ব্ৰহম প্ৰাই মাধ্য সাহায় পরিমাণ তাই সেথানে যথন প্ৰকাশৰ আহিন ভাহার পরিমাণও অভ্ট পরিমাণ। তন্ত্রও এই ব্রহ্ম আরো স্পাই ভাবে প্রচার করিতেছে। তোমার দেহের ক্রিডেই সব রহিয়াছে—

"ৰোগিনাং হ্বদ্ধাস্তোজে নৃত্যস্থি নৃত্যমঞ্চন।
আধানে সৰ্মজ্ভানাং ক্ষুৰজী বিহাদাকৃতি।
সেই মহাশক্তি বোগীগণের হৃদ্ধ সরোজে স্ব-স্থৰূপ
আকাশ ক্ষিয়া নিজেৱ আনন্দে নিতাক্ষিতেছেন। সৰ্মজ্তের
আধানে বিহাদাকারে কুর্জি পাইতেছেন।

পুরুষ স্ক ছাড়াও দশম মণ্ডলে ভূরি ভূরি স্লোক আছে বাহাতে দেখা বার বে অতি প্রাচীন বৈদিক যুগেই আধ্যাত্মিক লগতে পবিদের স্থান কত উচ্চে ছিল। পাশ্চাত্য প'গুতগণ এক একটা theory শইরা আরম্ভ করেন এবং তাহার প্রতিকৃশ বারা কিছু তাহাকে একটা না একটা ভাবে প্রাথা ক্রিয়া নির্ভ করিয়া থাকেন। দশন মণ্ডল বদি

থক্সংহিতার অন্তর্গত হয় তবে থবিকে অভ্বাদী বলা কাহারো সাহসে কুলায় না তাই পাশ্চাতা পণ্ডিতগণ এই एक निवस कविवार क्षेत्र अक कथांत्र वर्गन (य मुन्यम्थरनद्र মন্ত্রণী অনেক পরবর্তী কালের; ইহাকে ঋক্ পরিশিষ্ট এরপ অমুমান করিমার বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন। कान कावन नाहे; आभारतव रमानद अधिकशन **এই म**क সমর্থন করেন না এবং তাহা করিবার কোন কারণ নাই। তর্কস্থলে দশমমণ্ডল ধক্ পরিশিষ্ট বলিয়া স্বীকার করিয়া লইলেও দকল তত্ত্বের যে মূল, দকল ধর্মের মূলে যে সভ্য "একম সং বিপ্রা বছধা বদন্তি" যাহা উপনিষদের ভাষান্ধ-"একমেবাদিতীয়ন্" ইহা ঋকু সংহিতার প্রথম মওবেরই একটা স্ক্ত। অতি প্রাচীনতম কালেই আমরা ঋষির মুধে এই সতেজ সগর্ব উক্তি ভনিতে পাই—সর্বাধর্ম সমন্বয়ের সাধারণ ভিত্তিভূমির উপর দাঁড়াইয়া ঋষি জ্লদগন্তীর ধ্বনিতে বলিতেছেন 'একম্ সং। অন্ত দৃষ্টিবলে বলীয়ান ঋষি দশন কবিতো ছন--

"এकः स्वर्ग म ममूजमावित्वन म इनः विश्वः ज्वनः विष्ठाष्टे।"

এক পক্ষী সমৃত্যে প্রবেশ করিল। সে এই সমস্ত বিশ্ব-ভূবন অবলোকন করে।

স্থপর্ব বিপ্রা করয়ো বাচোতি রেকম্সন্তম্ বছবা করয়ন্তি।

পক্ষী একই আছে। বৃদ্ধিশান কবিগণ তাঁহাকে করনা-পুর্বাক নানাপ্রকার বর্ণনা করেন।

দর্শনতবের সার যে তব্ব জীবাঝা প্রমাঝার একব উপলব্ধি যাথা মণ্ডুকোনিষদে অতি অপূর্ব্ব একটা রূপকে বর্ণিত' হইরাছে যাথা গইয়া অভাবধি দার্শনিক সমাজে কত আলোচনা আন্দোলন চলিতেছে তাহাও এই অক্ সংহিতার প্রথম মণ্ডল হইতেই গৃহীত—

্ব। সুপর্ণা স যুদ্ধা স্থায়া স্মানং বৃক্ষং পরিবস্থকাতে।
তারোরণাঃ পিপ্লণং, স্বাদন্তানশ্লয়ভোহ ভিচাকসীতি॥
এই হেরালির মত স্লোকটী উপনিবদকার গ্রহণ করিয়া

বেশাইয়াছেন যে জীবাত্মা ও পরমাত্মা এক, ভিন্ন নহে।
পরমেশরের পক্ষীর দ্ধাপ ধারণ করা যে প্রাচীন বৈদিক
লাহিত্যেই দেখা যায় তাহা নহে বৃহদারণ্যকে ইন্দ্র পক্ষীররূপ
ধারণ করিয়া অখনেধ যজ্ঞের অগ্নি বায়ুর নিকট সমর্পণ
করিয়াছিলেন। "তানিস্তো স্বপর্ণোভূত্ম বারবে প্রাযক্তং"—
পাশ্চাত্য অনেক দেশের ধর্মশান্ত্রেও এইরূপ উপাখ্যান পাওয়া
যায়। দেবরাঞ্চ Zeus এর কল্প জগল পক্ষী মধু আনিয়াছিল।
জার্মাণদের মধ্যেও প্রবাদ আছে যে দেবরাজ Odhin লগলরূপ
ধারণ করিয়া মধু আহরণ করিয়াছিলেন।

আপনারা বিষ্ণুর জগত পরিক্রনের কথা শুনিয়াছেন।

ক্ সংহিতার ১ম মণ্ডলের ২২ ক্ষেত্র বিষ্ণু ও তাঁহার বিচক্রমণ

গছকে যে তাব আছে তাহা একটু প্রণিধান করিলেই

জানিতে পাইবেন ক্ষিদের তত্ত্জান কত গভীর এবং তাঁহারা

দৈনন্দিন জীবনের ভিতরেই কিরুপে ধর্মের মূল উপলার

ক্ষিয়াছেন এবং চতুর্দিকের অজ্ঞ প্রকাশের ভিতর বেলিকে

তাকাইরাছেন সেই দিকেই চৈতন্তের বিকাশ দেখিয়া কিরুপ
আনন্দ ও বিশ্বরে আরুত ইইডেছেন—

উপনিষদ । ইহার উপরে যান নাই বরং ইহাই অক্স ভাবে ও ভাষার ব্যাথ্যা করিয়াছেন। এই ঋকের অনেকগুলি মন্ত্র আমাদের অনেক ক্রিয়া কর্মে পঠিত হয় এবং আমাদের নিত্যনৈমিত্তিক সর্বব্যকার ক্রিয়াক্র্মের প্রারস্তে যে আচমন করিতে হয় এই আছমনের মন্ত্রও এই স্পক্রেই একটা ঋক্। ঋষি বিষ্ণুর উদ্দেশ্যে বলিতেছেন—

অতো দেবো অবস্ততে যতো বিষ্ণু বিচক্রমে। পুথিবীঃ সপ্তধামভিঃ॥

ইনং বিষ্ণু বিচক্রমে তেখা নিদধে পদং। সমূত্মক্ত পাংশুরে॥

জীনিপদা বিচক্রমে বিজ্পেমিপা অবদাভাঃ।
অভোধশানি ধার্মন্॥

বিষ্ণু জগত রক্ষা করেন, তিন পদ বিক্ষেপে সমস্ত জগত ব্যাপিয়া থাকেন। এই বিষ্ণু কে এবং তাঁহার এই বিচক্রমন ব্যাপার কি তৎনদ্বন্ধে ভাষ্যকারগণ নানারপ বাবিয়া করিয়াছেন। কাহারো কাহারো মতে বিকুষ এই বিশোল বিক্লেপের ভাৎপর্য্য, স্থ্যাদেবের অগত করিক্লেমণ । এই বিশোল বিহান করেন। পৃথিবী অন্তরীক এবং স্থা এই তিন স্থানে বিহান করেন। পৃথিবীতে অগ্নিরূপে, আক্রেশ বিহান করেন প্রার্থিবীতে অগ্নিরূপি থাকেন, অক সংহিত্যার প্রথম মণ্ডলে একটী স্কেল ক্ষি বিক্লুর উল্লেখ্য ব্যানিতেক্লেন—
বিফোর্গ্র কংবীব্যানি প্রবেচ্ন বংশার্থবানি বিশানরপ্রাংশি।

বোল্যক্তরাগ্তরং সদস্থং বিচক্রমান স্রোধারণার।
আমি বিষ্ণুর ন্ত্রীগ্যাসকণের কথা বলিতেছি। এই বিষ্ণু পৃথিবী
অস্তরীক্ষ ও লোক নির্মাণ করিরাছেন—ইনি ছালোক্সে
পতন হইতে রক্ষা করিয়া স্তন্তিত ভাবে রাথিরাছেন। ইনি
সব স্পষ্টিও করিরাছেন রক্ষাও করিতেছেন। বিষ্ণু বে রক্ষ্যু
কর্ত্তা ঝথেদের অনেক স্থলেই ভাষার উল্লেখ দেখা বার ভার্যী
ভাষার "গোপা" এই বিশেষণ দেওয়া হইয়াছে। পৌরানিষ্
বুগে বিষ্ণুর পৃষ্টিকর্ভূত্বের চেয়ে পালন কর্ত্ত্য রক্ষাতে প্রকট হইয়াছে। নিরুক্তকারেরা কেছ
কেছ বিষ্ণুকে স্ব্যার্রপে গ্রহণ করিয়াছেন। কোন কোর
ব্যক্তি বিশ্বিত পাই বিশ্বুর রূপ কিরণ বিশিষ্ট—

"ত্রির্দেবং পৃথিবীষেষ এতাং বিক্রোমে শভর্চসংস্কৃতি এই দেবতা শত সংখ্যক কিরণবিশিষ্ট স্থার মহিষার ভিনন্ত পৃথিবীতে পদক্ষেপ করেন। স্থায়গুলের মধ্যে গ্রহা বিষ্ণুর্ব যে প্রকাশ দেখিয়াছিলেন এখনও নারায়ণের সেই ক্রপেট্র ধ্যান করিতে হয়।

বিষণুর ত্রিপদে বিচক্রমণের কথা শুনিবেদ। এডমির বিষ্ণুর আর একটী পদের উল্লেখ দেখিতে পাই যাহা প্রক্রম ব'লয়া উক্ত হইয়াছে। এই যে আচমণের মনে ক্রমের প্রভাই উচ্চারণ করি—

তদিবেতাঃপর্মং পদং সদা পঞ্জ ত্রন্ধঃ।

ৰিবীৰ চক্ষরাত্তম্ ॥ তৰিস্তাসো বিপণ্যৰো জাগ্**কংসঃ শবিদ্ধতে।** বিক্ষোবং পরমং পদং ॥ বিষ্ণুর এই পরমুগদ কি ধাহা স্থরগণ অসীম বিস্তৃত আকাশপথে शिश्मिन मृष्टित छात्र गर्वामा गम्पर्णन करतन व्यवः गर्वामा कागवन-বীল অপ্রমন্ত বিপ্রগণ বাহার অবেষণ করিয়া থাকেন 📍 পরস পৰের আধিটোতিক মধ বাই কেন হউক না উহার আধ্যাত্মিক डार्श्य चाह्य जरा (वामत अपित मिरे चार्याचिक वार्थ है আছোৰ করিবাছেন। এ স্থলের অতীত একটা অবস্থা বা ভাৰ ৰাতা ইন্দ্ৰিরের অভীত এবং কেবল জ্ঞানিগণেরই জ্ঞান প্রমা। আমার মনে হর "এক্ষেব পরং ব্রহ্ম বিভাতি" একমাত্র পরবৃদ্ধই প্রকাশ পাইতেছেন সকল বন্ধর ভিতরই ব্রহাসভার উপলব্ধি ইহাই পরমপদের গৃঢ় তাৎপর্য। এ সেই विवश्वा बाहात मचरे प्रश्वामानियाम तिवर पारे "ज्ञान-আমাদেন বিভন্ন সম্ব ভততুতাং পশাতে নিকলং ধ্যায়মান:"---बीडामिर्गक कान श्रमारम चाव:क्रम विख्य हरेबाहि छै।हात्र বাঁহাকে সকল বস্তার অভেদে ধ্যান করতঃ দর্শন করিয়া শাকৈন। স্ক্তিকোপনিষদে ভগবান রামচন্দ্র তাঁহার সচ্চিদা-মন্দ্রণ বর্ণনা করিতে গিয়া বলিতেছেন—তিনি একদিকে বৈষম অপকামপর্শমরপমধায়ং আবার তেমনি অক্সবিভাতং র্মাণাই প্রকাশমান। "পুরতিরশ্চোর্মণত সর্মতঃ মুপূর্ণ-ভুষাই মিতীৰ ভাবর"—আমি অগ্র পশ্চাৎ উর্দ্ধ ও অধঃ সর্বত্রই প্রিপূর্ণ। আমি পরিব্যাপক বস্তু। তার পর বাক সংহিতার আই হক হুইটা উদ্বুত ক্রিয়াই বলছেন—

"ভদেও পৃচা ভূাক্তং ত বিফো: পরমং পদং ইত্যাদি—
বিক্র এই বে পরমপদ ইহা যে কেবল ঋক বেদের ঋষিগণেরই
আকাজ্যিত ছিল ভাবা নহে উপনিষদের ঋষিগণেরও ইহা চির
আকাজ্যিত এবং কজ্যিত বস্তা। ভাই দেখিতে পাই যে যে
ভাঠোপনিষদে সাত্মজ্ঞানের পরাকাঠা সেধানেও বিফুর এই

বিজ্ঞান সারথি যন্ত মনঃ প্রগ্রহবাররঃ।
সোৎধানঃ প্রমাপ্রোতি তদিকোঃ প্রমং পদং॥
শ্ববিরা বিষ্ণুর বে প্রমপদ আবদাশে বিস্তৃত পূর্ব্যের জ্ঞার সর্ব্রদ।
স্বাধান্দ করিতেশ তাহা চর্মা চক্ষের অপোচর। গ্রহিগণ
শ্বিবনেকে তাহা প্রভাক করিতেন ফ্রারা তাঁহারা এই প্রমণদ

প্রকৃষ্টরপে সন্দর্শন করিতে পারেন। তাই ঋষ্ সংহিতার এই চকুর প্রার্থনাও দেখিতে পাইবেন। এই চকুর অর্থ দিবাদৃষ্টি গাভ বই আর কি হইতে পারে । ইহাই উপনিবদের ভাষায় উক্ত হইরাছে—

তৰিজ্ঞানেন পরিপশ্যন্তি ধীরাঃ।
আনন্দর্গপম্ভং যদিভাতি॥ (মৃঙক)
ধীরগণ বিজ্ঞাননেত্রে দেখিতে পান যে সেই আনন্দর্গ অমৃত
বস্ততেই অঞ্জ পশ্চাৎ উর্ক অধঃ সর্বত্র পরিপূর্ণ।

অ্ষিরা বে প্রাচীন বৈদিক যুগেই ধর্মঞ্জগতে কভ উচ্চে আরোহণ করিয়াছিলেন তাহার জন্ম অন্ত প্রমাণ পুঞ্জিবার আবশাক করে না। ছিল্পাত্রেরট প্রতিদিন তিসন্ধায় উপাক্ত এवः উচ্চার্যা গায়তী মন্ত্র হইভেই ইহা সহজে অকুমান ক্রা शात्र। अक नाम सक् धारे जिन दाराहे नात्रकी श्रक दाधिक পাওয়া বার। উপনিষদেও এই গারত্রীমন্ত্র সাদরে গৃহীত হইয়াছে। এই গায়তী হারা ত্রন্মের স্ব্যোতি বা প্রকাশে এরই উপাসনা ছইয়া থাকে। পাশ্চাতা বিজ্ঞান আৰু এ সিদ্ধানে উপনীত হইয়াছে যে একই জ্যোতি বা তেজ লগতের বাবতীয়. কাৰ্য্য করিতেছে। ঋষিগণ তত্ত্বজ্ঞানী তাঁহারা এই জ্যোতিকেই জ্ঞানময় পূর্ণক্রপে প্রত্যক্ষ করিয়াছেন। তাঁহারা ইহা উপলব্ধি করিয়াছিলেন যে যে তেজন্ধপে তিনি এই সূর্য্যে প্রকাশমান তাহার অসংখ্য স্থানে অসংখ্য আকারে প্রকাশ থাকিলেও তিনি বছ নহেন তিনি একই। তাঁহারা আরে। জানিয়াছিলেন যে যিনি বাহিরে তেজাময় জ্যোতিঃরূপে প্রকাশমান তিনিই ভিতরে অন্তরে চেতনারূপে বিরাজমান— জ্যোতির প্রকাশ হটলেই জীবদেহে চেওনার প্রকাশ। তাই তাঁহারা এই তেজের আধার সবিতা দেবতার সেই বরণীয় তেজের ধানে করিতেচেন যিনি জাবে ধীশক্তি এবং চেতনা প্রেরণ করেন। এ সেই জ্যোতি যাহার সম্বন্ধে ছান্দোগ্য विलिख्हिन—"बाशा यह बढ: भरता भरक स्वार्जिनी भारक, विश्व अ: शृर्ष्ठेषु, मर्वा छ: शृर्ष्ठेषु व्यक्ष्युद्धायेषु (शांत्वेषु यानाः বাবতদ যদিদং অন্তঃ পুরুষে জ্যোতি:"--যে জ্যোতি দ্যুক্তনাকের উপরে, যাহা বিষের পুঠে, সর্বন লোকের পুঠে मोशिमान, श्रुकरवत्रं अवः नत्रीरत्र त्व त्याि मीशिमान् त्महे ख्यां जिहे वहें खां जि:।

অন্ধণজ্ঞির বিকাশই সৃষ্টি, সমস্ত চরাচর জগত দেই
বন্ধণজ্ঞি হইতেই প্রকাশ পাইডেছে স্বতরাং সমস্তই বন্ধভূকা।
কিন্তু অসীম অনক বন্ধশক্তিতো এই সৃষ্টিভেই পর্যাবদিত নয়—
ভারায় বে অসীম অংশ সৃষ্টিকার্য্যে নিয়োজিত হয় নাই, এই
সীমাবর অগতের অতীত বে এক অসীম বিশ্বজগৎ রহিয়াছে
ভারার নদ্ধানত বেদের থাবি পাইয়াছিলেন। পুরুষ স্কে
বিরাট পুরুবের বর্ধনায় যে দেখিতে পাই পুরুবের বিভৃতি
বর্ধনা করিতে গিয়া থাবি বল্ছেন—

এ তাৰান অভ্যমহিমা অত্যে জালাংশ গুরু বং।
পালোণ্য বিশাভূতানি তিপাদভামৃতং দিবি ॥
এত তাঁর মহিমা, কিন্তু তাহা হইতেও পুরুষ শ্রেষ্ঠ। জগতের
বাৰতীয় প্রাণী তাঁহার এক পাদাংশমাত্র ( ह ) এবং দ্যালোকের
অমৃত তাঁহার ত্রিপাদাংশ। উপনিষ্দের অষ্ঠিও এই পুরুষের
বর্ণনা করিয়া শেষ করিয়া উঠিও পারেন নাই এবং স্বয়ং

বিক্ষান্ত হার মানিয়া অর্জ্বকে বলিতেছেন—

অথবা বহুনৈতেন কিং জ্ঞাতেন তবাৰ্জ্ন।
বিষ্টভাহামিদং কুংসনেকাংশেন স্থিতোজগং ।
ইহাম ভিজন আমনা ঋ্যেদের ঐ বিশ্বাতীত অদীমেরই কতকটা
আভাস পাই। বা ব তব ক্রিতেছেন—
'হে মিত্রাবন্ধণ ভোমরা প্রত্যুবে স্র্যোদ্য হইলে পৌহকীলক
সম ৰত স্থবৰ্ণ পথে আরোহণ কর এবং সেই খান হইতে অসীম
বিশ্বস্থাৎ এবং সীমাবন্ধ জগণও অবলোকন কর।'

এই যে সীমাবদ্ধ জগতের অতীত অসীম জগৎ, যাগার স্থিতি স্প্রির কোন সম্বন্ধ নাই, তাহা মানুষের জ্ঞানের অতীত। মানুষের কোনরূপ জ্ঞানম্বারা তাহা নির্দেশ করা যার না। কিছু এই বিশ্বাতীত অসীমের conception করনা যে অধিদের মনে উদ্ধাসিত হইয়াছিল তাহার পরিচয় এইথানে। পরবর্ত্তীকালে উপনিষদের অধিও এই অসীমকে নির্দেশ ক্ষাতে ধাইলা—

'যভোষাটো নিবর্ত্তক্তে অপ্রাপা মনসা সহ'
বলিয়া হতাশ এইয়া প্রতিনিবৃত্ত চইত্তাছেন। ঋক্ বেদের
আবি তাই জীবকে উপরেশ 'দতেছেন—

পরীত্য তৃতানি পরীত্য গোকান্ পরীত্য সর্বা: প্রদিশো দিশস্ত। উপাস্থার প্রথমকামৃত্যা আত্মনাত্মানং অভিসংবিবেশ।

সর্বভূতকে (পরীত্য) ব্রহ্মস্বরূপ জানিরা সর্ববোককে সমুক্ত দিখিদিককে ব্রহ্মস্বরূপ জানিরা প্রেণমঙ্কা, অনন্ত জ্ঞানস্তর্ক বেদের সেবা করিয়া নিজ কর্মধারা সত্যস্তরূপ আত্মায় প্রবেশ কর। ও শান্তি।

**अनिदासनात्रात्रन क्रीपृत्री** 

## প্রার্থনা।

भाहे वा मा भाहे, আমি যাহা চাই, আশায় রাখিও প্রাণ! विन्दान वार्ति. भिर्म वा ना भिरम. जुश मिंड डें शामान ॥ **जु**रव यनि याँदे গভীৱ তিমিরে व्यात्नात्कत्र व्यात्म (त्रत्था । क्रहेरन भवारन বড়ই যাত্ৰা ত্বথ শ্বভিটুকু মেথো॥ शाश यकि मिन চির পরনেতে আঁথি রেখে। নিডাহীন। श्रुनीर्थ कीवन আশায় আশায় द्वारथा मथा किव्रमिन ॥ চির আঁথিজল · 한[라 용 기택이 তু:খ যেন রহে ঢাকা। আপনা যাতনা দহিতে বহিতে क्र यादि पृष् मथी॥

প্রচাক্ষানা শত ভথা।

## সাগর তরঙ্গ।

সমুদ্রের উত্তাল ভরলের কথা আমরা পুত্তকে পড়িয়া থাকি কিছু প্রকৃতপক্ষে উহা যে কি সে সম্বন্ধে আমাদের বিশেষ ধারণা নাই। সমুদ্রের তীরে দাঁড়াইরা তরঙ্গমালার প্রতি দৃষ্টি **ক্ষরিলে মনে হ**র যেন বছদুর ২ইতে একটি স্থ-উচ্চ জলের প্রাচীর গভাইতে ২ কুলের দিকে আসিতেছে। বস্তুতঃপক্ষে তরজের সহিত জলের কোন গতি হয় না, যেথাকার জল দেখানেই স্থির থাকে, কেবল চক্ষের ভ্রান্তির দরুণ এরূপ একটা গতি আৰুভব হয়। ঐ চেউয়ের উপরে একটুকরা কর্ক ছাড়িয়া দিলে উহা একবার উদ্ধে উঠিবে এবং পুনরায় নিমে পড়িয়া িবাটবে মাত্র কিন্তু উহা চেউয়ের সঙ্গে চলিয়া যাইবে না। ইহা ্র্ছারা ব্ঝিতে হইবে যে তরঙ্গের কোনরূপ গতি নাই। জাত শামল ধান্তকেতে বায়ু সঞ্চালনে বে একরপ তরঙ্গের সঞ্চার হয়, ঐ সমুদ্র তরঙ্গও ঠিক এইরূপ।

অল্বাশির বিশ্বতির অনুপাতে যতই গভীরতর হইবে তরঙ্গও मिहे अपूर्भाएं वृह्द हहेरत। नवनाक करन धहे उद्रश्न काधिक इट्डेश शास्त्र ।

ু বুটিশ দ্বীপপুঞ্জের নিকটে সমূদ্র অগভীর বিধায় তথায় ভরবের উচ্চতা ১৫ হইতে ২০ ফুটের উদ্ধে উঠে না, ভূমণ্য-সাগরে তরঙ্গের পরিমাণ মাত্র ১৩ ফুট পর্যাস্ত হইয়া পাকে। ১৮৪৭ সনে স্ক্রবি ( Scorcsby ) লিবারপুল হইতে বোষ্টন ষাইবার সময়ে তরজের যে পরিমাপ করিয়াছিলেন ভাগা ২৬ ্**ছইতে** ২৯<sub>ই</sub> ফিট পর্যান্ত হইয়াছিল। পর বৎসর ঐ পথে ক্ষিবিবার সময়ে বড়ের মধ্যে আটলান্টিক মহাসাপরে ৩০ হইতে ৪৩ ফিট উচ্চ তরঙ্গ দেখিয়াভিলেন।

প্রশাস্ত মহানাগরে একটা তরঙ্গ ৩০ ফিট মাপা হইয়াছিল। সার জেম্দ্রদ্ (Sir James Ross) উত্তমাশ। অস্তরীপের **নিকটে ১৯ ফিট উচ্চ একটা তরঙ্গ দেখিয়**াছিলেন। যে বিরে উপুদাগর ঝড়ের জন্ম বিখ্যাত তথায় ৩৩ কিটের উদ্ধে তরঙ্গ দীর্ঘ হইয়া থাকে। যদি একটা তরঙ্গ ৫ সূট উচ্চ হয় তাহা শেখা যায় না। কেহ ২ বলেন তথীয় ১০০ ফুট ওরঙ্গ ও करेश थाटक।

উলুক্ত সমৃত্তে ৫০।৬০ ফুটের উল্লেডির তরক না হওরাই मख्य। विभाग जतक धारण याएत ममात्र देखिङ इत्र नी, যথন একদিকে দীর্ঘকাল প্রবল বাতাস চলিতে থাকে উহাদের সমবেত ফলে বিশাল তরক্ষের উদ্ভব হইয়া থাকে। কথন ২ বে স্থানে ঝড় হয় তাহা হইতে বহুদুরে তরঙ্গ বিস্তারিত হইরা থাকে। দে জন্ত পুরীতে অনেক সময়ে নির্বাত অবস্থায়ও প্রবল তরক দেখা যার। ঐ সকল তরক তটভূমীর সংঘর্ষে আসিয়া অনেক সময়ে ফাটিয়া যায়। তরুক যথন অগভীর জ্বলে আসিয়া পড়ে এবং যথন বাঁধা প্রাপ্ত হয় তথনই উহার আয়তন বৃদ্ধি হইয়া থাকে। উন্মুক্ত বারিধি-বক্ষে তরঙ্গ সাধারণত: কথন ৫০।৬০ াফটের উর্দ্ধে উঠেনা। নস হেড্ ( Noss head ) লাইট হাউসে বাধা প্রাপ্ত হইয়া কথৰ ২ তরক ১৭৫ ফিট উ:র্জু উথিত হইয়া থাকে। ভানেট হেড্ ( Dunnet head ) লাইট্ হাউদের ৩০০ ফিট উদ্ধে বে কাচ নিৰ্ম্মিত সাৱসী বৰ্ত্তমান আছে উহা কথন ২ উত্তাল ভরক্ষোৎশিক্ত উপলখণ্ডের আঘাতে ভাঙ্গিয়া ধায়। এই উত্তাল তরঙ্গের দ্বারা বারিধির কতদূর গভীর পর্য্যস্ত আলোড়িত হয় এখন তাহাই দেখিব। হিসাব,মতে দেখিতে গোলে ভরঙ্গ যত ফিট্ উচ্চ ছইবে সমুদ্রে গর্ভে ভাহার ৩৫• গুণ নিমে প্রতিঘাত যাওয়া উচিত। যদি একটা ওরঙ্গে উচ্চতা ৩৩ কিট হয় ভাহা ২ইলে তাহার প্রতিবাত সমুজের ১% মাইল নিমে পৌছিবার কথা। ইহা হইল গণিত শাল্পের হিমাব, কিন্তু বস্তু ভঃপক্ষে উহা গভীৱভাৱ সহিত Geometrical proportion এ কমিয়া থাকে। কথন কথন ৬০০ ফিট নিমেও প্রতিবাত পৌছিয়া থাকে। কিন্তু উহা **অত্যন্ত** বিরুল: সাধারণতঃ ৩০০ ফিটের নিমে প্রতিঘাত পৌছায় না, সে জন্ত প্রবণ ঝড়ের হাত হইতে অব্যাহতি পাওয়ার **জন্ত** ডুবুরী জাহাজ দারা উত্তাল তরজাকুণ সমুদ্র পার হইবার কথা **हिंगाउँ हिं**।

এই তরক ষত উচ্চ হয়, সাধারণতঃ উহা তাহার ১৫ ৩৩৭ হইলে উহা ৭৫ ফুট ধৈর্ঘো হইবে ইহাই রীতি। সেরূপ ৫০ ফুট উচ্চ তরঙ্গের দৈর্ঘ্য প্রায় ৭৫০ ফুটের অধিক হয় না।

এই তরক্ষের গতি উহার উচ্চতা এবং জলের গভীরতার উপরে নির্জ্বর করে। তরঙ্গ দীর্ঘ হইলে এবং সমৃত্য গভীর হইলে উহার বেগও অধিক হইবে। অগভীর সমৃত্রে ক্ষুদ্র তরক্ষমালার গতি ঘণ্টার ২০ মাইলের অধিক হয় না। আমরা তরক্ষের দৈর্ঘ্য এবং গভির পরিমাণ জানিতে পারিলে সমৃত্রের স্ভীরতা নির্ণয় করিতে পারি। অন্ত দিকে আমরা তরক্ষের উচ্চতা এবং জলের গভীরতা জানিলে তরক্ষের বেগ নির্দ্ধারণ করিতে পারি। ভূমিকম্পের হারা যে তরক্ষ উভূত হয় তাহার দৈর্ঘ্য ও বেগ উভরই অধিক হইরা থাকে। ১৮৫৪ সনের ২০ শে ডিসেম্বর জাপানে যে ভূমিকম্প হইরাছিল তাহার ফলে যে তরক্ষের উদ্ভব হইরাছিল উহা দৈর্ঘ্য ২১০ মাইল এবং মিনটে প্রায় ৮ মাইল বেগে চলিগছিল।

তৈলের দ্বারা বিক্ষুক্ত সম্পুদ্রের তরক্ষমালা প্রশমিত করা

যার। ইং। লোকে পরিজ্ঞাত আছে। সে জন্ত পারস্য
উপসাগরে ধীবরগণ সমুদ্রে উত্তাল তরক্ষ দেখিলে জলের উপরে
তৈল ছড়াইয়া দেয়! লেপ্টেনেণ্ট বেচ্লার (Lieutenant

Bechler) এ সম্বন্ধে গবেষণা করিয়া বলিয়াছেন—তৈল
তরক্ষের আন্তুতির পরিবর্ত্তন করিয়া উহার তীব্রতা কমাইয়া
দেয়। উহা দ্বারা জলের উপরে পাতলা রবারের আবরণের
মত একটী আবরণ পড়িয়া যায়। সে জন্ত বায়ু উহা ভেদ
করিয়া উচ্চ তরক্ষের স্বাষ্টি করিতে পারে না, কেবল বিকৃত
ক্রেরাণি একবার ফীত হইয়া উঠে এবং পুনরায় নিম্নগামী হয়
মাত্ত। এইক্লপ উত্থান পতনে জল্বানের বিশেষ ভয় থাকে না।

ন্ধল ভারী বস্ত বলিয়াই এই তরঙ্গের আঘাত অত্যন্ত গুৰুতর হয়। যে ইঞ্জিনিয়ার এডেপ্টোন আলোক গৃহ (Eddystone light house) প্রস্তুত করিয়াছেন তিনি ঝঞাবাতের সময়ে হিসাব করিয়া দেখিয়াছেন, প্রতি বর্গকৃটে তরক্তের আঘাত ৩২ মণের কিঞ্চিৎ উর্দ্ধে লাগিয়া থাকে, কিন্তু ক্ষেরিভার আলোকগৃহে (Skerryvore light house) ঐ আঘাতের পরিমাণ প্রায় ৬৪ মণ হিসাব করা হইয়াছিত্র। শীতথাতুতে আটলাতিক মহাসাগরের কোন ২ তরঙ্গ প্রতি বর্গ ফুটে ৮০ হইতে ১০০ মণ চাপও দিয়া থাকে। এই প্রবল

তরন্ধাবাতে বিশাল প্রান্তর্থণ্ড কুদ্র মার্বেলের মত চুড়িরা ফেলে। যথন হার্টকে (Heartoch) আলাকগৃহ প্রস্তুত্ত্ব হিতেছিল তথন এক প্রবল ঝড়ে ৫৪ মণ ওলনের ১৪ ধানা প্রান্তর পত্রের মত দ্রে ছুড়িয়া ফেলিয়াছিল। তরজের ইহা অপেকা অধিক শক্তির কথা লিপিবদ্ধ আছে। রিইউ-নিয়ন দ্বীপপুত্রে (Re-union) তরজে ৫১০ বর্গগদ্ধ একটা প্রস্তর্থণ্ডকে সরাইয়া নিয়াছিল। যথন উইকবেতে (Wick Bay) সমুদ্রের মধ্যে জাহাজ রাথিবার এক নিরাপল স্থান প্রস্তুত্ত ছিল তথন কন্ধ্ টের ২৭০০০ মণ এক বিশাল খণ্ডকে শীতগাত্ব প্রথম ঝড়েই বছদ্রে ছুড়িয়া ফেলিয়াছিল। এই ভীষণ তরঙ্গবাতে সমুদ্রের তীরলেশ কিছু কিছু ক্ষয় হইতেছে। ক্ষয়ের পরিমাণ সর্গত্ত সমান নহে। কুদ্র উপলখণ্ড বা মুড়ি ঘ্রা তীরদেশ অনেকটা রক্ষা হইয়া থাকে।

ত্রীহরিচরণ গুপ্ত।





